नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर-गुरुभ्यो नमः

सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि

भाग

27

आगम ३३-३९

३३. मरणसमाधि-प्रकीर्णक [मूलं एवं संस्कृत-छाया]

३४.निशीथ,३५.बृहत्कल्प,३६.व्यवहार,३७.दशाश्रुतस्कंध,३९.महानिशिथ [५-छेदसूत्राणि मूलं],

३८/१,जीतकल्प-मूलं+भाष्यं,३८/२.पंचकल्प-भाष्यं.

मूल संशोधक :- पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब

अभिनव-संकलनकर्ता :- आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी [M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

पूज्य शासनप्रभावक आचार्यश्री हर्षसागरसूरिजी की प्रेरणा से

'वर्धमान जैन आगम मंदिर संस्था' पालिताणा

ईस प्रोजेक्ट के संपूर्ण-अनुदान-दाता

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि

मूल संशोधक

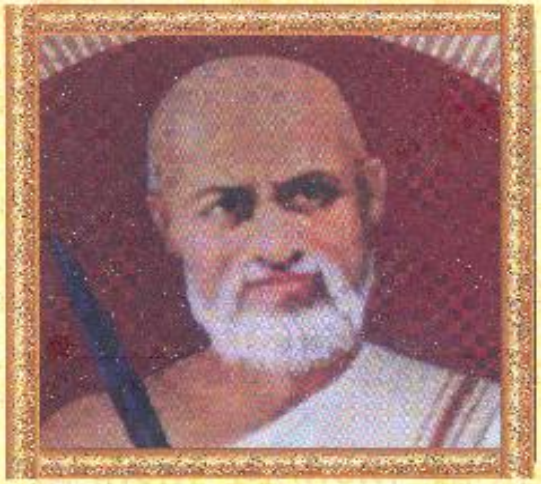

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य
श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज

अभिनव-संकलनकर्ता

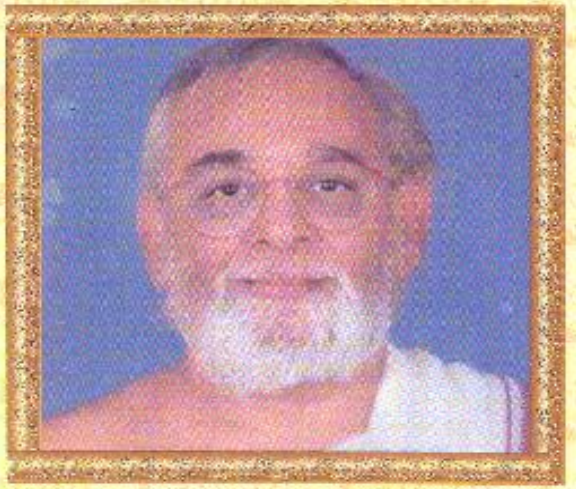

आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी
[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

प्रत-प्राप्ति और पेज-सेटिंग कर्ता : www.jainelibrary.org के चेरमन श्री प्रवीणभाई शाह, अमेरिका
मुद्रक : नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस अमदाबाद Mo 9825598855 / 9825306275

आगम

वाचना शताब्दी वर्ष

[भाग-२७] श्री मरणसमाधि (१ प्रकीर्णकसूत्र-१०)

श्री निशीथ-आदि (६ छेदसूत्राणि २४-३२)

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

३३. मरणसमाधि-प्रकीर्णक [मूलं एवं संस्कृत-छाया]

३४.निशीथ,३५.बृहत्कल्प,३६.व्यवहार,३७.दशाश्रुतस्कंध,३९.महानिशिथ [५-छेदसूत्राणि मूलं], ३८/१,जीतकल्प-मूलं+भाष्यं,३८/२.पंचकल्प-भाष्यं.

[आद्य संपादकश्री]

पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म॰ सा॰

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ **मुनि दीपरत्नसागर** (M.Com., M.Ed., Ph.D.,श्रुतमहर्षि)

28/07/2017, शुक्रवार, २०७३ श्रावण शुक्ल ५ 'सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि' श्रेणि भाग-२७

श्री आगमोद्धारक-वाचना-शताब्दी-वर्ष-निमित्त 'आगम-वृत्ति-मुद्रण-प्रोजेक्ट'

सामाचारी-संरक्षक, ज्ञानधनी, आगम-संशोधक, तीव्र-मेधावी, समाधिमृत्यु-प्राप्त, बहुमुखीप्रतिभाधारक

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

◆ जिन्होने शुद्ध-श्रद्धा, सम्यक्-श्रुत आराधना, यथाख्यातचारित्र के प्रति गति और अंत समय देह-ममत्व के त्याग के द्वारा कायोत्सर्ग नामक अभ्यंतर-तप कि मिशाल कायम कि है ऐसे बहुश्रुत आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी महाराज का परिचय कराना मेरे लिए नामुमकिन है, फ़िर भी गुरुभक्ति बुद्धि से श्रद्धांजली स्वरुप एक मामुली सी झलक पैस करने का यह प्रयास मात्र है |

◆ चारित्र-ग्रहण के बाद अल्प कालमे जो अपने गुरुदेव की छत्रछाया से दूर हो गये, तो भी गुरुदेव के स्वर्ग-गमन को सिर्फ़ कर्मो का प्रभाव मानकर अपने संयम के लक्ष्य प्रति स्थिर रहते हुए अकेले ज्ञान-मार्ग कि साधना के पथ पर चले | पढाई के लिए ही कितने महिनो तक रोज एकासणा तप के साथ बारह किल्लोमिटर पैदल विहार भी किया | लेकिन अपने मंझिल पे डटे रहे, और परिणाम स्वरुप संस्कृत एवं प्राकृत भाषा का, प्राचीन लिपिओ का, व्याकरण-न्याय-साहित्य आदि का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया | जैन आगमशास्त्रो के समुद्र को भी पार कर गए|

◆ एक अकेला आदमी भी क्या नहीं कर शकता? इस प्रश्न का उत्तर हमें इस महापुरुष के जीवन और कवन से मिल गया, जब वे चल पड़े देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण के स्थापित पथ पर. बिना किसी सहाय लिए हुए सिर्फ अकेले ही "जैन-आगम-शास्त्रो" को दीर्घजीवी बनाने के लिए अनेक हस्तप्रतो से शुद्ध-पाठ तैयार किये | दो वैकल्पिक आगम, कल्पसूत्र और निर्युक्तिओ को जोड़कर ४५ आगम-शास्त्रो को संशोधित कर के संपादित किया | फिर पालीताणामें आगम मंदिर बनवाकर आरस-पत्थर के ऊपर ये सभी आगम-साहित्य को कंडारा, सूरतमें ताम्रपत्र पर भी अंकित करवाए और "आगम मंजूषा" नाम से मुद्रण भी करवा के बड़ी बड़ी पेटीमें रखवा के गाँव गाँव भेज दिए | वर्तमानकालमे सर्व प्रथमबार ऐसा कार्य हुआ |

◆ सिर्फ मूल आगम के कार्य से ही उन के कदम रुके नही थे, उन्होंने आगमो की वृत्ति, चूर्णि, निर्युक्ति, अवचूरी, संस्कृत-छाया आदि का भी संशोधन-सम्पादन किया | उपयोगी विषयो के लिए उन्होंने एक लाख श्लोक प्रमाण संस्कृत-प्राकृत नए ग्रंथो की रचना भी की | कितने ही ग्रंथो की प्रस्तावना भी लिखी | ये सम्यक्-श्रुत मुद्रित करवाने के लिए आगमोदय समिति, देवचंद लालभाई इत्यादि विभिन्न संस्था की स्थापना भी की |

◆ ज्ञानमार्ग के अलावा सम्मेतशिखर, अंतरीक्षजी, केशरियाजी आदि तीर्थरक्षा कर के सम्यक-दर्शन-आराधना का परिचय भी दिया | राजाओं को प्रतिबोध कर के और वाचनाओ द्वारा अपनी प्रवचन-प्रभावकता भी उजागर करवाई | बालदिक्षा, देवद्रव्य-संरक्षण, तिथि-प्रश्न इत्यादि विषयोमे सत्य-पक्षमें अंत तक दृढ़ रहे | जैनशासन के लिए जब जरुरत पड़ी तब अदालती कारवाईंओ का सामना भी बड़ी निडरता से किया था |

◆ सागरानंदजी के नाम से मशहूर हो चुके पूज्य आनंदसागरसूरीश्वरजीने अपने परिवार स्वरुप ८७० साधू-साध्वीजी भी शासन को भेट किये |

...ये थे हमारे गुरुदेव "सागरजी"... *.....मुनि दीपरत्नसागर...*

संयमैकलक्षी, उपधान-तप-प्रेरक, चारित्र-मार्ग-रागी, प्रवचन-पटु, सुपरिवार-युक्त

पूज्य गच्छाधिपतिआचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

*** परमपूज्य आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी के पाट-परंपरामे हुए तिसरे गच्छाधिपति थे पूज्य आचार्य श्री देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी, जो एक पून्यवान् आत्मा थे, दीक्षा ग्रहण के बाद अल्पकालमे ही एक शिष्य के गुरु बन गये | फ़िर क्या ! शिष्यो कि संख्या बढती चली, बढ़ते हुए पुन्य के साथ-साथ वे आखिर 'गच्छाधिपति' पद पे आरूढ़ हो गए | इस महात्मा का पुन्य सिर्फ शिष्यों तक सिमित नही था, वे जहा कहीं भी 'उपधान-तप' की प्रेरणा करते थे, तुरंत ही वहां 'उपधान' हो जाते थे | प्रवचनपटुता एवं पर्षदापुन्य के कारण उन के उपदेश-प्राप्त बहोत आत्माओने संयम-मार्ग का स्वीकार किया | खुद भी संयमैकलक्षी होने के कारण चारित्रमार्ग के रागी तो थे ही, साथसाथ ज्ञानमार्ग का स्पर्श भी उन का निरंतर रहेता था | आप कभी भी दुपहर को चले जाइए, वे खुद अकेले या शिष्य-परिवार के साथ कोई भी ग्रन्थ के अध्ययन-अध्यापनमें रत दिखाई देंगे |

*** ये तो हमने उनके जीवन के दो-तीन पहेलु दिखाए | एक और भी अनुसरणीय बात उन के जीवनमें देखने को मिली थी- 'आराधना-प्रेम'. कैसी भी शारीरिक स्थिति हो, मगर उन्होंने दोनों शाश्वती ओलीजी, [पोष}दशमी, शुक्ल पंचमी, त्रिकाल देववंदन, पर्व या पर्वतिथि के देववंदन आदि आराधना कभी नहीं छोड़ी | आखरी सालोमें जब उन को एहसास हो गया की अब 'अंतिम-आराधना' का अवसर नजदीक है, तब उन के मुहमें एक ही रटण बारबार चालु हो गया- "*अरिहंतनुं शरण, सिद्धनुं शरण, साधुनुं शरण, केवली भगवंते भाखेला धर्मनुं शरण*" इसी चार शरणो के रटण के साथ ही वे समाधि-मृत्यु-रूप सम्यक् निद्रा को प्राप्त हुए थे | ऐसे महान् सूरिवर को भावबरी वंदना |

*** मुनि दीपरत्नसागर...

◆◆◆ श्री वर्धमान जैन आगम मंदिर संस्था, पालिताणा ◆◆◆

पूज्यपाद आनंदसागर-सूरीश्वरजी की बौद्धिक-प्रतिभा का मूर्तिमंत स्वरुप ऐसी इस संस्था की स्थापना विक्रम-संवत १९९९ मे महा-वद ५ को हुइ| *पूज्य आचार्य हर्षसागरसूरिजी की प्रेरणा से* जिन की तरफ़ से इस *सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि* के लिए संपूर्ण द्रव्य-सहाय की प्राप्ति हुइ |

शिल्प-स्थापत्य, शिलोत्कीर्ण आगम और समवसरण स्थित नयनरम्य ४५ चौमुख जिन-प्रतिमाजी से सुशोभित ऐसा ये 'आगममंदिर' है, जो शत्रुंजय-गिरिराज कि तलेटीमे स्थित है | वर्तमान २४ जिनवर, २० विहरमान जिनवर और १ शाश्वत मिलाकर ४५ चौमुखजी यहा बिराजमान है | जहां ४० समवसरण की रचना मेरु पर्वत के तिनो काण्ड के वर्णो के अनुसार चार अलग-अलग रंगो के आरस-पत्थर से बना है, देवो द्वारा रचित समवसरण के शास्त्र वर्णन-अनुसार आगम-मंदिर कि समवसरण का स्थापत्य है | ऐसी अनेक विशेषता से युक्त ये आगममंदिर है |

**** मुनि दीपरत्नसागर...*

'सागर-समुदाय-एकता-संरक्षक, तीर्थ-उद्धार-कार्य-प्रवृत्त, गुणानुरागी'

इस "सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि' श्रेणि भाग १ से ४० के संपूर्ण अनुदान के प्रेरणादाता

पूज्य शासनप्रभावक आचार्य श्री हर्षसागरसूरिजी महाराज साहेब

पूज्यपाद स्व॰ गच्छाधिपति देवेन्द्रसागर-सूरीश्वरजी के विनयी शिष्य एवं दो गच्छाधिपतिओ के मुख्य सहायक के रुपमे 'सागर समुदाय' के सुचारु संचालक पूज्य हर्षसागरसूरिजी, जिन की प्रेरणा से ये "सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि" के मुद्रण के लिए संपूर्ण द्रव्यराशि प्राप्त हुई, उनका अत्यल्प परिचय यहां करेंगे| समुदाय-एकता के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हुए ये महात्मा *समुदाय के साधु-साध्वीजी* की आवश्यकताओकी पूर्ती के लिए भी प्रवृत्त रहेते है, प्राचीन-अर्वाचीन तीर्थो के जीर्णोद्धार एवं विकाश के लिए भी उत्साहित रहेते है, ज्ञान-क्षेत्र अछूता न रहे इसीलिए अनुमोदना, अनुदान एवं समय मिलने पर शास्त्र-वांचनमें भी रूचि रखते है | समुदाय के जरूरतमंद साध्वीजी भगवंतो के आवास का विषय हो या साध्वीजी के विहारमें मजदूर का वेतन चुकाना हो, ऐसे छोटे-छोटे कार्यो के प्रति भी उन का लक्ष्य रहेता है | दर्शन-शुद्धि के लिए जब उन्होंने समग्र भारतवर्ष के १०० साल तक के पुराने जिनालयो में १८ अभिषेक की प्रेरणा की, उस वक्त लगभग सभी अभिषेक-सामग्री की द्रव्य-शुद्धि का ख़याल रखते हुए अपनी मेधावी बुद्धि का परिचय दिया था, साथमे अनुकंपा भाव से पुजारी या विधि करानेवाले को यत्किंचित् बहुमान प्रगट करते हुए कुछ धन-राशि प्रदान करवाई |

ऐसे बहुगुण-संपन्न महात्मा पूज्य आचार्यश्री हर्षसागर-सूरिजी को हम भावभरी वंदना करते हुए इस श्रुतकार्य का प्रारंभ करने जा रहे है |

**** मुनि दीपरत्नसागर*

[कात्रज]पूना, कपडवंज, प्रभासपाटण आदि स्थानोमे आगममंदिर के प्रेरक, कर्मग्रंथ अभ्यासु, निस्पृह महात्मा

पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य श्री दौलतसागर-सूरीश्वरजी महाराज साहेब

(एवं) अजातशत्रु, स्वाध्याय-रसिक, प्रशांतमूर्ती और अपने गुरु के प्रीतिपात्र

परम पूज्य आचार्य श्री नंदीवर्धनसागर-सूरिजी महाराज साहेब

इस पवित्र श्रुत-कार्यमे दोनो सूरिवरो का स्मरण करते हुए कोटि कोटि वंदना के साथ

.....मुनि दीपरत्नसागर

..... भाग-२७मे कहां क्या देखोगे [१].....

मूलाङ्का: ६६३+प्र०१ [आगम-३३] मरणसमाधि प्रकीर्णक(१०)-सूत्रस्य विषयानुक्रम दीप-अनुक्रमा: ६६४

मूलांक	गाथा:	पृष्ठांक:		मूलांक:	गाथा:	पृष्ठांक		मूलांक:	गाथा:	पृष्ठांक:
००१	मरणविधि: आरम्भ:	०१४		०११	आराधना, मरणस्वरुपम्	०२०		०८४	आचार्यस्य गुणा:	०२६
०९३	आलोचना-वर्णनं	०२७		१२७	तपस: भेदा:	०३१		१२९	ज्ञानादि गुण-वर्णनं	०३२
१५८	आत्मन: शुद्धि:	०३६		१७५	संलेखना	०३८		२०८	आतुरप्रत्याख्यान-आदि:	०४२
२५८	पञ्चमहाव्रतस्यरक्षा	०४९		२६७	आराधना, उपदेश-आदि:	०५०		४१३	विविध-उदाहरणादि:	०७१
५२६	मरणभेदानि-निरूपणं	०८७		५५१	आराधना-अनुचिन्तन	०९०		५७०	द्वादश-भावना	०९३
६४०	पण्डितमरणं, उपसंहार:	१०३		-----	----------			-----	----------	-----

समाप्तोऽत्र प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम.....अथ छेदसूत्रस्य विषयानुक्रम: आरभ्यते

मूलाङ्का: ५८+.....+५१ [आगम-३४] 'निशीथ' (१) छेदसूत्रस्य विषयानुक्रम दीप-अनुक्रमा: १४२०

मूलांक	उद्देश:	पृष्ठांक:		मूलांक:	उद्देश:	पृष्ठांक		मूलांक:	उद्देश:	पृष्ठांक:
०००१	प्रथम:	१०८		००५९	द्वितिय:	१०८		०११८	तृतीय:	१०९
०१९७	चतुर्थ:	११०		०३१४	पंचम:	११०		०३९३	षष्ठ:	१११
०४७०	सप्तम:	११२		०५६१	अष्टम:	११२		०५८०	नवम:	११३
०६०८	दशम:	११३		०६५५	एकादश:	११४		०७४७	द्वादश:	११५
०७८९	त्रयोदश:	११५		०८६३	चतुर्दश:	११६		०९०५	पंचदश:	११६
१०५९	षोडश:	११७		११०९	सप्तदश:	११७		१२६०	अष्टादश:	११८
१३३३	एकोनविंशति:	११८		१३७०-	विंशति:	११८		-----	-------	-----

मूलाङ्का: ५०+.....+२० [आगम-३५] 'बृहत्कल्प' (२) छेदसूत्रस्य विषयानुक्रम दीप-अनुक्रमा: २१५

मूलांक	उद्देश:	पृष्ठांक:		मूलांक:	उद्देश:	पृष्ठांक		मूलांक:	उद्देश:	पृष्ठांक:
०००१	प्रथम:	१२१		००५९	द्वितिय:	१२३		०११८	तृतीय:	१२४
०१९७	चतुर्थ:	१२५		०३१४	पंचम:	१२७		०३९३	षष्ठ:	१२९

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [३३-३९] अन्तर्गता: १-प्रकीर्णकसूत्र [१०] मूलं एवं संस्कृतछाया + छेदसूत्राणि [१-६]

..... भाग-२७मे कहां क्या देखोगे [२].....

अत्र छेदसूत्रस्य विषयानुक्रम: वर्तते

मूलाङ्का: ३५+.....+३७ [आगम-३६] 'व्यवहार' (३) छेदसूत्रस्य विषयानुक्रम दीप-अनुक्रमा: २८५

मूलांक	उद्देश:	पृष्ठांक:		मूलांक:	उद्देश:	पृष्ठांक		मूलांक:	उद्देश:	पृष्ठांक:
००१	प्रथम:	१३१		०३६	द्वितिय:	१३३		०६६	तृतीय:	१३४
०९५	चतुर्थ:	१३५		१२७	पंचम:	१३७		१४८	षष्ठ:	१३९
१६०	सप्तम:	१३८		१८७	अष्टम:	१३९		२०३	नवम:	१४०
२४९-	दशम:	१४१		-----	-------	-----		-----	-------	

मूलाङ्का: २+.....+५७ (+५६) [आगम-३७] 'दशाश्रुतस्कन्ध' (४) छेदसूत्रस्य विषयानुक्रम दीप-अनुक्रमा: ११४

मूलांक	दशा	पृष्ठांक:		मूलांक:	दशा	पृष्ठांक		मूलांक:	दशा	पृष्ठांक:
००१	०१- असमाधिस्थानानि	१४३		००३	०२- शबला	१४३		००४	०३- आशातना	१४३
००५	०४- गणिसंपत्ति	१४४		०१६	०५- चित्त असमाधिस्थानानि	१४५		०१८	०६- उवासगप्रतिमा	१४५
०३१	०७- भिक्षुप्रतिमा	१४६		०३६	०८- पर्युषणा	१४९		०३७	०९- मोहनीयस्थानानि	१४९
०३७-	१०- निदान-आदि	१५०		-----	----------	-----		-----	----------	-----

मूलाङ्का: १०३ [आगम-३८/१] 'जीतकल्प' (५/१) छेदसूत्रस्य विषयानुक्रम दीप-अनुक्रमा: १०३

मूलांक	विषय:	पृष्ठांक:		मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक		मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक:
००१	मङ्गलम् आदि	१५६		००५	आलोचना प्रायश्चितं	१६७		००८	प्रतिक्रमण प्रायश्चितं	१७१
०१३	तदुभय प्रायश्चितं	१७४		०१६	विवेकार्ह प्रायश्चितं	१७५		०१८	कायोत्सर्ग प्रायश्चितं	१७५
०२३	तप प्रायश्चितं	१७६		०७४	प्रतिसेवना	२०२		०८०	छेद प्रायश्चितं	२०२
०८३	मूल प्रायश्चितं	२०३		०८७	पाराञ्चित प्रायश्चितं	२०३		१०३	उपसंहार:	२०९

..... भाग-२७मे कहां क्या देखोगे [३].....

अत्र छेदसूत्रस्य विषयानुक्रम: वर्तते

भाष्याङ्का: २६६५ **[आगम-३८/२] 'पंचकल्प-भाष्य' (५/२)छेदसूत्रस्य विषयानुक्रम** **दीप-अनुक्रमा: २६६५**

भाष्यांक:	विषय:	पृष्ठांक:		भाष्यांक:	विषय:	पृष्ठांक		भाष्यांक:	विषय:	पृष्ठांक:
०००१	भद्रबाहुं-वंदना, तत्पदस्य	२११		००३२	दु:षमकालानुभाव	२११		००५२	कल्प-अध्ययनस्य अभिधेयानि	२१२
००७८	चारित्रस्य भेदा:	२१२		००८३	निर्ग्रन्थ एवं संयत, भेद-आदि	२१२		०१५३	कल्प- अर्था:, निक्षेपा:, भेदादि:	२१४
०१९७	दीक्षादाने अयोग्या:,	२१४		०५५८	प्रव्रज्या: १६ भेदा: -सदृष्टांता:	२२२		०७०१	उपस्थापना विधि:	२२५
०७२५	लोकपिंड, भोजनविधि,	२२५		०७८८	उपधि-जिन-स्थवीर कल्प	२२७		०८५७	उपधे: उपघाता:	२२८
०९६७	सार्ध-पञ्चविंशतिआर्यदेशा:	२३०		०९७४	विहारयोग्य क्षेत्राणाम् गुणा:	२३०		०९९०	अनायतन०	२३१
१०२२	मासकल्प, पर्युषणा,	२३१		११६८	सूत्रकल्प,उद्देशकल्प, वाचनाया:	२३४		१२६३	स्थित-अस्थित-जिन-स्थविर-	२३६
	वृद्धवास, पर्यायकल्प,				गुणा: एवं विधि:, पृच्छनाकल्प				लिंग-उपधि-संभोग कल्पा:	
	कायोत्सर्ग, प्रति-क्रमण,				अध्यापन योग्य आचार्य-स्वरुप				कल्प-प्रकल्प आदि १० कल्पा;	
१६६८	नाम-स्थापनादि २० कल्पा:	२४४		१६८२	द्रव्य-भाव आदि २० कल्पा:	२४४		२१६५	द्रव्य-भावादि ४२ कल्प-भेदा:	२५२
२६६४	उपसंहार:	२६१		-----	----------	-----		-----	----------	-----

मूलाङ्का: २१७+.....+३० + (७+....+८) **[आगम-३९] 'महानिशीथ' छेदसूत्रस्य विषयानुक्रम** **दीप-अनुक्रमा: १५२८**

मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक:		मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक		मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठां
०००१	प्रथमं	२६३		०२२६	द्वितियं	२६६		०४६७	तृतीयं	२७३
०६५४	चतुर्थं	२८२		०६८४	पंचमं	२८६		०८४५	षष्ठं	२९६
१३५७	पच्छित्त-सुत्तं	३०५		१४८४-	सुषढ-अनगार कथा	३१४			----------	

इस प्रकाशन (भाग-२७) की विकास-गाथा

"सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि" के इस २७-वे भागमें हमने ७+१ आगमो को शामील किया है | जिसमे एक प्रकीर्णकसूत्र और छह + एक छेदसूत्र है | दश प्रकीर्णको की प्रत संस्कृत-छाया के साथ सन १९२७ (विक्रम संवत १९८३) में आगमोदय समिति द्वारा प्रकाशित हुई, संपादक-महोदय थे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेवश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब | उन दश प्रकीर्णकमे से ९ प्रकीर्णको २६-वे भागमे हमने रक्खे है | और ये १०वा प्रकीर्णक 'मरणसमाधि' इस २७वे भागमे है | साथमें छह+एक वैकल्पिक छेदसूत्र भी इस भागमे शामिल है, ३४.निशीथ, ३५.बृहत्कल्प, ३६.व्यवहार, ३७.दशाश्रुतस्कन्ध, ३८/१.जीतकल्प, ३८/२ पंचकल्प, और ३९.महानिशिथ. 'मरणसमाधि' सूत्र दश-प्रकीर्णको की प्रतमे है और सभी छेद-सूत्र पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित 'आगममंजुषा'मे से यहा शामिल किये है | जिसमे ५ छेदसूत्र सिर्फ़ 'मूल' है, 'जीतकल्प' मे 'मूल+भाष्य' है और 'पंचकल्प'मे तो 'भाष्य' ही है |

✤ हमारा ये प्रयास क्यों? ✤ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, ४५-आगम सटीक भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोमें प्रकाशित करवाए है, किन्तु लोगो की *[पूर्वाचार्य]* पूज्य श्री के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरुप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने इसी प्रत को स्केन करवाई, उसके बाद एक स्पेशियल फोरमेट बनवाया, जिसमे बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी, ऊपर शीर्षस्थानमे आगम का नाम, फिर अध्ययन और मूलसूत्र के क्रमांक आदि लिख दिए, ताँकि पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा अध्ययन एवं सूत्र चल रहे है उसका सरलता से ज्ञान हो शके, बायीं तरफ आगम का क्रम और इसी प्रत का सूत्रक्रम दिया है, उसके साथ वहाँ 'दीप अनुक्रम' भी दिया है, जिससे हमारे प्राकृत, संस्कृत, हिंदी गुजराती, इंग्लिश आदि सभी आगम प्रकाशनोमें प्रवेश कर शके | हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढते हुए ही है, इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है, मगर प्रत में उद्देशक, गाथा और सूत्रो के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ कौंस [-] दिए है और जहां गाथा है वहाँ ||-|| ऐसी दो लाइन खींची है या फिर गाथा शब्द लिख दिया है |

हमने एक अनुक्रमणिका भी बनायी है, जिसमे प्रत्येक अध्ययन /उद्देशक, मूल आदि लिख दिये है और साथमें इस सम्पादन के पृष्ठांक भी दे दिए है, जिससे अभ्यासक व्यक्ति अपने चहिते अध्ययन या विषय तक आसानी से पहुँच शकता है | अनेक पृष्ठ के नीचे विशिष्ठ फूटनोट भी लिखी है, जहां उस पृष्ठ पर चल रहे ख़ास विषयवस्तु की, मूल प्रतमें रही हुई कोई-कोई मुद्रण-भूल की या क्रमांकन-भूल सम्बन्धी जानकारी प्राप्त होती है |

शासनप्रभावक पूज्य आचार्यश्री हर्षसागरसूरिजी म०सा० की प्रेरणासे और श्री वर्धमान जैन आगममंदिर, पालिताणा की संपूर्ण द्रव्य सहाय से ये 'सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि' भाग-२७ का मुद्रण हुआ है, हम उन के प्रति हमारा आभार व्यक्त करते है |

.....मुनि दीपरत्नसागर.

[३३] श्री मरणसमाधि (प्रकीर्णकसूत्रम्-१०)

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

“मरणसमाधि” मूलं एवं छाया

[मूलं एवं संस्कृतछाया]

[आद्य संपादकश्री]

पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म॰ सा॰

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D.,श्रुतमहर्षि)

28/07/2017, शुक्रवार, २०७३ श्रावण शुक्ल ५ ‘सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि’ श्रेणि भाग-२७

आगम (३३)	“मरणसमाधि” – प्रकीर्णकसूत्र-१० (मूलं+संस्कृतछाया) ---------- मूलं [१]----------
प्रत सूत्रांक ॥१॥ दीप अनुक्रम [१]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया
	अथ मरणविधि: आरभ्यते

अथ मरणसमाधिः ॥ १० ॥

तिहुयणसरीरिवंदं सप्प (संघ) वयणरयणमंगलं नमिउं । समणस्स उत्तमट्ठे मरणविहीसंगहं वुच्छं ॥ १ ॥ ॥ १२३६ ॥ सुणह सुयसारनिहसं ससमयपरसमयवायनिम्मायं । सीसो समणगुणड्ढं परिपुच्छइ वायगं कंचि ॥ २ ॥ १२३७ ॥ अभिजाइसत्तविक्कमसुयसीलविमुत्तिखंतिगुणकलियं । आयारविणयमद्दवविज्जाचरणागर-

---

अथ मरणसमाधिः ॥ त्रिभुवनशरीरिवन्द्यं सत्प्रवचनरचनामंगलं नत्वा । श्रमणस्योत्तमार्थाय मरणविधिसंग्रहं वक्ष्ये ॥ १ ॥ शृणुत श्रुतसारनिकषं स्वसमयपरसमयवादनिष्णातं । श्रमणगुणाढ्यं कंचित् वाचकं शिष्यः परिपृच्छति ॥२॥ अभिजातिसत्त्वविक्रमश्रुतशीलविमु-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मुदारं ॥ ३ ॥ १२३८ ॥ कित्तीगुणगब्भहरं जसखाणिं तवनिहिं सुयसमिद्धं । सीलगुणनाणदंसणचरित्तरयणागरं धीरं ॥ ४ ॥ १२३९ ॥ तिविहं तिकरणसुद्धं मयरहियं दुविहठाण पुणरत्तं (रुट्ठं)। विणएण कमविसुद्धं चउस्सिरं बारसावत्तं ॥ ५ ॥ १२४० ॥ दुओणयं अहाजायं एयं काऊण तस्स किइकम्मं । भत्तीइ भरियहियओ हरिसवसुब्भिन्नरोमंचो ॥ ६ ॥ १२४१ ॥ उवएसहेउकुसलं तं पवयणरयणसिरिधरं भणइ । इच्छामि जाणिउं जे मरणसमाहिं समासेणं ॥ ७ ॥ १२४२ ॥ अब्भुज्जुयं विहारं इच्छं जिणदेसियं विउपसत्थं । नाउं महापुरिसदेसियं तु अब्भुज्जुयं मरणं ॥ ८ ॥ १२४३ ॥ तुब्भित्थ सामि! सुअजलहिपारगा समणसंघनिज्जवया । तुज्झं खु पायमूले सामन्नं उज्जमिस्सामि ॥ ९ ॥ १२४४ ॥ सो भरियमहुरजलहरगंभीरसरो

क्तिक्षान्तिगुणकलितं । आचारविनयमार्दवविद्याचरणाकरमुदारं ॥ ३ ॥ कीर्तिगुणगर्भधरं यशःस्वानिं तपोनिधिं श्रुतसमिद्धं । शीलगुणज्ञानदर्शनचारित्ररत्नाकरं धीरं ॥ ४ ॥ त्रिविधत्रिकरणशुद्धं मदरहितं द्विविधे स्थाने पुना रक्तं (रुष्टं) । विनयेन क्रमविशुद्धं चतुश्शिरो द्वादशावर्त्तं ॥ ५ ॥ व्यवनतं यथाजातं एतादृशं कृतिकर्म तस्य कृत्वा । भक्त्या भृतहृदयो हर्षवशोद्भिन्नरोमाञ्चः ॥ ६ ॥ उपदेशहेतुकुशलं तं प्रवचनरत्नश्रीगृहिकं भणति । इच्छामि ज्ञातुं समासेन मरणसमाधिं ॥ ७ ॥ अभ्युद्यतं विहारमिच्छामि जिनदेशितं विद्वत्प्रशस्तं । ज्ञातुं महापुरुषदेशितं अभ्युद्यतं मरणं (इच्छामि) ॥ ८ ॥ यूयमत्र स्वामिनः श्रुतजलधिपारगाः श्रमणसंघनिर्यामकाः । युष्माकमेव पादमूले श्रामण्यमुद्यापयिष्यामि (० मुद्यंस्यामि) ॥ ९ ॥ स भृतजलधरमधुरगंभीरस्वरो निपण्णो भणति । शृणु इदानीं धर्मवत्सला

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ||१०|| दीप अनुक्रम [१०]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया

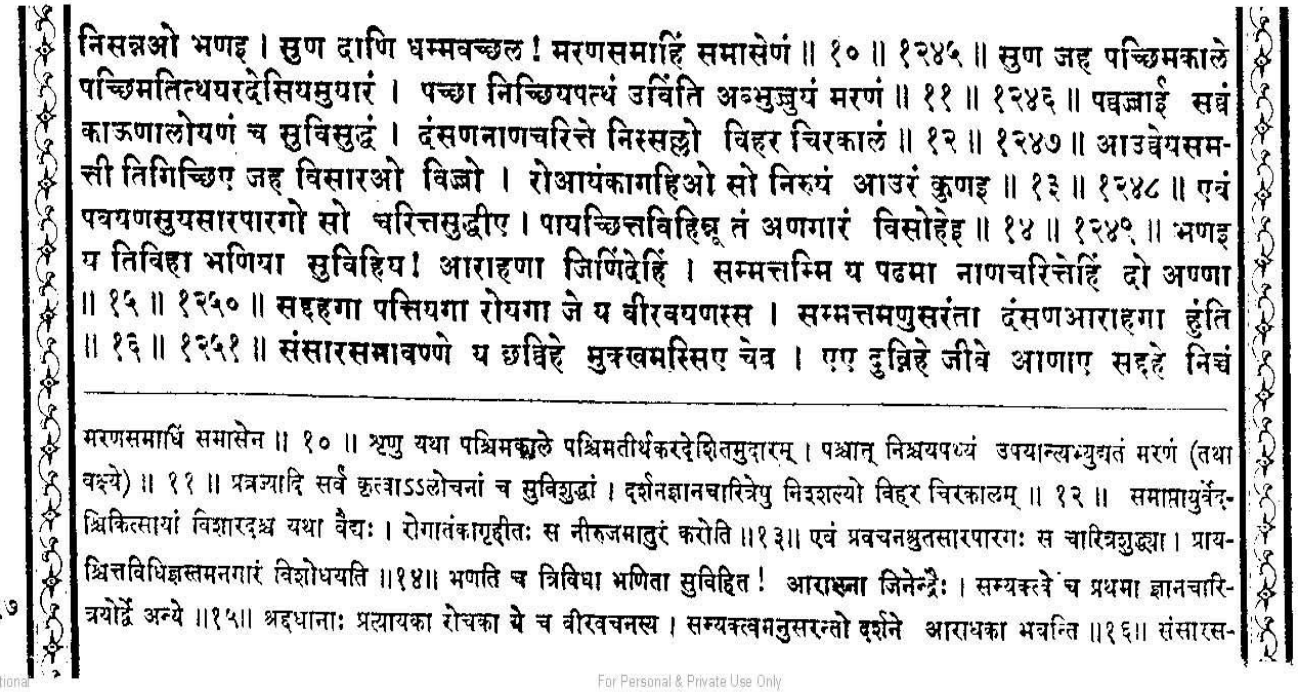

निसन्नओ भणइ । सुण दाणि धम्मवच्छल ! मरणसमाहिं समासेणं ॥ १० ॥ १२४५ ॥ सुण जह पच्छिमकाले पच्छिमतित्थयरदेसियमुयारं । पच्छा निच्छियपत्थं उविंति अब्भुज्जुयं मरणं ॥ ११ ॥ १२४६ ॥ पवज्जाई सव्वं काऊणालोयणं च सुविसुद्धं । दंसणनाणचरित्ते निस्सल्लो विहर चिरकालं ॥ १२ ॥ १२४७ ॥ आउवेयसमत्ती तिगिच्छिए जह विसारओ विज्जो । रोआयंकागहिओ सो निरुयं आउरं कुणइ ॥ १३ ॥ १२४८ ॥ एवं पवयणसुयसारपारगो सो चरित्तसुद्धीए । पायच्छित्तविहिन्नू तं अणगारं विसोहेइ ॥ १४ ॥ १२४९ ॥ भणइ य तिविहा भणिया सुविहिय! आराहणा जिणिंदेहिं । सम्मत्तम्मि य पढमा नाणचरित्तेहिं दो अण्णा ॥ १५ ॥ १२५० ॥ सद्दहगा पत्तियगा रोयगा जे य वीरवयणस्स । सम्मत्तमणुसरंता दंसणआराहगा हुंति ॥ १६ ॥ १२५१ ॥ संसारसमावण्णे य छविहे मुक्खमस्सिए चेव । एए दुविहे जीवे आणाए सद्दहे निच्चं

मरणसमाधिं समासेन ॥ १० ॥ शृणु यथा पश्चिमकाले पश्चिमतीर्थकरदेशितमुदारम् । पश्चात् निश्चयपथ्यं उपयान्त्यभ्युद्यतं मरणं (तथा वक्ष्ये) ॥ ११ ॥ प्रव्रज्यादि सर्वं कृत्वाऽऽलोचनां च सुविशुद्धां । दर्शनज्ञानचारित्रेषु निश्शल्यो विहर चिरकालम् ॥ १२ ॥ समाप्तायुर्वेदश्चिकित्सायां विशारदश्च यथा वैद्यः । रोगातंकागृहीतः स नीरुजमातुरं करोति ॥१३॥ एवं प्रवचनश्रुतसारपारगः स चारित्रशुद्ध्या । प्रायश्चित्तविधिज्ञस्तमनगारं विशोधयति ॥१४॥ भणति च त्रिविधा भणिता सुविहित ! आराधना जिनेन्द्रैः । सम्यक्त्वे च प्रथमा ज्ञानचारित्रयोर्द्वे अन्ये ॥१५॥ श्रद्दधानाः प्रत्यायका रोचका ये च वीरवचनस्य । सम्यक्त्वमनुसरन्तो दर्शने आराधका भवन्ति ॥१६॥ संसारस-

च. स. १७

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	अथ आराधना एवं मरणस्य स्वरुपम् कथयते

आगम (३३)	“मरणसमाधि” – प्रकीर्णकसूत्र-१० (मूलं+संस्कृतछाया) ---------- मूलं [१८]----------
प्रत सूत्रांक ॥१८॥ दीप अनुक्रम [१८]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया

॥ १७ ॥ १२५२ ॥ धम्माधम्मागासं च पुग्गले जीवमत्थिकायं च । आणाइ सद्दहंता सम्मत्ताराहगा भणिया ॥ १८ ॥ १२५३ ॥ अरहंतसिद्धचेइयगुरूसु सुयधम्मसाहुवग्गे य । आयरियउवज्झाए पवयणे सव्वसंघे य ॥ १९ ॥ १२५४ ॥ एएसु भत्तिजुत्ता पूयंता अहरहं अणण्णमणा । सम्मत्तमणुसरिन्ता परित्तसंसारिया हुंति ॥ २० ॥ १२५५ ॥ सुविहिय! इमं पइण्णं असद्दहंतेहिं णेगजीवेहिं । बालमरणाणि तीए मयाइं काले अणंताइं ॥ २१ ॥ १२५६ ॥ एगं पंडियमरणं मरिऊण पुणो बहूणि मरणाणि । न मरंति अप्पमत्ता चरित्तमाराहियं जेहिं ॥ २२ ॥ १२५७ ॥ दुविहम्मि अहक्खाए सुसंवुडा पुव्वसंगओमुक्का । जे उ चयंति सरीरं पंडियमरणं मयं तेहिं ॥ २३ ॥ १२५८ ॥ एयं पंडियमरणं जे धीरा उवगया उवाएणं । तस्स उवाए उ इमा परिक-

---

मापन्नांश्च पड्विधान् मोक्षमाश्रितांश्चैव । एतान् द्विविधान् जीवान् आज्ञया श्रद्दधाति नित्यम् ॥ १७ ॥ धर्माधर्माकाशान् च पुद्गलान् जीवास्तिकायं च । आज्ञया श्रद्दधानाः सम्यक्त्वाराधका भणिताः ॥ १८ ॥ अर्हत्सिद्धचैत्यगुरुषु श्रुतधर्मे साधुवर्गे च । आचार्ये उपाध्याये प्रवचने सर्वसंघे च ॥ १९ ॥ एतेषु भक्तियुक्ताः(तान्)पूजयन्तः अहरहः अनन्यमनसः । सम्यक्त्वमनुसरन्तः परित्तसंसारिका भवन्ति ॥ २० ॥ सुविहित! इमां प्रतिज्ञां (इदं प्रकीर्णकं) अश्रद्दधानैरनेकजीवैः । बालमरणानि अतीते मृतानि कालेऽनन्तानि ॥ २१ ॥ एकं पंडितमरणं मृत्वा पुनर्बहूनि मरणानि । न म्रियंते अप्रमत्ताः चारित्रमाराद्धं यैः ॥ २२ ॥ द्विविधे यथाख्याते सुसंवृताः पूर्वसंगोन्मुक्ताः । ये तु त्यजन्ति शरीरं पंडितमरणं मृतं तैः ॥२३॥ एतत् पंडितमरणं ये धीरा उपगता उपायेन । तस्योपाये इमं तु परिकर्मविधिं तु योज-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

म्मविही उ जुंजीया ॥ २४ ॥ १२५९ ॥ जे कुम्म (केस) संखताडणमारुअजिअगगणपंकयतरूणं । सरिकप्पा सुयकप्पियआहारविहारचिट्ठागा ॥ २५ ॥ १२६० ॥ निच्चं तिदंडविरया तिगुत्तिगुत्ता तिसल्लनिसल्ला । तिविहेण अप्पमत्ता जगजीवदयावरा समणा ॥ २६ ॥ १२६१ ॥ पंचमहव्वयसुत्थिय संपुण्णचरित्त सीलसंजुत्ता । तह तह मया महेसी हवंति आराहगा समणा ॥ २७ ॥ १२६२ ॥ इक्कं अप्पाणं जाणिऊण काऊण अत्तहिययं च । तो नाणदंसणचरित्ततवसुट्ठिया मुणी हुंति ॥ २८ ॥ १२६३ ॥ परिणामजोगसुद्धा दोसु य दो दो निरासयं पत्ता । इहलोए परलोए जीवियमरणासए चेव ॥ २९ ॥ १२६४ ॥ संसारबंधणाणि य रागदोसनियलाणि छित्तूणं । सम्मद्दंसणसुनिसियसुतिक्खधिइमंडलग्गेणं ॥ ३० ॥ १२६५ ॥ दुप्पणिहिए य पि-

येत् ॥ २४ ॥ ये कूर्म (केशमुक्ताः) शंख (वन्निरुपलेपाः) ताडन (सहाः) मारुतं (वद्प्रतिबद्धाः) जीव (वद्प्रतिहतगतयः) गगन(वन्निरालम्बाः) पंकज(वत्त्यक्तकामभोगाः) तरु(वदाश्रणीयाः) एभिः । सदृगाचाराः श्रुतकल्पिताहारविहारचेष्टाकाः ॥२५॥ नित्यं त्रिदण्डविरताः त्रिगुप्तिगुप्ताश्शल्यनिश्शल्याः । त्रिविधेनाप्रमत्ता जगज्जीवदयापराः श्रमणाः ॥२६॥ पंचमहाव्रतसुस्थिताः संपूर्णचारित्राःशीलसंयुक्ताः । तथा तथा मृता महर्षयो भवन्त्याराधकाः श्रमणाः ॥ २७ ॥ एकमात्मानं ज्ञात्वा कृत्वा चात्महितं च । ततो ज्ञानदर्शनचारित्रतपःसुस्थिता मुनयो भवन्ति ॥ २८ ॥ शुद्धपरिणामयोगाः द्वयोश्च (कामभोगयोः) द्वे स्पर्शनरसने द्वे चक्षुःश्रोत्रे दान्ते निराश्रयं च घ्राणं कृतं । इहलोके च परलोके च जीविते मरणे च (याः) आशंसाः (भीर्तियश्च ताः त्यक्ताः) ॥२९॥ संसारबन्धनानि च रागद्वेषनिगडान् छित्त्वा सम्यग्दर्शनसुनिशितसुतीक्ष्णधृतिमंडलाग्रेण ॥३०॥ दुष्प्रणिधीश्च पिधाय त्रीन् त्रिभ्य एव गौरवेभ्यो विमुक्ताः । कार्यं मनो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

हिऊण तिन्नि तिहिं चेव ग्गरवविमुक्का । कायं मणं च वायं मणवयसा कायसा चेव ॥ ३१ ॥ १२६६ ॥ तव-परसुणा य छित्तूण तिण्णि उजुखंतिविहियनिसिएणं । दुग्गइमग्गा नरिएण मणवयसाकायए दंडे ॥ ३२ ॥ ॥ १२६७ ॥ तं नाऊण कसाए चउरो पंचहि य पंच हन्तूणं । पंचासवे उदिण्णे पंचहि य महव्वयगुणेहिं ॥३३॥ ॥ १२६८ ॥ छज्जीवनिकाए रक्खिऊण छलदोसवज्जिया जइणो । तिगलेसापरिहीणा पच्छिमलेसातिगजुआ य ॥ ३४ ॥ १२६९ ॥ एक्कगदुगतिगचउपणसत्तट्ठगनवदसगठाणेसुं । असुहेसु विप्पहीणा सुभेसु सय संठिया जे उ ॥ ३५ ॥ १२७० ॥ वेयणवेयावच्चे इरियट्ठाए य संजमट्ठाए । तह पाणवत्तियाए छट्ठं पुण धम्मचिंताए ॥ ३६ ॥ १२७१ ॥ छसु ठाणेसु इमेसु य अण्णयरे कारणे समुप्पण्णे । कडजोगी आहारं करंति जयणानिमित्तं तु ॥ ३७ ॥ १२७२ ॥ जोएसु किलायंती सरीरसंकप्पचेट्ठमचयंता । अविकप्पऽवज्जभीरू उविंति अब्भु-

वाचं च मनोवचनकायगुप्तिभिरेव निरुन्ध्यात् ॥ ३१ ॥ तपःपरशुना च छित्त्वा त्रीन् दुर्गतिमार्गान् ऋजुक्षान्तिविहिततैक्ष्ण्येन । पौरुषेण मनोवचःकायान् दण्डान् ॥ ३२ ॥ तत् ज्ञात्वा कषायांश्चतुरः पंचभिश्च पंच हत्वा । पंचाश्रवानुदीर्णान् पंचभिश्च महाव्रतगुणैः ॥ ३३ ॥ षड्जीवनिकायान् रक्षयित्वा दोषषट्कवर्जिता यतयः । त्रिकलेश्यापरिहीणाः पश्चिमलेश्यात्रिकयुताश्च ॥ ३४ ॥ एकद्वित्रिचतुःपंचसप्ताष्ट-नवदशस्थानेभ्यः अशुभेभ्यो विप्रहीणाः शुभेषु च सदा संस्थिता ये तु ॥ ३५ ॥ वेदनोपशमाय वैयावृत्त्याय ईर्यार्थाय च संयमार्थाय । तथा प्राणप्रत्ययाय षष्ठं पुनर्धर्मचिन्तार्थं ॥ ३६ ॥ षट्सु कारणेष्वेषु चान्यतरस्मिन् कारणे समुत्पन्ने । कृतयोगिन आहारं कुर्वन्ति यतनानिमित्तं तु ॥ ३७ ॥ योगेषु ह्लाम्यत्सु शरीरसंकल्पचेष्टामशक्नुवन्तः । अविकल्पा अवद्यभीरव उपयान्त्यभ्युद्यतं मरणं ॥ ३८ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ||३८|| दीप अनुक्रम [३८]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया

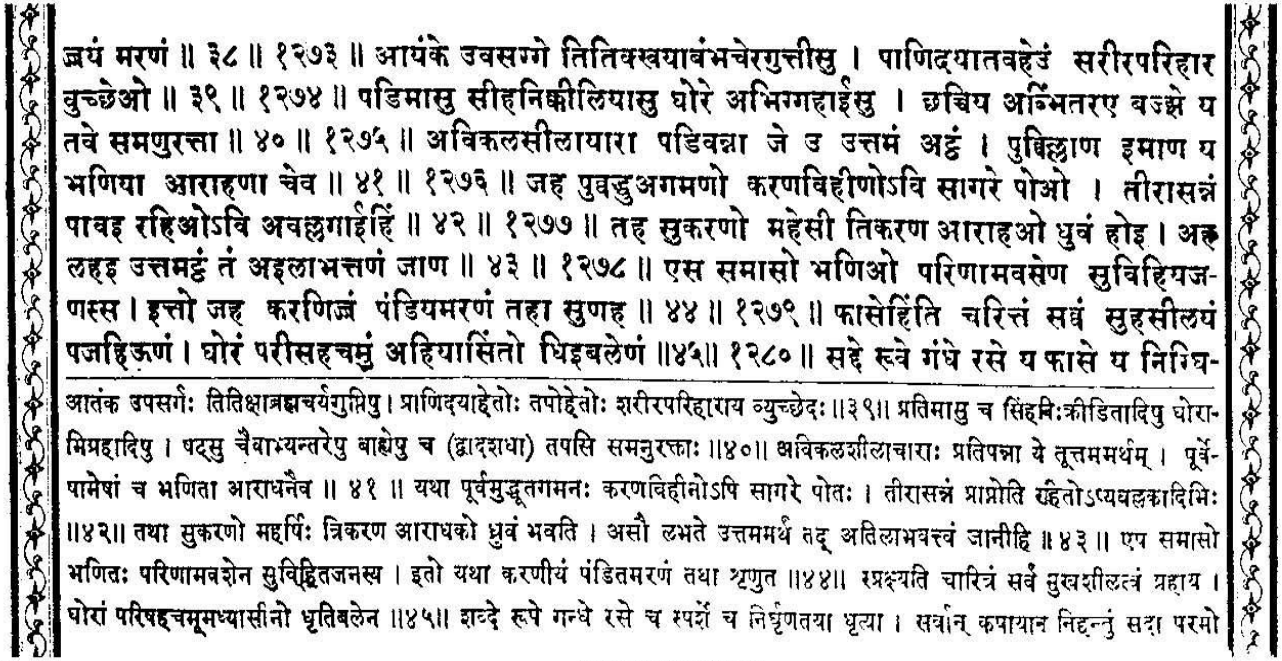

ञ्चयं मरणं ॥ ३८ ॥ १२७३ ॥ आयंके उवसग्गे तितिक्खयाबंभचेरगुत्तीसु । पाणिदयातवहेउं सरीरपरिहार वुच्छेओ ॥ ३९ ॥ १२७४ ॥ पडिमासु सीहनिक्कीलियासु घोरे अभिग्गहाईसु । छबिय अब्भितरए बज्झे य तवे समणुरत्ता ॥ ४० ॥ १२७५ ॥ अविकलसीलायारा पडिवन्ना जे उ उत्तमं अट्ठं । पुव्विल्लाण इमाण य भणिया आराहणा चेव ॥ ४१ ॥ १२७६ ॥ जह पुवद्धुअगमणो करणविहीणोऽवि सागरे पोओ । तीरासन्नं पावइ रहिओऽवि अवल्लगाईहिं ॥ ४२ ॥ १२७७ ॥ तह सुकरणो महेसी तिकरण आराहओ धुवं होइ । अल्ल लहइ उत्तमट्ठं तं अइलाभत्तणं जाण ॥ ४३ ॥ १२७८ ॥ एस समासो भणिओ परिणामवसेण सुविहियजणस्स । इत्तो जह करणिज्जं पंडियमरणं तहा सुणह ॥ ४४ ॥ १२७९ ॥ फासेहिंति चरित्तं सव्वं सुहसीलयं पजहिऊणं । घोरं परीसहचमुं अहियासिंतो धिइबलेणं ॥४५॥ १२८० ॥ सद्दे रूवे गंधे रसे य फासे य निग्घि-

---

आतंक उपसर्गः तितिक्षाब्रह्मचर्यगुप्तिषु । प्राणिदयाहेतोः तपोहेतोः शरीरपरिहाराय व्युच्छेदः ॥३९॥ प्रतिमासु च सिंहनिःक्रीडितादिषु घोराभिग्रहादिषु । षट्सु चैवाभ्यन्तरेषु बाह्येषु च (द्वादशधा) तपसि समनुरक्ताः ॥४०॥ अविकलशीलाचाराः प्रतिपन्ना ये तूत्तममर्थम् । पूर्वेषामेषां च भणिता आराधनैव ॥ ४१ ॥ यथा पूर्वमुद्भूतगमनः करणविहीनोऽपि सागरे पोतः । तीरासन्नं प्राप्नोति रहितोऽप्यवल्लकादिभिः ॥४२॥ तथा सुकरणो महर्षिः त्रिकरण आराधको ध्रुवं भवति । असौ लभते उत्तममर्थं तद् अतिलाभवत्त्वं जानीहि ॥४३॥ एष समासो भणितः परिणामवशेन सुविहितजनस्य । इतो यथा करणीयं पंडितमरणं तथा शृणुत ॥४४॥ स्पक्ष्यति चारित्रं सर्वं सुखशीलत्वं प्रहाय । घोरां परिषहचमूमध्यासीनो धृतिबलेन ॥४५॥ शब्दे रूपे गन्धे रसे च स्पर्शे च निर्घृणतया धृत्या । सर्वान् कषायान् निहन्तुं सदा परमो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

णधिईए । सव्वेसु कसाएसु य निहंतु परमो सया होहि ॥ ४६ ॥ १२८१ ॥ चइऊण कसाए इंदिए य सव्वे य गारवे हंतुं । तो मलियरागदोसो करेह आराहणासुद्धिं ॥ ४७ ॥ १२८२ ॥ दंसणनाणचरित्ते पव्वज्जाईसु जो य अइयारो । तं सव्वं आलोयहि निरवसेसं पणिहियप्पा ॥४८॥ १२८३ ॥ जह कंटएण विद्धो सव्वंगे वेय-णादिओ होइ । तह चेव उद्धियंमि उ निसल्लो निव्वओ होइ ॥ ४९ ॥ १२८४ ॥ एवमणुद्धियदोसो माइल्लो तेण दुक्खिओ होइ । सो चेव चत्तदोसो सुविसुद्धो निव्वओ होइ ॥ ५० ॥ १२८५ ॥ रागद्दोसाभिहया ससल्लमरणं मरंति जे मूढा । ते दुक्खसल्लबहुला भमंति संसारकंतारे ॥ ५१ ॥ १२८६ ॥ जे पुण तिगारवजढा निस्सल्ला दंसणे चरित्ते य । विहरंति मुक्कसंगा खवंति ते सव्वदुक्खाइं ॥ ५२ ॥ १२८७ ॥ सुचिरमवि संकिलिट्ठं विहरितं झाणसंवरविहीणं । नाणी संवरजुत्तो जिणइ अहोरत्तमित्तेणं ॥ ५३ ॥ १२८८ ॥ जं निज्जरेइ

भव ॥ ४६ ॥ त्यक्त्वा कषायान् इन्द्रियाणि च सर्वाणि च गौरवाणि हत्वा । ततो मर्दितरागद्वेषः कुरुष्वाराधनाशुद्धिं ॥ ४७ ॥ दर्शन-ज्ञानचारित्रेषु प्रव्रज्यादिषु यश्चातिचारः । तं सर्वं आलोचय निरवशेषं प्रणिहितात्मा ॥ ४८ ॥ यथा कण्टकेन विद्धः सर्वेष्वंगेषु वेदना-र्दितो भवति । तथैव उद्धृते निश्शल्यो निर्वृतो (निर्वातः) भवति ॥४९॥ एवमनुद्धृतदोषो मायावी तेन दुःखितो भवति । स एव त्यक्तदोषः सुविशुद्धो निर्वृतो (निर्वातः) भवति ॥५०॥ रागद्वेषाभिहताः सशल्यं मरणं म्रियन्ते ये मूढाः । ते दुःखिनो बहुशल्या भ्राम्यन्ति संसारकान्तारे ॥ ५१ ॥ ये पुनस्त्रिगौरवरहिता निश्शल्या दर्शने चारित्रे च । विहरन्ति मुक्तसंगाः क्षपयन्ति तानि सर्वदुःखानि ॥ ५२ ॥ सुचिरमपि संक्लिष्टं विहृतं ध्यानसंवरविहीनं । ज्ञानी संवरयुक्तो जयति अहोरात्रमात्रेण ॥ ५३ ॥ यद् निर्जरयति कर्म असंवृतः सुबहुनाऽपि कालेन ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ||५४|| दीप अनुक्रम [५४]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया

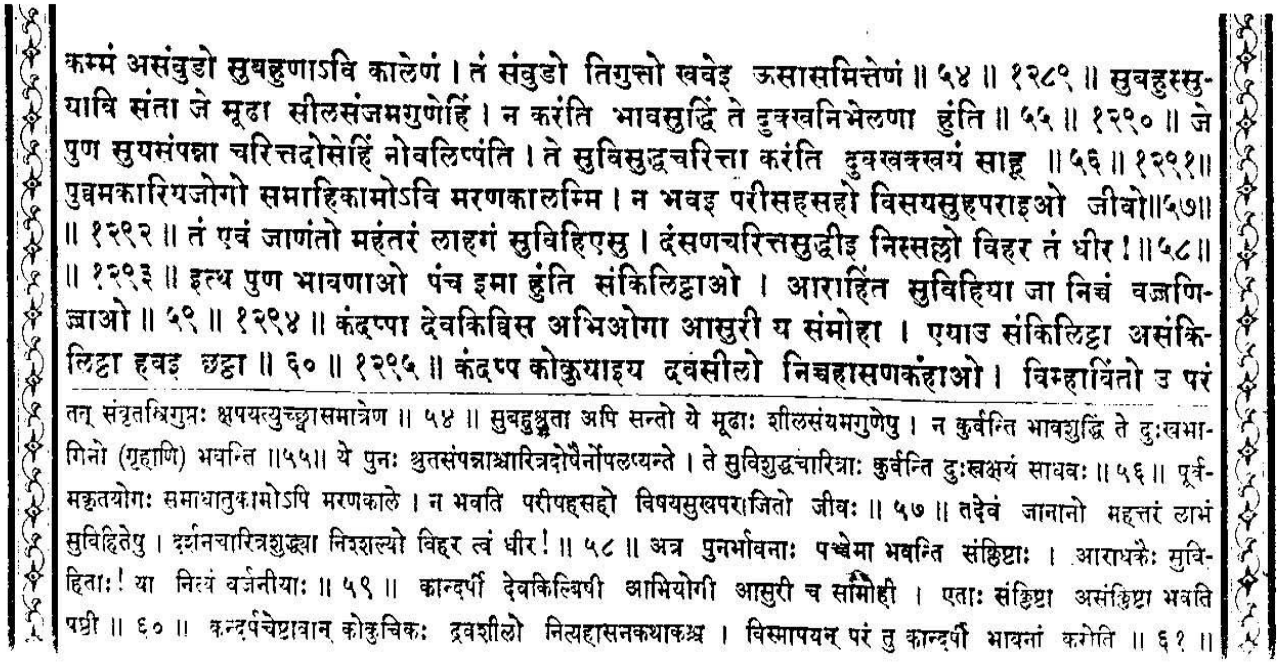

कम्मं असंवुडो सुबहुणाऽवि कालेणं । तं संवुडो तिगुत्तो खवेइ ऊसासमित्तेणं ॥ ५४ ॥ १२८९ ॥ सुबहुस्सुयावि संता जे मूढा सीलसंजमगुणेहिं । न करंति भावसुद्धिं ते दुक्खनिभेलणा हुंति ॥ ५५ ॥ १२९० ॥ जे पुण सुयसंपन्ना चरित्तदोसेहिं नोवलिप्पंति । ते सुविसुद्धचरित्ता करंति दुक्खक्खयं साहू ॥ ५६ ॥ १२९१ ॥ पुव्वमकारियजोगो समाहिकामोऽवि मरणकालम्मि । न भवइ परीसहसहो विसयसुहपराइओ जीवो॥५७॥ ॥ १२९२ ॥ तं एवं जाणंतो महंतरं लाहगं सुविहिएसु । दंसणचरित्तसुद्धीइ निस्सल्लो विहर तं धीर ! ॥ ५८ ॥ ॥ १२९३ ॥ इत्थ पुण भावणाओ पंच इमा हुंति संकिलिट्ठाओ । आराहिंत सुविहिया जा निच्चं वज्जणिज्जाओ ॥ ५९ ॥ १२९४ ॥ कंदप्पा देवकिबिस अभिओगा आसुरी य संमोहा । एयाउ संकिलिट्ठा असंकिलिट्ठा हवइ छट्ठा ॥ ६० ॥ १२९५ ॥ कंदप्प कोकुयाइय दवसीलो निच्चहासणकंहाओ । विम्हावितो उ परं

तत् संवृतस्त्रिगुप्तः क्षपयत्युच्छ्वासमात्रेण ॥ ५४ ॥ सुबहुश्रुता अपि सन्तो ये मूढाः शीलसंयमगुणेषु । न कुर्वन्ति भावशुद्धिं ते दुःखभागिनो (गृहाणि) भवन्ति ॥५५॥ ये पुनः श्रुतसंपन्नाश्चारित्रदोषैर्नोपलप्यन्ते । ते सुविशुद्धचारित्राः कुर्वन्ति दुःखक्षयं साधवः ॥ ५६ ॥ पूर्वमकृतयोगः समाधातुकामोऽपि मरणकाले । न भवति परीषहसहो विषयसुखपराजितो जीवः ॥ ५७ ॥ तदेवं जानानो महत्तरं लाभं सुविहितेषु । दर्शनचारित्रशुद्ध्या निश्शल्यो विहर त्वं धीर! ॥ ५८ ॥ अत्र पुनर्भावनाः पञ्चेमा भवन्ति संक्लिष्टाः । आराधकैः सुविहिताः! या नित्यं वर्जनीयाः ॥ ५९ ॥ कान्दर्पी देवकिल्बिषी आभियोगी आसुरी च सांमोही । एताः संक्लिष्टा असंक्लिष्टा भवति षष्ठी ॥ ६० ॥ कन्दर्पचेष्टावान् कोकुचिकः द्रवशीलो नित्यहासनकथाकश्च । विस्मापयन् परं तु कान्दर्पी भावनां करोति ॥ ६१ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कंदप्पं भावणं कुणइ ॥ ६१ ॥ १२९६ ॥ नाणस्स केवलीणं धम्मायरियस्स संघसाहूणं । माई अवण्णवाई किब्बिसियं भावणं कुणइ ॥ ६२ ॥ १२९७ ॥ मंताभिओगं कोउग भूईकम्मं च जो जणे कुणइ । सायरसइहि-हेउं अभिओगं भावणं कुणइ ॥ ६३ ॥ १२९८ ॥ अणुबद्धरोसवुग्गहसंपत्त तहा निमित्तपडिसेवी । एएहिं कारणेहिं आसुरियं भावणं कुणइ ॥ ६४ ॥ १२९९ ॥ उम्मग्गदेसणा नाण(मग्ग)दूसणा मग्गविप्पणासो अ । मोहेण मोहयंतंसि भावणं जाण सम्मोहं ॥ ६५ ॥ १३०० ॥ एयाउ पंच वज्जिय इणमो छट्ठीइ विहर तं धीर! । पंचसमिओ तिगुत्तो निस्संगो सव्वसंगेहिं ॥ ६६ ॥ १३०१ ॥ एयाए भावणाए विहर विसुद्धाइ दीह-कालम्मि । काऊण अंत सुद्धिं दंसणनाणे चरित्ते य ॥ ६७ ॥ १३०२ ॥ पंचविहं जे सुद्धिं पंचविहविवेगसंजु-यमकाउं । इह उवणमंति मरणं ते उ समाहिं न पाविंति ॥ ६८ ॥ १३०३ ॥ पंचविहं जे सुद्धिं पत्ता निखि-

ज्ञानस्य केवलिनां धर्माचार्यस्य संघस्य साधूनां च । मायी अवर्णवादी किल्बिषिकीं भावनां करोति ॥६२॥ मंत्राभियोगौ कौतुकं भूतिकर्म च यो जनेषु करोति । सातरसर्द्धिहेतोराभियोगीं भावनां करोति ॥६३॥ अनुबद्धरोषव्युद्ग्रहसंप्राप्तास्तथा निमित्तप्रतिसेविनः । एतैः (एव) कारणै-रासुरीं भावनां करोति ॥६४॥ उन्मार्गदेशना ज्ञान(मार्ग)दूषणं मार्गविप्रणाशश्च (तान् कुर्वति) । मोहेन च मोहयति भावनां जानीहि संमोहीम् ॥६५॥ एताः पंच वर्जयित्वा अनया पष्ठया विहर त्वं धीर! । पञ्चसमितस्त्रिगुप्तो निस्संगः सर्वसंगैः ॥६६॥ एतया भावनया विशुद्धया दीर्घकालं विहर । कृत्वा अन्त्ये शुद्धिं दर्शनज्ञानचारित्रेषु च ॥ ६७ ॥ पंचविधां ये शुद्धिं पंचविधविवेकसंयुतामकृत्वा । इहोपगच्छन्ति मरणं ते समाधिं न प्राप्नुवन्ति ॥ ६८ ॥ पंचविधां ये शुद्धिं प्राप्ता निखिलेषु निश्चयमतिकाः । पञ्चविधं च विवेकं ते एव समाधिं परं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

लेण निच्छियमईया । पंचविहं च विवेगं ते हु समाहिं परं पत्ता ॥ ६९ ॥ १३०४ ॥ लहिऊणं संसारे सुदुल्लहं कहवि माणुसं जम्मं । न लहंति मरणदुलहं जीवा धम्मं जिणक्खायं ॥ ७० ॥ १३०५ ॥ किच्छाहि पाविय-म्मिवि सामण्णे कम्मसत्तिओसन्ना । सीयंति सायदुलहा पंकोसन्नो जहा नागो ॥ ७१ ॥ १३०६ ॥ जह कागणीइ हेउं मणिरयणाणं तु हारए कोडिं । तह सिद्धसुहपरंमुहा अबुहा सज्जंति कामेसुं ॥ ७२ ॥ १३०७॥ चोरो रक्खसपहओ अत्थत्थी हणइ पंथियं मूढो । इय लिंगी सुहरक्खसपहओ विसयाउरो धम्मं ॥ ७३ ॥ ॥ १३०८॥ तेसुवि अलद्धपसरा अविसण्हा दुक्खिया गयमईया । समुविंति मरणकाले पगामभयभेरवं नरयं ॥ ७४ ॥ १३०९ ॥ धम्मो न कओ साहू न जेमिओ न य नियंसियं सण्हं । इण्हिं परं परासुत्ति य नेव य पत्ताइं सुक्खाइं ॥ ७५ ॥ १३१० ॥ साहूणं नोवकयं परलोयच्छेय संजमो न कओ । दुहओऽवि तओ विह-

---

प्राप्ताः ॥ ६९ ॥ लब्ध्वा संसारे सुदुर्लभं कथमपि मानुषं जन्म । न लभंते मरणे दुर्लभं जीवा धर्मं जिनाख्यातं ॥ ७० ॥ कष्टैः प्राप्ते-ऽपि श्रामण्ये कर्मशक्त्यवसन्नाः । सीदन्ति दुर्लभसाताः पंकावसन्नो यथा नागः ॥ ७१ ॥ यथा काकिण्या हेतोर्मणिरत्नानां तु हारयेत् कोटीं । तथा परोक्षसिद्धसौख्याः सज्यन्तेऽबुधाः कामेषु ॥ ७२ ॥ चौरो राक्षसग्रहतोऽर्थार्थी पांथं मूढो हन्ति । इति लिंगी सुखराक्षसग्र-हतो विषयातुरो धर्मं ॥७३॥ तेष्वपि अलब्धप्रसराः अविसृष्णा दुःखिता गतमतिकाः । समुपयान्ति मरणकालाद् (परं) प्रकामभयभैरवं नरकं ॥७४॥ धर्मो न कृतः साधुर्न जिमितः न च श्लक्ष्णं निवसितं । इदानीं परं परासुरिति च नैव च प्राप्तानि सौख्यानि ॥७५॥ साधुभ्यो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया

प्रत सूत्रांक ||७६||

दीप अनुक्रम [७६]

लो अह जम्मो धम्मरुक्खाणं ॥ ७६ ॥ १३११ ॥ दिक्खं मइले णा मोहमहावत्तसागराभिहया । तस्स अपडिक्कमंता मरंति ते बालमरणाइं ॥ ७७ ॥ १३१२ ॥ इय अवि ोहपउत्ता मोहं मोत्तूण गुरुसगासम्मि । आलोइय निस्सल्ला मरिउं आराहगा नेऽवि ॥ ७८ ॥ १३१३ ॥ इ विसेसो भण्णइ छलणा अवि नाम हुज्ज जिणकप्पो । किं पुण इयरमुणीणं तेण विही देसिओ इणमो ॥ ७९ ॥ १३१४ ॥ अप्पविहीणा जाहे धीरा सुयसारझरियपरमत्था । ते आयरिय विदिन्नं उविंति अब्भुज्ज मरणं ॥ ८० ॥ १३१५ ॥ आलोयणाइ १ संलेहणाइ २ खमणाइ ३ काल ४ उस्सग्गे ५ । उग्गासे ६ संथारे ७ निसग्ग ८ वेरग्ग ९ मुक्खाए १० ॥८१॥ ॥ १३१६ ॥ झाणविसेसो ११ लेसा १२ सम्मत्तं १३ पायगमणं १४ चेव । चउदसओ एस विही पढमो मरणंमि नायव्वो ॥ ८२ ॥ १३१७ ॥ विणओवयार माणस्स भंजणा पूयणा गुरुजणस्स । तित्थयराण य

नोपकृतं परलोकच्छेकः स्वयमत्र न कृतः । द्विधतोऽपि ततो विफलमिदं जन्म धर्मरूक्षाणां ॥ ७६ ॥ दीक्षां मलिनयन्तो मोहमहावर्त्तसागराभिहताः । तस्मादतिक्रान्तो क्रियन्ते ते बालमरणानि ॥ ७७ ॥ एवमपि मोहप्रयुक्ता मोहं मुक्त्वा गुरुसकाशे । आलोच्य निश्शल्या मर्तुं (प्रत्यलाः) आराधकास्तेऽपि ॥ ७८ ॥ अत्र विशेषो भण्यते छलनमपि नाम भवेत् जिनकल्पे । किं पुनरितर-मुनीनां? तेन विधिर्दर्शितोऽयम् ॥ ७९ ॥ यदाऽऽ (यतो) त्मविहीनास्तदा धीराः स्मृतश्रुतसागरपरमार्थाः । ते आचार्यविदत्तं मरणम-भ्युद्यतमुपयान्ति ॥ ८० ॥ आलोचना संलेखना क्षामणा काल उत्सर्गः । अवकाशः संस्तारकः निसर्गो वैराग्यं मोक्षः ॥ ८१ ॥ ध्यान-विशेषो लेश्या सम्यक्त्वं पादपोपगमनं चैव चतुर्दशक एष विधिः प्रथमे मरणे ज्ञातव्यः ॥ ८२ ॥ विनय उपचारो मानस्य भंगः

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ॥८३॥ दीप अनुक्रम [८३]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया

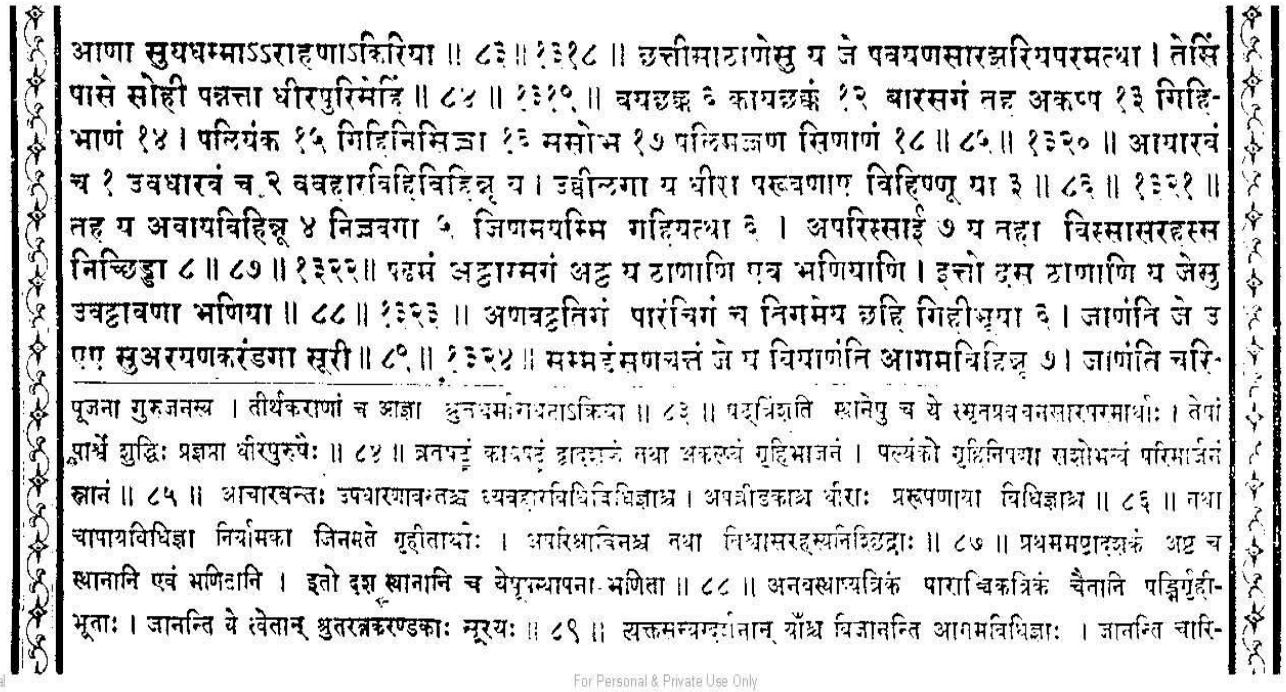

आणा सुयधम्माऽऽराहणाऽकिरिया ॥ ८३ ॥ १३१८ ॥ छत्तीसाठाणेसु य जे पवयणसारऽरियपरमत्था । तेसिं पासे सोही पन्नत्ता धीरपुरिसेहिं ॥ ८४ ॥ १३१९ ॥ वयछक्क ६ कायछक्कं १२ बारसगं तह अकप्प १३ गिहि-भाणं १४ । पलियंक १५ गिहिनिसिज्जा १६ ससोभ १७ पडिमज्जण सिणाणं १८ ॥ ८५ ॥ १३२० ॥ आयारवं च १ उवधारवं च २ ववहारविहिविहिन्नू य । उव्वीलगा य धीरा पन्नवणाए विहिण्णू या ३ ॥ ८६ ॥ १३२१ ॥ तह य अवायविहिन्नू ४ निज्जवगा ५ जिणमयम्मि गहियत्था ६ । अपरिस्साई ७ य तहा विस्सासरहस्स निच्छिड्डा ८ ॥ ८७ ॥ १३२२ ॥ पढमं अट्ठागमगं अट्ठ य ठाणाणि एव भणियाणि । इत्तो दस ठाणाणि य जेसु उवट्ठावणा भणिया ॥ ८८ ॥ १३२३ ॥ अणवट्ठतिगं पारंचिगं च तिगमेय छहि गिहीभूया ६ । जाणंति जे उ एए सुअरयणकरंडगा सूरी ॥ ८९ ॥ १३२४ ॥ सम्मद्दंसणचत्तं जे य वियाणंति आगमविहिन्नू ७ । जाणंति चरि-

पूजना गुरुजनस्य । तीर्थकराणां च आज्ञा श्रुतधर्माराधनाऽक्रिया ॥ ८३ ॥ षट्त्रिंशति स्थानेषु च ये स्मृतप्रवचनसारपरमार्थाः । तेषां पार्श्वे शुद्धिः प्रज्ञप्ता धीरपुरुषैः ॥ ८४ ॥ व्रतषट्कं कायषट्कं द्वादशकं तथा अकल्पः गृहिभाजनं । पल्यंको गृहिनिषद्या सशोभत्वं परिमार्जनं स्नानं ॥ ८५ ॥ आचारवन्तः उपधारणावन्तश्च व्यवहारविधिविधिज्ञाश्च । अपव्रीडकाश्च धीराः प्ररूपणाया विधिज्ञाश्च ॥ ८६ ॥ तथा चापायविधिज्ञा निर्यामका जिनमते गृहीतार्थाः । अपरिश्राविनश्च तथा विश्वासरहस्यनिश्छिद्राः ॥ ८७ ॥ प्रथममष्टादशकं अष्ट च स्थानानि एवं भणितानि । इतो दश स्थानानि च येषूपस्थापना भणिता ॥ ८८ ॥ अनवस्थाप्यत्रिकं पाराञ्चिकत्रिकं चैतानि षड्भिर्गृहीभूताः । जानन्ति ये खेतान् श्रुतरत्नकरण्डकाः सूरयः ॥ ८९ ॥ सम्यक्त्वरहितान् यॉश्च विजानन्ति आगमविधिज्ञाः । जानन्ति चारि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	अथ आचार्यस्य गुण-आदि वर्णयते

प्रत सूत्रांक ||९०|| दीप अनुक्रम [९०]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया

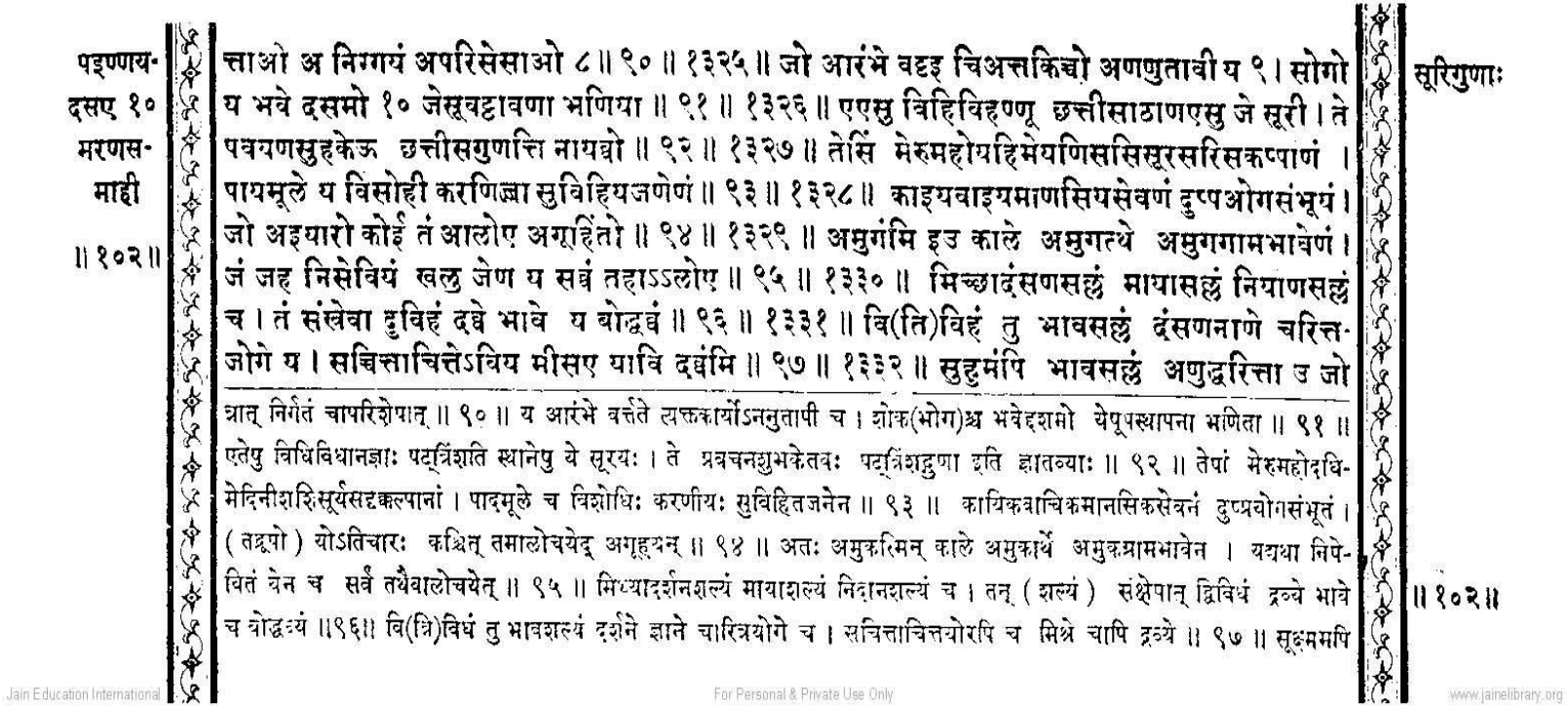

पइण्णय-दसए १० मरणस-माही

॥ १०२ ॥

त्ताओ अ निग्गयं अपरिसेसाओ ८ ॥ ९० ॥ १३२५ ॥ जो आरंभे वट्टइ चिअत्तकिच्चो अणणुतावी य ९ । सोगो य भवे दसमो १० जेसूवट्ठावणा भणिया ॥ ९१ ॥ १३२६ ॥ एएसु विहिविहण्णू छत्तीसाठाणएसु जे सूरी । ते पवयणसुहकेऊ छत्तीसगुणत्ति नायव्वो ॥ ९२ ॥ १३२७ ॥ तेसिं मेरुमहोयहिमेयणिससिसूरसरिसकप्पाणं । पायमूले य विसोही करणिज्जा सुविहियजणेणं ॥ ९३ ॥ १३२८ ॥ काइयवाइयमाणसियसेवणं दुप्पओगसंभूयं । जो अइयारो कोई तं आलोए अगूहिंतो ॥ ९४ ॥ १३२९ ॥ अमुगंमि इउ काले अमुगत्थे अमुगगामभावेणं । जं जह निसेवियं खलु जेण य सव्वं तहाऽऽलोए ॥ ९५ ॥ १३३० ॥ मिच्छादंसणसल्लं मायासल्लं नियाणसल्लं च । तं संखेवा दुविहं दव्वे भावे य बोद्धव्वं ॥ ९६ ॥ १३३१ ॥ वि(ति)विहं तु भावसल्लं दंसणनाणे चरित्त-जोगे य । सचित्ताचित्तेऽविय मीसए यावि दव्वंमि ॥ ९७ ॥ १३३२ ॥ सुहुमंपि भावसल्लं अणुद्धरित्ता उ जो

सूरिगुणाः

ग्रात् निर्गतं चापरिशेषात् ॥ ९० ॥ य आरंभे वर्त्तते त्यक्तकार्योऽननुतापी च । शोक(भोग)श्च भवेद्दशमो येषूपस्थापना भणिता ॥ ९१ ॥ एतेषु विधिविधानज्ञाः षट्त्रिंशति स्थानेषु ये सूरयः । ते प्रवचनशुभकेतवः षट्त्रिंशद्गुणा इति ज्ञातव्याः ॥ ९२ ॥ तेषां मेरुमहोदधि-मेदिनीशशिसूर्यसदृक्कल्पानां । पादमूले च विशोधिः करणीयः सुविहितजनेन ॥ ९३ ॥ कायिकवाचिकमानसिकसेवनं दुष्प्रयोगसंभूतं । (तद्गो) योऽतिचारः कश्चित् तमालोचयेद् अगूहयन् ॥ ९४ ॥ अतः अमुकस्मिन् काले अमुकार्थे अमुकग्रामभावेन । यद्यथा निषे-वितं येन च सर्वं तथैवालोचयेत् ॥ ९५ ॥ मिथ्यादर्शनशल्यं मायाशल्यं निदानशल्यं च । तत् (शल्यं) संक्षेपात् द्विविधं द्रव्ये भावे च बोद्धव्यं ॥९६॥ वि(त्रि)विधं तु भावशल्यं दर्शने ज्ञाने चारित्रयोगे च । सचित्ताचित्तयोरपि च मिश्रे चापि द्रव्ये ॥ ९७ ॥ सूक्ष्ममपि

॥ १०२ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	अत्र आलोचना वर्णनं क्रियते

प्रत सूत्रांक ||९८||

दीप अनुक्रम [९८]

कुणइ कालं । लज्जाय गारवेण य नहु सो आराहओ भणिओ ॥ ९८ ॥ १३३३ ॥ तिविहंपि भावसल्लं समुद्धरित्ता उ जो कुणइ कालं । पवज्जाई सम्मं स होइ आराहओ मरणे ॥ ९९ ॥ १३३४ ॥ तम्हा सुत्तरमूलं अविकूलमविहुयं अणुविग्गो । निम्मोहियमणिगूहं सम्मं आलोअए सव्वं ॥ १०० ॥ १३३५ ॥ जह बालो जंपंतो कज्जमकज्जं च उज्जुयं भणइ । तं तह आलोएज्जा मायामयविप्पमुक्को य ॥ १०१ ॥ १३३६ ॥ कयपावोऽवि मणूसो आलोइय निंदिउं गुरुसगासे । होइ अइरेगलहुओ ओहरियभरोव्व भारवहो ॥ १०२ ॥ १३३७ ॥ लज्जाइ गारवेण य जे नालोयंति गुरुसगासम्मि । धंतंपि सुयसमिद्धा न हु ते आराहगा हुंति ॥१०३॥१३३८॥ जह सुकुसलोऽवि विज्जो अन्नस्स कहेइ अत्तणो वाहिं । तं तह आलोयव्वं सुट्ठुवि ववहारकुसलेणं ॥ १०४ ॥ ॥ १३३९ ॥ जं पुव्वं तं पुव्वं जहाणुपुव्विं जहक्कमं सव्वं । आलोइज्ज सुविहिओ कमकालविहिं अभिंदंतो

भावशल्यमनुद्धृत्य तु यः कुर्यात् कालं । लज्जया गौरवेण च नैव स आराधको भणितः ॥ ९८ ॥ त्रिविधमपि भावशल्यं समुद्धृत्य तु यः करोति कालं । प्रव्रज्यादौ सम्यक् स भवति आराधको मरणे ॥ ९९ ॥ तस्मात् सोत्तरमूलं अविकूलं अविद्रुतमनुद्विग्नः । निर्मोहितं अनिगूहितं सम्यक् आलोचयेत् सर्वं ॥ १०० ॥ यथा बालो जल्पन् कार्यमकार्यं च ऋजुकं भणति । तत् तथा आलोचयेत् मायामदविप्रमुक्तश्च ॥ १०१ ॥ कृतपापोऽपि मनुष्य आलोच्य निन्दित्वा गुरुसकाशे । उत्तारितभर इव भारवाहो भवत्यतिरेकलघुतरः ॥१०२॥ लज्जया गौरवेण च ये नालोचयंति गुरुसकाशे । बह्वपि श्रुतसमृद्धा नैव ते आराधका भवन्ति ॥ १०३ ॥ यथा सुकुशलोऽपि वैद्यः अन्यस्मै कथयति आत्मनो व्याधिं । तत् तथाऽऽलोचयितव्यं सुष्ठुपि व्यवहारकुशलेन ॥१०४॥ यत् पूर्वं तत् पूर्वं यथानुपूर्वि यथाक्रमं सर्वं ।

च. स. १८

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

॥१०५॥१३४०॥ अत्तंपरजोगेहि य एवं समुवट्ठिए पओगेहिं । अमुगेहि य अमुगेहि य अमुयगसंठाणकरणेहिं ॥ १०६ ॥ १३४१ ॥ वण्णेहि य गंधेहि य सद्दफरिसरसरूवगंधेहिं । (सद्देहि य रसफरिसठाणेहिं) पडिसेवणा कया पज्जवेहिं कया जेहि य जहिं च ॥१०७॥१३४२॥ जो जोगओ अपरिणामओ अ दंसणचरित्त अइयारो । छट्ठाण बाहिरो वा छट्ठाणब्भंतरो वावि ॥ १०८ ॥१३४३॥ तं उज्जुभावपरिणउ रागं दोसं च पयणु काऊणं । तिविहेण उद्धरिज्जा गुरुपामूले अगूहंतो ॥ १०९ ॥ १३४४ ॥ नवि तं सत्थं च विसं च दुप्पउत्तुव कुणइ वेयालो । जंतंव दुप्पउत्तं सप्पुव्व पमाइणो कुद्धो ॥ ११० ॥ १३४५ ॥ जं कुणइ भावसल्लं अणुद्धियं उत्तमट्ठ-कालम्मि । दुल्लहबोहीयत्तं अणंतसंसारियत्तं च ॥ १११ ॥ १३४६ ॥ तो उद्धरंति गारवरहिया मूलं पुणब्भ-वलयाणं । मिच्छादंसणसल्लं मायासल्लं नियाणं च ॥ ११२ ॥ १३४७ ॥ रागेण व दोसेण व भएण हासेण

आलोचयेत् सुविहितः क्रमकालविधीन् अभिन्दानः ॥ १०५ ॥ आत्मपरयोगाभ्यां चैवं प्रयोगैः समुपस्थिते । अमुकैरमुकैश्च अमुकैः संस्थानकरणैः ॥ १०६ ॥ वर्णैश्च गन्धैश्च शब्दस्पर्शरसरूपगन्धैः (शब्दैश्च रसस्पर्शस्थानैः) । प्रतिसेवना कृता या पर्यवैः कृता यैर्यत्र च ॥१०७॥ यो योगतोऽपरिणामतश्च दर्शनचारित्रातिचारः । षट्स्थान्या बाह्यो वा षट्स्थान्या अभ्यन्तरो वापि ॥१०८॥ तदृजुभावपरिणतो रागं द्वेषं च प्रतनुकौ कृत्वा । त्रिविधेनोद्धरेत् गुरुपादमूले अगूहयन् ॥ १०९ ॥ नैव तत् शस्त्रं च विषं च दुष्प्रयुक्तो वा करोति वैताः लः । यत्रं वा दुष्प्रयुक्तं सर्पो वा प्रमादिनः कुद्धः ॥११०॥ यत् करोति भावशल्यमनुद्धृतमुत्तमार्थकाले । दुर्लभबोधिकत्वं अनन्तसंसारि-कत्वं च ॥१११॥ तत उद्धरन्ति गौरवरहिता मूलं पुनर्भवलतानां । मिथ्यादर्शनशल्यं मायाशल्यं निदानं च ॥११२॥ रागेण वा द्वेषेण वा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ||११३|| दीप अनुक्रम [११३]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया

तह पमाएणं । रोगेणायंकेण व वत्तीइ पराभिओगेणं ॥ ११३ ॥ १३४८ ॥ गिहिविज्जापडिएण व सपक्खपरधम्मिओवसग्गेणं । तिरियंजोणिगएण व दिव्वमणूसोवसग्गेणं ॥ ११४ ॥ १३४९ ॥ उवहीइ व नियडीइ व तह सावयपेल्लिएण व परेणं । अप्पाण भएण कयं परस्स छंदाणुवत्तीए ॥ ११५ ॥ १३५० ॥ सहसक्कारमणाभोगओ अ जं पवयणाहिगारेणं । सन्निकरणे विसोही पुण्णागारो य पण्णत्ता ॥ ११६ ॥ १३५१ ॥ उज्जुअमालोइत्ता इत्तो अकरणपरिणाम जोगपरिसुद्धो । सो पयणुइ पइकम्मं सुग्गइमग्गं अभिमुहेइ ॥ ११७ ॥ ॥ १३५२ ॥ उवहीनियडिपइट्ठो सोहिं जो कुणइ सोगईकामो । माई पलिकुंचंतो करेइ वुंदुंछियं मूढो॥११८॥ ॥ १३५३ ॥ आलोयणाइदोसे दस दोग्गइबंधणे परिहरंतो । तम्हा आलोइज्जा मायं मुत्तूण निस्सेसं ॥ ११९ ॥ ॥१३५४॥ जे मे जाणंति जिणा अवराहा जेसु जेसु ठाणेसु । ते तह आलोएमी उवट्ठिओ सव्वभावेणं ॥१२०॥

भयेन हास्येन तथा प्रमादेन । रोगेणातंकेन वा वृत्त्या पराभियोगेन ॥ ११३ ॥ गृहिविद्यापतितेन वा स्वपक्षपरधार्मिकोपसर्गेनु । तिर्यग्योनिसंबंधिना वा दिव्यमनुष्योपसर्गेन ॥ ११४ ॥ उपधिना वा निकृत्या वा तथा श्वापदप्रेरितेन वा परेण । आत्मनो भयेन कृतं परस्य छन्दोऽनुवृत्त्या ॥ ११५ ॥ सहसाकारात् अनाभोगतश्च यच्च प्रवचनाधिकारेण । संज्ञीकरणं विशुद्धिः पूर्णाकारश्च प्रज्ञप्ताः (पर्यायाः) ॥ ११६ ॥ ऋज्वालोच्य इतोऽकरणपरिणामयोगपरिशुद्धः । स प्रतनुकरोति प्रकृतिकर्म सुगतिमार्गमभिमुखयति ॥ ११७ ॥ उपधिनिकृतिप्रविष्टः शुद्धिं यः करोति सुगतिकामः । मायी परिकुंचयन् करोति विन्दूंछितं मूढः ॥ ११८ ॥ आलोचनाया दोषान् दश दुर्गतिबन्धनान् परिहरन् । तस्मादालोचयेत् मायां मुक्त्वा निश्शेषम् ॥ ११९ ॥ यान् मे जानन्ति जिना अपराधान् येषु येषु स्थानेषु । तांस्तथा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

---------- मूलं [१२१]----------

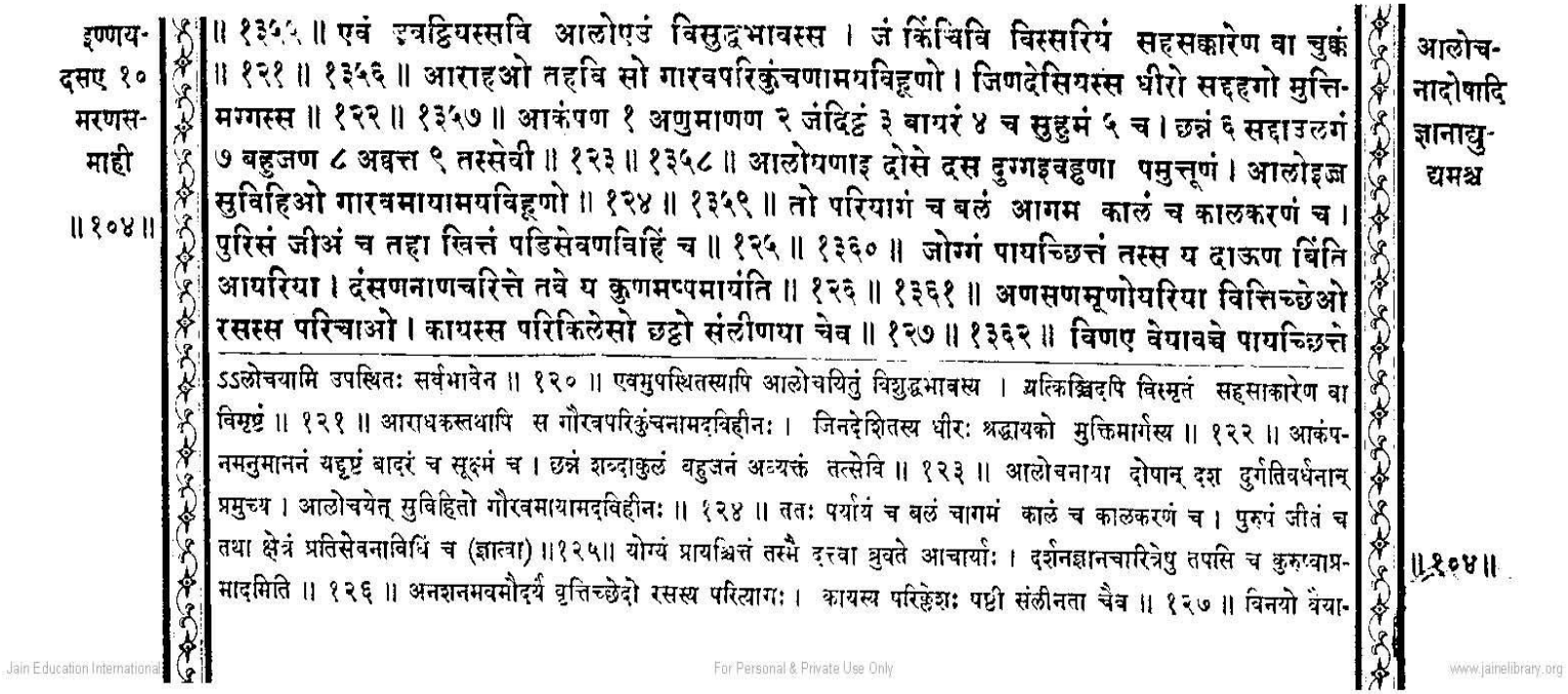

इण्णय-दसए १० मरणस-माही ॥१०४॥

॥ १३५५ ॥ एवं इत्तट्ठियस्सवि आलोएउं विसुद्धभावस्स । जं किंचिवि विस्सरियं सहसक्कारेण वा चुक्कं ॥ १२१ ॥ १३५६ ॥ आराहओ तहवि सो गारवपरिकुंचणामयविहूणो । जिणदेसियस्स धीरो सद्दहगो मुत्ति-मग्गस्स ॥ १२२ ॥ १३५७ ॥ आकंपण १ अणुमाणण २ जंदिट्ठं ३ बायरं ४ च सुहुमं ५ च । छन्नं ६ सद्दाउलगं ७ बहुजण ८ अव्वत्त ९ तस्सेवी ॥ १२३ ॥ १३५८ ॥ आलोयणाइ दोसे दस दुग्गइवड्ढणा पमुत्तूणं । आलोइज्ज सुविहिओ गारवमायामयविहूणो ॥ १२४ ॥ १३५९ ॥ तो परियागं च बलं आगम कालं च कालकरणं च । पुरिसं जीअं च तहा खित्तं पडिसेवणविहिं च ॥ १२५ ॥ १३६० ॥ जोग्गं पायच्छित्तं तस्स य दाऊण विंति आयरिया । दंसणनाणचरित्ते तवे य कुणमप्पमायंति ॥ १२६ ॥ १३६१ ॥ अणसणमूणोयरिया वित्तिच्छेओ रसस्स परिचाओ । कायस्स परिकिलेसो छट्ठो संलीणया चेव ॥ १२७ ॥ १३६२ ॥ विणए वेयावच्चे पायच्छित्ते

ऽऽलोचयामि उपस्थितः सर्वभावेन ॥ १२० ॥ एवमुपस्थितस्यापि आलोचयितुं विशुद्धभावस्य । यत्किञ्चिदपि विस्मृतं सहसाकारेण वा विमृष्टं ॥ १२१ ॥ आराधकस्तथापि स गौरवपरिकुंचनामदविहीनः । जिनदेशितस्य धीरः श्रद्धायको मुक्तिमार्गस्य ॥ १२२ ॥ आकंप-नमनुमाननं यदृष्टं बादरं च सूक्ष्मं च । छन्नं शब्दाकुलं बहुजनं अव्यक्तं तत्सेवि ॥ १२३ ॥ आलोचनाया दोषान् दश दुर्गतिवर्धनान् प्रमुच्य । आलोचयेत् सुविहितो गौरवमायामदविहीनः ॥ १२४ ॥ ततः पर्यायं च बलं चागमं कालं च कालकरणं च । पुरुषं जीतं च तथा क्षेत्रं प्रतिसेवनाविधिं च (ज्ञात्वा) ॥१२५॥ योग्यं प्रायश्चित्तं तस्मै दत्त्वा ब्रुवते आचार्याः । दर्शनज्ञानचारित्रेषु तपसि च कुरुष्वाप्र-मादमिति ॥ १२६ ॥ अनशनमवमौदर्यं वृत्तिच्छेदो रसस्य परित्यागः । कायस्य परिक्लेशः षष्ठी संलीनता चैव ॥ १२७ ॥ विनयो वैया-

आलोच-नादोषादि ज्ञानाद्यु-द्यमश्च

॥१०४॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	अथ तपसः भेदानि वर्णयते

प्रत सूत्रांक ||१२८|| दीप अनुक्रम [१२८]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया

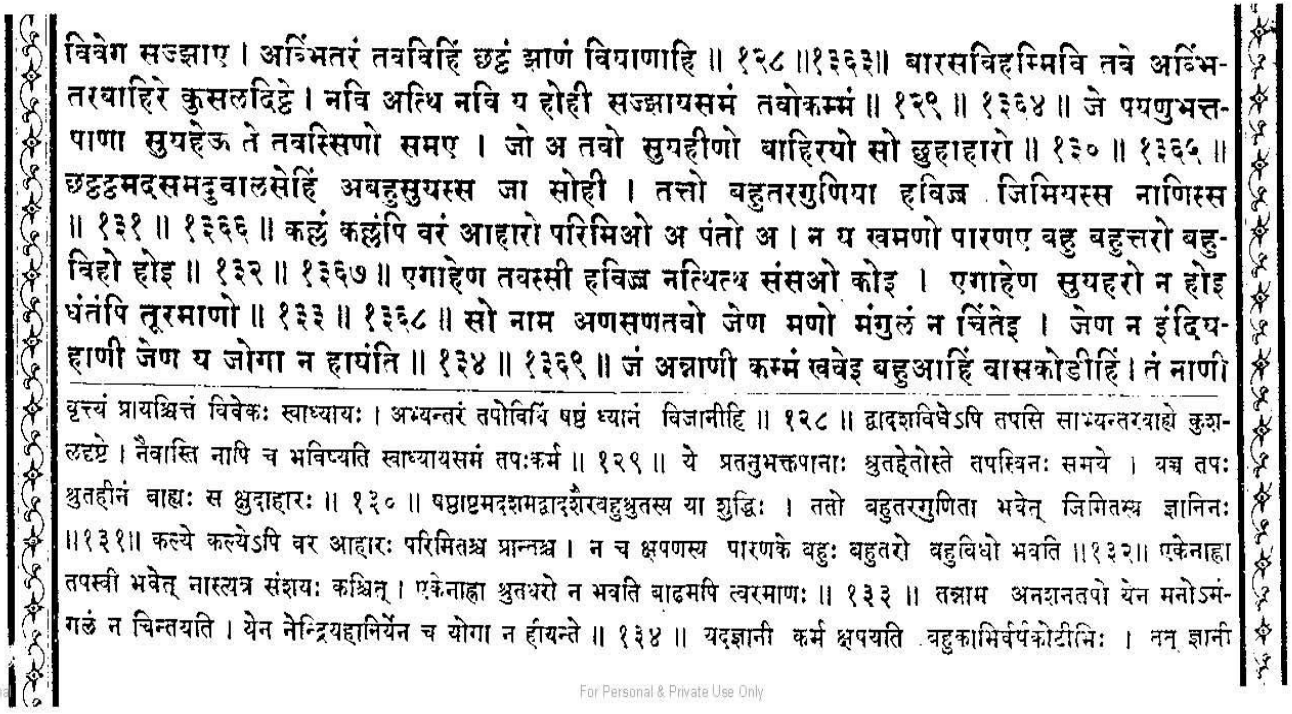

विवेग सज्झाए । अब्भितरं तवविहिं छट्ठं झाणं वियाणाहि ॥ १२८ ॥१३६३॥ बारसविहम्मिवि तवे अब्भितरबाहिरे कुसलदिट्ठे । नवि अत्थि नवि य होही सज्झायसमं तवोकम्मं ॥ १२९ ॥ १३६४ ॥ जे पयणुभत्तपाणा सुयहेऊ ते तवस्सिणो समए । जो अ तवो सुयहीणो बाहिरयो सो छुहाहारो ॥ १३० ॥ १३६५ ॥ छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं अबहुसुयस्स जा सोही । तत्तो बहुतरगुणिया हविज्ज जिमियस्स नाणिस्स ॥ १३१ ॥ १३६६ ॥ कल्लं कल्लंपि वरं आहारो परिमिओ अ पंतो अ । न य खमणो पारणए बहु बहुत्तरो बहुविहो होइ ॥ १३२ ॥ १३६७ ॥ एगाहेण तवस्सी हविज्ज नत्थित्थ संसओ कोइ । एगाहेण सुयहरो न होइ घंतंपि तूरमाणो ॥ १३३ ॥ १३६८ ॥ सो नाम अणसणतवो जेण मणो मंगुलं न चिंतेइ । जेण न इंदियहाणी जेण य जोगा न हायंति ॥ १३४ ॥ १३६९ ॥ जं अन्नाणी कम्मं खवेइ बहुआहिं वासकोडीहिं । तं नाणी

वृत्त्यं प्रायश्चित्तं विवेकः स्वाध्यायः । अभ्यन्तरं तपोविधिं षष्ठं ध्यानं विजानीहि ॥ १२८ ॥ द्वादशविधेऽपि तपसि साभ्यन्तरबाह्ये कुशलदृष्टे । नैवास्ति नापि च भविष्यति स्वाध्यायसमं तपःकर्म ॥ १२९ ॥ ये प्रतनुभक्तपानाः श्रुतहेतोस्ते तपस्विनः समये । यच्च तपः श्रुतहीनं बाह्यः स क्षुदाहारः ॥ १३० ॥ षष्ठाष्टमदशमद्वादशैरबहुश्रुतस्य या शुद्धिः । ततो बहुतरगुणिता भवेत् जिमितस्य ज्ञानिनः ॥१३१॥ कल्ये कल्येऽपि वर आहारः परिमितश्च प्रान्तश्च । न च क्षपणस्य पारणके बहुः बहुतरो बहुविधो भवति ॥१३२॥ एकेनाह्ना तपस्वी भवेत् नास्त्यत्र संशयः कश्चित् । एकेनाह्ना श्रुतधरो न भवति बाढमपि त्वरमाणः ॥ १३३ ॥ तन्नाम अनशनतपो येन मनोऽमंगलं न चिन्तयति । येन नेन्द्रियहानिर्येन च योगा न हीयन्ते ॥ १३४ ॥ यदज्ञानी कर्म क्षपयति बहुकाभिर्वर्षकोटीभिः । तत् ज्ञानी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	अथ ज्ञानादि गुणा: वर्णयते

तिहिं गुत्तो खवेइ ऊसासमित्तेणं ॥ १३५ ॥ १३७० ॥ नाणे आउत्ताणं नाणीणं नाणजोगजुत्ताणं । को निज्जरं तुलिज्जा चरणे य परक्कमंताणं? ॥ १३६ ॥ १३७१ ॥ नाणेण वज्जणिज्जं वज्जिज्जइ किज्जई य करणिज्जं । नाणी जाणइ करणं कज्जमकज्जं च वज्जेउं ॥ १३७ ॥ १३७२ ॥ नाणसहियं चरित्तं नाणं संपायगं गुणसयाणं । एस जिणाणं आणा नत्थि चरित्तं विणा णाणं ॥ १३८ ॥ १३७३ ॥ नाणं सुसिक्खियव्वं नरेण लद्धूण दुल्लहं बोहिं । जो इच्छइ नाउं जे जीवस्स विसोहणामग्गं ॥ १३९ ॥ १३७४ ॥ नाणेण सव्वभावा णज्जंती सव्वजीवलोअंमि । तम्हा नाणं कुसलेण सिक्खियव्वं पयत्तेणं ॥ १४० ॥ १३७५ ॥ न हु सक्का नासेउं नाणं अरहंतभासियं लोए । ते धन्ना ते पुरिसा नाणी य चरित्तजुत्ता य ॥ १४१ ॥ १३७६ ॥ बंधं मुक्खं गइरागयं च जीवाण जीवलोयम्मि । जाणंति सुयसमिद्धा जिणसासणचेइयविहिण्णू ॥ १४२ ॥ १३७७ ॥ भद्दं सुबहुसुयाणं सव-

त्रिभिर्गुप्तः क्षपयत्युच्छ्वासमात्रेण ॥ १३५ ॥ ज्ञाने आयुक्तानां ज्ञानिनां ज्ञानयोगयुक्तानां । को निर्जरां तोलयेत् चरणे च पराक्रममाणानां ॥ १३६ ॥ ज्ञानेन वर्जनीयं वर्ज्यते क्रियते च करणीयं । ज्ञानी जानाति करणं कार्यमकार्यं च वर्जयितुम् ॥ १३७ ॥ ज्ञानसहितं चारित्रं ज्ञानं संपादकं गुणशतानां । एषा जिनानामाज्ञा नास्ति चारित्रं विना ज्ञानं ॥ १३८ ॥ ज्ञानं सुशिक्षयितव्यं नरेण लब्ध्वा सुदुर्लभं बोधिं । य इच्छति ज्ञातुं जीवस्य विशोधनामार्गम् ॥ १३९ ॥ ज्ञानेन सर्वभावा ज्ञायन्ते सर्वजीवलोके । तस्मात् ज्ञानं कुशलेन शिक्षयितव्यं प्रयत्नेन ॥ १४० ॥ नैव शक्यं नाशयितुं लोकेऽर्हद्भाषितं ज्ञानं । ते धन्यास्ते पुरुषा ज्ञानिनश्च चारित्रयुक्ताश्च ॥ १४१ ॥ बन्धं मोक्षं गतिमागतिं च जीवानां जीवलोके । जानन्ति श्रुतसमृद्धा जिनशासनचैत्यविधिज्ञाः ॥ १४२ ॥ भद्रं बहुश्रुतेभ्यः सर्वपदार्थेषु

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ||१४३||

दीप अनुक्रम [१४३]

पयत्थेसु पुच्छणिज्जाणं । नाणेण जोऽवयारे सिद्धिंपि गएसु सिद्धेसु ॥ १४३ ॥ १३७८ ॥ किं इत्तो लट्ठयरं अच्छेरयय व सुंदरतरं वा?। चंदमिव सव्वलोगा बहुस्सुयमुहं पलोयंति ॥ १४४ ॥ १३७९ ॥ चंदाउ नीइ जुण्हा बहुस्सुयमुहाओ नीइ जिणवयणं । जं सोऊण सुविहिया तरंति संसारकंतारं ॥ १४५ ॥ १३८० ॥ चउदसपुव्वधराणं ओहीनाणीण केवलीणं च । लोगुत्तमपुरिसाणं तेसिं नाणं अभिन्नाणं ॥ १४६ ॥ १३८१ ॥ नाणेण विणा करणं न होइ नाणंपि करणहीणं तु । नाणेण य करणेण य दोहिवि दुक्खक्खयं होइ ॥ १४७ ॥ १३८२ ॥ दढमूलमहाणंमिवि वरमेगोऽवि सुयसीलसंपण्णो । मा हु सुयसीलविगला काहिसि माणं पवयणम्मि ॥ १४८ ॥ १३८३ ॥ तम्हा सुयम्मि जोगो कायव्वो होइ अप्पमत्तेणं । जेणऽप्पाण परंपि य दुक्खसमुद्दाओ तारेइ ॥ १४९ ॥ १३८४ ॥ परमत्थम्मि सुदिट्ठे अविणट्ठेसु तवसंजमगुणेसु । लब्भइ गई विसुद्धा सरीरसारे

प्रच्छनीयेभ्यः । ज्ञानेन येऽवतारयंति सिद्धिमपि गतान् सिद्धान् ॥ १४३ ॥ किमितो लष्टतरमाश्चर्यकारकं वा सुन्दरतरं वा ? । चन्द्रमिव सर्वलोका बहुश्रुतमुखं प्रलोकन्ते ॥ १४४ ॥ चन्द्रात् निर्गच्छति ज्योत्स्ना बहुश्रुतमुखात् निर्गच्छति जिनवचनं । यत् श्रुत्वा सुविहितास्तरन्ति संसारकान्तारं ॥ १४५ ॥ चतुर्दशपूर्वधराणां अवधिज्ञानिनां केवलिनां च । लोकोत्तमपुरुषाणां तेषां ज्ञानमभिज्ञानम् ॥ १४६ ॥ ज्ञानेन विना करणं न भवति ज्ञानमपि करणहीनं तु । ज्ञानेन च करणेन च द्वाभ्यामपि दुःखक्षयो भवति ॥ १४७ ॥ दृढमूलमहाजनेऽपि एकोऽपि श्रुतशीलसंपन्नो वरं । श्रुतशीलविकलान् मा मानं प्रवचने कार्षीः ॥ १४८ ॥ तस्मात् श्रुते योगः कर्त्तव्यो भवत्यप्रमत्तेन । येनात्मानं परमपि च दुःखसमुद्रात् तारयति ॥ १४९ ॥ परमार्थे सुदृष्टे अविनष्टेषु तपःसंयमगुणेषु । लभ्यते गतिर्विशुद्धा शरीरसारे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आगम (३३)	“मरणसमाधि” – प्रकीर्णकसूत्र-१० (मूलं+संस्कृतछाया) ---------- मूलं [१५०]----------
प्रत सूत्रांक ॥१५०॥ दीप अनुक्रम [१५०]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया
	अथ आत्मनः शुद्धिः वर्णयते

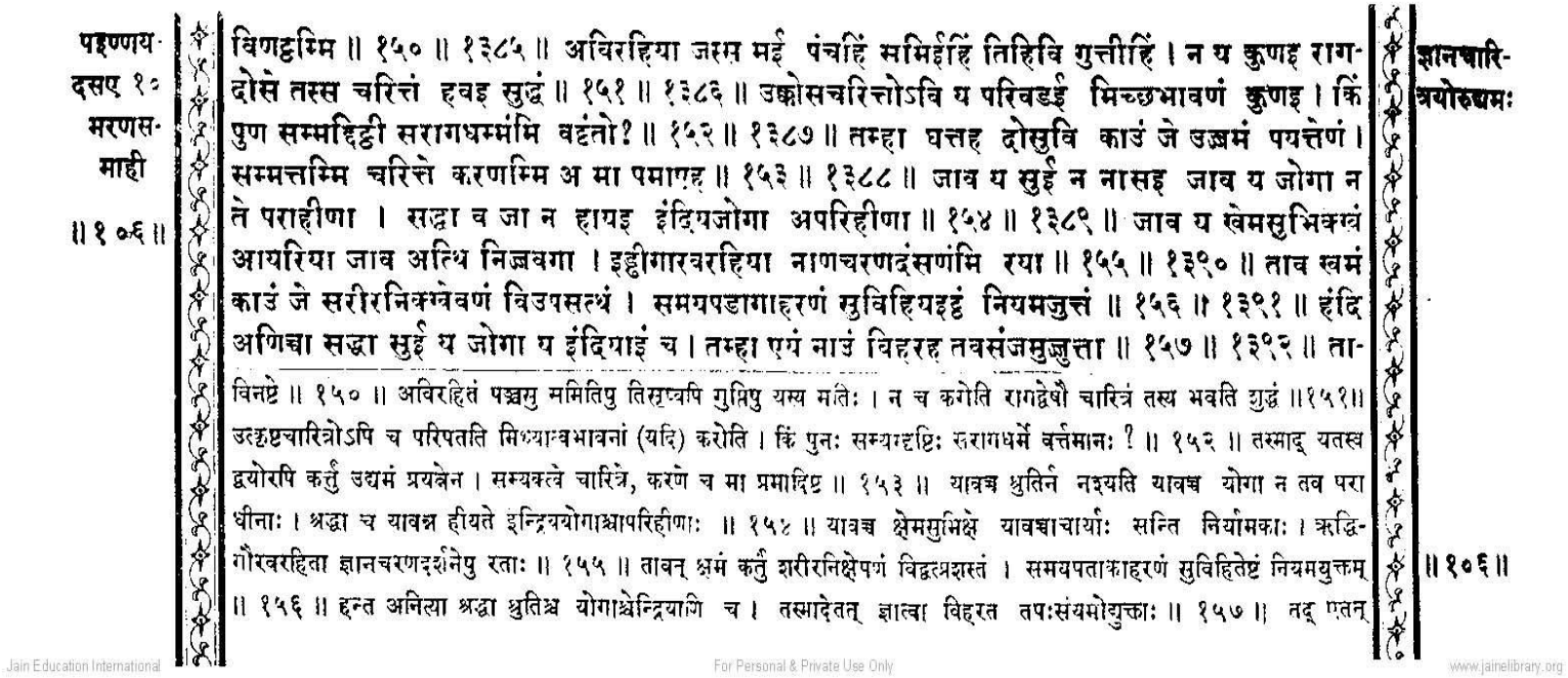

पइण्णय-
दसए १०
मरणस-
माही

॥ १०६ ॥

विणट्ठम्मि ॥ १५० ॥ १३८५ ॥ अविरहिया जस्स मई पंचहिं समिईहिं तिहिवि गुत्तीहिं । न य कुणइ राग-
दोसे तस्स चरित्तं हवइ सुद्धं ॥ १५१ ॥ १३८६ ॥ उक्कोसचरित्तोऽवि य परिवडई मिच्छभावणं कुणइ । किं
पुण सम्मद्दिट्ठी सरागधम्मंमि वट्टंतो? ॥ १५२ ॥ १३८७ ॥ तम्हा घत्तह दोसुवि काउं जे उज्जमं पयत्तेणं ।
सम्मत्तम्मि चरित्ते करणम्मि अ मा पमाएह ॥ १५३ ॥ १३८८ ॥ जाव य सुई न नासइ जाव य जोगा न
ते पराहीणा । सद्धा व जा न हायइ इंदियजोगा अपरिहीणा ॥ १५४ ॥ १३८९ ॥ जाव य खेमसुभिक्खं
आयरिया जाव अत्थि निज्जवगा । इड्ढीगारवरहिया नाणचरणदंसणंमि रया ॥ १५५ ॥ १३९० ॥ ताव खमं
काउं जे सरीरनिक्खेवणं विउपसत्थं । समयपडागाहरणं सुविहियइट्ठं नियमजुत्तं ॥ १५६ ॥ १३९१ ॥ हंदि
अणिच्चा सद्धा सुई य जोगा य इंदियाइं च । तम्हा एयं नाउं विहरह तवसंजमुज्जुत्ता ॥ १५७ ॥ १३९२ ॥ ता-

ज्ञानचारि-
त्रयोरुद्यमः

॥ १०६ ॥

विनष्टे ॥ १५० ॥ अविरहितं पञ्चसु समितिषु तिसृष्वपि गुप्तिषु यस्य मतेः । न च करोति रागद्वेषौ चारित्रं तस्य भवति शुद्धं ॥१५१॥
उत्कृष्टचारित्रोऽपि च परिपतति मिथ्यात्वभावनां (यदि) करोति । किं पुनः सम्यग्दृष्टिः सरागधर्मे वर्त्तमानः ? ॥ १५२ ॥ तस्माद् यतस्व
द्वयोरपि कर्तुं उद्यमं प्रयत्नेन । सम्यक्त्वे चारित्रे, करणे च मा प्रमादिष्ट ॥ १५३ ॥ यावच्च श्रुतिर्न नश्यति यावच्च योगा न तव परा
धीनाः । श्रद्धा च यावन्न हीयते इन्द्रियोगाश्चापरिहीणाः ॥ १५४ ॥ यावच्च क्षेमसुभिक्षे यावच्चाचार्याः सन्ति निर्यामकाः । ऋद्धि-
गौरवरहिता ज्ञानचरणदर्शनेषु रताः ॥ १५५ ॥ तावत् क्षमं कर्तुं शरीरनिक्षेपणं विद्वत्प्रशस्तं । समयपताकाहरणं सुविहितेष्टं नियमयुक्तम्
॥ १५६ ॥ हन्त अनित्या श्रद्धा श्रुतिश्च योगाश्चेन्द्रियाणि च । तस्मादेतत् ज्ञात्वा विहरत तपःसंयमोद्युक्ताः ॥ १५७ ॥ तद् एतत्

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

एयं नाऊणं ओवायं नाणदंसणचरित्ते । धीरपुरिसाणुचिन्नं करिंति सोहिं सुयसमिद्धा ॥ १५८ ॥ १३९३ ॥ अब्भिंतरबाहिरियं अह ते काऊण अप्पणो सोहिं । तिविहेण तिविहकरणं निविहे काले विगडभावा ॥१५९॥ ॥ १३९४ ॥ परिणामजोगसुद्धा उवहिविवेगं च गणविसग्गं य । अज्जाइयउवस्सयवज्जणं च विगईविवेगं च ॥ १६० ॥ १३९५ ॥ उग्गमउप्पायणएसणाविसुद्धिं च परिहरणसुद्धिं । सन्निहिसंनिचयंमि य तववेयावच्चकरणे य ॥ १६१ ॥ १३९६ ॥ एवं करंतु सोहिं नवसारयसलिलनहयलसभावा । कमकालदव्वपज्जवअत्तपरजोगकरणे य ॥ १६२॥१३९७ ॥ तो ते कयसोहीया पच्छित्ते फासिए जहाथामं । पुप्फावकिन्नयम्मि य तवम्मि जुत्ता महासत्ता ॥ १६३ ॥ १३९८ ॥ तो इंदियपरिकम्मं करिंति विसयसुहनिग्गहसमत्था । जयणाइ अप्पमत्ता रागद्दोसे पयणुयंता ॥ १६४ ॥ १३९९ ॥ पुव्वमकारियजोगा समाहिकामावि मरणकालम्मि । न भवंति

ज्ञात्वा औपयिकं ज्ञानदर्शनचारित्रेषु । धीरपुरुषानुचीर्णां शुद्धिं कुर्वन्ति श्रुतसमृद्धाः ॥ १५८ ॥ अभ्यन्तरां बाह्यां चाथ ते कृत्वाऽऽत्मनः शुद्धिं । त्रिविधेन त्रिविधकरणेन त्रिविधे काले विकटभावात् ॥१५९॥ शुद्धपरिणामयोगाः उपधिविवेकं च गणविसर्गं च । आर्यायाः उपाश्रयवर्जनं च विकृतिविवेकं च ॥ १६० ॥ उद्गमोत्पादनैषणाविशुद्धिं च परिहरणशुद्धिं । सन्निधिसन्निचये च तपोवैयावृत्त्यकरणे च ॥ १६१ ॥ एवं कुर्वन्तु शुद्धिं नवशारदसलिलनभस्तलस्वभावाः । क्रमकालद्रव्यपर्यायात्मपरयोगकरणेषु च ॥ १६२ ॥ ततस्ते कृतशुद्धिकाः प्रायश्चित्तानि स्पृष्ट्वा यथास्थाम । पुष्पावकीर्णके च तपसि युक्ताः महासत्त्वाः ॥ १६३ ॥ तत इन्द्रियपरिकर्म कुर्वन्ति विषयसुखनिग्रहसमर्थाः । यतनायामप्रमत्ताः रागद्वेषौ प्रतनूकुर्वन्तः ॥ १६४ ॥ पूर्वमकृतपरिकर्मयोगाः समाधिकामा अपि मरणकाले । न भवन्ति

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ||१६५||

दीप अनुक्रम [१६५]

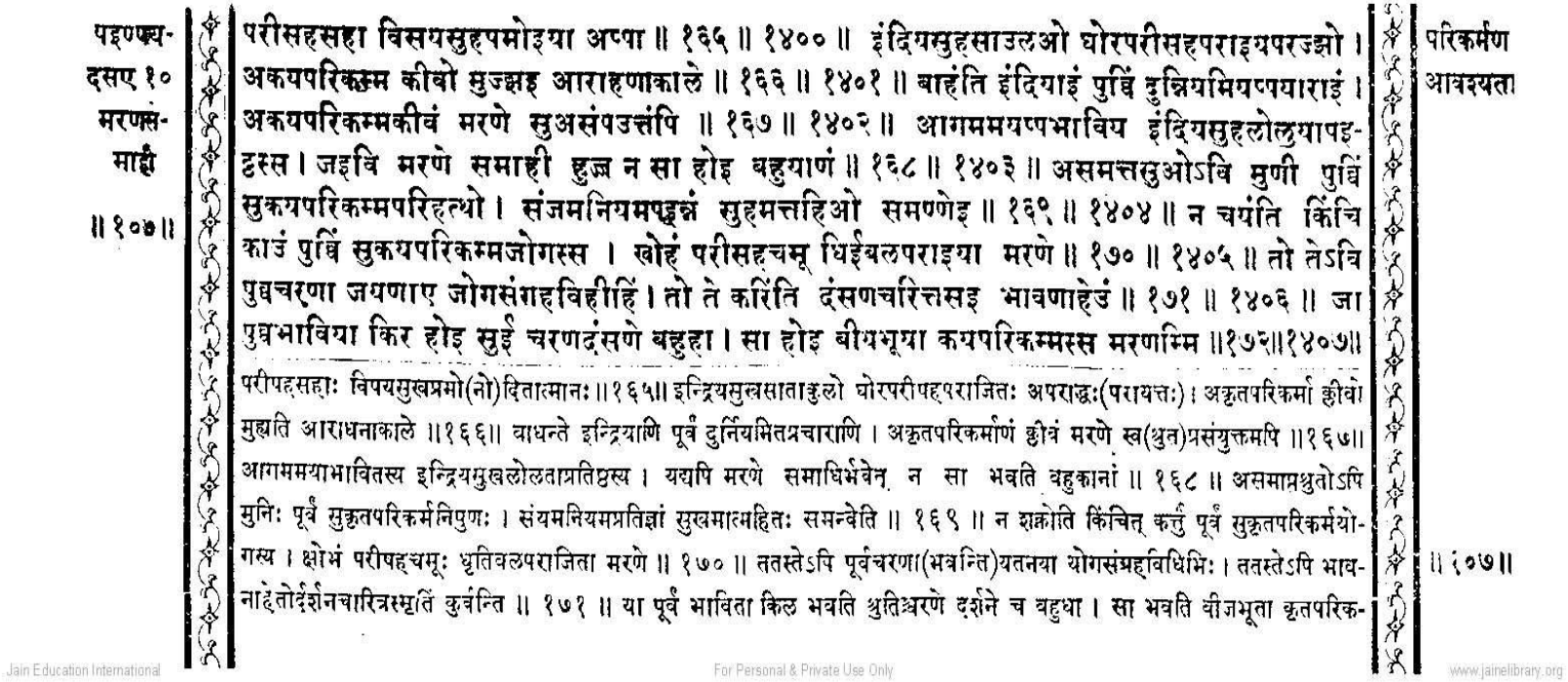

पइण्णय-दसए १० मरणस-माहीं ॥ १०७ ॥

परीसहसहा विसयसुहपमोइया अप्पा ॥ १६५ ॥ १४०० ॥ इंदियसुहसाउलओ घोरपरीसहपराइयपरज्झो । अकयपरिकम्म कीवो मुज्झइ आराहणाकाले ॥ १६६ ॥ १४०१ ॥ बाहंति इंदियाइं पुर्विं दुन्नियमियप्पयाराइं । अकयपरिकम्मकीवं मरणे सुअसंपउत्तंपि ॥ १६७ ॥ १४०२ ॥ आगममयप्पभाविय इंदियसुहलोलुयापइट्ठस्स । जइवि मरणे समाही हुज्ज न सा होइ बहुयाणं ॥ १६८ ॥ १४०३ ॥ असमत्तसुओऽवि मुणी पुर्विं सुकयपरिकम्मपरिहत्थो । संजमनियमपइन्नं सुहमत्तहिओ समण्णेइ ॥ १६९ ॥ १४०४ ॥ न चयंति किंचि काउं पुर्विं सुकयपरिकम्मजोगस्स । खोहं परीसहचमू धिईबलपराइया मरणे ॥ १७० ॥ १४०५ ॥ तो तेऽवि पुव्वचरणा जयणाए जोगसंगहविहीहिं । तो ते करिंति दंसणचरित्तसइ भावणाहेउं ॥ १७१ ॥ १४०६ ॥ जा पुव्वभाविया किर होइ सुई चरणदंसणे बहुहा । सा होइ बीयभूया कयपरिकम्मस्स मरणम्मि ॥१७२॥१४०७॥

परीषहसहाः विषयसुखप्रमो(नो)दितात्मानः ॥१६५॥ इन्द्रियसुखसाताकुलो घोरपरीषहपराजितः अपराद्धः(परायत्तः) । अकृतपरिकर्मा क्लीवो मुह्यति आराधनाकाले ॥१६६॥ बाधन्ते इन्द्रियाणि पूर्वं दुर्नियमितप्रचाराणि । अकृतपरिकर्माणं क्लीवं मरणे स्व(श्रुत)प्रसंयुक्तमपि ॥१६७॥ आगममयाभावितस्य इन्द्रियसुखलोलताप्रतिष्ठस्य । यद्यपि मरणे समाधिर्भवेन् न सा भवति बहुकानां ॥ १६८ ॥ असमाप्तश्रुतोऽपि मुनिः पूर्वं सुकृतपरिकर्मनिपुणः । संयमनियमप्रतिज्ञां सुखमात्महितः समन्वेति ॥ १६९ ॥ न शक्नोति किंचित् कर्तुं पूर्वं सुकृतपरिकर्मयोगस्य । क्षोभं परीषहचमूः धृतिबलपराजिता मरणे ॥ १७० ॥ ततस्तेऽपि पूर्वचरणा(भवन्ति)यतनया योगसंग्रहविधिभिः । ततस्तेऽपि भावनाहेतोर्दर्शनचारित्रस्मृतिं कुर्वन्ति ॥ १७१ ॥ या पूर्वं भाविता किल भवति श्रुतिश्चरणे दर्शने च बहुधा । सा भवति बीजभूता कृतपरिक-

परिकर्मण आवश्यता ॥ १०७ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ||१७३|| दीप अनुक्रम [१७३]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया

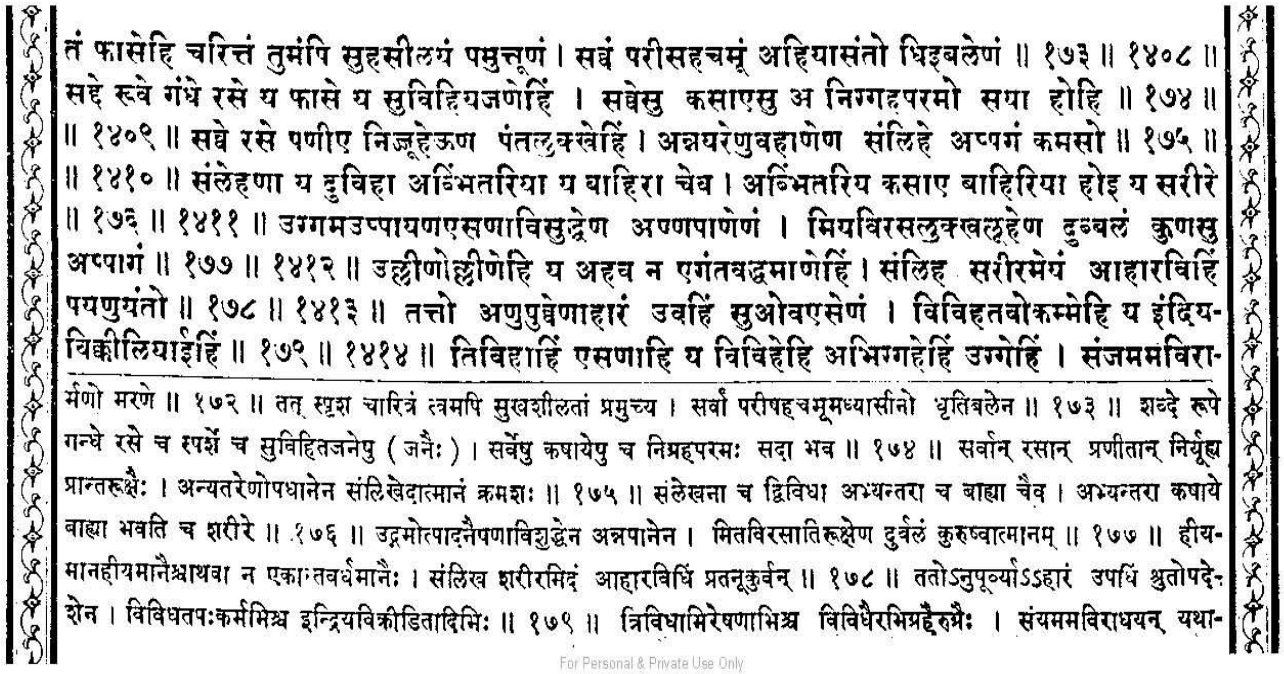

तं फासेहि चरित्तं तुमंपि सुहसीलयं पमुत्तूणं । सव्वं परीसहचमूं अहियासंतो धिइबलेणं ॥ १७३ ॥ १४०८ ॥ सद्दे रूवे गंधे रसे य फासे य सुविहियजणेहिं । सव्वेसु कसाएसु अ निग्गहपरमो सया होहि ॥ १७४ ॥ ॥ १४०९ ॥ सव्वे रसे पणीए निज्जूहेऊण पंतलुक्खेहिं । अन्नयरेणुवहाणेण संलिहे अप्पगं कमसो ॥ १७५ ॥ ॥ १४१० ॥ संलेहणा य दुविहा अब्भिंतरिया य बाहिरा चेव । अब्भिंतरिय कसाए बाहिरिया होइ य सरीरे ॥ १७६ ॥ १४११ ॥ उग्गमउप्पायणएसणाविसुद्धेण अण्णपाणेणं । मियविरसलुक्खलूहेण दुब्बलं कुणसु अप्पागं ॥ १७७ ॥ १४१२ ॥ उल्लीणोल्लीणेहि य अहव न एगंतबद्धमाणेहिं । संलिह सरीरमेयं आहारविहिं पयणुयंतो ॥ १७८ ॥ १४१३ ॥ तत्तो अणुपुव्वेणाहारं उवहिं सुओवएसेणं । विविहतवोकम्मेहि य इंदिय-विक्कीलियाईहिं ॥ १७९ ॥ १४१४ ॥ तिविहाहिं एसणाहि य विविहेहि अभिग्गहेहिं उग्गेहिं । संजममविरा-

---

मणो मरणे ॥ १७२ ॥ तत् स्पृश चारित्रं त्वमपि सुखशीलतां प्रमुच्य । सर्वां परीषहचमूमध्यासीनो धृतिबलेन ॥ १७३ ॥ शब्दे रूपे गन्धे रसे च स्पर्शे च सुविहितजनेषु (जनैः) । सर्वेषु कषायेषु च निग्रहपरमः सदा भव ॥ १७४ ॥ सर्वान् रसान् प्रणीतान् निर्यूह्य प्रान्तरूक्षैः । अन्यतरेणोपधानेन संलिखेदात्मानं क्रमशः ॥ १७५ ॥ संलेखना च द्विविधा अभ्यन्तरा च बाह्या चैव । अभ्यन्तरा कषाये बाह्या भवति च शरीरे ॥ १७६ ॥ उद्गमोत्पादनैषणाविशुद्धेन अन्नपानेन । मितविरसातिरूक्षेण दुर्बलं कुरुष्वात्मानम् ॥ १७७ ॥ हीय-मानहीयमानैश्चाथवा न एकान्तवर्धमानैः । संलिख शरीरमिदं आहारविधिं प्रतनूकुर्वन् ॥ १७८ ॥ ततोऽनुपूर्व्याऽऽहारं उपधिं श्रुतोपदे-शेन । विविधतपःकर्मभिश्च इन्द्रियविक्रीडितादिभिः ॥ १७९ ॥ त्रिविधाभिरेषणाभिश्च विविधैरभिग्रहैरुग्रैः । संयममविराधयन् यथा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	अथ संलेखना वर्णयते

प्रत सूत्रांक ॥१८०॥

दीप अनुक्रम [१८०]

हिंतो जहाबलं संलिह सरीरं ॥ १८० ॥ १४१५ ॥ विविहाहि व पडिमाहि य बलवीरियजई य संपहोइ सुहं । ताओवि न बाहिंती जहक्कमं संलिहंतम्मि ॥ १८१ ॥ १४१६ ॥ छम्मासिया जहन्ना उक्कोसा बारिसेव वरिसाइं । आयंबिलं महेसी तत्थ य उक्कोसयं विंति ॥ १८२ ॥ १४१७ ॥ छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं भत्तेहिं चित्तकट्ठेहिं । मियलहुकं आहारं करेहि आयंबिलं विहिणा ॥ १८३ ॥ १४१८ ॥ परिवड्ढिओवहाणो पहाम्वि-राविय वियडपासुलिकडीओ । संलिहियतणुसरीरो अज्झप्परओ मुणी निचं ॥ १८४ ॥ १४१९ ॥ एवं सरीर-संलेहणाविहिं बहुविहंपि फासिंतो । अज्झवसाणविसुद्धिं खणंपि तो मा पमाइत्था ॥ १८५ ॥ १४२० ॥ अज्झवसाणविसुद्धीविवज्जिया जे तवं विगिट्ठमवि । कुवंति वाललेसा न होइ सा केवला सुद्धी ॥ १८६ ॥ ॥ १४२१ ॥ एयं सरागसंलेहणाविहिं जइ जई समायरइ । अज्झप्पसंजुयमई सो पावइ केवलं सुद्धिं ॥१८७॥

बलं संलिख शरीरं ॥ १८० ॥ विविधाभिश्च प्रतिमाभिर्वा बलवीर्यं यदि संप्रभवति सुखाय । ता अपि न बाधन्ते यथाक्रमं संलिख्यमाने ॥ १८१ ॥ षण्मासाञ्जघन्या उत्कृष्टा द्वादशैव वर्षाणि । आचाम्लं तत्र च महर्षिरुत्कृष्टं ब्रुवते ॥ १८२ ॥ षष्ठाष्टमदशमद्वादशेभ्यो भक्ते-भ्यश्चित्रकाष्ठेभ्यः । मितं लघु आहारं कुरुष्वाचामाम्लं विधिना ॥ १८३ ॥ परिवर्धितोपधानः भग्नस्नायुविकटपार्श्वास्थिकटीकः । संलिखित-तनुशरीरः अध्यात्मरतो मुनिर्नित्यं ॥ १८४ ॥ एवं शरीरसंलेखनाविधिं बहुविधमपि स्पृशन् । अध्यवसानविशुद्धिं (प्रति) क्षणमपि ततो मा प्रमादीः ॥ १८५ ॥ अध्यवसायविशुद्धिविवर्जिता ये तपो विकृष्टमपि । कुर्वन्ति बाललेश्या न भवति सा संपूर्णा शुद्धिः ॥ १८६ ॥ एनं सरागसंलेखनाविधिं यदि यतिः समाचरति । अध्यात्ममतिसंयुतः स प्राप्नोति केवलां शुद्धिं ॥ १८७ ॥ निखिलः स्पर्शयितव्यः

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १४२२ ॥ निखिला फासेयव्वा सरीरसंलेहणाविही एसा । इत्तो कसायजोगा अज्झप्पविहिं परम वुच्छं ॥ १८८ ॥ १४२३ ॥ कोहं खमाइ माणं मद्दवया अज्जवेण मायं च । संतोसेण व लोहं निज्जिण चत्तारिवि कसाए ॥ १८९ ॥ १४२४ ॥ कोहस्स व माणस्स व मायालोभेसु वा न एएसिं। वच्चई वसं खणंपि हु दुग्ग-इगइवहुणकराणं ॥ १९० ॥ १४२५ ॥ एवं तु कसायग्गि संतोसेणं तु विज्झवेयव्वो । रागद्दोसपवत्तिं वज्जे-माणस्स विज्झाइ ॥ १९१ ॥ १४२६ ॥ जावंति केइ ठाणा उदीरगा हुंति हु कसायाणं । ते उ सया वज्जंतो विमुत्तसंगो मुणी विहरे ॥ १९२ ॥ १४२७ ॥ संतोवसंतधिइमं परीसहविहिं व समहियासंतो । निस्संगयाइ सुविहिय! संलिह मोहे कसाए य ॥ १९३ ॥ १४२८ ॥ इट्ठाणिट्ठेसु सया सद्दफरिसरसरूवगंधेहिं । सुहदुक्ख-निव्विसेसो जियसंगपरीसहो विहरे ॥ १९४ ॥ १४२९ ॥ समिईसु पंचसमिओ.जिणाहि तं पंच इंदिए सुट्ठु ॥

शरीरसंलेखनाविधिरेषः । अतः कषाय(जय)योग्यमध्यात्मविधिं परमं वक्ष्ये ॥ १८८ ॥ क्रोधं क्षमया मानं मार्दवेन आर्जवेन मायां च । संतोषेण च लोभं निर्जय चतुरोऽपि कषायान् ॥ १८९॥ क्रोधस्य च मानस्य च मायालोभयोश्च नैतेषां । व्रजति वशं क्षणमपि दुर्गतिगति-(प्राप्ति)वर्धनकराणाम् ॥ १९० ॥ एवं तु कषाग्निः संतोषेण तु विध्यापयितव्यः । रागद्वेषप्रवृत्तिं वर्जयतो विध्याति ॥ १९१ ॥ यावन्ति कानिचित् स्थानानि उदीरकाणि भवन्ति कषायाणां । तानि सदा वर्जयन् विमुक्तसंगो मुनिर्विहरेत् ॥ १९२ ॥ शान्त उपशान्त धृतिमान परीषहविधिं समध्यासयन् । निस्संगतया सुविहित! संलिख कषायान् मोहं च ॥ १९३ ॥ इष्टानिष्टेषु सदा शब्दस्पर्शरसरूपगन्धेषु सुखदुःखनिर्विशेषो जितसंगपरीषहो विहरेः ॥ १९४ ॥ समितिषु पंचसु समितो जय त्वं पंचेन्द्रियाणि सुष्ठु । त्रिभिर्गौरवै रहितो भवति

च. स. १९

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तिहिं गारवेहिं रहिओ होह तिगुत्तो य दंडेहिं ॥ १९५ ॥ १४३० ॥ सन्नासु आसवेसु अ अट्टे रुद्दे अ तं विसु-
द्धप्पा । रागद्दोसपवंचे निज्जिणिउं सव्वणोज्जुत्तो ॥ १९६ ॥ १४३१ ॥ को दुक्खं पाविज्जा? कस्स य सुक्खेहिं
विम्हओ हुज्जा? । को व न लभिज्ज मुक्खं? रागद्दोसा जइ न हुज्जा ॥ १९७ ॥ १४३२ ॥ नवि तं कुणइ
अमित्तो सुट्ठु विय विराहिओ समत्थोवि । जं दोवि अनिग्गहिया करंति रागो य दोसो य ॥१९८॥१४३३॥
तं मुयह रागदोसे सेयं चिंतेह अप्पणो निच्चं । जं तेहिं इच्छह गुणं तं वुक्कह बहुतरं पच्छा ॥ १९९ ॥ १४३४ ॥
इहलोए आयासं अयसं च करिंति गुणविणासं च । पसवंति य परलोए सारीरमणोगए दुक्खे ॥ २०० ॥
॥ १४३५ ॥ धिद्धी अहो अकज्जं जं जाणंतोऽवि रागदोसेहिं । फलमउलं कडुयरसं तं चेव निसेवए जीवो
॥ २०१ ॥ १४३६ ॥ तं जइ इच्छसि गंतुं तीरं भवसायरस्स घोरस्स । तो तवसंजमभंडं सुविहिय! गिण्हाहि

त्रिगुप्तश्च दण्डेषु ॥ १९५ ॥ संज्ञासु आश्रवेषु च आर्ते रौद्रे च त्वं विशुद्धात्मन्! । रागद्वेषप्रपंचान् निर्जेतुं सव्रण! उद्युक्तो (भव)
॥ १९६ ॥ को दुःखं प्राप्नुवीत? कस्य वा सौख्यैर्विस्मयो भवेत्! । को वा न लभेत मोक्षं? रागद्वेषौ यदि न स्याताम् ॥ १९७ ॥
नैव तत् करोति अमित्रं सुष्ठ्वपि विराद्धः सनर्थोऽपि । यद् द्वावपि अनिगृहीतौ कुरुतो रागश्च द्वेषश्च ॥ १९८ ॥ तत् मुञ्चत रागद्वेषौ
श्रेयः चिन्तयत आत्मनो नित्यम् । यं ताभ्यामिच्छत गुणं तस्माद्बहुतरं पश्चात् लभध्वं ॥ १९९ ॥ इह लोके आयासं अयशश्च कुरुतो
गुणविनाशं च । प्रसुवाते च परलोके च शारीरमनोगतानि दुःखानि ॥ २०० ॥ धिग् धिग् अहो अकार्यं यत् जानानोऽपि रागद्वेषा-
भ्याम् । फलमतुलं कटुकरसं तावेव निषेवते जीवः ॥ २०१ ॥ तद् यदीच्छसि गन्तुं तीरं भवसागरस्य घोरस्य । तर्हि तपःसंयमभाण्डं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ॥२०२॥ दीप अनुक्रम [२०२]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया

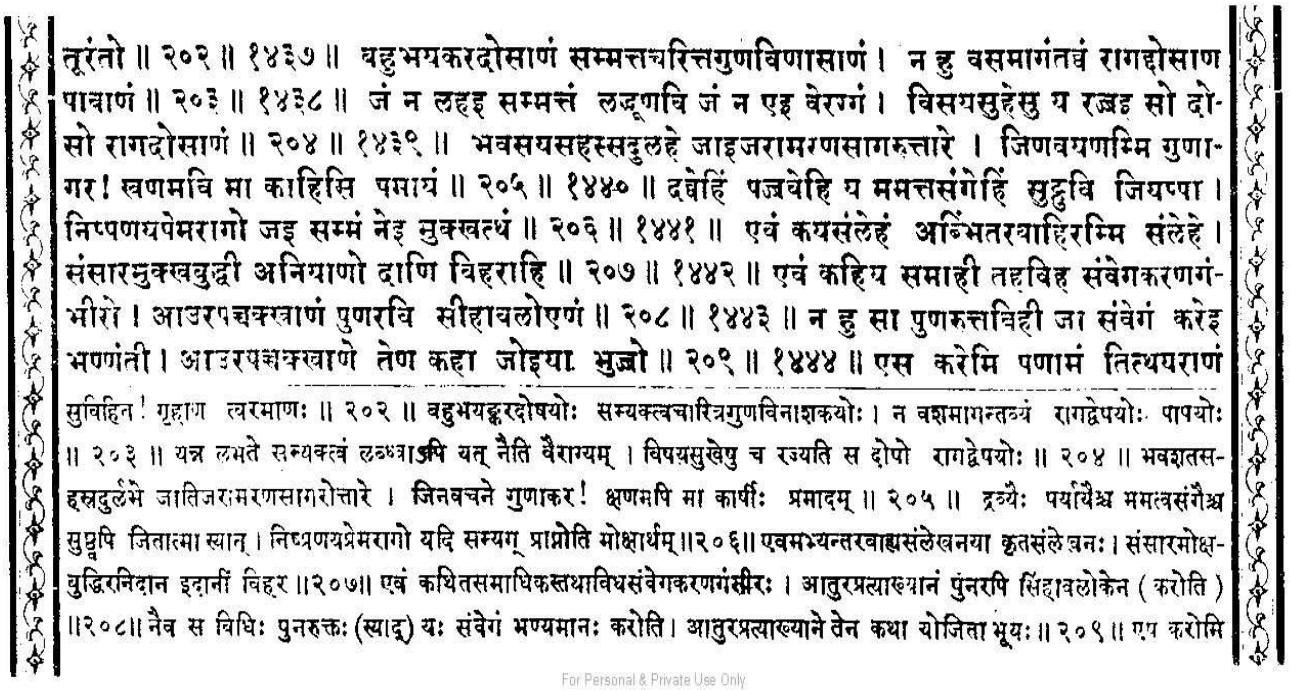

तूरंतो ॥ २०२ ॥ १४३७ ॥ बहुभयकरदोसाणं सम्मत्तचरित्तगुणविणासाणं । न हु वसमागंतव्वं रागद्दोसाण पावाणं ॥ २०३ ॥ १४३८ ॥ जं न लहइ सम्मत्तं लद्धूणवि जं न एइ वेरग्गं । विसयसुहेसु य रज्जइ सो दोसो रागदोसाणं ॥ २०४ ॥ १४३९ ॥ भवसयसहस्सदुलहे जाइजरामरणसागरुत्तारे । जिणवयणम्मि गुणागर! खणमवि मा काहिसि पमायं ॥ २०५ ॥ १४४० ॥ दव्वेहिं पज्जवेहि य ममत्तसंगेहिं सुट्ठुवि जियप्पा । निप्पणयपेमरागो जइ सम्मं नेइ मुक्खत्थं ॥ २०६ ॥ १४४१ ॥ एवं कयसंलेहं अब्भिंतरबाहिरम्मि संलेहे । संसारमुक्खबुद्धी अनियाणो दाणि विहराहि ॥ २०७ ॥ १४४२ ॥ एवं कहिय समाही तहविह संवेगकरणगंभीरो । आउरपच्चक्खाणं पुणरवि सीहावलोएणं ॥ २०८ ॥ १४४३ ॥ न हु सा पुणरुत्तविही जा संवेगं करेइ भण्णंती । आउरपच्चक्खाणे तेण कहा जोइया भुज्जो ॥ २०९ ॥ १४४४ ॥ एस करेमि पणामं तित्थयराणं

सुविहित! गृह्णाण त्वरमाणः ॥ २०२ ॥ बहुभयङ्करदोषयोः सम्यक्त्वचारित्रगुणविनाशकयोः । न वशमागन्तव्यं रागद्वेषयोः पापयोः ॥ २०३ ॥ यन्न लभते सम्यक्त्वं लब्ध्वाऽपि यन् नैति वैराग्यम् । विषयसुखेषु च रज्यति स दोषो रागद्वेषयोः ॥ २०४ ॥ भवशतसहस्रदुर्लभे जातिजरामरणसागरोत्तारे । जिनवचने गुणाकर! क्षणमपि मा कार्षीः प्रमादम् ॥ २०५ ॥ द्रव्यैः पर्यायैश्च ममत्वसंगैश्च सुष्ठ्वपि जितात्मा स्यात् । निष्प्रणयप्रेमरागो यदि सम्यग् प्राप्नोति मोक्षार्थम् ॥२०६॥ एवमभ्यन्तरबाह्यसंलेखनया कृतसंलेखनः । संसारमोक्षबुद्धिरनिदान इदानीं विहर ॥२०७॥ एवं कथितसमाधिकस्तथाविधसंवेगकरणगंभीरः । आतुरप्रत्याख्यानं पुनरपि सिंहावलोकेन (करोति) ॥२०८॥ नैव स विधिः पुनरुक्तः (स्याद्) यः संवेगं भण्यमानः करोति । आतुरप्रत्याख्याने तेन कथा योजिता भूयः ॥ २०९ ॥ एष करोमि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	अथ आतुरप्रत्याख्यान-आदि वर्णयते

अणुत्तरगईणं । सव्वेसिं च जिणाणं सिद्धाणं संजयाणं च ॥ २१० ॥ १४४५ ॥ जं किंचिवि दुच्चरियं तमहं निंदामि सव्वभावेणं । सामाइयं च तिविहं तिविहेण करेमऽणागारं ॥ २११ ॥ १४४६ ॥ अब्भिंतरं च तह बाहिरं च उवहीं सरीर साहारं । मणवयणकायतिकरणसुद्धोऽहं मित्ति पकरेमि ॥ २१२ ॥ १४४७ ॥ बंधपओसं हरिसं रइमरइं दीणयं भयं सोगं । रागदोस विसायं उस्सुगभावं च पयहामि ॥ २१३ ॥ १४४८ ॥ रागेण व दोसेण व अहवा अकयन्नुया पडिनिवेसेणं । जो मे किंचिवि भणिओ तमहं तिविहेण खामेमि ॥ २१४ ॥ ॥ १४४९ ॥ सव्वेसु य दव्वेसु य उवट्ठिओ एस निम्ममत्ताए । आलंबणं च आया दंसणनाणे चरित्ते य॥२१५॥ ॥ १४५० ॥ आया पच्चक्खाणे आया मे संजमे तवे जोगो। जिणवयणविहिविलग्गो अवसेसविहिं तु दंसेहि ॥ २१६ ॥ १४५१ ॥ मूलगुण उत्तरगुणा जे मे नाराहिया पमाएणं । ते सव्वे निंदामि पडिक्कमे आगमिस्साणं

प्रणामं तीर्थकरेभ्यः अनुत्तरगतिभ्यः । सर्वेभ्यश्च जिनेभ्यः सिद्धेभ्यः संयतेभ्यश्च ॥ २१० ॥ यत्किंचिदपि दुश्चरितं तदहं निन्दामि सर्वभावेन । सामायिकं च त्रिविधं त्रिविधेन करोम्यनाकारं ॥ २११ ॥ अभ्यन्तरं च तथा बाह्यं च उपधिं शरीरं साहारं (व्युत्सृज्य)। मनोवचनकायैः त्रिकरणशुद्धोऽहं प्रकरोमि (मैत्रीं) इति ॥२१२॥ बन्धं प्रद्वेषं हर्षं रतिमरतिं दीनतां भयं शोकं । रागद्वेषौ विषादं उत्सुकभावं च प्रजहामि ॥ २१३ ॥ रागेण वा द्वेषेण वा अथवा अकृतज्ञतया प्रतिनिवेशेन यो मया किञ्चिदपि भणितः तमहं त्रिविधेन क्षमयामि ॥ २१४ ॥ सर्वेषु च द्रव्येषु च निर्ममत्वाय एष उपस्थितः (मम) । आलम्बनं चात्मा दर्शनज्ञाने चारित्रं च ॥ २१५ ॥ आत्मा प्रत्याख्यानं आत्मा मे संयमस्तपः योगः । जिनवचनविधिविलग्नः अवशेषविधिं तु दर्शय ॥ २१६ ॥ मूलगुणा उत्तरगुणा ये मया नारा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ २१७ ॥ १४५२ ॥ एगो सयंकडाइं आया मे नाणदंसणवलक्खो । संजोगलक्खणा खलु सेसा मे बाहिरा भावा ॥ २१८ ॥ १४५३ ॥ पत्ताणि दुहसयाइं संजोगस्सा(वसा)णुएण जीवेणं । तम्हा अंणतदुक्खं चयामि संजोगसंबंधं ॥ २१९ ॥ १४५४ ॥ अस्संजममण्णाणं मिच्छत्तं सव्वओ ममत्तं च । जीवेसु अजीवेसु य तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २२० ॥ १४५५ ॥ परिजाणे मिच्छत्तं सधं अस्संजमं अकिरियं च । सव्वं चेव ममत्तं चयामि सव्वं च खामेमि ॥ २२१ ॥ १४५६ ॥ जे मे जाणंति जिणा अवराहा जेसु जेसु ठाणेसु । ते तह आलोएमि उवट्ठिओ सव्वभावेणं ॥ २२२ ॥ १४५७ ॥ उप्पन्ना उप्पन्ना माया अणुमग्गओ निहंतव्वा । आलोयणनिंदणगरिहणाहिं न पुणोत्ति य बिइयं ॥ २२३ ॥ १४५८ ॥ जह बालो जंपंतो कज्जमकज्जं च उज्जुयं भणइ । तं तह

द्वाः प्रमादेन । तान् सर्वान् निन्दामि प्रतिक्रान्यामि आगमिष्यद्भ्यः ॥ २१७ ॥ एकः स्वयं कृतानि (भुङ्क्ते) आत्मा मे ज्ञानदर्शनवलक्षः । संयोगलक्षणाः खलु शेषा बाह्या भावाः ॥ २१८ ॥ प्राप्तानि दुःखशतानि संयोगवशानुगेन जीवेन । तस्मादनन्तदुःखं त्यजामि संयोगसम्बन्धं ॥ २१९ ॥ असंयममज्ञानं मिथ्यात्वं सर्वेषु जीवेषु अजीवेषु च ममत्वं तन्निन्दामि तच्च गर्हे ॥ २२० ॥ परिजानामि मिथ्यात्वं सर्वमसंयममक्रियां च । सर्वमेव ममत्वं त्यजामि सर्वं च क्षमयामि ॥ २२१ ॥ यान् मम जानन्ति जिना अपराधान् येषु २ स्थानेषु ताँस्तथाऽऽलोचयामि उपस्थितः सर्वभावेन ॥ २२२ ॥ उत्पन्ना उत्पन्ना माया अनुमार्गतो निहन्तव्या । आलोचननिन्दनागर्हाभिः न पुनरिति च द्वितीयम् ॥ २२३ ॥ यथा बालो जल्पन् कार्यमकार्यं च ऋजुकं भणति । तत्तथा आलोचयितव्यं मायां

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आलोयवं मायं मुत्तूण निस्सेसं ॥ २२४॥१४५९ ॥ सुबहुंपि भावसल्लं आलोएऊण गुरुसगासम्मि । निस्सल्लो संथारं उवेइ आराहओ होइ ॥ २२५ ॥ १४६० ॥ अप्पंपि भावसल्लं जे णालोयंति गुरुसगासम्मि । धंतंपि सुयसमिद्धा न हु ते आराहगा हुंति ॥ २२६॥१४६१॥ नवि तं विसं च सत्थं च दुप्पउत्तो व कुणइ वेयालो । जंतं व दुप्पउत्तं सप्पो व पमायओ कुविओ ॥ २२७ ॥ १४६२ ॥ जं कुणइ भावसल्लं अणुद्धियं उत्तमट्ठकालम्मि । दुल्लहबोहीयत्तं अणंतसंसारियत्तं च ॥ २२८ ॥ १४६३ ॥ तो उद्धरंति गारवरहिया मूलं पुणब्भवलयाणं । मिच्छादंसणसल्लं मायासल्लं नियाणं च ॥ २२९॥ १४६४ ॥ कयपावोऽवि मणूसो आलोइय निंदिय गुरुसगासे । होइ अइरेगलहुओ ओहरियभरुव्व भारवहो ॥ २३० ॥ १४६५ ॥ तस्स य पायच्छित्तं जं मग्गविऊ गुरू उवइसंति । तं तह अणुचरियव्वं अणवत्थपसंगभीएणं ॥ २३१ ॥ १४६६ ॥ दसदोसविप्पमुक्कं तम्हा

मुक्त्वा निःशेषाम् ॥ २२४ ॥ सुबह्वपि भावशल्यमालोच्य गुरुसकाशे । निःशल्यः संस्तारकमुपैति(यः सः) आराधको भवति ॥२२५॥ अल्पमपि भावशल्यं ये नालोचयंति गुरुसकाशे । बाढमपि श्रुतसमृद्धा नैव त आराधका भवन्ति ॥ २२६ ॥ नैव तत् विषं च शस्त्रं च दुष्प्रयुक्तो वा करोति वैतालः । यत्रं वा दुष्प्रयुक्तं सर्पो वा प्रमादतः कुपितः ॥ २२७ ॥ यत्करोति भावशल्यं अनुद्धृतं उत्तमार्थकाले । दुर्लभबोधिकत्वं अनन्तसंसारिकत्त्वं च ॥ २२८ ॥ तत उद्धरन्ति गौरवरहिता मूलं पुनर्भवलतानां । मिथ्यादर्शनशल्यं मायाशल्यं निदानं च ॥ २२९ ॥ कृतपापोऽपि मनुष्यः गुरुसकाशे आलोच्य निन्दयित्वा । भवत्यतिरेकलघुः उत्तारितभर इव भारवाट् ॥ २३० ॥ तस्य च प्रायश्चित्तं यन्मार्गविदो गुरवः उपदिशन्ति । तत्तथा अनुचरितव्यं अनवस्थाप्रसङ्गभीतेन ॥ २३१ ॥ दशदोषविप्रमुक्तं तस्मात्

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सव्वं अमग्ग(गूह)माणेणं । जं किंचि कयमकज्जं आलोए तं जहावत्तं ॥ २३२ ॥ १४६७ ॥ सव्वं पाणारंभं पच्चक्खामित्ति अलियवयणं च । सव्वं अदिन्नदाणं अब्बंभपरिग्गहं चेव ॥ २३३ ॥ १४६८ ॥ सव्वं च असण-पाणं चउव्विहं जा य बाहिरा उवही । अब्भितरं च उवहिं जावज्जीवं वोसिरामि ॥ २३४ ॥ १४६९ ॥ कंतारे दुब्भिक्खे आयंके वा महया समुप्पन्ने । जं पालियं न भग्गं तं जाणसु पालणासुद्धं ॥ २३५ ॥ १४७० ॥ रागेण व दोसेण व परिणामेण व न दूसियं जं तु । तं खलु पच्चक्खाणं भावविसुद्धं मुणेयव्वं ॥ २३६ ॥ १४७१ ॥ पीयं थणअच्छीरं सागरसलिलाउ बहुयरं हुज्जा । संसारे संसरंतो माऊणं अन्नमन्नाणं ॥२३७॥१४७२॥ नत्थि किर सो पएसो लोए वालग्गकोडिमित्तोऽवि । संसारे संसरंतो जत्थ न जाओ मओ वाऽवि ॥२३८॥ १४७३॥ चुलसीई किर लोए जोणीणं पमुह सयसहस्साइं । इक्किक्कमि य इत्तो अणंतखुत्तो समुप्पन्नो ॥ २३९ ॥

सर्वमगूहयता । यत्किञ्चिदपि अकार्यं कृतं तद्यथावृत्तमालोचयेत् ॥ २३२ ॥ सर्वं प्राणारम्भं प्रत्याख्यामीति चालीकवचनं च । सर्व-मदत्तादानमब्रह्म परिग्रहं चैव ॥ २३३ ॥ सर्वं च अशनपानं चतुर्विधः यश्च बाह्योपधिः (तं) । अभ्यन्तरं च उपधिं यावज्जीवं व्युत्सृ-जामि ॥ २३४ ॥ कान्तारे दुर्भिक्षे आतङ्के वा महति समुत्पन्ने । यत्पालितं न भग्नं तत् (प्रत्याख्यानं) जानीहि पालनाशुद्धम् ॥२३५॥ रागेण वा द्वेषेण वा परिणामेन वा न दूषितं यत्तु । तत्खलु प्रत्याख्यानं भावविशुद्धं ज्ञातव्यम् ॥ २३६ ॥ पीतं स्तनक्षीरं सागरसलिलाद् बहुतरं भवेत् । संसारे संसरता मातृणां अन्यान्यासाम् ॥ २३७ ॥ नास्ति किल स प्रदेशो लोके वालाग्रकोटीमात्रोऽपि । संसारे संसरन् यत्र न जातो मृतो वाऽपि ॥२३८॥ चतुरशीतिः किल लोके योनिप्रमुखाणि शतसहस्राणि । एकैकस्मिंश्चेतोऽनन्तकृत्वः समुत्पन्नः ॥२३९॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १४७४ ॥ उड्ढमहे तिरियम्मि य मयाणि बालमरणाणिऽणंताणि । तो ताणि संभरंतो पंडियमरणं मरीहामि ॥ २४० ॥ १४७५ ॥ माया मित्ति पिया मे भाया भज्जत्ति पुत्त धूया य । एयाणिऽचिंतयंतो पंडियमरणं मरीहामि ॥ २४१ ॥ १४७६ ॥ मायापिइबंधूहिं संसारत्थेहिं पूरिओ लोगो । बहुजोणिनिवासीहिं न य ते ताणं च सरणं च ॥ २४२ ॥ १४७७ ॥ इक्को जायइ मरइ इक्को अणुहवइ दुक्कयविवागं । इक्को अणुसरइ जीओ जरमरणचउग्गईगुविलं ॥ २४३ ॥ १४७८ ॥ उव्वेवणयं जम्मणमरणं नरएसु वेयणाओ य । एयाणि संभरंतो पंडियमरणं मरीहामि ॥ २४४ ॥ १४७९ ॥ इक्कं पंडियमरणं छिंदइ जाईसयाणि बहुयाणि । तं मरणं मरियव्वं जेण मओ सुम्मओ (मुक्कओ) होइ ॥ २४५ ॥ १४८० ॥ कइया णु तं सुमरणं पंडियमरणं जिणेहि पण्णत्तं । सुद्धो उद्धियसल्लो पाओवगमं मरीहामि ॥ २४६ ॥ १४८१ ॥ संसारचक्कवाले सव्वेऽवि य पुग्गला

ऊर्द्धमधस्तिरश्चि च मृतानि बालमरणानि अनन्तानि । ततस्तानि स्मरन् पण्डितमरणं मरिष्ये ॥ २४० ॥ माता मे इति पिता मे भ्राता भार्या इति पुत्रो दुहिता च । एतानि अचिन्तयन् पण्डितमरणं मरिष्ये ॥ २४१ ॥ मातापितृबन्धुभिः संसारस्थैः पूरितो लोकः । बहुयोनिनिवासिभिर्न च ते त्राणं च शरणं च ॥ २४२ ॥ एको जायते म्रियते एकोऽनुभवति दुष्कृतविपाकं । एकोऽनुसरति जीवो जरामरणचतुर्गतिगुपिलं (भवम्) ॥ २४३ ॥ उद्वेजकं जन्ममरणं नरकेषु वेदनाश्च । एताः स्मरन् पण्डितमरणं मरिष्ये ॥२४४॥ एकं पण्डितमरणं छिनत्ति जातिशतानि बहुकानि । तेन मरणेन मर्त्तव्यं येन मृतः सुमृतः (मुक्तः) भवति ॥ २४५ ॥ कदा तत् सुमरणं पण्डितमरणं जिनैः प्रज्ञप्तम् । शुद्ध उद्धृतशल्यः पादपोपगतो मरिष्ये ॥ २४६ ॥ संसारचक्रवाले सर्वेऽपि च पुद्गला मया बहुशः ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मए बहुसो। आहारिया य परिणामिया य न य तेसु तित्तोऽहं ॥ २४७ ॥ १४८२ ॥ आहारनिमित्तेणं मच्छा वच्चंतिऽणुत्तरं नरयं। सचित्ताहारविहिं तेण उ मणसाऽवि निच्छामि ॥ २४८ ॥ १४८३ ॥ तणकट्ठेण व अग्गी लवणसमुद्दो नईसहस्सेहिं। न इमो जीवो सक्को तिप्पेउं कामभोगेहिं ॥ २४९ ॥ १४८४ ॥ लवणयसमुहसामाणो दुप्पूरो धणरओ अपरिमिज्जो। न हु सक्को तिप्पेउं जीवो संसारियसुहेहिं ॥ २५० ॥ १४८५ ॥ कप्पतरुसंभवेसु य देवुत्तरकुरुवंसपसूएसुं। परिभोगेण न तित्तो न य नरविज्जाहरसुरेसुं ॥ २५१ ॥ १४८६ ॥ देविंदचक्कवट्टित्तणाइं रज्जाइं उत्तमा भोगा। पत्ता अणंतखुत्तो न यऽहं तित्तिं गओ तेहिं ॥ २५२ ॥ १४८७ ॥ पयक्खीरुच्छुरसेसु य साऊसु महोदहीसु बहुसोवि। उवन्नो न य तण्हा छिन्ना ते सीयलजलेहिं ॥ २५३ ॥ ॥ १४८८ ॥ तिविहेणवि सुहमउलं जम्हा कामरइविसयसुक्खाणं। बहुसोऽवि समणुभूयं न य तुह तण्हा

आहारिताश्च परिणामिताश्च न च तैस्तृप्तोऽहं ॥ २४७ ॥ आहारनिमित्तेन मत्स्या व्रजन्ति अनुत्तरं नरकं । सचित्ताऽऽहारविधिं तेन तु मनसापि नेच्छामि ॥ २४८ ॥ तृणकाष्ठैरग्निरिव नदीसहस्रैः लवणसमुद्र इव । नायं जीवः शक्यः तर्पयितुं कामभोगैः ॥ २४९ ॥ लवणमुखसमानः दुष्पूरः धनरयोऽपरिमेयः । नैव शक्यः तर्पयितुं जीवः सांसारिकसुखैः ॥ २५० ॥ कल्पतरुसम्भवैः देवकुरूत्तरकुरुप्रसूतैः । परिभोगेन तृप्तः न च नरविद्याधरसुरभवजैः ॥ २५१ ॥ देवेन्द्रचक्रवर्त्तित्वानि राज्यानि उत्तमा भोगाः । प्राप्ता अनन्तकृत्वः न चाहं तृप्तिगतस्तैः ॥ २५२ ॥ पयक्षीरेक्षुरसेषु च स्वादुषु महोदधिषु बहुशोऽपि । उत्पन्नो न च तृष्णा छिन्ना तव शीतलजलैः ॥ २५३ ॥ त्रिविधेनापि सुखमतुलं यस्मात् कामरतिविषयसौख्यैः । बहुशोऽपि समनुभूतं न च तव तृष्णा परिच्छिन्ना ॥ २५४ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पारेच्छिण्णा ॥ २५४ ॥ १४८९ ॥ जा काइ पत्थणाओ कया मए रागदोसवसएणं । पडिबंधेण बहुविहा तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २५५ ॥ १४९० ॥ हंतूण मोहजालं छित्तूण य अट्ठकम्मसंकलियं । जम्मणमरणऽरहट्टं भित्तूण भवा णु मुच्चिहिसि ॥ २५६ ॥ १४९१ ॥ पंच य महव्वयाइं तिविहं तिविहेण आरुहेऊणं । मणवय-णकायगुत्तो सज्झो मरणं पडिच्छिज्जा (लहिज्जा) ॥ २५७ ॥ १४९२ ॥ कोहं माणं मायं लोहं पिज्जं तहेव दोसं च । चइऊण अप्पमत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥ २५८ ॥ १४९३ ॥ कलहं अब्भक्खाणं पेसुन्नंपि य परस्स परिवायं । परिवज्जिंतो गुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥ २५९ ॥ १४९४ ॥ किण्हा नीला काऊ लेसं झाणाणि अप्पसत्थाणि । परिवज्जिंतो गुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥ २६० ॥ १४९५ ॥ तेऊ पम्हं सुक्कं लेसा झाणाणि सुप्पसत्थाणि । उवसंपन्नो जुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥ २६१ ॥ १४९६ ॥ पंचिंदियसंवरणं पंचेव निरुंभि-

---

या काचित् प्रार्थना कृता मया रागद्वेषवशगेन प्रतिबन्धेन बहुविधा तां निन्दे तां च गर्हे ॥ २५५ ॥ हत्वा मोहजालं छित्त्वा चाष्टकर्म-शृङ्खलां। जन्ममरणारहट्टं भित्त्वा भवाद् मुच्यसे ॥ २५६ ॥ पञ्च च महाव्रतानि त्रिविधं त्रिविधेनारोह्य । मनोवचनकायगुप्तः सद्यो मरणं प्रतीक्षेत् ॥ २५७ ॥ क्रोधं मानं मायां लोभं प्रेम तथैव द्वेषं च । त्यक्त्वा अप्रमत्तः रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥ २५८ ॥ कलहं अभ्याख्यानं पैशून्यमपि च परस्य परिवादं । परिवर्जयन् गुप्तः रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥ २५९ ॥ कृष्णां नीलां कापोतीं लेश्यां ध्याने अप्रशस्ते । परि० ॥ २६० ॥ तैजसीं पद्मां शुक्लां लेश्यां ध्याने सुप्रशस्ते उपसम्पन्नो युक्तः० ॥ २६१ ॥ पञ्चेन्द्रियसंवरणं पञ्चैव निरुद्ध्य काम-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ ‘पंचमहाव्रतस्य रक्षा’ वर्णयते

---------- मूलं [२६२]----------

प्रत सूत्रांक ||२६२||

दीप अनुक्रम [२६२]

ऊण कामगुणे। अच्चासायणविरओ रक्खामि महव्वए पंच ॥ २६२ ॥ १४९७ ॥ सत्तभयविप्पमुक्को चत्तारि निरुंभिऊण य कसाए । अट्ठमयट्ठाणजहो रक्खामि महव्वए पंच ॥ २६३ ॥ १४९८ ॥ मणसा मणसच्चविऊ वायासच्चेण करणसच्चेण । तिविहेण अप्पमत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥ २६४ ॥ १४९९ ॥ एवं तिदंडविरओ तिकरणसुद्धो तिसल्लनिस्सल्लो। तिविहेण अप्पमत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥ २६५ ॥ १५०० ॥ सम्मत्तं समिइओ गुत्तीओ भावणाओ नाणं च। उवसंपन्नो जुत्तो रक्खामि महव्वए पंच ॥ २६६ ॥ १५०१ ॥ संगं परिजाणामि सल्लंपि य उद्धरामि तिविहेणं । गुत्तीओ समिईओ मज्झं ताणं च सरणं च ॥ २६७ ॥ १५०२ ॥ जह खुहियचक्कवाले पोयं रयणभरियं समुद्दम्मि। निज्जामया धरिंती कयरय(कर)णा बुद्धिसंपण्णा ॥ २६८ ॥ ॥ १५०३ ॥ तवपोअं गुणभरियं परीसहुम्मीहि भणियमाइद्धं । तह आराहिंति विऊ उवएसऽवलंबगा

गुणान् । अत्याशातनाविरतः० ॥ २६२ ॥ सप्तभयविप्रमुक्तः चतुरो निरुद्ध्य च कषायान् । त्यक्ताष्टमदस्थानः० ॥ २६३ ॥ मनसा मनःसत्यविन् वाचासत्येन करणसत्येन (युक्तः) त्रिविधेनाप्यप्रमत्तः० ॥ २६४ ॥ एवं त्रिदण्डविरतः त्रिकरणशुद्धः त्रिशल्यनिःशल्य । त्रिविधेनाप्रमत्तः० ॥ २६५ ॥ सम्यक्त्वं समितीः गुप्तीः भावना ज्ञानं च । उपसम्पन्नो युक्तः० ॥ २६६ ॥ सङ्गं परिजानामि शल्यमपि चोद्धरामि त्रिविधेन । गुप्तयः समितयः मम त्राणं शरणं च ॥ २६७ ॥ यथा क्षुभितचक्रवाले समुद्रे रत्नभृतं पोतं । निर्यामका धारयन्ति कृतरचनाः (करणाः) बुद्धिसम्पन्नाः ॥ २६८ ॥ तपःपोतं गुणभृतं परीषहोर्मिभिः वाढमाविष्टम् (धारयित्वा) ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ आराधना एवं उपदेश-आदि वर्णयेते

धीरा ॥ २६९॥१५०४ ॥ जइ ताव ते सुपुरिसा आयारोवियभरा निरवयक्खा। गिरिकुहरकंदरगया साहंति य अप्पणो अट्ठं ॥ २७० ॥ १५०५ ॥ जइ ताव सावयाकुलगिरिकंदरविसमदुग्गमग्गेसु । धिइधणियबद्धकच्छा साहंति य उत्तमं अट्ठं ॥ २७१ ॥ १५०६ ॥ किं पुण अणगारसहायगेण वेरग्गसंगहबलेणं । परलोएण ण सक्का संसारमहोदहिं तरिउं ? ॥ २७२ ॥ १५०७ ॥ जिणवयणमप्पमेयं महुरं कन्नामयं सुणंताणं । सक्का हु साहुमज्झा साहेउं अप्पणो अट्ठं ॥ २७३ ॥ १५०८ ॥ धीरपुरिसपण्णत्तं सप्पुरिसनिसेवियं परमघोरं । धन्ना सिलातलगया साहिंती अप्पणो अट्ठं ॥ २७४ ॥ १५०९ ॥ बाहेइ इंदियाइं पुव्वमकारियपइट्ठचारिस्स । अकयपरिकम्म कीवं मरणेसु अ संपउत्तंमि ॥ २७५ ॥ १५१० ॥ पुव्वमकारियजोगो समाहिकामोऽवि मरणकालम्मि । न भवइ परीसहसहो विसयसुहपराइओ जीवो ॥ २७६ ॥ १५११ ॥ पुव्विं कारियजोगो समाहिकामो य मर-

उपदेशावलम्बका धीराः विदः तथाऽऽराधयन्ति ॥ २६९ ॥ यदि तावत्ते सुपुरुषा आत्मारोपितभाराः निरपेक्षा गिरिकुहरकन्दरागताः साधयन्ति चात्मनोऽर्थम् ॥ २७० ॥ यदि तावद् श्वापदाकुलगिरिकन्दराविषमदुर्गमार्गेषु । बाढं धृतिबद्धकच्छाः उत्तमार्थं साधयन्ति ॥ २७१ ॥ किं पुनरनगारसहायकेन वैराग्यसङ्ग्रहबलेनापरलोकेन न शक्यः संसारमहोदधिस्तरीतुम् ? ॥ २७२ ॥ जिनवचनमप्रमेयं मधुरं कर्णामृतं शृण्वता साधुमध्ये आत्मनोऽर्थः साधयितुं ?, शक्य एव ॥२७३॥ धीरपुरुषप्रज्ञप्तं सत्पुरुषनिसेवितं परमघोरं। आत्मनोऽर्थं धन्याः शीलातलगताः साधयन्ति ॥ २७४ ॥ बाधयन्ति इन्द्रियाणि पूर्वं अकारितप्रतिष्ठाचारित्रस्य अकृतपरिकर्म्माणं क्षीवं मरणे सम्प्रयुक्ते ॥ २७५ ॥ पूर्वमकृतयोगः समाधिकामोऽपि मरणकाले । न भवति परीषहसहः विषयसुखपराजितो जीवः ॥ २७६ ॥ पूर्वं कृतयोगः

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

णकालम्मि । होइ उ परीसहसहो विसयसुहनिवारिओ जीवो ॥ २७७ ॥ १५१२ ॥ पुव्विं कारियजोगो अनियाणो ईहिऊण सुहभावो । ताहे मलियकसाओ सज्जो मरणं पडिच्छिज्जा ॥ २७८ ॥ १५१३ ॥ पावाणं पावाणं कम्माणं अप्पणो सकम्माणं । सक्का पलाइउं जे तवेण सम्मं पउत्तेणं ॥ २७९ ॥ १५१४ ॥ इक्कं पंडियमरणं पडिवज्जइ सुपुरिसो असंभंतो । खिप्पं सो मरणाणं काहिइ अंतं अणंताणं ॥ २८० ॥ १५१५ ॥ किं तं पंडियमरणं? काणि व आलंबणाणि भणियाणि? । एयाइं नाऊणं किं आयरिया पसंसंति? ॥ २८१ ॥ १५१६ ॥ अणसणपाउवगमणं आलंबण झाण भावणाओ अ । एयाइं नाऊणं पंडियमरणं पसंसंति ॥ २८२ ॥ १५१७ ॥ इंदियसुहसाउलओ घोरपरीसहपराइयपरज्झो। अकयपरिकम्म कीवो मुज्झइ आराहणाकाले ॥२८३॥१५१८॥ लज्जाइ गारवेणं बहुसुयमएण वावि दुच्चरियं । जे न कहिंति गुरूणं न हु ते आराहगा हुंति ॥२८४॥१५१९॥

समाधिकामश्च मरणकाले । भवति तु परीषहसहः निवारितविषयसुखः जीवः ॥ २७७ ॥ पूर्वं कृतयोगः अनिदानः शुभभावान् ईहयित्वा । तदा मर्दितकषायः सद्यो मरणं प्रतीप्सेत् ॥ २७८ ॥ पापानामपि पापेभ्यः कर्मभ्यः आत्मना स्वकृतेभ्यः । शक्यः पलायितुं तपसा सम्यक् प्रयुक्तेन ॥२७९॥ एकं पण्डितमरणं प्रतिपद्यते सुपुरुषः असंभ्रान्तः । क्षिप्रं सः अनन्तानां मरणानामन्तं करोति ॥२८०॥ किं तत् पण्डितमरणं कानि वाऽऽलम्बनानि भणितानि । एतानि ज्ञात्वा किं आचार्याः प्रशंसन्ति ॥ २८१ ॥ अनशनं पादोपगमनं (मरणे) आलम्बनानि ध्याने भावनाश्च एतानि ज्ञात्वा पण्डितमरणं प्रशंसन्ति ॥ २८२ ॥ इन्द्रियसुखसाताकुलः घोरपरीषहपराजितः परायत्तः । अकृतपरिकर्म्मा क्लीबः मुह्यति आराधनाकाले ॥ २८३ ॥ लज्जया गौरवेण बहुश्रुतमदेन वा दुश्चरितमपि । ये न कथयन्ति

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ||२८५|| दीप अनुक्रम [२८५]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया

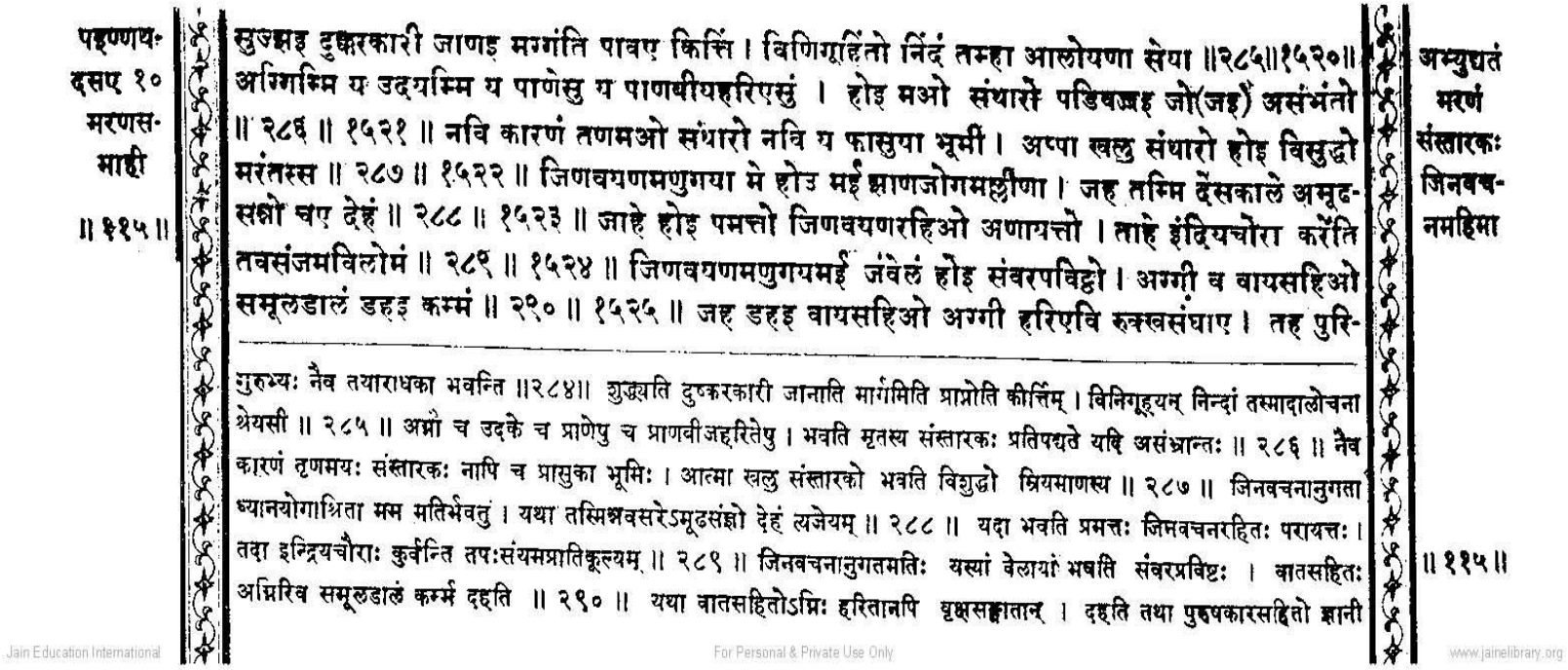

पइण्णय-दसए १० मरणस-माही ॥ ११५ ॥

सुज्झइ दुक्करकारी जाणइ मग्गंति पावए किर्त्तिं । विणिगूहिंतो निंदं तम्हा आलोयणा सेया ॥२८५॥१५२०॥ अग्गिम्मि य उदयम्मि य पाणेसु य पाणबीयहरिएसुं । होइ मओ संथारो पडिवज्जइ जो(जइ) असंभंतो ॥ २८६ ॥ १५२१ ॥ नवि कारणं तणमओ संथारो नवि य फासुया भूमी । अप्पा खलु संथारो होइ विसुद्धो मरंतस्स ॥ २८७ ॥ १५२२ ॥ जिणवयणमणुगया मे होउ मई झाणजोगमल्लीणा । जह तम्मि देसकाले अमूढसन्नो चए देहं ॥ २८८ ॥ १५२३ ॥ जाहे होइ पमत्तो जिणवयणरहिओ अणायत्तो । ताहे इंदियचोरा करेंति तवसंजमविलोमं ॥ २८९ ॥ १५२४ ॥ जिणवयणमणुगयमई जंवेलं होइ संवरपविट्ठो । अग्गी व वायसहिओ समूलडालं डहइ कम्मं ॥ २९० ॥ १५२५ ॥ जह डहइ वायसहिओ अग्गी हरिएवि रुक्खसंघाए । तह पुरि-

अभ्युद्यतं मरणं संस्तारकः जिनवचन-नमहिमा

गुरुभ्यः नैव तयाराधका भवन्ति ॥२८४॥ शुद्ध्यति दुष्करकारी जानाति मार्गमिति प्राप्नोति कीर्त्तिम् । विनिगूहयन् निन्दां तस्मादालोचना श्रेयसी ॥ २८५ ॥ अग्नौ च उदके च प्राणेषु च प्राणबीजहरितेषु । भवति मृतस्य संस्तारकः प्रतिपद्यते यदि असंभ्रान्तः ॥ २८६ ॥ नैव कारणं तृणमयः संस्तारकः नापि च प्रासुका भूमिः । आत्मा खलु संस्तारको भवति विशुद्धो म्रियमाणस्य ॥ २८७ ॥ जिनवचनानुगता ध्यानयोगाश्रिता मम मतिर्भवतु । यथा तस्मिन्नवसरेऽमूढसंज्ञो देहं त्यजेयम् ॥ २८८ ॥ यदा भवति प्रमत्तः जिनवचनरहितः परायत्तः । तदा इन्द्रियचौराः कुर्वन्ति तपःसंयमप्रतिकूल्यम् ॥ २८९ ॥ जिनवचनानुगतमतिः यस्यां वेलायां भवति संवरप्रविष्टः । वातसहितः अग्निरिव समूलडालं कर्म्म दहति ॥ २९० ॥ यथा वातसहितोऽग्निः हरितानपि वृक्षसङ्घातान् । दहति तथा पुरुषकारसहितो ज्ञानी

॥ ११५ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ॥२९१॥ दीप अनुक्रम [२९१]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया

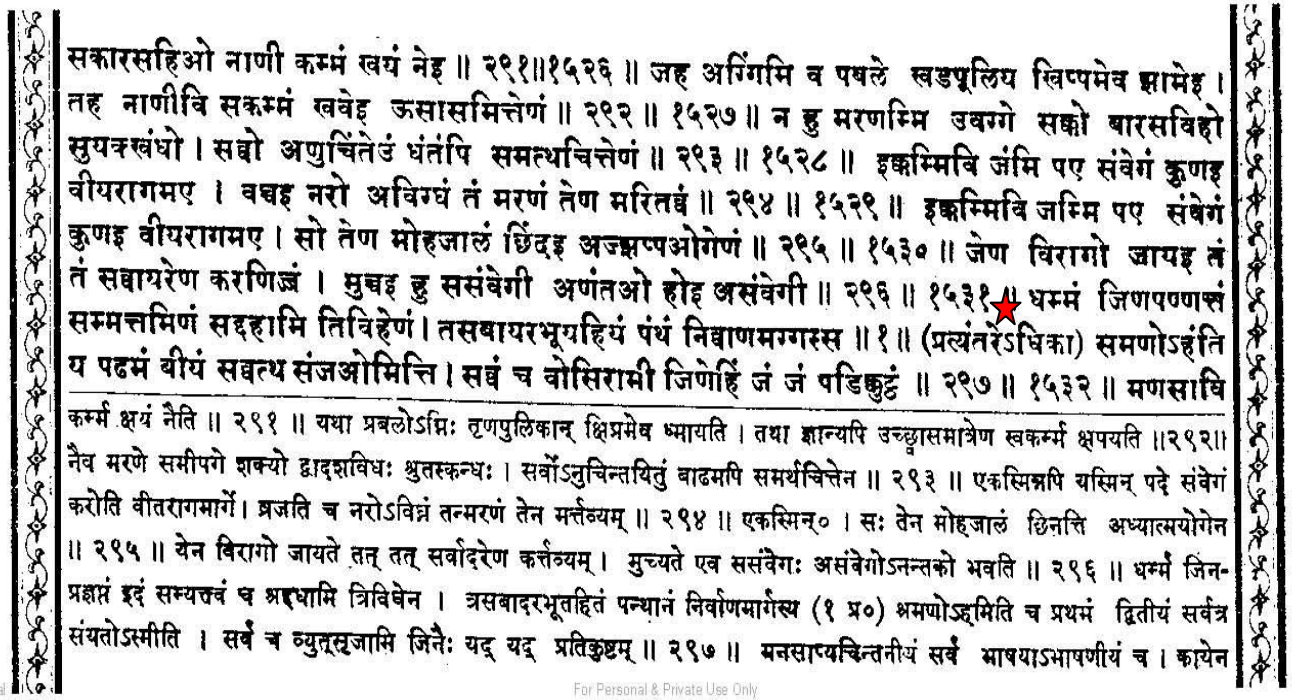

सक्कारसहिओ नाणी कम्मं खयं नेइ ॥ २९१॥१५२६ ॥ जह अग्गिमि व पयले खडपूलिय खिप्पमेव झामेइ । तह नाणीवि सकम्मं खवेइ ऊसासमित्तेणं ॥ २९२ ॥ १५२७ ॥ न हु मरणम्मि उवग्गे सक्को बारसविहो सुयक्खंधो । सव्वो अणुचिंतेउं धंतंपि समत्थचित्तेणं ॥ २९३ ॥ १५२८ ॥ इक्कम्मिवि जंमि पए संवेगं कुणइ वीयरागमए । वच्चइ नरो अविग्घं तं मरणं तेण मरितव्वं ॥ २९४ ॥ १५२९ ॥ इक्कम्मिवि जम्मि पए संवेगं कुणइ वीयरागमए । सो तेण मोहजालं छिंदइ अज्झप्पओगेणं ॥ २९५ ॥ १५३० ॥ जेण विरागो जायइ तं तं सव्वायरेण करणिज्जं । मुच्चइ हु ससंवेगी अणंतओ होइ असंवेगी ॥ २९६ ॥ १५३१ ॥ धम्मं जिणपण्णत्तं सम्मत्तमिणं सद्दहामि तिविहेणं । तसबायरभूयहियं पंथं निव्वाणमग्गस्स ॥ १ ॥ (प्रत्यंतरेऽधिका) समणोऽहंति य पढमं बीयं सव्वत्थ संजओमित्ति । सव्वं च वोसिरामी जिणेहिं जं जं पडिकुट्ठं ॥ २९७ ॥ १५३२ ॥ मणसावि

कर्म्म क्षयं नैति ॥ २९१ ॥ यथा प्रबलोऽग्निः तृणपुलिकान् क्षिप्रमेव ध्मायति । तथा ज्ञान्यपि उच्छ्वासमात्रेण स्वकर्म्म क्षपयति ॥२९२॥ नैव मरणे समीपगे शक्यो द्वादशविधः श्रुतस्कन्धः । सर्वोऽनुचिन्तयितुं बाढमपि समर्थचित्तेन ॥ २९३ ॥ एकस्मिन्नपि यस्मिन् पदे संवेगं करोति वीतरागमार्गे । व्रजति च नरोऽविघ्नं तन्मरणं तेन मर्त्तव्यम् ॥ २९४ ॥ एकस्मिन्० । सः तेन मोहजालं छिनत्ति अध्यात्मयोगेन ॥ २९५ ॥ येन विरागो जायते तत् तत् सर्वादरेण कर्त्तव्यम् । मुच्यते एव ससंवेगः असंवेगोऽनन्तको भवति ॥ २९६ ॥ धर्म्मं जिन-प्रज्ञप्तं इदं सम्यक्त्वं च श्रद्दधामि त्रिविधेन । त्रसबादरभूतहितं पन्थानं निर्वाणमार्गस्य (१ प्र०) श्रमणोऽहमिति च प्रथमं द्वितीयं सर्वत्र संयतोऽस्मीति । सर्वं च व्युत्सृजामि जिनैः यद् यद् प्रतिकुष्टम् ॥ २९७ ॥ मनसाप्यचिन्तनीयं सर्वं भाषयाऽभाषणीयं च । कायेन

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अचिंतणिज्जं सव्वं भासाइ अभासणिज्जं च। काएण य अकरणिज्जं वोसिरि तिविहेण सावज्जं ॥ २९८ ॥१५३३॥
अस्संजमवोसिरणं उवहिविवेगो तहा उवसमो अ। पडिरूवजोगविरिओ खंतो मुत्तो विवेगो य ॥२९९॥१५३४॥
एयं पच्चक्खाणं आउरजणं आवईसु भावेणं। अन्नतरं पडिवन्नो जंपंतो पावइ समाहिं ॥ ३०० ॥ १५३५ ॥ मम
मंगलमरिहंता सिद्धा साहू सुयं च धम्मो य। तेसिं सरणोवगओ सावज्जं वोसिरामित्ति ॥ ३०१ ॥ १५३६ ॥
(इति सिरिमरणविभत्तिसुए संलेहणासुयं सम्मत्तं ॥२॥ अथ आराहणासुयं लिख्यते इति प्रत्यन्तरेऽधिकं ॥)
सिद्धे उवसंपन्नो अरिहंते केवली य भावेण। इत्तो एगतरेणवि पएण आराहओ होइ ॥ ३०२ ॥ १५३७ ॥
समुइन्नवेयणो पुण समणो हिययम्मि किं निवेसिज्जा?। आलंबणं च काइं काऊण मुणी दुहं सहइ ? ॥ ३०३ ॥
॥ १५३८ ॥ नरएसु अणुत्तरेसु अ अणुत्तरा वेयणाओ पत्ताओ। वट्टंतेण पमाए ताओवि अणंतसो पत्ता

चाकरणीयं व्युत्सृजामि त्रिविधेन सावद्यम् ॥ २९८ ॥ असंयमव्युत्सर्जनं उपधिविवेकश्च तथा उपशमश्च। प्रतिरूपयोगवीर्यवान् क्षान्तो मुक्तो विविक्तश्च ॥ २९९ ॥ एतत् प्रत्याख्यानं आतुरजनः आपत्सु भावेनान्यतरत्प्रतिपन्नः (इदं) जल्पन् प्राप्नोति समाधिम् ॥ ३०० ॥ मम मङ्गलमर्हन्तः सिद्धाः साधवः श्रुतं च धर्म्मश्च। तेषां शरणोपगतः सावद्यं व्युत्सृजामीति ॥ ३०१ ॥ सिद्धानुपसंपन्नः अर्हतः केवलिनश्च भावेन। एषामेकतरेणापि पदेनाराधको भवति ॥ ३०२ ॥ समुदीर्णवेदनः पुनः श्रमणो हृदये किं निवेशयेत्?। आलंबनानि च कानि कृत्वा मुनिर्दुःखं सहते? ॥ ३०३ ॥ नरकेषु अनुत्तरेषु च अनुत्तरा वेदनाः प्राप्ताः। प्रमादे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ॥३०५॥ दीप अनुक्रम [३०६]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] "मरणसमाधि" मूलं एवं संस्कृतछाया

॥ ३०४ ॥ १५३९ ॥ एयं सयं कयं मे रिणं व कम्मं पुरा असायं तु । तमहं एस धुणामी मणम्मि सत्तं निवेसिज्जा ॥ ३०५ ॥ १५४० ॥ नाणाविहदुक्खेहि य समुद्दन्नेहि उ सम्म सहणिज्जं । न य जीवो उ अजीवो कयपुव्वो वेयणाईहिं ॥ ३०६ ॥ १५४१ ॥ अब्भुज्जयं विहारं इत्थं जिणदेसियं विउपसत्थं । नाउं महापुरिससेवियं जं अब्भुज्जयं मरणं ॥ ३०७ ॥ १५४२ ॥ जह पच्छिमम्मि काले पच्छिमतित्थयरदेसियमुयारं । पच्चानिच्छयपत्थं उवेइ अब्भुज्जयं मरणं ॥ ३०८ ॥ १५४३ ॥ छत्तीसमइयाहि य कडजोगी (जोग) संगहबलेणं । उज्जमिऊणं बारसविहेण तवनियमठाणेणं ॥ ३०९ ॥ १५४४ ॥ संसाररंगमज्झे धिइबलसन्नद्धबद्धकच्छाओ । हंतूण मोहमल्लं हराहि आराहणपडागं ॥ ३१० ॥ १५४५ ॥ पोराणयं च कम्मं खवेइ अन्नन्नबंधणायाइं (यं) ।

वर्त्तमानेन पुनस्ता अनंतशः प्राप्तव्याः ॥ ३०४॥ एतत् स्वयंकृतं मया ऋणमिव कर्म पुरा असातं तु । तदहं एष धुनामि (एवं) मनसि सत्त्वं निवेशयेत् ॥ ३०५ ॥ नानाविधेषु दुःखेषु समुदीर्णेषु सम्यक् सहनीयम् । नैवं जीवस्त्वजीवः कृतपूर्वो वेदनादिभिः ॥ ३०६ ॥ अभ्युद्यतं विहारं एवं जिनदेशितं विद्वत्प्रशस्तम् । ज्ञात्वा महापुरुषसेवितं यत् (तद् ज्ञेयं) अभ्युद्यतं मरणं ॥ ३०७ ॥ यथा पश्चिमे काले पश्चिमतीर्थकरदेशितमुपकारं पश्चात् निश्चयपथ्यं उपेति अभ्युद्यतं मरणम् (तथा कुरु) ॥ ३०८ ॥ षट्त्रिंशता आर्तजनकैः (उग्रपरीषहोपसर्गैः) कृतयोगी योगसंग्रहबलेन । उद्यम्य द्वादशविधेन तपोनियमस्थानेन ॥ ३०९ ॥ संसाररंगमध्ये धृतिबलसन्नद्धबद्धकक्षाकः । हत्वा मोहमल्लं हराराधनापताकाम् ॥ ३१० ॥ पुराणं च कर्म क्षपयति अन्यान्यबन्धनायातम् । कर्मकल्मषवल्लीं छिनत्ति संसारक-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कम्मकलंकलवल्लिं छिंदइ संथारमारूढो ॥ ३११ ॥ १५४६ ॥ धीरपुरिसेहिं कहियं सप्पुरिसनिसेवियं परम-घोरं । उत्तिण्णोमि हु रंगं हरामि आराहणपडागं ॥ ३१२ ॥ १५४७ ॥ धीर ! पडागाहरणं करेहि जह तंसि देसकालम्मि । सुत्तत्थमणुगुणंतो धिइनिच्चलबद्धकच्छाओ ॥ ३१३ ॥ १५४८ ॥ चत्तारि कसाए तिन्नि गारवे पंच इंदियग्गामे । जिणिउं परीसहसहे (०सहेऽविय) हराहि आराहणपडागं ॥ ३१४ ॥ १५४९ ॥ न य मणसा चिंतिज्जा जीवामि चिरं मरामि व लहुंति । जइ इच्छसि तरिउं जे संसारमहोअहिमपारं ॥ ३१५ ॥ ॥ १५५० ॥ जइ इच्छसि नीसरिउं सव्वेसिं चेव पावकम्माणं । जिणवयणनाणदंसणचरित्तभावुज्जुओ जग्ग ॥ ३१६ ॥ १५५१ ॥ दंसणनाणचरित्ते तवे य आराहणा चउक्खंधा । सा चेव होइ तिविहा उक्कोसा मज्झि-मजहण्णा ॥ ३१७ ॥ १५५२ ॥ आराहेऊण विऊ उक्कोसाराहणं चउक्खंधं । कम्मरयविप्पमुक्को तेणेव भवेण

मारूढः ॥ ३११ ॥ धीरपुरुषैः कथितं सत्पुरुषनिषेवितं परमघोरम् । उत्तीर्णोऽस्मि रङ्गं हराम्याराधनापताकाम् ॥ ३१२ ॥ धीर! पताकाहरणं कुरु (एवं) यथा तस्मिन् देशकाले । सूत्रार्थमनुगुणयन् धृतिनिश्चलबद्धकक्षाकः ॥३१३॥ चतुरः कषायान् त्रीणि गौरवाणि पंचे-न्द्रियग्रामान् । जित्वा परीषहानपि च हराराधनापताकाम् ॥३१४॥ न च मनसा चिन्तयेत् जीवामि चिरं म्रिये वा लघु इति । यदीच्छसि तरीतुं संसारमहोदधिमपारम् ॥ ३१५ ॥ यदीच्छसि निस्तरीतुं सर्वेभ्यश्चैव पापकर्मभ्यः । जिनवचनज्ञानदर्शनचारित्रभावोद्यतो जागृहि ॥ ३१६ ॥ दर्शने ज्ञाने चारित्रे तपसि चाराधना चतुःस्कन्धा । सैव भवति त्रिविधा उत्कृष्टा मध्यमा जघन्या ॥ ३१७ ॥ आराध्य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सिज्झिज्जा ॥ ३१८ ॥ १५५३ ॥ आराहेऊण विऊ मज्झिमआराहणं चउक्खंधं । उक्कोसेण य चउरो भवे उ गंतूण सिज्झिज्जा ॥ ३१९ ॥ १५५४ ॥ आराहेऊण विऊ जहन्नमाराहणं चउक्खंधं । सत्तट्ठ भवग्गहणे परिणामेऊण सिज्झिज्जा ॥ ३२० ॥ १५५५ ॥ धीरेणवि मरियव्वं काउरिसेणवि अवस्स मरियव्वं । तम्हा अवस्समरणे वरं खु धीरत्तणे मरिउं ॥ ३२१ ॥ १५५६ ॥ एयं पच्चक्खाणं अणुपालेऊण सुविहिओ सम्मं । वेमाणिओ व देवो हविज्ज अहवावि सिज्झिज्जा ॥ ३२२ ॥ १५५७ ॥ एसो सवियारकओ उवक्कमो उत्तमट्ठकालम्मि । इत्तो उ पुणो वुच्छं जो उ कमो होइ अवियारे ॥ ३२३ ॥ १५५८ ॥ साहू कयसंलेहो विजियपरीसहकसायसंताणो । निज्जवए मग्गिज्जा सुयरयणस(र)हस्सनिम्माए ॥ ३२४ ॥ १५५९ ॥ पंचसमिए तिगुत्ते अणिस्सिए

विद्वान् उत्कृष्टामाराधनां चतुःस्कन्धाम् । कर्मरजोविप्रमुक्तस्तेनैव भवेन सिध्येत् ॥ ३१८ ॥ आराध्य विद्वान् मध्यमामाराधनां चतुःस्कन्धाम् । उत्कर्षेण च चतुरो भवांस्तु गत्वा सिध्येत् ॥ ३१९ ॥ आराध्य विद्वान् जघन्यामाराधनां चतुःस्कन्धाम् । सप्ताष्टौ भवग्रहणानि परिणमय्य सिध्येत् ॥ ३२० ॥ धीरेणापि मर्त्तव्यं कापुरुषेणाप्यवश्यमर्त्तव्यं । तस्मादवश्यमरणे वरं खलु धीरत्वेन मर्तुम् ॥ ३२१ ॥ एतत् प्रत्याख्यानमनुपाल्य सुविहितः सम्यक् । वैमानिको वा देवो भवेत् अथवापि सिध्येत् ॥ ३२२ ॥ एष सविचारकृत उपक्रम उक्तमार्थकाले । इतस्तु पुनर्वक्ष्ये यस्तु क्रमो भवत्यविचारः ॥ ३२३ ॥ साधुः कृतसंलेखनो विजितपरीषहकषायसंतानः । निर्यामकान् मार्गयेत् श्रुतरत्नरहस्यनिष्णातान् ॥ ३२४ ॥ पञ्चसमितांस्त्रिगुप्तान् अनिश्रितान् रागद्वेषमदरहितान् । कृतयोगिनः कालज्ञान् ज्ञान-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया

प्रत सूत्रांक ||३२५||

दीप अनुक्रम [३२६]

रागदोसमयरहिए । कडजोगी कालण्णू नाणचरणदंसणसमिद्धे ॥ ३२५ ॥ १५६० ॥ मरणसमाहीकुसले इंगि-
यपत्थियसभाववेत्तारे । ववहारविहिविहिण्णू अब्भुज्जयमरणसारहिणो ॥ ३२६ ॥ १५६१ ॥ उवएसहेउ-
कारणगुणनिसढा णायकारणविहण्णू । विण्णाणनाणकरणोवयारसुयधारणसमत्थे ॥ ३२७ ॥ १५६२ ॥ एगं-
तगुणे रहिया बुद्धीइ चउव्विहाइ उववेया । छंदण्णू पव्वइया पच्चक्खाणंमि य विहण्णू ॥ ३२८ ॥ १५६३ ॥ दुण्हं
आयरियाणं दो वेयावच्चकरणनिज्जुत्ता । पाणगवेयावच्चे तवस्सिणो वत्ति दो पत्ता ॥ ३२९ ॥ १५६४ ॥ उव्व-
त्तण परिवत्तण उच्चारुस्सास(व)करणजोगेसुं । दो वायगत्ति णज्जा अ(उ प्र.)सुत्तकरणे जहन्नेणं ॥३३०॥१५६५॥
असद्दहवेयणाए पायच्छित्ते पडिक्कमणए य । जोगायकहाजोगे पच्चक्खाणे य आयरिओ ॥ ३३१ ॥ १५६६ ॥
कप्पाकप्पविहिन्नू दुवालसंगसुयसारही सव्वं । छत्तीसगुणोवेया पच्छित्तवियारया धीरा ॥ ३३२ ॥ १५६७ ॥

चरणदर्शनसमृद्धान् ॥ ३२५ ॥ मरणसमाधिकुशलान् इङ्गितप्रार्थितस्वभाववेत्तॄन् । व्यवहारविधिविधानज्ञान् अभ्युद्यतमरणसारथिनः
॥ ३२६ ॥ उपदेशहेतुकारणगुणक्षमान् न्यायकारणविधानज्ञान् । विज्ञानज्ञानकरणोपचारश्रुतधारणासमर्थान् ॥ ३२७ ॥ एकान्तेन गुणेषु
स्थितान् बुद्ध्या चतुर्विधयोपपेतान् । छन्दोज्ञान् प्रव्रजितान् प्रत्याख्याने च विधिज्ञान् ॥ ३२८ ॥ द्वयोराचार्ययोर्द्वौ वैयावृत्त्यकरणनियुक्तौ ।
पानकवैयावृत्त्ये तपस्विनो वेति द्वौ प्राप्तौ ॥ ३२९ ॥ उद्वर्त्तनपरिवर्त्तनोच्चारोत्स्रावकरणयोगेषु । द्वौ वाचकौ इति ज्ञेयौ सूत्रकरणे जघ-
न्येन ॥ ३३० ॥ अश्रद्दधाने वेदनायां प्रायश्चित्ते प्रतिक्रमणे च । योगात्मकथायोगे प्रत्याख्याने च आचार्यः ॥ ३३१ ॥ कल्प्याकल्प्य-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ॥३३३॥ दीप अनुक्रम [३३४]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] "मरणसमाधि" मूलं एवं संस्कृतछाया

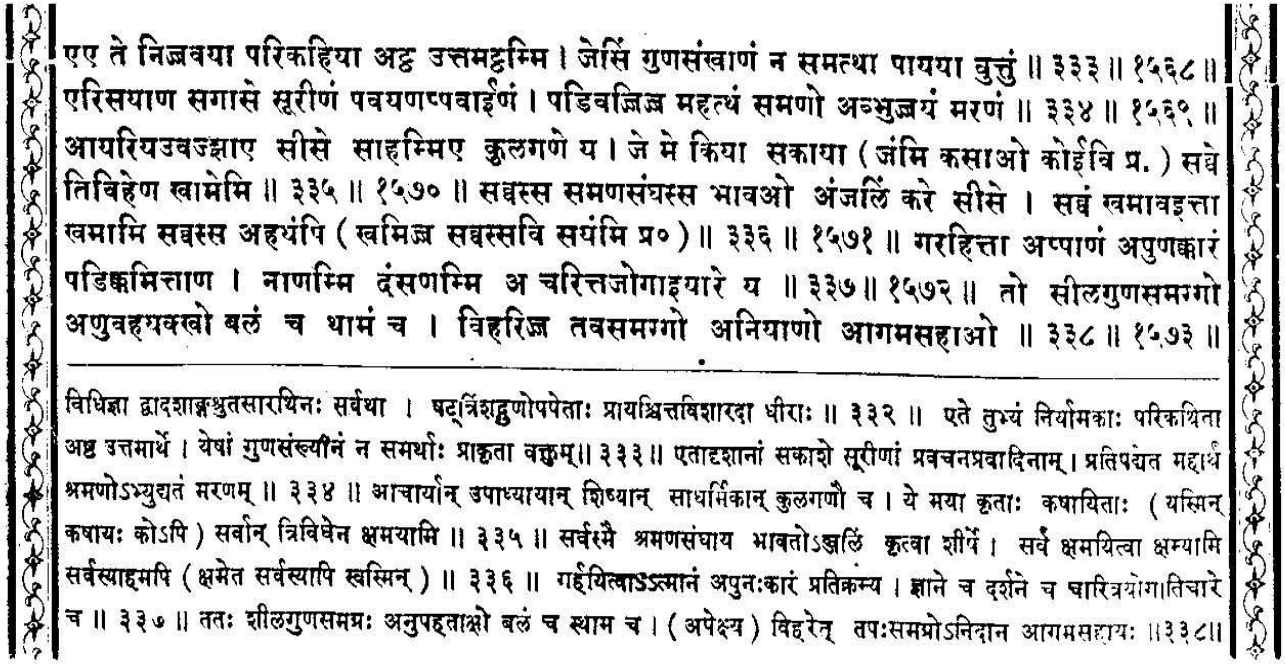

एए ते निज्जवया परिकहिया अट्ठ उत्तमट्ठम्मि । जेसिं गुणसंखाणं न समत्था पायया वुत्तुं ॥ ३३३ ॥ १५६८ ॥
एरिसयाण सगासे सूरीणं पवयणप्पवाईणं । पडिवज्जिज्ज महत्थं समणो अब्भुज्जयं मरणं ॥ ३३४ ॥ १५६९ ॥
आयरियउवज्झाए सीसे साहम्मिए कुलगणे य । जे मे किया सकाया (जंमि कसाओ कोईवि प्र.) सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ ३३५ ॥ १५७० ॥ सव्वस्स समणसंघस्स भावओ अंजलिं करे सीसे । सव्वं खमावइत्ता खमामि सव्वस्स अहयंपि (खमिज्ज सव्वस्सवि सयंमि प्र०) ॥ ३३६ ॥ १५७१ ॥ गरहित्ता अप्पाणं अपुणक्कारं पडिक्कमित्ताण । नाणम्मि दंसणम्मि अ चरित्तजोगाइयारे य ॥ ३३७ ॥ १५७२ ॥ तो सीलगुणसमग्गो अणुवहयक्खो बलं च थामं च । विहरिज्ज तवसमग्गो अनियाणो आगमसहाओ ॥ ३३८ ॥ १५७३ ॥

विधिज्ञा द्वादशाङ्गश्रुतसारथिनः सर्वथा । षट्त्रिंशद्गुणोपपेताः प्रायश्चित्तविशारदा धीराः ॥ ३३२ ॥ एते तुभ्यं निर्यामकाः परिकथिता अष्ट उत्तमार्थे । येषां गुणसंख्यानं न समर्थाः प्राकृता वक्तुम् ॥ ३३३ ॥ एतादृशानां सकाशे सूरीणां प्रवचनप्रवादिनाम् । प्रतिपद्येत महार्थं श्रमणोऽभ्युद्यतं मरणम् ॥ ३३४ ॥ आचार्यान् उपाध्यायान् शिष्यान् साधर्मिकान् कुलगणौ च । ये मया कृताः कषायिताः (यस्मिन् कषायः कोऽपि) सर्वान् त्रिविधेन क्षमयामि ॥ ३३५ ॥ सर्वस्मै श्रमणसंघाय भावतोऽञ्जलिं कृत्वा शीर्षे । सर्वं क्षमयित्वा क्षम्यामि सर्वस्याहमपि (क्षमेत सर्वस्यापि स्वस्मिन्) ॥ ३३६ ॥ गर्हयित्वाऽऽत्मानं अपुनःकारं प्रतिक्रम्य । ज्ञाने च दर्शने च चारित्रयोगातिचारे च ॥ ३३७ ॥ ततः शीलगुणसमग्रः अनुपहताक्षो बलं च स्थाम च । (अपेक्ष्य) विहरेत् तपःसमग्रोऽनिदान आगमसहायः ॥३३८॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तवसोसियंगमंगो संधिसिराजालपागडसरीरो। किच्छाहियपरिहत्थो परिहरइ कलेवरं जाहे ॥३३९॥१५७४॥
पच्चक्खाइ य ताहे अन्नन्नसमाहिपत्तियंमित्ती। तिविहेणाहारविहिं दियसुग्गइकायपगईए ॥ ३४० ॥ १५७५॥
इहलोए परलोए निरासओ जीविए अ मरणे य। सायाणुभवे भोगे जस्स य अवहट्टणाऽईए ॥३४१॥१५७६॥
निम्ममनिरहंकारो निरासयोऽकिंचणो अपडिकम्मो। वोसट्ठविसट्ठंगो चत्तचियत्तेण देहेणं ॥ ३४२ ॥ १५७७॥
तिविहेणवि सहमाणो परीसहे दूसहे अ ऊसग्गे। विहरिज्ज विसयतण्हारयमलमसुभं विधुणमाणो ॥३४३॥
॥ १५७८ ॥ नेहक्खए व दीवो जह खयमुवणेइ दीववट्टिम्मि (ट्टिंपि)। खीणाहारसिणेहो सरीरवट्टिं तह खवेइ
॥३४४॥१५७९॥ एव परज्झा असई परक्कमे पुव्वभणियसूरीणं। पासम्मि उत्तमट्ठे कुज्जा तो एस परिकम्मं ॥३४५॥

तपःशोषितांगोपांगः प्रकटसन्धिशिराजालशरीरः। कृच्छ्राहितनैपुण्यः (कृच्छ्रैःपूर्णः) परिहरति कलेवरं यदा ॥ ३३९ ॥ प्रत्याख्याति च तदा अन्याऽन्यसमाधिप्रत्ययमिति। त्रिविधेनाहारविधिं उदितसुगतिकायप्रकृतिकः ॥ ३४० ॥ इहलोके परलोके च निराश्रयो जीविते च मरणे वा। सातानुभवे भोगे यस्य चापहरणा (परित्यजना)ऽतीते ॥ ३४१ ॥ निर्ममनिरहंकारो निराश्रयोऽकिञ्चनोऽप्रतिकर्मा। अत्यर्थं (व्युत्कृष्टं) विसृष्टांगः त्यक्तप्रीतिना देहेन ॥ ३४२ ॥ त्रिविधेनापि सहमानः परीषहान् दुःसहांश्च उत्सर्गवान्। विहरेत् विषयतृष्णारजोमलमशुभं विधूनयन् ॥ ३४३ ॥ स्नेहक्षये वा दीपो यथा क्षयमुपनयति दीपवर्त्तिमपि। क्षीणाहारस्नेहः शरीरवर्त्तिं तथा क्षपयति ॥ ३४४ ॥ एवं प्रारब्धः सति पराक्रमे पूर्वभणितसूरीणाम्। पार्श्वे उत्तमार्थाय कुर्यात्तदा एतत् परिकर्म ॥ ३४५ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १५८० ॥ आगरसमुट्ठियं तह अज्झुसिरवागतणपत्तकडए य । कट्ठसिलाफलगंमि व अणभिज्जय निप्पकप्पंमि ॥ ३४६ ॥ १५८१ ॥ निस्संधिणातणंमि व सुहपडिलेहेण जहपसत्थेणं । संथारो कायव्वो उत्तरपुव्वस्सिरो वावि ॥ ३४७ ॥ १५८२ ॥ दोसुत्थ अप्पमाणे अंधकारे समम्मि अ णिसिट्ठे । निरुवहयम्मि गुणमणे वणम्मि गुत्ते (थणंनि गुत्ते) य संथारो ॥ ३४८ ॥ १५८३ ॥ जुत्ते पमाणरहओ उभउकालपडिलेहणासुद्धो । विहिविहिओ संथारो आरुहियव्वो तिगुत्तेणं ॥ ३४९ ॥ १५८४ ॥ आरुहियचरित्तभरो अन्नेसु उ (अन्नसउ) परमगुरुसगासम्मि । दव्वेसु पज्जवेसु य खित्ते काले य सव्वंमि ॥ ३५० ॥ १५८५ ॥ एएसु चेव ठाणेसु चउसु सव्वो चउव्विहाहारो । तवसंजमुत्ति किच्चा वोसिरियव्वो तिगुत्तेणं ॥ ३५१ ॥ १५८६ ॥ अहवा समाहिहेउं कायव्वो पाणगस्स आहारो । तो पाणगंपि पच्छा वोसिरियव्वं जहाकाले ॥ ३५२ ॥ १५८७ ॥

आकरसमुत्थिते तथा अशुषिरवल्कतृणपत्रकटके च । काष्ठशिलाफलके वा अभिद्यमाने निष्प्रकल्पे ॥३४६॥ निस्सन्धिकेन तृणेन वा सुखप्रतिलेखनेन यतिप्रशस्तेन । संस्तारः कर्तव्य उत्तरस्यां पूर्वस्यां शिरो वाऽपि ॥ ३४७ ॥ दोषोऽत्र अप्रमाणे अन्धकारे च (ततः) समे च निसृष्टे । निरुपहते गुणवति वने गुप्ते च संस्तारकः ॥३४८॥ युक्ते प्रमाणरहितः उभयकालप्रतिलेखनायुक्तः शुद्धः । विधिविहितः संस्तारकः आरुढव्यश्चिगुप्तेन ॥३४५॥ आरूढचारित्रभारः अन्येष्वपि परमगुरुसकाशे द्रव्येषु पर्यायेषु च क्षेत्रे काले च सर्वस्मिन् (प्रशस्तेष्वारूढः) ॥ ३५० ॥ एतेषु चैव स्थानेषु चतुर्षु सर्वश्चतुर्विध आहारः । तपःसंयम इति त्यक्त्वा व्युत्सृष्टव्यश्चिगुप्तेन ॥ ३५१ ॥ अथवा समाधिहेतोः

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

निसिरित्ता अप्पाणं सव्वगुणसमन्नियम्मि निज्जवए । संथारगसंनिविट्ठो अनियाणो चेव विहरिज्जा ॥ ३५३ ॥ ॥ १५८८ ॥ इहलोए परलोए अनियाणो जीविए य मरणे य । वासीचंदणकप्पो समो य माणावमाणेसु ॥ ३५४ ॥ १५८९ ॥ अह मधुरं फुडवियडं तहप्पसायकरणिज्जविसयकयं । इज्ज कहं निज्जवओ सुईसमन्ना-हरणहेउं ॥ ३५५ ॥ १५९० ॥ इहलोए परलोए नाणचरणदंसणंमि य अवायं । दंसेइ नियाणम्मि य माया-मिच्छत्तसल्लेणं ॥ ३५६ ॥ १५९१ ॥ बालमरणे अवायं तह य उवायं अबालमरणम्मि । उस्सासरज्जुवेहाणसे य तह गिद्धपट्ठे य ॥ ३५७ ॥ १५९२ ॥ जह य अणुद्धुयसल्लो ससल्लमरणेण कइ मरऊणं । दंसणनाणविहूणो मरंति असमाहिमरणेणं ॥ ३५८ ॥ १५९३ ॥ जह सायरसे गिद्धा इत्थिअहंकारपावसुयमत्ता । ओसन्न-

---

कर्त्तव्यः पानकस्याहारः । ततः पानकमपि पश्चात् व्युत्सृष्टव्यं यथाकाले ॥ ३५२ ॥ निसृज्यात्मानं सर्वगुणसमन्वितेषु निर्यामकेषु संस्तार-कसंनिविष्टोऽनिदानकश्चैव विहरेत् ॥ ३५३ ॥ इहलोके परलोकेऽनिदानो जीविते च मरणे च । वासीचन्दनकल्पः समश्च मानापमा-नयोः ॥३५४॥ अथ मधुरां स्फुटविकटां तथात्मसात्कृतकरणीयविषयाम् । निर्यामकः कथां कथयेत् श्रु(स्मृ)तिसमन्वाहरणहेतोः ॥३५५॥ इहलोके परलोके ज्ञाने चरणे दर्शने च (कर्मणः) अपायं दर्शयति निदाने च मायामिथ्यात्वशल्ययोश्च ॥ ३५६ ॥ बालमरणेऽपायं तथा चोपायमबालमरणे । उच्छ्वास(रोध)रज्जुवैहायसेषु च तथा गृध्रपृष्ठे च ॥ ३५७ ॥ यथा चानुद्धृतशल्यः सशल्यमरणेन केचिन्मृत्वा । दर्शनज्ञानविहीना म्रियंतेऽसमाधिमरणेन ॥ ३५८ ॥ यथा सातरसयोर्गृद्धाः स्त्यहङ्कारपापश्रुतमत्ताः । बाहुल्येन बालमरणा भ्राम्यन्ति

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ||३५९||

दीप अनुक्रम [३६०]

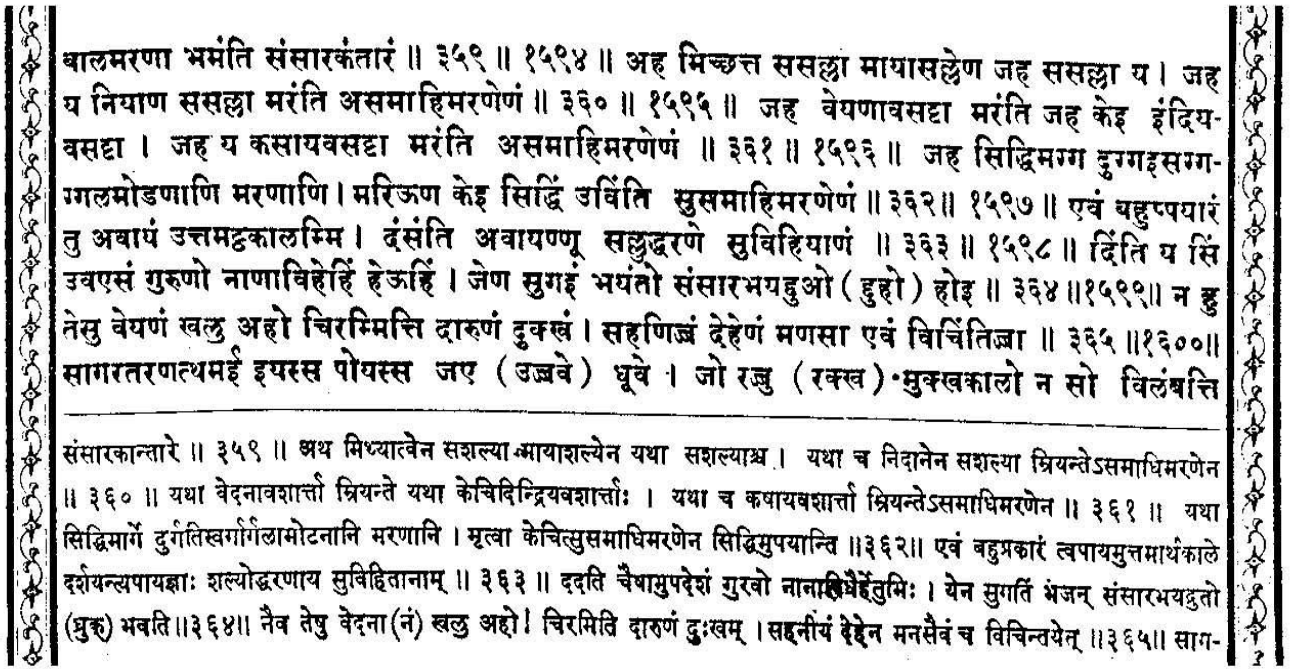

बालमरणा भमंति संसारकंतारं ॥ ३५९ ॥ १५९४ ॥ अह मिच्छत्त ससल्ला मायासल्लेण जह ससल्ला य । जह य नियाण ससल्ला मरंति असमाहिमरणेणं ॥ ३६० ॥ १५९५ ॥ जह वेयणावसट्टा मरंति जह केइ इंदिय-वसट्टा । जह य कसायवसट्टा मरंति असमाहिमरणेणं ॥ ३६१ ॥ १५९६ ॥ जह सिद्धिमग्ग दुग्गइसग्ग-ग्गलमोडणाणि मरणाणि । मरिऊण केइ सिद्धिं उविंति सुसमाहिमरणेणं ॥ ३६२ ॥ १५९७ ॥ एवं बहुप्पयारं तु अवायं उत्तमट्ठकालम्मि । दंसंति अवायण्णू सल्लुद्धरणे सुविहियाणं ॥ ३६३ ॥ १५९८ ॥ दिंति य सिं उवएसं गुरुणो नाणाविहेहिं हेऊहिं । जेण सुगइं भयंतो संसारभयदुओ (दुहो) होइ ॥ ३६४ ॥१५९९॥ न हु तेसु वेयणं खलु अहो चिरम्मित्ति दारुणं दुक्खं । सहणिज्जं देहेणं मणसा एवं विचिंतिज्जा ॥ ३६५ ॥१६००॥ सागरतरणत्थमई इयस्स पोयस्स जए (उज्जवे) धूवे । जो रज्जु (रक्ख)-मुक्खकालो न सो विलंबत्ति

संसारकान्तारे ॥ ३५९ ॥ अथ मिथ्यात्वेन सशल्या मायाशल्येन यथा सशल्याश्च । यथा च निदानेन सशल्या म्रियन्तेऽसमाधिमरणेन ॥ ३६० ॥ यथा वेदनावशार्त्ता म्रियन्ते यथा केचिदिन्द्रियवशार्त्ताः । यथा च कषायवशार्त्ता म्रियन्तेऽसमाधिमरणेन ॥ ३६१ ॥ यथा सिद्धिमार्गे दुर्गतिस्वर्गार्गलामोटनानि मरणानि । मृत्वा केचित्सुसमाधिमरणेन सिद्धिमुपयान्ति ॥३६२॥ एवं बहुप्रकारं त्वपायमुत्तमार्थकाले दर्शयन्त्यपायज्ञाः शल्योद्धरणाय सुविहितानाम् ॥ ३६३ ॥ ददति चैषामुपदेशं गुरवो नानाविधैर्हेतुभिः । येन सुगतिं भजन् संसारभयद्रुतो (द्रुक्) भवति ॥३६४॥ नैव तेषु वेदना(नं) खलु अहो! चिरमिति दारुणं दुःखम् । सहनीयं देहेन मनसैवं च विचिन्तयेत् ॥३६५॥ साग-

च. स. २१

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कायव्वो ॥ ३६६ ॥ १६०१ ॥ तिल्लविहूणो दीवो न चिरं दिप्पइ जगम्मि पच्चक्खं । न य जलरहिओ मच्छो जिअइ चिरं नेव पउमाई ॥ ३६७ ॥ १६०२ ॥ अन्नं इमं सरीरं अन्नोऽहं इय मणम्मि ठाविज्जा । जं सुचिरेणऽवि मोचं देहे को तत्थ पडिबंधो ? ॥ ३६८ ॥ १६०३ ॥ दूरत्थंपि विणासं अवस्सभावं उवट्ठियं जाण । जो अह वट्टइ कालो अणागओ इत्थ आसिण्हा ॥ ३६९ ॥ १६०४ ॥ जं सुचिरेणवि होहिइ अणावसं तंमि को ममीकारो? । देहे निस्संदेहे पिएवि सुयणत्तणं नत्थि ॥ ३७० ॥ १६०५ ॥ उवलद्धो सिद्धिपहो न य अणुचिण्णो पमायदोसेणं । हा जीव! अप्पवेरिय! न हु ते एयं न तिप्पिहिइ ॥ ३७१ ॥ १६०६ ॥ नत्थि य ते संघयणं घोरा य परीसहा अहे निरया । संसारो य असारो अइप्पमाओ अ तं जीव! ॥ ३७२ ॥ १६०७ ॥ कोहाइकसाया खलु वीयं संसारभेरवदुहाणं । तेसु पमत्तेसु सया कत्तो सुक्खो य मुक्खो वा? ॥ ३७३ ॥

हितशिक्षा

रतरणार्थमतिकः आयातस्य पोतस्य ध्रुवे जये । यो रज्जुमोक्षकालः स कर्त्तव्यः, न विलम्ब इति (मत्वा) कर्त्तव्यः ॥३६६॥ तैलविहीनो दीपो न चिरं दीप्यते जगति प्रत्यक्षम् । न च जलरहितो मत्स्यो जीवति चिरं नैव च पद्मादि (जलं विना) ॥३६७॥ अन्यदिदं शरीरं अन्योऽहमिति मनसि स्थापयेत् । यत्सुचिरेणापि मोच्यं तत्र देहे कः प्रतिबन्धः ? ॥३६८॥ दूरस्थमपि विनाशमवश्यभाविनमुपस्थितं जानीहि । यो यथा वर्त्तते कालोऽनागतोऽत्र चासीनस्य ॥३६९॥ यत्सुचिरेणापि भविष्यति अवश्यं(शरीरं)तस्मिन् को ममीकारः ?। देहे निःसंदेहं प्रियेऽपि सुजनत्वं नास्ति ॥ ३७० ॥ उपलब्धः सिद्धिपथो न चानुचीर्णः प्रमाददोषेण । हा जीव! आत्मवैरिन्! नैव तवैतत्, न च तर्पयिष्यति ॥३७१॥ नास्ति च तव संहननं घोराश्च परीषहा अधो नरकाः । संसारश्चासारः अतिप्रमादश्च त्वं जीव! ॥३७२॥ क्रोधादयः कषायाः खलु बीजं

॥ १२१ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १६०८ ॥ जाओ परवसेणं संसारे वेयणाओ घोराओ। पत्ताओ नारगत्ते अहुणा ताओ विचिंतिज्जा ॥३७४॥
॥ १६०९ ॥ इण्हिं सयं वसिस्स उ निरुवमसुक्खावसाणमुहदुयं (कडुयं) । कल्लाणमोसहं पिव परिणाम-
सुहं न तं दुक्खं ॥ ३७५॥१६१० ॥ संबंधि बंधवेसु य न य अणुराओ खणंपि कायव्वो। तेचिय हुंति अमित्ता
जह जणणी बंभदत्तस्स ॥ ३७६ ॥ १६११ ॥ वसिऊण व सुहिमज्झे वच्चइ एगाणिओ इमो जीवो। मोत्तूण
सरीरघरं जह कण्हो मरणकालम्मि ॥ ३७७ ॥ १६१२ ॥ इण्हिं व मुहुत्तेणं गोसे व सुए व अद्धरत्ते वा।
जस्स न नज्जइ वेला कद्दिवसं गच्छिई जीवो? ॥ ३७८ ॥ १६१३ ॥ एवमणुचिंतयंतो भावणुभावाणुरत्त सिय-
लेसो । तद्दिवस मरिउकामो व होइ झाणम्मि उज्जुत्तो ॥ ३७९ ॥ १६१४ ॥ नरगतिरिक्खगईसु य माणुसदे-

---

संसारभैरवदुःखानाम् । तैः प्रमत्तेषु सदा कुतः सौख्यं च मोक्षश्च ? ॥३७३॥ याः पारवश्येन संसारे वेदना घोराः । प्राप्ता नारकत्वेऽधुना ता विचिन्तय ॥ ३७४ ॥ इदानीं स्ववशस्य तु निरुपमसौख्यावसानसुखकटुकम् । कल्याणौषधं पिव परिणामसुखं न तद्दुःखम् ॥ ३७५ ॥ सम्बन्धिबान्धवेषु च न चानुरागः क्षणमपि कर्त्तव्यः । ते चैव भवन्त्यमित्राणि यथा जननी ब्रह्मदत्तस्य ॥ ३७६ ॥ उषित्वा च सुहृन्मध्ये व्रजत्येकाक्ययं जीवः । मुक्त्वा स्वशरीरगृहं यथा कृष्णो मरणकाले ॥ ३७७ ॥ अधुना वा मुहूर्त्तेन प्रभाते वा श्वो वाऽर्द्धरात्रे वा । यस्य न ज्ञायते वेला क दिवसे गमिष्यति जीवः ॥३७८॥ एवमनुचिन्तयन् भावानुभावानुरक्तः सितलेश्यः । तस्मिन् दिने मर्तुकामो वा (ऽपि) भवति ध्याने उद्युक्तः ॥३७९॥ नरके तिर्यग्गतिषु च मानुषदेवत्वयोर्वसता यत्सुखदुःखं प्राप्तं तदनु चिन्तयेत् संस्तारके

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वत्तणे वसंतेणं । जं सुहदुक्खं पत्तं तं अणुचिंतिज्ज संथारे ॥ ३८० ॥ १६१५ ॥ नरएसु वेयणाओ अणोवमा सीयउण्हवेरा(गा)ओ । कायनिमित्तं पत्ता अणंतखुत्तो बहुविहाओ ॥ ३८१ ॥ १६१६ ॥ देवत्ते माणुस्से परा-हिओगत्तणं उवगएणं । दुक्खपरिक्लेसविही अणंतखुत्तो समणुभूया ॥ ३८२ ॥ १६१७ ॥ भिन्निंदियपंचिंदि-यतिरिक्खकायम्मि णेगसंठाणे । जम्मणमरणऽरहट्टं अणंतखुत्तो गओ जीवो ॥ ३८३ ॥ १६१८ ॥ सुविहिय! अईयकाले अणंतकाएसु तेण जीवेणं । जम्मणमरणमणंतं बहुभवगहणं समणुभूयं ॥ ३८४॥१६१९ ॥ घोरम्मि गब्भवासे कलमलजंबालअसुइबीभच्छे । वसिओ अणंतखुत्तो जीवो कम्माणुभावेणं ॥ ३८५ ॥ १६२० ॥ जोणीमुह निग्गच्छंतेण संसार इमे(रिमे)ण जीवेणं । रसियं अइबीभच्छं कडीकडाहंतरगएणं ॥३८६॥१६२१॥ जं असियं बीभच्छं असुईघोरम्मि गब्भवासम्मि । तं चिंतिऊण सयं मुक्खम्मि मइं निवेसिज्जा ॥ ३८७ ॥

॥ ३८० ॥ नरकेषु वेदना अनुपमाः शीतोष्णवैर[वेग]जाताः । कायनिमित्तं प्राप्ता अनन्तकृत्वो बहुविधाः ॥ ३८१ ॥ देवत्वे मानुष्ये परामियोगत्वमुपगतेन । दुःखपरिक्लेशविधयोऽनन्तकृत्वः समनुभूताः ॥ ३८२ ॥ भिन्नेन्द्रियपञ्चेन्द्रियतिर्यक्कायेऽनेकसंस्थाने । जन्म-मरणारहट्टमनन्तकृत्वो गतो जीवः ॥ ३८३ ॥ सुविहित! अतीतकालेऽनन्तकायेषु एतेन जीवेन । जन्ममरणमनन्तं बहुभवग्रहणे समनु-भूतम् ॥ ३८४ ॥ घोरे गर्भवासे कलिमलजम्बालाशुचिबीभत्से । उषितोऽनन्तकृत्वो जीवः कर्मानुभावेन ॥ ३८५ ॥ योनिमुखान्नि-र्गच्छता संसारेऽनेन जीवेन । रसितमतिबीभत्सं कटिकटाहान्तरगतेन ॥ ३८६ ॥ यदशितं बीभत्सं अशुचिघोरे गर्भवासे । तच्चिन्त-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १६२२ ॥ वसिऊण विमाणेसु य जीवो पसरंतमणिमऊहेसु । वसिओ पुणोवि सुचिय जोणिसहस्संधयारेसुं ॥ ३८८ ॥ १६२३ ॥ वसिऊण देवलोए निच्चुज्जोए सयंपभे जीवो । वसइ जलवेगकलमलविउलवलयामुहे घोरे ॥ ३८९ ॥ १६२४ ॥ वसिऊण सुरनरीसरचामीयररिद्धिमणहरघरेसु । वसिओ नरग निरंतरभयभेरवपंजरे जीवो ॥ ३९० ॥ १६२५ ॥ वसिऊण विचित्तेसु अ विमाणगणभवण सोभसिहरेसु । वसइ तिरिएसु गिरिगुहविवरमहाकंदरदरीसु ॥ ३९१ ॥ १६२६ ॥ भुत्तूणवि भोगसुहं सुरनरखयरेसु पुण पमाएणं । पियइ नरएसु भेरवकलंततउतंबपाणाइं ॥ ३९२ ॥ १६२७ ॥ सोऊण मुइयणरवइभवे अ जयसद्दमंगलरवोघं । सुणइ नरएसु दुहपरं अक्कंदुद्दामसद्दाइं ॥ ३९३ ॥ १६२८ ॥ निहण हण गिण्ह दह पय उब्बंध

यित्वा स्वयं मोक्षे मतिं निवेशयेत् ॥ ३८७ ॥ उषित्वा विमानेषु च जीवः प्रसरन्मणिमयूखेषु । उषितः पुनरपि स एव योनिसहस्रान्धकारेषु ॥ ३८८ ॥ उषित्वा देवलोके नित्योद्योते स्वयंप्रभे जीवः । वसति विपुलजलवेगकलिमलवलयामुखे घोरे ॥ ३८९ ॥ उषित्वा सुरनरेश्वरचामीकरऋद्धिमन्मनोहरगृहेषु । उषितो नरके निरन्तरभयभैरवपञ्जरे जीवः ॥ ३९० ॥ उषित्वा विचित्रेषु च विमानगणभवनेषु शोभितशिखरेषु । वसति तिर्यक्षु गिरिगुहाविवरमहाकन्दरदरीषु ॥ ३९१ ॥ भुक्त्वाऽपि भोगसुखं सुरनरखचरेषु पुनः प्रमादेन । पिबति नरकेषु भैरवकलकलायमानत्रपुताम्रपानानि ॥ ३९२ ॥ श्रुत्वा मुदितनरपतिभवे च जयशब्दमङ्गलरवौघम् । शृणोति नरकेषु दुःखकरान् आक्रन्दोद्दामशब्दान् ॥ ३९३ ॥ निजहि जहि गृहाण दह पच उद्बन्धय प्रबन्धय बधान रुंद्धि स्फाटय लोलय घोल-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पबंध बंध रुद्धाहिं । फाले लोले घोले थूरे खारेहिं से गत्तं ॥ ३९४ ॥१६२९॥ वेयरणिखारकलिमलवेसल्लंकुस-लकरकयकुलेसु । वसिओ नरएसु जीवो हणहणघणघोरसद्देसुं ॥ ३९५ ॥ १६३० ॥ तिरिएसु व भेरवसद्द-पक्खणपरपक्खणच्छणसएसु । वसिओ उव्वियमाणो जीवो कुडिलम्मि संसारे ॥ ३९६ ॥ १६३१ ॥ मणुयत्त-णेवि बहुविहविणिवायसहस्सभेसणघणम्मि । भोगपिवासाणुगओ वसिओ भयपंजरे जीवो ॥ ३९७ ॥ ॥ १६३२ ॥ वसियं दरीसु वसियं गिरीसु वसियं समुद्दमज्झेसु । रुक्खग्गेसु य वसियं संसारे संसरंतेणं ॥ ३९८ ॥ १६३३ ॥ पीयं थणअच्छीरं सागरसलिलाओ बहुयरं हुज्जा । संसारम्मि अणंते माईणं अण्णम-ण्णाणं ॥ ३९९ ॥ १६३४ ॥ नयणोदगंपि तासिं सागरसलिलाओ बहुयरं हुज्जा । गलियं रुयमाणीणं माईणं अण्णमण्णाणं ॥ ४०० ॥ १६३५ ॥ नत्थि भयं मरणसमं जम्मणसरिसं न विज्जए दुक्खं । तम्हा जरमरण-

---

य स्थूरय क्षारैस्तस्य गात्रं (कृशय) ॥३९४॥ वैतरणिक्षारकलिमलविविधशल्यकुशल(०अंकुश)ककचाकुलेषु । उषितो नरकेषु जीवो हनह-नयनघोरशब्देषु ॥ ३९५ ॥ तिर्यक्षु च भैरवशब्दपक्षणपरिपक्षणतक्षणशतेषु । उषित उद्विजन् जीवः कुटिले संसारे ॥३९६॥ मनुजत्वेऽपि बहुविधविनिपातसहस्रघनभीषणे । भोगपिपासानुगत उषितो भयपञ्जरे जीवः ॥ ३९७ ॥ उषितं दरीषु उषितं गिरिषु उषितं समुद्रम-ध्येषु । वृक्षाग्रेषु चोषितं संसारे संसारता ॥ ३९८ ॥ पीतं स्तनक्षीरं सागरसलिलाद्बहुतरं भवेत् । संसारेऽनन्ते मातृणामन्यान्यासाम् ॥ ३९९ ॥ नयनोदकमपि तासां सागरसलिलाद्बहुतरं भवेत् । गलितं रुदन्तीनां मातृणामन्यान्यासाम् ॥ ४०० ॥ नास्ति भयं मरण-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ||४०१|| दीप अनुक्रम [४०२]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया

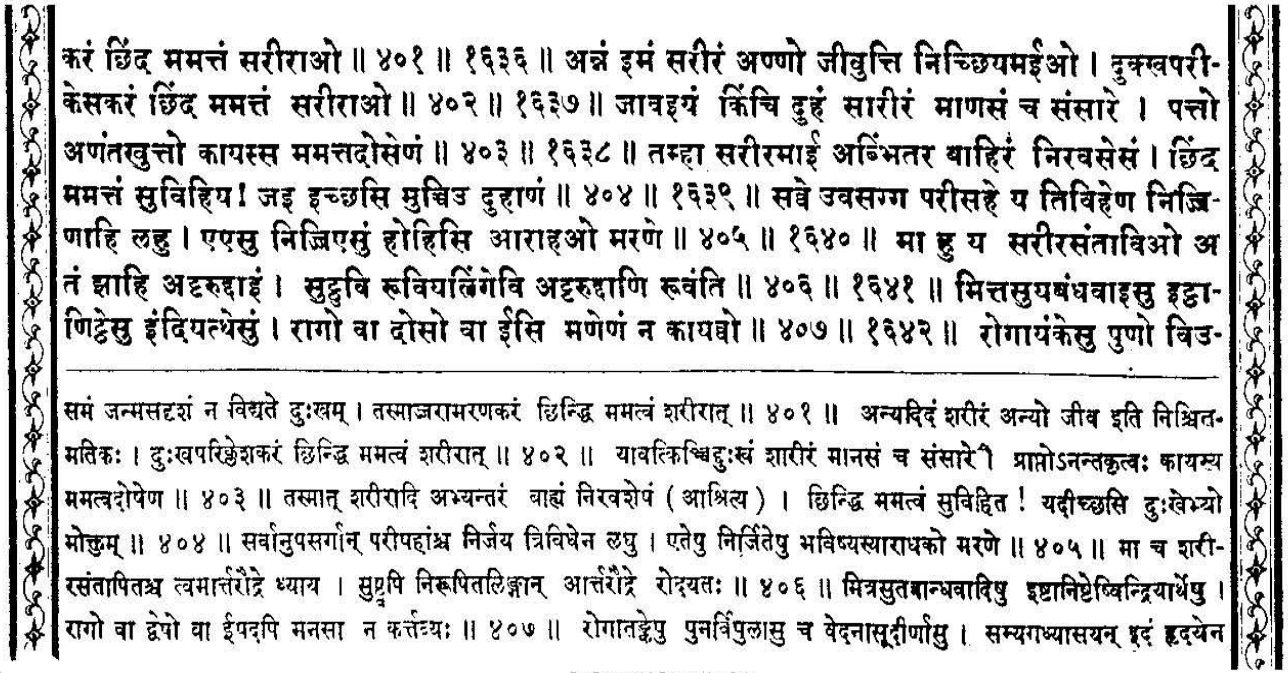

करं छिंद ममत्तं सरीराओ ॥ ४०१ ॥ १६३६ ॥ अन्नं इमं सरीरं अण्णो जीवुत्ति निच्छियमईओ । दुक्खपरी-
केसकरं छिंद ममत्तं सरीराओ ॥ ४०२ ॥ १६३७ ॥ जावइयं किंचि दुहं सारीरं माणसं च संसारे । पत्तो
अणंतखुत्तो कायस्स ममत्तदोसेणं ॥ ४०३ ॥ १६३८ ॥ तम्हा सरीरमाई अब्भिंतर बाहिरं निरवसेसं । छिंद
ममत्तं सुविहिय! जइ इच्छसि मुत्तिउ दुहाणं ॥ ४०४ ॥ १६३९ ॥ सवे उवसग्ग परीसहे य तिविहेण निज्जि-
णाहि लहु । एएसु निज्जिएसुं होहिसि आराहओ मरणे ॥ ४०५ ॥ १६४० ॥ मा हु य सरीरसंताविओ अ
तं झाहि अट्टरुद्दाइं । सुट्ठुवि रूवियलिंगेवि अट्टरुद्दाणि रूवंति ॥ ४०६ ॥ १६४१ ॥ मित्तसुयबंधवाइसु इट्ठा-
णिट्ठेसु इंदियत्थेसुं । रागो वा दोसो वा ईसि मणेणं न कायवो ॥ ४०७ ॥ १६४२ ॥ रोगायंकेसु पुणो विउ-

---

समं जन्मसदृशं न विद्यते दुःखम् । तस्माज्जरामरणकरं छिन्द्धि ममत्वं शरीरात् ॥ ४०१ ॥ अन्यदिदं शरीरं अन्यो जीव इति निश्चित-
मतिकः । दुःखपरिक्लेशकरं छिन्द्धि ममत्वं शरीरात् ॥ ४०२ ॥ यावत्किञ्चिद्दुःखं शारीरं मानसं च संसारे । प्राप्तोऽनन्तकृत्वः कायस्य
ममत्वदोषेण ॥ ४०३ ॥ तस्मात् शरीरादि अभ्यन्तरं बाह्यं निरवशेषं (आश्रित्य) । छिन्द्धि ममत्वं सुविहित ! यदीच्छसि दुःखेभ्यो
मोक्तुम् ॥ ४०४ ॥ सर्वानुपसर्गान् परीषहांश्च निर्जय त्रिविधेन लघु । एतेषु निर्जितेषु भविष्यस्याराधको मरणे ॥ ४०५ ॥ मा च शरी-
रसंतापितश्च त्वमार्त्तरौद्रे ध्याय । सुष्ठ्वपि निरूपितलिङ्गान् आर्त्तरौद्रे रोदयतः ॥ ४०६ ॥ मित्रसुतबान्धवादिषु इष्टानिष्टेष्विन्द्रियार्थेषु ।
रागो वा द्वेषो वा ईषदपि मनसा न कर्त्तव्यः ॥ ४०७ ॥ रोगातङ्केषु पुनर्विपुलासु च वेदनासूदीर्णासु । सम्यगध्यासयन् इदं हृदयेन

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ||४०८|| दीप अनुक्रम [४०९]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया

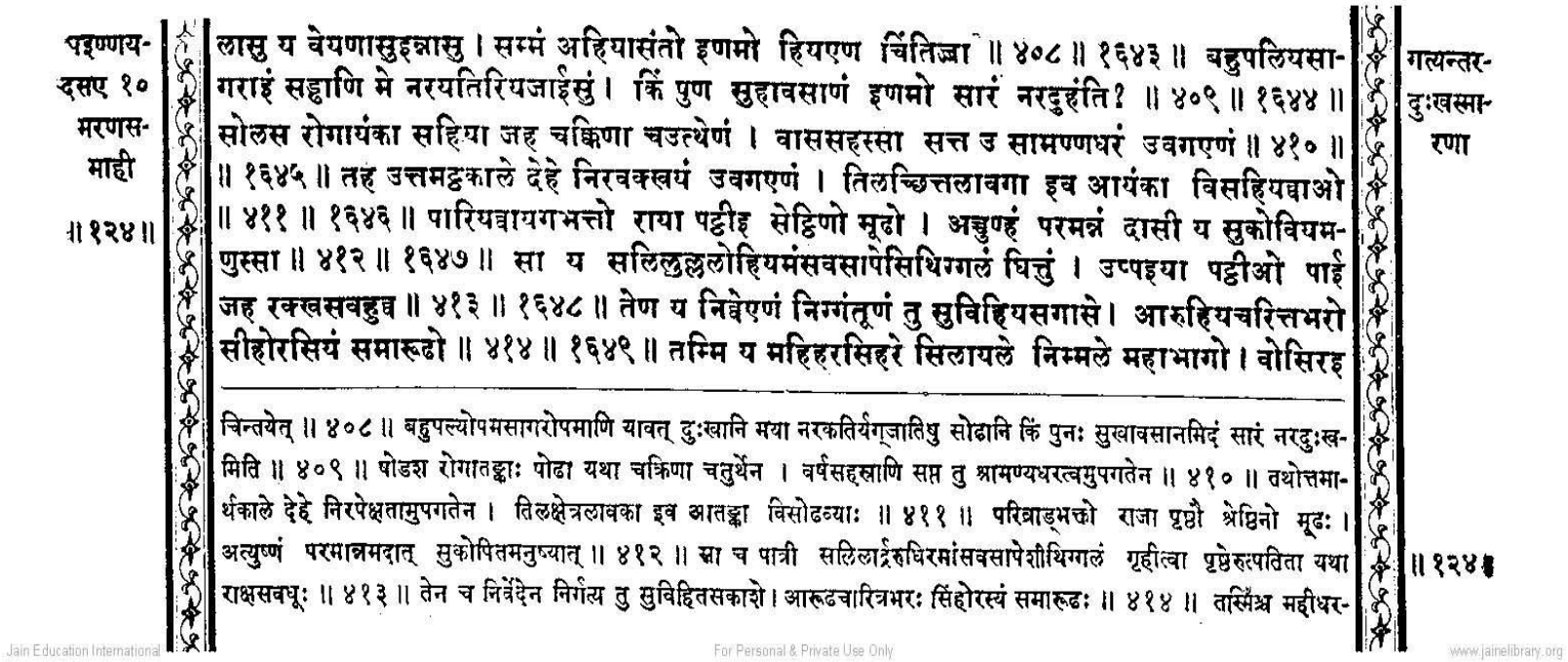

पइण्णय-दसए १० मरणस-माही

॥१२४॥

लासु य वेयणासुइन्नासु । सम्मं अहियासंतो इणमो हियएण चिंतिज्जा ॥ ४०८ ॥ १६४३ ॥ बहुपलियसा-गराइं सङ्घाणि मे नरयतिरियजाईसुं । किं पुण सुहावसाणं इणमो सारं नरदुहंति? ॥ ४०९ ॥ १६४४ ॥ सोलस रोगायंका सहिया जह चक्किणा चउत्थेणं । वाससहस्सा सत्त उ सामण्णधरं उवगएणं ॥ ४१० ॥ ॥ १६४५ ॥ तह उत्तमट्ठकाले देहे निरवक्खयं उवगएणं । तिलच्छित्तलावगा इव आयंका विसहियव्वाओ ॥ ४११ ॥ १६४६ ॥ पारियव्वायगभत्तो राया पट्ठीइ सेट्ठिणो मूढो । अच्चुण्हं परमन्नं दासी य सुकोवियम-णुस्सा ॥ ४१२ ॥ १६४७ ॥ सा य सलिलुल्ललोहियमंसवसापेसिथिग्गलं घित्तुं । उप्पइया पट्ठीओ पाई जह रक्खसवहुव्व ॥ ४१३ ॥ १६४८ ॥ तेण य निव्वेएणं निग्गंतूणं तु सुविहियसगासे । आरुहियचरित्तभरो सीहोरसियं समारूढो ॥ ४१४ ॥ १६४९ ॥ तम्मि य महिहरसिहरे सिलायले निम्मले महाभागो । वोसिरइ

चिन्तयेत् ॥ ४०८ ॥ बहुपल्योपमसागरोपमाणि यावत् दुःखानि मया नरकतिर्यग्जातिषु सोढानि किं पुनः सुखावसानमिदं सारं नरदुःख-मिति ॥ ४०९ ॥ षोडश रोगातङ्काः षोढा यथा चक्रिणा चतुर्थेन । वर्षसहस्राणि सप्त तु श्रामण्यधरत्वमुपगतेन ॥ ४१० ॥ तथोत्तमा-र्थकाले देहे निरपेक्षतामुपगतेन । तिलक्षेत्रलावका इव आतङ्का विसोढव्याः ॥ ४११ ॥ परिव्राड्भक्तो राजा पृष्ठौ श्रेष्ठिनो मूढः । अत्युष्णं परमान्नमदात् सुकोपितमनुष्यात् ॥ ४१२ ॥ सा च पात्री सलिलार्द्ररुधिरमांसवसापेशीथिग्गलं गृहीत्वा पृष्ठेरुत्पतिता यथा राक्षसवधूः ॥ ४१३ ॥ तेन च निर्वेदेन निर्गत्य तु सुविहितसकाशे। आरूढचारित्रभरः सिंहोरस्यं समारूढः ॥ ४१४ ॥ तस्मिँश्च महीधर-

गत्यन्तर-दुःखस्मा-रणा

॥१२४॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	अथ मरणसमाधि-आराधकानां वर्णयते

थिरपइन्नो सव्वाहारं महतणू य ॥ ४१५ ॥ १६५० ॥ तिविहोवसग्ग सहिउं पडिमं सो अद्धमासियं धीरो । ठाइ य पुव्वाभिमुहो उत्तमधिइसत्तसंजुत्तो ॥ ४१६ ॥ १६५१ ॥ सा य पगतंतलोहियमेयवसामंसलपरी(लंघ-रा)पट्टी । खज्जइ खगेहिं दूसहनिसट्ठचंचुप्पहारेहिं ॥ ४१७ ॥ १६५२ ॥ मसएहिं मच्छियाहि य कीडीहिवि मंससंपलगाहिं । खज्जंतोवि न कंपइ कम्मविवागं गणेमाणो ॥ ४१८ ॥ १६५३ ॥ रत्तिं च पयइविहसिय-सियालियाहिं निरणुकंपाहिं । उवसग्गिज्जइ धीरो नाणाविहरूवधाराहिं ॥ ४१९ ॥ १६५४ ॥ चिंतेइ य खर-करवयअसिपंजरखग्गमुग्गरपहाओ । इणमो न हु कट्ठयरं दुक्खं निरयग्गिदुक्खाओ ॥ ४२० ॥ १६५५ ॥ एवं च गओ पक्खो बीओ पक्खो य दाहिणदिसाए । अवरेणवि पक्खोवि य समइक्कंतो महेसिस्स ॥ ४२१ ॥ ॥ १६५६ ॥ तह उत्तरेण पक्खं भगवं अविकंपमाणसो सहइ । पडिओ य दुमासंते नमोत्ति वोत्तुं जिणिंदाणं

रशिखरे शिलातले निर्मले महाभागः । व्युत्सृजति स्थिरप्रतिज्ञः सर्वाहारं महातनुं च ॥ ४१५ ॥ त्रिविधोपसर्गान् सहित्वा प्रतिमां सोऽर्द्धमासिकीं धीरः । तिष्ठति च पूर्वाभिमुख उत्तमधृतिसत्त्वसंयुक्तः ॥ ४१६ ॥ सा च प्रगलद्रुधिरमेदवशामांसव्याप्ता पृष्ठिः । खाद्यते खगैः निसृष्टदुःसहचञ्चुप्रहारैः ॥ ४१७ ॥ मशकैर्मक्षिकाभिश्च कीटिकाभिरपि मांससंप्रलग्नाभिः । खाद्यमानोऽपि न कम्पते कर्म-विपाकं गणयन् ॥ ४१८ ॥ रात्रौ च प्रकृतिविहसितशृगालिकाभिर्निरनुकम्पाभिः । उपसर्ग्यते धीरो नानाविधरूपधारिणीभिः ॥ ४१९ ॥ चिन्तयति च खरककचासिपञ्जरखड्गमुद्गरप्रहारात् । इदं नैव कष्टकरं दुःखं नरकाग्निदुःखाच्च ॥ ४२० ॥ एवं च गतः पक्षो द्वितीयः पक्षश्च दक्षिणस्यां दिशि । अपरस्यामपि पक्षोऽपि च समतिक्रान्तो महर्षेः ॥४२१॥ तथोत्तरस्यां पक्षं भगवान् अविकम्पमानसः सहते ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ४२२ ॥ १६५७ ॥ कंचणपुरम्मि सिट्ठी जिणधम्मो नाम सावओ आसी । तस्स इमं चरियपयं तउ एयं कित्तिम मुणिस्स ॥ ४२३ ॥ १६५८ ॥ जह तेण वितथमुणिणा उवसग्गा परमदूसहा सहिया । तह उवसग्गा सुविहिय ! सहियव्वा उत्तमट्ठंमि ॥ ४२४ ॥ १६५९ ॥ निप्फेडियाणि दुण्णिवि सीसावेढेण जस्स अच्छीणि । न य संजमाउ चलिओ मेअज्जो मंदरगिरिव्व ॥ ४२५ ॥ १६६० ॥ जो कुंचगावराहे पाणिदया कुंचगंपि नाइक्खे । जीवियमणुपेहंतं मेयज्जरिसिं नमंसामि ॥ ४२६ ॥ १६६१ ॥ जो तिहिं पएहिं धम्मं समइगओ संजमं समारूढो । उवसमविवेगसंवर चिलाइपुत्तं नमंसामि ॥ ४२७ ॥ १६६२ ॥ सोएहिं अइगयाओ लोहियगंधेण जस्स कीडीओ । खायंति उत्तमंगं तं दुक्करकारयं वंदे ॥ ४२८ ॥ १६६३ ॥ देहो पिपीलियाहिं चिलाइपुत्तस्स

पतितश्च द्विमास्यन्ते जिनेन्द्रेभ्यो नमोऽस्त्वित्युक्त्वा ॥ ४२२ ॥ काञ्चनपुरे श्रेष्ठी जिनधर्मो नाम श्रावक आसीत् । तस्यैतच्चरितपदं तत् एतत्कृत्रिममुनेः ॥ ४२३ ॥ यथा तेन वितथमुनिना उपसर्गाः परमदुष्कराः सोढाः। तथोपसर्गाः सुविहित! सोढव्या उत्तमार्थे ॥४२४॥ निष्काशिते द्वे अपि शिरसावेष्टेन यस्याक्षिणी । न च संयमाच्चलितो मेतार्यो मन्दरगिरिरिव ॥ ४२५ ॥ यः क्रौञ्चकापराधे प्राणिदयायाः क्रौञ्चकमपि नाख्यत् । तं संयमजीवितमनुप्रेक्षमाणं मेतार्यर्षिं नमस्यामि ॥ ४२६ ॥ यस्त्रिभिः पदैर्धर्मं समधिगतः संयमं च समारूढः । उपशमविवेकसंवरैस्तं चिलातीपुत्रं नमस्यामि ॥ ४२७ ॥ श्रोतोभिरभिगता रुधिरगन्धेन यस्य कीटिकाः । खादन्त्युत्तमाङ्गं तं दुष्करकारकं वन्दे ॥ ४२८ ॥ देहः पिपीलिकाभिश्चिलातीपुत्रस्य चालनीव कृतः । तनुकोऽपि मनःप्रद्वेषो न च जातस्तस्य तासामुपरि ॥ ४२९ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ||४२९||

दीप अनुक्रम [४३०]

चालणिव्व कओ। तणुओवि मणपओसो न य जाओ तस्स ताणुवरिं ॥ ४२९ ॥ १६६४ ॥ धीरो चिलाइपुत्तो मूइंगलियाहिं चालिणिव्व कओ। न य धम्माओ चलिओ तं दुक्करकारयं वंदे ॥ ४३० ॥ १६६५ ॥ गयसुकुमालमहेसी जह दड्ढो पिइवणंसि ससुरेणं। न य धम्माओ चलिओ तं दुक्करकारयं वंदे ॥ ४३१ ॥ १६६६ ॥ जह तेण सो हुयासो सम्मं अइरेगदूसहो सहिओ। तह सहियव्वो सुविहिय! उवसग्गो देहदुक्खं च ॥ ४३२ ॥ ॥ १६६७ ॥ कमलामेलाहरणे सागरचंदो सुईहिं नभसेणं। आगंतूण सुरत्ता संपइ संपाइणो वारे ॥ ४३३ ॥ ॥ १६६८ ॥ जा तस्स खमा तइया जो भावो जा य दुक्करा पडिमा। तं अणगार! गुणागर तुमंपि हियएण चिंतेहि ॥ ४३४ ॥ १६६९ ॥ सोऊण निसासमए नलिणिविमाणस्स वण्णणं धीरो। संभरियदेवलोओ उज्जेणि अवंतिसुकुमालो ॥ ४३५ ॥ १६७० ॥ घित्तूण समणदिक्खं नियमुज्झियसव्वदिव्वआहारो। बाहिं वंसकुडंगे

धीरश्चिलातीपुत्रः पिपीलिकाभिश्चालनीव कृतः। न च धर्माच्चलितस्तं दुष्करकारकं वन्दे ॥ ४३० ॥ गजसुकुमालमहर्षिर्यथा दग्धः पितृवने श्वशुरेण। न च धर्माच्चलितस्तं दुष्करकारकं वन्दे ॥४३१॥ यथा तेन स हुताशनः सम्यगतिरेकदुःसहः सोढः। तथा सोढव्यः सुविहित! उपसर्गो देहदुःखं च ॥४३२॥ कमलामेलोदाहरणे सागरचन्द्रः सूचिभिः(मृतः)नभःसेनम्। आगत्य सुरत्वात् तत्कालं संपातिनो वारयति ॥ ४३३ ॥ या तस्य क्षमा तदा यो भावो या च दुष्करा प्रतिमा। तद् अनगार! गुणाकर! त्वमपि हृदयेन चिन्तय ॥ ४३४ ॥ श्रुत्वा निशासमये नलिनीगुल्मविमानस्य वर्णनं धीरः। संस्मृतदेवलोक उज्जयिन्यामवन्तीसुकुमालः ॥ ४३५ ॥ गृहीत्वा श्रमणदीक्षां नियमोज्झित-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पायवगमणं निवण्णो उ ॥ ४३६ ॥ १६७१ ॥ बोसट्ठनिसट्ठंगो तहिं सो भुल्लुंकियाइ खइओ उ । मंदरगिरिनि-
क्कंपं तं दुक्करकारयं वंदे ॥ ४३७ ॥ १६७२ ॥ मरणंमि जस्स मुक्कं सुकुसुमगंधोदयं च देवेहिं । अज्जवि गंधवई
सा तं च कुडंगीसरट्ठाणं ॥ ४३८ ॥ १६७३ ॥ जह तेण तत्थ मुणिणा सम्मं सुमणेण इंगिणी तिण्णा । तह
तूरह उत्तमट्ठं तं च मणे सन्निवेसेह ॥ ४३९ ॥ १६७४ ॥ जो निच्छएण गिण्हइ देहच्चाएवि न अट्ठियं कुणइ ।
सो साहेइ सकज्जं जह चंदवडिंसओ राया ॥ ४४० ॥ १६७५ ॥ दीवाभिग्गहधारी दूसहघणविणयनिच्चल-
नगिंदो । जह सो तिण्णपइण्णो तह तूरह तुमं पइन्नंमि ॥ ४४१ ॥ १६७६ ॥ जह दमदंतमहेसी पंडयकोरव
मुणी थुयगरहिओ । आसि समो दुण्हंपि हु एव समा होह सव्वत्थ ॥ ४४२ ॥ १६७७ ॥ जह खंदगसीसेहिं

सर्वदिव्य आहारः । बहिर्वंशकुडङ्गे पादपोपगमनेनोपविष्टः ॥४३६॥ निःसहव्युत्सृष्टाङ्गस्तत्र सः शृगाल्या खादितस्तु । मन्दरगिरिनिष्कम्पं
तं दुष्करकारकं वन्दे ॥ ४३७ ॥ मरणे यस्य मुक्तं सुकुसुमगन्धोदकं च देवैः । अद्यापि गन्धवती सा (भूमिः) तच्च कुडङ्गेश्वरस्थानम्
॥ ४३८ ॥ यथा तेन तत्र मुनिना सम्यक् सुमनसा इङ्गिनी तीर्णा । तथा त्वरस्व उत्तमार्थे तच्च मनसि संनिवेशय ॥ ४३९ ॥ यो निश्च-
येन गृह्णाति देहत्यागेऽपि नास्थितिं करोति । स साधयति स्वकार्यं यथा चन्द्रावतंसको राजा ॥ ४४० ॥ दीपाभिग्रहधारी दुःसह(पाप)घ-
नविनयननिश्चलनगेन्द्रः । यथा स तीर्णप्रतिज्ञस्तथा त्वरस्व त्वं प्रतिज्ञायाम् ॥ ४४१ ॥ यथा दमदन्तमहर्षिः कौरवपाण्डवाभ्यां गर्हितस्तुतो
मुनिः । आसीद्द्वयोरपि समः एवं समो भव सर्वत्र ॥ ४४२ ॥ यथा स्कन्दकशिष्यैः शुक्लमहाध्यानसंसृतमनस्कैः । न कृतो मनःप्रद्वेषो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सुक्कमहाझाणसंसियमणेहिं । न कओ मणप्पओसो पीलिज्जंतेसु जंतंमि ॥ ४४३ ॥ १६७८ ॥ तह धन्नसालिभद्दा अणगारा दोवि तवमहिड्ढीया । वेभारगिरिसमीवे नालंदाए समीवंमि ॥ ४४४ ॥ १६७९ ॥ जुअलसिलासंथारे पायवगमणं उवगया जुगवं । मासं अणूणगं ते वोसट्ठनिसट्ठसव्वंगा ॥ ४४५ ॥ १६८० ॥ सीयायवझडियंगा लग्गुद्धियमंसण्हारुणि विणट्ठा । दोवि अणुत्तरवासी महेसिणो रिद्धिसंपण्णा ॥ ४४६ ॥ १६८१ ॥ अच्छेरयं च लोए ताण तहिं देवयाणुभावेणं । अज्जवि अट्ठिनिवेसं पंकिव्व सनामगा हत्थी ॥ ४४७ ॥ १६८२॥ जह ते समंसचम्मे दुबलविलग्गेवि णो सयं चलिया । तह अहियासेयव्वं गमणे थेवंपिमं दुक्खं ॥ ४४८ ॥ ॥ १६८३ ॥ अयलग्गाम कुडुंबिय सुरइयसयदेवसमणयसुभद्दा । सव्वे उ गया खमगं गिरिगुहनिलयन्निय्च्छीय ॥ ४४९ ॥ १६८४ ॥ ते तं तवोकिलंतं वीसामेऊण विणयपुव्वागं । उवलद्धपुण्णपावा फासुयसु-

यत्नेन पीड्यमानैः ॥ ४४३ ॥ तथा धन्यशालिभद्रौ अनगारौ द्वावपि तपोमहर्द्धिकौ । वैभारगिरिसमीपे नालन्दायाः समीपे ॥ ४४४ ॥ शिलायुगलसंस्तारके युगपत्पादपोपगमनमुपगतौ । मासमनूनं तौ निःसहव्युत्सृष्टसर्वाङ्गौ ॥४४५॥ शीतातपक्षपिताङ्गौ लग्नोद्धृत(भग्नास्थि)-मांसस्नायुकौ विनष्टौ । द्वावपि अनुत्तरवासिनौ महर्षी ऋद्धिसंपन्नौ जातौ ॥४४६॥ आश्चर्यं च लोके तयोस्तत्र देवताऽनुभावेन । अद्यापि पङ्के इवास्थिनिवेशं स्वनामकौ हस्तिनौ (विद्येते) ॥ ४४७ ॥ यथा तौ समांसचर्मणि दुर्बलविलग्नेऽपि देहे न स्वयं चलितौ तथाऽध्यासितव्यं गमने स्तोकमपीदं दुःखम् ॥ ४४८ ॥ अचलग्रामे कौटुम्बिकाः सुरतिकशतकदेवश्रमणकसुभद्राः । सर्वेऽपि गताः क्षपणकं गिरिगुहानिलयेऽद्राक्षिषुः ॥ ४४९ ॥ ते तं तपःक्लाम्यन्तं विश्रम्य विनयपूर्वम् । उपलब्धपुण्यपापाः प्रासुकं सुमहिमानमकार्षुरिह ॥ ४५० ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

महं करेसीह ॥ ४५० ॥ १६८५ ॥ सुगहियसावयधम्मा जिणमहिमाणेसु जणियवसोहग्गा । जसहरमुणिणो पासे निक्खंता तिव्वसंवेगा ॥ ४५१ ॥ १६८६ ॥ सुगिहियजिणवयणामयपरिपुट्ठा सीलसुरहिगंधड्ढा(ड्ढा)। विहरिय गुरुस्सगासे जिणवरवसुपुज्जतित्थंमि ॥ ४५२ ॥ १६८७ ॥ कणगावलिमुत्तावलिरयणावलिसीहकीलियकलंता । काही य ससंवेगा आयंबिलवद्धमाणं च ॥ ४५३ ॥ १६८८ ॥ आसरिया य मणोहरसिहरंतरसंचरंतपुक्खरयं । आइकरचलणपंकयसिरसेवियमाल हिमवंतं ॥ ४५४ ॥ १६८९ ॥ रमणिज्जहरियतरुवरपरहुअसिहिभमरमहुयरिविलोले । अमरगिरिविसयमणहरजिणवयणसुकाणणुद्देसे ॥ ४५५ ॥ १६९० ॥ तंमि सिलायल पुहवी पंचवि देहट्ठिईसु मुणियत्था । कालगया उववण्णा पंचवि अपराजियविमाणे ॥ ४५६ ॥ ॥ १६९१ ॥ ताओ चइऊण इहं भारहवासे असेसरिउदमणा । पंडुनराहिवतणया जाया जयलच्छिभ-

---

सुगृहीतश्रावकधर्मा जिनमहिमसु जनितसौभाग्याः । यशोधरमुनेः पार्श्वे निष्क्रान्तास्तीव्रसंवेगाः ॥ ४५१ ॥ सुगृहीतजिनवचनामृतपरिपुष्टाः शीलसुरभिगन्धाढ्याः । विहृताः गुरुसकाशे जिनवरवासुपूज्यतीर्थे ॥ ४५२ ॥ कनकावलीमुक्तावलीरत्नावलीसिंहनिष्क्रीडितानि कलयन्तः । अकार्षुश्च ससंवेगा आचाम्लवर्द्धमानं च ॥ ४५३ ॥ आश्रिताश्च मनोहरशिखरान्तरसञ्चरत्पुष्करकम् । आदिकरचरणपङ्कजसेवितशिरोमालं हिमवन्तम् ॥ ४५४ ॥ रमणीयद्रहतरुवरपरभृतशिखिभ्रमरमधुकरीविलोले । अमरगिरिविशदमनोहरजिनवच(भव)नसुकाननोद्देशे ॥ ४५५ ॥ तस्मिन् शिलातले पञ्चापि पार्थिवदेहस्थितिषु ज्ञातार्थाः । कालगताः पञ्चाप्युत्पन्ना अपराजितविमाने ॥ ४५६ ॥ तस्माच्च्युत्वा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

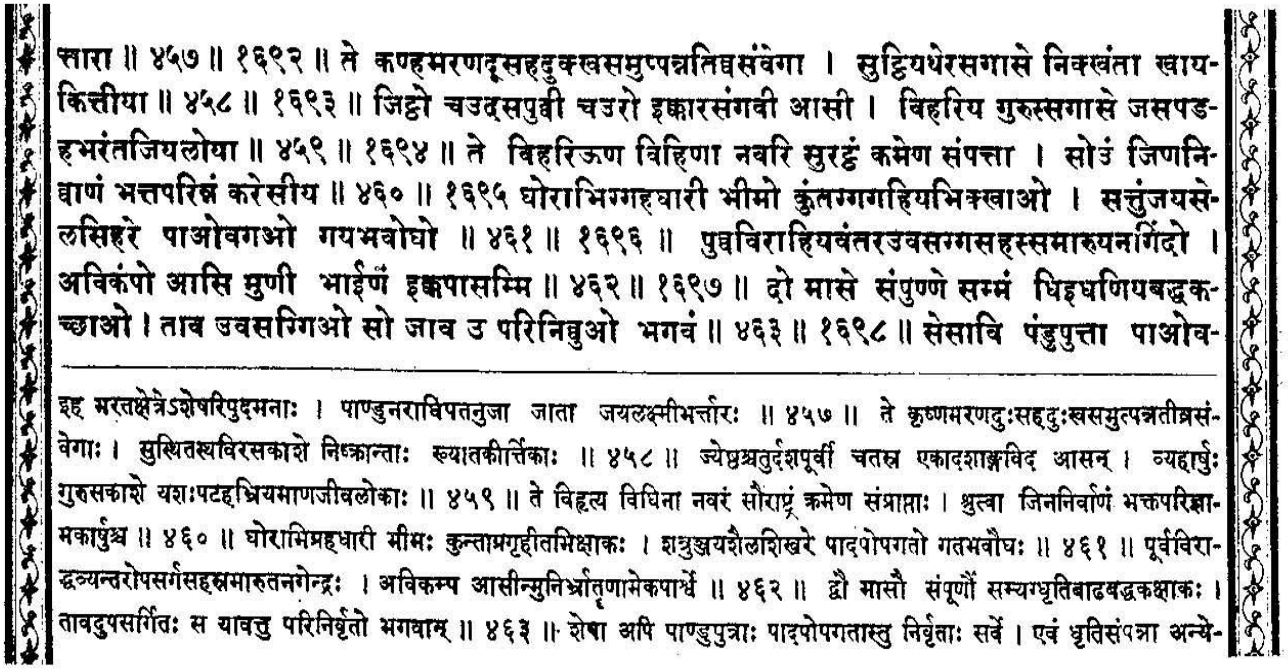

सारा ॥ ४५७ ॥ १६९२ ॥ ते कण्हमरणदूसहदुक्खसमुप्पन्नतिव्वसंवेगा । सुट्ठियथेरसगासे निक्खंता खायकित्तीया ॥ ४५८ ॥ १६९३ ॥ जिट्ठो चउदसपुव्वी चउरो इक्कारसंगवी आसी । विहरिय गुरुस्सगासे जसपडहभरंतजियलोया ॥ ४५९ ॥ १६९४ ॥ ते विहरिऊण विहिणा नवरि सुरट्ठं कमेण संपत्ता । सोउं जिणनिव्वाणं भत्तपरिन्नं करेसीय ॥ ४६० ॥ १६९५ घोराभिग्गहधारी भीमो कुंतग्गगहियभिक्खाओ । सत्तुंजयसेलसिहरे पाओवगओ गयभवोघो ॥ ४६१ ॥ १६९६ ॥ पुव्वविराहियवंतरउवसग्गसहस्समारुयनगिंदो । अविकंपो आसि मुणी भाईणं इक्कपासम्मि ॥ ४६२ ॥ १६९७ ॥ दो मासे संपुण्णे सम्मं धिइधणियबद्धकच्छाओ । ताव उवसग्गिओ सो जाव उ परिनिव्वुओ भगवं ॥ ४६३ ॥ १६९८ ॥ सेसावि पंडुपुत्ता पाओव-

---

इह भरतक्षेत्रेऽशेषरिपुदमनाः । पाण्डुनराधिपतनुजा जाता जयलक्ष्मीभर्त्तारः ॥ ४५७ ॥ ते कृष्णमरणदुःसहदुःखसमुत्पन्नतीव्रसंवेगाः । सुस्थितस्थविरसकाशे निष्क्रान्ताः ख्यातकीर्त्तिकाः ॥ ४५८ ॥ ज्येष्ठश्चतुर्दशपूर्वी चतस्र एकादशाङ्गविद आसन् । व्यहार्षुः गुरुसकाशे यशःपटहभ्रियमाणजीवलोकाः ॥ ४५९ ॥ ते विहृत्य विधिना नवरं सौराष्ट्रं क्रमेण संप्राप्ताः । श्रुत्वा जिननिर्वाणं भक्तपरिज्ञामकार्षुश्च ॥ ४६० ॥ घोराभिग्रहधारी भीमः कुन्ताग्रगृहीतभिक्षाकः । शत्रुञ्जयशैलशिखरे पादपोपगतो गतभवौघः ॥ ४६१ ॥ पूर्वविराद्धव्यन्तरोपसर्गसहस्रमारुतनगेन्द्रः । अविकम्प आसीन्मुनिर्भ्रातृणामेकपार्श्वे ॥ ४६२ ॥ द्वौ मासौ संपूर्णौ सम्यग्धृतिबाढबद्धकक्षाकः । तावदुपसर्गितः स यावत्तु परिनिर्वृतो भगवान् ॥ ४६३ ॥ शेषा अपि पाण्डुपुत्राः पादपोपगतास्तु निर्वृताः सर्वे । एवं धृतिसंपन्ना अन्ये-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ||४६४||

दीप अनुक्रम [४६५]

गया उ निवुया सबे । एवं धिइसंपन्ना अण्णेवि दुहाओं मुचंति ॥ ४६४ ॥ १६९९ ॥ दंडोवि य अणगारो आयावणभूमिसंठिओ वीरो । सहिऊण बाणघायं सम्मं परिनिवुओ भगवं ॥ ४६५ ॥ १७०० ॥ सेलम्मि चित्तकूडे सुकोसलो सुट्ठिओ उ पडिमाए । नियजणणीए खइओ वग्घीभावं उवगयाए ॥ ४६६ ॥ १७०१ ॥ पडि(णिय)मायगओ अ मुणी लंबेसु ठिओ बहूसु ठाणेसुं । तहवि य अकलुसभावो सा हु खमा सबसाहूणं ॥ ४६७ ॥ १७०२ ॥ पंचसयापरिवुडया वइररिसी पबए रहावत्ते । मुत्तूण खुड्डगं किर अन्नं गिरि-मस्सिओ सुजसो ॥ ४६८ ॥ १७०३ ॥ तत्थ य सो उवलतले एगागी धीरनिच्छयमईओ । वोसिरिऊण सरीरं उण्हम्मि ठिओ वियप्पाणो ॥ ४६९ ॥ १७०४ ॥ ता सो अइसुकुमालो दिणयरकिरणग्गितावियसरीरो । हविपिंडुव्व विलीणो उववण्णो देवलोयम्मि ॥४७०॥ १७०५ ॥ तस्स य सरीरपूयं कासीय रहेहि लोगपाला उ ।

ऽपि दुःखान्मुच्यन्ते ॥ ४६४ ॥ दण्डोऽपि चानगारः आतापनभूमिसंस्थितो वीरः । सोढ्वा बाणघातं सम्यक् परिनिर्वृतो भगवान् ॥४६५॥ शैले चित्रकूटे सुकोशलः सुस्थितस्तु प्रतिमया । निजजनन्या खादितो व्याघ्रीभावमुपगतया ॥ ४६६ ॥ अतिमागतश्च मुनिर्दूरदूरेषु स्थितो बहुषु स्थानेषु । तथाऽपि चाकलुषभावः सैव क्षमा सर्वसाधूनाम् ॥ ४६७ ॥ पञ्चशतपरिवृतो वज्रर्षिः पर्वते रथावर्ते । मुक्त्वा क्षुल्लकं किल अन्यं गिरिमाश्रितः सुयशाः ॥ ४६८ ॥ तत्र च स उपलतले एकाकी धीरनिश्चयमतिकः । व्युत्सृज्य शरीरमुष्णे स्थितो विदात्मा ॥ ४६९ ॥ ततः सोऽतिसुकुमालो दिनकरकिरणाग्नितापितशरीरः । हविःपिण्ड इव विलीन उत्पन्नो देवलोके ॥ ४७० ॥ तस्य च शरी-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ||४७१|| दीप अनुक्रम [४७१]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया

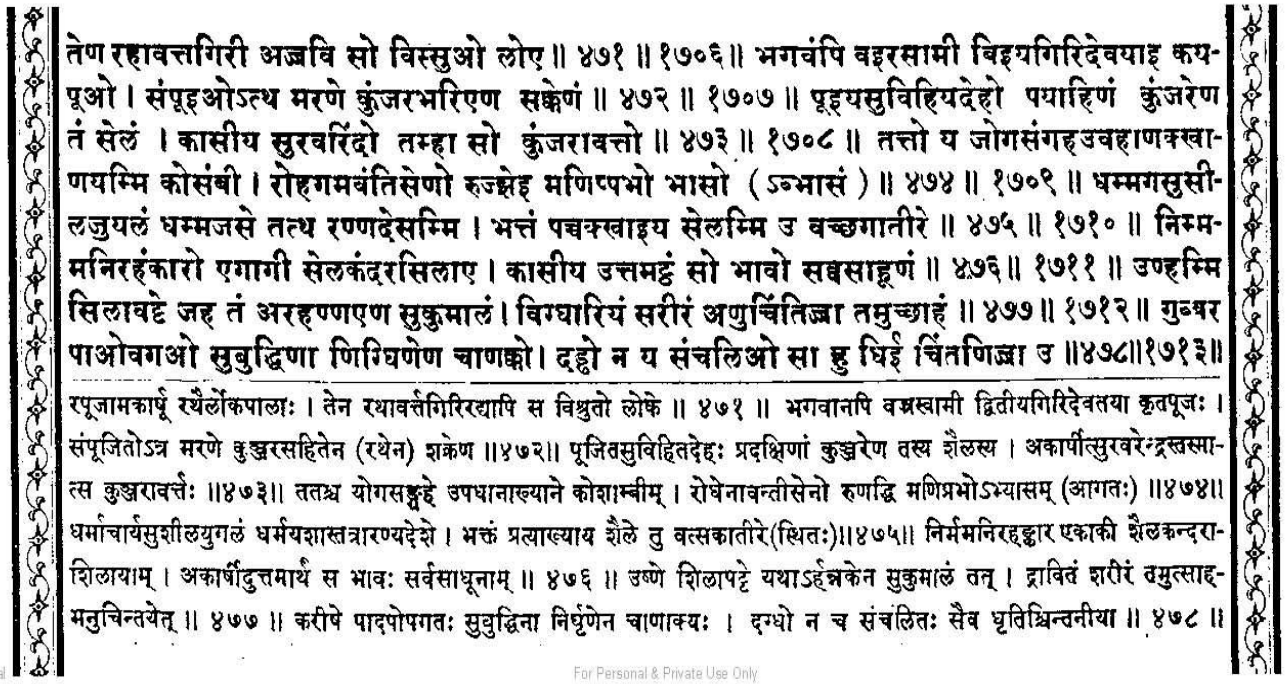

तेण रहावत्तगिरी अज्जवि सो विस्सुओ लोए ॥ ४७१ ॥ १७०६ ॥ भगवंपि वइरसामी बिइयगिरिदेवयाइ कय-
पूओ । संपूहओऽत्थ मरणे कुंजरभरिएण सक्केणं ॥ ४७२ ॥ १७०७ ॥ पूइयसुविहियदेहो पयाहिणं कुंजरेण
तं सेलं । कासीय सुरवरिंदो तम्हा सो कुंजरावत्तो ॥ ४७३ ॥ १७०८ ॥ तत्तो य जोगसंगहउवहाणक्खा-
णयम्मि कोसंबी । रोहगमवंतिसेणो रुज्झेइ मणिप्पभो भासो (ऽभासं) ॥ ४७४ ॥ १७०९ ॥ धम्मगसुसी-
लजुयलं धम्मजसे तत्थ रण्णदेसम्मि । भत्तं पच्चक्खाइय सेलम्मि उ वच्छगातीरे ॥ ४७५ ॥ १७१० ॥ निम्म-
मनिरहंकारो एगागी सेलकंदरसिलाए । कासीय उत्तमट्ठं सो भावो सव्वसाहूणं ॥ ४७६ ॥ १७११ ॥ उण्हम्मि
सिलावट्टे जह तं अरहण्णएण सुकुमालं । विग्घारियं सरीरं अणुचिंतिज्जा तमुच्छाहं ॥ ४७७ ॥ १७१२ ॥ गुब्बर
पाओवगओ सुबुद्धिणा णिग्घिणेण चाणक्को । दड्ढो न य संचलिओ सा हु धिई चिंतणिज्जा उ ॥४७८॥१७१३॥

रपूजामकार्षू रथैर्लोकपालाः । तेन रथावर्त्तगिरिरद्यापि स विश्रुतो लोके ॥ ४७१ ॥ भगवानपि वज्रस्वामी द्वितीयगिरिदेवतया कृतपूजः ।
संपूजितोऽत्र मरणे कुञ्जरसहितेन (रथेन) शक्रेण ॥४७२॥ पूजितसुविहितदेहः प्रदक्षिणां कुञ्जरेण तस्य शैलस्य । अकार्षीत्सुरवरेन्द्रस्तस्मा-
त्स कुञ्जरावर्त्तः ॥४७३॥ ततश्च योगसङ्ग्रहे उपधानाख्याने कोशाम्बीम् । रोधेनावन्तीसेनो रुणद्धि मणिप्रभोऽभ्यासम् (आगतः) ॥४७४॥
धर्माचार्यसुशीलयुगलं धर्मयशास्तत्रारण्यदेशे । भक्तं प्रत्याख्याय शैले तु वत्सकातीरे(स्थितः)॥४७५॥ निर्ममनिरहङ्कार एकाकी शैलकन्दरा-
शिलायाम् । अकार्षीदुत्तमार्थं स भावः सर्वसाधूनाम् ॥ ४७६ ॥ उष्णे शिलापट्टे यथाऽर्हन्नकेन सुकुमालं तनू । द्राक्षितं शरीरं तमुत्साह-
मनुचिन्तयेत् ॥ ४७७ ॥ करीषे पादपोपगतः सुबुद्धिना निर्घृणेन चाणाक्यः । दग्धो न च संचलितः सैव धृतिश्चिन्तनीया ॥ ४७८ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जह सोऽवि सप्पएसी वोसट्ठनिसिट्ठचत्तदेहो उ । वंसीपत्तेहिं विनिग्गएहिं आगासमुक्खित्तो ॥ ४७९ ॥ ॥ १७१४ ॥ जह सा बत्तीसघडा वोसट्ठनिसट्ठचत्तदेहागा । धीरा वायज्ज उ दीवएण विगलिम्मि ओलइया ॥ ४८० ॥ १७१५ ॥ जंतेण करकएण व सत्थेहिं व सावएहिं विविहेहिं । देहे विद्धस्संते ईसिंपि अकप्पणारु(ह्म)मणा ॥ ४८१ ॥ १७१६ ॥ पडिणीययाइ केसिं चम्मंसे खीलएहिं निहणित्ता । महुघयमक्खियदेहं पिवीलियाणं तु दिज्जाहिं ॥ ४८२ ॥ १७१७ ॥ जेण विरागो जायइ तं तं सव्वायरेण करणिज्जं । सुव्वइ हु ससंवेगो इत्थ इलापुत्तदिट्ठंतो ॥ ४८३ ॥ १७१८ ॥ समुइण्णेसु य सुविहिय! घोरेसु परीसहेसु सहणेणं । सो अत्थो सरणिज्जो जोऽधीओ उत्तरज्झयणे ॥ ४८४ ॥ १७१९ ॥ उज्जेणि हत्थिमित्तो सत्थसमग्गो वणम्मि कट्ठेणं । पायहरो संवरण चिल्लगभिक्खा वण सुरेसुं ॥ ४८५ ॥ १७२० ॥ तत्थेव य धणमित्तो चेल्लगमरणं नईइ

यथा सोऽपि सप्रदेशी व्युत्सृष्टनिसृष्टत्यक्तदेहस्तु । वंशीपत्रैर्विनिर्गतैराकाश उत्क्षिप्तः ॥ ४७९ ॥ यथा सा द्वात्रिंशद्घटा व्युत्सृष्टनिसृष्टत्यक्तदेहा । धीरा सवातेन प्रदीपनकेन विकाले विलीना ॥ ४८० ॥ यन्त्रेण ककचेन वा शस्त्रैर्वा श्वापदैर्विविधैः । देहे विध्वस्यमाने ईषदपि असत्कल्पनाक्षपणा (अनारूढासन्मनःकल्पना) ॥ ४८१ ॥ (केचित्) प्रत्यनीकतया केषाञ्चिच्चर्मांशे कीलकानिहत्य । मधुघृतम्रक्षितदेहं पिपीलिकाभ्यो दद्यात् (अदुः)॥ ४८२ ॥ येन विरागो जायते तत्तत्सर्वादरेण करणीयम् । श्रूयते ससंवेगोऽत्रेलापुत्रो दृष्टान्तः ॥ ४८३ ॥ समुदीर्णेषु च सुविहित! घोरेषु परीषहेषु सहनाय। सोऽर्थः स्मरणीयो योऽधीत उत्तराध्ययनेषु ॥४८४॥ उज्जयिन्यां हस्तिमित्रः सार्थसमग्रो वने काष्ठे(कण्टके)न हतपादः प्रत्याख्यानं क्षुल्लकभिक्षा वने सुरेण ॥ ४८५ ॥ तत्रैव च धनमित्रः क्षुल्लकमरणं नद्यां तृष्णया निस्तीर्णेष्व-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ||४८६||

दीप अनुक्रम [४८७]

तण्हाए। निच्छिण्णेसुऽणज्झंत विंटियविस्सारणं कासि ॥ ४८६ ॥ १७२१ ॥ मुणिचंदेण विदिण्णस्स रायगिहि परीसहो महाघोरो। जत्तो हरिवंसविहूसणस्स वुच्छं जिणिंदस्स ॥ ४८७ ॥ १७२२ ॥ रायगिहनिग्गया खलु पडिमापडिवन्नगा मुणी चउरो। सीयविहूय कमेणं पहरे पहरे गया सिद्धिं ॥ ४८८ ॥ १७२३ ॥ उसिणे तगरऽरहन्नग चंपा मसएसु सुमणभद्दरिसी। खमसमण अज्जरक्खिय अचेलुय यत्ते अ उज्जेणी ॥ ४८९ ॥ ॥ १७२४ ॥ अरईय जाइसूकरो (मूओ) भव्वो अ दुलहबोहीओ। कोसंबीए कहिओ इत्थीए थूलभद्दरिसी ॥ ४९० ॥ १७२५ ॥ कुल्लइरम्मि य दत्तो चरियाइ परीसहे समक्खाओ। सिट्ठिसुयतिगिच्छणणं अंगुलदीवो य वासम्मि ॥ ४९१ ॥ १७२६ ॥ गयपुर कुरुदत्तसुओ निसीहिया अडविदेस पडिमाए। गाविकुविएण दड्ढो गयसुकुमालो जहा भगवं ॥४९२॥ १७२७॥ तो(दो) अणगारा धिज्जाइयाइ कोसंबि सोमदत्ताई। पाओवगया

ज्ञायमानं विण्टिकाविस्मरणमकार्षीत् ॥ ४८६ ॥ राजगृहे(मन्दिरे)(तत्र) महाघोरः परीषहो मुनिचन्द्रेण विदत्तः। हरिवंशविभूषणस्य जिनेन्द्रस्य यत्र वसनं ॥ ४८७ ॥ राजगृहनिर्गताः प्रतिमाप्रतिपन्ना मुनयश्चत्वारः। शीतविधूताः क्रमेण प्रहरे २ सिद्धिं गताः ॥ ४८८॥ उष्णे तगरायामर्हन्नकश्चम्पायां मशकेषु सुमनोभद्र ऋषिः। क्षमाश्रमणा आर्यरक्षिता अचेलकत्वे उज्जयिन्याम् ॥ ४८९॥ अरतौ च जातिसूकरो मूको भव्यश्च दुर्लभो बोधिः। कौशाम्ब्यां कथितः स्त्रियां स्थूलभद्र ऋषिः ॥ ४९० ॥ कुल्लकिरे च दत्तश्चर्यायाः परीषहे समाख्यातः। श्रेष्ठिसुतचिकित्सनमङ्गुलदीपश्च वर्षणे ॥ ४९१ ॥ गजपुरे कुरुदत्तसुतो नैषेधिक्यामटवीदेशे प्रतिमया। गोहेरकेण दग्धो गजसुकुमालो यथा भगवान् ॥ ४९२ ॥ द्वौ अनगारौ धिग्जातीयौ कौशाम्ब्यां सोमदत्तादी। पादपोपगतौ नदीनैषेधिक्यां सागरे क्षिप्तौ ॥ ४९३ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

णदिणेसिज्जाए सागरे छूढा ॥ ४९३ ॥ १७२८ ॥ महुराइ मङ्गुरखमओ अक्कोसपरीसहे उ सविसेसो । बीओ रायगिहम्मि उ अज्जुणमालारदिट्ठंतो ॥ ४९४ ॥ १७२९ ॥ कुंभारकडे नगरे खंदगसीसाण जंतपीलणया । एवंविहे कहिज्जइ जह सहियं तस्स सीसेहिं ॥ ४९५ ॥ १७३० ॥ तह झाणनाणवु(जु)त्तं गीए संठि(पट्ठि)यस्स समुयाणं । तत्तो अलाभगंमि उ जह कोहं निज्जिणे कण्हो ॥ ४९६ ॥ १७३१ ॥ किसिपारासरढंढो बीयं तु अलाभगे उदाहरणं । कण्हबलभद्दमन्नं चइऊण खमन्निओ सिद्धो ॥ ४९७ ॥ १७३२ ॥ महुरा जियसत्तुसुओ अणगारो कालवेसिओ रोगे । मोग्गल्लसेलसिहरे खइओ किल सरसियालेणं ॥ ४९८ ॥ १७३३ ॥ सावत्थी जियसत्तूतणओ निक्खमण पडिम तणफासे । वीरिय पविय विकंचण कुसलेसणकड्ढणासहणं ॥४९९॥१७३४॥ चंपासु णंदगं चिय साहुदुगुंछाइ जल्लखउरंगे । कोसंबि जम्मनिक्खमण वेयणं साहुपडिमाए ॥ ५०० ॥

मथुरायां मथुरः क्षपक आक्रोशपरीषहे तु सविशेषः । द्वितीयो राजगृहेऽर्जुनमालाकारदृष्टान्तः ॥ ४९४ ॥ कुम्भकारकटे नगरे स्कन्धकशिष्याणां यन्त्रपीलना । एवंविधे कथ्यते यथा सोढं तस्य शिष्यैः ॥ ४९५ ॥ तथा ध्यानज्ञानयुक्तस्य गीतार्थस्य समुदाने संप्रस्थितस्य । ततोऽलाभे तु यथा क्रोधं निरजैषीत्कृष्णः ॥ ४९६ ॥ कृषिपारासरढण्ढो द्वितीयमलाभके उदाहरणम् । कृष्णबलभद्रकमन्यत् त्यक्त्वा क्षमान्वितः सिद्धः ॥४९७॥ मथुरायां जितशत्रुसुतोऽनगारः कालवैशिको रोगे । मौद्गल्यशैलशिखरे खादितः किल शरभृगालेन ॥४९८॥ श्रावस्त्यां जितशत्रुतनयो निष्क्रमणं प्रतिमा तृणस्पर्शे । प्राप्ते वीर्ये विकिञ्चनं कुशश्लेषणं कर्षणं सहनम् ॥ ४९९ ॥ चम्पायां नन्दकः

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १७३५ ॥ महुराइ इंददत्तो सक्कारा पायछेयणे सड्ढो । पन्नाइ अज्जकालग सागरखमणो य दिट्ठंतो ॥ ५०१ ॥
॥ १७३६ ॥ नाणे असगडताओ खंभगनिधी अणहियासणे भद्दो । दंसणपरीसहम्मि उ आसाढभूई उ आयरिया ॥ ५०२ ॥ १७३७ ॥ चरियाए मरणम्मि उ समुइण्णपरीसहो मुणी एवं । भावेज्ज निउणजिणमयउवएससुईइ अप्पाणं ॥ ५०३ ॥ १७३८ ॥ उम्मग्गसंपयायं मणहत्थिं विसयसुमरियमणंतं । नाणंकुसेण धीरो धरेइ दित्तंपिव गइंदं ॥ ५०४ ॥ १७३९ ॥ एए उ अन्नासूरा महिड्ढिए को व भाणिउं सत्तो? । किं वातिसूवमाए जिणगणधरथेरचरिएसुं ॥ ५०५ ॥ १७४० ॥ किं चित्तं जइ नाणी सम्मद्दिट्ठी करंति उच्छाहं । तिरिएहिवि दुरणुचरो केहिवि अणुपालिओ धम्मो ॥ ५०६ ॥ १७४१ ॥ अरुणसिहं दट्ठूणं मच्छो सण्णी

साधुजुगुप्सायां जलप्रचुराङ्गे कौशाम्ब्यां जन्म निष्क्रमणं वेदनं साधुप्रतिमायाम् ॥ ५०० ॥ मथुरायामिन्द्रदत्तः असत्कारः पादपीलने श्राद्धः । प्रज्ञायामार्यकालकः सागरक्षमाश्रमणश्च दृष्टान्तः ॥ ५०१ ॥ ज्ञानेऽशकटातातः स्तम्भनिधिरनध्यासने स्थूलभद्रः । दर्शनपरीषहे तु आषाढभूतय आचार्याः ॥५०२॥ चर्यायां मरणे तु समुदीर्णपरीषहो मुनिः एवं । भावयेत् निपुणजिनमतोपदेशश्रुत्याऽऽत्मानम् ॥ ५०३ ॥ उन्मार्गसंप्रयातं मनोहस्तिनं स्मृतविषयमनन्तं । ज्ञानाङ्कुशेन धीरो धारयति दृप्तमिव गजेन्द्रम् ॥ ५०४ ॥ एतांस्तु यथाशूरान् महर्द्धिकान् को वा भणितुं शक्तः? । किं वाऽत्युपमया जिनगणधरस्थविरचरितेषु ॥ ५०५ ॥ किं चित्रं यदि ज्ञानिनः सम्यग्दृष्टयः कुर्वन्ति (धर्मे) उत्साहं? । तिर्यग्भिरपि दुरनुचरः केषिदनुपालितो धर्मः ॥ ५०६ ॥ अरुणशिखं दृष्ट्वा मत्स्यः संज्ञी महामत्स्ये [illegible]

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

महासमुद्दम्मि । हा ण गहिउत्ति काले झसत्ति संवेगमावण्णो ॥ ५०७ ॥ १७४२ ॥ अप्पाणं निंदंतो उत्त-रिऊणं महन्नवजलाओ । सावज्जजोगविरओ भत्तपरिण्णं करेसीय ॥ ५०८ ॥ १७४३ ॥ खगतुंडभिन्नदेहो दूसहसूरग्गितावियसरीरो । कालं काऊण सुरो उववन्नो एव सहणिज्जं ॥ ५०९ ॥ १७४४ ॥ सो वानरजूहवई कंतारे सुविहियाणुकंपाए । भासुरवरबुंदिधरो देवो वेमाणिओ जाओ ॥ ५१० ॥ १७४५ ॥ तं सीहसेणग-यवरचरियं सोऊण दुक्करं रण्णे । को हु णु तवे पमायं करेज्ज जाओ मणुस्सेसुं ? ॥ ५११ ॥ १७४६ ॥ भुयग-पुरोहियडक्को राया मरिऊण सल्लइवणम्मि । सुपसत्थगंधहत्थी बहुभयगयभेलणो जाओ ॥ ५१२ ॥ १७४७ ॥ सो सीहचंदमुणिवरपडिमापडिबोहिओ सुसंवेगो । पाणवहालियचोरियअब्बंभपरिग्गह नियत्तो ॥ ५१३ ॥ ॥ १७४८ ॥ रागद्दोसनियत्तो छट्ठक्खमणस्स पारणे ताहे । आससिऊणं पंडं आयवतत्तं जलं पासी ॥५१४॥

झटिति संवेगमापन्नः ॥ ५०७ ॥ आत्मानं निन्दयन् उत्तीर्य महार्णवजलात् । सावद्ययोगविरतो भक्तपरिज्ञामकार्षीत् ॥ ५०८ ॥ खग-तुण्डभिन्नदेहो दुस्सहसूर्याग्नितापितशरीरः । कालं कृत्वा सुर उत्पन्न एवं सहनीयम् ॥ ५०९ ॥ स वानरयूथपतिः कान्तारे सुविहिता-नुकम्पया । भासुरवरबोन्दिधरो देवो वैमानिको जातः ॥ ५१० ॥ तत् सिंहसेनगजवरचरितं श्रुत्वा दुष्करमरण्ये । को नु तपसि प्रमादं कुर्यात् जातो मनुष्येषु ? ॥ ५११ ॥ भुजगपुरोहितदष्टो राजा मृत्वा सल्लकीवने । सुप्रशस्तो गन्धहस्ती बहुभयगजभेषणो जातः ॥ ५१२ ॥ स सिंहचन्द्रमुनिवरप्रतिमाप्रतिबोधितः सुसंवेगः । प्राणवधालीकचौर्यात्रह्मपरिग्रहेभ्यो निवृत्तः ॥ ५१३ ॥ रागद्वेषनिवृत्तः

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १७४९ ॥ खमगत्तणनिम्मंसो धवणिसिरोजालसंतयसरीरो । विहरिय अप्पप्पाणो मुणिउवएसं विचिंतंतो ॥ ५१५ ॥ १७५० ॥ सो अन्नया णिदाहे पंकोसन्नो वणं निरुत्थारो । चिरवेरिएण दिट्ठो कुक्कुडसप्पेण घोरेणं ॥ ५१६ ॥ १७५१ ॥ जिणवयणमणुगुणिंतो ताहे सव्वं चउविहाहारं । वोसिरिऊण गइंदो भावेण जिणे नमंसीय ॥ ५१७ ॥ १७५२ ॥ तत्थ य वणयरसुरवरविम्हियकीरंतपूयसक्कारो । मज्झत्थो आसी किर कलहेसु य जज्जरिज्जंतो ॥ ५१८ ॥ १७५३ ॥ सम्मं सहिऊण तओ कालगओ सत्तमंमि कप्पम्मि । सिरितिलयम्मि विमाणे उक्कोसठिई सुरो जाओ ॥ ५१९ ॥ १७५४ ॥ सुयदिट्ठिवायकहियं एयं अक्खाणयं निसामित्ता । पंडियमरणम्मि मइं दढं निवेसिज्ज भावेणं ॥ ५२० ॥ १७५५ ॥ जिणवयणमणुस्सट्ठा दोवि भुयंगा महाविसा घोरा । कासीय कोसियासय तणूसु भत्तं मुइंगाणं ॥ ५२१ ॥ १७५६ ॥ एगो विमाणवासी जाओ वरविज्ज-

---

षष्ठक्षपणस्य पारणे तदा । आश्वास्यात्मानमातपतप्तं जलमपात् ॥ ५१४ ॥ क्षपुष्कत्वेन निर्मांसः धमनिशिराजालसंततशरीरः । व्यहार्षीदल्पप्राणो मुन्युपदेशं विचिन्तयन् ॥ ५१५ ॥ सोऽन्यदा निदाघे पङ्कावसन्नो वने निरुत्साहः । चिरवैरिकेण दृष्टः कुर्कुटसर्पेण घोरेण ॥ ५१६ ॥ जिनवचनमनुगुणयन् तदा सर्वं चतुर्विधाहारं । व्युत्सृज्य गजेन्द्रो भावेन जिनाननंसीत् ॥ ५१७ ॥ तत्र च विस्मितःयन्तरसुरवरकियमाणपूजासत्कारः । मध्यस्थ आसीत् किलकलभैश्च जर्जरीक्रियमाणः ॥ ५१८ ॥ सम्यक् सोढ्वा ततः कालगतः सप्तमे कल्पे । श्रीतिलके विमाने उत्कृष्टस्थितिः सुरो जातः ॥५१९॥ दृष्टिवादश्रुतकथितमेतदाख्यानकं निशम्य पण्डितमरणे दृढां मतिं भावेन निवेशयेत् ॥ ५२० ॥ अनुसृष्टजिनवचनौ द्वावपि भुजगौ महाविषौ घोरौ । अकाष्टौ कौशिकाश्रमे तनुभ्यां पिपीलिकानां भक्तम् ॥ ५२१ ॥ एको

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ॥५२२॥ दीप अनुक्रम [५२३]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया

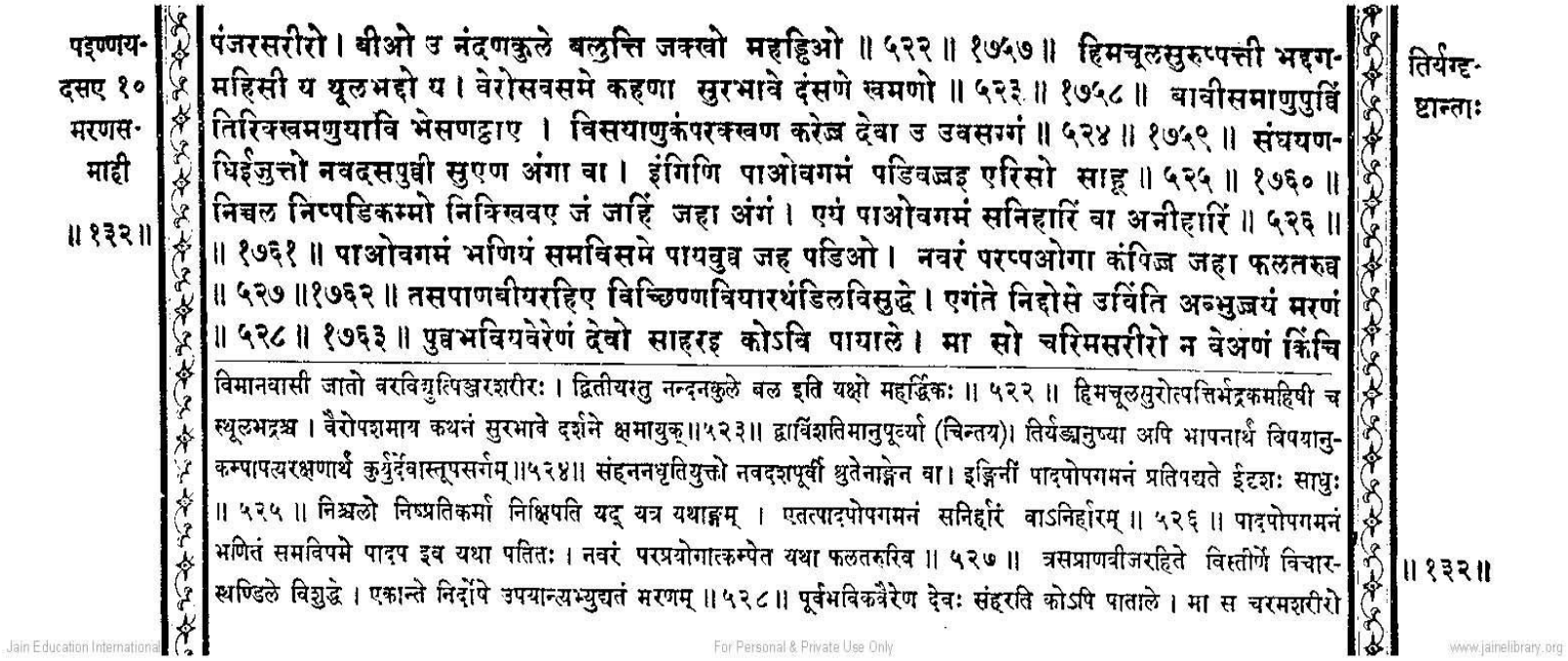

पइण्णय-दसए १० मरणस-माही ॥ १३२ ॥

पंजरसरीरो। बीओ उ नंदणकुले बलुत्ति जक्खो महड्ढिओ ॥ ५२२ ॥ १७५७ ॥ हिमचूलसुरुप्पत्ती भद्दग-महिसी य थूलभद्दो य। वेरोसवसमे कहणा सुरभावे दंसणे खमणो ॥ ५२३ ॥ १७५८ ॥ बावीसमाणुपुव्विं तिरिक्खमणुयावि भेसणट्ठाए । विसयाणुकंपरक्खण करेज्ज देवा उ उवसग्गं ॥ ५२४ ॥ १७५९ ॥ संघयण-धिईजुत्तो नवदसपुव्वी सुएण अंगा वा। इंगिणि पाओवगमं पडिवज्जइ एरिसो साहू ॥ ५२५ ॥ १७६० ॥ निच्चल निप्पडिकम्मो निक्खिवए जं जहिं जहा अंगं। एयं पाओवगमं सनिहारिं वा अनीहारिं ॥ ५२६ ॥ ॥ १७६१ ॥ पाओवगमं भणियं समविसमे पायवुव्व जह पडिओ। नवरं परप्पओगा कंपिज्ज जहा फलतरुव्व ॥ ५२७ ॥१७६२ ॥ तसपाणबीयरहिए विच्छिण्णवियारथंडिलविसुद्धे। एगंते निद्दोसे उविंति अब्भुज्जयं मरणं ॥ ५२८ ॥ १७६३ ॥ पुव्वभवियवेरेणं देवो साहरइ कोऽवि पायाले। मा सो चरिमसरीरो न वेअणं किंचि

तिर्यग्द्-ष्टान्ताः

विमानवासी जातो वरविद्युत्पिङ्गरशरीरः। द्वितीयस्तु नन्दनकुले बल इति यक्षो महर्द्धिकः ॥ ५२२ ॥ हिमचूलसुरोत्पत्तिर्भद्रकमहिषी च स्थूलभद्रश्च। वैरोपशमाय कथनं सुरभावे दर्शने क्षमायुक्॥५२३॥ द्वाविंशतिमानुपूर्व्या (चिन्तय)। तिर्यञ्चमनुष्या अपि भापनार्थं विषयानु-कम्पापत्यरक्षणार्थं कुर्युर्देवास्तूपसर्गम्॥५२४॥ संहननधृतियुक्तो नवदशपूर्वी श्रुतेनाङ्गेन वा। इङ्गिनीं पादपोपगमनं प्रतिपद्यते ईदृशः साधुः ॥ ५२५ ॥ निश्चलो निष्प्रतिकर्मा निक्षिपति यद् यत्र यथाङ्गम् । एतत्पादपोपगमनं सनिर्हारं वाऽनिर्हारम् ॥ ५२६ ॥ पादपोपगमनं भणितं समविषमे पादप इव यथा पतितः। नवरं परप्रयोगात्कम्पेत यथा फलतरुरिव ॥ ५२७ ॥ त्रसप्राणबीजरहिते विस्तीर्णे विचार-स्थण्डिले विशुद्धे। एकान्ते निर्दोषे उपयान्त्यभ्युद्यतं मरणम् ॥ ५२८॥ पूर्वभविकवैरेण देवः संहरति कोऽपि पाताले। मा स चरमशरीरो

॥ १३२॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	अथ मरणस्य भेदानि वर्णयते

प्रत सूत्रांक ॥५२९॥

दीप अनुक्रम [५३०]

पाविज्जा ॥ ५२९ ॥ १७६४ ॥ उप्पन्ने उवसग्गे दिव्वे माणुस्सए तिरिक्खे अ। सव्वे पराजिणित्ता पाओवगया पविहरंति ॥ ५३० ॥ १७६५ ॥ जह नाम असी कोसा अन्नो कोसो असीवि खलु अन्नो। इय मे अन्नो जीवो अन्नो देहुत्ति मन्निज्जा ॥ ५३१ ॥ १७६६ ॥ पुव्वावरदाहिणउत्तरेण वाएहिं आवडंतेहिं । जह नवि कंपइ मेरू तह झाणाओ नवि चलंति ॥ ५३२ ॥ १७६७ ॥ पढमम्मि य संघयणे वट्टंते सेलकुड्डसामाणे । तेसिंपिय वुच्छेओ चउदसपुव्वीण वुच्छेए ॥ ५३३ ॥ १७६८ ॥ पुढविदगअगणिमारुयतरुमाइ तसेसु कोइ साहरइ। वोसट्ठचत्तदेहो अहाउअं तं परिक्खिज्जा ॥ ५३४ ॥ १७६९ ॥ देवो नेहेण णए देवागमणं च इंदगमणं वा। जहियं इड्ढी कंता सव्वसुहा हुंति सुहभावा ॥ ५३५ ॥ १७७० ॥ उवसग्गे तिविहेवि य अणुकूले चेव तह य पडिकूले। सम्मं अहियासंतो कम्मक्खयकारओ होइ ॥ ५३६ ॥ १७७१ ॥ एयं पाओवगमं इंगिणि पडिक-

न वेदनां काञ्चित् प्राप्नुयात् ॥ ५२९ ॥ उत्पन्नानुपसर्गान् दिव्यान् मानुष्यकांश्च तैरश्चान्। सर्वान् पराजित्य पादपोपगताः प्रविहरन्ति ॥ ५३० ॥ यथा नाम असिः कोशादन्यः कोशोऽसेरपि खल्वन्यः । एवं ममान्यो जीवोऽन्यो देह इति मन्वीत ॥ ५३१ ॥ पूर्वापरदक्षिणोत्तरैर्वातैरापतद्भिर्यथा नैव कम्पते मेरुः तथा ध्यानान्नैव चलन्ति ॥ ५३२ ॥ प्रथमे च संहनने वर्त्तमाने शैलकुड्यसमाने । तथोरपि च विच्छेदश्चतुर्दशपूर्विणां विच्छेदे ॥ ५३३ ॥ पृथ्वीदकाग्निमारुततर्वादिषु त्रसेषु च कोऽपि संहरति । व्युत्सृष्टत्यक्तदेहो यथायुष्कं तत्परी(प्रती)क्षेत ॥ ५३४ ॥ देवः स्नेहेन नयेत् देवागमनं चेन्द्रागमनं वा। यत्र ऋद्धिः कान्ता सर्वसुखा भवन्ति शुभभावाः ॥ ५३५ ॥ उपसर्गास्त्रिविधानपि चानुकूलांश्चैव तथैव प्रतिकूलान् । सम्यग् अध्यासयन् कर्मक्षयकारको भवति ॥ ५३६ ॥ एतत्पादपोपगमनेङ्गिनी-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

म्म वण्णियं सुत्ते । तित्थयरगणहरेहि य साहूहि य सेवियमुयारं ॥ ५३७ ॥ १७७२ ॥ सव्वे सव्वद्धाए सव्वन्नू सव्वकम्मभूमीसु । सव्वगुरू सव्वहिया सव्वे मेरूसु अहिसित्ता ॥ ५३८ ॥ १७७३ ॥ सव्वाहिवि लद्धीहिं सव्वेऽवि परीसहे पराइत्ता । सव्वेऽविय तित्थयरा पाओवगयाउ सिद्धिगया ॥ ५३९ ॥ १७७४ ॥ अवसेसा अणगारा तीयपडुप्पन्नऽणागया सव्वे । केई पाओवगया पच्चक्खाणिंगिणिं केई ॥ ५४० ॥ १७७५ ॥ सव्वावि अ अज्जाओ सव्वेऽवि य पढमसंघयणवज्जा । सव्वे य देसविरया पच्चक्खाणेण य मरंति ॥ ५४१ ॥ १७७६ ॥ सव्वसुहप्पभवाओ जीवियसाराओ सव्वजणिगाओ । आहाराओ रयणं न विज्जए उत्तमं लोए ॥५४२॥ १७७७ ॥ विग्गहगए य सिद्धे मुत्तुं लोगम्मि जंमिया जीवा । सव्वे सव्वावत्थं आहारे हुंति आउत्ता ॥ ५४३ ॥ १७७८ ॥ तं तारिसगं रयणं सारं जं सव्वलोयरयणाणं । सव्वं परिचइत्ता पाओवगया पविहरंति ॥ ५४४ ॥ १७७९ ॥

परिकर्म वर्णितं सूत्रे । तीर्थकरगणधरैश्च साधुभिश्च सेवितमुदारम् ॥ ५३७ ॥ सर्वे सर्वोद्धायां सर्वज्ञाः सर्वकर्मभूमिषु । सर्वगुरवः सर्वहिताः सर्वे मेरुष्वभिषिक्ताः ॥ ५३८ ॥ सर्वाभिरपि लब्धिभिर्युताः सर्वानपि परीषहान् पराजित्य । सर्वेऽपि च तीर्थकराः पादपोपगता एव सिद्धिगताः ॥५३९॥ अवशेषा अनगारा अतीतप्रत्युत्पन्नागताः सर्वे । केचित्पादपोपगताः इङ्गिनीमरणेन प्रत्याख्यानेन च केचिन् ॥५४०॥ सर्वा अपि चार्याः सर्वेऽपि च प्रथमसंहननवर्जाः । सर्वे च देशविरताः प्रत्याख्यानेनैव म्रियन्ते ॥५४१॥ सर्वसुखप्रभवात् जीवितसारात्सर्व(व्यापार)जनकात् । आहारात् उत्तमं रत्नं लोके न विद्यते ॥ ५४२ ॥ विग्रहगतान् सिद्धांश्च मुक्त्वा लोके यावन्तो जीवास्ते । सर्वे सर्वावस्थासु आहारे आयुक्ता भवन्ति ॥५४३॥ तत्तादृशं रत्नं सारं यत्सर्वलोकरत्नानाम् । सर्वे परित्यज्य पादपोपगताः प्रविहरन्ति ॥५४४॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ||५४५|| दीप अनुक्रम [५४६]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया

एयं पाओवगमं निप्पडिकम्मं जिणेहिं पन्नत्तं । तं सोऊणं खमओ ववसायपरक्कमं कुणइ ॥ ५४५ ॥ १७८० ॥ धीरपुरिसपण्णत्ते सप्पुरिसनिसेविए परमरम्मे । धण्णा सिलायलगया निरावयक्खा णिवज्जंति ॥ ५४६ ॥ ॥ १७८१ ॥ सुवंति य अणगारा घोरासु भयाणियासु अडवीसुं । गिरिकुहरकंदरासु य विजणेसु य रुक्खहेट्ठेसुं ॥ ५४७ ॥ १७८२ ॥ धीधणियबद्धकच्छा भीया जरमरणजम्मणसयाणं । सेलसिलासयणत्था साहंति उ उत्तमट्ठाइं ॥ ५४८ ॥ १७८३ ॥ दीवोदहिरण्णेसु य खयरावहियासु पुणरवि यासु । कमलसिरीमहिलादिसु भत्तपरिन्ना कया धीसु ॥ ५४९ ॥ १७८४ ॥ जइ ताव सावयाकुलगिरिकंदरविसमकडगदुग्गासुं । साहिंति उत्तमट्ठं धिइधणियसहायगा धीरा ॥ ५५० ॥ १७८५ ॥ किं पुण अणगारसहायगेण अण्णुन्नसंगहबलेणं । परलोए य न सक्का साहेउं अप्पणो अट्ठं ? ॥५५१॥ १७८६ ॥ समुइन्नेसु अ सुविहिय ! उवसग्गमह-

एतत् पादपोपगमं निष्प्रतिकर्म जिनैः प्रज्ञप्तम् । तच्छ्रुत्वा क्षपको व्यवसायपराक्रमं करोति ॥ ५४५ ॥ धीरपुरुषप्रज्ञप्तान् सत्पुरुषनिषेवितान् परमरम्यान् (भावान्) । धन्याः शिलातलगता निरपेक्षाः प्रपद्यन्ते ॥५४६॥ श्रूयन्ते चानगाराः घोरासु भयानकास्वटवीषु । गिरिकुहरकन्दरासु च विजनेषु च वृक्षाणामधस्तात् ॥५४७॥ धृतिबाढबद्धकक्षा भीता जरामरणजन्मशतेभ्यः । शैलशिलाशयनस्थाः साधयन्त्येवोत्तमार्थम् ॥ ५४८ ॥ द्वीपोदधयरण्येषु च खेचरापहृताभिः पुनरपि च । [illegible]सु कमलश्रीमहिलादिभिर्भक्तपरिज्ञा कृता स्त्रीषु ॥ ५४९ ॥ यदि तावत् श्वापदाकुलगिरिकन्दरविषमकटकदुर्गासु साधयन्त्युत्तमार्थं बाढं धृतिसहायका धीराः ॥ ५५० ॥ किं पुनरनगारसहायकेनान्योन्यसंग्रहबलेन । परलोकाय च न [illegible]

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	अथ आराधना-अनुचिन्तन वर्णयते

ब्भएसु विविहेसुं । हियएण चिंतणिज्जं रयणनिही एस उवसग्गो ॥ ५५२ ॥ १७८७ ॥ किं जायं जइ मरणं अहं च एगाणिओ इहं पाणी । वसिओऽहं तिरियत्ते बहुसो एगागिओ रण्णे ॥ ५५३ ॥ १७८८ ॥ वसिऊणऽवि जणमज्झे वच्चइ एगागिओ इमो जीवो । मुत्तूण सरीरघरं मच्चुमुहाकड्ढिओ संतो ॥ ५५४ ॥ १७८९ ॥ जह बीहंति अ जीवा विविहाण विहासियाण एगागी । तह संसारगएहिं जीवेहिं विहेसिया अन्ने ॥ ५५५ ॥ १७९० ॥ सावयभयाभिभूओ बहूसु अडवीसु निरभिरामासु । सुरहिहरिणमहिससूयरक्कुरवोडियरुक्खछायासु ॥ ५५६ ॥ १७९१ ॥ गयगवयखग्गगंडयवग्घतरच्छच्छभल्लचरियासु । भल्लुंकिकंकदीवियसंचरसब्भावकिण्णासुं ॥ ५५७ ॥ १७९२ ॥ मत्तगइंदनिवाडियभिल्लपुलिंदावकुंडियवणासुं । वसिओऽहं तिरियत्ते भीसणसंसारचारम्मि ॥ ५५८ ॥ १७९३ ॥ कत्थ य मुद्धमिगत्ते बहुसो अडवीसु पयइविसमासु । वग्घ-

हृदयेन चिन्तनीयं रत्ननिधिरेष उपसर्गः ॥ ५५२ ॥ किं जातं यदि मरणं अहं चैकाकीह प्राणी । उषितोऽहं तिर्यक्त्वे बहुश एकाक्यरण्ये ॥ ५५३ ॥ उषित्वाऽपि जनमध्ये व्रजत्येकाक्ययं जीवः । मुक्त्वा शरीरगृहं मृत्युमुखाकर्षितः सन् ॥ ५५४ ॥ यथा बिभ्यति च जीवा विविधेभ्यो विभीषिकाभ्य एकाकिनः । तथा संसारगतैर्जीवैर्बिभीषिका अन्याः (सोढाः) ॥५५५॥ श्वापदभयाभिभूतो बहुष्वटवीषु निरभिरामासु । रथिक(सुरभि)हरिणमहिषशूकरखण्डितवृक्षच्छायासु ॥ ५५६ ॥ गजगवयखड्गिगण्डकव्याघ्रतरक्षाच्छभल्लचरितासु । शृगालकङ्कद्वीपिकसद्भावसंचारकीर्णासु ॥ ५५७ ॥ मत्तगजेन्द्रनिपातितभिल्लपुलिन्द्रावकुण्टितवनासु (अटवीषु) । उषितोऽहं तिर्यक्त्वे भीषणे संसारचारके ॥ ५५८ ॥ कचित् मुग्धमृगत्वे बहुशोऽटवीषु प्रकृतिविषमासु । व्याघ्रमुखापतितेन रसितमविभीतहृदयेन ॥५५९॥ कचिदति-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ||५५९||

दीप अनुक्रम [५६०]

मुहावडिएणं रसियं अइभीयहियएणं ॥ ५५९ ॥ १७९४ ॥ कत्थइ अइदुप्पिक्खो भीसणविगरालघोरवय-
णोऽहं । आसि महंविय वग्घो रुरुमहिसवराहविद्दवओ ॥ ५६० ॥ १७९५ ॥ कत्थइ दुविहिएहिं रक्खसवे-
यालभूयरूवेहिं । छलिओ वहिओ य अहं मणुस्सजम्मम्मि निस्सारो ॥ ५६१ ॥ १७९६ ॥ पयइकुडिलम्मि
कत्थइ संसारे पाविऊण भूयत्तं । बहुसो उव्वियमाणो मएवि बीहाविया सत्ता ॥ ५६२ ॥ १७९७ ॥ विरसं
आरसमाणो कत्थइ रण्णेसु घाइओ अहयं । सावयगहणम्मि वणे भयभीरू खुभियचित्तोऽहं ॥ ५६३ ॥
॥ १७९८ ॥ पत्तं विचित्तविरसं दुक्खं संसारसागरगएणं । रसियं च असरणेणं कयंतदंतंतरगएणं ॥ ५६४ ॥
॥ १७९९ ॥ तइया कीस न हायइ जीवो जइया सुसाणपरिविद्धं । भल्लुंकिकंकवायससएसु ढोकिज्जए देहं
॥ ५६५ ॥ १८०० ॥ ता तं निज्जिणिऊणं देहं मुत्तूण वच्चए जीवो । सो जीवो अविणासी भणिओ तेलुक्कदं-

---

दुष्प्रेक्ष्यो भीषणविकरालघोरवदनोऽहम् । आसं महानपि च व्याघ्रो रुरुमहिषवराहविद्रावकः ॥ ५६० ॥ क्वचिदुर्विहितै राक्षसवैतालभू-
तरूपैश्छलितो हतश्चाहं मनुष्यजन्मनि निःसारः ॥ ५६१ ॥ प्रकृतिकुटिले क्वचित्संसारे प्राप्य भूतत्वं बहुश उद्विजन् मयाऽपि भापिताः
सत्त्वाः ॥ ५६२ ॥ विरसमारसन् क्वचिदरण्येषु घातितोऽहम् । श्वापदगहने वने भयभीरुः क्षुब्धचित्तोऽहम् ॥ ५६३ ॥ प्राप्तं विचित्रवि-
रसं दुःखं संसारसागरगतेन। रसितं चाशरणेन कृतान्तदन्तान्तर्गतेन ॥५६४॥ तदा कथं न हीयते जीवो यदा (तस्य)श्मशानपरिविद्धः ।
शृगालकङ्कवायसशतेषु अढौक्यत देहः ॥ ५६५ ॥ तत्तं निर्जित्य देहं मुक्त्वा व्रजति जीवः स जीवोऽविनाशी भणितस्त्रैलोक्यदर्शिभिः

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ॥५६६॥ दीप अनुक्रम [५६७]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] "मरणसमाधि" मूलं एवं संस्कृतछाया

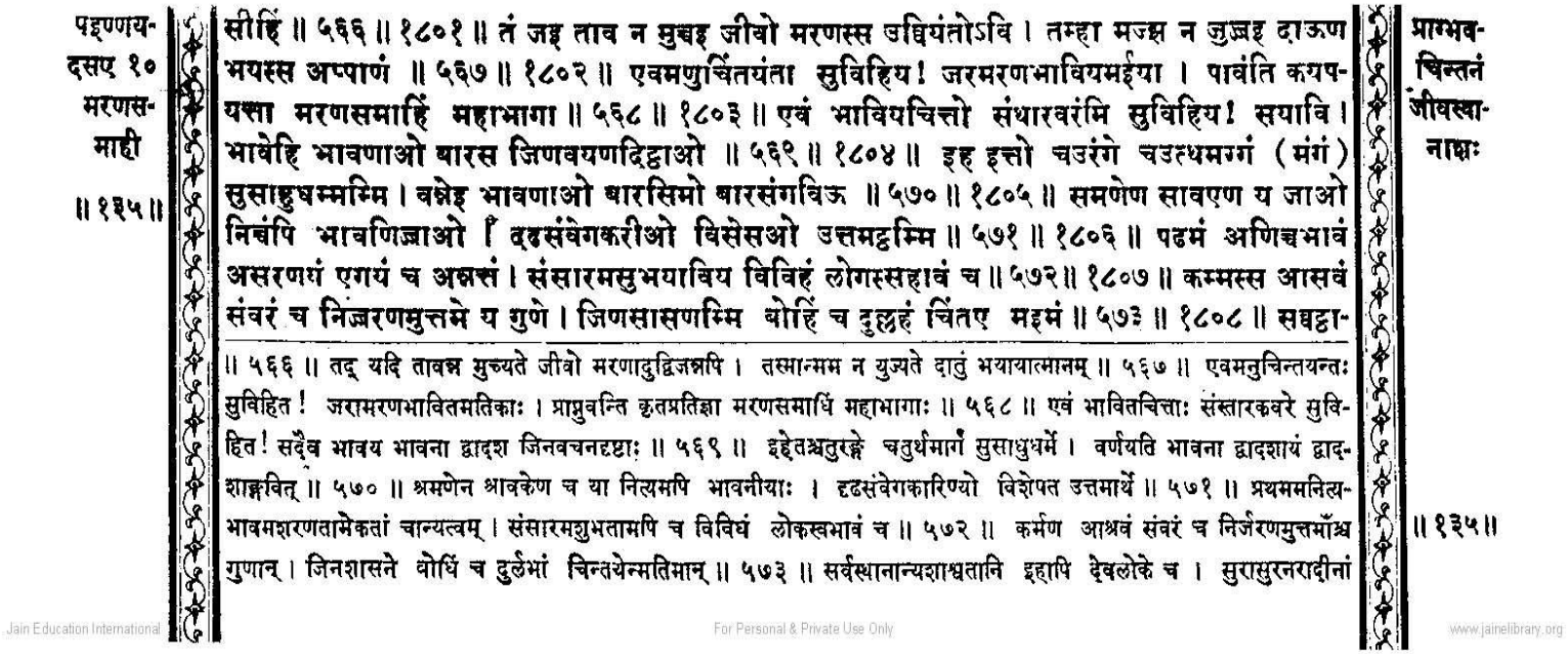

पइण्णय-दसए १० मरणस-माही ॥ १३५ ॥

सीहिं ॥ ५६६ ॥ १८०१ ॥ तं जइ ताव न मुच्चइ जीवो मरणस्स उविग्गंतोऽवि । तम्हा मज्झ न जुज्जइ दाऊण भयस्स अप्पाणं ॥ ५६७ ॥ १८०२ ॥ एवमणुचिंतयंता सुविहिय! जरमरणभावियमईया । पावंति कयप-यत्ता मरणसमाहिं महाभागा ॥ ५६८ ॥ १८०३ ॥ एवं भावियचित्तो संथारवरंमि सुविहिय! सयावि । भावेहि भावणाओ बारस जिणवयणदिट्ठाओ ॥ ५६९ ॥ १८०४ ॥ इह इत्तो चउरंगे चउत्थमग्गं (मंगं) सुसाहुधम्मम्मि । वन्नेइ भावणाओ बारसिमो बारसंगविऊ ॥ ५७० ॥ १८०५ ॥ समणेण सावएण य जाओ निच्चंपि भावणिज्जाओ । दढसंवेगकरीओ विसेसओ उत्तमट्ठम्मि ॥ ५७१ ॥ १८०६ ॥ पढमं अणिच्चभावं असरणयं एगयं च अन्नत्तं । संसारमसुभयाविय विविहं लोगस्सहावं च ॥ ५७२ ॥ १८०७ ॥ कम्मस्स आसवं संवरं च निज्जरणमुत्तमे य गुणे । जिणसासणम्मि बोहिं च दुल्लहं चिंतए मइमं ॥ ५७३ ॥ १८०८ ॥ सव्वट्ठा-

॥ ५६६ ॥ तद् यदि तावन्न मुच्यते जीवो मरणादुद्विजन्नपि । तस्मान्मम न युज्यते दातुं भयायात्मानम् ॥ ५६७ ॥ एवमनुचिन्तयन्तः सुविहित! जरामरणभावितमतिकाः । प्राप्नुवन्ति कृतप्रतिज्ञा मरणसमाधिं महाभागाः ॥ ५६८ ॥ एवं भावितचित्ताः संस्तारकवरे सुविहित! सदैव भावय भावना द्वादश जिनवचनदृष्टाः ॥ ५६९ ॥ इहेतश्चतुरङ्गे चतुर्थमार्गं सुसाधुधर्मे । वर्णयति भावना द्वादशायं द्वादशाङ्गवित् ॥ ५७० ॥ श्रमणेन श्रावकेण च या नित्यमपि भावनीयाः । दृढसंवेगकारिण्यो विशेषत उत्तमार्थे ॥ ५७१ ॥ प्रथममनित्यभावमशरणतामेकतां चान्यत्वम् । संसारमशुभतामपि च विविधं लोकस्वभावं च ॥ ५७२ ॥ कर्मण आश्रवं संवरं च निर्जरणमुत्तमाँश्च गुणान् । जिनशासने बोधिं च दुर्लभां चिन्तयेन्मतिमान् ॥ ५७३ ॥ सर्वस्थानान्यशाश्वतानि इहापि देवलोके च । सुरासुरनरादीनां

प्राग्भव-चिन्तनं जीवस्वा-नाद्यः

॥ १३५ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	अथ द्वादश-भावना: वर्णयते

णाइं असासयाइं इह चेव देवलोगे य। सुरअसुरनराईणं रिद्धिविसेसा सुहाइं वा ॥ ५७४ ॥ १८०९ ॥ माया-पिईहिं सहवड्ढिएहिं मित्तेहिं पुत्तदारेहिं। एगयओ सहवासो पीई पणओऽविअ अणिचो ॥५७५॥१८१०॥ भवणेहिं व वणेहि य सयणासणजाणवाहणाईहिं। संजोगोऽवि अणिचो तह परलोगेहिं सह तेहिं ॥ ५७६ ॥ ॥ १८११ ॥ बलवीरियरूवजोव्वणसामग्गीसुभगया वपूसोभा। देहस्स य आरुग्गं असासयं जीवियं चेव ॥५७७॥ १८१२॥ १। जम्मजरामरणभए अभिद्दुए विविहवाहिसंतत्ते। लोगम्मि नत्थि सरणं जिणिंदवरसा-सणं मुत्तुं ॥ ५७८ ॥ १८१३ ॥ आसेहि य हत्थीहि य पवयमित्तेहिं निचमित्तेहिं। सावरणपहरणेहि य बल-वयमत्तेहिं जोहेहिं ॥ ५७९ ॥ १८१४ ॥ महया भडचडगरपहकरेण अवि चक्कवट्टिणा मच्चू। न य जियपुव्वो केणइ नीइबलेणावि लोगम्मि ॥ ५८० ॥ १८१५ ॥ विविहेहि मंगलेहि य विज्जामंतोसहीपओगेहिं। नवि

ऋद्धिविशेषाः सुखानि च ॥ ५७४ ॥ मातापितृभिः सहवर्द्धितैर्मित्रैः पुत्रदारैः। एकतः सहवासः प्रीतिः प्रणयोऽपि चानित्यः ॥ ५७५ ॥ भवनैर्वा वनैश्च शयनासनयानवाहनादिभिः। संयोगोऽप्यनित्यस्तथा परलोकेऽपि सह तैः ॥ ५७६ ॥ बलवीर्यरूपयौवनसामग्रीसुभगताः वपुःशोभा। देहस्य चारोग्यमशाश्वतं जीवितं चैव ॥५७७॥ जन्मजरामरणभयैरभिद्रुते विविधव्याधिसंतप्ते लोके नास्ति शरणं जिनेन्द्रवर-शासनं मुक्त्वा ॥ ५७८ ॥ अश्वैश्च हस्तिभिश्च पर्वमित्रैर्नित्यमित्रैः। सावरणप्रहरणैश्च बलवयोमत्तैर्योधैः ॥५७९॥ महता भटवृन्दसमूहेनापि चक्रवर्त्तिना मृत्युः। न च जितपूर्वः केनापि नीतिबलेनापि लोके (मृत्युः) ॥५८०॥ विविधैर्मङ्गलैश्च विद्यामन्त्रौषधिप्रयोगैश्च नैव शक्यस्तारयितुं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सक्का तारेउं मरणा णधि रुण्णसोएहिं ॥ ५८१ ॥ १८१६ ॥ पुत्ता मित्ता य पिया सयणो बंधवजणो अ अत्थो य। न समत्था ताएउं मरणा सिंदावि देवगणा ॥ ५८२ ॥ १८१७ ॥ सयणस्स य मज्झगओ रोगाभिहओ किलिस्सइ इहेगो । सयणोऽवि य से रोगं न विरिंचइ नेव नासेइ ॥ ५८३ ॥ १८१८ ॥ २। मज्झम्मि बंधवाणं इक्को मरइ कलुणरुयंताणं । न य णं अन्नेंति तओ बंधुजणो नेव दाराइं ॥ ५८४ ॥ १८१९ ॥ इक्को करेइ कम्मं फलमवि तस्सेक्कओ समणुहवइ । इक्को जायइ मरइ य परलोअं इक्कओ जाई ॥ ५८५ ॥ १८२० ॥ पत्तेयं पत्तेयं नियगं कम्मफलमणुहवंताणं। को कस्स जए सयणो? को कस्स व परजणो भणिओ ? ॥५८६॥१८२१॥ को केण समं जायइ को केण समं च परभवं जाई। को वा करेइ किंची कस्स व को कं नियत्तेइ ? ॥५८७॥१८२२॥ अणु-

---

मरणान्नैव च रुग्णश्रोतोभ्यः (रुदितशोकैः) ॥५८१॥ पुत्राः मित्राणि च पिता स्वजनो बान्धवजनोऽर्थश्च। न समर्थास्त्रातुं मरणात्सेन्द्रा अपि देवगणाः ॥ ५८२ ॥ स्वजनस्यापि मध्यगतो रोगाभिहतः क्लिश्यते इहैकः। स्वजनोऽपि च तस्य रोगं न विभजति नैव नाशयति ॥५८३॥ बान्धवानां मध्ये एको म्रियते करुणं रुदताम् । न चैनमन्वेति सको बन्धुजनो नैव च दाराः ॥ ५८४ ॥ एकः करोति कर्म फलमपि तस्यैकः समनुभवति । एको जायते म्रियते च परलोकमेकको याति ॥ ५८५ ॥ प्रत्येकं २ निजकं कर्मफलमनुभवतां कः कस्य जगति स्वजनः ? को वा कस्य परजनो भणितः ? ॥५८६॥ कः केन समं जायते ? कः केन समं च परभवं याति ? । को वा करोति किञ्चित् ? कस्यापि च कः कं निवर्त्तयति ॥ ५८७ ॥ अनुशोचत्यन्यजनमन्यभवान्तरगतं तु बालजनः । नैव शोचन्त्यात्मानं क्लिश्यन्तं भवसमुद्रे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ||५८८||

दीप अनुक्रम [५८९]

सोअइ अण्णजणं अन्नभवंतरगयं तु बालजणो। नवि सोयइ अप्पाणं किलिस्समाणं भवसमुद्दे ॥ ५८८ ॥
॥१८२३॥ ३। अन्नं इमं सरीरं अन्नोऽहं बंधवाविमे अन्ने। एवं नाऊण खमं कुसलस्स न तं खमं काउं? ॥५८९॥
॥१८२४॥ ४। हा! जह मोहियमइणा सुग्गइमग्गं अजाणमाणेणं। भीमे भवकंतारे सुचिरं भमियं भयकरम्मि
॥ ५९० ॥ १८२५ ॥ जोणिसयसहस्सेसु य असइं जायं मयं वऽणेगासु । संजोगविप्पओगा पत्ता दुक्खाणि य बहूणि ॥ ५९१ ॥ १८२६ ॥ सग्गेसु य नरगेसु य माणुस्से तह तिरिक्खजोणीसुं । जायं मयं च बहुसो संसारे संसरंतेणं ॥ ५९२ ॥ १८२७ ॥ निब्भत्थणावमाणणवहबंधणरुंधणा धणविणासो । णेगा य रोग-सोगा पत्ता जाईसहस्सेसुं ॥ ५९३ ॥ १८२८ ॥ सो नत्थि इहोगासो लोए वालग्गकोडिमित्तोऽवि । जम्म-णमरणाबाहा अणेगसो जत्थ न य पत्ता ॥ ५९४ ॥ १८२९ ॥ सव्वाणि सव्वलोए रूवी दव्वाणि पत्तपुव्वाणि ।

॥५८८॥ अन्यदिदं शरीरं अन्योऽहं बान्धवा अपीमेऽन्ये। एवं क्षमं ज्ञात्वा कुशलस्य तत्कर्तुं क्षमं न ॥५८९॥ हा! यथा मोहितमतिना सुगतिमार्गमजानता। भीमे भवकान्तारे सुचिरं भ्रान्तं भयङ्करे ॥ ५९० ॥ योनिशतसहस्रेषु चासकृत् जातं मृतं वाऽनेकासु जातिषु। संयोगविप्रयोगाः प्राप्ता दुःखानि च बहूनि ॥ ५९१ ॥ स्वर्गेषु च नरकेषु च मानुष्ये तथा तिर्यग्योनिषु । जातं मृतं च बहुशः संसारे संसरता ॥ ५९२ ॥ निर्भर्त्सनाऽपमाननवधबन्धनरोधा धनविनाशः। अनेके च रोगशोकाः प्राप्ता जातिसहस्रेषु ॥ ५९३ ॥ स नास्ती-हावकाशो लोके वालाग्रकोटिमात्रोऽपि। जन्ममरणाबाधा अनेकशो यत्र न प्राप्ताः ॥५९४॥ सर्वाणि सर्वलोके रूपिद्रव्याणि प्राप्तपूर्वाणि।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

देहोवक्खरपरिभोगयाइ दुक्खेसु य बहूसुं ॥ ५९५ ॥ १८३० ॥ संबंधिबंधवत्ते सव्वे जीवा अणेगसो मज्झं । विविहवहबंधेरजणया दासा सामी य मे आसी ॥ ५९६ ॥ १८३१ ॥ लोगसहावो धी धी जत्थ व माया मया हवइ धूया । पुत्तोऽवि य होइ पिया पियावि पुत्तत्तणमुवेइ ॥ ५९७ ॥ १८३२ ॥ जत्थ पियपुत्तगस्सवि माया छाया भवंतरगयस्स । तुट्ठा खायइ मंसं इत्तो किं कट्ठयरमन्नं? ॥ ५९८ ॥ १८३३ ॥ धी संसारो जहियं जुवाणओ परमरूवगव्वियओ । मरिऊण जायइ किमी तत्थेव कलेवरे नियए ॥ ५९९ ॥ १८३४ ॥ बहुसो अणुभूयाइं अईयकालम्मि सव्वदुक्खाइं । पाविहिइ पुणो दुक्खं न करेहिइ जो जणो धम्मं ॥ ६०० ॥ १८३५ ॥ ५ । धम्मेण विणा जिणदेसिएण नत्थत्थ अत्थि किंचि सुहं । ठाणं वा कज्जं वा सदेवमणुयासुरे लोए ॥ ६०१ ॥ ॥ १८३६ ॥ अत्थं धम्मं कामं जाणि य कज्जाणि तिन्नि मिच्छंति । जं तत्थ धम्मकज्जं तं सुभमियराणि असु-

देहोपस्करपरिभोगतया दुःखेषु च बहुषु ॥ ५९५ ॥ सम्बन्धिबान्धवत्वे सर्वे जीवा अनेकशो मम । विविधवधबंधैरजनका दासाः स्वामिनश्च मे आसन् ॥ ५९६ ॥ लोकस्वभावं धिग् धिग् यत्र च माता मृता भवति दुहिता । पुत्रोऽपि च भवति पिता पिताऽपि पुत्रत्वमुपयाति ॥५९७॥ यत्र प्रियपुत्रस्यापि माता छायया भवान्तरगतस्य । तुष्टा खादति मांसं किमितोऽन्यत्कष्टकरम्? ॥ ५९८ ॥ धिक् संसारं यत्र युवा परमरूपगर्वितः । मृत्वा जायते कृमिस्तत्रैव कलेवरे निजके ॥ ५९९ ॥ बहुशोऽनुभूतान्यतीतकाले सर्वदुःखानि । प्राप्स्यति पुनर्दुःखं न करिष्यति यो जनो धर्मम् ॥ ६०० ॥ धर्मेण विना जिनदेशितेन नान्यत्रास्ति किञ्चित्सुखम् । स्थानं वा कार्यं वा सदेवमनुजासुरे लोके ॥ ६०१ ॥ अर्थं धर्मं कामं यानि च कार्याणि त्रीणि इच्छन्ति । यत्तत्र धर्मकार्यं तच्छुभमितरे अशुभे ॥ ६०२ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ॥६०२॥

दीप अनुक्रम [६०३]

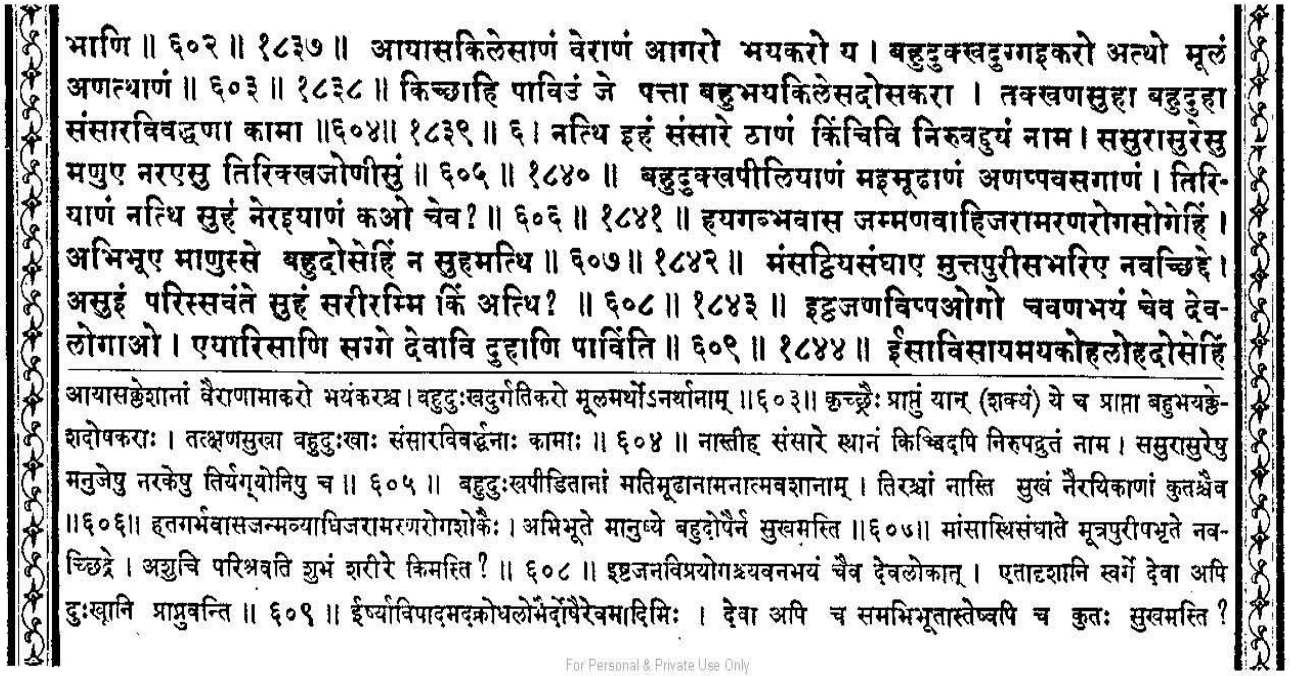

भाणि ॥ ६०२ ॥ १८३७ ॥ आयासकिलेसाणं वेराणं आगरो भयकरो य। बहुदुक्खदुग्गइकरो अत्थो मूलं अणत्थाणं ॥ ६०३ ॥ १८३८ ॥ किच्छाहि पाविउं जे पत्ता बहुभयकिलेसदोसकरा । तक्खणसुहा बहुदुहा संसारविवद्धणा कामा ॥६०४॥ १८३९ ॥ ६। नत्थि इहं संसारे ठाणं किंचिवि निरुवहुयं नाम। ससुरासुरेसु मणुए नरएसु तिरिक्खजोणीसुं ॥ ६०५ ॥ १८४० ॥ बहुदुक्खपीलियाणं महमूढाणं अणप्पवसगाणं। तिरियाणं नत्थि सुहं नेरइयाणं कओ चेव? ॥ ६०६ ॥ १८४१ ॥ हयगब्भवास जम्मणवाहिजरामरणरोगसोगेहिं। अभिभूए माणुस्से बहुदोसेहिं न सुहमत्थि ॥ ६०७॥ १८४२ ॥ मंसट्ठियसंघाए मुत्तपुरीसभरिए नवच्छिद्दे। असुइं परिस्सवंते सुहं सरीरम्मि किं अत्थि? ॥ ६०८ ॥ १८४३ ॥ इट्ठजणविप्पओगो चवणभयं चेव देवलोगाओ। एयारिसाणि सग्गे देवावि दुहाणि पाविंति ॥ ६०९ ॥ १८४४ ॥ ईसाविसायमयकोहलोहदोसेहिं

आयासक्लेशानां वैराणामाकरो भयंकरश्च। बहुदुःखदुर्गतिकरो मूलमर्थोऽनर्थानाम् ॥६०३॥ कृच्छ्रैः प्राप्तुं यान् (शक्यं) ये च प्राप्ता बहुभयक्लेशदोषकराः। तत्क्षणसुखा बहुदुःखाः संसारविवर्द्धनाः कामाः ॥ ६०४ ॥ नास्तीह संसारे स्थानं किञ्चिदपि निरुपद्रुतं नाम। ससुरासुरेषु मनुजेषु नरकेषु तिर्यग्योनिषु च ॥ ६०५ ॥ बहुदुःखपीडितानां मतिमूढानामनात्मवशानाम्। तिरश्चां नास्ति सुखं नैरयिकाणां कुतश्चैव ॥६०६॥ हतगर्भवासजन्मव्याधिजरामरणरोगशोकैः। अभिभूते मानुष्ये बहुदोषैर्न सुखमस्ति ॥६०७॥ मांसास्थिसंघाते मूत्रपुरीषभृते नवच्छिद्रे। अशुचि परिश्रवति शुभं शरीरे किमस्ति? ॥ ६०८ ॥ इष्टजनविप्रयोगश्च्यवनभयं चैव देवलोकात्। एतादृशानि स्वर्गे देवा अपि दुःखानि प्राप्नुवन्ति ॥ ६०९ ॥ ईर्ष्याविषादमदक्रोधलोभैर्दोषैरेवमादिभिः। देवा अपि च समभिभूतास्तेष्वपि च कुतः सुखमस्ति?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

एवमाईहिं । देवावि समभिसूया तेसुवि य कओ सुहं अत्थि? ॥६१०॥ १८४५॥ ७ । एरिसयदोसपुण्णे खुत्तो संसारसायरे जीवो । जं जइचिरं किलिस्सइ तं आसवहेउअं सव्वं ॥ ६११ ॥ १८४६ ॥ रागदोसपमत्तो इंदियवसओ करेइ कम्माइं । आसवदारेहिं अविगुहेहिं तिविहेण करणेणं ॥६१२॥ १८४७ ॥ धिधी मोहो जेणिह हियकामो खलु स पावमायरइ । न हु पावं हवइ हियं विसं जहा जीवियत्थिस्स ॥ ६१३॥१८४८ ॥ रागस्स य दोसस्स य धिरत्थु जं नाम सद्दहंतोऽवि । पावेसु कुणइ भावं आउरविज्जव्व अहिएसुं ॥ ६१४॥ १८४९ ॥ लोभेण अहव घत्थो कज्जं न गणेइ आयअहियंपि । अइलोहेण विणस्सइ मच्छुव्व जहा गलं गिलिओ ॥६१५॥ ॥१८५०॥ अत्थं धम्मं कामं तिण्णिवि बुद्धो जणो परिचयइ । ताइं करेइ जेहि उ (न) किलिस्सइ इहं परभवे य ॥ ६१६ ॥ १८५१ ॥ हुंति अजुत्तस्स विणासगाणि पंचेंदियाणि पुरिसस्स । उरगा इव उग्गविसा गहिया

॥ ६१० ॥ ईदृग्दोषपूर्णे मग्नः संसारसागरे जीवः । यदतिचिरं क्लिश्यति तदाश्रवहेतुकं सर्वम् ॥ ६११ ॥ रागद्वेषप्रमत्त इन्द्रियवशगः करोति कर्माणि । आश्रवद्वारैरविगूहितैस्त्रिविधेन करणेन ॥ ६१२ ॥ धिग् धिग् मोहं येनेह हितकामः खलु स पापमाचरति । नैव पापं भवति हितं विषं यथा जीवितार्थिनः ॥ ६१३ ॥ रागं च द्वेषं च धिगस्तु यन्नाम श्रद्दधानोऽपि । पापेषु करोति भावमातुरवैद्य इवाहितेषु ॥६१४॥ लोभेनाथवा ग्रस्तः कार्यं न गणयति आत्माहितमपि। अतिलोभेन विनश्यति मत्स्य इव यथा गलं गिलितः ॥६१५॥ अर्थं धर्मं कामं त्रीनपि बुधो जनः परित्यजति । तानि करोति यैस्तु (न) क्लिश्यतीह परभवे च ॥६१६॥ भवन्त्ययुक्तस्य विनाशकानि पञ्चे-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ||६१७||

दीप अनुक्रम [६१८]

मंतोसहीहि विणा ॥ ६१७ ॥ १८५२ ॥ आसवदारेहिं सया हिंसाईएहिं कम्ममासवइ । जह नावाइ विणासो छिद्देहि जलं उयहिमज्झे ॥ ६१८॥१८५३ ॥ ८ । कम्मासवदाराइं निरुंभियव्वाइं इंदियाइं च । हंतव्वा य कसाया तिविहंतिविहेण मुक्खत्थं ॥ ६१९ ॥ १८५४ ॥ निग्गहिय कसाएहिं आसवा मूलओ हया हुंति । अहियाहारे मुक्के रोगा इव आउरजणस्स ॥ ६२० ॥ १८५५ ॥ नाणेण य झाणेण य तवोबलेण य बला निरुंभंति । इंदियविसयकसाया धरिया तुरगा व रज्जूहिं ॥ ६२१ ॥ १८५६ ॥ हुंति गुणकारगाइं सुयरज्जूहिं धणियं नियमियाइं । नियगाणि इंदियाइं जइणो तुरगा इव सुदंता ॥ ६२२ ॥ १८५७ ॥ मणवयणकायजोगा जे भणिया करणसण्णिया तिण्णि । ते जुत्तस्स गुणकरा हुंति अजुत्तस्स दोसकरा ॥ ६२३ ॥ १८५८ ॥ जो सम्मं भूयाइं

न्द्रियाणि पुरुषस्य । उरगा इवोग्रविषाः मन्त्रौषधिभिर्विना गृहीताः ॥ ६१७ ॥ आश्रवद्वारैः सदा हिंसादिकैः कर्माश्रवति । यथा नावो विनाशश्छिद्रैरुदधिमध्ये जलमाश्रवन्त्याः (तथाऽऽश्रवैर्जीवस्य) ॥ ६१८ ॥ कर्माश्रवद्वाराणि निरोद्धव्यानीन्द्रियाणि च । हन्तव्याश्च कषायास्त्रिविधत्रिविधेन मोक्षार्थम् ॥ ६१९ ॥ निगृहीतेषु कषायेषु आश्रवा मूलतो हता भवन्ति । अहिताहारे मुक्ते रोगा इवातुरजनस्य ॥ ६२० ॥ ज्ञानेन च ध्यानेन च तपोबलेन च बलान्निरुध्यन्ते । इन्द्रियविषयकषाया धृतास्तुरगा इव रज्जूभिः ॥ ६२१ ॥ भवन्ति गुणकारकाणि श्रुतरज्जुभिरत्यर्थं नियमितानि । निजकानीन्द्रियाणि यतेस्तुरगा इव सुदान्ताः ॥ ६२२ ॥ मनोवचनकाययोगा ये भणिताः करणसंज्ञितास्त्रयस्ते युक्तस्य गुणकरा भवन्त्ययुक्तस्य दोषकराः ॥ ६२३ ॥ यः सम्यग् भूतान् पश्यति भूतांश्चात्मभूतान् कर्ममलेन न लिप्यते स संवृताश्रवद्वारः

च. स. २४

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

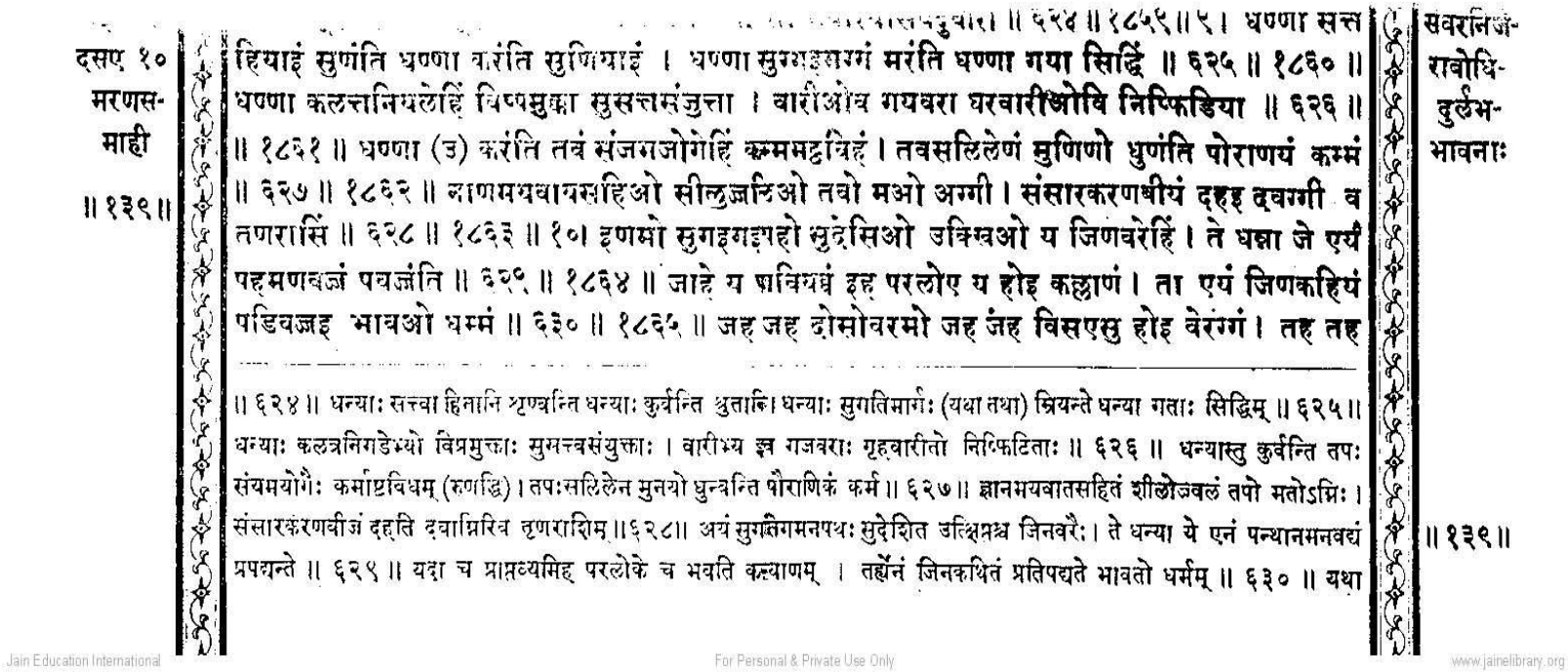

दसए १० मरणस-माही ॥ १३९ ॥

हियाइं सुणंति धण्णा करंति सुणिया इं । धण्णा सुग्गइमग्गं मरंति धण्णा गया सिद्धिं ॥ ६२५ ॥ १८६० ॥ धण्णा कलत्तनियलेहिं विप्पमुक्का सुसत्तसंजुत्ता । वारीओव्व गयवरा घरवारीओवि निप्फिडिया ॥ ६२६ ॥ ॥ १८६१ ॥ धण्णा (उ) करंति तवं संजमजोगेहिं कम्ममट्ठविहं । तवसलिलेणं मुणिणो धुणंति पोराणयं कम्मं ॥ ६२७ ॥ १८६२ ॥ नाणमयवायसहिओ सीलुज्जलिओ तवो मओ अग्गी । संसारकरणबीयं दहइ दवग्गी व तणरासिं ॥ ६२८ ॥ १८६३ ॥ १०। इणमो सुगइगइपहो सुदेसिओ उज्जिओ य जिणवरेहिं । ते धन्ना जे एयं पहमणवज्जं पवज्जंति ॥ ६२९ ॥ १८६४ ॥ जाहे य भविय्वं इह परलोए य होइ कल्लाणं । ता एयं जिणकहियं पडिवज्जइ भावओ धम्मं ॥ ६३० ॥ १८६५ ॥ जह जह दोसोवरमो जह जंह विसएसु होइ वेरग्गं । तह तह

॥ ६२४ ॥ धन्याः सत्त्वा हितानि शृण्वन्ति धन्याः कुर्वन्ति श्रुतानि। धन्याः सुगतिमार्गं (यथा तथा) म्रियन्ते धन्या गताः सिद्धिम् ॥ ६२५ ॥ धन्याः कलत्रनिगडेभ्यो विप्रमुक्ताः सुसत्त्वसंयुक्ताः । वारीभ्य इव गजवराः गृहवारीतो निष्फिटिताः ॥ ६२६ ॥ धन्यास्तु कुर्वन्ति तपः संयमयोगैः कर्माष्टविधम् (रुणद्धि) । तपःसलिलेन मुनयो धुन्वन्ति पौराणिकं कर्म ॥ ६२७ ॥ ज्ञानमयवातसहितं शीलोज्ज्वलं तपो मतोऽग्निः । संसारकरणबीजं दहति दवाग्निरिव तृणराशिम् ॥ ६२८ ॥ अयं सुगतिगमनपथः सुदेशित उज्झितश्च जिनवरैः । ते धन्या ये एनं पन्थानमनवद्यं प्रपद्यन्ते ॥ ६२९ ॥ यदा च प्राप्तव्यमिह परलोके च भवति कल्याणम् । तर्ह्येनं जिनकथितं प्रतिपद्यते भावतो धर्मम् ॥ ६३० ॥ यथा

सवरनिज-रावोधि-दुर्लभ-भावनाः ॥ १३९ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विजाणयाहि आसन्नं से पयं परमं ॥ ६३१ ॥ १८६६ ॥ ११। दुग्गो भवकंतारे भममाणेहिं सुचिरं पणट्ठेहिं । दिट्ठो जिणोवदिट्ठो सुग्गइमग्गो कहवि लद्धो ॥ ६३२ ॥ १८६७ ॥ माणुस्सदेसकुलकालजाइइंदियबलोवयाणं च । विन्नाणं सद्धा दंसणं च दुलहं सुसाहूणं ॥ ६३३॥१८६८ ॥ पत्तेसुवि एएसुं मोहस्सुदएण दुल्लहो सुपहो । कुपहबहुयत्तणेण य विसयसुहाणं च लोभेणं ॥ ६३४ ॥ १८६९ ॥ सो य पहो उवलद्धो जस्स जए बाहिरो जणो बहुओ । संपत्तिच्चिय न चिरं तम्हा न खमो पमाओ भे ॥ ६३५ ॥ १८७० ॥ जह जह दढप्पइण्णो समणो वेरग्गभावणं कुणइ । तह तह असुभं आयवहयं व सीयं खयमुवेइ ॥ ६३६ ॥ १८७१ ॥ एगअहोरत्तेणवि दढपरिणामा अणुत्तरं जंति। कंडरिओ पुंडरिओ अहरगईउड्ढगमणेसुं ॥ ६३७ ॥ १८७२ ॥ १२। बारसवि भावणाओ एवं संखेवओ समत्ताओ । भावेमाणो जीवो जाओ समुवेइ वेरग्गं ॥ ६३८ ॥ १८७३ ॥

यथा दोषोपरमो यथा यथा विषयेषु भवति वैराग्यम् । तथा २ विजानीहि आसन्नमथ पदं परमम् ॥ ६३१ ॥ भवकान्तारे भ्राम्यद्भिः सुचिरप्रणष्टैर्दृष्टो दुर्गो जिनोपदिष्टः सुगतिमार्गः कथमपि च लब्धः ॥ ६३२ ॥ मानुष्यदेशकुलकालजातीन्द्रियबलोपचयाश्च । विज्ञानं श्रद्धा सुसाधूनां दर्शनं च दुर्लभम् ॥ ६३३ ॥ प्राप्तेष्वपि एतेषु मोहस्योदयेन दुर्लभः सुपथः । कुपथबहुत्वेन च विषयसुखानां च लोभेन ॥६३४॥ स च पन्थाः उपलब्धो यस्माज्जगति बाह्यो जनो बहुकः । संप्राप्तोऽपि न चिरं तस्मान्न क्षमः प्रमादो भवताम् ॥ ६३५ ॥ यथा यथा दृढप्रतिज्ञः श्रमणो वैराग्यभावनां करोति तथा तथाऽशुभमातपहतमिव शीतं क्षयमुपयाति ॥ ६३६ ॥ एकेनाहोरात्रेणापि दृढपरिणामा अनुत्तरं यान्ति । कण्डरीकः पुण्डरीकः (च) अधमगत्यूर्ध्वगमनयोः(ज्ञाते) ॥ ६३७ ॥ द्वादशापि भावना एवं संक्षेपतः समाप्ताः ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ||६३९|| दीप अनुक्रम [६४०]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया

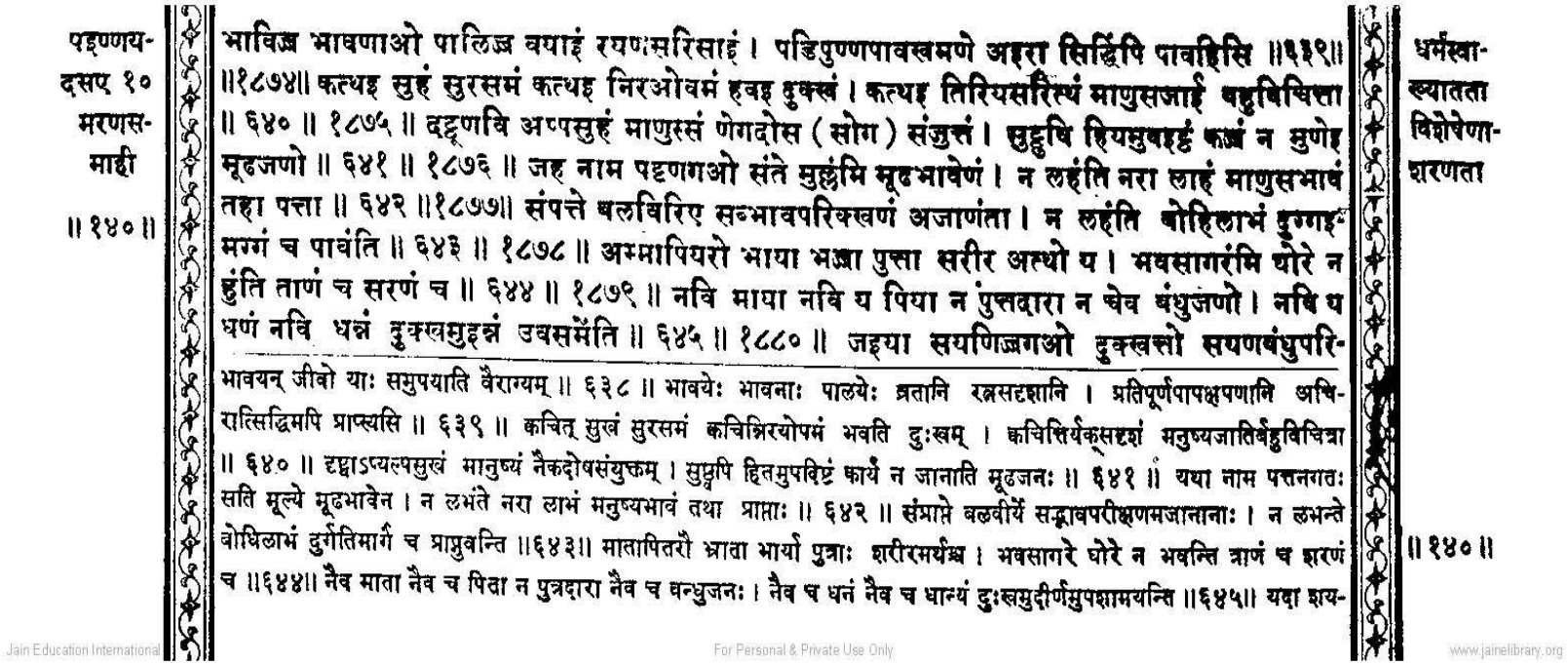

पइण्णय-दसए १० मरणस-माही ॥ १४० ॥

भाविज्ज भावणाओ पालिज्ज वयाइं रयणसरिसाइं । पडिपुण्णपावखमणे अइरा सिद्धिंपि पावहिसि ॥६३९॥ ॥१८७४॥ कत्थइ सुहं सुरसमं कत्थइ निरओवमं हवइ दुक्खं । कत्थइ तिरियसरित्थं माणुसजाई बहुविचित्ता ॥ ६४० ॥ १८७५ ॥ दट्ठूणवि अप्पसुहं माणुस्सं णेगदोस (सोग) संजुत्तं । सुट्ठुवि हियमुवइट्ठं कज्जं न मुणेइ मूढजणो ॥ ६४१ ॥ १८७६ ॥ जह नाम पट्टणगओ संते मुल्लंमि मूढभावेणं । न लहंति नरा लाहं माणुसभावं तहा पत्ता ॥ ६४२ ॥१८७७॥ संपत्ते बलविरिए सब्भावपरिक्खणं अजाणंता । न लहंति बोहिलाभं दुग्गइ-मग्गं च पावंति ॥ ६४३ ॥ १८७८ ॥ अम्मापियरो भाया भज्जा पुत्ता सरीर अत्थो य । भवसागरंमि घोरे न हुंति ताणं च सरणं च ॥ ६४४ ॥ १८७९ ॥ नवि माया नवि य पिया न पुत्तदारा न चेव बंधुजणो । नवि य धणं नवि धन्नं दुक्खमुहन्नं उवसमेंति ॥ ६४५ ॥ १८८० ॥ जइया सयणिज्जगओ दुक्खत्तो सयणबंधुपरि-

भावयन् जीवो याः समुपयाति वैराग्यम् ॥ ६३८ ॥ भावयेः भावनाः पालयेः व्रतानि रत्नसदृशानि । प्रतिपूर्णपापक्षपणानि अचिरात्सिद्धिमपि प्राप्स्यसि ॥ ६३९ ॥ कचित् सुखं सुरसमं कचिन्निरयोपमं भवति दुःखम् । कचित्तिर्यक्सदृशं मनुष्यजातिर्बहुविचित्रा ॥ ६४० ॥ दृष्ट्वाऽप्यल्पसुखं मानुष्यं नैकदोषसंयुक्तम् । सुष्ठ्वपि हितमुपदिष्टं कार्यं न जानाति मूढजनः ॥ ६४१ ॥ यथा नाम पत्तनगतः सति मूल्ये मूढभावेन । न लभंते नरा लाभं मनुष्यभावं तथा प्राप्ताः ॥ ६४२ ॥ संप्राप्ते बलवीर्ये सद्भावपरीक्षणमजानानाः । न लभन्ते बोधिलाभं दुर्गतिमार्गं च प्राप्नुवन्ति ॥६४३॥ मातापितरौ भ्राता भार्या पुत्राः शरीरमर्थश्च । भवसागरे घोरे न भवन्ति त्राणं च शरणं च ॥६४४॥ नैव माता नैव च पिता न पुत्रदारा नैव च बन्धुजनः । नैव च धनं नैव च धान्यं दुःखमुदीर्णमुपशामयन्ति ॥६४५॥ यदा शय-

धर्मस्वाख्याततातिविशेषेणाशरणता

॥ १४० ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ ‘पंडितमरण’ दर्शयित्वा पश्चात् उपसंहार: क्रियते

प्रत सूत्रांक ||६४६|| दीप अनुक्रम [६४७]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया

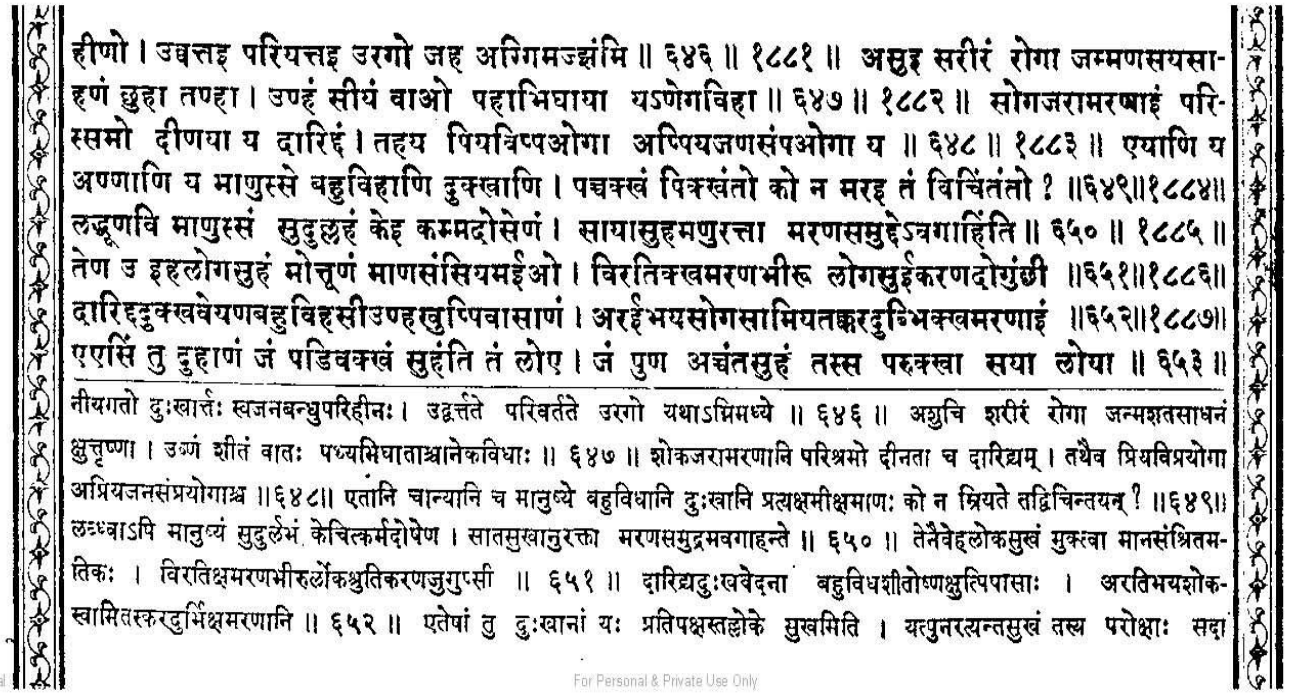

हीणो । उव्वत्तइ परियत्तइ उरगो जह अग्गिमज्झंमि ॥ ६४६ ॥ १८८१ ॥ असुइ सरीरं रोगा जम्मणसयसाहणं छुहा तण्हा । उण्हं सीयं वाओ पहाभिघाया यऽणेगविहा ॥ ६४७ ॥ १८८२ ॥ सोगजरामरणाइं परिस्समो दीणया य दारिद्दं । तहय पियविप्पओगा अप्पियजणसंपओगा य ॥ ६४८ ॥ १८८३ ॥ एयाणि य अण्णाणि य माणुस्से बहुविहाणि दुक्खाणि । पच्चक्खं पिक्खंतो को न मरइ तं विचिंतंतो ? ॥६४९॥१८८४॥ लद्धूणवि माणुस्सं सुदुल्लहं केइ कम्मदोसेणं । सायासुहमणुरत्ता मरणसमुद्देऽवगाहिंति ॥ ६५० ॥ १८८५ ॥ तेण उ इहलोगसुहं मोत्तूणं माणसंसियमईओ । विरतिक्खमरणभीरू लोगसुईकरणदोगुंछी ॥६५१॥१८८६॥ दारिद्दुक्खवेयणबहुविहसीउण्हखुप्पिवासाणं । अरईभयसोगसामियतक्करदुब्भिक्खमरणाइं ॥६५२॥१८८७॥ एएसिं तु दुहाणं जं पडिवक्खं सुहंति तं लोए । जं पुण अचंतसुहं तस्स परक्खा सया लोया ॥ ६५३ ॥

नीयगतो दुःखार्त्तः स्वजनबन्धुपरिहीनः । उद्वर्त्तते परिवर्तते उरगो यथाऽग्निमध्ये ॥ ६४६ ॥ अशुचि शरीरं रोगा जन्मशतसाधनं क्षुत्तृष्णा । उष्णं शीतं वातः पथ्यभिघाताश्चानेकविधाः ॥ ६४७ ॥ शोकजरामरणानि परिश्रमो दीनता च दारिद्र्यम् । तथैव प्रियविप्रयोगा अप्रियजनसंप्रयोगाश्च ॥६४८॥ एतानि चान्यानि च मानुष्ये बहुविधानि दुःखानि प्रत्यक्षमीक्षमाणः को न म्रियते तद्विचिन्तयन् ? ॥६४९॥ लब्ध्वाऽपि मानुष्यं सुदुर्लभं केचित्कर्मदोषेण । सातसुखानुरक्ता मरणसमुद्रमवगाहन्ते ॥ ६५० ॥ तेनैवेहलोकसुखं मुक्त्वा मानसंश्रितमतिकः । विरतिक्षमरणभीरुर्लोकश्रुतिकरणजुगुप्सी ॥ ६५१ ॥ दारिद्र्यदुःखवेदना बहुविधशीतोष्णक्षुत्पिपासाः । अरतिभयशोकस्वामितस्करदुर्भिक्षमरणानि ॥ ६५२ ॥ एतेषां तु दुःखानां यः प्रतिपक्षस्तल्लोके सुखमिति । यत्पुनरत्यन्तसुखं तस्य परोक्षाः सदा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १८८८ ॥ जस्स न छुहा ण तण्हा नय सीउण्हं न दुक्खमुक्किट्ठं । न य असुइय सरीरं तस्सऽसणाईसु किं कज्जं ? ॥ ६५४ ॥ १८८९ ॥ जह निंबदुमुप्पन्नो कीडो कडुयंपि मन्नए महुरं । तह मुक्खसुहपरुक्खा संसारदुहं सुहं बिंति ॥ ६५५ ॥ १८९० ॥ जे कडुयदुमुप्पन्ना कीडा वरकप्पपायवपरुक्खा । तेसिं विसालवल्ली विसं व सग्गो य मुक्खो य ॥ ६५६ ॥ १८९१ ॥ तह परतित्थियकीडा विसयविसंकुरविमूढदिट्ठीया । जिणसासणकप्पतरुवरपारुक्खरसा किलिस्संति ॥ ६५७ ॥ १८९२ ॥ तम्हा सुक्खमहातरुसासयसिवफलयसुक्खसत्तेणं । मोत्तूण लोगसण्णं पंडियमरणेण मरियव्वं ॥ ६५८ ॥ १८९३ ॥ जिणमयभाविअचित्तो लोगसुईमलविरेयणं काउं । धम्मंमि तओ झाणे सुक्के य मइं निवेसेह ॥ ६५९ ॥ १८९४ ॥ सुणह-जह जिणवयणामय (रस)-

---

लोकाः ॥ ६५३ ॥ यस्य न क्षुत् न तृड् न च शीतोष्णं न दुःखमुत्कृष्टं । न चाशुचिकं शरीरं तस्याशनादिभिः किं कार्यम् ? ॥ ६५४ ॥ यथा निम्बद्रुमोत्पन्नः कीटः कटुकमपि मन्यते मधुरम् । तथा परोक्षमोक्षसुखाः संसारदुःखं सुखं ब्रुवते ॥ ६५५ ॥ ये कटुकद्रुमोत्पन्नाः कीटाः परोक्षवरकल्पपादपाः । तेषां विशाल(सुख)वल्ली विषवत्स्वर्गश्च मोक्षश्च ॥ ६५६ ॥ तथा परतीर्थिककीटा विषयविषाङ्कुरविमूढदृष्टिकाः । परोक्षजिनशासनकल्पतरुवररसाः क्लिश्यन्ति ॥६५७॥ तस्मात्सौख्यमहातरुशाश्वतशिवफलकसौख्यसक्तेन(जीवेन) । मुक्त्वा लोकसञ्ज्ञां पण्डितमरणेन मर्त्तव्यम् ॥ ६५८ ॥ जिनमतभावितचित्तो लोकश्रुतिमलविरेचनं कृत्वा । धर्म्ये ततो ध्याने शुक्ले च मतिं निवेशयेत् ॥ ६५९ ॥ शृणुत-यथा जिनवचनामृतरसभावितहृदयेन ध्यानव्यापारः । करणीयः श्रमणेन यद् ध्यानं ये(ते)षु ध्यातव्यम् ॥ ६६० ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक ||६६०|| दीप अनुक्रम [६६१]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[३३],प्रकीर्णकसूत्र-[१०] “मरणसमाधि” मूलं एवं संस्कृतछाया

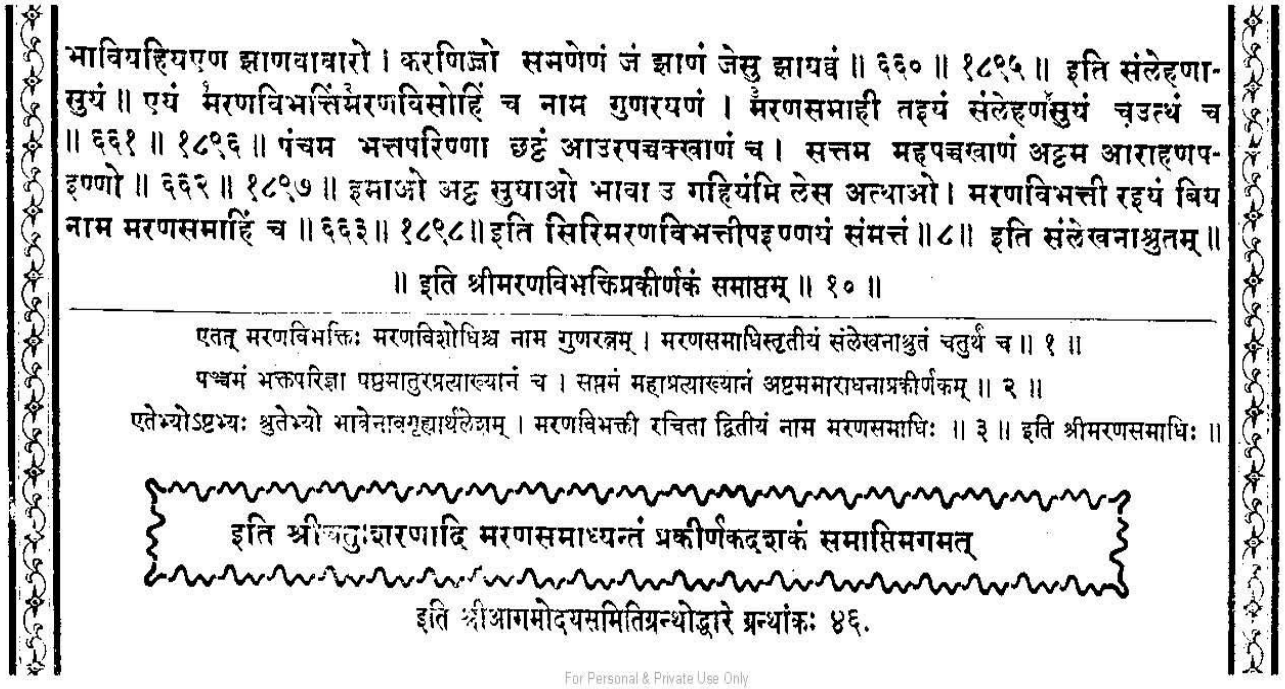

भावियहियएण झाणवावारो। करणिज्जो समणेणं जं झाणं जेसु झायव्वं ॥ ६६० ॥ १८९५ ॥ इति संलेहणा-सुयं ॥ एयं मरणविभत्तिंमरणविसोहिं च नाम गुणरयणं। मरणसमाहीं तइयं संलेहणासुयं चउत्थं च ॥ ६६१ ॥ १८९६ ॥ पंचम भत्तपरिण्णा छट्ठं आउरपच्चक्खाणं च। सत्तम महपच्चखाणं अट्ठम आराहणप-इण्णो ॥ ६६२ ॥ १८९७ ॥ इमाओ अट्ठ सुयाओ भावा उ गहियंमि लेस अत्थाओ। मरणविभत्ती रइयं बिय नाम मरणसमाहिं च ॥ ६६३ ॥ १८९८ ॥ इति सिरिमरणविभत्तीपइण्णयं संमत्तं ॥ ८ ॥ इति संलेखनाश्रुतम् ॥

॥ इति श्रीमरणविभक्तिप्रकीर्णकं समाप्तम् ॥ १० ॥

एतत् मरणविभक्तिः मरणविशोधिश्च नाम गुणरत्नम्। मरणसमाधिस्तृतीयं संलेखनाश्रुतं चतुर्थं च ॥ १ ॥
पञ्चमं भक्तपरिज्ञा षष्ठमातुरप्रत्याख्यानं च। सप्तमं महाप्रत्याख्यानं अष्टममाराधनाप्रकीर्णकम् ॥ २ ॥
एतेभ्योऽष्टभ्यः श्रुतेभ्यो भावेनावगृह्यार्थलेशम्। मरणविभक्ती रचिता द्वितीयं नाम मरणसमाधिः ॥ ३ ॥ इति श्रीमरणसमाधिः ॥

इति श्रीचतुःशरणादि मरणसमाध्यन्तं प्रकीर्णकदशकं समाप्तिमगमत्

इति श्रीआगमोदयसमितिग्रन्थोद्धारे ग्रन्थांकः ४६.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भाग 27	मरणसमाधि-प्रकीर्णकसूत्र [१०] मूलं एवं संस्कृतछाया: परिसमाप्ता:

मूल संशोधकः सम्पादकश्च पूज्य आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

किंचित् वैशिष्ट्य समर्पितेन सह पुन: संकलनकर्ता मुनि दीपरत्नसागरजी [M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

[३४] श्री निशीथ (छेदसूत्रम्-१)

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

“निशीथ” मूलं

[मूलं एव]

[आद्य संपादकश्री]

पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म॰ सा॰

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D.,श्रुतमहर्षि)

28/07/2017, शुक्रवार, २०७३ श्रावण शुक्ल ५ ‘सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि’ श्रेणि भाग-२७

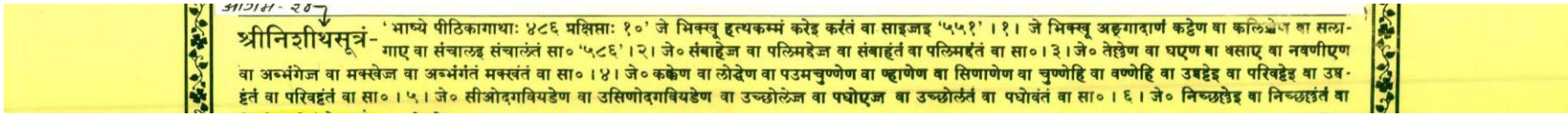

श्रीनिशीथसूत्रं- 'भाष्ये पीठिकागाथाः ४८६ प्रक्षिप्ताः १०' जे भिक्खू हत्थकम्मं करेइ करंतं वा साइज्जइ '५५१'। १। जे भिक्खू अङ्गादाणं कट्ठेण वा कलिञ्चेण वा सला-
गाए वा संचालेइ संचालेंतं सा० '५८६'। २। जे० संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा संबाहंतं वा पलिमद्दंतं वा सा०। ३। जे० तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा नवणीएण
वा अब्भंगेज्ज वा मक्खेज्ज वा अब्भंगंतं मक्खंतं वा सा०। ४। जे० कक्केण वा लोद्धेण वा पउमचुण्णेण वा पहाणेण वा सिणाणेण वा चुण्णेहि वा वण्णेहि वा उव्वट्टेइ वा परिवट्टेइ वा उव्व-
ट्टंतं वा परिवट्टंतं वा सा०। ५। जे० सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलंतं वा पधोवंतं वा सा०। ६। जे० निच्छल्लेइ वा निच्छल्लंतं वा

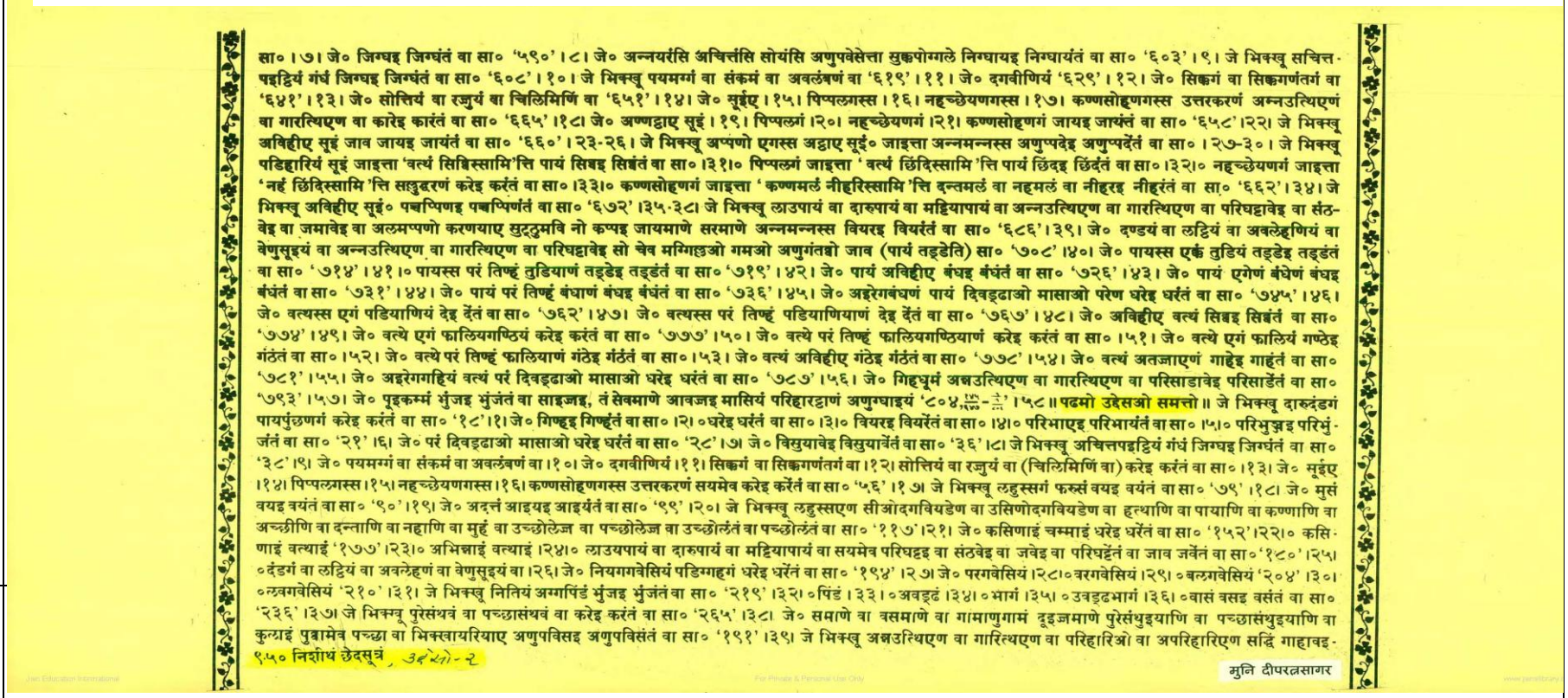

सा०। ७। जे० जिग्घइ जिग्घंतं वा सा० '५९०'। ८। जे० अन्नयरंसि अचित्तंसि सोयंसि अणुपवेसेत्ता सुक्कपोग्गले निग्घायइ निग्घायंतं वा सा० '६०३'। ९। जे भिक्खू सचित्त-
पइट्ठियं गंधं जिग्घइ जिग्घंतं वा सा० '६०८'। १०। जे भिक्खू पयमग्गं वा संकमं वा अवलंबणं वा '६१९'। ११। जे० दगवीणियं '६२९'। १२। जे० सिक्कगं वा सिक्कगणंतगं वा
'६४१'। १३। जे० सोत्तियं वा रज्जुयं वा चिलिमिणिं वा '६५१'। १४। जे० सूईए। १५। पिप्पलगस्स। १६। नहच्छेयणगस्स। १७। कण्णसोहणगस्स उत्तरकरणं अन्नउत्थिएणं
वा गारत्थिएण वा कारेइ कारंतं वा सा० '६६५'। १८। जे० अण्णट्ठाए सूइं। १९। पिप्पलगं। २०। नहच्छेयणगं। २१। कण्णसोहणगं जायइ जायंतं वा सा० '६५८'। २२। जे भिक्खू
अविहीए सूइं जाव जायइ जायंतं वा सा० '६६०'। २३-२६। जे भिक्खू अप्पणो एगस्स अट्ठाए सूइं० जाइत्ता अन्नमन्नस्स अणुप्पदेइ अणुप्पदेंतं वा सा०। २७-३०। जे भिक्खू
पडिहारियं सूइं जाइत्ता 'वत्थं सिविस्सामि'त्ति पायं सिवइ सिवंतं वा सा०। ३१। पिप्पलगं जाइत्ता 'वत्थं छिंदिस्सामि'त्ति पायं छिंदइ छिंदंतं वा सा०। ३२। नहच्छेयणगं जाइत्ता
'नहं छिंदिस्सामि'त्ति सदुद्धरणं करेइ करंतं वा सा०। ३३। कण्णसोहणगं जाइत्ता 'कण्णमलं नीहरिस्सामि'त्ति दन्तमलं वा नहमलं वा नीहरइ नीहरंतं वा सा० '६६२'। ३४। जे
भिक्खू अविहीए सूइं० पच्चप्पिणइ पच्चप्पिणंतं वा सा० '६७२'। ३५-३८। जे भिक्खू लाउपायं वा दारुपायं वा मट्टियापायं वा अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिघट्टावेइ वा संठ-
वेइ वा जमावेइ वा अलमप्पणो करणयाए सुट्ठुमवि नो कप्पइ जायमाणे सरमाणे अन्नमन्नस्स वियरइ वियरंतं वा सा० '६८६'। ३९। जे० दण्डयं वा लट्ठियं वा अवलेहणियं वा
वेणुसूइयं वा अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिघट्टावेइ सो चेव मग्गिल्लओ गमओ अणुगंतव्वो जाव (पायं तइडेति) सा० '७०८'। ४०। जे० पायस्स एक्कं तुडियं तड्डेइ तड्डंतं
वा सा० '७१४'। ४१। पायस्स परं तिण्हं तुडियाणं तड्डेइ तड्डंतं वा सा० '७१९'। ४२। जे० पायं अविहीए बंधइ बंधंतं वा सा० '७२६'। ४३। जे० पायं एगेणं बंधेणं बंधइ
बंधंतं वा सा० '७३१'। ४४। जे० पायं परं तिण्हं बंधाणं बंधइ बंधंतं वा सा० '७३६'। ४५। जे० अइरेगबंधणं पायं दिवड्ढाओ मासाओ परेण धरेइ धरंतं वा सा० '७४५'। ४६।
जे० वत्थस्स एगं पडियाणियं देइ देंतं वा सा० '७६२'। ४७। जे० वत्थस्स परं तिण्हं पडियाणियाणं देइ देंतं वा सा० '७६७'। ४८। जे० अविहीए वत्थं सिवइ सिवंतं वा सा०
'७७४'। ४९। जे० वत्थे एगं फालियगण्ठियं करेइ करंतं वा सा० '७७७'। ५०। जे० वत्थे परं तिण्हं फालियगण्ठियाणं करेइ करंतं वा सा०। ५१। जे० वत्थे एगं फालियं गण्ठेइ
गंठंतं वा सा०। ५२। जे० वत्थे परं तिण्हं फालियाणं गंठेइ गंठंतं वा सा०। ५३। जे० वत्थं अविहीए गंठेइ गंठंतं वा सा० '७७८'। ५४। जे० वत्थं अतज्जाएणं गाहेइ गाहंतं वा सा०
'७८१'। ५५। जे० अइरेगगहियं वत्थं परं दिवड्ढाओ मासाओ धरेइ धरंतं वा सा० '७८७'। ५६। जे० गिहधूमं अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिसाडावेइ परिसाडेंतं वा सा०
'७९३'। ५७। जे० पूइकम्मं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ, तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '८०४,[illegible]-[illegible]'। ५८॥ पढमो उद्देसओ समत्तो॥ जे भिक्खू दारुदंडगं
पायपुंछणगं करेइ करंतं वा सा० '१८'। १। जे० गिण्हइ गिण्हंतं वा सा०। २। ०घरेइ धरंतं वा सा०। ३। ० वियरइ वियरंतं वा सा०। ४। ० परिभाएइ परिभायंतं वा सा०। ५। ० परिभुञ्जइ परिभुं-
जंतं वा सा० '२१'। ६। जे० परं दिवड्ढाओ मासाओ धरेइ धरंतं वा सा० '२८'। ७। जे० विसुयावेइ विसुयावेंतं वा सा० '३६'। ८। जे भिक्खू अचित्तपइट्ठियं गंधं जिग्घइ जिग्घंतं वा सा०
'३८'। ९। जे० पयमग्गं वा संकमं वा अवलंबणं वा। १०। जे० दगवीणियं। ११। सिक्कगं वा सिक्कगणंतगं वा। १२। सोत्तियं वा रज्जुयं वा (चिलिमिणिं वा) करेइ करंतं वा सा०। १३। जे० सूईए
। १४। पिप्पलगस्स। १५। नहच्छेयणगस्स। १६। कण्णसोहणगस्स उत्तरकरणं सयमेव करेइ करेंतं वा सा० '५६'। १७। जे भिक्खू लहुस्सगं फरुसं वयइ वयंतं वा सा० '७९'। १८। जे० मुसं
वयइ वयंतं वा सा० '९०'। १९। जे० अदत्तं आइयइ आइयंतं वा सा० '९९'। २०। जे भिक्खू लहुस्सएण सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा हत्थाणि वा पायाणि वा कण्णाणि वा
अच्छीणि वा दन्ताणि वा नहाणि वा मुहं वा उच्छोलेज्ज वा पच्छोलेज्ज वा उच्छोलंतं वा पच्छोलंतं वा सा० '११७'। २१। जे० कसिणाइं चम्माइं धरेइ धरेंतं वा सा० '१५२'। २२। कसि-
णाइं वत्थाइं '१७७'। २३। ० अभिन्नाइं वत्थाइं। २४। ० लाउयपायं वा दारुपायं वा मट्टियापायं वा सयमेव परिघट्टइ वा संठवेइ वा जवेइ वा परिघट्टेंतं वा जाव जवेंतं वा सा० '१८०'। २५।
० दंडगं वा लट्ठियं वा अवलेहणं वा वेणुसूइयं वा। २६। जे० नियगगवेसियं पडिग्गहगं धरेइ धरेंतं वा सा० '१९४'। २७। जे० परगवेसियं। २८। ०वरगवेसियं। २९। ० बलगवेसियं '२०४'। ३०।
० लवगवेसियं '२१०'। ३१। जे भिक्खू नितियं अग्गपिंडं भुंजइ भुंजंतं वा सा० '२१९'। ३२। ०पिंडं। ३३। ०अवड्ढं। ३४। ० भागं। ३५। ० उवड्ढभागं। ३६। ० वासं वसइ वसंतं वा सा०
'२३६'। ३७। जे भिक्खू पुरेसंथवं वा पच्छासंथवं वा करेइ करंतं वा सा० '२६५'। ३८। जे० समाणे वा वसमाणे वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे पुरेसंथुइयाणि वा पच्छासंथुइयाणि वा
कुलाइं पुव्वामेव पच्छा वा भिक्खायरियाए अणुपविसइ अणुपविसंतं वा सा० '१९१'। ३९। जे भिक्खू अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिहारिओ वा अपरिहारिएण सद्धिं गाहावइ-

९५० निशीथ छेदसूत्र, ३४५१-२

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्र उद्देशक: १ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [४०] दीप अनुक्रम [९८]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३४], छेदसूत्र - [१] “निशीथ” मूलं

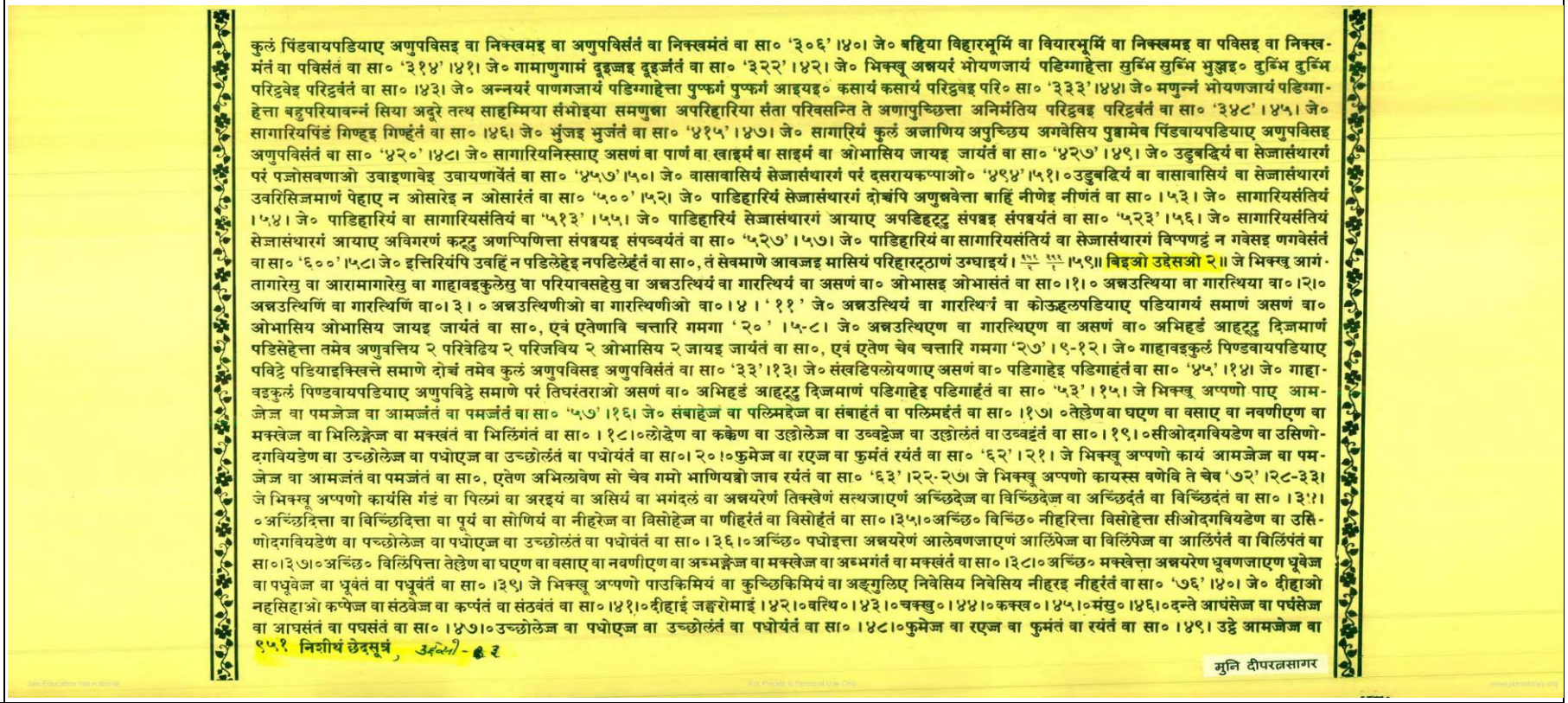

कुलं पिंडवायपडियाए अणुपविसइ वा निक्खमइ वा अणुपविसंतं वा निक्खमंतं वा सा० ‘३०६’।४०। जे० बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खमइ वा पविसइ वा निक्खमंतं वा पविसंतं वा सा० ‘३१४’।४१। जे० गामाणुगामं दूइज्जइ दूइज्जंतं वा सा० ‘३२२’।४२। जे० भिक्खू अन्नयरं भोयणजायं पडिग्गाहेत्ता सुब्भिं सुब्भिं भुञ्जइ० दुब्भिं दुब्भिं परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा सा० ।४३। जे० अन्नयरं पाणगजायं पडिग्गाहेत्ता पुप्फगं पुप्फगं आइयइ० कसायं कसायं परिट्ठवइ परि० सा० ‘३३३’।४४। जे० मणुन्नं भोयणजायं पडिग्गाहेत्ता बहुपरियावन्नं सिया अदूरे तत्थ साहम्मिया संभोइया समणुन्ना अपरिहारिया संता परिवसन्ति ते अणापुच्छित्ता अनिमंतिय परिट्ठवइ परिट्ठवंतं वा सा० ‘३४८’।४५। जे० सागारियपिंडं गिण्हइ गिण्हंतं वा सा० ।४६। जे० भुंजइ भुजंतं वा सा० ‘४१५’।४७। जे० सागारियं कुलं अजाणिय अपुच्छिय अगवेसिय पुव्वामेव पिंडवायपडियाए अणुपविसइ अणुपविसंतं वा सा० ‘४२०’।४८। जे० सागारियनिस्साए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा ओभासिय जायइ जायंतं वा सा० ‘४२७’।४९। जे० उडुबद्धियं वा सेज्जासंथारगं परं पज्जोसवणाओ उवाइणावेइ उवायणावेंतं वा सा० ‘४५७’।५०। जे० वासावासियं सेज्जासंथारगं परं दसरायकप्पाओ० ‘४९४’।५१।०उडुबद्धियं वा वासावासियं वा सेज्जासंथारगं उवरिसिज्जमाणं पेहाए न ओसारेइ न ओसारेंतं वा सा० ‘५००’।५२। जे० पाडिहारियं सेज्जासंथारगं दोच्चंपि अणुन्नवेत्ता बाहिं नीणेइ नीणंतं वा सा० ।५३। जे० सागारियसंतियं ।५४। जे० पाडिहारियं वा सागारियसंतियं वा ‘५१३’।५५। जे० पाडिहारियं सेज्जासंथारगं आयाए अपडिहट्टु संपव्वइ संपव्वयंतं वा सा० ‘५२७’।५६। जे० सागारियसंतियं सेज्जासंथारगं आयाए अविगरणं कट्टु अणप्पिणित्ता संपव्वयइ संपव्वयंतं वा सा० ‘५२७’।५७। जे० पाडिहारियं वा सागारियसंतियं वा सेज्जासंथारगं विप्पणट्ठं न गवेसइ गवेसंतं वा सा० ‘६००’।५८। जे० इत्तिरियंपि उवहिं न पडिलेहेइ नपडिलेहंतं वा सा०, तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं। ॥ ॥।५९॥ विइओ उद्देसओ २॥ जे भिक्खू आगंतागारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावइकुलेसु वा परियावसहेसु वा अन्नउत्थियं वा गारत्थियं वा असणं वा० ओभासइ ओभासंतं वा सा०।१।० अन्नउत्थिया वा गारत्थिया वा०।२।० अन्नउत्थिणिं वा गारत्थिणिं वा०। ३। ० अन्नउत्थिणीओ वा गारत्थिणीओ वा०।४। ‘ ११ ’ जे० अन्नउत्थियं वा गारत्थियं वा कोऊहलपडियाए पडियागयं समाणं असणं वा० ओभासिय ओभासिय जायइ जायंतं वा सा०, एवं एतेणावि चत्तारि गमगा ‘ २० ’ ।५-८। जे० अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा असणं वा० अभिहडं आहट्टु दिज्जमाणं पडिसेहेत्ता तमेव अणुवत्तिय २ परिवेढिय २ परिजविय २ ओभासिय २ जायइ जायंतं वा सा०, एवं एतेण चेव चत्तारि गमगा ‘२७’।९-१२। जे० गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए पविट्ठे पडियाइक्खित्ते समाणे दोच्चं तमेव कुलं अणुपविसइ अणुपविसंतं वा सा० ‘३३’।१३। जे० संखडिपलोयणाए असणं वा० पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा सा० ‘४५’।१४। जे० गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुपविट्ठे समाणे परं तिघरंतराओ असणं वा० अभिहडं आहट्टु दिज्जमाणं पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा सा० ‘५३’।१५। जे भिक्खू अप्पणो पाए आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सा० ‘५७’।१६। जे० संबाहेज्जं वा पलिमद्देज्ज वा संबाहंतं वा पलिमद्दंतं वा सा० ।१७। ०तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा नवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिङ्गेज्ज वा मक्खंतं वा भिलिंगंतं वा सा० । १८।०लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा उल्लोलंतं वा उव्वट्टंतं वा सा०। १९।०सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलंतं वा पधोयंतं वा सा०। २०।०फुमेज्ज वा रएज्ज वा फुमंतं रयंतं वा सा० ‘६२’।२१। जे भिक्खू अप्पणो कायं आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सा०, एतेण अभिलावेण सो चेव गमो भाणियव्वो जाव रयंतं वा सा० ‘६३’।२२-२७। जे भिक्खू अप्पणो कायस्स वणेवि ते चेव ‘७२’।२८-३३। जे भिक्खू अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदेज्ज वा विच्छिंदेज्ज वा अच्छिंदंतं वा विच्छिंदंतं वा सा० ।३५। ०अच्छिंदित्ता वा विच्छिंदित्ता वा पूयं वा सोणियं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा णीहरंतं वा विसोहंतं वा सा०।३५।०अच्छिं० विच्छिं० नीहरित्ता विसोहेत्ता सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा पच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलंतं वा पधोवंतं वा सा०। ३६।०अच्छिं० पधोइत्ता अन्नयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा सा०।३७।०अच्छिं० विलिंपित्ता तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा नवणीएण वा अब्भङ्गेज्ज वा मक्खेज्ज वा अब्भगंतं वा मक्खंतं वा सा०।३८।०अच्छिं० मक्खेत्ता अन्नयरेण धूवणजाएण धूवेज्ज वा पधूवेज्ज वा धूवंतं वा पधूवंतं वा सा० ।३९। जे भिक्खू अप्पणो पाउकिमियं वा कुच्छिकिमियं वा अङ्गुलिए निवेसिय निवेसिय नीहरइ नीहरंतं वा सा० ‘७६’।४०। जे० दीहाओ नहसिहाओ कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा कप्पंतं वा संठवंतं वा सा०।४१।०दीहाइं जङ्घरोमाइं।४२।०वत्थि०।४३।०चक्खु०।४४।०कक्ख०।४५।०मंसु०।४६।०दन्ते आघंसेज्ज वा पघंसेज्ज वा आघसंतं वा पघसंतं वा सा०।४७।०उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलंतं वा पधोयंतं वा सा०।४८।०फुमेज्ज वा रएज्ज वा फुमंतं वा रयंतं वा सा०।४९। उद्वे आमज्जेज्ज वा

९५१ निशीथं छेदसूत्रं, उद्देशो - ॥ २

मुनि दीपरत्नसागर

	अत्र उद्देशक: ३ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [५५]

दीप अनुक्रम [१७२]

पमज्जेज्ज वा, एवं ओट्ठे पायगमो भाणियव्वो जाव फुमेज्ज वा रएज्ज वा।५०-५५। जे० दीहाइं उत्तरोट्ठरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा कप्पंतं वा संठवंतं वा सा०।५६। ०अच्छिपत्ताइं ।५७। ०अच्छीणि आमज्जेज्ज वा एवं अच्छीसु पायगमो भाणियव्वो जाव रएज्ज वा।५८-६३। ०दीहाइं भुमगरोमाइं।६४। ०पासरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा कप्पंतं वा संठवंतं वा सा० ।६५। ०अच्छिमलं वा कण्णमलं वा दन्तमलं वा नहमलं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा णीहरंतं वा विसोहंतं वा सा० । ६६ । ०कायाओ सेयं वा जल्लं वा पङ्कं वा मलं वा० ।६७। जे भिक्खू गामाणुगामं दुइज्जमाणे अप्पणो सीसदुवारियं करेइ करंतं वा सा०।६८। जे० सणकप्पासओ वा उण्णक० वा पोण्डक० वा अमिलक० वा वसीकरणसोत्तियं करेइ करंतं वा सा०।६९। जे० गिहंसि वा गिहमुहंसि वा गिहदुवारियंसि वा गिहपडिदुवारंसि वा गिहेलुयंसि वा गिहंगणंसि वा गिहवच्चंसि वा उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा सा०।७०।०मडगगिहंसि वा मडगच्छारियंसि वा मडगथूभियंसि वा मडगआसयंसि वा मडगलेणंसि वा मडगथण्डिलंसि वा मडगवच्चंसि वा०।७१। ०इङ्गालदाहंसि वा खारदाहंसि वा गायदाहंसि वा तुसदाहंसि वा ऊसदाहंसि वा०।७२।०आययणंसि वा पंकंसि वा पणगंसि वा० ।७३। नवियासु वा गोरहणियासु नवियासु वा मट्टियाखाणीसु परिभुज्जमाणियासु वा अपरिभुज्जमाणियासु वा० ।७४। ०उंबरवच्चंसि वा नग्गोहवच्चंसि वा आसत्थ० वा पिलंखु० वा डाग० वा०।७५। ०इक्खुवणंसि वा सालिवणंसि वा कुसुंभवणंसि वा कप्पासवणंसि०।७६। ०डागवच्चंसि वा साग० वा मूलय० वा कोत्थुंबरि० वा खार० वा जीरिय० वा दमणग० वा मरुग० वा०।७७।०असोगवणंसि वा सत्तिवण्णवणंसि वा चंपगवणंसि वा चूयवणंसि वा अन्नयरेसु वा तहप्पगारेसु पत्तोवएसु पुप्फोवएसु फलोवएसु छाओवएसु० '१०६'।७८। ०सपायंसि वा परपायंसि वा दिया वा राओ वा वियाले वा उब्वाहिज्जमाणे सपायं गहाय परपायं वा जाइत्ता उच्चारपासवणं परिट्ठवेत्ता अणुग्गए सूरिये एडेइ एडंतं वा सा० '११७' तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं।७९॥ तइओ उद्देसओ ३॥ जे भिक्खू रायं अत्तीकरेइ अत्तीकरंतं वा सा०, ०अचीकरेइ अचीकरंतं वा सा०, ०अत्थीकरेइ अत्थीकरंतं वा सा० '२८'।१-३। एवं रायारक्खियं।४-६। नगरारक्खियं।७-९। निगमारक्खियं।१०-१२। देसारक्खियं।१३-१५। सव्वारक्खियं '२८'।१६-१८। ०कसिणाओ ओसहीओ आहारेइ आहारंतं वा सा० '३७'।१९। ०आयरियउवज्झाएहिं अविइन्नं विगइं आहारेइ आहारंतं वा सा० '६२'।२०।०ठवणकुलाइं अजाणिय अपुच्छिय अगवेसिय पुव्वामेव पिण्डवायपडियाए अणुपविसइ अणुपविसंतं वा सा० '१०९'।२१।०निग्गन्थीणं उवस्सयंसि अविहीए अणुपविसइ अणुपविसंतं वा सा० '२२२'।२२।०निग्गन्थीणं आगमणपहंसि दण्डगं वा लट्ठियं वा रयहरणं वा मुहपोत्तियं वा अन्नयरं वा उवगरणजायं ठवेइ ठवंतं वा सा० '२३३'।२३।०नवाइं अणुप्पन्नाइं अहिगरणाइं उप्पाएइ उप्पायंतं वा सा० '२५३'।२४। ०पोराणाइं अहिगरणाइं खामियविउसमियाइं पुणो उदीरेइ उदीरंतं वा सा० '२५८'।२५। ०मुहविप्फालियं हसइ हसंतं वा सा० '२६३'।२६। ०पासत्थस्स संघाडयं देइ पडिच्छइ देन्तं वा पडिच्छंतं वा सा० ।२७-२८। एवं ओसन्नस्स ।२९-३०। कुसीलस्स ।३१-३२। नितियस्स ।३३-३४। संसत्तस्स '२८३'।३५-३६।० उदउल्लेण वा ससिणिद्धेण वा हत्थेण वा दव्वीए वा भायणेण वा असणं वा० पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा सा० ।३७। एवं एक्कवीसं हत्था भाणियव्वा (दशवै० ५ अ० ३२-३३-३४-३५) ससरक्खेण वा मट्टियासंसट्ठेण वा ऊसासं० वा लोणियसं० वा हरियालसं० वा मणोसिलासं० वा वण्णियसं० वा गेरुयसं० वा सेडियसं० वा सोरट्ठियसं० वा हिङ्गुलगसं० वा अञ्जणसं० वा लोद्धसं० वा कुक्कुससं० वा पिट्ठसं० वा कंतवसं० वा कंदमूलसं० वा सिङ्गबेरसं० वा पुप्फगसं० वा उक्कुट्ठसं० वा हत्थेण वा० '२८९'।३८। ०गामारक्खियं अत्तीकरेइ अचीकरेइ अत्थीकरेइ करंतं वा सा० एवं सो चेव रायगमो णेयव्वो ।३९-४१।० देसारक्खियं० ।४२-४४।० सीमारक्खियं० ।४५-४७।० रण्णारक्खियं०।४८-५०।० सव्वारक्खियं० '२९०'।५१-५३।० अन्नमन्नस्स पाए एवं तइयउद्देसगमेण णेयव्वं जाव गामाणुगामं दुइज्जमाणो अन्नमन्नस्स सीसदुवारियं करेइ करंतं वा सा० '२९१'।५४-१०६।० साणुप्पाए उच्चारपासवणभूमिं न पडिलेहेइ नपडिलेहंतं वा सा० '२९५'।१०७।० तओ उच्चारपासवणभूमीओ न पडिलेहेइ नपडिलेहंतं वा सा० '२९९'।१०८।० खुड्डागंसि थण्डिलंसि उच्चारपासवणं परिट्ठवइ परिट्ठवंतं वा सा० '३०४'।१०९।० उच्चारपासवणं अविहीए परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा सा० '३०७'।११०।० उच्चारपासवणं परिट्ठवेत्ता न पुञ्छइ नपुञ्छंतं वा सा० ।१११।० कट्ठेण वा कलिञ्चेण वा अङ्गुलियाए वा सलागाए वा पुञ्छइ पुञ्छंतं वा सा० ।११२।० नायमइ नायमंतं वा सा० ।११३।० तत्थेव आयमइ आयमंतं वा सा० ।११४।० अतिदूरे आयमइ आयमंतं वा सा० ।११५। जे भिक्खू परं तिण्हं नावापूराणं आयमइ आयमंतं वा सा० '३१७'।११६।० अपरिहारिए णं परिहारियं बुया-एहि अज्जो! तुमं च अहं च एगओ असणं वा० पडिग्गाहेत्ता तओ पच्छा पत्तेयं पत्तेयं भोक्खामो वा पाहामो वा, जो तमेवं वयइ वयंतं वा सा०, तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं '३२९'।११७॥ चउत्थो उद्देसओ ४॥ जे भिक्खू सचित्तरुक्खमूलंसि ठिच्चा आलोएज्ज वा पलोएज्ज वा आलोयंतं वा पलोयंतं वा सा०।१। जे० सचित्तरुक्खमूले ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ चेयंतं वा सा०।२।० सचित्तरुक्खमूलंसि ठिच्चा असणं वा० आहारेइ आहारंतं वा सा०।३।० उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा सा० '२९'।४।० (२३८)

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्र उद्देशक: ५ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [५] दीप अनुक्रम [३१८]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३४], छेदसूत्र - [१] "निशीथ" मूलं

सज्झायं करेइ करेंतं वा सा० ।५। ०उद्दिसइ उद्दिस्संतं वा सा० ।६। ०समुद्दिसइ समुद्दिसंतं वा सा० ।७। ०अणुजाणइ अणुजाणंतं वा सा० ।८। ०वाएइ वायंतं वा सा० ।९। ०पडिच्छइ पडिच्छंतं वा सा० ।१०। ०परियट्टेइ परियट्टंतं वा सा० '३६' ।११। जे भिक्खू अप्पणो संघाडिं अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा सिव्वावेइ सिव्वावंतं वा सा० '४५' ।१२। अप्पणो संघाडीए दीहसुत्ताइं करेइ करंतं वा सा० '५०' ।१३। ०पिउमंदपलासयं वा पडोलप० वा बिल्लप० वा सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा संफाणिय संफाणिय आहारेइ आहारेंतं वा सा० '५९' ।१४। ० पडिहारियं पायपुञ्छणयं जाइत्ता तामेव रयणिए पच्चप्पिणिस्सामित्ति सुए पच्चप्पिणइ पच्चप्पिणंतं वा सा० ।१५। ० पडिहारियं पायपुञ्छणयं जाइत्ता सुए पच्चप्पिणइस्सामित्ति तमेव रयणिं पच्चप्पिणइ पच्चप्पिणंतं वा सा० ।१६। एवं सागारियसंतिएवि जे पायपुञ्छणयं जाइत्ता दो आलावग्गा ।१७-१८। ०पाडिहारियं दण्डयं वा लट्ठियं वा अवलेहणिजं वा वेलुसुइं वा एवं एतेहिं दोहिं चेव पाडिहारियं सागारियं गमएहिं णेयव्वा ।१९-२२। ० पाडिहारियं सेज्जासंथारगं पच्चप्पिणित्ता दोच्चंपि अणणुन्नविय अहिट्ठेइ अहिट्ठेंतं वा सा० '८१' ।२३। एवं सागारियसंतिएवि ।२४। जे० पाडिहारियं वा सागारियसंतियं वा सेज्जासंथारयं अप्पच्चप्पिणित्ता अणुण्णविय अहिट्ठेइ अहिट्ठेंतं वा सा० ।२५। ०सणकप्पासाओ वा पोण्डक० वा उण्णक० वा अमिलक० वा दीहसुत्ताइं करेइ करंतं वा सा० '११२' ।२६। ०सचित्ताइं करेइ धरेइ परिभुंजइ करंतं० वा सा० ।२७-२९। एवं चित्ताइं ।३०-३२। विचित्ताणि दारुदण्डाणि वा वेलुदण्डाणि वा वेत्तदं० वा करेइ करंतं वा सा० एवं धरेइ धरंतं वा सा० परिभुंजइ परिभुजंतं वा सा० '१२०' ।३३-३५। जे० नवगनिवेसंसि गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा अणुपविसित्ता असणं वा० पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा सा० ।३६। ० नवगनिवेसंसि अयागरंसि वा तंबागरंसि वा तउआ० वा सीसआ० हिरण्णआ० वा सुवण्णआ० वा रयण० वा वइरआ० वा अणुप्पविसित्ता० '१२९' ।३७। जे० मुहवीणियं करेइ करंतं वा सा० ।३८। दन्तवी० ।३९। एवं उट्ठवी० ।४०। नासावी० ।४१। कक्खवी० ।४२। हत्थवी० ।४३। नहवी० ।४४। पत्तवी० ।४५। पुप्फवी० ।४६। फलवी० ।४७। बीयवी० ।४८। हरियवी० ।४९। मुहवीणियं जाव हरियवी० वाएइ वायंतं वा सा० अण्णतराणि वा तहापगाराइं अणुदिन्नाइं सद्दाइं उदीरेइ उदीरंतं वा सा० '१३२' ।५०-६१। ० उद्देसियं सेज्जं अणुपविसइ अणुपविसंतं वा सा० ।६२। ०सपाहुडियं ।६३। ०सपरिकम्मं ।६४। जे० 'नत्थि संभोगवत्तिया किरिय' त्ति वयइ वयंतं वा सा० '२७५' ।६५। ० वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुञ्छणं वा अलं थिरं धुवं धरणिज्जं पलिच्छिंदिय पलिच्छिंदिय परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा सा० ।६६। ० लाउयपायं वा दारुपायं वा मट्टियापा० वा० ।६७। ० दण्डगं वा जाव पिप्पलसूइगं वा पलिभजिय परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा सा० '२८१' ।६८। ० अहरेगपमाणं रयहरणसीसाइं धरेइ धरंतं वा सा० ।६९। ०सुहुमाइं रयहरणसीसाइं करेइ करंतं वा सा० ।७०। ० रयहरणस्स एकं बंधं देइ देंतं वा सा० ।७१। ०रयहरणस्स परं तिण्हं बंधाणं देइ देंतं वा सा० ।७२। जे० रयहरणं अविहीए बंधइ बंधंतं वा सा० ।७३। ० कण्डुसगबंधेण बंधइ बंधंतं वा सा० ।७४। ० वोसट्ठं धरेइ धरंतं वा सा० ।७५। ० अनिसट्ठं धरेइ धरंतं वा सा० ।७६। ०अभिक्खणं अभिक्खणं अहिट्ठेइ अहिट्ठंतं वा सा० ।७७। ० उस्सीसमूले ठवइ ठवंतं वा सा० ।७८। ०तुट्टेइ तुट्टंतं वा सा०, तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं '३११' ।७९॥ पञ्चमो उद्देसो ५॥ जे भिक्खू माउग्गामं मेहुणवडियाए विन्नवेइ वा विण्णवंतं वा सा० '५१' ।१। जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए हत्थकम्मं करेइ करंतं वा सा० ।२। ० अंगादाणं कट्ठेण वा कलिंचेण वा अंगुलियाए वा संचालेइ संचालंतं वा सा०, एवं माउग्गामऽभिलावेण पढमुद्देसाइगमो णेयव्वो जाव सोयसुयं, जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अन्नयरंसि अचित्तंसि सोयंसि अणुप्पविसित्ता सुक्कपोग्गले निग्घाएइ निग्घायंतं वा सा० ।३-१०। जे० माउग्गामं मेहुणवडियाए सयं कुज्जा सयं वूया करंतं वा० सा० ।११। जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए कलहं कुज्जा कलहं वूया कलहवडियाए गच्छइ गच्छंतं वा सा० ।१२। ० लेहं लिहइ लेहं लिहावेइ लेहवडियाए गच्छइ गच्छंतं वा सा० '६९' ।१३। ० पिट्टंतं वा सोयंतं वा पोसंतं वा भच्छायएण उप्पाएइ उप्पायंतं वा सा० ।१४। ० पिट्टंतं वा सोयंतं वा पोसंतं वा भच्छायएण उप्पाएत्ता सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा० ।१५। ० पिट्टंतं वा सोयंतं वा पोसंतं वा भच्छायएण उप्पाएत्ता तेल्लेण वा एवं जहा तइए उद्देसए गंडादीण जो गमो सो चेव इहंपि णेयव्वो जाव अण्णयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा सा० ।१६। एवं जाव धूवेज्ज वा पधूवेज्ज वा ।१७-१८। ० कसिणाइं वत्थाइं धरेइ धरंतं वा सा० ।१९। एवं अहयाइं। २०। ० धोवमलिणाइं ।२१। ० चित्ताइं ।२२। ० विचित्ताइं ।२३। ० अप्पणो पाए आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सा० एवं तइयउद्देसे जो गमओ सो चेव इह मेहुणवडियाए णेयव्वो जाव जे माउग्गामस्स मेहुणवडियाए गामाणुगामं दूइज्जमाणे अप्पणो सीसदुवारियं करेइ करंतं वा सा० ।२४-३६। ०खीरं वा दहिं वा नवणीयं वा गुलं वा खण्डं वा सक्करं वा मच्छण्डियं वा अन्नयरं वा पणीयं आहारं आहारेइ आहारंतं वा साइज्जइ '८८' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ।३७॥ छट्ठो उद्देसओ ६॥

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अत्र उद्देशक: ६ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [१] दीप अनुक्रम [४७०]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३४], छेदसूत्र - [१] "निशीथ" मूलं

जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए तणमालियं वा मुञ्ज० वा भेण्ड० वा मयण० वा पिंछ० वा दन्त० वा सिंग० वा संख० वा हड्ड० वा कट्ठ० वा पत्त० वा पुप्फ० वा फल० वा बीय० वा हरियमालियं वा करेइ करंतं वा सा० धरेइ धरंतं वा सा० पिणिंधइ पिणिंधंतं वा सा०।१-३।० अयलोहाणि वा तंब० वा तउय० वा सीसग० वा रूप्पग० वा सुवण्णलोहाणि वा करेइ करंतं वा सा० धरेइ धरंतं वा सा० परिभुञ्जइ परिभुञ्जंतं वा सा०।४-६।० हाराणि वा अद्धहाराणि वा एगावलिं वा मुत्तावलिं वा कणगावलिं वा रयणावलिं वा कडगाणि वा तुडियाणि वा केऊराणि वा कुंडलाणि वा पट्टाणि वा मउडाणि वा पलंबसुत्ताणि सुवण्णसुत्ताणि वा करेइ करंतं वा सा० धरेइ धरंतं वा सा० परिभुञ्जइ परिभुञ्जंतं वा सा०।७-९।० आईणाणि वा आईणपावराणि वा कंबलाणि वा कंबलपा० कोयरा(वा)णि वा कोयर(व)पा० वा कालमियाणि वा नीलमि० सामाणि वा महासामाणि वा उद्दाणि वा उद्दलेस्साणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवङ्गाणि वा सहिणाणि वा सहिणकल्लाणाणि वा खोमाणि वा दुगुल्लाणि वा पट्टणाणि वा आवरन्ताणि वा चीणाणि वा अंसुयाणि वा कणगकन्ताणि वा कणगखंसि(खइ)याणि वा कणगचित्ताणि वा कणगविचित्ताणि वा आभरणविचित्ताणि वा करेइ जाव परिभुंजइ परिभुंजंतं वा सा०।१०-१२। जे० माउग्गामं मेहुणवडियाए अक्खंसि वा ऊरुंसि वा उयरंसि वा थणंसि वा गहाय संचालइ संचालंतं वा सा०।१३। जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अन्नमन्नस्स पाए आमज्जेज वा पमज्जेज वा आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सा०, एवं ततियउद्देसगमओ णेयव्वो जाव जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए गामाणुगामं दुइज्जमाणे अन्नमन्नस्स सीसदुवारियं करेइ करंतं वा सा०।१४-६६। जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अणंतरहियाए एवं ससिणिद्धाए ससरक्खाए मट्टियाकडाए चित्तमन्ताए पुढवीए निसीयावेज वा तुयट्टावेज वा णिसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा सा०।६७-७१।० चित्तमन्ताए सिलाए लेलुए०।७२-७३।० कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए सअण्डे सपाणे सबीए सहरिए सओस्से सउदए सउत्तिङ्गपणगदगमट्टियमक्कडगसंताणगंसि०।७४।० आगन्तारेसु वा जाव परियावसहेसु वा०।७५।० आगन्तागारेसु वा जाव परियावसहेसु वा निसीयावेत्ता वा तुयट्टावेत्ता वा असणं वा० अणुघासेज वा अणुपाएज वा अणुघासंतं वा अणुपायंतं वा सा०।७६।० अंकंसि वा पलियंकंसि वा णिसीयावेत्ता वा तुयट्टावेत्ता वा जाव साइजइ।७७। जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंकंसि वा पलियंकंसि वा णिसीयावेत्ता वा तुयट्टावेत्ता वा असणं वा० अणुघासेज वा अणुपाएज वा अणुघासंतं वा अणुपायंतं वा सा०।७८। जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णयरं तेइच्छं आउट्टेइ आउट्टेंतं वा सा०।७९।० अमणुन्नाइं पोग्गलाइं नीहरइ नीहरंतं वा सा०।८०।० मणुन्नाइं पोग्गलाइं उवहरइ उवहरंतं वा सा०।८१। जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अन्नयरं पसुजाइं वा पक्खिजाइं वा पायंसि वा पक्खंसि वा पुच्छंसि वा सीसंसि वा गहाय संचालेइ संचालंतं वा सा०।८२।० सोयंसि कट्ठं वा किलिंचं वा अंगुलीयं वा सलागं वा अणुप्पवेसेत्ता संचालेइ संचालंतं वा सा०।८३।० 'अयं थी 'तिकट्टु आलिङ्गेज्ज वा परिस्सएज वा परिचुंबेज वा आलिंगंतं वा परिस्सयंतं वा परिचुंबंतं वा सा०।८४। जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए असणं वा० देइ देन्तं वा सा०।८५-८६। एवं वत्थंपि दोहिं गमएहिं।८७-८८। सज्झायंपि दोहिं।८९-९०।० अन्नयरेणं इंदिएणं आगारं करेइ करंतं वा सा० '५३' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं।९१॥ सत्तमो उद्देसओ ७॥ जे भिक्खू आगन्तारेसु वा जाव परियावसहेसु वा एगो एगित्थीए सद्धिं जाव कहेंतं वा साइजइ '८४'।१।० उज्जाणंसि वा उज्जाणगिहंसि वा उज्जाणसालंसि वा निज्जाणंसि वा निज्जाणगिहंसि वा निज्जाणसालंसि वा०।२।० अट्टंसि वा अट्टालयंसि वा पागारंसि वा चरियंसि वा दारंसि वा गोपुरंसि वा एगो०।३।० दगंसि वा दगमग्गंसि वा दगपहंसि वा दगतीरंसि वा दगठाणंसि वा एगो०।४।० सुन्नगिहंसि वा सुन्नसालंसि वा भिन्नगिहंसि वा भिन्नसालंसि वा कूडागारंसि वा कोट्ठागारंसि वा एगो०।५।० तणगिहंसि वा तणसालंसि वा तुसगिहंसि वा तुससालंसि वा बुसगिहंसि वा बुससालंसि वा एगो०।६।० जाणसालंसि वा जालगिहंसि वा जुग्गसालंसि वा जुग्गगिहंसि वा एगो०।७।० पणियसालंसि वा पणियगिहंसि वा परियायगिहंसि वा परियायसालंसि वा कुवियगिहंसि वा कुवियसालंसि वा एगो०।८।० गोणसालंसि वा गोणगिहंसि वा महाकुलंसि वा महागिहंसि वा एगो एगित्थीए सद्धिं विहारं वा करेइ सज्झायं वा करेइ असणं वा० आहारेइ उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ अन्नयरं वा अणारियं निट्ठुरं अस्समणपाओग्गं कहं कहेइ कहंतं वा सा० '८७'।९।० राओ वा वियाले वा इत्थीमज्झगए इत्थीसंसत्ते इत्थीपरिवुडे अपरिमाणाए कहं कहेइ कहंतं वा सा०।१०।० सगणिच्चियाए वा परगणिच्चियाए वा निग्गन्थीए सद्धिं गामाणुगामं दुइज्जमाणे पुरओ गच्छमाणे पिट्ठओ रीयमाणे ओहयमणसंकप्पे चिंतासोयसागरसंपविट्ठे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए विहारं करेइ जाव करंतं वा सा०।११।० नायगं वा अनायगं वा उवासयं वा अणुवासयं वा अन्तो उवस्सयस्स अद्धं वा राइं कसिणं वा राइं संवसावेइ संवसावंतं वा सा०।१२। जे० तं न पडियाइक्खइ नपडियाइक्खंतं वा सा०।१३। जो तं पडुच्च निक्खमइ वा पविसइ वा० '१३६'।१४।जे भिक्खू रन्नो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं समवाएसु वा पिण्डमहेसु वा असणं

मुनि दीपरत्नसागर

	अत्र उद्देशक: ८ आरब्ध:

वा० पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा सा० । १५ । ० उत्तरसालंसि वा उत्तरगिहंसि वा रीयमाणाणं० । १६ । ० हयसालगयाण वा गयसा० वा मंतसा० वा गुज्झसा० वा रहस्ससा० वा मेहुणसा० वा० ।१७। ० संनिहिसंनिचयाओ खीरं वा दहिं वा नवणीयं वा सप्पिं वा गुलं वा खण्डं वा सक्करं वा मच्छण्डियं वा अन्नयरं वा भोयणजायं पडिगाहेइ पडिगाहेंतं वा सा० ।१८।० उस्सट्ठपिंडं वा संसट्ठपिण्डं वा अनाहपिण्डं वा किविणपिण्डं वा वणीमगपिण्डं वा पडिगाहेइ जाव साइज्जइ '१५५' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ।१९॥ अट्ठमो उद्देसओ ८॥ जे भिक्खू रायपिण्डं गेण्हइ गेण्हंतं वा सा० ।१।० भुंजइ भुंजंतं वा सा० '१६' ।२।० रायन्तेपुरं पविसइ पविसंतं वा सा० ।३।० रायन्तेपुरियं वएज्जा 'आउसो! रायंतेउरिए! नो खलु अम्हं कप्पइ रायन्तेपुरं निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, इमण्हं तुमं पडिग्गहगं गहाय रायन्तेपुराओ असणं वा० निहडियं आहट्टु दलयाहि' जे तं एवं वयइ वयंतं वा सा० ।४। जे भिक्खू य णं रायन्तेउरिया वएज्जा 'आउसन्तो! समणा नो खलु तुज्झं कप्पइ रायन्तेपुरं निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा आहरेयं पडिग्गहगं जाए अहं रायन्तेपुराओ असणं वा० णीहडियं आहट्टु दलयामि' जे एवं पडिसुणेइ पडिसुणंतं वा सा० '२९' ।५। जे भिक्खू रन्नो जाव मुद्धाभिसित्ताणं दुवारियभत्तं वा पसुभत्तं वा भयगभत्तं वा बलभत्तं वा कयगभत्तं वा हयभत्तं वा गयभत्तं वा कन्तारभत्तं वा दुब्भिक्खभत्तं वा दुकालभत्तं वा दमगभत्तं वा गिलाणभत्तं वा वद्दलियाभत्तं वा पाहुणगभत्तं वा पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा सा० '३६' ।६। जे भिक्खू रण्णो खत्तियाण जाव मुद्धाभिसित्ताणं इमाइं छद्दोसाययणाइं अजाणित्ता अपुच्छिय अगवेसिय परं चउरायपञ्चरायाओ पिण्डवायपडियाए निक्खमइ वा पविसइ वा निक्खमन्तं वा पविसन्तं वा साइज्जइ तं०-कोट्ठागारसालाणि वा भण्डागारसालाणि वा पाणसालाणि वा खीरसा० वा गञ्जसा० वा महाणससा० वा० '४२' ।७। जे भिक्खू रण्णो जाव मुद्धाभिसित्ताणं अइगच्छमाणाण वा निग्गच्छमाणाण वा० '४८' ।८।० इत्थीओ सव्वालंकारविभूसियाओ पदमवि चक्खुदंसणपडियाए गच्छइ वा अभिसंधारेइ वा गच्छन्तं वा अभिसंधारेन्तं वा सा० ।९।० मंसखायाण वा मच्छखा० वा छविखा० वहिया निग्गयाणं असणं वा जाव साइज्जइ । १०।० अन्नयरं उवबूहणीयं समीहियं पेहाए तीसे परिसाए अणुट्ठियाए अभिन्नाए अवोच्छिन्नाए जे तं अन्नं पडिगाहेइ पडिगाहेन्तं वा साइज्जइ, अह पुण एवं जाणेज्जा 'इहऽज्ज राया खत्तिए परिवुसिए' जे भिक्खू ताए गिहाए ताए पएसाए ताए उवासन्तराए वा विहारं वा करेइ सज्झायं वा जाव कहेंतं वा सा० '६१' ।११। जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव अभिसित्ताणं बहियाजत्तासंठियाणं असणं वा० पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा सा० । १२। बहियाजत्तापडिणियत्ताणं० । १३। एवं नईजत्तापट्ठियाणं० । १४ । ० पडिणियत्ताणं० । १५ । ० गिरिजत्तापट्ठियाणं० । १६ । ० गिरिजत्तापडिणियत्ताणं० । १७ । ० महाभिसेयंसि वट्टमाणंसि निक्खमइ वा पविसइ वा निक्खमंतं वा पविसंतं वा सा० '९०' । १८। जे भिक्खू जाव अभिसित्ताणं इमाओ दस आभिसेक्काओ रायहाणीओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ वञ्जियाओ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा निक्खमइ वा पविसइ वा निक्खमन्तं वा पविसन्तं वा साइज्जइ तंजहा-चम्पा महुरा वाणारसी सावत्थी साएयं कंपिल्लं कोसंबी मिहिला हत्थिणापुरं रायगिहं '१००' । १९। जे भिक्खू रन्नो० असणं वा० परस्स नीहडं पडिगाहेइ पडिगाहेन्तं वा साइज्जइ तं०-खत्तियाण वा राईण वा कुराईण वा रायसंसियाण वा रायपेसियाण वा० ।२०।० नडाण वा नट्टाण वा कच्छुयाण वा जल्लाण वा मल्लाण वा मुट्ठियाण वा बेलम्बगाण वा कहगाण वा पवगाण वा लासगाण वा दोक्खलयाण वा छत्ताणुयाण वा० । २१ । ० आसपोसयाण वा हत्थिपो० वा महिसपो० वा वसहपो० वा सीहपो० वा वग्घपो० वा अयपो० वा पोयपो० वा मिगपो० वा सुणहपो० वा सूयरपो० वा मेण्ढपो० वा कुक्कुडगो० वा तित्तिरपो० वा वट्टयपो० वा लावयपो० वा चीरल्लपो० वा हंसपो० वा मयूरपो० वा सुयपो० वा० । २२। एवं आसदमगाण वा हत्थिद० वा० ।२३।० आसमिठाण वा हत्थिमि० वा० ।२४।० आसरोहाण वा हत्थिरो० वा० ।२५।० सत्थाहाण वा संवाहावयाण वा ऊब्भंगावयाण वा उव्वट्टावयाण वा मज्जावयाण वा मण्डावयाण वा छत्तग्गाहाण वा चामर० वा हडप्प० वा परियट्ट० वा दीविय० असि० वा धणु० वा सत्ति० कोन्त० वा० ।२६।० वरिसधराण वा कञ्चुइज्जाण वा दोवारियाण वा दण्डारक्खियाण वा० । २७ । ० खुज्जाण वा चिलाइयाण वा वामणीण वा वडभीण वा बब्बरीण वा पउसीण वा जोणियाण वा पल्हवियाण वा इसिणीण वा थारुगिणीण वा लउसीण वा लासीण वा सिंहलीण वा आलवी(रवी)ण वा पुलिन्दीण वा सबरीण वा पारिसीण वा०, तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '१११' ।२८॥ नवमो उद्देसओ ९॥ जे भिक्खू भदन्तं आगाढं वयइ वयंतं वा सा० । १ । ० फरुसं । २ । ० आगाढफरुसं '३५' । ३ । ० अन्नयरीए अच्चासायणाए अच्चासाएइ अच्चासायंतं वा सा० '५२' । ४। जे भिक्खू अणन्तकायसंजुत्तं आहारं आहारेइ आहारेंतं वा सा० '५६' । ५ । ० आहाकम्मं भुञ्जइ भुञ्जंतं वा सा० '८१' । ६ । ० पडुप्पन्नं वागरेइ वागरेंतं वा सा० । ७ । ० अणागयं निमित्तं वागरेइ वागरंतं वा सा० '९३' ।८।० सेहं विप्परिणामेइ विपरिणामंतं वा सा०।९।० अवहरइ अवहरंतं वा सा०।१०।० दिसं विपरिणामेइ विप्परिणामंतं वा सा०।११।० अवहरइ अवहरंतं वा

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्र उद्देशक: १० आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [१२]

दीप अनुक्रम [६१९]

सा० '१५७'।१२।० वहियावासियं आएसं परं तिरायाओ अविफालेत्ता संवसावेइ संवसावेंतं वा सा०।१३।० साहिगरणं अविओसवियपाहुडं अकडपायच्छित्तं संभुञ्जइ संभुंजंतं वा सा० '२५३'।१४।० उग्घाइयं अणुग्घाइयं वयइ वयंतं वा सा०।१५।० अणुग्घाइयं उग्घाइयं०।१६।० उग्घाइए अणुग्घाइयं देइ देंतं वा सा०।१७।० अणुग्घाइए उग्घाइयं०।१८। जे भिक्खू उग्घाइयं सोच्चा नच्चा संभुञ्जइ संभुंजंतं वा सा०।१९।० उग्घाइयहेउं०।२०। ०उग्घाइयसंकप्पं०।२१।उग्घाइयं वा उग्घाइयहेउं वा उग्घाइयसंकप्पं वा०।२२।०अणुग्घाइयं० अणुग्घाइयहेउं० अणुग्घाइयसंकप्पं० अणुग्घाइयं वा अणुग्घाइयहेउं वा अणुग्घाइयसंकप्पं वा०।२३-२६।०उग्घाइयं वा अणुग्घाइयं वा०।२७।० उग्घाइयहेउं वा अणुग्घाइयहेउं वा० ।२८।० उग्घाइयसंकप्पं वा अणुग्घाइयसंकप्पं वा०।२९।० उग्घाइयं वा अणुग्घाइयं वा उग्घाइयहेउं वा अणुग्घाइयहेउं वा उग्घाइयसंकप्पं वा अणुग्घाइयसंकप्पं वा०।३०। जे भिक्खू उग्गयवित्तीए अणत्थमियमणसंकप्पे संथडिए निव्विइगिच्छासमावन्नेणं अप्पाणेणं असणं वा० पडिगाहेत्ता संभुञ्जइ संभुञ्जन्तं वा सा०।३१।०संथ० विइगिच्छा०।३२।० असंथडिए निव्विइगिच्छा०।३३।०असं० विइगिच्छा० (अह पुण एवं जाणेज्जा-अणुग्गए सूरिए अत्थमिए वा, से जं च मुहे जं च पाणिसि जं च पडिग्गहे तं विगिञ्चिय विसोहिय तं परिट्ठवेमाणे नाइक्कमइ, जो तं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ) '३२५'।३४। जे भिक्खू राओ वा वियाले वा सपाणं सभोयणं उग्गालं उग्गिलित्ता पच्चोगिलइ पच्चोगिलंतं वा सा० '३५६'।३५। जे भिक्खू गिलाणं सोच्चा न गवेसइ नगवेसंतं वा सा०।३६।० उम्मग्गं वा पडिपहं वा गच्छइ गच्छंतं वा सा०।३७। जे भिक्खू गिलाणवेयावच्चे अब्भुट्टियस्स सएण लाभेण असंथरमाणस्स जे तस्स न पडितप्पइ नपडितप्पेंतं वा सा०।३८। ०गि० अब्भुट्ठियं गिलाणपाओगे दव्वजाए अलभमाणे जे तं न पडियाइक्खइ नपडियाइक्खंतं वा सा० '५१२'।३९। ० पढमपाउसंसि गामाणुगामं दूइज्जइ दूइज्जंतं वा सा०।४०।० वासावासं पज्जोसवियंसि दूइज्जइ दूइज्जंतं वा सा०।४१। ० अपज्जोसवणाए पज्जोसवेइ पज्जोसवेंतं वा सा०।४२। ० पज्जोसवणाए न पज्जोसवेइ नपज्जोसवंतं वा सा०।४३। ० पज्जोसवणाए गोलोमाईपि वालाइं उवाइणावेइ उवाइणावेंतं वा सा०।४४। ० पज्जोसवणाए इत्तिरियंपि आहारं आहारेइ आहारेंतं वा सा०।४५। ० अन्नउत्थियं वा गारत्थियं वा पज्जोसवेइ पज्जोसवेंतं वा सा० '६१०'।४६। ० पढमसमोसरणुद्देसपत्ताइं चीवराइं पडिगाहेइ पडिगाहेंतं वा सा० '६६४' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं।४७॥ दसमो उद्देसओ १०॥ जे भिक्खू अयपायाणि वा कंस० वा तंब० वा तउय० वा रुप्प० वा सुवण्ण० वा जायरूव० वा मणि० वा काय० कणग० वा दन्त० वा सिंग० वा चम्म० वा चेल० वा अंकपा० वा संख० वा वइर० वा करेइ करंतं वा सा०।१। ० धरेइ धरंतं वा सा०।२। ० परिभुंजइ परिभुंजन्तं वा सा०।३। ०अयबंधणाणि वा जाव वइरबंधणाणि वा करेइ करंतं वा सा० जाव परिभुंजइ परिभुंजंतं वा सा०।४-६।० परं अद्धजोयणमेराओ पायवडियाए गच्छइ गच्छंतं वा सा०।७।०परं अद्धजोयणमेराओ सपच्चवायंसि पायं अभिहडं आहट्टु देज्जमाणं पडिगाहेइ पडिगाहेंतं वा सा० '२३'।८। ०धम्मस्स अवण्णं वयइ वयंतं वा सा०।९। ०अधम्मस्स वण्णं० '३६'।१०। ०अन्नउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा पाए आमज्जिज्ज वा पमज्जिज्ज वा आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सा० एवं तइयउद्देसगमेण णेयव्वं नवरं अन्नउत्थियगारत्थियाभिलावा जाव जे गामाणुगामं दूइज्जमाणे अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा सीसदुवारियं करेइ करंतं वा सा० '३८'।११-६३। ० अप्पाणं वीभावेइ वीभावेंतं वा सा०।६४। ० परं०।६५।० अप्पाणं विम्हावेइ विम्हावेंतं वा सा०।६६। ० परं०।६७। ० अप्पाणं विप्परियासेइ विप्परियासेंतं सा०।६८।० परं०।६९।० मुहवण्णं करेइ करंतं वा सा० '८४'।७०। ० वेरज्जविरुद्धरज्जंसि सज्जं गमणं आगमणं गमणागमणं करेइ जाव सा० '११५'।७१।० दियाभोयणस्स अवण्णं वयइ वयंतं वा सा०।७२।० राइभोयणस्स वण्णं० '१२०'।७३।० दिया असणं वा० पडिगाहेत्ता दिया भुंजइ०।७४।०दिया प०रत्तिं भु०।७५।०रत्तिं प० दिया भु०।७६। ०रत्तिं पडिगाहेइ रत्तिं भुंजइ भुंजंतं वा सा० '१९१'।७७।० असणं वा० अणागाढे परिवासेइ परिवासंतं वा सा०।७८।० परिवासियस्स असणस्स वा० तयप्पमाणं वा भूइ० वा आहारं आहारेइ आहारेंतं वा सा० '२०२'।७९।० मंसाइयं वा मच्छाइयं वा मंसखलं वा मच्छखलं वा आहेणं वा पहेणं वा सम्मेलं वा हिंगोलं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं विरूवरूवं हीरमाणं पेहाए ताए आसाए ताए पिवासाए तं रयणिं अन्नत्थ उवाइणावेइ उवातिणावेंतं वा सा० '२१२'।८०।० निवेयणपिण्डं भुंजइ भुंजंतं वा सा० '२१५'।८१।० अहाछन्दं पसंसइ पसंसंतं वा सा०।८२।० वंदइ वंदंतं वा सा० '२२६'।८३।० नायगं वा अनायगं वा उवासगं वा अणुवासगं वा अणलं वा पडावेइ पडावेंतं वा सा०।८४।० उवट्टावेइ उवट्टावेंतं वा सा० '४९१'।८५।० नायएण वा अनायएण वा उवासएण वा अणुवासएण वा अणलेण वेयावच्चं कारेइ कारेंतं वा सा० '४९६'।८६।० सचेले सचेलगाणं मज्झे संवसइ संवसंतं वा सा०।८७।० अचेले सचेलगाणं०।८८।०सचेले अचेलगाणं०।८९।०अचेले अ० '५०७'।९०।०पारियासियं पिप्पलिं वा पिप्पलिचुण्णं वा सिंगबेरं वा सिंगबेरचुण्णं वा बिलं वा लोणं वा उब्भिअ(ब्भि)यं वा लोणं आहारेइ आहारेंतं वा सा० '५२०'।९१। ० गिरिपडणाणि वा मरुप० वा भिगुप० वा तरुप० वा गिरिपक्खंदणाणि वा मरु० वा तरु० जलपवेसाणि वा जलण० वा (२३९)

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्र उद्देशक: ११ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [९२]

दीप अनुक्रम [७४६]

जलपक्खंदणाणि वा जलण० वा विसभक्खणाणि वा सत्थोवाडणाणि वा अंतोसल्लमरणाणि वा वेहाणसाणि वा गिद्धपट्ठाणि वा वलयमरणाणि वा जाव अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि बालमरणाणि पसंसइ पसंसंतं वा सा० '५३७' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ।९२॥ एक्कारसमो उद्देसओ ११॥ जे भिक्खू कोलुणपडियाए अन्नयरिं तसपाणजाइं तणपासएण वा मुंजपा० वा कट्ठपा० वा चम्मपा० वा वत्तपा० वा रज्जुपा० वा सुत्तपा० वा बंधइ बंधंतं वा सा० '१०' ।२।० अभिक्खणं अभिक्खणं पच्चक्खाणं भञ्जइ भंजंतं वा सा० '१५' ।३।० परित्तकायसंजुत्तं आहारेइ आहारंतं वा सा० '२०' ।४।० सलोमाइं चम्माइं धरेइ धरंतं वा सा० '४५' ।५।० तणपीढगं वा पल्लापी० वा छगणपी० वा कट्ठपी० वा परवत्थेणोच्छन्नं अहिट्ठेइ अहिट्ठंतं वा सा० '५०' ।६।० निग्गन्थीए संघाडिं अन्नउत्थिएण गारत्थिएण वा सिव्वावेइ सिव्वावेंतं वा सा० '५७' ।७।० पुढवीकायस्स वा कलमायमवि समारभइ समारभंतं वा सा० एवं जाव वणप्फतिकायस्स '६१' ।८।० सचित्तरुक्खं दुरुहइ दुरुहंतं वा सा० '६६' ।९।० गिहिमत्ते भुञ्जइ भुंजंतं वा सा० ।१०।० गिहिवत्थं परिहेइ परिहेंतं वा सा० ।११।० गिहिनिसेज्जं वाहेइ वाहेंतं वा सा० ।१२।० गिहितिगिच्छं करेइ करेंतं वा सा० '८२' ।१३।० पुरेकम्मकडेण हत्थेण वा मत्तेण वा दव्विएण वा भायणेण वा असणं वा० पडिगाहेइ पडिगाहेंतं वा सा० ।१४।० अन्नउत्थियाण वा गारत्थियाण वा सीओदगपरिभोएण० '१४२' ।१५।० कट्ठकम्माणि वा चित्तक० वा पोत्थक० वा दन्तक० वा मणिक० वा सेलक० वा गंठिमाणि वा वेढिमाणि वा पूरिमाणि वा संघाइमाणि वा पत्तच्छेज्जाणि वा विविहाणि वा वेहिमाणि वा चक्खुदंसणवडियाए अभिसंधारेइ अभिसंधारेंतं वा सा० ।१६।० वप्पाणि वा फलिहाणि वा उप्फलाणि वा पल्ललाणि वा उज्झराणि वा निज्झराणि वा वावीणि वा पोक्खराणि वा दीहियाणि वा गुंजालियाणि वा सराणि वा सरपंतियाणि वा सरसरपं० वा० ।१७। ०कच्छाणि वा गहणाणि वा नूमाणि वा वणाणि वा वणविदुग्गाणि वा पव्वयाणि वा पव्वयवि० वा० ।१८।०गामाणि वा नगराणि वा खेडाणि वा कब्बडाणि वा मडम्बाणि वा दोणमुहाणि वा पट्टणाणि वा आगराणि वा सम्बाहाणि वा संनिवेसाणि वा०।१९।०गाममहाणि वा जाव संनिवेसमहाणि वा०।२०।०गामवहाणि वा जाव संनिवेसवहाणि वा गामदाहाणि वा जाव संनिवेसदाहाणि वा०।२१।०गामपहाणि वा जाव संनिवेसपहाणि वा०।२२।०आसकरणाणि वा हत्थिक० वा उट्टक० वा गोणक० वा महिसक० वा सूयरक० वा०।२३।०आसजुद्धाणि वा हत्थिजु० वा उट्टजु० वा गोण० महिस्सजु० वा०।२४।०उज्जूहियट्ठाणाणि वा हयजूहियट्ठाणाणि वा गयजूहियट्ठाणाणि वा०। २५।० अभिसेयट्ठाणाणि वा अक्खाइयट्ठाणाणि वा माणुम्माणियट्ठा० वा महयाहयनट्टगीयवाइयतन्तीतलतालतुडियपडुप्पवाइय० वा०। २६।० आघायणाणि वा डिम्बाणि वा डमराणि वा खाराणि वा वेराणि वा महाजुद्धाणि वा महासंगामाणि वा कलहाणि वा बोलाणि वा०। २७।० विरूवरूवेसु महुस्सवेसु इत्थीणि वा पुरिसाणि वा थेराणि वा मज्झिमाणि वा डहराणि वा अणलंकियाणि वा सुअलंकियाणि वा गायन्ताणि वा वायन्ताणि वा नच्चन्ताणि वा हसन्ताणि वा रमन्ताणि वा मोहन्ताणि वा विउलं असणं वा० परिभायन्ताणि वा परिभुंजन्ताणि वा०सा० । २८।० इहलोइएसु वा रूवेसुं परलोइएसु वा रूवेसुं दिट्ठेसु वा अदिट्ठेसु वा सुएसु वा असुएसु वा विन्नाएसु वा अविन्नाएसु वा रूवेसु सज्जइ रज्जइ गिज्झइ अज्झोववज्जइ सज्जमाणं वा जाव अज्झोववज्जमाणं वा सा० '१६३' ।२९।० पढमाए पोरिसीए असणं वा० पडिगाहेत्ता पच्छिमं पोरिसिं उवाइणावेइ उवाइणावेंतं वा सा० '१८९' ।३०।० परं अद्धजोयणमेराओ असणं वा० उवाइणावेइ उवायणावेंतं वा सा० '२१८' ।३१।० दिया गोमयं पडिगाहेत्ता दिया कायंसि वणं आलिम्पेज्ज वा विलिंपेज्ज वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा सा०।३२।० दिया गो० प० रत्तिं वणं आलिं० विलिंपेज्ज वा।३३।० रत्तिं गो० प० दिया वणं आ० वि०।३४।रत्तिं गो० प० रत्तिं वणं आ० वि०।३५।० दिया आलेवणजायं पडिगाहेत्ता दिया कायंसि वणं जाव चउभंगो '२२६' ।३६-३९।० अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा उवहिं वहावेइ वहावेंतं वा सा०। ४०।० तेनीसाए असणं वा० देइ देंतं वा सा० '२३०' ।४१। जे भिक्खू पञ्चिमाओ महण्णवाओ महानईओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ वंजियाओ अन्तो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरइ वा संतरइ वा उत्तरन्तं वा संतरन्तं वा साइज्जइ. तंजहा-गंगा जउणा सरऊ एरावई मही '२७८' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ।४२॥ बारसमो उद्देसओ १२॥ जे भिक्खू अणन्तरहियाए पुढवीए ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेएइ चेयंतं वा सा० जाव मक्कडासंताणगंसि । १-८।० थूणंसि वा गिहेलुयंसि वा उसुयालंसि वा कामजालंसि वा० ।९।० कुलियंसि वा भित्तिसि वा सिलंसि वा लेलुयंसि वा अन्तलिक्खजायंसि वा० । १०।० खंधंसि वा फलहंसि वा मञ्चंसि वा मण्डवंसि वा मालंसि वा पासायंसि वा दुब्बद्धे दुण्णिक्खित्ते अनिकम्पे चलाचले० '२२' । ११। जे भिक्खू अन्नउत्थियं वा गारत्थियं वा सिप्पं वा सिलोगं वा अट्ठापयं वा कक्कडगं वा वुग्गहं वा सल्लहं (गं) वा सल्लहकढहत्थयं वा सिक्खावेइ सिक्खावेंतं वा सा०।१२।० आगाढं वयइ वयंतं वा सा०. फरुसं. आगाढफरुसं. अन्नयरीए अच्चासायणाए अच्चासाएइ अच्चा० सा० '३१'।१३-१६। जे भिक्खू अन्न-

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्र उद्देशक: १३ आरब्ध:

उत्थियाण वा गारत्थियाण वा कोउगकम्मं करेइ करंतं वा सा०।१७।०भूइकम्मं०।१८।०पसिणं कहेइ०।१९।पसिणापसिणं०।२०।०तीयं निमित्तं०।२१।०लक्खणं०।२२।०सुमिणं०।२३। ०विज्जं पउंजइ पउंजंतं वा सा०'५०'।२४। एवं मन्तं।२५। जोगं।२६। ०नट्ठाणं मूढाणं विप्परियासियाणं मग्गं वा पवेएइ संधिं वा प० मग्गेण वा संधिं प० संधीओ वा मग्गं प० पवेएंतं वा सा०।२७।० धाउं पवेएइ पवेएंतं वा सा०।२८। ०निहिं० '६२'।२९। जे भिक्खू मत्तए अप्पाणं देहइ देहंतं वा सा०।३०।०अहाए०।३१। एवं असीए।३२। मणिए ।३३। उड्डपाणे।३४। तेल्ले।३५। फा(पा)णिए।३६। वसाए '७३'।३७।० वमणं पडिकम्मं करेइ करंतं वा सा०।३८।०विरेयणं०।३९।०वमणविरेयणं०।४०।०अरोगियं०'८४'।४१। ०पासत्थं वंदइ वंदंतं वा सा० पसंसइ पसंसंतं वा सा '११९'।४२-४३। एवं ओसन्नं।४४-४५। कुसीलं।४६-४७। नितियं।४८-४९। संसत्तं।५०-५१। काहियं।५२-५३। पासणियं ।५४-५५। मामगं।५६-५७। संपसारगं '११९'।५८-५९।० घाइपिंडं भुंजइ भुंजंतं वा सा०।६०। एवं दूइ०।६१। निमित्त०।६२। आजीविय०।६३। वणीमगपि०।६४। तिगिच्छा०।६५। कोह०।६६। माण०।६७। माया०।६८। लोभ०।६९। विज्जा०।७०। मन्त०।७१। जोग०।७२। चुण्ण०।७३। ० अन्तद्धाण० '२१६' तं सेवमाणे आव-जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं।७४॥ तेरसमो उद्देसओ १३॥ जे भिक्खू पडिग्गहं किणइ किणावेइ कीयं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडि० सा०।१।०पामिच्चेइ पामि-च्चावेइ पामिच्चियं०।२।० परियट्टेइ परियट्टावेइ परियट्टियं०।३।०अच्छेज्जं अनिसिट्ठं अभिहडं० '५१'।४। जे भिक्खू अहेरगं पडिग्गहगं गणिं उद्दिसिय गणिं समुद्दिसिय तं गणिं अणापु-च्छिय अणामन्तिय अन्नमन्नस्स वियरइ वियरंतं वा सा०।५।०खुड्डगस्स वा खुड्डियाए वा थेरगस्स वा थेरियाए वा अहत्थच्छिन्नस्स अपायच्छिन्नस्स अनासच्छिन्नस्स अकण्ण-च्छिन्नस्स अणोट्ठच्छिन्नस्स सक्कस्स देइ देंतं वा सा०।६।०खुड्डगस्स वा जाव थेरियाए वा हत्थच्छिन्नस्स० ओट्ठच्छिन्नस्स असक्कस्स न देइ नदेंतं वा सा० '१५३'।७। जे भिक्खू पडिग्गहं अणलं अथिरं अधुवं अधारणिज्जं धरेइ धरेंतं वा सा०।८।० अलं थिरं धुवं धारणिज्जं न धरेइ नधरेंतं वा सा० '१५९'।९। जे भिक्खू वण्णमन्तं पडिग्गहं विवण्णं करेइ करेंतं वा सा० ।१०। विवण्णं पडिग्गहं वण्णमन्तं०।११। जे भिक्खू 'नो नवए मे पडिग्गहे लद्धे'त्तिकट्टु तेल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा मक्खंतं वा भिलिंगंतं वा सा० ।१२।०लोद्धेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वले(ट्टे)ज्ज वा उल्लोलंतं वा उव्वलं(ट्टं)तं वा सा०।१३।० सीओदगवियडेण वा जाव उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा।१४।० बहुदेवसिएण तेल्लेण वा० लोद्धेण वा० सीओदगवियडेण जाव सा०।१५-१७। जे णवए मे पडिग्गहे इतिकट्टु एवं दो गमा भाणियव्वा॥ जे० सुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे इतिकट्टु०बहुदेवसिएण सीओदगवियडेण वा जाव सा०।१८-२३। जे नो नवए सुब्भिगंधेणवि दो चेव गमा॥ जे दुब्भिगंधे पडिग्गहगे लद्धेत्ति०दुब्भिगंधेण दो चेव गमा णेयव्वा '१७४' ।२४-२९। जे भिक्खू अणन्तरहियाए पुढवीए जाव जीवपतिट्ठिते सअंडे जाव ससंकमणंसि चलाचले सपडिग्गहगं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा आया० पयावेंतं वा सा०।३०-४०। एवं जे० कुलियंसि वा जाव लेलुयंसि वा सपडिग्गहगं आया० पया० साइ०।४१। जे० खंधंसि जाव पासायंसि वा अन्नयरंसि वा अंतरिक्खजायंसि सपडि० '१७९'।४२।०पडिग्गहाओ पुढवीकायं आउकायं तेउकायं नीहरइ नीहरावेइ नीहरियं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा सा०।४३।०कंदाणि वा मूलाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा बीयाणि वा०।४४।० ओसहिबीयाइं०।४५।० तसपाणजायं० '१९५'।४६। जे भिक्खू पडिग्गहगं णिक्कोरेइ णिक्कोरावेइ णिक्कोरियं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिगाहेंतं वा सा० '२००'।४७। जे भिक्खू नायगं वा अनायगं वा उवासगं वा अणुवासगं वा गामन्तरंसि वा गामपहन्तरंसि वा पडिग्गहगं ओभासिय २ जायइ जायंतं वा सा०।४८।०अणुवासगं वा परिसामज्झाओ उट्ठवेत्ता० '२१३'।४९। जे भिक्खू पडिग्गहगनीसाए उडुबद्धं वसइ वसंतं वा सा०।५०।० वासावासं० '२१७' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं।५१॥ चउद्दसमो उद्देसओ १४॥ जे भिक्खू भिक्खूणं आगाढं वयइ वयंतं वा सा०।१। एवं फरुसं०।२। आगाढफरुसं०।३।०अन्नयरीए अच्चासायणाए अच्चासाएइ '२'।४। जे भिक्खू सचित्तं अम्बं भुञ्जइ भुंजंतं वा सा०।५।० विडसइ विडसंतं वा सा०।६।०सचित्तं अम्बं वा अम्बपेसिं वा अम्बभित्तं वा अम्बसालगं वा अम्बडालगं वा अम्बचोयगं वा भुञ्जइ भुंजंतं वा सा०।७।० विडसइ विडसंतं वा सा०।८।०सचित्तपइट्ठियं अम्बं भुञ्जइ०, एवं सचित्तपतिट्ठिएणवि चत्तारि आलावगा णेयव्वा '२५८'।९-१२। जे भिक्खू अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो पाए आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा आ० प० सा०. एवं तइयउद्देसगमओ णेयव्वो जाव सीसदुवारियं. जे गामाणुगामं दुइज्जमाणे अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो सीसदुवा-रियं कारवेइ कार० सा०।१३-६५। जे भिक्खू आगन्तारेसु वा जाव महागिहेसि वा उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ परिट्ठवेंतं वा सा० '२६८'।६६-७४। जे भिक्खू अन्नउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा असणं वा० देइ देंतं वा सा०।७५।० पडिच्छइ पडिच्छंतं वा सा०।७६।० वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुञ्छणं वा देइ देंतं वा सा०।७७।० पडिच्छइ

ॐ दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्र उद्देशक: १५ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [७८]

दीप अनुक्रम [९८२]

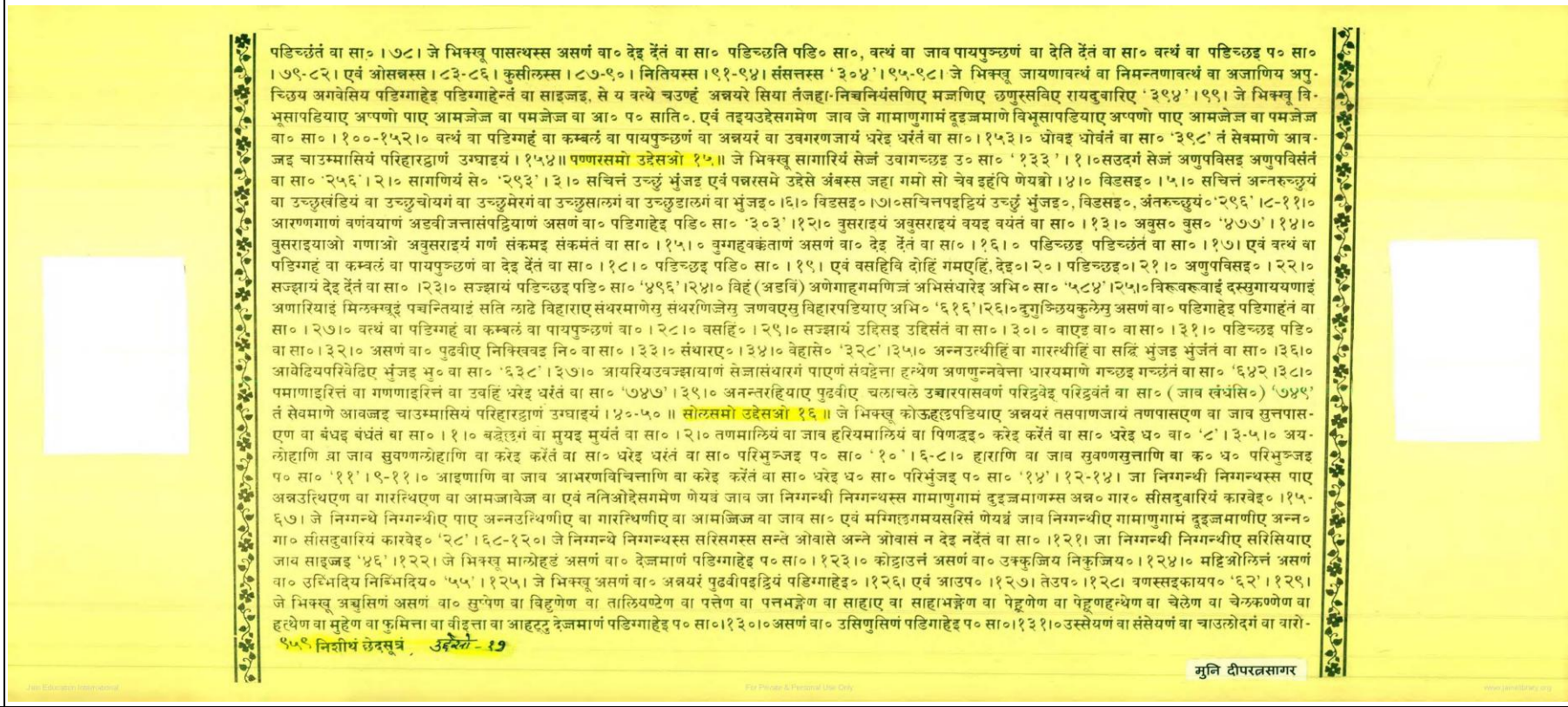

पडिच्छंतं वा सा० ।७८। जे भिक्खू पासत्थस्स असणं वा० देइ देंतं वा सा० पडिच्छति पडि० सा०, वत्थं वा जाव पायपुञ्छणं वा देति देंतं वा सा० वत्थं वा पडिच्छइ प० सा० ।७९-८२। एवं ओसन्नस्स ।८३-८६। कुसीलस्स ।८७-९०। नितियस्स ।९१-९४। संसत्तस्स ‘३०४’।९५-९८। जे भिक्खू जायणावत्थं वा निमन्तणावत्थं वा अजाणिय अपुच्छिय अगवेसिय पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेन्तं वा साइज्जइ, से य वत्थे चउण्हं अन्नयरे सिया तंजहा-निच्चनियंसणिए मज्जणिए छणुस्सविए रायदुवारिए ‘३९४’।९९। जे भिक्खू विभूसापडियाए अप्पणो पाए आमज्जेज वा पमज्जेज वा आ० प० साति०, एवं तइयउद्देसगमेण जाव जे गामाणुगामं दूइज्जमाणे विभूसापडियाए अप्पणो पाए आमज्जेज वा पमज्जेज वा० सा० ।१००-१५२।० वत्थं वा पडिग्गहं वा कम्बलं वा पायपुञ्छणं वा अन्नयरं वा उवगरणजायं धरेइ धरंतं वा सा० ।१५३।० धोवइ धोवंतं वा सा० ‘३९८’ तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ।१५४॥ पण्णरसमो उद्देसओ १५॥ जे भिक्खू सागारियं सेज्जं उवागच्छइ उ० सा० ‘१३३’ ।१।०सउदगं सेज्जं अणुपविसइ अणुपविसंतं वा सा० ‘२५६’ ।२।० सागणियं से० ‘२९३’ ।३।० सचित्तं उच्छुं भुंजइ एवं पन्नरसमे उद्देसे अंबस्स जहा गमो सो चेव इहंपि णेयव्वो ।४।० विडसइ० ।५।० सचित्तं अन्तरुच्छुयं वा उच्छुखंडियं वा उच्छुचोयगं वा उच्छुमेरगं वा उच्छुसालगं वा उच्छुडालगं वा भुंजइ०।६।० विडसइ०।७।०सचित्तपइट्ठियं उच्छुं भुंजइ०, विडसइ०, अंतरुच्छुयं०‘२९६’ ।८-११।० आरण्णगाणं वणंवयाणं अडवीजत्तासंपट्ठियाणं असणं वा० पडिगाहेइ पडि० सा० ‘३०३’ ।१२।० वुसराइयं अवुसराइयं वयइ वयंतं वा सा० ।१३।० अवुस० वुस० ‘४७७’ ।१४।० वुसराइयाओ गणाओ अवुसराइयं गणं संकमइ संकमंतं वा सा० ।१५।० वुग्गहवक्कंताणं असणं वा० देइ देंतं वा सा० ।१६।० पडिच्छइ पडिच्छंतं वा सा० ।१७। एवं वत्थं वा पडिग्गहं वा कम्बलं वा पायपुञ्छणं वा देइ देंतं वा सा० ।१८।० पडिच्छइ पडि० सा० ।१९। एवं वसहिवि दोहिं गमएहिं, देइ०।२०। पडिच्छइ०।२१।० अणुपविसइ० ।२२।० सज्झायं देइ देंतं वा सा० ।२३।० सज्झायं पडिच्छइ पडि० सा० ‘४९६’।२४।० विहं (अडविं) अणेगाहगमणिज्जं अभिसंधारेइ अभि० सा० ‘५८४’।२५।०विरूवरूवाइं दस्सुगायययणाइं अणारियाइं मिलक्खूइं पच्चन्तियाइं सति लाढे विहाराए संथरमाणेसु संथरणिज्जेसु जणवएसु विहारपडियाए अभि० ‘६१६’।२६।०दुगुञ्छियकुलेसु असणं वा० पडिगाहेइ पडिगाहेंतं वा सा० ।२७।० वत्थं वा पडिग्गहं वा कम्बलं वा पायपुञ्छणं वा० ।२८।० वसहिं० ।२९।० सज्झायं उद्दिसइ उद्दिसंतं वा सा० ।३०।० वाएइ वा० वा सा० ।३१।० पडिच्छइ पडि० वा सा० ।३२।० असणं वा० पुढवीए निक्खिवइ नि० वा सा० ।३३।० संथारए० ।३४।० वेहासे० ‘३२८’ ।३५।० अन्नउत्थीहिं वा गारत्थीहिं वा सद्धिं भुंजइ भुंजंतं वा सा० ।३६।० आवेढियपरिवेढिए भुंजइ भु० वा सा० ‘६३८’ ।३७।० आयरियउवज्झायाणं सेज्जासंथारगं पाएणं संघट्टेत्ता हत्थेण अणणुन्नवेत्ता धारयमाणे गच्छइ गच्छंतं वा सा० ‘६४२ ।३८।० पमाणाइरित्तं वा गणणाइरित्तं वा उवहिं धरेइ धरंतं वा सा० ‘७४७’ ।३९।० अनन्तरहियाए पुढवीए चलाचले उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ परिट्ठवेंतं वा सा० (जाव खेंधसे०) ‘७४९’ तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ।४०-५०॥ सोलसमो उद्देसओ १६॥ जे भिक्खू कोऊहलपडियाए अन्नयरं तसपाणजायं तणपासएण वा जाव सुत्तपासएण वा बंधइ बंधंतं वा सा० ।१।० बद्धेल्लगं वा मुयइ मुयंतं वा सा० ।२।० तणमालियं वा जाव हरियमालियं वा पिणद्धइ० करेइ करेंतं वा सा० धरेइ ध० वा० ‘८’ ।३-५।० अयलोहाणि वा जाव सुवण्णलोहाणि वा करेइ करेंतं वा सा० धरेइ धरंतं वा सा० परिभुञ्जइ प० सा० ‘१०’ ।६-८।० हाराणि वा जाव सुवण्णसुत्ताणि वा क० ध० परिभुञ्जइ प० सा० ‘११’ ।९-११।० आइण्णाणि वा जाव आभरणविचित्ताणि वा करेइ करेंतं वा सा० धरेइ ध० सा० परिभुंजइ प० सा० ‘१४’ ।१२-१४। जा निग्गन्थी निग्गन्थस्स पाए अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा आमज्जावेज्ज वा एवं ततिओद्देसगमेण णेयव्वं जाव जा निग्गन्थी निग्गन्थस्स गामाणुगामं दुइज्जमाणस्स अन्न० गार० सीसदुवारियं कारवेइ० ।१५-६७। जे निग्गन्थे निग्गन्थीए पाए अन्नउत्थिणीए वा गारत्थिणीए वा आमज्जिज्ज वा जाव सा० एवं मग्गिल्लगमयसरिसं णेयव्वं जाव निग्गन्थीए गामाणुगामं दूइज्जमाणीए अन्न० गा० सीसदुवारियं कारवेइ० ‘२८’ ।६८-१२०। जे निग्गन्थे निग्गन्थस्स सरिसगस्स सन्ते ओवासे अन्ने ओवासं न देइ नदेंतं वा सा० ।१२१। जा निग्गन्थी निग्गन्थीए सरिसियाए जाव साइज्जइ ‘४६’ ।१२२। जे भिक्खू माल्लोहडं असणं वा० देज्जमाणं पडिग्गाहेइ प० सा० ।१२३।० कोट्ठाउत्तं असणं वा० उक्कुज्जिय निकुज्जिय० ।१२४।० मट्टिओलित्तं असणं वा० उब्भिदिय निब्भिदिय० ‘५५’ ।१२५। जे भिक्खू असणं वा० अन्नयरं पुढवीपइट्ठियं पडिग्गाहेइ० ।१२६। एवं आउप० ।१२७। तेउप० ।१२८। वणस्सइकायप० ‘६२’ ।१२९। जे भिक्खू अच्चुसिणं असणं वा० सुप्पेण वा विहुणेण वा तालियण्टेण वा पत्तेण वा पत्तभङ्गेण वा साहाए वा साहाभङ्गेण वा पेहुणेण वा पेहुणहत्थेण वा चेलेण वा चेलकण्णेण वा हत्थेण वा मुहेण वा फुमित्ता वा वीइत्ता वा आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ प० सा०।१३०।०असणं वा० उसिणुसिणं पडिगाहेइ प० सा०।१३१।०उस्सेयणं वा संसेयणं वा चाउलोदगं वा वारो-

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्र उद्देशक: १७ आरब्ध:

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३४], छेदसूत्र - [१] "निशीथ" मूलं

प्रत सूत्रांक [१३२]

दीप अनुक्रम [१०३६]

दगं वा तिल्लोदगं वा तुसोदगं वा जवोदगं वा भुसोदगं वा आयामं वा सोवीरं वा अम्बकञ्जियं वा सुद्धवियडं वा अहुणाधोयं अणंबिलं अपरिणयं अवक्कन्तजीवं अविद्धत्थं पडिग्गाहेइ प० सा० '७४'।१३२।० अप्पणो आयरियत्ताए लक्खणाइं वागरेइ वागरंतं वा सा० '८४'।१३३।० गाएज्ज वा वाएज्ज वा नच्चेज्ज वा अभिणएज्ज वा हयहेसियं हत्थिगुलगुलाइयं उक्कुट्ठसीहनायं वा करेइ करंतं वा सा०।१३४।० भेरीसद्दाणि वा पडह० वा मुरव० वा मुइंग० वा एवं नंदि० वा झल्लरि० वा वल्लरि० वा डमरुग० वा मड्डय० वा सद्दुय० वा पएस० वा गोलुइ० वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि वितंयाणि सद्दाणि कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ अ० सा० बारसमउद्देसगमेण णेयव्वं।१३५।० वीणासद्दाणि वा विपञ्चि० वा तूण० वा वव्वीसग० वा वीणाइय० तुंबवीणा० वा झो(पो)डय० वा ढंकुणस० वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि वितयाणि सद्दाणि०।१३६।०तालसद्दाणि वा कंसताल० वा लत्तिय० वा गोहिय० वा मकरिय० वा कच्छभि० वा महइ० वा सणालिया० वा वालिया० वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि झुसिराणि०।१३७।०संखसद्दाणि वा वंस० वा वेणु० वा खरमुहि० वा परिलि० वा वेच्चा० वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि झुसिराणि० '९३'।१३८।० वप्पाणि वा फलिहाणि वा जाव इह(पर)लोइएसु वा सद्देसु जाव अज्झोववज्जेमाणं वा सा० '९४' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं।१३९-१५१॥ सत्तरसमो उद्देसओ १७॥ जे भिक्खू अणट्ठाए नावं दुरुहइ दुरु० सा०।१।० नावं किणइ किणावेइ कीयमाहट्टु दिज्जमाणं दुरुहइ दुरुहंतं वा सा० एवं जो चोद्दसमे उद्देसे परिग्गहगमो सो णेयव्वो जाव अच्छेज्जं, णवरं दुरुहतित्ति भाणियव्वं।२-५।० थलाओ नावं जले ओकसावेइ ओ० सा०।६।० जलाओ नावं थले उक्कसावेइ उक्क० सा०।७।० पुण्णं नावं उस्सिञ्चइ उ० सा०।८।० सन्नं नावं उप्पिलावेइ उप्पि० सा०।९।० पडिणावियं कट्टु नावाए दुरुहइ दु० सा०।१०।० उड्ढगामिणिं वा नावं अहोगामिणिं वा नावं दुरुहइ दु० सा०।११।० जोयणवेलागामिणिं वा अद्धजोयणवेलागा० वा नावं दु०दु० सा०।१२।० नावं आकसावेइ ओकसावेइ खेवावेइ रज्जुणा वा कड्ढइ०।१३।० नावं आलित्तएण वा पप्फिडएण वा वंसेण वा वलेण वा वाहेइ वा० सा०।१४।० नावाओ उदगं भायणेण वा पडिग्गहेण वा मत्तेण वा नावाउस्सिञ्चणेण वा उस्सिञ्चइ उ० सा०।१५।० नावं उत्तिंगेण उदगं आसवमाणिं उवरुवरिं कज्जलमाणिं पेहाय हत्थेण वा पाएण वा आसत्थपत्तेण वा कुसपत्तेण वा मट्टियाए वा चेलकण्णेण वा पडिपीहेइ प० सा०।१६।० नावागओ तावागयस्स असणं वा० पडिग्गाहेइ प० सा० '३०' एतेण गमेण णावागओ जलगतस्स णावागतो थलगतस्स, एवं जलगएणवि चत्तारि पंकगएणवि चत्तारि थलगएणवि चत्तारि गमा णेयव्वा।१७-३२।० वत्थं किणइ किणावेइ कीयमाहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गाहइ प० सा०, एवं चोद्दसमे उद्देसे पडिग्गहए जो गमो भणिओ सो चेव इहंपि वत्थेण णेयव्वो जाव वासावासं संवसइ संव० सा० नवरं णिक्कारणं नत्थि '३१' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं।३३-८८॥ अट्ठादसमो उद्देसओ १८॥ जे भिक्खू वियडं किणइ किणावेइ कीयं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ प० सा०।१।एवं पामिच्चेति पामिच्चावेति पामिच्चियमिति०।२।० परियट्टति परियट्टावेति परियट्टियमिति०।३।० अच्छेज्जं अनिसट्ठं अभिहडं०।४। जे भिक्खू गिलाणस्सऽट्ठाए परं तिण्हं वियडदत्तीणं पडिग्गाहेइ प० सा०।५।० वियडं गहाय गामाणुगामं दूइज्जइ दू० सा०।६।० वियडं गालेइ गालावेइ गालियं० '२६'।७।० चउहिं संझाहिं सज्झायं करेइ करेंतं वा सा० तं०-पुव्वाए संझाए पच्छिमाए संझाए अवर(मज्झ)ण्हे अड्ढरत्ते।८।०कालियसुयस्स परं तिण्हं पुच्छाणं पुच्छइ पु० सा०।९।०दिट्ठिवायस्स परं सत्तण्हं पुच्छाणं पुच्छइ पु० सा० '३६'।१०।० चउसु महामहेसु सज्झायं करेइ करेंतं वा सा० तं०-इन्दमहे खंदमहे जक्खमहे भूयमहे।११। चउसु महापाडिवएसु सज्झायं करेइ करेंतं वा सा० तं०-सुगिम्हियापाडिवए आसाढीपा० भद्दवय(इन्दमह)पा० कत्तियपा०।१२।० पोरिसिं सज्झायं उवाइणावेइ उवा० सा०।१३।० चाउक्कालं सज्झायं न करेइ नक० सा० '४६'।१४।० असज्झाइए सज्झायं करेइ क० सा०।१५।०अप्पणो असज्झाइए सज्झायं करेइ क० सा० '१५२'।१६।० हेट्ठिल्लाइं समोसरणाइं अवाएत्ता उवरिल्लाइं समोसरणाइं वा० वा० वा सा०।१७।०नव बंभचेराइं अवाएत्ता उवरिमसुयं वाएइ वा वा० सा० '१६९'।१८।० अवत्तं वाएइ वा० सा०।१९।० वत्तं न वाएइ नवा० सा०।२०।० अपत्तं वाएइ वा० सा०।२१।० पत्तं न वाएइ नवा० सा० '२१५'।२२। दोण्हंपि सरिसगाणं एकं संचिक्खावेइ एकं न संचिक्खावेइ एकं वाएइ एकं न वाएइ नवा० सा० '२२१'।२३।० आयरियउवज्झाएहिं अविदिन्नं गिरं आइयइ आइ० सा०।२४।० अन्नउत्थियं वा गारत्थियं वा वाएइ वा० वा सा०।२५।० पडिच्छइ प० सा०।२६।० एवं पासत्थं।२७-२८। ओसन्नं।२९-३०। कुसीलं।३१-३२। नितियं।३३-३४। संसत्तं '२४३' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं।३५-३६॥ एगुणवीसइमो उद्देसओ १९॥ जे भिक्खू मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउंचियं आलोएमाणस्स मासियं पलिउंचियं आलोएमाणस्स दोमासियं, एवं ववहारपढमुद्देसगमो णेयव्वो जाव दस गमा समत्ता एगत्तसो बहुत्तसोवि जाव सव्वमेवं सकयं एगओ साहणित्ता जाए य पट्ठवणाए पट्ठविए निव्विसमाणए पडिसेविज्जा सावि कसिणा तत्थेव आरुहेयव्वा सिया '३०९'।१-२२।० छम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा दोमासियं परिहारट्ठाणं (२४०)

९६० निशीथं छेदसूत्रं, उद्देशो-२०

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्र उद्देशक: २० आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [२३] दीप अनुक्रम [१३९०]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३४], छेदसूत्र - [१] “निशीथ” मूलं

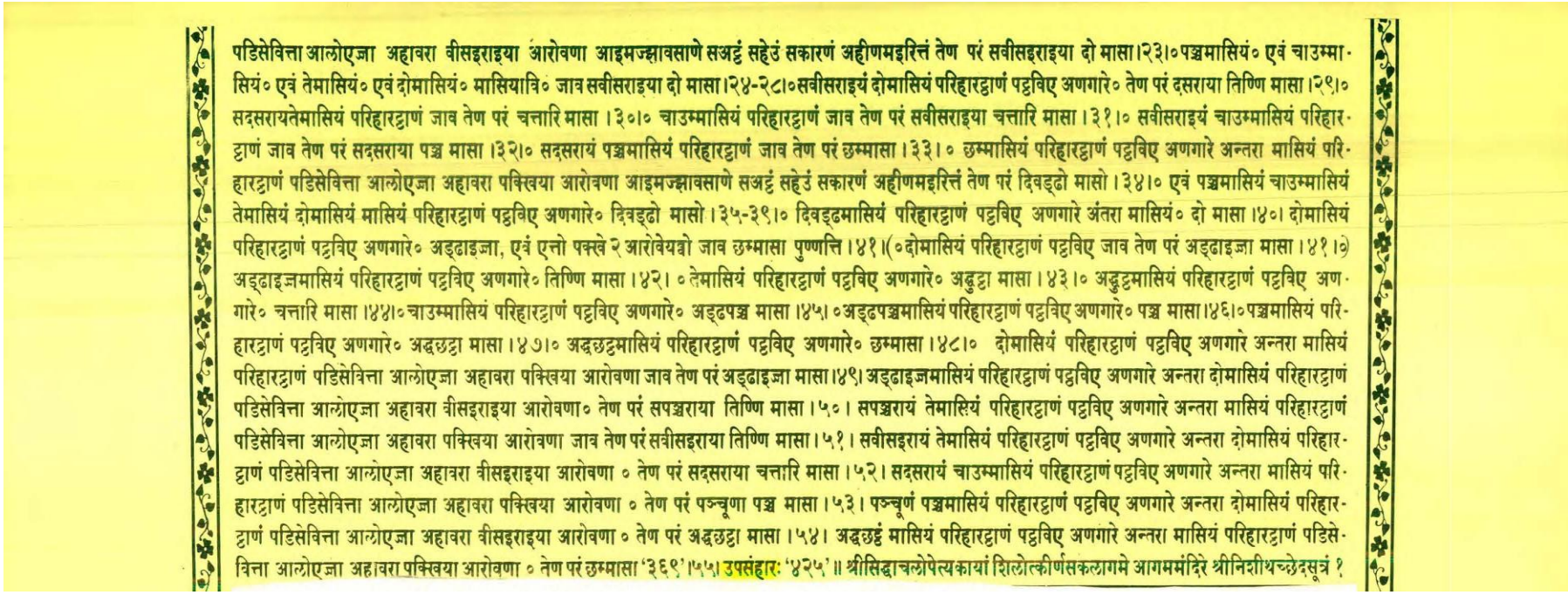

पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा वीसइराइया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं सवीसइराइया दो मासा।२३।०पञ्चमासियं० एवं चाउम्मासियं० एवं तेमासियं० एवं दोमासियं० मासियावि० जाव सवीसराइया दो मासा।२४-२८।०सवीसराइयं दोमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे० तेण परं दसराया तिण्णि मासा।२९।० सदसरायतेमासियं परिहारट्ठाणं जाव तेण परं चत्तारि मासा।३०।० चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं जाव तेण परं सवीसराइया चत्तारि मासा।३१।० सवीसराइयं चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं जाव तेण परं सदसराया पञ्च मासा।३२।० सदसरायं पञ्चमासियं परिहारट्ठाणं जाव तेण परं छम्मासा।३३।० छम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अन्तरा मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा पक्खिया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं दिवड्ढो मासो।३४।० एवं पञ्चमासियं चाउम्मासियं तेमासियं दोमासियं मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे० दिवड्ढो मासो।३५-३९।० दिवड्ढमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा मासियं० दो मासा।४०। दोमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे० अड्ढाइज्जा, एवं एत्तो पक्खे २ आरोवेयव्वो जाव छम्मासा पुण्णत्ति।४१।(०दोमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए जाव तेण परं अड्ढाइज्जा मासा।४१।) अड्ढाइज्जमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे० तिण्णि मासा।४२।०तेमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे० अद्धुट्ठा मासा।४३।० अद्धुट्ठमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे० चत्तारि मासा।४४।०चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे० अड्ढपञ्च मासा।४५।०अड्ढपञ्चमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे० पञ्च मासा।४६।०पञ्चमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे० अद्धछट्ठा मासा।४७।० अद्धछट्ठमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे० छम्मासा।४८।० दोमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अन्तरा मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा पक्खिया आरोवणा जाव तेण परं अड्ढाइज्जा मासा।४९। अड्ढाइज्जमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अन्तरा दोमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा वीसइराइया आरोवणा० तेण परं सपञ्चराया तिण्णि मासा।५०। सपञ्चरायं तेमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अन्तरा मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा पक्खिया आरोवणा जाव तेण परं सवीसइराया तिण्णि मासा।५१। सवीसइरायं तेमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अन्तरा दोमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा वीसइराइया आरोवणा ० तेण परं सदसराया चत्तारि मासा।५२। सदसरायं चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अन्तरा मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा पक्खिया आरोवणा ० तेण परं पञ्चूणा पञ्च मासा।५३। पञ्चूणं पञ्चमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अन्तरा दोमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा वीसइराइया आरोवणा ० तेण परं अद्धछट्ठा मासा।५४। अद्धछट्ठं मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अन्तरा मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा पक्खिया आरोवणा ० तेण परं छम्मासा '३६९'।५५। उपसंहारः '४२५'॥ श्रीसिद्धाचलेपेत्यकायां शिलोत्कीर्णसकलागमे आगममंदिरे श्रीनिशीथच्छेदसूत्रं ?

भाग 27	निशीथ-छेदसूत्र [१] ‘मूलं’ परिसमाप्त: मूल संशोधकः सम्पादकश्च पूज्य आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब किंचित् वैशिष्ट्य समर्पितेन सह पुन: संकलनकर्ता मुनि दीपरत्नसागरजी [M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

[३६] श्री बृहत्कल्प (छेदसूत्रम्-२)

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

“बृहत्कल्प” मूलं

[मूलं एव]

[आद्य संपादकश्री]

पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म॰ सा॰

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D.,श्रुतमहर्षि)

28/07/2017, शुक्रवार, २०७३ श्रावण शुक्ल ५ ‘सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि’ श्रेणि भाग-२७

प्रत सूत्रांक [१] दीप अनुक्रम [१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३५], छेदसूत्र - [२] “बृहत्कल्प” मूलं
	अत्र उद्देशक: १ आरब्ध:

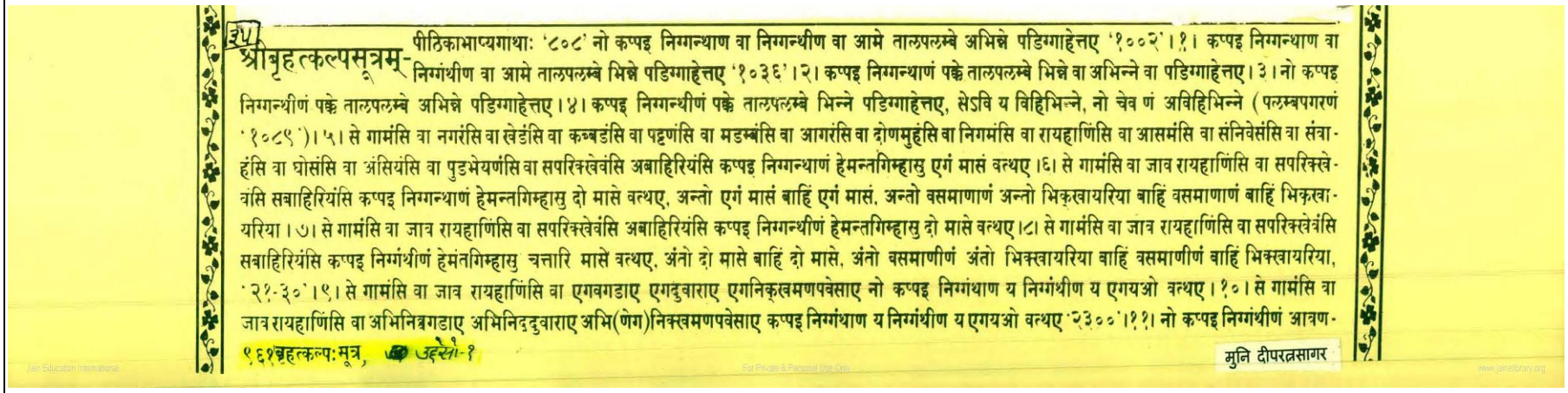
३५
श्रीबृहत्कल्पसूत्रम्-
पीठिकाभाष्यगाथाः '८०८' नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा आमे तालपलम्बे अभिन्ने पडिग्गाहेत्तए '१००२'।१। कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा आमे तालपलम्बे भिन्ने पडिग्गाहेत्तए '१०३६'।२। कप्पइ निग्गन्थाणं पक्के तालपलम्बे भिन्ने वा अभिन्ने वा पडिग्गाहेत्तए।३। नो कप्पइ निग्गन्थीणं पक्के तालपलम्बे अभिन्ने पडिग्गाहेत्तए।४। कप्पइ निग्गन्थीणं पक्के तालपलम्बे भिन्ने पडिग्गाहेत्तए, सेऽवि य विहिभिन्ने, नो चेव णं अविहिभिन्ने (पलम्बपगरणं '१०८९')।५। से गामंसि वा नगरंसि वा खेडंसि वा कब्बडंसि वा पट्टणंसि वा मडम्बंसि वा आगरंसि वा दोणमुहंसि वा निगमंसि वा रायहाणिंसि वा आसमंसि वा संनिवेसंसि वा संवाहंसि वा घोसंसि वा अंसियंसि वा पुडभेयणंसि वा सपरिक्खेवंसि अबाहिरियंसि कप्पइ निग्गन्थाणं हेमन्तगिम्हासु एगं मासं वत्थए।६। से गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा सपरिक्खेवंसि सबाहिरियंसि कप्पइ निग्गन्थाणं हेमन्तगिम्हासु दो मासे वत्थए, अन्तो एगं मासं बाहिं एगं मासं, अन्तो वसमाणाणं अन्तो भिक्खायरिया बाहिं वसमाणाणं बाहिं भिक्खायरिया।७। से गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा सपरिक्खेवंसि अबाहिरियंसि कप्पइ निग्गन्थीणं हेमन्तगिम्हासु दो मासे वत्थए।८। से गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा सपरिक्खेवंसि सबाहिरियंसि कप्पइ निग्गंथीणं हेमंतगिम्हासु चत्तारि मासे वत्थए, अंतो दो मासे बाहिं दो मासे, अंतो वसमाणीणं अंतो भिक्खायरिया बाहिं वसमाणीणं बाहिं भिक्खायरिया, '२१-३०'।९। से गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा एगवगडाए एगदुवाराए एगनिक्खमणपवेसाए नो कप्पइ निग्गंथाण य निग्गंथीण य एगयओ वत्थए।१०। से गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा अभिनिव्वगडाए अभिनिद्दुवाराए अभि(णेग)निक्खमणपवेसाए कप्पइ निग्गंथाण य निग्गंथीण य एगयओ वत्थए '२३००'।११। नो कप्पइ निग्गंथीणं आवण-
९६१बृहत्कल्प:मूत्र, उद्देशो-१
मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [१२]

दीप अनुक्रम [१२]

गिहंसि वा रत्थामुहंसि वा सिङ्घाडगंसि वा तियंसि वा चउक्कंसि वा चच्चरंसि वा अंतरावणंसि वा वत्थए।१२। कप्पइ निग्गंथाणं आवणगिहंसि वा जाव अंतरावणंसि वा वत्थए '२३३०'।१३। नो कप्पइ निग्गंथीणं अवङ्गुयदुवारिए उवस्सए वत्थए, एगं पत्थारं अंतो किच्चा एगं पत्थारं बाहिं किच्चा ओहाडियचिलिमिलियागंसि एवण्हं कप्पइ वत्थए '२३५७'।१४। कप्पइ निग्गंथाणं अवङ्गुयदुवारिए उवस्सए वत्थए '२३६६'।१५। कप्पइ निग्गंथीणं अंतोलित्तयं घडिमत्तयं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२३६९'।१६। नो कप्पइ निग्गंथाणं अंतोलित्तयं घडिमत्तयं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२३७५'।१७। कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा चेलचिलिमिलियं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२३८७'।१८। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा दगतीरंसि चिट्ठित्तए वा निसीइत्तए वा तुयट्टित्तए वा निद्दाइत्तए वा पयलाइत्तए वा असणं वा० आहारमाहारेत्तए वा उच्चारं वा पासवणं वा खेलं वा सिंघाणं वा परिट्ठवेत्तए, सज्झायं वा करेत्तए, धम्मजागरियं वा जागरित्तए, झाणं वा झाइत्तए, काउस्सग्गं वा करित्तए, ठाणं वा ठाइत्तए '२४३०'।१९। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा सचित्तकम्मे उवस्सए वत्थए।२०। कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अचित्तकम्मे उवस्सए वत्थए '२४३८'।२१। नो कप्पइ निग्गंथीणं सागारियं अनिस्साए वत्थए।२२। कप्पइ निग्गंथीणं सागारियनिस्साए वत्थए '२४५०'।२३। कप्पइ निग्गंथाणं सागारियनिस्साए वा अनिस्साए वा वत्थए '२४५३'।२४। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा सागारिए उवस्सए वत्थए, कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अप्पसागारिए उवस्सए वत्थए '२५५५'।२५। नो कप्पइ निग्गंथाणं इत्थिसागारिए उवस्सए वत्थए।२६। कप्पइ निग्गंथाणं पुरिससागारिए उवस्सए वत्थए।२७। नो कप्पइ निग्गंथीणं पुरिससागारिए उवस्सए वत्थए।२८। कप्पइ निग्गंथीणं इत्थिसागारिए उवस्सए वत्थए '२५८७'।२९। नो कप्पइ निग्गंथाणं पडिबद्धाए सेज्जाए वत्थए।३०। कप्पइ निग्गंथीणं पडिबद्धाए सेज्जाए वत्थए '२६३३'।३१। नो कप्पइ निग्गंथाणं गाहावइकुलस्स मज्झंमज्झेणं गंतुं वत्थए।३२। कप्पइ निग्गंथीणं गाहावइकुलस्स मज्झंमज्झेणं गंतुं वत्थए '२६८०'।३३। भिक्खू य अहिगरणं कट्टु तं अहिगरणं अविओसवेत्ता अविओसवियपाहुडे इच्छाए परो आढाएज्जा इच्छाए परो णो आढाएज्जा इच्छाए परो अब्भुट्ठेज्जा इच्छाए परो नो अब्भुट्ठेज्जा इच्छाए परो वंदेज्जा इच्छाए परो नो वंदेज्जा इच्छाए परो संभुञ्जेज्जा इच्छाए परो नो संभुञ्जेज्जा इच्छाए परो संवसेज्जा इच्छाए परो नो संवसेज्जा इच्छाए परो उवसमेज्जा इच्छाए परो नो उवसमेज्जा, जो उवसमइ तस्स अत्थि आराहणा जो न उवसमइ तस्स नत्थि आराहणा, तम्हा अप्पणा चेव उवसमियव्वं, से किमाहु भंते?, उवसमसारं खु सामण्णं '२७३८'।३४। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा वासावासासु चारए।३५। कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा हेमंतगिम्हासु चारए '२७६३'।३६। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा वेरज्जविरुद्धरज्जंसि सज्जं गमणं सज्जं आगमणं सज्जं गमणागमणं करेत्तए, जे खलु निग्गंथे वा निग्गंथी वा वेरज्जविरुद्धरज्जंसि सज्जं गमणं सज्जं आगमणं सज्जं गमणागमणं करेइ करेंतं वा साइजइ से दुहओ वीइक्कममाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '२७९५'।३७। निग्गंथं च णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठं केई वत्थेण वा पडिग्गहेण वा कम्बलेण वा पायपुंछणेण वा उवनिमंतेज्जा कप्पइ से सागारकडं गहाय आयरियपायमूले ठवेत्ता दोच्चंपि उग्गहं अणुन्नवेत्ता परिहारं परिहरित्तए '२८१८'।३८। निग्गंथं च णं बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खंतं समाणं केइ वत्थेण वा पडिग्गहेण वा कम्बलेण वा पायपुंछणेण वा उवनिमंतेज्जा कप्पइ से सागारकडं० '२८१९'।३९। निग्गंथिं च णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठं तं चेव णवरं पवत्तिणीपायमूले ठवेत्ता०।४०। निग्गंथिं च णं बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा जाव परिहारं परिहरित्तए '२८४०'।४१। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा राओ वा वियाले वा असणं वा० पडिग्गाहेत्तए।४२। नन्नत्थ एगेणं पुव्वपडिलेहिएणं सेज्जासंथारएणं '२८७३'।४३। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा राओ वा वियाले वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कम्बलं वा पायपुञ्छणं वा पडिग्गाहेत्तए '३००५'।४४। नन्नत्थ एगाए हरियाहडियाए, सावि य परिभुत्ता वा धोया वा रत्ता वा घट्टा वा मट्ठा वा संपधूमिया वा '३०४२'।४५। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा राओ वा वियाले वा अद्धाणगमणं एत्तए '३१४२'।४६। संखडिं वा संखडिपडियाए अद्धाणगमणं एत्तए '३२१०'।४७। नो कप्पइ निग्गन्थस्स एगाणियस्स राओ वा वियाले वा बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, कप्पइ से अप्पबिइयस्स वा अप्पतइयस्स वा राओ वा वियाले वा बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा '३२२५'।४८। नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए राओ वा वियाले वा बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, कप्पइ से अप्पतइयाए वा अप्पचउत्थीए वा राओ वा वियाले वा बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा '३२४३'।४९। पुरत्थिमेणं कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा जाव अङ्गमगहाओ एत्तए दक्खिणेणं० जाव कोसम्बीओ एत्तए पच्चत्थिमेणं० जाव थुणाविसयाओ एत्तए उत्तरेणं जाव

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [५०] दीप अनुक्रम [५०]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३५], छेदसूत्र - [२] “बृहत्कल्प” मूलं

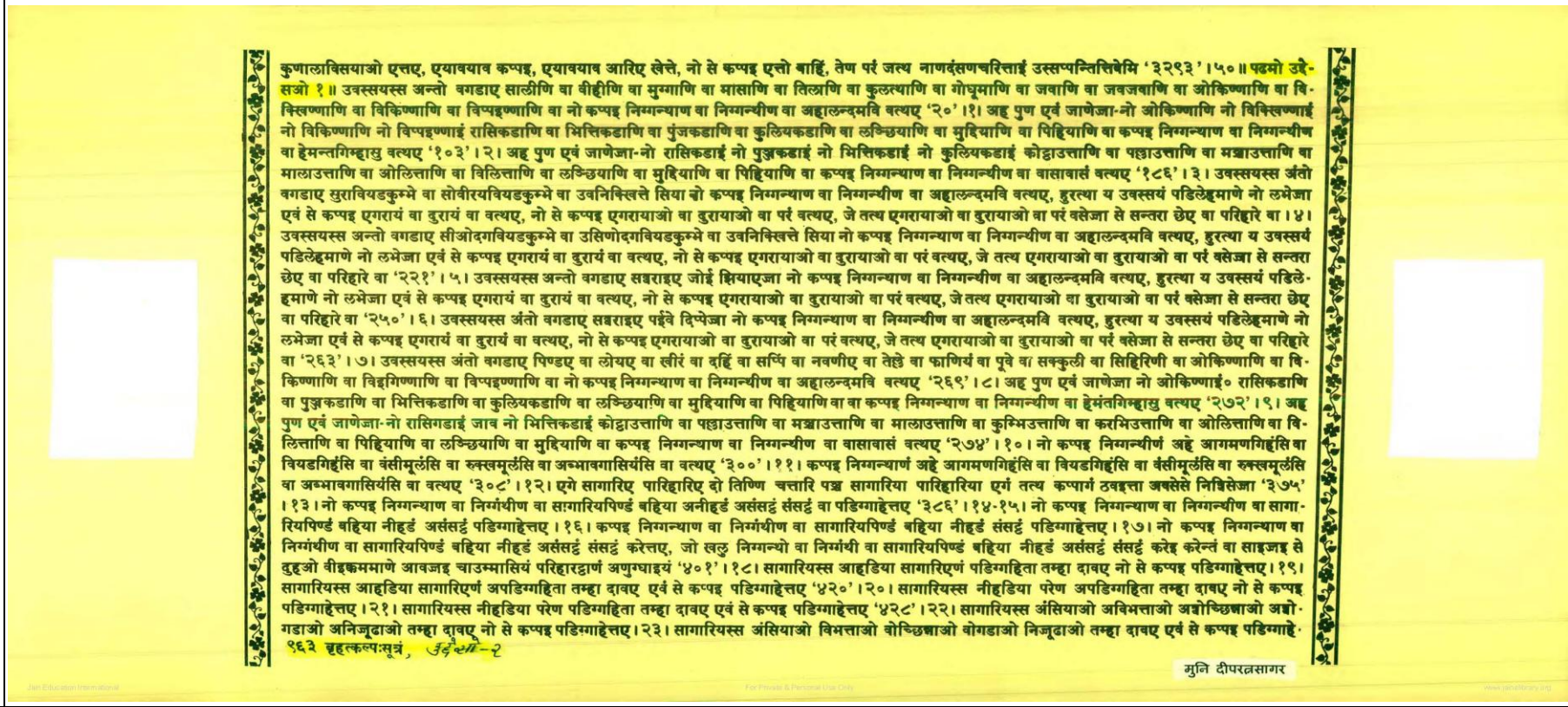

कुणालाविसयाओ एत्तए, एयावयाव कप्पइ, एयावयाव आरिए खेत्ते, नो से कप्पइ एत्तो बाहिं, तेण परं जत्थ नाणदंसणचरित्ताइं उस्सप्पन्तित्तिबेमि '३२९३'।५०॥ पढमो उद्देसओ १॥ उवस्सयस्स अन्तो वगडाए सालीणि वा वीहीणि वा मुग्गाणि वा मासाणि वा तिलाणि वा कुलत्थाणि वा गोधूमाणि वा जवाणि वा जवजवाणि वा ओकिण्णाणि वा विक्खिण्णाणि वा विकिण्णाणि वा विप्पइण्णाणि वा नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए '२०'।१। अह पुण एवं जाणेज्जा-नो ओकिण्णाणि नो विक्खिण्णाइं नो विकिण्णाणि नो विप्पइण्णाइं रासिकडाणि वा भित्तिकडाणि वा पुंजकडाणि वा कुलियकडाणि वा लञ्छियाणि वा मुद्दियाणि वा पिहियाणि वा कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा हेमन्तगिम्हासु वत्थए '१०३'।२। अह पुण एवं जाणेज्जा-नो रासिकडाइं नो पुञ्जकडाइं नो भित्तिकडाइं नो कुलियकडाइं कोट्ठाउत्ताणि वा पल्लाउत्ताणि वा मञ्चाउत्ताणि वा मालाउत्ताणि वा ओलित्ताणि वा विलित्ताणि वा लञ्छियाणि वा मुद्दियाणि वा पिहियाणि वा कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा वासावासं वत्थए '१८६'।३। उवस्सयस्स अंतो वगडाए सुरावियडकुम्भे वा सोवीरयवियडकुम्भे वा उवनिक्खित्ते सिया नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए, हुरत्था य उवस्सयं पडिलेहमाणे नो लभेजा एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वत्थए, नो से कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए, जे तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसेज्जा से सन्तरा छेए वा परिहारे वा।४। उवस्सयस्स अन्तो वगडाए सीओदगवियडकुम्भे वा उसिणोदगवियडकुम्भे वा उवनिक्खित्ते सिया नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए, हुरत्था य उवस्सयं पडिलेहमाणे नो लभेजा एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वत्थए, नो से कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए, जे तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसेज्जा से सन्तरा छेए वा परिहारे वा '२२१'।५। उवस्सयस्स अन्तो वगडाए सइराइए जोई झियाएज्जा नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए, हुरत्था य उवस्सयं पडिलेहमाणे नो लभेज्जा एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वत्थए, नो से कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए, जे तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसेज्जा से सन्तरा छेए वा परिहारे वा '२५०'।६। उवस्सयस्स अंतो वगडाए सइराइए पईवे दिप्पेज्जा नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए, हुरत्था य उवस्सयं पडिलेहमाणे नो लभेजा एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वत्थए, नो से कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए, जे तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसेज्जा से सन्तरा छेए वा परिहारे वा '२६३'।७। उवस्सयस्स अंतो वगडाए पिण्डए वा लोयए वा खीरं वा दहिं वा सप्पिं वा नवणीए वा तेल्ले वा फाणियं वा पूवे वा सक्कुली वा सिहिरिणी वा ओकिण्णाणि वा विकिण्णाणि वा विद्दगिण्णाणि वा विप्पइण्णाणि वा नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए '२६९'।८। अह पुण एवं जाणेज्जा नो ओकिण्णाइं० रासिकडाणि वा पुञ्जकडाणि वा भित्तिकडाणि वा कुलियकडाणि वा लञ्छियाणि वा मुद्दियाणि वा पिहियाणि वा वा कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा हेमंतगिम्हासु वत्थए '२७२'।९। अह पुण एवं जाणेज्जा-नो रासिगडाइं जाव नो भित्तिकडाइं कोट्ठाउत्ताणि वा पल्लाउत्ताणि वा मञ्चाउत्ताणि वा मालाउत्ताणि वा कुम्भिउत्ताणि वा करभिउत्ताणि वा ओलित्ताणि वा विलित्ताणि वा पिहियाणि वा लञ्छियाणि वा मुद्दियाणि वा कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा वासावासं वत्थए '२७४'।१०। नो कप्पइ निग्गन्थीणं अहे आगमणगिहंसि वा वियडगिहंसि वा वंसीमूलंसि वा रुक्खमूलंसि वा अब्भावगासियंसि वा वत्थए '३००'।११। कप्पइ निग्गन्थाणं अहे आगमणगिहंसि वा वियडगिहंसि वा वंसीमूलंसि वा रुक्खमूलंसि वा अब्भावगासियंसि वा वत्थए '३०८'।१२। एगे सागारिए पारिहारिए दो तिण्णि चत्तारि पञ्च सागारिया पारिहारिया एगं तत्थ कप्पागं ठवइत्ता अवसेसे निविसेज्जा '३७५'।१३। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा सागारियपिण्डं बहिया अनीहडं असंसट्ठं संसट्ठं वा पडिग्गाहेत्तए '३८६'।१४-१५। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा सागारियपिण्डं बहिया नीहडं असंसट्ठं पडिग्गाहेत्तए।१६। कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा सागारियपिण्डं बहिया नीहडं संसट्ठं पडिग्गाहेत्तए।१७। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा सागारियपिण्डं बहिया नीहडं असंसट्ठं संसट्ठं करेत्तए, जो खलु निग्गन्थो वा निग्गंथी वा सागारियपिण्डं बहिया नीहडं असंसट्ठं संसट्ठं करेइ करेन्तं वा साइज्जइ से दुहओ वीइक्कमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '४०१'।१८। सागारियस्स आहडिया सागारिएणं पडिग्गाहिता तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए।१९। सागारियस्स आहडिया सागारिएणं अपडिग्गाहिता तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए '४२०'।२०। सागारियस्स नीहडिया परेण अपडिग्गाहिता तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए।२१। सागारियस्स नीहडिया परेण पडिग्गाहिता तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए '४२८'।२२। सागारियस्स अंसियाओ अविभत्ताओ अवोच्छिन्नाओ अझोगडाओ अनिज्जूढाओ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए।२३। सागारियस्स अंसियाओ विभत्ताओ वोच्छिन्नाओ वोगडाओ निज्जूढाओ तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिग्गाहे-

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अत्र उद्देशक: २ आरब्ध:

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३५], छेदसूत्र - [२] “बृहत्कल्प” मूलं

प्रत सूत्रांक [२४]

दीप अनुक्रम [७४]

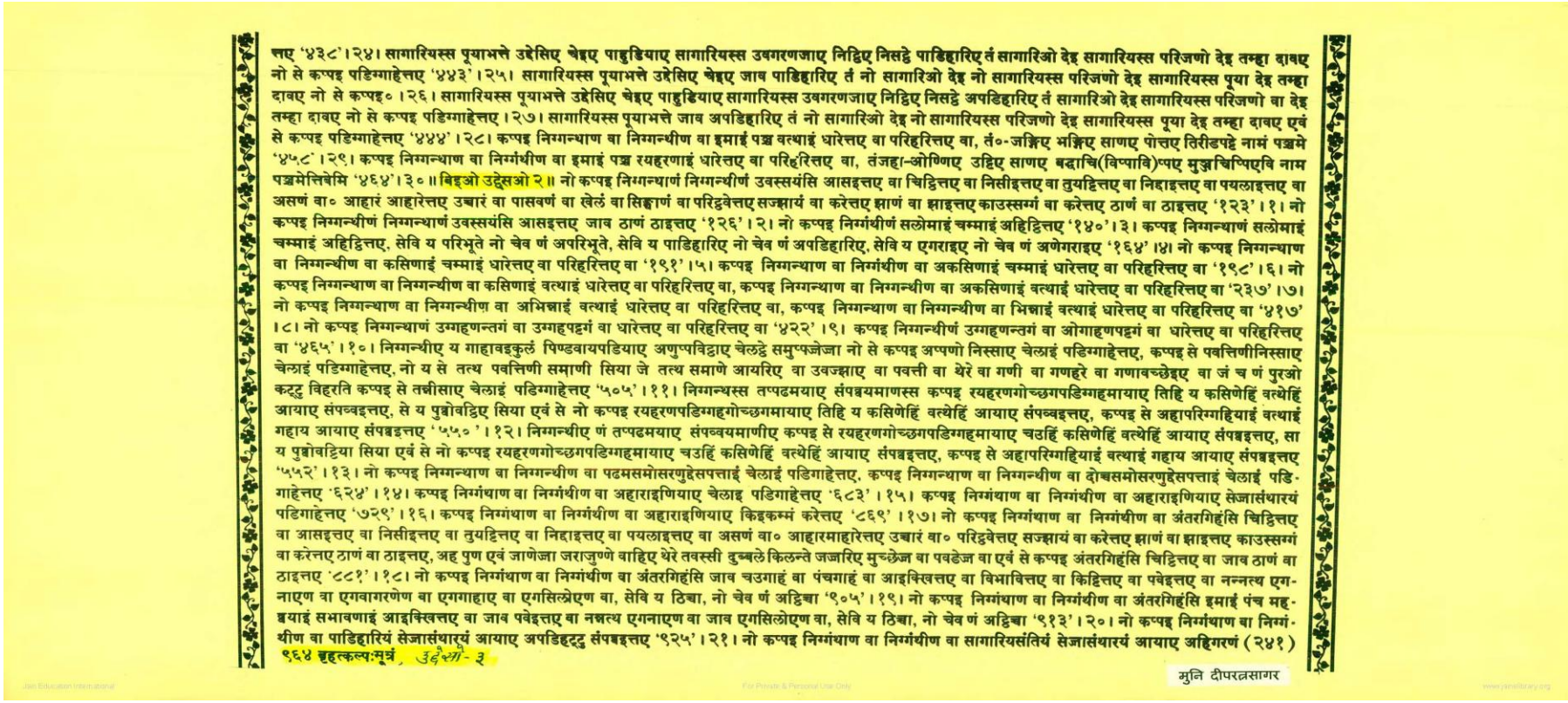

ल्लए '४३८'।२४। सागारियस्स पूयाभत्ते उद्देसिए चेइए पाहुडियाए सागारियस्स उवगरणजाए निट्ठिए निसट्ठे पाडिहारिए तं सागारिओ देइ सागारियस्स परिजणो देइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए '४४३'।२५। सागारियस्स पूयाभत्ते उद्देसिए चेइए जाव पाडिहारिए तं नो सागारिओ देइ नो सागारियस्स परिजणो देइ सागारियस्स पूया देइ तम्हा दावए नो से कप्पइ०।२६। सागारियस्स पूयाभत्ते उद्देसिए चेइए पाहुडियाए सागारियस्स उवगरणजाए निट्ठिए निसट्ठे अपडिहारिए तं सागारिओ देइ सागारियस्स परिजणो वा देइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए।२७। सागारियस्स पूयाभत्ते जाव अपडिहारिए तं नो सागारिओ देइ नो सागारियस्स परिजणो देइ सागारियस्स पूया देइ तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए '४४४'।२८। कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा इमाइं पञ्च वत्थाइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा, तं०-जङ्गिए भङ्गिए साणए पोत्तए तिरीडपट्टे नामं पञ्चमे '४५८'।२९। कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा इमाइं पञ्च रयहरणाइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा, तंजहा-ओण्णिए उट्टिए साणए वच्चाचि(विप्पावि)प्पए मुञ्जचिप्पिएवि नाम पञ्चमेत्तिवेमि '४६४'।३०॥ बिइओ उद्देसओ २॥ नो कप्पइ निग्गन्थाणं निग्गन्थीणं उवस्सयंसि आसइत्तए वा चिट्ठित्तए वा निसीइत्तए वा तुयट्टित्तए वा निद्दाइत्तए वा पयलाइत्तए वा असणं वा० आहारं आहारेत्तए उच्चारं वा पासवणं वा खेलं वा सिङ्घाणं वा परिट्ठवेत्तए सज्झायं वा करेत्तए झाणं वा झाइत्तए काउस्सग्गं वा करेत्तए ठाणं वा ठाइत्तए '१२३'।१। नो कप्पइ निग्गन्थीणं निग्गन्थाणं उवस्सयंसि आसइत्तए जाव ठाणं ठाइत्तए '१२६'।२। नो कप्पइ निग्गंथीणं सलोमाइं चम्माइं अहिट्ठित्तए '१४०'।३। कप्पइ निग्गन्थाणं सलोमाइं चम्माइं अहिट्ठित्तए, सेवि य परिभूते नो चेव णं अपरिभूते, सेवि य पाडिहारिए नो चेव णं अपडिहारिए, सेवि य एगराइए नो चेव णं अणेगराइए '१६४'।४। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा कसिणाइं चम्माइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '१९१'।५। कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा अकसिणाइं चम्माइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '१९८'।६। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा कसिणाइं वत्थाइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा, कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अकसिणाइं वत्थाइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२३७'।७। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अभिन्नाइं वत्थाइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा, कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा भिन्नाइं वत्थाइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '४१७'।८। नो कप्पइ निग्गन्थाणं उग्गहणन्तगं वा उग्गहपट्टगं वा धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '४२२'।९। कप्पइ निग्गन्थीणं उग्गहणन्तगं वा ओगाहणपट्टगं वा धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '४६५'।१०। निग्गन्थीए य गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुप्पविट्ठाए चेलट्ठे समुप्पज्जेजा नो से कप्पइ अप्पणो निस्साए चेलाइं पडिग्गाहेत्तए, कप्पइ से पवत्तिणीनिस्साए चेलाइं पडिग्गाहेत्तए, नो य से तत्थ पवत्तिणी समाणी सिया जे तत्थ समाणे आयरिए वा उवज्झाए वा पवत्ती वा थेरे वा गणी वा गणहरे वा गणावच्छेइए वा जं च णं पुरओ कट्टु विहरति कप्पइ से तन्नीसाए चेलाइं पडिग्गाहेत्तए '५०५'।११। निग्गन्थस्स तप्पढमयाए संपव्वयमाणस्स कप्पइ रयहरणगोच्छगपडिग्गहमायाए तिहि य कसिणेहिं वत्थेहिं आयाए संपव्वइत्तए, से य पुव्वोवट्ठिए सिया एवं से नो कप्पइ रयहरणपडिग्गहगोच्छगमायाए तिहि य कसिणेहिं वत्थेहिं आयाए संपव्वइत्तए, कप्पइ से अहापरिग्गहियाई वत्थाई गहाय आयाए संपव्वइत्तए '५५०'।१२। निग्गन्थीए णं तप्पढमयाए संपव्वयमाणीए कप्पइ से रयहरणगोच्छगपडिग्गहमायाए चउहिं कसिणेहिं वत्थेहिं आयाए संपव्वइत्तए, कप्पइ से अहापरिग्गहियाई वत्थाई गहाय आयाए संपव्वइत्तए, सा य पुव्वोवट्ठिया सिया एवं से नो कप्पइ रयहरणगोच्छगपडिग्गहमायाए चउहिं कसिणेहिं वत्थेहिं आयाए संपव्वइत्तए, कप्पइ से अहापरिग्गहियाई वत्थाई गहाय आयाए संपव्वइत्तए '५५२'।१३। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पढमसमोसरणुद्देसपत्ताइं चेलाइं पडिगाहेत्तए, कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा दोच्चसमोसरणुद्देसपत्ताइं चेलाइं पडिगाहेत्तए '६२४'।१४। कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अहाराइणियाए चेलाइ पडिगाहेत्तए '६८३'।१५। कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अहाराइणियाए सेज्जासंथारयं पडिगाहेत्तए '७२९'।१६। कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अहाराइणियाए किइकम्मं करेत्तए '८६९'।१७। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अंतरगिहंसि चिट्ठित्तए वा आसइत्तए वा निसीइत्तए वा तुयट्टित्तए वा निद्दाइत्तए वा पयलाइत्तए वा असणं वा० आहारमाहारेत्तए उच्चारं वा० परिट्ठवेत्तए सज्झायं वा करेत्तए झाणं वा झाइत्तए काउस्सग्गं वा करेत्तए ठाणं वा ठाइत्तए, अह पुण एवं जाणेज्जा जराजुण्णे वाहिए थेरे तवस्सी दुब्बले किलन्ते जज्जरिए मुच्छेज्ज वा पवडेज्ज वा एवं से कप्पइ अंतरगिहंसि चिट्ठित्तए वा जाव ठाणं वा ठाइत्तए '८८१'।१८। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अंतरगिहंसि जाव चउगाहं वा पंचगाहं वा आइक्खित्तए वा विभावित्तए वा किट्टित्तए वा पवेइत्तए वा नन्नत्थ एगनाएण वा एगवागरणेण वा एगगाहाए वा एगसिलोएण वा, सेवि य ठिचा, नो चेव णं अट्ठिचा '९०५'।१९। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अंतरगिहंसि इमाइं पंच महव्वयाइं सभावणाइं आइक्खित्तए वा जाव पवेइत्तए वा नन्नत्थ एगनाएण वा जाव एगसिलोएण वा, सेवि य ठिचा, नो चेव णं अट्ठिचा '९१३'।२०। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा पाडिहारियं सेज्जासंथारयं आयाए अपडिहट्टु संपव्वइत्तए '९२५'।२१। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा सागारियसंतियं सेज्जासंथारयं आयाए अहिगरणं (२४१)

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्र उद्देशक: ३ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [२२] दीप अनुक्रम [१०२]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३५], छेदसूत्र - [२] “बृहत्कल्प” मूलं

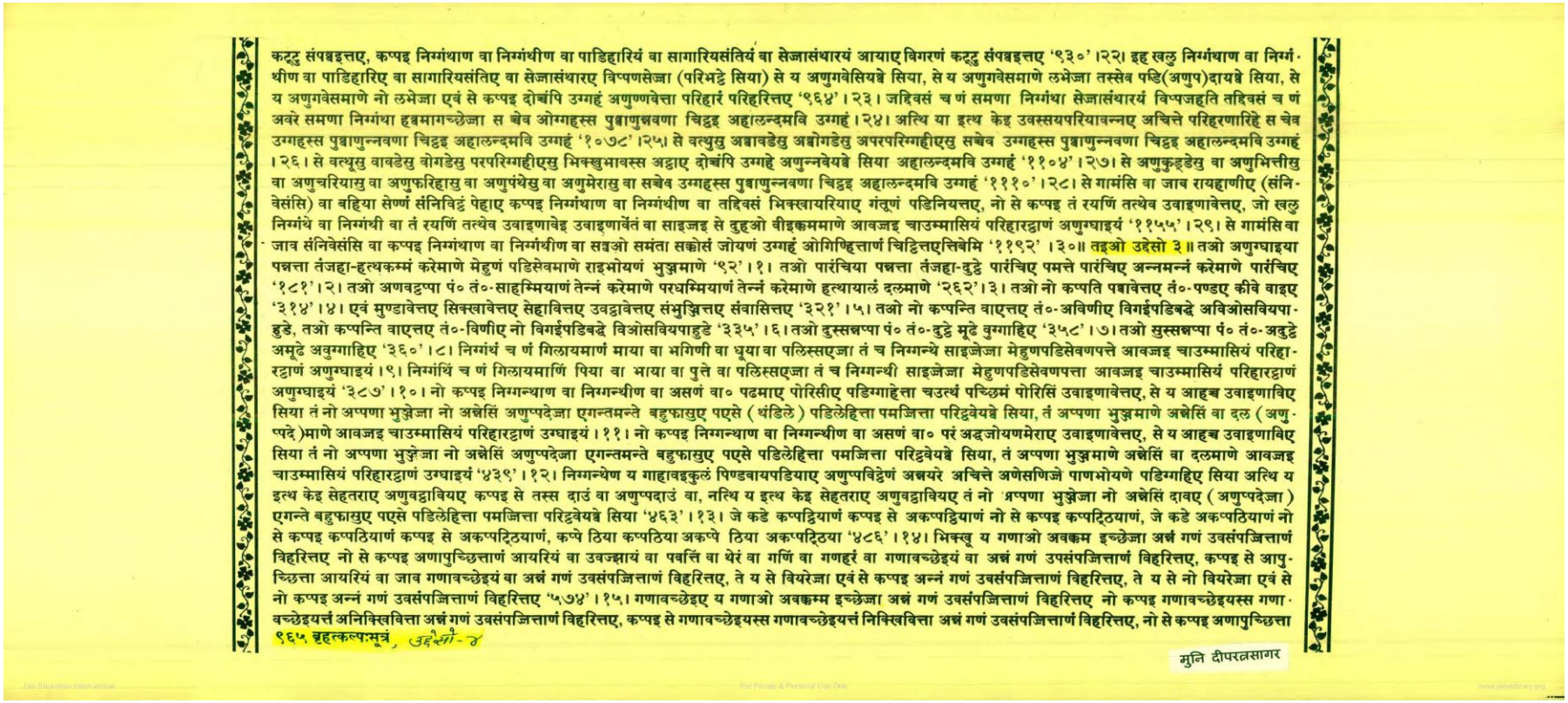

कट्टु संपव्वइत्तए, कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा पाडिहारियं वा सागारियसंतियं वा सेज्जासंथारयं आयाए विगरणं कट्टु संपव्वइत्तए '९३०'।२२। इह खलु निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा पाडिहारिए वा सागारियसंतिए वा सेज्जासंथारए विप्पणसेज्जा (परिभट्ठे सिया) से य अणुगवेसियव्वे सिया, से य अणुगवेसमाणे लभेज्जा तस्सेव पडि(अणुप)दायव्वे सिया, से य अणुगवेसमाणे नो लभेज्जा एवं से कप्पइ दोच्चंपि उग्गहं अणुण्णवेत्ता परिहारं परिहरित्तए '९६४'।२३। जदिवसं च णं समणा निग्गंथा सेज्जासंथारयं विप्पजहति तदिवसं च णं अवरे समणा निग्गंथा हव्वमागच्छेज्जा स चेव ओग्गहस्स पुव्वाणुन्नवणा चिट्ठइ अहालन्दमवि उग्गहं।२४। अत्थि या इत्थ केइ उवस्सयपरियावन्नए अचित्ते परिहरणारिहे स चेव उग्गहस्स पुव्वाणुन्नवणा चिट्ठइ अहालन्दमवि उग्गहं '१०७८'।२५। से वत्थुसु अव्वावडेसु अव्वोगडेसु अपरपरिग्गहीएसु सव्वेव उग्गहस्स पुव्वाणुन्नवणा चिट्ठइ अहालन्दमवि उग्गहं।२६। से वत्थूसु वावडेसु वोगडेसु परपरिग्गहीएसु भिक्खुभावस्स अट्ठाए दोच्चंपि उग्गहे अणुन्नवेयव्वे सिया अहालन्दमवि उग्गहं '११०४'।२७। से अणुकुड्डेसु वा अणुभित्तीसु वा अणुचरियासु वा अणुफरिहासु वा अणुपंथेसु वा अणुमेरासु वा सव्वेव उग्गहस्स पुव्वाणुन्नवणा चिट्ठइ अहालन्दमवि उग्गहं '१११०'।२८। से गामंसि वा जाव रायहाणीए (संनिवेसंसि) वा बहिया सेण्णं संनिविट्ठं पेहाए कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा तदिवसं भिक्खायरियाए गंतूणं पडिनियत्तए, नो से कप्पइ तं रयणिं तत्थेव उवाइणावेत्तए, जो खलु निग्गंथे वा निग्गंथी वा तं रयणिं तत्थेव उवाइणावेइ उवाइणावेंतं वा साइज्जइ से दुहओ वीइक्कममाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '११५५'।२९। से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा सव्वओ समंता सक्कोसं जोयणं उग्गहं ओगिण्हित्ताणं चिट्ठित्तएत्तिबेमि '११९२'।३०॥ तइओ उद्देसो ३॥ तओ अणुग्घाइया पन्नत्ता तंजहा-हत्थकम्मं करेमाणे मेहुणं पडिसेवमाणे राइभोयणं भुञ्जमाणे '९२'।१। तओ पारंचिया पन्नत्ता तंजहा-दुट्ठे पारंचिए पमत्ते पारंचिए अन्नमन्नं करेमाणे पारंचिए '१८१'।२। तओ अणवट्ठप्पा पं० तं०-साहम्मियाणं तेन्नं करेमाणे पवधम्मियाणं तेन्नं करेमाणे हत्थायालं दलमाणे '२६२'।३। तओ नो कप्पति पव्वावेत्तए तं०-पण्डए कीवे वाइए '३१४'।४। एवं मुण्डावेत्तए सिक्खावेत्तए सेहावित्तए उवट्ठावेत्तए संभुञ्जित्तए संवासित्तए '३२१'।५। तओ नो कप्पन्ति वाएत्तए तं०-अविणीए विगईपडिबद्धे अविओसवियपाहुडे, तओ कप्पन्ति वाएत्तए तं०-विणीए नो विगईपडिबद्धे विओसवियपाहुडे '३३५'।६। तओ दुस्सन्नप्पा पं० तं०-दुट्ठे मूढे वुग्गाहिए '३५८'।७। तओ सुस्सन्नप्पा पं० तं०-अदुट्ठे अमूढे अवुग्गाहिए '३६०'।८। निग्गंथं च णं गिलायमाणं माया वा भगिणी वा धूया वा पलिस्सएज्जा तं च निग्गन्थे साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं।९। निग्गंथिं च णं गिलायमाणिं पिया वा भाया वा पुत्ते वा पलिस्सएज्जा तं च निग्गन्थी साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ता आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '३८७'।१०। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा असणं वा० पढमाए पोरिसीए पडिग्गाहेत्ता चउत्थं पच्छिमं पोरिसिं उवाइणावेत्तए, से य आहच्च उवाइणाविए सिया तं नो अप्पणा भुञ्जेज्जा नो अन्नेसिं अणुप्पदेज्जा एगन्तमन्ते बहुफासुए पएसे (थंडिले) पडिलेहित्ता पमज्जित्ता परिट्ठवेयव्वे सिया, तं अप्पणा भुञ्जमाणे अन्नेसिं वा दल (अणुप्पदे)माणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं।११। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा असणं वा० परं अद्धजोयणमेराए उवाइणावेत्तए, से य आहच्च उवाइणाविए सिया तं नो अप्पणा भुञ्जेज्जा नो अन्नेसिं अणुप्पदेज्जा एगन्तमन्ते बहुफासुए पएसे पडिलेहित्ता पमज्जित्ता परिट्ठवेयव्वे सिया, तं अप्पणा भुञ्जमाणे अन्नेसिं वा दलमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं '४३९'।१२। निग्गन्थेण य गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुप्पविट्ठेणं अन्नयरे अचित्ते अणेसणिज्जे पाणभोयणे पडिग्गहिए सिया अत्थि य इत्थ केइ सेहतराए अणुवट्ठावियए कप्पइ से तस्स दाउं वा अणुप्पदाउं वा, नत्थि य इत्थ केइ सेहतराए अणुवट्ठावियए तं नो अप्पणा भुञ्जेज्जा नो अन्नेसिं दावए (अणुप्पदेज्जा) एगन्ते बहुफासुए पएसे पडिलेहित्ता पमज्जित्ता परिट्ठवेयव्वे सिया '४६३'।१३। जे कडे कप्पट्ठियाणं कप्पइ से अकप्पट्ठियाणं नो से कप्पइ कप्पट्ठियाणं, जे कडे अकप्पठियाणं नो से कप्पइ कप्पठियाणं कप्पइ से अकप्पट्ठियाणं, कप्पे ठिया कप्पठिया अकप्पे ठिया अकप्पट्ठिया '४८६'।१४। भिक्खू य गणाओ अवक्कम इच्छेज्जा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए नो से कप्पइ अणापुच्छित्ताणं आयरियं वा उवज्झायं वा पवत्तिं वा थेरं वा गणिं वा गणहरं वा गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उपसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से वियरेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से नो वियरेज्जा एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए '५७४'।१५। गणावच्छेइए य गणाओ अवक्कम्म इच्छेज्जा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए नो कप्पइ गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्तं अनिक्खिवित्ता अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्तं निक्खिवित्ता अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अत्र उद्देशक: ४ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [१६]

दीप अनुक्रम [१२६]

आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से वियरेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से नो वियरन्ति एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए।१६। आयरियउवज्झाए य गणाओ अवक्कम्म इच्छेज्जा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नो से कप्पइ आयरियउवज्झायस्स आयरियउवज्झायत्तं अनिक्खिवित्ता अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आयरियउवज्झायस्स आयरियउवज्झायत्तं निक्खिवित्ता अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से वियरेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से नो वियरेज्जा एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, जत्थुत्तरियं धम्मविणयं लभेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, जत्थुत्तरियं धम्मविणयं नो लभेज्जा एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ‘५९४’।१८। गणावच्छेइए य गणाओ अवक्कम्म इच्छेज्जा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए नो से कप्पइ गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्तं अनिक्खिवित्ता०विहरित्तए कप्पइ से गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्तं निक्खिवित्ताणं अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से वियरंति एवं से कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से नो वियरंति एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, जत्थुत्तरियं धम्मविणयं लभेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, जत्थुत्तरियं धम्मविणयं नो लभेज्जा एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए।१९। आयरियउवज्झाए य गणाओ अवक्कम्म इच्छेज्जा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए नो से कप्पइ आयरियउवज्झायस्स आयरियउवज्झायत्तं अनिक्खिवित्ता ० विहरित्तए, कप्पइ से आयरियउवज्झायस्स आयरियउवज्झायत्तं निक्खिवित्ताणं अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से वियरंति एवं से कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से नो वियरंति एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, जत्थुत्तरियं धम्मविणयं लभेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, जत्थुत्तरियं धम्मविणयं नो लभेज्जा एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए।२०। भिक्खू य इच्छेज्जा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, ते य से वियरंति एवं से कप्पइ अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, ते य से नो वियरन्ति एवं से नो कप्पइ अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, नो से कप्पइ तेसिं कारणं अदीवेत्ता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से तेसिं कारणं दीवेत्ता०।२१। गणावच्छेइए य इच्छेज्जा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, नो से कप्पइ गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्तं अनिक्खिवित्ता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्तं निक्खिवित्ता ० उद्दिसावेत्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, ते य से वियरंति एवं से कप्पइ अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, ते य से नो वियरंति एवं से नो कप्पइ अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, नो से कप्पइ तेसिं कारणं अदीवेत्ता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से तेसिं कारणं दीवेत्ता अन्नं आयरियं वा उवज्झायं वा उद्दिसावेत्तए ‘६१७’।२२। आयरियउवज्झाए इच्छेज्जा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, नो से कप्पइ आयरियउवज्झायस्स आयरियउवज्झायत्तं अनिक्खिवित्ता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसा-

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [२३] दीप अनुक्रम [१६५]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३५], छेदसूत्र - [२] “बृहत्कल्प” मूलं

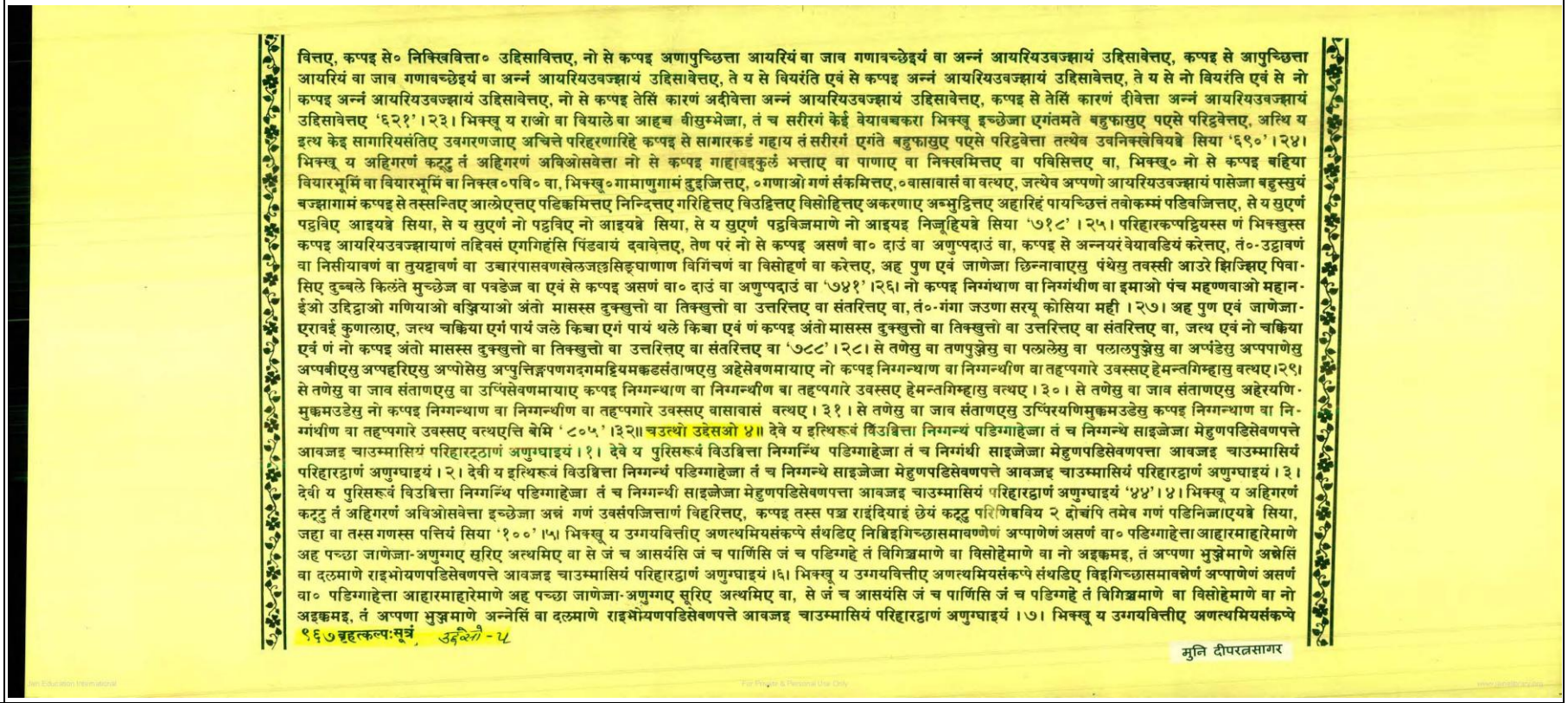

वित्तए, कप्पइ से० निक्खिवित्ता० उद्दिसावित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, ते य से वियरंति एवं से कप्पइ अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, ते य से नो वियरंति एवं से नो कप्पइ अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, नो से कप्पइ तेसिं कारणं अदीवेत्ता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से तेसिं कारणं दीवेत्ता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए ‘६२१’।२३। भिक्खू य राओ वा वियाले वा आहच्च वीसुम्भेज्जा, तं च सरीरगं केई वेयावच्चकरा भिक्खू इच्छेज्जा एगंतमते बहुफासुए पएसे परिट्ठवेत्तए, अत्थि य इत्थ केइ सागारियसंतिए उवगरणजाए अचित्ते परिहरणारिहे कप्पइ से सागारकडं गहाय तं सरीरगं एगंते बहुफासुए पएसे परिट्ठवेत्ता तत्थेव उवनिक्खेवियव्वे सिया ‘६९०’।२४। भिक्खू य अहिगरणं कट्टु तं अहिगरणं अविओसवेत्ता नो से कप्पइ गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, भिक्खू० नो से कप्पइ बहिया वियारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्ख० पवि० वा, भिक्खू० गामाणुगामं दुइज्जित्तए, ०गणाओ गणं संकमित्तए, ०वासावासं वा वत्थए, जत्थेव अप्पणो आयरियउवज्झायं पासेज्जा बहुस्सुयं बज्झागामं कप्पइ से तस्सन्तिए आलोएत्तए पडिकमित्तए निन्दित्तए गरिहित्तए विउट्टित्तए विसोहित्तए अकरणाए अब्भुट्ठित्तए अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जित्तए, से य सुएणं पट्ठविए आइयव्वे सिया, से य सुएणं नो पट्ठविए नो आइयव्वे सिया, से य सुएणं पट्ठविज्जमाणे नो आइयइ निज्जूहियव्वे सिया ‘७१८’।२५। परिहारकप्पट्ठियस्स णं भिक्खुस्स कप्पइ आयरियउवज्झायाणं तदिवसं एगगिहंसि पिंडवायं दवावेत्तए, तेण परं नो से कप्पइ असणं वा० दाउं वा अणुप्पदाउं वा, कप्पइ से अन्नयरं वेयावडियं करेत्तए, तं०-उट्ठावणं वा निसीयावणं वा तुयट्टावणं वा उच्चारपासवणखेलजल्लसिङ्घाणाण विगिंचणं वा विसोहणं वा करेत्तए, अह पुण एवं जाणेज्जा छिन्नावाएसु पंथेसु तवस्सी आउरे झिज्झिए पिवासिए दुब्बले किलंते मुच्छेज्ज वा पवडेज्ज वा एवं से कप्पइ असणं वा० दाउं वा अणुप्पदाउं वा ‘७४१’।२६। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा इमाओ पंच महण्णवाओ महानईओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ वञ्जियाओ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा संतरित्तए वा, तं०-गंगा जउणा सरयू कोसिया मही ।२७। अह पुण एवं जाणेज्जा-एरावई कुणालाए, जत्थ चक्किया एगं पायं जले किच्चा एगं पायं थले किच्चा एवं णं कप्पइ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा संतरित्तए वा, जत्थ एवं नो चक्किया एवं णं नो कप्पइ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा संतरित्तए वा ‘७८८’।२८। से तणेसु वा तणपुञ्जेसु वा पलालेसु वा पलालपुञ्जेसु वा अप्पंडेसु अप्पपाणेसु अप्पबीएसु अप्पहरिएसु अप्पोसेसु अप्पुत्तिङ्गपणगदगमट्टियमक्कडसंताणएसु अहेसेवणमायाए नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा तहप्पगारे उवस्सए हेमन्तगिम्हासु वत्थए।२९। से तणेसु वा जाव संताणएसु वा उप्पिंसेवणमायाए कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा तहप्पगारे उवस्सए हेमन्तगिम्हासु वत्थए।३०। से तणेसु वा जाव संताणएसु अहेरयणिमुक्कमउडेसु नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा तहप्पगारे उवस्सए वासावासं वत्थए।३१। से तणेसु वा जाव संताणएसु उप्पिंरयणिमुक्कमउडेसु कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा तहप्पगारे उवस्सए वत्थएत्ति बेमि ‘८०५’।३२॥ चउत्थो उद्देसओ ४॥ देवे य इत्थिरूवं विउव्वित्ता निग्गन्थं पडिग्गाहेज्जा तं च निग्गन्थे साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं।१। देवे य पुरिसरूवं विउव्वित्ता निग्गन्थिं पडिग्गाहेज्जा तं च निग्गंथी साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ता आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं।२। देवी य इत्थिरूवं विउव्वित्ता निग्गन्थं पडिग्गाहेज्जा तं च निग्गन्थे साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं।३। देवी य पुरिसरूवं विउव्वित्ता निग्गन्थिं पडिग्गाहेज्जा तं च निग्गन्थी साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ता आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ‘४४’।४। भिक्खू य अहिगरणं कट्टु तं अहिगरणं अविओसवेत्ता इच्छेज्जा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ तस्स पञ्च राइंदियाइं छेयं कट्टु परिणिव्ववियं २ दोच्चंपि तमेव गणं पडिनिज्जाएयव्वे सिया, जहा वा तस्स गणस्स पत्तियं सिया ‘१००’।५। भिक्खू य उग्गयवित्तीए अणत्थमियसंकप्पे संथडिए निव्विइगिच्छासमावण्णेणं अप्पाणेणं असणं वा० पडिग्गाहेत्ता आहारमाहारेमाणे अह पच्छा जाणेज्जा-अणुग्गए सूरिए अत्थमिए वा से जं च आसयंसि जं च पाणिंसि जं च पडिग्गहे तं विगिञ्चमाणे वा विसोहेमाणे वा नो अइक्कमइ, तं अप्पणा भुञ्जेमाणे अन्नेसिं वा दलमाणे राइभोयणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं।६। भिक्खू य उग्गयवित्तीए अणत्थमियसंकप्पे संथडिए विइगिच्छासमावन्नेणं अप्पाणेणं असणं वा० पडिग्गाहेत्ता आहारमाहारेमाणे अह पच्छा जाणेज्जा-अणुग्गए सूरिए अत्थमिए वा, से जं च आसयंसि जं च पाणिंसि जं च पडिग्गहे तं विगिञ्चमाणे वा विसोहेमाणे वा नो अइक्कमइ, तं अप्पणा भुञ्जमाणे अन्नेसिं वा दलमाणे राइभोयणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं।७। भिक्खू य उग्गयवित्तीए अणत्थमियसंकप्पे

९६७ बृहत्कल्पःसूत्रं, उद्देशो - ५

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अत्र उद्देशक: ५ आरब्ध:

असंथडिए निव्विइगिच्छसमावण्णेणं अप्पाणेणं असणं वा० पडिग्गाहेत्ता आहारमाहारेमाणे अह पच्छा जाणेज्जा-अणुग्गए सूरिए अत्थमिए वा, से जं च आसयंसि जं च पाणिंसि जं च पडिग्गहे तं विगिञ्चमाणे वा विसोहेमाणे वा नाइक्कमइ, तं अप्पणा भुञ्जमाणे अन्नेसिं वा दलमाणे राइभो० चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं।८। भिक्खू य उग्गयवित्तीए अणत्थमियसंकप्पे असंथडिए विइगिच्छासमावन्नेणं अप्पाणेणं असणं वा० पडिग्गाहेत्ता आहारमाहारेमाणे अह पच्छा जाणेज्जा-अणुग्गए सूरिए अत्थमिए वा, से जं च मुहे जं च पाणिंसि जं च पडिग्गहंसि तं विगिञ्चमाणे वा विसोहेमाणे वा न अइक्कमइ, तं अप्पणा भुञ्जमाणे अन्नेसिं वा दलमाणे राइभोयणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '१४५'।९। इह खलु निग्गन्थस्स वा निग्गन्थीए वा राओ वा वियाले वा सपाणे सभोयणे उग्गाले आगच्छेज्जा तं विगिञ्चमाणे वा विसोहेमाणे वा नो अइक्कमइ, तं उग्गिलित्ता पच्चोगिलमाणे राइभोयणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '१७७'।१०। निग्गन्थस्स य गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुप्पविट्ठस्स अंतो पडिग्गहंसि से पाणे वा बीए वा रए वा परियावज्जेज्जा तं च संचाएइ विगिञ्चित्तए वा विसोहित्तए वा तओ पुव्वामेव आलोइय २ विसोहिय २ तओ संजयामेव भुञ्जेज्ज वा पिएज्ज वा, तं च नो संचाएइ विगिञ्चत्तए वा विसोहेत्तए वा तं नो अप्पणा भुञ्जेज्जा नो अन्नेसिं दावए एगन्ते बहुफासुए पएसे थंडिले पडिलेहित्ता पमज्जित्ता परिट्ठवेयव्वे सिया '२१३'।११। निग्गन्थस्स य गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुप्पविट्ठस्स अंतो पडिग्गहगंसि दए वा दगरए वा दगफुसिए वा परियावज्जेज्जा से य उसिणे भोयणजाए परिभोत्तव्वे सिया, से य नो उसिणे सीए भोयणजाए तं नो अप्पणा भुञ्जेज्जा नो अन्नेसिं दावए एगन्ते बहुफासुए पएसे थंडिले पडिलेहित्ता पमज्जित्ता परिट्ठवेयव्वे सिया '२३५'।१२। निग्गन्थीए य राओ वा वियाले वा उच्चारं वा पासवणं वा विगिञ्चमाणीए वा विसोहेमाणीए वा अन्नयरे पसुजाइए वा पक्खिजाइए वा अन्नयरं इन्दियजायं परामुसेज्जा तं च निग्गन्थी साइज्जेज्जा हत्थकम्मपडिसेवणपत्ता आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं।१३। निग्गन्थीए य राओ वा वियाले वा उच्चारं वा पासवणं वा विगिञ्चमाणीए वा विसोहेमाणीए वा अन्नयरे पसुजाइए वा पक्खिजाइए वा अन्नयरंसि सोयंसि ओगाहेज्जा तं च निग्गन्थी साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ता आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '२४५'।१४। नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए होत्तए।१५। नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा।१६। नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा।१७। नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए गामाणुगामं दूइज्जित्तए।१८। नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए वासावासं वत्थए '२५१'।१९। नो कप्पइ निग्गन्थीए अचेलियाए होत्तए '२५६'।२०। नो कप्पइ निग्गन्थीए अपाइयाए होत्तए '२६०'।२१। नो कप्पइ निग्गन्थीए वोसट्ठकाइयाए होत्तए '२६१'।२२। नो कप्पइ निग्गन्थीए बहियाः गामस्स वा जाव संनिवेसस्स वा उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहाए एगपाइयाए ठिच्चा आयावणाए आयावेत्तए।२३। कप्पइ से उवस्सयस्स अंतो वगडाए संघाडिपडिबद्धाए पलंवियबाहिं(हु)याए समतलपाइयाए ठिच्चा आयावणाए आयावेत्तए २६९'।२४। नो कप्पइ निग्गन्थीए ठाणाइयाए होत्तए।२५। नो कप्पइ निग्गन्थीए पडिमट्ठाइयाए होत्तए। २६। नो कप्पइ निग्गन्थीए उक्कुडियासणियाए होत्तए। २७। नो कप्पइ निग्गन्थीए नेसिज्जियाए होत्तए।२८। नो कप्पइ निग्गन्थीए वीरासणियाए होत्तए। २९। नो कप्पइ निग्गन्थीए दण्डासणियाए होत्तए। ३०। नो कप्पइ निग्गन्थीए लगण्डसाइयाए होत्तए।३१। नो कप्पइ निग्गन्थीए ओमंथियाए होत्तए।३२। नो कप्पइ निग्गन्थीए उत्ताणियाए होत्तए।३३। नो कप्पइ निग्गन्थीए अम्बखुज्जियाए होत्तए।३४। नो कप्पइ निग्गन्थीए एगपासियाए होत्तए '२८१'।३५। नो कप्पइ निग्गन्थीणं आउञ्चणपट्टगं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा।३६। कप्पइ निगन्थाणं आउञ्चणपट्टगं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा।३७। नो कप्पइ निग्गन्थीणं सावस्सयंसि आसणंसि चिट्टित्तए वा निसीइत्तए वा आसइत्तए वा तुयट्टित्तए वा।३८। कप्पइ निग्गन्थाणं सावस्सयंसि आसणंसि चिट्टित्तए वा निसीइत्तए वा आसइत्तए वा तुयट्टित्तए वा।३९। नो कप्पइ निग्गन्थीणं सविसाणंसि फलगंसि वा पीढंसि वा जाव तुयट्टित्तए वा। ४०। कप्पइ निग्गन्थाणं जाव तुयट्टित्तए वा '२८९'। ४१। नो कप्पइ निग्गन्थीणं सवेण्टयं लाउयं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा।४२। कप्पइ निग्गन्थाणं सवेण्टयं लाउयं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२९०'।४३। नो कप्पइ निग्गन्थीणं सवेण्टया पायकेसरिया धारेत्तए वा परिहरित्तए वा।४४। कप्पइ निग्गन्थाणं सवेण्टया पायकेसरिया धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२९१'।४५। नो कप्पइ निग्गन्थीणं दारुदण्डयं पायपुञ्छणं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा।४६। कप्पइ निग्गन्थाणं दारुदण्डयं पायपुञ्छणं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२९२'।४७। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अन्नमन्नस्स मोयं आइत्तए वा आयमित्तए वा नन्नत्थ आगाढागाढेसु रोगायङ्केसु '३१२'।४८। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पारियासियस्स आहारस्स जाव तयप्पमाणमेत्तमवि भूइप्पमाणमेत्तमवि बिंदुप्पमाणमेत्तमवि आहारमाहारेत्तए, नन्नत्थ आगाढागाढेसु रोगायङ्केसु '३२८'।४९। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पारियासिएणं आलेवणजाएणं गायाई (२४२)

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [५३] दीप अनुक्रम [१९५से -२१५]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३५], छेदसूत्र - [२] “बृहत्कल्प” मूलं

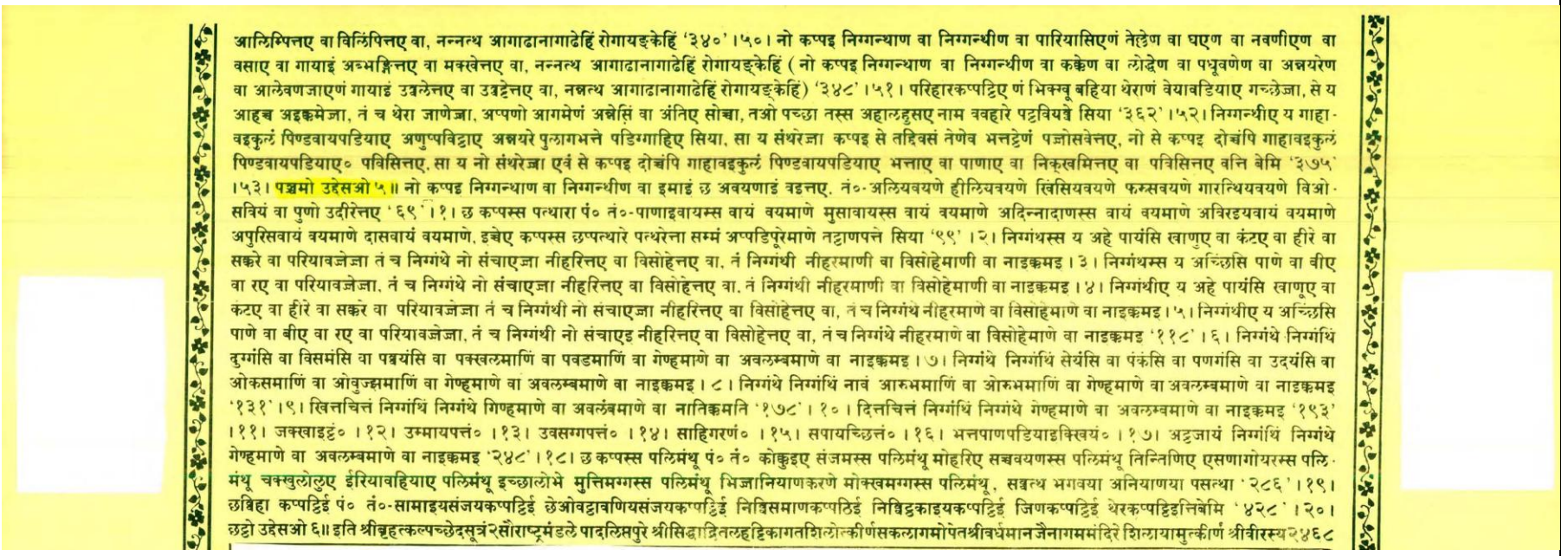

आलिम्पित्तए वा विलिंपित्तए वा, नन्नत्थ आगाढानागाढेहिं रोगायङ्केहिं '३४०'।५०। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पारियासिएणं तेइणेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा गायाइं अब्भङ्गित्तए वा मक्खेत्तए वा, नन्नत्थ आगाढानागाढेहिं रोगायङ्केहिं (नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा कक्केण वा लोद्धेण वा पधूवणेण वा अन्नयरेण वा आलेवणजाएणं गायाइं उव्वलेत्तए वा उव्वट्टेत्तए वा, नन्नत्थ आगाढानागाढेहिं रोगायङ्केहिं) '३४८'।५१। परिहारकप्पट्ठिए णं भिक्खू बहिया थेराणं वेयावडियाए गच्छेज्जा, से य आहच्च अइक्कमेज्जा, तं च थेरा जाणेज्जा, अप्पणो आगमेणं अन्नेसिं वा अंतिए सोच्चा, तओ पच्छा तस्स अहालहुसए नाम ववहारे पट्ठवियव्वे सिया '३६२'।५२। निग्गन्थीए य गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुप्पविट्ठाए अन्नयरे पुलागभत्ते पडिग्गाहिए सिया, सा य संथेरज्जा कप्पइ से तद्दिवसं तेणेव भत्तट्ठेणं पज्जोसवेत्तए, नो से कप्पइ दोच्चंपि गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए० पविसित्तए, सा य नो संथेरज्जा एवं से कप्पइ दोच्चंपि गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वत्ति बेमि '३७५'।५३। पञ्चमो उद्देसओ ५॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा इमाइं छ अवयणाइं वइत्तए. तं०-अलियवयणे हीलियवयणे खिसियवयणे फरुसवयणे गारत्थियवयणे विओसवियं वा पुणो उदीरेत्तए '६९'।१। छ कप्पस्स पत्थारा पं० तं०-पाणाइवायस्स वायं वयमाणे मुसावायस्स वायं वयमाणे अदिन्नादाणस्स वायं वयमाणे अविरइयवायं वयमाणे अपुरिसवायं वयमाणे दासवायं वयमाणे, इच्चेए कप्पस्स छप्पत्थारे पत्थरेत्ता सम्मं अप्पडिपूरेमाणे तट्ठाणपत्ते सिया '९९'।२। निग्गंथस्स य अहे पायंसि खाणुए वा कंटए वा हीरे वा सक्करे वा परियावज्जेज्जा तं च निग्गंथे नो संचाएज्जा नीहरित्तए वा विसोहेत्तए वा, तं निग्गंथी नीहरमाणी वा विसोहेमाणी वा नाइक्कमइ।३। निग्गंथस्स य अच्छिंसि पाणे वा बीए वा रए वा परियावज्जेज्जा, तं च निग्गंथे नो संचाएज्जा नीहरित्तए वा विसोहेत्तए वा, तं निग्गंथी नीहरमाणी वा विसोहेमाणी वा नाइक्कमइ।४। निग्गंथीए य अहे पायंसि खाणुए वा कंटए वा हीरे वा सक्करे वा परियावज्जेज्जा तं च निग्गंथी नो संचाएज्जा नीहरित्तए वा विसोहेत्तए वा, तं च निग्गंथे नीहरमाणे वा विसोहेमाणे वा नाइक्कमइ।५। निग्गंथीए य अच्छिंसि पाणे वा बीए वा रए वा परियावज्जेज्जा, तं च निग्गंथी नो संचाएइ नीहरित्तए वा विसोहेत्तए वा, तं च निग्गंथे नीहरमाणे वा विसोहेमाणे वा नाइक्कमइ '११८'।६। निग्गंथे निग्गंथिं दुग्गंसि वा विसमंसि वा पव्वयंसि वा पक्खलमाणिं वा पवडमाणिं वा गेण्हमाणे वा अवलम्बमाणे वा नाइक्कमइ।७। निग्गंथे निग्गंथिं सेयंसि वा पंकंसि वा पणगंसि वा उदयंसि वा ओकसमाणिं वा ओवुज्झमाणिं वा गेण्हमाणे वा अवलम्बमाणे वा नाइक्कमइ।८। निग्गंथे निग्गंथिं नावं आरुभमाणिं वा ओरुभमाणिं वा गेण्हमाणे वा अवलम्बमाणे वा नाइक्कमइ '१३१'।९। खित्तचित्तं निग्गंथिं निग्गंथे गिण्हमाणे वा अवलंबमाणे वा नातिक्कमति '१७८'।१०। दित्तचित्तं निग्गंथिं निग्गंथे गेण्हमाणे वा अवलम्बमाणे वा नाइक्कमइ '१९३'।११। जक्खाइट्ठं०।१२। उम्मायपत्तं०।१३। उवसग्गपत्तं०।१४। साहिगरणं०।१५। सपायच्छित्तं०।१६। भत्तपाणपडियाइक्खियं०।१७। अट्ठजायं निग्गंथिं निग्गंथे गेण्हमाणे वा अवलम्बमाणे वा नाइक्कमइ '२४८'।१८। छ कप्पस्स पलिमंथू पं० तं० कोक्कुइए संजमस्स पलिमंथू मोहरिए सच्चवयणस्स पलिमंथू तिन्तिणिए एसणागोयरस्स पलिमंथू चक्खुलोलुए ईरियावहियाए पलिमंथू इच्छालोभे मुत्तिमग्गस्स पलिमंथू भिज्जानियाणकरणे मोक्खमग्गस्स पलिमंथू, सव्वत्थ भगवया अनियाणया पसत्था '२८६'।१९। छव्विहा कप्पट्ठिई पं० तं०-सामाइयसंजयकप्पट्ठिई छेओवट्ठावणियसंजयकप्पट्ठिई निव्विसमाणकप्पट्ठिई निव्विट्ठकाइयकप्पट्ठिई जिणकप्पट्ठिई थेरकप्पट्ठिइत्तिबेमि '४२८'।२०। छट्ठो उद्देसओ ६॥ इति श्रीबृहत्कल्पच्छेदसूत्रं २सौराष्ट्रमंडले पादलिप्तपुरे श्रीसिद्धाद्रितलहट्टिकागतशिलोत्कीर्णसकलागमोपेतश्रीवर्धमानजैनागममंदिरे शिलायामुत्कीर्णं श्रीवीरस्य २४६८

अत्र उद्देशक: ६ आरब्ध: एवं परिसमाप्त:

भाग 27	बृहत्कल्प-छेदसूत्र [२] ‘मूलं’ परिसमाप्त: मूल संशोधकः सम्पादकश्च पूज्य आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब किंचित् वैशिष्ट्य समर्पितेन सह पुन: संकलनकर्ता मुनि दीपरत्नसागरजी [M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

[३६] श्री व्यवहार (छेदसूत्रम्-३)

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

“व्यवहार” मूलं

[मूलं एव]

[आद्य संपादकश्री]

पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म॰ सा॰

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D.,श्रुतमहर्षि)

28/07/2017, शुक्रवार, २०७३ श्रावण शुक्ल ५ ‘सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि’ श्रेणि भाग-२७

प्रत सूत्रांक [१] दीप अनुक्रम [१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३६], छेदसूत्र - [३] “व्यवहार” मूलं 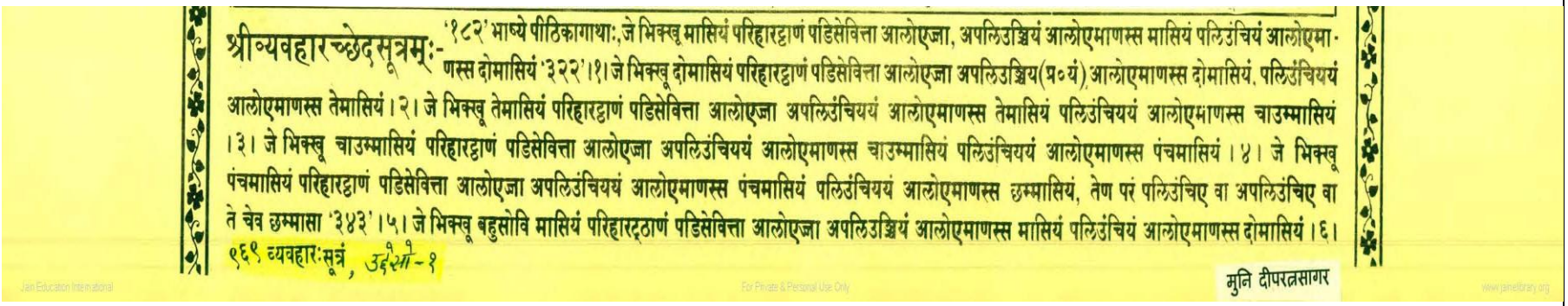 श्रीव्यवहारच्छेदसूत्रम्:- '१८२' भाष्ये पीठिकागाथा:,जे भिक्खू मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउञ्चियं आलोएमाणस्स मासियं पलिउंचियं आलोएमाणस्स दोमासियं '३२२'।१। जे भिक्खू दोमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउञ्चिय(प्र०यं) आलोएमाणस्स दोमासियं, पलिउंचियय आलोएमाणस्स तेमासियं।२। जे भिक्खू तेमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउंचियय आलोएमाणस्स तेमासियं पलिउंचियय आलोएमाणस्स चाउम्मासियं।३। जे भिक्खू चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउंचियय आलोएमाणस्स चाउम्मासियं पलिउंचियय आलोएमाणस्स पंचमासियं।४। जे भिक्खू पंचमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउंचियय आलोएमाणस्स पंचमासियं पलिउंचियय आलोएमाणस्स छम्मासियं, तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मासा '३४३'।५। जे भिक्खू बहुसोवि मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउञ्चियं आलोएमाणस्स मासियं पलिउंचियं आलोएमाणस्स दोमासियं।६। ९६९ व्यवहारःसूत्रं, उद्देशो-१ मुनि दीपरत्नसागर Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org
	अत्र उद्देशक: १ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [७] दीप अनुक्रम [७]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३६], छेदसूत्र - [३] “व्यवहार” मूलं

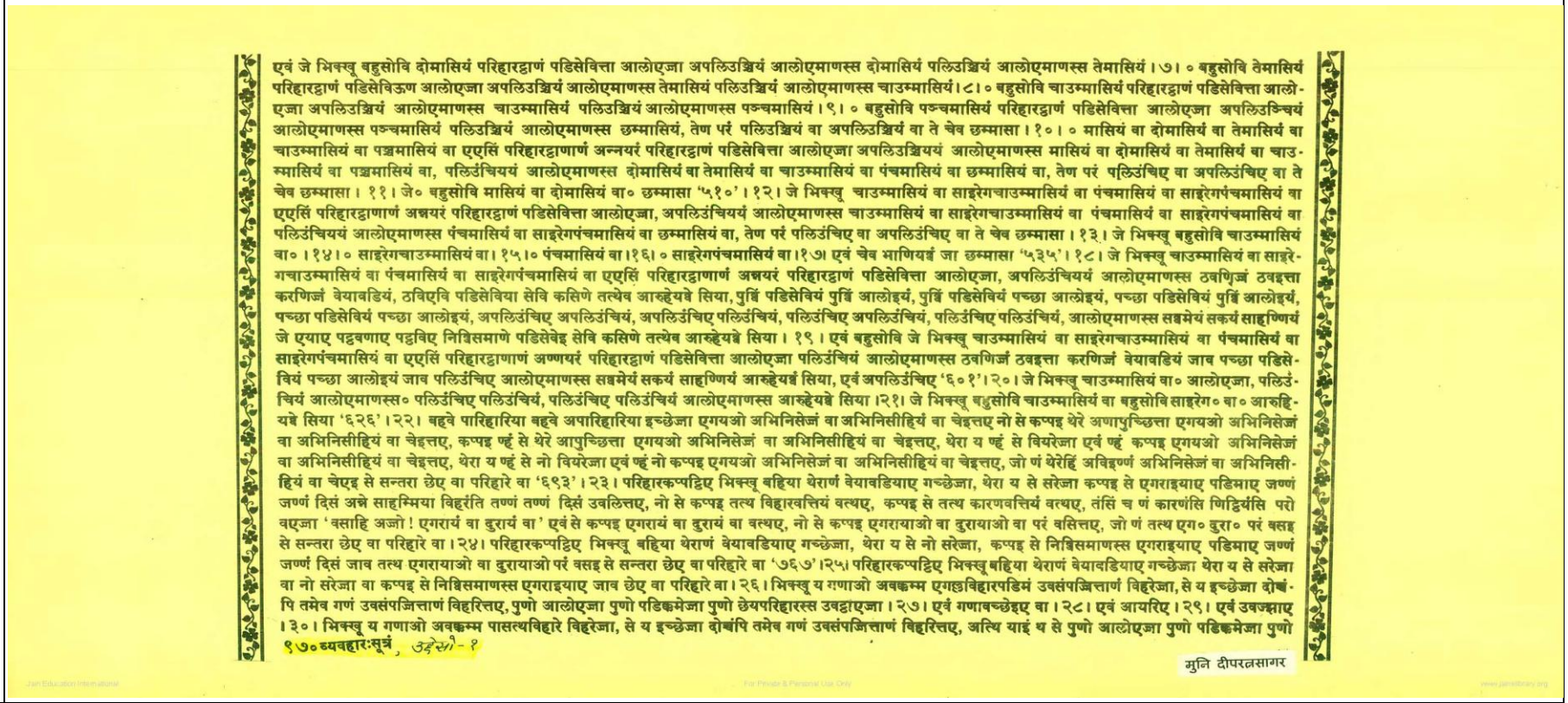

एवं जे भिक्खू बहुसोवि दोमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउञ्चियं आलोएमाणस्स दोमासियं पलिउञ्चियं आलोएमाणस्स तेमासियं।७। ० बहुसोवि तेमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेविऊण आलोएज्जा अपलिउञ्चियं आलोएमाणस्स तेमासियं पलिउञ्चियं आलोएमाणस्स चाउम्मासियं।८।० बहुसोवि चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउञ्चियं आलोएमाणस्स चाउम्मासियं पलिउञ्चियं आलोएमाणस्स पञ्चमासियं।९।० बहुसोवि पञ्चमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउञ्चियं आलोएमाणस्स पञ्चमासियं पलिउञ्चियं आलोएमाणस्स छम्मासियं, तेण परं पलिउञ्चियं वा अपलिउञ्चियं वा ते चेव छम्मासा।१०।० मासियं वा दोमासियं वा तेमासियं वा चाउम्मासियं वा पञ्चमासियं वा एएसिं परिहारट्ठाणाणं अन्नयरं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउञ्चियं आलोएमाणस्स मासियं वा दोमासियं वा तेमासियं वा चाउम्मासियं वा पञ्चमासियं वा, पलिउंचियं आलोएमाणस्स दोमासियं वा तेमासियं वा चाउम्मासियं वा पंचमासियं वा छम्मासियं वा, तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मासा। ११। जे० बहुसोवि मासियं वा दोमासियं वा० छम्मासा ‘५१०’।१२। जे भिक्खू चाउम्मासियं वा साइरेगचाउम्मासियं वा पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा एएसिं परिहारट्ठाणाणं अन्नयरं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउंचियं आलोएमाणस्स चाउम्मासियं वा साइरेगचाउम्मासियं वा पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा पलिउंचियं आलोएमाणस्स पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा छम्मासियं वा, तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मासा।१३। जे भिक्खू बहुसोवि चाउम्मासियं वा०।१४।० साइरेगचाउम्मासियं वा। १५।० पंचमासियं वा।१६।० साइरेगपंचमासियं वा।१७। एवं चेव भाणियव्वं जा छम्मासा ‘५३५’।१८। जे भिक्खू चाउम्मासियं वा साइरेगचाउम्मासियं वा पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा एएसिं परिहारट्ठाणाणं अन्नयरं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउंचियं आलोएमाणस्स ठवणिज्जं ठवइत्ता करणिज्जं वेयावडियं, ठविएवि पडिसेविया सेवि कसिणे तत्थेव आरुहेयवे सिया, पुव्विं पडिसेवियं पुव्विं आलोइयं, पुव्विं पडिसेवियं पच्छा आलोइयं, पच्छा पडिसेवियं पुव्विं आलोइयं, पच्छा पडिसेवियं पच्छा आलोइयं, अपलिउंचिए अपलिउंचियं, अपलिउंचिए पलिउंचियं, पलिउंचिए अपलिउंचियं, पलिउंचिए पलिउंचियं, आलोएमाणस्स सव्वमेयं सकयं साहुण्णियं जे एयाए पट्ठवणाए पट्ठविए निव्विसमाणे पडिसेवेइ सेवि कसिणे तत्थेव आरुहेयवे सिया। १९। एवं बहुसोवि जे भिक्खू चाउम्मासियं वा साइरेगचाउम्मासियं वा पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा एएसिं परिहारट्ठाणाणं अण्णयरं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा पलिउंचियं आलोएमाणस्स ठवणिज्जं ठवइत्ता करणिज्जं वेयावडियं जाव पच्छा पडिसेवियं पच्छा आलोइयं जाव पलिउंचिए आलोएमाणस्स सव्वमेयं सकयं साहुण्णियं आरुहेयव्वं सिया, एवं अपलिउंचिए ‘६०१’।२०। जे भिक्खू चाउम्मासियं वा० आलोएज्जा, पलिउंचियं आलोएमाणस्स० पलिउंचिए पलिउंचियं, पलिउंचिए पलिउंचियं आलोएमाणस्स आरुहेयवे सिया।२१। जे भिक्खू बहुसोवि चाउम्मासियं वा बहुसोवि साइरेग० वा० आरुहियवे सिया ‘६२६’।२२। बहवे पारिहारिया बहवे अपारिहारिया इच्छेज्जा एगयओ अभिनिसेज्जं वा अभिनिसीहियं वा चेइत्तए नो से कप्पइ थेरे अणापुच्छित्ता एगयओ अभिनिसेज्जं वा अभिनिसीहियं वा चेइत्तए, कप्पइ ण्हं से थेरे आपुच्छित्ता एगयओ अभिनिसेज्जं वा अभिनिसीहियं वा चेइत्तए, थेरा य ण्हं से वियरेज्जा एवं ण्हं कप्पइ एगयओ अभिनिसेज्जं वा अभिनिसीहियं वा चेइत्तए, थेरा य ण्हं से नो वियरेज्जा एवं ण्हं नो कप्पइ एगयओ अभिनिसेज्जं वा अभिनिसीहियं वा चेइत्तए, जो णं थेरेहिं अविइण्णं अभिनिसेज्जं वा अभिनिसीहियं वा चेएइ से सन्तरा छेए वा परिहारे वा ‘६९३’।२३। परिहारकप्पट्ठिए भिक्खू बहिया थेरार्ण वेयावडियाए गच्छेज्जा, थेरा य से सरेज्जा कप्पइ से एगराइयाए पडिमाए जण्णं जण्णं दिसं अन्ने साहम्मिया विहरंति तण्णं तण्णं दिसं उवलित्तए, नो से कप्पइ तत्थ विहारवत्तियं वत्थए, कप्पइ से तत्थ कारणवत्तियं वत्थए, तंसि च णं कारणंसि णिट्ठियंसि परो वएज्जा ‘वसाहि अज्जो! एगरायं वा दुरायं वा’ एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वत्थए, नो से कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसित्तए, जो णं तत्थ एग० दुरा० परं वसइ से सन्तरा छेए वा परिहारे वा।२४। परिहारकप्पट्ठिए भिक्खू बहिया थेराणं वेयावडियाए गच्छेज्जा, थेरा य से नो सरेज्जा, कप्पइ से निव्विसमाणस्स एगराइयाए पडिमाए जण्णं जण्णं दिसं जाव तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ परं वसइ से सन्तरा छेए वा परिहारे वा ‘७६७’।२५। परिहारकप्पट्ठिए भिक्खू बहिया थेराणं वेयावडियाए गच्छेज्जा थेरा य से सरेज्जा वा नो सरेज्जा वा कप्पइ से निव्विसमाणस्स एगराइयाए जाव छेए वा परिहारे वा।२६। भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म एगल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरेज्जा, से य इच्छेज्जा दोच्चंपि तमेव गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, पुणो आलोएज्जा पुणो पडिक्कमेज्जा पुणो छेयपरिहारस्स उवट्ठाएज्जा।२७। एवं गणावच्छेइए वा।२८। एवं आयरिए।२९। एवं उवज्झाए।३०। भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म पासत्थविहारे विहरेज्जा, से य इच्छेज्जा दोच्चंपि तमेव गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, अत्थि याइं थ से पुणो आलोएज्जा पुणो पडिक्कमेज्जा पुणो

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [३१] दीप अनुक्रम [२५]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३६], छेदसूत्र - [३] “व्यवहार” मूलं

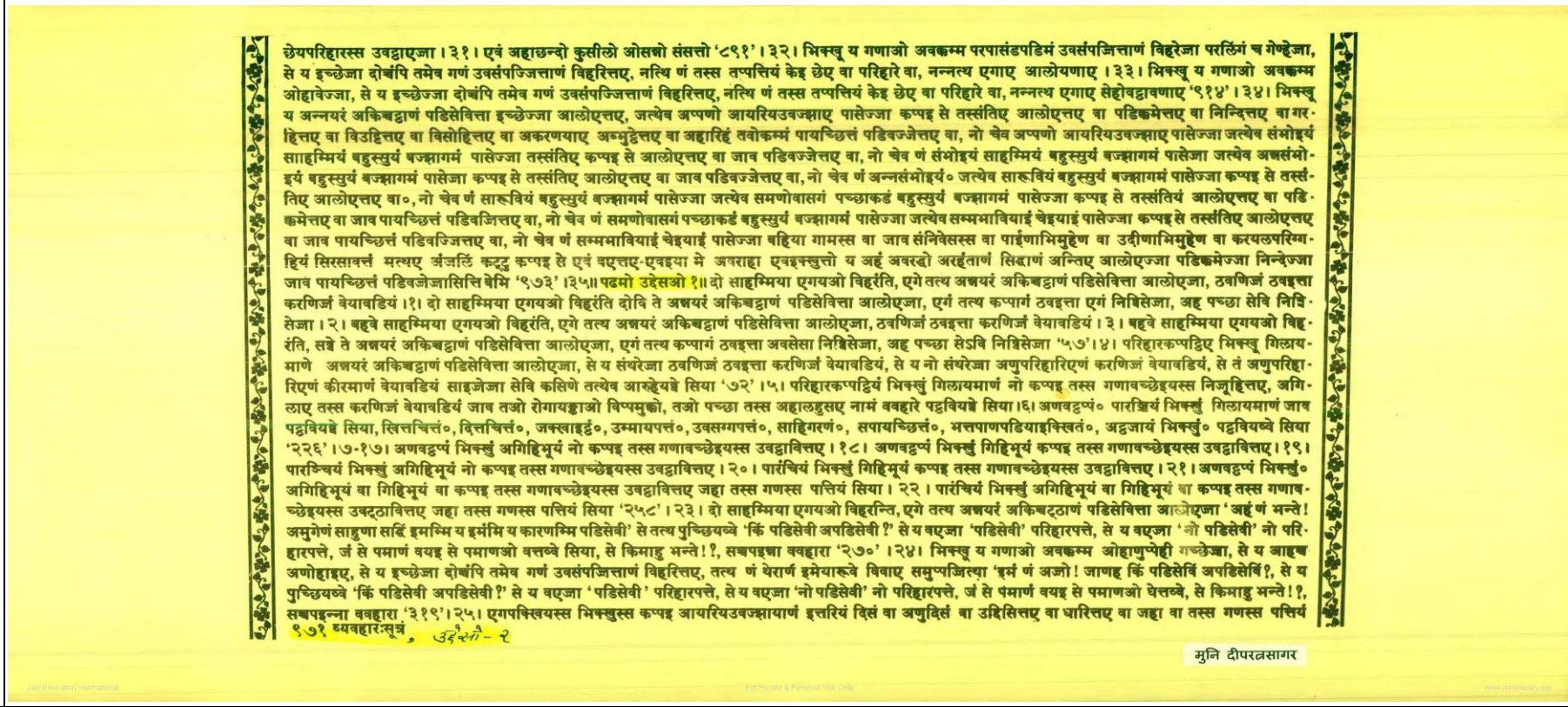

छेयपरिहारस्स उवट्ठाएज्जा।३१। एवं अहाछन्दो कुसीलो ओसन्नो संसत्तो '८९१'।३२। भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म परपासंडपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरेज्जा परलिंगं च गेण्हेज्जा, से य इच्छेज्जा दोच्चंपि तमेव गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नत्थि णं तस्स तप्पत्तियं केइ छेए वा परिहारे वा, नन्नत्थ एगाए आलोयणाए।३३। भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म ओहावेज्जा, से य इच्छेज्जा दोच्चंपि तमेव गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नत्थि णं तस्स तप्पत्तियं केइ छेए वा परिहारे वा, नन्नत्थ एगाए सेहोवट्ठावणाए '९१४'।३४। भिक्खू य अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता इच्छेज्जा आलोएत्तए, जत्थेव अप्पणो आयरियउवज्झाए पासेज्जा कप्पइ से तस्संतिए आलोएत्तए वा पडिक्कमेत्तए वा निन्दित्तए वा गरहित्तए वा विउट्टित्तए वा विसोहित्तए वा अकरणयाए अब्भुट्ठेत्तए वा अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जेत्तए वा, नो चेव अप्पणो आयरियउवज्झाए पासेज्जा जत्थेव संभोइयं साहम्मियं बहुस्सुयं बज्झागमं पासेज्जा तस्संतिए कप्पइ से आलोएत्तए वा जाव पडिवज्जेत्तए वा, नो चेव णं संभोइयं साहम्मियं बहुस्सुयं बज्झागमं पासेज्जा जत्थेव अन्नसंभोइयं बहुस्सुयं बज्झागमं पासेज्जा कप्पइ से तस्संतिए आलोएत्तए वा जाव पडिवज्जेत्तए वा, नो चेव णं अन्नसंभोइयं० जत्थेव सारूवियं बहुस्सुयं बज्झागमं पासेज्जा कप्पइ से तस्संतिए आलोएत्तए वा०, नो चेव णं सारूवियं बहुस्सुयं बज्झागमं पासेज्जा जत्थेव समणोवासगं पच्छाकडं बहुस्सुयं बज्झागमं पासेज्जा कप्पइ से तस्संतियं आलोएत्तए वा पडिक्कमेत्तए वा जाव पायच्छित्तं पडिवज्जित्तए वा, नो चेव णं समणोवासगं पच्छाकडं बहुस्सुयं बज्झागमं पासेज्जा जत्थेव सम्मभावियाइं चेइयाइं पासेज्जा कप्पइ से तस्संतिए आलोएत्तए वा जाव पायच्छित्तं पडिवज्जित्तए वा, नो चेव णं सम्मभावियाइं चेइयाइं पासेज्जा बहिया गामस्स वा जाव संनिवेसस्स वा पाईणाभिमुहेण वा उदीणाभिमुहेण वा करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु कप्पइ से एवं वएत्तए-एवइया मे अवराहा एवइक्खुत्तो य अहं अवरद्धो अरहंताणं सिद्धाणं अन्तिए आलोएज्जा पडिक्कमेज्जा निन्देज्जा जाव पायच्छित्तं पडिवज्जेज्जासित्ति बेमि '९७३'।३५॥ पढमो उद्देसओ १॥ दो साहम्मिया एगयओ विहरंति, एगे तत्थ अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, ठवणिजं ठवइत्ता करणिजं वेयावडियं।१। दो साहम्मिया एगयओ विहरंति दोवि ते अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, एगं तत्थ कप्पागं ठवइत्ता एगं निविसेज्जा, अह पच्छा सेवि निविसेज्जा।२। बहवे साहम्मिया एगयओ विहरंति, एगे तत्थ अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, ठवणिजं ठवइत्ता करणिजं वेयावडियं।३। बहवे साहम्मिया एगयओ विहरंति, सव्वे ते अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, एगं तत्थ कप्पागं ठवइत्ता अवसेसा निविसेज्जा '५७'।४। परिहारकप्पट्ठिए भिक्खू गिलायमाणे अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, से य संथरेज्जा ठवणिजं ठवइत्ता करणिजं वेयावडियं, से य नो संथरेज्जा अणुपरिहारिएणं करणिजं वेयावडियं, से तं अणुपरिहारिएणं कीरमाणं वेयावडियं साइजेज्जा सेवि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया '७२'।५। परिहारकप्पट्ठियं भिक्खुं गिलायमाणं नो कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स निज्जूहित्तए, अगिलाए तस्स करणिजं वेयावडियं जाव तओ रोगायङ्काओ विप्पमुक्को, तओ पच्छा तस्स अहालहुसए नामं ववहारे पट्ठवियव्वे सिया।६। अणवट्ठप्पं० पारञ्चियं भिक्खुं गिलायमाणं जाव पट्ठवियव्वे सिया, खित्तचित्तं०, दित्तचित्तं०, जक्खाइट्ठं०, उम्मायपत्तं०, उवसग्गपत्तं०, साहिगरणं०, सपायच्छित्तं०, भत्तपाणपडियाइक्खितं०, अट्ठजायं भिक्खुं० पट्ठवियव्वे सिया '२२६'।७-१७। अणवट्ठप्पं भिक्खुं अगिहिभूयं नो कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स उवट्ठावित्तए।१८। अणवट्ठप्पं भिक्खुं गिहिभूयं कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स उवट्ठावित्तए।१९। पारञ्चियं भिक्खुं अगिहिभूयं नो कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स उवट्ठावित्तए।२०। पारंचियं भिक्खुं गिहिभूयं कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स उवट्ठावित्तए।२१। अणवट्ठप्पं भिक्खुं० अगिहिभूयं वा गिहिभूयं वा कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स उवट्ठावित्तए जहा तस्स गणस्स पत्तियं सिया।२२। पारंचियं भिक्खुं अगिहिभूयं वा गिहिभूयं वा कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स उवट्ठावित्तए जहा तस्स गणस्स पत्तियं सिया '२५८'।२३। दो साहम्मिया एगयओ विहरन्ति, एगे तत्थ अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएजा 'अहं णं भन्ते! अमुगेणं साहुणा सद्धिं इमम्मि य इमंमि य कारणम्मि पडिसेवी' से तत्थ पुच्छियव्वे 'किं पडिसेवी अपडिसेवी?' से य वएजा 'पडिसेवी' परिहारपत्ते, से य वएजा 'नो पडिसेवी' नो परिहारपत्ते, जं से पमाणं वयइ से पमाणओ वत्तव्वे सिया, से किमाहु भन्ते!?, सव्वपइन्ना ववहारा '२७०'।२४। भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म ओहाणुप्पेही गच्छेज्जा, से य आहच्च अणोहाइए, से य इच्छेजा दोच्चंपि तमेव गणं उवसंपजित्ताणं विहरित्तए, तत्थ णं थेरागं इमेयारूवे विवाए समुप्पज्जित्था 'इमं णं अज्जो! जाणह किं पडिसेविं अपडिसेविं?, से य पुच्छियव्वे 'किं पडिसेवी अपडिसेवी?' से य वएजा 'पडिसेवी' परिहारपत्ते, से य वएजा 'नो पडिसेवी' नो परिहारपत्ते, जं से पमाणं वयइ से पमाणओ घेत्तव्वे, से किमाहु भन्ते!?, सव्वपइन्ना ववहारा '३१९'।२५। एगपक्खियस्स भिक्खुस्स कप्पइ आयरियउवज्झायाणं इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारित्तए वा जहा वा तस्स गणस्स पत्तियं

९७१ व्यवहारःसूत्रं, उद्देशः-२

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अत्र उद्देशक: २ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [२६] दीप अनुक्रम [६१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३६], छेदसूत्र - [३] “व्यवहार” मूलं

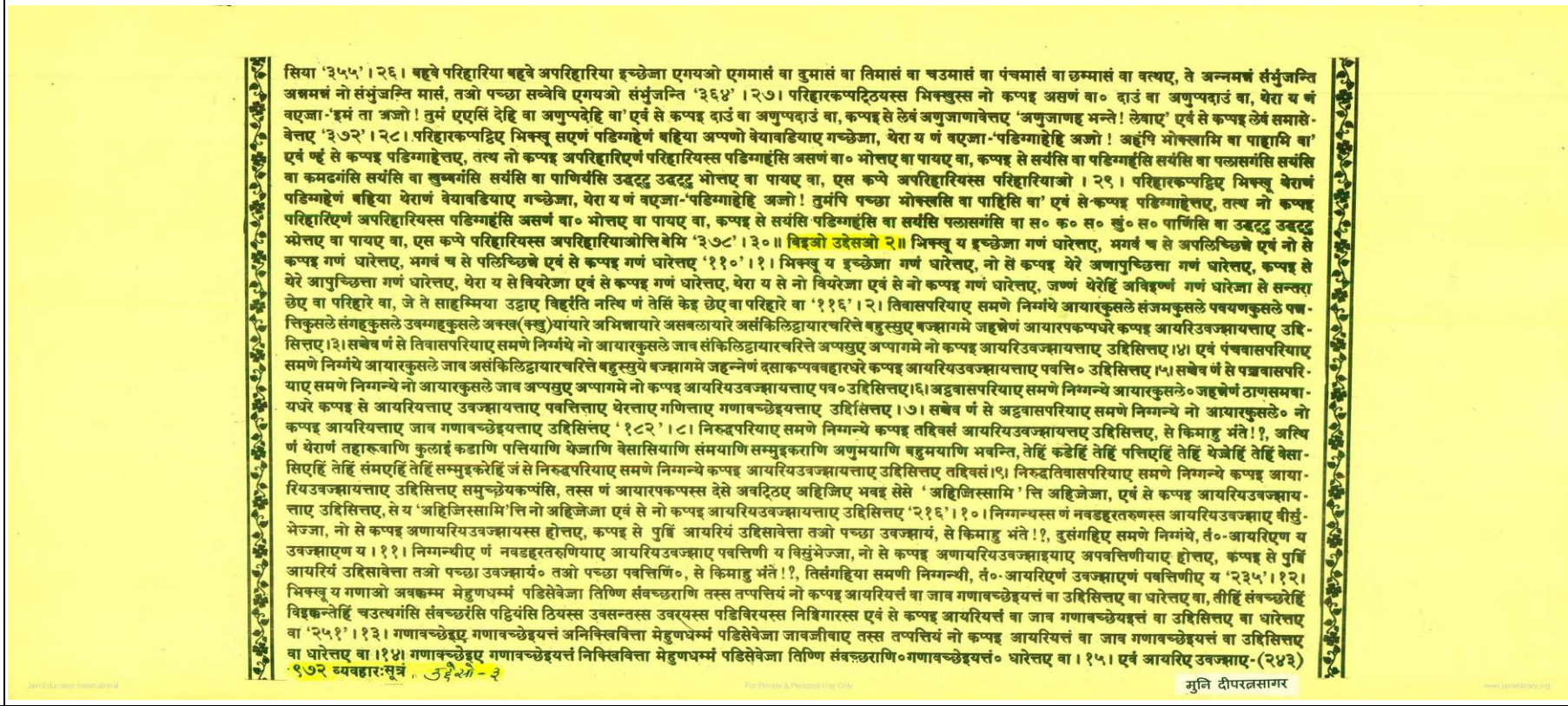

सिया '३५५'।२६। बहवे परिहारिया बहवे अपरिहारिया इच्छेज्जा एगयओ एगमासं वा दुमासं वा तिमासं वा चउमासं वा पंचमासं वा छम्मासं वा वत्थए, ते अन्नमन्नं संभुंजन्ति अन्नमन्नं नो संभुंजन्ति मासं, तओ पच्छा सव्वेवि एगयओ संभुंजन्ति '३६४'।२७। परिहारकप्पट्ठियस्स भिक्खुस्स नो कप्पइ असणं वा० दाउं वा अणुप्पदाउं वा, थेरा य णं वएज्जा-'इमं ता अज्जो! तुमं एएसिं देहि वा अणुप्पदेहि वा' एवं से कप्पइ दाउं वा अणुप्पदाउं वा, कप्पइ से लेवं अणुजाणावेत्तए 'अणुजाणह भन्ते! लेवाए' एवं से कप्पइ लेवं समासेवेत्तए '३७२'।२८। परिहारकप्पट्ठिए भिक्खू सएणं पडिग्गहेणं बहिया अप्पणो वेयावडियाए गच्छेज्जा, थेरा य णं वएज्जा-'पडिग्गाहेहि अज्जो! अहंपि भोक्खामि वा पाहामि वा' एवं पहं से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए, तत्थ नो कप्पइ अपरिहारिएणं परिहारियस्स पडिग्गहंसि असणं वा० भोत्तए वा पायए वा, कप्पइ से सयंसि वा पडिग्गहंसि सयंसि वा पलासगंसि सयंसि वा कमढगंसि सयंसि वा खुब्भगंसि सयंसि वा पाणियंसि उद्धट्टु उद्धट्टु भोत्तए वा पायए वा, एस कप्पे अपरिहारियस्स परिहारियाओ।२९। परिहारकप्पट्ठिए भिक्खू थेराणं पडिग्गाहेणं बहिया थेराणं वेयावडियाए गच्छेज्जा, थेरा य णं वएज्जा-'पडिग्गाहेहि अज्जो! तुमंपि पच्छा भोक्खसि वा पाहिसि वा' एवं से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए, तत्थ नो कप्पइ परिहारिएणं अपरिहारियस्स पडिग्गहंसि असणं वा० भोत्तए वा पायए वा, कप्पइ से सयंसि पडिग्गहंसि वा सयंसि पलासगंसि वा स० क० स० खुं० स० पाणिंसि वा उद्धट्टु उद्धट्टु भोत्तए वा पायए वा, एस कप्पे परिहारियस्स अपरिहारियाओत्ति बेमि '३७८'।३०॥ विइओ उद्देसओ २॥ भिक्खू य इच्छेज्जा गणं धारेत्तए, भगवं च से अपलिच्छिन्ने एवं नो से कप्पइ गणं धारेत्तए, भगवं च से पलिच्छिन्ने एवं से कप्पइ गणं धारेत्तए '११०'।१। भिक्खू य इच्छेज्जा गणं धारेत्तए, नो से कप्पइ थेरे अणापुच्छित्ता गणं धारेत्तए, कप्पइ से थेरे आपुच्छित्ता गणं धारेत्तए, थेरा य से वियरेज्जा एवं से कप्पइ गणं धारेत्तए, थेरा य से नो वियरेज्जा एवं से नो कप्पइ गणं धारेत्तए, जण्णं थेरेहिं अविइण्णं गणं धारेज्जा से सन्तरा छेए वा परिहारे वा, जे ते साहम्मिया उट्ठाए विहरंति नत्थि णं तेसिं केइ छेए वा परिहारे वा '११६'।२। तिवासपरियाए समणे निग्गंथे आयारकुसले संजमकुसले पवयणकुसले पन्नत्तिकुसले संगहकुसले उवग्गहकुसले अक्खु(क्खु)यायारे अभिन्नायारे असबलायारे असंकिलिट्ठायारचरित्ते बहुस्सुए बब्भागमे जहन्नेणं आयारपकप्पधरे कप्पइ आयरिउवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए।३। सबेव णं से तिवासपरियाए समणे निग्गंथे नो आयारकुसले जाव संकिलिट्ठायारचरित्ते अप्पसुए अप्पागमे नो कप्पइ आयरिउवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए।४। एवं पंचवासपरियाए समणे निग्गंथे आयारकुसले जाव असंकिलिट्ठायारचरित्ते बहुस्सुये बब्भागमे जहन्नेणं दसाकप्पववहारधरे कप्पइ आयरियउवज्झायत्ताए पवत्ति० उद्दिसित्तए।५। सबेव णं से पञ्चवासपरियाए समणे निग्गन्थे नो आयारकुसले जाव अप्पसुए अप्पागमे नो कप्पइ आयरियउवज्झायत्ताए पव० उद्दिसित्तए।६। अट्ठवासपरियाए समणे निग्गन्थे आयारकुसले० जहन्नेणं ठाणसमवायधरे कप्पइ से आयरियत्ताए उवज्झायत्ताए पवत्तित्ताए थेरत्ताए गणित्ताए गणावच्छेइयत्ताए उद्दिसित्तए।७। सबेव णं से अट्ठवासपरियाए समणे निग्गन्थे नो आयारकुसले० नो कप्पइ आयरियत्ताए जाव गणावच्छेइयत्ताए उद्दिसित्तए '१८२'।८। निरुद्धपरियाए समणे निग्गन्थे कप्पइ तद्दिवसं आयरियउवज्झायत्तए उद्दिसित्तए, से किमाहु भंते!?, अत्थि णं थेरापं तहारूवाणि कुलाइं कडाणि पत्तियाणि थेज्जाणि वेसासियाणि संमयाणि सम्मुइकराणि अणुमयाणि बहुमयाणि भवन्ति, तेहिं कडेहिं तेहिं पत्तिएहिं तेहिं थेज्जेहिं तेहिं वेसासिएहिं तेहिं संमएहिं तेहिं सम्मुइकरेहिं जं से निरुद्धपरियाए समणे निग्गन्थे कप्पइ आयरियउवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए तद्दिवसं।९। निरुद्धतिवासपरियाए समणे निग्गन्थे कप्पइ आयरियउवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए समुच्छेयकप्पंसि, तस्स णं आयारपकप्पस्स देसे अवट्ठिए अहिजिए भवइ सेसे ‘अहिजिस्सामि’त्ति अहिजेज्जा, एवं से कप्पइ आयरियउवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए, से य ‘अहिजिस्सामि’त्ति नो अहिजेज्जा एवं से नो कप्पइ आयरियउवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए '२१६'।१०। निग्गन्थस्स णं नवडहरतरुणस्स आयरियउवज्झाए वीसुंभेज्जा, नो से कप्पइ अणायरियउवज्झायस्स होत्तए, कप्पइ से पुव्विं आयरियं उद्दिसावेत्ता तओ पच्छा उवज्झायं, से किमाहु भंते!?, दुसंगहिए समणे निग्गंथे, तं०-आयरिएण य उवज्झाएण य।११। निग्गन्थीए णं नवडहरतरुणियाए आयरियउवज्झाए पवत्तिणी य विसुंभेज्जा, नो से कप्पइ अणायरियउवज्झाइयाए अपवत्तिणीयाए होत्तए, कप्पइ से पुव्विं आयरियं उद्दिसावेत्ता तओ पच्छा उवज्झायं० तओ पच्छा पवत्तिणिं०, से किमाहु भंते!?, तिसंगहिया समणी निग्गन्थी, तं०-आयरिएणं उवज्झाएणं पवत्तिणीए य '२३५'।१२। भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म मेहुणधम्मं पडिसेवेज्जा तिण्णि संवच्छराणि तस्स तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा, तीहिं संवच्छरेहिं विइक्कन्तेहिं चउत्थगंसि संवच्छरंसि पट्ठियंसि ठियस्स उवसन्तस्स उवरयस्स पडिविरयस्स निव्विगारस्स एवं से कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेयइत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा '२५१'।१३। गणावच्छेइए गणावच्छेइयत्तं अनिक्खिवित्ता मेहुणधम्मं पडिसेवेज्जा जावज्जीवाए तस्स तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा।१४। गणावच्छेइए गणावच्छेइयत्तं निक्खिवित्ता मेहुणधम्मं पडिसेवेज्जा तिण्णि संवच्छराणि०गणावच्छेइयत्तं० धारेत्तए वा।१५। एवं आयरिए उवज्झाए-(२४३)

मुनि दीपरत्नसागर

	अत्र उद्देशक: ३ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [१७] दीप अनुक्रम [८२]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३६], छेदसूत्र - [३] “व्यवहार” मूलं

वि दो आलावगा '२५६'।१६-१७। भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म ओहायइ तिण्णि संवच्छराणि० धारेत्तए वा।१८। एवं गणावच्छेययत्तं अनिक्खिवित्ता ओहाएज्जा जावज्जीवाए, निक्खिवित्ता तिण्णि संवच्छराइं०।१९-२०। एवं आयरिए उवज्झाएऽवि '२७५'।२१-२२। भिक्खू य बहुस्सुए बज्झागमे बहुसो बहुआगाढानागाढेसु कारणेसु माइमुसावाई असुई पाव-जीवी जावज्जीवाए तस्स तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेययत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा।२३। एवं गणावच्छेइएवि० धारेत्तए वा।२४। आयरियउवज्झाएवि।२५। बहवे भिक्खुणो बहुस्सुया बज्झागमा बहुसो० जीवाए तेसिं तप्पत्तियं नो कप्पइ जाव उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा।२६। एवं गणावच्छेइयावि, धारेत्तए वा।२७। एवं अायरियउवज्झायावि, धारेत्तए वा।२८। बहवे भिक्खुणो बहवे गणावच्छेइया बहवे आयरियउवज्झाया बहुस्सुया बज्झागमा बहुसो० आयरियत्तं वा उवज्झायत्तं वा पवत्तित्तं वा थेरत्तं वा गणधरत्तं वा गणा-वच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा '३६९'।२९॥ तइओ उद्देसओ ३॥ नो कप्पइ आयरियउवज्झायस्स एगाणियस्स हेमन्तगिम्हासु चरित्तए।१। कप्पइ आयरियउवज्झायस्स अप्पबीयस्स हेमन्तगिम्हासु चरित्तए।२। नो कप्पइ गणावच्छेइयस्स अप्पबीयस्स हेमन्तगिम्हासु चरित्तए।३। कप्पइ गणावच्छेइयस्स अप्पतइयस्स हेमन्तगिम्हासु चरित्तए।४। नो कप्पइ आयरियउवज्झायस्स अप्पविइयस्स वासासासं वत्थए।५। कप्पइ आयरियउवज्झायस्स अप्पतइयस्स वासावासं वत्थए।६। नो कप्पइ गणावच्छेइयस्स अप्पतइयस्स वासावासं वत्थए।७। कप्पइ गणावच्छेइयस्स अप्पचउत्थस्स वासावासं वत्थए '६५'।८। से गामंसि वा नगरंसि वा जाव संनिवेसंसि वा बहूणं आयरियउवज्झायाणं अप्पविइयाणं बहूणं गणावच्छेइयाणं अप्पतइयाणं कप्पइ हेमन्तगिम्हासु चरित्तए अन्नमन्नं निस्साए।९। से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा बहूणं आयरियउवज्झायाणं अप्पतइयाणं बहूणं गणा-वच्छेइयाणं अप्पचउत्थाणं कप्पइ वासावासं चरित्तए अन्नमन्नं निस्साए '१६२'।१०। गामाणुगामं दूइज्जमाणे भिक्खू जं पुरओ कट्टु विहरेज्जा से आहच्च वीसुम्भेज्जा अत्थि या इत्थ अन्ने केइ उवसंपज्जणारिहे (कप्पइ) से उवसंपज्जियव्वे सिया, नत्थि याइत्थ अन्ने केइ उवसंपज्जणारिहे अप्पणो कप्पाए असमत्ते कप्पइ से एगराइयाए पडिमाए जण्णं जण्णं दिसं अन्ने साह-म्मिया विहरंति तण्णं तण्णं दिसं उवलित्तए, नो से कप्पइ तत्थ विहारवत्तियं वत्थए, कप्पइ से कारणपत्तियं वत्थए, तंसिं च णं कारणंसि निट्ठियंसि परो वइज्जा-वसाहि अज्जो! एगरायं वा दुरायं वा, एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वत्थए, नो कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए, जे तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसइ से संतरा छेए वा परिहारे वा।११। वासावासं पज्जोसविए भिक्खू० छेए वा परिहारे वा '२६२'।१२। आयरियउवज्झाए गिलायमाणे अन्नयरं वइज्जा-ममंसि णं कालगयंसि समाणंसि अयं समुक्कसियव्वे, से य समुक्कसणारिहे समुक्कसियव्वे, से य नो समुक्कसणारिहे नो समुक्कसियव्वे, अत्थि या इत्थ अन्ने केइ समुक्कसणारिहे से समुक्कसियव्वे, नत्थि या इत्थ अन्ने केइ समुक्कसणारिहे से चेव समु-क्कसियव्वे, तंसिं च णं समुक्किट्ठंसि परो वएज्जा-'दुस्समुक्किट्ठं ते अज्जो!, निक्खिवाहि, तस्स णं निक्खिवमाणस्स नत्थि केइ छेए वा परिहारे वा, जे तं साहम्मिया अहाकप्पेणं नो अब्भुट्ठेंति सव्वेसिं तेसिं तप्पत्तियं छेए वा परिहारे वा '२९०'।१३। आयरियउवज्झाए ओहायमाणे० ओहावियंसि० अयं समुक्कसियव्वे जाव सव्वेसिं तेसिं तप्पत्तियं छेए वा परिहारे वा '३०३'।१४। आयरियउवज्झाए सरमाणे परं चउरायपंचरायाओ कप्पागं भिक्खुं नो उवट्ठावेइ, कप्पाए अत्थि याइं से केइ माणणिज्जे कप्पाए, नत्थि याइं से केइ छेए वा परि-हारे वा, नत्थि याइं से केइ माणणिज्जे कप्पाए से संतरा छेए वा परिहारे वा।१५। आयरियउवज्झाए असरमाणे परं चउरायाओ वा पंचरायाओ कप्पागं० छेए वा परिहारे वा।१६। आयरियउवज्झाए सरमाणे वा असरमाणे वा परं दसरायकप्पाओ कप्पागं भिक्खुं नो उवट्ठावेइ, कप्पाए अत्थि याइं से केइ माणणिज्जे कप्पाए नत्थि याइं से केइ छेए वा परिहारे वा, नत्थि याइं से केइ माणणिज्जे कप्पाए संवच्छरं तस्स तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा० '३३५'।१७। भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म अजं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरेज्जा, तं च केई साहम्मिया पासित्ता वएज्जा 'कं अज्जो! उवसंपज्जित्ताणं विहरसि?' जे तत्थ सद्धाइणिए तं वएज्जा, अह भंते! कस्स कप्पाए?, जे तत्थ बहुसुए तं वएज्जा, जं वा से भगवं वक्खइ तस्स आणाउववायवयणनिद्देसे चिट्ठिस्सामि '३४६'।१८। बहवे साहम्मिया इच्छेज्जा एगयओ अभिनिचारियं चरित्तए, नो णं कप्पइ थेरे अणापुच्छित्ता एगयओ अभिनिचारियं चरित्तए, कप्पइ णं थेरे आपुच्छित्ता एगयओ अभिनिचारियं चरित्तए, थेरा य से वियरेज्जा एवं णं कप्पइ एगतओ अभिनिचारियं चरित्तए, थेरा य णं नो वियरेज्जा एवं णं नो कप्पइ एगयओ अभिनिचारियं चरित्तए, जे तत्थ थेरेहिं अविइण्णे एगयओ अभिनिचारियं चरंति से संतरा छेए वा परिहारे वा।१९। चरिया-पविट्ठे भिक्खू जाव चउरायपञ्चरायाओ थेरे पासेज्जा सचेव आलोयणा सचेव पडिक्कमणा सचेव ओग्गहस्स पुव्वाणुन्नवणा चिट्ठइ, अहालन्दमवि ओग्गहे।२०। चरियापविट्ठे भिक्खू परं चउरायपञ्चरायाओ थेरे पासेज्जा पुणो आलोएज्जा पुणो पडिक्कमेज्जा पुणो छेयपरिहारस्स उवट्ठाएज्जा, भिक्खुभावस्स अट्ठाए दोच्चंपि ओग्गहे अणुन्नवेयव्वे सिया, कप्पति से एवं

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अत्र उद्देशक: ४ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [२१] दीप अनुक्रम [११५]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३६], छेदसूत्र - [३] “व्यवहार” मूलं

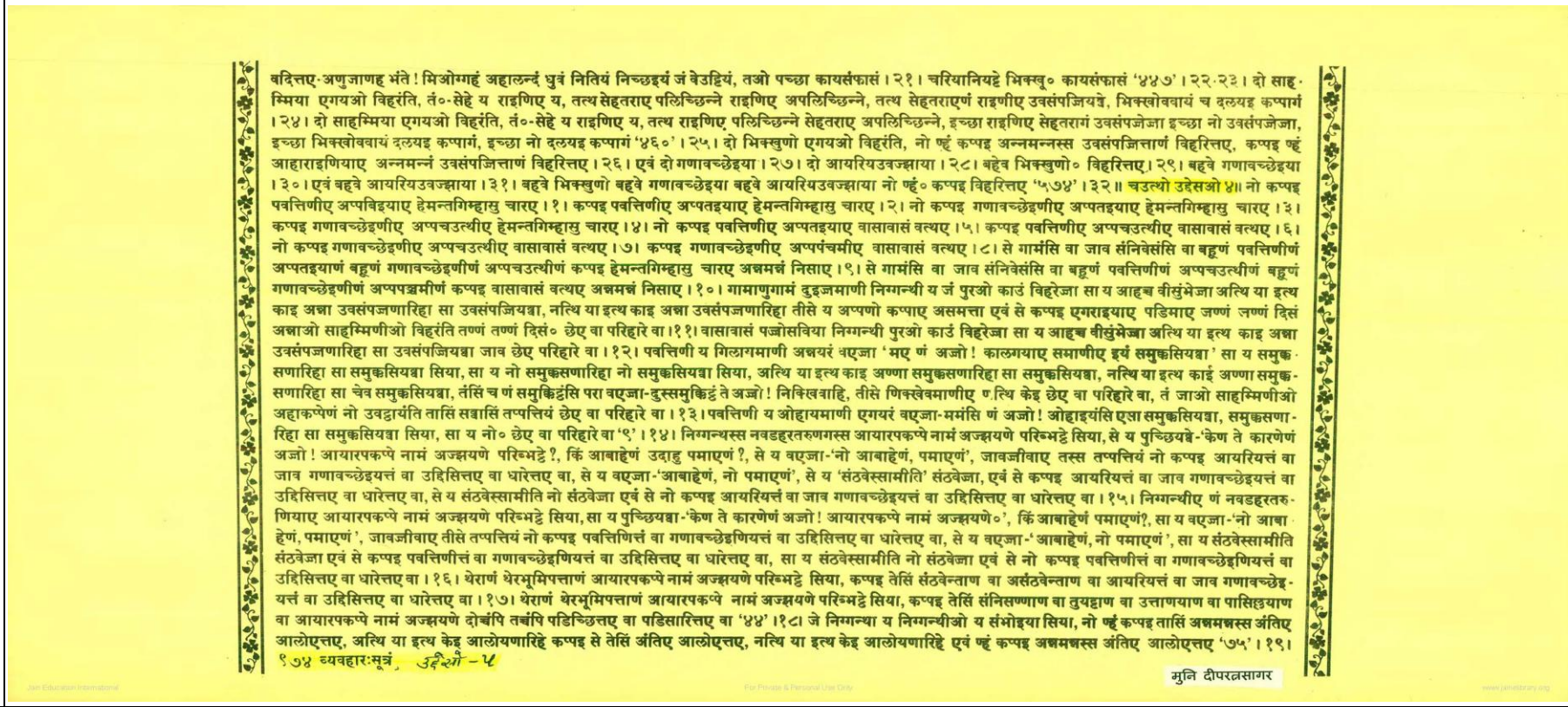

वदित्तए·अणुजाणह भंते ! मिओग्गहं अहालन्दं धुवं नितियं निच्छइयं जं वेउट्टियं, तओ पच्छा कायसंफासं । २१ । चरियानियट्टे भिक्खू० कायसंफासं '४४७' । २२-२३ । दो साह·म्मिया एगयओ विहरंति, तं०-सेहे य राइणिए य, तत्थ सेहतराए पलिच्छिन्ने राइणिए अपलिच्छिन्ने, तत्थ सेहतराएणं राइणीए उवसंपज्जियव्वे, भिक्खोववायं च दलयइ कप्पागं । २४ । दो साहम्मिया एगयओ विहरंति, तं०-सेहे य राइणिए य, तत्थ राइणिए पलिच्छिन्ने सेहतराए अपलिच्छिन्ने, इच्छा राइणिए सेहतरागं उवसंपजेज्जा इच्छा नो उवसंपजेज्जा, इच्छा भिक्खोववायं दलयइ कप्पागं, इच्छा नो दलयइ कप्पागं '४६०' । २५ । दो भिक्खुणो एगयओ विहरंति, नो णं कप्पइ अन्नमन्नस्स उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ णं आहाराइणियाए अन्नमन्नं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए । २६ । एवं दो गणावच्छेइया । २७ । दो आयरियउवज्झाया । २८ । बहवे भिक्खुणो० विहरित्तए । २९ । बहवे गणावच्छेइया । ३० । एवं बहवे आयरियउवज्झाया । ३१ । बहवे भिक्खुणो बहवे गणावच्छेइया बहवे आयरियउवज्झाया नो णं० कप्पइ विहरित्तए '५७४' । ३२ ॥ चउत्थो उद्देसओ ४ ॥ नो कप्पइ पवत्तिणीए अप्पविइयाए हेमन्तगिम्हासु चारए । १ । कप्पइ पवत्तिणीए अप्पतइयाए हेमन्तगिम्हासु चारए । २ । नो कप्पइ गणावच्छेइणीए अप्पतइयाए हेमन्तगिम्हासु चारए । ३ । कप्पइ गणावच्छेइणीए अप्पचउत्थीए हेमन्तगिम्हासु चारए । ४ । नो कप्पइ पवत्तिणीए अप्पतइयाए वासावासं वत्थए । ५ । कप्पइ पवत्तिणीए अप्पचउत्थीए वासावासं वत्थए । ६ । नो कप्पइ गणावच्छेइणीए अप्पचउत्थीए वासावासं वत्थए । ७ । कप्पइ गणावच्छेइणीए अप्पपंचमीए वासावासं वत्थए । ८ । से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा बहूणं पवत्तिणीणं अप्पतइयाणं बहूणं गणावच्छेइणीणं अप्पचउत्थीणं कप्पइ हेमन्तगिम्हासु चारए अन्नमन्नं निसाए । ९ । से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा बहूणं पवत्तिणीणं अप्पचउत्थीणं बहूणं गणावच्छेइणीणं अप्पपञ्चमीणं कप्पइ वासावासं वत्थए अन्नमन्नं निसाए । १० । गामाणुगामं दुइज्जमाणी निग्गन्थी य जं पुरओ काउं विहरेज्जा सा य आहच्च वीसुंभेज्जा अत्थि या इत्थ काइ अन्ना उवसंपज्जणारिहा सा उवसंपज्जियव्वा, नत्थि या इत्थ काइ अन्ना उवसंपज्जणारिहा तीसे य अप्पणो कप्पाए असमत्ता एवं से कप्पइ एगराइयाए पडिमाए जण्णं जण्णं दिसं अन्नाओ साहम्मिणीओ विहरंति तण्णं तण्णं दिसं० छेए वा परिहारे वा । ११ । वासावासं पज्जोसविया निग्गन्थी पुरओ काउं विहरेज्जा सा य आहच्च वीसुंभेज्जा अत्थि या इत्थ काइ अन्ना उवसंपज्जणारिहा सा उवसंपज्जियव्वा जाव छेए परिहारे वा । १२ । पवत्तिणी य गिलायमाणी अन्नयरं वएज्जा 'मए णं अज्जो ! कालगयाए समाणीए इयं समुक्कसियव्वा' सा य समुक्क·सणारिहा सा समुक्कसियव्वा सिया, सा य नो समुक्कसणारिहा नो समुक्कसियव्वा सिया, अत्थि या इत्थ काइ अण्णा समुक्कसणारिहा सा समुक्कसियव्वा, नत्थि या इत्थ काई अण्णा समुक्क·सणारिहा सा चेव समुक्कसियव्वा, तंसि च णं समुक्किट्ठंसि परा वएज्जा-दुस्समुक्किट्ठं ते अज्जो ! निक्खिवाहि, तीसे णिक्खेवमाणीए णत्थि केइ छेए वा परिहारे वा, तं जाओ साहम्मिणीओ अहाकप्पेणं नो उवट्ठायंति तासिं सव्वासिं तप्पत्तियं छेए वा परिहारे वा । १३ । पवत्तिणी य ओहायमाणी एगयरं वएज्जा-ममंसि णं अज्जो ! ओहाइयंसि एसा समुक्कसियव्वा, समुक्कसणा·रिहा सा समुक्कसियव्वा सिया, सा य नो० छेए वा परिहारे वा '९' । १४ । निग्गन्थस्स नवडहरतरुणगस्स आयारपकप्पे नामं अज्झयणे परिब्भट्ठे सिया, से य पुच्छियव्वे-'केण ते कारणेणं अज्जो ! आयारपकप्पे नामं अज्झयणे परिब्भट्ठे ?, किं आबाहेणं उदाहु पमाएणं ?, से य वएज्जा-'नो आबाहेणं, पमाएणं', जावज्जीवाए तस्स तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा, से य वएज्जा-'आबाहेणं, नो पमाएणं', से य 'संठवेस्सामीति' संठवेज्जा, एवं से कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा, से य संठवेस्सामीति नो संठवेज्जा एवं से नो कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा । १५ । निग्गन्थीए णं नवडहरतरु·णियाए आयारपकप्पे नामं अज्झयणे परिब्भट्ठे सिया, सा य पुच्छियव्वा-'केण ते कारणेणं अज्जो ! आयारपकप्पे नामं अज्झयणे०', किं आबाहेणं पमाएणं ?, सा य वएज्जा-'नो आबा·हेणं, पमाएणं', जावज्जीवाए तीसे तप्पत्तियं नो कप्पइ पवत्तिणित्तं वा गणावच्छेइणियत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा, से य वएज्जा-'आबाहेणं, नो पमाएणं', सा य संठवेस्सामीति संठवेज्जा एवं से कप्पइ पवत्तिणीत्तं वा गणावच्छेइणियत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा, सा य संठवेस्सामीति नो संठवेज्जा एवं से नो कप्पइ पवत्तिणीत्तं वा गणावच्छेइणियत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा । १६ । थेराणं थेरभूमिपत्ताणं आयारपकप्पे नामं अज्झयणे परिब्भट्ठे सिया, कप्पइ तेसिं संठवेन्ताण वा असंठवेन्ताण वा आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइ·यत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा । १७ । थेराणं थेरभूमिपत्ताणं आयारपकप्पे नामं अज्झयणे परिब्भट्ठे सिया, कप्पइ तेसिं संनिसण्णाण वा तुयट्टाण वा उत्ताणयाण वा पासिल्लयाण वा आयारपकप्पे नामं अज्झयणे दोच्चंपि तच्चंपि पडिच्छित्तए वा पडिसारित्तए वा '४४' । १८ । जे निग्गन्था य निग्गन्थीओ य संभोइया सिया, नो णं कप्पइ तासिं अन्नमन्नस्स अंतिए आलोएत्तए, अत्थि या इत्थ केइ आलोयणारिहे कप्पइ से तेसिं अंतिए आलोएत्तए, नत्थि या इत्थ केइ आलोयणारिहे एवं णं कप्पइ अन्नमन्नस्स अंतिए आलोएत्तए '७५' । १९ ।

९७४ व्यवहारःसूत्रं, उद्देशो-५

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अत्र उद्देशक: ५ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [२१] दीप अनुक्रम [१४७]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३६], छेदसूत्र - [३] “व्यवहार” मूलं

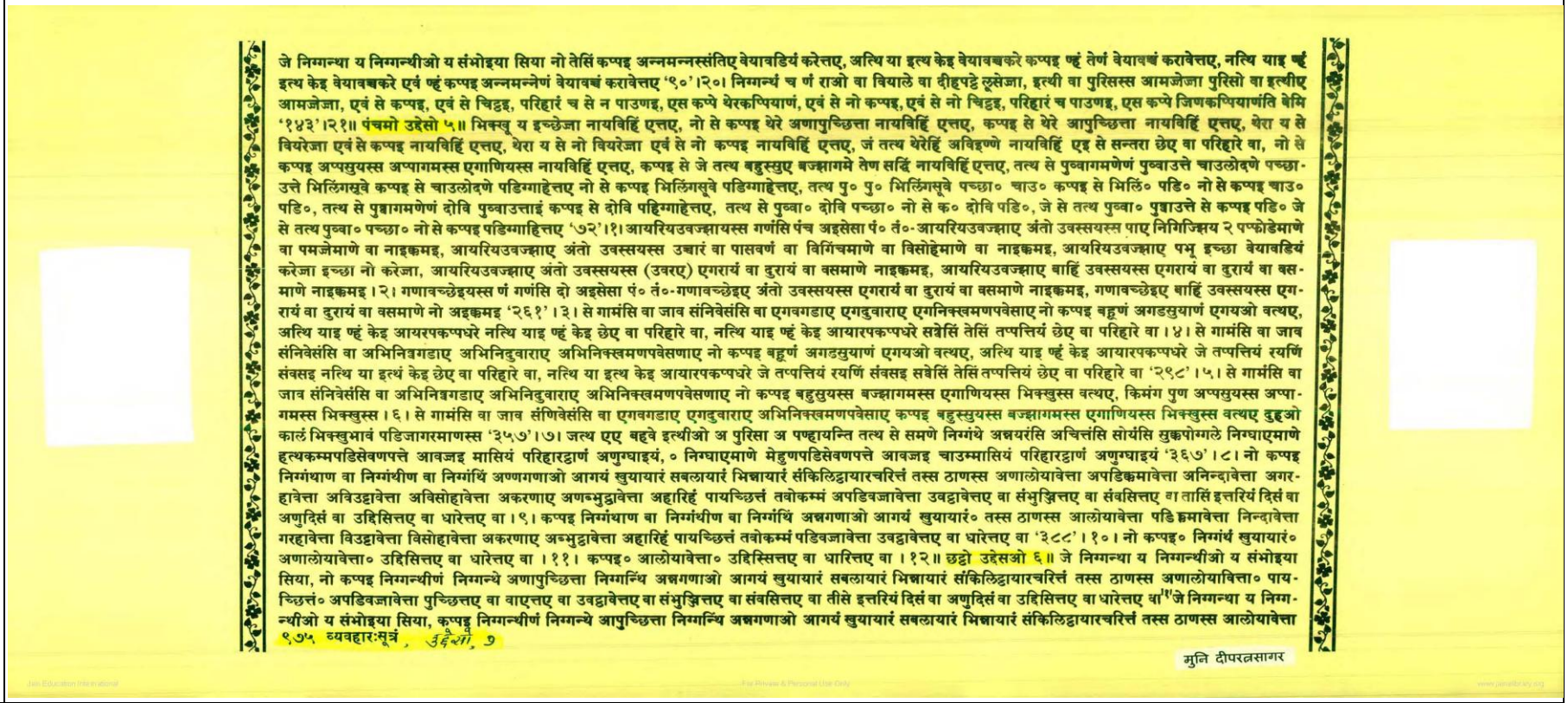

जे निग्गन्था य निग्गन्थीओ य संभोइया सिया नो तेसिं कप्पइ अन्नमन्नस्संतिए वेयावडियं करेत्तए, अत्थि या इत्थ केइ वेयावच्चकरे कप्पइ णं तेणं वेयावच्चं करावेत्तए, नत्थि याइ णं इत्थ केइ वेयावच्चकरे एवं णं कप्पइ अन्नमन्नेणं वेयावच्चं करावेत्तए ‘९०’।२०। निग्गन्थं च णं राओ वा वियाले वा दीहपट्ठे लूसेज्जा, इत्थी वा पुरिसस्स आमज्जेज्जा पुरिसो वा इत्थीए आमज्जेज्जा, एवं से कप्पइ, एवं से चिट्ठइ, परिहारं च से न पाउणइ, एस कप्पे थेरकप्पियाणं, एवं से नो कप्पइ, एवं से नो चिट्ठइ, परिहारं च पाउणइ, एस कप्पे जिणकप्पियाणंति बेमि ‘१४३’।२१॥ पंचमो उद्देसो ५॥ भिक्खू य इच्छेज्जा नायविहिं एत्तए, नो से कप्पइ थेरे अणापुच्छित्ता नायविहिं एत्तए, कप्पइ से थेरे आपुच्छित्ता नायविहिं एत्तए, थेरा य से वियरेज्जा एवं से कप्पइ नायविहिं एत्तए, थेरा य से नो वियरेज्जा एवं से नो कप्पइ नायविहिं एत्तए, जं तत्थ थेरेहिं अविइण्णे नायविहिं एइ से सन्तरा छेए वा परिहारे वा, नो से कप्पइ अप्पसुयस्स अप्पागमस्स एगाणियस्स नायविहिं एत्तए, कप्पइ से जे तत्थ बहुस्सुए बज्झागमे तेण सद्धिं नायविहिं एत्तए, तत्थ से पुव्वागमणेणं पुव्वाउत्ते चाउलोदणे पच्छा-उत्ते भिलिंगसूवे कप्पइ से चाउलोदणे पडिग्गाहेत्तए नो से कप्पइ भिलिंगसूवे पडिग्गाहेत्तए, तत्थ पु० पु० भिलिंगसूवे पच्छा० चाउ० कप्पइ से भिलिं० पडि० नो से कप्पइ चाउ० पडि०, तत्थ से पुव्वागमणेणं दोवि पुव्वाउत्ताइं कप्पइ से दोवि पडिग्गाहेत्तए, तत्थ से पुव्वा० दोवि पच्छा० नो से क० दोवि पडि०, जे से तत्थ पुव्वा० पुव्वाउत्ते से कप्पइ पडि० जे से तत्थ पुव्वा० पच्छा० नो से कप्पइ पडिग्गाहित्तए ‘७२’।१। आयरियउवज्झायस्स गणंसि पंच अइसेसा पं० तं०-आयरियउवज्झाए अंतो उवस्सयस्स पाए निगिज्झिय २ पप्फोडेमाणे वा पमज्जेमाणे वा नाइक्कमइ, आयरियउवज्झाए अंतो उवस्सयस्स उच्चारं वा पासवणं वा विगिंचमाणे वा विसोहेमाणे वा नाइक्कमइ, आयरियउवज्झाए पभू इच्छा वेयावडियं करेज्जा इच्छा नो करेज्जा, आयरियउवज्झाए अंतो उवस्सयस्स (उवरए) एगरायं वा दुरायं वा वसमाणे नाइक्कमइ, आयरियउवज्झाए बाहिं उवस्सयस्स एगरायं वा दुरायं वा वस-माणे नाइक्कमइ।२। गणावच्छेइयस्स णं गणंसि दो अइसेसा पं० तं०-गणावच्छेइए अंतो उवस्सयस्स एगरायं वा दुरायं वा वसमाणे नाइक्कमइ, गणावच्छेइए बाहिं उवस्सयस्स एग-रायं वा दुरायं वा वसमाणे नो अइक्कमइ ‘२६१’।३। से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा एगवगडाए एगदुवाराए एगनिक्खमणपवेसाए नो कप्पइ बहूणं अगडसुयाणं एगयओ वत्थए, अत्थि याइ णं इत्थ केइ आयरपकप्पधरे नत्थि याइ णं इत्थ केइ छेए वा परिहारे वा, नत्थि याइ णं इत्थ केइ आयारपकप्पधरे सव्वेसिं तेसिं तप्पत्तियं छेए वा परिहारे वा।४। से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा अभिनिवगडाए अभिनिदुवाराए अभिनिक्खमणपवेसणाए नो कप्पइ बहूणं अगडसुयाणं एगयओ वत्थए, अत्थि याइ णं इत्थ केइ आयारपकप्पधरे जे तप्पत्तियं रयणिं संवसइ नत्थि या इत्थं केइ छेए वा परिहारे वा, नत्थि या इत्थ केइ आयारपकप्पधरे जे तप्पत्तियं रयणिं संवसइ सव्वेसिं तेसिं तप्पत्तियं छेए वा परिहारे वा ‘२९८’।५। से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा अभिनिवगडाए अभिनिदुवाराए अभिनिक्खमणपवेसणाए नो कप्पइ बहुसुयस्स बज्झागमस्स एगाणियस्स भिक्खुस्स वत्थए, किमंग पुण अप्पसुयस्स अप्पा-गमस्स भिक्खुस्स।६। से गामंसि वा जाव संणिवेसंसि वा एगवगडाए एगदुवाराए अभिनिक्खमणपवेसाए कप्पइ बहुस्सुयस्स बज्झागमस्स एगाणियस्स भिक्खुस्स वत्थए दुहओ कालं भिक्खुभावं पडिजागरमाणस्स ‘३५७’।७। जत्थ एए बहवे इत्थीओ अ पुरिसा अ पण्हायन्ति तत्थ से समणे निग्गंथे अन्नयरंसि अचित्तंसि सोयंसि सुक्कपोग्गले निग्घाएमाणे हत्थकम्मपडिसेवणपत्ते आवज्जइ मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं, ० निग्घाएमाणे मेहुणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ‘३६७’।८। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा निग्गंथिं अण्णगणाओ आगयं खुयायारं सबलायारं भिन्नायारं संकिलिट्ठायारचरित्तं तस्स ठाणस्स अणालोयावेत्ता अपडिक्कमावेत्ता अनिन्दावेत्ता अगर-हावेत्ता अविउट्टावेत्ता अविसोहावेत्ता अकरणाए अणब्भुट्ठावेत्ता अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं अपडिवज्जावेत्ता उवट्ठावेत्तए वा संभुज्जित्तए वा संवसित्तए वा तासिं इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा।९। कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा निग्गंथिं अन्नगणाओ आगयं खुयायारं० तस्स ठाणस्स आलोयावेत्ता पडिक्कमावेत्ता निन्दावेत्ता गरहावेत्ता विउट्टावेत्ता विसोहावेत्ता अकरणाए अब्भुट्ठावेत्ता अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जावेत्ता उवट्ठावेत्तए वा धारेत्तए वा ‘३८८’।१०। नो कप्पइ० निग्गंथं खुयायारं० अणालोयावेत्ता० उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा।११। कप्पइ० आलोयावेत्ता० उद्दिसित्तए वा धारित्तए वा।१२॥ छट्ठो उद्देसओ ६॥ जे निग्गन्था य निग्गन्थीओ य संभोइया सिया, नो कप्पइ निग्गन्थीणं निग्गन्थे अणापुच्छित्ता निग्गन्थिं अन्नगणाओ आगयं खुयायारं सबलायारं भिन्नायारं संकिलिट्ठायारचरित्तं तस्स ठाणस्स अणालोयावित्ता० पाय-च्छित्तं० अपडिवज्जावेत्ता पुच्छित्तए वा वाएत्तए वा उवट्ठावेत्तए वा संभुज्जित्तए वा संवसित्तए वा तीसे इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा[१]जे निग्गन्था य निग्ग-न्थीओ य संभोइया सिया, कप्पइ निग्गन्थीणं निग्गन्थे आपुच्छित्ता निग्गन्थिं अन्नगणाओ आगयं खुयायारं सबलायारं भिन्नायारं संकिलिट्ठायारचरित्तं तस्स ठाणस्स आलोयावेत्ता

९७५ व्यवहारःसूत्रं, उद्देशो, ७

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अत्र उद्देशक: ७ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [२] दीप अनुक्रम [१६१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३६], छेदसूत्र - [३] “व्यवहार” मूलं

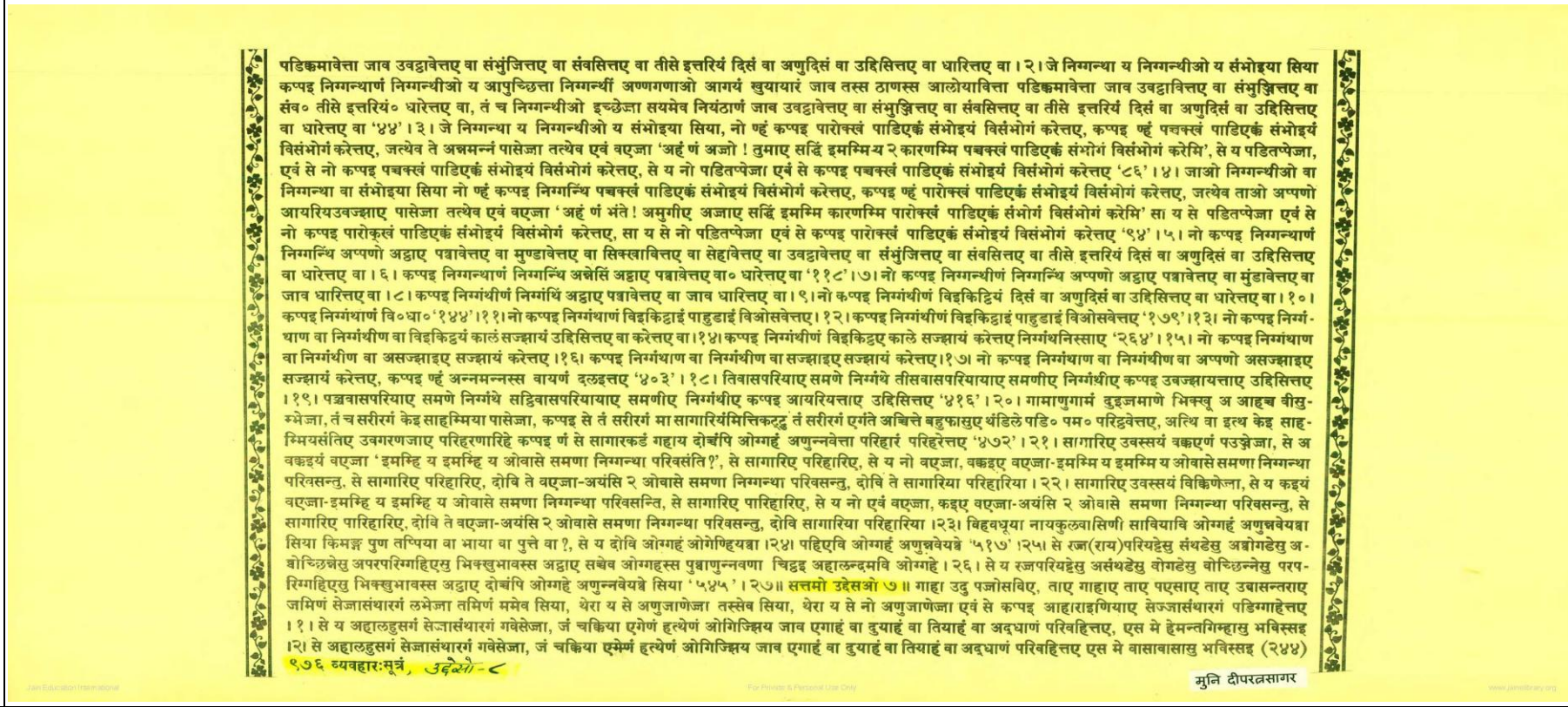

पडिक्कमावेत्ता जाव उवट्ठावेत्तए वा संभुंजित्तए वा संवसित्तए वा तीसे इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारित्तए वा। २। जे निग्गन्था य निग्गन्थीओ य संभोइया सिया कप्पइ निग्गन्थाणं निग्गन्थीओ य आपुच्छित्ता निग्गन्थीं अण्णगणाओ आगयं खुयायारं जाव तस्स ठाणस्स आलोयावित्ता पडिक्कमावेत्ता जाव उवट्ठावित्तए वा संभुञ्जित्तए वा संव० तीसे इत्तरियं० धारेत्तए वा, तं च निग्गन्थीओ इच्छेज्जा सयमेव नियंठाणं जाव उवट्ठावेत्तए वा संभुञ्जित्तए वा संवसित्तए वा तीसे इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा '४४'। ३। जे निग्गन्था य निग्गन्थीओ य संभोइया सिया, नो ण्हं कप्पइ पारोक्खं पाडिएक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए, कप्पइ ण्हं पच्चक्खं पाडिएक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए, जत्थेव ते अन्नमन्नं पासेज्जा तत्थेव एवं वएज्जा 'अहं णं अज्जो ! तुमाए सद्धिं इमम्मि य २ कारणम्मि पच्चक्खं पाडिएक्कं संभोगं विसंभोगं करेमि', से य पडितप्पेज्जा, एवं से नो कप्पइ पच्चक्खं पाडिएक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए, से य नो पडितप्पेज्जा एवं से कप्पइ पच्चक्खं पाडिएक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए '८६'। ४। जाओ निग्गन्थीओ वा निग्गन्था वा संभोइया सिया नो ण्हं कप्पइ निग्गन्थि पच्चक्खं पाडिएक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए, कप्पइ ण्हं पारोक्खं पाडिएक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए, जत्थेव ताओ अप्पणो आयरियउवज्झाए पासेज्जा तत्थेव एवं वएज्जा 'अहं णं भंते ! अमुगीए अज्जाए सद्धिं इमम्मि कारणम्मि पारोक्खं पाडिएक्कं संभोगं विसंभोगं करेमि' सा य से पडितप्पेज्जा एवं से नो कप्पइ पारोक्खं पाडिएक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए, सा य से नो पडितप्पेज्जा एवं से कप्पइ पारोक्खं पाडिएक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए '९४'। ५। नो कप्पइ निग्गन्थाणं निग्गन्थिं अप्पणो अट्ठाए पव्वावेत्तए वा मुण्डावेत्तए वा सिक्खावित्तए वा सेहावेत्तए वा उवट्ठावेत्तए वा संभुंजित्तए वा संवसित्तए वा तीसे इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा। ६। कप्पइ निग्गन्थाणं निग्गन्थिं अन्नेसिं अट्ठाए पव्वावेत्तए वा० धारेत्तए वा '११८'। ७। नो कप्पइ निग्गन्थीणं निग्गन्थिं अप्पणो अट्ठाए पव्वावेत्तए वा मुंडावेत्तए वा जाव धारित्तए वा। ८। कप्पइ निग्गंथीणं निग्गंथिं अट्ठाए पव्वावेत्तए वा जाव धारित्तए वा। ९। नो कप्पइ निग्गंथीणं विइकिट्टियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा। १०। कप्पइ निग्गंथाणं वि०धा०'१४४'। ११। नो कप्पइ निग्गंथाणं विइकिट्ठाइं पाहुडाइं विओसवेत्तए। १२। कप्पइ निग्गंथीणं विइकिट्ठाइं पाहुडाइं विओसवेत्तए '१७९'। १३। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा विइकिट्टियं कालं सज्झायं उद्दिसित्तए वा करेत्तए वा। १४। कप्पइ निग्गंथीणं विइकिट्ठए काले सज्झायं करेत्तए निग्गंथनिस्साए '२६४'। १५। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा असज्झाइए सज्झायं करेत्तए। १६। कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा सज्झाइए सज्झायं करेत्तए। १७। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अप्पणो असज्झाइए सज्झायं करेत्तए, कप्पइ ण्हं अन्नमन्नस्स वायणं दलइत्तए '४०३'। १८। तिवासपरियाए समणे निग्गंथे तीसवासपरियायाए समणीए निग्गंथीए कप्पइ उवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए। १९। पञ्चवासपरियाए समणे निग्गंथे सट्ठिवासपरियायाए समणीए निग्गंथीए कप्पइ आयरियत्ताए उद्दिसित्तए '४१६'। २०। गामाणुगामं दुइज्जमाणे भिक्खू अ आहच्च वीसुम्भेज्जा, तं च सरीरगं केइ साहम्मिया पासेज्जा, कप्पइ से तं सरीरगं मा सागारियंमित्तिकट्टु तं सरीरगं एगंते अचित्ते बहुफासुए थंडिले पडि० पम० परिट्ठवेत्तए, अत्थि वा इत्थ केइ साहम्मियसंतिए उवगरणजाए परिहरणारिहे कप्पइ णं से सागारकडं गहाय दोच्चंपि ओग्गहं अणुन्नवेत्ता परिहारं परिहरेत्तए '४७२'। २१। सागारिए उवस्सयं वक्कएणं पउञ्जेज्जा, से अ वक्कइयं वएज्जा 'इमम्हि य इमम्हि य ओवासे समणा निग्गन्था परिवसंति?', से सागारिए परिहारिए, से य नो वएज्जा, वक्कइए वएज्जा-इमम्मि य इमम्मि य ओवासे समणा निग्गन्था परिवसन्तु, से सागारिए परिहारिए, दोवि ते वएज्जा-अयंसि २ ओवासे समणा निग्गन्था परिवसन्तु, दोवि ते सागारिया परिहारिया। २२। सागारिए उवस्सयं विकिणेज्जा, से य कइयं वएज्जा-इमम्हि य इमम्हि य ओवासे समणा निग्गन्था परिवसन्ति, से सागारिए पारिहारिए, से य नो एवं वएज्जा, कइए वएज्जा-अयंसि २ ओवासे समणा निग्गन्था परिवसन्तु, से सागारिए पारिहारिए, दोवि ते वएज्जा-अयंसि २ ओवासे समणा निग्गन्था परिवसन्तु, दोवि सागारिया परिहारिया। २३। विहवधूया नायकुलवासिणी सावियावि ओग्गहं अणुन्नवेयव्वा सिया किमङ्ग पुण तप्पिया वा भाया वा पुत्ते वा?, से य दोवि ओग्गहं ओगेण्हियव्वा। २४। पहिएवि ओग्गहं अणुन्नवेयव्वे '५१७'। २५। से रज्ज(राय)परियट्टेसु संथडेसु अव्वोगडेसु अवोच्छिन्नेसु अपरपरिग्गहिएसु भिक्खुभावस्स अट्ठाए सव्वेव ओग्गहस्स पुव्वाणुन्नवणा चिट्ठइ अहालन्दमवि ओग्गहे। २६। से य रज्जपरियट्टेसु असंथडेसु वोगडेसु वोच्छिन्नेसु परपरिग्गहिएसु भिक्खुभावस्स अट्ठाए दोच्चंपि ओग्गहे अणुन्नवेयव्वे सिया '५४५'। २७॥ सत्तमो उद्देसओ ७ ॥ गाहा उदु पज्जोसविए, ताए गाहाए ताए पएसाए ताए उवासन्तराए जमिणं सेज्जासंथारगं लभेज्जा तमिणं ममेव सिया, थेरा य से अणुजाणेज्जा तस्सेव सिया, थेरा य से नो अणुजाणेज्जा एवं से कप्पइ आहाराइणियाए सेज्जासंथारगं पडिग्गाहेत्तए। १। से य अहालहुसगं सेज्जासंथारगं गवेसेज्जा, जं चक्किया एगेणं हत्थेणं ओगिज्झिय जाव एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा अद्धाणं परिवहित्तए, एस मे हेमन्तगिम्हासु भविस्सइ। २। से अहालहुसगं सेज्जासंथारगं गवेसेज्जा, जं चक्किया एक्केण हत्थेण ओगिज्झिय जाव एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा अद्धाणं परिवहित्तए एस मे वासावासासु भविस्सइ (२४४)

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अत्र उद्देशक: ८ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [४] दीप अनुक्रम [१९०]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३६], छेदसूत्र - [३] “व्यवहार” मूलं

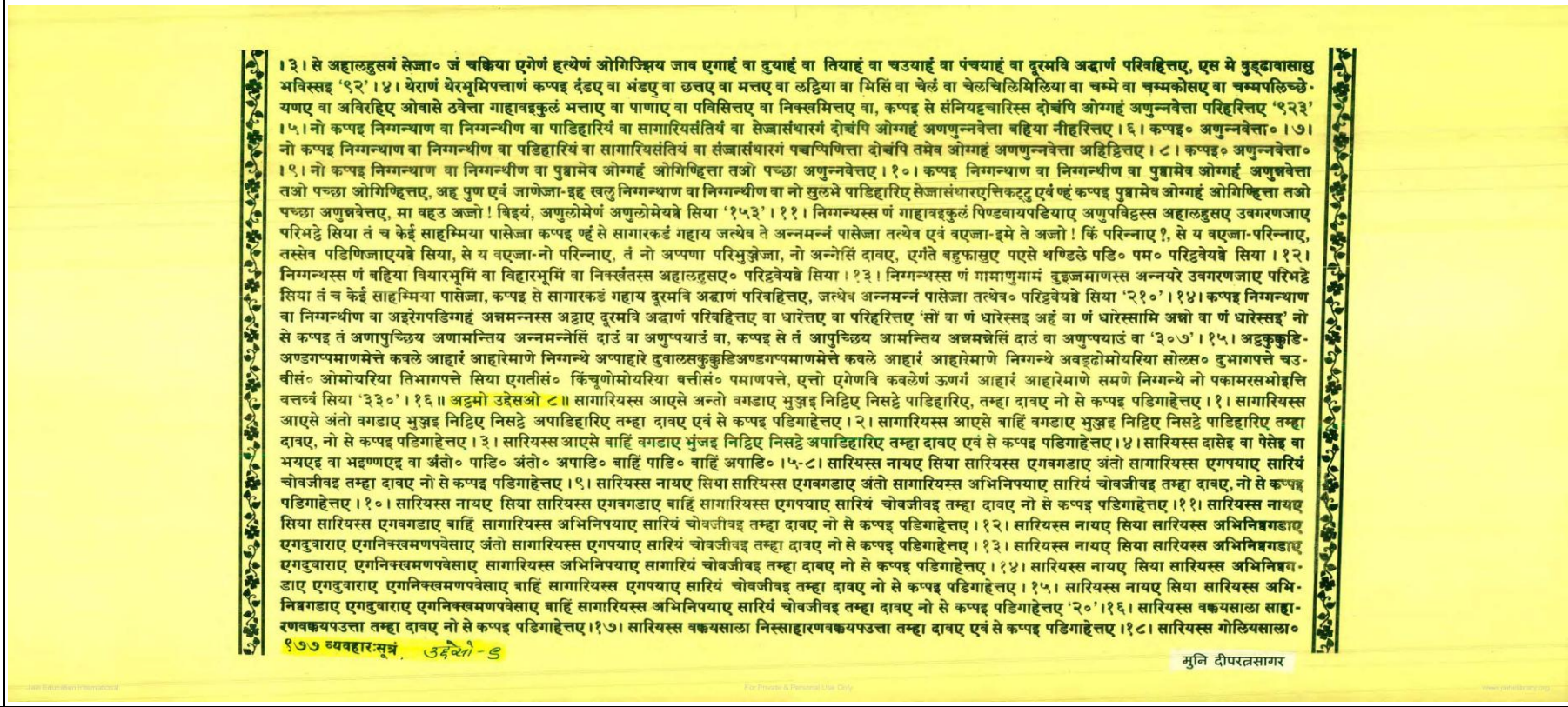

।३। से अहालहुसगं सेज्जा० जं चक्किया एगेणं हत्थेणं ओगिज्झिय जाव एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा चउयाहं वा पंचयाहं वा दूरमवि अद्धाणं परिवहित्तए, एस मे वुड्ढावासासु भविस्सइ ‘९२’।४। थेराणं थेरभूमिपत्ताणं कप्पइ दंडए वा भंडए वा छत्तए वा मत्तए वा लट्ठिया वा भिसिं वा चेलं वा चेलचिलिमिलिया वा चम्मे वा चम्मकोसए वा चम्मपलिच्छेयणए वा अविरहिए ओवासे ठवेत्ता गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा पविसित्तए वा निक्खमित्तए वा, कप्पइ से संनियट्टचारिस्स दोच्चंपि ओग्गहं अणुन्नवेत्ता परिहरित्तए ‘९२३’ ।५। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पाडिहारियं वा सागारियसंतियं वा सेज्जासंथारगं दोच्चंपि ओग्गहं अणणुन्नवेत्ता बहिया नीहरित्तए।६। कप्पइ० अणुन्नवेत्ता०।७। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पडिहारियं वा सागारियसंतियं वा संज्जासंथारगं पच्चप्पिणित्ता दोच्चंपि तमेव ओग्गहं अणणुन्नवेत्ता अहिट्ठित्तए।८। कप्पइ० अणुन्नवेत्ता०।९। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पुव्वामेव ओग्गहं ओगिण्हित्ता तओ पच्छा अणुन्नवेत्तए।१०। कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पुव्वामेव ओग्गहं अणुन्नवेत्ता तओ पच्छा ओगिण्हित्तए, अह पुण एवं जाणेज्जा-इह खलु निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा नो सुलभे पाडिहारिए सेज्जासंथारए त्तिकट्टु एवं णं कप्पइ पुव्वामेव ओग्गहं ओगिण्हित्ता तओ पच्छा अणुन्नवेत्तए, मा बहउ अज्जो! विइयं, अणुलोमेणं अणुलोमेयव्वे सिया ‘१५३’।११। निग्गन्थस्स णं गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुपविट्ठस्स अहालहुसए उवगरणजाए परिभट्टे सिया तं च केई साहम्मिया पासेज्जा कप्पइ णं से सागारकडं गहाय जत्थेव ते अन्नमन्नं पासेज्जा तत्थेव एवं वएज्जा-इमे ते अज्जो! किं परिन्नाए?, से य वएज्जा-परिन्नाए, तस्सेव पडिणिज्जाएयव्वे सिया, से य वएज्जा-नो परिन्नाए, तं नो अप्पणा परिभुञ्जेज्जा, नो अन्नेसिं दावए, एगंते बहुफासुए पएसे थण्डिले पडि० पम० परिट्ठवेयव्वे सिया।१२। निग्गन्थस्स णं बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खंतस्स अहालहुसए० परिट्ठवेयव्वे सिया।१३। निग्गन्थस्स णं गामाणुगामं दुइज्जमाणस्स अन्नयरे उवगरणजाए परिभट्टे सिया तं च केई साहम्मिया पासेज्जा, कप्पइ से सागारकडं गहाय दूरमवि अद्धाणं परिवहित्तए, जत्थेव अन्नमन्नं पासेज्जा तत्थेव० परिट्ठवेयव्वे सिया ‘२१०’।१४। कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अइरेगपडिग्गहं अन्नमन्नस्स अट्ठाए दूरमवि अद्धाणं परिवहित्तए वा धारेत्तए वा परिहरित्तए ‘सो वा णं धारेस्सइ अहं वा णं धारेस्सामि अन्नो वा णं धारेस्सइ’ नो से कप्पइ तं अणापुच्छिय अणामन्तिय अन्नमन्नेसिं दाउं वा अणुप्पयाउं वा, कप्पइ से तं आपुच्छिय आमन्तिय अन्नमन्नेसिं दाउं वा अणुप्पयाउं वा ‘३०७’।१५। अट्ठकुक्कुडिअण्डगप्पमाणमेत्ते कवले आहारं आहारेमाणे निग्गन्थे अप्पाहारे दुवालसकुक्कुडिअण्डगप्पमाणमेत्ते कवले आहारं आहारेमाणे निग्गन्थे अवड्ढोमोयरिया सोलस० दुभागपत्ते चउवीसं० ओमोयरिया तिभागपत्ते सिया एगतीसं० किंचूणोमोयरिया वत्तीसं० पमाणपत्ते, एत्तो एगेणवि कवलेणं ऊणगं आहारं आहारेमाणे समणे निग्गन्थे नो पकामरसभोइत्ति वत्तव्वं सिया ‘३३०’।१६॥ अट्ठमो उद्देसओ ८॥ सागारियस्स आएसे अन्तो वगडाए भुञ्जइ निट्ठिए निसट्ठे पाडिहारिए, तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए।१। सागारियस्स आएसे अंतो वगडाए भुञ्जइ निट्ठिए निसट्ठे अपाडिहारिए तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए।२। सागारियस्स आएसे बाहिं वगडाए भुञ्जइ निट्ठिए निसट्ठे पाडिहारिए तम्हा दावए, नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए।३। सारियस्स आएसे बाहिं वगडाए भुंजइ निट्ठिए निसट्ठे अपाडिहारिए तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए।४। सारियस्स दासेइ वा पेसेइ वा भयएइ वा भइण्णएइ वा अंतो० पाडि० अंतो० अपाडि० बाहिं पाडि० बाहिं अपाडि०।५-८। सारियस्स नायए सिया सारियस्स एगवगडाए अंतो सागारियस्स एगपयाए सारियं चोवजीवइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए।९। सारियस्स नायए सिया सारियस्स एगवगडाए अंतो सागारियस्स अभिनिपयाए सारियं चोवजीवइ तम्हा दावए, नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए।१०। सारियस्स नायए सिया सारियस्स एगवगडाए बाहिं सागारियस्स एगपयाए सारियं चोवजीवइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए।११। सारियस्स नायए सिया सारियस्स एगवगडाए बाहिं सागारियस्स अभिनिपयाए सारियं चोवजीवइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए।१२। सारियस्स नायए सिया सारियस्स अभिनिवगडाए एगदुवाराए एगनिक्खमणपवेसाए अंतो सागारियस्स एगपयाए सारियं चोवजीवइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए।१३। सारियस्स नायए सिया सारियस्स अभिनिवगडाए एगदुवाराए एगनिक्खमणपवेसाए सागारियस्स अभिनिपयाए सागारियं चोवजीवइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए।१४। सारियस्स नायए सिया सारियस्स अभिनिवगडाए एगदुवाराए एगनिक्खमणपवेसाए बाहिं सागारियस्स एगपयाए सारियं चोवजीवइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए।१५। सारियस्स नायए सिया सारियस्स अभिनिवगडाए एगदुवाराए एगनिक्खमणपवेसाए बाहिं सागारियस्स अभिनिपयाए सारियं चोवजीवइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ‘२०’।१६। सारियस्स वक्कयसाला साहारणवक्कयपउत्ता तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए।१७। सारियस्स वक्कयसाला निस्साहारणवक्कयपउत्ता तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए।१८। सारियस्स गोलियसाला०

मुनि दीपरत्नसागर

	अत्र उद्देशक: ९ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [३०] दीप अनुक्रम [२३२]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३६], छेदसूत्र - [३] “व्यवहार” मूलं

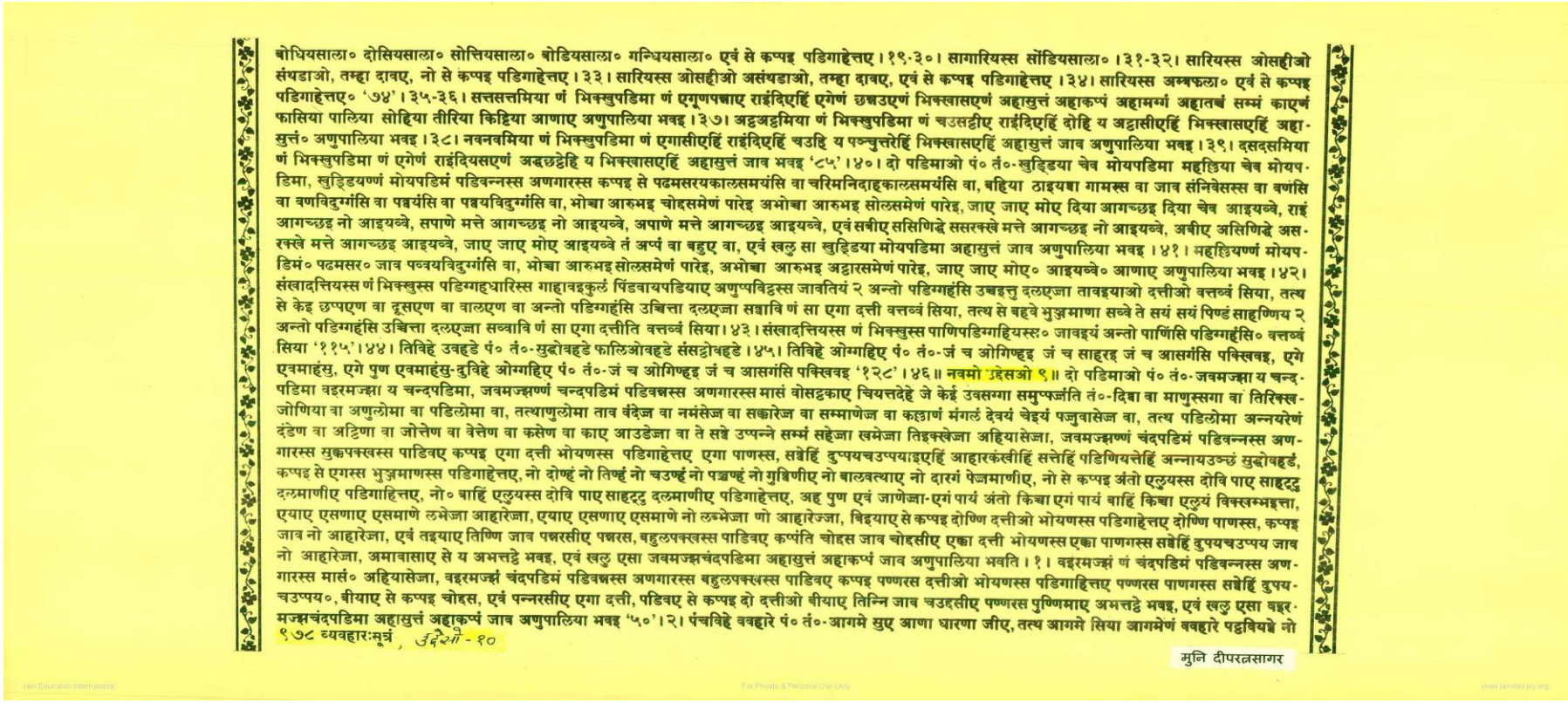

बोधियसाला० दोसियसाला० सोत्तियसाला० बोडियसाला० गन्धियसाला० एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए।१९-३०। सागारियस्स सोंडियसाला०।३१-३२। सारियस्स ओसहीओ संघडाओ, तम्हा दावए, नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए।३३। सारियस्स ओसहीओ असंघडाओ, तम्हा दावए, एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए।३४। सारियस्स अम्बफला० एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए० '७४'।३५-३६। सत्तसत्तमिया णं भिक्खुपडिमा णं एगूणपन्नाए राईदिएहिं एगेणं छन्नउएणं भिक्खासएणं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया आणाए अणुपालिया भवइ।३७। अट्ठअट्ठमिया णं भिक्खुपडिमा णं चउसट्ठीए राईदिएहिं दोहि य अट्ठासीएहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं० अणुपालिया भवइ।३८। नवनवमिया णं भिक्खुपडिमा णं एगासीएहिं राईदिएहिं चउहि य पञ्चुत्तरेहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं जाव अणुपालिया भवइ।३९। दसदसमिया णं भिक्खुपडिमा णं एगेणं राईदियसएणं अद्धछट्ठेहि य भिक्खासएहिं अहासुत्तं जाव भवइ '८५'।४०। दो पडिमाओ पं० तं०-खुड्डिया चेव मोयपडिमा महल्लिया चेव मोयपडिमा, खुड्डियण्णं मोयपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पइ से पढमसरयकालसमयंसि वा चरिमनिदाहकालसमयंसि वा, बहिया ठाइयव्वा गामस्स वा जाव संनिवेसस्स वा वणंसि वा वणविदुग्गंसि वा पव्वयंसि वा पव्वयविदुग्गंसि वा, भोचा आरुभइ चोद्दसमेणं पारेइ अभोच्चा आरुभइ सोलसमेणं पारेइ, जाए जाए मोए दिया आगच्छइ दिया चेव आइयव्वे, राइं आगच्छइ नो आइयव्वे, सपाणे मत्ते आगच्छइ नो आइयव्वे, अपाणे मत्ते आगच्छइ आइयव्वे, एवं सबीए ससिणिद्धे ससरक्खे मत्ते आगच्छइ नो आइयव्वे, अबीए असिणिद्धे असरक्खे मत्ते आगच्छइ आइयव्वे, जाए जाए मोए आइयव्वे तं अप्पं वा बहुए वा, एवं खलु सा खुड्डिया मोयपडिमा अहासुत्तं जाव अणुपालिया भवइ।४१। महल्लियण्णं मोयपडिमं० पढमसर० जाव पव्वयविदुग्गंसि वा, भोचा आरुभइ सोलसमेणं पारेइ, अभोचा आरुभइ अट्ठारसमेणं पारेइ, जाए जाए मोए० आइयव्वे० आणाए अणुपालिया भवइ।४२। संखादत्तियस्स णं भिक्खुस्स पडिग्गहधारिस्स गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठस्स जावतियं २ अन्तो पडिग्गहंसि उच्चइत्तु दलएज्जा तावइयाओ दत्तीओ वत्तव्वं सिया, तत्थ से केइ छप्पएण वा दूसएण वा वालएण वा अन्तो पडिग्गहंसि उच्चित्ता दलएज्जा सव्वावि णं सा एगा दत्ती वत्तव्वं सिया, तत्थ से बहवे भुञ्जमाणा सव्वे ते सयं सयं पिण्डं साहणिय २ अन्तो पडिग्गहंसि उच्चित्ता दलएज्जा सव्वावि णं सा एगा दत्तीति वत्तव्वं सिया।४३। संखादत्तियस्स णं भिक्खुस्स पाणिपडिग्गहियस्स० जावइयं अन्तो पाणिंसि पडिग्गहंसि० वत्तव्वं सिया '११५'।४४। तिविहे उवहडे पं० तं०-सुद्धोवहडे फालिओवहडे संसट्ठोवहडे।४५। तिविहे ओग्गहिए पं० तं०-जं च ओगिण्हइ जं च साहरइ जं च आसगंसि पक्खिवइ, एगे एवमाहंसु, एगे पुण एवमाहंसु-दुविहे ओग्गहिए पं० तं०-जं च ओगिण्हइ जं च आसगंसि पक्खिवइ '१२८'।४६॥ नवमो उद्देसओ ९॥ दो पडिमाओ पं० तं०-जवमज्झा य चन्दपडिमा वइरमज्झा य चन्दपडिमा, जवमज्झण्णं चन्दपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स मासं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केई उवसग्गा समुप्पज्जंति तं०-दिवा वा माणुस्सगा वा तिरिक्खजोणिया वा अणुलोमा वा पडिलोमा वा, तत्थाणुलोमा ताव वंदेज्ज वा नमंसेज्ज वा सक्कारेज्ज वा सम्माणेज्ज वा कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेज्ज वा, तत्थ पडिलोमा अन्नयरेणं दंडेण वा अट्ठिणा वा जोत्तेण वा वेत्तेण वा कसेण वा काए आउडेज्जा वा ते सव्वे उप्पन्ने सम्मं सहेज्जा खमेज्जा तितिक्खेज्जा अहियासेज्जा, जवमज्झण्णं चंदपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स सुक्कपक्खस्स पाडिवए कप्पइ एगा दत्ती भोयणस्स पडिगाहेत्तए एगा पाणस्स, सव्वेहिं दुप्पयचउप्पयाइएहिं आहारकंखीहिं सत्तेहिं पडिणियत्तेहिं अन्नायउञ्छं सुद्धोवहडं, कप्पइ से एगस्स भुञ्जमाणस्स पडिगाहेत्तए, नो दोण्हं नो तिण्हं नो चउण्हं नो पञ्चण्हं नो गुव्विणीए नो बालवत्थाए नो दारगं पेज्जमाणीए, नो से कप्पइ अंतो एलुयस्स दोवि पाए साहट्टु दलमाणीए पडिगाहित्तए, नो० बाहिं एलुयस्स दोवि पाए साहट्टु दलमाणीए पडिगाहेत्तए, अह पुण एवं जाणेज्जा-एगं पायं अंतो किच्चा एगं पायं बाहिं किच्चा एलुयं विक्खम्भइत्ता, एयाए एसणाए एसमाणे लभेज्जा आहारेज्जा, एयाए एसणाए एसमाणे नो लब्भेज्जा णो आहारेज्जा, विइयाए से कप्पइ दोण्णि दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेत्तए दोण्णि पाणस्स, कप्पइ जाव नो आहारेज्जा, एवं तइयाए तिण्णि जाव पन्नरसीए पन्नरस, बहुलपक्खस्स पाडिवए कप्पंति चोद्दस जाव चोद्दसीए एक्का दत्ती भोयणस्स एक्का पाणगस्स सव्वेहिं दुपयचउप्पय जाव नो आहारेज्जा, अमावासाए से य अभत्तट्ठे भवइ, एवं खलु एसा जवमज्झचंदपडिमा अहासुत्तं अहाकप्पं जाव अणुपालिया भवति।१। वइरमज्झं णं चंदपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स मासं० अहियासेज्जा, वइरमज्झं चंदपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स बहुलपक्खस्स पाडिवए कप्पइ पण्णरस दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहित्तए पण्णरस पाणगस्स सव्वेहिं दुपयचउप्पय०, बीयाए से कप्पइ चोद्दस, एवं पन्नरसीए एगा दत्ती, पडिवए से कप्पइ दो दत्तीओ बीयाए तिन्नि जाव चउद्दसीए पण्णरस पुण्णिमाए अभत्तट्ठे भवइ, एवं खलु एसा वइरमज्झचंदपडिमा अहासुत्तं अहाकप्पं जाव अणुपालिया भवइ '५०'।२। पंचविहे ववहारे पं० तं०-आगमे सुए आणा धारणा जीए, तत्थ आगमे सिया आगमेणं ववहारे पट्ठवियव्वे नो

मुनि दीपरत्नसागर

	अत्र उद्देशक: १० आरब्ध:

से तत्थ आगमे सिया सुएणं ववहारे पट्टवियव्वे सिया, नो से तत्थ सुए सिया जहा से तत्थ आणा सिया आणाए ववहारे पट्टवेयव्वे सिया, नो से तत्थ आणा सिया जहा से तत्थ धारणा सिया धारणाए ववहारे पट्टवेयव्वे सिया, णो से तत्थ धारणा सिया जहा से तत्थ जीए सिया जीएणं ववहारे पट्टवेयव्वे सिया, एएहिं पंचहिं ववहारेहिं ववहारं पट्टवेजा, तंजहा-आगमेणं सुएणं आणाए धारणाए जीएणं, जहा २ आगमे सुए आणा धारणा जीए तहा २ ववहारं पट्टविजा, से किमाहु भन्ते!?, आगमबलिया समणा निग्गन्था, इच्चेइयं पंचविहं ववहारं जया २ जहिं २ जहा २ तहिं २ अणिस्सिओवस्सियं ववहारं ववहरमाणे समणे निग्गन्थे आणाए आराहए भवति ‘७१५’।३। चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-अट्ठकरे नामं एगे नो माणकरे माणकरे नामं एगे नो अट्ठकरे एगे अट्ठकरेवि माणकरेवि एगे नो अट्ठकरे नो माणकरे ‘७२९’।४। चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-गणट्ठकरे नामं एगे नो माणकरे माणकरे नामं एगे नो गणट्ठकरे एगे गणट्ठकरेवि माणकरेवि एगे नो गणट्ठकरे नो माणकरे ‘७३३’।५। चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-गणसंगहकरे नामं एगे नो माणकरे माणकरे नामं एगे नो गणसंगहकरे एगे गणसंगहकरेवि माणकरेवि एगे नो गणसंगहकरे नो माणकरे ‘७३५’।६। चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-गणसोहकरे नामं एगे नो माणकरे माणकरे नामं एगे नो गणसोहकरे एगे गणसोहकरेवि माणकरेवि एगे नो गणसोहकरे नो माणकरे।७। चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-गणसोहिकरे नामं एगे नो माणकरे माणकरे नामं एगे नो गणसोहिकरे एगे गणसोहिकरेवि माणकरेवि एगे नो गणसोहिकरे नो माणकरे ‘७३९’।८। चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-रूवं नामेगे जहइ नो धम्मं धम्मं नामेगे जहइ नो रूवं एगे रूवंपि जहइ धम्मंपि जहइ एगे नो रूवं जहइ नो धम्मं जहइ ‘७४३’।९। चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-धम्मं नामेगे जहइ नो गणसंठिइं गणसंठिइं नामेगे जहइ नो धम्मं एगे गणसंठंपि जहइ धम्मंपि जहइ एगे नो गणसंठिइं जहइ नो धम्मं जहइ ‘७४७’।१०। चत्तारि पुरिसजाया पं० तं०-पियधम्मे नामेगे नो दढधम्मे दढधम्मे नामेगे नो पियधम्मे एगे पियधम्मेवि दढधम्मेवि एगे नो पियधम्मे नो दढधम्मे ‘७५१’।११। चत्तारि आयरिया पं० तं०-पव्वावणायरिए नामेगे नो उवट्ठावणायरिए उवट्ठावणायरिए नामेगे नो पव्वावणायरिए एगे पव्वावणायरिएवि उवट्ठावणायरिएवि एगे नो पव्वावणायरिए नो उवट्ठावणायरिए, धम्मायरिए ‘७५६’।१२। चत्तारि आयरिया पं० तं०-उद्देसणायरिए नामेगे णो वायणायरिए वायणायरिए नामेगे नो उद्देसणायरिए एगे उद्देसणायरिएवि वायणायरिएवि एगे नो उद्देसणायरिए नो वायणायरिए, धम्मायरिए ‘७५७’।१३। चत्तारि अंतेवासी पं० तं०-पव्वावणअंतेवासी णामेगे णो उवट्ठावणअंतेवासी उवट्ठावणांतेवासी णामेगे णो पव्वावणअंतेवासी एगे पव्वा० उवट्ठा० एगे नो पव्वा० नो उव०, धम्मअंतेवासी।१४। चत्तारि अंतेवासी पं० तं०-उद्देसणन्तेवासी नामेगे नो वायणन्तेवासी वायणन्तेवासी नामेगे नो उद्देसणन्तेवासी एगे उद्देसणन्तेवासीवि वायणन्तेवासीवि एगे नो उद्देसणन्तेवासी नो वायणन्तेवासी, धम्मन्तेवासी ‘७५९’।१५। तओ थेरभूमीओ पं० तं०-जाइथेरे सुयथेरे परियायथेरे, सट्ठिवासजायए समणे निग्गन्थे जाइथेरे ठाणसमवायधरे समणे निग्गन्थे सुयथेरे वीसवासपरियाए समणे निग्गन्थे परियायथेरे ‘७६४’।१६। तओ सेहभूमीओ पं० तं०-सत्तराईदिया चाउम्मासिया छम्मासिया, छम्मासिया उक्कोसिया चाउम्मासिया मज्झिमिया सत्तराइन्दिया जहन्निया ‘८०७’।१७। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा खुड्डगं वा खुड्डियं वा ऊणट्ठवासजायं उवट्ठावेत्तए वा संभुञ्जित्तए वा।१८। कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा खुड्डगं वा खुड्डियं वा साइरेगट्ठवासजायं उवट्ठावेत्तए वा संभुञ्जित्तए वा ‘८१४’।१९। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा खुड्डगस्स वा खुड्डियाए वा अव्वञ्जणजायस्स आयारपकप्पे नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए।२०। कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा खुड्डगस्स वा खुड्डियाए वा वञ्जणजायस्स आयारपकप्पे नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए ‘८१७’।२१। तिवासपरियायस्स समणस्स निग्गन्थस्स कप्पइ आयारपकप्पे नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए।२२। चउवासपरियागस्स समणस्स निग्गन्थस्स कप्पइ सूयगडे नामं अङ्गे उद्दिसित्तए।२३। पञ्चवासपरियायस्स समणस्स निग्गन्थस्स कप्पइ दसाकप्पववहारा णामं अज्झयणं उद्दिसित्तए।२४। अट्ठवासपरियायस्स समणस्स निग्गन्थस्स ठाणसमवाए नामं अङ्गे उद्दिसित्तए।२५। दसवासपरिया० कप्पइ वियाहे नामं अङ्गे उद्दिसित्तए।२६। एक्कारसवासपरिया० कप्पइ खुड्डिया विमाणपविभत्ती महल्लियविमाणपविभत्ती अङ्गचूलिया वग्ग(इग)चूलिया वियाहचूलिया नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए।२७। बारसवासपरिया० कप्पइ अरुणोववाए गरुलोववाए धरणोववाए वेसमणोववाए वेलंधरोववाए नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए।२८। तेरसवासपरिया० कप्पइ उट्ठाणसुए समुट्ठाणसुए देविंदोववाए नागपरियावणि(लि)या नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए।२९। चोद्दसवासपरिया० कप्पइ सुमिणभावणा नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए।३०। पन्नरसवासपरिया० कप्पइ चारणभावणा नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए।३१। सोलसवासपरिया० कप्पइ तेयनिसग्गं०।३२। सत्तरसवासपरिया० आसीविसभावणा नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए।३३। अट्ठारसवासपरिया० कप्पइ दिट्ठीविसभावणा नामं अज्झयणे०।३४। एगूणवीसइवासपरिया० कप्पइ दिट्ठिवाए नामं अङ्गे उद्दिसित्तए।३५। वीसवासपरियाए समणे

निग्गन्थे सव्वसुयाणुवाई भवइ ‘८३८’।३६। दसविहे वेयावच्चे पं० तं०-आयरियवेयावच्चे उवज्झायवेयावच्चे थेरवेयावच्चे तवस्सिवेयावच्चे सेहवेयावच्चे गिलाणवेयावच्चे साहम्मियवेयावच्चे कुलवेयावच्चे गणवेयावच्चे संघवेयावच्चे, आयरियवेयावच्चं करेमाणे समणे निग्गन्थे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ० संघवेयावच्चं करेमाणे समणे निग्गन्थे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ‘८५७’।३७॥दसमो उद्देसो १०॥ श्रीव्यवहारच्छेदसूत्रं ३ सिद्धाद्रितलहट्टिकागतशिलोत्कीर्णसकलागम आगममंदिरे शिलायामुत्कीर्णं वीरविभोः २४६८ भाद्रासितदशम्याम्

व्यवहार-छेदसूत्र [३] ‘मूलं’ परिसमाप्त:

मूल संशोधकः सम्पादकश्च पूज्य आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

किंचित् वैशिष्ट्य समर्पितेन सह पुन: संकलनकर्ता मुनि दीपरत्नसागरजी [M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

भाग 27

[३७] श्री दशाश्रुतस्कन्ध (छेदसूत्रम्-४)

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

“दशाश्रुतस्कन्ध” मूलं

[मूलं एव]

[आद्य संपादकश्री]

पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म॰ सा॰

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D.,श्रुतमहर्षि)

28/07/2017, शुक्रवार, २०७३ श्रावण शुक्ल ५ ‘सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि’ श्रेणि भाग-२७

प्रत सूत्रांक [१] दीप अनुक्रम [१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३७], छेदसूत्र - [४] “दशाश्रुतस्कन्ध” मूलं

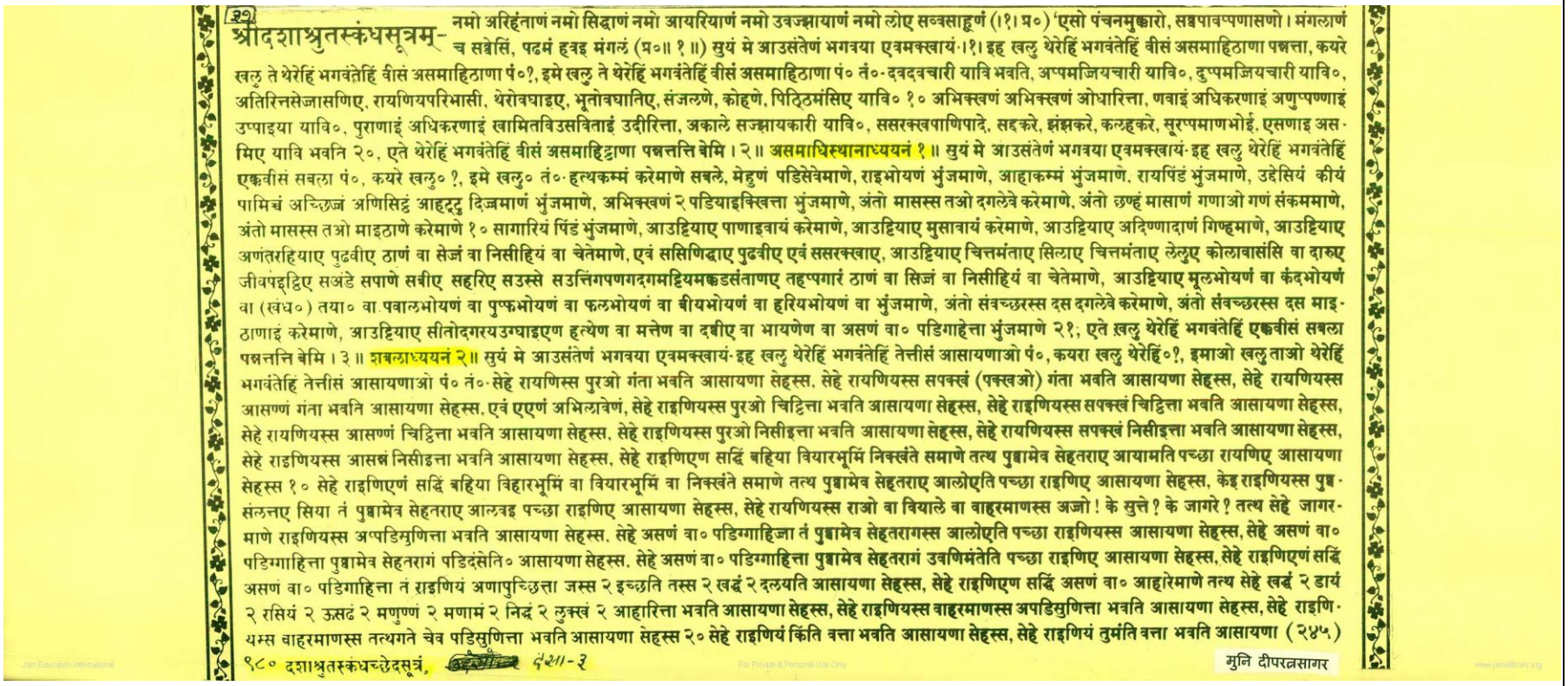

२०
श्रीदशाश्रुतस्कंधसूत्रम्- नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं (।१। प्र०) 'एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं (प्र०॥ १ ॥) सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-।१। इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं वीसं असमाहिठाणा पन्नत्ता, कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं वीसं असमाहिठाणा पं०?, इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं वीसं असमाहिठाणा पं० तं०-दवदवचारी यावि भवति, अप्पमज्जियचारी यावि०, दुप्पमज्जियचारी यावि०, अतिरित्तसेज्जासणिए, रायणियपरिभासी, थेरोवघाइए, भूतोवघातिए, संजलणे, कोहणे, पिट्ठिमंसिए यावि० १० अभिक्खणं अभिक्खणं ओधारित्ता, णवाइं अधिकरणाइं अणुप्पण्णाइं उप्पाइया यावि०, पुराणाइं अधिकरणाइं खामितविउसविताइं उदीरित्ता, अकाले सज्झायकारी यावि०, ससरक्खपाणिपादे, सद्दकरे, झंझकरे, कलहकरे, सूरप्पमाणभोई, एसणाइ असमिए यावि भवति २०, एते थेरेहिं भगवंतेहिं वीसं असमाहिट्ठाणा पन्नत्ति बेमि । २॥ असमाधिस्थानाध्ययनं १॥ सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं एक्कवीसं सबला पं०, कयरे खलु० ?, इमे खलु० तं०-हत्थकम्मं करेमाणे सबले, मेहुणं पडिसेवेमाणे, राइभोयणं भुंजमाणे, आहाकम्मं भुंजमाणे, रायपिंडं भुंजमाणे, उद्देसियं कीयं पामिच्चं अच्छिज्जं अणिसिट्ठं आहट्टु दिज्जमाणं भुंजमाणे, अभिक्खणं २ पडियाइक्खित्ता भुंजमाणे, अंतो मासस्स तओ दगलेवे करेमाणे, अंतो छण्हं मासाणं गणाओ गणं संकममाणे, अंतो मासस्स तओ माइठाणे करेमाणे १० सागारियं पिंडं भुंजमाणे, आउट्टियाए पाणाइवायं करेमाणे, आउट्टियाए मुसावायं करेमाणे, आउट्टियाए अदिण्णादाणं गिण्हमाणे, आउट्टियाए अणंतरहियाए पुढवीए ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेतेमाणे, एवं ससिणिद्धाए पुढवीए एवं ससरक्खाए, आउट्टियाए चित्तमंताए सिलाए चित्तमंताए लेलुए कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउस्से सउत्तिंगपणगदगमट्टियमक्कडसंताणए तहप्पगारं ठाणं वा सिज्जं वा निसीहियं वा चेतेमाणे, आउट्टियाए मूलभोयणं वा कंदभोयणं वा (खंध०) तया० वा पवालभोयणं वा पुप्फभोयणं वा फलभोयणं वा बीयभोयणं वा हरियभोयणं वा भुंजमाणे, अंतो संवच्छरस्स दस दगलेवे करेमाणे, अंतो संवच्छरस्स दस माइठाणाइं करेमाणे, आउट्टियाए सीतोदगवयउग्घाइएण हत्थेण वा मत्तेण वा दवीए वा भायणेण वा असणं वा० पडिगाहेत्ता भुंजमाणे २१; एते खलु थेरेहिं भगवंतेहिं एक्कवीसं सबला पन्नत्ति बेमि । ३ ॥ शबलाध्ययनं २॥ सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं तेत्तीसं आसायणाओ पं०, कयरा खलु थेरेहिं०?, इमाओ खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं तेत्तीसं आसायणाओ पं० तं०-सेहे रायणिस्स पुरओ गंता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे रायणियस्स सपक्खं (पक्खओ) गंता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे रायणियस्स आसण्णं गंता भवति आसायणा सेहस्स, एवं एएणं अभिलावेणं, सेहे राइणियस्स पुरओ चिट्ठित्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स सपक्खं चिट्ठित्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे रायणियस्स आसण्णं चिट्ठित्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स पुरओ निसीइत्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे रायणियस्स सपक्खं निसीइत्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स आसन्नं निसीइत्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणिएण सद्धिं बहिया वियारभूमिं निक्खंते समाणे तत्थ पुव्वामेव सेहतराए आयामति पच्छा रायणिए आसायणा सेहस्स १० सेहे राइणिएणं सद्धिं बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खंते समाणे तत्थ पुव्वामेव सेहतराए आलोएति पच्छा राइणिए आसायणा सेहस्स, केइ राइणियस्स पुव्वसंलत्तए सिया तं पुव्वामेव सेहतराए आलवइ पच्छा राइणिए आसायणा सेहस्स, सेहे रायणियस्स राओ वा वियाले वा वाहरमाणस्स अज्जो! के सुत्ते? के जागरे? तत्थ सेहे जागरमाणे राइणियस्स अप्पडिसुणित्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे असणं वा० पडिग्गाहिजा तं पुव्वामेव सेहतरागस्स आलोएति पच्छा राइणियस्स आसायणा सेहस्स, सेहे असणं वा० पडिग्गाहित्ता पुव्वामेव सेहतरागं पडिदंसेति० आसायणा सेहस्स, सेहे असणं वा० पडिग्गाहित्ता पुव्वामेव सेहतरागं उवणिमंतेति पच्छा राइणिए आसायणा सेहस्स, सेहे राइणिएणं सद्धिं असणं वा० पडिगाहित्ता तं राइणियं अणापुच्छित्ता जस्स २ इच्छति तस्स २ खद्धं २ दलयति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणिएण सद्धिं असणं वा० आहारेमाणे तत्थ सेहे खद्धं २ डायं २ रसियं २ ऊसढं २ मणुण्णं २ मणामं २ निद्धं २ लुक्खं २ आहारित्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स वाहरमाणस्स अपडिसुणित्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स वाहरमाणस्स तत्थगते चेव पडिसुणित्ता भवति आसायणा सेहस्स २० सेहे राइणियं किंति वत्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियं तुमंति वत्ता भवति आसायणा (२४५)

मुनि दीपरत्नसागर

	अत्र दशा- १ आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [४] दीप अनुक्रम [४]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३७], छेदसूत्र - [४] “दशाश्रुतस्कन्ध” मूलं

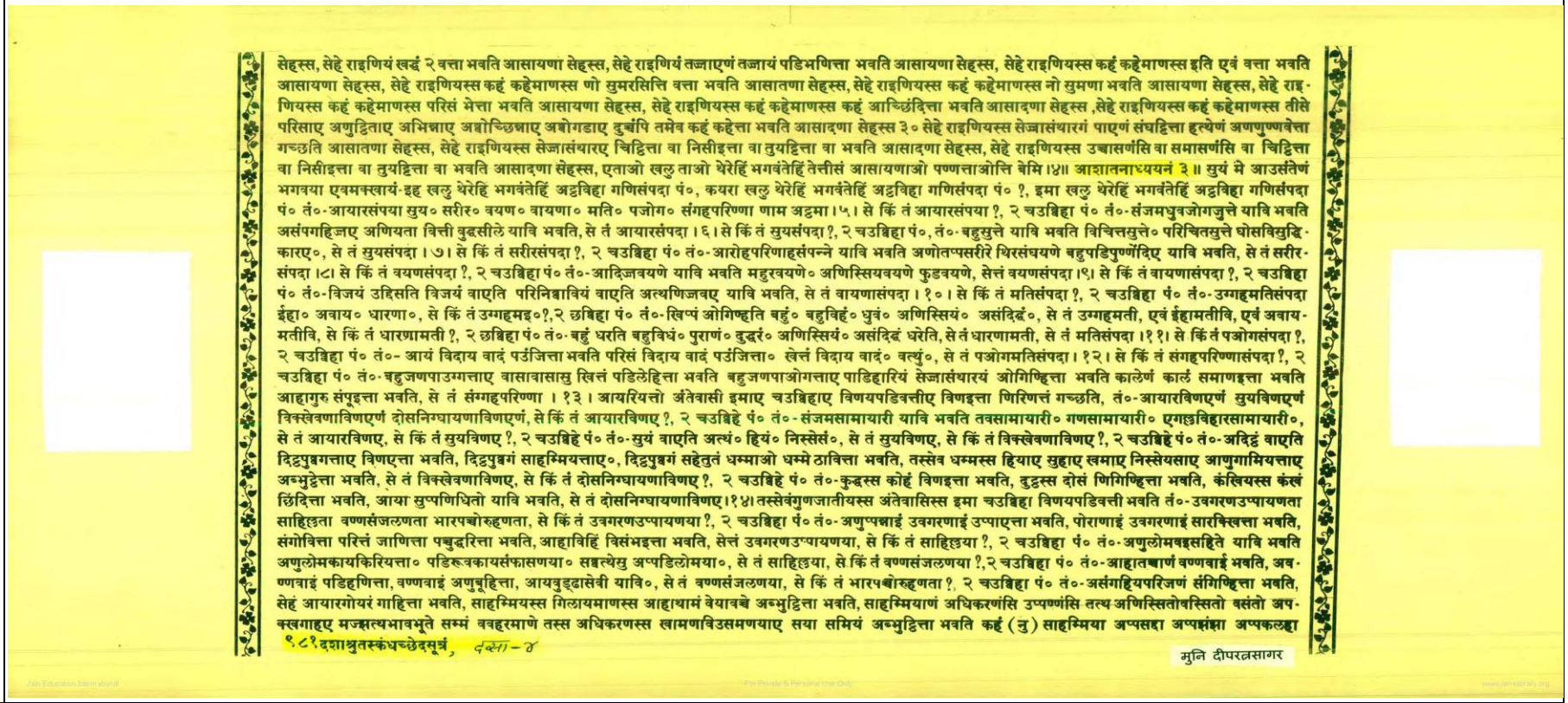

सेहस्स, सेहे राइणियं खद्धं २ वत्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियं तज्जाएणं तज्जायं पडिभणित्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स इति एवं वत्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स णो सुमरसित्ति वत्ता भवति आसातणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स नो सुमणा भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स परिसं भेत्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स कहं आच्छिंदित्ता भवति आसादणा सेहस्स ,सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स तीसे परिसाए अणुट्ठिताए अभिन्नाए अवोच्छिन्नाए अबोगडाए दुच्चंपि तमेव कहं कहेत्ता भवति आसादणा सेहस्स ३० सेहे राइणियस्स सेज्जासंथारगं पाएणं संघट्टित्ता हत्थेणं अणणुण्णवेत्ता गच्छति आसातणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स सेज्जासंथारए चिट्ठित्ता वा निसीइत्ता वा तुयट्टित्ता वा भवति आसादणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स उच्चासणंसि वा समासणंसि वा चिट्ठित्ता वा निसीइत्ता वा तुयट्टित्ता वा भवति आसादणा सेहस्स, एताओ खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं तेत्तीसं आसायणाओ पण्णत्ताओत्ति बेमि।४॥ आशातनाध्ययनं ३॥ सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं अट्ठविहा गणिसंपदा पं०, कयरा खलु थेरेहिं भगवंतेहिं अट्ठविहा गणिसंपदा पं० ?, इमा खलु थेरेहिं भगवंतेहिं अट्ठविहा गणिसंपदा पं० तं०-आयारसंपया सुय० सरीर० वयण० वायणा० मति० पजोग० संगहपरिण्णा णाम अट्ठमा।५। से किं तं आयारसंपया ?, २ चउव्विहा पं० तं०-संजमधुवजोगजुत्ते यावि भवति असंपगहिअप्पा अणियता वित्ती वुड्ढसीले यावि भवति, से तं आयारसंपदा।६। से किं तं सुयसंपदा ?, २ चउव्विहा पं०, तं०-बहुसुत्ते यावि भवति विचित्तसुत्ते० परिचितसुत्ते घोसविसुद्धिकारए०, से तं सुयसंपदा।७। से किं तं सरीरसंपदा ?, २ चउव्विहा पं० तं०-आरोहपरिणाहसंपन्ने यावि भवति अणोतप्पसरीरे थिरसंघयणे बहुपडिपुण्णेंदिए यावि भवति, से तं सरीरसंपदा।८। से किं तं वयणसंपदा ?, २ चउव्विहा पं० तं०-आदिज्जवयणे यावि भवति महुरवयणे० अणिस्सियवयणे फुडवयणे, सेत्तं वयणसंपदा।९। से किं तं वायणासंपदा ?, २ चउव्विहा पं० तं०-विजयं उद्दिसति विजयं वाएति परिनिव्वावियं वाएति अत्थणिज्जवए यावि भवति, से तं वायणासंपदा।१०। से किं तं मतिसंपदा ?, २ चउव्विहा पं० तं०-उग्गहमतिसंपदा ईहा० अवाय० धारणा०, से किं तं उग्गहमइ०?,२ छव्विहा पं० तं०-खिप्पं ओगिण्हति बहुं० बहुविहं० धुवं० अणिस्सियं० असंदिद्धं०, से तं उग्गहमती, एवं ईहामतीवि, एवं अवायमतीवि, से किं तं धारणामती ?, २ छव्विहा पं० तं०-बहुं धरति बहुविधं० पुराणं० दुद्धरं० अणिस्सियं० असंदिद्धं धरेति, से तं धारणामती, से तं मतिसंपदा।११। से किं तं पओगसंपदा ?, २ चउव्विहा पं० तं०- आयं विदाय वादं पउंजित्ता भवति परिसं विदाय वादं पउंजित्ता० खेत्तं विदाय वादं० वत्थुं०, से तं पओगमतिसंपदा।१२। से किं तं संगहपरिण्णासंपदा ?, २ चउव्विहा पं० तं०-बहुजणपाउग्गत्ताए वासावासासु खित्तं पडिलेहित्ता भवति बहुजणपाओग्गत्ताए पाडिहारियं सेज्जासंथारयं ओगिण्हित्ता भवति कालेणं कालं समाणइत्ता भवति आहागुरु संपूइत्ता भवति, से तं संग्गहपरिण्णा । १३। आयरियत्तो अंतेवासी इमाए चउव्विहाए विणयपडिवत्तीए विणइत्ता णिरिणत्तं गच्छति, तं०-आयारविणएणं सुयविणएणं विक्खेवणाविणएणं दोसनिग्घायणाविणएणं, से किं तं आयारविणए ?, २ चउव्विहे पं० तं०-संजमसामायारी यावि भवति तवसामायारी० गणसामायारी० एगल्लविहारसामायारी०, से तं आयारविणए, से किं तं सुयविणए ?, २ चउव्विहे पं० तं०-सुयं वाएति अत्थं० हियं० निस्सेसं०, से तं सुयविणए, से किं तं विक्खेवणाविणए ?, २ चउव्विहे पं० तं०-अदिट्ठं वाएति दिट्ठपुव्वगत्ताए विणएत्ता भवति, दिट्ठपुव्वगं साहम्मियत्ताए०, दिट्ठपुव्वगं सहेतुतं धम्माओ धम्मे ठावित्ता भवति, तस्सेव धम्मस्स हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए अब्भुट्टेत्ता भवति, से तं विक्खेवणाविणए, से किं तं दोसनिग्घायणाविणए ?, २ चउव्विहे पं० तं०-कुद्धस्स कोहं विणइत्ता भवति, दुट्ठस्स दोसं णिगिण्हित्ता भवति, कंखियस्स कंखं छिंदित्ता भवति, आया सुप्पणिधितो यावि भवति, से तं दोसनिग्घायणाविणए।१४। तस्सेवंगुणजातीयस्स अंतेवासिस्स इमा चउव्विहा विणयपडिवत्ती भवति तं०-उवगरणउप्पायणता साहिल्लता वण्णसंजलणता भारपच्चोरुहणता, से किं तं उवगरणउप्पायणया ?, २ चउव्विहा पं० तं०-अणुप्पन्नाइं उवगरणाइं उप्पाएत्ता भवति, पोराणाइं उवगरणाइं सारक्खित्ता भवति, संगोवित्ता परित्तं जाणित्ता पच्चुद्धरित्ता भवति, आहाविहिं विसंभइत्ता भवति, सेत्तं उवगरणउप्पायणया, से किं तं साहिल्लया ?, २ चउव्विहा पं० तं०-अणुलोमवइसहिते यावि भवति अणुलोमकायकिरियत्ता० पडिरूवकायसंफासणया० सव्वत्थेसु अप्पडिलोमया०, से तं साहिल्लया, से किं तं वण्णसंजलणया ?,२ चउव्विहा पं० तं०-आहातच्चाणं वण्णवाई भवति, अवण्णवाइं पडिहणित्ता, वण्णवाइं अणुबूहित्ता, आयवुड्ढासेवी यावि०, से तं वण्णसंजलणया, से किं तं भारपच्चोरुहणता ?, २ चउव्विहा पं० तं०-असंगहियपरिजणं संगिण्हित्ता भवति, सेहं आयारगोयरं गाहित्ता भवति, साहम्मियस्स गिलायमाणस्स आहाथामं वेयावच्चे अब्भुट्टित्ता भवति, साहम्मियाणं अधिकरणंसि उप्पण्णंसि तत्थ अणिस्सितोवस्सितो वसंतो अपक्खगाहए मज्झत्थभावभूते सम्मं ववहरमाणे तस्स अधिकरणस्स खामणविउसमणयाए सया समियं अब्भुट्टित्ता भवति कहं (नु) साहम्मिया अप्पसद्दा अप्पझंझा अप्पकलहा

मुनि दीपरत्नसागर

	अत्र दशा- ४ आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [१५] + गाथा: ‖१-१७‖ दीप अनुक्रम [१५]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३७], छेदसूत्र - [४] “दशाश्रुतस्कन्ध” मूलं

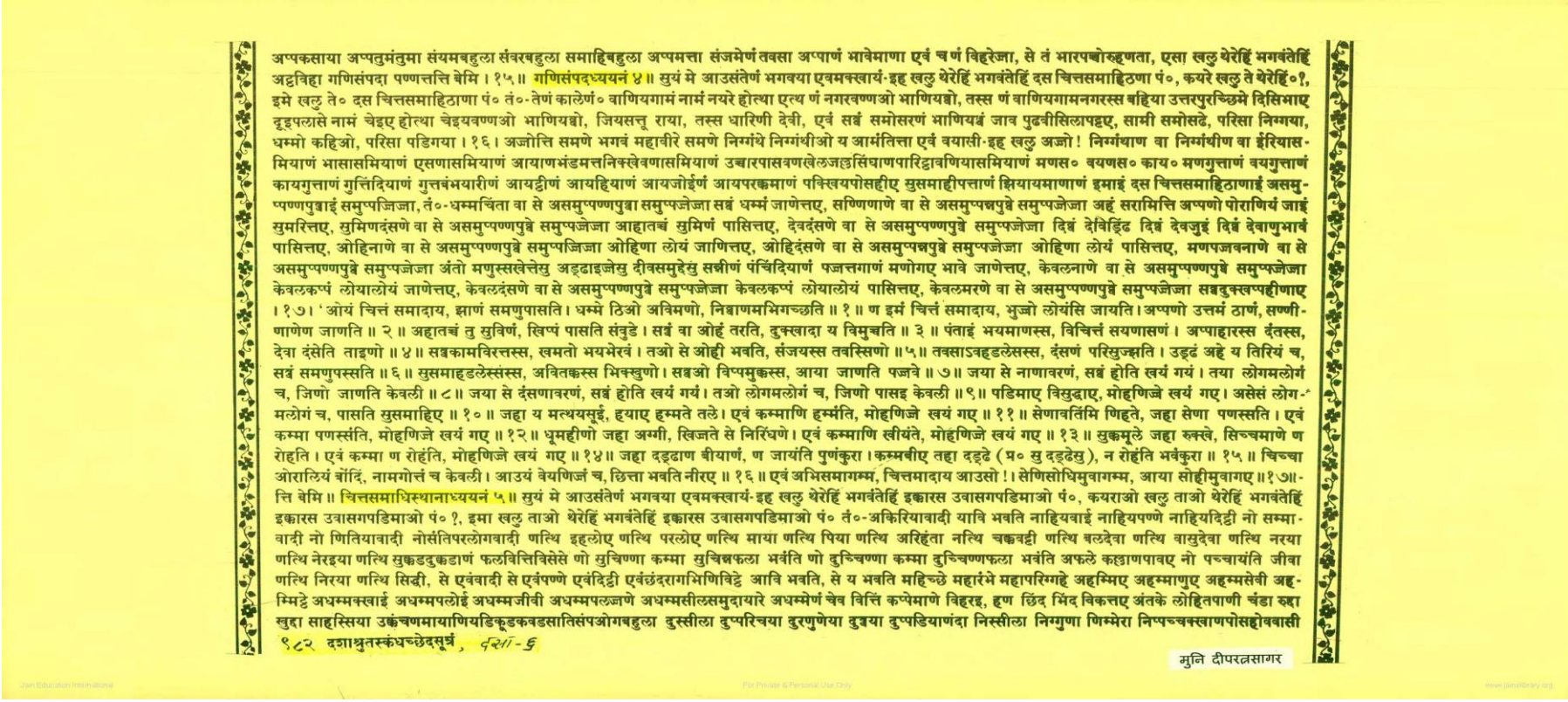

अप्पकसाया अप्पतुमंतुमा संयमबहुला संवरबहुला समाहिबहुला अप्पमत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा एवं च णं विहरेज्जा, से तं भारपच्चोरुहणता, एसा खलु थेरेहिं भगवंतेहिं अट्ठविहा गणिसंपदा पण्णत्तत्ति बेमि । १५॥ गणिसंपदध्ययनं ४॥ सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं दस चित्तसमाहिठाणा पं०, कयरे खलु ते थेरेहिं०१, इमे खलु ते० दस चित्तसमाहिठाणा पं० तं०-तेणं कालेणं० वाणियगामं नामं नयरे होत्था एत्थ णं नगरवण्णओ भाणियव्वो, तस्स णं वाणियगामनगरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए दूइपलासे नामं चेइए होत्था चेइयवण्णओ भाणियव्वो, जियसत्तू राया, तस्स धारिणी देवी, एवं सव्वं समोसरणं भाणियव्वं जाव पुढवीसिलापट्टए, सामी समोसढे, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया । १६। अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य आमंतित्ता एवं वयासी-इह खलु अज्जो! निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा ईरियासमियाणं भासासमियाणं एसणासमियाणं आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमियाणं उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणियासमियाणं मणस० वयणस० काय० मणगुत्ताणं वयगुत्ताणं कायगुत्ताणं गुत्तिंदियाणं गुत्तबंभयारीणं आयट्ठीणं आयहियाणं आयजोईणं आयपरक्कमाणं पक्खियपोसहीए सुसमाहीपत्ताणं झियायमाणाणं इमाइं दस चित्तसमाहिठाणाइं असमुप्पण्णपुव्वाइं समुप्पज्जिजा, तं०-धम्मचिंता वा से असमुप्पण्णपुव्वा समुप्पज्जेजा सव्वं धम्मं जाणेत्तए, सण्णिणाणे वा से असमुप्पन्नपुव्वे समुप्पज्जेजा अहं सरामित्ति अप्पणो पोराणियं जाइं सुमरित्तए, सुमिणदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेजा आहातच्चं सुमिणं पासित्तए, देवदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेजा दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं पासित्तए, ओहिनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिजा ओहिणा लोयं जाणित्तए, ओहिदंसणे वा से असमुप्पन्नपुव्वे समुप्पज्जेजा ओहिणा लोयं पासित्तए, मणपज्जवनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेजा अंतो मणुस्सखेत्तेसु दीवसमुद्देसु सन्नीणं पंचिंदियाणं पज्जत्तगाणं मणोगए भावे जाणेत्तए, केवलनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेजा केवलकप्पं लोयालोयं जाणेत्तए, केवलदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेजा केवलकप्पं लोयालोयं पासित्तए, केवलमरणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेजा सव्वदुक्खप्पहीणाए । १७। ‘ओयं चित्तं समादाय, झाणं समणुपासति। धम्मे ठिओ अविमणो, निव्वाणमभिगच्छति ॥ १ ॥ ण इमं चित्तं समादाय, भुज्जो लोयंसि जायति। अप्पणो उत्तमं ठाणं, सण्णिणाणेण जाणति ॥ २ ॥ अहातच्चं तु सुविणं, खिप्पं पासति संवुडे। सव्वं वा ओहं तरति, दुक्खादा य विमुच्चति ॥ ३ ॥ पंताइं भयमाणस्स, विचित्तं सयणासणं। अप्पाहारस्स दंतस्स, देवा दंसेति ताइणो ॥ ४॥ सव्वकामविरत्तस्स, खमतो भयभेरवं। तओ से ओही भवति, संजयस्स तवस्सिणो ॥५॥ तवसाऽवहडलेसस्स, दंसणं परिसुज्झति। उड्ढं अहे य तिरियं च, सव्वं समणुपस्सति ॥ ६ ॥ सुसमाहडलेस्सस्स, अवितक्कस्स भिक्खुणो। सव्वओ विप्पमुक्कस्स, आया जाणति पज्जवे ॥ ७॥ जया से नाणावरणं, सव्वं होति खयं गयं। तया लोगमलोगं च, जिणो जाणति केवली ॥ ८॥ जया से दंसणावरणं, सव्वं होति खयं गयं। तओ लोगमलोगं च, जिणो पासइ केवली ॥ ९॥ पडिमाए विसुद्धाए, मोहणिज्जे खयं गए। असेसं लोगमलोगं च, पासति सुसमाहिए ॥ १० ॥ जहा य मत्थयसूई, हयाए हम्मते तले। एवं कम्माणि हम्मंति, मोहणिज्जे खयं गए ॥ ११ ॥ सेणावतिंमि णिहते, जहा सेणा पणस्सति। एवं कम्मा पणस्संति, मोहणिज्जे खयं गए ॥ १२ ॥ धूमहीणो जहा अग्गी, खिजते से निरिंधणे। एवं कम्माणि खीयंते, मोहणिज्जे खयं गए ॥ १३ ॥ सुक्कमूले जहा रुक्खे, सिच्चमाणे ण रोहति। एवं कम्मा ण रोहंति, मोहणिज्जे खयं गए ॥ १४॥ जहा दड्ढाण बीयाणं, ण जायंति पुणंकुरा। कम्मबीए तहा दड्ढे (प्र० सु दड्ढेसु), न रोहंति भवंकुरा ॥ १५ ॥ चिच्चा ओरालियं बोंदिं, नामगोत्तं च केवली। आउयं वेयणिज्जं च, छित्ता भवति नीरए ॥ १६ ॥ एवं अभिसमागम्म, चित्तमादाय आउसो !। सेणिसोधिमुवागम्म, आया सोहीमुवागए ॥१७॥त्ति बेमि ॥ चित्तसमाधिस्थानाध्ययनं ५॥ सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं इक्कारस उवासगपडिमाओ पं०, कयराओ खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं इक्कारस उवासगपडिमाओ पं० ?, इमा खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं इक्कारस उवासगपडिमाओ पं० तं०-अकिरियावादी यावि भवति नाहियवाई नाहियपण्णे नाहियदिट्ठी नो सम्मावादी नो णितियावादी नोसंतिपरलोगवादी णत्थि इहलोए णत्थि परलोए णत्थि माया णत्थि पिया णत्थि अरिहंता नत्थि चक्कवट्टी णत्थि बलदेवा णत्थि वासुदेवा णत्थि नरया णत्थि नेरइया णत्थि सुकडदुक्कडाणं फलवित्तिविसेसे णो सुचिण्णा कम्मा सुचिन्नफला भवंति णो दुच्चिण्णा कम्मा दुच्चिण्णफला भवंति अफले कल्लाणपावए नो पच्चायंति जीवा णत्थि निरया णत्थि सिद्धी, से एवंवादी से एवंपण्णे एवंदिट्ठी एवंछंदरागमिणिविट्ठे आवि भवति, से य भवति महिच्छे महारंभे महापरिग्गहे अहम्मिए अहम्माणुए अहम्मसेवी अहम्मिट्ठे अधम्मक्खाई अधम्मपलोई अधम्मजीवी अधम्मपलज्जणे अधम्मसीलसमुदायारे अधम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ, हण छिंद भिंद विकत्तए अंतके लोहितपाणी चंडा रुद्दा खुद्दा साहस्सिया उक्कंचणमायाणियडिकूडकवडसातिसंपओगबहुला दुस्सीला दुप्परिचया दुरणुणेया दुव्वया दुप्पडियाणंदा निस्सीला निग्गुणा णिम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासी

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अत्र दशा- ६ आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [१८]

दीप अनुक्रम [३५]

असाहू सव्वाओ पाणाइवायाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए एवं जाव सव्वाओ कोहाओ सव्वाओ माणाओ सव्वाओ मायाओ सव्वाओ लोभाओ सव्वाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुन्नाओ परपरिवादाओ अरतिरतीओ सव्वाओ मायामोसाओ मिच्छादंसणसल्लाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ कसायदंड(त)कट्ठण्हाणुव्वट्टणब्भंगणवण्णयमद्दणविलेवणसद्दफरिसरसरूवगंधमल्लालंकाराओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ सगडरहजाणजुग्गगिल्लिथिल्लिसीयासंदमाणियासयणासणयाणवाहणभोयणपवित्थरविधीतो अप्पडिविरया जावज्जीवाए असमिक्खियकारी सव्वाओ आसहत्थिगोमहिसगवेलयदासीदासकम्मकरपुरिसाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ कयविक्कयमासद्धमासरूवगसंववहाराओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ हिरण्णसुवण्णधणधण्णमणिमुत्तियसंखसिलप्पवालाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ कुडतुलकूडमाणाओ अप्पडिविरया सव्वाओ आरंभसमारंभाओ अप्पडिविरया सव्वाओ पयणपयावणाओ अप्पडिविरया सव्वाओ करणकारावणाओ अप्पडिविरया सव्वाओ कुट्टणपिट्टणतज्जणताडणवधबंधपरिकिलेसाओ अप्पडिविरया जावजीवाए जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जा अबोहिया कम्मंता परपाणपरियावणकडा कज्जंति ततोवि अप्पडिविरया जावजीवाए से जहानामए केइ पुरिसे कलमसूरतिलमुग्गमासनिप्फावकुलत्थअलिसंदगजवएवमादीहिं अयते कूरे मिच्छादंडं पउंजइ एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाए तित्तिरवट्टगलावगकपोतकपिंजलमिगमहिसवराहगोगोहकुम्मसरीसिवाइएहिं अयते कूरे मिच्छादंडं पउंजति, जाऽविय से बाहिरिया परिसा भवति तं०-दासेति वा पेसेति वा भतएति वा भाइल्लेति वा कम्मकरएति वा भोगपुरिसेति वा तेसिंपिय णं अण्णयरगंसि अहालघुसयंसि अवराहंसि सयमेव गरुयं दंडं निवत्तेति तं०-इमं दंडेह इमं मुंडेह इमं तज्जेह इमं तालेह इमं दुब्बंधणं करेह इमं नियलबंधणं इमं हडिबंधणं इमं चारगबंधणं इमं नियलजुयलसंकुडियमोडितयं इमं हत्थच्छिन्नयं इमं पादच्छिन्नयं इमं कण्णच्छिन्नं इमं नक्कच्छिन्नं इमं ओट्ठच्छिण्णं इमं सीसच्छिन्नं इमं मुखच्छिण्णयं इमं वइयच्छीइयं इमं हियउप्पाडियं एवं नयणदसणवयण० इमं जिब्भुप्पाडियं करेह इमं ओलंबिययं इमं घंसिययं इमं घोलितयं इमं सूलाइयं इमं सूलाभिण्णं इमं खारवत्तियं इमं दब्भवत्तियं इमं सीहपुच्छियं इमं वसभपुच्छियं इमं कड(दव)ग्गिदड्ढयं इमं काकणिमंसखातियं इमं भत्तपाणनिरुद्धयं करेह इमं जावज्जीवबंधणं करेह इमं अन्नतरेणं असुमेणं कुमारेणं मारेह, जाऽविय से अब्भिंतरिया परिसा भवति तं०-माताति वा पिताति वा भायाइ वा भइणीति वा भज्जाति वा धूयाति वा सुण्हाति वा तेसिंपिय णं अण्णयरंसि अहालहुसगंसि अवराहंसि सयमेव गरुयं दंडं निवत्तेति तं०-सीतोदगवियडंसि कायं बोलित्ता भवति उसिणोदगवियडेण कायं ओसिंचित्ता भवति अगणिकाएण कायं उवडहिया भवति जोत्तेण वा वेत्तेण वा नेत्तेण व कसेण वा छिवाडीए वा लताए वा पासाइं उद्दालेत्ता भवति दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा कवालेण वा कायं आउट्टित्ता भवति, तहप्पगारे पुरिसजाए संवसमाणे दुम्मणे भवति, तहप्पगारे पुरिसजाते विप्पवसमाणे सुमणा भवति, तहप्पगारे दंडपासी (रुई) दंडगुरुए दंडपुरक्खडे अहिए अस्सिं लोयंसि अहिए परंसि लोगंसि ते दुक्खति सोयति एवं जूरति तिप्पति पिट्टति परितप्पति, ते दुक्खणसोयणजूरणतिप्पणपिट्टणपरितप्पणवधबंधपरिकिलेसाओ अप्पडिविरया भवंति, एवमेव ते इत्थिकामेहिं मुच्छिया गढिया गिद्धा अज्झोववण्णा जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाणि वा अप्पतरं वा भुज्जतरं वा कालं भुंजित्ता भोगभोगाइं पसवित्ता वेरायतणाइं संचिणित्ता बहुयाइं पावाइं कम्माइं ओसण्णं संभारकडेण कम्मुणा से जहानामए अयगोलेति वा सेलगोलेति वा उदयंसि पक्खित्ते समाणे उदगतलमइवइत्ता अहेधरणितलपतिट्ठाणे भवति एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाए वज्जबहुले धुण्ण० पंक० वेर० दंभ० नियडि० आसायण० (असाय०) अयस० अप्पत्तिय० ओसण्णं तसपाणघाती कालमासे कालं किच्चा धरणितलमतिवतित्ता अहेनरगतलपतिट्ठाणे भवति, ते णं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधगारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसप्पहा मेदवसामंसरुहिरपूयपडलचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुई वीसा परमदुब्भिगंधा काउयअगणिवन्नाभा कक्खडफासा दुरहियासा नरगा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेदणा नो चेव णं नरएसु नेरइया निहायंति वा पयलायंति वा सुतिं वा रतिं वा धितिं वा मतिं वा उवलभंति, ते णं तत्थ उज्जलं विउलं पगाढं कक्कसं कडुयं रोद्दं दुक्खं चंडं तिव्वं तिक्खं तिव्वं दुरहियासं नरएसु नेरइया नरयवेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति, से जहानामए रुक्खे सिया पव्वतग्गे जाए मूलच्छिन्ने अग्गेगरुए जतो निन्नं जतो दुग्गं जतो विसमं ततो पवडति एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाए गब्भाओ गब्भं जम्माओ जम्मं मरणाओ मरणं दुक्खाओ दुक्खं दाहिणगामिए नेरइए कण्हपक्खिए आगमिस्साणं दुल्लभबोधिते यावि भवति, से तं अकिरियावादी ।१८। से किं तं किरियावादी ?, २ भवति तं०-आहियवादी आहियपण्णे आहियदिट्ठी सम्मावाई नियावाई संतिपरलोयवादी अत्थि इहलोए अत्थि परलोए अत्थि पिया अत्थि माता अत्थि अरिहंता अत्थि चक्कवट्टी अत्थि बलदेवा अत्थि वासुदेवा अत्थि सुकडदुक्कडाणं कम्माणं फलविसिविसेसे सुचिन्ना कम्मा सुचिन्नफला भवंति दुचिण्णा कम्मा दुचिण्णफला भवंति सफले कल्लाणपावए पच्चायंति जीवा अत्थि नेरइया अत्थि देवा अत्थि सिद्धी, से एवंवादी एवंपन्ने एवंदिट्ठी एवं छंदरा-

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [१९] दीप अनुक्रम [३६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३७], छेदसूत्र - [४] “दशाश्रुतस्कन्ध” मूलं

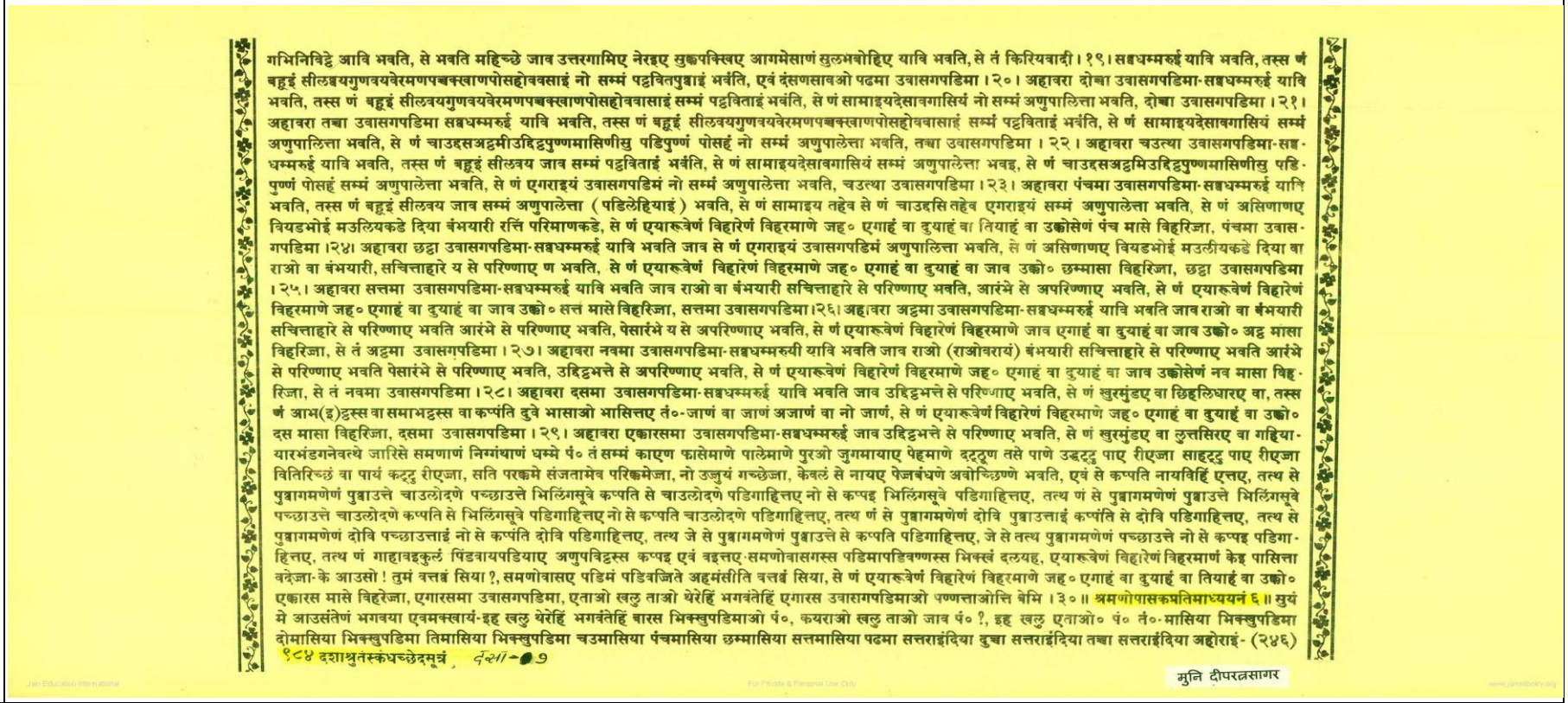

गभिनिविट्ठे आवि भवति, से भवति महिच्छे जाव उत्तरगामिए नेरइए सुक्कपक्खिए आगमेसाणं सुलभबोहिए यावि भवति, से तं किरियावादी। १९। सव्वधम्मरुई यावि भवति, तस्स णं बहूइं सीलव्वयगुणवयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइं नो सम्मं पट्ठवितपुव्वाइं भवंति, एवं दंसणसावओ पढमा उवासगपडिमा। २०। अहावरा दोच्चा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरुई यावि भवति, तस्स णं बहूइं सीलवयगुणवयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइं सम्मं पट्ठविताइं भवंति, से णं सामाइयदेसावगासियं नो सम्मं अणुपालित्ता भवति, दोच्चा उवासगपडिमा। २१। अहावरा तच्चा उवासगपडिमा सव्वधम्मरुई यावि भवति, तस्स णं बहूइं सीलवयगुणवयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइं सम्मं पट्ठविताइं भवंति, से णं सामाइयदेसावगासियं सम्मं अणुपालित्ता भवति, से णं चाउद्दसअट्ठमीउद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं नो सम्मं अणुपालेत्ता भवति, तच्चा उवासगपडिमा। २२। अहावरा चउत्था उवासगपडिमा-सव्वधम्मरुई यावि भवति, तस्स णं बहूइं सीलवय जाव सम्मं पट्ठविताइं भवंति, से णं सामाइयदेसावगासियं सम्मं अणुपालेत्ता भवइ, से णं चाउद्दसअट्ठमिउद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेत्ता भवति, से णं एगराइयं उवासगपडिमं नो सम्मं अणुपालेत्ता भवति, चउत्था उवासगपडिमा। २३। अहावरा पंचमा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरुई यावि भवति, तस्स णं बहूइं सीलवय जाव सम्मं अणुपालेत्ता (पडिलेहियाइं) भवति, से णं सामाइय तहेव से णं चाउद्दसि तहेव एगराइयं सम्मं अणुपालेत्ता भवति, से णं असिणाणए वियडभोई मउलियकडे दिया बंभयारी रत्तिं परिमाणकडे, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जह० एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं पंच मासे विहरिज्जा, पंचमा उवासगपडिमा। २४। अहावरा छट्ठा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरुई यावि भवति जाव से णं एगराइयं उवासगपडिमं अणुपालित्ता भवति, से णं असिणाणए वियडभोई मउलीयकडे दिया वा राओ वा बंभयारी, सचित्ताहारे य से परिण्णाए ण भवति, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जह० एगाहं वा दुयाहं वा जाव उक्को० छम्मासा विहरिज्जा, छट्ठा उवासगपडिमा। २५। अहावरा सत्तमा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरुई यावि भवति जाव राओ वा बंभयारी सचित्ताहारे से परिण्णाए भवति, आरंभे से अपरिण्णाए भवति, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जह० एगाहं वा दुयाहं वा जाव उक्को० सत्त मासे विहरिज्जा, सत्तमा उवासगपडिमा। २६। अहावरा अट्ठमा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरुई यावि भवति जाव राओ वा बंभयारी सचित्ताहारे से परिण्णाए भवति आरंभे से परिण्णाए भवति, पेसारंभे य से अपरिण्णाए भवति, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जाव एगाहं वा दुयाहं वा जाव उक्को० अट्ठ मासा विहरिज्जा, से तं अट्ठमा उवासगपडिमा। २७। अहावरा नवमा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरुयी यावि भवति जाव राओ (राओवरायं) बंभयारी सचित्ताहारे से परिण्णाए भवति आरंभे से परिण्णाए भवति पेसारंभे से परिण्णाए भवति, उद्दिट्ठभत्ते से अपरिण्णाए भवति, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जह० एगाहं वा दुयाहं वा जाव उक्कोसेणं नव मासा विहरिज्जा, से तं नवमा उवासगपडिमा। २८। अहावरा दसमा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरुई यावि भवति जाव उद्दिट्ठभत्ते से परिण्णाए भवति, से णं खुरमुंडए वा छिहलिघारए वा, तस्स णं आभ(इ)ट्ठस्स वा समाभट्ठस्स वा कप्पंति दुवे भासाओ भासित्तए तं०-जाणं वा जाणं अजाणं वा नो जाणं, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जह० एगाहं वा दुयाहं वा उक्को० दस मासा विहरिज्जा, दसमा उवासगपडिमा। २९। अहावरा एक्कारसमा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरुई जाव उद्दिट्ठभत्ते से परिण्णाए भवति, से णं खुरमुंडए वा लुत्तसिरए वा गहियायारभंडगनेवत्थे जाएसे समणाणं निग्गंथाणं धम्मे पं० तं सम्मं काएण फासेमाणे पालेमाणे पुरओ जुगमायाए पेहमाणे दट्ठूण तसे पाणे उद्धट्टु पाए रीएज्जा साहट्टु पाए रीएज्जा वितिरिच्छं वा पायं कट्टु रीएज्जा, सति परक्कमे संजतामेव परिक्कमेज्जा, नो उजुयं गच्छेज्जा, केवलं से नायए पेजबंधणे अवोच्छिण्णे भवति, एवं से कप्पति नायविहिं एत्तए, तत्थ से पुव्वागमणेणं पुव्वाउत्ते चाउलोदणे पच्छाउत्ते भिलिंगसूवे कप्पति से चाउलोदणे पडिगाहित्तए नो से कप्पइ भिलिंगसूवे पडिगाहित्तए, तत्थ णं से पुव्वागमणेणं पुव्वाउत्ते भिलिंगसूवे पच्छाउत्ते चाउलोदणे कप्पति से भिलिंगसूवे पडिगाहित्तए नो से कप्पति चाउलोदणे पडिगाहित्तए, तत्थ णं से पुव्वागमणेणं दोवि पुव्वाउत्ताइं कप्पंति से दोवि पडिगाहित्तए, तत्थ से पुव्वागमणेणं दोवि पच्छाउत्ताइं नो से कप्पंति दोवि पडिगाहित्तए, तत्थ जे से पुव्वागमणेणं पुव्वाउत्ते से कप्पति पडिगाहित्तए, जे से तत्थ पुव्वागमणेणं पच्छाउत्ते नो से कप्पइ पडिगाहित्तए, तत्थ णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविट्ठस्स कप्पइ एवं वइत्तए-समणोवासगस्स पडिमापडिवण्णस्स भिक्खं दलयह, एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणं केइ पासित्ता वदेज्जा-के आउसो! तुमं वत्तव्वं सिया?, समणोवासए पडिमं पडिवज्जिते अहमंसीति वत्तव्वं सिया, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जह० एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्को० एक्कारस मासे विहरेज्जा, एगारसमा उवासगपडिमा, एताओ खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं एगारस उवासगपडिमाओ पण्णत्ताओत्ति बेमि। ३०॥ श्रमणोपासकप्रतिमाध्ययनं ६॥ सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं बारस भिक्खुपडिमाओ पं०, कयराओ खलु ताओ जाव पं०?, इह खलु एताओ० पं० तं०-मासिया भिक्खुपडिमा दोमासिया भिक्खुपडिमा तिमासिया भिक्खुपडिमा चउमासिया पंचमासिया छम्मासिया सत्तमासिया पढमा सत्तराइंदिया दुच्चा सत्तराइंदिया तच्चा सत्तराइंदिया अहोराइं- (२४६)

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अत्र दशा- ७ आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [३१]

दीप अनुक्रम [४८]

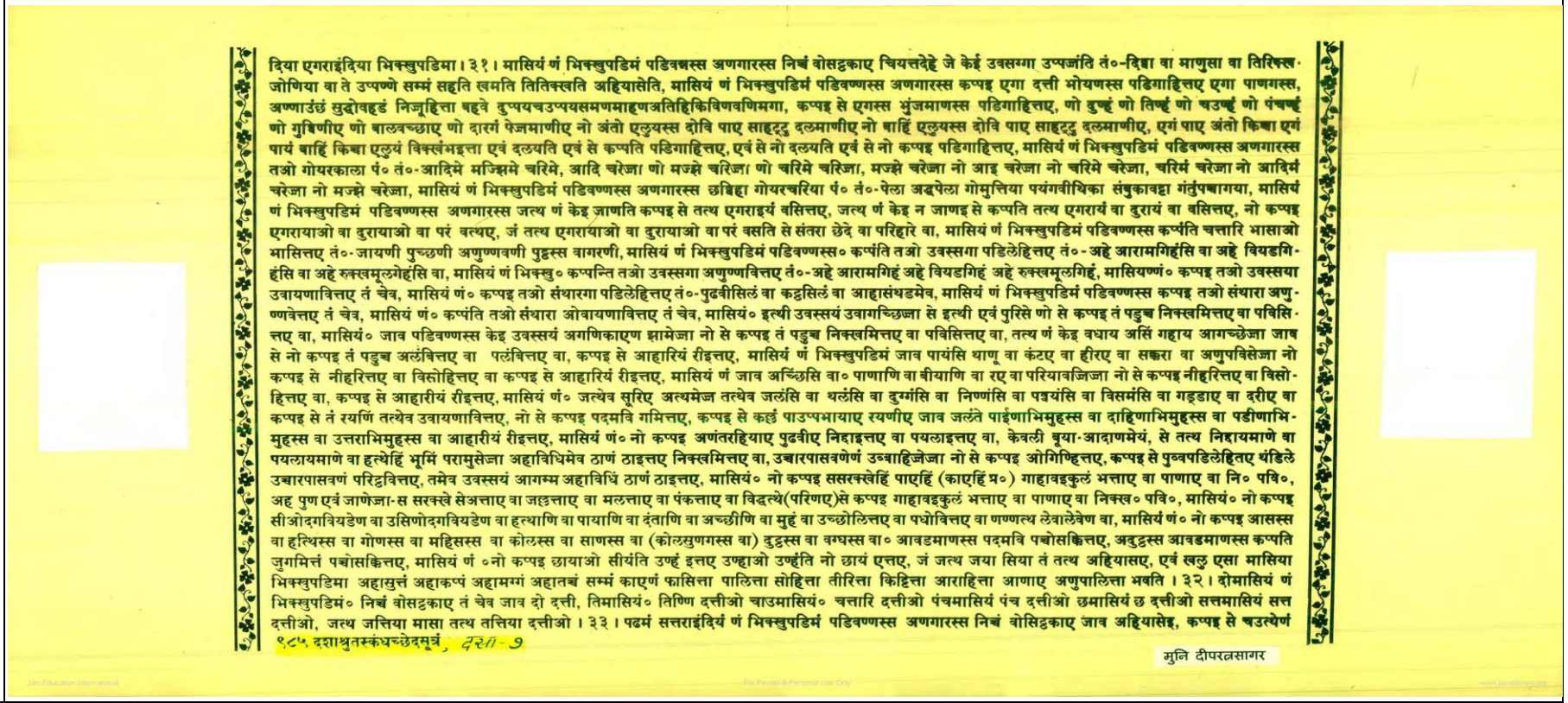

दिया एगराइंदिया भिक्खुपडिमा। ३१। मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केई उवसग्गा उप्पज्जंति तं०-दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्ख-जोणिया वा ते उप्पण्णे सम्मं सहति खमति तितिक्खति अहियासेति, मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स कप्पइ एगा दत्ती भोयणस्स पडिगाहित्तए एगा पाणगस्स, अण्णाउंछं सुद्धोवहडं निज्जूहित्ता बहवे दुप्पयचउप्पयसमणमाहणअतिहिकिविणवणिमगा, कप्पइ से एगस्स भुंजमाणस्स पडिगाहित्तए, णो दुण्हं णो तिण्हं णो चउण्हं णो पंचण्हं णो गुव्विणीए णो बालवच्छाए णो दारगं पेज्जमाणीए नो अंतो एलुयस्स दोवि पाए साहट्टु दलमाणीए नो बाहिं एलुयस्स दोवि पाए साहट्टु दलमाणीए, एगं पाए अंतो किच्चा एगं पायं बाहिं किच्चा एलुयं विक्खंभइत्ता एवं दलयति एवं से कप्पति पडिगाहित्तए, एवं से नो दलयति एवं से नो कप्पइ पडिगाहित्तए, मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स तओ गोयरकाला पं० तं०-आदिमे मज्झिमे चरिमे, आदि चरेज्जा णो मज्झे चरिज्जा णो चरिमे चरिज्जा, मज्झे चरेज्जा नो आइ चरेज्जा नो चरिमे चरेज्जा, चरिमं चरेज्जा नो आदिमं चरेज्जा नो मज्झे चरेज्जा, मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स छव्विहा गोयरचरिया पं० तं०-पेला अद्धपेला गोमुत्तिया पयंगवीथिका संबुकावट्टा गंतुंपच्चागया, मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स जत्थ णं केइ जाणति कप्पइ से तत्थ एगराइयं वसित्तए, जत्थ णं केइ न जाणइ से कप्पति तत्थ एगरायं वा दुरायं वा वसित्तए, नो कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए, जं तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसति से संतरा छेदे वा परिहारे वा, मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स कप्पंति चत्तारि भासाओ भासित्तए तं०-जायणी पुच्छणी अणुण्णवणी पुट्ठस्स वागरणी, मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स० कप्पंति तओ उवस्सगा पडिलेहित्तए तं०-अहे आरामगिहंसि वा अहे वियडगि-हंसि वा अहे रुक्खमूलगेहंसि वा, मासियं णं भिक्खु० कप्पन्ति तओ उवस्सगा अणुण्णवित्तए तं०-अहे आरामगिहं अहे वियडगिहं अहे रुक्खमूलगिहं, मासियण्णं० कप्पइ तओ उवस्सया उवायणावित्तए तं चेव, मासियं णं० कप्पइ तओ संथारगा पडिलेहित्तए तं०-पुढवीसिलं वा कट्ठसिलं वा आहासंथडमेव, मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स कप्पइ तओ संथारा अणु-ण्णवेत्तए तं चेव, मासियं णं० कप्पंति तओ संथारा ओवायणावित्तए तं चेव, मासियं० इत्थी उवस्सयं उवागच्छिज्जा से इत्थी एवं पुरिसे णो से कप्पइ तं पडुच्च निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, मासियं० जाव पडिवण्णस्स केइ उवस्सयं अगणिकाएण झामेज्जा नो से कप्पइ तं पडुच्च निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, तत्थ णं केइ वधाय असिं गहाय आगच्छेज्जा जाव से नो कप्पइ तं पडुच्च अलंवित्तए वा पलंवित्तए वा, कप्पइ से आहारियं रीइत्तए, मासियं णं भिक्खुपडिमं जाव पायंसि थाणू वा कंटए वा हीरए वा सक्करा वा अणुपविसेज्जा नो कप्पइ से नीहरित्तए वा विसोहित्तए वा कप्पइ से आहारियं रीइत्तए, मासियं णं जाव अच्छिंसि वा० पाणाणि वा बीयाणि वा रए वा परियावज्जिज्जा नो से कप्पइ नीहरित्तए वा विसो-हित्तए वा, कप्पइ से आहारीयं रीइत्तए, मासियं णं० जत्थेव सूरिए अत्थमेज्ज तत्थेव जलंसि वा थलंसि वा दुग्गंसि वा निण्णंसि वा पव्वयंसि वा विसमंसि वा गड्डाए वा दरीए वा कप्पइ से तं रयणिं तत्थेव उवायणावित्तए, नो से कप्पइ पदमवि गमित्तए, कप्पइ से कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते पाईणाभिमुहस्स वा दाहिणाभिमुहस्स वा पडीणाभि-मुहस्स वा उत्तराभिमुहस्स वा आहारीयं रीइत्तए, मासियं णं० नो कप्पइ अणंतरहियाए पुढवीए निहाइत्तए वा पयलाइत्तए वा, केवली बूया-आदाणमेयं, से तत्थ निहायमाणे वा पयलायमाणे वा हत्थेहिं भूमिं परामुसेज्जा अहाविधिमेव ठाणं ठाइत्तए निक्खमित्तए वा, उच्चारपासवणेणं उब्बाहिज्जेजा नो से कप्पइ ओगिण्हित्तए, कप्पइ से पुव्वपडिलेहितए थंडिले उच्चारपासवणं परिट्ठवित्तए, तमेव उवस्सयं आगम्म अहाविधिं ठाणं ठाइत्तए, मासियं० नो कप्पइ ससरक्खेहिं पाएहिं (काएहिं प्र०) गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा नि० पवि०, अह पुण एवं जाणेज्जा-स सरक्खे सेअत्ताए वा जल्लत्ताए वा मलत्ताए वा पंकत्ताए वा विद्धत्थे(परिणए)से कप्पइ गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निक्ख० पवि०, मासियं० नो कप्पइ सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा हत्थाणि वा पायाणि वा दंताणि वा अच्छीणि वा मुहं वा उच्छोलित्तए वा पधोवित्तए वा णण्णत्थ लेवालेवेण वा, मासियं णं० नो कप्पइ आसस्स वा हत्थिस्स वा गोणस्स वा महिसस्स वा कोलस्स वा साणस्स वा (कोलसुणगस्स वा) दुट्ठस्स वा वग्घस्स वा० आवडमाणस्स पदमवि पच्चोसक्कित्तए, अदुट्ठस्स आवडमाणस्स कप्पति जुगमित्तं पच्चोसक्कित्तए, मासियं णं ०नो कप्पइ छायाओ सीयंति उण्हं इत्तए उण्हाओ उण्हंति नो छायं एत्तए, जं जत्थ जया सिया तं तत्थ अहियासए, एवं खलु एसा मासिया भिक्खुपडिमा अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासित्ता पालित्ता सोहित्ता तीरित्ता किट्टित्ता आराहित्ता आणाए अणुपालित्ता भवति । ३२। दोमासियं णं भिक्खुपडिमं० निच्चं वोसट्ठकाए तं चेव जाव दो दत्ती, तिमासियं० तिण्णि दत्तीओ चाउमासियं० चत्तारि दत्तीओ पंचमासियं पंच दत्तीओ छमासियं छ दत्तीओ सत्तमासियं सत्त दत्तीओ, जत्थ जत्तिया मासा तत्थ तत्तिया दत्तीओ । ३३। पढमं सत्तराइंदियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स निच्चं वोसिट्ठकाए जाव अहियासेइ, कप्पइ से चउत्थेणं

९८५. दशाश्रुतस्कंधच्छेदसूत्रं, दशा - ७

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [३४] दीप अनुक्रम [५१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३७], छेदसूत्र - [४] “दशाश्रुतस्कन्ध” मूलं

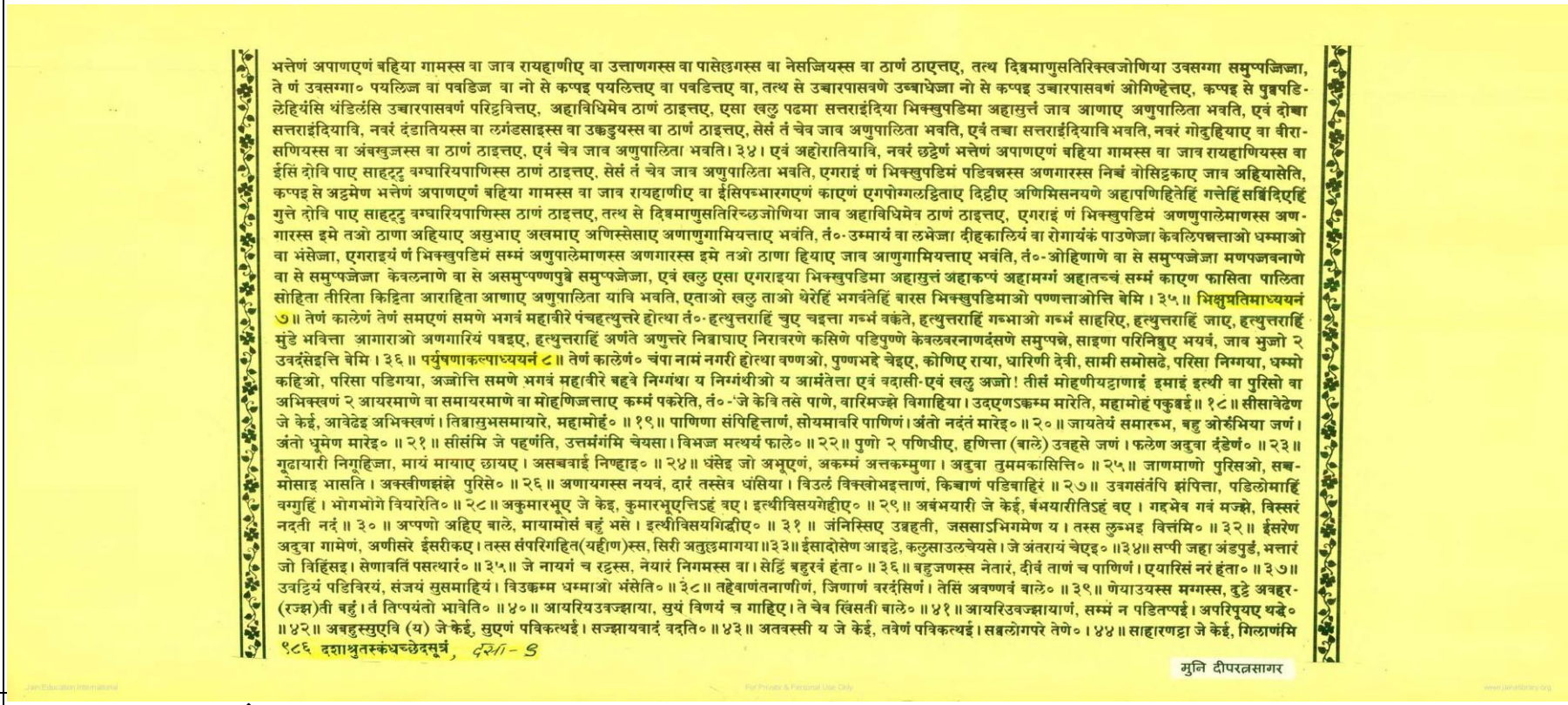

भत्तेणं अपाणएणं बहिया गामस्स वा जाव रायहाणीए वा उत्ताणगस्स वा पासेहडगस्स वा नेसज्जियस्स वा ठाणं ठाएत्तए, तत्थ दिव्वमाणुसतिरिक्खजोणिया उवसग्गा समुप्पज्जिजा, ते णं उवसग्गा० पयलिज्ज वा पवडिज्ज वा नो से कप्पइ पयलित्तए वा पवडित्तए वा, तत्थ से उच्चारपासवणे उब्बाधेज्जा नो से कप्पइ उच्चारपासवणं ओगिण्हेत्तए, कप्पइ से पुव्वपडिलेहियंसि थंडिल्लंसि उच्चारपासवणं परिट्ठवित्तए, अहाविधिमेव ठाणं ठाइत्तए, एसा खलु पढमा सत्तराइंदिया भिक्खुपडिमा अहासुत्तं जाव आणाए अणुपालिता भवति, एवं दोच्चा सत्तराइंदियावि, नवरं दंडातियस्स वा लगंडसाइस्स वा उक्कडुयस्स वा ठाणं ठाइत्तए, सेसं तं चेव जाव अणुपालिता भवति, एवं तच्चा सत्तराईंदियावि भवति, नवरं गोदुहियाए वा वीरासणियस्स वा अंबखुज्जस्स वा ठाणं ठाइत्तए, एवं चेव जाव अणुपालिता भवति। ३४। एवं अहोरातियावि, नवरं छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं बहिया गामस्स वा जाव रायहाणियस्स वा ईसिं दोवि पाए साहट्टु वग्घारियपाणिस्स ठाणं ठाइत्तए, सेसं तं चेव जाव अणुपालिता भवति, एगराइं णं भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स निच्चं वोसिट्ठकाए जाव अहियासेति, कप्पइ से अट्ठमेण भत्तेणं अपाणएणं बहिया गामस्स वा जाव रायहाणीए वा ईसिपब्भारगएणं काएणं एगपोग्गलट्ठिताए दिट्ठीए अणिमिसनयणे अहापणिहितेहिं गत्तेहिं सविंदिएहिं गुत्ते दोवि पाए साहट्टु वग्घारियपाणिस्स ठाणं ठाइत्तए, तत्थ से दिव्वमाणुसतिरिच्छजोणिया जाव अहाविधिमेव ठाणं ठाइत्तए, एगराइं णं भिक्खुपडिमं अणणुपालेमाणस्स अणगारस्स इमे तओ ठाणा अहियाए असुभाए अखमाए अणिस्सेसाए अणाणुगामियत्ताए भवंति, तं०-उम्मायं वा लभेज्जा दीहकालियं वा रोगायंकं पाउणेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ वा भंसेज्जा, एगराइयं णं भिक्खुपडिमं सम्मं अणुपालेमाणस्स अणगारस्स इमे तओ ठाणा हियाए जाव आणुगामियत्ताए भवंति, तं०-ओहिणाणे वा से समुप्पजेज्जा मणपज्जवनाणे वा से समुप्पजेज्जा केवलनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पजेज्जा, एवं खलु एसा एगराइया भिक्खुपडिमा अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएण फासिता पालिता सोहिता तीरिता किट्टिता आराहिता आणाए अणुपालिता यावि भवति, एताओ खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं बारस भिक्खुपडिमाओ पण्णत्ताओत्ति बेमि। ३५॥ भिक्षुप्रतिमाध्ययनं ७॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पंचहत्थुत्तरे होत्था तं०-हत्थुत्तराहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते, हत्थुत्तराहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए, हत्थुत्तराहिं जाए, हत्थुत्तराहिं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पवइए, हत्थुत्तराहिं अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने, साइणा परिनिव्वुए भयवं, जाव भुज्जो २ उवदंसेइत्ति बेमि। ३६॥ पर्युषणाकल्पाध्ययनं ८॥ तेणं कालेणं० चंपा नामं नगरी होत्था वण्णओ, पुण्णभद्दे चेइए, कोणिए राया, धारिणी देवी, सामी समोसढे, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया, अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे बहवे निग्गंथा य निग्गंथीओ य आमंतेत्ता एवं वदासी-एवं खलु अज्जो! तीसं मोहणीयट्ठाणाइं इमाइं इत्थी वा पुरिसो वा अभिक्खणं २ आयरमाणे वा समायरमाणे वा मोहणिज्जत्ताए कम्मं पकरेति, तं०-'जे केवि तसे पाणे, वारिमज्झे विगाहिया। उदएणऽक्कम्म मारेति, महामोहं पकुबई॥ १८॥ सीसावेढेण जे केई, आवेढेइ अभिक्खणं। तिव्वासुभसमायारे, महामोहं० ॥ १९॥ पाणिणा संपिहित्ताणं, सोयमावरि पाणिणं। अंतो नदंतं मारेइ०॥ २०॥ जायतेयं समारब्भ, बहु ओरुंभिया जणं। अंतो धूमेण मारेइ० ॥ २१॥ सीसंमि जे पहणंति, उत्तमंगंमि चेयसा। विभज्ज मत्थयं फाले०॥ २२॥ पुणो २ पणिधीए, हणित्ता (बाले) उवहसे जणं। फलेण अदुवा दंडेणं० ॥ २३॥ गूढायारी निगूहिज्जा, मायं मायाए छायए। असचवाई निण्हाइ० ॥ २४॥ धंसेइ जो अभूएणं, अकम्मं अत्तकम्मुणा। अदुवा तुममकासित्ति० ॥ २५॥ जाणमाणो पुरिसओ, सच्चमोसाइ भासति। अक्खीणझंझे पुरिसे० ॥ २६॥ अणायगस्स नयवं, दारं तस्सेव धंसिया। विउलं विक्खोभइत्ताणं, किच्चाणं पडिवाहिरं ॥ २७॥ उवगसंतंपि झंपित्ता, पडिलोमाहिं वग्गुहिं। भोगभोगे वियारेति० ॥ २८॥ अकुमारभूए जे केइ, कुमारभूएत्तिऽहं वए। इत्थीविसयगेहीए० ॥ २९॥ अबंभयारी जे केई, बंभयारीतिऽहं वए। गद्दभेव गवं मज्झे, विस्सरं नदती नदं॥ ३० ॥ अप्पणो अहिए बाले, मायामोसं बहुं भसे। इत्थीविसयगिद्धीए० ॥ ३१ ॥ जंनिस्सिए उवहती, जससाऽभिगमेण य। तस्स लुब्भइ वित्तंमि० ॥ ३२॥ ईसरेण अदुवा गामेणं, अणीसरे ईसरीकए। तस्स संपरिगहित(यहीण)स्स, सिरी अतुलमागया॥३३॥ ईसादोसेण आइट्ठे, कलुसाउलचेयसे। जे अंतरायं चेएइ० ॥३४॥ सप्पी जहा अंडपुडं, भत्तारं जो विहिंसइ। सेणावतिं पसत्थारं० ॥ ३५॥ जे नायगं च रट्ठस्स, नेयारं निगमस्स वा। सेट्ठिं बहुरवं हंता० ॥ ३६॥ बहुजणस्स नेतारं, दीवं ताणं च पाणिणं। एयारिसं नरं हंता० ॥ ३७॥ उवट्ठियं पडिविरयं, संजयं सुसमाहियं। विउक्कम्म धम्माओ भंसेति० ॥ ३८॥ तहेवाणंतनाणीणं, जिणाणं वरदंसिणं। तेसिं अवण्णवं बाले० ॥ ३९॥ णेयाउयस्स मग्गस्स, दुट्ठे अवहरति(रज्झ)ती बहुं। तं तिप्पयंतो भावेति० ॥ ४०॥ आयरियउवज्झाया, सुयं विणयं च गाहिए। ते चेव खिंसती बाले० ॥ ४१॥ आयरिउवज्झायाणं, सम्मं न पडितप्पई। अपरिपूयए थद्धे० ॥ ४२॥ अबहुस्सुएवि (य) जे केई, सुएणं पविकत्थई। सज्झायवादं वदति० ॥ ४३॥ अतवस्सी य जे केई, तवेणं पविकत्थई। सबलोगपरे तेणे०। ४४॥ साहारणट्ठा जे केई, गिलाणंमि

मुनि दीपरत्नसागर

	अत्र दशा- ९ आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [४५] + गाथा: ||१८--५६|| दीप अनुक्रम [५४-९३]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३७], छेदसूत्र - [४] “दशाश्रुतस्कन्ध” मूलं

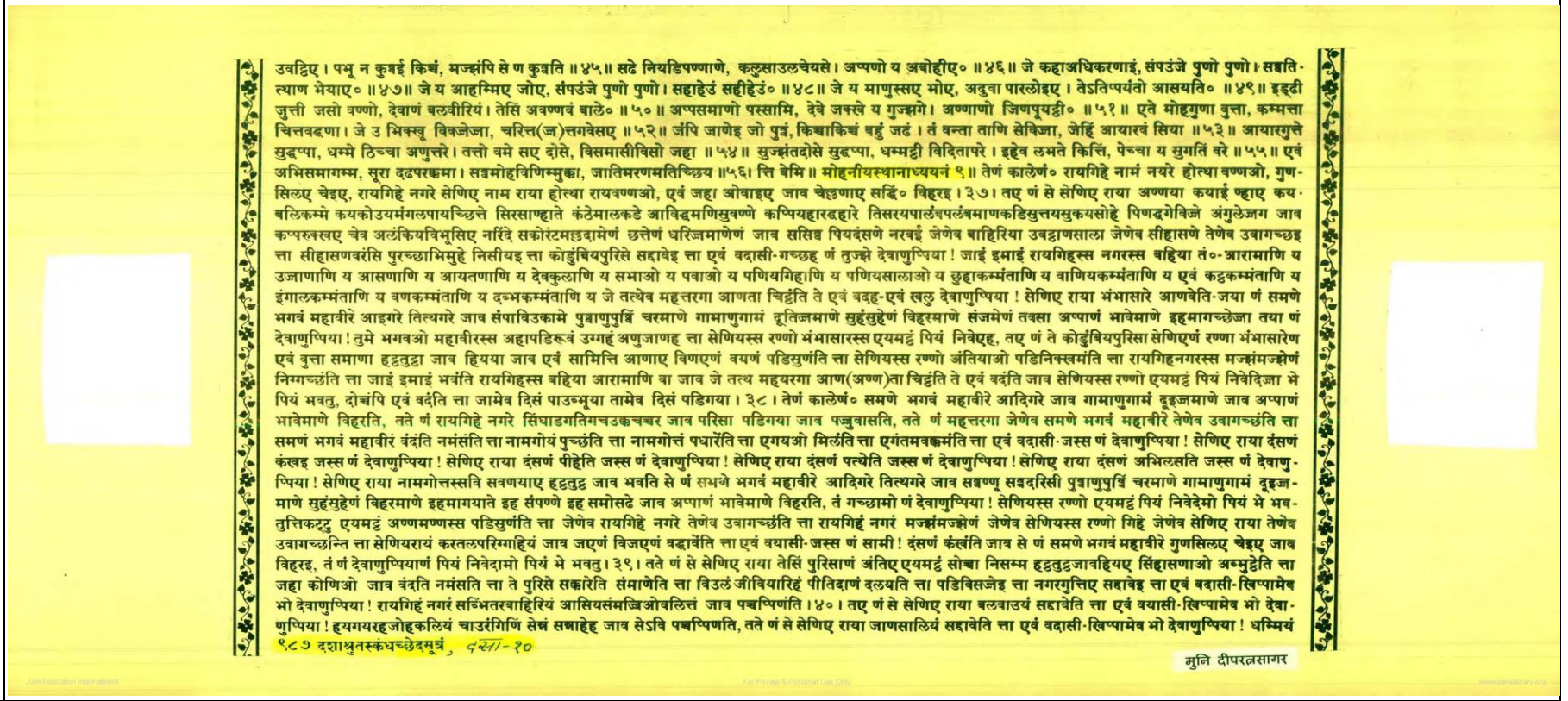

उवट्ठिए। पभू न कुबई किचं, मज्झंपि से ण कुवति ॥४५॥ सढे नियडिपण्णाणे, कलुसाउलचेयसे। अप्पणो य अबोहीए० ॥४६॥ जे कहाअधिकरणाइं, संपउंजे पुणो पुणो। सबति-त्थाण भेयाए० ॥४७॥ जे य आहम्मिए जोए, संपउंजे पुणो पुणो। सहाहेउं सहीहेउं० ॥४८॥ जे य माणुस्सए भोए, अदुवा पारलोइए। तेऽतिप्पयंतो आसयति० ॥४९॥ इड्ढी जुत्ती जसो वण्णो, देवाणं बलवीरियं। तेसिं अवण्णवं बाले० ॥५०॥ अप्पसमाणो पस्सामि, देवे जक्खे य गुज्झगे। अण्णाणो जिणपूयट्ठी० ॥५१॥ एते मोहगुणा वुत्ता, कम्मत्ता चित्तवद्धणा। जे उ भिक्खू विवज्जेजा, चरित्त(ज्ज)त्तगवेसए ॥५२॥ जंपि जाणेइ जो पुवं, किंचाकिचं बहुं जढं। तं वन्ता ताणि सेविजा, जेहिं आयारवं सिया ॥५३॥ आयारगुत्ते सुद्धप्पा, धम्मे ठिच्चा अणुत्तरे। तत्तो वमे सए दोसे, विसमासीविसो जहा ॥५४॥ सुज्झंतदोसे सुद्धप्पा, धम्मट्ठी विदितापरे। इहेव लभते कित्तिं, पेच्चा य सुगतिं वरे ॥५५॥ एवं अभिसमागम्म, सूरा दढपरक्कमा। सबमोहविणिम्मुक्का, जातिमरणमतिच्छिय ॥५६॥ त्ति बेमि॥ **मोहनीयस्थानाध्ययनं ९॥** तेणं कालेणं० रायगिहे नामं नयरे होत्था वण्णओ, गुण-सिलए चेइए, रायगिहे नगरे सेणिए नाम राया होत्था रायवण्णओ, एवं जहा ओवाइए जाव चेल्लणाए सद्धिं० विहरइ। ३७। तए णं से सेणिए राया अण्णया कयाई ण्हाए कय-बलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सिरसाण्हाते कंठेमालकडे आविद्धमणिसुवण्णे कप्पियहारद्धहारे तिसरयपालंबपलंबमाणकडिसुत्तयसुकयसोहे पिणद्धगेविज्जे अंगुलेज्जग जाव कप्परुक्खए चेव अलंकियविभूसिए नरिंदे सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं जाव ससिव्व पियदंसणे नरवई जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ त्ता सीहासणवरंसि पुरच्छाभिमुहे निसीयइ त्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ त्ता एवं वदासी-गच्छह णं तुज्झे देवाणुप्पिया! जाइं इमाइं रायगिहस्स नगरस्स बहिया तं०-आरामाणि य उज्जाणाणि य आसणाणि य आयतणाणि य देवकुलाणि य सभाओ य पवाओ य पणियगिहाणि य पणियसालाओ य छुहाकम्मंताणि य वाणियकम्मंताणि य एवं कट्ठकम्मंताणि य इंगालकम्मंताणि य वणकम्मंताणि य दब्भकम्मंताणि य जे तत्थेव महत्तरगा आणता चिट्ठंति ते एवं वदह-एवं खलु देवाणुप्पिया! सेणिए राया भंभासारे आणवेति-जया णं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे जाव संपाविउकामे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूतिज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे इहमागच्छेज्जा तया णं देवाणुप्पिया! तुमे भगवओ महावीरस्स अहापडिरूवं उग्गहं अणुजाणह त्ता सेणियस्स रण्णो भंभासारस्स एयमट्ठं पियं निवेएह, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रण्णा भंभासारेण एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव हियया जाव एवं सामित्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति त्ता सेणियस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमंति त्ता रायगिहनगरस्स मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति त्ता जाइं इमाइं भवंति रायगिहस्स बहिया आरामाणि वा जाव जे तत्थ महयरगा आण(अण्ण)त्ता चिट्ठंति ते एवं वदंति जाव सेणियस्स रण्णो एयमट्ठं पियं निवेदिज्जा भे पियं भवतु, दोच्चंपि एवं वदंति त्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया। ३८। तेणं कालेणं० समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव गामाणुगामं दूइज्जमाणे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तते णं रायगिहे नगरे सिंघाडगतिगचउक्कचच्चर जाव परिसा पडिगया जाव पज्जुवासति, तते णं महत्तरगा जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति त्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति त्ता नामगोयं पुच्छंति त्ता नामगोत्तं पधारेंति त्ता एगयओ मिलंति त्ता एगंतमवक्कमंति त्ता एवं वदासी-जस्स णं देवाणुप्पिया! सेणिए राया दंसणं कंखइ जस्स णं देवाणुप्पिया! सेणिए राया दंसणं पीहेति जस्स णं देवाणुप्पिया! सेणिए राया दंसणं पत्थेति जस्स णं देवाणुप्पिया! सेणिए राया दंसणं अभिलसति जस्स णं देवाणु-प्पिया! सेणिए राया नामगोत्तस्सवि सवणयाए हट्ठतुट्ठ जाव भवति से णं समणे भगवं महावीरे आदिगरे तित्थगरे जाव सबण्णू सबदरिसी पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज-माणे सुहंसुहेणं विहरमाणे इहमागयाते इह संपण्णे इह समोसढे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! सेणियस्स रण्णो एयमट्ठं पियं निवेदेमो पियं भे भव-तुत्तिकट्टु एयमट्ठं अण्णमण्णस्स पडिसुणंति त्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छंति त्ता रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सेणियस्स रण्णो गिहे जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छन्ति त्ता सेणियरायं करतलपरिग्गहियं जाव जएणं विजएणं वद्धावेंति त्ता एवं वयासी-जस्स णं सामी! दंसणं कंखंति जाव से णं समणे भगवं महावीरे गुणसिलए चेइए जाव विहरइ, तं णं देवाणुप्पियाणं पियं निवेदामो पियं भे भवतु। ३९। तते णं से सेणिए राया तेसिं पुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठजावहियए सिंहासणाओ अब्भुट्ठेति त्ता जहा कोणिओ जाव वंदति नमंसति त्ता ते पुरिसे सक्कारेति संमाणेति त्ता विउलं जीवियारिहं पीतिदाणं दलयति त्ता पडिविसज्जेइ त्ता नगरगुत्तिए सद्दावेइ त्ता एवं वदासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! रायगिहं नगरं सब्भितरबाहिरियं आसियसंमज्जिओवलित्तं जाव पच्चप्पिणंति। ४०। तए णं से सेणिए राया बलवाउयं सद्दावेति त्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवा-णुप्पिया! हयगयरहजोहकलियं चाउरंगिणिं सेन्नं सन्नाहेह जाव सेऽवि पच्चप्पिणति, तते णं से सेणिए राया जाणसालियं सद्दावेति त्ता एवं वदासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! धम्मियं

९८७ दशाश्रुतस्कंधच्छेदसूत्रं, ८सू-१०

मुनि दीपरत्नसागर

	अत्र दशा- १० आरभ्यते

जाणपवरं जुत्तामेव उवट्ठावेह त्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि, तते णं से जाणसालिए सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठजावहियये जेणेव जाणसाला तेणेव उवागच्छइ त्ता जाणसालं अणुपविसइ त्ता जाणं पच्चोरुभति त्ता जाणगं संपमज्जइ त्ता जाणगं णीणेति त्ता जाणगं संवट्टइ त्ता दूसं पवीणेति त्ता जाणाइं समलंकरेइ त्ता जाणाइं वर-भंडमंडियाइं करेइ त्ता जेणेव वाहणसाला तेणेव उवागच्छइ त्ता वाहणसालं अणुपविसति त्ता वाहणाइं पच्चुविक्खति त्ता वाहणाइं संपमज्जइ त्ता वाहणाइं अप्फालइ त्ता वाहणाइं णीणेति त्ता दूसे पविणेति त्ता वाहणाइं अलंकारेति त्ता वाहणाइं वराभरणमंडियाइं करेति त्ता जाणगं जोएति त्ता वट्टिभोगाहेति त्ता पओगलट्ठिं पओगघरए य समं आरोहइ त्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ त्ता करयल जाव एवं वदासी-जुत्ते ते सामी! धम्मिए जाणपवरे, आइट्ठा भदंत! वग्गुगाही। ४१। तए णं सेणिए राया भंभासारे जाणसालियस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव मज्जणघरं अणुपविसइ जाव कप्परुक्खए चेव अलंकियविभूसिए नरिंदे जाव मज्जणघराओ पडिनिक्खमति त्ता जेणेव चेल्लणा देवी तेणेव उवागच्छइ त्ता चिल्लणं देवीं एवं वदासी-एवं खलु देवाणुप्पिए! समणे भगवं महावीरे आदिगरे तित्थगरे जाव पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तं महाफलं खलु देवाणुप्पिए! तहारूवाणं अरहंताणं जाव तं गच्छामो देवाणुप्पिए! समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो सक्कारेमो संमाणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेमो एतं णं इहभवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सति। ४२। तते णं सा चिल्लणा देवी सेणियस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव पडि-सुणेति त्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ त्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता, किं ते ?, वरपायपत्तनेउरमणिमेहलाहाररइयउवचियकडगखडुएगावलिकंठ-मुरजतिसरयतवरवलयहेमसुत्तयकुंडलुज्जोवियाणणा रयणभूसियंगी चीणंसुयवत्थपवरपरिहिया दुगुल्लसुकुमालकंतरमणिजउत्तरिजा सव्वोउयसुरभिकुसुमसुंदररइयपलंबसोहंतकंतविक-संतचित्तमाला वरचंदणचच्चिया वराभरणभूसियंगी कालागुरुधूवधूविया सिरीसमाणवेसा बहूहिं खुज्जाहिं चिलातियाहिं जाव महत्तरगाविंदपरिक्खित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ। ४३। तए णं से सेणिए राया चिल्लणाए देवीए सद्धिं धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहति सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं उववाइयगमेणं जाव पज्जुवासइ, एवं चेल्लणावि जाव महत्तरगाविंदपरिक्खित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति त्ता समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति त्ता सेणियं रायं पुरओ काउं ठितिया चेव पज्जुवासति, तते णं समणे भगवं महावीरे सेणियस्स रण्णो भंभासारस्स चिल्लणाए य देवीए तीसे महतिमहालियाए परिसाए जइपरिसाए इसि० मुणि० देव० मणुस्स० देवी० अणेगसयाए जाव धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया, सेणिओ राया पडिगओ। ४४। तत्थेगतियाणं निग्गंथाण य निग्गंथीण य सेणियं रायं चिल्लणं देवीं पासित्ताणं इमेयारूवे अज्झ-त्थिए जाव संकप्पे समुप्पज्जित्था-अहो णं सेणिए राया महड्ढिए जाव महासोक्खे जे णं ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिते चिल्लणाए देवीए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति, न मे दिट्ठे देवे देवलोगंमि, सक्खं खलु अयं देवे, जइ इमस्स तवनियमबंभचेरवासस्स फलवित्तिविसेसे अत्थि तया वयमवि आगमेस्साए इमाइं उरालाइं एयारूवाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरामो सेतं साहू, अहो णं चिल्लणा देवी महिड्ढिया जाव महासोक्खा जा णं ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सव्वालंकारवि-भूसिया सेणिएणं रन्ना सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ, ण मे दिट्ठाओ देवीओ देवलोए, सक्खं खलु इयं देवी, जइ इमस्स सुचरियस्स तवनियमबंभचेरवा-सस्स कल्लाणफलवित्तिविसेसे अत्थि वयमवि आगमिस्साणं इमाइं एयारूवाइं उरालाइं जाव विहरामो, सेतं साहुणी । ४५। अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे बहवे निग्गंथा य निग्गं-थीओ य आमंतित्ता एवं वयासी-सेणियं रायं चिल्लणं देवीं च पासित्ता इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-अहो णं सेणिए राया महिड्ढिए जाव से तं साहू, अहो णं चिल्लणा देवी महड्ढिया जाव से तं साहुणी, से णूणं अज्जो ! अत्थे समट्ठे ?, हंता अत्थि, एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते इणमेव निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे पडिपुण्णे केवलिए संसुद्धे णेआउए सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे अवितहमविसंधिं सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे इत्थं ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वाइंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति, जस्स णं धम्मस्स निग्गंथे सिक्खाए उवट्ठिए विहरमाणे पुरा दिगिंछाए पुरा पिवासाए पुरा वातातवेहिं पुट्ठेहिं विरूवरूवेहिं परिसहोवसग्गेहिं उदिण्णकामजाए यावि विहरेज्जा, से य परक्कमेज्जा से य परक्कममाणे पासेज्जा जे इमे उग्गपुत्ता महामाउया भोगपुत्ता महामाउया तेसिं णं अण्णतरस्स अतिजायमाणस्स वा निज्जाय-माणस्स वा पुरओ महं दासीदासकिंकरकम्मकरपुरिसपदायपरिक्खित्तं छत्तभिंगारं गहाय निग्गच्छंति तदणंतरं च णं पुरओ महाआसा आसवरा उभओ तेसिं नागा नागवरा पिट्ठओ रथा रथवरा रथसंगिल्ली सेयं उद्धरियसेयच्छत्ते अब्भुग्गयभिंगारे पग्गहियतालविंटे पवियण्णसेयचामरवालवीयणीए अभिक्खणं २ अतिजाति य निज्जाति य सप्पभा, सपुव्वावरं च णं ण्हाए कयबलिकम्मे जाव सव्वालंकारविभूसिए महतिमहालियाए कूडागारसालाए महतिमहालयंसि सिंहासणंसि जाव सव्वरातिएणं जोइणा झियायमाणेणं इत्थिगुम्मपरिखुडे (२४७)

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [४६] दीप अनुक्रम [१०३]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३७], छेदसूत्र - [४] “दशाश्रुतस्कन्ध” मूलं

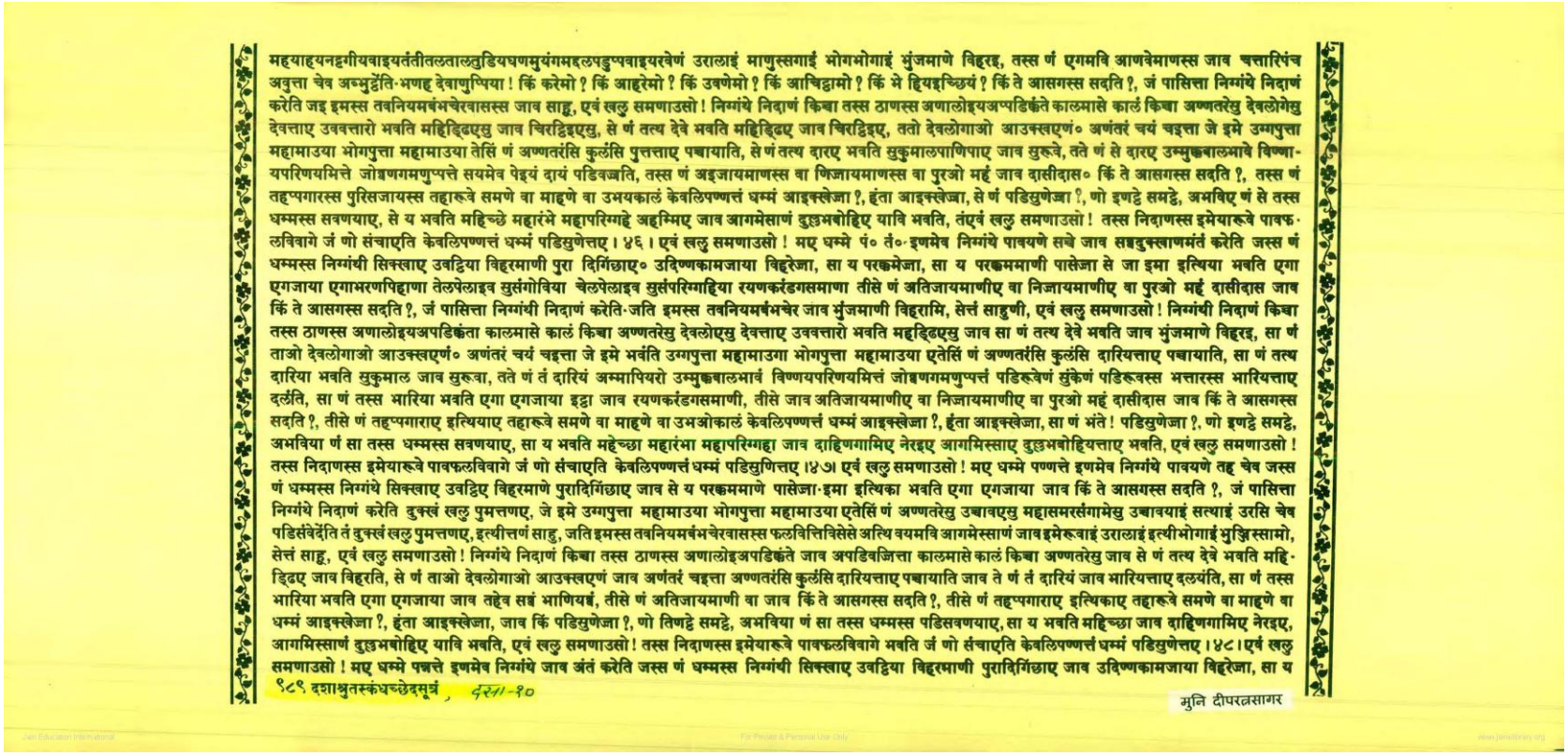

महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुयंगमद्दलपडुप्पवाइयरवेणं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ, तस्स णं एगमवि आणवेमाणस्स जाव चत्तारिपंच अवुत्ता चेव अब्भुट्ठेंति-भणह देवाणुप्पिया! किं करेमो? किं आहरेमो? किं उवणेमो? किं आचिट्ठामो? किं मे हियइच्छियं? किं ते आसगस्स सदति?, जं पासित्ता निग्गंथे निदाणं करेति जइ इमस्स तवनियमबंभचेरवासस्स जाव साहू, एवं खलु समणाउसो! निग्गंथे निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइयअप्पडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवति महिड्ढिएसु जाव चिरट्ठिइएसु, से णं तत्थ देवे भवति महिड्ढिए जाव चिरट्ठिइए, ततो देवलोगाओ आउक्खएणं० अणंतरं चयं चइत्ता जे इमे उग्गपुत्ता महामाउया भोगपुत्ता महामाउया तेसिं णं अण्णतरंसि कुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाति, से णं तत्थ दारए भवति सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे, तते णं से दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णा-यपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सयमेव पेइयं दायं पडिवज्जति, तस्स णं अइजायमाणस्स वा निज्जायमाणस्स वा पुरओ महं जाव दासीदास० किं ते आसगस्स सदति?, तस्स णं तहप्पगारस्स पुरिसजायस्स तहारूवे समणे वा माहणे वा उभयकालं केवलिपण्णत्तं धम्मं आइक्खेज्जा?, हंता आइक्खेज्जा, से णं पडिसुणेज्जा?, णो इणट्ठे समट्ठे, अभविए णं से तस्स धम्मस्स सवणयाए, से य भवति महिच्छे महारंभे महापरिग्गहे अहम्मिए जाव आगमेसाणं दुल्लभबोहिए यावि भवति, तंएवं खलु समणाउसो! तस्स निदाणस्स इमेयारूवे पावफ-लविवागे जं णो संचाएति केवलिपण्णत्तं धम्मं पडिसुणेत्तए। ४६। एवं खलु समणाउसो! मए धम्मे पं० तं०-इणमेव निग्गंथे पावयणे सच्चे जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेति जस्स णं धम्मस्स निग्गंथी सिक्खाए उवट्ठिया विहरमाणी पुरा दिगिंछाए० उदिण्णकामजाया विहरेज्जा, सा य परक्कमेज्जा, सा य परक्कममाणी पासेज्जा से जा इमा इत्थिया भवति एगा एगजाया एगाभरणपिहाणा तेलपेलाइव सुसंगोविया चेलपेलाइव सुसंपरिग्गहिया रयणकरंडगसमाणा तीसे णं अतिजायमाणीए वा निजायमाणीए वा पुरओ महं दासीदास जाव किं ते आसगस्स सदति?, जं पासित्ता निग्गंथी निदाणं करेति-जति इमस्स तवनियमबंभचेर जाव भुंजमाणी विहरामि, सेत्तं साहुणी, एवं खलु समणाउसो! निग्गंथी निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति महिड्ढिएसु जाव सा णं तत्थ देवे भवति जाव भुंजमाणे विहरइ, सा णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं० अणंतरं चयं चइत्ता जे इमे भवंति उग्गपुत्ता महामाउगा भोगपुत्ता महामाउया एतेसिं णं अण्णतरंसि कुलंसि दारियत्ताए पच्चायाति, सा णं तत्थ दारिया भवति सुकुमाल जाव सुरूवा, तते णं तं दारियं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं विण्णयपरिणयमित्तं जोव्वणगमणुप्पत्तं पडिरूवेणं सुंकेणं पडिरूवस्स भत्तारस्स भारियत्ताए दलंति, सा णं तस्स भारिया भवति एगा एगजाया इट्ठा जाव रयणकरंडगसमाणी, तीसे जाव अतिजायमाणीए वा निजायमाणीए वा पुरओ महं दासीदास जाव किं ते आसगस्स सदति?, तीसे णं तहप्पगाराए इत्थियाए तहारूवे समणे वा माहणे वा उभओकालं केवलिपण्णत्तं धम्मं आइक्खेज्जा?, हंता आइक्खेज्जा, सा णं भंते! पडिसुणेज्जा?, णो इणट्ठे समट्ठे, अभविया णं सा तस्स धम्मस्स सवणयाए, सा य भवति महेच्छा महारंभा महापरिग्गहा जाव दाहिणगामिए नेरइए आगमिस्साए दुल्लभबोहियत्ताए भवति, एवं खलु समणाउसो! तस्स निदाणस्स इमेयारूवे पावफलविवागे जं णो संचाएति केवलिपण्णत्तं धम्मं पडिसुणित्तए।४७। एवं खलु समणाउसो! मए धम्मे पण्णत्ते इणमेव निग्गंथे पावयणे तह चेव जस्स णं धम्मस्स निग्गंथे सिक्खाए उवट्ठिए विहरमाणे पुरादिगिंछाए जाव से य परक्कममाणे पासेज्जा-इमा इत्थिका भवति एगा एगजाया जाव किं ते आसगस्स सदति?, जं पासित्ता निग्गंथे निदाणं करेति दुक्खं खलु पुमत्तणए, जे इमे उग्गपुत्ता महामाउया भोगपुत्ता महामाउया एतेसिं णं अण्णतरेसु उच्चावएसु महासमरसंगामेसु उच्चावयाइं सत्थाइं उरसि चेव पडिसंवेदेंति तं दुक्खं खलु पुमत्तणए, इत्थीत्तणं साहु, जति इमस्स तवनियमबंभचेरवासस्स फलवित्तिविसेसे अत्थि वयमवि आगमेस्साणं जाव इमेरूवाइं उरालाइं इत्थीभोगाइं भुञ्जिस्सामो, सेत्तं साहू, एवं खलु समणाउसो! निग्गंथे निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइअपडिक्कंते जाव अपडिवज्जित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु जाव से णं तत्थ देवे भवति महि-ड्ढिए जाव विहरति, से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव अणंतरं चइत्ता अण्णतरंसि कुलंसि दारियत्ताए पच्चायाति जाव ते णं तं दारियं जाव भारियत्ताए दलयंति, सा णं तस्स भारिया भवति एगा एगजाया जाव तहेव सव्वं भाणियव्वं, तीसे णं अतिजायमाणी वा जाव किं ते आसगस्स सदति?, तीसे णं तहप्पगाराए इत्थिकाए तहारूवे समणे वा माहणे वा धम्मं आइक्खेज्जा?, हंता आइक्खेज्जा, जाव किं पडिसुणेज्जा?, णो तिणट्ठे समट्ठे, अभविया णं सा तस्स धम्मस्स पडिसवणयाए, सा य भवति महिच्छा जाव दाहिणगामिए नेरइए, आगमिस्साणं दुल्लभबोहिए यावि भवति, एवं खलु समणाउसो! तस्स निदाणस्स इमेयारूवे पावफलविवागे भवति जं णो संचाएति केवलिपण्णत्तं धम्मं पडिसुणेत्तए।४८। एवं खलु समणाउसो! मए धम्मे पन्नत्ते इणमेव निग्गंथे जाव अंतं करेति जस्स णं धम्मस्स निग्गंथी सिक्खाए उवट्ठिया विहरमाणी पुरादिगिंछाए जाव उदिण्णकामजाया विहरेज्जा, सा य

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३७], छेदसूत्र - [४] "दशाश्रुतस्कन्ध" मूलं

प्रत सूत्रांक [४९]

दीप अनुक्रम [१०६]

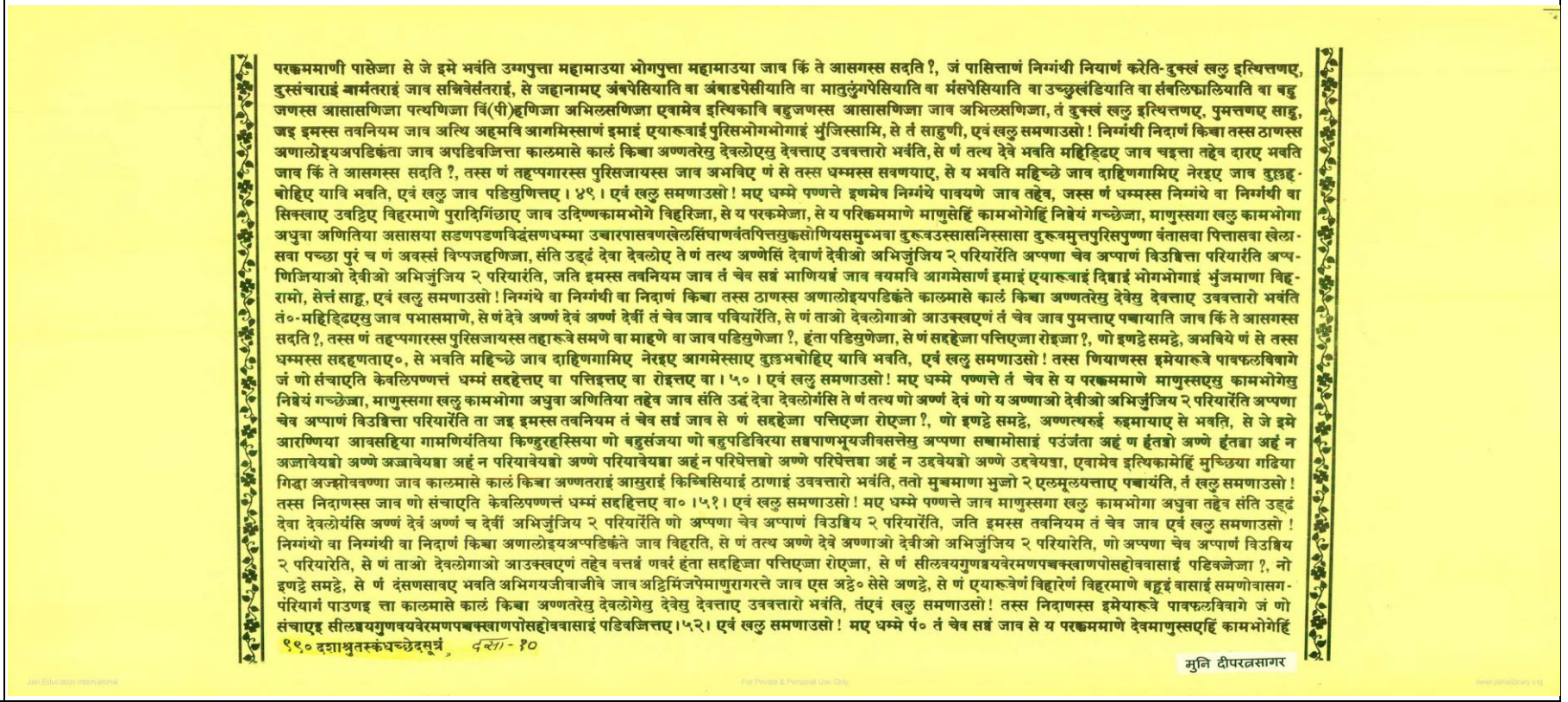

परक्कममाणी पासेज्जा से जे इमे भवंति उग्गपुत्ता महामाउया भोगपुत्ता महामाउया जाव किं ते आसगस्स सदति ?, जं पासित्ताणं निग्गंथी नियाणं करेति-दुक्खं खलु इत्थित्तणए, दुस्संचाराइं गामंतराइं जाव सन्निवेसंतराइं, से जहानामए अंबपेसियाति वा अंबाडपेसीयाति वा मातुलुंगपेसियाति वा मंसपेसियाति वा उच्छुखंडियाति वा संबलिफालियाति वा बहु जणस्स आसासणिज्जा पत्थणिज्जा विं(पी)हणिज्जा अभिलसणिज्जा एवामेव इत्थिकावि बहुजणस्स आसासणिज्जा जाव अभिलसणिज्जा, तं दुक्खं खलु इत्थित्तणए, पुमत्तणए साहु, जइ इमस्स तवनियम जाव अत्थि अहमवि आगमिस्साणं इमाइं एयारूवाइं पुरिसभोगभोगाइं भुंजिस्सामि, से तं साहुणी, एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथी निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कंता जाव अपडिवज्जित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, से णं तत्थ देवे भवति महिड्ढिए जाव चइत्ता तहेव दारए भवति जाव किं ते आसगस्स सदति ?, तस्स णं तहप्पगारस्स पुरिसजायस्स जाव अभविए णं से तस्स धम्मस्स सवणयाए, से य भवति महिच्छे जाव दाहिणगामिए नेरइए जाव दुल्लहबोहिए यावि भवति, एवं खलु जाव पडिसुणित्तए । ४९ । एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते इणमेव निग्गंथे पावयणे जाव तहेव, जस्स णं धम्मस्स निग्गंथे वा निग्गंथी वा सिक्खाए उवट्ठिए विहरमाणे पुरादिगिंछाए जाव उदिण्णकामभोगे विहरिजा, से य परकमेजा, से य परिक्कममाणे माणुसेहिं कामभोगेहिं निव्वेयं गच्छेज्जा, माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुवा अणितिया असासया सडणपडणविद्धंसणधम्मा उच्चारपासवणखेलसिंघाणवंतपित्तसुक्कसोणियसमुब्भवा दुरूवउस्सासनिस्सासा दुरूवमुत्तपुरिसपुण्णा वंतासवा पित्तासवा खेलासवा पच्छा पुरं च णं अवस्सं विप्पजहणिज्जा, संति उड्ढं देवा देवलोए ते णं तत्थ अण्णेसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेंति अप्पणा चेव अप्पाणं विउव्वित्ता परियारेंति अप्पणिज्जियाओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेंति, जति इमस्स तवनियम जाव तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव वयमवि आगमेसाणं इमाइं एयारूवाइं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरामो, सेत्तं साहु, एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथे वा निग्गंथी वा निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति तं०-महिड्ढिएसु जाव पभासमाणे, से णं देवे अण्णं देवं अण्णं देवीं तं चेव जाव परियारेंति, से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं तं चेव जाव पुमत्ताए पच्चायाति जाव किं ते आसगस्स सदति ?, तस्स णं तहप्पगारस्स पुरिसजायस्स तहारूवे समणे वा माहणे वा जाव पडिसुणेजा ?, हंता पडिसुणेजा, से णं सद्दहेजा पत्तिएज्जा रोइज्जा ?, णो इणट्ठे समट्ठे, अभविये णं से तस्स धम्मस्स सद्दहणताए०, से भवति महिच्छे जाव दाहिणगामिए नेरइए आगमेस्साए दुल्लभबोहिए यावि भवति, एवं खलु समणाउसो ! तस्स णियाणस्स इमेयारूवे पावफलविवागे जं णो संचाएति केवलिपण्णत्तं धम्मं सद्दहेत्तए वा पत्तिइत्तए वा रोइत्तए वा । ५० । एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते तं चेव से य परक्कममाणे माणुस्सएसु कामभोगेसु निव्वेयं गच्छेज्जा, माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुवा अणितिया तहेव जाव संति उड्ढं देवा देवलोगंसि ते णं तत्थ णो अण्णं देवं णो य अण्णाओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेंति अप्पणा चेव अप्पाणं विउव्वित्ता परियारेंति ता जइ इमस्स तवनियम तं चेव सव्वं जाव से णं सद्दहेजा पत्तिएज्जा रोएज्जा ?, णो इणट्ठे समट्ठे, अण्णत्थरुई रुइमायाए से भवति, से जे इमे आरण्णिया आवसहिया गामणियंतिया किण्हुरहस्सिया णो बहुसंजया णो बहुपडिविरया सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु अप्पणा सच्चामोसाइं पउंजंता अहं ण हंतव्वो अण्णे हंतव्वा अहं न अज्जावेयव्वो अण्णे अज्जावेयव्वा अहं न परियावेयव्वो अण्णे परियावेयव्वा अहं न परिघेत्तव्वो अण्णे परिघेत्तव्वा अहं न उद्दवेयव्वो अण्णे उद्दवेयव्वा, एवामेव इत्थिकामेहिं मुच्छिया गढिया गिद्धा अज्झोववण्णा जाव कालमासे कालं किच्चा अण्णतराइं आसुराइं किब्बिसियाइं ठाणाइं उववत्तारो भवंति, ततो मुच्चमाणा भुज्जो २ एलमूलयत्ताए पच्चायंति, तं खलु समणाउसो ! तस्स निदाणस्स जाव णो संचाएति केवलिपण्णत्तं धम्मं सद्दहित्तए वा० । ५१ । एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते जाव माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुवा तहेव संति उड्ढं देवा देवलोयंसि अण्णं देवं अण्णं च देवीं अभिजुंजिय २ परियारेंति णो अप्पणा चेव अप्पाणं विउव्विय २ परियारेंति, जति इमस्स तवनियम तं चेव जाव एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथो वा निग्गंथी वा निदाणं किच्चा अणालोइयअप्पडिक्कंते जाव विहरति, से णं तत्थ अण्णे देवे अण्णाओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेति, णो अप्पणा चेव अप्पाणं विउव्विय २ परियारेति, से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं तहेव वत्तव्वं णवरं हंता सद्दहिज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा, से णं सीलव्वयगुणव्वयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइं पडिवज्जेजा ?, नो इणट्ठे समट्ठे, से णं दंसणसावए भवति अभिगयजीवाजीवे जाव अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते जाव एस अट्ठे० सेसे अणट्ठे, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणइ त्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोगेसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तंएवं खलु समणाउसो ! तस्स निदाणस्स इमेयारूवे पावफलविवागे जं णो संचाएइ सीलव्वयगुणव्वयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइं पडिवज्जित्तए ।५२। एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पं० तं चेव सव्वं जाव से य परक्कममाणे देवमाणुस्सएहिं कामभोगेहिं

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [५३] दीप अनुक्रम [११०]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३७], छेदसूत्र - [४] “दशाश्रुतस्कन्ध” मूलं

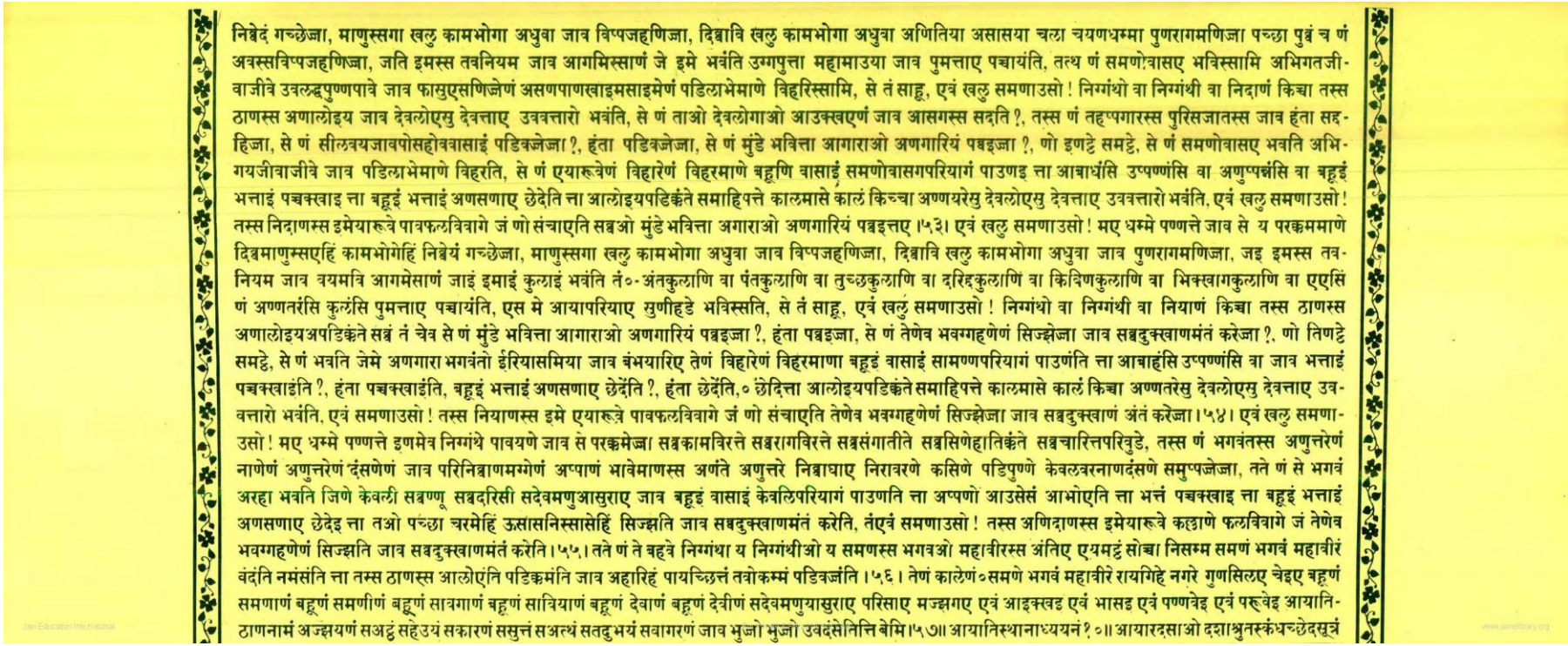

निव्वेदं गच्छेज्जा, माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुवा जाव विप्पजहणिज्जा, दिव्वावि खलु कामभोगा अधुवा अणितिया असासया चला चयणधम्मा पुणरागमणिज्जा पच्छा पुव्वं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जा, जति इमस्स तवनियम जाव आगमिस्साणं जे इमे भवंति उग्गपुत्ता महामाउया जाव पुमत्ताए पच्चायंति, तत्थ णं समणोवासए भविस्सामि अभिगतजीवाजीवे उवलद्धपुण्णपावे जाव फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेमाणे विहरिस्सामि, से तं साहू, एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथो वा निग्गंथी वा निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइय जाव देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव आसगस्स सदति ?, तस्स णं तहप्पगारस्स पुरिसजातस्स जाव हंता सद्दहिज्जा, से णं सीलवयजावपोसहोववासाइं पडिवज्जेज्जा ?, हंता पडिवज्जेज्जा, से णं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा ?, णो इणट्ठे समट्ठे, से णं समणोवासए भवति अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरति, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे बहूणि वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणइ त्ता आबाधंसि उप्पण्णंसि वा अणुप्पन्नंसि वा बहूइं भत्ताइं पच्चक्खाइ त्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेति त्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, एवं खलु समणाउसो ! तस्स निदाणस्स इमेयारूवे पावफलविवागे जं णो संचाएति सव्वओ मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।५३। एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते जाव से य परक्कममाणे दिव्वमाणुस्सएहिं कामभोगेहिं निव्वेयं गच्छेज्जा, माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुवा जाव विप्पजहणिज्जा, दिव्वावि खलु कामभोगा अधुवा जाव पुणरागमणिज्जा, जइ इमस्स तवनियम जाव वयमवि आगमेसाणं जाइं इमाइं कुलाइं भवंति तं०-अंतकुलाणि वा पंतकुलाणि वा तुच्छकुलाणि वा दरिद्दकुलाणि वा किविणकुलाणि वा भिक्खागकुलाणि वा एएसिं णं अण्णतरंसि कुलंसि पुमत्ताए पच्चायंति, एस मे आयापरियाए सुणीहडे भविस्सति, से तं साहू, एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथो वा निग्गंथी वा नियाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कंते सव्वं तं चेव से णं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा ?, हंता पव्वइज्जा, से णं तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झेज्जा जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेज्जा ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, से णं भवति जेमे अणगारा भगवंतो ईरियासमिया जाव बंभयारिए तेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति त्ता आबाहंसि उप्पण्णंसि वा जाव भत्ताइं पच्चक्खाइंति ?, हंता पच्चक्खाइंति, बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति ?, हंता छेदेंति,० छेदित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, एवं समणाउसो ! तस्स नियाणस्स इमे एयारूवे पावफलविवागे जं णो संचाएति तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झेज्जा जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेज्जा ।५४। एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते इणमेव निग्गंथे पावयणे जाव से परक्कमेज्जा सव्वकामविरत्ते सव्वरागविरत्ते सव्वसंगातीते सव्वसिणेहातिक्कंते सव्वचारित्तपरिवुडे, तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं जाव परिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जेज्जा, तते णं से भगवं अरहा भवति जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी सदेवमणुआसुराए जाव बहूइं वासाइं केवलिपरियागं पाउणति त्ता अप्पणो आउसेसं आभोएति त्ता भत्तं पच्चक्खाइ त्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ त्ता तओ पच्छा चरमेहिं ऊसासनिस्सासेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेति, तंएवं समणाउसो ! तस्स अणिदाणस्स इमेयारूवे कल्लाणे फलविवागे जं तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेति ।५५। ततेणं ते बहवे निग्गंथा य निग्गंथीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति त्ता तस्स ठाणस्स आलोएंति पडिक्कमंति जाव अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जंति ।५६। तेणं कालेणं०समणे भगवं महावीरे रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं सावियाणं बहूणं देवाणं बहूणं देवीणं सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगए एवं आइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ आयाति-ठाणनामं अज्झयणं सअट्ठं सहेउयं सकारणं ससुत्तं सअत्थं सतदुभयं सवागरणं जाव भुज्जो भुज्जो उवदंसेतित्ति बेमि।५७॥ आयातिस्थानाध्ययनं १०॥ आयारदसाओ दशाश्रुतस्कंधच्छेदसूत्रं

भाग 27	दशाश्रुतस्कंध-छेदसूत्र [४] ‘मूलं’ परिसमाप्त: मूल संशोधकः सम्पादकश्च पूज्य आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब किंचित् वैशिष्ट्य समर्पितेन सह पुन: संकलनकर्ता मुनि दीपरत्नसागरजी [M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

"जीतकल्प" मूलं एवं भाष्यं

[मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण-विरचितं भाष्यं]

[आद्य संपादकश्री]

पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म॰ सा॰

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D.,श्रुतमहर्षि)

28/07/2017, शुक्रवार, २०७३ श्रावण शुक्ल ५ 'सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि' श्रेणि भाग-२७

प्रत सूत्रांक [१] दीप अनुक्रम [१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

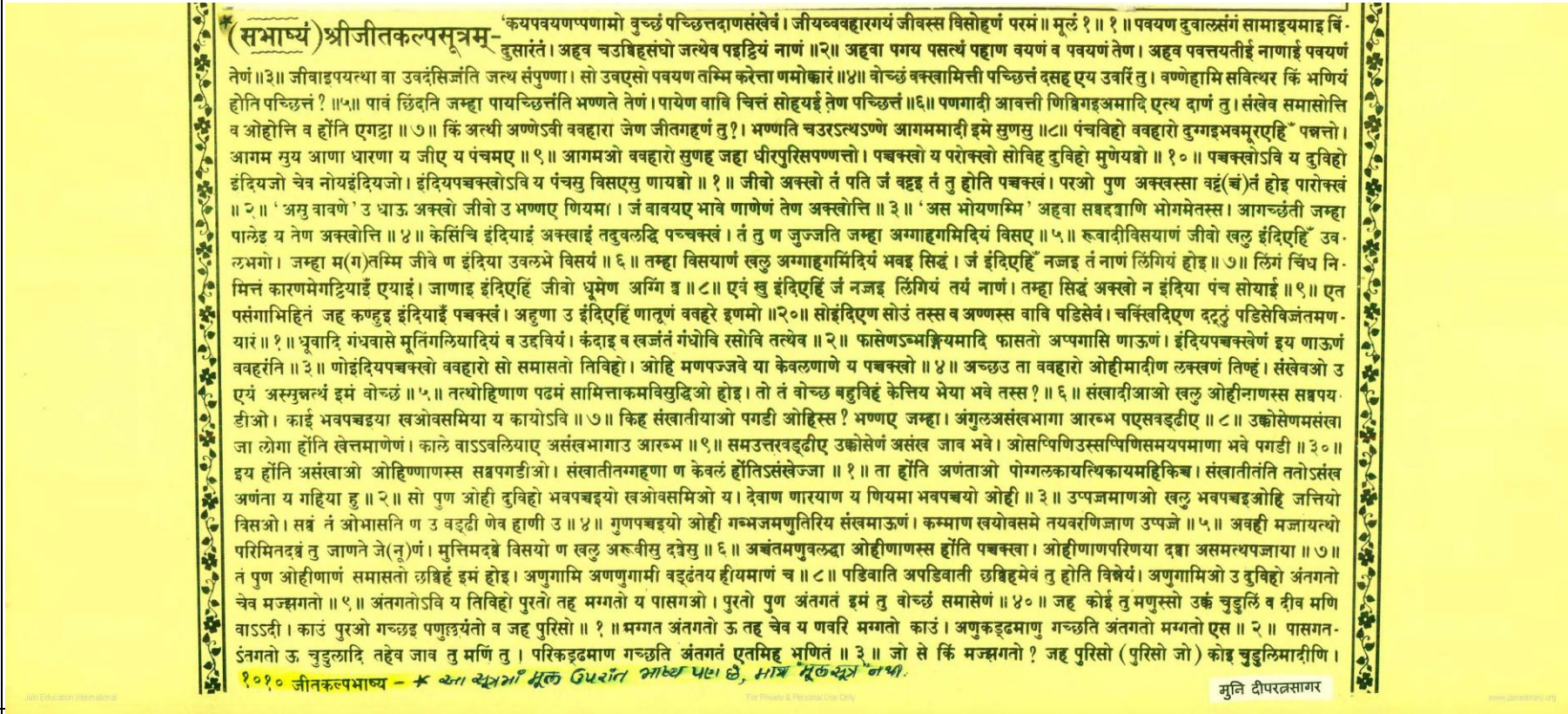

(सभाष्यं) श्रीजीतकल्पसूत्रम्-

‘कयपवयणप्पणामो वुच्छं पच्छित्तदाणसंखेवं। जीयव्ववहारगयं जीवस्स विसोहणं परमं॥ मूलं १॥ १॥ पवयण दुवालसंगं सामाइयमाइ बिंदुसारंतं। अहव चउविहसंघो जत्थेव पइट्ठियं नाणं॥२॥ अहवा पगय पसत्थं पहाण वयणं व पवयणं तेण। अहव पवत्तयतीई नाणाई पवयणं तेणं॥३॥ जीवाइपयत्था वा उवदंसिज्जंति जत्थ संपुण्णा। सो उवएसो पवयण तम्मि करेत्ता णमोक्कारं॥४॥ वोच्छं वक्खामित्ती पच्छित्तं दसह एय उवरिं तु। वण्णेहामि सवित्थर किं भणियं होति पच्छित्तं?॥५॥ पावं छिंदति जम्हा पायच्छित्तंति भण्णते तेणं। पायेण वावि चित्तं सोहयई तेण पच्छित्तं॥६॥ पणगादी आवत्ती णिव्विगइअमादि एत्थ दाणं तु। संखेव समासोत्ति व ओहोत्ति व होंति एगट्ठा॥७॥ किं अत्थी अण्णेऽवी ववहारा जेण जीतगहणं तु?। भण्णति चउरऽत्थऽण्णे आगममादी इमे सुणसु॥८॥ पंचविहो ववहारो दुग्गइभवमूरएहिं पन्नत्तो। आगम सुय आणा धारणा य जीए य पंचमए॥९॥ आगमओ ववहारो सुणह जहा धीरपुरिसपण्णत्तो। पच्चक्खो य परोक्खो सोविह दुविहो मुणेयव्वो॥१०॥ पच्चक्खोऽवि य दुविहो इंदियजो चेव नोयइंदियजो। इंदियपच्चक्खोऽवि य पंचसु विसएसु णायव्वो॥१॥ जीवो अक्खो तं पति जं वट्टइ तं तु होति पच्चक्खं। परओ पुण अक्खस्सा वट्टं(च्चं)तं होइ पारोक्खं॥२॥ ‘असु वावणे’ उ धाऊ अक्खो जीवो उ भण्णए णियमा। जं वावयए भावे णाणेणं तेण अक्खोत्ति॥३॥ ‘अस भोयणम्मि’ अहवा सव्वदव्वाणि भोगमेतस्स। आगच्छंती जम्हा पालेइ य तेण अक्खोत्ति॥४॥ केसिंचि इंदियाइं अक्खाइं तदुवलद्धि पच्चक्खं। तं तु ण जुज्जति जम्हा अग्गाहगमिंदियं विसए॥५॥ रूवादीविसयाणं जीवो खलु इंदिएहिं उवलभगो। जम्हा म(ग)तम्मि जीवे ण इंदिया उवलभे विसयं॥६॥ तम्हा विसयाणं खलु अग्गाहगमिंदियं भवइ सिद्धं। जं इंदिएहिं नज्जइ तं नाणं लिंगियं होइ॥७॥ लिंगं चिंध निमित्तं कारणमेगट्ठियाइं एयाइं। जाणाइ इंदिएहिं जीवो धूमेण अग्गिं व॥८॥ एवं खु इंदिएहिं जं नज्जइ लिंगियं तयं नाणं। तम्हा सिद्धं अक्खो न इंदिया पंच सोयाई॥९॥ एत पसंगाभिहितं जह कण्हुइ इंदियाइं पच्चक्खं। अहुणा उ इंदिएहिं णातूणं ववहरे इणमो॥२०॥ सोइंदिएण सोउं तस्स व अण्णस्स वावि पडिसेवं। चक्खिंदिएण दट्ठुं पडिसेविज्जंतमणयारं॥१॥ घूवादि गंधवासे मूतिंगलियादियं व उद्दवियं। कंदाइ व खज्जंतं गंधोवि रसोवि तत्थेव॥२॥ फासेणऽब्भक्खियमादि फासतो अप्पगासि णाऊणं। इंदियपच्चक्खेणं इय णाऊणं ववहरंति॥३॥ णोइंदियपच्चक्खो ववहारो सो समासतो तिविहो। ओहि मणपज्जवे या केवलणाणे य पच्चक्खो॥४॥ अच्छउ ता ववहारो ओहीमादीण लक्खणं तिण्हं। संखेवओ उ एयं अस्सुत्तत्थं इमं वोच्छं॥५॥ तत्थोहिणाण पढमं सामित्तकमविसुद्धिओ होइ। तो तं वोच्छ बहुविहं केत्तिय भेया भवे तस्स?॥६॥ संखादीआओ खलु ओहीनाणस्स सव्वपयडीओ। काई भवपच्चइया खओवसमिया य कायोऽवि॥७॥ किह संखातीयाओ पगडी ओहिस्स? भण्णए जम्हा। अंगुलअसंखभागा आरब्भ पएसवड्ढीए॥८॥ उक्कोसेणमसंखा जा लोगा होंति खेत्तमाणेणं। काले वाऽऽवलियाए असंखभागाउ आरब्भ॥९॥ समउत्तरवड्ढीए उक्कोसेणं असंख जाव भवे। ओसप्पिणिउस्सप्पिणिसमयपमाणा भवे पगडी॥३०॥ इय होंति असंखाओ ओहिण्णाणस्स सव्वपगडीओ। संखातीतग्गहणा ण केवलं होंतिऽसंखेज्जा॥१॥ ता होंति अणंताओ पोग्गलकायत्थिकायमहिकिच्च। संखातीतंति ततोऽसंख अणंता य गहिया हु॥२॥ सो पुण ओही दुविहो भवपच्चइयो खओवसमिओ य। देवाण णारयाण य णियमा भवपच्चयो ओही॥३॥ उप्पज्जमाणओ खलु भवपच्चइओहि जत्तियो विसओ। सव्वं तं ओभासति ण उ वड्ढी णेव हाणी उ॥४॥ गुणपच्चइयो ओही गब्भजमणुतिरिय संखमाऊणं। कम्माण खयोवसमे तयवरणिज्जाण उप्पज्जे॥५॥ अवही मज्जायत्थो परिमितदव्वं तु जाणते जे(नू)णं। मुत्तिमदव्वे विसयो ण खलु अरूवीसु दव्वेसु॥६॥ अचंतमणुवलद्धा ओहीणाणस्स होंति पच्चक्खा। ओहीणाणपरिणया दव्वा असमत्थपज्जाया॥७॥ तं पुण ओहीणाणं समासतो छव्विहं इमं होइ। अणुगामि अणणुगामी वड्ढंतय हीयमाणं च॥८॥ पडिवाति अपडिवाती छव्विहमेवं तु होति विन्नेयं। अणुगामिओ उ दुविहो अंतगतो चेव मज्झगतो॥९॥ अंतगतोऽवि य तिविहो पुरतो तह मग्गतो य पासगओ। पुरतो पुण अंतगतं इमं तु वोच्छं समासेणं॥४०॥ जह कोई तु मणुस्सो उक्कं चुडुलिं व दीव मणिं वाऽऽदी। काउं पुरओ गच्छइ पणुल्लयंतो व जह पुरिसो॥१॥ मग्गत अंतगतो ऊ तह चेव य णवरि मग्गतो काउं। अणुकड्ढमाणु गच्छति अंतगतो मग्गतो एस॥२॥ पासगतऽंतगतो ऊ चुडुलादि तहेव जाव तु मणिं तु। परिकड्ढमाण गच्छंति अंतगतं एतमिह भणितं॥३॥ जो से किं मज्झगतो? जह पुरिसो (पुरिसो जो) कोइ चुडुलिमादीणि।

१०१० जीतकल्पभाष्य – * આ સૂત્રમાં મૂલ ઉપરાંત ભાષ્ય પણ છે, માત્ર 'મૂલસૂત્ર' નથી.

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अत्र मंगल-आदि प्रास्ताविक-गाथा प्रस्तुयते

प्रत सूत्रांक [१] दीप अनुक्रम [१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

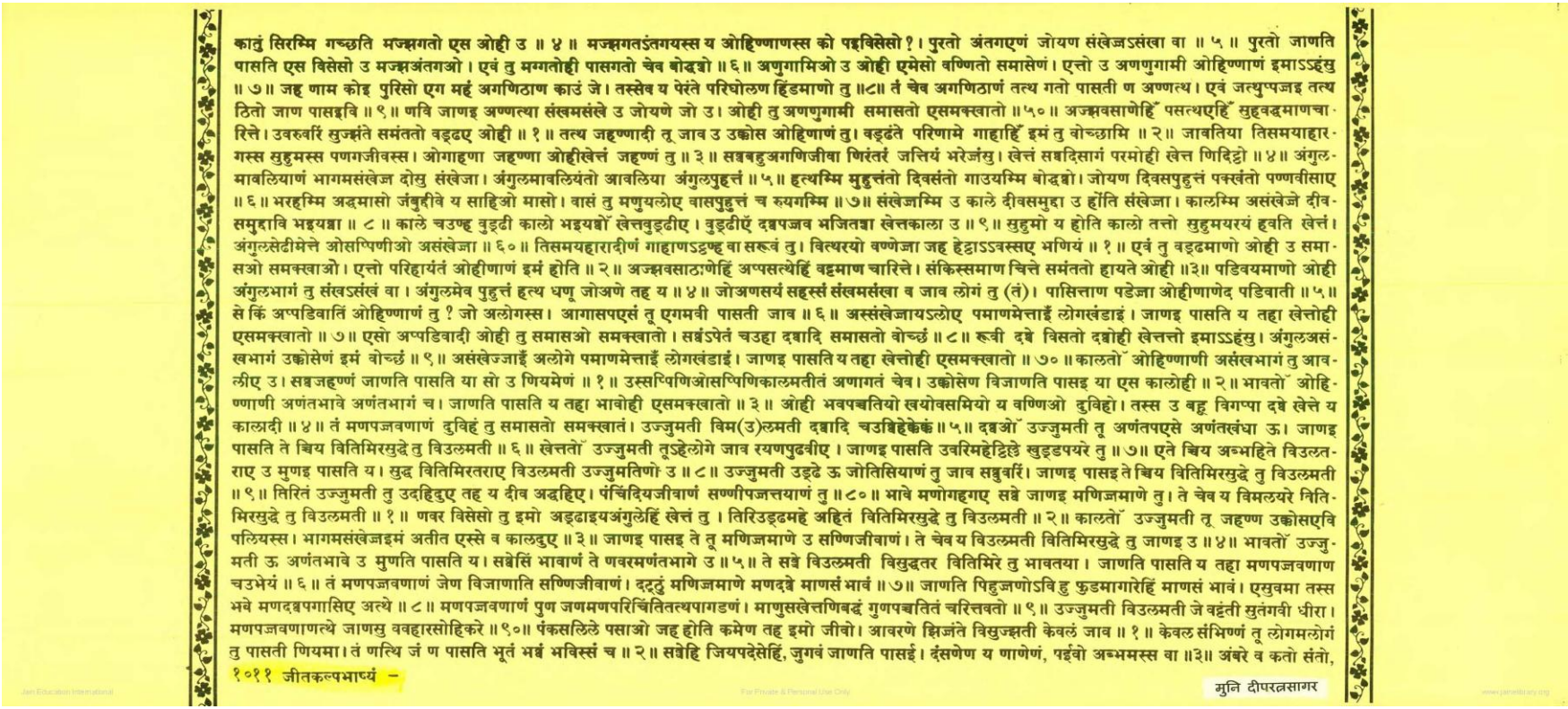

कातुं सिरम्मि गच्छति मज्झगतो एस ओही उ ॥ ४ ॥ मज्झगतउंतगयस्स य ओहिण्णाणस्स को पइविसेसो ? । पुरतो अंतगएणं जोयण संखेज्जइसंखा वा ॥ ५ ॥ पुरतो जाणति पासति एस विसेसो उ मज्झअंतगओ । एवं तु मग्गतोही पासगतो चेव बोद्धव्वो ॥ ६ ॥ अणुगामिओ उ ओही एमेसो वण्णितो समासेणं । एत्तो उ अणणुगामी ओहिण्णाणं इमाऽऽहंसु ॥ ७ ॥ जह णाम कोइ पुरिसो एग महं अगणिठाण काउं जे । तस्सेव य पेरंते परिधोलण हिंडमाणो तु ॥८॥ तं चेव अगणिठाणं तत्थ गतो पासती ण अण्णत्थ । एवं जत्थुप्पज्जइ तत्थ ठितो जाण पासइवि ॥ ९ ॥ णवि जाणइ अण्णत्था संखमसंखे उ जोयणे जो उ । ओही तु अणणुगामी समासतो एसमक्खातो ॥ ५० ॥ अज्झवसाणेहिँ पसत्थएहिँ सुहवद्धमाणचारित्ते । उवरुवरिं सुज्झंते समंततो वड्ढए ओही ॥ १ ॥ तत्थ जहण्णादी तू जाव उ उक्कोस ओहिणाणं तु । वड्ढंते परिणामे गाहाहिँ इमं तु वोच्छामि ॥ २ ॥ जावतिया तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणगजीवस्स । ओगाहणा जहण्णा ओहीखेत्तं जहण्णं तु ॥ ३ ॥ सव्वबहुअगणिजीवा णिरंतरं जत्तियं भरेजंसु । खेत्तं सव्वदिसागं परमोही खेत्त णिदिट्ठो ॥ ४ ॥ अंगुलमावलियाणं भागमसंखेज्ज दोसु संखेजा । अंगुलमावलियंतो आवलिया अंगुलपुहत्तं ॥ ५ ॥ हत्थम्मि मुहुत्तंतो दिवसंतो गाउयम्मि बोद्धव्वो । जोयण दिवसपुहुत्तं पक्खंतो पण्णवीसाए ॥ ६ ॥ भरहम्मि अद्धमासो जंबुद्दीवे य साहिओ मासो । वासं तु मणुयलोए वासपुहुत्तं च रुयगम्मि ॥ ७ ॥ संखेज्जम्मि उ काले दीवसमुद्दा उ होंति संखेजा । कालम्मि असंखेज्जे दीवसमुद्दावि भइयव्वा ॥ ८ ॥ काले चउण्ह वुड्ढी कालो भइयव्वो खेत्तवुड्ढीए । वुड्ढीएँ दव्वपज्जव भजितव्वा खेत्तकाला उ ॥ ९ ॥ सुहुमो य होति कालो तत्तो सुहुमयरयं हवति खेत्तं । अंगुलसेढीमेत्ते ओसप्पिणीओ असंखेजा ॥ ६० ॥ तिसमयहारादीणं गाहाणऽट्ठण्ह वा सरूवं तु । वित्थरयो वण्णेजा जह हेट्ठाऽऽवस्सए भणियं ॥ १ ॥ एवं तु वड्ढमाणो ओही उ समासओ समक्खाओ । एत्तो परिहायंतं ओहीणाणं इमं होति ॥ २ ॥ अज्झवसाठाणेहिं अप्पसत्थेहिं वड्ढमाण चारित्ते । संकिस्समाण चित्ते समंततो हायते ओही ॥३॥ पडिवयमाणो ओही अंगुलभागं तु संखऽसंखं वा । अंगुलमेव पुहुत्तं हत्थ धणू जोअणे तह य ॥ ४ ॥ जोअणसयं सहस्सं संखमसंखा व जाव लोगं तु (तं) । पासित्ताण पडेज्जा ओहीणाणेद पडिवाती ॥ ५ ॥ से किं अप्पडिवातिं ओहिण्णाणं तु ? जो अलोगस्स । आगासपएसं तू एगमवी पासती जाव ॥ ६ ॥ अस्संखेज्जायऽलोए पमाणमेत्ताइँ लोगखंडाइं । जाणइ पासति य तहा खेत्तोही एसमक्खातो ॥ ७ ॥ एसो अप्पडिवादी ओही तु समासओ समक्खातो । सव्वंऽपेतं चउहा दव्वादि समासतो वोच्छं ॥ ८ ॥ रूवी दव्वे विसतो दव्वोही खेत्तत्तो इमाऽऽहंसु । अंगुलअसंखभागं उक्कोसेणं इमं वोच्छं ॥ ९ ॥ असंखेज्जाइं अलोगे पमाणमेत्ताइँ लोगखंडाइं । जाणइ पासति य तहा खेत्तोही एसमक्खातो ॥ ७० ॥ कालतो ओहिण्णाणी असंखभागं तु आवलीए उ । सव्वजहण्णं जाणति पासति या सो उ णियमेणं ॥ १ ॥ उस्सप्पिणिओसप्पिणिकालमतीतं अणागतं चेव । उक्कोसेण विजाणति पासइ या एस कालोही ॥ २ ॥ भावतो ओहिण्णाणी अणंतभावे अणंतभागं च । जाणति पासति य तहा भावोही एसमक्खातो ॥ ३ ॥ ओही भवपच्चतियो खयोवसमियो य वण्णिओ दुविहो । तस्स उ बहू विगप्पा दव्वे खेत्ते य कालादी ॥ ४ ॥ तं मणपज्जवणाणं दुविहं तु समासतो समक्खातं । उज्जुमती विम(उ)लमती दव्वादि चउव्विहेक्केकं ॥ ५ ॥ दव्वओ उज्जुमती तू अणंतपएसे अणंतखंधा ऊ । जाणइ पासति ते चिय वितिमिरसुद्धे तु विउलमती ॥ ६ ॥ खेत्ततो उज्जुमती तूऽहेलोगे जाव रयणपुढवीए । जाणइ पासति उवरिमहेट्ठिल्ले खुड्डपयरे तु ॥ ७ ॥ एते चिय अब्भहिते विउलतराए उ मुणइ पासति य । सुद्ध वितिमिरतराए विउलमती उज्जुमतिणो उ ॥ ८ ॥ उज्जुमती उड्ढे ऊ जोतिसियाणं तु जाव सबुवरिं । जाणइ पासइ ते चिय वितिमिरसुद्धे तु विउलमती ॥ ९ ॥ तिरितं उज्जुमती तु उदहिदुए तह य दीव अद्धहिए । पंचिंदियजीवाणं सण्णीपज्जत्तयाणं तु ॥ ८० ॥ भावे मणोगहगए सव्वे जाणइ मणिज्जमाणे तु । ते चेव य विमलयरे निति-मिरसुद्धे तु विउलमती ॥ १ ॥ णवर विसेसो तु इमो अड्ढाइयअंगुलेहिं खेत्तं तु । तिरिउड्ढमहे अहितं वितिमिरसुद्धे तु विउलमती ॥ २ ॥ कालतो उज्जुमती तू जहण्ण उक्कोसएवि पलियस्स । भागमसंखेज्जइमं अतीत एस्से व कालदुए ॥ ३ ॥ जाणइ पासइ ते तू मणिज्जमाणे उ सण्णिजीवाणं । ते चेव य विउलमती वितिमिरसुद्धे तु जाणइ उ ॥ ४ ॥ भावतो उज्जुमती ऊ अणंतभावे उ मुणति पासति य । सव्वेसिं भावाणं ते णवरमणंतभागे उ ॥ ५ ॥ ते सव्वे विउलमती विसुद्धतर वितिमिरे तु भावतया । जाणति पासति य तहा मणपज्जवणाण चउभेयं ॥ ६ ॥ तं मणपज्जवणाणं जेण विजाणाति सण्णिजीवाणं । दट्ठुं मणिज्जमाणे मणदव्वे माणसं भावं ॥ ७ ॥ जाणति पिहुज्जणोऽवि हु फुडमागारेहिं माणसं भावं । एसुवमा तस्स भवे मणदव्वपगासिए अत्थे ॥ ८ ॥ मणपज्जवणाणं पुण जणमणपरिचिंतितत्थपागडणं । माणुसखेत्तणिबद्धं गुणपच्चतितं चरित्तवतो ॥ ९ ॥ उज्जुमती विउलमती जे वट्टंती सुतंगवी धीरा । मणपज्जवणाणत्थे जाणसु ववहारसोहिकरे ॥ ९० ॥ पंकसलिले पसाओ जह होति कमेण तह इमो जीवो । आवरणे झिजंते विसुज्झती केवलं जाव ॥ १ ॥ केवल संभिण्णं तू लोगमलोगं तु पासती णियमा । तं णत्थि जं ण पासति भूतं भव्वं भविस्सं च ॥ २ ॥ सव्वेहि जियपदेसेहिं, जुगवं जाणति पासई । दंसणेण य णाणेणं, पइवो अब्भमस्स वा ॥३॥ अंबरे व कतो संतो,

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [१] दीप अनुक्रम [१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

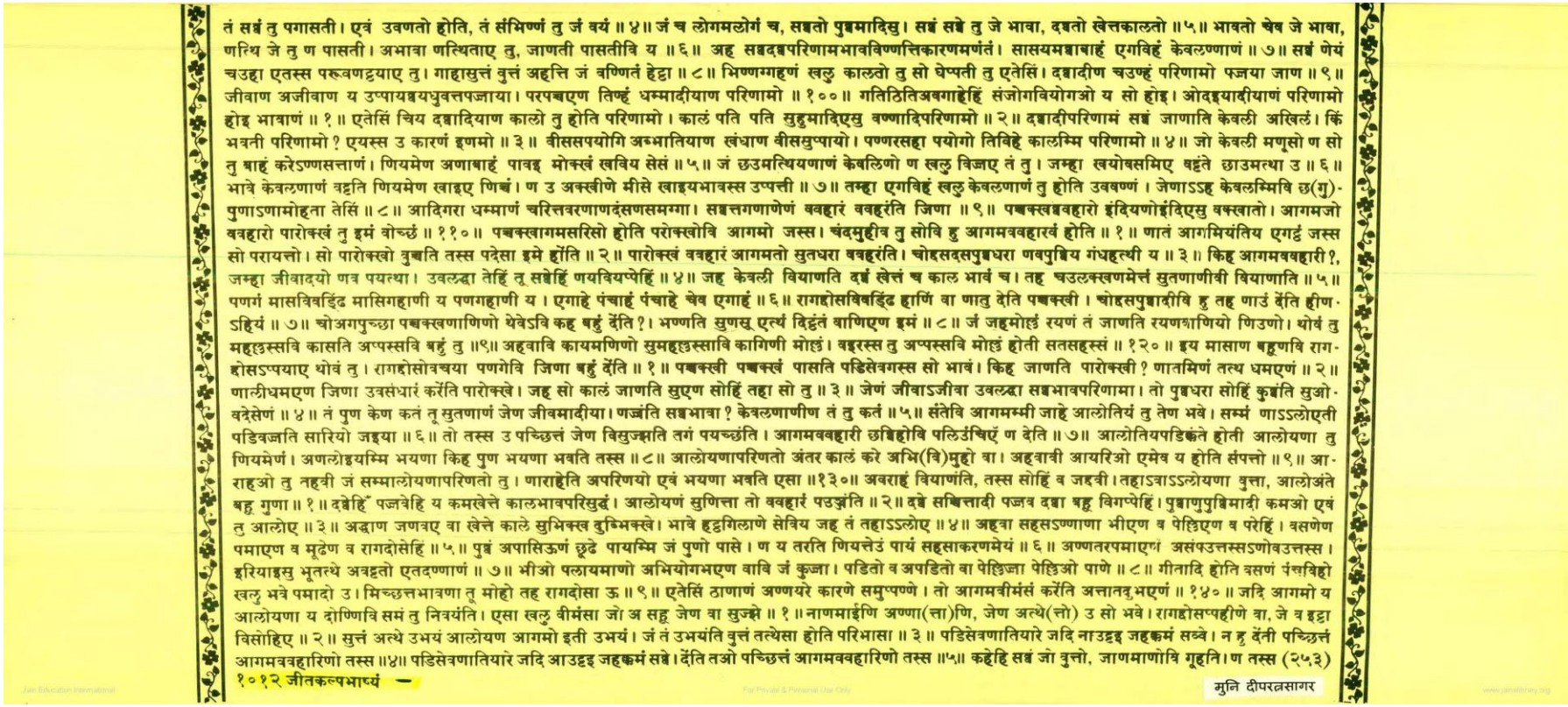

तं सव्वं तु पगासती। एवं उवणतो होति, तं संभिण्णं तु जं वयं ॥ ४॥ जं च लोगमलोगं च, सद्दतो पुव्वमादिसु। सव्वं सव्वे तु जे भावा, दव्वतो खेत्तकालतो ॥५॥ भावतो चेव जे भावा, णत्थि जे तु ण पासती। अभावा णत्थिताए तु, जाणती पासतीवि य ॥६॥ अह सव्वदव्वपरिणामभावविण्णत्तिकारणमणंतं। सासयमप्पडिवाहं एगविहं केवलण्णाणं ॥ ७॥ सव्वं णेयं चउहा एतस्स परूवणट्ठयाए तु। गाहासुत्तं वुत्तं अहत्ति जं वण्णितं हेट्ठा ॥ ८॥ भिण्णग्गहणं खलु कालतो तु सो घेप्पती तु एतेसिं। दव्वादीण चउण्हं परिणामो पज्जया जाण ॥ ९॥ जीवाण अजीवाण य उप्पायव्वयधुवत्तपज्जाया। परपच्चएण तिण्हं धम्मादीयाण परिणामो ॥ १००॥ गतिठितिअवगाहेहिं संजोगवियोगओ य सो होइ। ओदइयादीयाणं परिणामो होइ भावाणं ॥ १॥ एतेसिं चिय दव्वादियाण कालो तु होति परिणामो। कालं पति पति सुहुमादिएसु वण्णादिपरिणामो ॥ २॥ दव्वादीपरिणामं सव्वं जाणाति केवली अखिलं। किं भवती परिणामो? एयस्स उ कारणं इणमो ॥ ३॥ वीससपयोगि अब्भातियाण खंधाण वीससुप्पायो। पण्णरसहा पयोगो तिविहे कालम्मि परिणामो ॥ ४॥ जो केवली मणूसो ण सो तु बाहं करेऽण्णसत्ताणं। णियमेण अणाबाहं पावइ मोक्खं खविय सेसं ॥ ५॥ जं छउमत्थियणाणं केवलिणो ण खलु विज्जए तं तु। जम्हा खयोवसमिए वट्टंते छाउमत्था उ ॥ ६॥ भावे केवलणाणं वट्टति णियमेण खाइए णिच्चं। ण उ अक्खीणे मीसे खाइयभावस्स उप्पत्ती ॥ ७॥ तम्हा एगविहं खलु केवलणाणं तु होति उवमण्णं। जेणाऽऽह केवलम्मिवि छ(गु)-पुणाऽणामोहत्ता तेसिं ॥ ८॥ आदिगरा धम्माणं चरित्तवरणाणदंसणसमग्गा। सव्वत्तगणाणेणं ववहारं ववहरंति जिणा ॥ ९॥ पच्चक्खदवहारो इंदियणोइंदिएसु वक्खातो। आगमजो ववहारो पारोक्खं तु इमं वोच्छं ॥ ११०॥ पच्चक्खागमसरिसो होति परोक्खोवि आगमो जस्स। चंदमुहीव तु सोवि हु आगमववहारवं होति ॥ १॥ णातं आगमियंतिय एगट्ठं जस्स सो परायत्तो। सो पारोक्खो वुच्चति तस्स पदेसा इमे होंति ॥ २॥ पारोक्खं ववहारं आगमतो सुतधरा ववहरंति। चोद्दसदसपुव्वधरा णवपुव्विय गंधहत्थी य ॥ ३॥ किह आगमववहारी?, जम्हा जीवादयो णव पयत्था। उवलद्धा तेहिं तु सव्वेहिं णयवियप्पेहिं ॥ ४॥ जह केवली वियाणति दव्वं खेत्तं च काल भावं च। तह चउलक्खणमेत्तं सुतणाणीवी वियाणाति ॥ ५॥ पणगं मासविवड्ढिं मासिगहाणी य पणगहाणी य। एगाहे पंचाहं पंचाहे चेव एगाहं ॥ ६॥ रागद्दोसविवड्ढिं हाणिं वा णातु देति पच्चक्खी। चोद्दसपुव्वादीवि हु तह णाउं देंति हीण-ऽहियं ॥ ७॥ चोअगपुच्छा पच्चक्खणाणिणो थेवेऽवि कह बहुं देंति?। भण्णति सुणसु एत्थं दिट्ठंतं वाणिएण इमं ॥ ८॥ जं जहुमोल्लं रयणं तं जाणति रयणवाणियो णिउणो। थोवं तु महल्लस्सवि कासति अप्पस्सवि बहुं तु ॥९॥ अहवावि कायमणिणो सुमहल्लस्सावि कागिणी मोल्लं। वइरस्स तु अप्पस्सवि मोल्लं होती सतसहस्सं ॥ १२०॥ इय मासाण बहूणवि राग-दोसऽप्पयाए थोवं तु। रागद्दोसोवचया पणगेवि जिणा बहुं देंति ॥ १॥ पच्चक्खी पच्चक्खं पासति पडिसेवगस्स सो भावं। किह जाणति पारोक्खी? णातमिणं तत्थ धमएणं ॥ २॥ णाऊधमएण जिणा उवसंधारं करेंति पारोक्खे। जह सो कालं जाणति सुएण सोहिं तहा सो तु ॥ ३॥ जेणं जीवाऽजीवा उवलद्धा सव्वभावपरिणामा। तो पुव्वधरा सोहिं कुव्वंति सुओ-वदेसेणं ॥ ४॥ तं पुण केण कतं तू सुतणाणं जेण जीवमादीया। णज्जंति सव्वभावा? केवलणाणीण तं तु कतं ॥ ५॥ संतेवि आगमम्मी जाहे आलोतियं तु तेण भवे। सम्मं णाऽऽलोएती पडिवज्जति सारियो जइया ॥ ६॥ तो तस्स उ पच्छित्तं जेण विसुज्झति तगं पयच्छंति। आगमववहारी छद्दिहोवि पलिउंचिएं ण देति ॥ ७॥ आलोतियपडिक्कंते होती आलोयणा तु णियमेणं। अणलोइयम्मि भयणा किह पुण भयणा भवति तस्स ॥ ८॥ आलोयणापरिणतो अंतर कालं करे अभि(वि)मुहो वा। अहवावी आयरिओ एमेव य होति संपत्तो ॥ ९॥ आ-राहओ तु तहवी जं सम्मालोयणापरिणतो तु। णाराहेति अपरिणयो एवं भयणा भवति एसा ॥१३०॥ अवराहं वियाणंति, तस्स सोहिं व जहवी। तहाऽवाऽऽलोयणा वुत्ता, आलोअंते बहू गुणा ॥ १॥ दव्वेहिं पज्जवेहि य कमखेत्ते कालभावपरिसुद्धं। आलोयणं सुणित्ता तो ववहारं पउञ्जंति ॥ २॥ दव्वे सचित्तादी पज्जव दव्वा बहू विगप्पेहिं। पुव्वाणुपुव्विमादी कमओ एवं तु आलोए ॥ ३॥ अद्धाण जणवए वा खेत्ते काले सुभिक्ख दुब्भिक्खे। भावे हट्ठगिलाणे सेविय जह तं तहाऽऽलोए ॥ ४॥ अहवा सहसऽण्णाणा भीएण व पेल्लिएण व परेहिं। वसणेण पमाएण व मूढेण व रागदोसेहिं ॥ ५॥ पुव्वं अपासिऊणं छूढे पायम्मि जं पुणो पासे। ण य तरति णियत्तेउं पायं सहसाकरणमेयं ॥ ६॥ अण्णतरपमाएणं असंपउत्तस्सऽणोवउत्तस्स। इरियाइसु भूतत्थे अवट्टतो एतदण्णाणं ॥ ७॥ भीओ पलायमाणो अभियोगभएण वावि जं कुज्जा। पडितो व अपडितो वा पेल्लिज्जा पेल्लिओ पाणे ॥ ८॥ गीतादि होति वसणं पंचविहो खलु भवे पमादो उ। मिच्छत्तभावणा तू मोहो तह रागदोसा ऊ ॥ ९॥ एतेसिं ठाणाणं अण्णयरे कारणे समुप्पण्णे। तो आगमवीमंसं करेंति अत्तानुभएणं ॥ १४०॥ जदि आगमो य आलोयणा य दोण्णिवि समं तु निवयंति। एसा खलु वीमंसा जो अ सहू जेण वा सुज्झे ॥ १॥ णाणमाईणि अण्णा(त्ता)णि, जेण अत्थे(त्तो) उ सो भवे। रागद्दोसप्पहीणे वा, जे व इट्ठा विसोहिए ॥ २॥ सुत्तं अत्थे उभयं आलोयण आगमो इती उभयं। जं तं उभयंति वुत्तं तत्थेसा होति परिभासा ॥ ३॥ पडिसेवणातियारे जदि नाउट्टइ जहक्कमं सव्वे। न हु देंती पच्छित्तं आगमववहारिणो तस्स ॥४॥ पडिसेवणातियारे जदि आउट्टइ जहक्कमं सव्वे। देंति तओ पच्छित्तं आगमववहारिणो तस्स ॥५॥ कहेहि सव्वं जो वुत्तो, जाणमाणोवि गूहति। ण तस्स (२५३)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [१] दीप अनुक्रम [१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

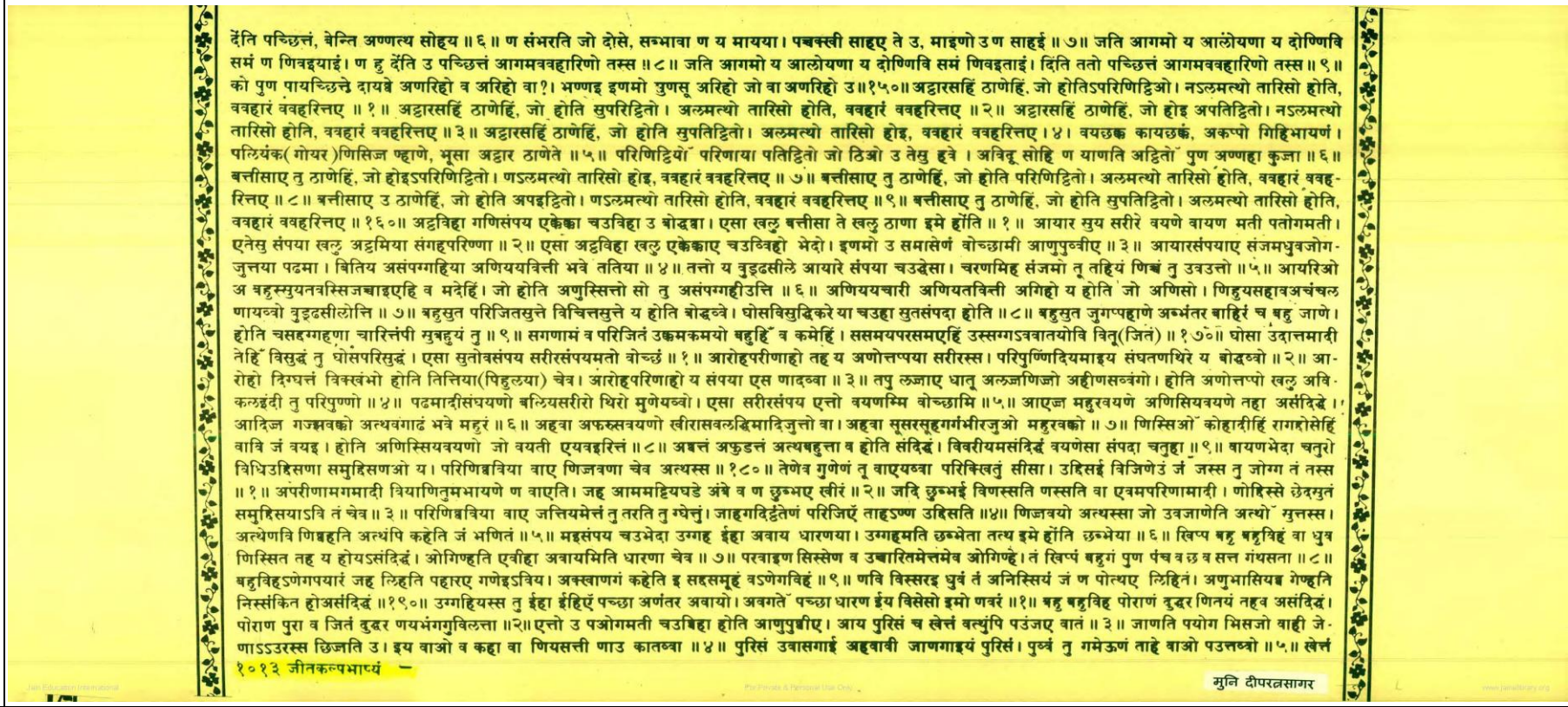

देंति पच्छित्तं, बेन्ति अण्णत्थ सोहय ॥ ६ ॥ ण संभरति जो दोसे, सब्भावा ण य मायया। पच्चक्खी साहए ते उ, माइणो उण साहई ॥ ७ ॥ जति आगमो य आलोयणा य दोण्णिवि समं ण णिवइयाइं। ण हु देंति उ पच्छित्तं आगमववहारिणो तस्स ॥ ८ ॥ जति आगमो य आलोयणा य दोण्णिवि समं णिवइताइं। दिंति ततो पच्छित्तं आगमववहारिणो तस्स ॥ ९ ॥ को पुण पायच्छित्ते दायवे अणरिहो व अरिहो वा?। भण्णइ इणमो चुणसू अरिहो जो वा अणरिहो उ॥१५०॥ अट्ठारसहिं ठाणेहिं, जो होतिऽपरिणिट्ठिओ। नऽलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥ १ ॥ अट्ठारसहिं ठाणेहिं, जो होति सुपरिट्ठितो। अलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥ २ ॥ अट्ठारसहिं ठाणेहिं, जो होइ अपतिट्ठितो। नऽलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥ ३ ॥ अट्ठारसहिं ठाणेहिं, जो होति सुपतिट्ठितो। अलमत्थो तारिसो होइ, ववहारं ववहरित्तए ।४। वयछक्क कायछक्कं, अकप्पो गिहिभायणं। पलियंक(गोयर)णिसिज्ज ण्हाणे, भूसा अट्ठार ठाणेते ॥ ५ ॥ परिणिट्ठियो परिणाया पतिट्ठितो जो ठिओ उ तेसु हवे । अविदू सोहि ण याणति अट्ठितो पुण अण्णहा कुज्जा ॥ ६ ॥ बत्तीसाए तु ठाणेहिं, जो होइऽपरिणिट्ठितो। णऽलमत्थो तारिसो होइ, ववहारं ववहरित्तए ॥ ७ ॥ बत्तीसाए तु ठाणेहिं, जो होति परिणिट्ठितो। अलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥ ८ ॥ बत्तीसाए उ ठाणेहिं, जो होति अपइट्ठितो। णऽलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥ ९ ॥ बत्तीसाए तु ठाणेहिं, जो होति सुपतिट्ठितो। अलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥ १६० ॥ अट्ठविहा गणिसंपय एक्केक्का चउव्विहा उ बोद्धव्वा। एसा खलु बत्तीसा ते खलु ठाणा इमे होंति ॥ १ ॥ आयार सुय सरीरं वयणे वायण मती पतोगमती। एतेसु संपया खलु अट्ठमिया संगहपरिण्णा ॥ २ ॥ एसा अट्ठविहा खलु एक्केक्काए चउव्विहो भेदो। इणमो उ समासेणं वोच्छामी आणुपुव्वीए ॥ ३ ॥ आयारसंपयाए संजमधुवजोग-जुत्तया पढमा। बितिय असंपग्गहिया अणिययवित्ती भवे ततिया ॥ ४ ॥ तत्तो य वुड्ढसीले आयारे संपया चउद्देसा। चरणमिह संजमो तू तहियं णिच्चं तु उवउत्तो ॥ ५ ॥ आयरिओ अ बहुस्सुयनवस्सिजचाइएहि व मदेहिं। जो होति अणुस्सित्तो सो तु असंपग्गहीउत्ति ॥ ६ ॥ अणिययचारी अणियतवित्ती अगिहो य होति जो अणिसो। णिहुयसहावअचंचल णायव्वो वुड्ढसीलोत्ति ॥ ७ ॥ बहुसुत परिजितसुत्ते विचित्तसुत्ते य होति बोद्धव्वे। घोसविसुद्धिकरे या चउहा सुतसंपदा होति ॥ ८ ॥ बहुसुत जुगप्पहाणे अब्भंतर बाहिरं च बहु जाणे। होति चसद्दग्गहणा चारित्तंपी सुबहुयं तु ॥ ९ ॥ सगणामं व परिजितं उक्कमकमयो बहुहिं व कमेहिं। ससमयपरसमएहिं उस्सग्गऽववातयोवि वितू(जितं) ॥ १७० ॥ घोसा उदात्तमादी तेहिं विसुद्धं तु घोसपरिसुद्धं। एसा सुतोवसंपय सरीरसंपयमतो वोच्छं ॥ १ ॥ आरोहपरीणाहो तह य अणोत्तप्पया सरीरस्स। परिपुण्णिंदियमाइय संघतणथिरे य बोद्धव्वो ॥ २ ॥ आ-रोहो दिग्घत्तं विक्खंभो होति तित्तिया(पिहुलया) चेव। आरोहपरिणाहो य संपया एस णादव्वा ॥ ३ ॥ तपु लज्जाए धातू अलज्जणिज्जो अहीणसव्वंगो। होति अणोत्तप्पो खलु अवि-कलइंदी तु परिपुण्णो ॥ ४ ॥ पढमादीसंघयणो बलियसरीरो थिरो मुणेयव्वो। एसा सरीरसंपय एत्तो वयणम्मि वोच्छामि ॥ ५ ॥ आएज्ज महुरवयणे अणिसियवयणे तहा असंदिद्धे। आदिज्ज गज्झवक्को अत्थवगाढं भवे महुरं ॥ ६ ॥ अहवा अफरुसवयणो खीरासवलद्धिमादिजुत्तो वा। अहवा सूसरसुहगगंभीरजुओ महुरवक्को ॥ ७ ॥ णिस्सिओ कोहादीहिं रागदोसेहिं वावि जं वयइ। होति अणिस्सियवयणो जो वयती एयवइरित्तं ॥ ८ ॥ अद्धत्तं अफुडत्तं अत्थबहुत्ता व होति संदिद्धं। विवरीयमसंदिद्धं वयणेसा संपदा चतुहा ॥ ९ ॥ वायणभेदा चतुरो विधिउद्दिसणा समुद्दिसणओ य। परिणिव्वविया वाए णिज्जवणा चेव अत्थस्स ॥ १८० ॥ तेणेव गुणेणं तू वाएयव्वा परिक्खितुं सीसा। उद्दिसई विजिणेउं जं जस्स तु जोग्ग तं तस्स ॥ १ ॥ अपरीणामगमादी वियाणितुमभायणे ण वाएति। जह आममट्टियघडे अंबे व ण छुब्भए खीरं ॥ २ ॥ जदि छुब्भई विणस्सति णस्सति वा एवमपरिणामादी। णोद्दिस्से छेदसुतं समुद्दिसयाऽवि तं चेव ॥ ३ ॥ परिणिव्वविया वाए जत्तियमेत्तं तु तरति तु ग्घेत्तुं। जाहगदिट्ठंतेणं परिजिएँ ताहऽण्ण उद्दिसति ॥४॥ णिज्जवयो अत्थस्सा जो उवजाणेति अत्थो सुत्तस्स। अत्थेणवि णिव्वहति अत्थंपि कहेति जं भणितं ॥ ५ ॥ मइसंपय चउभेदा उग्गह ईहा अवाय धारणया। उग्गहमति छब्भेता तत्थ इमे होंति छब्भेया ॥ ६ ॥ खिप्प बहु बहुविहं वा धुव णिस्सित तह य होयऽसंदिद्धं। ओगिण्हति एवीहा अवायमिति धारणा चेव ॥ ७ ॥ परवाइण सिस्सेण व उच्चारितमेत्तमेव ओगिण्हे। तं खिप्पं बहुगं पुण पंच व छ व सत्त गंथसता ॥ ८ ॥ बहुविहऽणेगपयारं जह लिहति पहारए गणेइऽविय। अक्खाणगं कहेति इ सहसमूहं वऽणेगविहं ॥ ९ ॥ णवि विस्सरइ धुवं तं अनिस्सियं जं ण पोत्थए लिहितं। अणुभासियव्व गेण्हति निस्संकित होअसंदिद्धं ॥१९०॥ उग्गहियस्स तु ईहा ईहिएँ पच्छा अणंतर अवायो। अवगते पच्छा धारण ईय विसेसो इमो णवरं ॥१॥ बहु बहुविह पोराणं दुद्धर णितयं तहव असंदिद्धं। पोराण पुरा व जितं दुद्धर णयभंगगुविलत्ता ॥२॥ एत्तो उ पओगमती चउविहा होति आणुपुव्वीए। आय पुरिसं च खेत्तं वत्थुंपि पउंजए वातं ॥ ३ ॥ जाणति पयोग भिसजो वाही जे-णाऽऽउरस्स छिज्जति उ। इय वाओ व कहा वा णियसत्ती णाउ कातव्वा ॥ ४ ॥ पुरिसं उवासगाई अहवावी जाणगाइयं पुरिसं। पुव्वं तु गमेऊणं ताहे वाओ पउत्तव्वो ॥ ५ ॥ खेत्तं

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [१] दीप अनुक्रम [१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

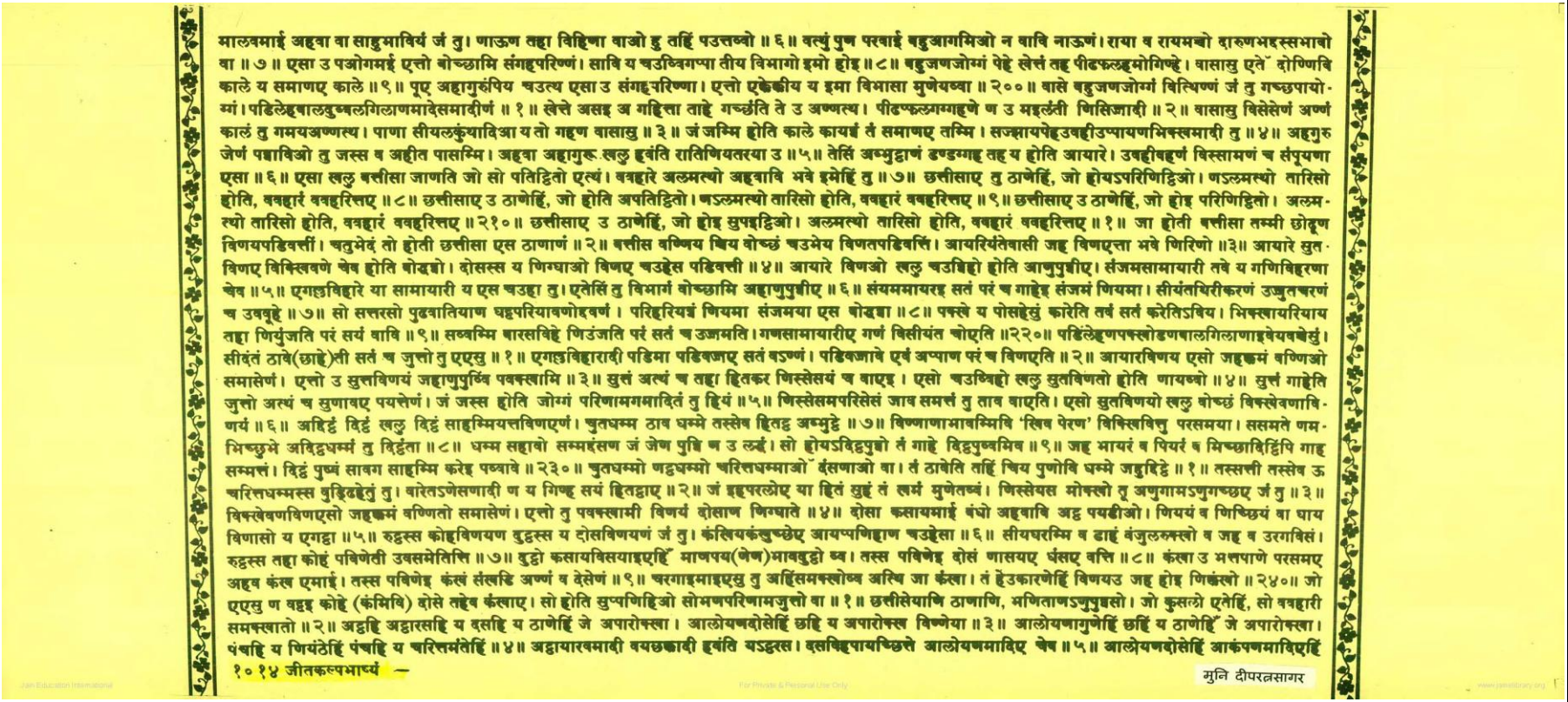

मालवमाई अहवा वा साहुभाविय जं तु। णाऊण तहा विहिणा वाओ हु तहिं पउत्तव्वो ॥ ६॥ वत्थुं पुण परवाई बहुआगमिओ न वावि नाऊणं। राया व रायमच्चो दारुणभद्दस्सभावो वा ॥ ७॥ एसा उ पओगमई एत्तो वोच्छामि संगहपरिण्णं। सावि य चउव्विगप्पा तीय विभागो इमो होइ॥ ८॥ बहुजणजोग्गं पेहे खेत्तं तह पीढफलहमोगिण्हे। वासासु एते दोण्णिवि काले य समाणए काले ॥ ९॥ पूए अहागुरुंपिय चउत्थ एसा उ संगहपरिण्णा। एत्तो एक्केक्कीय य इमा विभासा मुणेयव्वा ॥ २००॥ वासे बहुजणजोग्गं वित्थिण्णं जं तु गच्छपायोग्गं। पडिलेहुवालवुड्ढलगिलाणमादेसमादीणं ॥ १॥ खेत्ते असइ अ गहित्ता ताहे गच्छंति ते उ अण्णत्थ। पीढफलगग्गहणे ण उ मइलंती णिसिज्जादी ॥ २॥ वासासु विसेसेणं अण्णं कालं तु गमयअण्णत्थ। पाणा सीयलकुंथादिआ य तो गहण वासासु ॥ ३॥ जं जम्मि होति काले कायइं तं समाणए तम्मि। सज्झायपेहउवहीउप्पायणभिक्खमादी तु ॥ ४॥ अहगुरु जेणं पव्वाविओ तु जस्स व अहीत पासम्मि। अहवा अहागुरू खलु हवंति रातिणियतरया उ ॥ ५॥ तेसिं अब्भुट्ठाणं डण्डग्गह तह य होति आयारे। उवहीवहणं विस्सामणं च संपूयणा एसा ॥ ६॥ एसा खलु वत्तीसा जाणति जो सो पतिट्ठितो एत्थं। ववहारे अलमत्थो अहवावि भवे इमेहिं तु ॥ ७॥ छत्तीसाए तु ठाणेहिं, जो होयऽपरिणिट्ठिओ। णऽलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥ ८॥ छत्तीसाए उ ठाणेहिं, जो होति अपतिट्ठितो। णऽलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥ ९॥ छत्तीसाए उ ठाणेहिं, जो होइ परिणिट्ठितो। अलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥ २१०॥ छत्तीसाए उ ठाणेहिं, जो होइ सुपइट्ठिओ। अलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥ १॥ जा होती वत्तीसा तम्मी छोदूण विणयपडिवत्तीं। चतुभेदं तो होती छत्तीसा एस ठाणाणं ॥ २॥ वत्तीस वण्णिय विय वोच्छं चउभेय विणतपडिवत्तिं। आयरियंतेवासी जह विणएत्ता भवे णिरिणो ॥ ३॥ आयारे सुतविणए विक्खिवणे चेव होति बोद्धव्वो। दोसस्स य णिग्घाओ विणए चउहेस पडिवत्ती ॥ ४॥ आयारे विणओ खलु चउविहो होति आणुपुव्वीए। संजमसामायारी तवे य गणिविहरणा चेव ॥ ५॥ एगल्लविहारे या सामायारी य एस चउहा तु। एतेसिं तु विभागं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥ ६॥ संयममायरइ सतं परं च गाहेइ संजमं णियमा। सीयंतथिरीकरणं उज्जुतचरणं च उववूहे ॥ ७॥ सो सत्तरसो पुढवातियाण घट्टपरियावणोद्दवणं। परिहरियइं णियमा संजमया एस बोद्धव्वा ॥ ८॥ पक्खे य पोसहेसुं कारेति तवं सतं करेतिउविय। भिक्खायरियाय तहा णियुंजति परं सयं वावि ॥ ९॥ सव्वम्मि वारसविहे णिउंजति परं सतं च उज्जमति। गणसामायारीए गणं विसीयंत चोएति ॥ २२०॥ पडिलेहणपक्खोडणवालगिलाणाइवेयवच्चेसुं। सीदंतं ठावे(छाहे)ती सतं च जुत्तो तु एएसु ॥ १॥ एगल्लविहारादी पडिमा पडिवज्जए सतं वऽण्णं। पडिवज्जावे एवं अप्पाण परं च विणएति ॥ २॥ आयारविणय एसो जहक्कमं वण्णिओ समासेणं। एत्तो उ सुत्तविणयं जहाणुपुव्विं पवक्खामि ॥ ३॥ सुत्तं अत्थं च तहा हितकर णिस्सेसयं च वाएइ। एसो चउव्विहो खलु सुतविणतो होति णायव्वो ॥ ४॥ सुत्तं गाहेति जुत्तो अत्थं च सुणावए पयत्तेणं। जं जस्स होति जोग्गं परिणामगमादितं तु हियं ॥ ५॥ णिस्सेसमपरिसेसं जाव समत्तं तु ताव वाएति। एसो सुतविणयो खलु वोच्छं विक्खेवणाविणयं ॥ ६॥ अदिट्ठं दिट्ठं खलु दिट्ठं साहम्मियत्तविणएणं। चुतधम्म ठाव धम्मे तस्सेव हितट्ठ अब्भुट्ठे ॥ ७॥ विण्णाणाभावम्मिवि ‘खिव पेरण’ विक्खिवित्तु परसमया। ससमते णमिच्छुमे अदिट्ठधम्मं तु दिट्ठंता ॥ ८॥ धम्म सद्दावो सम्मद्दंसण जं जेण पुढि ण उ लद्धं। सो होयऽदिट्ठपुवो तं गाहे दिट्ठपुव्वमिव ॥ ९॥ जह भायरं व पियरं व मिच्छादिट्ठिंपि गाह सम्मत्तं। दिट्ठं पुव्वं सावग साहम्मि करेइ पव्वावे ॥ २३०॥ चुतधम्मो णट्ठधम्मो चरित्तधम्माओ दंसणाओ वा। तं ठावेति तहिं चिय पुणोवि धम्मे जहुद्दिट्ठे ॥ १॥ तस्सत्ती तस्सेव ऊ चरित्तधम्मस्स वुड्ढिहेतुं तु। वारेतऽणेसणादी ण य गिण्ह सयं हितट्ठाए ॥ २॥ जं इहपरलोए या हितं सुहं तं खमं मुणेतव्वं। णिस्सेयस मोक्खो तु अणुगामऽणुगच्छए जं तु ॥ ३॥ विक्खेवणविणएसो जहक्कमं वण्णितो समासेणं। एत्तो तु पवक्खामी विणयं दोसाण णिग्घाते ॥ ४॥ दोसा कसायमाई वंधो अहवावि अट्ठ पयडीओ। णियय व णिच्छियं वा घाय विणासो य एगट्ठा ॥ ५॥ रुट्ठस्स कोहविणयण वुट्ठस्स य दोसविणयणं जं तु। कंखियकंखुच्छेए आयप्पणिहाण चउहेसा ॥ ६॥ सीयघरम्मि व ढाहं वंजुलरुक्खो व जह व उरगविसं। रुट्ठस्स तहा कोहं पविणेती उवसमेतित्ति ॥ ७॥ दुट्ठो कसायविसयाइएहिं माणपय(णेण)भावदुट्ठो व्व। तस्स पविणेइ दोसं णासयए धंसए वत्ति ॥ ८॥ कंखा उ मलपाणे परसमए अहव कंख एमाई। तस्स पविणेइ कंखं संत्थडि अण्णं व देसेणं ॥ ९॥ चरगाइमाइएसु तु अहिंसमक्खोव्व अत्थि जा कंखा। तं हेउकारणेहिं विणयउ जह होइ णिकंखो ॥ २४०॥ जो एएसु ण वट्टइ कोहे (कंमिवि) दोसे ताहेव कंखाए। सो होति सुप्पणिहिओ सोमणपरिणामजुत्तो वा ॥ १॥ छत्तीसेयाणि ठाणाणि, भणिताणऽणुपुव्वसो। जो कुसलो एतेहिं, सो ववहारी समक्खातो ॥ २॥ अट्ठहि अट्ठारसहि य दसहि य ठाणेहिं जे अपारोक्खा। आलोयणदोसेहिं छहि य अपारोक्ख विण्णेया ॥ ३॥ आलोयणागुणेहिं छहिं य ठाणेहिं जे अपारोक्खा। पंचहि य णियंठेहिं पंचहि य चरित्तमंतेहिं ॥ ४॥ अट्ठायारवमादी वयछक्कादी हवंति यऽट्ठरस। दसविहपायच्छित्ते आलोयणमादिए चेव ॥ ५॥ आलोयणदोसेहिं आकंपणमादिएहिं

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१]

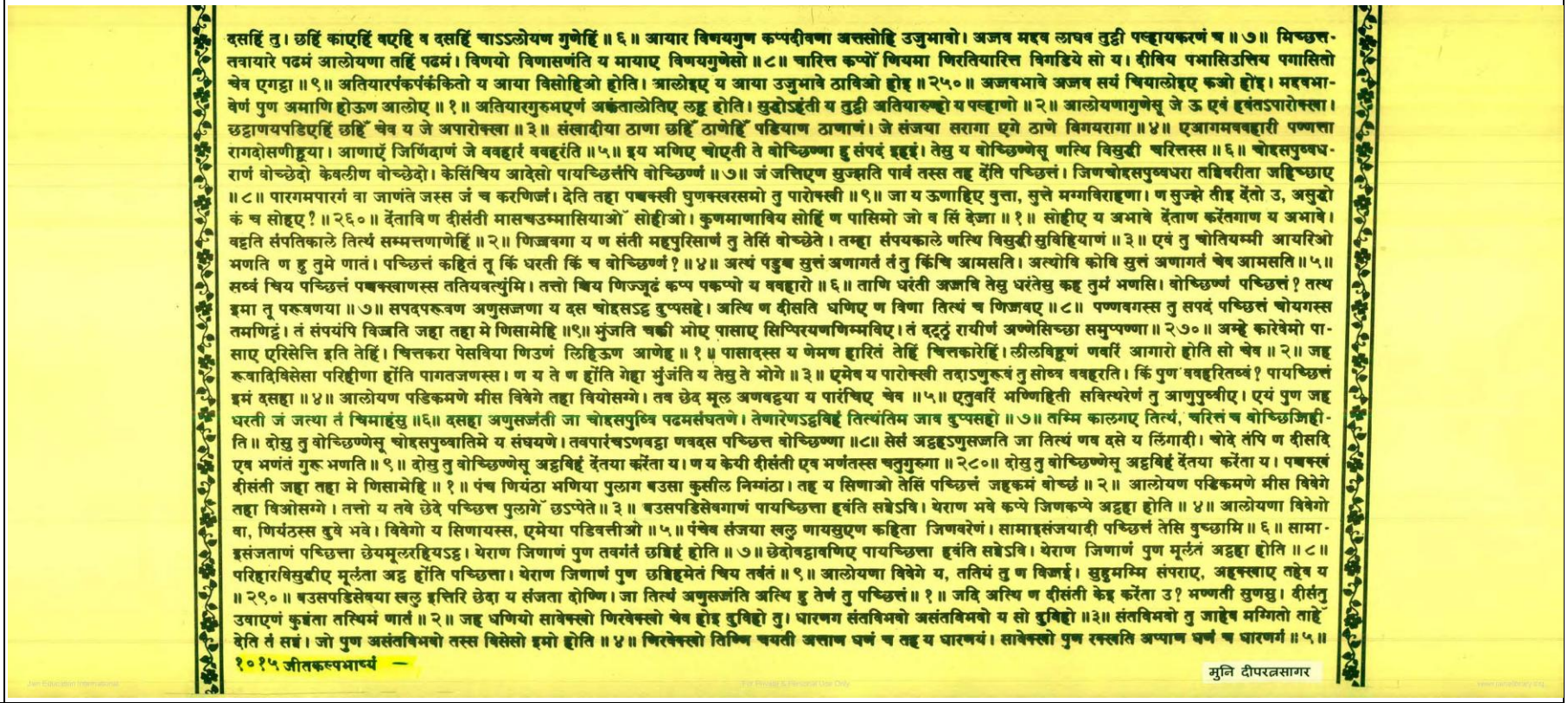

दसहिं तु। छहिं काएहिं वएहि व दसहिं चाऽऽलोयण गुणेहिं ॥ ६ ॥ आयार विणयगुण कप्पदीवणा अत्तसोहि उजुभावो। अजव मद्दव लाघव तुट्टी पच्चायकरणं च ॥ ७ ॥ मिच्छत्त-
तवायारे पढमं आलोयणा तहिं पढमं। विणयो विणासणंति य मायाए विणयगुणेसो ॥ ८ ॥ चारित्त कप्पों णियमा णिरतियारित्त विगडिये सो य। दीविय पभासिउत्तिय पगासितो
चेव एगट्ठा ॥ ९ ॥ अतियारपंकपंकंकितो य आया विसोहिजो होति। आलोइए य आया उजुभावे ठाविजो होइ ॥ २५० ॥ अजवभावे अजव सयं चियालोइए कजो होइ। मद्दवभा-
वेणं पुण अमाणि होऊण आलोए ॥ १ ॥ अतियारगुरुमएणं अकंतालोतिए लहू होति। सुदोऽहंती य तुट्टी अतियारुच्चो य पच्चाणो ॥ २ ॥ आलोयणागुणेसू जे ऊ एवं हवंतऽपारोक्खा।
छट्ठाणयपडिएहिं छहिं चेव य जे अपारोक्खा ॥ ३ ॥ संखादीया ठाणा छहिं ठाणेहिं पडियाण ठाणाणं। जे संजया सरागा एगे ठाणे विगयरागा ॥ ४ ॥ एआगमववहारी पण्णत्ता
रागदोसणीहूया। आणाएं जिणिंदाणं जे ववहारं ववहरंति ॥ ५ ॥ इय भणिए चोएती ते वोच्छिण्णा हु संपदं इहइं। तेसु य वोच्छिण्णेसू णत्थि विसुद्धी चरित्तस्स ॥ ६ ॥ चोद्दसपुव्वध-
राणं वोच्छेदो केवलीण वोच्छेदो। केसिंचिय आदेसो पायच्छित्तंपि वोच्छिण्णं ॥ ७ ॥ जं जत्तिएण सुज्झति पावं तस्स तह देंति पच्छित्तं। जिणचोद्दसपुव्वधरा तद्विवरीता जहिच्छाए
॥ ८ ॥ पारगमपारगं वा जाणंते जस्स जं च करणिजं। देति तहा पच्चक्खी घुणक्खरसमो तु पारोक्खी ॥ ९ ॥ जा य ऊणाहिए वुत्ता, सुत्ते मग्गविराहणा। ण सुज्झे तीइ देंतो उ, असुद्धो
कं च सोहए? ॥ २६० ॥ देंताविण दीसंती मासचउम्मासियाओ सोहीओ। कुणमाणाविय सोहिं ण पासिमो जो व सिं देजा ॥ १ ॥ सोहीए य अभावे देंताण करेंतगाण य अभावे।
वट्टति संपतिकाले तित्थं सम्मत्तणाणेहिं ॥ २ ॥ णिज्जवगा य ण संती महपुरिसाणं तु तेसिं वोच्छेते। तम्हा संपयकाले णत्थि विसुद्धी सुविहियाणं ॥ ३ ॥ एवं तु चोतियम्मी आयरिओ
भणति ण हु तुमे णातं। पच्छित्तं कहितं तू किं धरती किं च वोच्छिण्णं? ॥ ४ ॥ अत्थं पडुच्च सुत्तं अणागतं तं तु किंचि आमसति। अत्थोवि कोवि सुत्तं अणागतं चेव आमसति ॥ ५ ॥
सव्वं चिय पच्छित्तं पच्चक्खाणस्स ततियवत्थुंमि। तत्तो चिय णिज्जूढं कप्प पकप्पो य ववहारो ॥ ६ ॥ ताणि धरंती अज्जावि तेसु धरंतेसु कह तुमं भणसि। वोच्छिण्णं पच्छित्तं? तत्थ
इमा तू परूवणया ॥ ७ ॥ सपदपरूवण अणुसज्जणा य दस चोद्दसऽट्ठ दुप्पसहे। अत्थि ण दीसति घणिए ण विणा तित्थं च णिज्जवए ॥ ८ ॥ पण्णवगस्स तु सपदं पच्छित्तं चोयगस्स
तमणिट्ठं। तं संपयंपि विज्जति जहा तहा मे णिसामेहि ॥ ९ ॥ भुंजति चक्की भोए पासाए सिप्पिरयणणिम्मविए। तं दट्ठुं रायीणं अण्णेसिच्छा समुप्पण्णा ॥ २७० ॥ अम्हे कारेवेमो पा-
साए एरिसेत्ति इति तेहिं। चित्तकरा पेसविया णिउणं लिहिऊण आणेह ॥ १ ॥ पासादस्स य णेमण हारितं तेहिं चित्तकारेहिं। लीलविहूणं णवरिं आगारो होति सो चेव ॥ २ ॥ जह
रूवादिविसेसा परिहीणा होंति पागतजणस्स। ण य ते ण होंति गेहा भुंजंति य तेसु ते भोगे ॥ ३ ॥ एमेव य पारोक्खी तदाऽणुरूवं तु सोच्च ववहरति। किं पुण ववहरितव्वं? पायच्छित्तं
इमं दसहा ॥ ४ ॥ आलोयण पडिकमणे मीस विवेगे तहा वियोसग्गे। तव छेद मूल अणवट्ठया य पारंचिए चेव ॥ ५ ॥ एतुवरिं भण्णिहिती सवित्थरेणं तु आणुपुव्वीए। एयं पुण जह
धरती जं जत्था तं चिमाहंसु ॥ ६ ॥ दसहा अणुसज्जंती जा चोद्दसपुव्वि पढमसंघतणे। तेणारेणऽट्ठविहं तित्थंतिम जाव दुप्पसहो ॥ ७ ॥ तम्मि कालगए तित्थं, चरित्तं च वोच्छिजिही-
ति ॥ दोसु तु वोच्छिण्णेसू चोद्दसपुव्वातिमे य संघयणे। तवपारंचऽणवट्ठा णवदस पच्छित्त वोच्छिण्णा ॥ ८ ॥ सेसं अट्ठहऽणुसज्जति जा तित्थं णव दसे य लिंगादी। चोदे तंपि ण दीसदि
एव भणंतं गुरू भणति ॥ ९ ॥ दोसु तु वोच्छिण्णेसू अट्ठविहं देंतया करेंता य। ण य केयी दीसंती एव भणंतस्स चतुगुरुगा ॥ २८० ॥ दोसु तु वोच्छिण्णेसू अट्ठविहं देंतया करेंता य। पच्चक्खं
दीसंती जहा तहा मे णिसामेहि ॥ १ ॥ पंच णियंठा भणिया पुलाग बउसा कुसील निग्गंठा। तह य सिणाओ तेसिं पच्छित्तं जहकमं वोच्छं ॥ २ ॥ आलोयण पडिकमणे मीस विवेगे
तहा विओसग्गे। तत्तो य तवे छेदे पच्छित्त पुलागे छऽप्पेते ॥ ३ ॥ बउसपडिसेवगाणं पायच्छित्ता हवंति सव्वेऽवि। थेराण भवे कप्पे जिणकप्पे अट्ठहा होति ॥ ४ ॥ आलोयणा विवेगो
वा, णियंठस्स दुवे भवे। विवेगो य सिणायस्स, एमेया पडिवत्तीओ ॥ ५ ॥ पंचेव संजया खलु णायसुएण कहिता जिणवरेणं। सामाइसंजयादी पच्छित्तं तेसि वुच्छामि ॥ ६ ॥ सामा-
इसंजताणं पच्छित्ता छेयमूलरहियऽट्ठ। थेराण जिणाणं पुण तवगंतं छव्विहं होति ॥ ७ ॥ छेदोवट्ठावणिए पायच्छित्ता हवंति सव्वेऽवि। थेराण जिणाणं पुण मूलंतं अट्ठहा होति ॥ ८ ॥
परिहारविसुद्धीए मूलंता अट्ठ होंति पच्छित्ता। थेराण जिणाणं पुण छव्विहमेतं चिय तवंतं ॥ ९ ॥ आलोयणा विवेगे य, ततियं तु ण विज्जई। सुहुमम्मि संपराए, अहक्खाए तहेव य
॥ २९० ॥ बउसपडिसेवया खलु इत्तिरि छेदा य संजता दोण्णि। जा तित्थं अणुसज्जंति अत्थि हु तेणं तु पच्छित्तं ॥ १ ॥ जदि अत्थि ण दीसंती केइ करेंता उ? भण्णती सुणसु। दीसंतु
उवाएणं कुद्धंता तत्थिमं णातं ॥ २ ॥ जह धणियो सावेक्खो णिरवेक्खो चेव होइ दुविहो तु। धारणग संतविभवो असंतविभवो य सो दुविहो ॥ ३ ॥ संतविभवो तु जाहेव मग्गितो ताहें
देति तं सव्वं। जो पुण असंतविभवो तस्स विसेसो इमो होति ॥ ४ ॥ णिरवेक्खो तिण्णि चयती अत्ताण धणं च तह य धारणयं। सावेक्खो पुण रक्खति अप्पाण धणं च धारणगं ॥ ५ ॥

मुनि दीपरत्नसागर

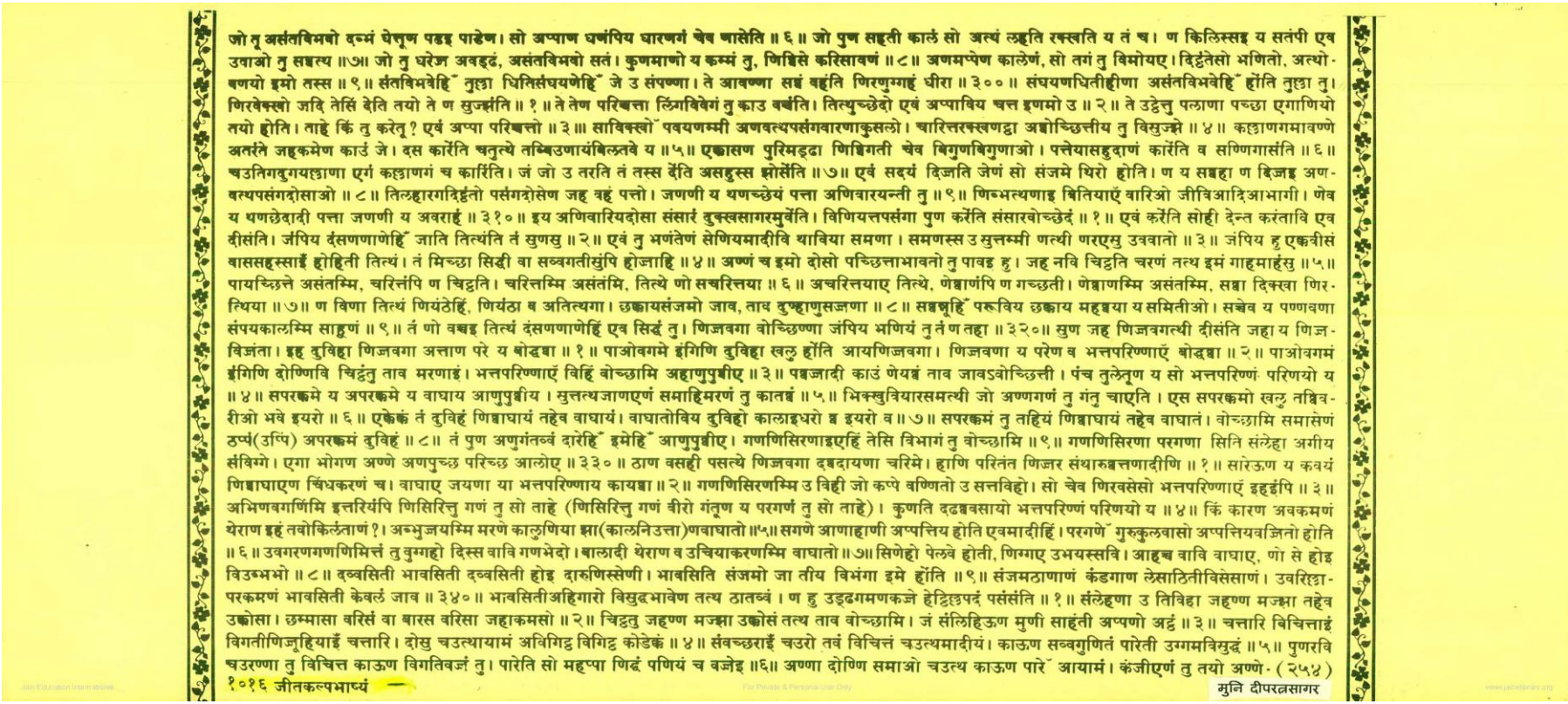

जो तू असंतविभवो दव्वं घेत्तूण पडइ पाडेण। सो अप्पाण धणंपिय धारणगं चेव णासेति ॥ ६ ॥ जो पुण सहती कालं सो अत्थं लहति रक्खति य तं च। ण किलिस्सइ य सतंपी एव उवाओ तु सद्दत्थ ॥७॥ जो तु घरेज अवड्ढं, असंतविभवो सतं। कुणमाणो य कम्मं तु, णिद्दिसे करिसावणं ॥ ८ ॥ अणमप्पेण कालेणं, सो तगं तु विमोयए। दिट्ठंतेसो भणितो, अत्थो-वणयो इमो तस्स ॥ ९ ॥ संतविभवेहिं तुल्ला धितिसंघयणेहिं जे उ संपण्णा। ते आवण्णा सद्धं वहंति णिरणुग्गहं धीरा ॥ ३०० ॥ संघयणधितीहीणा असंतविभवेहिं होंति तुल्ला तु। णिरवेक्खो जदि णेसिं देति तयो ते ण सुज्झंति ॥ १ ॥ ते तेण परिचत्ता लिंगविवेगं तु काउ वच्चंति। तित्थुच्छेदो एवं अप्पाविय चत्त इणमो उ ॥ २ ॥ ते उट्ठेत्तु पलाणा पच्छा एगाणियो तयो होंति। ताहे किं तु करेतू? एवं अप्पा परिचत्तो ॥ ३ ॥ साविक्खो पवयणम्मी अणवत्थपसंगवारणाकुसलो। चारित्तरक्खणट्ठा अद्धोच्छित्तीय तु विसुज्झे ॥ ४ ॥ कल्लाणगमावण्णे अतरंते जहक्कमेण काउं जे। दस कारेंति चतुत्थे तब्बिउणायंबिलंतवे य ॥ ५ ॥ एक्कासण पुरिमड्ढा णिद्विगती चेव बिगुणबिगुणाओ। पत्तेयासहुदाणं कारेंति व सण्णिगासंति ॥ ६ ॥ चउत्थिगदुगयल्लाणा एगं कल्लाणगं च कारिंति। जं जो उ तरति तं तस्स देंति असहुस्स झोसेंति ॥ ७ ॥ एवं सदयं दिज्जति जेणं सो संजमे थिरो होति। ण य सद्दहा ण दिज्जइ अण-वत्थपसंगदोसाओ ॥ ८ ॥ तिल्हारगदिट्ठंतो पसंगदोसेण जह वहं पत्तो। जणणी य थणच्छेयं पत्ता अणिवारयन्ती तु ॥ ९ ॥ णिब्भत्थणाइ बितियाएँ वारिओ जीविआदिआभागी। णेव य थणछेदादी पत्ता जणणी य अवराहं ॥ ३१० ॥ इय अणिवारियदोसा संसारं दुक्खसागरमुवेंति। विणियत्तपसंगा पुण करेंति संसारवोच्छेदं ॥ १ ॥ एवं करेंति सोही देन्त करंतावि एव दीसंति। जंपिय दंसणणाणेहिं जाति तित्थंति तं सुणसु ॥ २ ॥ एवं तु भणंतेणं सेणियमादीवि थाविया समणा। समणस्स उ सुत्तम्मी णत्थी णरएसु उववातो ॥ ३ ॥ जंपिय हु एक्कवीसं वाससहस्साइं होहिती तित्थं। तं मिच्छा सिद्धी वा सव्वगतीसुंपि होज्जाहि ॥ ४ ॥ अण्णं च इमो दोसो पच्छित्ताभावतो तु पावइ हु। जह नवि चिट्ठति चरणं तत्थ इमं गाहमाहंसु ॥ ५ ॥ पायच्छित्ते असंतम्मि, चरित्तंपि ण चिट्ठति। चरित्तम्मि असंतंमि, तित्थे णो सचरित्तया ॥ ६ ॥ अचरित्तयाए तित्थे, णेव्वाणंपि ण गच्छती। णेव्वाणम्मि असंतम्मि, सव्वा दिक्खा णिरत्थिया ॥ ७ ॥ ण विणा तित्थं णियंठेहिं, णियंठा व अतित्थगा। छक्कायसंजमो जाव, ताव दुप्पहाणुसज्जणा ॥ ८ ॥ सद्धजूहिं परूविय छक्काय महव्वया य समितीओ। सच्चेव य पण्णवणा संपयकालम्मि साहुणं ॥ ९ ॥ तं णो वच्चइ तित्थं दंसणणाणेहिं एव सिद्धं तु। णिज्जवगा वोच्छिण्णा जंपिय भणियं तु तं ण तहा ॥ ३२० ॥ सुण जह णिज्जवगत्थी दीसंति जहा य णिज्ज-विजंता। इह दुविहा णिज्जवगा अत्ताण परे य बोद्धवा ॥ १ ॥ पाओवगमे इंगिणि दुविहा खलु होंति आयणिज्जवगा। णिज्जवणा य परेण व भत्तपरिण्णाएँ बोद्धवा ॥ २ ॥ पाओवगमं इंगिणि दोण्णिवि चिट्ठंतु ताव मरणाइं। भत्तपरिण्णाएँ विहिं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥ ३ ॥ पव्वज्जादी काउं णेयव्वं ताव जावऽवोच्छित्ती। पंच तुलेतूण य सो भत्तपरिण्णं परिणयो य ॥ ४ ॥ सपरक्कमे य अपरक्कमे य वाघाय आणुपुव्वीय। सुत्तत्थजाणएणं समाहिमरणं तु कातव्वं ॥ ५ ॥ भिक्खुवियारसमत्थी जो अण्णगणं तु गंतु चाएति। एस सपरक्कमो खलु तव्विव-रीओ भवे इयरो ॥ ६ ॥ एक्केक्कं तं दुविहं णिव्वाघायं तहेव वाघायं। वाघातोविय दुविहो कालाइधरो व इयरो व ॥ ७ ॥ सपरक्कमं तु तहियं णिव्वाघायं तहेव वाघातं। वोच्छामि समासेणं ठप्प(उप्पि) अपरक्कमं दुविहं ॥ ८ ॥ तं पुण अणुगंतव्वं दारेहिं इमेहिं आणुपुव्वीए। गणणिसिरणाइएहिं तेसि विभागं तु वोच्छामि ॥ ९ ॥ गणणिसिरणा परगणा सिति संलेहा अगीय संविग्गे। एगा भोगण अण्णे अणपुच्छ परिच्छ आलोए ॥ ३३० ॥ ठाण वसही पसत्थे णिज्जवगा दव्वदायणा चरिमे। हाणि परितंत णिज्जर संथारुव्वत्तणादीणि ॥ १ ॥ सारेऊण य कवयं णिव्वाघाएण चिंधकरणं च। वाघाए जयणा या भत्तपरिण्णाय कायव्वा ॥ २ ॥ गणणिसिरणम्मि उ विही जो कप्पे वण्णितो उ सत्तविहो। सो चेव णिरवसेसो भत्तपरिण्णाएँ इहइंपि ॥ ३ ॥ अभिणवगणिंमि इत्तरियंपि णिसिरित्तु गणं तु सो ताहे (णिसिरित्तु गणं वीरो गंतूण य परगणं तु सो ताहे)। कुणति दढव्ववसायो भत्तपरिण्णं परिणयो य ॥ ४ ॥ किं कारण अवकमणं थेराण इहं तवोकिलंताणं?। अब्भुज्जयम्मि मरणे कालुणिया झा(कालनिउत्ता)णवाघातो ॥ ५ ॥ सगणे आणाहाणी अप्पत्तिय होति एवमादीहिं। परगणे गुरुकुलवासो अप्पत्तियवज्जितो होति ॥ ६ ॥ उवगरणगणणिमित्तं तु वुग्गहो दिस्स वावि गणभेदो। बालादी थेराण व उचियाकरणम्मि वाघातो ॥ ७ ॥ सिणेहो पेल्लवे होती, णिग्गए उभयस्सवि। आहच्च वावि वाघाए, णो से होइ विउब्भभो ॥ ८ ॥ दव्वसिती भावसिती दव्वसिती होइ दारुणिस्सेणी। भावसिति संजमो जा तीय विभंगा इमे होंति ॥ ९ ॥ संजमठाणाणं कंडगाण लेसाठितीविसेसाणं। उवरिल्ला-परकमणं भावसिती केवलं जाव ॥ ३४० ॥ भावसितीअहिगारो विसुद्धभावेण तत्थ ठातव्वं। ण हु उड्ढगमणकज्जे हेट्ठिल्लपदं पसंसंति ॥ १ ॥ संलेहणा उ तिविहा जहण्ण मज्झा तहेव उक्कोसा। छम्मासा वरिसं वा बारस वरिसा जहाकमसो ॥ २ ॥ चिट्ठतु जहण्ण मज्झा उक्कोसं तत्थ ताव वोच्छामि। जं संलिहिऊण मुणी साहंती अप्पणो अट्ठं ॥ ३ ॥ चत्तारि विचित्ताइं विगतीणिज्जूहियाइं चत्तारि। दोसु चउत्थायामं अविगिट्ठ विगिट्ठ कोडेकं ॥ ४ ॥ संवच्छराइं चउरो तवं विचित्तं चउत्थमादीयं। काऊण सव्वगुणितं पारेती उग्गमविसुद्धं ॥ ५ ॥ पुणरवि चउरण्णा तु विचित्त काऊण विगतिवज्जं तु। पारेति सो महप्पा णिद्धं पणियं च वज्जेइ ॥ ६ ॥ अण्णा दोण्णि समाओ चउत्थ काऊण पारें आयामं। कंजीएणं तु तयो अण्णे- (२५४)

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [१] दीप अनुक्रम [१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] "जीतकल्प" मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

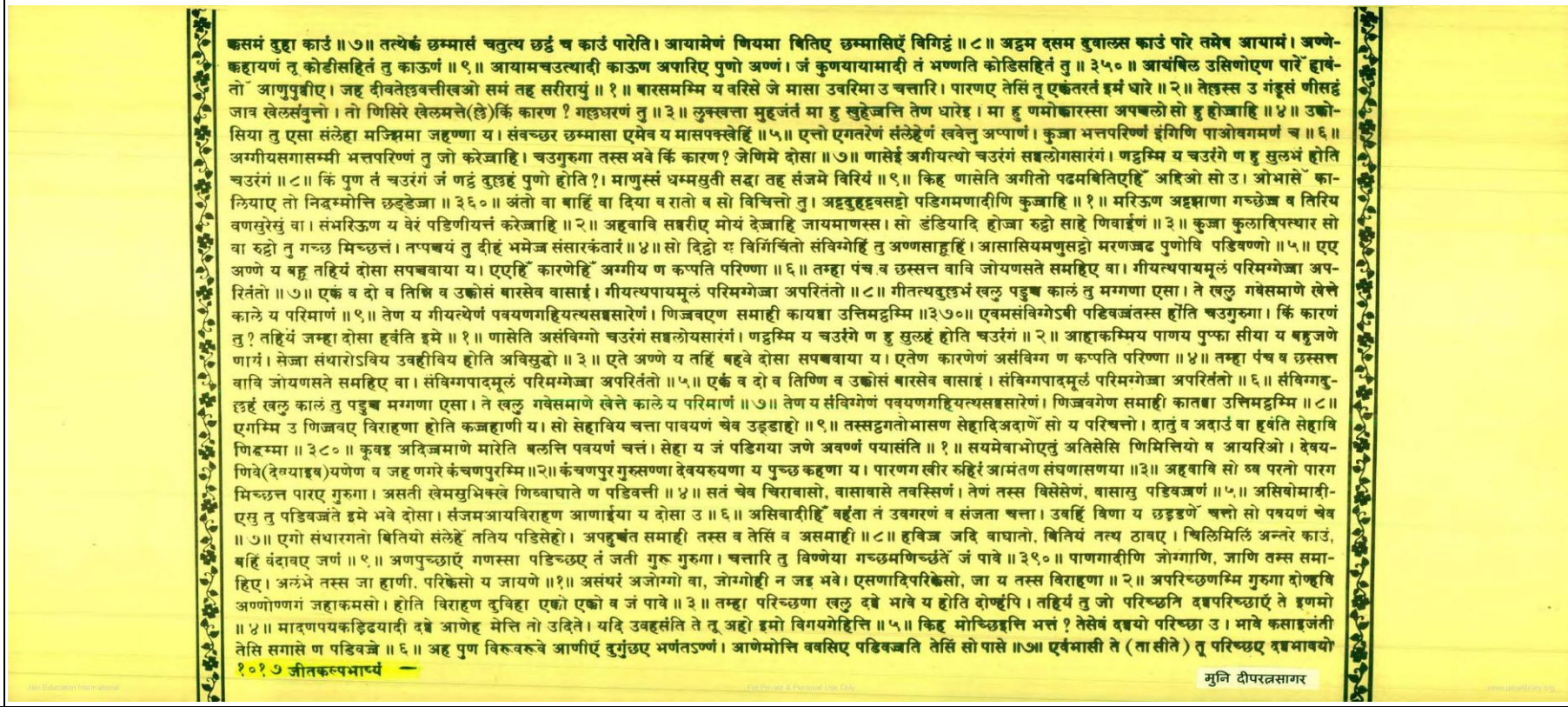

कसमं दुहा काउं ॥७॥ तत्थेक्कं छम्मासं चतुत्थ छट्ठं च काउं पारेति। आयामेणं णियमा वितिए छम्मासिएँ विगिट्ठं ॥८॥ अट्ठम दसम दुवालस काउं पारे तमेव आयामं। अण्णे-
कहायणं तू कोडीसहितं तु काऊणं ॥९॥ आयामचउत्थादी काऊण अपारिए पुणो अण्णं। जं कुणयायामादी तं भण्णति कोडिसहितं तु ॥ ३५० ॥ आयंबिल उसिणोएण पारें हावं-
तो आणुपुव्वीए। जह दीवतेल्लवत्तीखओ समं तह सरीरायुं ॥ १ ॥ बारसमम्मि य वरिसे जे मासा उवरिमा उ चत्तारि। पारणए तेसिं तू एक्कंतरतं इमं धारे ॥२॥ तेल्लस्स उ गंडूसं णीसट्ठं
जाव खेलसंवुत्तो। तो णिसिरे खेलमत्ते(ल्ले)किं कारण ? गल्लधरणं तु ॥३॥ लुक्खत्ता मुहजंतं मा हु खुहेज्जत्ति तेण धारेइ। मा हु णमोक्कारस्सा अपच्चलो सो हु होज्जाहि ॥४॥ उक्को-
सिया तु एसा संलेहा मज्झिमा जहण्णा य। संवच्छर छम्मासा एमेव य मासपक्खेहिं ॥५॥ एत्तो एगतरेणं संलेहेणं खवेत्तु अप्पाणं। कुज्जा भत्तपरिण्णं इंगिणि पाओवगमणं च ॥६॥
अग्गीयसगासम्मी भत्तपरिण्णं तु जो करेज्जाहि। चउगुरुगा तस्स भवे किं कारण? जेणिमे दोसा ॥७॥ णासेई अगीयत्थो चउरंगं सट्ठलोगसारंगं। णट्ठम्मि य चउरंगे ण हु सुलभं होति
चउरंगं ॥८॥ किं पुण तं चउरंगं जं णट्ठं दुल्लहं पुणो होति ?। माणुस्सं धम्मसुती सद्धा तह संजमे विरियं ॥९॥ किह णासेति अगीतो पढमबितिएहिँ अहिओ सो उ। ओभासें का-
लियाए तो निद्धम्मोत्ति छड्डेज्जा ॥ ३६० ॥ अंतो वा बाहिं वा दिया व रातो व सो विचित्तो तु। अट्टदुहट्टवसट्टो पडिगमणादीणि कुज्जाहि ॥ १ ॥ मरिऊण अट्टझाणा गच्छेज्ज व तिरिय
वणसुरेसुं वा। संभरिऊण य वेरं पडिणीयत्तं करेज्जाहि ॥२॥ अहवावि सव्वरीए मोयं देज्जाहि जायमाणस्स। सो डंडियादि होज्जा रुट्ठो साहे णिवाईणं ॥३॥ कुज्जा कुलाविपत्थार सो
वा रुट्ठो तु गच्छ मिच्छत्तं। तप्पच्चयं तु दीहं भमेज्ज संसारकंतारं ॥४॥ सो दिट्ठो य विगिंचितो संविग्गेहिं तु अण्णसाहूहिं। आसासियमणुसट्ठो मरणज्जढ पुणोवि पडिवण्णो ॥५॥ एए
अण्णे य बहू तहियं दोसा सपच्चवाया य। एएहिँ कारणेहिँ अग्गीय ण कप्पति परिण्णा ॥६॥ तम्हा पंच व छस्सत्त वावि जोयणसते समहिए वा। गीयत्थपायमूलं परिमग्गेज्जा अप-
रितंतो ॥७॥ एक्कं व दो व तिन्नि व उक्कोसं बारसेव वासाइं। गीयत्थपायमूलं परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥८॥ गीतत्थदुल्लभं खलु पडुच्च कालं तु मग्गणा एसा। ते खलु गवेसमाणे खेत्ते
काले य परिमाणं ॥९॥ तेण य गीयत्थेणं पवयणगहियत्थसट्ठसारेणं। णिज्जवएण समाही कायव्वा उत्तिमट्ठम्मि ॥३७०॥ एवमसंविग्गेऽवी पडिवज्जंतस्स होंति चउगुरुगा। किं कारणं
तु? तहियं जम्हा दोसा हवंति इमे ॥ १ ॥ णासेति असंविग्गो चउरंगं सट्ठलोयसारंगं। णट्ठम्मि य चउरंगे ण हु सुलहं होति चउरंगं ॥ २ ॥ आहाकम्मिय पाणय पुप्फा सीया य बहुजणे
णायं। सेज्जा संथारोऽविय उवहीविय होति अविसुद्धो ॥ ३ ॥ एते अण्णे य तहिं बहवे दोसा सपच्चवाया य। एतेण कारणेणं असंविग्ग ण कप्पति परिण्णा ॥ ४ ॥ तम्हा पंच व छस्सत्त
वावि जोयणसते समहिए वा। संविग्गपादमूलं परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥५॥ एक्कं व दो व तिण्णि व उक्कोसं बारसेव वासाइं। संविग्गपादमूलं परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥ ६ ॥ संविग्गदु-
ल्लहं खलु कालं तु पडुच्च मग्गणा एसा। ते खलु गवेसमाणे खेत्ते काले य परिमाणं ॥७॥ तेण य संविग्गेणं पवयणगहियत्थसट्ठसारेणं। णिज्जवगेण समाही कातव्वा उत्तिमट्ठम्मि ॥८॥
एगम्मि उ णिज्जवए विराहणा होति कज्जहाणी य। सो सेहाविय चत्ता पावयणं चेव उड्डाहो ॥९॥ तस्सट्ठगतोभासण सेहादिअदाणें सो य परिचत्तो। दातुं व अदाउं वा हवंति सेहावि
णिद्धम्मा ॥ ३८० ॥ कूवइ अदिज्जमाणे मारेति बलत्ति पवयणं चत्तं। सेहा य जं पडिगया जणे अवण्णं पयासंति ॥ १ ॥ सयमेवाभोएतुं अतिसेसि णिमित्तियो व आयरिओ। देवय-
णिवे(देव्वयाइव)यणेण व जह णगरे कंचणपुरम्मि ॥२॥ कंचणपुर गुरुसण्णा देवयरुयणा य पुच्छ कहणा य। पारणग खीर रुहिरं आमंतण संघणासणया ॥३॥ अहवावि सो व परतो पारग
मिच्छत्त पारए गुरुगा। असती खेमसुभिक्खे णिव्वाघाते ण पडिवत्ती ॥ ४ ॥ सतं चेव चिरावासो, वासावासे तवस्सिणं। तेणं तस्स विसेसेणं, वासासु पडिवज्जणं ॥५॥ असिवोमादी-
एसु तु पडिवज्जंते इमे भवे दोसा। संजमआयविराहण आणाईया य दोसा उ ॥ ६ ॥ असिवादीहिँ वहंता तं उवगरणं व संजता चत्ता। उवहिं विणा य छड्डणें चत्तो सो पवयणं चेव
॥ ७ ॥ एगो संथारगतो बितियो संलेहें ततिय पडिसेहो। अपहुच्चंत समाही तस्स व तेसिं व असमाही ॥८॥ हविज्ज जदि वाघातो, बितियं तत्थ ठावए। चिलिमिलिं अन्तरे काउं,
बहिं वंदावए जणं ॥९॥ अणपुच्छाएँ गणस्सा पडिच्छए तं जती गुरू गुरुगा। चत्तारि तु विण्णेया गच्छमणिच्छंतें जं पावे ॥ ३९० ॥ पाणगादीणि जोग्गाणि, जाणि तस्स समा-
हिए। अलंभे तस्स जा हाणी, परिक्केसो य जायणे ॥१॥ असंथरं अजोग्गो वा, जोग्गोही न जइ भवे। एसणादिपरिक्केसो, जा य तस्स विराहणा ॥ २ ॥ अपरिच्छणम्मि गुरुगा दोण्हवि
अण्णोण्णगं जहाकमसो। होति विराहण दुविहा एक्को एक्को व जं पावे ॥ ३ ॥ तम्हा परिच्छणा खलु दव्वे भावे य होति दोण्हंपि। तहियं तु जो परिच्छति दव्वपरिच्छाएँ ते इणमो
॥ ४ ॥ मादणपयकड्ढियादी दव्वे आणेह मेत्ति तो उदिते। यदि उवहसंति ते तू अहो इमो विगयगेहित्ति ॥ ५ ॥ किह मोच्छिहत्ति भत्तं ? तेसेवं दव्वयो परिच्छा उ। भावे कसाइजंती
तेसि सगासे ण पडिवज्जे ॥ ६ ॥ अह पुण विरूवरूवे आणीएँ दुगुंछए भणंतऽण्णं। आणेमोत्ति ववसिए पडिवज्जति तेसिं सो पासे ॥७॥ एवंमासी ते (ता सीते) तू परिच्छए दव्वभावयो

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१]

विहिणा। तेवि य तं तु परिच्छे दुविहपरिच्छाएँ इणमो तु ॥८॥ कलमोयणो य पयसा अण्णं व सभावअणुमतं तस्स। उवणीयं जो कुंछइ दव्वपरिच्छाएँ सो सुद्धो ॥९॥ भावे पुण पुच्छिज्जइ किं संलेहो कतोत्ति ण कयोत्ति?। इति उदिए सो ताहे हंतूणं अंगुलिं दाए ॥४००॥ पेच्छह ता एयं किं कतो ण कतोत्ति एवमुदितम्मि। भणति गुरू ताण तयो एयं चिय ते ण संलीढं ॥१॥ ण हु ते दव्वसंलेहं, पुच्छे पासामि ते किसं! कीस ते अंगुली भग्गा?, भावं संलिहमाउर! ॥२॥ भावो चिय एत्थं तू संलिहियव्वो सदा पयत्तेणं। तेणायट्ठं साहे दिट्ठंतोऽमचकोंकणए ॥३॥ रण्णा कोंकणगामच्चा, दोऽवि णिद्विसया कता। दोदिए कंजियं छोदुं, कोंकणो तक्खणा गतो ॥४॥ भणिओ वइल्लए काए, अमच्चो जा भरेइ तु। ताव पुण्णं तु पंचाहं, णेलिए णिहणं गतो ॥५॥ एवं जेहिं तु संलीढो, भावो जे ते तू साहुगा। असंलीढे ण साहेन्ति, अमच्चो इव ते खलु ॥६॥ इंदियाणि कसाए य, गारवे य किसे कुण। ण चेयं ते पसंसामो, किसं साहु! सरीरगं ॥७॥ एवं परिच्छिऊणं जदि सुद्धो ताहे तं पडिच्छंति। ताहे य अत्तसोहिं करेति विहिणा इमेणं तु ॥८॥ आयरियपादमूलं गंतूणं सति परक्कमे ताहे। सवेण अत्तसोही परसक्खीयं तु कायव्वा ॥९॥ जह सुकुसलोवि वेज्जो अण्णस्स कहेति अप्पणो वाही। वेज्जस्स य सो सोतुं तो परिकम्मं समारभइ ॥४१०॥ जाणंतेणवि एवं पायच्छित्तविहिमप्पणा णिउणं। तहवि य पागडतरयं आलोएतव्वयं होति ॥१॥ छत्तीसगुणसमण्णागएण तेणवि अवस्स कायव्वा। आलोयण निंदण गरहणा य ण पुणो य वितियंति ॥२॥ किं कारणमालोयण एव पयत्तेण होति दायव्वा?। भण्णइ सुणसू इणमो आलोयंतस्स जे उ गुणा ॥३॥ आयार विणयगुण कप्प दीवणा अत्तसोहि उजुभावो। अज्जव मद्दव लाघव तुट्टी पल्हायजणणं च ॥४॥ पावज्जादी आलोयणा तु तिण्हं चतुक्किय विसोही। जह अप्पणो तह परे कायव्वा उत्तिमट्ठम्मि ॥५॥ तिण्हंती णाणादी दव्वादि चउक्कगं मुणेयव्वं। जो अतियारो तेसू कयो आलोएति तं सव्वं ॥६॥ णाणे वितहपरूवण जं वा आसेवितं तदट्ठाए। चेयणमचेयणं वा दव्वे खेत्तादिसु इमं तु ॥७॥ णाणणिमित्तं अद्धाणमेति ओमे व अच्छति तदट्ठा। णाणं च आगमेस्सइ कुणती परिकम्मणं देहे ॥८॥ पडिसेवति विगईओ मेहादव्वं व एसती पियति। वायंतस्स व किरिया कया तु पणगादिहाणीए ॥९॥ एमेव दंसणम्मिवि सहहणा णवरि तत्थ णाणत्तं। एसणइत्थीदोसे वयंति चरणे सिया सेवा ॥४२०॥ अहवा तिग सालंबण दव्वमादी चउक्कमाहच्च(इं)। आसेवियं णिरालंबओ व आलोयए तं तु ॥१॥ पडिसेवणातियारा जदि वीसरिया कहिंचि होज्जाहि। तेसु कह वट्टियव्वं सल्लुद्धरणम्मि समणेणं?॥२॥ जे मे जाणंति जिणा अवराहे जेसु जेसु ठाणेसु। तेऽहं आलोएउं उवट्ठितो सव्वभावेणं ॥३॥ एवं आलोएंतो विसुद्धभावपरिणामसंजुत्तो। आराहओ तहवि सो गारवपलिउंचणारहितो ॥४॥ ठाणं पुण केरिसयं होति पसत्थं तु तस्स जं जोग्गं?। भण्णति जत्थ ण होज्जा झाणस्स उ तस्स वाघाओ ॥५॥ गंधव्वनट्टजड्डऽस्सचक्कजंतऽग्गिकम्मपुरुसे य। णन्तिक्करयगदेवडडाम्बिल पाडहिय रायपहे ॥६॥ चोरगकोट्टगकल्लालकरकए पुप्फदगसमीवे य। आरामअहे वियडे णागघरे पुव्वभणिए य ॥७॥ पढमबितिएसु कप्पे उद्देसेसू उवस्सया जे तु। विहिसुत्ते य णिसिद्धा तद्दिवरीए भवे सिज्जा ॥८॥ उज्जाणे तरु(णरुक्ख)मूले सुण्णघर अणिसट्ठ हरिय मग्गे य। एवंविहे ण ठायइ होज्ज समाहीय वाघाओ ॥९॥ इंदियपडिसंचारो मणसंखोभकरणं जहिं णत्थि। चाउस्सालाइं दुवे अणुण्णवेऊण ठायंति ॥४३०॥ पाणगजोग्गाहारे ठवेंति से तत्थ जत्थ ण उवेन्ति। अप्परिणया व सो वा अप्पच्चय गेहिरक्खट्ठा ॥१॥ भुत्तभोगी पुरा जो तु, गीयत्थोविय भाविनो। संतेसाऽऽहारधम्मेसु, सोवि खिप्पं तु खुब्भती ॥२॥ पडिलोम अणुलोमा वा, विसया जत्थ दूरतो। ठाविन्ता तत्थ से णिच्चं, कहणा जाणगस्सवि ॥३॥ पासत्थोसण्णकुसीलठाणपरिवज्जिया उ णिज्जवगा। पियधम्माऽवज्जभीरू गुणसंपण्णा अपरितंता ॥४॥ जो जारिसतो कालो भरहेरवएसु होति वासेसु। ते तारिसया तइया अडयालीसा तु णिज्जवगा ॥५॥ उद्वत्त दार संघार कहण वादी य अग्गदारम्मि। भत्ते पाण वियारे कहण दिसा जे समत्था य ॥६॥ बालसमुं एतेसु, एक्केके चउरो भवे। दिसि चउसु पुव्व एक्केके, अडयालीसं भवंति तु ॥७॥ एवं खलु उक्कोसा परिहायंती हवंति दो चेव। दो गीय किं णिमित्तं? असुण्णकरणं जहण्णेणं ॥८॥ तस्स य चरिमाहारो इट्ठो दायव्वो तण्हुछेयट्ठा। सइस्स चरिमकाले अतीव तण्हा समुज्जलइ ॥९॥ णव विगइ सत्त ओदण अट्ठारस वंजणुचपाणं च। अणुपुव्विविहारीणं समाहिकामाण उवहरइ ॥४४०॥ कालसभावाणुमतो पुव्वज्जुसिओ सुओवइट्ठो वा। झोसिज्जति सोवि तहा जयणाय चउव्विहाहारे ॥१॥ तण्हाछेदम्मि कते ण तस्स तहितं पवत्तए भावो। अहव कहिंचुप्पज्जति तहवि जियत्तेइ एवं तु ॥२॥ किं च तं णोवभुत्तं मे, परिणामासुयिं सुयिं?। दिट्ठसारो सुई झाइ, चोयणेसेव सीययो ॥३॥ चरिमं च एस भुंजति सद्दाजणणं च होति उभएवि। संजयगिहियाणं वा तो देंति इमीय तु विहीय ॥४॥ ति(तु)विहं तु वोसिरिहीइ सो ता उक्कोसगाइं दव्वाइं। मग्गेत्ता जयणाए चरिमाहारं पदंसेंति ॥५॥ पासित्तु ताणि कोयी तीरप्पत्तस्स किं ममेतेहिं?। वेरग्गमणुप्पत्तो संवेगपरायणो होति ॥६॥ सइं भोच्चा कोई धिद्धीकारं इमेण किं मे?त्ति। वेरग्गमणुप्पत्तो संवेगपरायणो होति ॥७॥ सइं भोच्चा कोई मणुण्णरसपरिणतो हवेजाहि। तं चेवऽणुबंधंतो देसं सइं च रोहीया ॥८॥ विगयीकयाणुबंधे आहारड-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [१] दीप अनुक्रम [१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

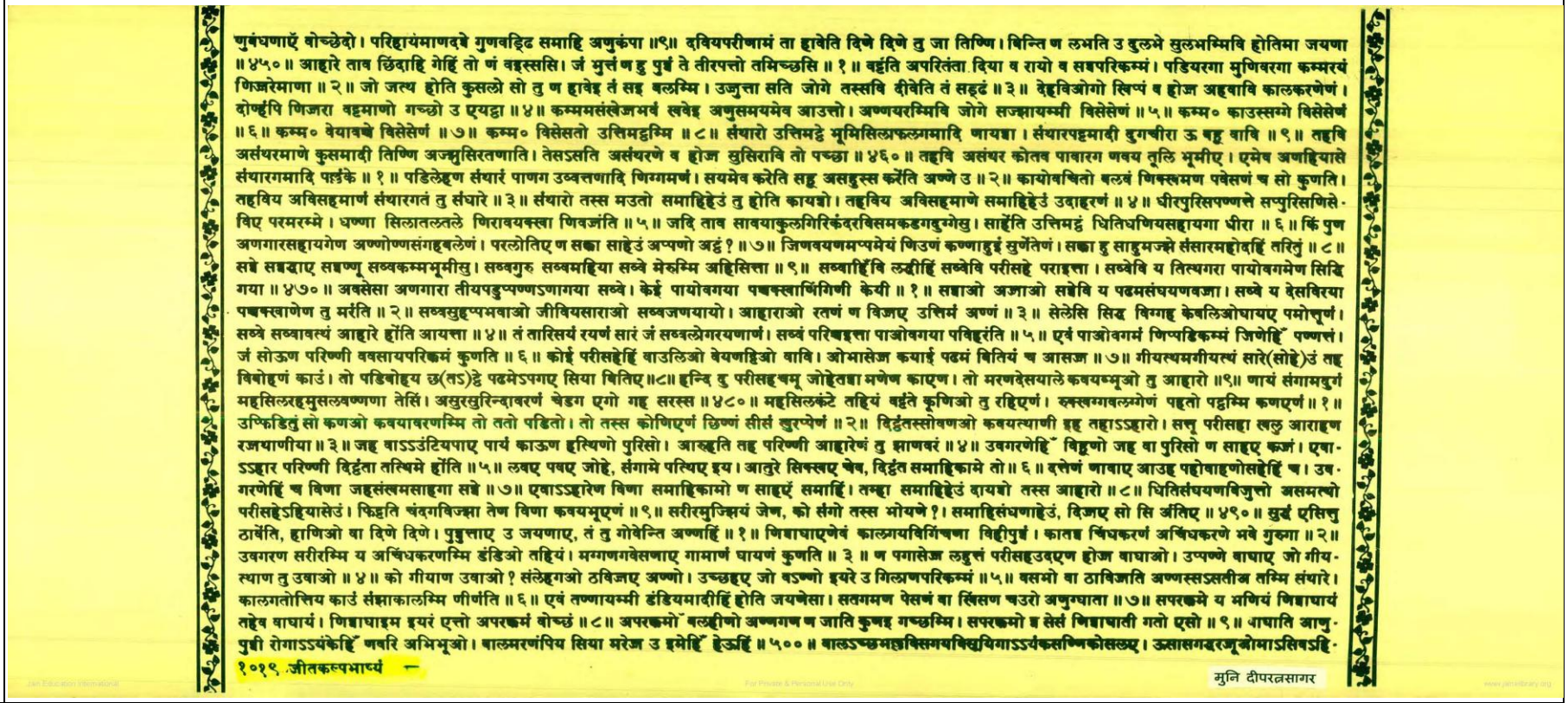

णुबंधणाएँ वोच्छेदो। परिहायंमाणदवे गुणवड्ढिढ समाहि अणुकंपा ॥९॥ दवियपरीणामं ता हावेति दिणे दिणे तु जा तिण्णि। विन्ति ण लभति उ दुलभे सुलभम्मिवि होतिमा जयणा ॥४५०॥ आहारे ताव छिंदाहि गेहिं तो णं वड्ढस्सति। जं मुत्तं ण हु पुढं ते तीरपत्तो तमिच्छसि ॥१॥ वड्ढंति अपरितंता दिया व रायो व सड्ढपरिकम्मं। पडियरगा मुणिवरगा कम्मरयं णिज्जरेमाणा ॥२॥ जो जत्थ होति कुसलो सो तु ण हावेइ तं सइ बलम्मि। उज्जुत्ता सति जोगे तस्सवि दीवेति तं सड्ढं ॥३॥ देहविओगो खिप्पं व होज्ज अहवावि कालकरणेणं। दोण्हंपि णिजरा वड्ढमाणो गच्छो उ एयट्ठा ॥४॥ कम्ममसंखेज्जभवं खवेइ अणुसमयमेव आउत्तो। अण्णयरम्मिवि जोगे सज्झायम्मी विसेसेणं ॥५॥ कम्म० काउस्सग्गे विसेसेणं ॥६॥ कम्म० वेयावच्चे विसेसेणं ॥७॥ कम्म० विसेसतो उत्तिमट्ठम्मि ॥८॥ संथारो उत्तिमट्ठे भूमिसिलाफलगमादि णायव्वा। संथारपट्टमादी दुगचीरा ऊ वहू वावि ॥९॥ तहवि असंथरमाणे कुसमादी तिण्णि अज्झुसिरतणाति। तेसऽसति असंथरणे व होज्ज सुसिरावि तो पच्छा ॥४६०॥ तहवि असंथर कोतव पावारग णवय तूलि भूमीए। एमेव अणहियासे संथारगमादि पाडंके ॥१॥ पडिलेहण संथारं पाणग उव्वत्तणादि णिग्गमणं। सयमेव करेति सहू असहुस्स करेंति अण्णे उ ॥२॥ कायोवचितो बलवं णिक्खमण पवेसणं च सो कुणति। तहविय अविसहमाणं संथारगतं तु संघारे ॥३॥ संथारो तस्स मउतो समाहिहेउं तु होति कायव्वो। तहविय अविसहमाणे समाहिहेउं उदाहरणं ॥४॥ धीरपुरिसपण्णत्ते सप्पुरिसणिसेविए परमरम्मे। धण्णा सिलातलतले णिरावयक्खा णिवज्जंति ॥५॥ जदि ताव सावयाकुलगिरिकंदरविसमकडगदुग्गेसु। साहेंति उत्तिमट्ठं धितिधणियसहायगा धीरा ॥६॥ किं पुण अणगारसहायगेण अण्णोण्णसंगहबलेणं। परलोतिए ण सक्का साहेउं अप्पणो अट्ठं ? ॥७॥ जिणवयणमप्पमेयं णिउणं कण्णाहुई सुणेतेणं। सक्का हु साहुमज्झे संसारमहोदहिं तरितुं ॥८॥ सड्ढे सड्ढाए सड्ढण्णू सव्वकम्मभूमीसु। सव्वगुरु सव्वमहिया सव्वे मेरुम्मि अहिसित्ता ॥९॥ सव्वाहिंवि लद्धीहिं सव्वेवि परीसहे पराइत्ता। सव्वेवि य तित्थगरा पायोवगमेण सिद्धि गया ॥४७०॥ अवसेसा अणगारा तीयपडुप्पण्णऽणागया सव्वे। केई पायोवगया पच्चक्खाणिंगिणी केयी ॥१॥ सड्ढाओ अज्जाओ सड्ढेवि य पढमसंघयणवज्जा। सव्वे य देसविरया पच्चक्खाणेण तु मरंति ॥२॥ सव्वसुहुप्पभवाओ जीवियसाराओ सव्वजणयायो। आहाराओ रतणं ण विज्जए उत्तिमं अण्णं ॥३॥ सेलेसि सिद्ध विग्गह केवलिओघायए पमोत्तूणं। सव्वे सव्वावत्थं आहारे होंति आयत्ता ॥४॥ तं तारिसयं रयणं सारं जं सव्वलोगरयणाणं। सव्वं परिचइत्ता पाओवगया पविहरंति ॥५॥ एवं पाओवगमं णिप्पडिकम्मं जिणेहिं पण्णत्तं। जं सोऊण परिण्णी ववसायपरिक्कमं कुणति ॥६॥ कोई परीसहेहिं वाउलिओ वेयणट्टिओ वावि। ओभासेज्ज कयाई पढमं वितियं च आसज्ज ॥७॥ गीयत्थमगीयत्थं सारे(सोहे)उं तह विओहणं काउं। तो पडिचोहय छ(तऽ)ट्ठे पढमेऽपगए सिया वितिए॥८॥ हन्दि दु परीसहचमू जोहेतव्वा मणेण काएण। तो मरणदेसयाले कवयम्भूओ तु आहारो ॥९॥ णायं संगामदुगं महसिलरहमुसलण्णा तेसिं। असुरसुरिन्दावरणं चेडग एगो गह सरस्स ॥४८०॥ महसिलकंटे तहियं वट्टते कूणिओ तु रहिएणं। रुक्खग्गबलग्गेणं पहतो पट्टम्मि कणएणं ॥१॥ उप्फिडितुं सो कणओ कवयावरणम्मि तो ततो पडितो। तो तस्स कोणिएणं छिण्णं सीसं खुरप्पेणं ॥२॥ दिट्ठंतस्सोवणओ कवयत्थाणी इह तहाऽऽहारो। सत्तू परीसहा खलु आराहण रजयाणीया ॥३॥ जह वाऽऽउंटियपाए पायं काऊण हत्थिणो पुरिसो। आरुहति तह परिण्णी आहारेयं तु झाणवरं ॥४॥ उवगरणेहिं विहूणो जह वा पुरिसो ण साहए कज्जं। एवाऽऽहार परिण्णी विट्ठंता तत्थिमे होंति ॥५॥ लवए पवए जोहे, संगामे पत्थिए इय। आतुरे सिक्खए चेव, विट्ठंत समाहिकामे तो ॥६॥ दसेणं णावाए आउह पहोवाहणोसहेहिं च। उवगरणेहिं च विणा जहसंखमसाहगा सव्वे ॥७॥ एवाऽऽहारेण विणा समाहिकामो ण साहएं समाहिं। तम्हा समाहिहेउं दायव्वो तस्स आहारो ॥८॥ धितिसंघयणविजुत्तो असमत्थो परीसहेऽहियासेउं। फिट्टति चंदगविज्झा तेण विणा कवयभूएणं ॥९॥ सरीरमुज्झियं जेण, को संगो तस्स भोयणे ?। समाहिसंधणाहेउं, दिज्जए सो सि अंतिए ॥४९०॥ सुद्धं एसित्तु ठावेंति, हाणिओ वा दिणे दिणे। पुव्वुत्ताए उ जयणाए, तं तु गोवेन्ति अण्णहिं ॥१॥ णिवाघाएणेवं कालगयविगिंचणा विहीपुव्वं। कातव्व चिंधकरणं अचिंधकरणे भवे गुरुगा ॥२॥ उवगरण सरीरम्मि य अचिंधकरणम्मि डंडिओ तहियं। मग्गणगवेसणाए गामाणं घायणं कुणति ॥३॥ ण पगासेज्ज लहुसं परीसहउदएण होज्ज वाघाओ। उप्पण्णे वाघाए जो गीयत्थाण तु उवाओ ॥४॥ को गीयाण उवाओ ? संलेहगओ ठविज्जए अण्णो। उच्छहए जो वऽण्णो इयरे उ गिलाणपरिकम्मं ॥५॥ वसभो वा ठाविज्जति अण्णस्सऽसतीअ तम्मि संथारे। कालगतोत्तिय काउं संझाकालम्मि णीणंति ॥६॥ एवं तण्णायम्मी डंडियमादीहिं होति जयणेसा। सतगमण पेसणं वा खिंसण चउरो अणुग्घाता ॥७॥ सपरक्कमे य भणियं णिव्वाघायं तहेव वाघायं। णिव्वाघाइम इयरं एत्तो अपरक्कमं वोच्छं ॥८॥ अपरक्कमो बलहीणो अण्णगण ण जाति कुणइ गच्छम्मि। सपरक्कमो इ सेसं णिव्वाघाती गतो एसो ॥९॥ वाघाति आणुपुव्वी रोगाऽऽयंकेहिं णवरि अभिभूओ। बालमरणंपिय सिया मरेज्ज उ इमेहिं हेऊहिं ॥५००॥ बालऽच्छमहवसिगयविसूयिगाऽऽयंकसण्णिकोसलए। ऊसासगद्दरजूओमाऽसिवऽहि-

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [१] दीप अनुक्रम [१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

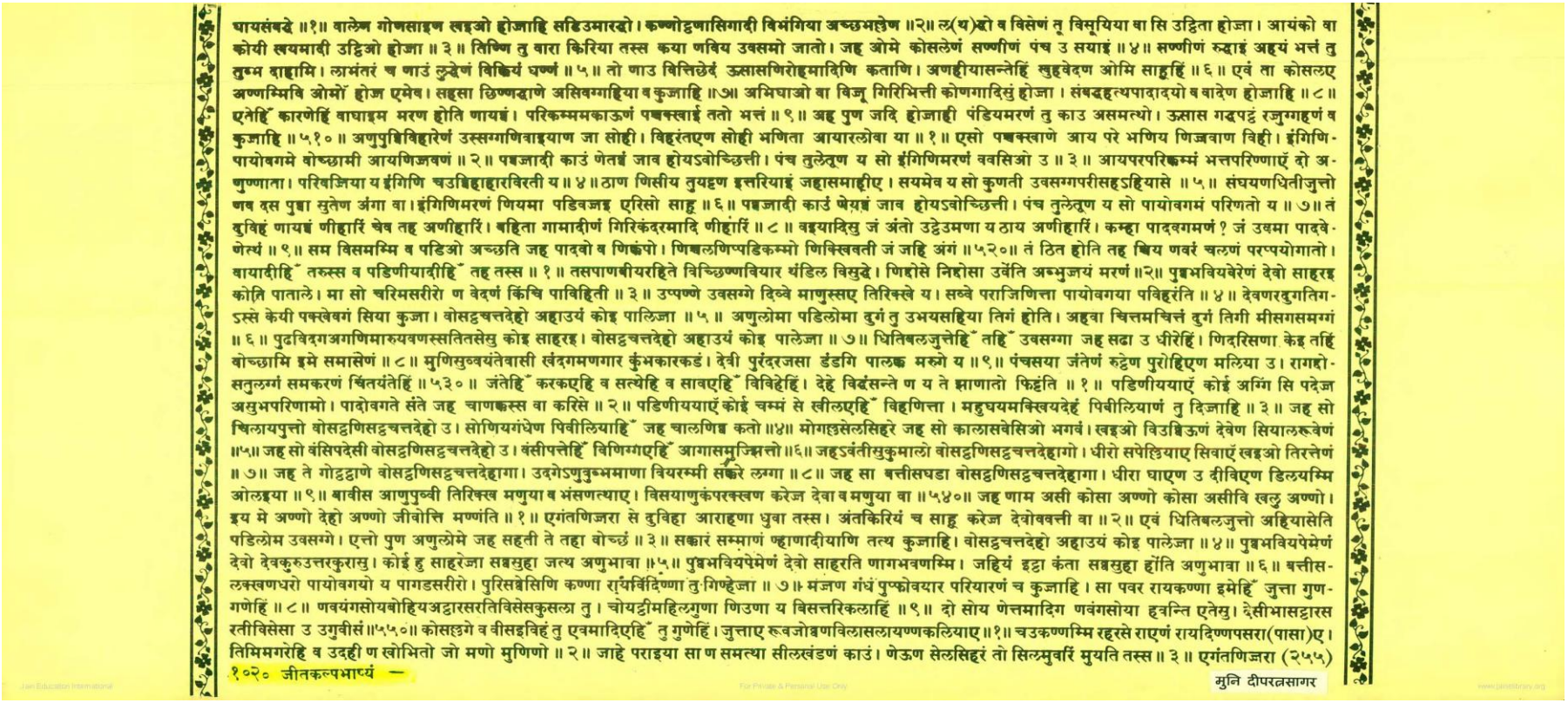

घायसंबद्धे ॥१॥ वालेण गोणसाइण खइओ होज्जाहि सहिउमारद्धो। कण्णोट्ठणासिगादी विभंगिया अच्छभल्लेण ॥२॥ ल(य)द्धो व विसेणं तू विसूयिया वा सि उट्ठिता होज्जा। आयंको वा कोयी खयमादी उट्ठिओ होज्जा ॥ ३ ॥ तिण्णि तु वारा किरिया तस्स कया णविय उवसमो जातो। जह ओमे कोसलेणं सण्णीणं पंच उ सयाइं ॥४॥ सण्णीणं रुद्धाइं अहयं भत्तं तु तुम्ह दाहामि। लाभंतरं च णाउं लुद्धेणं विक्कियं घण्णं ॥५॥ तो णाउ वित्तिछेदं ऊसासणिरोहमादिणि कताणि। अणहीयासन्तेहिं खुहवेदण ओमि साहूहिं ॥६॥ एवं ता कोसलए अण्णम्मिवि ओमो होज एमेव। सहसा छिण्णद्धाणे असिवग्गहिया व कुज्जाहि ॥७॥ अभिघाओ वा विज्जू गिरिभित्ती कोणगादिसुं होज्जा। संबद्धहत्थपादादयो व वादेण होज्जाहि ॥८॥ एतेहिं कारणेहिं वाघाइम मरण होति णायइं। परिकम्ममकाऊणं पच्चक्खाई ततो भत्तं ॥९॥ अह पुण जदि होज्जाही पंडियमरणं तु काउ असमत्थो। ऊसास गद्धपट्ठं रज्जुग्गहणं व कुज्जाहि ॥५१०॥ अणुपुव्विविहारेणं उस्सग्गणिवाइयाण जा सोही। विहरंतएण सोही भणिता आयारलोवा या ॥१॥ एसो पच्चक्खाणे आय परे भणिय णिज्जवाण विही। इंगिणि-पायोवगमे वोच्छामी आयणिज्जवणं ॥२॥ पव्वज्जादी काउं णेतव्वं जाव होयऽवोच्छित्ती। पंच तुलेतूण य सो इंगिणिमरणं ववसिओ उ ॥३॥ आयपरपरिकम्मं भत्तपरिण्णाएं दो अ-णुण्णाता। परिवज्जिया य इंगिणि चउव्विहाहारविरती य ॥४॥ठाण णिसीय तुयट्टण इत्तरियाइं जहासमाहीए। सयमेव य सो कुणती उवसग्गपरीसहऽहियासे ॥५॥ संघयणधितीजुत्तो णव दस पुव्वा सुतेण अंगा वा। इंगिणिमरणं णियमा पडिवज्जइ एरिसो साहू ॥६॥ पव्वज्जादी काउं णेयव्वं जाव होयऽवोच्छित्ती। पंच तुलेतूण य सो पायोवगमं परिणतो य ॥ ७॥ तं दुविहं णायइं णीहारिं चेव तह अणीहारिं। बहिता गामादीणं गिरिकंदरमादि णीहारिं ॥ ८ ॥ वइयादिसु जं अंतो उट्ठेउमणा य ठाय अणीहारिं। कम्हा पादवगमणं? जं उवमा पादवे-णेत्थं ॥ ९॥ सम विसमम्मि व पडिओ अच्छति जह पादवो व णिक्कंपो। णिच्चलणिप्पडिकम्मो णिक्खिवती जं जहि अंगं ॥५२०॥ तं ठित होति तह चिय णवरं चलणं परप्पयोगातो। वायादीहिं तरुस्स व पडिणीयादीहिं तह तस्स ॥ १ ॥ तसपाणबीयरहिते विच्छिण्णवियार थंडिल विसुद्धे। णिद्दोसे निद्दोसा उवेंति अब्भुज्जयं मरणं ॥२॥ पुव्वभवियवेरेणं देवो साहरइ कोति पातालं। मा सो चरिमसरीरो ण वेदणं किंचि पाविहिती ॥ ३ ॥ उप्पण्णे उवसग्गे दिव्वे माणुस्सए तिरिक्खे य। सव्वे पराजिणित्ता पायोवगया पविहरंति ॥ ४ ॥ देवणरतुगतिग-ऽस्से केयी पक्खेवगं सिया कुज्जा। वोसट्ठचत्तदेहो अहाउयं कोइ पालिज्जा ॥ ५ ॥ अणुलोमा पडिलोमा दुगं तु उभयसहिया तिगं होति। अहवा चित्तमचित्तं दुगं तिगी मीसगसमग्गं ॥ ६ ॥ पुढविदगअगणिमारुयवणस्सतितसेसु कोइ साहरइ। वोसट्ठचत्तदेहो अहाउयं कोइ पालेज्जा ॥ ७ ॥ धितिबलजुत्तेहिं तहिं उवसग्गा जह सढा उ धीरेहिं। णिदरिसणा केइ तहिं वोच्छामि इमे समासेणं ॥ ८ ॥ मुणिसुव्वयंतेवासी खंदगमणगार कुंभकारकडं। देवी पुरंदरजसा डंडगि पालक्क मरुगे य ॥ ९ ॥ पंचसया जंतेणं रुट्ठेण पुरोहिएण मलिया उ। रागद्दो-सतुलग्गं समकरणं चिंतयंतेहिं ॥५३०॥ जंतेहिं करकएहि व सत्थेहि व सावएहिं विविहेहिं। देहे विद्दंसन्ते ण य ते झाणातो फिट्टंति ॥ १ ॥ पडिणीययाएं कोई अग्गिं सि पदेज्ज असुभपरिणामो। पादोवगते संते जह चाणक्कस्स वा करिसे ॥ २ ॥ पडिणीययाएं कोई चम्मं से खीलएहिं विहणित्ता। मधुघयमक्खियदेहं पिवीलियाणं तु दिज्जाहि ॥ ३ ॥ जह सो चिलायपुत्तो वोसट्ठणिसट्ठचत्तदेहो उ। सोणियगंधेण पिवीलियाहिं जह चालणिव्व कतो ॥४॥ मोगल्लसेलसिहरे जह सो कालासवेसिओ भगवं। खइओ विउव्विऊणं देवेण सियालरूवेणं ॥५॥ जह सो वंसिपदेसी वोसट्ठणिसट्ठचत्तदेहो उ। वंसीपत्तेहिं विणिग्गएहिं आगासमुज्झित्तो ॥६॥ जहऽवंतीसुकुमालो वोसट्ठणिसट्ठचत्तदेहागो। धीरो सपेडियाए सिवाएं खइओ तिरत्तेणं ॥ ७ ॥ जह ते गोट्ठट्ठाणे वोसट्ठणिसट्ठचत्तदेहागा। उदगेऽणुवुब्भमाणा वियरम्मी सक्करे लग्गा ॥ ८ ॥ जह सा बत्तीसघडा वोसट्ठणिसट्ठचत्तदेहागा। धीरा घाएण उ दीविएण डिलयम्मि ओलइया ॥ ९ ॥ बावीस आणुपुव्वी तिरिक्ख मणुया व भंसणत्थाए। विसयाणुकंपरक्खण करेज्ज देवा व मणुया वा ॥५४०॥ जह णाम असी कोसा अण्णो कोसा असीवि खलु अण्णो। इय मे अण्णो देहो अण्णो जीवोत्ति मण्णंति ॥ १ ॥ एगंतणिज्जरा से दुविहा आराहणा धुवा तस्स। अंतकिरियं च साहू करेज्ज देवोववत्ती वा ॥ २ ॥ एवं धितिबलजुत्तो अहियासेति पडिलोम उवसग्गे। एत्तो पुण अणुलोमे जह सहती ते तहा वोच्छं ॥ ३ ॥ सक्कारं सम्माणं ण्हाणादीयाणि तत्थ कुज्जाहि। वोसट्ठचत्तदेहो अहाउयं कोइ पालेज्जा ॥ ४ ॥ पुव्वभवियपेमेणं देवो देवकुरुउत्तरकुरासु। कोई हु साहरेज्जा सव्वसुहा जत्थ अणुभावा ॥५॥ पुव्वभवियपेमेणं देवो साहरति णागभवणम्मि। जहियं इट्ठा कंता सव्वसुहा होंति अणुभावा ॥ ६ ॥ बत्तीस-लक्खणधरो पायोवगयो य पागडसरीरो। पुरिसव्वेसिणि कण्णा रायविंदेण्णा तु गिण्हेज्जा ॥ ७ ॥ मज्जण गंधं पुप्फोवयार परियारणं च कुज्जाहि। सा पवर रायकण्णा इमेहिं जुत्ता गुण-गणेहिं ॥ ८ ॥ णवयंगसोयबोहियअट्ठारसरतिविसेसकुसला तु। चोयट्ठीमहिलगुणा णिउणा य विसत्तरिकलाहिं ॥ ९ ॥ दो सोय णेत्तमादिग णवंगसोया हवन्ति एतेसु। देसीभासट्ठारस रतीविसेसा उ उगुवीसं ॥५५०॥ कोसल्लगे व वीसइविहं तु एवमादिएहिं तु गुणेहिं। जुत्ताए रूववोव्वणविलासलायण्णकलियाए ॥१॥ चउकण्णम्मि रहसे राएणं रायदिण्णपसरा(पासा)ए। तिमिमगरेहि व उदही ण खोभितो जो मणो मुणिणो ॥ २ ॥ जाहे पराइया सा ण समत्था सीलखंडणं काउं। णेऊण सेलसिहरं तो सिलमुवरिं मुयति तस्स ॥ ३ ॥ एगंतणिज्जरा (२५५)

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१]

से दुविहा आराहणा धुवा तस्स। अंतकिरिया व साहू करेज्ज देवोववत्तिं वा ॥ ४॥ एमादीहिं बहुविहं दुविहं तिविहेहिं ते महाभागा। घोरेहिं उवसग्गेहिं चालिज्जंतावि णिहयया ॥ ५॥ पुव्वावरदाहिणउत्तरेहिं वाएहिं आवयंतेहिं। जह णवि कंपइ मेरू तह ते झाणाओ न चलिंति ॥ ६॥ पढमम्मि य संघयणे वट्टंता सेलकुहडसामाणा। तेसिंपिय वोच्छेदो चउदसपुव्वीण वोच्छेदे ॥ ७॥ एयं पाओवगमं णिप्पडिकम्मं जिणेहिं पण्णत्तं। तित्थयरगणहरेहि य साहूहि य सेवियमुदारं ॥ ८॥ एवं जहाणुरूवा संपतिकालम्मि अत्थि जह सोही। विज्जंति य सोहिकरा तं सव्वेयं समक्खायं ॥ ९॥ एसाऽऽगमववहारो जहोवएसं जहक्कमं कहिओ। एत्तो सुतववहारं सुण वच्छ! जहाणुपुव्वीए ॥ ५६०॥ णिज्जूढं चोद्दसपुव्विएण जं भद्दबाहुणा सुत्तं। पंचविहो ववहारो दुवालसंगस्स णवणीयं ॥ १॥ जो सुतमहिज्जति बहुं सुत्तत्थं च णिउणं ण याणाति। कप्पे ववहारम्मि य ण सो पमाणं सुयधराणं ॥ २॥ जो सुतमहिज्जति बहुं सुत्तत्थं च णिउणं वियाणाति। कप्पे ववहारम्मि य सो उ पमाणं सुतधराणं ॥ ३॥ कप्पस्स य णिज्जुत्तिं ववहारस्सेव परमणिउणस्स। जो अत्थओ न जाणति सो ववहारी णऽणुण्णातो ॥ ४॥ कप्पस्स य णिज्जुत्तिं ववहारस्सेव परमणिउणस्स। जो अत्थतो विजाणति ववहारी सो अणुण्णातो ॥ ५॥ एसो सुतववहारो जहोवएसं जहक्कमं कहितो। आणाए ववहारं सुण वच्छ! जहक्कमं वोच्छं ॥ ६॥ समणस्स उत्तिमट्ठे सज्झरणकरणे अभिमुहस्स। दूरत्था जत्थ भवे छत्तीसगुणा उ आयरिया ॥ ७॥ अपरक्कमो मि जातो गंतुं जं कारणं तु उप्पण्णं। अट्ठारसमण्णयरे वसणगते इच्छिमो आणं ॥ ८॥ अपरक्कमो तवस्सी गंतुं ण चतेइ सोहिकरमूलं। सीसं पेसेति तहिं जहिच्छ सोहिं तुमसमीवे ॥ ९॥ सोवि अपरक्कमगती सीसं पेसेति धारणाकुसलं। णातु तहिं जो जोग्गो इमेण विहिणा परिच्छित्ता ॥ ५७०॥ अपरक्कमो य सीसं आणापरिणामगं परिच्छेज्जा। रुक्खे व बीयकाए सुत्ते वाऽमोहऽऽणा(णाऽऽ)धारिं ॥ १॥ दट्ठु महल्ल महीरुह भणितो रुक्खे विलग्गितुं डेवे। अपरिणतो बेति तयो णो वट्टति रुक्ख आरोढुं ॥ २॥ किं वा मारेतव्वो अहतं? तो बेह डेव रुक्खातो। अतिपरिणामो भणती इय होतू अम्हऽवे सिच्छा ॥ ३॥ बेति गुरू अह तं तू अपरिगय अत्थे अ भाससे एवं। किं व मए तं भणितो आरुह रुक्खे तु सच्चित्ते? ॥ ४॥ तवणियमणाणरुक्खं आरुहिउं भवमहण्णवावत्तं। संसारागडमूलं डेवेहि मए तुमं भणितो ॥ ५॥ जो पुण परिणामो खलु आरुह भणितो तु सो विचिंतेति। णिच्छंति पावमेते जीवाणं थावराणंपि ॥ ६॥ किं पुण पंचिंदीणं? तं भवियव्वेऽत्थ कारणेणं तु। आरुहणववसियं तू वारेति गुरूऽहवा थंभे ॥ ७॥ एवाऽऽणध बीयाइं भणिते पडिसेह अपरिणामो तु। अतिपरिणामो पोट्टल बंधूणं आगतो तत्थ ॥ ८॥ पच्चाह गुरू तं तू जहोदियाऽणेह अंबिलीबीये। ण विरोहसमत्थाइं सच्चित्ताइं विभणियाइं ॥ ९॥ परिणामगो हु तत्थवि भणती आणेमि केरिसाइं तु?। कित्तियमित्ताइं वा? विरोहमविरोहजोग्गाइं? ॥ ५८०॥ सोवि गुरूहिं भणिओ ण ताव कज्जं पुणो भणीहामी। हसिओ व मए वाऽसी वीमंसत्थं व भणितो सि ॥ १॥ पदमक्खरमुद्देसं संधी सुत्तऽत्थ तदुभयं पुट्ठो। अक्खर वंजणसुद्धं कहेति सव्वं जहाभणितं ॥ २॥ एवं परिच्छिऊणं जोग्गं णाऊण पेसवे तं तु। वच्चाहि तस्सगासं सोहिं सोऊण आगच्छ ॥ ३॥ अह सो गतो उ तहियं तस्स सगासम्मि सो करे सोहिं। दुगनिगच्छ ऊविसुद्धं निविहे काले विगडभावो ॥ ४॥ दुविहं तु दप्पकप्पे तिविहं णाणाइणं तु अट्ठाए। दव्वे खेत्ते काले भावे य चउव्विहं एयं ॥ ५॥ तिविहं अतीयकाले पच्चुप्पण्णे व सेवियं जं तु। सेविस्सं वा एस्से पागडभावो विगडभावो ॥ ६॥ किं पुण आलोएती? अतियारं, सो इमो य अतियारो। वत्तछक्कादीओ खलु णातव्वो आणुपुव्वीए ॥ ७॥ वयछक्कं कायछक्कं, अकप्पो गिहिभायणं। पलियंक णिसेज्जा य, सिणाणं सोहवज्जणं ॥ ८॥ तं पुण होज्जाऽऽसेविय दप्पेणं अहव होज्ज कप्पेण। दप्पेण दसविहं तू इणमो वोच्छं समासेणं ॥ ९॥ दप्प अकप्प णिरालंब चियत्ते अप्पसत्थ वीसत्थे। अपरिच्छ अकडजोगी अणाणुतावी य णीसंको ॥ ५९०॥ वायामवग्गणादी णिक्कारण धावणं तु दप्पो उ। कायापरिणतगहणं अकप्पो जं वा अगीतेणं ॥ १॥ संसारखड्डपडितो णाणादवलंबितुं समुत्तरइ। मोक्खतडं जह पुरिसो वल्लिवियाणेण विसमाओ ॥ २॥ णाणादीपरिवड्ढी ण भविस्सति मे असेवयो बितियं। तेसिं पसंधणट्ठ व सालंबणिसेवणा होति ॥ ३॥ जा पुण णिक्कारणयो अपसत्थालंबणा य सेवा उ। अमुएणवि आयरियं को दोसो वा णिरालंबं ॥ ४॥ जं सेवितं तु बितियं गेलण्णादी असंथरंतेणं। हट्ठोवि पुणो तं चिय चियत्तकिच्चो णिसेवंतो ॥ ५॥ बलवण्णरूवहेतुं फासुयभोईवि होति अपसत्थो। किं पुण जो अविसुद्धं णिसेवए वण्णमादट्ठा? ॥ ६॥ सेवंतो तु अकिच्चं लोए लोउत्तरम्मि य विरुद्धं। परपक्ख सपक्खे वा वीसत्थासेवणमलज्जे ॥ ७॥ अपरिच्छितुमायवए णिसेवमाणो उ होइ अपरिच्छो। तिगुणं जोगमकाउं बितियासेवो अकडजोगी ॥ ८॥ बितियपदे जो तु परं तावेत्ता णाणुतप्पती पच्छा। सो होति अणणुतावी किं पुण दप्पेण सेवित्ता? ॥ ९॥ करणभएसु तु संका करणे कुव्वं ण संकइ कयाई। इहलोयस्स ण भायइ परलोए वाऽभया एसा ॥ ६००॥ एसा दप्पियसेवा दसभेय समासतो समक्खाया। एत्तो कप्पियसेवं चउवीसविहा इमाऽऽहंसु ॥ १॥ दंसणणाणचरित्ते तवपवयणसमितिगुत्तिहेउं वा। साहम्मियवच्छल्लेण वावि कुलयो गणस्सेव १० ॥ २॥ संघस्साऽऽयरियस्स य असहुस्स गिलाणबालवुड्ढस्स। उदयऽग्गिचोरसावयभयकंतारऽऽवतीवसणे २४॥ ३॥ दंसणपभावगाणं सत्थाणऽट्ठाए सेवए जं तु।

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [१] दीप अनुक्रम [१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

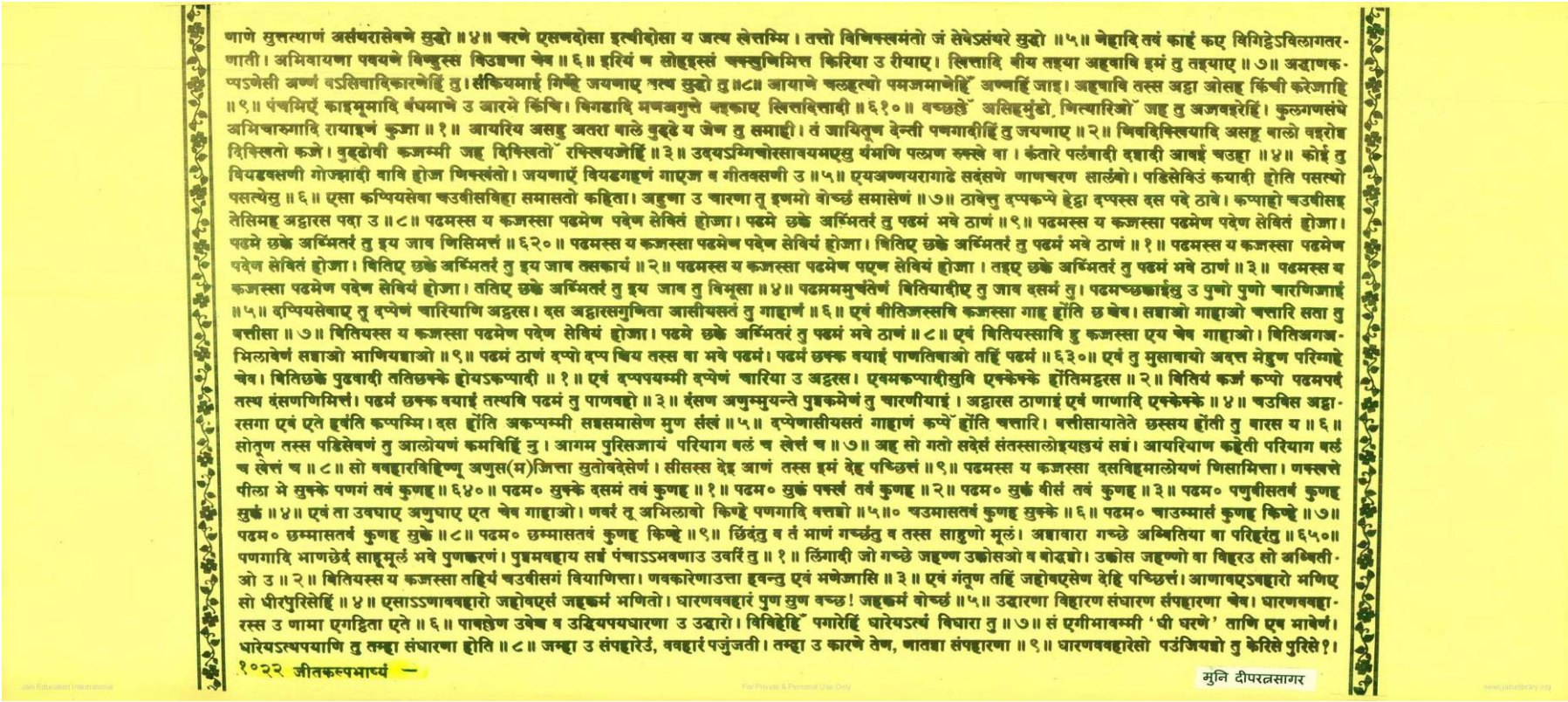

णाणे सुत्तत्थाणं असंथरासेवणे सुद्धो ॥४॥ चरणे एसणदोसा इत्थीदोसा य अत्थ खेत्तम्मि । तत्तो विणिक्खमंतो जं सेवेऽसंथरे सुद्धो ॥५॥ नेहादि तवं काहं कए विगिट्ठेऽविलागतर-
णाती। अभिवायणा पवयणे विण्हुस्स किउद्दणा चेव ॥६॥ इरियं च लोहइस्सं चक्खुणिमित्त किरिया उ रीयाए। खित्तादि चीय तइया अहवावि इमं तु तइयाए ॥७॥ अद्धाणक-
प्पऽणेसी अण्णं वऽसिवादिकारणेहिं तु। संकियमाई गिण्हे जयणाए लत्थ सुद्धो तु ॥८॥ आयाणे चलहत्थो पमज्जमाणेहिं अण्णहिं जाइ। अहवावि तस्स अट्ठा ओसह किंची करेजाहि
॥९॥ पंचमिएँ काइमूमादि वंधमाणे उ आरमे किंचि। विगडादि मणअगुत्ते वइकाए खित्तदित्तादी ॥६१०॥ वच्छल्लें असिहमुंडो, णित्थारिओ जह तु अजवइरेहिं। कुलगणसंघे
अभिचारुगादि रायाइणं कुज्जा ॥१॥ आयरिय असहु अतरा वाले वुड्ढे य जेण तु समाही। तं जायितूण देन्ती पण्णगादीहिं तु जयणाए ॥२॥ णिवदिक्खियादि असहु वालो वइरोव
दिक्खितो कजे। वुड्ढोवी कजम्मी जह दिक्खितो रक्खियजेहिं ॥३॥ उदयऽग्गिचोरसावयमएसु थंभणि पलाण रुक्खे वा । कंतारे पलंबादी दवादी आवई चउहा ॥४॥ कोई तु
वियडवसणी गोज्झादी वावि होज्ज णिक्खंतो। जयणाएँ वियडगहणं गाएज्ज व गीतवसणी उ ॥५॥ एयऽण्णयरागाढे सदंसणे णाणचरण सालंबो। पडिसेविउं कयादी होति पसत्थो
पसत्थेसु ॥६॥ एसा कप्पियसेवा चउवीसविहा समासतो कहिता। अहुणा उ चारणा तू इणमो वोच्छं समासेणं ॥७॥ ठावेत्तु दप्पकप्पे हेट्ठा दप्पस्स दस पदे ठावे। कप्पाहो चउवीसइ
तेसिमहं अट्ठारस पदा उ ॥८॥ पढमस्स य कजस्सा पढमेण पदेण सेवितं होजा। पढमे छक्के अब्भिंतरं तु पढमं भवे ठाणं ॥९॥ पढमस्स य कजस्सा पढमेण पदेण सेवितं होजा।
पढमे छक्के अब्भिंतरं तु इय जाव णिसिमत्तं ॥६२०॥ पढमस्स य कजस्सा पढमेण पदेण सेवियं होजा। बितिए छक्के अब्भिंतरं तु पढमं भवे ठाणं ॥१॥ पढमस्स य कजस्सा पढमेण
पदेण सेवितं होजा। बितिए छक्के अब्भिंतरं तु इय जाव तसकायं ॥२॥ पढमस्स य कजस्सा पढमेण पएण सेवियं होजा। तइए छक्के अब्भिंतरं तु पढमं भवे ठाणं ॥३॥ पढमस्स य
कजस्सा पढमेण पदेण सेवियं होजा। ततिए छक्के अब्भिंतरं तु इय जाव तु विमूसा ॥४॥ पढममसुचंतेणं बितियादीए तु जाव दसमं तु। पढमच्छक्काईसु उ पुणो पुणो चारणिजाहं
॥५॥ दप्पियसेवाए तू दप्पेणं चारियाणि अट्ठरस। दस अट्ठारसगुणिता आसीयसतं तु गाहाणं ॥६॥ एवं चीतिजस्सवि कजस्सा गाह होंति छ चेव। सव्वाओ गाहाओ चत्तारि सता तु
वत्तीसा ॥७॥ बितियस्स य कजस्सा पढमेण पदेण सेवियं होजा। पढमे छक्के अब्भिंतरं तु पढमं भवे ठाणं ॥८॥ एवं बितियस्सावि हु कजस्सा एय चेव गाहाओ। बितिअगज-
झिलावेणं सव्वाओ भाणियव्वाओ ॥९॥ पढमं ठाणं दप्पो दप्प चिय तस्स वा भवे पढमं। पढमं छक्क वयाई पाणतिवाओ तहिं पढमं ॥६३०॥ एवं तु मुसावायो अदत्त मेहुण परिग्गहे
चेव। बितिछक्के पुढवादी ततिछक्के होयऽकप्पादी ॥१॥ एवं दप्पपयम्मी दप्पेणं चारिया उ अट्ठरस। एवमकप्पादीसुवि एक्केक्के होंतिमट्ठरस ॥२॥ बितियं कजं कप्पो पढमपदं
तत्थ दंसणणिमित्तं। पढमं छक्क वयाई तत्थवि पढमं तु पाणवहो ॥३॥ दंसण अणुम्मुयन्ते पुव्वकमेणं तु चारणीयाइं। अट्ठारस ठाणाइं एवं णाणादि एक्केक्के ॥४॥ चउवीस अट्ठा-
रसगा एवं एते हवंति कप्पम्मि। दस होंति अकप्पम्मी सव्वसमासेण मुण संखं ॥५॥ दप्पेणासीयसतं गाहाणं कप्पे होंति चत्तारि। वत्तीसायातेते छस्सय होंती तु बारस य ॥६॥
सोतूण तस्स पडिसेवणं तु आलोयणं कमविहिं नु। आगम पुरिसजायं परियाग बलं च खेत्तं च ॥७॥ अह सो गतो सदेसं संतस्सालोइयछयं सइं। आयरियाण कहेती परियाग बलं
च खेत्तं च ॥८॥ सो ववहारविहिण्णू अणुस(म)ज्जित्ता सुतोवदेसेणं। सीसस्स देइ आणं तस्स इमं देह पच्छित्तं ॥९॥ पढमस्स य कजस्सा दसविहमालोयणं णिसामित्ता। णक्खत्ते
पीला भे सुक्के पणगं तवं कुणह ॥६४०॥ पढम० सुक्के दसमं तवं कुणह ॥१॥ पढम० सुक्कं पक्खं तवं कुणह ॥२॥ पढम० सुक्कं वीसं तवं कुणह ॥३॥ पढम० पणुवीसतवं कुणह
सुक्कं ॥४॥ एवं ता उवघाए अणुघाए एत चेव गाहाओ। णवरं तू अभिलावो किण्हे पणगादि वत्तव्वो ॥५॥० चउमासतवं कुणह सुक्के ॥६॥ पढम० चउम्मासं कुणह किण्हे ॥७॥
पढम० छम्मासतवं कुणह सुक्के ॥८॥ पढम० छम्मासतवं कुणह किण्हे ॥९॥ छिंदंतु व तं भाणं गच्छंतु व तस्स साहुणो मूलं। अववारा गच्छे अब्भितिया वा परिहरंतु ॥६५०॥
पणगादि भाणछेदं साहूमूलं भवे पुणकरणं। पुव्वमवहाय सव्वं पंचाऽऽमवणाउ उवरिं तु ॥१॥ लिंगादी जो गच्छे जहण्ण उक्कोसओ व वोद्धव्वो। उक्कोस जहण्णो वा विहरउ सो अब्भिती-
ओ उ ॥२॥ बितियस्स य कजस्सा तहियं चउवीसगं वियाणित्ता। णवकारेणाउत्ता हवन्तु एवं भणेजासि ॥३॥ एवं गंतूण तहिं जहोवएसेण देहि पच्छित्तं। आणावइवहारो भणिए
सो धीरपुरिसेहिं ॥४॥ एसाऽऽणाववहारो जहोवएसं जहक्कमं भणितो। धारणववहारं पुण सुण वच्छ! जहक्कमं वोच्छं ॥५॥ उद्धारणा विहारण संधारण संपहारणा चेव। धारणववहा-
रस्स उ णामा एगट्ठिता एते ॥६॥ पावच्छेण उवेच्च व उद्धियपयधारणा उ उद्धारो। विविहेहिं पगारेहिं धारेयऽत्थं विधारा तु ॥७॥ सं एगीभावम्मी ‘धी धरणे’ ताणि एव भावेणं।
धारेयऽत्थपयाणि तु तम्हा संधारणा होति ॥८॥ जम्हा उ संपहारेउं, ववहारं पजुंजती। तम्हा उ कारणे तेण, णातव्वा संपहारणा ॥९॥ धारणववहारेसो पउंजियव्वो तु केरिसे पुरिसे?।

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [२] दीप अनुक्रम [२]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

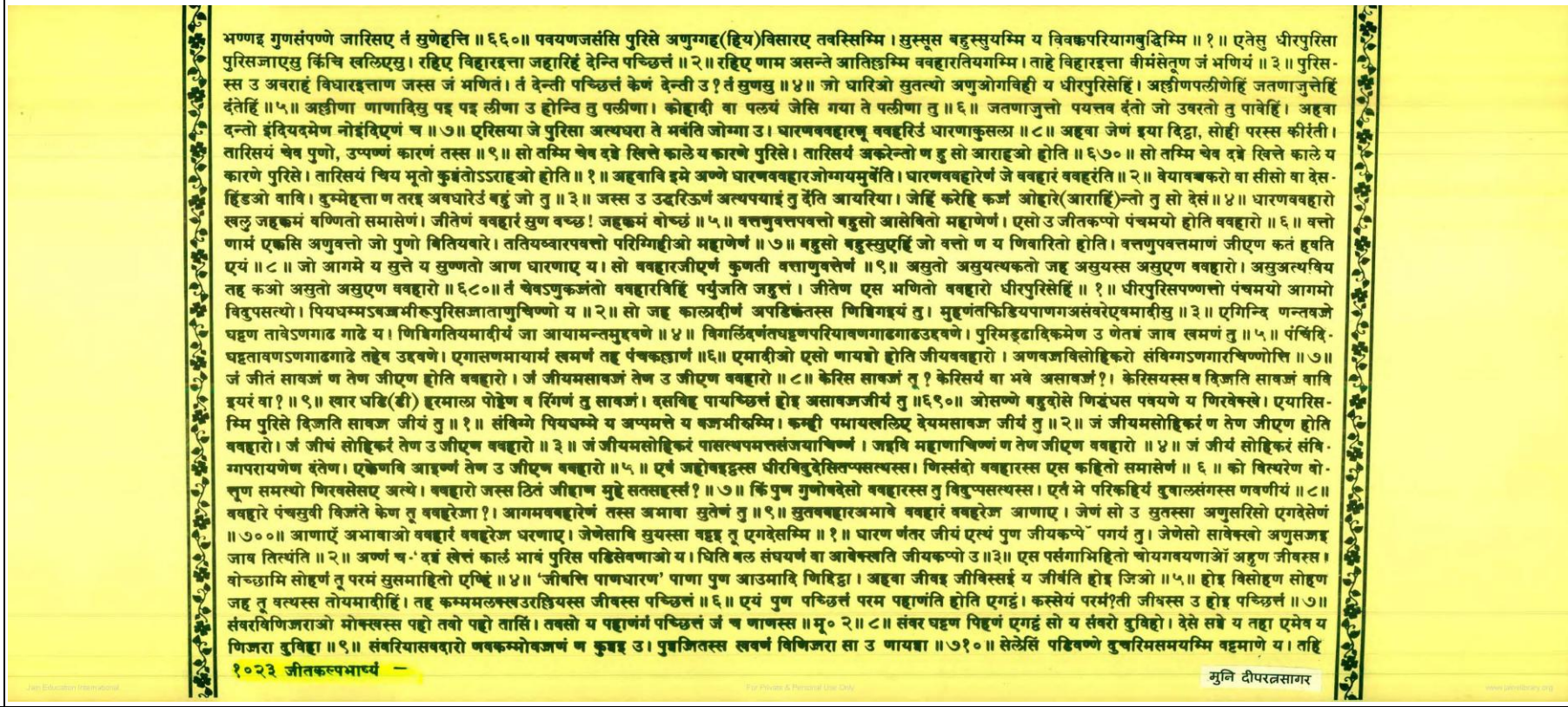

भण्णइ गुणसंपण्णे जारिसए तं सुणेहत्ति ॥ ६६०॥ पवयणजसंसि पुरिसे अणुग्गह(हिय)विसारए तवस्सिम्मि । सुस्सूस बहुस्सुयम्मि य विवक्कपरियागबुद्धिम्मि ॥ १॥ एतेसु धीरपुरिसा पुरिसजाएसु किंचि खलिएसु। रहिए विहारइत्ता जहारिहं देन्ति पच्छित्तं ॥ २॥ रहिए णाम असन्ते आतिक्कम्मि ववहारातियगम्मि। ताहे विहारइत्ता वीमंसेतूण जं भणियं ॥ ३॥ पुरिसस्स उ अवराहं विधारइत्ताण जस्स जं भणितं। तं देन्ती पच्छित्तं केणं देन्ती उ? तं सुणसु ॥ ४॥ जो धारिओ सुतत्थो अणुओगविही य धीरपुरिसेहिं। अक्खीणपलीणेहिं जतणाजुत्तेहिं दंतेहिं ॥ ५॥ अक्खीणा णाणादिसु पइ पइ लीणा उ होन्ति तु पलीणा। कोहादी वा पलयं जेसि गया ते पलीणा तु ॥ ६॥ जतणाजुत्तो पयत्तव दंतो जो उवरतो तु पावेहिं। अहवा दन्तो इंदियदमेण नोइंदिएणं च ॥ ७॥ एरिसया जे पुरिसा अत्थधरा ते भवंति जोग्गा उ। धारणववहारचू ववहरिउं धारणाकुसला ॥ ८॥ अहवा जेणं इया दिट्ठा, सोही परस्स कीरंती। तारिसयं चेव पुणो, उप्पण्णं कारणं तस्स ॥ ९॥ सो तम्मि चेव दव्वे खित्ते काले य कारणे पुरिसे। तारिसयं अकरेन्तो ण हु सो आराहओ होति ॥ ६७०॥ सो तम्मि चेव दव्वे खित्ते काले य कारणे पुरिसे। तारिसयं चिय मूलो कुव्वंतोऽऽराहओ होति ॥ १॥ अहवावि इमे अण्णे धारणववहारजोग्गयमुवेंति। धारणववहारेणं जे ववहारं ववहरंति ॥ २॥ वेयावच्चकरो वा सीसो वा देसहिंडओ वावि। दुम्मेहत्ता ण तरइ अवधारेउं बहुं जो तु ॥ ३॥ जस्स उ उद्धरिऊणं अत्थपयाइं तु देंति आयरिया। जेहिं करेहि कजं ओहारे(आराहिं)न्तो तु सो देसं ॥ ४॥ धारणववहारो खलु जहक्कमं वण्णितो समासेणं। जीतेणं ववहारं सुण वच्छ! जहक्कमं वोच्छं ॥ ५॥ वत्तणुवत्तपवत्तो बहुसो आसेवितो महाणेणं। एसो उ जीतकप्पो पंचमयो होति ववहारो ॥ ६॥ वत्तो णामं एक्कसि अणुवत्तो जो पुणो वितियवारे। ततियव्वारपवत्तो परिग्गिहीओ महाणेणं ॥ ७॥ बहुसो बहुस्सुएहिं जो वत्तो ण य णिवारितो होति। वत्तणुपवत्तमाणं जीएण कतं हवति एयं ॥ ८॥ जो आगमे य सुत्ते य सुण्णतो आण धारणाए य। सो ववहारजीएणं कुणती वत्ताणुवत्तेणं ॥ ९॥ असुतो असुयत्थकतो जह असुयस्स असुएण ववहारो। असुअत्थविय तह कओ असुतो असुएण ववहारो ॥ ६८०॥ तं चेवऽणुकजंतो ववहारविहिं पयुंजति जहुत्तं। जीतेण एस भणितो ववहारो धीरपुरिसेहिं ॥ १॥ धीरपुरिसपण्णत्तो पंचमयो आगमो विदुपसत्थो। पियधम्मऽवज्जभीरूपुरिसजाताणुचिण्णो य ॥ २॥ सो जह कालादीणं अपडिकंतस्स णिद्दिगइयं तु। मुहणंतफिडियपाणगअसंवरेएवमादीसु ॥ ३॥ एगिन्दि णन्तवजे घट्टण तावेऽणगाढ गाढे य। णिद्दिगतियमादीयं जा आयामन्तमुद्दवणे ॥ ४॥ विगलिंदयंतघट्टणपरियावणगाढगाढउद्दवणे। पुरिमड्ढादिकमेण उ णेतवं जाव खमणं तु ॥ ५॥ पंचिंदिघट्टतावणऽणगाढगाढे तहेव उद्दवणे। एगासणमायामं खमणं तह पंचकल्लाणं ॥ ६॥ एमादीओ एसो णायव्वो होति जीयववहारो। अणवजविसोहिकरो संविग्गऽणगारचिण्णोत्ति ॥ ७॥ जं जीतं सावजं ण तेण जीएण होति ववहारो। जं जीयमसावजं तेण उ जीएण ववहारो ॥ ८॥ केरिस सावजं तू? केरिसयं वा भवे असावजं?। केरिसयस्स व दिजति सावजं वावि इयरं वा? ॥ ९॥ खार घडि(डी) हरमाला पोट्टेण व रिंगणं तु सावजं। दसविह पायच्छित्तं होइ असावजजीयं तु ॥ ६९०॥ ओसण्णे बहुदोसे णिरुंधस पवयणे य णिरवेक्खे। एयारिसम्मि पुरिसे दिजति सावज जीयं तु ॥ १॥ संविग्गे पियधम्मे य अप्पमत्ते य वजभीरुम्मि। कम्हा पमायसलिए देयमसावज जीयं तु ॥ २॥ जं जीयमसोहिकरं ण तेण जीएण होति ववहारो। जं जीयं सोहिकरं तेण उ जीएण ववहारो ॥ ३॥ जं जीयमसोहिकरं पासत्थपमत्तसंजयाचिण्णं। जइवि महाणाचिण्णं ण तेण जीएण ववहारो ॥ ४॥ जं जीयं सोहिकरं संविग्गपरायणेण दंतेण। एक्केणवि आइण्णं तेण उ जीएण ववहारो ॥ ५॥ एवं जहोवइट्ठस्स धीरविदुदेसितप्पसत्थस्स। णिस्सेदो ववहारस्स एस कहितो समासेणं ॥ ६॥ को वित्थरेण वोत्तूण समत्थो णिरवसेसए अत्थे। ववहारो जस्स ठितं जीहाग्ग मुहे सतसहस्सं? ॥ ७॥ किं पुण गुणोवदेसो ववहारस्स तु विदुप्पसत्थस्स। एतं मे परिकहियं दुवालसंगस्स णवणीयं ॥ ८॥ ववहारे पंचसुवी विजंते केण तू ववहरेजा?। आगमववहारेणं तस्स अभावा सुतेणं तु ॥ ९॥ सुतववहारअभावे ववहारं ववहरेज्ज आणाए। जेणं सो उ सुतस्सा अणुसरिसो एगदेसेणं ॥ ७००॥ आणाएँ अभावाओ ववहारं ववहरेज धरणाए। जेणेसावि सुयस्सा वट्टइ तू एगदेसम्मि ॥ १॥ धारण णंतर जीयं एस्थं पुण जीयकप्पे पगयं तु। जेणेसो सावेक्खो अणुसजइ जाव तित्थंति ॥ २॥ अण्णं च-'दव्वं खेत्तं कालं भावं पुरिस पडिसेवणाओ य। धिति बल संघयणं वा आवेक्खति जीयकप्पो उ ॥३॥ एस पसंगाभिहितो चोयगवयणाओं अहुण जीवस्स। वोच्छामि सोहणं तू परमं सुसमाहितो एण्हिं ॥ ४॥ 'जीवत्ति पाणधारण' पाणा पुण आउमादि णिद्दिट्ठा। अहवा जीवइ जीविस्सई य जीवंति होइ जिओ ॥ ५॥ होइ विसोहण सोहण जह तू वत्थस्स तोयमादीहिं। तह कम्ममलक्खउरल्लियस्स जीवस्स पच्छित्तं ॥ ६॥ एयं पुण पच्छित्तं परम पहाणंति होति एगट्ठं। कस्सेयं परमं?ती जीवस्स उ होइ पच्छित्तं ॥ ७॥ संवरविणिजराओ मोक्खस्स पहो तवो पहो तासिं। तवसो य पहाणंगं पच्छित्तं जं च णाणस्स ॥ मू० २॥ ८॥ संवर घट्टण पिहणं एगट्ठं सो य संवरो दुविहो। देसे सव्वे य तहा एमेव य णिजरा दुविहा ॥ ९॥ संवरियासवदारो भवकम्मोवजणं ण कुव्वइ उ। पुव्वजितस्स खवणं विणिजरा सा उ णायव्वा ॥ ७१०॥ सेलेसिं पडिवण्णे दुचरिमसमयम्मि वट्टमाणे य। तहि

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [३] दीप अनुक्रम [३]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

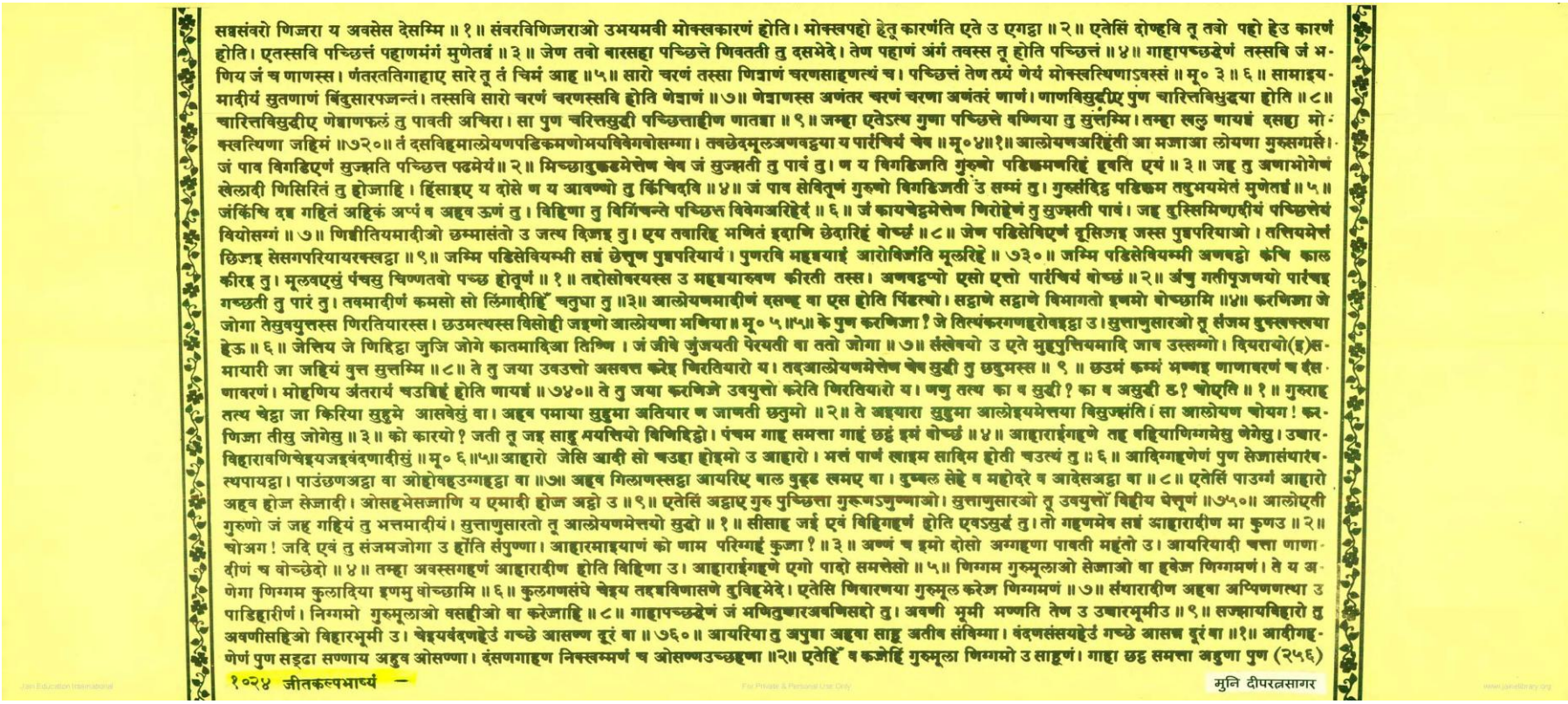

सव्वसंवरो णिज्जरा य अवसेस देसम्मि ॥ १॥ संवरविणिज्जराओ उभयमवी मोक्खकारणं होति। मोक्खपहो हेतू कारणंति एते उ एगट्ठा ॥ २॥ एतेसिं दोण्हवि तू तवो पहो हेउ कारणं होति। एतस्सवि पच्छित्तं पहाणमंगं मुणेतव्वं ॥ ३॥ जेण तवो बारसहा पच्छित्ते णिवतती तु दसभेदे। तेण पहाणं अंगं तवस्स तू होति पच्छित्तं ॥ ४॥ गाहापच्छद्धेणं तस्सवि जं भणियं जं च णाणस्स। णंतरततिगाहाए सारे तू तं चिमं आह ॥ ५॥ सारो चरणं तस्सा णिव्वाणं चरणसाहणत्थं च। पच्छित्तं तेण तयं णेयं मोक्खत्थिणाऽवस्सं ॥ मू० ३ ॥ ६॥ सामाइयमादीयं सुतणाणं बिंदुसारपजन्तं। तस्सवि सारो चरणं चरणस्सवि होति णेव्वाणं ॥ ७॥ णेव्वाणस्स अणंतर चरणं चरणा अणंतरं णाणं। णाणविसुद्धीए पुण चारित्तविसुद्धया होति ॥ ८॥ चारित्तविसुद्धीए णेव्वाणफलं तु पावती अचिरा। सा पुण चरित्तसुद्धी पच्छित्ताहीण णातव्वा ॥ ९॥ जम्हा एतेऽत्थ गुणा पच्छित्ते वण्णिया तु सुत्तम्मि। तम्हा खलु णायव्वं दसहा मोक्खत्थिणा जहिमं ॥७२०॥ तं दसविहमालोयणपडिकमणोभयविवेगवोसग्गा। तवछेदमूलअणवट्ठया य पारंचियं चेव ॥ मू०४॥१॥ आलोयणअरिहंती आ मजाआ लोयणा गुरुसगासे। जं पाव विगडिएणं सुज्झति पच्छित्त पढमेयं॥ २॥ मिच्छादुक्कडमेत्तेण चेव जं सुज्झती तु पावं तु। ण य विगडिजति गुरुणो पडिक्कमणरिहं हवति एयं ॥ ३॥ जह तु अणाभोगेणं खेलादी णिसिरितं तु होजाहि। हिंसाइए य दोसे ण य आवण्णो तु किंचिदवि ॥ ४॥ जं पाव सेवितूणं गुरुणो विगडिजती उ सम्मं तु। गुरुसंदिट्ठ पडिक्कम तदुभयमेतं मुणेतव्वं ॥ ५॥ जंकिंचि दइ गहितं अहिकं अप्पं व अहव ऊणं तु। विहिणा तु विगिंचन्ते पच्छित्त विवेगअरिहेदं ॥ ६॥ जं कायचेट्ठमेत्तेण णिरोहेणं तु सुज्झती पावं। जह दुस्सिमिणादीयं पच्छित्तेयं वियोसग्गं ॥ ७॥ णिग्गीतियमादीओ छम्मासंतो उ जत्थ दिजाइ तु। एय तवारिहं भणितं इदाणि छेदारिहं वोच्छं ॥ ८॥ जेण पडिसेवियएणं दूसिजाइ जस्स पुव्वपरियाओ। तत्तियमेत्तं छिज्जइ सेसगपरियायरक्खट्ठा ॥ ९॥ जम्मि पडिसेवियम्मी सव्वं छेत्तूण पुव्वपरियायं। पुणरवि महव्वयाइं आरोविजंति मूलरिहं ॥ ७३०॥ जम्मि पडिसेवियम्मी अणवट्ठो कंचि कालं कीरइ तु। मूलवएसुं पंचसु चिण्णतवो पच्छ होतुणं ॥ १॥ तद्दोसोवरयस्स उ महव्वयारुवण कीरती तस्स। अणवट्ठप्पो एसो एत्तो पारंचियं वोच्छं ॥ २॥ अंचु गतीपूजनयो पारंचइ गच्छती तु पारं तु। तवमादीणं कमसो सो लिंगादीहिँ चतुधा तु ॥३॥ आलोयणमादीणं दसण्ह वा एस होति पिंडत्थो। सट्ठाणे सट्ठाणे विभागतो इणमो वोच्छामि ॥४॥ करणिजा जे जोगा तेसुवयुत्तस्स णिरतियारस्स। छउमत्थस्स विसोही जइणो आलोयणा भणिया ॥ मू० ५॥५॥ के पुण करणिजा? जे तित्थंकरगणहरोवइट्ठा उ। सुत्ताणुसारओ तू संजम दुक्खक्खया हेऊ ॥ ६॥ जेत्तिय जे णिद्दिट्ठा जुजि जोगे कातमादिआ तिण्णि। जं जीवे जुंजयती पेरयती वा ततो जोगा ॥ ७॥ संलेवयो उ एते मुहपुत्तियमादि जाव उस्सग्गो। दियराओ(इ)समायारी जा जहियं वुत्त सुत्तम्मि ॥ ८॥ ते तु जया उवउत्तो असवत्त करेइ णिरतियारो य। तदआलोयणमेत्तेण चेव सुद्धी तु छदुमत्थ ॥ ९॥ छउमं कम्मं भण्णइ णाणावरणं च दंसणावरणं। मोहणिय अंतरायं चउहिहं होति णायव्वं ॥७४०॥ ते तु जया करणिजे उवयुत्तो करेति णिरतियारो य। णणु तत्थ का व सुद्धी? का व असुद्धी ऊ? चोएति ॥ १॥ गुरुराह तत्थ चेट्ठा जा किरिया सुहुमे आसवेसुं वा। अहव पमाया सुहुमा अतियार ण जाणती छतुमो ॥ २॥ ते अइयारा सुहुमा आलोइयमेत्तया विसुज्झंति। सा आलोयण चोयग! करणिजा तीसु जोगेसु ॥ ३॥ को कारयो? जती तू जइ साहु मयत्तियो विणिद्दिट्ठो। पंचम गाह समत्ता गाहं छट्ठं इमं वोच्छं ॥ ४॥ आहाराईगहणे तह वहियाणिग्गमेसु णेगेसु। उच्चारविहारावणिचेइयजइवंदणादीसुं ॥ मू० ६॥५॥ आहारो जेसि आदी सो चउहा होइमो उ आहारो। भत्तं पाणं खाइम सादिम होती चउत्थं तु ॥ ६॥ आदिग्गहणेणं पुण सेजासंथारवत्थपायट्ठा। पाउंछणअट्ठा वा ओहोवहउग्गहट्ठा वा ॥७॥ अहव गिलाणस्सट्ठा आयरिए बाल वुड्ढ खमए वा। दुब्बल सेहे व महोदरे व आदेसअट्ठा वा ॥ ८॥ एतेसिं पाउग्गं आहारो अहव होज सेजादी। ओसहभेसजाणि य एमादी होज अट्ठो उ ॥ ९॥ एतेसिं अट्ठाए गुरु पुच्छित्ता गुरूणऽणुण्णाओ। सुत्ताणुसारओ तू उवयुत्तो विहीय घेत्तूणं ॥७५०॥ आलोएती गुरुणो जं जह गहियं तु भत्तमादीयं। सुत्ताणुसारतो तू आलोयणमेत्तयो सुद्धो ॥ १॥ सीसाह जई एवं विहिगहणं होति एवऽसुद्धं तु। तो गहणमेव सव्वं आहारादीण मा कुणउ ॥ २॥ चोअग! जदि एवं तु संजमजोगा उ होंति संपुण्णा। आहारमाइयाणं को णाम परिग्गहं कुजा? ॥ ३॥ अण्णं च इमो दोसो अग्गहणा पावती महंतो उ। आयरियादी चत्ता णाणादीणं च वोच्छेदो ॥ ४॥ तम्हा अवस्सगहणं आहारादीण होति विहिणा उ। आहाराईगहणे एगो पादो समत्तेसो ॥ ५॥ णिग्गम गुरुमूलाओ सेजाओ वा हवेज णिग्गमणं। ते य अणेगा णिग्गम कुलादिया इणमु वोच्छामि ॥ ६॥ कुलगणसंघे चेइय तद्दविणासणे दुविहमेदे। एतेसि णिवारणया गुरुमूल करेज णिग्गमणं ॥ ७॥ संथारादीण अहवा अप्पिणणत्था उ पाडिहारीणं। निग्गमो गुरुमूलाओ वसहीओ वा करेजाहि ॥ ८॥ गाहापच्छद्धेणं जं भणितुच्चारअवणिसदो तु। अवणी भूमी भण्णति तेण उ उच्चारभूमीउ ॥ ९॥ सज्झायविहारो तु अवणीसहिओ विहारभूमी उ। चेइयवंदणहेउं गच्छे आसण्ण दूरं वा ॥ ७६०॥ आयरिया तु अपुवा अहवा साहू अतीव संविग्गा। वंदणसंसयहेउं गच्छे आसन्न दूरं वा ॥१॥ आदीगहणेणं पुण सड्ढा सण्णाय अहव ओसण्णा। दंसणगाहण निक्खम्मणं च ओसण्णउच्छहणा ॥२॥ एतेहिँ व कजेहिं गुरुमूला णिग्गमो उ साहूणं। गाहा छट्ठ समत्ता अहुणा पुण (२५६)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अत्र आलोचना-प्रायश्चित वर्णयते

प्रत सूत्रांक [७] दीप अनुक्रम [७]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

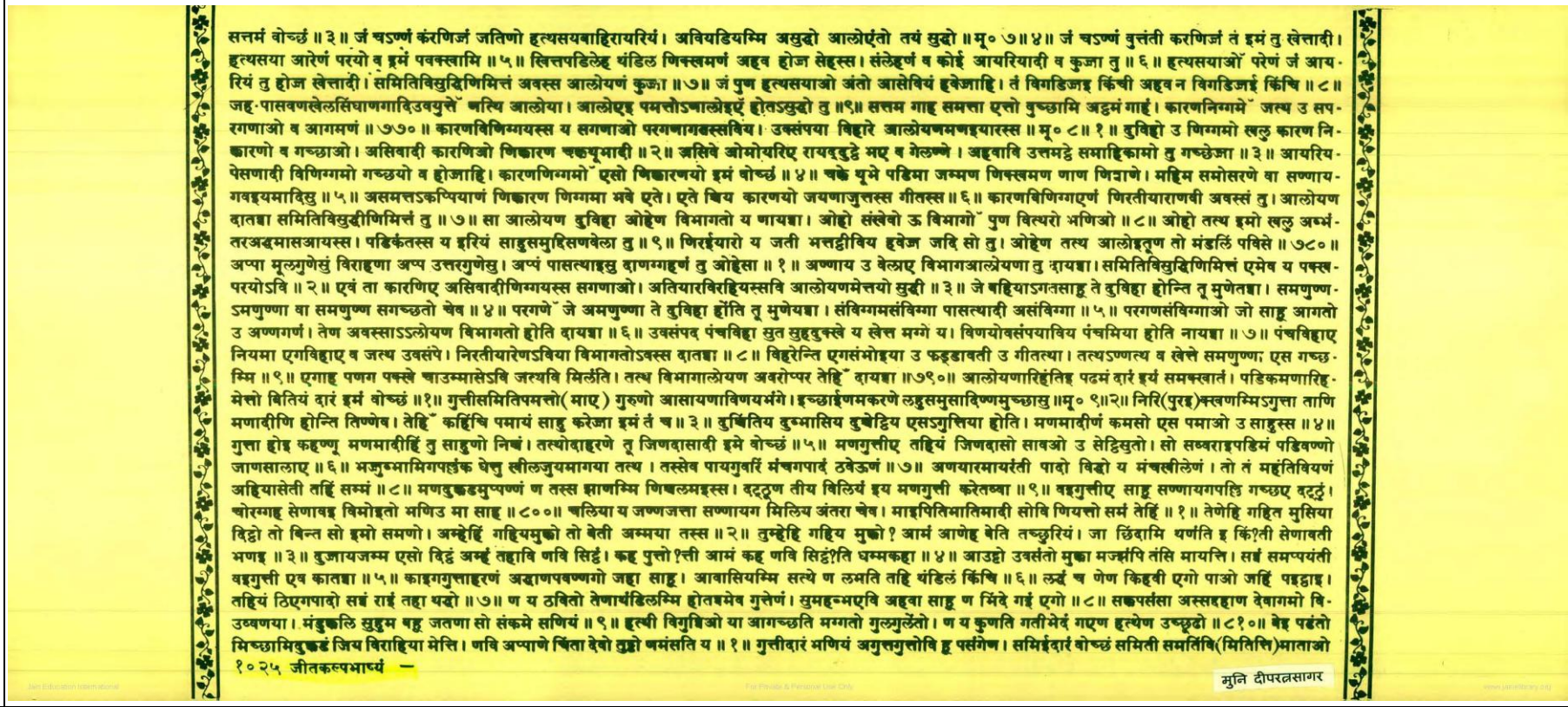

सत्तमं वोच्छं ॥३॥ जं चउण्णं करणिजं जतिणो हत्थसयबाहिरायरियं। अवियडियम्मि असुद्धो आलोएंतो तयं सुद्धो ॥मू० ७॥४॥ जं चउण्णं वुत्तंती करणिजं तं इमं तु खेत्तादी। हत्थसया आरेणं परओ व इमं पवक्खामि ॥५॥ खित्तपडिलेह थंडिल णिक्खमणं अहव होज सेहस्स। संलेहणं व कोई आयरियादी व कुजा तु ॥६॥ हत्थसयाओ परेणं जं आयरियं तु होज खेत्तादी। समितिविसुद्धिणिमित्तं अवस्स आलोयणं कुजा ॥७॥ जं पुण हत्थसयाओ अंतो आसेवियं हवेजाहि। तं विगडिजइ किंची अहवन विगडिजाई किंचि ॥८॥ जह-पासवणखेलसिंघाणगादिउवयुत्तें नत्थि आलोया। आलोएइ पमत्तोऽणालोइएं होतऽसुद्धो तु ॥९॥ सत्तम गाह समत्ता एत्तो वुच्छामि अट्ठमं गाहं। कारणनिग्गमें जत्थ उ सपरगणाओ व आगमणं ॥७७०॥ कारणविणिग्गयस्स य सगणाओ परगणागडस्सविय। उक्संपया विहारे आलोयणमणहयारस्स ॥मू० ८॥ १॥ दुविहो उ णिग्गमो खलु कारण निक्कारणो व गच्छाओ। असिवादी कारणिओ णिक्कारण चक्कथूमादी ॥२॥ असिवे ओमोयरिए रायद्दुट्ठे भए व गेलण्णे। अहवावि उत्तमट्ठे समाहिकामो तु गच्छेज्जा ॥३॥ आयरियपेसणादी विणिग्गमो गच्छयो व होजाहि। कारणणिग्गमो एसो णिक्कारणयो इमं वोच्छं ॥४॥ चक्के थूमे पडिमा जम्मण णिक्खमण णाण णिव्वाणे। महिम समोसरणे वा सण्णायगवइयमादिसु ॥५॥ असमत्तऽकप्पियाणं णिक्कारण णिग्गमा भवे एते। एते चिय कारणयो जयणाजुत्तस्स गीतस्स ॥६॥ कारणविणिग्गएणं णिरतीयाराणची अवस्सं तु। आलोयण दातव्वा समितिविसुद्धीणिमित्तं तु ॥७॥ सा आलोयण दुविहा ओहेण विभागतो य णायव्वा। ओहो संखेवो ऊ विभागो पुण वित्थरो भणिओ ॥८॥ ओहो तत्थ इमो खलु अब्भंतरअद्धमासआयस्स। पडिकंतस्स य इरियं साहुसमुद्दिसणवेला तु ॥९॥ णिरईयारो य जती भत्तट्ठीविय हवेज जदि सो तु। ओहेण तत्थ आलोइतूण तो मंडलिं पविसे ॥७८०॥ अप्पा मूलगुणेसुं विराहणा अप्प उत्तरगुणेसु। अप्पं पासत्थाइसु दाणग्गहणं तु ओहेसा ॥१॥ अण्णाय उ वेलाए विभागआलोयणा तु दायव्वा। समितिविसुद्धिणिमित्तं एमेव य पक्खपरयोऽवि ॥२॥ एवं ता कारणिए असिवादीणिग्गयस्स सगणाओ। अतियारविरहियस्सवि आलोयणमेत्तयो सुद्धी ॥३॥ जे बहियाऽगतसाहू ते दुविहा होन्ति तू मुणेतव्वा। समगुण्णऽमगुण्णा वा समगुण्ण सगच्छतो चेव ॥४॥ परगणे जे अमगुण्णा ते दुविहा होंति तू मुणेयव्वा। संविग्गमसंविग्गा पासत्थादी असंविग्गा ॥५॥ परगणसंविग्गाओ जो साहू आगतो उ अण्णगणं। तेण अवस्साऽऽलोयण विभागतो होति दायव्वा ॥६॥ उवसंपद पंचविहा सुत सुहदुक्खे य खेत्त मग्गे य। विणयोवसंपयावि य पंचमिया होति नायव्वा ॥७॥ पंचविहाए नियमा एगविहाए व जत्थ उवसंपे। निरतीयारेणऽविया विभागतोऽवस्स दातव्वा ॥८॥ विहरेन्ति एगसंभोइया उ फड्डावती उ गीतत्था। तत्थऽण्णत्थ व खेत्ते समणुण्णा एस गच्छम्मि ॥९॥ एगाह पणग पक्खे चाउम्मासेऽवि जत्थवि मिलंति। तत्थ विभागालोयण अवरोप्पर तेहिं दायव्वा ॥७९०॥ आलोयणारिहंतिह पदमं दारं इयं समक्खातं। पडिकमणारिह-मेत्तो बितियं दारं इमं वोच्छं ॥१॥ गुत्तीसमितिपमत्तो(माए) गुरुणो आसायणाविणयमंगे। इच्छाईणमकरणे लहुसमुसादिण्णमुच्छासु ॥मू० ९॥२॥ निरि(पुरइ)क्खणम्मिऽगुत्ता ताणि मणादीणि होन्ति तिण्णेव। तेहिं कहिंचि पमायं साहु करेजा इमं तं च ॥३॥ दुचिंतिय दुब्भासिय दुचेट्ठिय एसऽगुत्तिया होति। मणमादीणं कमसो एस पमाओ उ साहुस्स ॥४॥ गुत्ता होइ कहण्णू मणमादीहिं तु साहुणो निच्चं। तत्थोदाहरणे तू जिणदासादी इमे वोच्छं ॥५॥ मणगुत्तीए तहियं जिणदासो सावओ उ सेट्ठिसुतो। सो सव्वराइपडिमं पडिवण्णो जाणसालाए ॥६॥ भज्जुब्भामिगपल्लंक चेलु स्त्रीलजुयमागया तत्थ। तस्सेव पायगुवरिं मंचगपार्द ठवेऊणं ॥७॥ अणयारमायरंती पादो विद्धो य मंचस्सीलेणं। तो तं महंतिवियणं अहियासेती तहिं सम्मं ॥८॥ मणदुक्कडमुप्पण्णं ण तस्स झाणम्मि णिचलमइस्स। दट्ठूण तीय विलियं इय मणगुत्ती करेतव्वा ॥९॥ वइगुत्तीए साहू सण्णायगपल्लि गच्छए दट्ठुं। चोरग्गह सेणावइ विमोइतो भणिउ मा साह ॥८००॥ चलिया य जण्णजत्ता सण्णायग मिलिय अंतरा चेव। माइपितिमातिमादी सोवि णियत्तो समं तेहिं ॥१॥ तेणेहि गहित मुसिया दिट्ठो तो विन्त सो इमो समणो। अम्हेहिं गहियमुक्को तो वेती अम्मया तस्स ॥२॥ तुम्हेहि गहिय मुक्को? आमं आणेह वेति तच्छुरियं। जा छिंदामि यणंति इ किं?ती सेणावती भणइ ॥३॥ दुजायजम्म एसो दिट्ठं अम्हं तहावि णवि सिट्ठं। कह पुत्तो?त्ती आमं कह णवि सिट्ठं?ति धम्मकहा ॥४॥ आउट्टो उवसंतो मुक्का मज्झंपि तंसि मायत्ति। सव्वं समप्पयंती वइगुत्ती एव कातव्वा ॥५॥ काइगगुत्ताहरणं अद्धाणपवण्णगो जहा साहू। आवासियम्मि सत्थे ण लभति तहि थंडिलं किंचि ॥६॥ लद्धं च णेण किहवी एगो पाओ जहिं पइट्ठाइ। तहियं ठिएगपादो सव्वं राइं तहा यद्धो ॥७॥ ण य ठवितो तेणाथंडिलम्मि होतवमेव गुत्तेणं। सुमहन्भएवि अहवा साहू ण भिंदे गइं एगो ॥८॥ सक्कपसंसा अस्सद्दहाण देवागमो विउव्वणया। मंडुक्कलि सुहुम बहु जतणा सो संकमे सणियं ॥९॥ हत्थी विगुव्विओ या आगच्छति मग्गतो गुलगुलेंतो। ण य कुणति गतीभेदं गएण हत्थेण उच्छूढो ॥८१०॥ वेइ पढंतो मिच्छामिदुक्कडं जिय विराहिया मेत्ति। णवि अप्पाणे चिंता देवो तुट्ठो णमंसति य ॥१॥ गुत्तीदारं भणियं अगुत्तगुत्तोवि हु पसंगेण। समिईदारं वोच्छं समिती समतिंवि(मितित्ति)माताओ

मुनि दीपरत्नसागर

	अत्र प्रतिक्रमण-प्रायश्चित वर्णयते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [९]

दीप अनुक्रम [९]

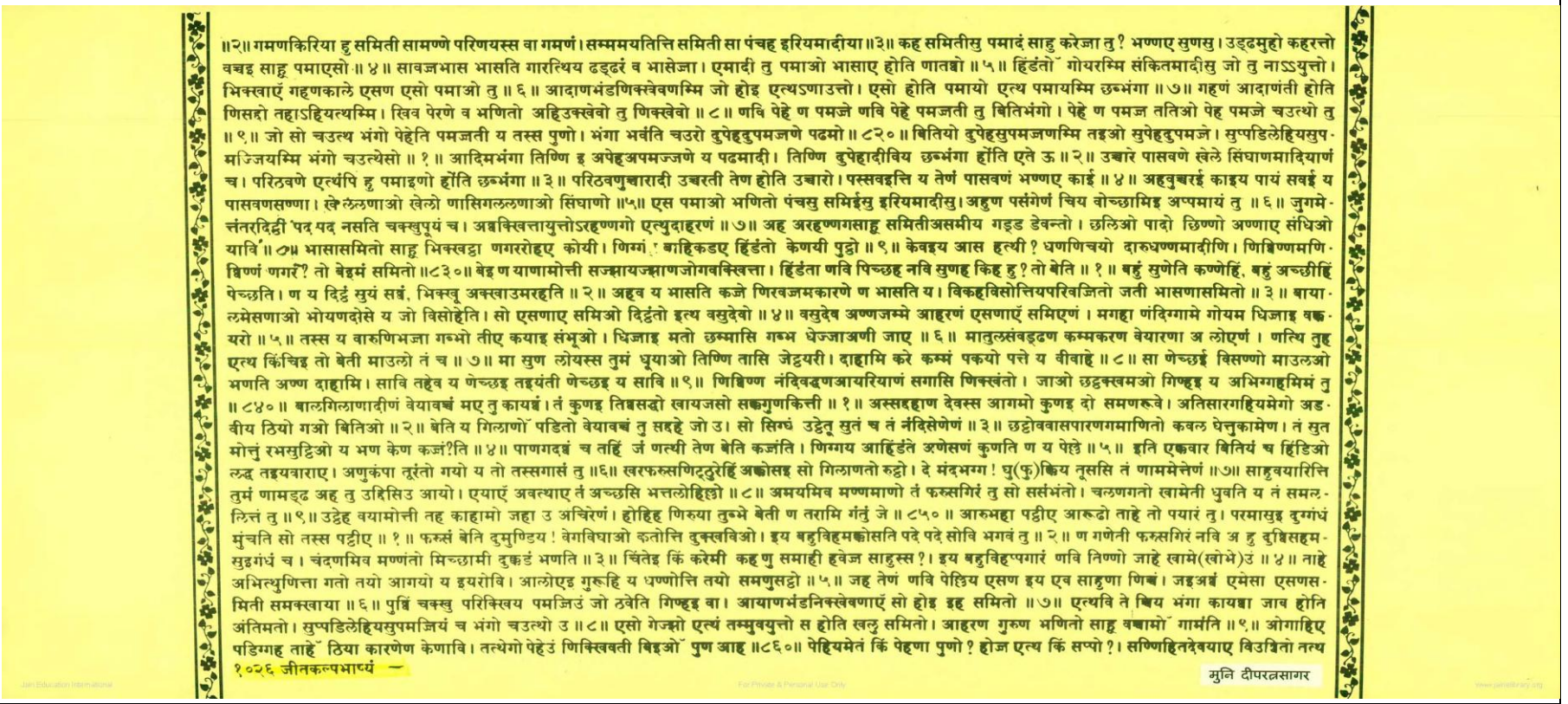

॥२॥ गमणकिरिया हु समिती सामण्णे परिणयस्स वा गमणं। सम्ममयतित्ति समिती सा पंचह इरियमादीया ॥३॥ कह समितीसु पमादं साहु करेज्जा तु? भण्णए सुणसु। उड्ढमुहो कहरत्तो वच्चइ साहू पमाएसो ॥ ४॥ सावज्जभास भासति गारत्थिय ढड्ढरं व भासेज्जा। एमादी तु पमाओ भासाए होति णातव्वो ॥५॥ हिंडंतो गोयरम्मि संकितमादीसु जो तु नाऽऽयुत्तो। भिक्खाएं गहणकाले एसण एसो पमाओ तु ॥ ६॥ आदाणभंडणिक्खेवणम्मि जो होइ एत्थऽणाउत्तो। एसो होति पमायो एत्थ पमायम्मि छब्भंगा ॥७॥ गहणं आदाणंती होति णिसट्ठो तहाऽहियत्थम्मि। खिव पेरणे व भणितो अहिउक्खेवो तु णिक्खेवो ॥८॥ णवि पेहे ण पमज्जे णवि पेहे पमजती तु बितिभंगो। पेहे ण पमज्ज ततिओ पेह पमज्जे चउत्थो तु ॥९॥ जो सो चउत्थ भंगो पेहेति पमज्जती य तस्स पुणो। भंगा भवंति चउरो दुपेहदुपमज्जणे पढमो ॥ ८२०॥ बितियो दुपेहसुपमज्जणम्मि तइओ सुपेहदुपमज्जे। सुप्पडिलेहियसुपमज्जियम्मि भंगो चउत्थेसो ॥ १॥ आदिमभंगा तिण्णि इ अपेहअपमज्जणे य पढमादी। तिण्णि दुपेहादीविय छब्भंगा होंति एते ऊ ॥२॥ उच्चारे पासवणे खेले सिंघाणमादियाणं च। परिठवणे एत्थंपि हु पमाइणो होंति छब्भंगा ॥३॥ परिठवणुच्चारादी उच्चरती तेण होति उच्चारो। पस्सवइत्ति य तेणं पासवणं भण्णए काई ॥४॥ अहवुच्चरई काइय पायं सवई य पासवणसण्णा। खेलेलणाओ खेलो णासिगलेलणाओ सिंघाणो ॥५॥ एस पमाओ भणितो पंचसु समिईसु इरियमादीसु। अहुण पसंगेणं चिय वोच्छामिइ अप्पमायं तु ॥ ६॥ जुगमेत्तंतरदिट्ठी पद पद नसति चक्खुपुयं च। अव्वक्खित्तायुत्तोऽरहण्णगो एत्युदाहरणं ॥७॥ अह अरहण्णगसाहू समितीअसमीय गड्ड डेवन्तो। छलिओ पादो छिण्णो अण्णाए संधिओ यावि ॥ ७॥ भासासमितो साहू भिक्खट्ठा णगररोहए कोयी। णिग्गं बाहिकडए हिंडंतो केणयी पुट्ठो ॥९॥ केवइय आस हत्थी? धणणिचयो दारुधण्णमादीणि। णिद्दिण्णमणिद्दिण्णं णगरं? तो बेइमं समितो ॥८३०॥ बेइ ण याणामोत्ती सज्झायज्झाणजोगवक्खित्ता। हिंडंता णवि पिच्छह नवि सुणह किंह हु? तो बेति ॥ १॥ बहुं सुणेति कण्णेहिं, बहुं अच्छीहिं पेच्छति। ण य दिट्ठं सुयं सव्वं, भिक्खू अक्खाउमरहति ॥ २॥ अहव य भासति कज्जे णिरवज्जमकारणे ण भासति य। विकहविसोत्तियपरिवज्जितो जती भासणासमितो ॥ ३॥ बायालमेसणाओ भोयणदोसे य जो विसोहेति। सो एसणाए समिओ दिट्ठंतो इत्थ वसुदेवो ॥ ४॥ वसुदेव अण्णजम्मे आहरणं एसणाएं समिएणं। मगहा णंदिग्गामे गोयम धिजाइ बंभणरो ॥ ५॥ तस्स य वारुणिभज्जा गब्भो तीए कयाइ संभूओ। धिजाइ मतो छम्मासि गब्भ धेज्जाअणी जाए ॥ ६॥ मातुलसंवड्ढण कम्मकरण वेयारणा अ लोएणं। णत्थि तुह एत्थ किंचिइ तो बेती माउलो तं च ॥ ७॥ मा सुण लोयस्स तुमं धूयाओ तिण्णि तासि जेट्ठयरी। दाहामि करे कम्मं पकयो पत्ते य वीवाहे ॥ ८॥ सा णेच्छई विसण्णो माउलओ भणति अण्ण दाहामि। सावि तहेव य णेच्छइ तइयंती णेच्छइ य सावि ॥९॥ णिद्दिण्ण नंदिवद्धणआयरियाणं सगासि णिक्खंतो। जाओ छट्ठक्खमओ गिण्हइ य अभिग्गहमिमं तु ॥ ८४०॥ बालगिलाणादीणं वेयावच्चं मए तु कायव्वं। तं कुणइ तिव्वसद्धो खायजसो सक्कगुणकित्ती ॥ १॥ अस्सद्दहाण देवस्स आगमो कुणइ दो समणरूवे। अतिसारगहियमेगो अडवीय ठियो गओ बितिओ ॥ २॥ बेति य गिलाणो पडितो वेयावच्चं तु सद्दहे जो उ। सो सिग्घं उट्ठेतू सुतं च तं नंदिसेणेणं ॥ ३॥ छट्ठोववासपारणगमाणितो कवल पेत्तुकामेण। तं सुत मोत्तुं रभसुट्ठिओ य भण केण कज्जं?ति ॥ ४॥ पाणगदव्वं च तहिं जं णत्थी तेण बेति कज्जंति। णिग्गय आहिंडंते अणेसणं कुणति ण य पेल्ले ॥ ५॥ इति एक्कवार बितियं च हिंडिओ लद्ध तइयवाराए। अणुकंपा तूरंतो गयो य तो तस्सगासं तु ॥६॥ खरफरुसणिट्ठुरेहिं अक्कोसइ सो गिलाणतो रुट्ठो। दे मंदभग्ग! घु(फु)क्किय तूससि तं णाममेत्तेणं ॥७॥ साहुवयारित्ति तुमं णामड्ढ अह तु उद्दिसिउ आयो। एयाएं अवत्थाए तं अच्छसि भत्तलोहिल्लो ॥ ८॥ अमयमिव मण्णमाणो तं फरुसगिरं तु सो ससंभंतो। चलणगतो खामेती धुवति य तं समलत्तिं तु ॥९॥ उद्वेह वयामोत्ती तह काहामो जहा उ अचिरेणं। होहिह णिरुया तुब्भे बेती ण तरामि गंतुं जे ॥ ८५०॥ आरुभहा पट्टीए आरूढो ताहे तो पयारं तु। परमासुइ दुग्गंधं मुंचति सो तस्स पट्टीए ॥ १॥ फरुसं बेति दुमुण्डिय! वेगविघाओ कतोत्ति दुक्खविओ। इय बहुविहमक्कोसति पदे पदे सोवि भगवं तु ॥ २॥ ण गणेती फरुसगिरं नवि अ हु दुव्विसहमसुइगंधं च। चंदणमिव मण्णंतो मिच्छामी दुक्कडं भणति ॥ ३॥ चिंतेइ किं करेमी कह णु समाही हवेज्ज साहुस्स?। इय बहुविहप्पगारं णवि तिण्णो जाहे खामे(खोभे)उं ॥ ४॥ ताहे अभित्थुणित्ता गतो तयो आगयो य इयरोवि। आलोएइ गुरूहि य धण्णोत्ति तयो समणुसट्ठो ॥ ५॥ जह तेणं णवि पेहिय एसण इय एव साहुणा णिच्चं। जइअव्वं एमेसा एसणसमिती समक्खाया ॥ ६॥ पुव्विं चक्खु परिक्खिय पमज्जिउं जो ठवेति गिण्हइ वा। आयाणभंडनिक्खेवणाएं सो होइ इह समितो ॥ ७॥ एत्थवि ते चिय भंगा कायव्वा जाव होति अंतिमतो। सुप्पडिलेहियसुपमज्जियं च भंगो चउत्थो उ ॥ ८॥ एसो गेज्झो एत्थं तम्मुवयुत्तो स होति खलु समितो। आहरण गुरुण भणितो साहू वच्चामो गामंति ॥ ९॥ ओगाहिए पडिग्गह ताहे ठिया कारणेण केणावि। तत्थेगो पेहेउं णिक्खिवती बिइओ पुण आह ॥ ८६०॥ पेहियमेतं किं पेहणा पुणो? होज्ज एत्थ किं सप्पो?। सण्णिहितदेवयाए विउवितो तत्थ

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [९]

दीप अनुक्रम [९]

तो सप्पो ॥ १ ॥ उग्घाडिए य दिट्ठो आउट्टो बेति मिच्छकारं च। समिताऽसमिता एते उक्कोस जहण्णया होन्ति ॥ २ ॥ उच्चारं पासवणं खेलादि व अण्णपाणमहियं वा। सुविवेइए पदेसे णिसिरंतो होइ इह समिओ ॥ ३ ॥ इत्थवि ते चिय भंगा तहेव समियो तु अंतिमे होति। आहरणं धम्मरुती परिठावणसमितिमुज्जुत्तो ॥ ४ ॥ काइयऽसमाहि परिठावणे य गहितो अभिग्गहो तेणं। सक्कपसंसा अस्सद्दहाण देवागम विउव्वे ॥ ५ ॥ सुबहू पिपीलियाओ वाहाडा यावि काइयऽसमाही। अण्णो य काइयाए उवट्ठितो वेयऽहं असहू ॥ ६ ॥ अहयं तु काइयाडो वेइ परिट्ठव समाहि मा अच्छ। णिग्गय णिसिरे जहि जहि पिवीलिया ऊ सरे तत्थ ॥ ७ ॥ अह साहु किलामिज्जइ ताहे पीतो य धरितो देवेणं। मा मा य णिसिद्धोत्ती मा पिय देवो य आउट्टो ॥ ८ ॥ वंदित्तु गतो देवो समितीसू एव होति जतितव्वं। एत पसंगाभिहितं आसातण इणमु वोच्छामि ॥ ९ ॥ गुरुवो आयरिया तू णाणादीओ उ होइ आयारो। आयरण परूवणया वट्टइ सो तेसिमाऽऽसाणा ॥ ८७० ॥ तीय विभासा इणमो आसातण दुपदवयणमेयन्ति। आयो य सातणा य आयस्स उ साडणा जा उ ॥ १ ॥ सा होती आसातण आओ लाभोत्ति आगमो यावि। णाणादीणं साया सायण धंसो विणासोत्ति ॥ २ ॥ आतस्स साडणंती यकारलोवम्मि होइ आसयणा। आयरियाणं इणमा आसयणा होइमेहिं तु ॥ ३ ॥ डहरो अकुलीणोत्ति य दुम्मेहो दमग मंदबुद्धित्ति। अवि अप्पलाभलद्धी सीसो परिभवइ आयरियं ॥ ४ ॥ अहवावि वदे एवं उवदेस परस्स देन्ति एवं तु। दसविह वेयावच्चं कायव्व सयं ण कुव्वति ॥ ५ ॥ अहव तिहा आसायण मणवइकाएण मणपदोसादी। वायाए आसायण अंतरभासादि कुव्विजा ॥ ६ ॥ काएणं संघट्टण जमलित पुरतो व वच्चती पंथे। अहवा आसायणमो तुसिणीमादी मुणेयव्वा ॥ ७ ॥ आलत्ते वाहित्ते वावारिय पुच्छिए णिसट्ठे या। गुरुवयणा पंचेते सीसस्स तु छा इमेकेके ॥ ८ ॥ तुसिणीए हुंकारे किं?ति व किं चडगरं करेसि?त्ति। किं णिवुइं ण देसी? केवइयं वावि रडसि?त्ति ॥ ९ ॥ एवं छा आलत्ते तुसिणीमादी उ होंति णातव्वा। वाहित्तादि य छच्चिय एक्केकपयम्मि बोद्धव्वा ॥ ८८० ॥ गुरुआसायण भणिया एत्तो वोच्छामि विणयभंगं तु। णेगविह अब्भुट्ठाणे अभिग्गहे आसणे चेव ॥ १ ॥ आसणदाणं सक्कारणा य सम्माणणा य कितिकम्मे। अंजलिपग्गहणं अणुगती य ठितपज्जुवासणता ॥ २ ॥ जंते पडिसंसाहण आसणमादीहि होति सक्कारो। सम्माणो उवहीए जोग्गं जं जस्स तं कुज्जा ॥ ३ ॥ कप्पो संथारो वा जहिं वेट्ठो अच्छई तु आयरिओ। णायागमस्स कालं पडिलेहिय घेत्तु तं अच्छे ॥ ४ ॥ कितिकम्मं वंदणयं हत्थुस्सेहो णिडालदेसम्मि। अंजलिपग्गहमेतं सेसा उ पया हु कंठोत्ता ॥ ५ ॥ एमादी विणयं दू जो णवि कुणती उ सूरियमादीणं। विणयब्भंगो एसो सत्तविहो अहव णाणादी ॥ ६ ॥ णाणे दंसण चरणे मण वइ कायोवयार सत्तविहो। एतेसु अवट्टंते समासओ एस भंगो तु ॥ ७ ॥ विणयब्भंगो एसो ओहेण समासओ समक्खायो। इच्छादी दसहा तू अकरणेणमो तू (णमेते तु) वोच्छामि ॥ ८ ॥ इच्छा मिच्छा तहक्कारो, आवसिया य णिसीहिया। आपुच्छणा य पडिपुच्छा, छंदणा य निमंतणा ॥ ९ ॥ उवसंपया य काले इच्छादिअकरणया उ दसहेसा। लहुसमुसावादादी एत्तो उ समासतो वोच्छं ॥ ८९० ॥ पयलाउल्ले मरुए पच्चक्खाणे य गमण परियाए। समुदेस संखडीओ खुड्डय परिहारिय सुहीओ(स्समुही) ॥ १ ॥ अवस गमणं दिसासु एगकुले चेव एगदव्वे य। एमादी तु पदेहिं मुसं तु लहुसं वए साहू ॥ २ ॥ पयलासि किं दिवा? ण पयलामि लहु वितिय णिण्हवे गुरुतो। अण्णदाविय णिण्हवि बहुगा गुरुगा बहुतराणं ॥ ३ ॥ णिण्हवणे णिण्हवणे पच्छित्तं वड्ढई ऊ जा सपयं। लहुगुरुमासो सुहुमो लहुमादी वायरो होति ॥ ४ ॥ किं वच्चसि वासंते? ण गच्छिणणु वासचिंदवो एते। भुंजंती णिह मरुया कहं?ति णणु सव्वगेहेसु ॥ ५ ॥ भुंजसु पच्चक्खाणं महंति तक्खण पभुंजियो पुट्ठो : किं व ण मे पंचविहा पच्चक्खाता अविरतीओ? ॥ ६ ॥ वच्चसि? णाहं वच्चे तक्खण वच्चंत पुच्छिओ भणति। सिद्धंतं णवि जाणह णणु गम्मति गम्ममाणं तु? ॥ ७ ॥ दस एयस्स य मज्झ य पुच्छितो परियाग बेइ तु छलेण। मज्झ णवत्ति य वंदिएं भणाइ बे पंचगा दस उ ॥ ८ ॥ वट्टइ तु समुद्देसो किं अच्छह? कत्थ? एस गयणंमि। वट्टन्ति संखडीओ घरेसु णणु याउखंडणया ॥ ९ ॥ खुड्डगजणणी उ मुया परुण्णो ठियइत्ति एव भणियंमि। माइत्ता सज्जिया भविंसु ते णे समायाते ॥ ९०० ॥ ओसण्णे दट्ठूणं दट्ठा परिहारियत्ति लहुकहणे। कत्थुज्जाणे गुरुओ अदिट्ठ दिट्ठे य लहुगुरुगा ॥ १ ॥ छहुगा उ नियत्ते आलोएंतम्मि छग्गुरू होन्ति। परिहरमाणा विकहं अप्परिहारी भवे छेदो ॥ २ ॥ खाणुगमाई मूलं सव्वे तुब्भेगोऽहंति अणवट्ठो। सव्वे उ बाहिरा पवयणस्स तुब्भेत्ति पारंची ॥ ३ ॥ भण वय दिट्ठणियट्टे आलोयामंति घोडगमुहीउ। किमणुस्सी सव्वेगो सड्ढे बाहिं पवयणस्स ॥ ४ ॥ मासो लहुओ गुरुओ चउरो मासा हवंति लहुगुरुगा। छम्मासा लहुगुरुगा छेदो मूलं तह दुगं च ॥ ५ ॥ गच्छसि ण ताव गच्छं तक्खण वच्चंत पुच्छितो भणइ। वेला ताव ण जायइ परलोगं वावि मोक्खं वा ॥ ६ ॥ कतरिं दिसिं गमिस्ससि? पुव्वं अवरं गतो भणति पुट्ठो। किं वा ण होति पुव्वा इमा दिसा अवरगामस्स? ॥ ७ ॥ अहमेगकुलं गच्छं वच्चह बहुकुलपवेसणे पुट्ठो। भणति कहं दोण्णि कुले एगसरीरेण पविसिस्सं ॥ ८ ॥ वच्चह एगं दव्वं पेच्छं वेगगह पुच्छिओ भणति। गहणं तु लक्खणं पोग्गलाण णऽण्णेसि तेणेगं ॥ ९ ॥ पयलादी तु पदा खलु एमेते वण्णिया समासेणं। लहुगुरुया जाव मुसं लहुसगमेयं मुणे-

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [१०]

दीप अनुक्रम [१०]

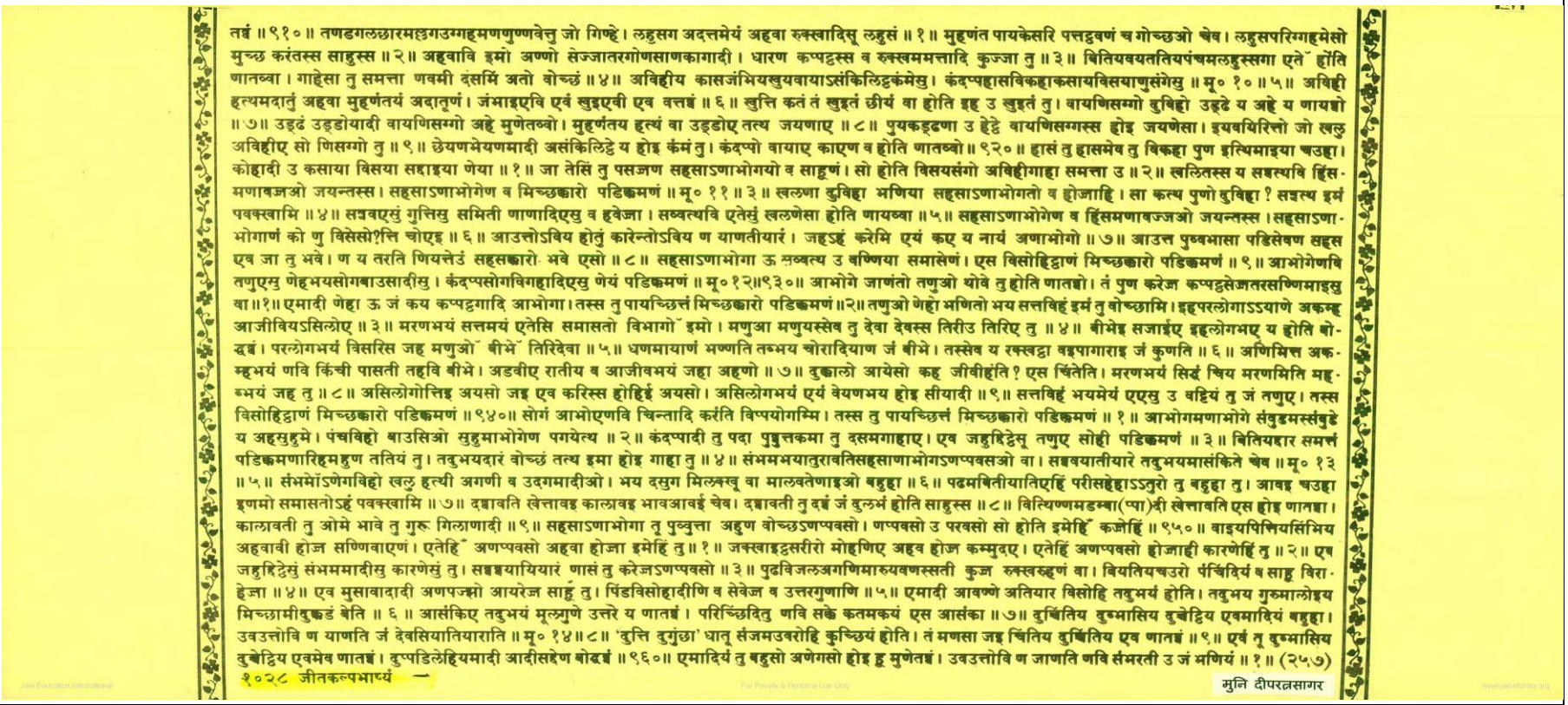

तइं ॥९१०॥ तणडगलछारमल्लगउग्गहमणणुण्णवेत्तु जो गिण्हे। लहुसग अदत्तमेयं अहवा रुक्खादिसु लहुसं ॥१॥ मुहणंत पायकेसरि पत्तट्ठवणं च गोच्छओ चेव। लहुसपरिग्गहमेसो मुच्छ करंतस्स साहुस्स ॥२॥ अहवावि इमो अण्णो सेज्जातरगोणसाणकागादी। धारण कप्पट्टस्स व रुक्खममत्तादि कुज्जा तु ॥३॥ बितियवयततियपंचमलहुस्सगा एते होंति णातव्वा। गाहेसा तु समत्ता णवमी दंसमिं अतो वोच्छं ॥४॥ अविहीय कासजंभियखुयवायाऽसंकिलिट्ठकंमेसु। कंदप्पहासविकहाकसायविसयाणुसंगेसु ॥ मू० १०॥५॥ अविही हत्थमदातुं अहवा मुहणंतयं अदातूणं। जंभाइएवि एवं खुइएवी एव वत्तइं ॥६॥ खुत्ति कतं तं खुइतं छीयं वा होति इह उ खुइतं तु। वायणिसग्गो दुविहो उड्ढे य अहे य णायव्वो ॥७॥ उड्ढं उड्डोयादी वायणिसग्गो अहे मुणेतव्वो। मुहणंतय हत्थं वा उड्डोए तत्थ जयणाए ॥८॥ पुयकड्ढणा उ हेट्ठे वायणिसग्गस्स होइ जयणेसा। इयवयिरित्तो जो खलु अविहीए सो णिसग्गो तु ॥९॥ छेयणभेयणमादी असंकिलिट्ठे य होइ कंमं तु। कंदप्पो वायाए काएण व होति णातव्वो ॥९२०॥ हासं तु हासमेव तु विकहा पुण इत्थिमाइया चउहा। कोहादी उ कसाया विसया सद्दाइया णेया ॥१॥ जा तेसिं तु पसज्जण सहसाऽणाभोगयो व साहूणं। सो होति विसयसंगो अविहीगाहा समत्ता उ ॥२॥ खलितस्स य सव्वत्थवि हिंसमणावज्जओ जयन्तस्स। सहसाऽणाभोगेण व मिच्छक्कारो पडिक्कमणं ॥ मू० ११॥३॥ खलणा दुविहा भणिया सहसाऽणाभोगतो व होज्जाहि। सा कत्थ पुणो दुविहा? सव्वत्थ इमं पवक्खामि ॥४॥ सव्वएसुं गुत्तिसु समिती णाणादिएसु व हवेज्जा। सव्वत्थवि एतेसुं खलणेसा होति णायव्वा ॥५॥ सहसाऽणाभोगेण व हिंसमणावज्जओ जयन्तस्स। सहसाऽणाभोगाणं को णु विसेसो?त्ति चोएइ ॥६॥ आउत्तोऽवियं होतुं कारेन्तोऽवियं ण याणतीयारं। जहऽहं करेमि एयं कए य नायं अणाभोगो ॥७॥ आउत्त पुव्वभासा पडिसेवण सहस एव जा तु भवे। ण य तरति णियत्तेउं सहसक्कारो भवे एसो ॥८॥ सहसाऽणाभोगा ऊ सव्वत्थ उ वण्णिया समासेणं। एस विसोहिट्ठाणं मिच्छक्कारो पडिक्कमणं ॥९॥ आभोगेणवि तणुएसु णेहभयसोगबाउसादीसु। कंदप्पसोगविगहादिएसु णेयं पडिक्कमणं ॥ मू०१२॥९३०॥ आभोगे जाणंतो तणुओ थोवे तु होति णातव्वो। तं पुण करेज्ज कप्पट्ठसेज्जातरसण्णिमाइसु वा ॥१॥ एमादी णेहा ऊ जं कय कप्पट्टगादि आभोगा। तस्स तु पायच्छित्तं मिच्छक्कारो पडिक्कमणं ॥२॥ तणुओ णेहो भणितो भय सत्तविहं इमं तु वोच्छामि। इहपरलोगाऽऽयाणे अकम्ह आजीवियऽसिलोए ॥३॥ मरणभयं सत्तमयं एतेसि समासतो विभागो इमो। मणुआ मणुयस्सेव तु देवा देवस्स तिरीउ तिरिए तु ॥४॥ बीभेइ सजाईए इहलोगभए य होति बोद्धव्वं। परलोगभयं विसरिस जह मणुओ बीभे तिरिदेवा ॥५॥ धणमायाणं भण्णति तब्भय चोरादियाण जं बीभे। तस्सेव य रक्खट्ठा वइपागाराइ जं कुणति ॥६॥ अणिमित्त अकम्हभयं णवि किंची पासती तहवि बीभे। अडवीए रातीय व आजीवभयं जहा अहणो ॥७॥ दुक्कालो आयेसो कह जीवीहंति? एस चिंतेति। मरणभयं सिद्धं चिय मरणमिति मह-ब्भयं जह तु ॥८॥ असिलोगोत्तिइ अयसो जइ एव करिस्स होहिई अयसो। असिलोगभयं एयं वेयणभय होइ सीयादी ॥९॥ सत्तविहं भयमेयं एएसु उ वट्टियं तु जं तणुए। तस्स विसोहिट्ठाणं मिच्छक्कारो पडिक्कमणं ॥९४०॥ सोगं आभोएणवि चिन्तादि करंति विप्पयोगम्मि। तस्स तु पायच्छित्तं मिच्छक्कारो पडिक्कमणं ॥१॥ आभोगमणाभोगे संवुडमस्संवुडे य अहसुहुमे। पंचविहो बाउसिओ सुहुमाभोगेण पगयेत्थ ॥२॥ कंदप्पादी तु पदा पुव्वुत्तकमा तु दसमगाहाए। एव जहुद्दिट्ठेसु तणुए सोही पडिक्कमणं ॥३॥ बितियद्दार समत्तं पडिक्कमणारिहमहुण ततियं तु। तदुभयदारं वोच्छं तत्थ इमा होइ गाहा तु ॥४॥ संभमभयातुरावतिसहसाणाभोगऽणप्पवसओ वा। सव्वयातीयारे तदुभयमासंकिते चेव ॥ मू० १३॥५॥ संभमोऽऽणेगविहो खलु हत्थी अगणी व उदगमादीओ। भय दसुग मिलक्खू वा मालवतेणाइओ बहुहा ॥६॥ पढमबितीयातिएहिं परीसहेहाऽऽतुरो तु बहुहा तु। आवइ चउहा इणमो समासतोऽहं पवक्खामि ॥७॥ दव्वावति खेत्तावइ कालावइ भावआवई चेव। दव्वावती तु दव्वं जं दुल्लभं होति साहुस्स ॥८॥ वित्थिण्णमडम्बा(प्पा)दी खेत्तावति एस होइ णातव्वा। कालावती तु ओमे भावे तु गुरू गिलाणादी ॥९॥ सहसाऽणाभोगा तू पुव्वुत्ता अहुण वोच्छऽणप्पवसो। णप्पवसो उ परवसो सो होति इमेहिं कज्जेहिं ॥९५०॥ वाइयपित्तियसिंभिय अहवावी होज्ज सण्णिवाएणं। एतेहिं अणप्पवसो अहवा होज्जा इमेहिं तु ॥१॥ जक्खाइट्ठसरीरो मोहणिए अहव होज्ज कम्मुदए। एतेहिं अणप्पवसो होज्जाही कारणेहिं तु ॥२॥ एव जहुद्दिट्ठेसुं संभममादीसु कारणेसुं तु। सव्वइयायियारं णासं तु करेज्जऽणप्पवसो ॥३॥ पुढविजलअगणिमारुयवणस्सती कुज्ज रुक्खरुहणं वा। बियतियचउरो पंचिंदियं व साहू विराहेज्जा ॥४॥ एव मुसावादादी अणपज्झो आयरेज्ज साहू तु। पिंडविसोहादीणि व सेवेज्ज व उत्तरगुणाणि ॥५॥ एमादी आवण्णे अतियार विसोहि तदुभयं होति। तदुभय गुरुमाल्लेइय मिच्छामीदुक्कडं देति ॥६॥ आसंकिए तदुभयं मूलगुणे उत्तरे य णातव्वं। परिच्छिंदितु णवि सक्के कतमकयं एस आसंका ॥७॥ दुच्चिंतिय दुब्भासिय दुच्चेट्ठिय एवमादियं बहुहा। उवउत्तोवि ण याणति जं देवसियातियाराति ॥ मू० १४॥८॥ 'दुत्ति दुगुंछा' धातू संजमउवरोहि कुच्छियं होति। तं मणसा जइ चिंतिय दुच्चिंतिय एव णातव्वं ॥९॥ एवं तू दुब्भासिय दुच्चेट्ठिय एवमेव णातव्वं। दुप्पडिलेहियमादी आदीसद्देण बोद्धव्वं ॥९६०॥ एमादियं तु बहुसो अणेगसो होइ हु मुणेतव्वं। उवउत्तोवि ण जाणति णवि संभरती उ जं भणियं ॥१॥ (२५७)

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्र तदुभय-प्रायश्चित वर्णयते

प्रत सूत्रांक [१५] दीप अनुक्रम [१५]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

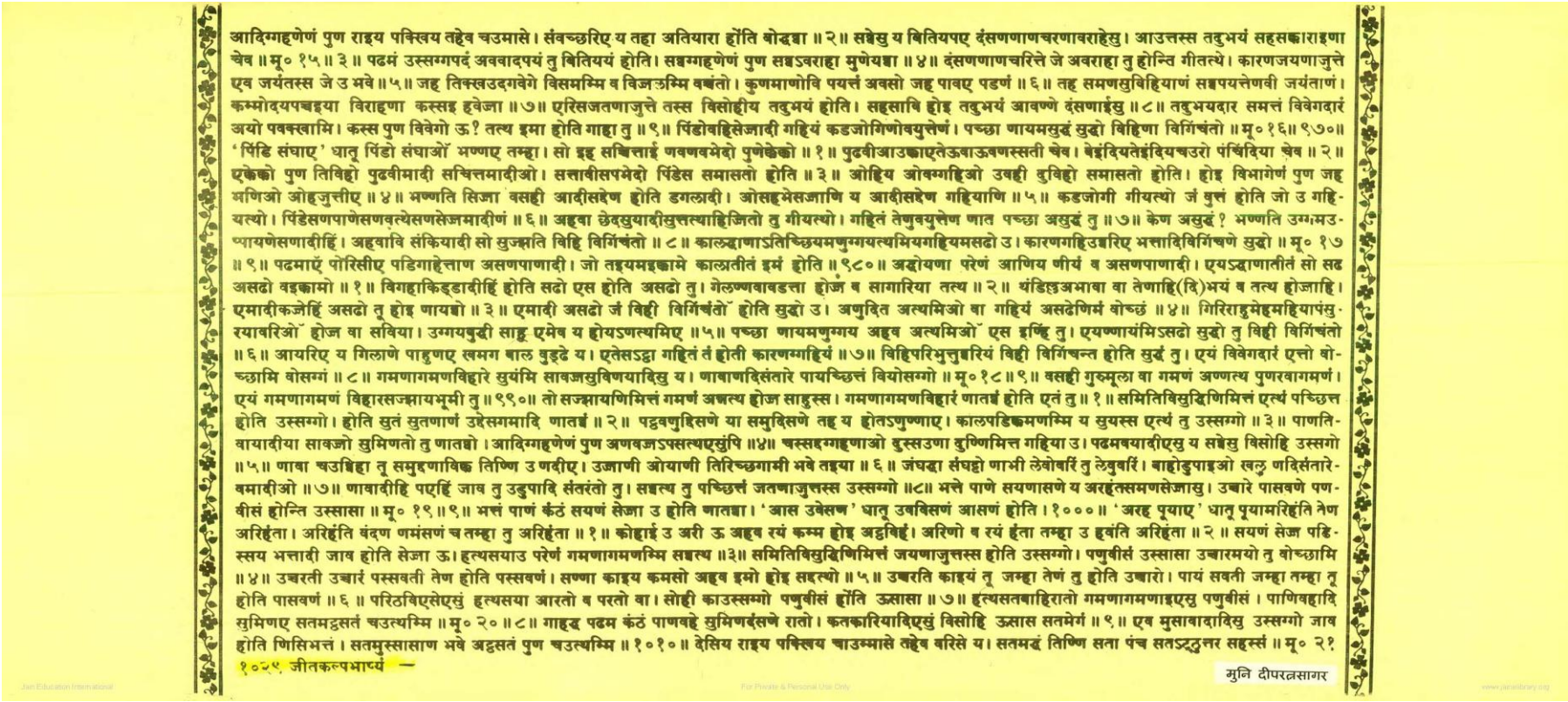

आदिग्गहणेणं पुण राइय पक्खिय तहेव चउमासे। संवच्छरिए य तहा अतियारा होंति बोद्धव्वा ॥२॥ सव्वेसु य वितियपए दंसणणाणचरणावराहेसु। आउत्तस्स तदुभयं सहसक्काराइणा चेव ॥मू० १५॥ ३॥ पढमं उस्सग्गपदं अववादपयं तु बितियय होति। सव्वग्गहणेणं पुण सव्वऽवराहा मुणेयव्वा ॥४॥ दंसणणाणचरित्ते जे अवराहा तु होन्ति गीतत्थे। कारणजयणाजुत्ते एव जयंतस्स जे उ भवे ॥५॥ जह तिक्खउदगवेगे विसमम्मि व विज्जऊम्मि वच्चंतो। कुणमाणोवि पयत्तं अवसो जह पावए पडणं ॥६॥ तह समणसुविहियाणं सव्वपयत्तेणवी जयंताणं। कम्मोदयपच्चइया विराहणा कस्सइ हवेज्जा ॥७॥ एरिसजतणाजुत्ते तस्स विसोहीय तदुभयं होति। सहसावि होइ तदुभयं आवण्णे दंसणाईसु ॥८॥ तदुभयदार समत्तं विवेगदारं अयो पवक्खामि। कस्स पुण विवेगो ऊ? तत्थ इमा होति गाहा तु ॥९॥ पिंडोवहिसेज्जादी गहियं कडजोगिणोवयुत्तेणं। पच्छा णायमसुद्धं सुद्धो विहिणा विगिंचंतो ॥मू०१६॥९७०॥ ‘पिंडि संघाए’ धातू पिंडो संघाओ भण्णए तम्हा। सो इह सचित्ताई णवणवमेदो पुणेक्केक्को ॥१॥ पुढवीआउक्काएतेऊवाऊवणस्सती चेव। बेइंदियतेइंदियचउरो पंचिंदिया चेव ॥२॥ एक्केको पुण तिविहो पुढवीमादी सचित्तमादीओ। सत्तावीसपमेदो पिंडेस समासतो होति ॥३॥ ओहिय ओवग्गहिओ उवही दुविहो समासतो होति। होइ विभागेणं पुण जह भणिओ ओहजुत्तीए ॥४॥ भण्णति सिज्जा वसही आदीसद्देण होति डगलादी। ओसहभेसजाणि य आदीसद्देण गहियाणि ॥५॥ कडजोगी गीयत्थो जं वुत्तं होति जो उ गहियत्थो। पिंडेसणपाणेसणवत्थेसणसेज्जमादीणं ॥६॥ अहवा छेदसुयादीसुत्तत्थाहिजितो तु गीयत्थो। गहितं तेणुवयुत्तेण णात पच्छा असुद्धं तु ॥७॥ केण असुद्धं? भण्णति उग्गमउप्पायणेसणादीहिं। अहवावि संकियादी सो सुज्झति विहि विगिंचंतो ॥८॥ कालद्धाणाऽतिच्छियमणुग्गयत्थमियगहियमसढो उ। कारणगहिउव्वरिए भत्तादिविगिंचणे सुद्धो ॥मू० १७॥९॥ पढमाएँ पोरिसीए पडिगाहेत्ताण असणपाणादी। जो तइयमइक्कामे कालातीतं इमं होति ॥९८०॥ अद्धोयणा परेणं आणिय णीयं व असणपाणादी। एयऽद्धाणातीतं सो सढ असढो वइक्कमो ॥१॥ विगहाकिड्डादीहिं होति सढो एस होति असढो तु। गेलण्णवावडत्ता होज्ज व सागारिया तत्थ ॥२॥ थंडिल्लअभावा वा तेणाहि(दि)भयं व तत्थ होज्जाहि। एमादीकज्जेहिं असढो तू होइ णायव्वो ॥३॥ एमादी असढो जं विहिं विगिंचंतो होति सुद्धो उ। अणुदित अत्थमिओ वा गहियं असढेणिमं वोच्छं ॥४॥ गिरिराहुमेहमहियापंसुरयावरिओ होज्ज वा सविया। उग्गयसुद्धी साहू एमेव य होयऽणत्थमिए ॥५॥ पच्छा णायमणुग्गय अहव अत्थमिओ एस इच्छिं तु। एयण्णायंमिऽसढो सुद्धो तु विहिं विगिंचंतो ॥६॥ आयरिए य गिलाणे पाहुणए खमग बाल वुड्ढे य। एतेसऽट्ठा गहितं तं होती कारणग्गहियं ॥७॥ विहिपरिभुत्तुव्वरियं विहिं विगिंचन्त होति सुद्धं तु। एयं विवेगदारं एत्तो वोच्छामि वोसग्गं ॥८॥ गमणागमणविहारे सुयंमि सावज्जसुविणयादिसु य। णावाणदिसंतारे पायच्छित्तं वियोसग्गो ॥मू०१८॥९॥ वसही गुरुमूला वा गमणं अण्णत्थ पुणरवागमणं। एयं गमणागमणं विहारसज्झायभूमी तु ॥९९०॥ तो सज्झायणिमित्तं गमणं अन्नत्थ होज्ज साहुस्स। गमणागमणविहारं णातव्वं होति एतं तु ॥१॥ समितिविसुद्धिणिमित्तं एत्थं पच्छित्त होति उस्सग्गो। होति सुतं सुतणाणं उद्देसगमादि णातव्वं ॥२॥ पट्ठवणुद्दिसणे या समुद्दिसणे तह य होतऽणुण्णाए। कालपडिक्कमणम्मि य सुयस्स एत्थं तु उस्सग्गो ॥३॥ पाणतिवायादीया सावज्जो सुमिणतो तु णातव्वो। आदिग्गहणेणं पुण अणवज्जऽपसत्थएसुंपि ॥४॥ चस्सद्दग्गहणाओ दुस्सउणा दुण्णिमित्त गहिया उ। पढमवयादीएसु य सव्वेसु विसोहि उस्सगो ॥५॥ णावा चउव्विहा तू समुद्दणाविक्क तिण्णि उ णदीए। उज्जाणी ओयाणी तिरिच्छगामी भवे तइया ॥६॥ जंघद्धा संघट्टो णाभी लेवोवरिं तु लेवुवरिं। बाहोदुपाइओ खलु णदिसंतारेवमादीओ ॥७॥ णावादीहि पएहिं जाव तु उदुपादि संतरंतो तु। सव्वत्थ तु पच्छित्तं जतणाजुत्तस्स उस्सग्गो ॥८॥ भत्ते पाणे सयणासणे य अरहंतसमणसेज्जासु। उच्चारे पासवणे पणवीसं होन्ति उस्सासा ॥मू० १९॥९॥ भत्तं पाणं कंठं सयणं सेज्जा उ होति णातव्वा। ‘आस उवेसण’ धातू उवविसणं आसणं होति। १०००॥ ‘अरह पूयाए’ धातू पूयामरिहंति तेण अरिहंता। अरिहंति वंदण णमंसणं च तम्हा तु अरिहंता ॥१॥ कोहाई उ अरी ऊ अहव रयं कम्म होइ अट्ठविहं। अरिणो व रयं हंता तम्हा उ हवंति अरिहंता ॥२॥ सयणं सेज्ज पडिस्सय भत्तादी जाव होति सेज्जा ऊ। हत्थसयाउ परेणं गमणागमणम्मि सव्वत्थ ॥३॥ समितिविसुद्धिणिमित्तं जयणाजुत्तस्स होति उस्सग्गो। पणुवीसं उस्सासा उच्चारमयो तु वोच्छामि ॥४॥ उच्चरती उच्चारं पस्सवती तेण होति पस्सवणं। सण्णा काइय कमसो अहव इमो होइ सद्दत्थो ॥५॥ उच्चरति काइयं तू जम्हा तेणं तु होति उच्चारो। पायं सवती जम्हा तम्हा तू होति पासवणं ॥६॥ परिठविएसेएसुं हत्थसया आरतो व परतो वा। सोही काउस्सग्गो पणुवीसं होंति ऊसासा ॥७॥ हत्थसतबाहिरातो गमणागमणाइएसु पणुवीसं। पाणिवहादिसुमिणए सतमट्ठसतं चउत्थम्मि ॥मू० २०॥८॥ गाहद्ध पढम कंठं पाणवहे सुमिणदंसणे रातो। कतकारियादिएसुं विसोहि ऊसास सतमेगं ॥९॥ एव मुसावादादिसु उस्सग्गो जाव होति णिसिभत्तं। सतमुस्सासाण भवे अट्ठसतं पुण चउत्थम्मि ॥१०१०॥ देसिय राइय पक्खिय चाउम्मासे तहेव वरिसे य। सतमट्ठं तिण्णि सता पंच सतऽट्ठुत्तर सहस्सं ॥मू० २१॥

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अत्र विवेकार्ह एवं कायोत्सर्ग-प्रायश्चित वर्णयेते

प्रत सूत्रांक [२१] दीप अनुक्रम [२१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

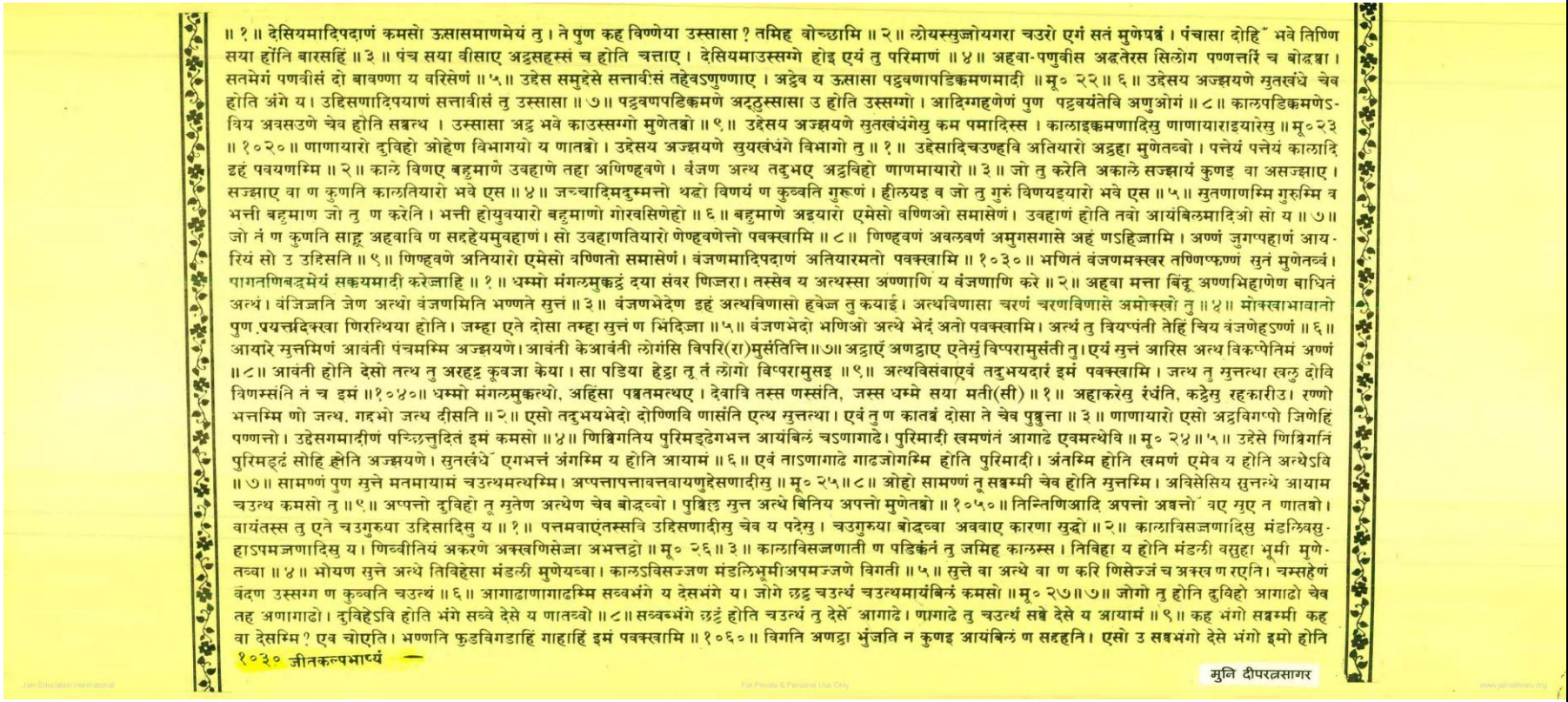

॥ १ ॥ देसियमादिपदाणं कमसो ऊसासमाणमेयं तु । ते पुण कह विण्णेया उस्सासा ? तमिह वोच्छामि ॥ २ ॥ लोयस्सुज्जोयगरा चउरो एगं सतं मुणेपव्वं । पंचासा दोहिं भवे तिण्णि सया होंति बारसहिं ॥ ३ ॥ पंच सया वीसाए अट्ठसहस्सं च होति चत्ताए । देसियमाउस्सग्गे होइ एयं तु परिमाणं ॥ ४ ॥ अहवा-पणुवीस अद्धतेरस सिलोग पण्णत्तरिं च बोद्धव्वा । सतमेगं पणवीसं दो बावण्णा य वरिसेणं ॥ ५ ॥ उद्देस समुद्देसे सत्तावीसं तहेवऽणुण्णाए । अट्ठेव य ऊसासा पट्ठवणापडिक्कमणमादी ॥ मू० २२ ॥ ६ ॥ उद्देसय अज्झयणे सुतखंधे चेव होति अंगे य । उद्दिसणादिपयाणं सत्तावीसं तु उस्सासा ॥ ७ ॥ पट्ठवणपडिक्कमणे अट्ठुस्सासा उ होति उस्सग्गो । आदिग्गहणेणं पुण पट्ठवयंतेवि अणुओगं ॥ ८ ॥ कालपडिक्कमणेऽवि य अवसउणे चेव होति सव्वत्थ । उस्सासा अट्ठ भवे काउस्सग्गो मुणेतव्वो ॥ ९ ॥ उद्देसय अज्झयणे सुतखंधंगेसु कम पमादिस्स । कालाइक्कमणादिसु णाणायाराइयारेसु ॥ मू० २३ ॥ १० २० ॥ णाणायारो दुविहो ओहेण विभागयो य णातव्वो । उद्देसय अज्झयणे सुयखंधंगे विभागो तु ॥ १ ॥ उद्देसादिचउण्हवि अतियारो अट्ठहा मुणेतव्वो । पत्तेयं पत्तेयं कालादि इहं पवयणम्मि ॥ २ ॥ काले विणए बहुमाणे उवहाणे तहा अणिण्हवणे । वंजण अत्थ तदुभए अट्ठविहो णाणमायारो ॥ ३ ॥ जो तु करेति अकाले सज्झायं कुणइ वा असज्झाए । सज्झाए वा ण कुणति कालतियारो भवे एस ॥ ४ ॥ जच्चादिमदुम्मत्तो थद्धो विणयं ण कुव्वति गुरूणं । हीलयइ व जो तु गुरुं विणयइयारो भवे एस ॥ ५ ॥ सुतणाणम्मि गुरुम्मि व भत्ती बहुमाण जो तु ण करेति । भत्ती होयुवयारो बहुमाणो गोरवसिणेहो ॥ ६ ॥ बहुमाणे अइयारो एमेसो वण्णिओ समासेणं । उवहाणं होति तवो आयंबिलमादिओ सो य ॥ ७ ॥ जो तं ण कुणति साहू अहवावि ण सद्दहेयमुवहाणं । सो उवहाणतियारो णेण्हवणेत्तो पवक्खामि ॥ ८ ॥ णिण्हवणं अवलवणं अमुगसगासे अहं णऽहिज्जामि । अण्णं जुगप्पहाणं आयरियं सो उ उद्दिसति ॥ ९ ॥ णिण्हवणे अतियारो एमेसो वण्णितो समासेणं । वंजणमादिपदाणं अतियारमतो पवक्खामि ॥ १० ॥ भणितं वंजणमक्खर तण्णिप्फण्णं सुतं सुणेतव्वं । पागतणिबद्धमेयं सक्कयमादी करेज्जाहि ॥ १ ॥ धम्मो मंगलमुक्कट्ठं दया संवर णिज्जरा । तस्सेव य अत्थस्सा अण्णाणि य वंजणाणि करे ॥ २ ॥ अहवा मत्ता बिंदू अण्णभिहाणेण बाधितं अत्थं । वंजिज्जति जेण अत्थो वंजणमिति भण्णते सुत्तं ॥ ३ ॥ वंजणभेदेण इहं अत्थविणासो हवेज्ज तु कयाई । अत्थविणासा चरणं चरणविणासे अमोक्खो तु ॥ ४ ॥ मोक्खाभावातो पुण पयत्तदिक्खा णिरत्थिया होति । जम्हा एते दोसा तम्हा सुत्तं ण भिंदिज्जा ॥ ५ ॥ वंजणभेदो भणिओ अत्थे भेदं अतो पवक्खामि । अत्थं तु वियप्पंती तेहिं चिय वंजणेहऽण्णं ॥ ६ ॥ आयारे सुत्तमिणं आवंती पंचमम्मि अज्झयणे । आवंती केआवंती लोगंसि विपरि(रा)मुसंतित्ति ॥ ७ ॥ अट्ठाएं अणट्ठाए एतेसुं विप्परामुसंती तु । एयं सुत्तं आरिस अत्थ विकप्पेतिमं अण्णं ॥ ८ ॥ आवंती होति देसो तत्थ तु अरहट्ट कुवजा केया । सा पडिया हेट्ठा तू तं लोगो विप्परामुसइ ॥ ९ ॥ अत्थविसंवाएवं तदुभयदारं इमं पवक्खामि । जत्थ तु सुत्तत्था खलु दोवि विणस्संति तं च इमं ॥ १० ४० ॥ धम्मो मंगलमुक्कत्थो, अहिंसा पव्वतमत्थए । देवावि तस्स णस्संति, जस्स धम्मे सया मती(सी) ॥ १ ॥ अहाकरेसु रंधंति, कट्ठेसु रहकारीउ । रण्णो भत्तम्मि णो जत्थ, गहभो जत्थ दीसति ॥ २ ॥ एसो तदुभयभेदो दोण्णिवि णासंति एत्थ सुत्तत्था । एवं तु ण कातव्वं दोसा ते चेव पुव्वुत्ता ॥ ३ ॥ णाणायारो एसो अट्ठविगप्पो जिणेहिं पण्णत्तो । उद्देसगमादीणं पच्छित्तुदितं इमं कमसो ॥ ४ ॥ णिव्विगतिय पुरिमड्ढेगभत्त आयंबिलं चउणागाढे । पुरिमादी खमणंतं आगाढे एवमत्थेवि ॥ मू० २४ ॥ ५ ॥ उद्देसे णिव्विगतिं पुरिमड्ढं सोहि ह्येति अज्झयणे । सुतखंधे एगभत्तं अंगम्मि य होति आयामं ॥ ६ ॥ एवं ताऽणागाढे गाढजोगम्मि होति पुरिमादी । अंतम्मि होति खमणं एमेव य होति अन्थेऽवि ॥ ७ ॥ सामण्णं पुण सुत्ते मतमायामं चउत्थमत्थम्मि । अप्पत्तापत्तावत्तवायणुद्देसणादीसु ॥ मू० २५ ॥ ८ ॥ ओहो सामण्णं तू सव्वम्मी चेव होति सुत्तम्मि । अविसेसिय सुत्तत्थे आयाम चउत्थ कमसो तु ॥ ९ ॥ अप्पत्तो दुविहो तू सुतेण अत्थेण चेव बोद्धव्वो । पुव्विल्ल सुत्त अत्थे विनिय अपत्तो मुणेतव्वो ॥ १० ५० ॥ तिन्तिणिआदि अपत्तो अवत्तो वए सुए न णातव्वो । वायंतस्स तु एते चउगुरुया उद्दिसादिसु य ॥ १ ॥ पत्तमवाएंतस्सवि उद्दिसणादीसु चेव य पदेसु । चउगुरुया बोद्धव्वा अववाए कारणा सुद्धो ॥ २ ॥ कालाविसज्जणादिसु मंडलिविसु-हाऽपमज्जणादिसु य । णिव्वीतियं अकरणे अक्खणिसेज्जा अभत्तट्ठो ॥ मू० २६ ॥ ३ ॥ कालाविसज्जणाती ण पडिक्कंतं तु जमिह कालस्स । तिविहा य होति मंडली वसुहा भूमी मुणेतव्वा ॥ ४ ॥ भोयण सुत्ते अत्थे तिविहेसा मंडली मुणेयव्वा । कालऽविसज्जण मंडलिभूमीअपमज्जणे विगती ॥ ५ ॥ सुत्ते वा अत्थे वा ण करि णिसेज्जं च अक्ख ण एएति । चम्सहेणं वंदण उस्सग्ग ण कुव्वति चउत्थं ॥ ६ ॥ आगाढाणागाढम्मि सव्वभंगे य देसभंगे य । जोगे छट्ठ चउत्थं चउत्थमायंबिलं कमसो ॥ मू० २७ ॥ ७ ॥ जोगो तु होति दुविहो आगाढो चेव तह अणागाढो । दुविहेऽवि होति भंगे सव्वे देसे य णातव्वो ॥ ८ ॥ सव्वम्भंगे छट्ठं होति चउत्थं तु देसे आगाढे । णागाढे तु चउत्थं सव्वे देसे य आयामं ॥ ९ ॥ कह भंगो सव्वम्मी कह वा देसम्मि ? एव चोएति । भण्णति फुडविगडाहिं गाहाहिं इमं पवक्खामि ॥ १० ६० ॥ विगति अणट्ठा भुंजति न कुणइ आयंबिलं ण सद्दहति । एसो उ सव्वभंगो देसे भंगो इमो होति

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अत्र तप-प्रायश्चित वर्णयते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [२७]

दीप अनुक्रम [२७]

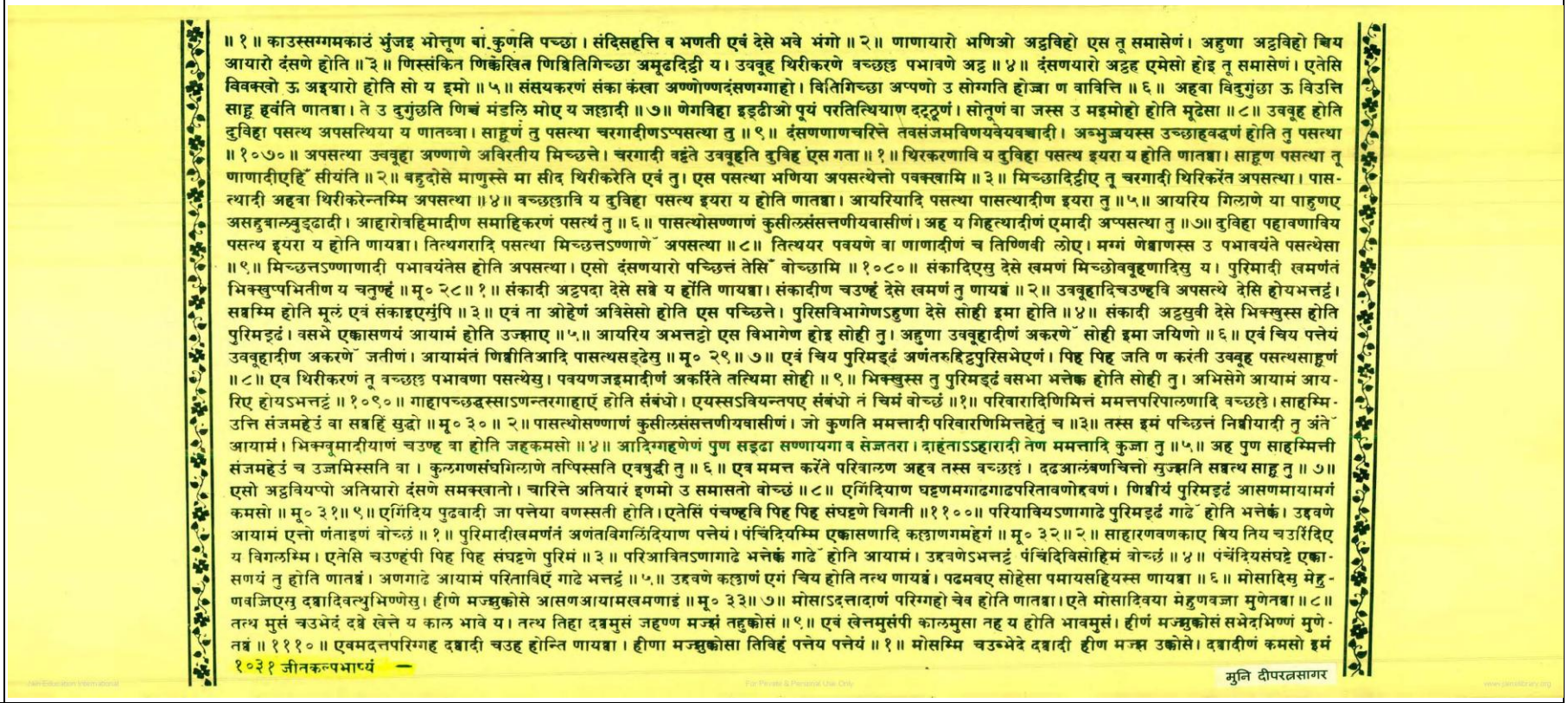

॥ १ ॥ काउस्सग्गमकाउं भुंजइ भोत्तूण वा कुणति पच्छा । संदिसहत्ति व भणती एवं देसे भवे भंगो ॥ २ ॥ णाणायारो भणिओ अट्ठविहो एस तू समासेणं । अहुणा अट्ठविहो चिय आयारो दंसणे होति ॥ ३ ॥ णिस्संकित णिक्कंखित णिव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य । उववूह थिरीकरणे वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥ ४ ॥ दंसणयारो अट्ठह एमेसो होइ तू समासेणं । एतेसि विवक्खो ऊ अइयारो होति सो य इमो ॥ ५ ॥ संसयकरणं संका कंखा अण्णोण्णदंसणग्गाहो । वितिगिच्छा अप्पणो उ सोग्गति होज्जा ण वावित्ति ॥ ६ ॥ अहवा विदुगुंछा ऊ विउत्ति साहू हवंति णातव्वा । ते उ दुगुंछति णिचं मंडलि मोए य जल्लादी ॥ ७ ॥ णेगविहा इड्ढीओ पूयं परतित्थियाण दट्ठूणं । सोतूणं वा जस्स उ मइमोहो होति मूढेसा ॥ ८ ॥ उववूह होति दुविहा पसत्थ अपसत्थिया य णातव्वा । साहूणं तु पसत्था चरगादीणऽप्पसत्था तु ॥ ९ ॥ दंसणणाणचरित्ते तवसंजमविणयवेयवच्चादी । अब्भुज्जयस्स उच्छाहवद्धणं होति तु पसत्था ॥ १०७० ॥ अपसत्था उववूहा अण्णाणे अविरतीय मिच्छत्ते । चरगादी वट्टंते उववूहति दुविह एस गता ॥ १ ॥ थिरकरणावि य दुविहा पसत्थ इयरा य होति णातव्वा । साहूण पसत्था तू णाणादीएहिं सीयंति ॥ २ ॥ बहुदोसे माणुस्से मा सीद थिरीकरेति एवं तु । एस पसत्था भणिया अपसत्थेत्तो पवक्खामि ॥ ३ ॥ मिच्छादिट्ठीए तू चरगादी थिरिकरेंत अपसत्था । पासत्थादी अहवा थिरीकरेन्तम्मि अपसत्था ॥ ४ ॥ वच्छल्लावि य दुविहा पसत्थ इयरा य होति णातव्वा । आयरियादि पसत्था पासत्थादीण इयरा तु ॥ ५ ॥ आयरिय गिलाणे या पाहुणए असहुबालवुड्ढादी । आहारोवहिमादीण समाहिकरणं पसत्थं तु ॥ ६ ॥ पासत्थोसण्णाणं कुसीलसंसत्तणीयवासीणं । अह य गिहत्थादीणं एमादी अप्पसत्था तु ॥ ७ ॥ दुविहा पहावणाविय पसत्थ इयरा य होति णायव्वा । तित्थगरादि पसत्था मिच्छत्तऽण्णाणे अपसत्था ॥ ८ ॥ तित्थयर पवयणे वा णाणादीणं च तिण्णिवी लोए । मग्गं णेव्वाणस्स उ पभावयंते पसत्थेसा ॥ ९ ॥ मिच्छत्तऽण्णाणादी पभावयंतेस होति अपसत्था । एसो दंसणयारो पच्छित्तं तेसिं वोच्छामि ॥ १०८० ॥ संकादिएसु देसे खमणं मिच्छोववूहणादिसु य । पुरिमादी खमणंतं भिक्खुप्पभितीण य चतुण्हं ॥ मू० २८ ॥ १ ॥ संकादी अट्ठपदा देसे सव्वे य होंति णायव्वा । संकादीण चउण्हं देसे खमणं तु णायव्वं ॥ २ ॥ उववूहादिचउण्हवि अपसत्थे देसि होयभत्तट्ठं । सव्वम्मि होति मूलं एवं संकाइएसुंपि ॥ ३ ॥ एवं ता ओहेणं अविसेसो होति एस पच्छित्ते । पुरिसविभागेणऽहुणा देसे सोही इमा होति ॥ ४ ॥ संकादी अट्ठसुवी देसे भिक्खुस्स होति पुरिमड्ढं । वसभे एक्कासणयं आयामं होति उज्झाए ॥ ५ ॥ आयरिय अभत्तट्ठो एस विभागेण होइ सोही तु । अहुणा उववूहादीणं अकरणे सोही इमा जयिणो ॥ ६ ॥ एवं चिय पत्तेयं उववूहादीण अकरणे जतीणं । आयामंतं णिव्वीतिआदि पासत्थसड्ढेसु ॥ मू० २९ ॥ ७ ॥ एवं चिय पुरिमड्ढं अणंतरुद्दिट्ठपुरिसभेएणं । पिहु पिहु जति ण करंती उववूह पसत्थसाहूणं ॥ ८ ॥ एव थिरीकरणं तू वच्छल्ल पभावणा पसत्थेसु । पवयणजइमादीणं अकरिंते तत्थिमा सोही ॥ ९ ॥ भिक्खुस्स तु पुरिमड्ढं वसभा भत्तेक्क होति सोही तु । अभिसेगे आयामं आयरिए होयऽभत्तट्ठं ॥ १०९० ॥ गाहापच्छद्धस्साऽणन्तरगाहाए होति संबंधो । एयस्सऽवियन्तपए संबंधो तं चिमं वोच्छं ॥ १ ॥ परिवारादिणिमित्तं ममत्तपरिपालणादि वच्छल्ले । साहम्मिउत्ति संजमहेउं वा सव्वहिं सुद्धो ॥ मू० ३० ॥ २ ॥ पासत्थोसण्णाणं कुसीलसंसत्तणीयवासीणं । जो कुणति ममत्तादी परिवारणिमित्तहेतुं च ॥ ३ ॥ तस्स इमं पच्छित्तं निव्वीयादी तु अंते आयामं । भिक्खूमादीयाणं चउण्ह वा होति जहकमसो ॥ ४ ॥ आदिग्गहणेणं पुण सड्ढा सण्णायगा व सेज्जतरा । दाहंताऽऽहारादी तेण ममत्तादि कुज्जा तु ॥ ५ ॥ अह पुण साहम्मित्ती संजमहेउं च उज्जमिस्सति वा । कुलगणसंघगिलाणे तप्पिस्सति एवबुद्धी तु ॥ ६ ॥ एव ममत्त करेंते परिवालण अहव तस्स वच्छल्लं । दढआलंबणचित्तो सुज्झति सव्वत्थ साहू तु ॥ ७ ॥ एसो अट्ठवियप्पो अतियारो दंसणे समक्खातो । चारित्ते अतियारं इणमो उ समासतो वोच्छं ॥ ८ ॥ एगिंदियाण घट्टणमगाढगाढपरितावणोद्दवणं । णिव्वीयं पुरिमड्ढं आसणमायामगं कमसो ॥ मू० ३१ ॥ ९ ॥ एगिंदिय पुढवादी जा पत्तेया वणस्सती होति । एतेसिं पंचण्हवि पिहु पिहु संघट्टणे विगती ॥ ११०० ॥ परियाविय ऽणागाढे पुरिमड्ढं गाढे होति भत्तेक्कं । उद्दवणे आयामं एत्तो णंताइणं वोच्छं ॥ १ ॥ पुरिमादीखमणंतं अणंतविगलिंदियाण पत्तेयं । पंचिंदियम्मि एक्कासणादि कल्लाणगमहेगं ॥ मू० ३२ ॥ २ ॥ साहारणवणकाए बिय तिय चउरिंदिए य विगलम्मि । एतेसि चउण्हंपी पिहु पिहु संघट्टणे पुरिमं ॥ ३ ॥ परिआवितऽणागाढे भत्तेक्कं गाढे होति आयामं । उद्दवणेऽभत्तट्ठं पंचिंदिविसोहिमं वोच्छं ॥ ४ ॥ पंचेंदियसंघट्टे एक्कासणयं तु होति णातव्वं । अणगाढे आयामं परितावि एँ गाढे भत्तट्ठं ॥ ५ ॥ उद्दवणे कल्लाणं एगं चिय होति तत्थ णायव्वं । पढमवए सोहेसा पमायसहियस्स णायव्वा ॥ ६ ॥ मोसादिसु मेहुणवज्जिएसु दव्वादिवत्थुभिण्णेसु । हीणे मज्झुक्कोसे आसणआयामखमणाइं ॥ मू० ३३ ॥ ७ ॥ मोसाऽदत्तादाणं परिग्गहो चेव होति णातव्वा । एते मोसादिवया मेहुणवज्जा मुणेतव्वा ॥ ८ ॥ तत्थ मुसं चउभेदं दव्वे खेत्ते य काल भावे य । तत्थ तिहा दव्वमुसं जहण्ण मज्झं तहुक्कोसं ॥ ९ ॥ एवं खेत्तमुसंपी कालमुसा तह य होति भावमुसं । हीणं मज्झुक्कोसं सभेदभिण्णं मुणेतव्वं ॥ १११० ॥ एवमदत्तपरिग्गह दव्वादी चउह होन्ति णायव्वा । हीणा मज्झुक्कोसा तिविहं पत्तेय पत्तेयं ॥ १ ॥ मोसम्मि चउब्भेदे दव्वादी हीण मज्झ उक्कोसे । दव्वादीणं कमसो इमं

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [३३] दीप अनुक्रम [३३]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

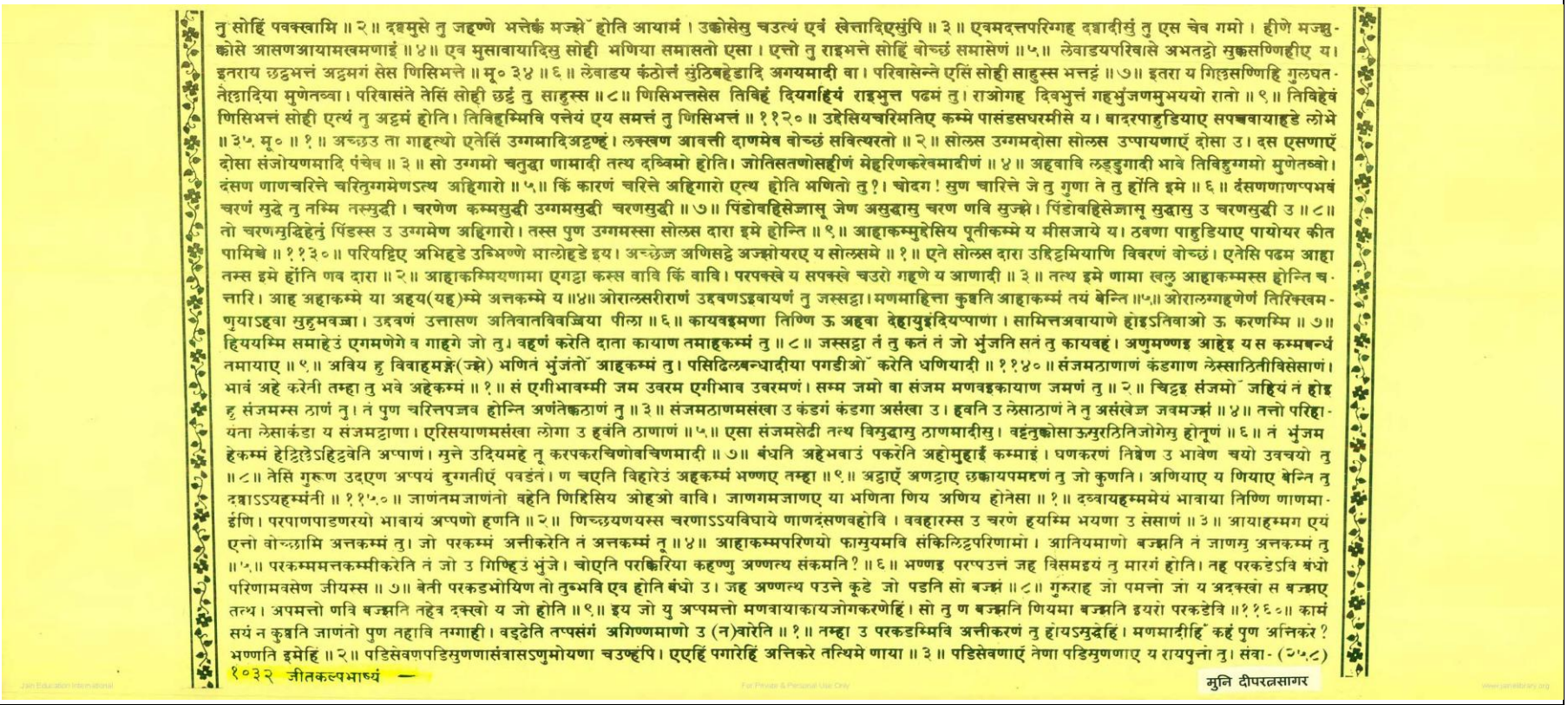

तु सोहिं पवक्खामि ॥ २ ॥ दव्वमुसे तु जहण्णे भत्तेकं मज्झे होति आयामं । उक्कोसेसु चउत्थं एवं खेत्तादिएसुंपि ॥ ३ ॥ एवमदत्तपरिग्गह दव्वादीसुं तु एस चेव गमो । हीणे मज्झुक्कोसे आसणआयामखमणाइं ॥ ४ ॥ एव मुसावायादिसु सोही भणिया समासतो एसा । एत्तो तु राइभत्ते सोहिं वोच्छं समासेणं ॥ ५ ॥ लेवाडयपरिवासे अभत्तट्ठो सुक्कसण्णिहीए य। इतराय छट्ठभत्तं अट्ठमगं सेस णिसिभत्ते ॥ मू० ३४ ॥ ६ ॥ लेवाडय कंठोत्तं सुंठिबहेडादि अगयमादी वा। परिवासेन्ते एसिं सोही साहुस्स भत्तट्ठं ॥ ७ ॥ इतरा य गिहसण्णिहि गुलघतनेहादिया मुणेतव्वा। परिवासंते तेसिं सोही छट्ठं तु साहुस्स ॥ ८ ॥ णिसिभत्तसेस तिविहं दियगहियं राइभुत्त पढमं तु। राओगह दिवभुत्तं गहभुंजणमुभययो रातो ॥ ९ ॥ तिविहेवं णिसिभत्तं सोही एत्थं तु अट्ठमं होति। तिविहम्मिवि पत्तेयं एय समत्तं तु णिसिभत्तं ॥ ११२० ॥ उद्देसियचरिमतिए कम्मे पासंडसधरमीसे य। बादरपाहुडियाए सपच्चवायाहडे लोभे ॥ ३५ मू० ॥ १ ॥ अच्छउ ता गाहत्थो एतेसिं उग्गमादिअट्ठण्हं। लक्खण आवत्ती दाणमेव वोच्छं सवित्थरतो ॥ २ ॥ सोलस उग्गमदोसा सोलस उप्पायणाएँ दोसा उ। दस एसणाएँ दोसा संजोयणमादि पंचेव ॥ ३ ॥ सो उग्गमो चतुद्धा णामादी तत्थ दव्विमो होति। जोतिसतणोसहीणं मेहरिणकरेवमादीणं ॥ ४ ॥ अहवावि लड्डुगादी भावे तिविहुग्गमो मुणेतव्वो। दंसण णाणचरित्ते चरितुग्गमेणऽत्थ अहिगारो ॥ ५ ॥ किं कारणं चरित्ते अहिगारो एत्थ होति भणितो तु?। चोदग! सुण चारित्ते जे तु गुणा ते तु होंति इमे ॥ ६ ॥ दंसणणाणप्पभवं चरणं सुद्धे तु तम्मि तस्सुद्धी। चरणेण कम्मसुद्धी उग्गमसुद्धी चरणसुद्धी ॥ ७ ॥ पिंडोवहिसेज्जासू जेण असुद्धासु चरण णवि सुज्झे। पिंडोवहिसेज्जासू सुद्धासु उ चरणसुद्धी उ ॥ ८ ॥ तो चरणसुद्धिहेतुं पिंडस्स उ उग्गमेण अहिगारो। तस्स पुण उग्गमस्सा सोलस दारा इमे होन्ति ॥ ९ ॥ आहाकम्मुद्देसिय पूतीकम्मे य मीसजाये य। ठवणा पाहुडियाए पायोयर कीत पामिच्चे ॥ ११३० ॥ परियट्टिए अभिहडे उब्भिण्णे मालोहडे इय। अच्छेज्ज अणिसट्ठे अज्झोयरए य सोलसमे ॥ १ ॥ एते सोलस दारा उद्दिट्ठमियाणि विवरणं वोच्छं। एतेसि पढम आहा तम्स इमे होंनि णव दारा ॥ २ ॥ आहाकम्मियणामा एगट्ठा कस्स वावि किं वावि। परपक्खे य सपक्खे चउरो गहणे य आणादी ॥ ३ ॥ तत्थ इमे णामा खलु आहाकम्मस्स होन्ति चत्तारि। आह अहाकम्मे या अहय(यह)म्मे अत्तकम्मे य ॥ ४ ॥ ओरालसरीराणं उद्दवणऽइवायणं तु जस्सट्ठा। मणसाहित्ता कुवति आहाकम्मं तयं बेन्ति ॥ ५ ॥ ओरालग्गहणेणं तिरिक्खमणुयाऽहवा सुहुमवज्जा। उद्दवणं उत्तासण अतिवातविवज्जिया पीला ॥ ६ ॥ कायवइमणा तिण्णि ऊ अहवा देहायुइंदियप्पाणा। सामित्तअवायाणे होइऽनिवाओ ऊ करणम्मि ॥ ७ ॥ हिययम्मि समाहेउं एगमणेगे व गाहगे जो तु। वहणं करेति दाता कायाण तमाहकम्मं तु ॥ ८ ॥ जस्सट्ठा तं तु कतं तं जो भुंजति सतं तु कायवहं। अणुमण्णइ आहेइ य स कम्मबन्धं तमायाए ॥ ९ ॥ अविय हु विवाहमज्झे(ज्झे) भणितं भुंजंतो आहकम्मं तु। पसिदिलबन्धादीया पगडीओ करेति घणियादी ॥ ११४० ॥ संजमठाणाणं कंडगाण लेस्साठितीविसेसाणं। भावं अहे करेती तम्हा तु भवे अहेकम्मं ॥ १ ॥ सं एगीभावम्मी जम उवरम एगीभाव उवरमणं। सम्म जमो वा संजम मणवइकायाण जमणं तु ॥ २ ॥ चिट्ठइ संजमो जहियं तं होइ हु संजमस्स ठाणं तु। तं पुण चरित्तपज्जव होन्ति अणंतेऽठाणं तु ॥ ३ ॥ संजमठाणमसंखा उ कंडगं कंडगा असंखा उ। हवति उ लेसाठाणं ते तु असंखेज्ज जवमज्झं ॥ ४ ॥ तत्तो परिहायंता लेसाकंडा य संजमट्ठाणा। एरिसयाणमसंखा लोगा उ हवंति ठाणाणं ॥ ५ ॥ एसा संजमसेढी तत्थ विसुद्धासु ठाणमादीसु। वट्टंतुक्कोसाऊसुरठितिजोगेसु होतूणं ॥ ६ ॥ तं भुंजमहेकम्मं हेट्ठिट्ठेऽहिट्ठवेति अप्पाणं। मुत्ते उदियमहे तू करपकरचिणोवचिणमादी ॥ ७ ॥ बंधति अहेभवाउं पकरेति अहोमुहाईं कम्माइं। घणकरणं तिव्वेण उ भावेण चयो उवचयो तु ॥ ८ ॥ तेसिं गुरूण उदएण अप्पयं दुग्गतीएं पवडंतं। ण चएति विहारेउं अहकम्मं भण्णए तम्हा ॥ ९ ॥ अट्ठाएं अणट्ठाए छक्कायपमद्दणं तु जो कुणति। अणियाए य णियाए बेन्ति तु दव्वाऽऽयहम्मंती ॥ ११५० ॥ जाणंतमजाणंतो वहेति णिद्दिसिय ओहओ वावि। जाणगमजाणए या भणिता णिय अणिय होतेसा ॥ १ ॥ दव्वायहम्ममेयं भावाया तिण्णि णाणमाईणि। परपाणपाडणरयो भावायं अप्पणो हणति ॥ २ ॥ णिच्छयणयस्स चरणाऽऽयविघाये णाणदंसणवहोवि। ववहारस्स उ चरणे हयम्मि भयणा उ सेसाणं ॥ ३ ॥ आयाहम्मग एयं एत्तो वोच्छामि अत्तकम्मं तु। जो परकम्मं अत्तीकरेति तं अत्तकम्मं तू ॥ ४ ॥ आहाकम्मपरिणयो फासुयमवि संकिलिट्ठपरिणामो। आनियमाणो बज्झति तं जाणसु अत्तकम्मं तु ॥ ५ ॥ परकम्ममत्तकम्मीकरेति तं जो उ गिण्हिउं भुंजे। चोएति परकिरिया कहण्णु अण्णत्थ संकमति? ॥ ६ ॥ भण्णइ परप्पउत्तं जह विसमइयं तु मारगं होति। तह परकडेऽवि बंधो परिणामवसेण जीयस्स ॥ ७ ॥ बेती परकडभोयिण तो तुब्भवि एव होति बंधो उ। जह अण्णत्थ पउत्ते कूडे जो पडति सो बज्झं ॥ ८ ॥ गुरुराह जो पमत्तो जो य अदक्खो स बज्झए तत्थ। अपमत्तो णवि बज्झति तहेव दक्खो य जो होति ॥ ९ ॥ इय जो यु अप्पमत्तो मणवायाकायजोगकरणेहिं। सो तु ण बज्झति णियमा बज्झति इयरो परकडेवि ॥ ११६० ॥ कामं सयं न कुव्वति जाणंतो पुण तहावि तग्गाही। वड्ढेति तप्पसंगं अगिण्णमाणो उ (न)वारेति ॥ १ ॥ तम्हा उ परकडम्मिवि अत्तीकरणं तु होयऽमुद्देहिं। मणमादीहिं कहं पुण अत्तिकरे? भण्णति इमेहिं ॥ २ ॥ पडिसेवणपडिसुणणासंवासऽणुमोयणा चउण्हंपि। एएहिं पगारेहिं अत्तिकरे तत्थिमे णाया ॥ ३ ॥ पडिसेवणाएं तेणा पडिसुणणाए य रायपुत्तो तु। संवा- (२५८)

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [३५]

दीप अनुक्रम [३५]

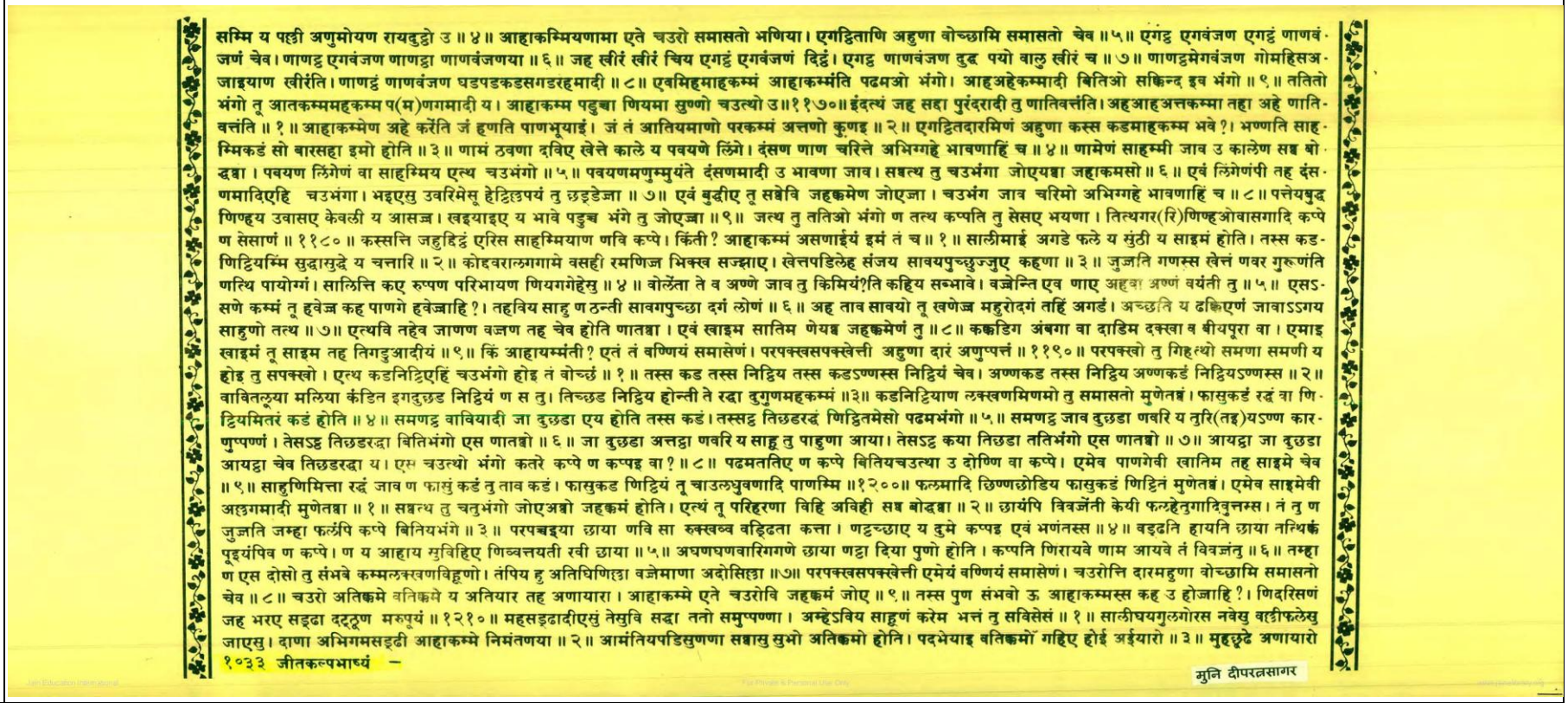

सम्मि य पक्षी अणुमोयण रायदुट्ठो उ ॥ ४ ॥ आहाकम्मियणामा एते चउरो समासतो भणिया। एगट्ठिताणि अहुणा वोच्छामि समासतो चेव ॥५॥ एगट्ठ एगवंजण एगट्ठं णाणवं-
जणं चेव। णाणट्ठ एगवंजण णाणट्ठा णाणवंजणया ॥ ६ ॥ जह खीरं खीरं चिय एगट्ठं एगवंजणं दिट्ठं। एगट्ठ णाणवंजण दुद्ध पयो वालु खीरं च ॥ ७ ॥ णाणट्ठमेगवंजण गोमहिसअ-
जाइयाण खीरंति। णाणट्ठं णाणवंजण घडपडकडसगडरहमादी ॥ ८ ॥ एवमिहमाहकम्मं आहाकम्मंति पदमओ भंगो। आहअहेकम्मादी बितिओ सक्किन्द इव भंगो ॥ ९ ॥ ततितो
भंगो तू आतकम्ममहकम्म प(म)णगमादी य। आहाकम्म पडुच्चा णियमा सुण्णो चउत्थो उ॥११७०॥ इंदत्थं जह सद्दा पुरंदरादी तु णातिवत्तंति। अहआहअत्तकम्मा तहा अहे णाति-
वत्तंति ॥ १ ॥ आहाकम्मेण अहे करेंति जं हणति पाणभूयाइं। जं तं आतियमाणो परकम्मं अत्तणो कुणइ ॥ २ ॥ एगट्ठितदारमिणं अहुणा कस्स कडमाहकम्म भवे ?। भण्णति साह-
म्मिकडं सो वारसहा इमो होति ॥ ३ ॥ णामं ठवणा दविए खेत्ते काले य पवयणे लिंगे। दंसण णाण चरित्ते अभिग्गहे भावणाहिं च ॥ ४ ॥ णामेणं साहम्मी जाव उ कालेण सइ बो-
द्धव्वा। पवयण लिंगेणं वा साहम्मिय एत्थ चउभंगो ॥ ५ ॥ पवयणमणुम्मुयंते दंसणमादी उ भावणा जाव। सव्वत्थ तु चउभंगा जोएयव्वा जहाकमसो ॥ ६ ॥ एवं लिंगेणंपी तह दंस-
णमादिएहि चउभंगा। भइएसु उवरिमेसू हेट्ठिल्लपयं तु छड्डेज्जा ॥ ७ ॥ एवं बुद्धीए तू सव्वेवि जहक्कमेण जोएज्जा। चउभंग जाव चरिमो अभिग्गहे भावणाहिं च ॥ ८ ॥ पत्तेयबुद्ध
णिण्हय उवासए केवली य आसज्ज। खइयाइए य भावे पडुच्च भंगे तु जोएज्जा ॥ ९ ॥ जत्थ तु ततिओ भंगो ण तत्थ कप्पति तु सेसए भयणा। तित्थगर(रि)णिण्हओवासगादि कप्पे
ण सेसाणं ॥ ११८० ॥ कस्सत्ति जहुद्दिट्ठं एरिस साहम्मियाण णवि कप्पे। किंती ? आहाकम्मं असणाईयं इमं तं च ॥ १ ॥ सालीमाई अगडे फले य सुंठी य साइमं होति। तस्स कड-
णिट्ठियम्मि सुद्धासुद्धे य चत्तारि ॥ २ ॥ कोद्दवरालगगामे वसही रमणिज्ज भिक्ख सज्झाए। खेत्तपडिलेह संजय सावयपुच्छुज्जुए कहणा ॥ ३ ॥ जुज्जति गणस्स खेत्तं णवर गुरूणंति
णत्थि पायोग्गं। सालित्ति कए रुप्पण परिभायण णियगगेहेसु ॥ ४ ॥ वोलेंता ते व अण्णे जाव तु किमियं?ति कहिय सब्भावे। वज्जेन्ति एव णाए अहवा अण्णं वयंती तु ॥ ५ ॥ एसऽ-
सणे कम्मं तू हवेज्ज कह पाणगे हवेज्जाहि ?। तहविय साहु ण ठन्ती सावगपुच्छा दगं लोणं ॥ ६ ॥ अह ताव सावयो तू खणेज्ज महुरोदगं तहिं अगडं। अच्छंति य ढक्किएणं जावाऽऽगय
साहुणो तत्थ ॥ ७ ॥ एत्थवि तहेव जाणण वज्जण तह चेव होति णातव्वा। एवं खाइम सातिम णेयव्व जहक्कमेणं तु ॥ ८ ॥ कक्कडिग अंबगा वा दाडिम दक्खा व बीयपूरा वा। एमाइ
खाइमं तू साइम तह तिगडुआदीयं ॥ ९ ॥ किं आहायम्मंती ? एतं तं वण्णियं समासेणं। परपक्खसपक्खेत्ती अहुणा दारं अणुप्पत्तं ॥ ११९० ॥ परपक्खो तु गिहत्थो समणा समणी य
होइ तु सपक्खो। एत्थ कडनिट्ठिएहिं चउभंगो होइ तं वोच्छं ॥ १ ॥ तस्स कड तस्स निट्ठिय तस्स कडऽण्णस्स निट्ठियं चेव। अण्णकड तस्स निट्ठिय अण्णकडं निट्ठियऽण्णस्स ॥ २ ॥
वावितलूया मलिया कंडित इगदुछड निट्ठियं ण स तु। तिच्छड निट्ठिय होन्ती ते रद्धा दुगुणमहकम्मं ॥३॥ कडनिट्ठियाण लक्खणमिणमो तु समासतो मुणेतव्वं। फासुकडं रद्धं वा णि-
ट्ठियमितरं कडं होति ॥ ४ ॥ समणट्ठ वावियादी जा दुछडा एय होति तस्स कडं। तस्सट्ठ तिछडरद्धं णिट्ठितमेसो पढमभंगो ॥ ५ ॥ समणट्ठ जाव दुछडा णवरि य तुरि(तइ)यऽण्ण कार-
णुप्पण्णं। तेसऽट्ठ तिछडरद्धा बितिभंगो एस णातव्वो ॥ ६ ॥ जा दुछडा अत्तट्ठा णवरि य साहू तु पाहुणा आया। तेसऽट्ठ कया तिछडा ततिभंगो एस णातव्वो ॥ ७ ॥ आयट्ठा जा दुछडा
आयट्ठा चेव तिछडरद्धा य। एस चउत्थो भंगो कतरे कप्पे ण कप्पइ वा ? ॥ ८ ॥ पढमततिए ण कप्पे बितियचउत्था उ दोण्णि वा कप्पे। एमेव पाणगेवी खातिम तह साइमे चेव
॥ ९ ॥ साहुणिमित्ता रद्धं जाव ण फासुं कडं तु ताव कडं। फासुकड णिट्ठियं तू चाउलधुवणादि पाणम्मि ॥१२००॥ फलमादि छिण्णछोडिय फासुकडं णिट्ठितं मुणेतव्वं। एमेव साइमेवी
अट्ठगमादी मुणेतव्वा ॥ १ ॥ सव्वत्थ तु चतुभंगो जोएअव्वो जहक्कमं होति। एत्थं तू परिहरणा विहि अविही सव्व बोद्धव्वा ॥ २ ॥ छायंपि विवज्जेंती केयी फलहेतुगादिवुत्तम्स। तं तु ण
जुज्जति जम्हा फलंपि कप्पे बितियभंगे ॥ ३ ॥ परपच्चइया छाया णवि सा रुक्खव्व वड्ढिता कत्ता। णट्ठच्छाए य दुमे कप्पइ एवं भणंतस्स ॥ ४ ॥ वड्ढति हायति छाया नत्थिक्क
पूइयंपिव ण कप्पे। ण य आहाय सुविहिए णिव्वत्तयती रवी छाया ॥ ५ ॥ अघणघणवारिगगणे छाया णट्ठा दिया पुणो होति। कप्पति णिरायवे णाम आयवे तं विवज्जंतु ॥ ६ ॥ तम्हा
ण एस दोसो तु संभवे कम्मलक्खणविहूणो। तंपिय हु अतिधिणिट्ठा वज्जेमाणा अदोसिट्ठा ॥७॥ परपक्खसपक्खेत्ती एमेयं वण्णियं समासेणं। चउरोत्ति दारमहुणा वोच्छामि समासतो
चेव ॥ ८ ॥ चउरो अतिक्कमे वतिक्कमे य अतियार तह अणायारा। आहाकम्मे एते चउरोवि जहक्कमं जोए ॥ ९ ॥ तस्स पुण संभवो ऊ आहाकम्मस्स कह उ होज्जाहि ?। णिदरिसणं
जह भरए सड्ढा दट्ठूण मरुपुयं ॥ १२१० ॥ महसड्ढादीएसुं तेसुवि सद्धा ततो समुप्पण्णा। अम्हेऽविय साहूणं करेम भत्तं तु सविसेसं ॥ १ ॥ सालीघयगुलगोरस नवेसु वाडीफलेसु
जाएसु। दाणा अभिगमसड्ढी आहाकम्मे निमंतणया ॥ २ ॥ आमंतियपडिसुणणा सव्वासु सुभो अतिक्कमो होति। पदभेयाइ वतिक्कमो गहिए होई अईयारो ॥ ३ ॥ मुहछूढे अणायारो

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [३५] दीप अनुक्रम [३५]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

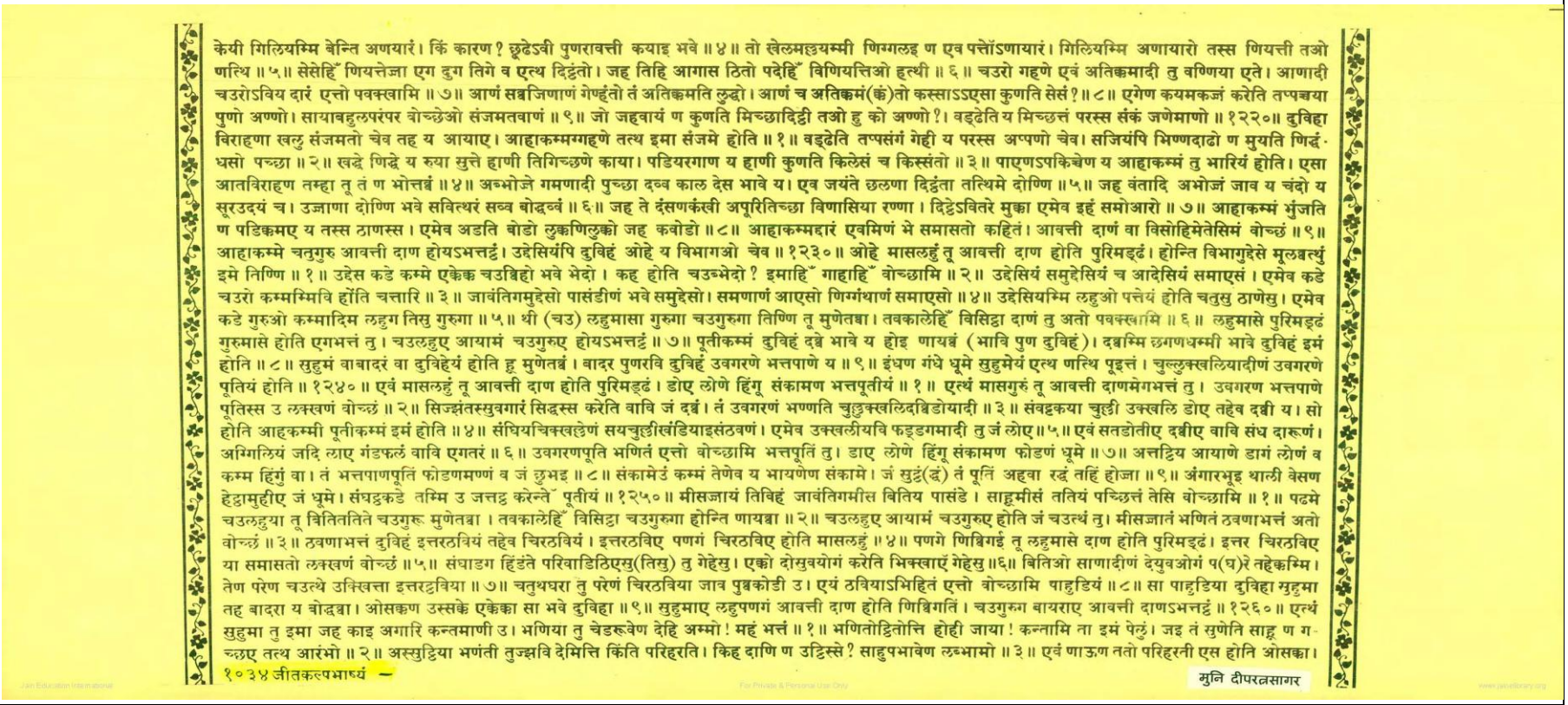

केयी गिलियम्मि बेन्ति अणयारं। किं कारण? छूढेऽवी पुणरावत्ती कयाइ भवे ॥ ४॥ तो खेलमल्लयम्मी णिग्गलइ ण एव पत्तोऽणायारं। गिलियम्मि अणायारो तस्स णियत्ती तओ णत्थि ॥ ५॥ सेसेहिँ णियत्तेज्जा एग दुग तिगे व एत्थ दिट्ठंतो। जह तिहि आगास ठितो पदेहिँ विणियत्तिओ हत्थी ॥ ६॥ चउरो गहणे एवं अतिक्कमादी तु वण्णिया एते। आणादी चउरोऽविय दारं एत्तो पवक्खामि ॥ ७॥ आणं सव्वजिणाणं गेण्हंतो तं अतिक्कमति लुद्धो। आणं च अतिक्कमं(कं)तो कस्साऽऽएसा कुणति सेसं? ॥ ८॥ एगेण कयमकज्जं करेति तप्पच्चया पुणो अण्णो। सायावहुलपरंपर वोच्छेओ संजमतवाणं ॥ ९॥ जो जहवायं ण कुणति मिच्छादिट्ठी तओ हु को अण्णो?। वड्ढेति य मिच्छत्तं परस्स संकं जणेमाणो ॥ १२२०॥ दुविहा विराहणा खलु संजमतो चेव तह य आयाए। आहाकम्मग्गहणे तत्थ इमा संजमे होति ॥ १॥ वड्ढेति तप्पसंगं गेही य परस्स अप्पणो चेव। सजियंपि भिण्णदाढो ण मुयति णिद्दं-धसो पच्छा ॥ २॥ खद्धे णिद्धे य रुया सुत्ते हाणी तिगिच्छणे काया। पडियरगाण य हाणी कुणति किलेसं च किस्संतो ॥ ३॥ पाएणऽपकिच्चेण य आहाकम्मं तु भारियं होति। एसा आतविराहण तम्हा तू तं ण भोत्तव्वं ॥ ४॥ अब्भोजे गमणादी पुच्छा दव्व काल देस भावे य। एव जयंते छलणा दिट्ठंता तत्थिमे दोण्णि ॥ ५॥ जह वंतादि अभोज्जं जाव य चंदो य सूरउदयं च। उज्जाणा दोण्णि भवे सवित्थरं सव्व बोद्धव्वं ॥ ६॥ जह ते दंसणकंखी अपूरितिच्छा विणासिया रण्णा। दिट्ठेऽवितरे मुक्का एमेव इहं समोआरो ॥ ७॥ आहाकम्मं भुंजति ण पडिक्कमए य तस्स ठाणस्स। एमेव अडति बोडो लुक्कणिलुक्को जह कवोडो ॥ ८॥ आहाकम्मदारं एवमिणं मे समासतो कहितं। आवत्ती दाणं वा विसोहिमेतेसिमं वोच्छं ॥ ९॥ आहाकम्मे चतुगुरु आवत्ती दाण होयऽभत्तट्ठं। उद्देसियंपि दुविहं ओहे य विभागओ चेव ॥ १२३०॥ ओहे मासलहुं तू आवत्ती दाण होति पुरिमड्ढं। होन्ति विभागुद्देसे मूलबत्थुं इमे तिण्णि ॥ १॥ उद्देस कडे कम्मे एक्केक चउव्विहो भवे भेदो। कह होति चउब्भेदो? इमाहिँ गाहाहिँ वोच्छामि ॥ २॥ उद्देसियं समुद्देसियं च आदेसियं समाएसं। एमेव कडे चउरो कम्मम्मिवि होंति चत्तारि ॥ ३॥ जावंतिगमुद्देसो पासंडीणं भवे समुद्देसो। समणाणं आएसो णिग्गंथाणं समाएसो ॥ ४॥ उद्देसियम्मि लहुओ पत्तेयं होति चतुसु ठाणेसु। एमेव कडे गुरुओ कम्मादिम लहुग तिसु गुरुगा ॥ ५॥ थी (चउ) लहुमासा गुरुगा चउगुरुगा तिण्णि तू मुणेतव्वा। तवकालेहिँ विसिट्ठा दाणं तु अतो पवक्खामि ॥ ६॥ लहुमासे पुरिमड्ढं गुरुमासे होति एगभत्तं तु। चउलहुए आयामं चउगुरुए होयऽभत्तट्ठं ॥ ७॥ पूतीकम्मं दुविहं दव्वे भावे य होइ णायव्वं (भावि पुण दुविहं)। दव्वम्मि छगणधम्मी भावे दुविहं इमं होति ॥ ८॥ सुहुमं वाबादरं वा दुविहेयं होति हू मुणेतव्वं। बादर पुणरवि दुविहं उवगरणे भत्तपाणे य ॥ ९॥ इंधण गंधे धूमे सुहुमेयं एत्थ णत्थि पूइत्तं। चुल्लुक्खलियादीणं उवगरणे पूतियं होति ॥ १२४०॥ एवं मासलहुं तू आवत्ती दाण होति पुरिमड्ढं। डोए लोणे हिंगू संकामण भत्तपूतीयं ॥ १॥ एत्थं मासगुरुं तू आवत्ती दाणमेगभत्तं तु। उवगरण भत्तपाणे पूतिस्स उ लक्खणं वोच्छं ॥ २॥ सिज्झंतस्सुवगारं सिद्धस्स करेति वावि जं दव्वं। तं उवगरणं भण्णति चुल्लुक्खलिदव्विडोयादी ॥ ३॥ संवट्टकया चुल्ली उक्खलि डोए तहेव दव्वी य। सो होति आहकम्मी पूतीकम्मं इमं होति ॥ ४॥ संघियचिक्खल्लेणं सयचुल्लीखंडियाइसंठवणं। एमेव उक्खलीयवि फड्डगमादी तु जं लोए॥ ५॥ एवं सतडोतीए दबीए वावि संध दारूणं। अग्गिल्यिं जदि लाए गंडफलं वावि एगतरं ॥ ६॥ उवगरणपूति भणितं एत्तो वोच्छामि भत्तपूतिं तु। डाए लोणे हिंगू संकामण फोडणं धूमे ॥ ७॥ अत्तट्ठिय आयाणे डागं लोणं व कम्म हिंगुं वा। तं भत्तपाणपूतिं फोडणमण्णं व जं छुभइ ॥ ८॥ संकामेउं कम्मं तेणेव य भायणेण संकामे। जं सुट्ठु(द्धं) तं पूतिं अहवा रद्धं तहिं होजा ॥ ९॥ अंगारभूइ थाली वेसण हेट्ठामुहीए जं धूमे। संघट्टकडे तम्मि उ जत्तट्ठ करेन्ते पूतीयं ॥ १२५०॥ मीसजायं तिविहं जावंतिगमीस वितिय पासंडे। साहूमीसं ततियं पच्छित्तं तेसि वोच्छामि ॥ १॥ पढमे चउलहुया तू वितिततिते चउगुरू मुणेतव्वा। तवकालेहिँ विसिट्ठा चउगुरुगा होन्ति णायव्वा ॥ २॥ चउलहुए आयामं चउगुरुए होति जं चउत्थं तु। मीसजातं भणितं ठवणाभत्तं अतो वोच्छं ॥ ३॥ ठवणाभत्तं दुविहं इत्तरठवियं तहेव चिरठवियं। इत्तरठविए पणगं चिरठविए होति मासलहुं ॥ ४॥ पणगे णिब्बिगई तू लहुमासे दाण होति पुरिमड्ढं। इत्तर चिरठविए या समासतो लक्खणं वोच्छं ॥ ५॥ संघाडग हिंडंते परिवाडिठिएसु(तिसु) तु गेहेसु। एक्को दोसुवयोगं करेति भिक्खाएँ गेहेसु ॥ ६॥ बितिओ साणादीणं देयुवओगं प(घ)रे तहेक्कम्मि। तेण परेण चउत्थे उक्खित्ता इत्तरट्ठविया ॥ ७॥ चतुथघरा तु परेणं चिरठविया जाव पुव्वकोडी उ। एयं ठवियाऽभिहितं एत्तो वोच्छामि पाहुडियं ॥ ८॥ सा पाहुडिया दुविहा सुहुमा तह बादरा य वोद्धव्वा। ओसक्कण उस्सक्के एक्केका सा भवे दुविहा ॥ ९॥ सुहुमाए लहुपणगं आवत्ती दाण होति णिब्बिगतिं। चउगुरुग बायराए आवत्ती दाणऽभत्तट्ठं ॥ १२६०॥ एत्थं सुहुमा तु इमा जह काइ अगारि कन्तमाणी उ। भणिया तु चेडरूवेण देहि अम्मो! महं भत्तं ॥ १॥ भणितोट्टितोत्ति होही जाया! कन्नामि ता इमं पेलुं। जइ तं सुणेति साहू ण ग-च्छए तत्थ आरंभो ॥ २॥ अस्सुट्टिया भणंती तुज्झवि देमित्ति किंति परिहरति। किह दाणि ण उट्टिस्से? साहुपभावेण लब्भामो ॥ ३॥ एवं णाऊण ततो परिहरती एस होति ओसक्का।

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [३५] दीप अनुक्रम [३५]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

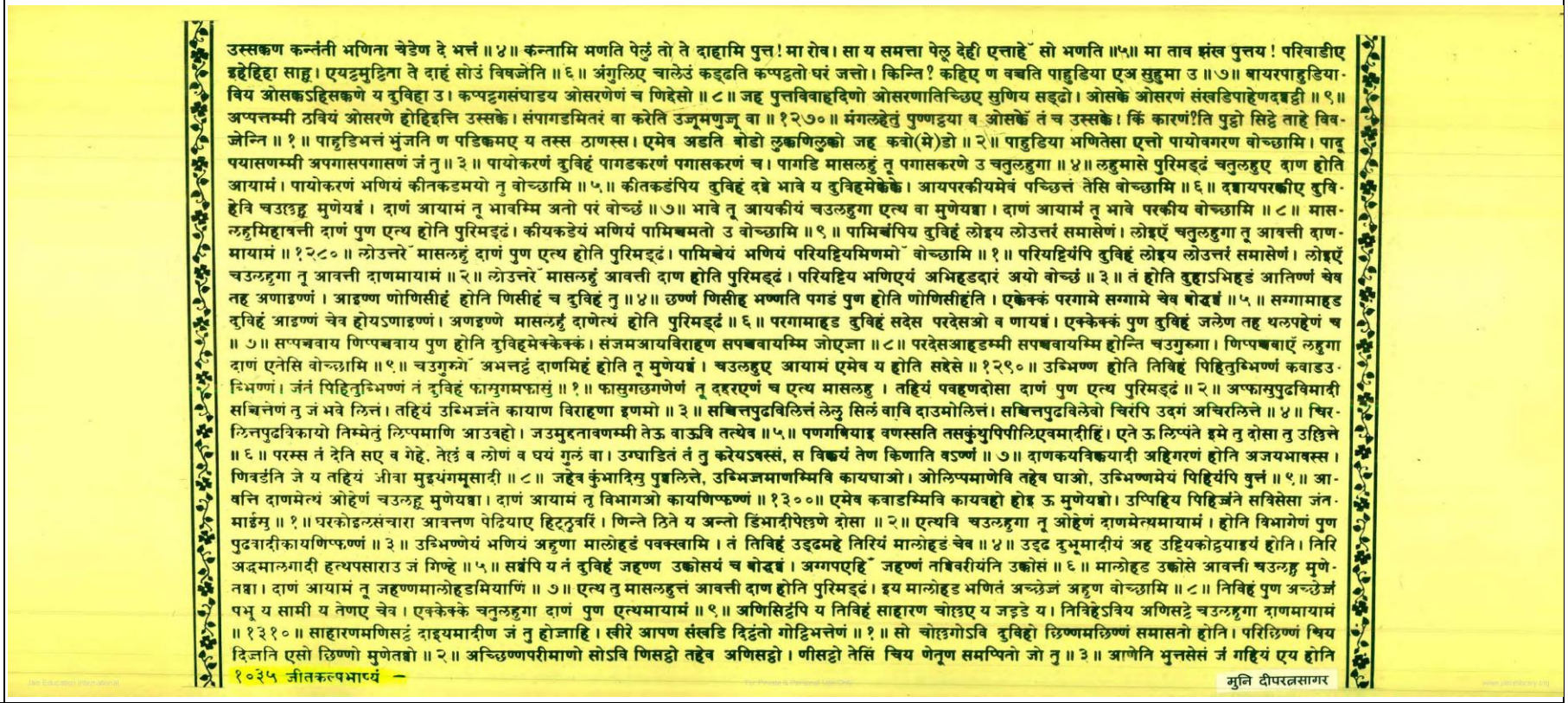

उस्सक्कण कन्तंती भणिता चेडेण दे भत्तं ॥४॥ कन्तामि भणति पेलुं तो ते दाहामि पुत्त! मा रोव। सा य समत्ता पेलू देही एत्ताहे सो भणति ॥५॥ मा ताव झंख पुत्तय! परिवाडीए डहेहिहा साहू। एयट्ठमुट्ठिता ते दाहं सोउं विधजेंति ॥६॥ अंगुलिए चालेउं कड्ढति कप्पट्टतो घरं जत्तो। किन्ति? कहिए ण वच्चति पाहुडिया एअ सुहुमा उ ॥७॥ बायरपाहुडिया-विय ओसक्कऽहिसक्कणे य दुविहा उ। कप्पट्ठगसंघाडय ओसरणेणं च णिदेसो ॥८॥ जह पुत्तविवाहदिणो ओसरणातिच्छिए सुणिय सड्ढो। ओसक्के ओसरणं संखडिपाहेणदड्ढी ॥९॥ अप्पत्तम्मी ठवियं ओसरणे होहिइत्ति उस्सक्के। संपागडमितरं वा करेति उज्जूमणुज्जू वा ॥१२७०॥ मंगलहेतुं पुण्णट्ठया व ओसक्के तं च उस्सक्के। किं कारणं?ति पुट्ठो सिट्ठे ताहे विव-जेन्ति ॥१॥ पाहुडिभत्तं भुंजति ण पडिक्कमए य तस्स ठाणस्स। एमेव अडति वोडो लुक्कणिलुक्को जह कवो(मे)डो ॥२॥ पाहुडिया भणितेसा एत्तो पायोवगरण वोच्छामि। पादू पयासणम्मी अपगासपगासणं जं तु ॥३॥ पायोकरणं दुविहं पागडकरणं पगासकरणं च। पागडि मासलहुं तू पगासकरणे उ चतुलहुगा ॥४॥ लहुमासे पुरिमड्ढं चतुलहुए दाण होति आयामं। पायोकरणं भणियं कीतकडमयो तु वोच्छामि ॥५॥ कीतकडंपिय दुविहं दव्वे भावे य दुविहमेक्केक्के। आयपरकीयमेवं पच्छित्तं तेसि वोच्छामि ॥६॥ दव्वायपरकीए दुवि-हेवि चउलहु मुणेयव्वं। दाणं आयामं तू भावम्मि अतो परं वोच्छं ॥७॥ भावे तू आयकीयं चउलहुगा एत्थ वा मुणेयव्वा। दाणं आयामं तू भावे परकीय वोच्छामि ॥८॥ मास-लहुमिहावत्ती दाणं पुण एत्थ होति पुरिमड्ढं। कीयकडेयं भणियं पामिच्चमतो उ वोच्छामि ॥९॥ पामिच्चंपिय दुविहं लोइय लोउत्तरं समासेणं। लोइएँ चतुलहुगा तू आवत्ती दाण-मायामं ॥१२८०॥ लोउत्तरे मासलहुं दाणं पुण एत्थ होति पुरिमड्ढं। पामिच्चेयं भणियं परियट्टियमिणमो वोच्छामि ॥१॥ परियट्टियंपि दुविहं लोइय लोउत्तरं समासेणं। लोइएँ चउलहुगा तू आवत्ती दाणमायामं ॥२॥ लोउत्तरे मासलहुं आवत्ती दाण होति पुरिमड्ढं। परियट्टिय भणिएयं अभिहडदारं अयो वोच्छं ॥३॥ तं होति दुहाऽभिहडं आतिण्णं चेव तह अणाइण्णं। आइण्ण णोणिसीहं होनि णिसीहं च दुविहं तु ॥४॥ छण्णं णिसीह भण्णति पगडं पुण होति णोणिसीहंति। एक्केक्कं परगामे सग्गामे चेव बोद्धव्वं ॥५॥ सग्गामाहड दुविहं आइण्णं चेव होयऽणाइण्णं। अणइण्णे मासलहुं दाणेत्थं होति पुरिमड्ढं ॥६॥ परगामाहड दुविहं सदेस परदेसओ व णायव्वं। एक्केक्कं पुण दुविहं जलेण तह थलपहेणं च ॥७॥ सप्पच्चवाय णिप्पच्चवाय पुण होनि दुविहमेक्केक्कं। संजमआयविराहण सपच्चवायम्मि जोएज्जा ॥८॥ परदेसआहडम्मी सपच्चवायम्मि होन्ति चउगुरुगा। णिप्पच्चवाएँ लहुगा दाणं एतेसि वोच्छामि ॥९॥ चउगुरुगे अभत्तट्ठं दाणमिहं होति तू मुणेयव्वं। चउलहुए आयामं एमेव य होति सदेसे ॥१२९०॥ उब्भिण्ण होति तिविहं पिहितुब्भिण्णं कवाडउ-ब्भिण्णं। जंतं पिहितुब्भिण्णं तं दुविहं फासुगमफासुं ॥१॥ फासुगछगणेणं तू दहरएणं च एत्थ मासलहु। तहियं पवहणदोसा दाणं पुण एत्थ पुरिमड्ढं ॥२॥ अप्फासुपुढविमादी सच्चित्तेणं तु जं भवे लित्तं। तहियं उब्भिज्जंते कायाण विराहणा इणमो ॥३॥ सचित्तपुढविलित्तं लेलु सिलं वावि दाउमोलित्तं। सचित्तपुढविलेवो चिरंपि उदगं अचिरलित्ते ॥४॥ चिर-लित्तपुढविकायो निम्मेतुं लिप्पमाणि आउवहो। जउमुहनावणम्मी तेऊ वाऊवि तत्थेव ॥५॥ पणगबियाइ वणस्सति तसकुंथुपिपीलिएवमादीहिं। एते ऊ लिप्पंते इमे तु दोसा तु उल्लित्ते ॥६॥ परम्स तं देति सए व गेहे, तेलुं व लोणं व घयं गुलं वा। उग्घाडितं तं तु करेयऽवस्सं, स विक्कयं तेण किणाति वऽण्णं ॥७॥ दाणकयविक्कयादी अहिगरणं होति अजयभावस्स। णिवडंति जे य तहियं जीवा मुइयंगमूसादी ॥८॥ जहेव कुंभादिसु पुच्चलित्ते, उब्भिज्जमाणम्मिवि कायघाओ। ओलिप्पमाणेवि तहेव घाओ, उब्भिण्णमेयं पिहियंपि वुत्तं ॥९॥ आ-वत्ति दाणमेत्थं ओहेणं चउलहू मुणेयव्वा। दाणं आयामं तू विभागओ कायणिप्फण्णं ॥१३००॥ एमेव कवाडम्मिवि कायवहो होइ ऊ मुणेयव्वो। उप्पिहिय पिहिज्जंते सविसेसा जंत-माईसु ॥१॥ घरकोइल्लसंचारा आवत्तण पेढियाए हिट्ठुवरिं। णिन्ते ठिते य अन्तो डिंभादीपेल्लणे दोसा ॥२॥ एत्थवि चउलहुगा तू ओहेणं दाणमेत्थमायामं। होति विभागेणं पुण पुढवादीकायणिप्फण्णं ॥३॥ उब्भिण्णेयं भणियं अहुणा मालोहडं पवक्खामि। तं तिविहं उड्ढमहे तिरियं मालोहडं चेव ॥४॥ उड्ढ दुभूमादीयं अह उट्टियकोट्ठयाइयं होति। तिरि अद्धमालगादी हत्थपसाराउ जं गिण्हे ॥५॥ सव्वंपि य तं दुविहं जहण्ण उक्कोसयं च बोद्धव्वं। अग्गपएहिं जहण्णं नविवरीयंति उक्कोसं ॥६॥ मालोहड उक्कोसे आवत्ती चउलहु मुणे-तव्वा। दाणं आयामं तू जहण्णमालोहडमियाणिं ॥७॥ एत्थ तु मासलहुत्तं आवत्ती दाण होति पुरिमड्ढं। इय मालोहड भणितं अच्छेज्जं अहुणा वोच्छामि ॥८॥ तिविहं पुण अच्छेज्जं पभू य सामी य तेणए चेव। एक्केक्के चतुलहुगा दाणं पुण एत्थमायामं ॥९॥ अणिसिट्ठंपि य तिविहं साहारण चोल्लए य जड्डे य। तिविहेऽवियि अणिसट्ठे चउलहुगा दाणमायामं ॥१३१०॥ साहारणमणिसट्ठं दाइयमादीण जं तु होज्जाहि। खीरे आपण संखडि दिट्ठंतो गोट्ठिभत्तेणं ॥१॥ सो चोल्लगोऽवि दुविहो छिण्णमछिण्णं समासतो होति। परिछिण्णं थिय दिज्जति एसो छिण्णो मुणेतव्वो ॥२॥ अच्छिण्णपरीमाणो सोऽवि णिसट्ठो तहेव अणिसट्ठो। णीसट्ठो तेसिं चिय णेतूण समप्पितो जो तु ॥३॥ आणेति भुत्तसेसं जं गहियं एय होति

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [३५] दीप अनुक्रम [३५]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

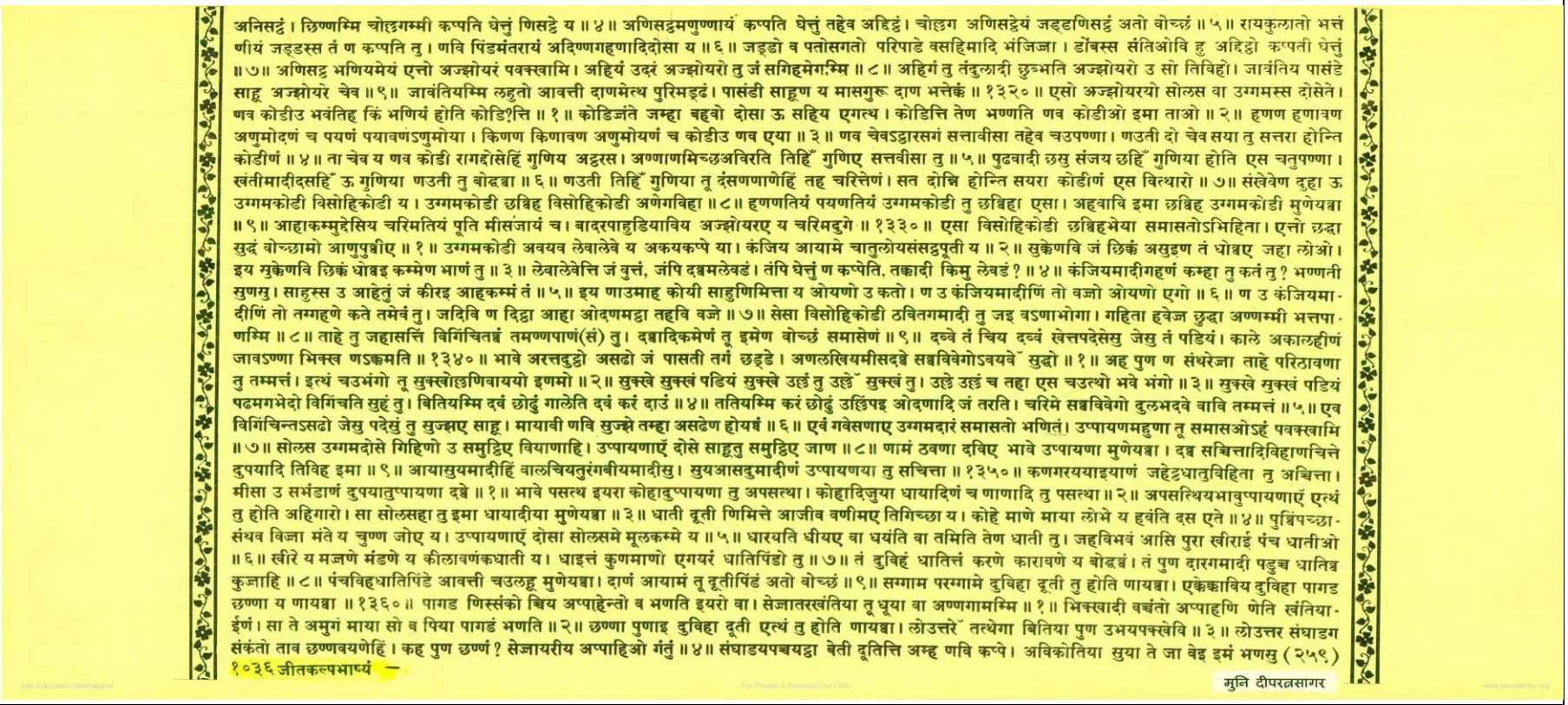

अनिसट्ठं। छिण्णम्मि चोद्दगम्मी कप्पति घेत्तुं णिसट्ठे य ॥ ४॥ अणिसट्ठमणुण्णायं कप्पति घेत्तुं तहेव अदिट्ठं। चोद्दग अणिसट्ठेयं जड्डणिसट्ठं अतो वोच्छं ॥ ५॥ रायकुलातो भत्तं णीयं जड्डस्स तं ण कप्पति तु। णवि पिंडमंतरायं अदिण्णगहणादिदोसा य ॥ ६॥ जड्डो व पतोसगतो परिपाडे वसहिमादि भंजिज्जा। डोंबस्स संतिओवि हु अदिट्ठो कप्पती घेत्तुं ॥ ७॥ अणिसट्ठ भणियमेयं एत्तो अज्झोयरं पवक्खामि। अहियं उदरं अज्झोयरो तु जं सगिहमेगम्मि ॥ ८॥ अहिगं तु तंदुलादी छुब्भति अज्झोयरो उ सो तिविहो। जावंतिय पासंडे साहू अज्झोयरे चेव ॥ ९॥ जावंतियम्मि लहुतो आवत्ती दाणमेत्थ पुरिमड्ढं। पासंडी साहूण य मासगुरू दाण भत्तेकं ॥ १३२०॥ एसो अज्झोयरयो सोलस वा उग्गमस्स दोसेते। णव कोडीउ भवंतिह किं भणियं होति कोडि?त्ति ॥ १॥ कोडिज्जंते जम्हा बहवो दोसा ऊ सहिय एगत्थ। कोडित्ति तेण भण्णति णव कोडीओ इमा ताओ ॥ २॥ हणण हणावण अणुमोदणं च पयणं पयावणऽणुमोया। किणण किणावण अणुमोयणं च कोडीउ णव एया ॥ ३॥ णव चेवऽट्ठारसगं सत्तावीसा तहेव चउपण्णा। णउती दो चेव सया तु सत्तरा होन्ति कोडीणं ॥ ४॥ ता चेव य णव कोडी रागद्दोसेहिं गुणिय अट्ठरस। अण्णाणमिच्छअविरति तिहिँ गुणिए सत्तवीसा तु ॥ ५॥ पुढवादी छसु संजय छहिँ गुणिया होति एस चतुपण्णा। खंतीमादीदसहिँ ऊ गुणिया णउती तु बोद्धव्वा ॥ ६॥ णउती तिहिँ गुणिया तू दंसणणाणेहिं तह चरित्तेणं। सत दोन्नि होन्ति सयरा कोडीणं एस वित्थारो ॥ ७॥ संखेवेण दुहा ऊ उग्गमकोडी विसोहिकोडी य। उग्गमकोडी छव्विह विसोहिकोडी अणेगविहा ॥ ८॥ हणणतियं पयणतियं उग्गमकोडी तु छव्विहा एसा। अहवावि इमा छव्विह उग्गमकोडी मुणेयव्वा ॥ ९॥ आहाकम्मुद्देसिय चरिमतियं पूति मीसजायं च। बादरपाहुडियाविय अज्झोयरए य चरिमदुगे ॥ १३३०॥ एसा विसोहिकोडी छव्विहभेया समासतोऽभिहिता। एत्तो लद्धा सुद्धं वोच्छामो आणुपुव्वीए ॥ १॥ उग्गमकोडी अवयव लेवालेवे य अकयकप्पे या। कंजिय आयामे चातुलोयसंसट्ठपूती य ॥ २॥ सुक्केणवि जं छिक्कं असुइण तं धोवए जहा लोओ। इय सुक्केणवि छिक्कं धोवइ कम्मेण भाणं तु ॥ ३॥ लेवालेवेत्ति जं वुत्तं, जंपि दव्वमलेवडं। तंपि घेत्तुं ण कप्पेति, तक्कादी किमु लेवडं? ॥ ४॥ कंजियमादीगहणं कम्हा तु कतं तु? भण्णती सुणसु। साहुस्स उ आहेतुं जं कीरइ आहकम्मं तं ॥ ५॥ इय पाउमाह कोयी साहुणिमित्ता य ओयणो उ कतो। ण उ कंजियमादीणिं तो वज्जो ओयणो एगो ॥ ६॥ ण उ कंजियमादीणिं तो तग्गहणे कते तमेवं तु। जदिवि ण दिट्ठा आहा ओदणमट्ठा तहवि वज्जे ॥ ७॥ सेसा विसोहिकोडी ठवितगमादी तु जइ वऽणाभोगा। गहिता हवेज्ज छुद्धा अण्णम्मी भत्तपाणम्मि ॥ ८॥ ताहे तु जहासत्तिं विगिंचितव्वं तमण्णपाणं(सं) तु। दव्वादिकमेणं तू इमेण वोच्छं समासेणं ॥ ९॥ दव्वे तं चिय दव्वं खेत्तपदेसेसु जेसु तं पडियं। काले अकालहीणं जावऽण्णा भिक्ख णऽक्कमति ॥ १३४०॥ भावे अरत्तदुट्ठो असढो जं पासती तगं छड्डे। अणलखियमीसदवे सव्वविवेगोऽवयवे सुद्धो ॥ १॥ अह पुण ण संथरेज्जा ताहे परिठावणा तु तम्मत्तं। इत्थं चउभंगो तू सुक्खोल्लणिवाययो इणमो ॥ २॥ सुक्खे सुक्खं पडियं सुक्खे उल्लं तु उल्ले सुक्खं तु। उल्ले उल्लं च तहा एस चउत्थो भवे भंगो ॥ ३॥ सुक्खे सुक्खं पडियं पढमगभेदो विगिंचति सुहं तु। बितियम्मि दव्वं छोढुं गालेति दव्वं करं दाउं ॥ ४॥ ततियम्मि करं छोढुं उल्लिंपइ ओदणादि जं तरति। चरिमे सव्वविवेगो दुलभदवे वावि तम्मत्तं ॥ ५॥ एव विगिंचिन्तऽसढो जेसु पदेसुं तु सुज्झए साहू। मायावी णवि सुज्झे तम्हा असढेण होयव्वं ॥ ६॥ एवं गवेसणाए उग्गमदारं समासतो भणितं। उप्पायणमहुणा तू समासओऽहं पवक्खामि ॥ ७॥ सोलस उग्गमदोसे गिहिणो उ समुट्ठिए वियाणाहि। उप्पायणाएँ दोसे साहूतु समुट्ठिए जाण ॥ ८॥ णामं ठवणा दविए भावे उप्पायणा मुणेयव्वा। दव्व सचित्तादिविहाणचित्ते दुपयादि तिविह इमा ॥ ९॥ आयासुयमादीहिं वालचियतुरंगबीयमादीसु। सुयआसदुमादीणं उप्पायणया तु सचित्ता ॥ १३५०॥ कणगरययाइयाणं जहेट्ठधातुविहिता तु अचित्ता। मीसा उ सभंडाणं दुपयातुप्पायणा दव्वे ॥ १॥ भावे पसत्थ इयरा कोहादुप्पायणा तु अपसत्था। कोहादिजुया धायादिणं च णाणादि तु पसत्था ॥ २॥ अपसत्थियभावुप्पायणाएँ एत्थं तु होति अहिगारो। सा सोलसहा तु इमा धायादीया मुणेयव्वा ॥ ३॥ धाती दूती णिमित्ते आजीव वणीमए तिगिच्छा य। कोहे माणे माया लोभे य हवंति दस एते ॥ ४॥ पुव्विंपच्छासंथव विज्जा मंते य चुण्ण जोए य। उप्पायणाएं दोसा सोलसमे मूलकम्मे य ॥ ५॥ धारयति धीयए वा धयंति वा तमिति तेण धाती तु। जहविभवं आसि पुरा खीराई पंच धातीओ ॥ ६॥ खीरे य मज्जणे मंडणे य कीलावणंकधाती य। धाइत्तं कुणमाणो एगयरं धातिपिंडो तु ॥ ७॥ तं दुविहं धातित्तं करणे कारावणे य बोद्धव्वं। तं पुण दारगमादी पडुच्च धातिव्व कुज्जाहि ॥ ८॥ पंचविहधातिपिंडे आवत्ती चउलहू मुणेयव्वा। दाणं आयामं तू दूतीपिंडं अतो वोच्छं ॥ ९॥ सग्गाम परग्गामे दुविहा दूती तु होति णायव्वा। एक्केक्कावि य दुविहा पागड छण्णा य णायव्वा ॥ १३६०॥ पागड णिस्संको च्चिय अप्पाहेन्तो व भणति इयरो वा। सेज्जातरखंतिया तू धूया वा अण्णगामम्मि ॥ १॥ भिक्खादी वच्चंतो अप्पाहणि णेति खंतियाईणं। सा ते अमुगं माया सो व पिया पागडं भणति ॥ २॥ छण्णा पुणाइ दुविहा दूती एत्थं तु होति णायव्वा। लोउत्तरे तत्थेगा बितिया पुण उभयपक्खेवि ॥ ३॥ लोउत्तर संघाडग संकंतो ताव छण्णवयणेहिं। कह पुण छण्णं? सेज्जायरीय अप्पाहिओ गंतुं ॥ ४॥ संघाडयपच्चयट्ठा बेती दूतित्ति अम्ह णवि कप्पे। अविकोतिया सुया ते जा वेइ इमं भणसु (२५९)

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [३५] दीप अनुक्रम [३५]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

खंतीं ॥५॥ सावि य भणती होतू वारिजिहिती अयाणिया सा उ। लोउत्तरछण्णेसा उभयच्छण्णं अतो वोच्छं ॥६॥ जामाइतित्थजत्तागतस्स ओवादि पोक्कडेण कतं। सो आगतोत्ति धूया उभयच्छण्णं इमं भणति ॥७॥ एव भणेज्जहि खंती तं किर तह चेव चिंतियं जं तु। जह णवि संघाडो से अण्णो व वियाणती कोति ॥८॥ उभयच्छण्णा एसा सग्गामे अभिहिता भवे दूती। एमेव परग्गामे दुह दूती कह पुण करेज्जा ॥९॥ गामाण दोण्ह वेरं सेज्जायरिधूय तत्थ परगामे। सामत्थं गामस्स य जह एयं हणिमो परगामं ॥१३७०॥ खंतो तु तत्थ पच्छा भिक्खायरियाए तो तु सेज्जतरी। अप्पाहेती खंतं मम धूय भणेज्जासू एवं ॥१॥ जह गामो पडिउकामो सा उ भणेज्जासु मा कुण पमायं। तीय कहियं तु तस्सा तेणवि गामस्स तं कहियं ॥२॥ ते य ठिय एगपासे इतरे पडिता कतं तहिं जुद्धं। सेज्जातरिपतिपुत्ता जामाता चेव वहिओ उ ॥३॥ बेति जणो केणेयं कहियं?ति तओ उ बेति सेज्जयरी। जामातिपुत्तपतिमारएण खंतेण मे सिट्ठं ॥४॥ जम्हा एते दोसा दूतित्तं खु ण कप्पती तम्हा। दूतीपिंडे चउलहु आवत्ती दाणमायामं ॥५॥ णियमा तिकालविसयम्मि णिमित्ते छविहे भवे दोसा। सज्जं तु वट्टमाणो आतुभए तत्थिमे णातं ॥६॥ आकंपिया णिमित्तेण भोइणी केणती तु लिंगीण। भोइयचिरगयपुच्छा केवतिकालेण एज्जाहि ? ॥७॥ कहं चिय एतित्ती इयरी पडिभणति पच्चयो को उ ?। तुह गुज्झदेसतिलओ सुविणाती पच्चए कहए ॥८॥ तीय कयं आउत्तं पेसविओ परिजणो य पच्चोणी। इतरोऽवि अविदिओ चिय पविसिस्सं भोइओ चिन्ते ॥९॥ घरवित्तं ता मित्तं दिट्ठो उवणिग्गओ य परिवग्गो। कह तुब्भे णायं?ती पेसविआ भोतिणीए उ॥१३८०॥ पुट्ठा य आदिअत्ते(विय ते)णं तीय य सिट्ठं सल्लाहमाणीए। समणे तीयभविस्सं जाणइ तिलओ य णे सिट्ठो ॥१॥ कोवो वलवागब्भं च पुच्छितो पंचपुण्डमाहंसु। फालण दिट्ठो जदि णेव तो तुहं अवि तह कतेवं ॥२॥ तम्हा ण वागरेज्जा णिमित्तपिंडेस वण्णिओ तु मए। तीतणिमित्ते चउलहु आवत्ती दाणमायामं ॥३॥ पडुपण्णऽणागए या चउगुरुगा दाण होयऽभत्तट्ठं। आजीवपिंडमेत्तो समासओऽहं पवक्खामि ॥४॥ जाती कुल गण कम्मे सिप्पे आजीवणा उ पंचविहा। सूयाएँ असूयाए व कहेइ अप्पाणमेकेके ॥५॥ जाती० पंचविहा। एकेके चतुलहुगा आवत्ती दाणमायामं ॥६॥ जाती माहणमादी मातिसमुत्था व होति बोद्धव्वा। तहियं सूयाए तू जाणावेमेहि अप्पाणं ॥७॥ होमाइवितहकहणे णज्जति जह सोत्तियस्स पुत्तोत्ति। वसितो वेस गुरुकुले आयरियगुणे व सूएति ॥८॥ सम्ममसम्मा किरिया अणेण ऊणाहिया व विवरीया। समिहामंताऽऽहुति ठाण जाय काले य घोसादी ॥९॥ बेति फुडं चिय सुकयं असोहणं वावि ते कतमितंति। तहितं भद्दगपंता दोसा इणमो भवंती तु ॥१३९०॥ भद्दो अम्ह सपक्खो एसत्ती भिक्ख देज्जहेयस्स। पंतो ओभामेती मुहमंगलि कुणति भिक्खट्ठा ॥१॥ उग्गाईयं तु कुलं पितुवंसादिव तत्थवि तहेव। मल्लसरस्सतमादीण जम्पई मंडलपवेसं ॥२॥ देउलदरिसणभासाउवणयणे मण्डवा(ला)इ सूएति। जंतुप्पीलणमादि तु कम्मं तुण्णादियं सिप्पं ॥३॥ अहवा जं सिक्खिजइ आयरितुवदेसतो तयं सिप्पं। जं कीरती सयं तू तं कम्मं तेसु सव्वेसु ॥४॥ कत्तरिपयोयणट्ठा वत्थू बहुवित्थरेसु तह चेव। कम्मेसु य सिप्पेसु य सम्ममसम्मेसु सूतिअतरा ॥५॥ सव्वेसु भद्दपंता दोसा णियमा दोसा हवंति विण्णेया। आजीवगपिंडेसो एत्तो तु वणीमगं वोच्छं ॥६॥ किं भणियं वणीमे?त्ति भण्णति वणि जायणम्मि धातू तु। वणिमगपायप्पाणं वणिमोत्ती भण्णए तम्हा ॥७॥ ते पंचहा वणीमग जायणवित्ती तु होन्ति बोद्धव्वा। समणा माहण किवणे अतिही साणा य पंचमया ॥८॥ समणे माहण किवणे अतिही साणे य जाण पंचसुवि। पत्तेयं चउलहुगा आवत्ती दाणमायामं ॥९॥ मयमादि वच्छगंपिव वणेति आहारमादिलोभेणं। अप्पाण समणमाहणकिमिणाऽतिहिसाणभत्तेसु ॥१४००॥ णिग्गंथसक्कतावसगेरुयआजीव पंचहा समणा। तेसि परिएसणाए लोभेण वणेइ को अप्पं ? ॥१॥ तच्च(ब)ण्णियादि दट्ठुं भुंजंते दातुपीतिअणुकूलं। साहु तुमे विप्प ! कयं दाउं जं देसि एतेसिं ॥२॥ भुंजंति चित्तकम्मट्ठियव्व कारुणिय दाणरुइणो वा। अवि कामगद्दभेसुवि णवि णासइ किं पुण जतीसु ? ॥३॥ मिच्छत्तथिरीकरणं उग्गमदोसा व ते पुण करेज्जा। चडुकारऽदिण्णदाणा पच्चत्थिग मा पुणो एंतु ॥४॥ एमेव माहणेसुवि दिज्जंतं दिस्स बेति अणुकूलं। दोण्हं भणियं दाणं समणाणं माहणाणं च ॥५॥ लोगाणुग्गहकारिसु भूमीदेवेसु बहुफलं दाणं। अवि णाम बंभबंधुसु किं पुण छक्कम्मणिरएसु ? ॥६॥ किमणा उ कुट्ठिकरपायअच्छिमादीसु जुंगिया जे तु। दट्ठूण तेसि देन्तं तस्सऽणुकूलं इमं भणति ॥७॥ किमणेसु दुब्बलेसु य अबंधवायंकजुंगियंगेसु। पूयाहेज्जे लोए दाणपडायं हरति देन्तो ॥८॥ ते चिय एत्थवि दोसा कोई पुण देति दाणमतिहीणं। तत्थवि अणुप्पयं तू दाणपतिस्सा इमं भणति ॥९॥ पाएण देति लोगो उवगारी परिचिए व झुसिए वा। जो पुण अद्धाखिण्णं अतिहिं पूएति तं दाणं ॥१४१०॥ कोइ पुण साणभत्तो भत्तं साणादियाण दिज्जंतं। तस्स य पियंति भासति तुममेगो जाणसी दाउं ॥१॥ अवि णाम होज्ज सुलभो गोणादीणं तणादि आहारो। छिच्छिकारहयाणं ण य सुलभो होति सुणयाणं ॥२॥ केलासभवणा एते, आगया गुज्झगा महिं। चरंति जक्खरूवेण, पूयापूया हियाहिया ॥३॥ पूयंति पूयणिज्जा पूयाएं हियाय आगया इहइं। लोगस्स हिता एते पूइय अहवा हिया होन्ति ॥४॥ अहवावि पूयपूया हिताहिता पूतिता हिता होन्ति। अपूतिता

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [३५]

दीप अनुक्रम [३५]

य अहिता तम्हा खलु पूयणिज्जेते ॥५॥ एमादी अणुकूले भणिते सव्वेसि माहणाईणं। दाता चिंतेति ततो मज्झत्थो एस समणोत्ति ॥६॥ एतेण मज्झ भावो विद्धो लोए पणामहज-म्मि। एक्केके पुव्वुत्ता भद्दगपंताइया दोसा ॥७॥ दाणं ण होति अफलं पत्तमपत्ते य सण्णिउड्ढंतं। इयवि भणिएऽवि दोसा पसंसिमो किं पुण अपत्ते ? ॥८॥ वणिमगपिंडो भणितो एत्तो वोच्छं तिगिच्छपिडं तु। सा दुविहा तु तिगिच्छा सुहुमा तह बायरा चेव ॥९॥ सुहुमाए मासलहुं आवत्ती दाण होति पुरिमड्ढं। बादरतेगिच्छाए चउलहुगा दाणमायामं ॥ १४२० ॥ भिक्खादिगतं संतं पुच्छति रोगी तु ओसहं किंचि। भणई किमहं वेज्जो ? पढमतिगिच्छा भवे एसा ॥ १ ॥ वेज्जोत्ति पुच्छियव्वो अत्थावत्तीइ सूतियं एयं। अबुहाण बोहणं वा अयाणमाणाण कतमेतं ॥ २ ॥ बेति व एरिस दुक्खं अमुएणं ओसहेण पउणं मे। सहसुप्पइयं च रुयं वारेमो अट्टमादीहिं ॥ ३ ॥ एसा बितियतिगिच्छा दोऽवेयाओ तु सुहुमतेगिच्छं। बादरतेगिच्छं पुण सतमेव करेति वेज्जत्तं ॥ ४ ॥ संसोहण संसमणं णिदाणपरिवज्जणं च जं जत्थ। आगंतुधातुखोभे व आमए कुणति किरियं तु ॥ ५ ॥ अस्संजयतेगिच्छे कीरंते तह य सुहुमकरणम्मि। तहियं तु अणेगविहा दोसा इणमो पसज्जंति ॥ ६ ॥ अस्संजमजोगाणं पसंजणं कायघाओ अयगोलो। दुब्बलवग्घाहरणं अच्चुदए गिण्हणुड्डाहो ॥ ७ ॥ जम्हा एते दोसा तम्हा कायव्विया ण हु तिगिच्छा। भणितो तिगिच्छपिंडो एत्तो कोहादि वोच्छामि ॥ ८ ॥ कोहादीणं कमसो आहरणा होन्तिमे समासेणं। हत्थऽप्पं गिरिफुल्लिय रायगिहं चेव चंपा य ॥ ९ ॥ णगरम्मि हत्थकप्पे करडुगभत्ते उ खमओ दिट्ठंतो। कोसलदेसे गिरिफुल्लि गामे वणकोट्ठकारम्मि ॥ १४३० ॥ साहूण समुल्लावे को णु हु अज्जं पए तु साहूणं। आणेज्ज इट्ठगातो ? खुड्डाऽऽऽह तहिं अहं आणे ॥ १ ॥ घतगुलसंजुत्ताविय जह आणिय इट्ठगातु खुड्डेणं। सेडंगुलिमादीहिं णाएहिं एत्थऽभत्तट्ठं ॥ २ ॥ रायगिहे धम्मरुयी आसाढभूती तु खुड्डओ तस्स। रायणडगेहपविसण संभोइय मोदए लंभो ॥ ३ ॥ आयरिय उवज्झाए संघाडय अप्पयस्स अट्ठाए। भुजो भुजो पविसति काणकुणीखुज्जरूवेहिं ॥ ४ ॥ उवरितलत्थो य णडो पा-सति चिंतेति बुद्दिमं सुट्ठु। होज्ज णडो सारिक्खो उवायओ एस घेत्तबो ॥ ५ ॥ चिंतिय उवायमेयं वाहरिया देमि मोदए बहवे। भणिओ य तओ एज्जसु दिणे दिणे जाहे कज्जं तु ॥ ६ ॥ धूयदुगं संदिसती हासंखेड्डंपरिहाससंफासे। एतेण समं कुबह जह भजति एस अचिरेणं ॥ ७ ॥ जदि णामं गिण्हेज्जा तो बेजह मुयसु एय पव्वज्जं। ताहि तहक्कय खुभितो रयहरणं लिंग मुयसुत्ति ॥ ८ ॥ गुरु सिट्ठ मोत्तुमातो दिण्णा धूया य भणिय णेणं च। एसुत्तमपगतीओ जत्तेणं उवयरेज्जाह ॥ ९ ॥ रायगिहे य कायी णिम्महिलं णाडगं णडा गच्छी। ताव विरहम्मि मत्ता उवरिगिहे दोवि पासुत्ता ॥ १४४० ॥ वाघाएण पविट्ठो दिट्ठ विचेला विरागमावण्णो। आयरियगुरुसमीवं पट्टित दिट्ठो णडेणं च ॥ १ ॥ इंगितणाए धूया खरंट पेसि-यय जीवणं देहि। देमित्ति रट्ठपालं णाडग णच्चीय कुसुमपुरे ॥ २ ॥ कडगादिअत्थदाणं बहु पडितं तत्थ(नच्च)गम्मि णच्चंते। भरहोयवणादीया भरहिड्ढी तत्थ य णिबद्धा ॥ ३ ॥ इक्खा-गवंस भरहो आयंसघरे य केवलं लोओ। हत्थे गहिओ मा कुण किं भरहो णियत्तो ? पच्चाह ॥ ४ ॥ ण हु तंऽपऽक्खइ एवं वेलंबो होति जति णियत्तामि। पंच सता तेण समं पव्वइता णाडए डहणं ॥ ५ ॥ एमादि मायपिंडो ण कप्पती णवरि कारणे कप्पे। गेलण्णखमगपाहुणथेरादट्ठेव(द्धाण)मादीसु ॥ ६ ॥ मायापिंडो भणितो एत्तो वोच्छामि लोहपिंडं तु। सो कोहपिं-डमादिसु सव्वत्थऽणुपाति अहव इमो ॥ ७ ॥ लब्भंतंपि ण गिण्हति अण्णं अमुगंति अज्ज घेच्छामि। भद्दरसंति व काउं गिण्हति खद्धं सिणिद्धादी ॥ ८ ॥ तत्थोदाहरणमिणं चंपाऐं छण-म्मि कोवि खमतो तु। गेण्हति अभिग्गहं तू सीहेसरमोदए घेच्छं ॥ ९ ॥ भिक्ख पविट्ठो य तयो पडिसेहे अण्ण लब्भमाणंपि। सीहेसरमल्हंतो संकिस्सति भावतो अह सो ॥ १४५० ॥ सीहेसरगतचित्तो विसरिसचित्तो य धम्मलाभोत्ति। बेई सीहेसरए सूरत्थमिएवि हिंडइ तु ॥ १ ॥ सड्ढऽड्ढरत्तकेसरभायणभरणं च पुच्छ पुरिमड्ढे। उवओग चन्दजोयण साहुत्ति वि-गिंचणे णाणं ॥ २ ॥ कोहादीणं कमसो एमेते वण्णिया उ आहरणा। एतेसिं चिय कमसो आवत्ती दाण वोच्छामि ॥ ३ ॥ कोहे माणे चतुलहु आवत्ती दाण होइ आयामं। मायाए मास-गुरू आवत्ती दाण भत्तेकं ॥ ४ ॥ लोभे चउगुरुगा तू आवत्ती दाण होयऽभत्तट्ठं। संथुणण संथवो तू थुणणा वंदणगमेगट्ठं ॥ ५ ॥ दुविहो य संथवो खलु संबंधी वयणसंथवो चेव। एक्केक्को पुण दुविहो पुव्विं पच्छा य णायव्वो ॥ ६ ॥ संबंधे पुव्व दुविहो इत्थी पुरिसे य होति णायव्वो। एमेव य पच्छावी आवत्ती दाण वोच्छामि ॥ ७ ॥ इत्थीए चतुगुरुगा पुरिसेसु चतुलहू मुणे-तव्वा। चउगुरुए तु चउत्थं चउलहुए दाणमायामं ॥ ८ ॥ वयणेवि पुव्व दुविहो इत्थी पुरिसे य होति णायव्वो। एमेव य पच्छावी आवत्ती दाण वोच्छामि ॥ ९ ॥ इत्थीए मासगुरुं आवत्ती दाण होति भत्तेकं। पुरिसे मासलहुं तू आवत्ती दाण पुरिमड्ढं ॥ १४६० ॥ संबंधे पुव्वसंथवो मायपियादी तु होति णायव्वो। सासुयससुरातीओ संबंधीसंथवो पच्छा ॥ १ ॥ आयवयं च परवयं णाउं संवंधती तयणुरूवं। मम माता एरिसिया ससा व धूया व णत्तादी ॥ २ ॥ अद्धी दिट्ठीपण्हय पुच्छा कहणं ममेरिसी जणणी। थणखेवो संबंधो विहवासुण्हाय दाणं च ॥ ३ ॥ एमेव य पुरिसेसुवि पियभातादीहिं होति संबंधो। एमेव पच्छसंथव अद्धिति दिट्ठादि पुच्छादी ॥ ४ ॥ पच्छासंथवदोसा सासुय विहवादिधूयदाणं च। भज्जा मम एरिसिया सज्जं

१०३८ जीतकल्पभाष्यं

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [३५]

दीप अनुक्रम [३५]

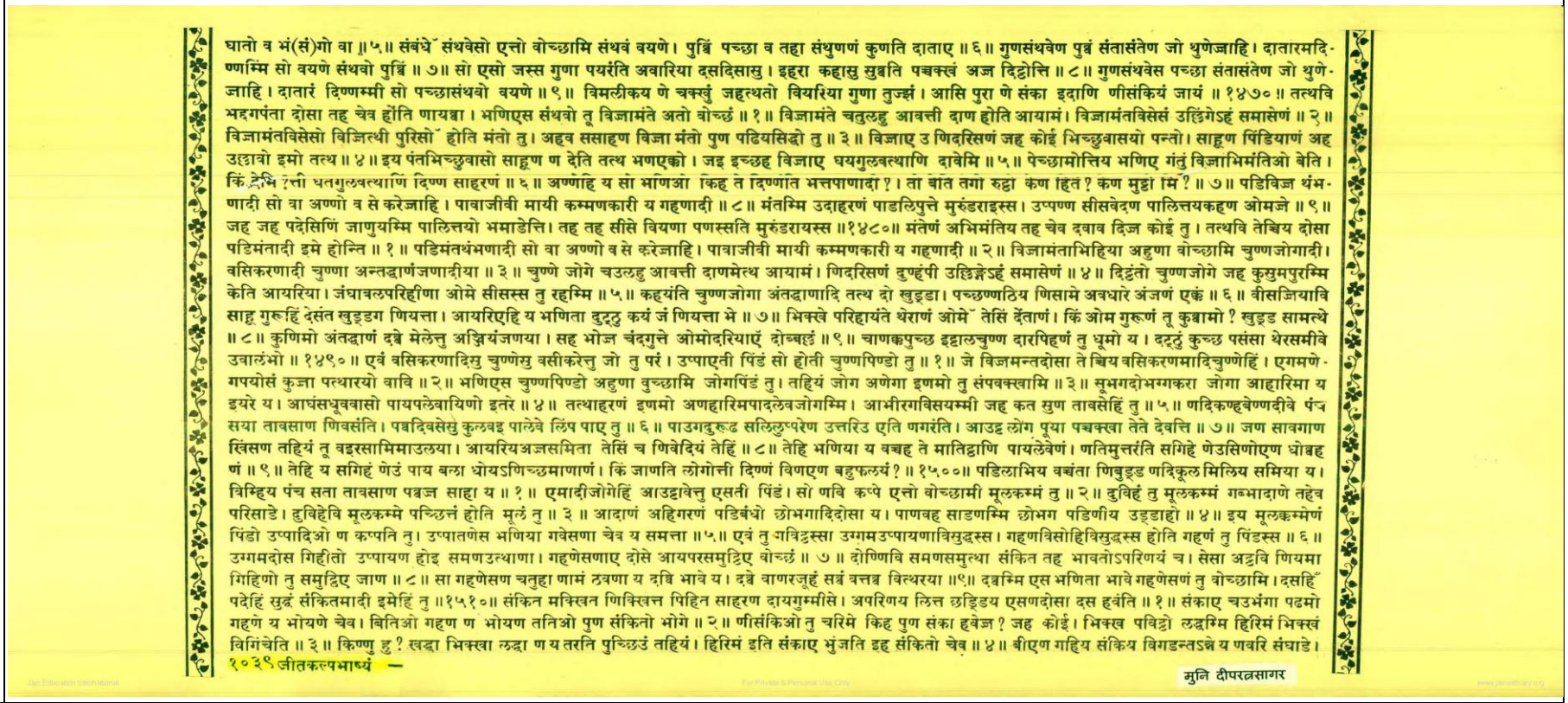

घातो व भं(सं)गो वा ॥५॥ संबंधे संथवेसो एत्तो वोच्छामि संथवं वयणे। पुव्विं पच्छा व तहा संथुणणं कुणति दाताए ॥६॥ गुणसंथवेण पुव्वं संतासंतेण जो थुणेज्जाहि। दातारमदि-
ण्णम्मि सो वयणे संथवो पुव्विं ॥ ७॥ सो एसो जस्स गुणा पयरंति अवारिया दसदिसासु। इहरा कहासु सुबति पच्चक्खं अज्ज दिट्ठोत्ति ॥८॥ गुणसंथवेस पच्छा संतासंतेण जो थुणे-
ज्जाहि। दातारं दिण्णम्मी सो पच्छासंथवो वयणे ॥९॥ विमलीकय णे चक्खुं जहत्थतो वियरिया गुणा तुज्झं। आसि पुरा णे संका इदाणि णीसंकियं जायं ॥ १४७०॥ तत्थवि
भद्दगपंता दोसा तह चेव होंति णायव्वा। भणिएस संथवो तू विज्जामंते अतो वोच्छं ॥ १॥ विज्जामंते चतुलहु आवत्ती दाण होति आयामं। विज्जामंतविसेसं उड्ढिंगेऽहं समासेणं ॥ २॥
विज्जामंतविसेसो विज्जित्थी पुरिसो होति मंतो तु। अहव ससाहण विज्जा मंतो पुण पढियसिद्धो तु ॥ ३॥ विज्जाए उ णिदरिसणं जह कोई भिच्छुवासयो पन्तो। साहूण पिंडियाणं अह
उट्ठावो इमो तत्थ ॥ ४॥ इय पंतभिच्छुवासो साहूण ण देति तत्थ भणएक्को। जइ इच्छह विज्जाए घयगुलवत्थाणि दावेमि ॥५॥ पेच्छामोत्तिय भणिए गंतुं विज्जाभिमंतिओ वेति।
किं देमि त्ती घतगुलवत्थाणि दिण्ण साहरणं ॥ ६॥ अण्णेहि य सो भणिओ किह ते दिण्णंति भत्तपाणादी ?। तो वेंत तगो रुट्ठो केण हंत ? कण मुट्ठा मे ? ॥ ७॥ पडिविज्ज थंभ-
णादी सो वा अण्णो व से करेज्जाहि। पावाजीवी मायी कम्मणकारी य गहणादी ॥ ८॥ मंतम्मि उदाहरणं पाडलिपुत्ते मुरुंडराइस्स। उप्पण्ण सीसवेदण पालित्तयकहण ओमज्जे ॥ ९॥
जह जह पदेसिणिं जाणुयम्मि पालित्तयो भमाडेत्ति। तह तह सीसे वियणा पणस्सति मुरुंडरायस्स ॥१४८०॥ मंतेणं अभिमंतिय तह चेव दवाव दिज्ज कोई तु। तत्थवि तेच्चिय दोसा
पडिमंतादी इमे होन्ति ॥ १॥ पडिमंतथंभणादी सो वा अण्णो व से करेज्जाहि। पावाजीवी मायी कम्मणकारी य गहणादी ॥ २॥ विज्जामंताभिहिया अहुणा वोच्छामि चुण्णजोगादी।
वसिकरणादी चुण्णा अन्तद्धाणंजणादीया ॥ ३॥ चुण्णे जोगे चउलहु आवत्ती दाणमेत्थ आयामं। णिदरिसणं दुण्हंपी उड्ढिंगेऽहं समासेणं ॥ ४॥ दिट्ठंतो चुण्णजोगे जह कुसुमपुरम्मि
केति आयरिया। जंघावलपरिहीणा ओमे सीसस्स तु रहम्मि ॥ ५॥ कहयंति चुण्णजोगा अंतद्धाणादि तत्थ दो खुड्डा। पच्छण्णठिय णिसामे अवधारे अंजणं एक्कं ॥ ६॥ वीसज्जियावि
साहू गुरूहिं देसंत खुड्डग णियत्ता। आयरिएहि य भणिता दुट्ठु कयं जं णियत्ता मे ॥ ७॥ भिक्खे परिहायंते थेराणं ओमे तेसिं देंताणं। किं ओम गुरूणं तू कुव्वामो ? खुड्ड सामत्थे
॥ ८॥ कुणिमो अंतद्धाणं दव्वे मेलेत्तु अञ्जियंजणया। सह भोज्ज चंदगुत्ते ओमोदरियाएँ दोव्वल्लं ॥ ९॥ चाणक्कपुच्छ इट्टालचुण्ण दारपिहणं तु धूमो य। दट्ठुं कुच्छ पसंसा थेरसमीवे
उवालंभो ॥ १४९०॥ एवं वसिकरणादिसु चुण्णेसु वसीकरेत्तु जो तु परं। उप्पाएती पिंडं सो होती चुण्णपिण्डो तु ॥ १॥ जे विज्जमन्तदोसा ते चिय वसिकरणमादिचुण्णेहिं। एगमणे-
गपयोसं कुज्जा पत्थारयो वावि ॥ २॥ भणिएस चुण्णपिण्डो अहुणा वुच्छामि जोगपिंडं तु। तहियं जोग अणेगा इणमो तु संपवक्खामि ॥ ३॥ सूभगदोभग्गकरा जोगा आहारिमा य
इयरे य। आघंसधूववासो पायपलेवायिणो इतरे ॥ ४॥ तत्थाहरणं इणमो अणहारिमपादलेवजोगम्मि। आभीरगविसयम्मी जह कत सुण तावसेहिं तु ॥ ५॥ णदिकण्हवेण्णदीवे पंच
सया तावसाण णिवसंति। पवदिवसेसु कुलवइ पालेवे लिंप पाए तु ॥ ६॥ पाउगदुरूढ सलिलुप्परेण उत्तरिउ एति णगरंति। आउट्ट लोग पूया पच्चक्खा तेते देवत्ति ॥ ७॥ जण सावगाण
खिंसण तहियं तू वइरसामिमाउलया। आयरियअज्जसमिता तेसिं च णिवेदियं तेहिं ॥ ८॥ तेहि भणिया य वच्चह ते मातिट्ठाणि पायलेवेणं। णतिमुत्तरंति सगिहे णेउसिणोएण धोवह
णं ॥ ९॥ तेहि य सगिहं णेउं पाय बन्हा धोयऽणिच्छमाणाणं। किं जाणति लोगोत्ती दिण्णं विणएण बहुफलयं ?॥ १५००॥ पडिलाभिय वच्चंता णिवुड्ड णदिकूल मिलिय समिया य।
विम्हिय पंच सता तावसाण पव्वज्ज साहा य ॥ १॥ एमादीजोगेहिं आउट्टावेत्तु एसती पिंडं। सो णवि कप्पे एत्तो वोच्छामी मूलकम्मं तु ॥ २॥ दुविहं तु मूलकम्मं गब्भादाणे तहेव
परिसाडे। दुविहेवि मूलकम्मे पच्छित्तं होति मूलं तु ॥ ३॥ आदाणं अहिगरणं पडिबंधो छोभगादिदोसा य। पाणवह साडणम्मि छोभग पडिणीय उड्डाहो ॥ ४॥ इय मूलकम्मेणं
पिंडो उप्पादिओ ण कप्पति तु। उप्पातणेस भणिया गवेसणा चेव य समत्ता ॥५॥ एवं तु गविट्ठस्सा उग्गमउप्पायणाविसुद्धस्स। गहणविसोहिविसुद्धस्स होति गहणं तु पिंडस्स ॥ ६॥
उग्गमदोस गिहीतो उप्पायण होइ समणउत्थाणा। गहणेसणाए दोसे आयपरसमुट्ठिए वोच्छं ॥ ७॥ दोण्णिवि समणसमुत्था संकित तह भावतोऽपरिणयं च। सेसा अट्ठवि णियमा
गिहिणो तु समुट्ठिए जाण ॥ ८॥ सा गहणेसण चतुहा णामं ठवणा य दवि भावे य। दव्वे वाणरजूहं सव्वं वत्तव्व वित्थरया ॥९॥ दव्वम्मि एस भणिता भावे गहणेसणं तु वोच्छामि। दसहिं
पदेहिं सुद्धं संकितमादी इमेहिं तु ॥१५१०॥ संकित मक्खित णिक्खित्त पिहित साहरण दायगुम्मीसे। अपरिणय लित्त छड्डिय एसणदोसा दस हवंति ॥ १॥ संकाए चउभंगा पढमो
गहणे य भोयणे चेव। बितिओ गहण ण भोयण ततिओ पुण संकितो भोगे ॥ २॥ णीसंकिओ तु चरिमे किह पुण संका हवेज्ज ? जह कोई। भिक्ख पविट्ठो लद्धम्मि हिरिमं भिक्खं
विगिंचेति ॥ ३॥ किण्णु हु ? खद्धा भिक्खा लद्धा ण य तरति पुच्छिउं तहियं। हिरिमं इति संकाए भुंजति इह संकितो चेव ॥ ४॥ बीएण गहिय संकिय विगडन्तऽन्ने य णवरि संघाडे।

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [३५] दीप अनुक्रम [३५]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

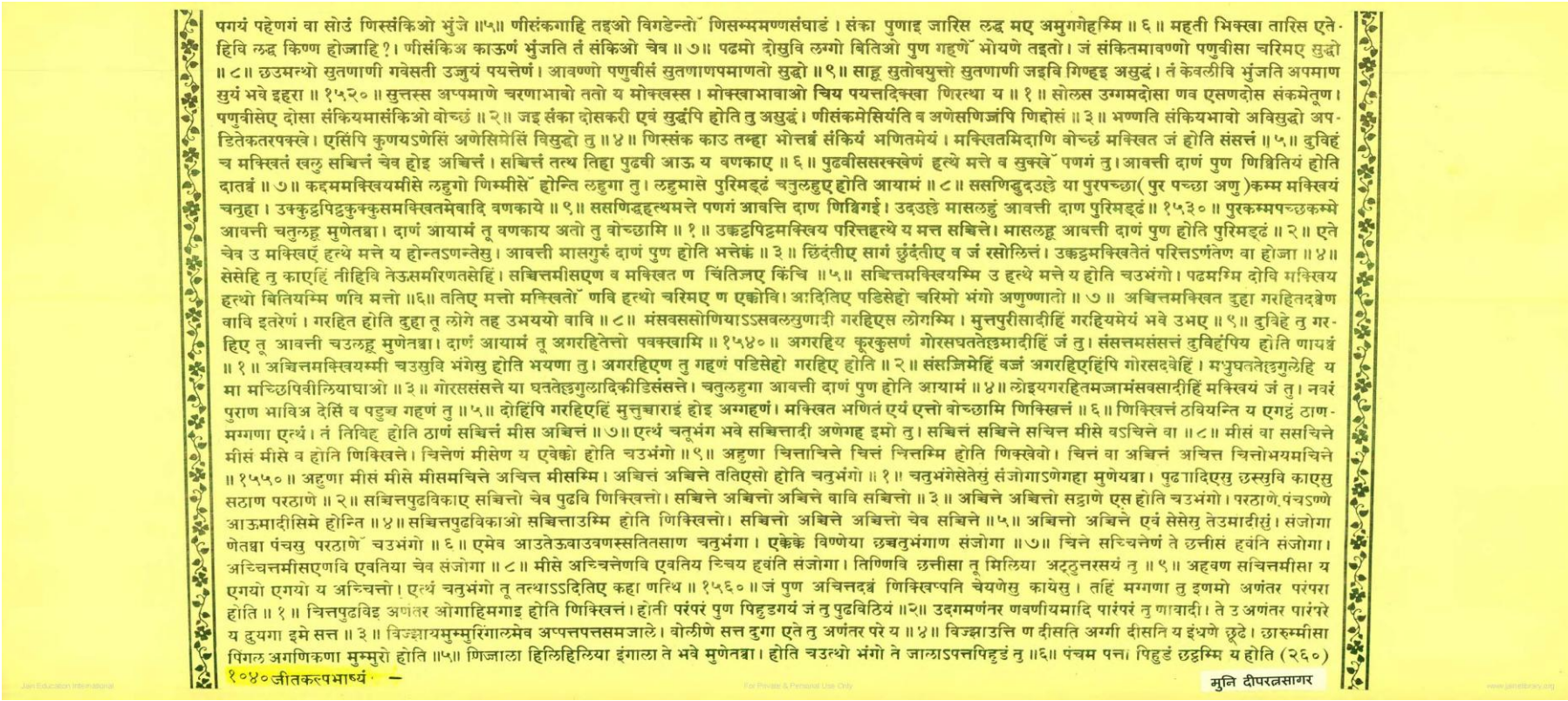

पगयं पहेणगं वा सोउं णिस्संकिओ भुंजे ॥५॥ णीसंकगाहि तइओ विगडेन्तो णिसम्ममण्णसंघाडं । संका पुणाइ जारिस लद्ध मए अमुगगेहम्मि ॥ ६ ॥ महती भिक्खा तारिस एते-हिवि लद्ध किण्ण होज्जाहि ?। णीसंकिअ काऊणं भुंजति तं संकिओ चेव ॥ ७॥ पढमो दोसुवि लग्गो बितिओ पुण गहणे भोयणे तइतो । जं संकितमावण्णो पणुवीसा चरिमए सुद्धो ॥ ८॥ छउमन्थो सुतणाणी गवेसती उजुयं पयत्तेणं । आवण्णो पणुवीसं सुतणाणपमाणतो सुद्धो ॥ ९॥ साहू सुतोवयुत्तो सुतणाणी जइवि गिण्हइ असुद्धं । तं केवलीवि भुंजति अपमाण सुयं भवे इहरा ॥ १५२० ॥ सुत्तस्स अप्पमाणे चरणाभावो ततो य मोक्खस्स । मोक्खाभावाओ चिय पयत्तदिक्खा णिरत्था य ॥ १ ॥ सोलस उग्गमदोसा णव एसणदोस संकमेतूण । पणुवीसेए दोसा संकियमासंकिओ वोच्छं ॥ २॥ जइ संका दोसकरी एवं सुद्धंपि होति तु असुद्धं । णीसंकमेसियंति व अणेसणिज्जंपि णिद्दोसं ॥ ३ ॥ भण्णति संकियभावो अविसुद्धो अप-डितेकतरपक्खे । एसिंपि कुणयऽणेसिं अणेसिमेसिं विसुद्धो तु ॥ ४ ॥ णिस्संक काउ तम्हा भोत्तव्वं संकियं भणितमेयं । मक्खितमिदाणि वोच्छं मक्खित जं होति संसत्तं ॥ ५ ॥ दुविहं च मक्खितं खलु सचित्तं चेव होइ अचित्तं । सचित्तं तत्थ तिहा पुढवी आऊ य वणकाए ॥ ६ ॥ पुढवीससरक्खेणं हत्थे मत्ते व सुक्खे पणगं तु । आवत्ती दाणं पुण णिव्वितियं होति दातव्वं ॥ ७॥ कहममक्खियमीसे लहुगो णिम्मीसे होन्ति लहुगा तु । लहुमासे पुरिमड्ढं चतुलहुए होति आयामं ॥ ८ ॥ ससणिद्धदउल्ले या पुरपच्छा(पुर पच्छा अणु)कम्म मक्खियं चनुहा । उक्कुट्ठपिट्ठकुक्कुसमक्खितमेवादि वणकाये ॥ ९ ॥ ससणिद्धहत्थमत्ते पणगं आवत्ति दाण णिव्विगई । उदउल्ले मासलहुं आवत्ती दाण पुरिमड्ढं ॥ १५३० ॥ पुरकम्मपच्छकम्मे आवत्ती चतुलहू मुणेतव्वा । दाणं आयामं तू वणकाय अतो तु वोच्छामि ॥ १ ॥ उक्कट्ठपिट्ठमक्खिय परित्तहत्थे य मत्त सचित्ते । मासलहू आवत्ती दाणं पुण होति पुरिमड्ढं ॥ २ ॥ एते चेव उ मक्खिएं हत्थे मत्ते य होन्तऽण्णन्तेसु । आवत्ती मासगुरुं दाणं पुण होति भत्तेक्कं ॥ ३ ॥ छिंदंतीए सागं छुंदंतीए व जं रसोलित्तं । उक्कट्ठमक्खितेतं परित्तऽणंतेण वा होज्जा ॥ ४ ॥ सेसेहि तु काएहिं नीहिवि तेऊसमीरणतसेहिं । सचित्तमीसएण व मक्खित ण चिंतिज्जए किंचि ॥ ५ ॥ सचित्तमक्खियम्मि उ हत्थे मत्ते य होति चउभंगो । पढमम्मि दोवि मक्खिय हत्थो बितियम्मि णवि मत्तो ॥ ६ ॥ ततिए मत्तो मक्खितो णवि हत्थो चरिमए ण एक्कोवि । आदितिए पडिसेहो चरिमो भंगो अणुण्णातो ॥ ७ ॥ अचित्तमक्खित दुहा गरहितदव्वेण वावि इतरेणं । गरहित होति दुहा तू लोगे तह उभययो वावि ॥ ८ ॥ मंसवससोणियाऽऽसवलसुणादी गरहिएस लोगम्मि । मुत्तपुरीसादीहिं गरहियमेयं भवे उभए ॥ ९ ॥ दुविहे तु गर-हिए तू आवत्ती चउलहू मुणेतव्वा । दाणं आयामं तू अगरहितेत्तो पवक्खामि ॥ १५४० ॥ अगरहिय कूरकुसणं गोरसघततेल्लमादीहिं जं तु । संसत्तमसंसत्तं दुविहंपिय होति णायव्वं ॥ १ ॥ अचित्तमक्खियम्मी चउसुवि भंगेसु होति भयणा तु । अगरहिएण तु गहणं पडिसेहो गरहिए होति ॥ २ ॥ संसज्जिमेहिं वज्जं अगरहिएहिंपि गोरसदवेहिं । मधुघततेल्लगुलेहि य मा मच्छिपिवीलियाघाओ ॥ ३ ॥ गोरससंसत्ते या घततेल्लादिकीडिसंसत्ते । चतुलहुगा आवत्ती दाणं पुण होनि आयामं ॥ ४ ॥ लोइयगरहितमज्जामंसवसादीहिं मक्खियं जं तु । नवरं पुराण भाविअ देसिं व पडुच्च गहणं तु ॥ ५ ॥ दोहिंपि गरहिएहिं मुत्तुच्चाराइं होइ अग्गहणं । मक्खित भणितं एयं एत्तो वोच्छामि णिक्खित्तं ॥ ६ ॥ णिक्खित्तं ठवियन्ति य एगट्ठं ठाण-मग्गणा एत्थं । तं तिविहं होति ठाणं सचित्तं मीस अचित्तं ॥ ७ ॥ एत्थं चतूभंग भवे सचित्तादी अणेगह इमो तु । सचित्तं सचित्ते सचित्त मीसे वऽचित्ते वा ॥ ८ ॥ मीसं वा ससचित्ते मीसं मीसे व होनि णिक्खित्ते । चित्तेणं मीसेण य एक्केको होति चउभंगो ॥ ९ ॥ अहुणा चित्ताचित्ते चित्तं चित्तम्मि होति णिक्खेवो । चित्तं वा अचित्तं अचित्त चित्तोभयमचित्ते ॥ १५५० ॥ अहुणा मीसं मीसे मीसमचित्ते अचित्त मीसम्मि । अचित्तं अचित्ते ततिएसो होति चतुभंगो ॥ १ ॥ चतुभंगेसेतेसुं संजोगाऽणेगहा मुणेयव्वा । पुढ ादिएसु छस्सुवि काएसु सठाण परठाणे ॥ २ ॥ सचित्तपुढविकाए सचित्तो चेव पुढवि णिक्खित्तो । सचित्ते अचित्तो अचित्ते वावि सचित्तो ॥ ३ ॥ अचित्ते अचित्तो सट्ठाणे एस होति चउभंगो । परठाणे पंचऽण्णे आऊमादीसिमे होन्ति ॥ ४ ॥ सचित्तपुढविकाओ सचित्ताउम्मि होति णिक्खित्तो । सचित्तो अचित्ते अचित्तो चेव सचित्ते ॥ ५ ॥ अचित्तो अचित्ते एवं सेसेसु तेउमादीसुं । संजोगा णेतव्वा पंचसु परठाणे चउभंगो ॥ ६ ॥ एमेव आउतेऊवाउवणस्सतितसाण चतुभंगा । एक्केके विण्णेया छच्चतुभंगाण संजोगा ॥ ७ ॥ चित्ते सच्चित्तेणं ते छत्तीसं हवंति संजोगा । अच्चित्तमीसएणवि एवतिया चेव संजोगा ॥ ८ ॥ मीसे अच्चित्तेणवि एवतिय च्चिय हवंति संजोगा । तिण्णिवि छत्तीसा तू मिलिया अट्ठुत्तरसयं तु ॥ ९ ॥ अहवण सचित्तमीसा य एगयो एगयो य अच्चित्तो । एत्थं चतुभंगो तू तत्थाऽऽदितिए कहा णत्थि ॥ १५६० ॥ जं पुण अचित्तदव्वं णिक्खिप्पति चेयणेसु कायेसु । तहिं मग्गणा तु इणमो अणंतर परंपरा होति ॥ १ ॥ चित्तपुढविइ अणंतर ओगाहिमगाइ होति णिक्खित्तं । होती परंपरं पुण पिहुडगयं जं तु पुढविठियं ॥ २ ॥ उदगमणंतर णवणीयमादि पारंपरं तु णावादी । ते उ अणंतर पारंपरे य दुयगा इमे सत्त ॥ ३ ॥ विज्झायमुम्मुरिंगालमेव अप्पत्तपत्तसमजाले । वोलीणे सत्त दुगा एते तु अणंतर परे य ॥ ४ ॥ विज्झाउत्ति ण दीसति अग्गी दीसति य इंधणे छूढे । छारुम्मीसा पिंगल अगणिकणा मुम्मुरो होति ॥ ५ ॥ णिज्जाला हिलिहिलिया इंगाला ते भवे मुणेतव्वा । होति चउत्थो भंगो ते जालाऽपत्तपिहुडं तु ॥ ६ ॥ पंचम पत्त। पिहुडं छट्ठम्मि य होति (२६०)

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [३५]

दीप अनुक्रम [३५]

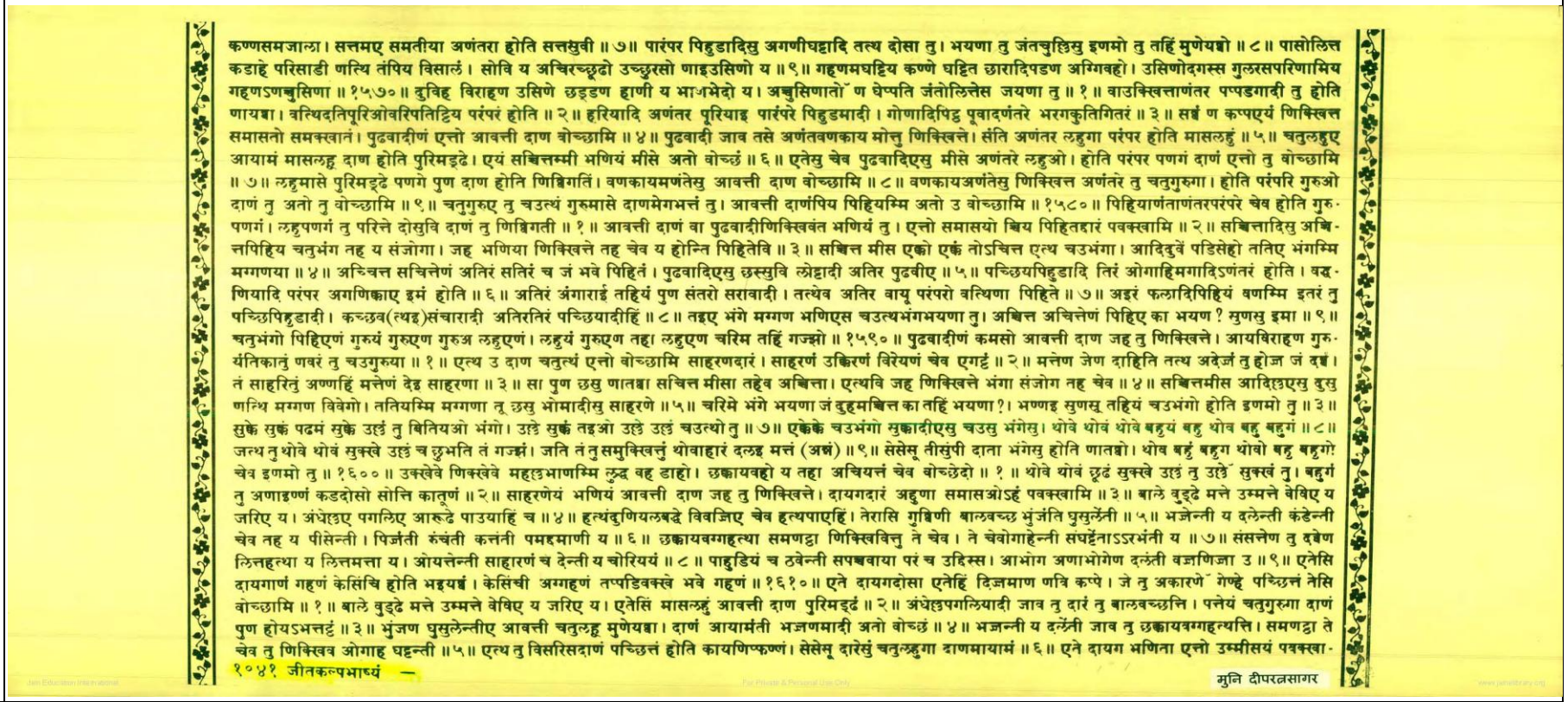

कण्णसमजाला। सत्तमए समतीया अणंतरा होति सत्तसुवी ॥ ७॥ पारंपर पिहुडादिसु अगणीघट्टादि तत्थ दोसा तु। भयणा तु जंतचुल्लिसु इणमो तु तहिं मुणेयव्वो ॥ ८॥ पासोलित्त कडाहे परिसाडी णत्थि तंपिय विसालं। सोवि य अचिरच्छूढो उच्छुरसो णाइउसिणो य ॥ ९॥ गहणमघट्टिय कण्णे घट्टित छारादिपडण अग्गिवहो। उसिणोदगस्स गुलरसपरिणामिय गहणऽणचुसिणा ॥ १५७०॥ दुविह विराहण उसिणे छड्डण हाणी य भाणभेदो य। अचुसिणातो ण घेप्पति जंतोलित्तेस जयणा तु ॥ १॥ वाउक्खित्ताणंतर पप्पडगादी तु होति णायव्वा। वत्थिदतिपूरिओवरिपतिट्ठिय परंपरं होति ॥ २॥ हरियादि अणंतर पूरियाइ पारंपरे पिहुडमादी। गोणादिपिट्ठ पूवादणंतरे भरगकुतिगितरं ॥ ३॥ सव्वं ण कप्पएयं णिक्खित्त समासतो समक्खातं। पुढवादीणं एत्तो आवत्ती दाण वोच्छामि ॥ ४॥ पुढवादी जाव तसे अणंतवणकाय मोत्तु णिक्खित्ते। संति अणंतर लहुगा परंपर होति मासलहुं ॥ ५॥ चतुलहुए आयामं मासलहु दाण होति पुरिमड्ढे। एयं सचित्तम्मी भणियं मीसे अतो वोच्छं ॥ ६॥ एतेसु चेव पुढवादिएसु मीसे अणंतरे लहुओ। होति परंपर पणगं दाणं एत्तो तु वोच्छामि ॥ ७॥ लहुमासे पुरिमड्ढे पणगे पुण दाण होति णिव्विगतिं। वणकायमणंतेसु आवत्ती दाण वोच्छामि ॥ ८॥ वणकायअणंतेसु णिक्खित्त अणंतरे तु चतुगुरुगा। होति परंपरि गुरुओ दाणं तु अतो तु वोच्छामि ॥ ९॥ चतुगुरुए तु चउत्थं गुरुमासे दाणमेगभत्तं तु। आवत्ती दाणंपिय पिहियम्मि अतो उ वोच्छामि ॥ १५८०॥ पिहियाणंतराणंतरपरंपरे चेव होति गुरु- पणगं। लहुपणगं तु परित्ते दोसुवि दाणं तु णिव्विगती ॥ १॥ आवत्ती दाणं वा पुढवादीणिक्खिवंत भणियं तु। एत्तो समासयो क्विय पिहितहारं पवक्खामि ॥ २॥ सचित्तादिसु अचि- त्तपिहिय चतुभंग तह य संजोगा। जह भणिया णिक्खित्ते तह चेव य होन्ति पिहितेवि ॥ ३॥ सचित्त मीस एक्को एक्कं तोऽचित्त एत्थ चउभंगा। आदिदुवें पडिसेहो ततिए भंगम्मि मग्गणया ॥ ४॥ अच्चित्त सचित्तेणं अतिरं सतिरं च जं भवे पिहितं। पुढवादिएसु छस्सुवि लेट्टादी अतिर पुढवीए ॥ ५॥ पच्छियपिहुडादि तिरं ओगाहिमगादिऽणंतरं होति। वद्द- णियादि परंपर अगणिक्काए इमं होति ॥ ६॥ अतिरं अंगाराई तहियं पुण संतरो सरावादी। तत्थेव अतिर वायु परंपरो वत्थिणा पिहिते ॥ ७॥ अइरं फलादिपिहियं वणम्मि इतरं तु पच्छिपिहुडादी। कच्छव(त्थइ)संचारादी अतिरतिरं पच्छियादीहिं ॥ ८॥ तइए भंगे मग्गण भणिएस चउत्थभंगभयणा तु। अचित्त अचित्तेणं पिहिए का भयण? सुणसु इमा ॥ ९॥ चतुभंगो पिहिएणं गुरुयं गुरुएण गुरुअ लहुएणं। लहुयं गुरुएण तहा लहुएण चरिम तहिं गज्झो ॥ १५९०॥ पुढवादीणं कमसो आवत्ती दाण जह तु णिक्खित्ते। आयविराहण गुरु- यंतिकातुं णवरं तु चउगुरुया ॥ १॥ एत्थ उ दाण चतुत्थं एत्तो वोच्छामि साहरणदारं। साहरणं उक्किरणं विरेयणं चेव एगट्ठं ॥ २॥ मत्तेण जेण दाहिति तत्थ अदेज्जं तु होज्ज जं दव्वं। तं साहरितुं अण्णहिं मत्तेणं देइ साहरणा ॥ ३॥ सा पुण छसु णातव्वा सचित्त मीसा तहेव अचित्ता। एत्थवि जह णिक्खित्ते भंगा संजोग तह चेव ॥ ४॥ सचित्तमीस आदिल्लएसु दुसु णत्थि मग्गण विवेगो। ततियम्मि मग्गणा तू छसु भोमादीसु साहरणे ॥ ५॥ चरिमे भंगे भयणा जं दुहमचित्त का तहिं भयणा?। भण्णइ सुणसु तहियं चउभंगो होति इणमो तु ॥ ३॥ सुक्के सुक्कं पढमं सुक्के उल्लं तु बितियओ भंगो। उल्ले सुक्कं तइओ उल्ले उल्लं चउत्थो तु ॥ ७॥ एक्केक्के चउभंगो सुक्कादीएसु चउसु भंगेसु। थोवे थोवं थोवे बहुयं बहु थोव बहु बहुगं ॥ ८॥ जत्थ तु थोवे थोवं सुक्खे उल्लं च छुभति तं गज्झं। जति तं तु समुक्खित्तुं थोवाहारं दलइ मत्तं (अन्नं) ॥ ९॥ सेसेसू तीसुंपी दाता भंगेसु होति णातव्वो। थोव बहुं बहुग थोवो बहु बहुगो चेव इणमो तु ॥ १६००॥ उक्खेवे णिक्खेवे महल्लभाणम्मि लुद्ध वह डाहो। छक्कायवहो य तहा अचियत्तं चेव वोच्छेदो ॥ १॥ थोवे थोवं छूढं सुक्खे उल्लं तु उल्ले सुक्खं तु। बहुगं तु अणाइण्णं कडदोसो सोत्ति कातूणं ॥ २॥ साहरणेयं भणियं आवत्ती दाण जह तु णिक्खित्ते। दायगदारं अहुणा समासओऽहं पवक्खामि ॥ ३॥ बाले वुड्ढे मत्ते उम्मत्ते वेविए य जरिए य। अंधेऽहए पगलिए आरूढे पाउयाहिं च ॥ ४॥ हत्थंदुणियलबद्धे विवज्जिए चेव हत्थपाएहिं। तेरासि गुव्विणी बालवच्छ भुंजंति घुसुलेंती ॥ ५॥ भज्जेन्ती य दलेन्ती कंडेन्ती चेव तह य पीसेन्ती। पिजंती रुंचंती कत्तंती पमद्दमाणी य ॥ ६॥ छक्कायवग्गहत्था समणट्ठा णिक्खिवित्तु ते चेव। ते चेवोगाहेन्नी संघट्टेंताऽऽरभंती य ॥ ७॥ संसत्तेण तु दव्वेण लित्तहत्था य लित्तमत्ता य। ओयत्तेन्ती साहारणं च देन्ती य चोरियं ॥ ८॥ पाहुडियं च ठवेन्ती सपच्चवाया परं च उद्दिस्स। आभोग अणाभोगेण दलंती वज्जणिज्जा उ ॥ ९॥ एतेसि दायगाणं गहणं केसिंचि होति भइयव्वं। केसिंची अग्गहणं तप्पडिवक्खे भवे गहणं ॥ १६१०॥ एते दायगदोसा एतेहिं दिज्जमाण णवि कप्पे। जे तु अकारणे गेण्हे पच्छित्तं तेसि वोच्छामि ॥ १॥ बाले वुड्ढे मत्ते उम्मत्ते वेविए य जरिए य। एतेसिं मासलहुं आवत्ती दाण पुरिमड्ढं ॥ २॥ अंधेऽहपगलियादी जाव तु दारं तु बालवच्छत्ति। पत्तेयं चतुगुरुगा दाणं पुण होयऽभत्तट्ठं ॥ ३॥ भुंजण घुसुलेन्तीए आवत्ती चतुलहु मुणेयव्वा। दाणं आयामंती भज्जणमादी अतो वोच्छं ॥ ४॥ भज्जन्ती य दलेंती जाव तु छक्कायवग्गहत्थत्ति। समणट्ठा ते चेव तु णिक्खिव ओगाह घट्टन्ती ॥ ५॥ एत्थ तु विसरिसदाणं पच्छित्तं होति कायणिप्फण्णं। सेसेसू दारेसुं चतुल्लहुगा दाणमायामं ॥ ६॥ एते दायग भणिता एत्तो उम्मीसयं पवक्खा-

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [३५] दीप अनुक्रम [३५]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

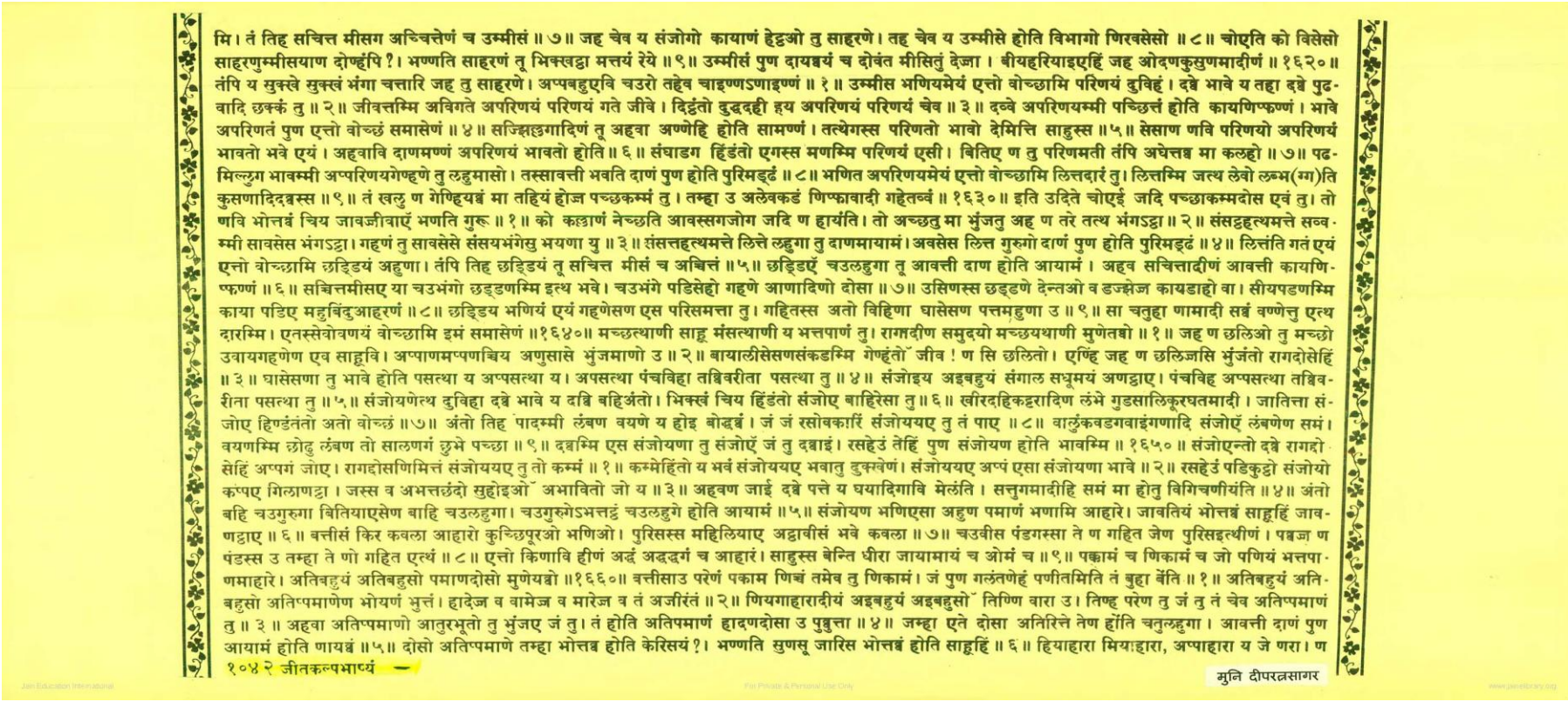

मि। तं तिह सचित्त मीसग अच्चित्तेणं च उम्मीसं ॥७॥ जह चेव य संजोगो कायाणं हेट्ठओ तु साहरणे। तह चेव य उम्मीसे होति विभागो णिरवसेसो ॥८॥ चोएति को विसेसो साहरणुम्मीसयाण दोण्हंपि ?। भण्णति साहरणं तू भिक्खट्ठा मत्तयं रेये ॥९॥ उम्मीसं पुण दायव्वयं च दोवंत मीसितुं देजा । बीयहरियाइएहिं जह ओदणकुसुणमादीणं ॥१६२०॥ तंपि य सुक्खे सुक्खं भंगा चत्तारि जह तु साहरणे। अप्पबहुएवि चउरो तहेव चाइण्णऽणाइण्णं ॥ १ ॥ उम्मीस भणियमेयं एत्तो वोच्छामि परिणयं दुविहं। दव्वे भावे य तहा दव्वे पुढ-वादि छक्कं तु ॥ २ ॥ जीवत्तम्मि अविगते अपरिणयं परिणयं गते जीवे। दिट्ठंतो दुद्धदही इय अपरिणयं परिणयं चेव ॥ ३ ॥ दव्वे अपरिणयम्मी पच्छित्तं होति कायणिप्फण्णं। भावे अपरिणतं पुण एत्तो वोच्छं समासेणं ॥ ४ ॥ सज्झिल्लगादिणं तू अहवा अण्णेहि होति सामण्णं। तत्थेगस्स परिणतो भावो देमित्ति साहुस्स ॥५॥ सेसाण णवि परिणयो अपरिणयं भावतो भवे एयं। अहवावि दाणमण्णं अपरिणयं भावतो होति॥ ६ ॥ संघाडग हिंडंतो एगस्स मणम्मि परिणयं एसी। बितिए ण तु परिणमती तंपि अघेत्तव्व मा कलहो ॥ ७॥ पढ-मिल्लुग भावम्मी अप्परिणयगेण्हणे तु लहुमासो। तस्सावत्ती भवति दाणं पुण होति पुरिमड्ढं ॥ ८॥ भणित अपरिणयमेयं एत्तो वोच्छामि लित्तदारं तु। लित्तम्मि जत्थ लेवो लब्भ(ग्ग)ति कुसणादिदव्वस्स ॥ ९ ॥ तं खलु ण गेण्हियव्वं मा तहियं होज्ज पच्छकम्मं तु। तम्हा उ अलेवकडं णिप्फावादी गहेतव्वं ॥ १६३०॥ इति उदिते चोएई जदि पच्छाकम्मदोस एवं तु। तो णवि भोत्तव्वं चिय जावज्जीवाएं भणति गुरू ॥ १ ॥ को कल्लाणं नेच्छति आवस्सगजोग जदि ण हायंति। तो अच्छतु मा भुंजतु अह ण तरे तत्थ भंगऽट्ठा ॥ २ ॥ संसट्ठहत्थमत्ते सव्व-म्मी सावसेस भंगऽट्ठा। गहणं तु सावसेसे संसयभंगेसु भयणा यु ॥ ३ ॥ संसत्तहत्थमत्ते लित्ते लहुगा तु दाणमायामं। अवसेस लित्त गुरुगो दाणं पुण होति पुरिमड्ढं ॥ ४ ॥ लित्तंति गतं एयं एत्तो वोच्छामि छड्डियं अहुणा। तंपि तिह छड्डियं तू सचित्त मीसं च अचित्तं ॥५॥ छड्डिएँ चउलहुगा तू आवत्ती दाण होति आयामं। अहव सचित्तादीणं आवत्ती कायणि-प्फण्णं ॥ ६ ॥ सचित्तमीसए या चउभंगो छड्डणम्मि इत्थ भवे। चउभंगे पडिसेहो गहणे आणादिणो दोसा ॥ ७ ॥ उसिणस्स छड्डणे देन्तओ व डज्झेज्ज कायडाहो वा। सीयपडणम्मि काया पडिए महुबिंदुआहरणं ॥ ८ ॥ छड्डिय भणियं एयं गहणेसण एस परिसमत्ता तु। गहितस्स अतो विहिणा घासेसण पत्तमहुणा उ ॥ ९ ॥ सा चतुहा णामादी सव्वं वण्णेत्तु एत्थ दारम्मि। एतस्सेवोवणयं वोच्छामि इमं समासेणं ॥१६४०॥ मच्छत्थाणी साहू मंसत्थाणी य भत्तपाणं तु। रागदीण समुदयो मच्छयथाणी मुणेतव्वो ॥ १ ॥ जह ण छलिओ तु मच्छो उवायगहणेण एव साहूवि। अप्पाणमप्पणचिय अणुसासे भुंजमाणो उ ॥ २ ॥ बायालीसेसणसंकडम्मि गेण्हंतो जीव ! ण सि छलितो। एण्हिं जह ण छलिज्जसि भुंजंतो रागदोसेहिं ॥ ३ ॥ घासेसणा तु भावे होति पसत्था य अप्पसत्था य। अपसत्था पंचविहा तव्विवरीता पसत्था तु ॥ ४ ॥ संजोइय अइबहुयं संगाल सधूमयं अणट्ठाए। पंचविह अप्पसत्था तव्विव-रीता पसत्था तु ॥ ५ ॥ संजोयणेत्थ दुविहा दव्वे भावे य दव्वि बहिअंतो। भिक्खं चिय हिंडंतो संजोए बाहिरेसा तु ॥ ६ ॥ खीरदहिकट्टरादिण लंभे गुडसालिकूरघतमादी। जातित्ता सं-जोए हिण्डंतंतो अतो वोच्छं ॥ ७ ॥ अंतो तिह पादम्मी लंबण वयणे य होइ बोद्धव्वं। जं जं रसोवकारिं संजोययए तु तं पाए ॥ ८ ॥ वालुंकवडगवाइंगणादि संजोएँ लंबणेण समं। वयणम्मि छोडु लंबण तो सालणगं छुभे पच्छा ॥ ९ ॥ दव्वम्मि एस संजोयणा तु संजोएँ जं तु दव्वाइं। रसहेउं तेहिं पुण संजोयण होति भावम्मि ॥ १६५० ॥ संजोएन्तो दव्वे रागदो-सेहिं अप्पगं जोए। रागदोसणिमित्तं संजोययए तु तो कम्मं ॥ १ ॥ कम्मेहिंतो य भवं संजोययए भवातु दुक्खेणं। संजोययए अप्पं एसा संजोयणा भावे ॥ २ ॥ रसहेउं पडिकुट्ठो संजोयो कप्पए गिलाणट्ठा । जस्स व अभत्तछंदो सुहोइओ अभाविनो जो य ॥ ३ ॥ अहवण जाई दव्वे पत्ते य घयादिगावि मेलंति । सत्तुगमादीहि समं मा होतु विगिचणीयंति ॥ ४ ॥ अंतो बहि चउगुरुगा बितियाएसेण बाहि चउलहुगा। चउगुरुगेऽभत्तट्ठं चउलहुगे होति आयामं ॥ ५ ॥ संजोयण भणिएसा अहुण पमाणं भणामि आहारे। जावतियं भोत्तव्वं साहूहिं जाव-णट्ठाए ॥ ६ ॥ बत्तीसं किर कवला आहारो कुच्छिपूरओ भणिओ। पुरिसस्स महिलियाए अट्ठावीसं भवे कवला ॥ ७ ॥ चउवीस पंडगस्सा ते ण गहित जेण पुरिसइत्थीणं। पव्वज्ज ण पंडस्स उ तम्हा ते णो गहित एत्थं ॥ ८ ॥ एत्तो किणावि हीणं अर्द्ध अद्धद्धगं च आहारं। साहुस्स बेन्ति धीरा जायामायं च ओमं च ॥ ९ ॥ पकामं च णिकामं च जो पणियं भत्तपा-णमाहारे। अतिबहुयं अतिबहुसो पमाणदोसो मुणेयव्वो ॥१६६०॥ बत्तीसाउ परेणं पकाम णिच्चं तमेव तु णिकामं। जं पुण गलंतणेहं पणीतमिति तं बुहा बेंति ॥ १ ॥ अतिबहुयं अति-बहुसो अतिप्पमाणेण भोयणं भुत्तं। हादेज्ज व वामेज्ज व मारेज्ज व तं अजीरंतं ॥ २ ॥ णियगाहारादीयं अइबहुयं अइबहुसो णिण्णि वारा उ। तिण्ह परेण तु जं तु तं चेव अतिप्पमाणं तु ॥ ३ ॥ अहवा अतिप्पमाणो आतुरभूतो तु भुंजए जं तु। तं होति अतिपमाणं हादणदोसा उ पुवुत्ता ॥ ४ ॥ जम्हा एते दोसा अतिरित्ते तेण होंति चतुल्लहुगा। आवत्ती दाणं पुण आयामं होति णायव्वं ॥५॥ दोसो अतिप्पमाणे तम्हा भोत्तव्व होति केरिसयं ?। भण्णति सुणसू जारिस भोत्तव्वं होति साहूहिं ॥ ६ ॥ हियाहारा मियाहारा, अप्पाहारा य जे णरा। ण

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [३६]

दीप अनुक्रम [३६]

ते विज्जा चिगिच्छंति, अप्पाणं ते चिगिच्छगा ॥ ७॥ हितमहितं होति दुहा इह परलोगे य होति चउभंगो। इहलोग हितं ण परे किंचि परे णेय इहलोए ॥ ८ ॥ किंचि हितमुभयलोए णोभयलोए चतुत्थओ भंगो। पढमगभंगो तहियं जे दव्वा होन्ति अविरुद्धा ॥ ९॥ जह खीरदहिगुलादी अणेसणिज्जा व रत्तदुट्ठे वा। भुंजंते होति हियं इहइं ण पुणाइं परलोए ॥१६७०॥ अमणुण्णेसणसुद्धं परलोगहितं ण होति इहलोगे। पत्थं एसणसुद्धं उभयहितं होति णातव्वं ॥ १॥ अहितोभयलोगम्मी अपत्थदव्वं अणेसणिज्जं च। अहवावि रत्तदुट्ठो भुंजति एत्तो मियं वोच्छं ॥ २॥ अद्धमसणस्स सव्वंजणस्स कुज्जा दवस्स दो भाए। वायुपवियारणट्ठा छब्भागं ऊणगं कुज्जा ॥ ३॥ सीयो उसिणो साहारणो य कालो तिहा मुणेयव्वो। एएसुं तीसुंपी आहारे होतिमा मत्ता ॥ ४॥ एगो दवस्स भागो अवट्ठितो भोयणस्स दो भागा। वड्ढंति व हायंति व दो दो भागा तु एक्केक्के ॥ ५॥ एत्थ तु ततियचतुत्था दोण्णिवि अणवट्ठिता भवे भागा। पंचम छट्ठो पढमो बितिओ य अवट्ठिता भागा ॥ ६॥ एयं तु मियं भणियं एत्तोवी हीणगं भवे अप्पं। एय पमाणाऽभिहितं संगालादी अतो वोच्छं ॥ ७॥ संगाले चउगुरुगा आवत्ती दाण होयऽभत्तट्ठं। चउलहुगा तु सधूमे आवत्ती दाणमायामं ॥ ८॥ णिक्कारण भुंजन्ते एत्थवि लहुगा तु दाणमायामं। बितियादेसे लहुओ आवत्ती दाण पुरिमड्ढं ॥ ९॥ णवि भुंजइ कारणतो एत्थवि लहुगा उ दाणमायामं। सेंगालादिण कमसो सरूवमिणमो पवक्खामि ॥१६८०॥ जह इंगाला जलिया डहंति जं तत्थ इंधणं पडियं। इह चिय रागिंगाला डहंति चरणिंधणं णियमा ॥ १॥ रागेण सइंगालं जं आहारेइ मुच्छिओ साहू। सुट्ठु सुसंभित णिद्धं सुपक्क सुरसं अहो सुरहिं ॥ २॥ रागग्गीपज्जलिओ भुंजंतो फासुयंपि आहारं। णिद्दड्ढिंगालणिभं करेति चरणिंधणं खिप्पं ॥ ३॥ भणितं संगालेयं अहुणा वोच्छं सधूमगं पगते। केवलवियणंते तू धूमायंतं तहा छगणं ॥ ४॥ जह वावि चित्तकम्मं धूमेणोरत्तयं ण सोभइ उ। तह धूमदोसरत्तं चरणंपि ण सोभए मइलं ॥ ५॥ दोसेण सधूमं तू जं आहारेति साहु णिंदंतो। विरसमलोणं कुहितं रोरा भोक्खं(भक्खं)ति णणु एयं ॥ ६॥ दोसग्गीवि जलंतो अप्पत्तियधूमधूमियं चरणं। अंगारमेत्तसरिसं जा ण भवति णिड्डहति ताव ॥ ७॥ रागेण सइंगालं दोसेण सधूमगं मुणेयव्वं। रागद्दोससहगतं तम्हा तु ण होति भोत्तव्वं ॥ ८॥ आहारंति तवस्सी विगतिंगालं च विगयधूमं च। झाणऽज्झयणणिमित्तं एसुवएसो पवयणस्स ॥ ९॥ भणितं सधूममेयं एत्तो वोच्छामि कारणद्दारं। तं पुण पडिक्कमंतो चरिमुस्सग्गे विचिन्तेति ॥ १६९०॥ भोत्तव्व कारणम्मी किं अत्थि अहव नत्थि जइ अत्थी। तो भुंजेज्जा साहू के पुण ते कारणा? सुणसु ॥ १॥ छहिं कारणेहिं साहू आहारंतो उ आयरति धम्मं। छहिं चेव कारणेहिं णिज्जूहंतो उ आयरति ॥ २॥ वेयण वेयावच्चे इरियट्ठाए य संजमट्ठाए। तह पाणवत्तियाए छट्ठं पुण धम्मचिन्ताए ॥ ३॥ णत्थि छुहाएं सरिसिया वियणा भुंजेज्ज तप्पसमणट्ठं। छादो वेयावच्चं ण तरति काउं अयो भुंजे ॥ ४॥ इरियं च ण सोहेती खुहितो भमलीय पेच्छ अन्धारं। थामो वा परिहायइ पेहादी संजमं ण तरे ॥५॥ आयुसरीरप्पाणादि छविहे पाण ण तरती मोत्तुं। तद्धारणट्ठ तेणं भुंजेज्जा पाणवत्तीयं ॥ ६॥ धम्मज्झाणं ण तरति चिन्तेउं पुबरत्तकालम्मि। अहवावी पंचविहं ण तरति सज्झाय काउं जे ॥ ७॥ एतेहिं कारणेहिं छहिं आहारेति संजतो णियमा। छहिं चेव कारणेहिं णाहारेती इमेहिं तु ॥ ८॥ आतंके उवसग्गे तितिक्खया बंभचेरगुत्तीए। पाणिदया तवहेऊ सरीरवोच्छेयणट्ठाए ॥ ९॥ आयंका जरमादी तम्मुप्पण्णे ण भुंजे भणितं च। सहसुप्पइया वाही वारेज्जा अट्टमादीहिं ॥ १७००॥ रायासण्णायादी उवसग्गो तम्मिवी ण भुंजेज्जा। सहणट्ठा तु तितिक्खा बाहिज्जंते तु विसएहिं ॥ १॥ भणितं च जिणिंदेहिं अवि आहारं जती हु वोच्छिंदे। लोगेऽवि भणिय विसया विणिवत्तंते अणाहारे ॥ २॥ तो बंभरक्खणट्ठा णवि भुंजेज्जाहि एवमाहारं। पाणदय वास महिया पाउसकाले व णवि भुंजे ॥ ३॥ तवहेतु चउत्थादी जाव तु छम्मासिओ तवो होति। छट्ठं णिच्छिण्णभरो छड्डेतुमणो सरीरं तु ॥ ४॥ असमत्थो संजमस्स उ कतकिच्चोवक्खरं व तो देहं। छड्डेमित्ति न भुंजइ सव्वह वोच्छेय आहारं ॥ ५॥ सोलस उग्गमदोसा सोलस उप्पादणाएँ दोसा तु। दस एसणाएँ दोसा संजोयणमादि पंचेव ॥ ६॥ सीयालीसं एते सव्वेवी पिंडिता भवे दोसा। जेहिं अविसुद्ध पिंडे चरणुवघातो जतीण भवे ॥ ७॥ एतद्दोसविमुक्को भणिताऽऽहारो जिणेहिं साहूणं। धम्मावस्सगजोगा जेण ण हायंति तं कुज्जा ॥ ८॥ उग्गममादीणं तू कारणपज्जन्तपत्थडो एस। लक्खण आवत्ती दाणमेव कमसो समक्खायं ॥ ९॥ अहुणा गाहाणं तू वोच्छामी अक्खरत्थमिणमो तू। उद्देस कम्म मोत्तुं चरमतियं होति सेसं तु ॥ १७१०॥ पासंडाणं पढमं बितियं समणाण ततिय साधूणं। चरिमतियं एवं तू कम्मंती आहकम्मं तु ॥ १॥ पासंडमीसजाए साहुमीसे य सघरमीसे य। बायरपाहुडिया तू विवाहउस्सक्कओसक्का ॥ २॥ आहड सपच्चवायं विराहणा जत्थ होति आयाए। लोभेण जो उ एसति सो होती लोभपिंडो तु ॥ ३॥ सव्वेसुवि एतेसु उद्देसिगमादिलोभपज्जंते। पत्तेयं पत्तेयं सोही एत्थं तु भत्तट्ठं ॥ ४॥ अतिरं अणंतणिक्खित्तपिहियसाहरियमीसियादीसुं। संजोग सइंगाले दुविह णिमित्ते य खमणं तु ॥ मू० ३६ ॥ ५॥ अतिर णिरंतर भण्णति अणंतकायो तु होति वणकायो। पूवलिमादी किंची णिक्खित्ते होति एत्थं तु ॥ ६॥ पिहितं अणंतकाए साहरियमणंतमीसियं वावि। आदिग्गहणेणं पुण अपरिणएऽणंतका-

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [३६]

दीप अनुक्रम [३६]

एवि ॥ ७॥ संजोए रसहेउं संगालं रागसहित णेयव्वं। पडुपण्णागतं वा दुविह णिमित्तेय णातव्वं ॥ ८॥ सव्वजहुद्दिट्ठेसुं दुविहणिमित्तादिपज्जयंतेसु। पत्तेयं पत्तेयं सोही एत्थं तु भत्तट्ठं ॥ ९॥ कम्मुद्देसियमीसे धायादिपगासणादिएसुंपि। पुरपच्छकम्मकुच्छियसंसत्तालित्तकरमत्ते॥ मू० ३७॥ १७२०॥ जावंति कम्म पढमे जावंतियमीसजायमादिछे। पंचविह घाति-पिंडो खीरादी अंकपज्जन्ते ॥ १॥ आदिग्गहणेणं पुण दूतीपिंडे णिमित्ततीए य। आजीववणिमपिंडे बादरतेगिच्छणाहिं च ॥ २॥ कोहे माणे य तहा संबंधी वयणसंथवे थीसु। विज्जा मंते चुण्णे जोगे एमेत आदिपदा ॥ ३॥ पादोकरणपगासे दव्वे कीए य आयपरकीए। भावे तु आयकीते लोइयपामिच्चिएसुं च ॥ ४॥ लोइयपरियट्टेऽवी परगामे आहडम्मि णिरवाते। पिहिउब्भिण्णसचित्ते तह य कवाडे य णायव्वे ॥ ५॥ मालोहडमुक्कोसे अच्छेज्जे तह य होति अणिसट्ठे। एमेते तु पगासणमादिपदा होंति णायव्वा ॥ ६॥ पुरकम्मपच्छकम्मे कुच्छि-यदव्वेण मक्खियं जं तु। संसत्तदव्वलित्ते हत्थे मत्ते व णातव्वं ॥ ७॥ एतेसु जहुद्दिट्ठो कम्मादिसु लित्तपज्जवसिएसु। पत्तेयं पत्तेयं सोही एत्थं तु आयामं ॥ ८॥ अतिरं परित्तणिक्खित्त-पिहियसाहरियमीसियादीसु। अइमाणधूमकारणविवज्जए विहियमायामं ॥ मू० ३८॥ ९॥ अतिर णिरंतर भणितं परित्तकाए उ होति णिक्खित्तं। परितेण य जं निहितं साहरियं वा परित्तेणं ॥ १७३०॥ मीस परित्तेणं चिय आदिग्गहणा परित्तलित्तेऽवि। परितेसु छड्डियम्मिवि आदिग्गहणा तु एमेते ॥ १॥ अइमाण सधूमे या आहारे कारणे विवज्जासा। कारण-विवज्जओ तू केरिसओ होतिमं वोच्छं ॥ २॥ आहारेति अकज्जे ण समुद्दिसे एव कारणे जो तु। एस विवज्जो भणितो सव्वत्थवि सोहि आयामं ॥ ३॥ अज्झोयरकडपूतियमायाऽणंते परंपरगए य। मीसाणंतागंतरगतादिए चेगमासणगं ॥ मू० ३९॥ ४॥ पासंडऽज्झोयरओ साहूअज्झोयरो य णायव्वो। होति कडो चउहा तू जावंतियमादि विन्नेया ॥ ५॥ आहारे पूति-यम्मी मायापिंडे य होति णायव्वे। सचित्तऽणंतकाए परंपरे जं तु णिक्खित्ते ॥ ६॥ मीसाणंतअणंतरणिक्खित्ते चेव होति णायव्वे। आदिग्गहणे पिहिते साहरिए मीसए चेव ॥ ७॥ गहिताणंतपरंपरमीसऽतिरं पिहियमादि बोद्धव्वं। एव जहुद्दिट्ठेसु सव्वत्थवि सोहि भत्तेकं॥ ८॥ ओहविभागुद्देसोवक्करणपूतीअठवियपागडिए। लोउत्तरपरियट्टियऽपमिच्चपरभावकीए य ॥ मू० ४०॥ ९॥ ओहुद्देसविभागे उद्देस चउव्विहे तु णातव्वे। उवगरणपूत्तिए या चिरठविए पागडे चेव ॥ १७४०॥ लोउत्तरपामिच्चे परियट्टिय उत्तरे य णायव्वे। परभावकीयमंखादिएसु सव्वेसु उद्दिट्ठो ॥ १॥ पत्तेयं पत्तेयं सोही एत्थं तु होति पुरिमड्ढं। सग्गामाहडमादी पत्तेएयं पवक्खामि ॥ २॥ सग्गामाहड दद्दर जहण्णमालोहडोत्तरे पढमे। सुहुमतिगिच्छा संथव-निगमक्खियदायगोवहए ॥ मू० ४१॥ ३॥ सग्गामाहडदद्दर उब्भिण्णे अहव गट्ठि(गंठि)सहिए तु। मालोहडे जहण्णे उयरो अज्झोयरो होति ॥ ४॥ पढमो जावंतज्झोयरो तु एसो य हो मुणेतव्वो। सुहुमतिगिच्छासंथववयणे तू होति णायव्वो ॥ ५॥ कद्दममक्खिय पुढवीआऊउदउल्लमक्खिए जं तु। वणकायपरित्तेणं उक्कुट्ठे मक्खियतिगेणं ॥ ६॥ दायगउवहय एन्नो दायग बालादियऽप्पभू जे य। एतेसेत्थऽहिगारो ते य इमे होंति बालादी ॥ ७॥ बाले वुड्ढे मत्ते उम्मत्ते वेविए य जरिए य। एते देंति तु जं तू तं होती दायगोवहयं ॥ ८॥ एतेसु जहुद्दिट्ठे-साऽऽहडमादीसु जरिययन्तेसु। पत्तेयं पत्तेयं सोही एत्थं तु पुरिमड्ढं ॥ ९॥ पत्तेयपरंपरठवियपिहियमीसे अणंतरादीसु। पुरिमड्ढं संकाए जं संकइ तं समावज्जे ॥ मू० ४२॥ १७५०॥ वणकायपरित्तेणं सचित्तपरंपरं तु णिक्खित्ते। तेणेव य पिहियं तू परंपरं होति विण्णेयं ॥ १॥ एमेव य साहरिए सचित्तपरंपरे परित्तम्मि। मीसपरित्तअणंतरणिक्खित्ते होति णायव्वं ॥ २॥ आदिग्गहणेणं तू पिहिए उ अणंतरे तु मीसम्मि। एमेव य साहरणे मीसेसु अणंतरे होति ॥ ३॥ सव्वेसु जहुद्दिट्ठेसु सोहि पुरिमड्ढमेत्थ पत्तेयं। संकाए जं संकति तस्सेव य होति पच्छित्तं ॥ ४॥ इत्तरठविए सुहुमे ससिणिद्धसरक्खमक्खिए चेव। मीसपरंपरठवियादिएसु बितिएसु वाऽविगती ॥ मू० ४३ ॥ ५॥ इत्तरठवणाभत्ते पाहुडिया सुहुम तह य ससिणिद्धे। आयु-मक्खियमेयं ससरक्खं पुढविए होति ॥ ६॥ पुढवीआउक्काएतेऊवाऊपरित्तवणकाए। बेइंदियतेइंदियचउरोपंचिंदिएसुं च ॥ ७॥ एतेसुं पुढवादिसु मीसे उ परंपरे उ णिक्खित्ते। पत्तेयं पत्तेयं लहुपणगं दाण णिव्विगती ॥ ८॥ वणकायऽणंतमीसे णिक्खित्ते परंपरं तु सोहीमा। गुरुपणगं आवत्ती दाणं पुण होति णिव्विगतिं ॥ ९॥ बितियाणंताणंतरणिक्खित्ते गुरुगपणग आवत्ती। दाणं णिव्विगती ऊ परंपरे होति एमेव ॥ १७६०॥ बितियपरित्ताणंतरणिक्खित्ते लहुगपणगमावत्ती। दाणं णिव्विगयं तू परंपरे होति एमेव ॥ १॥ सहसाऽणाभोगेण व जेसु पडिक्कमणमाहियं तेसु। आभोगओऽवि बहुसो अतिप्पमाणे व णिव्विगती ॥ मू० ४४॥ २॥ सहसा अणभोगा तू पुव्वुत्ता जेसु जेसु ठाणेसु। सव्वेसुवि तेसु भवे पडिक्कमणं पुव्वविहियं तु ॥ ३॥ तेसुत्ति कारणेसुं आभोगे इत्थ जाणमाणो उ। बहुसो होति पुणो पुणो अतिप्पमाणेऽवि एमेव ॥ ४॥ सव्वत्थ तु णिव्विगई सोही आभोगतो मुणेतव्वा। बहुसोऽवि सोहि एसा अतिप्पमाणेऽवि णातव्वा ॥ ५॥ धावणडेवणसंघरिसगमणकिड्डाकुहावणादीसु। उक्कुट्टिगीतछेलियजीवरुयादीसु य चउत्थं ॥ मू० ४५॥ ६॥ धावण गतिमतिरित्ता वाडित्ति व डेवणं तु उड्डवणं। संघरिसो जमलिओ तू को सिग्घगतित्ति वच्चति तु ॥ ७॥ किड्डा होयऽट्ठावयचउरंगाजूयमादि णायव्वा। वट्टादि इंदजालं खेड्डा उ कुहावणा एसा ॥ ८॥ आदिग्गहणेणं तू समा-सओ पहेलिया कुहेडादी। उक्कुट्टी पुक्कारो गीतं पुण होइ कंठं तु ॥ ९॥ छेलिय सेप्टा भण्णति संगारो कीरती तु सा सण्णा। जीवरुअ मयूरादी कोइल्लमादा व णातव्वं ॥ १७७०॥ (२६१)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [४५]

दीप अनुक्रम [४५]

धावणमादिपदेसुं सव्वेसु अहक्कमेण विण्णेयं । पत्तेयं पत्तेयं सोही साहुस्सऽभत्तट्ठं ॥ १ ॥ तिविहोवहिणो विचुतविस्सरितापेहिताणिवेदणए। णिव्वितियं पुरिमेक्कासणाइ सव्वम्मि चा-यामं ॥ मू० ४६ ॥ २ ॥ तिविहो तु होति उवही जहण्णओ मज्झिमो य उक्कोसो। चतुविह छव्विह चतुभेदयो य कमसो मुणेयव्वो ॥ ३ ॥ मुहपोति पायकेसरि पत्तट्ठवणं तु गोच्छओ चेव। एसो जहण्णओ तू मज्झिमगमतो पवक्खामि ॥ ४ ॥ पडलय रयतरणं वा पत्ताबंधो य चोलपट्टो य। मत्तय रयहरणं वा मज्झिमओ एस णातव्वो ॥ ५ ॥ पच्छादतिग पडिग्गह एसो उक्कोसओ चउब्भेओ। ओहोवही उ एसो तिविहो तु समासतो होति ॥ ६ ॥ ओवग्गहिओ तिविहो जहण्ण मज्झो तहेव उक्कोसो। सव्वो वण्णेयव्वो जह भणिओ कप्पअज्झयणे ॥ ७ ॥ विचुत पडियं भण्णति पुणरवि लद्धे जहण्णमादीसु। सोही पमायमूला णिव्वियमादी य इणमो उ ॥ ८ ॥ णिव्विगति जहण्णम्मि मज्झिमए सोहि होति पुरिमड्ढं। एक्कासणमुक्कोसे सव्वम्मि य होति आयामं ॥ ९ ॥ तिविहोवहि विस्सरिए णवि पडिलेहेइ तत्थ सोहि इमा। णिव्वितितं पुरिमेक्कासणं तु सव्वम्मि चाऽऽयामं ॥ १७८० ॥ तिविहोवहि विस्सरिए आयरिया-दीण जो तु ण णिवेदे। सोही णिव्वितियादी आयामंता मुणेयव्वा ॥ १ ॥ हारियघोतुग्गमियाणिवेदणादिण्णभोगदाणेसु। आसणमायामचतुत्थयाइं सव्वम्मि छट्ठं तु ॥ मू० ४७ ॥ २ ॥ हारेइ जहण्णोवहि सोही इक्कासणं तु दातव्वं। मज्झिमए आयामं उक्कोसे होयऽभत्तट्ठं ॥ ३ ॥ सव्वोवहि हारेती सोही छट्ठं तु होति णायव्वं। एत्तो धोए वोच्छं सोही उ जहण्णमादीणं ॥ ४ ॥ धोएं जहण्णेक्कासण मज्झिमए सोहि होति आयामं। उक्कोसेऽभत्तट्ठं धोए सव्वम्मि छट्ठं तु ॥ ५ ॥ तिविहोवहिमुग्गमितुं आयरियाणं तु जो ण णिव्वेदे। आसणमायामचतुत्थयाइं सव्वम्मि छट्ठं तु ॥ ६ ॥ उवही जहण्णमादी गुरूहिँ अविदिण्ण जो तु परिभुंजे। सोहिक्कासणमादी छट्ठंता होति सव्वम्मि ॥ ७ ॥ अणणुण्णाय गुरूहिं उवहि जहण्णादि देति अण्णस्स। सोहिक्कासणमादी छट्ठंतो होति जीएणं ॥ ८ ॥ मुहणंतय रयहरणे फिडिए णिव्विगतियं चउत्थं तु। नासिय हारविए वा जीएण चउत्थछट्ठाइं ॥ मू० ४८ ॥ ९ ॥ मुहणंत फिडिय उग्गह सोही णिव्विगतियं तु दायव्वं। रयहरणे तु चउत्थं फिडिए सोहेस लद्धम्मि ॥ १७९० ॥ मुहणंत पमादेणं हारविए णासिए व भत्तट्ठं। रयहरणे छट्ठं तू सोहेस पमादिणो जीए ॥ १ ॥ का-लऽद्धाणादीए णिव्विगती खमणमेव परिभोगे। अविहिविगिंचणियाए भत्तादीणं तु पुरिमड्ढं ॥ मू० ४९ ॥ २ ॥ विकहादिपमाएणं कालादीयं करेन्ते भत्तादी। सोही णिव्विगती तू परिभोगे होयऽभत्तट्ठं ॥ ३ ॥ एवऽद्धाणातीए अप्परिभोगेवि सोहि णिव्विगतिं। परिभोगेऽभत्तट्ठो अविहीय विगिंचणे पुरिमं ॥ ४ ॥ पाणस्सासंवरणे भूमितिगापेहणे य णिव्विगती। सव्व-स्सासंवरणे अगहणभंगे य पुरिमड्ढं ॥ मू० ५० ॥ ५ ॥ पाणस्सासंवरणे सोही साहुस्स होति णिव्विगतिं। भूमीतिगं इमं तू वोच्छामि समासतो इणमो ॥ ६ ॥ उच्चारभूमि पढमा बितिया पुण होति पासवणभूमी। तइया उ कालभूमी सोहेत्थ अपेहणेऽविगती ॥ ७ ॥ असणादी चतुभेदो सव्वोऽवि य एत्थ होति आहारो। तस्स असंवरणम्मी सोही साहुस्स पुरिमड्ढं ॥ ८ ॥ अहव णमुक्कारादी पच्चक्खाणं ण गेण्हए सव्वं। गहितं वा जो भंजति सोही सव्वत्थ पुरिमड्ढं ॥ ९ ॥ एयं चिय सामण्णं तवपडिमाऽभिग्गहादियाणंपि। णिव्वितियादी पक्खियपुरिसा-दिविभागतो णेयं ॥ मू० ५१ ॥ १८०० ॥ एयं चिय पुरिमड्ढं सामण्णविसेसियं मुणेयव्वं। तवपडिमअभिग्गहे या अगहणभंगे इमं वोच्छं ॥ १ ॥ तवो बारसहा होति, पडिमा तू एगरा-तिया। दव्वाती तु अभिग्गह, अगहणभंगे तु पुरिमड्ढं ॥ २ ॥ गाहापच्छद्धस्स तु इमा विभासा तु होति णातव्वा। खुड्डादी पंचण्हवि णिव्विगती अन्तऽभत्तट्ठो ॥ ३ ॥ चाउम्मासिय खुड्डगभिक्खू थेरो उवज्झ आयरिए। पुरिमड्ढ एगभत्तं आयाम चउत्थ छट्ठंता ॥ ४ ॥ पतिदिण पच्चक्खाणं जहसत्ति अगेण्हणे तुमब्भहियं। खुड्डादी पंचण्हवि एक्कासणमट्ठमं अंतो ॥ ५ ॥ फिडिए सतमुस्सारिय भंगे वेगादि वंदणादीसु। णिव्विगतिय पुरिमेगासणादि सव्वेसु चायामं ॥ मू० ५२ ॥ ६ ॥ फिडितुस्सग्गे एक्के पमाइणो सोहि होति णिव्विगतिं। दोहिं पुरि-मड्ढ भवे तिहिँ फिडिए सोहि भत्तेक्कं ॥ ७ ॥ सव्वे काउस्सग्गे फिडिए जुयओ पडिक्कमे जो तु। सोही पच्छाऽऽयामं उस्सारंते इमं वोच्छं ॥ ८ ॥ सतमुस्सारे एक्कं काउस्सग्गंति एत्थ णिव्विगतिं। दोसु तु पुरिमड्ढ भवे एक्कासणयं भवे तीहिं ॥ ९ ॥ सव्वे सतमुस्सारे आयंबिल एत्थ होति सोही तु। भग्गेऽवि य एस चिय सोही तह वंदणमदेन्ति ॥ १८१० ॥ अकएसु तु पुरिमाऽऽसणमायामं सव्वसो चउत्थं तु। पुव्वमपेहितथंडिल णिसिवोसिरणे दियासुवणे ॥ मू० ५३ ॥ १ ॥ ण करेंतस्सुस्सग्गं सोही एत्थं तु होइ पुरिमड्ढं। दोहि य एक्कासणयं तिहि अकरणे सोहि आयामं ॥ २ ॥ सव्वं चिय आवसयं अकरेंते सोहि होयऽभत्तट्ठो। काउस्सग्गे तह वंदणस्स सोही तहाऽकरणे ॥ ३ ॥ गाहापच्छद्धेण तु पुव्वं तु अपेहिए उ थंडिल्ले। णिसि-वोसिरणे सोही साहुस्स भवे अभत्तट्ठं ॥ ४ ॥ दियसुवणे णिक्कारणे सोही साहुस्स होयऽभत्तट्ठं। कोहं परिवसमाणे कक्कोलादीमतो वोच्छं ॥ ५ ॥ कोहे बहुदेवसिए आसव कक्कोलगा-दिएसुं च। लसुणादी पुरिमड्ढं तण्णादीवंधमुयणे य ॥ मू० ५४ ॥ ६ ॥ पक्खियमतिकामन्तो बहुदेवसिओत्ति एस कोहो तु। अहवा बहुदेवसिए चाउम्मासादिरित्ते तु ॥ ७ ॥ एयं बहु-देवसियं एत्थ उ सोही तु होइ भत्तट्ठं। आसवो वियडं भण्णति तमाइयंते अभत्तट्ठं ॥ ८ ॥ कक्कोलय सेवंते सोही साहुस्स होयऽभत्तट्ठं। पूईफलजाईफललवंगतंबोलमादिसु य ॥ ९ ॥ आ-

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [५४]

दीप अनुक्रम [५४]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

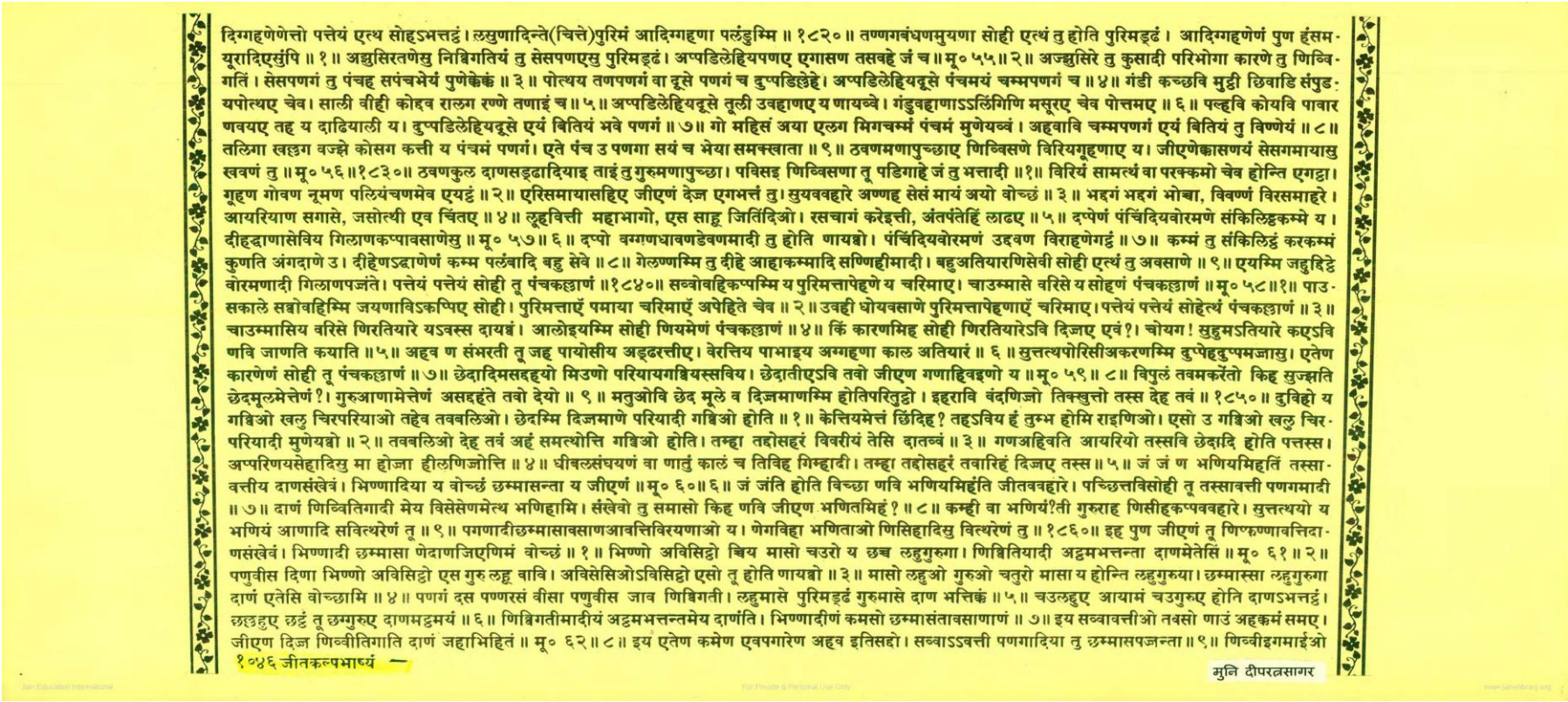

दिग्गहणेणेत्तो पत्तेयं एत्थ सोहऽभत्तट्ठं। लसुणादिन्ते(चित्ते)पुरिमं आदिग्गहणा पलंडुम्मि ॥ १८२० ॥ तण्णगबंधणमुयणा सोही एत्थं तु होति पुरिमड्ढं । आदिग्गहणेणं पुण हंसम-यूरादिएसुंपि ॥ १ ॥ अज्झुसिरतणेसु निव्विगतियं तु सेसपणएसु पुरिमड्ढं। अप्पडिलेहियपणए एगासण तसवहे जं च ॥ मू० ५५ ॥ २ ॥ अज्झुसिरे तु कुसादी परिभोगा कारणे तु णिव्वि-गतिं । सेसपणगं तु पंचह सपंचभेयं पुणेक्केक्कं ॥ ३ ॥ पोत्थय तणपणगं वा दूसे पणगं च दुप्पडिलेहे। अप्पडिलेहियदूसे पंचमयं चम्मपणगं च ॥ ४ ॥ गंडी कच्छवि मुट्ठी छिवाडि संपुड-यपोत्थए चेव। साली वीही कोद्दव रालग रण्णे तणाइं च ॥ ५ ॥ अप्पडिलेहियदूसे तूली उवहाणए य णायव्वे। गंडुवहाणाऽऽलिंगिणि मसूरए चेव पोत्तमए ॥ ६ ॥ पल्हवि कोयवि पावार णवयए तह य दाढियाली य। दुप्पडिलेहियदूसे एयं वितियं भवे पणगं ॥ ७ ॥ गो महिसं अया एलग मिगचम्मं पंचमं मुणेयव्वं। अहवावि चम्मपणगं एयं वितियं तु विण्णेयं ॥ ८ ॥ तलिगा खल्लग वज्झे कोसग कत्ती य पंचमं पणगं। एते पंच उ पणगा सयं च भेया समक्खाता ॥ ९ ॥ ठवणमणापुच्छाए णिव्विसणे विरियगूहणाए य। जीएणेक्कासणयं सेसगमायासु खवणं तु ॥ मू० ५६ ॥ १८३० ॥ ठवणकुल दाणसड्ढादियाइ ताई तु गुरुमणापुच्छा। पविसइ णिव्विसणा तू पडिगाहे जं तु भत्तादी ॥ १ ॥ विरियं सामत्थं वा परक्कमो चेव होन्ति एगट्ठा। गूहण गोवण नूमण पलियंचणमेव एयट्ठं ॥ २ ॥ एरिसमायासहिए जीएणं देज्ज एगभत्तं तु। सुयववहारे अण्णह सेसं मायं अयो वोच्छं ॥ ३ ॥ भद्दगं भद्दगं भोच्चा, विवण्णं विरसमाहरे। आयरियाण सगासे, जसोत्थी एव चिंतए ॥ ४ ॥ लूहवित्ती महाभागो, एस साहू जितिंदिओ। रसचागं करेइत्ती, अंतपंतेहिं लाढए ॥ ५ ॥ दप्पेणं पंचिंदियवोरमणे संकिलिट्ठकम्मे य। दीहद्धाणासेविय गिलाणकप्पावसाणेसु ॥ मू० ५७ ॥ ६ ॥ दप्पो वग्गणधावणडेवणमादी तु होति णायव्वो। पंचिंदियवोरमणं उद्दवण विराहणेगट्ठं ॥ ७ ॥ कम्मं तु संकिलिट्ठं करकम्मं कुणति अंगदाणे उ। दीहेणऽद्धाणेणं कम्म पलंबादि बहु सेवे ॥ ८ ॥ गेलण्णम्मि तु दीहे आहाकम्मादि सण्णिहीमादी। बहुअतियारणिसेवी सोही एत्थं तु अवसाणे ॥ ९ ॥ एयम्मि जहुद्दिट्ठे वोरमणादी गिलाणपज्जंते। पत्तेयं पत्तेयं सोही तू पंचकल्लाणं ॥ १८४० ॥ सव्वोवहिकप्पम्मि य पुरिमत्तापेहणे य चरिमाए। चाउम्मासे वरिसे य सोहणं पंचकल्लाणं ॥ मू० ५८ ॥ १ ॥ पाउ-सकाले सव्वोवहिम्मि जयणाविऽकप्पिए सोही। पुरिमत्ताएँ पमाया चरिमाएँ अपेहिते चेव ॥ २ ॥ उवही धोयवसाणे पुरिमत्तापेहणाएँ चरिमाए। पत्तेयं पत्तेयं सोहेत्थं पंचकल्लाणं ॥ ३ ॥ चाउम्मासिय वरिसे णिरतियारे यऽवस्स दायव्वं। आलोइयम्मि सोही णियमेणं पंचकल्लाणं ॥ ४ ॥ किं कारणमिह सोही णिरतियारेऽवि दिज्जए एवं ?। चोयग ! सुहुमऽतियारे कएऽवि णवि जाणति कयाति ॥ ५ ॥ अहव ण संभरती तू जह पायोसीय अड्ढरत्तीए। वेरत्तिय पाभाइय अग्गहणा काल अतियारं ॥ ६ ॥ सुत्तत्थपोरिसीअकरणम्मि दुप्पेहदुप्पमज्जासु। एतेण कारणेणं सोही तू पंचकल्लाणं ॥ ७ ॥ छेदादिमसद्दहयो मिउणो परियायगव्वियस्सविय। छेदातीएऽवि तवो जीएण गणाहिवइणो य ॥ मू० ५९ ॥ ८ ॥ विपुलं तवमकरेंतो किह सुज्झति छेदमूलमेत्तेणं ?। गुरुआणामेत्तेणं असद्दहंते तवो देयो ॥ ९ ॥ मतुओवि छेद मूले व दिज्जमाणम्मि होतिपरितुट्ठो। इहरावि वंदणिज्जो तिक्खुत्तो तस्स देह तवं ॥ १८५० ॥ दुविहो य गव्विओ खलु चिरपरियाओ तहेव तवबलिओ। छेदम्मि दिज्जमाणे परियादी गव्विओ होति ॥ १ ॥ केत्तियमेत्तं छिंदिह ? तहऽवियं हं तुम्भ होमि राइणिओ। एसो उ गव्विओ खलु चिर-परियादी मुणेयव्वो ॥ २ ॥ तवबलिओ देह तवं अहं समत्थोत्ति गव्विओ होति। तम्हा तद्दोसहरं विवरीयं तेसि दातव्वं ॥ ३ ॥ गणअहिवति आयरियो तस्सवि छेदादि होति पत्तस्स। अप्परिणयसेहादिसु मा होजा हीलणिज्जोत्ति ॥ ४ ॥ धीबलसंघयणं वा णातुं कालं च तिविह गिम्हादी। तम्हा तद्दोसहरं तवारिहं दिज्जए तस्स ॥ ५ ॥ जं जं ण भणियमिहतिं तस्सा-वत्तीय दाणसंखेवं। भिण्णादिया य वोच्छं छम्मासन्ता य जीएणं ॥ मू० ६० ॥ ६ ॥ जं जंति होति विच्छा णवि भणियमिहंति जीतववहारे। पच्छित्तविसोही तू तस्सावत्ती पणगमादी ॥ ७ ॥ दाणं णिव्वितिगादी मेय विसेसेणमेत्थ भणिहामि। संखेवो तु समासो किह णवि जीएण भणितमिहं ? ॥ ८ ॥ कम्ही वा भणियं ?ती गुरुराह णिसीहकप्पववहारे। सुत्तत्थयो य भणियं आणादि सवित्थरेणं तु ॥ ९ ॥ पगणादीछम्मासावसाणआवत्तिविरयणाओ य। णेगविहा भणिताओ णिसिहादिसु वित्थरेणं तु ॥ १८६० ॥ इह पुण जीएणं तू णिप्फण्णावत्तिदा-णसंखेवं। भिण्णादी छम्मासा णेदाणजिएणिमं वोच्छं ॥ १ ॥ भिण्णो अविसिट्ठो चिय मासो चउरो य छच्च लहुगुरुगा। णिव्वितियादी अट्ठमभत्तन्ता दाणमेतेसिं ॥ मू० ६१ ॥ २ ॥ पणुवीस दिणा भिण्णो अविसिट्ठो एस गुरु लहू वावि। अविसेसिओऽविसिट्ठो एसो तू होति णायव्वो ॥ ३ ॥ मासो लहुओ गुरुओ चतुरो मासा य होन्ति लहुगुरुया। छम्मास्सा लहुगुरुगा दाणं एतेसि वोच्छामि ॥ ४ ॥ पणगं दस पण्णरसं वीसा पणुवीस जाव णिव्विगती। लहुमासे पुरिमड्ढं गुरुमासे दाण भत्तिकं ॥ ५ ॥ चउलहुए आयामं चउगुरुए होति दाणऽभत्तट्ठं। छल्लहुए छट्ठं तू छग्गुरुए दाणमट्ठमयं ॥ ६ ॥ णिव्विगतीमादीयं अट्ठमभत्तन्तमेय दाणंति। भिण्णादीणं कमसो छम्मासंतावसाणाणं ॥ ७ ॥ इय सव्वावत्तीओ तवसो णाउं अहक्कमं समए। जीएण दिज्ज णिव्वीतिगाति दाणं जहाभिहितं ॥ मू० ६२ ॥ ८ ॥ इय एतेण कमेण एवपगारेण अहव इतिसद्दो। सव्वाऽऽवत्ती पणगादिया तु छम्मासपज्जन्ता ॥ ९ ॥ णिव्वीइगमाईओ

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [६२]

दीप अनुक्रम [६२]

अट्ठमपज्जंतो होइ सव्वतवो । जीएण दिज्ज दाणं णिव्वीतिगमादिगं कमसो ॥ १८७० ॥ जहभिहितं जह भणियं तह तह देज्जाहिऽभिहितमेयंति । सामण्णेणं एयं समासतो होति णातव्वं ॥ १ ॥ एयं पुण सव्वं चिय पायं सामण्णयो विणिद्दिट्ठं । दाणं विभागतो पुण दव्वादिविसेसियं जाण ॥ मू० ६३ ॥ २ ॥ एयंति जहुद्दिट्ठं पुणसद्दो विसेसणे तु णातव्वो । सव्वं पायच्छित्तं दाणं पाएण बाहुल्ला ॥ ३ ॥ सामण्णं अविसेसित णिद्दिट्ठ विसेसितं विणिद्दिट्ठं । दाणं णिव्वितिगादी विभागतो देज्ज वित्थरतो ॥ ४ ॥ दव्वादीया पडिसेवणा तु ललिया तु आदिसद्देण । होति विसेसेणाऽवेक्खितूण दिज्जाहि ऊणंपि ॥ ५ ॥ अहवावि समतिरित्तं दाणं णाऊण देज्ज जीएणं । अहवावि तत्तियं चिय दिज्जाहि सुयोवदेसेणं ॥ ६ ॥ दव्वं खेत्तं कालं भावं पुरिस पडिसेवणाओ य । णातुमितं चिय दिज्जा तम्मत्तं हीणमहितं वा ॥ मू० ६४ ॥ ७ ॥ आहारादी दव्वं खित्तं लुक्खादि काल गिम्हादी । हिट्ठादी भावं तू पुरिस गीयादि जाणित्ता ॥ ८ ॥ आउट्टिगमादीया पडिसेवण होति तू मुणेतव्वा । णाऊण जाणितूणं इति(द) मित्ति जए त(यं तु) जीएणं ॥ ९ ॥ देज्जाही तम्मत्तं हीणं अहितं व णातु दव्वाती । हीणे दव्वादीए हीणं देज्जाऽहिए अहियं ॥ १८८० ॥ एसो तु अक्खरत्थो दव्वादीणं तु वन्नितो कमसो । पुणरवि दव्वादीणं विभागतो सूरिमाहंसु ॥ १ ॥ आहारादी दव्वं बलियं सुलभं च णाउमहियंपि । देज्जाहि दुब्बलं दुल्लभं च णाऊण हीणंपि ॥ मू० ६५ ॥ २ ॥ आहारो जेसिमादी दव्वाणं ताईं होंति दव्वाइं । आहारादीयाइं बलियाइं जम्मि देसम्मि ॥ ३ ॥ जह अणुवदेस सालीकूरो सभावेण होति बलिओ तु । सुलभो य सो तु णिचं सेसा वट्टंति एमेव ॥ ४ ॥ एयं णाऊण तहिं जं भणितं दाण जीतववहारे । तं देज्ज समब्भहियं जहिं पुण चणवल्लकलमादी ॥ ५ ॥ कंजियरुक्खाहारो दुब्बल दुल्लभो य एव णाऊण । देज्जा सेऽत्थं हीणं जीतव्ववहारभणियाउ ॥ ६ ॥ लुक्खं सीतल साहारणं च खेत्तमाहितंपि सीयम्मि । लुक्खम्मि य हीणयरं एवं कालेवि तिविहम्मि ॥ मू० ६६ ॥ ७ ॥ लुक्खं तु णेहरहितं जं खेत्तं वायपित्तलं वावि । सीयं बलियं भण्णति अहवा अणुवं भवे सीतं ॥ ८ ॥ साहारणं समं तू जं णवि णिद्दं ण चेव लुक्खंपि । एयं तिविहं खेत्तं दाणं एतेसि वोच्छामि ॥ ९ ॥ इय एव जीतदाणं णिद्दे खित्तेऽहियंपि देज्जाहि । साहारणे तम्मत्तं लुक्खे खेत्ते तु हीणयरं ॥ १८९० ॥ लुक्खादी निह खेत्तं एवेयं वण्णितं समासेणं । अहुणा तु तिविह कालं गिम्हादि समासतो वोच्छं ॥ १ ॥ गिम्हसिसिरवासासू देज्जऽट्ठमदसमबारसंताइं । णातुं विहिणा णवविहसुतववहारोवदेसेणं ॥ मू० ६७ ॥ २ ॥ गिम्हासु चतुत्थं देज्जा, छट्ठं च हिमागमे । वासासु अट्ठमं दिज्जा, तवो एस जहण्णओ ॥ ३ ॥ गिम्हासु छट्ठं देज्जा, अट्ठमं च हिमागमे । वासासु दसमं देज्जा, एस मज्झिमओ तवो ॥ ४ ॥ गिम्हासु अट्ठमं देज्जा, दसमं च हिमागमे । वासासु दुवालसमं, एस उक्कोसतो तवो ॥ ५ ॥ जहसंखेणं एसो गिम्हादितवो समासतो होति । एयं पुण कह दिज्जा ? णवविहसुत्तोवएसेणं ॥ ६ ॥ सुतववहारेणऽहवा णवभेदवियप्प सुहुम जाणित्ता । देज्जाहि तिविहकाले ववहारो सो इमो णवहा ॥ ७ ॥ अहलहुसग लहुसयरो लहुसोत्ती होति लहुसपक्खम्मि । अहलहुओ लहुयतरो लहुओत्ती लहुयपक्खम्मि ॥ ८ ॥ गुरुयो गुरुयतराओ अहगुरुओ एस होति गुरुपक्खे । णवविहववहारेसो आवत्ती तेसिं वोच्छामि ॥ ९ ॥ पण दस पण्णरसं वा तिविहेसो होति लहुसपक्खम्मि । वीसा य पण्णवीसा तीसाविय लहुगपक्खम्मि ॥ १९०० ॥ गुरुमासो चतुमासो छम्मासा चेव होति गुरुपक्खे । णवविह आवत्तेसा णवविहदाणं अतो वोच्छं ॥ १ ॥ णिव्वितिगं पुरिमड्ढं एक्कासणयं च लहुसपक्खम्मि । आयंबिलऽभत्तट्ठं छट्ठं वा होति लहुपक्खे ॥ २ ॥ अट्ठम दसम दुवालस गुरुपक्खे एय होति दाणं तु । आवत्ती तवो एसो समासतो णवहमक्खातो ॥ ३ ॥ णवविहववहारेसो लहुसादि समासतो समक्खातो । पुणरवि ओहेण विभागयो य गुरुमादि वोच्छामि ॥ ४ ॥ गुरुओ गुरुगतरातो अहागुरूयो व होति ववहारो । लहुओ लहुतरातो अहालहू चेव ववहारो ॥ ५ ॥ लहुसो लहुसतराओ अहालहुसो य होति ववहारो । एएसिं पच्छित्तं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥ ६ ॥ गुरुओ य होति मासो गुरुयतराओ य होति चतुमासो । अहगुरुओ छम्मासो गुरुपक्खे एस पडिवत्ती ॥ ७ ॥ तीसा य पण्णवीसा वीसाविय होति लहुयपक्खम्मि । पण्णरस दस य पंच य लहुसगपक्खम्मि पडिवत्ती ॥ ८ ॥ गुरुयं च अट्ठमं खलु गुरुयतरायं च होति दसमं तु । अहगुरुयं बारसमं गुरुपक्खे एस पडिवत्ती ॥ ९ ॥ छट्ठं च चउत्थं वा आयंबिल एगठाण पुरिमड्ढं । णिव्वितियं दायव्वं अहलहुसे अहव सुद्धो वा ॥ १९१० ॥ ववहारो आरोवण सोही पच्छित्तमेयमेगट्ठं । थोवो तु अहालहुसो पट्ठवणा होति दाणं तु ॥ १ ॥ ओहेण एस भणिओ एत्तो वोच्छं पुणो विभागेणं । तिग णव सत्तावीसग एक्कासीती य भेदेणं ॥ २ ॥ गुरुपक्खो लहुपक्खो लहुसगपक्खो य तिविह एस भवे । एक्केको पुणो तिविहो उक्कोसादी इमं वोच्छं ॥ ३ ॥ गुरुपक्खे उक्कोसा मज्झ जहण्णो य एव लहुएऽवि । एमेव लहुसएऽवी उक्कोसो मज्झिम जहण्णो ॥ ४ ॥ गुरुपक्खे छम्मासो पणमासो चेव होति उक्कोसा । मज्झिम तू तेमासो दुमास गुरुमासिय जहण्णो ॥ ५ ॥ लहुमास भिण्णमासो वीसाविय तिविहमेय लहुपक्खे । पण्णरस दसग पंचग लहुसुक्कोसादि तिविहेसो ॥ ६ ॥ आवत्तितवो एसो णवभेदो वण्णितो समासेणं । अहुणा उ सत्तवीसो दाणतवो तस्सिमो होति ॥ ७ ॥ गुरु लहु लहुसगपक्खे एक्केको णवविहो मुणेतव्वो । उक्कोसुक्कोसो या उक्कोसगमज्झिमजहण्णो ॥ ८ ॥ मज्झिमउक्कोसो या मज्झिममज्झो तहा जहण्णो

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [६७]

दीप अनुक्रम [६७]

य। होति जहण्णुक्कोसो जहण्णमज्झो दुह जहण्णो ॥९॥ गुरुपक्खो उक्कोसय उक्कोसगमज्झिमो जहण्णो य। मज्झिमउक्कोसो तू मज्झिममज्झो जहण्णो य ॥१९२०॥ होति जहण्णुक्कोसो जहण्णमज्झो जहण्णगजहण्णो। णवविहववहारेसो लहुपक्खे होति णातव्वो ॥१॥ उक्कोसुक्कोसो तू उक्कोसगमज्झिमो जहण्णो य। मज्झिमउक्कोसो तू मज्झिममज्झो जहण्णो य ॥२॥ होति जहण्णुक्कोसो जहण्णमज्झो जहण्णगजहन्नो। णवविहववहारेसो लहुसगपक्खे मुणेतव्वो ॥३॥ बारसमदसमअट्ठमछप्पणमासेसु तिविह दाणेदं। चउत्तेमासे दसमऽट्ठछट्ठ उक्कोसगाति तिहा ॥४॥ एमेवुक्कोसादी दुमासगुरुमासिए तिहा दाणं। अट्ठमछट्ठचउत्थं णवविहमेयं तु गुरुपक्खो ॥५॥ दसमंअट्ठमछट्ठं लहुमासुक्कोसगादि तिह दाणं। अट्ठमछट्ठचउत्थं उक्कोसादे य तिह भिण्णे ॥६॥ छट्ठचउत्थाऽऽयामं उक्कोसादे य दाण वीसाए। लहुपक्खम्मी णवगो बीओ एसो मुणेयव्वो ॥७॥ अट्ठमछट्ठचउत्थं एवुक्कोसादिदाण पण्णरसे। छट्ठचउत्थाऽऽयामं दससू तिविहे तु दाण भवे ॥८॥ खमणाऽयामेक्कासण तिविहोक्कोसादि दाण पणगेयं। लहुसेस ततियणवगो सत्तावीसेस वासासु ॥९॥ सिसिरे दसमादी पुण चारणभेदेण सत्तवीसे य। ठायंती पुरिमड्ढम्मि अड्ढोक्कंती य तह चेव ॥१९३०॥ अट्ठममादी गिम्हे चारणभेदेण सत्तवीसेण। तह चेवऽड्ढोक्कंती ठायति णिव्वीतिए णवरिं ॥१॥ अहुणा उ चारणा तु उक्कोसुक्कोसगादि गुरुगादी। वासासू सिसिरे या गिम्हे य समासतो वोच्छं ॥२॥ अहगुरुए वासासू उक्कोसुक्कोसए य बारसमं। उक्कोसमज्झ दसमं उक्कोसजहण्णमट्ठमगं ॥३॥ अहगुरुए सिसिरेसुं उक्कोसुक्कोसए य दसमं तु। उक्कोसमज्झिमऽट्ठम उक्कोसजहण्णए छट्ठं ॥४॥ अहगुरुए गिम्हासुं उक्कोसुक्कोसमट्ठमं दिज्जा। उक्कोसमज्झ छट्ठं उक्कोसजहण्णएँ चउत्थं ॥५॥ गुरुयतरा वासासुं मज्झिमउक्कोसए य दसमं तु। मज्झिममज्झे अट्ठम मज्झजहण्णेण छट्ठं तु ॥६॥ गुरुतरा सिसिरेसुं मज्झिमउक्कोसमट्ठमं देज्जा। मज्झिममज्झे छट्ठं मज्झजहण्णे चउत्थं तु ॥७॥ गुरुतरा गिम्हेसुं मज्झिमउक्कोसें देज्ज छट्ठं तु। मज्झिममज्झ चउत्थं मज्झजहण्णेण छट्ठं तु (आयामं) ॥८॥ गुरुए वास जहण्णे उक्कोसे अट्ठमं तु देज्जाहि। छट्ठं जहण्णमज्झे होइ चउत्थं दुहजहण्णे ॥९॥ गुरु सिसिरेऽत्थ जहण्णे उक्कोसं देज्ज छट्ठभत्तं तु। जहणयमज्झि चउत्थं दुहयो जहण्णेण आयामं ॥१९४०॥ गुरुए गिम्ह जहण्णे उक्कोसा देज्ज तू चउत्थं तु। जहणयमज्झाऽऽयामं एक्कासणयं दुहजहण्णे ॥१॥ लहुए वासारत्ते उक्कोसुक्कोसगम्मि दसमं तु। उक्कोसमज्झिमऽट्ठम उक्कोसजहण्णए छट्ठं ॥२॥ लहुए उक्कोसुक्कोसतम्मि सिसिरम्मि अट्ठमं दिज्जा। उक्कोसमज्झ छट्ठं उक्कोसजहण्णएँ चउत्थं ॥३॥ लहुपक्खे उक्कोसे गिम्हम्मी देज्ज छट्ठभत्तं तु। मज्झिमगं तु चउत्थं उक्कोसजहण्णमायामं ॥४॥ लहुयतरे वासासुं मज्झिमउक्कोसमट्ठमं दिज्जा। मज्झिममज्झे छट्ठं मज्झजहण्णेणऽभत्तट्ठं ॥५॥ लहुयतरा सिसिरेसुं मज्झिमउक्कोस देज्ज छट्ठं तु। मज्झिममज्झ चउत्थं मज्झजहण्णेणमायामं ॥६॥ लहुयतरा गिम्हेसुं मज्झिमउक्कोस देज्जऽभत्तट्ठं। मज्झिममज्झायामं मज्झजहण्णेण भत्तेक्कं ॥७॥ अहलहुया वासासुं जहण्णउक्कोस छट्ठ देज्जाहि। मज्झिमगम्मि चउत्थं जहण्णगजहण्णमायामं ॥८॥ अहलहुयग सिसिरेसुं जहण्णउक्कोस देज्जऽभत्तट्ठं। मज्झिमगे आयामं जहण्णगजहण्ण भत्तेक्कं ॥९॥ अहलहुगे गिम्हासुं जहण्णगुक्कोस देज्ज आयामं। एक्कासणगं मज्झे पुरिमड्ढं दुहजहण्णम्मि ॥१९५०॥ लहुसग वासासुक्कोसगम्मि उक्कोसमट्ठमं देज्जा। उक्कोसमज्झ छट्ठं उक्कोसजहण्णएँ चउत्थं ॥१॥ लहुसग सिसिरासुक्कोसगं तु उक्कोस छट्ठ देज्जाहि। मज्झिमगं तु चउत्थं उक्कोसजहण्णमायामं ॥२॥ लहुसग गिम्हासुक्कोसगम्मि उक्कोस देज्जऽभत्तट्ठं। मज्झिमगं आयामं उक्कोसजहण्ण भत्तेक्कं ॥३॥ लहुसतरा वासासुं मज्झुक्कोसेण छट्ठभत्तं तु। मज्झिममज्झ चउत्थं मज्झजहण्णेण आयामं ॥४॥ लहुसतरा सिसिरासुं मज्झुक्कोसेण देज्ज भत्तट्ठं। मज्झिममज्झायामं मज्झजहण्णेण भत्तेकं ॥५॥ लहुसतरा गिम्हेसुं मज्झुक्कोसेण देज्ज आयामं। मज्झिममज्झेक्कासण मज्झजहण्णेण पुरिमड्ढं ॥६॥ अहलहुसय वासासुं जहण्णमुक्कोस देज्जऽभत्तट्ठं। मज्झिमगं आयामं भत्तेक्कं दुहजहण्णेणं ॥७॥ अहलहुसग सिसिरासुं जहण्णमुक्कोस दिज्ज आयामं। जहणगमज्झेक्कासण जहणजहण्णेण पुरिमड्ढं ॥८॥ अहलहुसग गिम्हासुं जहण्णमुक्कोस देज्ज भत्तेक्कं। मज्झिमगं पुरिमड्ढं दुहयो जहण्णेण णिव्विगतिं ॥९॥ एतेहिं ठाणेहिं (एया) आवत्तिओ सदा णियमा। वोढव्वा सव्वाओ असहुस्सेक्केक्कहासणया ॥१९६०॥ जाव ठियं एक्केक्कं तंपिय हाविज्ज असहुणो ताहे। दाउं सट्ठाणेवं परठाणं देज्ज एमेव ॥१॥ एवं ठाणे ठाणे हेट्ठाहुत्तो कमेण हासेत्ता। णेतव्वं जाव ठितं णियमा णिव्वीयियं एक्कं ॥२॥ णवविहववहारेसो आवत्तीदाणसहितकालजुतो। बुद्धीओ विण्णेओ विभागतो एसमक्खातो ॥३॥ अहव तिमो लहुसादी तिविहादि समास वित्थरे वोच्छं। हीणो मज्झुक्कोसो तिविहेसो होति णायव्वो ॥४॥ लहुसगपक्खे पणगं दस पण्णर तिविह एय णातव्वं। वीसा य भिण्णमासो लहुमासो तिविह लहुपक्खे ॥५॥ गुरुमासो चउमासो छम्मासो चेव एस गुरुपक्खे। णवविहआवत्तेसा दाणं णवहा तिमं वोच्छं ॥६॥ णिव्विगतिय पुरिमड्ढं एक्कासण लहुसए य दाणंति। आयाम चउत्थं वा छट्ठं तू लहुगपक्खम्मि ॥७॥ अट्ठम दसम दुवालस गुरुपक्खे एय होति दाणं तु। णवविहदाणं एसो अहवाऽऽवत्ती इमा णवहा ॥८॥ पण दस पण्णरसं वा लहु-गुरुगा लहुसए तु पक्खम्मि। वीसा य भिण्णमासो लहु गुरु लहुओ य मासेक्को ॥९॥ गुरुमासो दुण्णि भासा लहुगुरुगा तिग चउक्क लहुगुरुगा। पंचग छम्मासा या लहु- (२६२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [६७]

दीप अनुक्रम [६७]

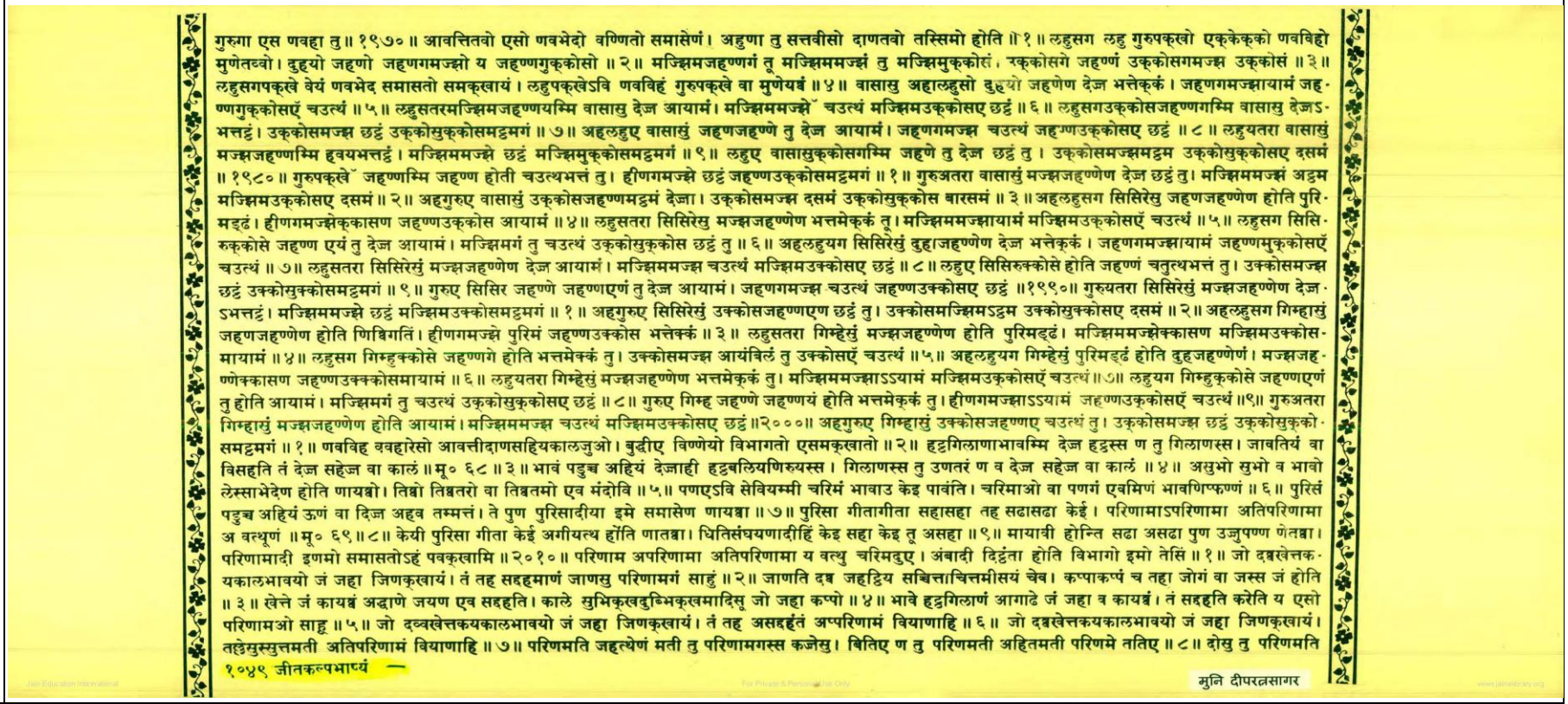

गुरुगा एस णवहा तु ॥ १९७० ॥ आवत्तितवो एसो णवभेदो वण्णितो समासेणं। अहुणा तु सत्तवीसो दाणतवो तस्सिमो होति ॥ १ ॥ लहुसग लहु गुरुपक्खो एक्केक्को णवविहो मुणेतव्वो। दुहयो जहण्णो जहण्णगमज्झो य जहण्णगुक्कोसो ॥ २ ॥ मज्झिमजहण्णगं तू मज्झिममज्झं तु मज्झिमुक्कोसं। उक्कोसगे जहण्णं उक्कोसगमज्झ उक्कोसं ॥ ३ ॥ लहुसगपक्खे वेयं णवभेद समासतो समक्खायं। लहुपक्खेऽवि णवविहं गुरुपक्खे वा मुणेयव्वं ॥ ४ ॥ वासासु अहालहुसो दुहयो जहणेण देज्ज भत्तेक्कं। जहण्णगमज्झायामं जहण्णगुक्कोसएँ चउत्थं ॥ ५ ॥ लहुसतरमज्झिमजहण्णयम्मि वासासु देज्ज आयामं। मज्झिममज्झे चउत्थं मज्झिमउक्कोसए छट्ठं ॥ ६ ॥ लहुसगउक्कोसजहण्णगम्मि वासासु देज्जऽभत्तट्ठं। उक्कोसमज्झ छट्ठं उक्कोसुक्कोसमट्ठमगं ॥ ७ ॥ अहलहुए वासासुं जहणजहण्णे तु देज्ज आयामं। जहण्णगमज्झ चउत्थं जहण्णउक्कोसए छट्ठं ॥ ८ ॥ लहुयतरा वासासुं मज्झजहण्णम्मि हवयभत्तट्ठं। मज्झिममज्झे छट्ठं मज्झिमुक्कोसमट्ठमगं ॥ ९ ॥ लहुए वासासुक्कोसगम्मि जहणे तु देज्ज छट्ठं तु। उक्कोसमज्झमट्ठम उक्कोसुक्कोसए दसमं ॥ १९८० ॥ गुरुपक्खे जहण्णम्मि जहण्ण होती चउत्थभत्तं तु। हीणगमज्झे छट्ठं जहण्णउक्कोसमट्ठमगं ॥ १ ॥ गुरुअतरा वासासुं मज्झजहण्णेण देज्ज छट्ठं तु। मज्झिममज्झं अट्ठम मज्झिमउक्कोसए दसमं ॥ २ ॥ अहगुरुए वासासुं उक्कोसजहण्णमट्ठमं देज्जा। उक्कोसमज्झ दसमं उक्कोसुक्कोस बारसमं ॥ ३ ॥ अहलहुसग सिसिरेसु जहणजहण्णेण होति पुरिमड्ढं। हीणगमज्झेक्कासण जहण्णउक्कोस आयामं ॥ ४ ॥ लहुसतरा सिसिरेसु मज्झजहण्णेण भत्तमेक्कं तू। मज्झिममज्झायामं मज्झिमउक्कोसएँ चउत्थं ॥ ५ ॥ लहुसग सिसिरुक्कोसे जहण्ण एयं तु देज्ज आयामं। मज्झिमगं तु चउत्थं उक्कोसुक्कोस छट्ठं तु ॥ ६ ॥ अहलहुयग सिसिरेसुं दुहाजहण्णेण देज्ज भत्तेक्कं। जहणगमज्झायामं जहण्णमुक्कोसएँ चउत्थं ॥ ७ ॥ लहुसतरा सिसिरेसुं मज्झजहण्णेण देज्ज आयामं। मज्झिममज्झ चउत्थं मज्झिमउक्कोसए छट्ठं ॥ ८ ॥ लहुए सिसिरुक्कोसे होति जहण्णं चतुत्थभत्तं तु। उक्कोसमज्झ छट्ठं उक्कोसुक्कोसमट्ठमगं ॥ ९ ॥ गुरुए सिसिर जहण्णे जहण्णएणं तु देज्ज आयामं। जहणगमज्झ चउत्थं जहण्णउक्कोसए छट्ठं ॥ १९९० ॥ गुरुयतरा सिसिरेसुं मज्झजहण्णेण देज्जऽभत्तट्ठं। मज्झिममज्झे छट्ठं मज्झिमउक्कोसमट्ठमगं ॥ १ ॥ अहगुरुए सिसिरेसुं उक्कोसजहण्णएण छट्ठं तु। उक्कोसमज्झिमऽट्ठम उक्कोसुक्कोसए दसमं ॥ २ ॥ अहलहुसग गिम्हासुं जहणजहण्णेण होति णिव्विगतिं। हीणगमज्झे पुरिमं जहण्णउक्कोस भत्तेक्कं ॥ ३ ॥ लहुसतरा गिम्हेसुं मज्झजहण्णेण होति पुरिमड्ढं। मज्झिममज्झेक्कासण मज्झिमउक्कोसमायामं ॥ ४ ॥ लहुसग गिम्हुक्कोसे जहण्णगे होति भत्तमेक्कं तु। उक्कोसमज्झ आयंबिलं तु उक्कोसएँ चउत्थं ॥ ५ ॥ अहलहुयग गिम्हेसुं पुरिमड्ढं होति दुहजहण्णेणं। मज्झजहण्णेक्कासण जहण्णउक्कोसमायामं ॥ ६ ॥ लहुयतरा गिम्हेसुं मज्झजहण्णेण भत्तमेक्कं तु। मज्झिममज्झाऽऽयामं मज्झिमउक्कोसएँ चउत्थं ॥ ७ ॥ लहुयग गिम्हुक्कोसे जहण्णएणं तु होति आयामं। मज्झिमगं तु चउत्थं उक्कोसुक्कोसए छट्ठं ॥ ८ ॥ गुरुए गिम्ह जहण्णे जहण्णयं होति भत्तमेक्कं तु। हीणगमज्झाऽऽयामं जहण्णउक्कोसएँ चउत्थं ॥ ९ ॥ गुरुअतरा गिम्हासुं मज्झजहण्णेण होति आयामं। मज्झिममज्झ चउत्थं मज्झिमउक्कोसए छट्ठं ॥ २००० ॥ अहगुरुए गिम्हासुं उक्कोसजहण्णए चउत्थं तु। उक्कोसमज्झ छट्ठं उक्कोसुक्कोसमट्ठमगं ॥ १ ॥ णवविह ववहारेसो आवत्तीदाणसहियकालजुओ। बुद्धीए विण्णेयो विभागतो एसमक्खातो ॥ २ ॥ हट्टगिलाणाभावम्मि देज्ज हट्टस्स ण तु गिलाणस्स। जावतियं वा विसहति तं देज्ज सहेज्ज वा कालं ॥ मू० ६८ ॥ ३ ॥ भावं पडुच्च अहियं देज्जाही हट्टबलियणिरुयस्स। गिलाणस्स तु उणतरं ण व देज्ज सहेज्ज वा कालं ॥ ४ ॥ असुभो सुभो व भावो लेस्साभेदेण होति णायव्वो। तिव्वो तिव्वतरो वा तिव्वतमो एव मंदोवि ॥ ५ ॥ पणएऽवि सेवियम्मी चरिमं भावाउ केइ पावंति। चरिमाओ वा पणगं एवमिणं भावणिप्फण्णं ॥ ६ ॥ पुरिसं पडुच्च अहियं ऊणं वा दिज्ज अहव तम्मत्तं। ते पुण पुरिसादीया इमे समासेण णायव्वा ॥ ७ ॥ पुरिसा गीतागीता सहासहा तह सढासढा केई। परिणामाऽपरिणामा अतिपरिणामा अ वत्थूणं ॥ मू० ६९ ॥ ८ ॥ केयी पुरिसा गीता केई अगीयत्थ होंति णातव्वा। धितिसंघयणादीहिं केइ सहा केइ तू असहा ॥ ९ ॥ मायावी होन्ति सढा असढा पुण उज्जुपण्ण णेतव्वा। परिणामादी इणमो समासतोऽहं पवक्खामि ॥ २०१० ॥ परिणाम अपरिणामा अतिपरिणामा य वत्थु चरिमदुए। अंबादी दिट्ठंता होति विभागो इमो तेसिं ॥ १ ॥ जो दव्वखेत्तकयकालभावयो जं जहा जिणक्खायं। तं तह सद्दहमाणं जाणसु परिणामगं साहुं ॥ २ ॥ जाणति दव्व जहट्ठिय सचित्ताचित्तमीसयं चेव। कप्पाकप्पं च तहा जोगं वा जस्स जं होति ॥ ३ ॥ खेत्ते जं कायव्वं अद्धाणे जयण एव सद्दहति। काले सुभिक्खदुब्भिक्खमादिसु जो जहा कप्पो ॥ ४ ॥ भावे हट्टगिलाणं आगाढे जं जहा व कायव्वं। तं सद्दहति करेति य एसो परिणामओ साहू ॥ ५ ॥ जो दव्वखेत्तकयकालभावयो जं जहा जिणक्खायं। तं तह असद्दहंतं अप्परिणामं वियाणाहि ॥ ६ ॥ जो दव्वखेत्तकयकालभावयो जं जहा जिणक्खायं। तहेसुस्सुत्तमती अतिपरिणामं वियाणाहि ॥ ७ ॥ परिणमति जहत्थेणं मती तु परिणामगस्स कज्जेसु। वितिए ण तु परिणमती अहितमती परिणमे ततिए ॥ ८ ॥ दोसु तु परिणमति

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [६९]

दीप अनुक्रम [६९]

मती उस्सग्गऽववाययो तु पढमस्स। बितियस्स तु उस्सग्गे अतिअववाए तु ततियस्स ॥९॥ अंबादीदिट्ठंतेहिं परिकूखा तेसिं होति कायव्वा। जह कोयि गुरूहिं तू भणितो अंबाणि आणेहि ॥२०२०॥ परिणामगोऽत्थ भणती किं सचित्तेऽचिते व आणेमि?। भावतो केवइए वा? किं टाले भिण्णऽभिण्णे वा? ॥१॥ बेति गुरू लद्ध चिय पुणो व वोच्छिसु अहव वीमंसा। भणिओऽसित्ती एवं अप्परिणामो इमं बेति ॥२॥ किं ते पित्तपलावो? मा बितियं एरिसाइं जंपाहि। मा णं परोवि सोच्छिति अहंपि णेच्छामि एयस्स ॥३॥ अतिपरिणामो भणति कालो सि अतिच्छए अहो ताव। किं एच्चिरस्स वुत्तं? इच्छऽम्हवि ण तरिमो भणितुं ॥४॥ घेत्तूण भारमागतो भणती अण्णेवि किं नु आणेमि?। तो दोऽवि गुरू भणती उवालभन्तो इमं तहितं ॥५॥ णाभिप्पायं गिण्हसि असमत्ते चेव भाससी वयणे। सुकूंबिल्लोणकए तिण्णि अहवावि दोच्चंगे ॥६॥ एमेव य रुकूखेवी भंजितु आणेह बेति अपरिणतो। णिप्फावादी रुकूखे भणामि ण दुमे अहं हरिए ॥७॥ एमेव य बीयाइं आणेती आणिए गुरू भणती। अंबिलि विद्धत्थाणि व भणामि णवि रोहणसमत्थे ॥८॥ तह धितिसंघयणोभयसंपण्णा तदुभएण हीणा उ। आयपरोभयणोभयतरगा तह अण्णयरगा य ॥मू० ७०॥९॥ धितिदुब्बल देहबली धितिबलिओ देहदुब्बलो कोई। कोयी दोहिवि बलिओ दोहिंपी दुब्बलो कोइ ॥२०३०॥ दोहिवि बलिए सव्वं धितिहीणे जत्थ चिट्ठति धिती से। आसज्ज व देहबलं देज्जा लहुयं उभयहीणे ॥१॥ अहवा पंचविकप्पा आयतरादी इमे उ णायव्वा। पढमो आयतरो तू णो परयो परतरे बितिओ ॥२॥ उभयतरो तु ततिओ णोभयह चउत्थओ उ णायव्वो। अण्णयरो परयो तू पंचमओ होइ णातव्वो ॥३॥ आयतरपरतराणं को णु विसेसो?त्ति एत्थ चोदेति। आततरा चउथादी जं दिज्जति तं तु णित्थरति ॥४॥ वेयावच्चकरो तू गच्छस्स उवग्गहम्मि वट्टति तु। एसो तु होति परतर चतुभंगो एव णायव्वो ॥५॥ वेयावच्चतराणं एक्कं सक्केति दो ण णित्थरति। पंचमगो तू पुरिसो अण्णतरो एस णातव्वो ॥६॥ कप्पट्ठियादयोऽविय चतुरो जे सेतरा समक्खाता। सावेक्खेतरभेयादयो य जे ताण पुरिसाण ॥मू० ७१॥७॥ कप्पट्ठिता परिणता कडजोगी चेव होन्ति तरमाणा। पडिवक्खेणवि चतुरो अकप्पठियमादि णातव्वा ॥८॥ पतिट्ठा ठवणा ठवणी, अवत्था संठिती ठिती। अवत्थाणं अवत्था या, एगट्ठा चिट्ठणातिय ॥९॥ सामायिए य छेदे णिव्विसमाणे तहेव णिविट्ठे। जिणकप्पे थेरेसु य छब्बिह कप्पट्ठिती होति ॥२०४०॥ सा पुण ठिति मज्जाया णासो कप्पो य होति कतिहा उ?। भण्णति सो दसभेदो इणमो वोच्छं समासेणं ॥१॥ आचेलक्कुद्देसियसेज्जाययरायपिंडकितिकम्मे। वतजेट्ठपडिक्कमणे मासं पज्जोसवणकप्पे ॥२॥ कतिहि ठिता अठिता वा सामायिककप्पसंठिता णियमा?। कतिठाणपतिट्ठो वा छेदोवट्ठाणकप्पो उ?॥३॥ चतुहिं ठिया छहिं अठिया सामातियसंजया मुणेयव्वा। दससुवि णियमा तु ठिता छेयोवट्ठा मुणेतव्वा ॥४॥ सेज्जातरपिंडे या कितिकम्मे चेव चाउजामे य। पुरिसजेट्ठे य तहा चत्तारि अवट्ठिया कप्पा ॥५॥ आचेलक्कुद्देसिय रायपिंडे तहा पडिक्कमणे। मासं पज्जोसवणाकप्पे तऽणवट्ठितो कप्पो ॥६॥ दसठाणठितो कप्पो पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स। आचेलक्कादीसुं तेसिं तु परूवणा इणमो ॥७॥ दुविहा होंति अचेला संताचेला असंतचेला य। तित्थगरऽसंतचेला संताचेला भवे सेसा ॥८॥ संतेहिवि चेलेहिं किह पुण समणा अचेलया होन्ति?। भण्णति सुणसू चोदग! जह संतेहिं अचेला उ ॥९॥ सीसावेढियपोत्ति णतिसंतरणम्मि णग्गयं बेन्ति। जुण्णेहिं णग्गिय म्हि तुर सालिय! देहि मे पोत्ती ॥२०५०॥ जुण्णेहिं खंडिएहि य असव्वतणुपाउएहि ण य णिचं। संतेहिवि णिग्गंथा अचेलगा होंति चेलेहिं ॥१॥ एवं दुग्गय पहिया वऽचेलया होंति ते भवे बुद्धी। ते खलु असंतताए धरंति ण तु धम्मसद्धाए ॥२॥ सति लाभम्मि साहू गेण्हन्तऽमहद्धणाइं ताइं तु। ताणिवि खंडियमादी धरेन्ति तह धम्मबुद्धीए ॥३॥ आचेलुक्को धम्मो पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स। मज्झिमगाण जिणाणं होति सचेलो अचेलो वा ॥४॥ पडिमाए पाउया वा णऽतिक्कमंते तु मज्झिमा समणा। पुरिमचरिमाण अमहद्धणा तु भिण्णाणिमे मोत्तुं ॥५॥ णिरुवहयलिंगभेदो णिक्कारणयो ण कप्पये कातुं। किं पुण तं णिरुवहयं? भण्णति अहजायलिंगं तु ॥६॥ जम्मं दुविहं होती मातूकुच्छिम्मि पढम जं जम्मं। भवसंसारचउक्के णिप्फिडिए बितिय पव्वज्जं ॥७॥ तस्स इमे भेदा खलु खंधदुवारे य समण पाउरणे। गलक(गेकल्)द्धंसे पट्टे लिंगदुवे या इमा भयणा ॥८॥ णिक्कारणओ लहुओ तिसु चतुगुरुगा य होंति बोद्धव्वा। गिहिलिंग अण्णलिंगे दोसुवि मूलं तु बोद्धव्वं ॥९॥ कुबिज्ज कारणे पुण भेदं लिंगस्सिमेहिं कज्जेहिं। गेलण्णरोगलोएसरीरवेयावडियमादी ॥२०६०॥ आसज्ज खेत्तकप्पं वासाठाई अभाविए असहू। काले अद्धाणम्मि य सागरि तेणे य पंगुरणं ॥१॥ असिवे ओमोयरिए रायदुट्ठे पवायिदुट्ठे वा। आगाढे अण्णलिंगं कालकूखेवो व गमणं वा ॥२॥ संघस्सोहविभागे समणा समणी य कुलगणस्सेव। कडमिह ठिए ण कप्पति अट्ठियकप्पे जमुद्दिस्स ॥३॥ आयरिए अभिसेगे भिक्खुम्मि गिलाणगम्मि भयणा उ। तिक्खुत्तऽडविपवेसे तियपरियट्टे तओ गहणं ॥४॥ तित्थंगरपडिक्कुट्ठो आणा अण्णाय उग्गमो ण सुज्झे। अविमुत्ति अलाघवया दुल्लभसेज्जा ठितुच्छेदो ॥५॥ पुरपच्छिमवज्जेहिं अवि कम्मं जिणवरेहिं लेसेणं। भुत्तं विदेहगेहि य ण य सागरियस्स पिंडो तु ॥६॥ दुविहे गेलण्णम्मी णिमं-

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [७१]

दीप अनुक्रम [७१]

तणा दव्वदुल्लभे असिवे। ओमोयरिय पयोसे भए व गहणं अणुण्णातं ॥७॥ तिक्खुत्तो सक्खेत्ते चउद्दिसिं मग्गिऊण कडजोगी। दव्वस्स य दुल्लभया सागारियसेवणा दव्वे ॥ ८ ॥ केरिसयो तू राया? भेया पिंडस्स के व? सिं दोसा?। केरिसयम्मि व कज्जे कप्पति? काए व जयणाए? ॥९॥ मुदिए मुद्धऽभिसित्ते मुदिओ जो होति जोणिसुद्धो तु। अभिसित्तो व परेहिं सयं व भरहो जहा राया ॥२०७०॥ पढमगभंगे वज्जो होतुवमा वावि जे भणिय दोसा। सेसेसु होयऽपिंडो जहिं दोसा तं विवज्जेज्जा ॥१॥ असणादीया चउरो वत्थे पादे य कंबले चेव। पाउंछणए य तहा अट्ठविहो रायपिंडो तु ॥२॥ अट्ठविह रायपिंडं अण्णयरायं तु जो पडिग्गाहे। सो आणा अणवत्थं मिच्छत्त विराहणं पावे ॥३॥ दोसा इमे ईसरतलवरमाडंबिएहिं सत्थवाहेहिं। णिन्तेहिं अइन्तेहि य वाघातो होति साहुस्स ॥४॥ ईसर भोइयमादी तलवरपट्टेण तलवरो होति। वेट्ठणपट्टो सेट्ठी पच्चंतणिवो उ माडंबी ॥५॥ जा णिन्तऽइन्त ता अच्छतो तु सुत्तादिभिक्खपरिहाणी। इरिया अमंगलंतिय पल्ला(ण्हा)हणणा इहरहा तु ॥६॥ लोभे एसणघातो संका तेणे णपुंस इत्थी य। इच्छंतमणिच्छंते चातुम्मासा भवे गुरुगा ॥७॥ अण्णत्थ एरिसं दुल्लभंति गेण्हेज्जऽणेसणिज्जंपि। अण्णेणवि अवहरिए संकिज्जति एस तेणोत्ति ॥८॥ संका चारियचोरे मूलं णिस्संकिए य अणवट्ठो। परदारि अहिमरे वा णवमं णीसंकिते दसमं ॥९॥ अलभंता य वियारं इत्थिणपुंसा बलावि गिण्हेज्जा। आयरिय कुलगणे वा संघे वा कुज्ज पत्थारं ॥२०८०॥ अण्णेवि अत्थि दोसा गोम्मियआइण्णरयणमादी य। तण्णीसाए पवि-से तिरिक्खमणुया भवे दुट्ठा ॥१॥ गोम्मियगहणा हणणा रण्णो य णिवेइयम्मि जं पावे। आदिण्णरतणमादी सत गेण्हेयरो व तण्णीसा॥२॥ चारियचोराभिमरा कामी व विसंति तत्थ तण्णीसा। वारणतरच्छवग्घा मेच्छा य णरा व घाएज्जा ॥३॥ दुविहे गेलण्णम्मी णिमंतणा दव्वदुल्लभे असिवे। ओमोयरिय पदोसे भए व गहणं अणुण्णायं ॥४॥ तिक्खुत्तो सक्खेत्ते चउदिसिं मग्गितूण कडजोगी। दव्वस्स य दुल्लभता जतणाए कप्पती ताहे ॥५॥ कितिकम्मंपिय दुविधं अब्भुट्ठाणं तहेव वंदणयं। समणेहि य समणीहि य जहारिहं होति कायव्वं ॥६॥ सव्वाहिं संजईहिं कितिकम्मं संजताण कातव्वं। पुरिसुत्तरिओ धम्मो सव्वजिणाणंपि तित्थम्मि ॥७॥ तुच्छत्तणेण गव्वो जायइ ण य संकते परिभवेणं। अण्णोऽवि होज्ज दोसो थियासु माहुज्जहज्जासु ॥८॥ अविय हु पुरिसपणीतो धम्मो पुरिसो य रक्खितुं सत्तो। लोगविरुद्धं चेयं तम्हा समणाण कातव्वं ॥९॥ पंचज्जामो धम्मो पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स। मज्झिमयाण जिणाणं चातुज्जामो भवे धम्मो ॥२०९०॥ पुरिमाण दुव्विसोज्झो चरिमाणं दुरणुपालओ कप्पो। मज्झिमयाण जिणाणं सुविसोज्झो सुरणुपाल्रो य ॥१॥ जड्डत्तणेण हंदी आइक्खविभागउवणया दुक्खं। सुहसम्मु(सुदुसंसु)यदंताण य तितिक्ख अणुसासणा दुक्खं ॥२॥ मिच्छत्तगोवियाणं दुव्वियड्ढमतीण ठाणसीलाणं। आइक्खितु अइदुक्खं उवणेउं वावि दुक्खं तु ॥३॥ दुक्खेहिं भच्छियाणं तणुधितिअबलत्तयो य दुतितिक्खं। एमेव दुरणुसासं माणुक्कडयाय चरिमाणं ॥४॥ एते चेव य ठाणा सपण्णउज्जुत्तणेण मज्झाणं। सुहुदुहउभयवत्ताण य विमिस्सभावा भवे सुहुमा ॥५॥ पुव्वतरं सामइयं जस्स कयं जो वतेसुवट्ठ(वाठ)वितो। एस कितिकम्मजेट्ठो ण जातिसुययो दुपक्खेऽवि ॥६॥ सा जेसि तुवट्टवणा जेहिं य ठाणेहिं पुरिमचरिमाणं। पंचायामे धम्मे आएसतिगं चिमं सुणसु ॥७॥ दस चेव छच्च चतुरो एते खलु तिण्णि होन्ति आदेसा। कतरे हवन्ति दस तू? भण्णति सुणसु इमे ते तू ॥८॥ ततो पारंचिया वुत्ता, अणवट्ठप्पा य तिण्णि तु। दंसणम्मि य वन्तम्मि, चरित्तम्मि य केवले ॥९॥ अदुवा चियत्तकिच्चे, जीवकायं समारभे। सेहे य दसमे वुत्ते, जस्सो-वट्ठावणा भवे ॥२१००॥ एते दस तू वुत्ता अण्णादेसेण होंति छत्तु इमे। तिण्णिति पारंचेकं अणवट्ठप्पावि तिण्णेकं ॥१॥ दंसणवन्ते तइए चरित्तवंते भवे चउत्थे तु। पंचम चियत्त-किच्चो छट्ठो सो होउवट्ठप्पो ॥२॥ एसो बितियाएसो ततियाएसो इमो मुणेयव्वो। चत्तारि व उवठप्पा कयरे तु? इमे मुणेतव्वा ॥३॥ पारंची अणुवट्ठा दंसणचरणेसु ते पहिट्ठा तु। दंसणचरित्तवंता तो दोण्णेते भवन्ती तु ॥४॥ चियत्तकिच्चो सेहो य चत्तारेते हवंतुवट्ठप्पा। एते तिण्णादेसा उवठवणाए मुणेतव्वा ॥५॥ केवलगहणं कसिणं जति वमती दंसणं चरित्तं वा। तो तस्स उवट्ठवणा देसे वंतम्मि भयणा तु ॥६॥ एमेव य किंचि पदं सुयं च असुयं च अप्पदोसेणं। अविकोविए कहेन्तो चोइय आउट्ट सुद्धो तु ॥७॥ सो पुण दंसणवंतो अणभो-गेणं तु अहव आभोगा। अणभोगेणं तहियं कोयी सड्ढो तु संवेगा ॥८॥ दट्ठूण णिण्हगे तू एते साहू जहुत्तकारित्ति। णिक्खंतो अणभोगा दिट्ठो अण्णेहिं साहूहिं ॥९॥ भणिओ य णिण्हगाणं कीस सगासे तुमं सि णिक्खंतो?। तो बेति ण याणामि एयविसेसं अहं भंते! ॥२११०॥ एवमणाभोगेणं मिच्छत्तगतो पुणोवि सम्मत्तं। जो पडिवण्णो सो तू आलोतिय-णिन्दितो सुद्धो ॥१॥ सो चेव य परियायो णत्थि उवट्ठावणा पुणो तस्स। तं चिय पच्छित्तं से जं चिय सम्मं तु पडिवज्जे ॥२॥ जो पुण जाणंतो चिय गतो तु होज्जाहि णिण्हएसुं तु। पुणरागतो य सम्मं तस्स उवट्ठावणा भणिया ॥३॥ छण्हं जीवनिकायाणं, अणप्पज्झो तु विराहओ। आलोतियपडिक्कंतो, सुद्धो हवति संजतो ॥४॥ छण्हं जीवणिकायाणं, अप्पज्झो तू विराधयो। आलोतियपडिक्कंतो, मूलच्छेज्जं तु कारए ॥५॥ खित्तादिअणप्पज्झो अणभोगेणं व जो गतो मिच्छं। सो तु अपायच्छित्तोऽविराहती तस्स दिन्तो तु ॥६॥ जं जो तु

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [७१]

दीप अनुक्रम [७१]

समावण्णो जं पायोगं व जस्स वत्थुस्स। तं तस्स तु दायव्वं असरिसदाणा इमं होति ॥७॥ अप्पच्छित्ते य पच्छित्तं, पच्छित्ते अतिमत्तया। धम्मस्सासायणा तिव्वा, मग्गस्स य विराहणा ॥८॥ उस्सुत्तं ववहरेंतो, कम्मं बंधति चिक्कणं। संसारं च पवड्ढेति, मोहणिज्जं व कुव्वती ॥९॥ उम्मग्गदेसए मग्गदूसए मग्गविप्पडीवाए। परं मोहेण रंजेन्तो, महामोहं पकुव्वती ॥२१२०॥ एवं तु उवट्ठवितो जो पढमयरं तु अहव सामतिए। ठवितो सो जेट्ठयरो कप्पपकप्पट्ठिताणं च ॥१॥ सपडिक्कमणो धम्मो पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स। मज्झिमगाण जिणाणं कारणजाए पडिक्कमणं ॥२॥ गमणागमणविहारे सायं पादो य पुरिमचरिमाणं। णियमेण पडिक्कमणं अतियारो होउ वा मा वा ॥३॥ अतियारस्स तु असती णणु होति णिरत्थयं पडिक्कमणं। भण्णति एवं चोदग! तत्थ इमं होति णातं तु ॥४॥ जह कोयि डंडिओ तू रसायणं कारवेति पुत्तस्स। तत्थेगो तेगिच्छी बेती मज्झं तु एरिसयं ॥५॥ जति दोसे होअगतो अह दोसो णत्थि तो गयो होति। वितियस्स हरति दोसं ण गुणं दोसं व तदभावा ॥६॥ दोसं हंतूण गुणे करेति गुणमेव दोसरहिएत्ति। तइयसमाहिकरस्स तु रसायणं डंडियसुयस्स ॥७॥ इय सइ दोसं छिंदति असती दोसम्मि णिज्जरं कुणति। कुसलतिगिच्छरसायण उवणीयमिणं पडिक्कमणं ॥८॥ जिणथेरअहालंदे परिहारिग अज्ज मासकप्पो तु। खेत्ते कालमुवस्सयपिंडग्गहणे य णाणत्तं ॥९॥ एतेसिं पंचण्हवि अण्णोण्णस्सा चतुप्पएहिं तु। खेत्तादीहि विसेसो जह तह वोच्छं समासेण ॥२१३०॥ णत्थि तु खेत्तं जिणकप्पियाण उडुबद्धे मासकालो तु। वासासु चउमासा वसही अममत्तपरिकम्मा ॥१॥ पिंडो तु अलेवकडो गहणं तू एसणादुचरिमाहिं। तत्थवि कानुमभिग्गह पंचण्हं अण्णयरियाए ॥२॥ थेराण अत्थि खेत्तं तु उग्गहो जाण जोयण सकोसं। णगरे पुण वसहीए कालो उउबद्धे मासो तु ॥३॥ उस्सग्गेण य भणितो अववाएणं तु होज्ज अहिओऽवि। एमेव य वासासुऽवि चतुमासो होज्ज अहिओ वा ॥४॥ अममत्तअपरिकम्मो उवस्सओ एत्थ भंगया चतुरो। उस्सग्गेणं पढमो तिण्णि तु अववायओ भंगा ॥५॥ भत्तं लेवकडं वा अलेवकडं वावि ते तु गेण्हंति। सत्तहिवि एसणाहिं सावेक्खो गच्छवासोत्ति ॥६॥ अहालंदियाण गच्छे अप्पडिबद्धाण जह जिणाणं तु। णवरं काले विसेसो उदुमासो पणग चतुमासो ॥७॥ गच्छे पडिबद्धाणं अहालंदीणं तु अह पुण विसेसो। जो तेसि उग्गहो खलु सो साऽऽयरियाण आहवति ॥८॥ एगवसहीएँ पणगं छव्वीहीओ य गाम कुव्वंति। दिवसे दिवसे अण्णं अडंति वीहिं तु णियमेणं ॥९॥ परिहारविसुद्धीणं जहेव जिणकप्पियाण णवरं तु। आयंबिलं तु भत्तं बोद्धव्वो थेरकप्पो तु ॥२१४०॥ अज्जाण परिग्गहियाण उग्गहो जो तु सो हु आयरिए। कालतो दो दो मासा उदुबद्धे तासिं कप्पो तु ॥१॥ सेसं जह थेराणं पिंडो य उवस्सयो य तह तासिं। सो सव्वोऽवि य दुविहो जिणकप्पो थेरकप्पो य ॥२॥ जिणकप्पियऽहालंदीपरिहारविसुद्धियाण जिणकप्पो। थेराणं अज्जियाण य बोद्धव्वो थेरकप्पो तु ॥३॥ दुविहो उ मासकप्पो जिणकप्पो चेव थेरकप्पो य। णिरणुग्गहो जिणाणं थेराण अणुग्गहपवत्तो ॥४॥ उदुवासकालऽतीए जिणकप्पीणं तु गुरुगा गुरुगा य। होति दिणम्मि दिणम्मी थेराणं ते च्चिय लहू उ ॥५॥ तीसं पदाऽवराहे पुट्ठो अणुवासिये अणुवसंतो। जे तत्थ पदे दोसा ते तत्थ ततो समावण्णो ॥६॥ पण्णरसुग्गमदोसा दस एसणदोस एय पणुवीसं। संजोयणाइ पंच य एते तीसं तु अवराहा ॥७॥ एतेहिं दोसेहिं संपत्तीएवि लग्गती णियमा। दिवसे दिवसे सो ऊ कालातीते वसंतो तु ॥८॥ वासावासपमाणं आयार उदुप्पमाणियं कप्पं। एयं अणुम्मुयंतो जाणसु अणुवासकप्पो तु ॥९॥ आयारपकप्पम्मी जह भणितं तीय संवसंतोऽवि। होति अणुवासकप्पो तह संवसमाण दोसो तु ॥२१५०॥ दुविहे विहारकाले वासावासे तहेव उदुबद्धे। मासातीतेऽणुवही वासाईते भवे उवही ॥१॥ उउबद्धिएसु अट्ठसु तीतेसुं वास तत्थ णवि कप्पे। घेत्तूणं उवहिं खलु वासासु तु तीत कप्पति तु ॥२॥ वासउदुअहालंदे इत्तरिसाहारणोग्गहपुहुत्ते। संकमणट्ठा दव्वे गच्छे पुप्फावकिण्णो तु ॥३॥ वासासु चउम्मासो उउबद्धे मासो लंद पंच दिणा। इत्तरिओ रुक्खमूले वीसमणट्ठा ठियाणं तु ॥४॥ साहारणा उ एते समगठियाणं बहूण गच्छाणं। एक्केण परिग्गहिता सव्वे वोहत्ति(न्ति)या होन्ति ॥५॥ संकमणण्णोण्णस्स उ संगासे जति उ ते अहीयंते। सुत्तत्थतदुभयाइं सव्वो अहवावि पडिपुच्छे ॥६॥ ते पुण मंडलियाए आवलियाए व तं तु गिण्हेज्जा। मंडलियमहिज्जंते सचित्तादी तु जो लाभो ॥७॥ सो तु परं परएणं संकमती ताव जाव सट्ठाणं। जहियं पुण आवलिया तहियं पुण ठाति अंतम्मि ॥८॥ ते पुण जहा तु एक्कायें वसहीए अहव पुप्फकिण्णा तु। अहवावि तु संकमणे दव्वस्सिणमो विही अण्णो ॥९॥ सुत्तत्थतदुभयविसारयाण थोवे अ संभतीभेदे। संकमणट्ठा दव्वे जोगे कप्पे य आवलिया ॥२१६०॥ पुव्वट्ठिताण खेत्ते जति आगच्छेज्ज अण्ण आयरिओ। बहुसुय बहुआगमिओ तस्स सगासम्मि जति खेत्ती ॥१॥ किंचि अहिज्जेज्जाही थोवं खेत्तं च तं जइ हवेज्जा। ताहे असंथरंता दोण्णिवि साहू विव(स)ज्जेन्ति ॥२॥ अण्णोण्णस्स सगासे तेसिंपि य तत्थऽहिज्जमाणाणं। आभवणा तह चेव य जह भणियमणंतरं सुत्ते ॥३॥ एवं णिव्वाघाए मास चतुम्मासिओ तु थेराणं। कप्पो कारणयो पुण अणुवासो कारणं जाव ॥४॥ एसो तु मासकप्पो थेरकप्पो य वण्णिओघेणं। अहुणा ठियमठियं तू थेराणं इणमु वोच्छामि ॥५॥ सो थेरकप्पो दुविहो अट्ठितकप्पो य होति ठितकप्पो। एमेव जिणाणंपी ठितमठितो होति कप्पो तु ॥६॥ पज्जोसवणाकप्पो होति ठितो अट्ठिओ य थेराणं। एमेव जिणाणंपी दुह ठियमठिओ य णातव्वो ॥७॥ चातुम्मासुक्कोसो सत्तरि राइंदिया जहण्णेणं। ठितमट्ठिय (२६३)

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [७१] दीप अनुक्रम [७१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

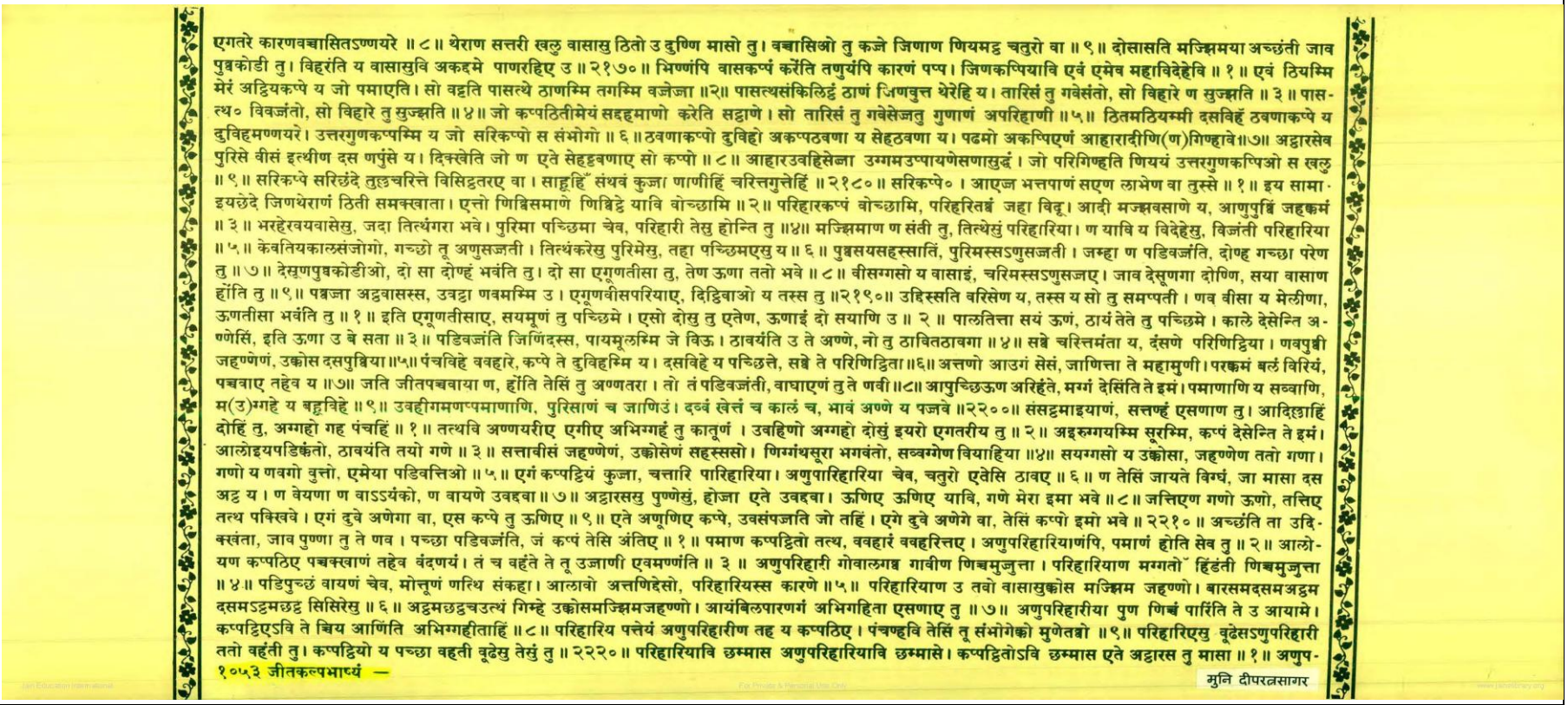

एगतरे कारणवच्चासितऽण्णयरे ॥८॥ थेराण सत्तरी खलु वासासु ठितो उ दुण्णि मासो तु। वच्चासिओ तु कज्जे जिणाण णियमट्ठ चतुरो वा ॥९॥ दोसासति मज्झिमया अच्छंती जाव पुव्वकोडी तु। विहरंति य वासासुवि अकद्दमे पाणरहिए उ ॥२१७०॥ भिण्णंपि वासकप्पं करेंति तणुयंपि कारणं पप्प। जिणकप्पियावि एवं एमेव महाविदेहेवि ॥१॥ एवं ठियम्मि मेरं अट्ठियकप्पे य जो पमाएति। सो वट्टति पासत्थे ठाणम्मि तगम्मि वज्जेज्जा ॥२॥ पासत्थसंकिलिट्ठं ठाणं जिणवुत्त थेरेहि य। तारिसं तु गवेसंतो, सो विहारे ण सुज्झति ॥३॥ पास-त्थ० विवज्जंतो, सो विहारे तु सुज्झति ॥४॥ जो कप्पठितीमेयं सद्दहमाणो करेति सट्ठाणे। सो तारिसं तु गवेसेज्जतु गुणाणं अपरिहाणी ॥५॥ ठितमठियम्मी दसविहें ठवणाकप्पे य दुविहमण्णयरे। उत्तरगुणकप्पम्मि य जो सरिकप्पो स संभोगो ॥६॥ठवणाकप्पो दुविहो अकप्पठवणा य सेहठवणा य। पढमो अकप्पिएणं आहारादीणि(ण)गिण्हावे॥७॥ अट्ठारसेव पुरिसे वीसं इत्थीण दस णपुंसे य। दिक्खेति जो ण एते सेहट्ठवणाए सो कप्पो ॥८॥ आहारउवहिसेज्जा उग्गमउप्पायणेसणासुद्धं। जो परिगिण्हति णिययं उत्तरगुणकप्पिओ स खलु ॥९॥ सरिकप्पे सरिछंदे तुल्लचरित्ते विसिट्ठतरए वा। साहूहिँ संथवं कुज्जा णाणीहिं चरित्तगुत्तेहिं ॥२१८०॥ सरिकप्पे०। आएज्ज भत्तपाणं सएण लाभेण वा तुस्से ॥१॥ इय सामा-इयछेदे जिणथेराणं ठिती समक्खाता। एत्तो णिव्विसमाणे णिव्विट्ठे यावि वोच्छामि ॥२॥ परिहारकप्पं वोच्छामि, परिहरितव्वं जहा विदू। आदी मज्झवसाणे य, आणुपुव्विं जहक्कमं ॥३॥ भरहेरवयवासेसु, जदा तित्थंगरा भवे। पुरिमा पच्छिमा चेव, परिहारी तेसु होन्ति तु ॥४॥ मज्झिमाण ण संती तु, तित्थेसुं परिहारिया। ण यावि य विदेहेसु, विज्जंती परिहारिया ॥५॥ केवतियकालसंजोगो, गच्छो तू अणुसज्जती। तित्थंकरेसु पुरिमेसु, तहा पच्छिमएसु य ॥६॥ पुव्वसयसहस्सातिं, पुरिमस्सऽणुसज्जती। जम्हा ण पडिवज्जंति, दोण्ह गच्छा परेण तु ॥७॥ देसूणपुव्वकोडीओ, दो सा दोण्हं भवंति तु। दो सा एगूणतीसा तु, तेण ऊणा ततो भवे ॥८॥ वीसग्गसो य वासाइं, चरिमस्सऽणुसज्जए। जाव देसूणगा दोण्णि, सया वासाण होंति तु ॥९॥ पव्वज्जा अट्ठवासस्स, उवट्ठा णवमम्मि उ। एगूणवीसपरियाए, दिट्ठिवाओ य तस्स तु ॥२१९०॥ उद्दिस्सति वरिसेण य, तस्स य सो तु समप्पती। णव वीसा य मेलीणा, ऊणतीसा भवंति तु ॥१॥ इति एगूणतीसाए, सयमूणं तु पच्छिमे। एसो दोसु तु एतेण, ऊणाई दो सयाणि उ ॥२॥ पालतित्ता सयं ऊणं, ठायं तेते तु पच्छिमे। काले देसेन्ति अ-ण्णेसिं, इति ऊणा उ बे सता ॥३॥ पडिवज्जंति जिणिंदस्स, पायमूलम्मि जे विऊ। ठावयंति उ ते अण्णे, नो तु ठावितठावगा ॥४॥ सव्वे चरित्तमंता य, दंसणे परिणिट्ठिया। णवपुव्वी जहण्णेणं, उक्कोस दसपुव्विया ॥५॥ पंचविहे ववहारे, कप्पे ते दुविहम्मि य। दसविहे य पच्छित्ते, सव्वे ते परिणिट्ठिता ॥६॥ अत्तणो आउगं सेसं, जाणित्ता ते महामुणी। परक्कमं बलं विरियं, पच्चवाए तहेव य ॥७॥ जति जीतपच्चवाया ण, होंति तेसिं तु अण्णतरा। तो तं पडिवज्जंती, वाघाएणं तु ते णवी ॥८॥ आपुच्छिऊण अरिहंते, मग्गं देसिंति ते इमं। पमाणाणि य सव्वाणि, म(उ)ग्गहे य बहुविहे ॥९॥ उवहीगमणप्पमाणाणि, पुरिसाणं च जाणिउं। दव्वं खेत्तं च कालं च, भावं अण्णे य पज्जवे ॥२२००॥ संसट्ठमाइयाणं, सत्तण्हं एसणाण तु। आदिल्लाहिं दोहिं तु, अग्गहो गह पंचहिं ॥१॥ तत्थवि अण्णयरीए एगीए अभिग्गहं तु कातूणं। उवहिणो अग्गहो दोसुं इयरो एगतरीय तु ॥२॥ अइरुग्गयम्मि सूरम्मि, कप्पं देसेन्ति ते इमं। आलोइयपडिक्कंतो, ठावयंति तयो गणे ॥३॥ सत्तावीसं जहण्णेणं, उक्कोसेणं सहस्ससो। णिग्गंथसूरा भगवंतो, सव्वग्गेण वियाहिया ॥४॥ सयग्गसो य उक्कोसा, जहण्णेण ततो गणा। गणो य णवगो वुत्तो, एमेया पडिवत्तिओ ॥५॥ एगं कप्पट्ठियं कुज्जा, चत्तारि पारिहारिया। अणुपारिहारिया चेव, चतुरो एतेसि ठावए ॥६॥ ण तेसिं जायते विग्घं, जा मासा दस अट्ठ य। ण वेयणा ण वाऽऽयंको, ण वायणे उवहवा ॥७॥ अट्ठारससु पुण्णेसुं, होजा एते उवद्दवा। ऊणिए ऊणिए यावि, गणे मेरा इमा भवे ॥८॥ जत्तिएण गणो ऊणो, तत्तिए तत्थ पक्खिवे। एगं दुवे अणेगा वा, एस कप्पे तु ऊणिए ॥९॥ एते अणूणिए कप्पे, उवसंपज्जति जो तहिं। एगे दुवे अणेगे वा, तेसिं कप्पो इमो भवे ॥२२१०॥ अच्छंति ता उदि-क्खंता, जाव पुण्णा तु ते णव। पच्छा पडिवज्जंति, जं कप्पं तेसि अंतिए ॥१॥ पमाण कप्पट्ठितो तत्थ, ववहारं ववहरित्तए। अणुपरिहारियाणंपि, पमाणं होति सेव तु ॥२॥ आलो-यण कप्पठिए पच्चक्खाणं तहेव वंदणयं। तं च वहंते ते तू उज्जाणी एवमण्णंति ॥३॥ अणुपरिहारी गोवालगट्ठ गावीण णिच्चमुज्जुत्ता। परिहारियाण मग्गतो हिंडंती णिच्चमुज्जुत्ता ॥४॥ पडिपुच्छं वायणं चेव, मोत्तूणं णत्थि संकहा। आलावो अत्तणिदेसो, परिहारियस्स कारणे ॥५॥ परिहारियाण उ तवो वासासुक्कोस मज्झिम जहण्णो। बारसमदसम अट्ठम दसमऽट्ठमछट्ठ सिसिरेसु ॥६॥ अट्ठमछट्ठचउत्थं गिम्हे उक्कोसमज्झिमजहण्णो। आयंबिलपारणगं अभिगहिता एसणाए तु ॥७॥ अणुपरिहारीया पुण णिच्चं पारिंति ते उ आयामे। कप्पट्ठिएऽवि ते च्चिय आणिंति अभिग्गहीताहिं ॥८॥ परिहारिय पत्तेयं अणुपरिहारीण तह य कप्पठिए। पंचण्हवि तेसिं तू संभोगेक्को मुणेतव्वो ॥९॥ परिहारिएसु वूढेसऽणुपरिहारी ततो वहंती तु। कप्पट्ठियो य पच्छा वहती वूढेसु तेसुं तु ॥२२२०॥ परिहारियावि छम्मास अणुपरिहारियावि छम्मासे। कप्पट्ठितोऽवि छम्मास एते अट्ठारस तु मासा ॥१॥ अणुप-

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [७१] दीप अनुक्रम [७१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

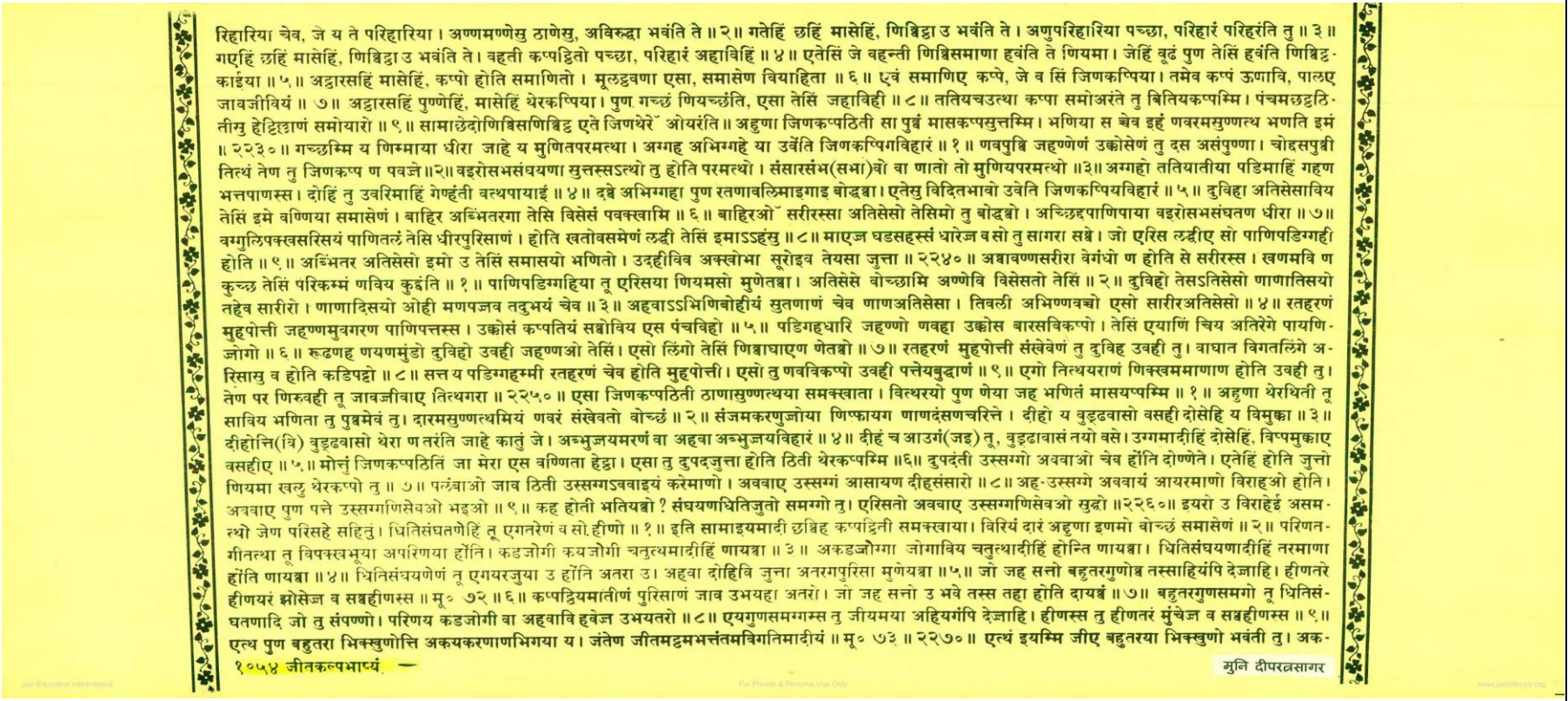

रिहारिया चेव, जे य ते परिहारिया। अण्णमण्णेसु ठाणेसु, अविरुद्धा भवंति ते ॥२॥ गतेहिं छहिं मासेहिं, णिव्विट्ठा उ भवंति ते। अणुपरिहारिया पच्छा, परिहारं परिहरंति तु ॥३॥ गएहिं छहिं मासेहिं, णिव्विट्ठा उ भवंति ते। वहती कप्पट्ठितो पच्छा, परिहारं अहाविहिं ॥४॥ एतेसिं जे वहन्ती णिव्विसमाणा हवंति ते णियमा। जेहिं वूढं पुण तेसिं हवंति णिव्विट्ठकाईया ॥५॥ अट्ठारसहिं मासेहिं, कप्पो होति समाणितो। मूलट्ठवणा एसा, समासेण वियाहिता ॥६॥ एवं समाणिए कप्पे, जे व सिं जिणकप्पिया। तमेव कप्पं ऊणावि, पालए जावजीवियं ॥७॥ अट्ठारसहिं पुण्णेहिं, मासेहिं थेरकप्पिया। पुण गच्छं णियच्छंति, एसा तेसिं जहाविही ॥८॥ ततियचउत्था कप्पा समोअरंते तु बितियकप्पम्मि। पंचमछट्ठिती-तीसु हेट्ठिल्लाणं समोयारो ॥९॥ सामाछेदोणिव्विसणिव्विट्ठ एते जिणथेरेहिं ओयरंति॥ अहुणा जिणकप्पठिती सा पुव्वं मासकप्पसुत्तम्मि। भणिया स चेव इहं णवरमसुण्णत्थ भणति इमं ॥ २२३० ॥ गच्छम्मि य णिम्माया धीरा जाहे य मुणितपरमत्था। अग्गह अभिग्गहे या उवेंति जिणकप्पिगविहारं ॥१॥ णवपुव्वि जहण्णेणं उक्कोसेणं तु दस असंपुण्णा। चोद्दसपुव्वी नित्थं तेण तु जिणकप्प ण पवज्जे॥२॥ वइरोसभसंघयणा सुत्तस्सऽत्थो तु होति परमत्थो। संसारसंभ(सभा)वो वा णातो तो मुणियपरमत्थो ॥३॥ अग्गहो ततियातीया पडिमाहिं गहण भत्तपाणस्स। दोहिं तु उवरिमाहिं गेण्हंती वत्थपायाइं ॥४॥ दव्वे अभिग्गहा पुण रतणावलिमाइगाइ बोद्धव्वा। एतेसु विदितभावो उवेति जिणकप्पियविहारं ॥५॥ दुविहा अतिसेसाविय तेसिं इमे वण्णिया समासेणं। बाहिर अब्भितरगा तेसि विसेसं पवक्खामि ॥६॥ बाहिरओ सरीरस्सा अतिसेसो तेसिमो तु बोद्धव्वो। अच्छिद्दपाणिपाया वइरोसभसंघतण धीरा ॥७॥ वग्गुलिपक्खसरिसयं पाणितलं तेसि धीरपुरिसाणं। होति खतोवसमेणं लद्धी तेसिं इमाऽऽहंसु ॥८॥ माएज्ज घडसहस्सं धारेज्ज वसो तु सागरा सव्वे। जो एरिस लद्धीए सो पाणिपडिग्गही होति ॥९॥ अब्भितर अतिसेसो इमो उ तेसिं समासयो भणितो। उदहीविव अक्खोभा सूरोइव तेयसा जुत्ता ॥ २२४० ॥ अव्वावण्णसरीरा वेगंधो ण होति से सरीरस्स। खणमवि ण कुच्छ तेसिं परिकम्मं णविय कुव्वंति ॥१॥ पाणिपडिग्गहिया तू एरिसया णियमसो मुणेतव्वा। अतिसेसे वोच्छामि अण्णेवि विसेसतो तेसिं ॥२॥ दुविहो तेसऽतिसेसो णाणातिसयो तहेव सारीरो। णाणादिसयो ओही मणपज्जव तदुभयं चेव ॥३॥ अहवाऽऽभिणिबोहीयं सुतणाणं चेव णाणअतिसेसा। तिवली अभिण्णवच्चो एसो सारीरअतिसेसो ॥४॥ रतहरणं मुहपोत्ती जहण्णमुवगरण पाणिपत्तस्स। उक्कोसं कप्पतियं सव्वोविय एस पंचविहो ॥५॥ पडिगहधारि जहण्णो णवहा उक्कोस बारसविकप्पो। तेसिं एयाणिं चिय अतिरेगे पायणिज्जोगो ॥६॥ रूढणह णयणमुंडो दुविहो उवही जहण्णओ तेसिं। एसो लिंगो तेसिं णिव्वाघाएण णेतव्वो ॥७॥ रतहरणं मुहपोत्ती संखेवेणं तु दुविह उवही तु। वाघात विगतलिंगे अरिसासु व होति कडिपट्टो ॥८॥ सत्त य पडिग्गहम्मी रतहरणं चेव होति मुहपोत्ती। एसो तु णवविकप्पो उवही पत्तेयबुद्धाणं ॥९॥ एगो नित्थयराणं णिक्खममाणाण होति उवही तु। तेण पर णिरुवही तू जावज्जीवाए तित्थगरा ॥ २२५० ॥ एसा जिणकप्पठिती ठाणासुण्णत्थया समक्खाता। वित्थरयो पुण णेया जह भणितं मासयप्पम्मि ॥१॥ अहुणा थेरथिती तू साविय भणिता तु पुव्वमेवं तु। दारमसुण्णत्थमियं णवरं संखेवतो वोच्छं ॥२॥ संजमकरणुज्जोया णिप्फायग णाणदंसणचरित्ते। दीहो य वुड्ढवासो वसही दोसेहि य विमुक्का ॥३॥ दीहोत्ति(वि) वुड्ढवासो थेरा ण तरंति जाहे कातुं जे। अब्भुज्जयमरणं वा अहवा अब्भुज्जयविहारं ॥४॥ दीहं च आउगं(जइ) तू, वुड्ढावासं तयो वसे। उग्गमादीहिं दोसेहिं, विप्पमुक्काए वसहीए ॥५॥ मोत्तुं जिणकप्पठितिं जा मेरा एस वण्णिता हेट्ठा। एसा तु दुपदजुत्ता होति ठिती थेरकप्पम्मि ॥६॥ दुपदंती उस्सग्गो अववाओ चेव होंति दोण्णेते। एतेहिं होति जुत्तो णियमा खलु थेरकप्पो तु ॥७॥ पल्लंबाओ जाव ठिती उस्सग्गऽववाइयं करेमाणो। अववाए उस्सग्गं आसायण दीहसंसारो ॥८॥ अह-उस्सग्गे अववायं आयरमाणो विराहओ होति। अववाए पुण पत्ते उस्सग्गणिसेवओ भइओ ॥९॥ कह होती भतियव्वो ? संघयणधितिजुतो समग्गो तु। एरिसतो अववाए उस्सग्गणिसेवओ सुद्धो ॥२२६०॥ इयरो उ विराहेई असमत्थो जेण परिसहे सहितुं। धितिसंघतणेहिं तू एगतरेणं व सो हीणो ॥१॥ इति सामाइयमादी छव्विह कप्पट्ठिती समक्खाया। विरियं दारं अहुणा इणमो वोच्छं समासेणं ॥२॥ परिणतगीतत्था तू विपक्खभूया अपरिणया होंति। कडजोगी कयजोगी चतुत्थमादीहिं णायव्वा ॥३॥ अकडजोग्गा जोगाविय चतुत्थादीहिं होन्ति णायव्वा। धितिसंघयणादीहिं तरमाणा होंति णायव्वा ॥४॥ धितिसंघयणेणं तू एगयरजुया उ होंति अतरा उ। अहवा दोहिवि जुत्ता अतरगपुरिसा मुणेयव्वा ॥५॥ जो जह सत्तो उ बहुतरगुणोव तस्साहियंपि देज्जाहि। हीणतरे हीणयरं ओसेज्ज व सव्वहीणस्स ॥ मू० ७२ ॥६॥ कप्पट्ठियमातीणं पुरिसाणं जाव उभयहा अतरो। जो जह सत्तो उ भवे तस्स तहा होति दायव्वं ॥७॥ बहुतरगुणसमगो तू धितिसंघतणादि जो तु संपण्णो। परिणय कडजोगी वा अहवावि हवेज्ज उभयतरो ॥८॥ एयगुणसमग्गस्स तु जीयमया अहियगंपि देज्जाहि। हीणस्स तु हीणतरं मुंचेज्ज व सव्वहीणस्स ॥९॥ एत्थ पुण बहुतरा भिक्खुणोत्ति अकयकरणाणभिगया य। जंतेण जीतमट्ठमभत्तंतमविगतिमादीयं ॥ मू० ७३ ॥ २२७०॥ एत्थं इयम्मि जीए बहुतरया भिक्खुणो भवंती तु। अक-

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [७३]

दीप अनुक्रम [७३]

यकरणा उ जे तू अणभिगया चेव णायव्वा ॥१॥ चस्सद्देण थिराथिर गहिया तू एत्थ तू समासेणं। जंतयविहीकमेणं जीयाभिमएण देज्जाहि ॥२॥ कतकरण अकयकरणा कयकरणा गच्छवासि इयरे य। अकयकरणा तु णियमा णायव्वा गच्छवासी तु ॥३॥ ते अभिगत अणभिगता अणभिगता थिरऽथिरा व होज्जाहि। कतअभिगत जं सेवे अणभिगते अत्थिरे इच्छा ॥४॥ अहवा णिरवेक्खियरा दुविहा पुरिसा समासतो होंति। णिरवेक्खो जिणमादी ते णियमा होंति कतकरणा ॥५॥ सावेक्खा होंति तिहा आयरिय उवज्झ भिक्खुणो चेव। कतकरणमकतकरणा आयरिया चेवुज्झाया ॥६॥ भिक्खू गीयाऽगीया गीयत्थ थिराऽथिरा य बोद्धव्वा। कतकरण अकतकरणा एक्केका होन्ति ते दुविहा ॥७॥ अग्गीयावि थिराऽथिर कयाऽकया चेव होंति एक्केका। कतकरण अकतकरणा केरिसया होंति? सुणसु इमे ॥८॥ छट्ठऽट्ठमाइएहिं कतकरणा ते तु उभयपरियाए। अभिगत कतकरणत्तं जं जोगतवारिहा केवी ॥९॥ णिरवेक्खा एगविहा सावेक्खाणं तु किं णिमित्तेणं। तिविहो भेदो तु कतो आयरियादी? इमं सुणसु ॥२२८०॥ भण्णइ जुवरायादी वत्थुविसेसेण दंडो जह लोए। तह वत्थुविसेसेणं आयरियादीण आरुवणा ॥१॥ आयरियउवज्झाया दोण्णिवि णियमेण होंति गीयत्था। गीयत्थमगीयत्था भिक्खू पुण होंति णातव्वा ॥२॥ कारणमकारणं वा जयणाऽजयणा व णत्थऽगीयत्थे। एतेण कारणेणं आयरियादी तिविह भेदो ॥३॥ कज्जाऽकज्ज जयाजय अविजाणंतोऽगीयो य जं सेवे। सो होति तस्स दप्पो गीते दप्पाजते दोसा ॥४॥ अविसिट्ठा आवत्ती चरिमं सव्वेसि तेण सावेक्खे। चरिमं चिय कयकरणे आयरिए अकएँ अणवट्ठो ॥५॥ कतकरणउवज्झाए अणवट्ठो होति मूलमकयम्मि। भिक्खू गीयथिरम्मी कतकरणे मूलमेव भवे ॥६॥ अकयथिरम्मी छेदो अत्थिरकयकरणे होति सो चेव। अत्थिरकते उ छग्गुरु अगीतथिरकरणे ते चेव ॥७॥ अग्गीतअथिरे अकते छल्लहुगा होंति तू मुणेतव्वा। अग्गीयअथिरकयकरण च्छल्लहू चउगुरू अकते ॥८॥ एसादेसो एक्को अयमण्णो बितियओ तु आदेसो। चरिमं चिय आवण्णे कतकरणगुरुम्मि अणवट्ठो ॥९॥ अकतकरणम्मि मूलं मूलमुवज्झाएँ होति कतकरणे। अकतकरणम्मि छेदो इय णेयं अट्ठदुकंतीए ॥२२९०॥ एमेव य अणवट्ठं आवण्णे होंति दोण्णि आदेसा। णिरवेक्खो ण भणिएत्थ जं दोण्णि ण होंति तस्सेते ॥१॥ अहुणा मूलावण्णो सव्वे मूलं तु होति णिरवेक्खे। मूलं चेव गुरुस्सवि कतकरणे अकते छेदो तु ॥२॥ कतकरणउवज्झाए छेदे अकतम्मि होन्ति छग्गुरुगा। इय अट्ठदोकंतीए णेयं अयमण्णो आएसो ॥३॥ सावेक्खोत्ति व काउं गुरुस्स कडजोगिणो भवे छेदो। अकतकरणम्मि छग्गुरु कतकरण उवज्झे छग्गुरुगा ॥४॥ अकते छल्लहुगा तू इय अट्ठदोकंतीए तु णातव्वं। अहुणा छग्गुरुगे तू आढत्तं ठाइ गुरुभिण्णे ॥५॥ छल्लहुयाढत्तम्मी ठायति लहुए तु भिण्णमासम्मि। चतुगुरुआढत्तम्मी अन्नम्मी ठाइ गुरुवीसे ॥६॥ चतुलहुए वीसाए गुरुमासे ठाति पण्णरसहिं तू। लहुए लहुपण्णरसे गुरुभिण्णे ठाति गुरुदसहिं ॥७॥ लहुभिण्णे दसलहुए गुरुवीसा अंते ठाति गुरुपणए। लहुवीसा आढत्तं अंतम्मी ठाति लहुपणए ॥८॥ पण्णरसहिं गुरुएहिं अंतम्मी अट्ठमम्मि ठायति तु। पण्णरसहिं लहुएहिं अंतम्मी ठाति छट्ठम्मि ॥९॥ दसगुरुए आढत्तं अंतम्मी ठायती चतुत्थम्मि। दसलहुए आढत्तं ठायति तू अंते आयामे ॥२३००॥ गुरुपणए आढत्तं एक्कासणयम्मि अंते ठायइ तू। लहुपणए आढत्तं अंतम्मी ठाति पुरिमड्ढे ॥१॥ अट्ठमभत्ताऽऽढत्तं अंतम्मी ठायई अ णिव्विगती। जंतविहीपत्थारो समासतो एसमक्खातो ॥२॥ एयं तु अजयणाए साविक्खाणं तु होति पच्छित्तं। अह गीयत्थो सेवे कारण जतणाएँ तो सुद्धो ॥३॥ एयं तु कारणम्मी जतणासेविस्स वण्णियं दाणं। अहवावि इमं अण्णं आयरियादी जहाकमसो ॥४॥ आयरियउवज्झाए कतकरणे अकतकरण दुविहा तु। भिक्खुम्मि अभिगते या अणभिगते चेव दुविहो तु ॥५॥ अभिगते कत अकते या अणभिगते थिर तहेव अथिरे य। थिरे कतकरणे अकते अथिरे कतकरणमकए य ॥६॥ एते सव्वेऽवेगं आवत्ती पंचराइगाऽऽवण्णा। तं पणगं अविसिट्ठं चउत्थमादीहिं विण्णेयं ॥७॥ आतरिए कतकरणे तं चिय पणगं तु होति दातव्वं। अकतकरणे चउत्थं कयकरणे उवज्झे तं चेव ॥८॥ अकयम्मी आयामं भिक्खुम्मी अभिगतम्मि कतकरणे। आयामं दायव्वं अकयकरणे उ भत्तेकं ॥९॥ भिक्खुम्मी अणभिगते थिरकयकरणे य एगभत्तं तु। अकयम्मी पुरिमड्ढं अणभिगए अत्थिरे कतम्मि ॥२३१०॥ पुरिमड्ढो चिय णियमा अत्थिरअकयम्मि होति णिव्विगति। अहवाऽणभिगय अथिरे इच्छाए तं च अण्णं वा ॥१॥ एमेव य दसरायं सव्वे आवण्णमेगमावत्तिं। कतकरणे आयरिए दसरायं चेव दायव्वं ॥२॥ अकयकरणम्मि पणगं कतकरणे पणगमेवुवज्झाए। अकतकरणे चउत्थं एवं तू अट्ठदुकंतीए ॥३॥ ता णेयव्व कमेणं जाव उ अंतम्मि होति पुरिमड्ढं। इय पण्णरसारद्धं ठायइ एक्कासणगमंते ॥४॥ वीसारद्धं ठायति आयामे भिण्णमासऽभत्तट्ठे। मासारद्धं पणगे दुमास दसराएँ ठायइ तु ॥५॥ तेमासे पण्णरसे चतुमासे ठाति वीसरातम्मि। पणमासे पणुवीसे छम्मासे मासिए ठाति ॥६॥ छेदो दोमासीए मूले तेमासियम्मि ठायति तु। अणवट्ठे चतुमासे पारंचिइए तु पणमासे ॥७॥ एए भणिता लहुगा सव्वेऽवि तवारिहा समासेणं। एमेव य गुरुगावी णेयव्वा अट्ठदुकंतीए ॥८॥ एमेव य मीसा वा अट्ठदुकंतीएँ होन्ति णेतव्वा। एमेव पंचपंचहिं मासादी सातिरेगादी ॥९॥ जा छम्मासा णेया तत्थवि उग्घाय तह

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [७३] दीप अनुक्रम [७३]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

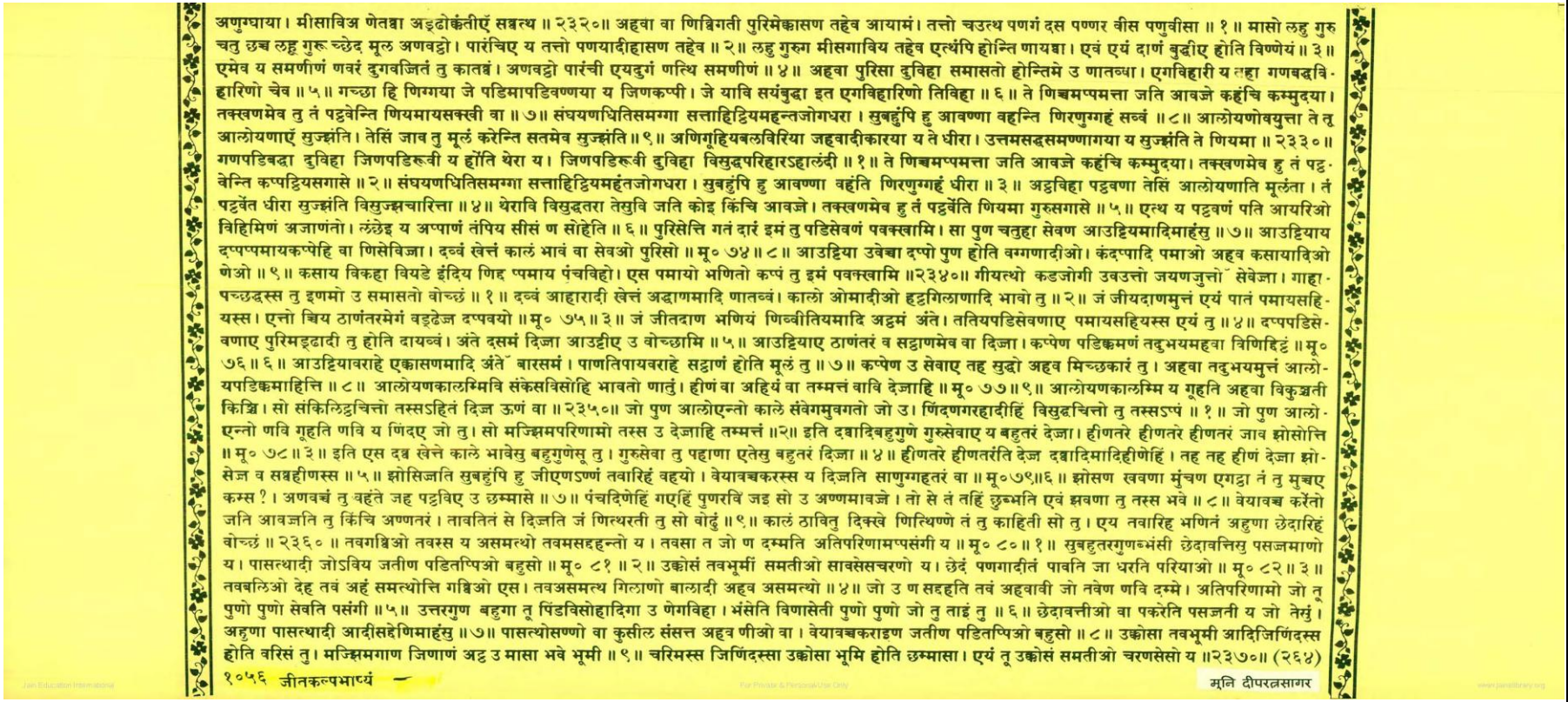

अणुग्घाया। मीसाविअ णेतव्वा अड्ढोकंतीएँ सव्वत्थ ॥ २३२०॥ अहवा वा णिव्विगती पुरिमेक्कासण तहेव आयामं। तत्तो चउत्थ पणगं दस पण्णर वीस पणुवीसा ॥ १ ॥ मासो लहु गुरु चतु छच्च लहू गुरू च्छेद मूल अणवट्ठो। पारंचिए य तत्तो पणयादीहासण तहेव ॥ २॥ लहु गुरुग मीसगाविय तहेव एत्थंपि होन्ति णायव्वा। एवं एयं दाणं बुद्धीए होति विण्णेयं ॥ ३॥ एमेव य समणीणं णवरं दुगवज्जितं तु कातव्वं। अणवट्ठो पारंची एयदुगं णत्थि समणीणं ॥ ४॥ अहवा पुरिसा दुविहा समासतो होन्तिमे उ णातव्वा। एगविहारी य तहा गणबद्धविहारिणो चेव ॥ ५॥ गच्छा हि णिग्गया जे पडिमापडिवण्णया य जिणकप्पी। जे यावि सयंबुद्धा इत एगविहारिणो तिविहा ॥ ६॥ ते णिच्चमप्पमत्ता जति आवज्जे कहंचि कम्मुदया। तक्खणमेव तु तं पट्ठवेन्ति णियमायसक्खी वा ॥ ७॥ संघयणधितिसमग्गा सत्ताहिट्ठियमहन्तजोगधरा। सुबहुंपि हु आवण्णा वहन्ति णिरणुग्गहं सव्वं ॥ ८॥ आलोयणोवयुत्ता ते तू आलोयणाएँ सुज्झंति। तेसिं जाव तु मूलं करेन्ति सतमेव सुज्झंति ॥ ९॥ अणिगूहियबलविरिया जहवादीकारया य ते धीरा। उत्तमसद्धसमण्णागया य सुज्झंति ते णियमा ॥ २३३०॥ गणपडिबद्धा दुविहा जिणपडिरूवी य होंति थेरा य। जिणपडिरूवी दुविहा विसुद्धपरिहारऽहालंदी ॥ १॥ ते णिच्चमप्पमत्ता जति आवज्जे कहंचि कम्मुदया। तक्खणमेव हु तं पट्ठवेन्ति कप्पट्ठियसगासे ॥ २॥ संघयणधितिसमग्गा सत्ताहिट्ठियमहंतजोगधरा। सुबहुंपि हु आवण्णा वहंति णिरणुग्गहं धीरा ॥ ३॥ अट्ठविहा पट्ठवणा तेसिं आलोयणाति मूलंता। तं पट्ठवेंत धीरा सुज्झंति विसुज्झचारित्ता ॥ ४॥ थेरावि विसुद्धतरा तेसुवि जति कोइ किंचि आवज्जे। तक्खणमेव हु तं पट्ठवेंति णियमा गुरुसगासे ॥ ५॥ एत्थ य पट्ठवणं पति आयरिओ विहिमिणं अजाणंतो। लंछेइ य अप्पाणं तंपिय सीसं ण सोहेति ॥ ६॥ पुरिसेत्ति गतं दारं इमं तु पडिसेवणं पक्खामि। सा पुण चतुहा सेवण आउट्टियमादिमाहंसु ॥ ७॥ आउट्टियाय दप्पप्पमायकप्पेहि वा णिसेविज्जा। दव्वं खेत्तं कालं भावं वा सेवओ पुरिसो ॥ मू० ७४॥ ८॥ आउट्टिया उवेच्चा दप्पो पुण होति वग्गणादीओ। कंदप्पादि पमाओ अहव कसायादिओ णेओ ॥ ९॥ कसाय विकहा वियडे इंदिय णिद्द प्पमाय पंचविहो। एस पमायो भणितो कप्पं तु इमं पक्खामि ॥२३४०॥ गीयत्थो कडजोगी उवउत्तो जयणजुत्तो सेवेज्जा। गाहापच्छद्धस्स तु इणमो उ समासतो वोच्छं ॥ १॥ दव्वं आहारादी खेत्तं अद्धाणमादि णातव्वं। कालो ओमादीओ हट्टगिलाणादि भावो तु ॥ २॥ जं जीयदाणमुत्तं एयं पातं पमायसहियस्स। एत्तो चिय ठाणंतरमेगं वड्ढेज्ज दप्पवयो ॥ मू० ७५॥ ३॥ जं जीतदाण भणियं णिव्वीतियमादि अट्ठमं अंते। ततियपडिसेवणाए पमायसहियस्स एयं तु ॥ ४॥ दप्पपडिसेवणाए पुरिमड्ढादी तु होति दायव्वं। अंते दसमं दिज्जा आउट्टीए उ वोच्छामि ॥ ५॥ आउट्टियाए ठाणंतरं व सट्ठाणमेव वा दिज्जा। कप्पेण पडिक्कमणं तदुभयमहवा विणिद्दिट्ठं ॥ मू० ७६॥ ६॥ आउट्टियावराहे एक्कासणमादि अंते बारसमं। पाणतिपायवराहे सट्ठाणं होति मूलं तु ॥ ७॥ कप्पेण उ सेवाए तह सुद्धो अहव मिच्छकारं तु। अहवा तदुभयमुत्तं आलोयपडिक्कमाहित्ति ॥ ८॥ आलोयणकालम्मिवि संकेसविसोहि भावतो णातुं। हीणं वा अहियं वा तम्मत्तं वावि देज्जाहि ॥ मू० ७७॥ ९॥ आलोयणकालम्मि य गूहति अहवा विकुव्वती किञ्चि। सो संकिलिट्ठचित्तो तस्सऽहितं दिज्ज ऊणं वा ॥ २३५०॥ जो पुण आलोएन्तो काले संवेगमुवगतो जो उ। णिंदणगरहादीहिं विसुद्धचित्तो तु तस्सऽप्पं ॥ १॥ जो पुण आलोएन्तो णवि गूहति णवि य णिंदए जो तु। सो मज्झिमपरिणामो तस्स उ देज्जाहि तम्मत्तं ॥२॥ इति दव्वादिबहुगुणे गुरुसेवाए य बहुतरं देज्जा। हीणतरे हीणतरं हीणतरं जाव झोसोत्ति ॥ मू० ७८॥ ३॥ इति एस दव्व खेत्ते काले भावेसु बहुगुणेसू तु। गुरुसेवा तु पहाणा एतेसु बहुतरं दिज्जा ॥ ४॥ हीणतरे हीणतरंति देज्ज दव्वादिमादिहीणेहिं। तह तह हीणं देज्जा झोसेज्ज व सव्वहीणस्स ॥ ५॥ झोसिज्जति सुबहुंपि हु जीएणऽण्णं तवारिहं वहयो। वेयावच्चकरस्स य दिज्जति साणुग्गहतरं वा ॥ मू० ७९॥ ६॥ झोसण खवणा मुंचण एगट्ठा तं तु मुच्चए कम्स ?। अणवच्चं तु वहंते जह पट्ठविए उ छम्मासे ॥ ७॥ पंचदिणेहिं गएहिं पुणरवि जइ सो उ अण्णमावज्जे। तो से तं तहिं छुब्भति एवं झवणा तु तस्स भवे ॥ ८॥ वेयावच्च करेंतो जति आवज्जति तु किंचि अण्णतरं। तावतितं से दिज्जति जं णित्थरती तु सो वोढुं ॥ ९॥ कालं ठावितु दिक्खे णित्थिण्णे तं तु काहिती सो तु। एय तवारिह भणितं अहुणा छेदारिहं वोच्छं ॥ २३६० ॥ तवगव्विओ तवस्स य असमत्थो तवमसहहन्तो य। तवसा त जो ण दम्मति अतिपरिणामप्पसंगी य ॥ मू० ८०॥ १॥ सुबहुतरगुणब्भंसी छेदावत्तिसु पसज्जमाणो य। पासत्थादी जोडविय जतीण पडितप्पिओ बहुसो ॥ मू० ८१ ॥ २॥ उक्कोसं तवभूमीं समतीओ सावसेसचरणो य। छेदं पणगादीतं पावति जा धरति परियाओ ॥ मू० ८२॥ ३॥ तवबलिओ देह तवं अहं समत्थोत्ति गव्विओ एस। तवअसमत्थ गिलाणो बालादी अहव असमत्थो ॥ ४॥ जो उ ण सद्दहति तवं अहवावी जो नवेण णवि दम्मे। अतिपरिणामो जो तू पुणो पुणो सेवति पसंगी ॥ ५॥ उत्तरगुण बहुगा तू पिंडविसोहादिगा उ णेगविहा। भंसेति विणासेती पुणो पुणो जो तु ताइं तु ॥ ६॥ छेदावत्तीओ वा पकरेति पसज्जती य जो तेसुं। अहुणा पासत्थादी आदीसद्देणिमाहंसु ॥ ७॥ पासत्थोसण्णो वा कुसील संसत्त अहव णीओ वा। वेयावच्चकराइण जतीण पडितप्पिओ बहुसो ॥ ८॥ उक्कोसा तवभूमी आदिजिणिंदस्स होति वरिसं तु। मज्झिमगाण जिणाणं अट्ठ उ मासा भवे भूमी ॥ ९॥ चरिमस्स जिणिंदस्सा उक्कोसा भूमि होति छम्मासा। एयं तू उक्कोसं समतीओ चरणसेसो य ॥२३७०॥ (२६४)

मुनि दीपरत्नसागर

	अत्र प्रतिसेवना एवं छेद-प्रायश्चित् वर्णयेते

प्रत सूत्रांक [८२] दीप अनुक्रम [८२]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

एव जहुद्दिट्ठाणं तवगव्वियमादियाण सव्वेसिं। छेदं पणगादीयं देज्जा जा धरति परियाओ ॥ १ ॥ आउट्टियाय पंचिंदियघाते मेहुणे य दप्पेणं । सेसेसुक्कोसाभिक्खसेवणादीसु तीसुंपि ॥ मू० ८३ ॥ २ ॥ आउट्टि उवेच्चा तू पंचिंदिवहेति मिहुण दप्पेणं । सेस वय मुसाऽदिन्न परिग्गहो चेव णादव्वो ॥ ३ ॥ एतेसुक्कोसाणिं पडिसेवइऽभिक्खणं तु मिच्छा तु । एतेसिं सव्वेसिं मूलं तू होति दातव्वं ॥ ४ ॥ तवगव्वियादिएसु य मूलुत्तरदोसवतियरगएसुं। दंसणचरित्तवन्ते चियत्तकिच्चे य सेहे य ॥ मू० ८४ ॥ ५ ॥ तवगव्वियमादीया जावऽइपरिणाम अतिपसंगित्ति। एत जहुद्दिट्ठाणं मूलं तू होति णातव्वं ॥ ६ ॥ मूलगुण उत्तरगुणे बहुविह बहुसो य दूस भंजति वा। वतिकरमेयं होती एरिसजुत्तस्स मूलं तु ॥ ७ ॥ णिच्छयनयस्स चरणायविघाये णाण-दंसणवहोवि। ववहारस्स तु चरणे हयम्मि भयणा तु सेसाणं ॥ ८ ॥ चत्तं जेण दरिसणं चारित्तं वावि सो तु णातव्वो। चत्तकिच्चो वेसो चियत्तकिच्चो मुणेतव्वो ॥ ९ ॥ अहवा-संजम सकलं किच्चं जेणं चत्तं स चत्तकिच्चो तु। सेहो अणुवट्ठविओ मूलं एतेसिं सव्वेसिं ॥ २३८० ॥ अचंतोसण्णेसु य परलिंगदुवे य मूलकम्मे य। भिक्खुम्मि य विहिततवेऽणवट्ठपारंचियं पत्ते ॥ मू० ८५ ॥ १ ॥ ओसण्णे पव्वाविय संविग्गेहिं व जप्पभितिं तु। ओसण्णयाएँ विहरिओ सो भणितऽचंतयोसण्णो ॥ २ ॥ गिहिलिंग अण्णउत्थिय परलिंगदुवे कुणति दप्पेणं। गब्भादाणे साडण दुविहमिहं मूलकम्मं तु ॥ ३ ॥ भिक्खणसीला भिक्खू विहिततवं उवणयं तु णातव्वं। तवअणवट्ठं उवणय पारंचितवं च णातव्वं ॥ ४ ॥ अतियारसेवणाए पत्ते एयं तु होति दुविहं च (ह तवं)। एतेसिं सव्वेसिं दातव्वं होति मूलं तु ॥ ५ ॥ छेदेणापरियाएऽणवट्ठपारंचियावसाणे य। मूलं मूलावत्तिसु बहुसो य पसज्जणे भणियं ॥ मू० ८६ ॥ ६ ॥ छिज्जंते परियाए जस्स तु छिण्णो हु णिरवसेसो तु। तवअणवट्टे वूढे पारंचितवावसाणेसु ॥ ७ ॥ मूलावत्तिसु एसुं पुणो पुणो सज्जए तु जो सगणे(मणो)। सव्वेसुवि एतेसुं मूलं तू होति दातव्वं ॥ ८ ॥ अणवट्ठप्पो दुविहो आसायण तह य होति पडिसेवी। आसायणअणवट्ठं समासयोऽहं इमं वोच्छं ॥ ९ ॥ तित्थकरं संघ सुयं आयरियं गणहरं महिड्ढीयं। एते आसाएन्ते पच्छित्ते मग्गणा इणमो ॥ २३९० ॥ पढम बिति देस सव्वे णवमं सेसेसु चउगुरू देसे। पडिसेवणअणवट्ठं अहुणा उ इमं पवक्खामि ॥ १ ॥ उक्कोसं बहुसो वा पउट्ठचित्तो तु तेणियं कुणति। पहरति जो य सपक्खे णिरवेक्खो घोरपरिणामो ॥ मू० ८७ ॥ २ ॥ उक्कोसं तु विसिट्ठं पुणो पुणो एय होति बहुगं तु। कोहादी व अतीव तु पउट्ठचित्तो मुणेतव्वो ॥ ३ ॥ पडिसेवणअणवट्टो होती तिविहो इमो समासेणं। साहम्मियऽण्णधम्मियतेण्णे तह हत्थताले य ॥ ४ ॥ साहम्मितेण्ण दुविहं सचित्तं तह य होति अचित्तं। अचित्तोवहि भत्ते सचित्त सेहावहारो तु ॥ ५ ॥ साहम्मिउवहिहरणं वावारण झावणा य पत्थवणा। तं पुण सेहमसेहो हरेज्ज अहिट्ठ दिट्ठं वा ॥ ६ ॥ सेहोत्ति अगीयत्थो जो वा गीतो अणिड्ढिसंपण्णो। उवही पुण वत्थादी अपरिग्गह पत्थरो तिविहो ॥ ७ ॥ अपरिग्गहितो तहियं साहम्मी मोत्तु पवसितो जस्स। ओहरमाणे सोही होति इमो खेत्तणिप्फण्णो ॥ ८ ॥ अण्णोवस्सयबाहिं णिवेस वाडे य गाममुज्जाणे। सीमाए जा णेयं सव्वत्थवि अन्नो बहिया वा ॥ ९ ॥ एतेसुं तेण्णंते मासलहुं आइ काउ जा छेदो। अड्ढोकंती णेयं अहिट्ठेसा भवे सोही ॥ २४०० ॥ मासगुरुगादि दिट्ठे मूलं सेहस्स एयणिट्ठाइं। अभिसेयाऽऽयरियाणं एक्केकं ठाणगं वड्ढे ॥ १ ॥ एवं तुवस्सयाओ साहम्मीणुवहिमवहरंतस्स। वावारिए इदाणिं वोच्छं सयमेव गेण्हन्ते ॥ २ ॥ वावारिया गुरूहिं वच्चह आणेह तिविहमुवहिंति। तं लद्धं तत्तो चिय तुज्झं मज्झे य अत्तट्ठी ॥ ३ ॥ लहुओ अत्तट्ठंते जति पुण आणेत्तु गुरुण न णिवेदे। तो होंती चतुलहुगा अणवट्टप्पो व आदेसा ॥ ४ ॥ वावारियतेण्णेयं अण्णो पुण सावए णिमन्तेन्ते। पडिसिद्धाऽऽयरियेणं दट्ठूणं तत्थ गंतूणं ॥ ५ ॥ बेती झामिय उवही अहयं च गुरूहिं पेसिओ देह। तो दिण्णो तेहुवही किह पुण सड्ढेहिं सो णातो? ॥ ६ ॥ सो तं घेत्तूण गतो णवरं ते आगता गुरुसगासं। पुच्छंति य ते सड्ढा उवहि पहुत्तो व ण पहुत्तो? ॥ ७ ॥ केवइयं वा दड्ढं? तो बिन्ति ण डज्झए हु उवहित्ति। केण व णीतो उवही? इति सोच्चा पत्तिमप्पत्ति ॥ ८ ॥ लहुगा अणुग्गहम्मी गुरुगा अप्पत्तिए मुणेयव्वा। मूलं च तेणसद्दे वोच्छेय पसज्जणा सेसे ॥ ९ ॥ एवं ताऽडज्झंते अह सचं झामितो भवे उवही। पेसविओ य गुरूहिं लद्धे तहिं अंतरा जो तु ॥ २४१० ॥ लद्धे अत्तट्ठेती चतुलहुगा अह गुरूण ण णिविदे। तो चतुगुरुगा तहियं अणवट्टप्पो व आदेसा ॥ १ ॥ एवं झामणहेतुं अवहारो अह इयाणि पत्थविए। आयरियादिण केणति आयरियाणं तु अण्णेसिं ॥ २ ॥ उक्कोसो सणिजोगो पडिग्गहो अन्तरा तहिं लद्धो। अत्तट्ठंते लहुगा गुरुगाऽदत्तेऽणवट्टो वा ॥ ३ ॥ एवं ता उवहिम्मी अहुणा भत्तम्मि तेण्ण वोच्छामि। जति पविसेऽसंदिट्ठो ठवणकुले तो भवे लहुगा ॥ ४ ॥ अज्ज अहं संदिट्ठो पुट्ठोऽपुट्ठो व साहए एवं। पाहुणगिलाणगट्ठा तं च पलोट्टंति तो बितियं ॥ ५ ॥ माया-णिप्फण्णं तू एव भणंतस्स होति मासगुरू। अहवा आगंतूणं णालोए तहवि मासगुरुं ॥ ६ ॥ कह पुण हवेज्ज णायं साहूहिं तह य तेहिं सड्ढेहिं। जह खलु पविट्ठो अण्णो ठवणकुलाइं असंदिट्ठो? ॥ ७ ॥ गुरुसंघाडम्मि गए भणंति गुरुजोग्ग णीयमेत्ताहे। णत्थि त्तऽणुग्गहम्मी लहुगा अप्पत्तिए गुरुगा ॥ ८ ॥ वोच्छेद गुरुगिलाणे गुरुगा लहुगा य खमगपाहुणए। गुरुगा य बालवुड्ढे सेहे य महोदरे लहुगो ॥ ९ ॥ भत्तम्मि भणियमेतं तेण्णं भणियं च मेयमचित्ते। अहुणा सचित्तम्मी सेहे सेहीय वोच्छामि ॥ २४२० ॥ तं पुण णिज्जंतो वा अभिहारेन्तो

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अत्र मूलं एवं पाराञ्चित-प्रायश्चित् वर्णयेते

प्रत सूत्रांक [८७] दीप अनुक्रम [८७]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

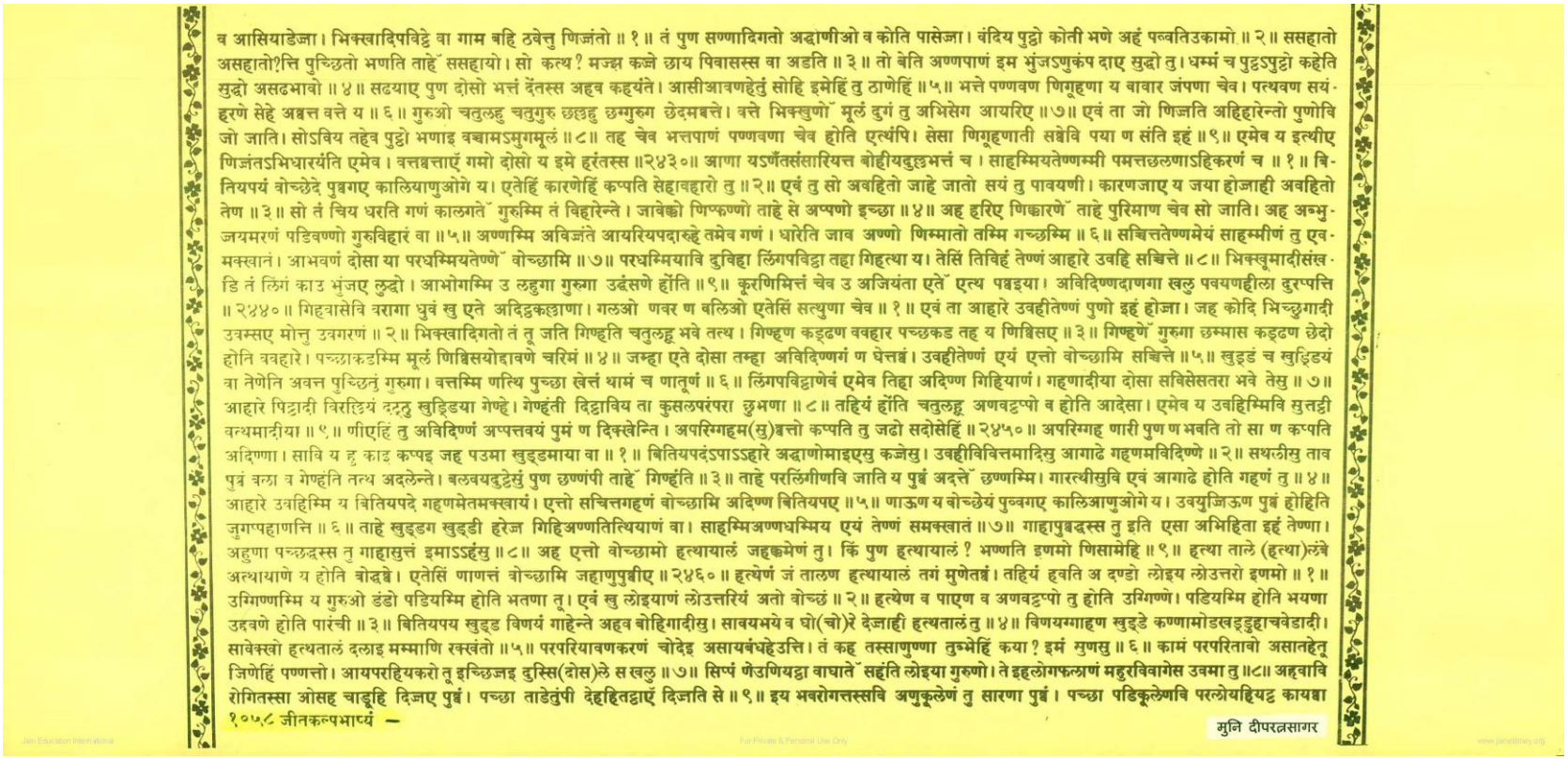

व आसियाडेज्जा। भिक्खादिपविट्ठे वा गाम वहि ठवेत्तु णिज्जंतो ॥ १ ॥ तं पुण सण्णादिगतो अद्धाणीओ व कोति पासेज्जा। वंदिय पुट्ठो कोती भणे अहं पव्वतिउकामो ॥ २ ॥ ससहातो असहातो?त्ति पुच्छितो भणति ताहे ससहायो। सो कत्थ? मज्झ कज्जे छाय पिवासस्स वा अडति ॥ ३ ॥ तो बेति अण्णपाणं इम भुंजऽणुकंप दाए सुद्धो तु। धम्मं च पुट्ठऽपुट्ठो कहेति सुद्धो असढभावो ॥ ४ ॥ सढयाए पुण दोसो भत्तं देंतस्स अहव कहयंते। आसीआवणहेतुं सोहि इमेहिं तु ठाणेहिं ॥ ५ ॥ भत्ते पण्णवण णिगूहणा य वावार जंपणा चेव। पत्थवण सयं-हरणे सेहे अव्वत्त वत्ते य ॥ ६ ॥ गुरुओ चतुलहु चतुगुरु छल्लहु छग्गुरुग छेदमव्वत्ते। वत्ते भिक्खुणो मूलं दुगं तु अभिसेग आयरिए ॥ ७ ॥ एवं ता जो णिज्जति अहिहारेन्तो पुणोवि जो जाति। सोऽविय तहेव पुट्ठो भणाइ वच्चामऽमुगमूलं ॥ ८ ॥ तह चेव भत्तपाणं पण्णवणा चेव होति एत्थंपि। सेसा णिगूहणाती सव्वेवि पया ण संति इहं ॥ ९ ॥ एमेव य इत्थीए णिज्जंतऽभिधारयंति एमेव। वत्तव्वत्ताएँ गमो दोसो य इमे हरंतस्स ॥२४३०॥ आणा यऽणँतसंसारियत्त बोहीयदुल्लभत्तं च। साहम्मियतेण्णम्मी पमत्तछलणाऽहिकरणं च ॥ १ ॥ वि-नियपयं वोच्छेदे पुव्वगए कालियाणुओगे य। एतेहिं कारणेहिं कप्पति सेहावहारो तु ॥ २ ॥ एवं तु सो अवहितो जाहे जातो सयं तु पावयणी। कारणजाए य जया होज्जाही अवहितो तेण ॥ ३ ॥ सो तं चिय धरति गणं कालगते गुरुम्मि तं विहारेन्ते। जावेक्को णिप्फण्णो ताहे से अप्पणो इच्छा ॥ ४ ॥ अह हरिए णिक्कारणे ताहे पुरिमाण चेव सो जाति। अह अब्भु-जयमरणं पडिवण्णो गुरुविहारं वा ॥ ५ ॥ अण्णम्मि अविज्जंते आयरियपदारुहे तमेव गणं। धारेति जाव अण्णो णिम्मातो तम्मि गच्छम्मि ॥ ६ ॥ सचित्ततेण्णमेयं साहम्मीणं तु एव-मक्खातं। आभवणं दोसा या परघम्मियतेण्णे वोच्छामि ॥ ७ ॥ परघम्मियावि दुविहा लिंगपविट्ठा तहा गिहत्था य। तेसिं तिविहं तेण्णं आहारे उवहि सचित्ते ॥ ८ ॥ भिक्खूमादीसंख-डि तं लिंगं काउ भुंजए लुद्धो। आभोगम्मि उ लहुगा गुरुगा उदंसणे होंति ॥ ९ ॥ कूरणिमित्तं चेव उ अजियंता एते एत्थ पव्वइया। अविदिण्णदाणगा खलु पवयणहीला दुरप्पत्ति ॥ २४४० ॥ गिहवासेवि वरागा धुवं खु एते अदिट्ठकल्लाणा। गलओ णवर ण वलिओ एतेसिं सत्थुणा चेव ॥ १ ॥ एवं ता आहारे उवहीतेण्णं पुणो इहं होज्जा। जह कोदि भिच्छुगादी उवस्सए मोत्तु उवगरणं ॥ २ ॥ भिक्खादिगतो तं तू जति गिण्हति चतुलहू भवे तत्थ। गिण्हण कड्ढण ववहार पच्छकड तह य णिव्विसए ॥ ३ ॥ गिण्हणे गुरुगा छम्मास कड्ढण छेदो होति ववहारे। पच्छाकडम्मि मूलं णिव्विसयोद्दावणे चरिमं ॥ ४ ॥ जम्हा एते दोसा तम्हा अविदिण्णगं ण घेत्तव्वं। उवहीतेण्णं एयं एत्तो वोच्छामि सचित्ते ॥ ५ ॥ खुड्डं च खुड्डियं वा तेणेति अवत्त पुच्छितुं गुरुगा। वत्तम्मि णत्थि पुच्छा खेत्तं थामं च णातूणं ॥ ६ ॥ लिंगपविट्ठाणेवं एमेव तिहा अदिण्ण गिहियाणं। गहणादीया दोसा सविसेसतरा भवे तेसु ॥ ७ ॥ आहारे पिट्ठादी विरल्लियं दट्ठु खुड्डिया गेण्हे। गेण्हंती दिट्ठावि ता कुसलपरंपरा छुभणा ॥ ८ ॥ तहियं होंति चतुलहू अणवट्ठप्पो व होति आदेसा। एमेव य उवहिम्मिवि सुत्तट्ठी वत्थमादीया ॥ ९ ॥ णीएहिं तु अविदिण्णं अप्पत्तवयं पुमं ण दिक्खेन्ति। अपरिग्गहम(सु)वत्तो कप्पति तु जढो सदोसेहिं ॥ २४५० ॥ अपरिग्गह णारी पुण ण भवति तो सा ण कप्पति अदिण्णा। सावि य हु काइ कप्पइ जह पउमा खुड्डमाया वा ॥ १ ॥ वितियपदंऽपाऽऽहारे अद्धाणोमाइएसु कज्जेसु। उवहीविवित्तमादिसु आगाढे गहणमविदिण्णे ॥ २ ॥ सथलीसु ताव पुव्वं वला व गेण्हंति तत्थ अदलेन्ते। बलवयदुट्ठेसुं पुण छण्णंपी ताहे गिण्हंति ॥ ३ ॥ ताहे परलिंगीणवि जाति य पुव्वं अदत्तें छण्णम्मि। गारत्थीसुवि एवं आगाढे होति गहणं तु ॥ ४ ॥ आहारे उवहिम्मि य वितियपदे गहणमेतमक्खायं। एत्तो सचित्तगहणं वोच्छामि अदिण्ण वितियपए ॥ ५ ॥ णाऊण य वोच्छेयं पुव्वगए कालिआणुओगे य। उवयुंजिऊण पुव्वं होहिति जुगप्पहाणत्ति ॥ ६ ॥ ताहे खुड्डग खुड्डी हरेज्ज गिहिअण्णतित्थियाणं वा। साहम्मिअण्णधम्मिय एयं तेण्णं समक्खातं ॥ ७ ॥ गाहापुव्वद्धस्स तु इति एसा अभिहिता इहं तेण्णा। अहुणा पच्छद्धस्स तु गाहासुत्तं इमाऽऽहंसु ॥ ८ ॥ अह एत्तो वोच्छामो हत्थायालं जहक्कमेणं तु। किं पुण हत्थायालं ? भण्णति इणमो णिसामेहि ॥ ९ ॥ हत्था ताले (हत्था)लंबे अत्थायाणे य होति बोद्धव्वे। एतेसिं णाणत्तं वोच्छामि जहाणुपुव्वीए ॥ २४६० ॥ हत्थेणं जं तालण हत्थायालं तगं मुणेतव्वं। तहियं हवति अ दण्डो लोइय लोउत्तरो इणमो ॥ १ ॥ उग्गिण्णम्मि य गुरुओ डंडो पडियम्मि होति भतणा तू। एवं खु लोइयाणं लोउत्तरियं अतो वोच्छं ॥ २ ॥ हत्थेण व पाएण व अणवट्ठप्पो तु होति उग्गिण्णे। पडियम्मि होति भयणा उद्दवणे होति पारंची ॥ ३ ॥ वितियपय खुड्ड विणयं गाहेन्ते अहव बोहिगादीसु। सावयभये व घो(चो)रे देज्जाही हत्थतालं तु ॥ ४ ॥ विणयग्गाहण खुड्डे कण्णामोडखइट्ठहाचवेडादी। सावेक्खो हत्थतालं दलाइ मम्माणि रक्खंतो ॥ ५ ॥ परपरियावणकरणं चोदेइ असायबंधहेउत्ति। तं कह तस्साणुण्णा तुब्भेहिं कया ? इमं सुणसु ॥ ६ ॥ कामं परपरितावो असातहेतू जिणेहिं पण्णत्तो। आयपरहियकरो तू इच्छिज्जइ दुस्सि(दोस)ले स खलु ॥ ७ ॥ सिप्पं णेउणियट्ठा वाघाते सहंति लोइया गुरुणो। ते इहलोगफलट्ठाणं महुरविवागेस उवमा तु ॥ ८ ॥ अहवावि रोगितस्सा ओसह चाडूहि दिज्जए पुव्वं। पच्छा ताडेतुंपी देहहितट्ठाएँ दिज्जति से ॥ ९ ॥ इय भवरोगत्तस्सवि अणुकूलेणं तु सारणा पुव्वं। पच्छा पडिकूलेणवि परलोयहियट्ठ कायव्वा

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [८७] दीप अनुक्रम [८७]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

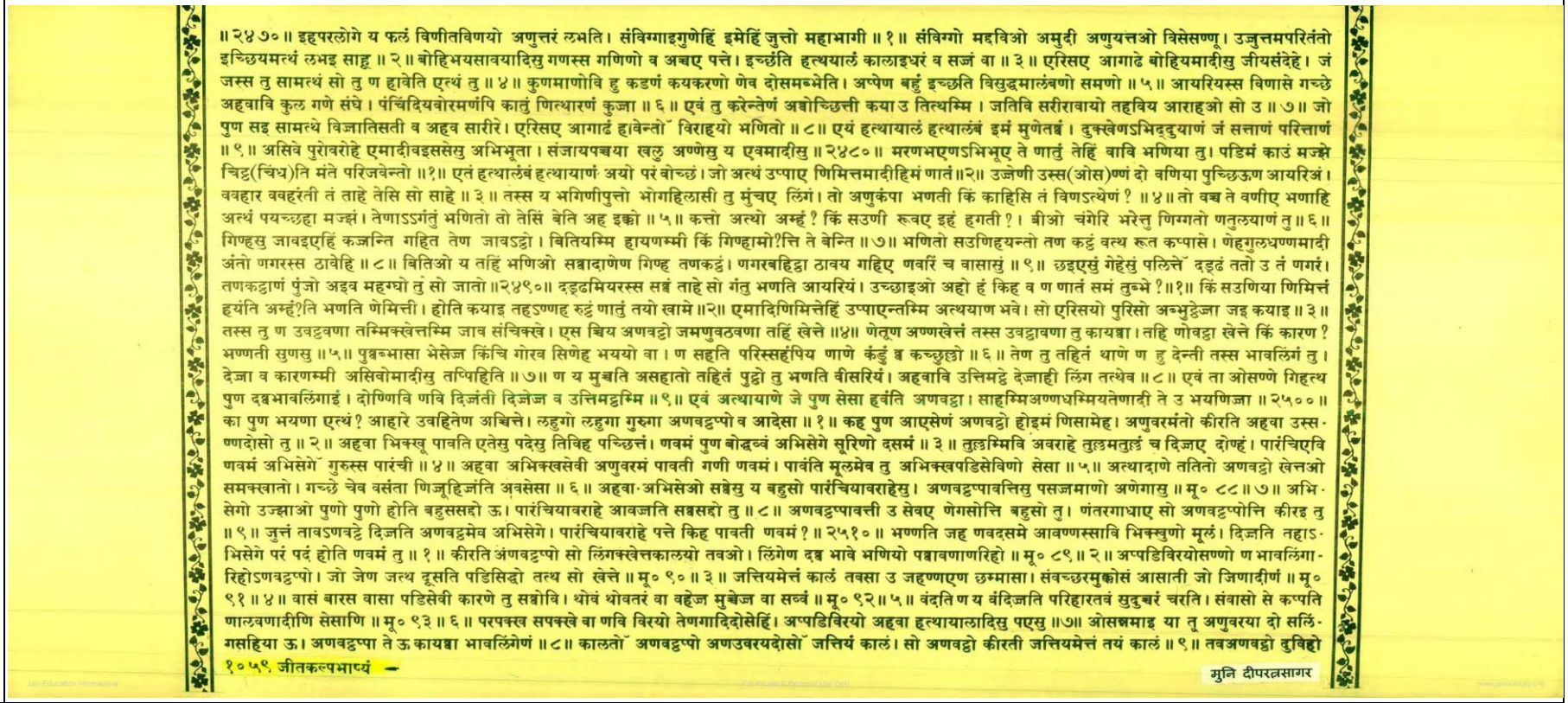

॥२४७०॥ इहपरलोगे य फलं विणीतविणयो अणुत्तरं लभति। संविग्गाइगुणेहिं इमेहिं जुत्तो महाभागी ॥१॥ संविग्गो मद्दविओ अमुदी अणुयत्तओ विसेसण्णू। उज्जुत्तमपरितंतो इच्छियमत्थं लभइ साहू ॥२॥ बोहिभयसावयादिसु गणस्स गणिणो व अच्चए पत्ते। इच्छंति हत्थयालं कालाइधरं व सज्जं वा ॥३॥ एरिसए आगाढे बोहियमादीसु जीयसंदेहे। जं जस्स तु सामत्थं सो तु ण हावेति एत्थं तु ॥४॥ कुणमाणोवि हु कडणं कयकरणो णेव दोसमब्भेति। अप्पेण बहुं इच्छति विसुद्धमालंबणो समणो ॥५॥ आयरियस्स विणासे गच्छे अहवावि कुल गणे संघे। पंचिंदियवोरमणंपि कातुं णित्थारणं कुज्जा ॥६॥ एवं तु करेन्तेणं अवोच्छित्ती कया उ तित्थम्मि। जतिवि सरीरावायो तहवियु आराहओ सो उ ॥७॥ जो पुण सइ सामत्थे विज्जातिसती व अहव सारीरे। एरिसए आगाढं हावेन्तो विराहयो भणितो ॥८॥ एयं हत्थायालं हत्थालंबं इमं मुणेतव्वं। दुक्खेणऽभिद्दुयाणं जं सत्ताणं परित्ताणं ॥९॥ असिवे पुरोवरोहे एमादीवइससेसु अभिभूता। संजायपच्चया खलु अण्णेसु य एवमादीसु ॥२४८०॥ मरणभएणऽभिभूए ते णातुं तेहिं वावि भणिया तु। पडिमं काउं मज्झे चिट्ठ(चिंध)ति मंते परिजवेन्तो ॥१॥ एतं हत्थालंबं हत्थायाणं अयो परं वोच्छं। जो अत्थं उप्पाए णिमित्तमादीहिमं णातं॥२॥ उज्जेणी उस्स(ओस)ण्णं दो वणिया पुच्छिऊण आयरिअं। ववहार ववहरंती तं ताहे तेसिं सो साहे ॥३॥ तस्स य भगिणीपुत्तो भोगहिलासी तु मुंचए लिंगं। तो अणुकंपा भणती किं काहिसि तं विणऽत्थेणं? ॥४॥ तो वच्च ते वणीए भणाहि अत्थं पयच्छहा मज्झं। तेणाऽऽगंतुं भणितो तो तेसिं वेति अह इक्को ॥५॥ कत्तो अत्थो अम्हं? किं सउणी रूवए इहं हगती?। बीओ चंगेरि भरेत्तु णिग्गतो णतुलयाणं तु ॥६॥ गिण्हसु जावइएहिं कज्जन्ति गहित तेण जावऽट्ठो। बितियम्मि हायणम्मी किं गिण्हामो?त्ति ते बेन्ति ॥७॥ भणितो सउणिहयन्तो तण कट्ठं वत्थ रूत कप्पासे। णेहगुलधण्णमादी अंतो णगरस्स ठावेहि ॥८॥ बितिओ य तहिं भणिओ सव्वादाणेण गिण्ह तणकट्ठं। णगरबहिट्ठा ठावय गहिए णवरिं च वासासुं ॥९॥ छइएसुं गेहेसुं पलित्ते दड्ढं ततो उ तं णगरं। तणकट्ठाणं पुंजो अइव महग्घो तुं सो जातो॥२४९०॥ दड्ढमियरस्स सव्वं ताहे सो गंतु भणति आयरियं। उच्छाइओ अहो हं किह व ण णातं समं तुब्भे?॥१॥ किं सउणिया णिमित्तं हयंति अम्हं?ति भणति णेमित्ती। होति कयाइ तहऽण्णह रुट्ठं णातुं तयो खामे ॥२॥ एमादिणिमित्तेहिं उप्पाएन्तम्मि अत्थयाण भवे। सो एरिसयो पुरिसो अब्भुट्ठेज्जा जइ कयाइ ॥३॥ तस्स तु ण उवट्ठवणा तम्मिक्खेत्तम्मि जाव संचिक्खे। एस चिय अणवट्ठो जमणुवठवणा तहिं खेत्ते ॥४॥ णेतूण अण्णखेत्तं तस्स उवट्ठावणा तु कायव्वा। तहि णोवट्ठा खेत्ते किं कारण? भण्णती सुणसु ॥५॥ पुव्वब्भासा भेसेज्ज किंचि गोरव सिणेह भययो वा। ण सहति परिस्सहंपिय णाणे कंडुं व कच्छुल्लो ॥६॥ तेण तु तहितं थाणं ण हु देन्ती तस्स भावलिंगं तु। देज्जा व कारणम्मी असिवोमादीसु तप्पिहिति ॥७॥ ण य मुचति असहातो तहितं पुट्ठो तु भणति वीसरियं। अहवावि उत्तिमट्ठे देज्जाही लिंग तत्थेव ॥८॥ एवं ता ओसण्णे गिहत्थ पुण दव्वभावलिंगाइं। दोण्णिवि णवि दिज्जंती दिज्जेज्ज व उत्तिमट्ठम्मि ॥९॥ एवं अत्थायाणे जे पुण सेसा हवंति अणवट्ठा। साहम्मिअण्णधम्मियतेणादी ते उ भयणिज्जा ॥२५००॥ का पुण भयणा एत्थं? आहारे उवहितेण अचित्ते। लहुगो लहुगा गुरुगा अणवट्ठप्पो व आदेसा ॥१॥ कह पुण आएसेणं अणवट्ठो होइमं णिसामेह। अणुवरमंतो कीरति अहवा उस्स-ण्णदोसो तु ॥२॥ अहवा भिक्खू पावति एतेसु पदेसु तिविह पच्चित्तं। णवमं पुण बोद्धव्वं अभिसेगे सूरिणो दसमं ॥३॥ तुल्लम्मिवि अवराहे तुल्लमतुल्लं च दिज्जए दोण्हं। पारंचिएवि णवमं अभिसेगें गुरुस्स पारंची ॥४॥ अहवा अभिक्खसेवी अणुवरमं पावती गणी णवमं। पावंति मूलमेव तु अभिक्खपडिसेविणो सेसा ॥५॥ अत्थादाणे ततितो अणवट्ठो खेत्तओ समक्खातो। गच्छे चेव वसंता णिज्जूहिज्जंति अवसेसा ॥६॥ अहवा-अभिसेओ सव्वेसु य बहुसो पारंचियावराहेसु। अणवट्ठप्पावत्तिसु पसज्जमाणो अणेगासु ॥मू० ८८॥७॥ अभि-सेगो उज्झाओ पुणो पुणो होति बहुससहो ऊ। पारंचियावराहे आवज्जति सव्वसु य बहुसो तु ॥८॥ अणवट्ठप्पावत्ती उ सेवए णेगसोत्ति बहुसो तु। णंतरगाधाए सो अणवट्ठप्पोत्ति कीरइ तु ॥९॥ जुत्तं तावऽणवट्ठे दिज्जति अणवट्ठमेव अभिसेगे। पारंचियावराहे पत्ते किह पावती णवमं?॥२५१०॥ भण्णति जह णवदसमे आवण्णस्सावि भिक्खुणो मूलं। दिज्जति तहाऽ-भिसेगे परं पदं होति णवमं तु ॥१॥ कीरति अणवट्ठप्पो सो लिंगक्खेत्तकालयो तवओ। लिंगेण दव्व भावे भणियो पव्वावणाणरिहो ॥मू० ८९॥२॥ अप्पडिविरयोसण्णो ण भावलिंगा-रिहोऽणवट्ठप्पो। जो जेण जत्थ दूसति पडिसिद्धो तत्थ सो खेत्ते ॥मू० ९०॥३॥ जत्तियमेत्तं कालं तवसा उ जहण्णएण छम्मासा। संवच्छरमुक्कोसं आसाती जो जिणादीणं ॥मू० ९१॥४॥ वासं बारस वासा पडिसेवी कारणे तु सव्वोवि। थोवं थोवतरं वा वहेज्ज मुच्चेज्ज वा सव्वं ॥मू० ९२॥५॥ वंदति ण य वंदिज्जति परिहारतवं सुदुच्चरं चरति। संवासो से कप्पति णाल्हवणादीणि सेसाणि ॥मू० ९३॥६॥ परपक्ख सपक्खे वा णवि विरयो तेणगादिदोसेहिं। अप्पडिविरयो अहवा हत्थायालादिसु पएसु ॥७॥ ओसन्नमाइ या तु अणुवरया दो सलिं-गसहिया ऊ। अणवट्ठप्पा ते ऊ कायव्वा भावलिंगेणं ॥८॥ कालतो अणवट्ठप्पो अणउवरयदोसो जत्तियं कालं। सो अणवट्ठो कीरती जत्तियमेत्तं तयं कालं ॥९॥ तवअणवट्ठो दुविहो

मुनि दीपरत्नसागर

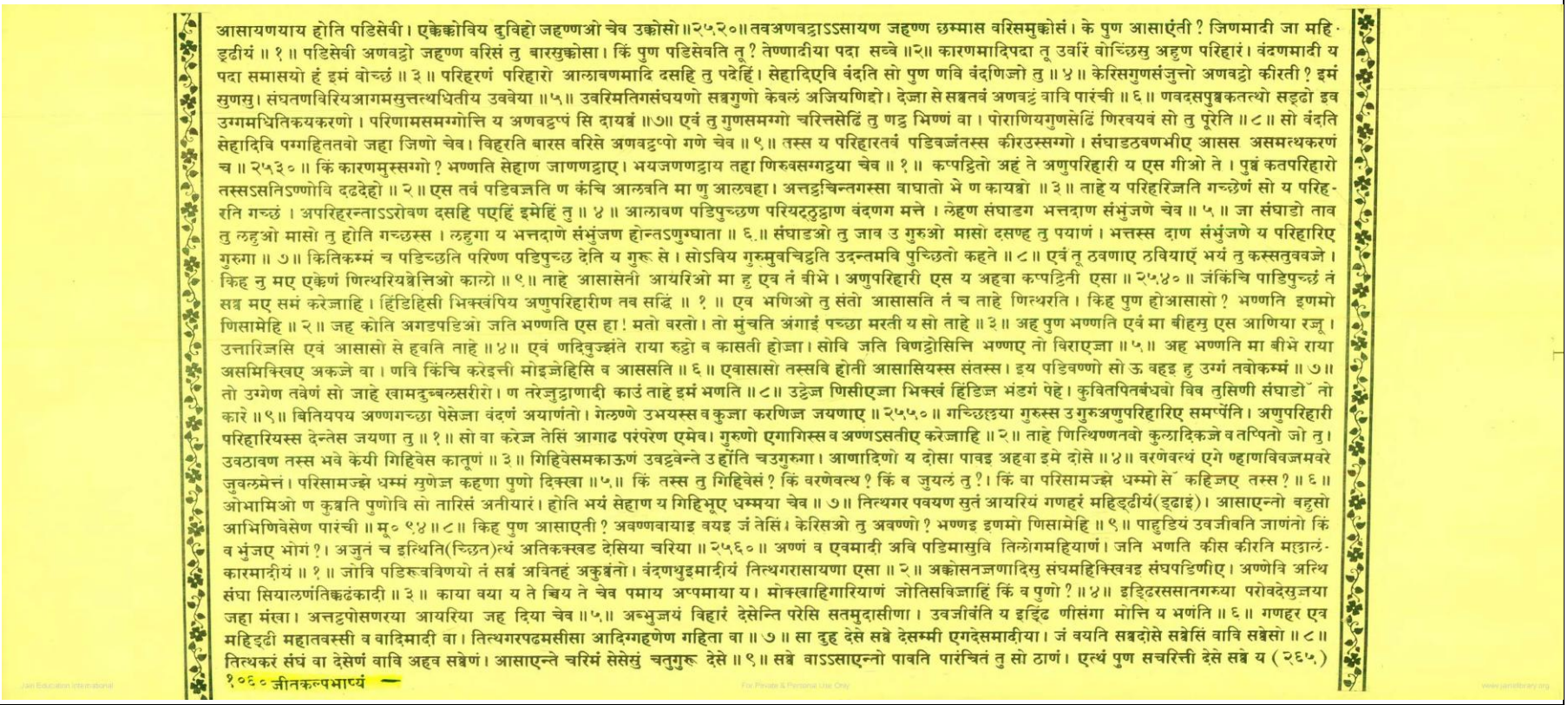

आसायणयाय होति पडिसेवी। एक्केक्कोविय दुविहो जहण्णओ चेव उक्कोसो॥२५२०॥तवअणवट्ठाऽऽसायण जहण्ण छम्मास वरिसमुक्कोसं। के पुण आसाएंती? जिणमादी जा महिड्ढीयं॥१॥ पडिसेवी अणवट्ठो जहण्ण वरिसं तु बारसुक्कोसा। किं पुण पडिसेवति तू? तेण्णादीया पदा सव्वे॥२॥ कारणमादिपदा तू उवरिं वोच्छिसु अहुण परिहारं। वंदणमादी य पदा समासयो हं इमं वोच्छं॥३॥ परिहरणं परिहारो आलावणमादि दसहि तु पदेहिं। सेहादिएवि वंदति सो पुण णवि वंदणिज्जो तु॥४॥ केरिसगुणसंजुत्तो अणवट्ठो कीरती? इमं सुणसु। संघतणविरियआगमसुत्तत्थधितीय उववेया॥५॥ उवरिमतिगसंघयणो सव्वगुणो केवलं अजियणिद्दो। देज्जा से सव्वतवं अणवट्ठं वावि पारंची॥६॥ णवदसपुव्वकतत्थो सड्ढो इव उग्गमधितिकयकरणो। परिणामसमग्गोत्ति य अणवट्ठप्पं सि दायव्वं॥७॥ एवं तु गुणसमग्गो चरित्तसेढिं तु णट्ठ भिण्णं वा। पोराणियगुणसेढिं णिरवयवं सो तु पूरेति॥८॥ सो वंदति सेहादिवि पग्गहिततवो जहा जिणो चेव। विहरति बारस वरिसे अणवट्ठप्पो गणे चेव॥९॥ तस्स य परिहारतवं पडिवज्जंतस्स कीरउस्सग्गो। संघाडठवणभीए आसस असमत्थकरणं च॥२५३०॥ किं कारणमुस्सग्गो? भण्णति सेहाण जाणणट्ठाए। भयजणणट्ठाय तहा णिरुवसग्गट्ठया चेव॥१॥ कप्पट्ठितो अहं ते अणुपरिहारी य एस गीओ ते। पुव्वं कतपरिहारो तस्सऽसतिऽण्णोवि दढदेहो॥२॥ एस तवं पडिवज्जति ण कंचि आलवति मा णु आलवहा। अत्तट्ठचिन्तगस्सा वाघातो भे ण कायव्वो॥३॥ ताहे य परिहरिज्जति गच्छेणं सो य परिहरति गच्छं। अपरिहरन्ताऽऽरोवण दसहि पएहिं इमेहिं तु॥४॥ आलावण पडिपुच्छण परियट्टुट्ठाण वंदणग मत्ते। लेहण संघाडग भत्तदाण संभुंजणे चेव॥५॥ जा संघाडो ताव तु लहुओ मासो तु होति गच्छस्स। लहुगा य भत्तदाणे संभुंजण होन्तऽणुग्घाता॥६॥ संघाडओ तु जाव उ गुरुओ मासो दसण्ह तु पयाणं। भत्तस्स दाण संभुंजणे य परिहारिए गुरुगा॥७॥ किंतिकम्मं च पडिच्छति परिण्ण पडिपुच्छ देति य गुरू से। सोऽवियि गुरुमुवचिट्ठति उदन्तमवि पुच्छितो कहते॥८॥ एवं तू ठवणाए ठवियाएँ भयं तु कस्सतुववज्जे। किह नु मए एक्केणं णित्थरियव्वेत्तिओ कालो॥९॥ ताहे आसासेती आयरिओ मा हु एव तं वीभे। अणुपरिहारी एस य अहवा कप्पट्ठिती एसा॥२५४०॥ जंकिंचि पाडिपुच्छं तं सव्व मए समं करेज्जाहि। हिंडिहिसी भिक्खंपिय अणुपरिहारीण तव सद्धिं॥१॥ एव भणिओ तु संतो आसासति तं च ताहे णित्थरति। किह पुण होआसासो? भण्णति इणमो णिसामेहि॥२॥ जह कोति अगडपडिओ जति भण्णति एस हा! मतो वरतो। तो मुंचति अंगाइं पच्छा मरती य सो ताहे॥३॥ अह पुण भण्णति एवं मा वीहसु एस आणिया रज्जू। उत्तारिज्जसि एवं आसासो से हवति ताहे॥४॥ एवं णदिवुज्झंते राया रुट्ठो व कासती होज्जा। सोवि जति विणट्ठोसित्ति भण्णए तो विराएज्जा॥५॥ अह भण्णति मा बीभे राया असमिक्खिए अकज्जे वा। णवि किंचि करेइत्ती मोइज्जेहिसि व आससति॥६॥ एवासासो तस्सवि होती आसासियस्स संतस्स। इय पडिवण्णो सो ऊ वहइ हु उग्गं तवोकम्मं॥७॥ तो उग्गेण तवेणं सो जाहे खामदुब्बलसरीरो। ण तरेज्जुट्ठाणादी काउं ताहे इमं भणति॥८॥ उट्ठेज्ज णिसीएज्जा भिक्खं हिंडिज्ज भंडगं पेहे। कुवितपितबंधवो विव तुसिणी संघाडो तो कारे॥९॥ वितियपय अण्णगच्छा पेसेज्जा वंदणं अयाणंतो। गेलण्णे उभयस्स व कुज्जा करणिज्ज जयणाए॥२५५०॥ गच्छिल्लया गुरुस्स उ गुरुअणुपरिहारिए समप्पेंति। अणुपरिहारी परिहारियस्स देन्तेस जयणा तु॥१॥ सो वा करेज्ज तेसिं आगाढ परंपरेण एमेव। गुरुणो एगागिस्स व अण्णऽसतीए करेज्जाहि॥२॥ ताहे णित्थिण्णतवो कुलादिकज्जे व तप्पितो जो तु। उवठावण तस्स भवे केयी गिहिवेस कातुणं॥३॥ गिहिवेसमकाऊणं उवट्ठवेन्ते उ होंति चउगुरुगा। आणादिणो य दोसा पावइ अहवा इमे दोसे॥४॥ वरणेवत्थं एगे ण्हाणविवज्जमवरे जुवलमेत्तं। परिसामज्झे धम्मं सुणेज्ज कहणा पुणो दिक्खा॥५॥ किं तस्स तु गिहिवेसं? किं वरणेवत्थ? किं व जुयलं तु?। किं वा परिसामज्झे धम्मो से कहिज्जए तस्स?॥६॥ ओभामिओ ण कुव्वति पुणोवि सो तारिसं अतीयारं। होति भयं सेहाण य गिहिभूए धम्मया चेव॥७॥ तित्थगर पवयण सुतं आयरियं गणहरं महिड्ढीयं(इड्ढाइ)। आसाएन्तो बहुसो आभिणिवेसेण पारंची॥मू० ९४॥८॥ किह पुण आसाएती? अवण्णवायाइ वयइ जं तेसिं। केरिसओ तु अवण्णो? भण्णइ इणमो णिसामेहि॥९॥ पाहुडियं उवजीवति जाणंतो किं व भुंजए भोगं?। अजुतं च इत्थिति(च्छित)त्थं अतिकक्खड देसिया चरिया॥२५६०॥ अण्णं व एवमादी अवि पडिमासुवि तिल्लोगमहियाणं। जति भणति कीस कीरति मट्ठालंकारमादीयं॥१॥ जोवि पडिरूववियो तं सव्वं अवितहं अकुव्वंतो। वंदणथुइमादीयं तित्थगरासायणा एसा॥२॥ अक्कोसनज्जणादिसु संघमहिक्खिवइ संघपडिणीए। अण्णेवि अत्थि संघा सियालणंतिक्कढंकादी॥३॥ काया वया य ते चिय ते चेव पमाय अप्पमाया य। मोक्खाहिगारियाणं जोतिसविज्जाहिं किं व पुणो?॥४॥ इड्ढिरससातगरुया परोवदेसुज्जया जहा मंखा। अत्तट्ठपोसणरया आयरिया जह दिया चेव॥५॥ अब्भुज्जयं विहारं देसेन्ति परेसि सतमुदासीणा। उवजीवंति य इड्ढिं णीसंगा मोत्ति य भणंति॥६॥ गणहर एव महिड्ढी महातवस्सी व वादिमादी वा। तित्थगरपढमसीसा आदिग्गहणेण गहिता वा॥७॥ सा दुह देसे सव्वे देसम्मी एगदेसमादीया। जं वयति सव्वदोसे सव्वेसिं वावि सव्वेसं॥८॥ तित्थकरं संघं वा देसेणं वावि अहव सव्वेणं। आसाएन्ते चरिमं सेसेसुं चतुगुरू देसे॥९॥ सव्वे वाऽऽसाएन्तो पावति पारंचितं तु सो ठाणं। एत्थं पुण सचरित्ती देसे सव्वे य (२६५)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [९४]

दीप अनुक्रम [९४]

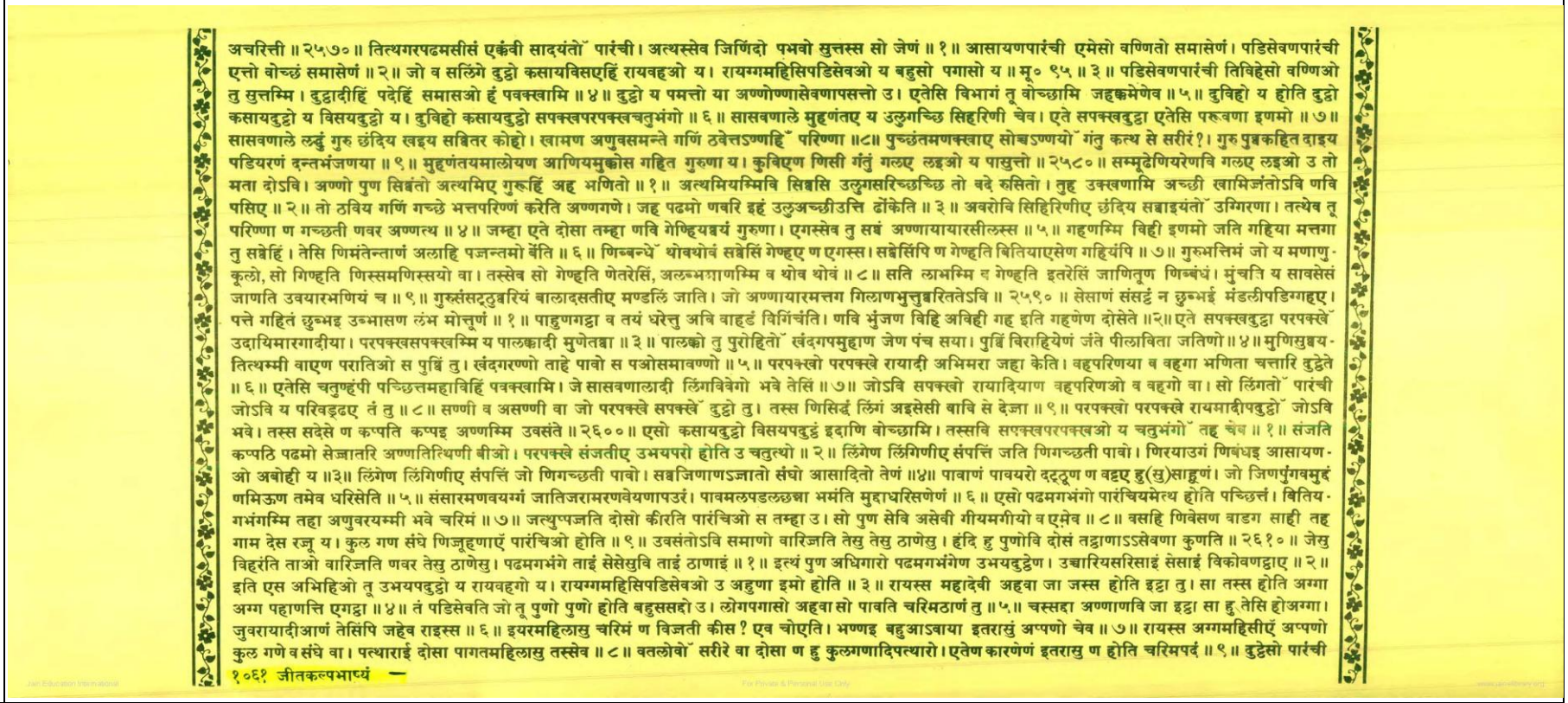

अचरित्ती ॥ २५७० ॥ तित्थगरपढमसीसं एक्कंवी सादयंतो पारंची। अत्थस्सेव जिणिंदो पभवो सुत्तस्स सो जेणं ॥ १ ॥ आसायणपारंची एमेसो वण्णितो समासेणं। पडिसेवणपारंची एत्तो वोच्छं समासेणं ॥ २ ॥ जो व सलिंगे दुट्ठो कसायविसएहिं रायवहओ य। रायग्गमहिसिपडिसेवओ य बहुसो पगासो य ॥ मू० ९५ ॥ ३ ॥ पडिसेवणपारंची तिविहेसो वण्णिओ तु सुत्तम्मि। दुट्ठादीहिं पदेहिं समासओ हं पवक्खामि ॥ ४ ॥ दुट्ठो य पमत्तो या अण्णोण्णासेवणापसत्तो उ। एतेसि विभागं तू वोच्छामि जहक्कमेणेव ॥ ५ ॥ दुविहो य होति दुट्ठो कसायदुट्ठो य विसयदुट्ठो य। दुविहो कसायदुट्ठो सपक्खपरपक्खचतुभंगो ॥ ६ ॥ सासवणाले मुहणंतए य उलुगच्छि सिहरिणी चेव। एते सपक्खदुट्ठा एतेसि परूवणा इणमो ॥ ७ ॥ सासवणाले लद्धुं गुरु छंदिय खइय सवितर कोहो। खामण अणुवसमन्ते गणिं ठवेत्तऽण्णहिं परिण्णा ॥ ८ ॥ पुच्छंतमणक्खाए सोचऽण्णयो गंतु कत्थ से सरीरं?। गुरु पुव्वकहित दाइय पडियरणं दन्तभंजणया ॥ ९ ॥ मुहणंतयमालोयण आणियमुक्कोस गहित गुरुणा य। कुविएण गिसी गंतुं गलए लइओ य पासुत्तो ॥ २५८० ॥ सम्मूढेणियरेणवि गलए लइओ उ तो मता दोऽवि। अण्णो पुण सिद्धंतो अत्थमिए गुरूहिं अह भणितो ॥ १ ॥ अत्थमियम्मिवि सिद्धसि उलुगसरिच्छच्छि तो वदे रुसितो। तुह उक्खणामि अच्छी खामिज्जंतोऽवि णवि पसिए ॥ २ ॥ तो ठविय गणिं गच्छे भत्तपरिण्णं करेति अण्णगणे। जह पढमो णवरि इहं उलुअच्छीउत्ति ढोंकेति ॥ ३ ॥ अवरोवि सिहिरिणीए छंदिय सद्धाइयंतो उग्गिरणा। तत्थेव तू परिण्णा ण गच्छती णवर अण्णत्थ ॥ ४ ॥ जम्हा एते दोसा तम्हा णवि गेण्हियव्वयं गुरुणा। एगस्सेव तु सव्वं अण्णायायारसीलस्स ॥ ५ ॥ गहणम्मि विही इणमो जति गहिया मत्तगा तु सव्वेहिं। तेसि णिमंतेन्ताणं अलाहि पज्जन्तमो वेंति ॥ ६ ॥ णिब्बन्धे थोवथोवं सव्वेसिं गेण्हए ण एगस्स। सव्वेसिंपि ण गेण्हति वितियाएसेण गहियंपि ॥ ७ ॥ गुरुभत्तिमं जो य मणाणुकूलो, सो गिण्हति णिस्समणिस्सयो वा। तस्सेव सो गेण्हति णेतरेसिं, अलब्भमाणम्मि व थोव थोवं ॥ ८ ॥ सति लाभम्मि व गेण्हति इतरेसिं जाणितुण णिब्बंधं। मुंचति य सावसेसं जाणति उवयारभणियं च ॥ ९ ॥ गुरुसंसट्ठदुवरियं बालादसतीए मण्डलिं जाति। जो अण्णायारमत्तग गिलाणभुत्तुव्वरितेतेऽवि ॥ २५९० ॥ सेसाणं संसट्ठं न छुब्भई मंडलीपडिग्गहए। पत्ते गहितं छुब्भइ उब्भासण लंभ मोत्तूणं ॥ १ ॥ पाहुणगट्ठा व तयं धरेत्तु अवि वाहडं विगिंचंति। णवि भुंजण विहि अविही गह इति गहणेण दोसेते ॥ २ ॥ एते सपक्खदुट्ठा परपक्खे उदायिमारगादीया। परपक्खसपक्खम्मि य पालक्कादी मुणेतव्वा ॥ ३ ॥ पालक्को तु पुरोहितो खंदगपमुहाण जेण पंच सया। पुव्विं विराहियेणं जंते पीलाविता जतिणो ॥ ४ ॥ मुणिसुव्वयतित्थम्मी वाएण परातिओ स पुव्विं तु। खंदगरण्णो ताहे पावो स पओसमावण्णो ॥ ५ ॥ परपक्खो परपक्खे रायादी अभिमरा जहा केति। वहपरिणया व वहगा भणिता चत्तारि दुट्ठेते ॥ ६ ॥ एतेसि चतुण्हंपी पच्छित्तमहाविहिं पवक्खामि। जे सासवणालादी लिंगविवेगो भवे तेसिं ॥ ७ ॥ जोऽवि सपक्खो रायादियाण वहपरिणओ व वहगो वा। सो लिंगतो पारंची जोऽवि य परिवड्ढए तं तु ॥ ८ ॥ सण्णी व असण्णी वा जो परपक्खे सपक्खे दुट्ठो तु। तस्स णिसिद्धं लिंगं अइसेसी वावि से देज्जा ॥ ९ ॥ परपक्खो परपक्खे रायमादीपदुट्ठो जोऽवि भवे। तस्स सदेसे ण कप्पति कप्पइ अण्णम्मि उवसंते ॥ २६०० ॥ एसो कसायदुट्ठो विसयपदुट्ठं इदाणि वोच्छामि। तस्सवि सपक्खपरपक्खओ य चतुभंगो तह चेव ॥ १ ॥ संजति कप्पठि पढमो सेज्जातरि अण्णतित्थिणी बीओ। परपक्खे संजतीए उभयपरो होति उ चतुत्थो ॥ २ ॥ लिंगेण लिंगिणीए संपत्तिं जति णिगच्छती पावो। णिरयाउगं णिबंधइ आसायणओ अबोही य ॥ ३ ॥ लिंगेण लिंगिणीए संपत्तिं जो णिगच्छती पावो। सव्वजिणाणऽज्जातो संघो आसादितो तेणं ॥ ४ ॥ पावाणं पावयरो दट्ठूण ण वट्टए हु(सु)साहूणं। जो जिणपुंगवमुद्दं णमिऊण तमेव धरिसेति ॥ ५ ॥ संसारमणवयग्गं जातिजरामरणवेयणापउरं। पावमलपडलछन्ना भमंति मुद्दाधरिसणेणं ॥ ६ ॥ एसो पढमगभंगो पारंचियमेत्थ होति पच्छित्तं। बितियगभंगम्मि तहा अणुवरयम्मी भवे चरिमं ॥ ७ ॥ जत्थुप्पज्जति दोसो कीरति पारंचिओ स तम्हा उ। सो पुण सेवि असेवी गीयमगीयो व एमेव ॥ ८ ॥ वसहि णिवेसण वाडग साही तह गाम देस रज्जू य। कुल गण संघे णिज्जूहणाएँ पारंचिओ होति ॥ ९ ॥ उवसंतोऽवि समाणो वारिज्जति तेसु तेसु ठाणेसु। हंदि हु पुणोवि दोसं तट्ठाणाऽऽसेवणा कुणति ॥ २६१० ॥ जेसु विहरंति ताओ वारिज्जति णवर तेसु ठाणेसु। पढमगभंगे ताइं सेसेसुवि ताइं ठाणाइं ॥ १ ॥ इत्थं पुण अधिगारो पढमगभंगेण उभयदुट्ठेण। उच्चारियसरिसाइं सेसाइं विकोवणट्ठाए ॥ २ ॥ इति एस अभिहिओ तू उभयपदुट्ठो य रायवहगो य। रायग्गमहिसिपडिसेवओ उ अहुणा इमो होति ॥ ३ ॥ रायस्स महादेवी अहवा जा जस्स होति इट्ठा तु। सा तस्स होति अग्गा अग्ग पहाणत्ति एगट्ठा ॥ ४ ॥ तं पडिसेवति जो तू पुणो पुणो होति बहुससद्दो उ। लोगपगासो अहवा सो पावति चरिमठाणं तु ॥ ५ ॥ चस्सद्दा अण्णाणवि जा इट्ठा सा हु तेसि होअग्गा। जुवरायादीआणं तेसिंपि जहेव राइस्स ॥ ६ ॥ इयरमहिलासु चरिमं ण विज्जती कीस? एव चोएति। भण्णइ बहुआऽवाया इतरासुं अप्पणो चेव ॥ ७ ॥ रायस्स अग्गमहिसीएँ अप्पणो कुल गणे व संघे वा। पत्थाराई दोसा पागतमहिलासु तस्सेव ॥ ८ ॥ वतलोवो सरीरे वा दोसा ण हु कुलगणादिपत्थारो। एतेण कारणेणं इतरासु ण होति चरिमपदं ॥ ९ ॥ दुट्ठेसो पारंची

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [९५]

दीप अनुक्रम [९५]

भणितो अहुणा पमत्त वोच्छामि। सो कलुसविकहाविकडे इंदिय णिद्दा य पंचविहे॥२६२०॥ कोहाति चउह कलुसा विकहा पुण इत्थिमादिया चउहा। पुव्वब्भासा वियडं इंदिय सो-यादिए पणगं ॥ १ ॥ पोग्गल मोदग फरुसग दंते वडसालभंजणे चेव। थीणद्धीआहरणा वोच्छामि विभागमेतेसिं ॥ २ ॥ थीणद्धिमहादोसा अण्णोण्णासेवणापसत्तीय। चरिमट्ठाणाव-त्तिसु बहुसो य पसज्जए जो उ ॥ मू० ९६ ॥३॥ जह उदअम्मि घए वा थीणम्मी णोवलब्भए किंचि। इद्धं चित्तं भण्णति तं थीणं तेण थीणद्धी ॥ ४॥ पिसितासि पुव्वमहियं विगिंचियं दिस्स तत्थ णिसि गंतुं। अण्णं हंतुं खायति उवस्सतं सेसयं णेति ॥५॥ मोदगभत्तमलद्धुं भंतु कवाडे घरस्स णिसि खाइ। भाणं च भरेतूणं आगओ आवासए वियडे ॥६॥ अवरोऽवि फरुसमुंडो मत्तियपिंडे व छिंदिउं सीसे। एगन्ते पच्चिन्धति पासुत्ताणं वियडणा य ॥७॥ अवरोवि धाडिओ मत्तहत्थिणा पुरकवाड भंतूणं। तस्सुक्खणित्तु दन्ते वसही बाहिं वियडणा तु ॥८॥ उब्भामग वडसालेण घट्टिओ कोइ पुव्व वणहत्थी। वडसालभंजणाऽऽणय उस्सग्गाऽऽलोयण पभाए ॥९॥ तस्सोदयकालम्मी हवती जं केसवस्स अद्धबलं। णवि देति अण-तिसेसी लिंगं अवि केवली होज्जा ॥ २६३० ॥ णातम्मि पण्णविज्जति मुय लिंगं णत्थि तुज्झ चारित्तं। देसवय दंसणं वा गिण्हसु इच्छंते रमणिज्जं ॥ १ ॥ अह णेच्छति तो संघो लिंगं हरई ण हरति सिं एगो। मा गच्छेज्ज पदोसं छड्डेन्तऽसत्तीएँ पासुत्तं ॥२॥ णिद्दपमत्तो एसो पारंची लिंगतो समक्खातो। कुणमाण अण्णमण्णं पारंचीयं अतो वोच्छं ॥३॥ करणं तु अण्णमण्णं समणाण ण कप्पती सुविहियाणं। किह करण अण्णमण्णं? भण्णति इणमो णिसामेहि ॥४॥ आसयपोसयसेवी केई पुरिसा दुवेदगा होन्ति। तेसिं लिंगविवेगो कातव्वो होति णियमेणं ॥५॥ चरिमं अंतं भण्णति तं पुण पारंचियंति णातव्वं। पारंचियावराहे पुणो पुणो सज्जए जो तु ॥६॥ थीणद्धिमादियाणं सोहिं वोच्छं पुणोवि सव्वेसिं। लिंगादीणं कमसो एत्थ इमा होंति गाहाओ ॥७॥ सो कीरति पारंची लिंगाओ खेत्त कालओ तवतो। संपागडपडिसेवी लिंगाओ थीणगिद्धी य ॥ मू० ९७ ॥८॥ वसहिणिवेसणवाडगसाहिणीओ य पुर-देसरज्जाओ। खेत्ताओ पारंची कुलगणसंघालयाओ वा ॥ मू० ९८ ॥९॥ जत्थुप्पण्णो दोसो उप्पज्जिस्सति व जत्थ णाऊणं। तत्तो तत्तो कीरति खेत्ताओ खेत्तपारंची ॥ मू० ९९ ॥ २६४० ॥ जत्तियमेत्तं कालं तवसा पारंचियस्स उ स एव। कालो दुविगप्पस्सवि अणवट्ठप्पस्स जोऽभिहितो ॥ मू० १०० ॥ १ ॥ आसातण पडिसेवण दुह अणवट्ठम्मि जो भवे कालो। पारंचिएवि सो चेव होति उक्कोसग जहण्णो ॥ २ ॥ पारंचिया उ एते तिण्णिवि सामण्णयो विणिद्दिट्ठा। एत्तो जो जारिसतो विसेसमेतेसि वोच्छामि ॥ ३ ॥ दुट्ठे य पमत्ते या अण्णो-ण्णासेवणापसत्ते य। एतेसिं तिण्हंपी विसेसमेत्तो पक्खामि ॥ ४ ॥ तहियं तु विसयदुट्ठो सपक्खपरपक्खतो व जो होज्जा। सो कीरति पारंची खेत्तेणं तू ण लिंगेणं ॥ ५ ॥ अणुवरमंतो कीरति सेसो णियमेण लिंगपारंची। खेत्तेण य लिंगेण य पारंची अभिहिता एते ॥ ६ ॥ किं एते चिय भेया पारंचीए उयाहु अण्णेऽवि ?। भण्णति नवपारंची अण्णोवि हु केरिसो स खलु ? ॥ ७ ॥ इंदियपमायदोसा जो तू अवराहमुत्तमं पत्तो। सब्भावसमाउट्टो जइ य गुणा से इमे होंति ॥ ८ ॥ वइरोसहसंघतणो धितीय जो वज्जकुड्डसामाणो। णवमस्स ततियवत्थुं सुत्त-ऽत्थेहिं च जोऽहीओ ॥ ९ ॥ खुड्डागसीहत्तवादीहिं भावितो जो य इंदियकसाए। णिग्घेत्तूण समत्थो पवयणसारे अभिगतत्थो ॥ २६५० ॥ णिज्जूहितस्स असुभो तिलतुसमेत्तोवि जस्स ण य भावो। णिज्जूहणाए अरिहो सेसे णिज्जूहणा णत्थि ॥ १ ॥ एयगुणसंपउत्ता पावति पारंचियं तु सो ठाणं। एयगुणविप्पमुक्के तारिसयम्मी भवे मूलं ॥ २ ॥ पारंचियं तु पावति आसा-एन्तो तहेव पडिसेवी। एक्केको होति दुहा जहण्ण उक्कोसओ चेव ॥ ३ ॥ आसायणो जहण्णो छम्मासुक्कोस बारस तु मासा। वासं बारस वासा पडिसेवी कारणे भतिओ ॥ ४ ॥ जति होज्जा आयरिओ तो गणणिक्खेवभित्तरं कातुं। गंतूणं अण्णगणं दव्वादि सुभे विगडणा तू ॥ ५ ॥ एगागी खेत्तबहिं कुणति तवं सुविपुलं महासत्तो। अवलोयणमायरिओ पतिदिणमेगो कुणति तस्स ॥ मू० १०१ ॥ ६ ॥ ओलोयणं गवेसणमायरिओ कुणति णिच्चकालंपि। खेत्तबहिचिट्ठियस्सा इमेण विहिणा पवक्खामि ॥ ७ ॥ उभयम्मि दातूण स पाडिपुच्छं, वोढुं सरी-रस्स य वट्टमाणिं। आसासतित्ताण तवोकिलंतं, तमेव गच्छं पुणरेन्ति थेरा ॥ ८ ॥ असहू सुत्तं दाउं दोवि अदाउं व गच्छति पदेवि। संघाडो से भत्तं पाणं वा णातिमग्गेणं ॥ ९ ॥ पारं-चियस्स तहियं तं वहमाणस्स होज्ज गेलण्णं। ताहे से पडिकम्मं ताहे पयत्तेण कायव्वं ॥२६६०॥ आहरति भत्तपाणं उव्वत्तणमाइयंपि से कुणति। सतमेव गणाहिवई वेयावच्चं जहत्थामं ॥ १ ॥ जो उ उवेहं कुज्जा आयरिओ केणती पमाएणं। आरोवण तस्स भवे गिलाणसुत्तम्मि जा भणिया ॥ २ ॥ अह पुण ण तरेज्ज गुरू गंतुं गेलण्णमादिहिं तहियं। कालुण्हे दुब्बलो वा कुलादिकज्जेण वऽण्णेण ॥ ३ ॥ अभिसेयं तो पेसे अण्णं गीयं व जो तहिं जोग्गो। पुट्ठो व अपुट्ठो वा सोवि य दीवेति तं कज्जं ॥ ४ ॥ सो य समत्थो होज्जा संपाडेतुमिहं तस्स कज्जस्स। खीरादिलद्धिजुत्तो विज्जादिगअतिसएहिं च ॥ ५ ॥ जाणंता माहप्पं सतमेव गुरू वदंति तं जोगं। अत्थि मम एत्थ विसतो अजाणए ते व सो वेति ॥ ६ ॥ अच्छउ महाणुभावो जहासुहं गुणसयागरो संघो। गुरुयंपि इमं कज्जं मं पप्प भविस्सए लहुयं ॥ ७ ॥ अभिहाणहेतुकुसलो बहूसु अणिराइओ विदुसभासु। गंतूण रायभवणं भणाइमं रायदारिट्ठं ॥ ८ ॥ पडिहाररूवी !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/१], छेदसूत्र - [५/१] “जीतकल्प” मूलं एवं जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [१०१--१०३]

दीप अनुक्रम [१०१--१०३]

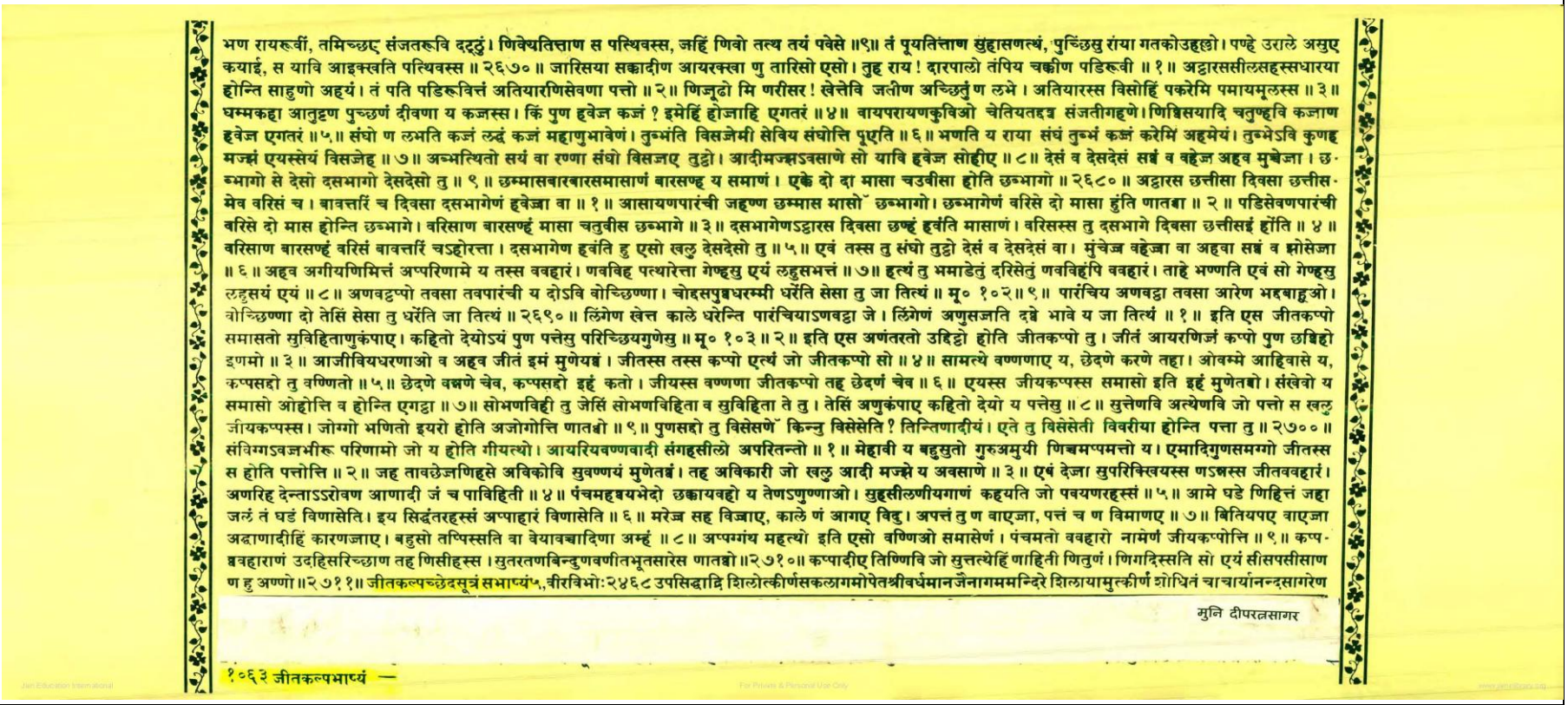

भण रायरूवीं, तमिच्छए संजतरूवि दट्ठुं। णिवेयतित्ताण स पत्थिवस्स, जहिं णिवो तत्थ तयं पवेसे ॥९॥ तं पूयतित्ताण सुहासणत्थं, पुच्छिसु रांया गतकोउहल्लो। पण्हे उराले असुए कयाई, स यावि आइक्खति पत्थिवस्स ॥ २६७० ॥ जारिसया सक्कादीण आयरक्खा णु तारिसो एसो। तुह राय ! दारपालो तंपिय चक्कीण पडिरूवी ॥ १ ॥ अट्ठारससीलसहस्सधारया होन्ति साहुणो अहयं। तं पति पडिरूवित्तं अतियारणिसेवणा पत्तो ॥ २ ॥ णिज्जूढो मि णरीसर ! खेत्तेवि जतीण अच्छितुं ण लभे। अतियारस्स विसोहिं पकरेमि पमायमूलस्स ॥ ३ ॥ धम्मकहा आतुट्टण पुच्छणं दीवणा य कज्जस्स। किं पुण हवेज्ज कज्जं ? इमेहिं होज्जाहि एगतरं ॥ ४ ॥ वायपरायणकुविओ चेतियतद्दव्व संजतीगहणे। णिव्विसयादि चतुण्हवि कज्जाण हवेज्ज एगतरं ॥ ५ ॥ संघो ण लभति कज्जं लद्धं कज्जं महाणुभावेणं। तुब्भंति विसज्जेमी सेविय संघोत्ति पूएति ॥ ६ ॥ भणति य राया संघं तुब्भं कज्जं करेमिं अहमेयं। तुब्भेऽवि कुणह मज्झं एयस्सेयं विसज्जेह ॥ ७ ॥ अब्भत्थितो सयं वा रण्णा संघो विसज्जए तुट्ठो। आदीमज्झऽवसाणे सो यावि हवेज्ज सोहीए ॥ ८ ॥ देसं व देसदेसं सव्वं व वहेज्ज अहव मुच्चेज्जा। छब्भागो से देसो दसभागो देसदेसो तु ॥ ९ ॥ छम्मासबारबारसमासाणं बारसण्ह य समाणं। एक्के दो दा मासा चउवीसा होति छब्भागो ॥ २६८० ॥ अट्ठारस छत्तीसा दिवसा छत्तीसमेव वरिसं च। बावत्तरिं च दिवसा दसभागेणं हवेज्जा वा ॥ १ ॥ आसायणपारंची जहण्ण छम्मास मासो छब्भागो। छब्भागेणं वरिसे दो मासा हुंति णातव्वा ॥ २ ॥ पडिसेवणपारंची वरिसे दो मास होन्ति छब्भागे। वरिसाण बारसण्हं मासा चतुवीस छब्भागे ॥ ३ ॥ दसभागेणऽट्ठारस दिवसा छण्हं हवंति मासाणं। वरिसस्स तु दसभागे दिवसा छत्तीसइं होंति ॥ ४ ॥ वरिसाण बारसण्हं वरिसं बावत्तरिं चऽहोरत्ता। दसभागेण हवंति हु एसो खलु देसदेसो तु ॥ ५ ॥ एवं तस्स तु संघो तुट्ठो देसं व देसदेसं वा। मुंचेज्ज वहेज्जा वा अहवा सव्वं व झोसेज्जा ॥ ६ ॥ अहव अगीयणिमित्तं अप्परिणामे य तस्स ववहारं। णवविह पत्थारेत्ता गेण्हसु एयं लहुसभत्तं ॥ ७ ॥ हत्थं तु भमाडेतुं दरिसेतुं णवविहंपि ववहारं। ताहे भण्णति एवं सो गेण्हसु लहुसयं एयं ॥ ८ ॥ अणवट्ठप्पो तवसा तवपारंची य दोऽवि वोच्छिण्णा। चोद्दसपुव्वधरम्मी धरेंति सेसा तु जा तित्थं ॥ मू० १०२ ॥ ९ ॥ पारंचिय अणवट्ठा तवसा आरेण भद्दबाहुओ। वोच्छिण्णा दो तेसिं सेसा तु धरेंति जा तित्थं ॥ २६९० ॥ लिंगेण खेत्त काले धरेन्ति पारंचियाऽणवट्ठा जे। लिंगेणं अणुसज्जति दव्वे भावे य जा तित्थं ॥ १ ॥ इति एस जीतकप्पो समासतो सुविहिताणुकंपाए। कहितो देयोऽयं पुण पत्तेसु परिच्छियगुणेसु ॥ मू० १०३ ॥ २ ॥ इति एस अणंतरतो उद्दिट्ठो होति जीतकप्पो तु। जीतं आयरणिज्जं कप्पो पुण छद्दिहो इणमो ॥ ३ ॥ आजीवियधरणाओ व अहव जीतं इमं मुणेयव्वं। जीतस्स तस्स कप्पो एत्थं जो जीतकप्पो सो ॥ ४ ॥ सामत्थे वण्णणाए य, छेदणे करणे तहा। ओवम्मे आहिवासे य, कप्पसद्दो तु वण्णितो ॥ ५ ॥ छेदणे वज्जणे चेव, कप्पसद्दो इहं कतो। जीयस्स वण्णणा जीतकप्पो तह छेदणं चेव ॥ ६ ॥ एयस्स जीयकप्पस्स समासो इति इहं मुणेतव्वो। संखेवो य समासो ओहोत्ति व होन्ति एगट्ठा ॥ ७ ॥ सोभणविही तु जेसिं सोभणविहिता व सुविहिता ते तु। तेसिं अणुकंपाए कहितो देयो य पत्तेसु ॥ ८ ॥ सुत्तेणवि अत्थेणवि जो पत्तो स खलु जीयकप्पस्स। जोग्गो भणितो इयरो होति अजोगोत्ति णातव्वो ॥ ९ ॥ पुणसद्दो तु विसेसणे किन्नु विसेसेति ? तिन्तिणादीयं। एते तु विसेसेती विवरीया होन्ति पत्ता तु ॥ २७०० ॥ संविग्गऽवज्जभीरू परिणामो जो य होति गीयत्थो। आयरियवण्णवादी संगहसीलो अपरितन्तो ॥ १ ॥ मेहावी य बहुसुतो गुरुअमुयी णिच्चमप्पमत्तो य। एमादिगुणसमग्गो जीतस्स स होति पत्तोत्ति ॥ २ ॥ जह तावछेज्जणिहसे अविकोविं सुवण्णयं मुणेतव्वं। तह अविकारी जो खलु आदी मज्झे य अवसाणे ॥ ३ ॥ एवं देज्जा सुपरिक्खियस्स णऽन्नस्स जीतववहारं। अणरिह देन्ताऽऽरोवण आणादी जं च पाविहिती ॥ ४ ॥ पंचमहव्वयभेदो छक्कायवहो य तेणऽण्णाओ। सुहसीलणीयगाणं कहयति जो पवयणरहस्सं ॥ ५ ॥ आमे घडे णिहित्तं जहा जलं तं घडं विणासेति। इय सिद्धंतरहस्सं अप्पाहारं विणासेति ॥ ६ ॥ मरेज्ज सह विज्जाए, काले णं आगए विदु। अपत्तं तु ण वाएज्जा, पत्तं च ण विमाणए ॥ ७ ॥ बितियपए वाएज्जा अद्धाणादीहिं कारणज्जाए। बहुसो तप्पिस्सति वा वेयावच्चादिणा अम्हं ॥ ८ ॥ अप्पग्गंथ महत्थो इति एसो वण्णिओ समासेणं। पंचमतो ववहारो नामेणं जीयकप्पोत्ति ॥ ९ ॥ कप्पव्ववहाराणं उदहिसरिच्छाण तह णिसीहस्स। सुतरतणबिन्दुणवणीतभूतसारेस णातव्वो ॥ २७१० ॥ कप्पादीए तिण्णिवि जो सुत्तत्थेहिं णाहिती णितुणं। णिगदिस्सति सो एयं सीसपसीसाण ण हु अण्णो ॥ २७११ ॥ जीतकल्पच्छेदसूत्रं सभाष्यं ५, वीरविभोः २४६८ उपसिद्धाद्रि शिलोत्कीर्णसकलागमोपेतश्रीवर्धमानजैनागममन्दिरे शिलायामुत्कीर्णं शोधितं चाचार्यानन्दसागरेण

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भाग 27	जीतकल्प-छेदसूत्र [५/१] ‘मूलं’ परिसमाप्त: मूल संशोधकः सम्पादकश्च पूज्य आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब किंचित् वैशिष्ट्य समर्पितेन सह पुनः संकलनकर्ता मुनि दीपरत्नसागरजी [M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

"पंचकल्प" भाष्यं

[संघदासगणिक्षमाश्रमण-विरचितं भाष्यं] व्याख्या + महत् भाष्यं + लघुभाष्यं

[आद्य संपादकश्री]

पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म॰ सा॰

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D.,श्रुतमहर्षि)

28/07/2017, शुक्रवार, २०७३ श्रावण शुक्ल ५ 'सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि' श्रेणि भाग-२७

“पंचकल्प” – छेदसूत्र-५/२ (भाष्य)

---------- भाष्यं [०००१] ----------

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [०००१]

दीप अनुक्रम [०००१]

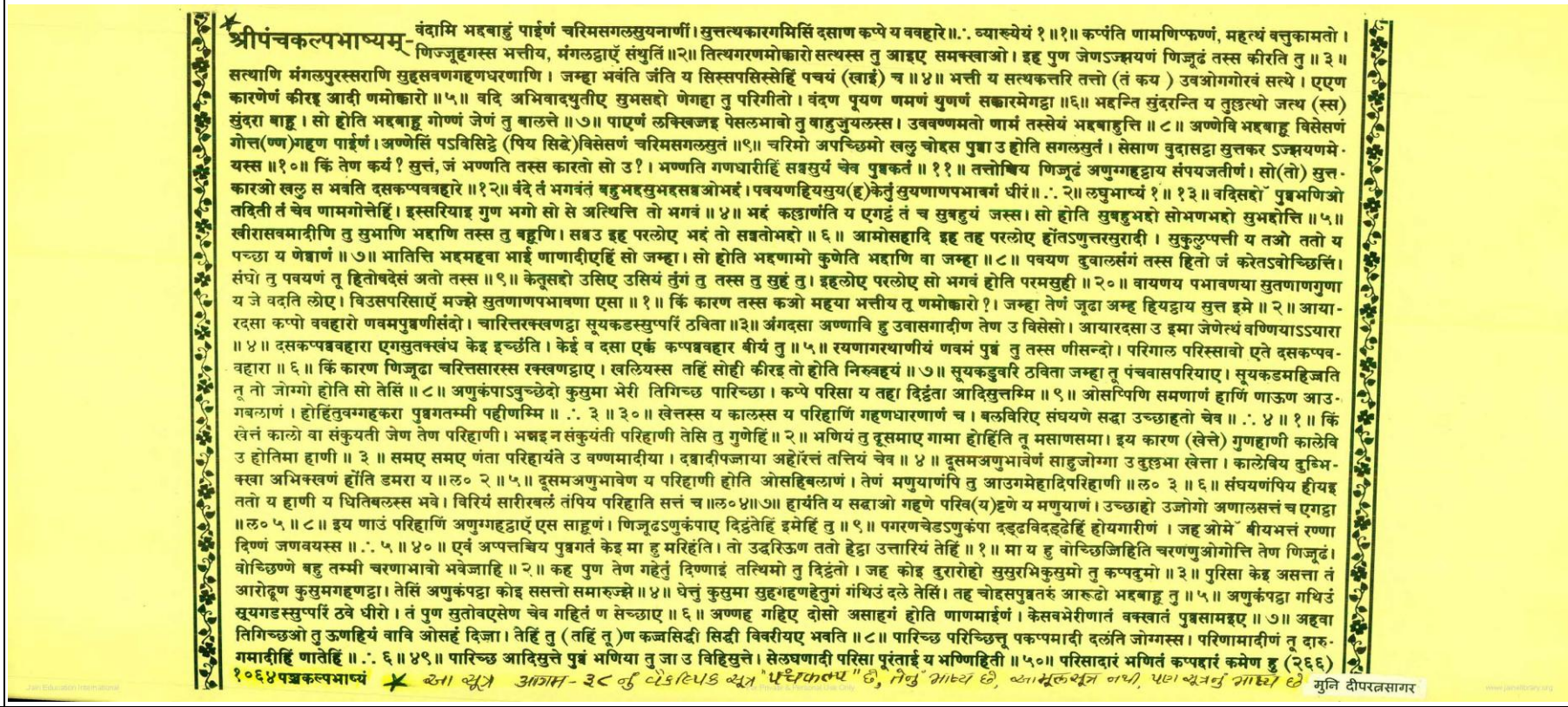

श्रीपंचकल्पभाष्यम्- वंदामि भद्दबाहुं पाईणं चरिमसगलसुयनाणीं। सुत्तत्थकारगमिसिं दसाण कप्पे य ववहारे॥.'. व्याख्येयं १॥१॥ कप्पंति णामणिप्फण्णं, महत्थं वत्तुकामतो। णिज्जूहगस्स भत्तीय, मंगलट्ठाएँ संथुतिं॥२॥ तित्थगरणमोक्कारो सत्थस्स तु आइए समक्खाओ। इह पुण जेणऽज्झयणं णिज्जूढं तस्स कीरति तु॥३॥ सत्थाणि मंगलपुरस्सराणि सुहसवणगहणधरणाणि। जम्हा भवंति जंति य सिस्सपसिस्सेहिं पचयं (खाई) च॥४॥ भत्ती य सत्थकत्तरि तत्तो (तं कय) उवओगगोरवं सत्थे। एएण कारणेणं कीरइ आदी णमोक्कारो॥५॥ वदि अभिवादथुतीए सुभसद्दो णेगहा तु परिगीतो। वंदण पूयण णमणं थुणणं सक्कारमेगट्ठा॥६॥ भद्दन्ति सुंदरन्ति य तुल्लत्थो जत्थ (स्स) सुंदरा बाहू। सो होति भद्दबाहू गोण्णं जेणं तु बालत्ते॥७॥ पाएणं लक्खिजइ पेसलभावो तु बाहुजुयलस्स। उववण्णमतो णामं तस्सेयं भद्दबाहुत्ति॥८॥ अण्णेवि भद्दबाहू विसेसणं गोत्त(ण्ण)गहण पाईणं। अण्णेसिं पऽविसिट्ठे (पिय सिद्धे)विसेसणं चरिमसगलसुतं॥९॥ चरिमो अपच्छिमो खलु चोद्दस पुव्वा उ होति सगलसुतं। सेसाण वुदासट्ठा सुत्तकर ऽज्झयणमे-यस्स॥१०॥ किं तेण कयं? सुत्तं, जं भण्णति तस्स कारतो सो उ?। भण्णति गणधारीहिं सव्वसुयं चेव पुव्वकतं॥११॥ तत्तोधिय णिज्जूढं अणुग्गहट्ठाय संपयजतीणं। सो(तो) सुत्त-कारओ खलु स भवति दसकप्पववहारे॥१२॥ वंदे तं भगवंतं बहुभद्दसुभद्दसव्वओभद्दं। पवयणहियसुय(ह)केतुं सुयणाणपभावगं धीरं॥.'. २॥ लघुभाष्यं १॥ १३॥ वदिसद्दो पुव्वभणिओ तदिती तं चेव णामगोत्तेहिं। इस्सरियाइ गुण भगो सो से अत्थित्ति तो भगवं॥४॥ भद्दं कल्लाणंति य एगट्ठं तं च सुबहुयं जस्स। सो होति सुबहुभद्दो सोभणभद्दो सुभद्दोत्ति॥५॥ खीरासवमादीणि तु सुभाणि भद्दाणि तस्स तु बहूणि। सव्वउ इह परलोए भद्दं तो सव्वतोभद्दो॥६॥ आमोसहादि इह तह परलोए होंतऽणुत्तरसुरादी। सुकुलुप्पत्ती य तओ ततो य पच्छा य णेव्वाणं॥७॥ भातित्ति भद्दमहवा भाई णाणादीएहिं सो जम्हा। सो होति भद्दणामो कुणेति भद्दाणि वा जम्हा॥८॥ पवयण दुवालसंगं तस्स हितो जं करेतऽवोच्छित्तिं। संघो तु पवयणं तू हितोवदेसं अतो तस्स॥९॥ केतुसद्दो उसिए उसियं तुंगं तु तस्स तु सुहं तु। इहलोए परलोए सो भगवं होति परमसुही॥२०॥ वायणय पभावणया सुतणाणगुणा य जे वदति लोए। विउसपरिसाएँ मज्झे सुतणाणपभावणा एसा॥१॥ किं कारण तस्स कओ महया भत्तीय तू णमोक्कारो?। जम्हा तेणं जूढा अम्ह हियट्ठाय सुत्त इमे॥२॥ आया-रदसा कप्पो ववहारो णवमपुव्वणीसंदो। चारित्तरक्खणट्ठा सूयकडस्सुप्परिं ठविता॥३॥ अंगदसा अण्णावि हु उवासगादीण तेण उ विसेसो। आयारदसा उ इमा जेणेत्थं वण्णियाऽऽयारा॥४॥ दसकप्पव्ववहारा एगसुतक्खंध केइ इच्छंति। केई व दसा एकं कप्पववहार बीयं तु॥५॥ रयणागरथाणीयं णवमं पुव्वं तु तस्स णीसन्दो। परिगाल परिस्सावो एते दसकप्पव-वहारा॥६॥ किं कारण णिजूढा चरित्तसारस्स रक्खणट्ठाए। खलियस्स तहिं सोही कीरइ तो होति निरुवहयं॥७॥ सूयकडुवरि ठविता जम्हा तू पंचवासपरियाए। सूयकडमहिज्जति तू तो जोग्गो होति सो तेसिं॥८॥ अणुकंपाऽवुच्छेदो कुसुमा भेरी तिगिच्छ पारिच्छा। कप्पे परिसा य तहा दिट्ठंता आदिसुत्तम्मि॥९॥ ओसप्पिणि समणाणं हाणिं णाऊण आउ-गबलाणं। होहिंतुवग्गहकरा पुव्वगतम्मी पहीणम्मि॥.'. ३॥ ३०॥ खेत्तस्स य कालस्स य परिहाणिं गहणधारणाणं च। बलविरिए संघयणे सद्धा उच्छाहतो चेव॥.'. ४॥ १॥ किं खेत्तं कालो वा संकुयती जेण तेण परिहाणी। भन्नइ न संकुयंती परिहाणी तेसि तु गुणेहिं॥२॥ भणियं तु दूसमाए गामा होहिंति तू मसाणसमा। इय कारण (खेत्ते) गुणहाणी कालेवि उ होतिमा हाणी॥३॥ समए समए णंता परिहायंते उ वण्णमादीया। दव्वादीपज्जाया अहोरत्तं तत्तियं चेव॥४॥ दूसमअणुभावेणं साहुजोग्गा उ दुल्लभा खेत्ता। कालेवि य दुब्भि-क्खा अभिक्खणं होंति डमरा य॥ल० २॥५॥ दूसमअणुभावेण य परिहाणी होति ओसहिबलाणं। तेणं मणुयाणंपि तु आउगमेहादिपरिहाणी॥ल० ३॥६॥ संघयणंपिय हीयइ ततो य हाणी य धितिबलस्स भवे। विरियं सारीरबलं तंपिय परिहाति सत्तं च॥ल०४॥७॥ हायंति य सद्धाओ गहणे परिव(य)ट्टणे य मणुयाणं। उच्छाहो उज्जोगो अणालसत्तं च एगट्ठा॥ल०५॥८॥ इय णाउं परिहाणिं अणुग्गहट्ठाएँ एस साहूणं। णिजूढऽणुकंपाए दिट्ठंतेहिं इमेहिं तु॥९॥ पगरणचेडऽणुकंपा दड्ढविदड्ढेहिं होयगारीणं। जह ओमे बीयभत्तं रण्णा दिण्णं जणवयस्स॥.'. ५॥ ४०॥ एवं अप्पत्तिचिय पुव्वगतं केइ मा हु मरिहंति। तो उद्धरिऊण ततो हेट्ठा उत्तारियं तेहिं॥१॥ मा य हु वोच्छिजिहिति चरणणुओगोत्ति तेण णिजूढं। वोच्छिण्णे बहु तम्मी चरणाभावो भवेज्जाहि॥२॥ कह पुण तेण गहेतुं दिण्णाइं तत्थिमो तु दिट्ठंतो। जह कोइ दुरारोहो सुसुरभिकुसुमो तु कप्पदुमो॥३॥ पुरिसा केइ असत्ता तं आरोढूण कुसुमगहणट्ठा। तेसिं अणुकंपट्ठा कोइ ससत्तो समारुज्झे॥४॥ घेत्तुं कुसुमा सुहगहणहेतुगं गंथिउं दले तेसिं। तह चोद्दसपुव्वतरुं आरूढो भद्दबाहू तु॥५॥ अणुकंपट्ठा गथिउं सूयगडस्सुप्परिं ठवे धीरो। तं पुण सुतोवएसेण चेव गहितं ण सेच्छाए॥६॥ अण्णह गहिए दोसो असाहगं होति णाणमाईणं। केसवभेरीणातं वक्खातं पुव्वसामइए॥७॥ अहवा तिगिच्छओ तु ऊणहियं वावि ओसहं दिज्जा। तेहिं तु (तहिं तू)ण कज्जसिद्धी सिद्धी विवरीयए भवति॥८॥ पारिच्छ परिच्छित्तू पकप्पमादी दलंति जोग्गस्स। परिणामादीणं तू दारु-गमादीहिं णातेहिं॥.'. ६॥ ४९॥ पारिच्छ आदिसुत्ते पुव्वं भणिया तु जा उ विहिसुत्ते। सेलघणादी परिसा पूरंताई य भण्णिहिती॥५०॥ परिसादारं भणितं कप्पहारं कमेण हु (२६६)

१०६४पञ्चकल्पभाष्यं ✱ आ चूर्त आगम - ३८ नुं दोडलिपाक सूत्र "पंचकल्प" छे, तेनुं भाष्य छे, आ मूलसूत्र नथी, पण सूत्रनुं भाष्य छे मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [००५१] दीप अनुक्रम [००५१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

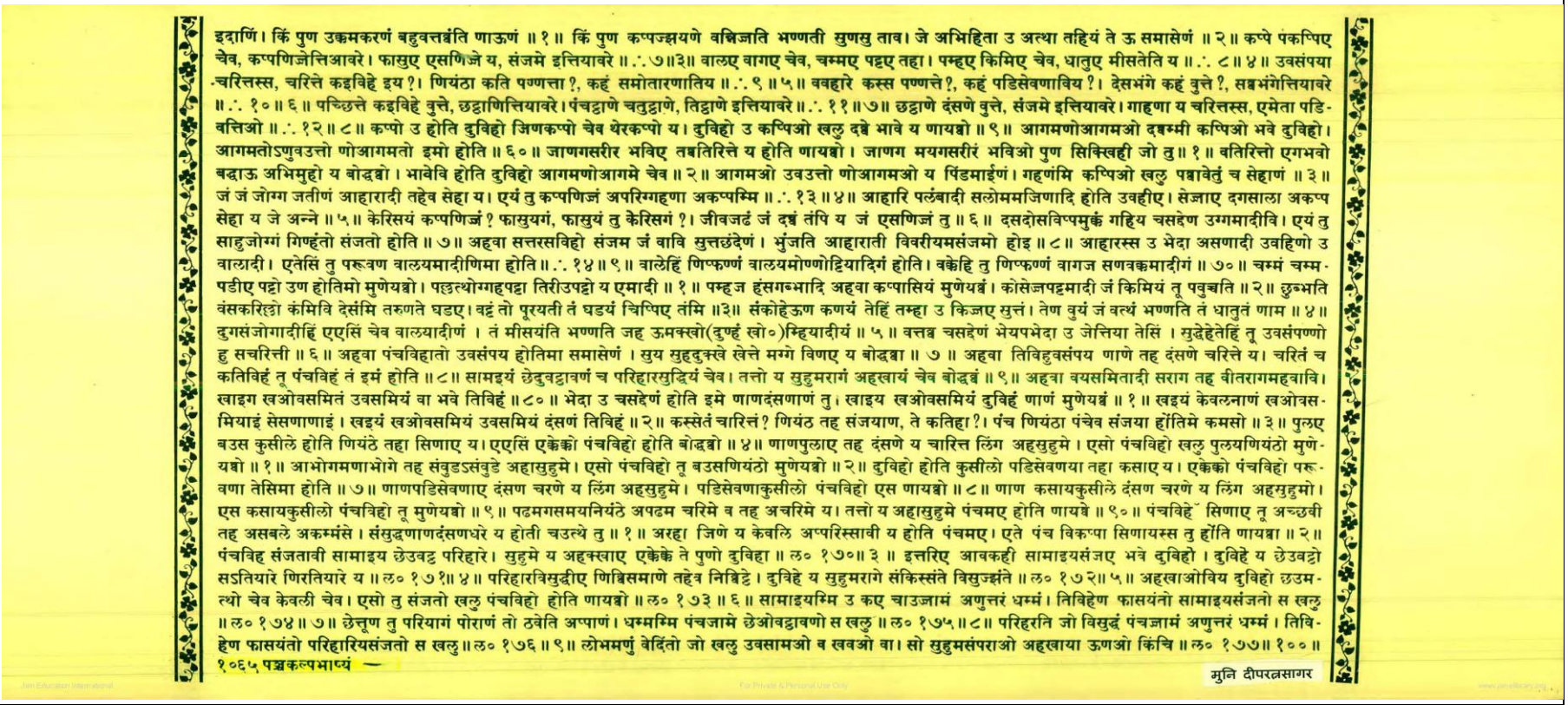

इदाणिं। किं पुण उक्कमकरणं बहुवत्तव्वंति णाऊणं ॥१॥ किं पुण कप्पज्झयणे वन्निज्जति भण्णती सुणसु ताव। जे अभिहिता उ अत्था तहियं ते ऊ समासेणं ॥२॥ कप्पे पंकप्पिए चेव, कप्पणिज्जेत्तिआवरे। फासुए एसणिज्जे य, संजमे इत्तियावरे ॥.∴.७॥३॥ वालए वागए चेव, चम्मए पट्टए तहा। पम्हए किमिए चेव, धातुए मीसतेति य ॥.∴. ८॥४॥ उवसंपया चरित्तस्स, चरित्ते कइविहे इय?। णियंठा कति पण्णत्ता?, कहं समोतारणातिय ॥.∴.९॥५॥ ववहारे कस्स पण्णत्ते?, कहं पडिसेवणाविय?। देसभंगे कहं वुत्ते?, सव्वभंगेत्तियावरे ॥.∴. १०॥६॥ पच्छित्ते कइविहे वुत्ते, छट्ठाणित्तियावरे। पंचट्ठाणे चतुट्ठाणे, तिट्ठाणे इत्तियावरे ॥.∴. ११॥७॥ छट्ठाणे दंसणे वुत्ते, संजमे इत्तियावरे। गाहणा य चरित्तस्स, एमेता पडिवत्तिओ ॥.∴.१२॥८॥ कप्पो उ होति दुविहो जिणकप्पो चेव थेरकप्पो य। दुविहो उ कप्पिओ खलु दव्वे भावे य णायव्वो ॥९॥ आगमणोआगमओ दव्वम्मी कप्पिओ भवे दुविहो। आगमतोऽणुवउत्तो णोआगमतो इमो होति ॥६०॥ जाणगसरीर भविए तव्वतिरित्ते य होति णायव्वो। जाणग मयगसरीरं भविओ पुण सिक्खिही जो तु॥१॥ वतिरित्तो एगभवो बद्धाऊ अभिमुहो य बोद्धव्वो। भावेवि होति दुविहो आगमणोआगमे चेव ॥२॥ आगमओ उवउत्तो णोआगमओ य पिंडमाईणं। गहणंमि कप्पिओ खलु पव्वावेतुं च सेहाणं ॥३॥ जं जं जोग्ग जतीणं आहारादी तहेव सेहा य। एयं तु कप्पणिज्जं अपरिग्गहणा अकप्पम्मि ॥.∴.१३॥४॥ आहारि पलंबादी सलोममजिणादि होति उवहीए। सेज्जाए दगसाला अकप्प सेहा य जे अन्ने ॥५॥ केरिसयं कप्पणिज्जं? फासुयगं, फासुयं तु केरिसगं?। जीवजढं जं दव्वं तंपि य जं एसणिज्जं तु ॥६॥ दसदोसविप्पमुक्कं गहिय चसद्देण उग्गमादीवि। एयं तु साहुजोग्गं गिण्हंतो संजतो होति ॥७॥ अहवा सत्तरसविहो संजम जं वावि सुत्तछंदेणं। भुंजति आहाराती विवरीयमसंजमो होइ ॥८॥ आहारस्स उ भेदा असणादी उवहिणो उ वालादी। एतेसिं तु परूवण वालयमादीणिमा होति॥.∴.१४॥९॥ वालेहिं णिप्फण्णं वालयमोण्णोट्टियादिगं होति। वक्केहि तु णिप्फण्णं वागज सणवक्कमादीगं ॥७०॥ चम्मं चम्मपडीए पट्टो उण होतिमो मुणेयव्वो। पल्लत्थोग्गहपट्टा तिरीउपट्टो य एमादी ॥१॥ पम्हज हंसगब्भादि अहवा कप्पासियं मुणेयव्वं। कोसेज्जपट्टमादी जं किमियं तू पवुच्चति ॥२॥ छुब्भति वंसकरिल्लो कंमिवि देसंमि तरुणते घडए। वट्टं तो पूरयती तं घडयं चिप्पिए तंमि ॥३॥ संकोहेऊण कणयं तेहिं तम्हा उ किज्जए सुत्तं। तेण वुयं जं वत्थं भण्णति तं धातुतं णाम ॥४॥ दुगसंजोगादीहिं एएसिं चेव वालयादीणं । तं मीसयंति भण्णति जह ऊमक्खो(दुण्हं खो०)म्हियादीयं ॥५॥ वत्तव्व चसद्देणं भेयपभेदा उ जेत्तिया तेसिं । सुद्धेहेतेहिं तू उवसंपण्णो हु सचरित्ती ॥६॥ अहवा पंचविहातो उवसंपय होतिमा समासेणं । सुय सुहदुक्खे खेत्ते मग्गे विणए य बोद्धव्वा ॥७॥ अहवा तिविहुवसंपय णाणे तह दंसणे चरित्ते य। चरितं च कतिविहं तू पंचविहं तं इमं होति ॥८॥ सामइयं छेदुवट्ठावणं च परिहारसुद्धियं चेव। तत्तो य सुहुमरागं अहखायं चेव बोद्धव्वं ॥९॥ अहवा वयसमितादी सराग तह वीतरागमहवावि। खाइग खओवसमितं उवसमियं वा भवे तिविहं ॥८०॥ भेदा उ चसद्देणं होति इमे णाणदंसणाणं तु। खाइय खओवसमियं दुविहं णाणं मुणेयव्वं ॥१॥ खइयं केवलनाणं खओवसमियाइं सेसणाणाइं। खइयं खओवसमियं उवसमियं दंसणं तिविहं ॥२॥ कस्सेतं चारित्तं? णियंठ तह संजयाण, ते कतिहा?। पंच णियंठा पंचेव संजया होंतिमे कमसो ॥३॥ पुलए बउस कुसीले होति णियंठे तहा सिणाए य। एएसिं एक्केको पंचविहो होति बोद्धव्वो ॥४॥ णाणपुलाए तह दंसणे य चारित्त लिंग अहसुहुमे। एसो पंचविहो खलु पुलयणियंठो मुणेयव्वो ॥१॥ आभोगमणाभोगे तह संवुडऽसंवुडे अहासुहुमे। एसो पंचविहो तू बउसणियंठो मुणेयव्वो ॥२॥ दुविहो होति कुसीलो पडिसेवणया तहा कसाए य। एक्केको पंचविहो परूवणा तेसिमा होति ॥७॥ णाणपडिसेवणाए दंसण चरणे य लिंग अहसुहुमे। पडिसेवणाकुसीलो पंचविहो एस णायव्वो ॥८॥ णाण कसायकुसीले दंसण चरणे य लिंग अहसुहुमो। एस कसायकुसीलो पंचविहो तू मुणेयव्वो ॥९॥ पढमगसमयनियंठे अपढम चरिमे व तह अचरिमे य। तत्तो य अहासुहुमे पंचमए होति णायव्वे ॥९०॥ पंचविहे सिणाए तू अच्छवी तह असबले अकम्मंसे। संसुद्धणाणदंसणधरे य होती चउत्थे तु ॥१॥ अरहा जिणे य केवलि अप्परिस्सावी य होति पंचमए। एते पंच विकप्पा सिणायस्स तु होंति णायव्वा ॥२॥ पंचविह संजतावी सामाइय छेउवट्ठ परिहारे। सुहुमे य अहक्खाए एक्केके ते पुणो दुविहा ॥ल० १७०॥३॥ इत्तरिए आवकही सामाइयसंजए भवे दुविहो। दुविहे य छेउवट्ठो सऽतियारे णिरतियारे य ॥ल० १७१॥४॥ परिहारविसुद्धीए णिविसमाणे तहेव निविट्ठे। दुविहे य सुहुमरागे संकिस्संते विसुज्झंते ॥ल० १७२॥५॥ अहखाओवियं दुविहो छउमत्थो चेव केवली चेव। एसो तु संजतो खलु पंचविहो होति णायव्वो ॥ल० १७३॥६॥ सामाइयम्मि उ कए चाउज्जामं अणुत्तरं धम्मं। निविहेण फासयंतो सामाइयसंजतो स खलु ॥ल० १७४॥७॥ छेत्तूण तु परियागं पोराणं तो ठवेति अप्पाणं। धम्मम्मि पंचजामे छेओवट्ठावणो स खलु ॥ल० १७५॥८॥ परिहरति जो विसुद्धं पंचज्जामं अणुत्तरं धम्मं। तिविहेण फासयंतो परिहारियसंजतो स खलु॥ल० १७६॥९॥ लोभमणुं वेदिंतो जो खलु उवसामओ व खवओ वा। सो सुहुमसंपराओ अहखाया ऊणओ किंचि ॥ल० १७७॥ १००॥

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [०१०१] दीप अनुक्रम [०१०१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

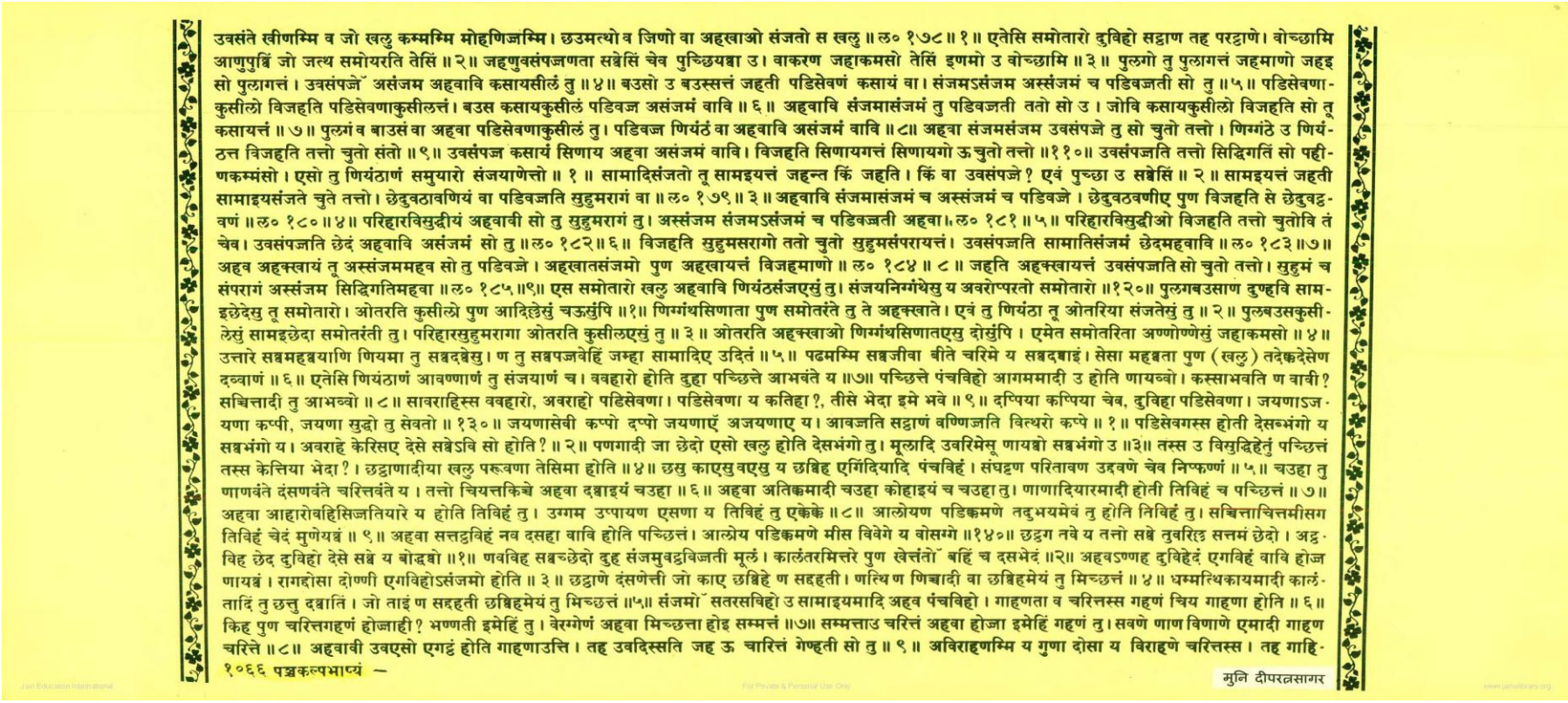

उवसंते खीणम्मि व जो खलु कम्मम्मि मोहणिज्जम्मि। छउमत्थो व जिणो वा अहखाओ संजतो स खलु ॥ल० १७८॥ १॥ एतेसि समोतारो दुविहो सट्ठाण तह परट्ठाणे। वोच्छामि आणुपुव्विं जो जत्थ समोयरति तेसिं ॥२॥ जहणुवसंपज्जणता सव्वेसिं चेव पुच्छियव्वा उ। वाकरण जहाकमसो तेसिं इणमो उ वोच्छामि ॥३॥ पुलगो तु पुलागत्तं जहमाणो जहइ सो पुलागत्तं। उवसंपज्जे असंजम अहवावि कसायसीलं तु ॥४॥ बउसो उ बउस्सत्तं जहती पडिसेवणं कसायं वा। संजमऽसंजम अस्संजमं च पडिवज्जती सो तु ॥५॥ पडिसेवणाकुसीलो विजहति पडिसेवणाकुसीलत्तं। बउस कसायकुसीलं पडिवज्ज असंजमं वावि ॥६॥ अहवावि संजमासंजमं तु पडिवज्जती ततो सो उ। जोवि कसायकुसीलो विजहति सो तू कसायत्तं ॥७॥ पुलगं व बाउसं वा अहवा पडिसेवणाकुसीलं तु। पडिवज्ज णियंठं वा अहवावि असंजमं वावि ॥८॥ अहवा संजमसंजम उवसंपज्जे तु सो चुतो तत्तो। णिग्गंठे उ णियंठत्त विजहति तत्तो चुतो संतो ॥९॥ उवसंपज्ज कसायं सिणाय अहवा असंजमं वावि। विजहति सिणायगत्तं सिणायगो ऊ चुतो तत्तो ॥११०॥ उवसंपज्जति तत्तो सिद्धिगतिं सो पहीणकम्मंसो। एसो तु णियंठाणं समुयारो संजयाणेत्तो ॥ १ ॥ सामादिसंजतो तू सामइयत्तं जहन्त किं जहति। किं वा उवसंपज्जे? एवं पुच्छा उ सव्वेसिं ॥ २ ॥ सामइयत्तं जहती सामाइयसंजते चुते तत्तो। छेदुवठावणियं वा पडिवज्जति सुहुमरागं वा ॥ल० १७९॥ ३॥ अहवावि संजमासंजमं च अस्संजमं च पडिवज्जे। छेदुवठवणीए पुण विजहति से छेदुवट्ठवणं ॥ल० १८०॥४॥ परिहारविसुद्धीयं अहवावी सो तु सुहुमरागं तु। अस्संजम संजमऽसंजमं च पडिवज्जती अहवा॥ल० १८१॥५॥ परिहारविसुद्धीओ विजहति तत्तो चुतोवि तं चेव। उवसंपज्जति छेदं अहवावि असंजमं सो तु ॥ल० १८२॥६॥ विजहति सुहुमसरागो ततो चुतो सुहुमसंपरायत्तं। उवसंपज्जति सामातिसंजमं छेदमहवावि ॥ल० १८३॥७॥ अहव अहक्खायं तू अस्संजममहव सो तु पडिवज्जे। अहखातसंजमो पुण अहखायत्तं विजहमाणो ॥ ल० १८४॥ ८॥ जहति अहक्खायत्तं उवसंपज्जति सो चुतो तत्तो। सुहुमं च संपरागं अस्संजम सिद्धिगतिमहवा ॥ल० १८५॥९॥ एस समोतारो खलु अहवावि णियंठसंजएसुं तु। संजयनिग्गंथेसु य अवरोप्परतो समोतारो ॥१२०॥ पुलगबउसाण दुण्हवि सामइछेदेसु तु समोतारो। ओतरति कुसीलो पुण आदिल्लेसुं चऊसुंपि ॥१॥ णिग्गंथसिणाता पुण समोतरंते तु ते अहक्खाते। एवं तु णियंठा तू ओतरिया संजतेसुं तु ॥ २॥ पुलबउसकुसीलेसुं सामइछेदा समोतरंती तु। परिहारसुहुमरागा ओतरति कुसीलएसुं तु ॥ ३॥ ओतरति अहक्खाओ णिग्गंथसिणातएसु दोसुंपि। एमेत समोतरिता अण्णोण्णेसुं जहाकमसो ॥ ४॥ उत्तारे सव्वमहव्वयाणि णियमा तु सव्वदव्वेसु। ण तु सव्वपज्जवेहिं जम्हा सामादिए उदितं ॥५॥ पढमम्मि सव्वजीवा बीते चरिमे य सव्वदव्वाइं। सेसा महव्वता पुण (खलु) तदेकदेसेण दव्वाणं ॥ ६॥ एतेसि णियंठाणं आवण्णाणं तु संजयाणं च। ववहारो होति दुहा पच्छित्ते आभवंते य ॥७॥ पच्छित्ते पंचविहो आगममादी उ होति णायव्वो। कस्साभवति ण वावी? सचित्तादी तु आभव्वो ॥ ८॥ सावराहिस्स ववहारो, अवराहो पडिसेवणा। पडिसेवणा य कतिहा?, तीसे भेदा इमे भवे ॥ ९॥ दप्पिया कप्पिया चेव, दुविहा पडिसेवणा। जयणाऽजयणा कप्पी, जयणा सुद्धो तु सेवतो ॥ १३०॥ जयणासेवी कप्पो दप्पो जयणाएँ अजयणाए य। आवज्जति सट्ठाणं वण्णिज्जति वित्थरो कप्पे ॥ १॥ पडिसेवगस्स होती देसब्भंगो य सव्वभंगो य। अवराहे केरिसए देसे सव्वेऽवि सो होति? ॥ २॥ पणगादी जा छेदो एसो खलु होति देसभंगो तु। मूलादि उवरिमेसू णायव्वो सव्वभंगो उ ॥३॥ तस्स उ विसुद्धिहेतुं पच्छित्तं तस्स केत्तिया भेदा?। छट्ठाणादीया खलु परूवणा तेसिमा होति ॥४॥ छसु काएसु वएसु य छव्विह एगिंदियादि पंचविहं। संघट्टण परितावण उद्दवणे चेव निप्फण्णं ॥५॥ चउहा तु णाणवंते दंसणवंते चरित्तवंते य। तत्तो चियत्तकिच्चे अहवा दव्वाइयं चउहा ॥६॥ अहवा अतिक्कमादी चउहा कोहाइयं च चउहा तु। णाणादियारमादी होती तिविहं च पच्छित्तं ॥७॥ अहवा आहारोवहिसिज्जतियारे य होति तिविहं तु। उग्गम उप्पायण एसणा य तिविहं तु एक्केके ॥८॥ आलोयण पडिक्कमणे तदुभयमेवं तु होति तिविहं तु। सचित्ताचित्तमीसग तिविहं चेदं मुणेयव्वं ॥ ९॥ अहवा सत्तट्ठविहं नव दसहा वावि होति पच्छित्तं। आलोय पडिक्कमणे मीस विवेगे य वोसग्गे ॥१४०॥ छट्ठग नवे य तत्तो सव्वे तुवरिल्ल सत्तमं छेदो। अट्ठविह छेद दुविहो देसे सव्वे य बोद्धवो ॥१॥ णवविह सव्वच्छेदो दुह संजमुवट्ठविज्जती मूलं। कालंतरमित्तरे पुण खेत्तंतो बहिं च दसभेदं ॥२॥ अहवऽण्णह दुविहेदं एगविहं वावि होज्ज णायव्वं। रागद्दोसा दोण्णी एगविहोऽसंजमो होति ॥ ३॥ छट्ठाणे दंसणेत्ती जो काए छव्विहे ण सद्दहती। णत्थि ण णिच्चादी वा छव्विहमेयं तु मिच्छत्तं ॥ ४॥ धम्मत्थिकायमादी कालंतादिं तु छत्तु दव्वातिं। जो ताइं ण सद्दहती छव्विहमेयं तु मिच्छत्तं ॥५॥ संजमो सतरसविहो उ सामाइयमादि अहव पंचविहो। गाहणता व चरित्तस्स गहणं चिय गाहणा होति ॥ ६॥ किह पुण चरित्तगहणं होज्जाही? भण्णती इमेहिं तु। वेरग्गेणं अहवा मिच्छत्ता होइ सम्मत्तं ॥७॥ सम्मत्ताउ चरित्तं अहवा होज्जा इमेहिं गहणं तु। सवणे णाण विणाणे एमादी गाहण चरित्ते ॥८॥ अहवावी उवएसो एगट्ठं होति गाहणाउत्ति। तह उवदिस्सति जह ऊ चारित्तं गेण्हती सो तु ॥ ९॥ अविराहणम्मि य गुणा दोसा य विराहणे चरित्तस्स। तह गाहि-

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [०१५०]

दीप अनुक्रम [०१५०]

जाति जह तं (तू) ओगाढो होंति चारित्ते ॥ १५० ॥ णाणे तह दंसणे य जातिग्गहणेण संसुया एया। एयातिं गाहिंते गाहणता वण्णिता एसा ॥ १ ॥ एमेता जा भणिता अहवा अवहारणे चसद्दो तु। पडिवत्ती उवगारो वागरणं वावि पडिवत्ती ॥ २ ॥ एतं कप्पे वण्णिजती उ अन्ने य बहुविहा अत्था। अत्थेसु अणेगेसु य कप्पभिधाणं मुणेयव्वं ॥३॥ सामत्थे वण्णणा काले, छेयणे करणे तहा। ओवंमे अहिवासे य, कप्पसद्दो वियाहिओ ॥.∴.१५॥ ल०६॥४॥ सामत्थे अट्ठ मासे वत्तीकप्पो तु होति गब्भगतो। वण्णण अज्झयणं तू कप्पिय जहमेगसाहूणं ॥ ५ ॥ काले हेमंताणं जह तु दसरायकप्पतिक्कंते। छेदणे जह केसे तू चउरंगुलवज्ज कप्पेहि ॥६॥ करणे वत्तीकप्पिय अहो इमेणं जहा तु पुरिसेणं। आइच्चंदकप्पा हवंति जह साहुणा धम्मी ॥ ७ ॥ सोहम्मकप्पवासी अहिवासे जह तु होंति देवा तु। एते सामत्थादी जोएयव्वा इहं कप्पे ॥८॥ कप्पज्झयणमधीतुं अतियारविसोहणं समत्थे उ। कतिविहपायच्छित्तस्स परूवणा वण्णणा होति ॥ ९ ॥ काले उडुबद्धाणं वासावासं च वुड्ढवासं वा। वसती जहाविहं खलु उस्सग्गववायसंजुत्तं ॥ १६० ॥ तवसोहिमतिक्कंतं छिंदति पणगादिएहिं परियागं। कुणइ य तहा पयत्तं जह तं दिण्णं वहइ सम्मं ॥ १ ॥ ओवम्मे जिणकप्पो जाणणगहणे य सो हवति गीतो। अहिवासे मासादिसु ऊणतिरित्ते विभासा तु ॥ २ ॥ सव्वेसिं कप्पाणं पण्णवण परूवणा उ णवमंमि। आसज्ज उ सोयारं पुव्वगते वा इहं वावि ॥.∴. १६ ॥ ३ ॥ एतेसिं सव्वेसिं छव्विह कप्पाइयाण कप्पाणं। पण्णवण परूवणता णवमे पुव्वम्मि णिद्दिट्ठा ॥ ४ ॥ सोतारं पुण आसज्ज होज्ज इह कप्पि अहव णवमम्मि। धारणगहणसमत्थे तहितं असमत्थे इहइं तु ॥५॥ कप्पाणं वक्खाणं पुव्वगते वण्णितं समत्तं तु। इह थोवगन्तिकाउं ण हु बहुमाणो ण कायव्वो ॥ ६ ॥ दव्वे खेत्ते काले उग्गहसंधयणधारणगुरूणं। तंपी बहु मण्णिअव्वं जं एगपदे पदं अत्थि ॥.∴. १७ ॥७॥ दुस्समअणुभावेणं हाणी विरियस्स ओसहीणं तु। दुलभाणि य दव्वाइं जाइं जोग्गाइं तणुभावे ॥ ८ ॥ खेत्ताणि प(य)हायंती विहारजोग्गाइं तदणुभावेण। दुब्भिक्खपउरकालो तेणणुभावेण मणुयाणं ॥ ९ ॥ लद्धी उग्गहणम्मी संघयणं धारणा य परिहाति। ण य सीसायरियाणं सत्ती वत्तुं च सोतुं वा ॥ १७० ॥ ण य संति बहू गुरवो जे वत्तारो य हुंति अत्थस्स। तेवि ण सव्वस्स लहुं पसादसुहुमा (मुदा) भवंती तु ॥ १ ॥ इय णातुं परिहाणीं जं एगपदेवि एगमत्थपदं। बहु मंतव्वं तंपि हु किं पुण संतेसु णेगेसु ॥ २ ॥ तो ण पमाएयव्वं ण य भत्ती तू तहिं ण कायव्वा। सुट्ठुतरं उज्जोगो कायव्वो तम्मि चित्तव्वे ॥ ३ ॥ सो पुण पंचविकप्पो कप्पो इह वण्णिओ समासेणं। वित्थरतो पुव्वगतो तस्स इमे होंति भेदा तु ॥ ४ ॥ छव्विह सत्तविहे य दसविह वीसतिविहे य बायाले। जस्स तु णत्थि विभागो सुव्वत्त जलंधकारो सो ॥.∴. १८ ॥ ५ ॥ विभयण विभागु भण्णति जहेरिसो छव्विहो य सत्तविहो। णामादिविभागो वा जस्सेसो ण विदितो होति ॥ ६ ॥ सुव्वत्त सुट्ठु वत्तं तस्स निवुड्ढस्स वा जलमगाहे। होती सचक्खुयस्सवि जहंधकारो मणुस्सस्स ॥ ७ ॥ अहवा जलंधकारो मेहोत्थइयंमि होति गगणम्मि। अहवा जलंधकारो जत्थादिच्चो ण दीसति तु ॥ ८ ॥ एवं तु अंधकारो कप्पकप्पं पडुच्च तस्स भवे। अहवा सो चेव जलो भवइ य से अंधकारं तु ॥९॥ छव्विहकप्पस्सिणमो णिक्खेवो छव्विहो मुणेयव्वो। णामं ठवणा दविए खेत्ते काले य भावे य ॥ १८० ॥ जेण परिग्गहिएणं दव्वेणं कप्पो होति णाऽकप्पो। तं दव्वमेव कप्पो कारणकज्जोवयारातो ॥ १ ॥ सो तिविहो बोद्धव्वो जीवमजीवे य मीसतो चेव। एतेसिं तु विभागं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥ २ ॥ तिविहो य जीवकप्पो दुपय चउप्पय तहेव अपदेहिं। अहिगारो दुपदेहिं तत्थवि य मणुस्सदुपदेहिं ॥ ३ ॥ तत्थवि य कम्मभूमतुसंखिज्जगवासआउएहिं तु। पव्वइतुकामएहिं तत्थवि तू होति अहिगारो ॥ ४ ॥ सो होति छव्विहो तू बोद्धव्वो मणुयजीवकप्पो तु। वोच्छामि तस्स इणमो भेदविकप्पं समासेणं ॥ ५ ॥ पव्वावण मुंडावण सिक्खावणुवट्ठ भुंज संवसणा। एसो त्थ (तु) जीवकप्पो छब्भेदो होति णायव्वो ॥.∴. १९ ॥ ल० ७ ॥ ६ ॥ अब्भुवगमो पव्वावण मुंडावण होति लोयकरणं तु। गहणासेवणसिक्खं सिक्खाविन्तंमि सिक्खवणा ॥ ल० ८ ॥ ७ ॥ वयठवणमुवट्ठवणा संभुंजण मंडलीएँ सह भोगो। एगततो सह वासो संवसणा होति णायव्वा ॥ ल० ९ ॥ ८ ॥ णाऽपव्वावित मुंडावणा तु ण यऽमुंडिए तु सिक्खवणा। एमादी तु विभासा पव्वावयती तु केरिसगो? ॥ ९ ॥ सुत्तत्थतदुभयविसारयस्स संगहउवायकुसलस्स। कप्पति पव्वावेतुं संवेगसुवट्ठितमतिस्स ॥.∴. २० ॥ १९० ॥ सुत्तत्थेण विसारएँ चउभंगो एत्थ होति कायव्वो। तं चेव तदुभयं खलु विसारतो जाणतो तस्स ॥ १ ॥ दव्वे भावे संगह दव्वे आहारमादिएहिं तु। सिक्खवणं अगिलाए गेलण्णे यावि करणं तु ॥२॥ भावम्मि संगहो खलु णाणादी तं तु होति बोद्धव्वो। जाणइ वट्टावेतुं गच्छं तु उवायकुसलो तु ॥ ३ ॥ संसारभउव्विग्गो संविग्गो सो तु होइ णायव्वो। एतेसिं तु पदाणं चउभंगो होति एक्केके ॥ ४ ॥ तदुभयविसारदो खलु ण संगहे कुसलो एत्थ चउभंगो। तदुभयउवायकुसलो एत्थंपि तु होति चउभंगो ॥ ५ ॥ तदुभयसंविग्गोहिवि चउभंगो एव होति कायव्वो। एवगुणजातियस्सा पव्वावेतुं तु कप्पति तु ॥ ६ ॥ पव्वाविंता भणिता अहुणा पव्वावणिज्ज वोच्छामि। पव्वज्जाए जोग्गा जे वा होंती अजोग्गा तु ॥ ७ ॥ पव्वावणारिहा खलु जातीकुलरूवविणयसंपण्णा। तव्विवरीयगुणा खलु होंति अपव्वावणाजोग्गा ॥ ८ ॥ तेसिं तु जे विवक्खा तव्विवरीया हवंति ते णियमा। अहवावि इमे वीसं वज्जित्ता

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [०२००]

दीप अनुक्रम [०२००]

सेसगा जोग्गा ॥ ९ ॥ बाले वुड्ढे नपुंसे य, जड्डे कीवे य वाहिए। तेणे रायावगारी य, उम्मत्ते य अदंसणे ॥ ∴ २१॥२००॥ दासे दुट्ठे य मूढे य, अणत्ते जुंगितेइ य। ओबद्धए य भयए, सेहणिप्फेडितेति य ॥ ∴ २२॥ १ ॥ गुव्विणी बालवच्छा य, पव्वावेतुं ण कप्पए। एसिं परूवणा दुविहा, उस्सग्गववायसंजुता ॥ ∴ २३ ॥ २ ॥ कारणमकारणे अहव कारण जयणेतरा पुणो दुविहा। एस परूवण दुविहा एत्तो बालादि वोच्छामि ॥ ३ ॥ तिविहो य होति बालो उक्कोसो मज्झिमो जहण्णो य। एतेसिं तिण्हंपी पत्तेय परूवणं वोच्छं ॥ ४ ॥ सत्तट्ठगमुक्कोसो छप्पण मज्झो य चतुतिय जहण्णो। एयं वयनिप्फण्णं सभावओ होंति णव भेदा ॥ ५ ॥ जहणो जहणसभावो मज्झसभावो तहेव उक्कोसो। एवं मज्झिम तिण्णी उक्कोसावी भवे तिण्णि ॥ ६ ॥ छिंदंतमछिंदंता तिन्निवि हरितादि वारिता संता। पुणरविय छिंदमाणा जति दिट्ठ गुरूण वऽण्णेणं ॥ ७ ॥ उक्कोसो दट्ठूणं मज्झिमतो ठाति वारितो संतो। जो पुण जहण्णबालो हत्थे गहिओवि णवि ठाति ॥ ८ ॥ दाहिणकरम्मि गहितो वामकरेणं स छिंदती ताइं। मंडलगंमि व धरितो चिट्ठइ एवं च भणितो तु ॥ ९ ॥ जह भणितो तह तु ठितो पढमो बीएण फेडियं ठाणं। तइओ न ठाति ठाणे अह रुब्भ(ब्व)ति विस्सरं रुयति ॥ २१० ॥ एतेसिं बालाणं पव्वाविंतस्सिमं तु पच्छित्तं। तिण्हंपि कमेणं तू वोच्छामी आणुपुव्वीए ॥ १ ॥ अउणत्तीसा वीसा उगुवीसा चेव तिविहबालम्मि। तव छेद वीसु पढमे बिति मिस्सा ततिय छेदाती ॥ २ ॥ अउणत्तीसं दिवसे सिक्खावितस्स मासियं लहुयं ॥ उक्कोसगम्मि बाले सो चेव असिक्खणे गुरुगो ॥ ३ ॥ अण्णे अउणत्तीसं गुरुओ सिक्खे असिक्खि चउलहुया। पुणरवि अउणत्तीसं लहुगा सिक्खेतरे गुरुगा (गुरुगा सिक्खे य छल्लहुगा) ॥ ४ ॥ अण्णे अउणत्तीसं गुरुगा सिक्खे असिक्खि छल्लहुगा। (अण्णे उ अउणतीसं सिक्खावितस्स होति पच्छित्तं।) छल्लहुगा सिक्खम्मि य असिक्खि गुरुगा अउणतीसं ॥ ५ ॥ अण्णे सिक्खासिक्खे छग्गुरु तवो छेद छग्गुरू चेव। मूलऽणवट्ठं पारंचिगं च एक्केक्कगं तत्तो ॥ ६ ॥ अहवा सो चेव तवो छेदादी मासमादिया होंति। सिक्खावितमासिक्खे मूलेक्कदुगं तहेक्केक्कं ॥ ७ ॥ अहवा सो चेव तवो छेदो पणगादि जाव छम्मासा। सिक्खावितमसिक्खे लहु गुरु एक्केक्क उगुतीसा॥८॥ मूलऽणवट्ठं च तओ पारंचियमेव होति एक्केक्कं। सिक्खासिक्खपगारा उक्कोसे होंति बालेते ॥ ९ ॥ अहवा सो चेव गमो दिणेहिं सिक्खितरवज्जिए होति। मासादितवच्छेदा मूलाईया दिणेक्केक्कं ॥२२०॥ एमेव मज्झिमेऽवी णवरं दिवसा तु वीस वीसं तु। एमेव जहण्णेऽवी उगुवीसुगुवीस दिवसा तु ॥ १ ॥ अहवा मज्झे मीसा जहण्णछेदादि अन्नपरिवाडी। तवछेदेगंतरिया मज्झि जहण्णे तु भयणाए ॥२॥ मज्झिमि वीसं लहुओ सिक्खमसिक्खस्स मासिओ छेदो। वीसण्ण छेद लहुओ सिक्खमसिक्खे गुरुग तवो (गो जो) ॥ ३ ॥ अड्ढोक्कंती एवं तवछेदेगंतरा तु णेयव्वा। जा छम्मासा ताव तु परओ मूलादि एक्केक्कं ॥ ४ ॥ अउणावीस जहण्णे सिक्खावितस्स मासिओ छेदो। सो चिय असिक्खि गुरुओ जा छग्गुरु तिण्णि परओ तु ॥ ५ ॥ अहवा ण होइ छेदो ठाणे चिय मूल तह य अणवट्ठो। पारंचिए य तत्तो एवं भयणा जहण्णस्स ॥ ६ ॥ अहवा पढमे छेदो तद्दिवसे चेव हवइ मूलं वा। एमेव होति बीए तइए पुण होंति मूलं तु ॥७॥ किं कारण सोधेसा? दोसा तहियं इमे समक्खाता। पव्वाविएसु तेसु तु उड्डाहाई मुणेयव्वा ॥ ८ ॥ बंभस्स वयस्स फलं अयगोले चेव होंति छक्काया। णिसिभत्तमंतराए चारग अजसो य पडिबंधो ॥ ∴ २४॥ ९ ॥ लोगो बेती पेच्छह इणमो बंभव्वईण तु फलं तु। अयगोलोविव तत्तो डहती सो जित्तिए मुक्को ॥ २३० ॥ भत्त णिसि मग्गमाणे दिंते तु रातिभत्तभंगो तु। हवइ अदिंतम्मि तइंतराइयं बेइ लोगो य ॥ १ ॥ चारगपाला हु इमे जे बालाइं तु एव रुंभंति। लोगे जायति अजसो अहो इमे णिरणुकंपत्ति ॥ २ ॥ तेण य पडिबंधेणं पडिबद्धा णवि कहिंचि विहरंति । जे दोस णीयवासे ते पावंते य अच्छंता ॥ ३ ॥ ऊणट्ठे णत्थि चरणं पव्वाविंतोऽवि भस्सई चरणा। मूलावराहिणी खलु णारभते वाणिओ चेट्टं ॥ ४ ॥ उग्घायमणुग्घायं णाऊणं छव्विहं तवोकम्मं। एमेव छेद छव्विह जिणचोद्दसपुव्विए दिक्खा ॥ ∴ २५॥ ५ ॥ उग्घायमणुग्घातो मासो चउ छच्च छव्विह तवेसो। एमेव छव्विहोचिय छेदो सेसाण एक्केक्कं ॥ ६ ॥ एयं पायच्छित्तं णाउ ण पव्वावए तओ बालं। णवरं पव्वाविंती जिणचोद्दसपुव्विअतिसेसी ॥ ७ ॥ ते जाणिउं गुणागुण बहुगुण णाऊण तेण दिक्खंति। के पुण जिणमादीहिं दिक्खिय बाला? इमे सुणसु ॥ ८ ॥ सत्थाए अतिमुत्तो मणओ सिज्जंभवेण पुव्वविदा। अतिसेसिणा य वतिरो छम्मासो सीहगिरिणावि ॥ ९ ॥ एते अव्ववहारी जह पव्वाविंतीह गच्छवासी तु। एयं इच्छं णाउं भण्णति इणमो णिसामेहि ॥ २४० ॥ उवसंते व महाकुले णातीवग्गे व सन्निसिज्जतरे। अज्जाकारणजाते बाले पव्वज्जऽणुण्णाया ॥ ∴ २६॥ १ ॥ पव्वज्जाएँ परिणए विउलकुले तत्थ बाल होज्जाहि। मा सव्वे तेसि कते अच्छंतु तेण पव्वावे ॥ २ ॥ णातीवग्गे य तहा छेव(थेर)गमादी मयम्मि संतम्मि। जणवादरक्खतो सारवेइ आसण्णबालाइं ॥ ३ ॥ एवं सन्नितराणवि अज्जायवि डिंडिबंध पडिणीए। कज्जं करेमि सचिवो जदि मे पव्वावतह बालं ॥ ४ ॥ एतेहिं कारणेहिं पव्वाविज्जाहि गच्छवासी तु। पव्वावियाण तेसिं इमेण विहिणा उ सारवणा ॥ ५ ॥ भत्ते पाणे धोवण सारणया वारणा निओजणया। चरणकरणसज्झायं गाहेयव्वो पयत्तेणं ॥ ∴ २७॥ ६ ॥ निद्दमहुरेहिं आउं पुस्सति देहम्मि पाडवं मेहा। अच्छति जत्थ ण णज्जति सद्दादिसु पीहगादीया ॥ ७ ॥ ठावेति सालवाडा पडिलेहणमादिसारणमभिक्खं। वारिज्जए अभिक्खं हरियादी छिंदमाणो य ॥ ८ ॥ सामायारिं सव्वं सज्झायं चेव ऊ पयत्तेणं। गाहिज्जति सो एवं जयणा एसा तु बालस्स ॥ ९ ॥ (२६७)

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [०२५०]

दीप अनुक्रम [०२५०]

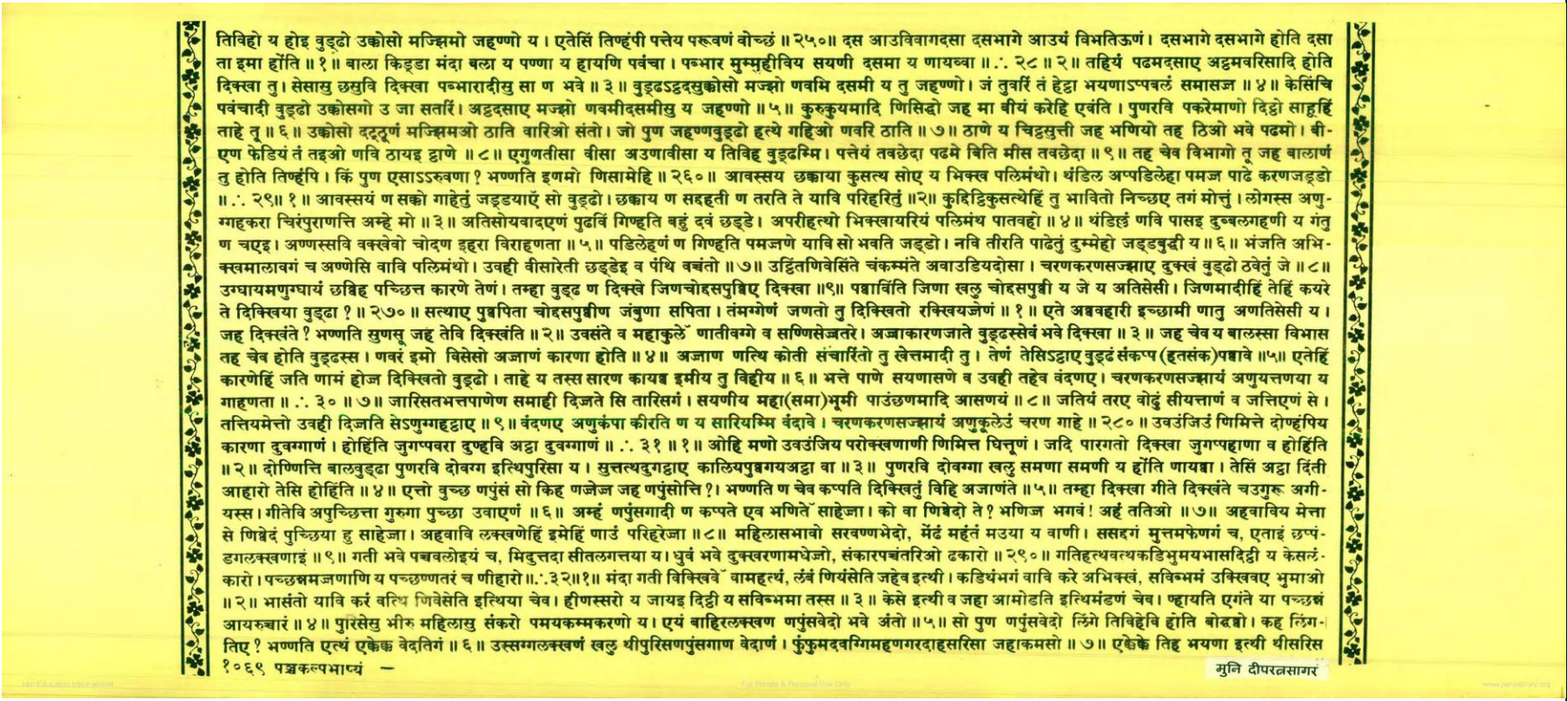

तिविहो य होइ वुड्ढो उक्कोसो मज्झिमो जहण्णो य। एतेसिं तिण्हंपी पत्तेय परूवणं वोच्छं ॥२५०॥ दस आउविवागदसा दसभागे आउयं विभतिऊणं। दसभागे दसभागे होति दसा ता इमा होंति ॥१॥ बाला किड्डा मंदा बला य पण्णा य हायणि पवंचा। पब्भार मुम्मुहीविय सयणी दसमा य णायव्वा ॥.'. २८ ॥२॥ तहियं पढमदसाए अट्ठमवरिसादि होति दिक्खा तु। सेसासु छसुवि दिक्खा पब्भारादीसु सा ण भवे ॥३॥ वुड्ढऽट्ठदसुक्कोसो मज्झो णवमि दसमी य तु जहण्णो। जं तुवरिं तं हेट्ठा भयणाऽप्पवत्तं समासज्ज ॥४॥ केसिंचि पवंचादी वुड्ढो उक्कोसगो उ जा सतरिं। अट्ठदसाए मज्झो णवमीदसमीसु य जहण्णो ॥५॥ कुरुकुयमादि णिसिद्धो जह मा बीयं करेहि एवंति। पुणरवि पकरेमाणो दिट्ठो साहूहिं ताहे तु ॥६॥ उक्कोसो दट्ठूणं मज्झिमओ ठाति वारिओ संतो। जो पुण जहण्णवुड्ढो हत्थे गहिओ णवरि ठाति ॥७॥ ठाणे य चिट्ठसुत्ती जह भणियो तह ठिओ भवे पढमो। बीएण फेडियं तं तइओ णवि ठायइ ट्ठाणे ॥८॥ एगुणतीसा वीसा अउणावीसा य तिविह वुड्ढम्मि। पत्तेयं तवछेदा पढमे बिति मीस तवछेदा ॥९॥ तह चेव विभागो तू जह बालाणं तु होति तिण्हंपि। किं पुण एसाऽऽरुवणा? भण्णति इणमो णिसामेहि ॥२६०॥ आवस्सय छक्काया कुसत्थ सोए य भिक्ख पलिमंथो। थंडिल अप्पडिलेहा पमज्ज पाढे करणजड्डो ॥.'. २९॥ १॥ आवस्सयं ण सक्को गाहेतुं जड्डयाएँ सो वुड्ढो। छक्काय ण सद्दहती ण तरति ते यावि परिहरितुं ॥२॥ कुदिट्ठिकुसत्थेहिं तु भावितो निच्छए तगं मोत्तुं। लोगस्स अणुग्गहकरा चिरंपुराणत्ति अम्हे मो ॥३॥ अतिसोयवादएणं पुढविं गिण्हति बहुं दवं छड्डे। अपरीहत्थो भिक्खायरियं पलिमंथ पातवहो ॥४॥ थंडिलं णवि पासइ दुब्बलगहणी य गंतु ण चएइ। अण्णस्सवि वक्खेवो चोदण इहरा विराहणता ॥५॥ पडिलेहणं ण गिण्हति पमज्जणे यावि सो भवति जड्डो। नवि तीरति पाढेतुं दुम्मेहो जड्डबुद्धी य ॥६॥ भंजति अभिक्खमालावगं च अण्णेसि वावि पलिमंथो। उवही वीसारेती छड्डेइ व पंथि वच्चंतो ॥७॥ उट्ठितणिवेसिंते चंकम्मंते अवाउडियदोसा। चरणकरणसज्झाए दुक्खं वुड्ढो ठवेतुं जे ॥८॥ उग्घायमणुग्घायं छविह पच्छित्त कारणे तेणं। तम्हा वुड्ढ ण दिक्खे जिणचोद्दसपुव्विए दिक्खा ॥९॥ पव्वाविंति जिणा खलु चोद्दसपुव्वी य जे य अतिसेसी। जिणमादीहिं तेहिं कयरे ते दिक्खिया वुड्ढा? ॥ २७० ॥ सत्थाए पुव्वपिता चोद्दसपुव्वीण जंबुणा सपिता। तंमग्गेणं जणतो तु दिक्खितो रक्खियज्जेणं ॥ १ ॥ एते अव्वहारी इच्छामी णातु अणतिसेसी य। जह दिक्खंते? भण्णति सुणसू जह तेवि दिक्खंति ॥२॥ उवसंते व महाकुले नातीवग्गे व सण्णिसेज्जतरे। अज्जाकारणजाते वुड्ढस्सेवं भवे दिक्खा ॥३॥ जह चेव य बालस्सा विभास तह चेव होति वुड्ढस्स। णवरं इमो विसेसो अजाणं कारणा होति ॥४॥ अजाण णत्थि कोती संचारिंतो तु खेत्तमादी तु। तेणं तेसिऽट्ठाए वुड्ढं संकप्प (हृतसंक)पव्वावे ॥५॥ एतेहिं कारणेहिं जति णामं होज्ज दिक्खितो वुड्ढो। ताहे य तस्स सारण कायव्व इमीय तु विहीय ॥६॥ भत्ते पाणे सयणासणे व उवही तहेव वंदणए। चरणकरणसज्झायं अणुयत्तणया य गाहणता ॥.'. ३० ॥७॥ जारिसतभत्तपाणेण समाही दिज्जते सि तारिसगं। सयणीय महा(समा)भूमी पाउंछणमादि आसणयं ॥८॥ जतियं तरए वोढुं सीयत्ताणं व जत्तिएणं से। तत्तियमेत्तो उवही दिजाति सेऽणुग्गहट्ठाए ॥९॥ वंदणए अणुकंपा कीरति ण य सारियम्मि वंदावे। चरणकरणसज्झायं अणुकूलेउं चरण गाहे ॥२८०॥ उवउंजिउं णिमित्ते दोण्हंपिय कारणा दुवग्गाणं। होहिंति जुगप्पवरा दुण्हवि अट्ठा दुवग्गाणं ॥.'. ३१ ॥१॥ ओहि मणो उवउंजिय परोक्खणाणी णिमित्त घित्तूणं। जदि पारगतो दिक्खा जुगप्पहाणा व होहिंति ॥२॥ दोण्णित्ति बालवुड्ढा पुणरवि दोवग्ग इत्थिपुरिसा य। सुत्तत्थदुगट्ठाए कालियपुव्वगयअट्ठा वा ॥३॥ पुणरवि दोवग्गा खलु समणा समणी य होंति णायव्वा। तेसिं अट्ठा दिंती आहारो तेसि होहिंति ॥४॥ एत्तो वुच्छ णपुंसं सो किह णज्जेज्ज जह णपुंसोत्ति?। भण्णति ण चेव कप्पति दिक्खितुं विहि अजाणंते ॥५॥ तम्हा दिक्खा गीते दिक्खंते चउगुरू अगीयस्स। गीतेवि अपुच्छित्ता गुरुगा पुच्छा उवाएणं ॥६॥ अम्हं णपुंसगादी ण कप्पते एव भणिते साहेज्जा। को वा णिव्वेदो ते? भणिज्ज भगवं! अहं ततिओ ॥७॥ अहवाविय मेत्ता से णिव्वेदं पुच्छिया हु साहेज्जा। अहवावि लक्खणेहिं इमेहिं णाउं परिहरेज्जा ॥८॥ महिलासभावो सरवण्णभेदो, मेंढं महंतं मउया य वाणी। ससहगं मुत्तमफेणगं च, एताइं छप्पंडगलक्खणाइं ॥९॥ गती भवे पचवलोइयं च, मिदुत्तदा सीतलगत्तया य। धुवं भवे दुक्खरणामधेज्जो, संकारपचंतरिओ ढकारो ॥२९०॥ गतिहत्थवत्थकडिभुमयभासदिट्ठी य केसलंकारो। पच्छन्नमज्जणाणि य पच्छण्णतरं च णीहारो ॥.'.३२॥१॥ मंदा गती विक्खिवे वामहत्थं, लंबं णियंसेति जहेव इत्थी। कडिथंभगं वावि करे अभिक्खं, सविब्भमं उक्खिवए भुमाओ ॥२॥ भासंतो यावि करं वत्थि णिवेसेति इत्थिया चेव। हीणस्सरो य जायइ दिट्ठी य सविब्भमा तस्स ॥३॥ केसे इत्थी व जहा आमोडति इत्थिमंडणं चेव। ण्हायति एगंते या पच्छन्नं आयरुच्चारं ॥४॥ पुरिसेसु भीरु महिलासु संकरो पमयकम्मकरणो य। एयं बाहिरलक्खण णपुंसवेदो भवे अंतो ॥५॥ सो पुण णपुंसवेदो लिंगे तिविहेवि होति बोद्धव्वो। कह लिंगातिए? भण्णति एत्थं एक्केक्क वेदतिगं ॥६॥ उस्सग्गलक्खणं खलु थीपुरिसणपुंसगाण वेदाणं। फुंफुमदवग्गिमहणगरदाहसरिसा जहाकमसो ॥७॥ एक्केक्के तिह भयणा इत्थी थीसरिस

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [०२९८]

दीप अनुक्रम [०२९८]

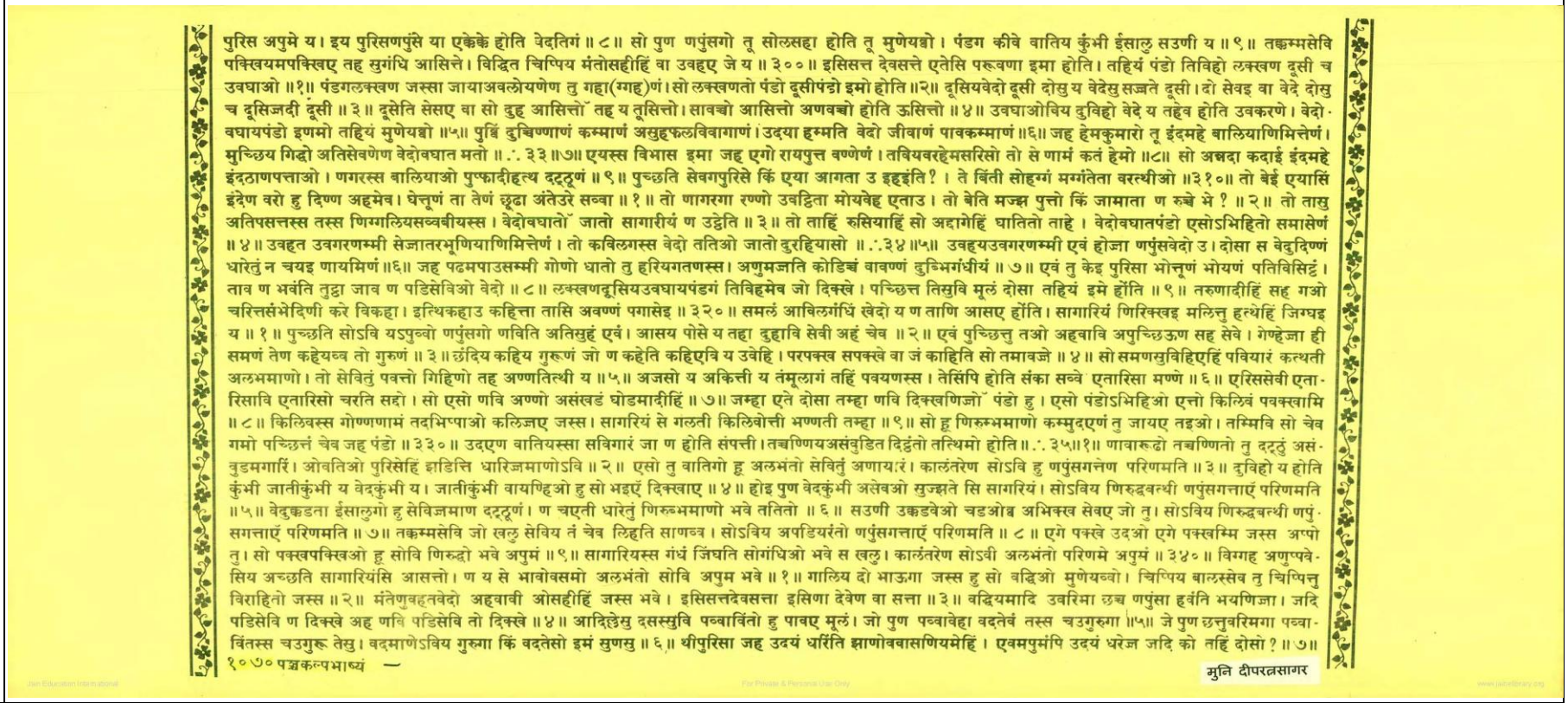

पुरिस अपुमे य। इय पुरिसणपुंसे या एक्केक्के होति वेदतिगं ॥ ८॥ सो पुण णपुंसगो तू सोलसहा होति तू मुणेयव्वो। पंडग कीवे वातिय कुंभी ईसालु सउणी य ॥ ९॥ तक्कम्मसेवि पक्खियमपक्खिए तह सुगंधि आसित्ते। विद्धित चिप्पिय मंतोसहीहिं वा उवहए जे य ॥ ३००॥ इसिसत्त देवसत्ते एतेसि परूवणा इमा होति। तहियं पंडो तिविहो लक्खण दूसी च उवघाओ ॥१॥ पंडगलक्खण जस्सा जायाअवलोयणेण तु गहा(ग्गह)णं। सो लक्खणतो पंडो दूसीपंडो इमो होति ॥२॥ दूसियवेदो दूसी दोसु य वेदेसु सज्जते दूसी। दो सेवइ वा वेदे दोसु च दूसिज्जदी दूसी ॥ ३॥ दूसेति सेसए वा सो दुह आसित्तो॑ तह य तूसित्तो। सावच्चो आसित्तो अणवच्चो होति ऊसित्तो ॥ ४॥ उवघाओविय दुविहो वेदे य तहेव होति उवकरणे। वेदोवघायपंडो इणमो तहियं मुणेयव्वो ॥५॥ पुव्विं दुच्चिण्णाणं कम्माणं असुहफलविवागाणं। उदया हम्मति वेदो जीवाणं पावकम्माणं ॥६॥ जह हेमकुमारो तू इंदमहे बालियाणिमित्तेणं। मुच्छिय गिद्धो अतिसेवणेण वेदोवघात मतो ॥ ∴ ३३॥७॥ एयस्स विभास इमा जह एगो रायपुत्त वण्णेणं। तवियवरहेमसरिसो तो से णामं कतं हेमो ॥८॥ सो अन्नदा कदाई इंदमहे इंदठाणपत्ताओ। णगरस्स बालियाओ पुप्फादीहत्थ दट्ठूणं ॥ ९॥ पुच्छति सेवगपुरिसे किं एया आगता उ इहइंति? । ते विंती सोहग्गं मग्गंतेता वरत्थीओ ॥३१०॥ तो बेई एयासिं इंदेण वरो हु दिण्ण अहमेव। घेत्तूणं ता तेणं छूढा अंतेउरे सव्वा ॥ १॥ तो णागरगा रण्णो उवट्ठिता मोयवेह एताउ। तो बेति मज्झ पुत्तो किं जामाता ण रुच्चे भे? ॥ २॥ तो तासु अतिपसत्तस्स तस्स णिग्गलियसव्वबीयस्स। वेदोवघातो॑ जातो सागारीयं ण उट्ठेति ॥ ३॥ तो ताहिं रुसियाहिं सो अहागेहिं घातितो ताहे। वेदोवघातपंडो एसोऽभिहितो समासेणं ॥ ४॥ उवहत उवगरणम्मी सेज्जातरभूणियाणिमित्तेणं। तो कविलगस्स वेदो ततिओ जातो दुरहियासो ॥ ∴ ३४॥५॥ उवहयउवगरणम्मी एवं होज्जा णपुंसवेदो उ। दोसा स वेदुदिण्णं धारेतुं न चयइ णायमिणं ॥६॥ जह पढमपाउसम्मी गोणो धातो तु हरियगतणस्स। अणुमज्जति कोडिच्चं वावण्णं दुब्भिगंधीयं ॥ ७॥ एवं तु केइ पुरिसा भोत्तूणं भोयणं पतिविसिट्ठं। ताव ण भवंति तुट्ठा जाव ण पडिसेविओ वेदो ॥ ८॥ लक्खणदूसियउवघायपंडगं तिविहमेव जो दिक्खे। पच्छित्त तिसुवि मूलं दोसा तहियं इमे होंति ॥ ९॥ तरुणादीहिं सह गओ चरित्तसंभेदिणी करे विकहा। इत्थिकहाउ कहित्ता तासि अवण्णं पगासेइ ॥ ३२०॥ समलं आविलगंधिं खेदो य ण ताणि आसए होंति। सागारियं णिरिक्खइ मलित्तु हत्थेहिं जिग्घइ य ॥ १॥ पुच्छति सोऽवि यऽप्पव्वो णपुंसगो णवित्ति अतिसुहं एवं। आसय पोसे य तहा दुहावि सेवी अहं चेव ॥ २॥ एवं पुच्छित्तु तओ अहवावि अपुच्छिऊण सह सेवे। गेण्हेज्जा ही समणं तेण कहेयव्व तो गुरुणं ॥ ३॥ छंदिय कहिय गुरूणं जो ण कहेति कहिएवि य उवेहि। परपक्ख सपक्खे वा जं काहिति सो तमावज्जे ॥ ४॥ सो समणसुविहिएहिं पवियारं कत्थती अलभमाणो। तो सेवितुं पवत्तो गिहिणो तह अण्णतित्थी य ॥५॥ अजसो य अकित्ती य तंमूलागं तहिं पवयणस्स। तेसिंपि होति संका सव्वे एतारिसा मण्णे ॥ ६॥ एरिससेवी एतारिसावि एतारिसो चरति सद्दो। सो एसो णवि अण्णो असंखडं घोडमादीहिं ॥ ७॥ जम्हा एते दोसा तम्हा णवि दिक्खणिज्जो॑ पंडो हु। एसो पंडोऽभिहिओ एत्तो किलिवं पवक्खामि ॥ ८॥ किलिवस्स गोण्णणामं तदभिप्पाओ कलिज्जए जस्स। सागरियं से गलती किलिवोत्ती भण्णती तम्हा ॥ ९॥ सो हू णिरुब्भमाणो कम्मुदएणं तु जायए तइओ। तम्मिवि सो चेव गमो पच्छित्तं चेव जह पंडो ॥ ३३०॥ उदएण वातियस्सा सविगारं जा ण होति संपत्ती। तच्चण्णियअसंवुडित दिट्ठंतो तत्थिमो होति ॥ ∴ ३५॥१॥ णावारूढो तच्चण्णितो तु दट्ठुं असंवुडमगारिं। ओवतिओ पुरिसेहिं झडित्ति धारिज्जमाणोऽवि ॥ २॥ एसो तु वातिगो हू अलभंतो सेवितुं अणायारं। कालंतरेण सोऽवि हु णपुंसगत्तेण परिणमति ॥ ३॥ दुविहो य होति कुंभी जातीकुंभी य वेदकुंभी य। जातीकुंभी वायण्हिओ हु सो भइएं दिक्खाए ॥ ४॥ होइ पुण वेदकुंभी असेवओ सुज्झते सि सागरियं। सोऽविय णिरुद्धबन्थी णपुंसगत्ताएं परिणमति ॥५॥ वेदुक्कडता ईसालुगो हु सेविज्जमाण दट्ठूणं। ण चएती धारेतुं णिरुब्भमाणो भवे ततितो ॥ ६॥ सउणी उक्कडवेओ चडओव्व अभिक्ख सेवए जो तु। सोऽविय णिरुद्धबन्थी णपुंसगत्ताएँ परिणमति ॥ ७॥ तक्कम्मसेवि जो खलु सेविय तं चेव लिहति साणव्व। सोऽविय अपडियरंतो णपुंसगत्ताएं परिणमति ॥ ८॥ एगे पक्खे उदओ एगे पक्खम्मि जस्स अप्पो तु। सो पक्खपक्खिओ हू सोवि णिरुद्धो भवे अपुमं ॥ ९॥ सागारियस्स गंधं जिंघति सोगंधिओ भवे स खलु। कालंतरेण सोऽवी अलभंतो परिणमे अपुमं ॥ ३४०॥ विग्गह अणुप्पवेसिय अच्छति सागारियंसि आसत्तो। ण य से भावोवसमो अलभंतो सोवि अपुम भवे ॥ १॥ गालिय दो भाऊगा जस्स हु सो वद्धिओ मुणेयव्वो। चिप्पिय बालस्सेव तु चिप्पित्तु विराहितो जस्स ॥ २॥ मंतेणुवहतवेदो अहवावी ओसहीहिं जस्स भवे। इसिसत्तदेवसत्ता इसिणा देवेण वा सत्ता ॥ ३॥ वद्धियमादि उवरिमा छच्च णपुंसा हवंति भयणिज्जा। जदि पडिसेवि ण दिक्खे अह णवि पडिसेवि तो दिक्खे ॥ ४॥ आदिल्लेसु दससुवि पव्वाविंतो हु पावए मूलं। जो पुण पव्वावेहा वदतेवं तस्स चउगुरुगा ॥५॥ जे पुण छत्तुवरिमगा पव्वाविंतस्स चउगुरू तेसु। वदमाणेऽविय गुरुगा किं वदतेसो इमं सुणसु ॥ ६॥ थीपुरिसा जह उदयं धरिंति झाणोववासणियमेहिं। एवमपुमंपि उदयं धरेज्ज जदि को तहिं दोसो? ॥ ७॥

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [०३४८]

दीप अनुक्रम [०३४८]

अहवा ततिए दोसो जायति इयरेसु किं न सो भवति ?। एवं खु नत्थि दिक्खा सवेदगाणं ण वा तित्थं ॥८॥ भण्णति थीपुरिसा खलु पत्तेयं दोसरहियठाणेसु। णिवसंती इयरो पुण कहिं छुब्भति दोसुवी दोसा ॥९॥ संवासफासदिट्ठीदोसा हू तस्स उभयसंवासे। अप्पत्थंबगदिट्ठंत जह राय मतो अवारंतो ॥३५०॥ एत्थंबगदिट्ठंतो अहवा जह वच्छो॑ मातरं दट्ठुं। अभिलसती मायाविय वच्छं दट्ठूण पण्हुयति ॥१॥ अंबं वा खज्जंतं दट्ठुं अहिलासो॑ होति अण्णस्स। सागारियादि दट्ठुं एव णपुंसे भवे दोसा ॥२॥ तम्हा हु ण दिक्खिज्जा एवं णाऊणमेत दोसगणं। बितियपदे दिक्खिज्जा इमेहिं अह कारणेहिं तु ॥३॥ असिवे ओमोदरिए रायदुट्ठे भए व आगाढे। गेलन्न उत्तिमट्ठे णाणे तह दंसण चरित्ते ॥.'. ३६॥४॥ रायदुट्ठभयेसुं ताणऽट्ठ णिवस्स चेव गमणट्ठा। वेज्जो व सयं तस्स व तप्पिस्सति वा गिलाणस्स ॥५॥ पडिचरगस्सऽसतीए एगागी उत्तिमट्ठपडिवण्णे। अहवावी अ(कु)सहाए वेयावच्चट्ठता दिक्खे ॥६॥ गुरुणो व अप्पणो वा णाणादी गिण्हमाणे॑ तप्पिहिति। अचरणदेसा णिंते तप्पे ओमाऽसिवेहिं वा ॥७॥ एतेहिं कारणेहिं आगाढेहिं तु जो तु णिक्खामे। पंडादी सोलसगं कयकज्जविगिंचणट्ठाए ॥८॥ तस्स विही होति इमो दिक्खिज्जंतस्स कारणज्जाए। सो पुण जाणिमजाणी जाणति जाणी तहा ततिओ ॥९॥ णवि कप्पति दिक्खेतुं तमुवट्ठित पण्णवेति अह एवं। तुज्झ ण कप्पति दिक्खा नाणादिविराहणा मा ते ॥३६०॥ जो पुण न जाणएवं तस्स विही होतिमा करेयव्वा। जणपच्चयट्ठताए जाणंतमजाणए वावि ॥१॥ कडिपट्ट भंड छिहली कत्तरि खुर लोय परमतं पाढे। धम्मकह सन्नि राउल ववहार विगिंचणं कुज्जा ॥.'.३७॥२॥ कडिपट्ट भंड छिहली कीरति ण विधम्म अम्ह चेवासी। कत्तरि खुरेणऽणिच्छे हाणी एक्केक जा लोओ ॥३॥ लोएवि कए पच्छा भिक्खुगमादीमताइं पाढिंति। तंपिय अणिच्छमाणो पाढिंती छलियकव्वाइं ॥४॥ ताणिवि अणिच्छमाणे धम्मकहा ताऽवि हू अणिच्छंते। परतित्थियवत्तव्वं दिज्जति ताहे ससमएवि ॥५॥ तंपिय अणिच्छमाणे उक्कमतो तस्स दिज्जए सुत्तं। अण्णण्णसुत्तपल्लव पुव्वावरओ असंबद्धं ॥६॥ वीयारगोयरे थेरसंजुतो रत्ति दूरि तरुणाणं। गाहेह मर्मपि ततो थेरा जत्तेण गाहिंति ॥७॥ वेरग्गकहा विसयाण णिंदणा उट्ठणिसियणे गुत्ता। चुक्कखलितम्मि बहुसो सरोसमिव तज्जए तरुणा ॥८॥ कतकज्जा से धम्मं कहिंति मुंचाहि लिंगमेयंति। मा हण दुएवि लोए अणुव्वता तुज्झ णो दिक्खा ॥९॥ इय पण्णविओ संतो जइ मुंचति लिंग तो उ रमणिज्जं। अह णवि मुंचति ताहे भेसिज्जति सो इमेहिंतो ॥३७०॥ सण्णि खरकम्मितो वा भेसेइ कओ इहेस किंचिद्वो। तेसासति रायकुले यदि सो ववहार मग्गिज्जा ॥१॥ एतेहिं दिक्खिओऽहं जतिविय लोगो ण याणते कोति। जह एतेहिं दिक्खितो॑ तो ते बिंती ण दिक्खेमो ॥२॥ अज्झाविओवि एतेहिं चेव पडिसेह किं वऽहीयं ते ?। छलियकहादी कड्ढति कत्थ जई कत्थ छलिताई ? ॥३॥ पुव्वावरसंजुत्तं वेरग्गकरं सतंतमविरुद्धं। पोराणमद्धमागहभासाणियतं हवति सुत्तं ॥४॥ जे सुत्तगुणाऽभिहिता तव्विवरीयाई गाहिओ पुव्विं। तेहिं चेव विवेगो जह एरिसयं भवति सुत्तं ॥५॥ णिववल्लह बहुपक्खम्मि वावि वुड्डंचगम्मि पव्वइए। वोसिरणं वोच्छामी विहीएँ जह कीरए तस्स ॥६॥ भिण्णकहाओ भट्ठं बिंती ण घडति इहं खु एरिसयं। परतित्थिगादि वयसू जदि वेती तुज्झ समयंति ॥७॥ इय होतुत्ती वोत्तूण णिग्गतो भिक्खमादिलक्खेणं। भिक्खुगमादी छोढुं विपलायंती पुणो तत्तो ॥८॥ कावालिए सरक्खे तच्चण्णियलिंगमादि वसभा तु। तं णिंतु देउलादिसु सुत्तं छड्डिउत्तु वसभेन्ति ॥९॥ तिविहो होति य जड्डो भास सरीरे य करणजड्डो य। भासाजड्डो चउहा जल एलग मम्मण दुमेहो॥ .'. ३८॥३८०॥ जह जलचुड्डो भासति जलमूओ एव भासइ अवत्तं। जह एलगोव्व एवं एलगमूगो बलबलेति ॥१॥ मम्मणमूओ बोव्बड खलेइ वाया हु अविसदा जस्स। दुम्मेहस्स ण किंची घोसंतस्सावि ठायइ हु ॥२॥ दंसणणाणचरित्ते तवे य समितीसु करणजोगे य। उवइट्ठंपि ण गेण्हति जलमूगो एलमूगो य ॥३॥ णाणादिऽट्ठा दिक्खा भासाजड्डो अपच्चलो तस्स। सो य बहिरो य णियमा गाहण उड्डाह अहिकरणं ॥४॥ तिविहो सरीरजड्डो पंथे भिक्खे तहेव वंदणए। एतेहिं कारणेहिं सरीरजड्डं ण दिक्खेज्जा ॥५॥ अद्धाणे पलिमंथो भिक्खायरियाए अपरिहत्थो य। उड्डुस्सासऽपरक्कम अहिअग्गीउदगमादीसु॥६॥ आगाढगिलाणस्स य असमाही वावि होज्ज मरणं वा। जड्डे पासेवि ठिए अण्णे य भवे इमे दोसा ॥७॥ सेदेण कक्खमादी कुच्छण धुवणुप्पिलावणे दोसा। णत्थि गलओ य चोरो णिंदियमुंडा य जणवादो ॥८॥ णेगे सरीरजड्डे एमादीया हवंति दोसा तु। तम्हा तं णवि दिक्खे गच्छ महल्ले वऽणुण्णाए ॥९॥ इरियासमिईभासेसणासु आदाणसमिइगुत्तीसु। णवि ठाति चरणकरणे कम्मुदएणं करणजड्डो ॥३९०॥ जलमूग एलमूगो अतिथूरसरीर करणजड्डो य। दिक्खंतस्सेते खलु चउगुरु सेसेसु मासलहू ॥१॥ भासाजड्डं मम्मण सरीरजड्डं च णातिथूरं च। जावज्जिय परियट्टे करणे जड्डं तु छम्मासे ॥२॥ मोत्तुं गिलाणकज्जे दुम्मेहं वावि पाढि छम्मासे। ताहे तं दुम्मेहं जोडविय करणम्मि सो जड्डो ॥३॥ छण्हुवरि तेसि दोण्हवि आयरिओ अण्ण गाहे॑ छम्मासा। पच्छा अण्णो ततिओ सोऽविय छम्मास परियट्टे ॥४॥ जोडविय तं गाहेती सिस्सो तस्सेव सो हवति ताहे। तहवि ण गिण्हे जदि हू कुलगणसंघे विगिंचणता ॥५॥ दुविहो य होति कीवो अभिभूओ चेव अणभिभूतो य। अभिभूतोऽविय दुविहो आलिद्धनिमंतणाकीवो

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [०३९७]

दीप अनुक्रम [०३९७]

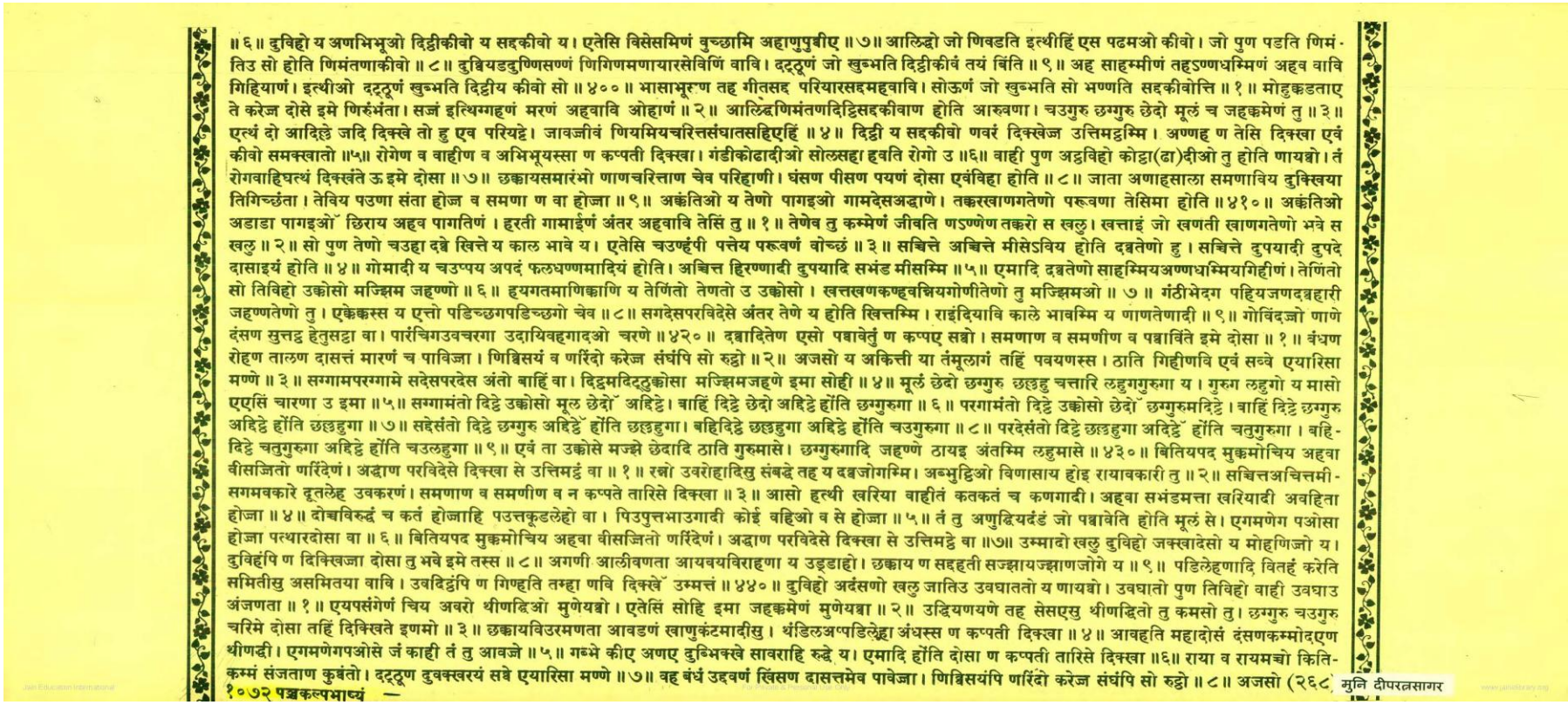

॥६॥ दुविहो य अणभिभूओ दिट्ठीकीवो य सद्दकीवो य। एतेसि विसेसमिणं वुच्छामि अहाणुपुबीए ॥७॥ आलिद्धो जो णिवडति इत्थीहिं एस पढमओ कीवो। जो पुण पडति णिमंतिउ सो होति णिमंतणाकीवो ॥८॥ दुब्बियडदुण्णिसण्णं णिगिणमणायारसेविणिं वावि। दट्ठूणं जो खुब्भति दिट्ठीकीवं तयं विंति ॥९॥ अह साहम्मीणं तहऽण्णधम्मिणं अहव वावि गिहियाणं। इत्थीओ दट्ठूणं खुब्भति दिट्ठीय कीवो सो ॥४००॥ भासाभूरण तह गीतसद्द परियारसद्दमहवावि। सोऊणं जो खुब्भति सो भण्णति सद्दकीवोत्ति ॥१॥ मोहुक्कडताए ते करेज्ज दोसे इमे णिरुभंता। सज्जं इत्थिग्गहणं मरणं अहवावि ओहाणं ॥२॥ आलिद्धणिमंतणदिट्ठिसद्दकीवाण होति आरुवणा। चउगुरु छग्गुरु छेदो मूलं च जहक्कमेणं तु ॥३॥ एत्थं दो आदिल्ले जदि दिक्खे तो हु एव परियट्टे। जावज्जीवं णियमियचरित्तसंघातसहिएहिं ॥४॥ दिट्ठी य सद्दकीवो णवरं दिक्खेज्ज उत्तिमट्ठम्मि। अण्णह ण तेसि दिक्खा एवं कीवो समक्खातो ॥५॥ रोगेण व वाहीण व अभिभूयस्सा ण कप्पती दिक्खा। गंडीकोढादीओ सोलसहा हवति रोगो उ ॥६॥ वाही पुण अट्ठविहो कोट्ठा(ढा)दीओ तु होति णायब्बो। तं रोगवाहिघत्थं दिक्खंते ऊ इमे दोसा ॥७॥ छक्कायसमारंभो णाणचरित्ताण चेव परिहाणी। घंसण पीसण पयणं दोसा एवंविहा होति ॥८॥ जाता अणाहसाला समणाविय दुक्खिया तिगिच्छंता। तेविय पउणा संता होज्ज व समणा ण वा होज्जा ॥९॥ अकंतिओ य तेणो पागइओ गामदेसअद्धाणे। तक्करखाणगतेणो परूवणा तेसिमा होति ॥४१०॥ अकंतिओ अडाडा पागइओ छिराय अहव पागतिणं। हरती गामाईणं अंतर अहवावि तेसिं तु ॥१॥ तेणेव तु कम्मेणं जीवति णऽण्णेण तक्करो स खलु। खत्ताइं जो खणती खाणगतेणो भवे स खलु ॥२॥ सो पुण तेणो चउहा दव्वे खित्ते य काल भावे य। एतेसि चउण्हंपी पत्तेय परूवणं वोच्छं ॥३॥ सचित्ते अचित्ते मीसेऽविय होति दव्वतेणो हु। सचित्ते दुपयादी दुपदे दासाइयं होति ॥४॥ गोमादी य चउप्पय अपदं फलधण्णमादियं होति। अचित्त हिरण्णादी दुपयादि सभंड मीसम्मि ॥५॥ एमादि दव्वतेणो साहम्मियअण्णधम्मियगिहीणं। तेणिंतो सो तिविहो उक्कोसो मज्झिम जहण्णो ॥६॥ हयगतमाणिक्काणि य तेणिंतो तेणतो उ उक्कोसो। खत्तखणकण्हवन्नियगोणीतेणो तु मज्झिमओ ॥७॥ गंठीभेदग पहियजणदव्वहारी जहण्णतेणो तु। एक्केक्कस्स य एत्तो पडिच्छगपडिच्छगो चेव ॥८॥ सगदेसपरविदेसे अंतर तेणे य होति खित्तम्मि। राइंदियावि काले भावम्मि य णाणतेणादी ॥९॥ गोविंदज्जो णाणे दंसण सुत्तट्ठ हेतुसट्ठा वा। पारंचिगउवचरगा उदायिवहगादओ चरणे ॥४२०॥ दव्वादितेण एसो पव्वावेतुं ण कप्पए सव्वो। समणाण व समणीण व पव्वाविंते इमे दोसा ॥१॥ बंधण रोहण तालण दासत्तं मारणं च पाविज्जा। णिव्विसयं व णरिंदो करेज्ज संघंपि सो रुट्ठो ॥२॥ अजसो य अकित्ती या तंमूलागं तहिं पवयणस्स। ठाति गिहीणवि एवं सव्वे एयारिसा मण्णे ॥३॥ सग्गामपरग्गामे सदेसपरदेस अंतो बाहिं वा। दिट्ठमदिट्ठुक्कोसा मज्झिमजहण्णे इमा सोही ॥४॥ मूलं छेदो छग्गुरु छल्लहु चत्तारि लहुगगुरुगा य। गुरुग लहुगो य मासो एएसिं चारणा उ इमा ॥५॥ सग्गामंतो दिट्ठे उक्कोसो मूल छेदो अदिट्ठे। बाहिं दिट्ठे छेदो अदिट्ठे होंति छग्गुरुगा ॥६॥ परगामंतो दिट्ठे उक्कोसो छेदो छग्गुरुमदिट्ठे। बाहिं दिट्ठे छग्गुरु अदिट्ठे होंति छल्लहुगा ॥७॥ सदेसंतो दिट्ठे छग्गुरु अदिट्ठे होंति छल्लहुगा। बहिदिट्ठे छल्लहुगा अदिट्ठे होंति चउगुरुगा ॥८॥ परदेसंतो दिट्ठे छल्लहुगा अदिट्ठे होंति चतुगुरुगा। बहिदिट्ठे चतुगुरुगा अदिट्ठे होंति चउलहुगा ॥९॥ एवं ता उक्कोसे मज्झे छेदादि ठाति गुरुमासे। छग्गुरुगादि जहण्णे ठायइ अंतम्मि लहुमासे ॥४३०॥ बितियपद मुक्कमोचिय अहवा वीसज्जितो णरिंदेणं। अद्धाण परविदेसे दिक्खा से उत्तिमट्ठं वा ॥१॥ रन्नो उवरोहादिसु संबद्धे तह य दव्वजोगम्मि। अब्भुट्ठिओ विणासाय होइ रायावकारी तु ॥२॥ सच्चित्तअचित्तमीसगमवकारे दूतलेह उवकरणं। समणाण व समणीण व न कप्पते तारिसे दिक्खा ॥३॥ आसो हत्थी खरिया वाहीतं कतकतं च कणगादी। अहवा सभंडमत्ता खरियादी अवहिता होज्जा ॥४॥ दोच्चविरुद्धं च कतं होज्जाहि पउत्तकूडलेहो वा। पिउपुत्तभाउगादी कोई वहिओ व से होज्जा ॥५॥ तं तु अणुद्धियदंडं जो पव्वावेति होति मूलं से। एगमणेग पओसा होज्जा पत्थारदोसा वा ॥६॥ बितियपद मुक्कमोचिय अहवा वीसज्जितो णरिंदेणं। अद्धाण परविदेसे दिक्खा से उत्तिमट्ठे वा ॥७॥ उम्मादो खलु दुविहो जक्खादेसो य मोहणिज्जो य। दुविहंपि ण दिक्खिज्जा दोसा तु भवे इमे तस्स ॥८॥ अगणी आलीवणता आयवयविराहणा य उड्डाहो। छक्काय ण सद्दहती सज्झायज्झाणजोगे य ॥९॥ पडिलेहणादि वितहं करेति समितीसु असमितया वावि। उवदिट्ठंपि ण गिण्हति तम्हा णवि दिक्खे उम्मत्तं ॥४४०॥ दुविहो अदंसणो खलु जातिउ उवघाततो य णायब्बो। उवघातो पुण तिविहो वाही उवघाउ अंजणता ॥१॥ एयपसंगेणं चिय अवरो थीणद्धिओ मुणेयब्बो। एतेसिं सोहि इमा जहक्कमेणं मुणेयब्बा ॥२॥ उद्धियणयणे तह सेसएसु थीणद्धितो तु कमसो तु। छग्गुरु चउगुरु चरिमे दोसा तहिं दिक्खिते इणमो ॥३॥ छक्कायविउरमणता आवडणं खाणुकंटमादीसु। थंडिलअप्पडिलेहा अंधस्स ण कप्पती दिक्खा ॥४॥ आवहति महादोसं दंसणकम्मोदएण थीणद्धी। एगमणेगपओसे जं काही तं तु आवज्जे ॥५॥ गब्भे कीए अणए दुब्भिक्खे सावराहि रुद्धे य। एमादि होंति दोसा ण कप्पती तारिसे दिक्खा ॥६॥ राया व रायमच्चो कितिकम्मं संजताण कुव्वंतो। दट्ठूण दुक्खरयं सवे एयारिसा मण्णे ॥७॥ वह बंधं उद्दवणं खिंसण दासत्तमेव पावेज्जा। णिव्विसयंपि णरिंदो करेज्ज संघंपि सो रुट्ठो ॥८॥ अजसो (२६८)

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [०४४९]

दीप अनुक्रम [०४४९]

य अकित्ती या तंमूलागं तहि य पवयणस्स। लोगस्स होति संका सबे एयारिसा णूणं ॥९॥ मुक्को व मोइओ वा अहवा वीसज्जितो णरिंदेणं। अद्धाण परविदेसे दिक्खा से उत्तिमट्ठे वा ॥४५०॥ दुविहो य होति दुट्ठो कसायदुट्ठो य विसयदुट्ठो य। दुविहो कसायदुट्ठो सपक्खपरपक्खचउभंगो ॥ १ ॥ सासवणाले मुहणंतए य उलुगच्छि सिहरिणि सपक्खे। सासवणाल सुसंभिय एगेण गुरूणमुवणीयं ॥ २ ॥ सबं गुरुणा खइयं इयरे कोवो य खामणा गुरुणा। अणुवसमंते उ गणे गणिं ठवेत्ताऽन्नहिं परिन्ना ॥३॥ पुच्छंतमणक्खाए सोबइ अण्णस्स (सव-णातो गंतु) कत्थ से देहं। गुरुणो पुबं कहिते दाई पडियरण दंतवहो ॥४॥ मुहणंतगस्स गहणे एमेव य गंतु णिसि गलग्गहणं। संमूढेणियरेणवि गलए गहिनो मया दोवि ॥५॥ अत्थं गतेवि सिबसि उलुगच्छी उक्खणामि तुह अच्छी। पढमगमो णवरि इहं उलुगच्छीउत्ति ढोंकेइ ॥६॥ सिहरिणि लुद्ध णिवेदे गुरूण सबादितंति उग्गिरणा। भत्तपरिण्णा अण्णहिं ण गच्छती सो इहं णवरि ॥७॥ परपक्खम्मि सपक्खे उदातिणिवमारतो जह व दुट्ठो। सो पवयणरक्खणट्ठा णिच्छुब्भति लिंग हातूणं ॥८॥ परपक्खि सपक्खे पुण जउणारायब्व सो तु भयणिज्जो। तं पुण अतिसयणाणी दिक्खेंतऽधिगारिणं णाउं ॥९॥ परपक्खे परपक्खे दंडियमादी पदुट्ठ परदेसे। उवसंते वाऽन्नत्थ उ दमगादि पदुट्ठ भयिनो वा ॥४६०॥ तिविहो य विसयदुट्ठो सलिंग गिहिलिंग अण्णलिंगे य। अहवा सबेवि दुहा सपक्खपरपक्खचउभंगो ॥ १ ॥ परपक्खविसयदुट्ठो सपक्ख पारंचिओ तु आउट्टो। अठियम्मि लिंगहरणं एमेव सपक्ख परपक्खे ॥ २ ॥ परपक्खं तु सपक्खे विसयपदुट्ठं ण तं तु दिक्खंति। सज्जि(ज्झि)यमादिपदुट्ठं ण य परपक्खं तु तत्थेव ॥ ३ ॥ दबदिसखेत्तकाले गणणा सारिक्ख अभिभवे वेदे। वुग्गाहणमण्णाणे कसायमत्ते य मूढपदा ॥४॥ दबि दुहा बहि अंतो अंतो धत्तूरगादि बहि धूमो। जावदवियं ण याणति घडियावोहब्ब दिट्ठंपि ॥५॥ दिसमूढो पुबमवरं मण्णति खेत्तम्मि खेत्तवच्चासं। दियरातिविवच्चासो काले पिंडारदिट्ठंतो ॥ ६ ॥ जह कोई पिंडारो खीर णिसट्ठाए पाउ(रत्ति) पासुत्तो। अब्भच्छण्णे उट्ठिओ मण्णति जह वट्टए रत्ती ॥ ७ ॥ महिसीओ पवि-संतो दिट्ठो लोएण हसियतो ताहे। किं एयंतिय भणियं एमादी कालमूढेसो ॥ ८ ॥ ऊणहियं मण्णंतो उट्टारूढो व गणणतो मूढो। सारिक्ख थाणुसरिसो महतरसंगामदिट्ठंतो ॥९॥ जह एक्के गामम्मी चोरा पडिया तु तत्थ जुद्धम्मि। सेणावति तहिं वहिओ सारिक्खो महतरो व णितो ॥४७०॥ सो णीय चोरपल्लिं इयरो दड्ढो य तेण गामेणं। बेति य चोरे महतरो णाहं सेणावती तुज्झं ॥ १ ॥ तो ते चोरा बिंती गहिओ एसो रणपिसायीते। तो णासिऊण तत्तो गामगतो बेंति तो नियगा ॥ २ ॥ दड्ढो सी अम्हेहिं किं देवेहिं जियावितो तं सी ?। इय सारिक्खविमूढा दोण्णिवि गामेल्ल चोरा य ॥३॥ अभिभूतो संमुज्झति सत्थग्गीवात(चोर)सावयादीहिं। अब्भुदय अणंगरती वेदंमी रायदिट्ठंतो ॥४॥ जह कोति रायपुत्तो बाल्ो अच्छीसु दुक्खमाणासु। मादुगहसारिसारियसंफुसण ठितो तु तुण्हिक्को ॥५॥ लद्धोवाउत्ति तओ एवमभिक्खं तु ताहे सा कुणति। सोऽविय विवद्धमाणो सत्तो तीए तु पासम्मि ॥ ६ ॥ तीयवि अणुप्पियं चिय पितुउवरमणे य तस्स रायत्तं। तहविय तं पडिसेवति सचिवादिणिसिज्झमाणोवि ॥ ७ ॥ वुग्गाहितो परेणं कज्जमकज्जं च ण मुणती जो तु। सो वुग्गाहणमूढो दिट्ठंता दीवजातादी ॥ ८ ॥ वणिदारग पियमहिल्लो तीय समं गमण वारिजाणेणं। गब्भिणि पोतविवत्ती समुद्दमज्झे फलगलग्गा ॥९॥ अंतरदीवुत्तिण्णा पसूयदारग विवद्धितो कमसो। तेण सह लग्ग वितिरिच्छपोतरूढा गता सपुरं ॥४८०॥ वुग्गाहिय तीय सुतो ण मुणति लोगेण भण्णमाणोऽवि। जह जणणि तवेसत्ती अगम्मगमणं ण वट्टति उ ॥ १ ॥ जह वा अणंगसेणो ण मुणति वुग्गाहियऽच्छराहिं तु। भित्तवयणं हियंपी जह वावि सुवण्णगारीणं ॥२॥ वुग्गाहितो तु बोहो मा हीरेज्जा सुवण्णकारेणं। तुज्झं तु मोरगाइं छाएमी तंबएण अहं ॥ ३ ॥ लोगो य तुमं भणिहिति हरियाइं मोरगाइं बोह! तुहं। तं मा हु पत्तियाही एवं च भणिजसी लोगं ॥४॥ जो एत्थं भूतत्थो तमहं जाणे कला य मासो य। सोऽविय एवं भणती वुग्गाहिय अहव अंधलगा ॥५॥ अंधलगब्भत्तणिवे सयणासणभत्तवसहिमादीहिं। सुपरिग्गहितंधलगा तेवि य धुत्तेण भणिता य ॥ ६ ॥ अहयम्मि अंधदासो अम्हं राया य अंधलगभत्तो। इह दुक्खिय तहिं वच्चह जह कयपुण्णोब दियलोयं ॥ ७ ॥ इय होतुत्ति य णेहिं णेतुं रत्तिं तु डोंगरंतेणं। वेढेऊण पुरिल्लो लावितु मग्गिलपट्टीए ॥ ८ ॥ आणह मे जं अत्थि एत्थ चोराण पतिभयं ठाणे। गेण्ह य पत्थर मा य हु कासति देहित्थ अल्लियितुं ॥९॥ भणिहिंति चोर तुब्भे केणेते अंधला वरागा तु। गिरिडोंगरा चढाविय पहणह ते पत्थरेहिं तु ॥४९०॥ इय वोत्तूण पलाओ घित्तूणं अत्थजातयं तेसिं। ते य पभाते दिट्ठा गोवादीएहिं भणिता य ॥ १ ॥ केणेते एव कता इय वुत्ते पत्थरेहिं ते पहया। णवि दिंति अल्लियावं वुग्गाहिय एवमादीया ॥ २ ॥ वणि-महिल मूढु दबे वेयम्मि य मूढु होति राया ऊ। वुग्गाहणमूढा पुण दीवादी सेस दबेवि ॥३॥ अण्णाणमूढ इणमो दाइज्जंतं पि कारणसतेहिं। जो सप्पहं ण याणति जच्चंधो चेव जह चंदं ॥४॥ कोहादिकसाओदयमूढो णवि जाणती मणूसो तु। इह य परम्मि य लोए हिताहितं कज्जऽकज्जं वा ॥५॥ दब्वेण य भावेण य दुविहो मत्तो तु होति णायबो। मज्जमदादी दब्वे माणट्ठविहेण भावम्मि ॥ ६ ॥ मोत्तूण वेदमूढं आदिल्लाणं तु णत्थि पडिसेहो। वुग्गाहण अण्णाणे कसायमूढो पडिकुट्ठो ॥ ७ ॥ सचित्तं च अचित्तं मीसगं जो अणं तु धारेति। समणाण

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [०४९८]

दीप अनुक्रम [०४९८]

व समणीण व ण कप्पते तारिसे दिक्खा ॥८॥ अयसो य अकित्ती या तंमूलागं तहिं पवयणस्स। अणचोप्पडझंझडिया सव्वे एतारिसा मण्णे ॥९॥ बितियपद दाणतोसिय अहवा वीसज्जितो पभूणं तु। अद्धाण परविदेसे दिक्खा से उत्तिमट्ठे वा ॥५००॥ चउरो य जुंगिया खलु जाती कम्मे य सिप्प सारीरे। जातीय पाणवरुडाडोंबाणिक्कारमादीया ॥१॥ पोसगसंवरणडलंखवाहसोयरियमच्छिगा कम्मे। पडकारा य परीहर(सह) रजगा कोसेज्जगा सिप्पे ॥२॥ करपादकण्णणासियओट्ठविहूणा य वामणा वडभा। खुज्जा पंगुलकुंटा काणा एते अदिक्खेया ॥३॥ पच्छा य होंति विगला आयरियत्तं ण कप्पए तेसिं। सीसो ठावेयव्वो काणगमहिसोव्व णिण्णम्मि ॥४॥ जे पुण जातीजुंगित कम्मे सिप्पे य तिण्णिवि ण दिक्खे। बितियपदे दिक्खेज्जा एएहिं कारणेहिं तु ॥५॥ जाहे य माहणेहिं परिभुत्तो कम्मसिप्पपडिविरतो। अद्धाण परविदेसे दिक्खा से अब्भणुण्णाया ॥६॥ कम्मे सिप्पे विज्जा मंते जोगेण चेव ओबद्धे। समणाण व समणीण व ण कप्पए तारिसे दिक्खा ॥७॥ कम्मं तु उड्डमादी सिप्पं सिक्किखज्जते गुरुविदेसा। लोहारादी तं पुण विज्जकलालेहमादीओ ॥८॥ अहवा विज्ज ससाहण मंतो पुण होति पढियसिद्धो तु। वसिकरणपादलेवादि ततो उ जोगा मुणेयव्वा ॥९॥ गोवालादी कम्मे ओबद्धा छिण्णऽछिण्ण कालेणं। दिण्णा अदिण्णभतिया दिण्णभतीया ण कप्पंति ॥५१०॥ सिप्पादी सिक्खंतो सिक्खाविंतस्स देंति जा सिक्खा। गहितम्मिवि सव्वंपी जव्विरकालं तु ओबद्धा ॥१॥ बंध वहो रोहो वा हविज्ज परिताव संकिलेसो वा। ओबद्धगम्मि दोसा अवन्न सुत्ते य परिहाणी ॥२॥ मुक्को व मोइओ वा अहवा वीसज्जितो णरिंदेण। अद्धाण परविदेसे दिक्खा से अब्भणुण्णाया ॥३॥ दिवसभयए व जत्ताभतीय कवालभयग उब्बत्ते। भयओ चतुव्विहो खलु ण कप्पते तारिसे दिक्खा ॥४॥ दिवसभयओ उ घिप्पइ छिण्णेण धण्णेण दिवसदेवसियं। जत्ता तु होति गमणं उभयं वा एत्तियधणेणं ॥५॥ कवाल उड्डमादी हत्थमितं कम्ममेत्तियधणेणं। एच्चिरकाले ध(व)त्ते कायव्वं एत्तियधणेणं ॥६॥ कतजत्तगहियमोल्लं दिक्खे अकयाय होति पडिसेहो। पवाविंते गुरुगा गहिए उड्डाहमादीणि ॥७॥ छिण्णमछिण्णे य धणे वावारे काल इस्सरे चेव। सुत्तत्थजाणएणं अप्पाबहुयं तु णायव्वं ॥८॥ वावारे काल धणे छिण्णमछिण्णे य होंति भंगट्ठ। साहिय गहिते य कते मोत्तुं सेसेसु दिक्खेंति ॥९॥ गहिए व अगहिते वा छिण्णधणे साधिते ण दिक्खंति। अच्छिण्णधणे कप्पति गहिते व अगहिते वावि ॥५२०॥ जत्थ पुण होति छिण्णं थोवो कालो य होति कम्मस्स। तत्थ अणिस्सरदिक्खा इस्सरो बंधंपि कारेज्जा ॥१॥ घेत्तुं समय समत्थो रायकुले अत्थहाणि कड्ढंते। फेल्लस्स तं ण कप्पति रोद्दोरसवीरिए भयणा ॥२॥ सेहस्सा णिप्फेडिय जो सेहं घेत्तु आसियाडेति। सो पुण वतेण केरिसो ण कप्पती आसियाडेतुं ॥३॥ अप्पडुपण्णो बालो सोलसवरिसूणो अहव अणिविट्ठो। अम्मापितुअविदिण्णो ण कप्पती तत्थ वऽण्णत्थ ॥४॥ ततियवतअतीयारो णिप्फेडण तेणसद्द भइणिजो। तेणे य तेणतेणे पडिच्छगपडिच्छगे चउहा ॥५॥ ततियवतस्सऽतियारो णिक्खाविंतस्स सेहमविदिण्णं। भयणा तेणगसद्दे होती इणमो समासेणं ॥६॥ जो सो अप्पडुपण्णो विरट्ठवरिसूण अहव अणिविट्ठो। तं दिक्खितऽविदिण्णं तेणो परतो अतेणो तु ॥७॥ अहवा मुंडित ससिहे भइयव्वो होति तेणसद्दो तु। एक्केक्कस्स य इत्तो चउभंगो होइमो कमसो ॥८॥ मुंडपभुपेल्लए या चउभंगो पढमततिय अणुण्णाया। ते हरमाणो अतेणो सेसेसु तु तेणओ होति ॥९॥ एव पभुससिहपिल्लग चउभंगो णूण एत्थवि तहेव। एतेण कारणेणं तेणगसद्दो तहिं भजितो ॥५३०॥ अहवऽण्णो चउभंगो ससिहेगं एक्को णेति इति एक्को। असिहम्मि होति बितिओ तेणा चत्तारि तत्थ इमे ॥१॥ जो गन्तु सयं णेती सो तेणो होति लोगउत्तरिओ। भिक्खादिगते तम्मि तु हरमाणो तेणतेणो तु ॥२॥ तं पुण पडिच्छमाणो पडिच्छओ तस्स जो पुणो मूला। गिण्हति एगंतरिओ पडिच्छगपडिच्छगो स खलु ॥३॥ तइयव्वताइयारो एवं णिंतस्स होइ सेहं तु। अण्णे य इमे दोसा गहणादीया भवे तस्स ॥४॥ अम्मापितरो कस्सति विपुलं घेत्तूण अत्थसारं तु। रायादीणं कहते कहियम्मि य गिण्हणादीया ॥५॥ विप्परिणमे व सण्णी केई संबंधिणो भवे तस्स। विप्परिणया य धम्मं मुएज्ज कुज्जा व गहणादी ॥६॥ आयरियउवज्झाया कुल गण संघो तहेव धम्मो य। सव्वेवि य परिचत्ता सेहं णिप्फेडयंतेणं ॥७॥ तम्हा तु ण हायव्वो बितियपदेणं हरेज्ज व कयादि। होही जुगप्पहाणो ण य दोसा तत्थ केति भवे ॥८॥ तो अतिसेसी दिक्खे ओहीमादी अमूढहत्थो वा। थिरहत्थो व अमूढो दिक्खेज्जा सो तहिं चेव ॥९॥ केति पुण मंदधम्मा बितियपदणिसेवियं ववदिसंति। वडपादवोविव जहा मूलविणट्ठा णहविलग्गा ॥५४०॥ णिप्फेडियमिच्छंता रक्खियमालंबणं ववदिसंति। मूलविणट्ठो व वडो जह चिट्ठति लग्गपादेसु ॥१॥ एवं तु मूलसुत्तं छड्डेतुं ते तु लग्ग साहासु। साकारण णिप्फेडी णिक्कारणओ य पडिकुट्ठो ॥२॥ जे केइ सेहदोसा बालादीता मए समक्खाता। ते चेव य सविसेसा गुव्विणि तह बालवच्छासु ॥३॥ कह ते तु संभवंती गब्भम्मी तम्मि चेव बाले य। दिट्ठा तु बालदोसा होज्ज कदादी णपुंसो वा ॥४॥ एवं अवसेसावी णवरं मोत्तूणिमे तहिं अणले। वुड्ढं जड्डसरीरं तेणं रायावकारिं च ॥५॥ दासमणत्तं च तहा ओबद्धं भतग सेहणिप्फेडिं। अवसेस अणलदोसा भइयव्वा गुव्विणीए उ ॥६॥ अहवावि गुव्विणीए अन्ने दोसा इमे भवंती हु। कायभवत्थो बिंबं चतिकिति वयणम्मि व मरेज्जा ॥७॥

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [०५४८]

दीप अनुक्रम [०५४८]

कीवे तेणे रायावकारि दुट्ठे य सेहणिप्फेडे। गुव्विणीए य जहक्कम वोच्छं आरोवणं इणमो ॥८॥ मूलं चतुगुरु पारंचिया दुवे चउगुरुं तओ मूलं। अहवाऽवकारि मोत्तुं सेहं वा सेस मूलं तु ॥९॥ पारंची मूलं वा अवकारिएँ सेहे होंति चउगुरुगा। सेसेसु ठाणएसुं चउगुरुगा हू मुणेयव्वा ॥५५०॥ बाले वुड्ढे कीवे जड्डे मत्ते अदंसणे चेव। करमादिजुंगिए वा जदि पच्छा होज्ज णिक्खंतो ॥१॥ गच्छे संगहियाणं संवासो तेसि होति णिद्दिट्ठो। ण विड(उ)त्ताणं णियमा एगट्ठाणे य पाएण ॥२॥ होज्जाहि गुव्विणीयवि जह पउमवतिव्व खुड्डमाया वा। तं तू उवस्सयम्मी भावियसड्ढेसु वा गोवे ॥३॥ जिणपवयणपडिकुट्ठो जो पव्वावेति लोभदोसेणं। चरितट्ठितो तवस्सी लोवेइ तमेव तु चरित्तं ॥४॥ पव्वाविओ सियत्ती सेसं पणगं अणायरणजोग्गं। अदुवा समायरंते पुरिमपदऽणिवारिया दोसा ॥५॥ पव्वावण मुंडावण सिक्खावणुवट्ठ भुंज संवसणा। पढमपदहीण सेसा पंच पदा तेहिं वज्जेन्ति ॥६॥ पव्वज्जा तु अभिहिया सा पुण होज्जा कहं तु पव्वज्जा?। तं वत्तुमणाऽऽयरिओ गाहासुत्तं इमं आह ॥७॥ छंदा रोसा परिजुण्णा, सुविणणाणा पडिस्सुता। सारणिया रोगिणिया, अणाढिया देवसण्णत्ती ॥.∴३९॥ ल० १०॥८॥ (व)च्छाणुबंधिया (१०) अजणियकण्णिया बहुजणस्स सम्मुदिया। अक्खाता संगारा वेयाकरणे सयंबुद्धा ॥.∴४०॥ ल० ११॥९॥ पल्लि सुराऽभय देवी वड तेतलि मूग वासुदेवे य। उद्दायण मण (१०) केसी जंबु पभव मल्लि सोम जिणा ॥.∴४१॥ ल० १२॥५६०॥ गामेगो चोर पडिया वत्थहिरण्णादि गेण्हितुं ते य। संपट्ठिते य पल्लिं रूववती महिलिया भणति ॥१॥ किं न हरह महिलाओ? चोरा चिंतंति इच्छिया महिला। णेतुं पल्लीवतिणो उवणीया तेण पडिवण्णा ॥२॥ तीय धवो सयणेणं भणितो किं बंदिगं ण मोएसि?। गंतूण चोरपल्लिं थेरीं ओलग्गए पयओ ॥३॥ किं ओलग्गसि पुत्ता! चोरेहिं भारिया इहाणीया। विरहे तीएँ कहेती इहागतो तुज्झ भत्तत्ति ॥४॥ कहिए तु चोरअहिवम्मि पउत्थे भणति अज्ज रत्तीए। पविसतु चोरहिवोकं पविट्ठे (पच्छा) सेणावती आओ ॥५॥ हेट्ठा आसंदि पवेस चोरहिवं भणति धुत्ति इणमो तु। जदि एज्ज मज्झ भत्ता तस्स तुमं किं करिजासि?॥६॥ चोराहिवाह सक्कारइत्त तुम देज्ज तो करे भिउडिं। आह ततो चोरहिवो दारं थंभम्मि उल्लंबे ॥७॥ वद्धेहिं वेढेज्जा तुट्ठा सण्णेति हेट्ठ संदीए। णीणेतुं चोरहिवो खंभे वद्धेहिं वेढेइ ॥८॥ सुणएण खइय वद्धे पासुत्ताणं च चोरअहिवस्स। सगअसिणा छेत्तूणं सीसं गहिइत्थिओ भण(चल)ति ॥९॥ णीणिज्जंती सीसं चोरहिवस्सा तु सा गहेऊणं। गालंती ऊ रुहिरं अह गच्छति मग्गतो तस्स ॥५७०॥ जाहे जातब्भासं ताहे सीसं तयं पमोत्तूणं। दसियाचीराईणि य साडिंति य जाति चिंधट्ठा ॥१॥ जाहे य णिट्ठिताइं ताहे तणपूलियाओ बंधंती। वच्चति अवयक्खंती पुणो पुणो मग्गतो सा तु ॥२॥ गोसे य पभायम्मी सेणहिवं घाइयं ततो दट्ठुं। लग्गा कुढेण चोरा पासंति य ताणि चिंधाणि ॥३॥ रुहिरदसिगादियाइं अणिच्छिया णिज्जइत्ति मण्णंता। तुरियं धावे कुढिया ताणिविय पभायकालम्मि ॥४॥ पंथस्स एगपासे ठियाणि कुढिएण जाव दिट्ठाइं। तं खीलेहि वितड्डिय महिलं घेत्तूण ते य गता ॥५॥ ते चोरा तं णेउं चोराहिवभाउगस्स उवणिंति। सा तेणं पडिवण्णा चोराहिवपट्टबंधम्मि ॥६॥ इतरोवि खीलएहिं वितड्डिओ अच्छती तु अडवीए। जूहाहिवणिज्जूढो अह एति अणीहुतो तहियं ॥७॥ तो कवितो दट्ठूणं कहिँ मण्णे एस दिट्ठपुव्वोत्ति। चिंतेऊणं सुचिरं संभरिता णियगजाती तु ॥८॥ अहमेतस्स तिगिच्छी आसि विसल्लोसहीय तं मोए। संरोहिणीएं तत्तो संरोहेत्ता वणे तस्स ॥९॥ लिहतिऽक्खरा अणिहुओ सोऽहं वेज्जो तवासि पुव्वभवे। संभारिय संभिण्णाणऽतो उ तो वाणरो कहते ॥५८०॥ जह जूहा णिच्छूढो साहिज्जं मज्झ कुणसु वरमित्ता!। आमंति तेण भणितो जूहं गंतूण ते लग्गा ॥१॥ दोण्ह विसेसमणातुं ण किंचि कासीय सो हु साहिज्जं। णट्ठो लुत्तविलुत्तो लिहति ततो अक्खरा पुरतो ॥२॥ किं साहिज्जं ण कतं? पुरिसाह ण जाण दोण्हवि विसेसं। तो तुट्ठो वाणरतो वणमालं अप्पणो विलए ॥३॥ लग्गे सेग पहारेण मारितुं चोरपल्लिमतिगंतुं। रत्तिं मारिय चोराहिवं तु तं गिण्हितुं इत्थिं ॥४॥ सग्गामं आणेत्ता इत्थिं उवणेति सयणवग्गस्स। वेरग्गसमाजुत्तो धिरत्थु इत्थीइ जो भोगो ॥५॥ मज्झत्थं अच्छंतं सयणो जंपति तु झायसे किण्णु?। किं वाऽसि कडुयकामो? भणती काहऽप्पणो छंदं ॥६॥ थेराणंतिय धम्मं सोतुं पव्वज्जमब्भुवेसी य। एसा छंदा भणिता अहुणा रोसा तु पव्वज्जा ॥७॥ सीसारक्खो रण्णो धम्मं सोऊण सावओ जातो। मा मारेही कंची उज्झित्तु असिं घरे दारुं ॥८॥ तप्पडिणिरायकहिए पिच्छामि असिंति सावएणुत्तं। सम्मद्दिट्ठीदेवयसारक्खिज्जोत्ति तो कट्ठं ॥९॥ दिव्वप्पभावमायसमयं तु दट्ठूण कुद्धो तो राया। णिज्जंति पच्चणीए सड्ढो तेसिं तु रक्खट्ठा ॥५९०॥ बेति णरिंदं अह सो मा एतेसिं तु रूसहा तुब्भे। जं जंपियमेतेहिं तं सव्वं णरवर! तहेव ॥१॥ ताहे छोढूण पुणो णिक्कुट्ठ असी तु णवरि दारुमओ। दिट्ठो णरवसभेणं विम्हइओ बेति किं एयं?॥२॥ जंपति सड्ढो ताहे णरवर! देवप्पसाद इच्छेसो। पावविवज्जी उ णरा हवंति देवाणऽवी पुज्जा ॥३॥ तो तुट्ठो भणति णिवो सेवसु एमेव दारुअसिणा उ। कडगादीहि य पूजितो पावितो सुमहंतमिस्सरियं ॥४॥ कालगयम्मि य सड्ढे पुत्तो णामेण चंडकण्होत्ति। पडिवण्णो तं भोगं सामंते पुणऽणमंतम्मि ॥५॥ पेसेति चंडकण्हं गंतूणं घेत्तु सजियमाणेति। तुट्ठो य भणति राया किं देमि अहाह सो इणमो ॥६॥ जं खज्जपेज्जभोज्जं गेण्हेज्ज पुरिम्मि तं तु सुग्गहियं। इय होतुत्ति य

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [०५९७]

दीप अनुक्रम [०५९७]

भणिए वारुणिपाणप्पमादेणं ॥ ७ ॥ रत्तिं चिरस्स सगिहं आगच्छति भज्जमातरो तस्स । दुहिया जग्गंतीओ उण्णिद्दा अण्णदा रत्तिं ॥ ८ ॥ चिरकत दारं पिहए अह वदती आगतो तु सो दारं । उग्घाडंतो जणणिं वएंसु जत्थेरिसे वेले ॥ ९ ॥ उग्घाडिय दाराइं तहियं वच्चत्ति मातु रुसितो तु । सो हुग्घाडियदारुत्ति गन्तु साहूणमल्लियओ ॥ ६०० ॥ पव्वावेह लवेई तेऽविय मत्तोत्तिकातु वक्खेवं । चिंती गोसग्गम्मी पभाते पव्वावइस्सामो ॥ १ ॥ सयमेव कुणति लोयं ताहे लिंगं दलंति जतिणो तु । पव्वाविंती विहिणा एसा रोसा तु पव्वज्जा ॥ २ ॥ दमगं भइयं कम्मं कुणमाणं दट्ठु सावओ पुच्छे । केवतिभतीय कम्मं करेसि ? पाएण पच्चाह ॥ ३ ॥ दाहामी पतिदिवसं तव पादं गंतु साहुणो बूहि । सावेण पेसिओ हं करेज्ज जं आणवे साहू ॥ ४ ॥ साहू भणंति दमगं जो पव्वइउं करेति कम्मऽम्हं । तं कारवेमु ण गिहिं पव्वइओ दव्वओ ताहे ॥ ५ ॥ साहू भणंति दिवसं पढियव्वं जं च देमु उवएसं । एयं कम्मं अम्हं सिक्खं दुविहंपि गाहिंति ॥ ६ ॥ कतिवय दिवस गतेहिं अह सड्ढो भणति तं भतिं गेण्ह । उक्कोसगभत्तेणं सुहितो रत्तो लवे इणमो ॥ ७ ॥ अच्छतु तुब्भं हत्थे जति ता मग्गे तदा दलेज्जाहि । कतिवय दिवसेहिं ततो अभिगयधम्मो उवट्ठियओ ॥ ८ ॥ परिजुण्णेसा भणिता सुविणे देवीएँ पुप्फचूलाए । नरगाण दंसणेणं पव्वज्जाऽऽवस्सए वुत्ता ॥ ९ ॥ चतुरो तु गोणपाला सत्था हीणं जतिं तु अडवीए । पडिलाभिंति पहट्ठा दोहिं दुगुंछाइयं तहियं ॥ ६१० ॥ दियलोगगता तत्तो चइतु दुगुंछा दसण्णि दासत्तं । तत्तो मिगा य हंसा सोवागा चित्तसंभूता ॥ १ ॥ अदुगुंछी तित्थगरं पुच्छति किं सुलभदुलभबोहीऽम्हे । तित्थंकराह विग्घं अम्मापितरो करेहिंति ॥ २ ॥ तो ओहिनाण पासित्तु माहणपुत्तत्त णगरमुसुगारे । सो माहणो अपुत्तो पुच्छति णेमित्तिए वहवे ॥ ३ ॥ ते काउ समणरूवं उसुगारपुरम्मि आगता कहए । बहुजण तीतादीणिं तो पुच्छे माहणो ते उ ॥ ४ ॥ होज्जऽम्ह किं चडवचं पच्चाह चुया दिया तु होहिंति । दो जमलदारगा तू कुमारगा पव्वइस्संति ॥ ५ ॥ मा तेसि करेज्जासी विग्घमवस्सं च तेसि पव्वज्जा । होही वोत्तूण गता चइउं उववन्नया तेसिं(सु) ॥ ६ ॥ बालत्तऽम्मापितरो भणंति समणाण सरिसरूवेणं । रक्खस माणुसखागा भमंति दट्ठूण ते पुत्ता ! ॥७॥ मा तेसि अल्लिएज्जह दूरंदूरेण परिहरिज्जाह । मा भक्खेज्जा ते भे तेसिं वयणं पडिसुणेंति ॥ ८ ॥ रत्थादि जत्थ पासंति संज्जते ते तओ पलायंति । अह अन्नया नगरं बहिं चेडे पासंति वंदंते ॥ ९ ॥ बिंति य अम्मापितरो दिट्ठऽम्हे चेड वंदमाणा तु । णवि समणरूवि रक्खस भक्खिंति व चेडरूवाइं ॥ ६२० ॥ चिंतें-तऽम्मापितरो अतिवीसत्था इमे हु जायत्ति । मा पव्वएज्ज इहतिं अहियमाणा तु समणाणं ॥ १ ॥ सउवज्झाया एते वइयं णिज्जंतु तत्थऽहिज्जंतु । इय संचिंतेऊणं वइयं णीता ततो तेहिं ॥ २ ॥ वइयाएँ समीवम्मी मणाभिरामो तु अत्थि वडरुक्खो । अह अण्णदा कदाई ते तु रमंता गता तहियं ॥ ३ ॥ सत्था हीणा य जती तिसियकिलंता तु आगता तहियं । एत्थ करेमो भिक्खं वडहेट्ठा पट्टिता तत्तो ॥ ४ ॥ तो ते भयाभिभूता चेड विलग्गा तमेव वडरुक्खं । जतिणोऽविय तस्स हेट्ठा ठातुं पविसंति भिक्खट्ठा ॥५॥ णवरि पवत्तिंति गुरू तहियं अज्झयण णलिणगुम्मंति । ता ते सरंति जातिं ओयरितुं वंदितुं बिंति ॥ ६ ॥ अम्मापितरो पुच्छित्तु पव्वज्जं अब्भुवेमो सेसं तु । जह उसुगारज्झयणे वक्खातं सुत्तआलावे ॥ ७ ॥ एसा पडिस्सुता खलु पव्वजा सारणी तु णातेसु । चोद्दसमे अज्झयणे जह तेतलि पोट्टिला बोहे ॥ ८ ॥ पतिठाणे जुवराया राहायरियाण पासि णिक्खंतो । तगराएँ तस्स भगिणी दिण्णा जितसत्तुरायस्स ॥ ९ ॥ तगरगताण कदायी उज्जेणीओ य आगतो साहू । राहगुरुपुच्छऽणावाह वेंति वाहेति रायसुतो ॥ ६३० ॥ पुत्तो पुरोहियस्स य दोऽवेते णिवघरम्मि वाहंति । तं सोतुं जुवणिवमुणी वेती मम नत्तुओ सो तु ॥ १ ॥ सासेमि तं दुरप्पं आपुच्छिय गुरु गतो उ उज्जेणिं । णिरुवसग्गं तु पुट्ठा तं चेव कहिंति से जतिणो ॥२॥ भिक्खट्ठ णिग्गयम्मि य भणितो अच्छाहि आणइ-स्सामो । भत्तट्ठ अत्तलाभीति वेति दंसेह णिवओकं ॥ ३ ॥ दंसेतूण णियत्तो खुड्डो इयरो व गंतु णिवओकं । सद्देण महंतेणं अह कुणती धम्मलाभं तु ॥ ४ ॥ तो तेहिं सो तु दिट्ठो परितु-ट्टेहिं च णेहिं सो गहिओ । भणितो त णच्चसुत्ती इय होतू तेण ते भणिता ॥ ५ ॥ गायह तुब्भे हि ततो ते तु पगीता पणच्चिओ साहू । ता ते उवद्दवित्ता साधुणा खित्तिया दोवि ॥ ६ ॥ पुणरवि वेंती गायसु तुमं तु अम्हे उ णच्चिमो इण्हिं । इय होतुत्ति य भणिते पणच्चिता ताहे ते दोवि ॥ ७ ॥ पुणरविय विद्दवेत्ता गोवालग ! विद्दवेह किं एयं । भणिता ते साधूणं बिंति य किं सवसि तं अम्हे ? ॥ ८ ॥ देहि तु जुद्धं अम्हं लविता साहूण दोण्णिवी समगं । आगच्छहत्ति सिग्घं तो ते आधाविता तुरितं ॥ ९ ॥ आधावेंता य तत्तो घेत्तुं बाहासु दोवि साहूणं । तह विद्दुताऽणेण दुतं जह संधि विसंधिता सव्वे ॥ ६४० ॥ उत्ताणए महीए पाडेतुं णिग्गतो तु सो तत्तो । उज्जाणं गंतूणं झायति झाणं गुणसमग्गो ॥ १ ॥ अह ते दट्ठुं णिहते संभंतो परिजणो कहे रन्नो । रायाविय संभंतो आगंतु णियच्छती ते तु ॥ २ ॥ पुच्छे तेऽवीय जती बिंति य णेत्थऽम्ह पविसते कोई । णवरिक्को पाहुणओ आगतो ण य तं तु जाणामो ॥ ३ ॥ ताहे उज्जाणादिसु रण्णा गविसाविओ य दिट्ठो य । गंतूण सयं राया चलणेसु णिवडिओ जतिणो ॥ ४ ॥ बेई य जं इमेहिं अवरद्धं तं खमाहिसी भंते ! । जंपति साधू जदि णिक्खमंति मोक्खामि तो णवरं ॥ ५ ॥ सण्णाओ अवरेहिं एस कुमारस्स माउलो सो उ । बहुसो निब्बंध कते पडिवण्णा जाहे ते दोवि ॥ ६ ॥ ताहे गंतूण तहिं दोण्णिवि घेत्तूण तेण बाहासु । तह णं खलंखलीकित जह संधी सिं पुणो लग्गा ॥ ७ ॥ णिक्खामेतुं दोण्णिवि सूरिसगासं तु णीणिया तेणं । चिंतेइ रायतणओ साधु कतं मातुलेण ममं ॥ ८ ॥ मम हियमिच्छंतेणं (२६९)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [०६४९] दीप अनुक्रम [०६४९]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

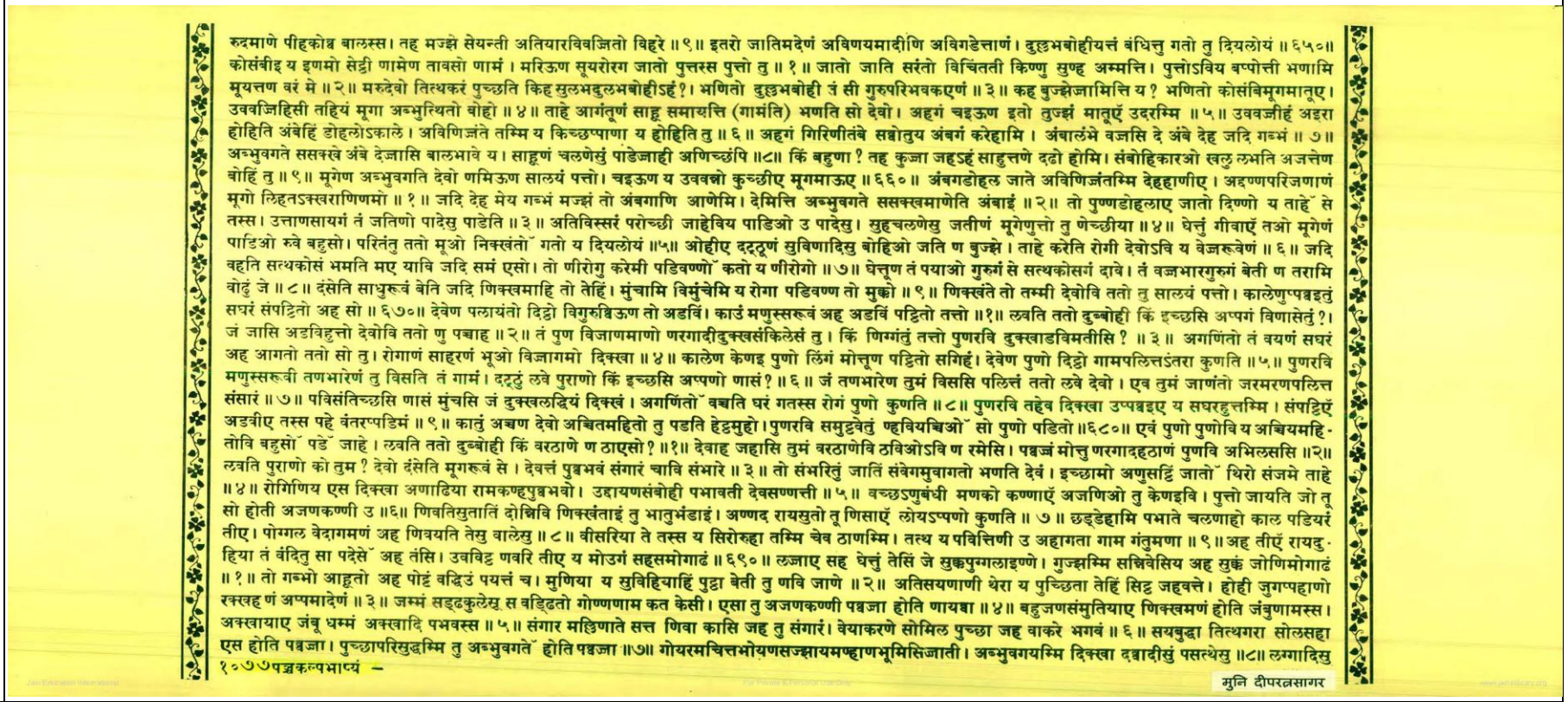

रुदमाणे पीहकोव्व बालस्स। तह मज्झे सेयन्ती अतियारविवज्जितो विहरे ॥९॥ इतरो जातिमदेणं अविणयमादीणि अविगडेत्ताणं। दुल्लभबोहीयत्तं बंधित्तु गतो तु दियलोयं ॥६५०॥ कोसंबीइ य इणमो सेट्ठी णामेण तावसो णामं। मरिऊण सूयरोरग जातो पुत्तस्स पुत्तो तु ॥१॥ जातो जाति सरंतो विचिंतती किण्णु सुण्ह अम्मत्ति। पुत्तोऽविय बप्पोत्ती भणामि मूयत्तण वरं मे ॥२॥ मरुदेवो तित्थकरं पुच्छति किह सुलभदुलभबोहीऽहं?। भणितो दुल्लभबोही तं सी गुरुपरिभवकएणं ॥३॥ कह बुज्झेज्जामित्ति य? भणितो कोसंबिमूगमातूए। उववज्जिहिसी तहियं मूगा अब्भुत्थितो वोहो ॥४॥ ताहे आगंतूणं साहू समायत्ति (गामंति) भणति सो देवो। अहगं चइऊण इतो तुज्झं मातूएँ उदरम्मि ॥५॥ उववज्जीहं अइरा होहिति अंबेहिं डोहलोऽकाले। अविणिज्जंते तम्मि य किच्छप्पाणा य होहिति तु ॥६॥ अहगं गिरिणीतंबे सव्वोतुय अंबगं करेहामि। अंबालंभे वज्जसि दे अंबे देह जदि गब्भं ॥७॥ अब्भुवगते ससक्खे अंबे देज्जासि बालभावे य। साहूणं चलणेसुं पाडेज्जाही अणिच्छंपि ॥८॥ किं बहुणा? तह कुज्जा जहऽहं साहुत्तणे दढो होमि। संबोहिकारओ खलु लभति अजत्तेण बोहिं तु ॥९॥ मूगेण अब्भुवगति देवो णमिऊण सालयं पत्तो। चइऊण य उववन्नो कुच्छीए मूगमाऊए ॥६६०॥ अंबगडोहल जाते अविणिज्जंतम्मि देहहाणीए। अइण्णपरिजणाणं मूगो लिहतऽक्खराणिणमो ॥१॥ जदि देह मेय गब्भं मज्झं तो अंबगाणि आणेमि। देमित्ति अब्भुवगते ससक्खमाणेति अंबाइं ॥२॥ तो पुण्णडोहलाए जातो दिण्णो य ताहें से तस्स। उत्ताणसायगं तं जतिणो पादेसु पाडेति ॥३॥ अतिविस्सरं परोच्छी जाहेविय पाडिओ उ पादेसु। सुहचलणेसु जतीणं मूगेणुत्तो तु णेच्छीया ॥४॥ घेत्तुं गीवाएँ तओ मूगेणं पाडिओ रुवे बहुसो। परितंतु ततो मूओ निक्खंतो गतो य दियलोयं ॥५॥ ओहीए दट्ठूणं सुविणादिसु बोहिओ जति ण बुज्झे। ताहे करेति रोगी देवोऽवि य वेज्जरूवेणं ॥६॥ जदि वहति सत्थकोसं भमति मए यावि जदि समं एसो। तो णीरोगु करेमी पडिवण्णो कतो य णीरोगो ॥७॥ घेत्तूण तं पयाओ गुरुगं से सत्थकोसगं दावे। तं वज्जभारगुरुगं बेती ण तरामि वोढुं जे ॥८॥ दंसेति साधुरूवं बेति जदि णिक्खमाहि तो तेहिं। मुंचामि विमुंचेमि य रोगा पडिवण्ण तो मुक्को ॥९॥ णिक्खंते तो तम्मी देवोवि ततो तु सालयं पत्तो। कालेणुप्पन्नइतुं सघरं संपट्टितो अह सो ॥६७०॥ देवेण पलायंतो दिट्ठो विगुरुव्विऊण तो अडविं। काउं मणुस्सरूवं अह अडविं पट्टितो तत्तो ॥१॥ लवति ततो दुब्बोही किं इच्छसि अप्पगं विणासेतुं?। जं जासि अडविहुत्तो देवोवि ततो णु पच्चाह ॥२॥ तं पुण विजाणमाणो णरगादीदुक्खसंकिलेसं तु। किं णिग्गंतुं तत्तो पुणरवि दुक्खाडविमतीसि? ॥३॥ अगणिंतो तं वयणं सघरं अह आगतो ततो सो तु। रोगाणं साहरणं भूओ विज्जागमो दिक्खा ॥४॥ कालेण केणइ पुणो लिंगं मोत्तूण पट्टितो सगिहं। देवेण पुणो दिट्ठो गामपलित्तऽंतरा कुणति ॥५॥ पुणरवि मणुस्सरूवी तणभारेणं तु विसति तं गामं। दट्ठुं लवे पुराणो किं इच्छसि अप्पणो णासं? ॥६॥ जं तणभारेण तुमं विससि पलित्तं ततो लवे देवो। एव तुमं जाणंतो जरमरणपलित्त संसारं ॥७॥ पविसंतिच्छसि णासं मुंचसि जं दुक्खलद्धियं दिक्खं। अगणिंतो वच्चति घरं गतस्स रोगं पुणो कुणति ॥८॥ पुणरवि तहेव दिक्खा उप्पन्नइए य सघरहुत्तम्मि। संपट्टिएँ अडवीए तस्स पहे वंतरप्पडिमं ॥९॥ कातुं अच्चण देवो अच्चितमहितो तु पडति हेट्ठमुहो। पुणरवि समुट्ठवेतुं ण्हवियच्चिओ सो पुणो पडितो ॥६८०॥ एवं पुणो पुणोवि य अच्चियमहितोवि बहुसो पडे जाहे। लवति ततो दुब्बोही किं वरठाणे ण ठाएसो? ॥१॥ देवाह जहासि तुमं वरठाणेवि ठविओऽवि ण रमेसि। पव्वज्जं मोत्तु णरगादहठाणं पुणवि अभिलससि ॥२॥ लवति पुराणो को तुम? देवो दंसेति मूगरूवं से। देवत्तं पुव्वभवं संगारं चावि संभारे ॥३॥ तो संभरितुं जातिं संवेगमुवागतो भणति देवं। इच्छामो अणुसट्ठिं जातो थिरो संजमे ताहे ॥४॥ रोगिणिय एस दिक्खा अणाढिया रामकण्हपुव्वभवो। उद्दायणसंबोही पभावती देवसण्णत्ती ॥५॥ वच्छऽणुबंधी मणको कण्णाएँ अजणिओ तु केणइवि। पुत्तो जायति जो तु सो होती अजणकण्णी उ ॥६॥ णिवतिसुतातिं दोन्निवि णिक्खंताइं तु भातुभंडाइं। अण्णद रायसुतो तू णिसाएँ लोयऽप्पणो कुणति ॥७॥ छड्डेहामि पभाते चलणाहो काल पडियरं तीए। पोग्गल वेदागमणं अह णिवयति तेसु बालेसु ॥८॥ वीसरिया ते तस्स य सिरोरुहा तम्मि चेव ठाणम्मि। तत्थ य पवित्तिणी उ अहागता गाम गंतुमणा ॥९॥ अह तीएँ रायदुहिया तं वंदितु सा पदेसें अह तंसि। उवविट्ठ णवरि तीए य मोउगं सहसमोगाढं ॥६९०॥ लज्जाए सह घेत्तुं तेसिं जे सुक्कपुग्गलाइण्णे। गुज्झम्मि सन्निवेसिय अह सुक्कं जोणिमोगाढं ॥१॥ तो गब्भो आहूतो अह पोट्टं वड्ढिउं पयत्तं च। मुणिया य सुविहियाहिं पुट्ठा वेती तु णवि जाणे ॥२॥ अतिसयणाणी थेरा य पुच्छिता तेहिं सिट्ठ जहवत्ते। होही जुगप्पहाणो रक्खह णं अप्पमादेणं ॥३॥ जम्मं सड्ढकुलेसु स वड्ढितो गोण्णणाम कत केसी। एसा तु अजणकण्णी पव्वज्जा होति णायव्वा ॥४॥ बहुजणसंमुतियाए णिक्खमणं होति जंबुणामस्स। अक्खायाए जंबू धम्मं अक्खादि पभवस्स ॥५॥ संगार मछिणाते सत्त णिवा कासि जह तु संगारं। वेयाकरणे सोमिल पुच्छा जह वाकरे भगवं ॥६॥ सयबुद्धा तित्थगरा सोलसहा एस होति पव्वज्जा। पुच्छापरिसुद्धम्मि तु अब्भुवगतें होति पव्वज्जा ॥७॥ गोयरमचित्तभोयणसज्झायमण्हाणभूमिसिजाती। अब्भुवगयम्मि दिक्खा दव्वादीसुं पसत्थेसु ॥८॥ लग्गादिसु

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [०६९९]

दीप अनुक्रम [०६९९]

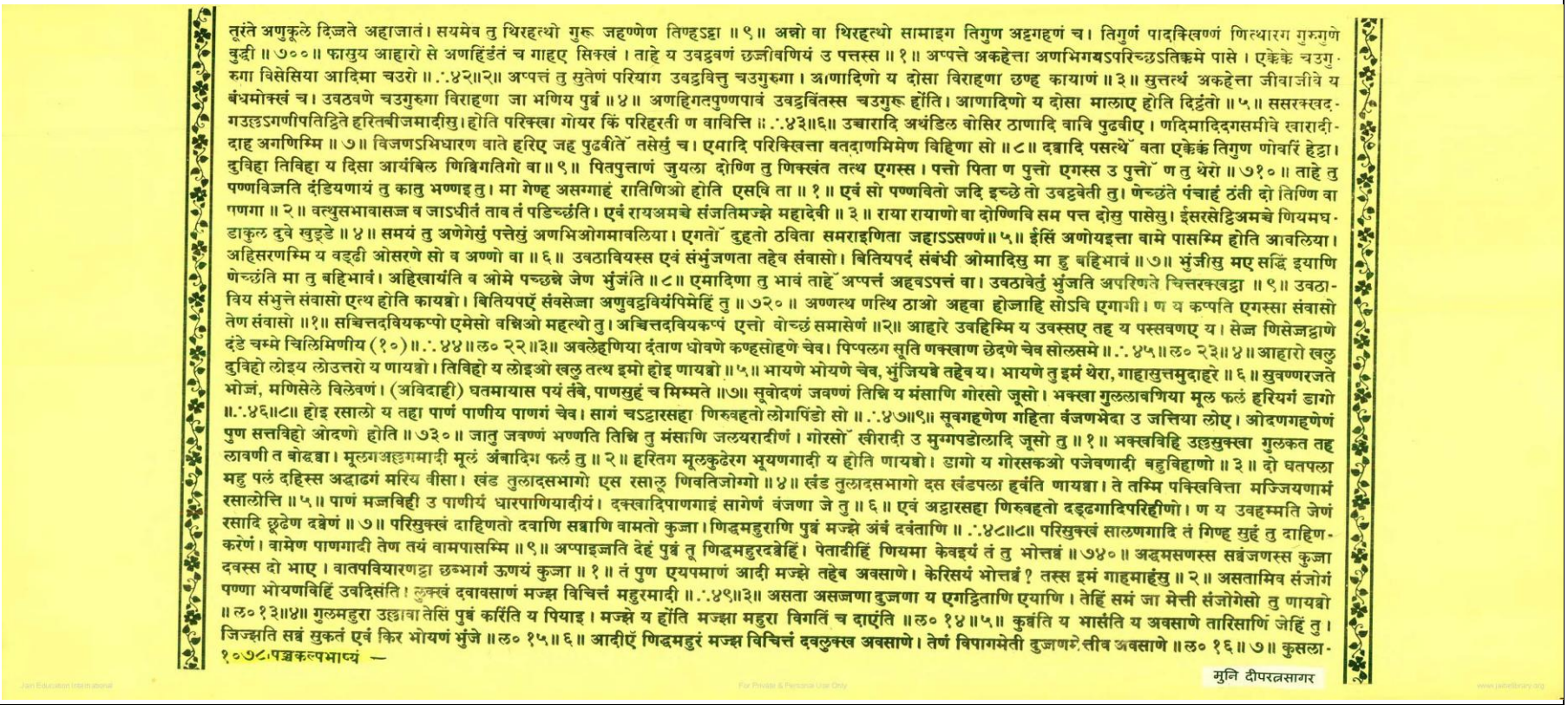

तूरंते अणुकूले दिज्जते अहाजातं। सयमेव तु थिरहत्थो गुरू जहण्णेण तिण्हऽट्ठा ॥९॥ अन्नो वा थिरहत्थो सामाइग तिगुण अट्ठगहणं च। तिगुणं पादक्खिणं णित्थारग गुरुगुणे बुद्धी ॥७००॥ फासुय आहारो से अणहिंडंतं च गाहए सिक्खं। ताहे य उवट्ठवणं छज्जीवणियं उ पत्तस्स ॥१॥ अप्पत्ते अकहेत्ता अणभिगयऽपरिच्छऽतिक्कमे पासे। एक्केक्के चउगुरुगा विसेसिया आदिमा चउरो ॥.४२॥२॥ अप्पत्तं तु सुतेणं परियाग उवट्ठविंतु चउगुरुगा। आणादिणो य दोसा विराहणा छण्ह कायाणं ॥३॥ सुत्तत्थं अकहेत्ता जीवाजीवे य बंधमोक्खं च। उवठवणे चउगुरुगा विराहणा जा भणिय पुव्वं ॥४॥ अणहिगतपुण्णपावं उवट्ठविंतस्स चउगुरू होंति। आणादिणो य दोसा मालाए होति दिट्ठंतो ॥५॥ ससरक्खद-गउल्लऽगणीपतिट्ठिते हरितबीजमादीसु। होति परिक्खा गोयर किं परिहरती ण वावित्ति ॥.४३॥६॥ उच्चारादि अथंडिल वोसिर ठाणादि वावि पुढवीए। णदिमादिदगसमीवे खारादी-दाह अगणिम्मि ॥७॥ विजणऽभिधारण वाते हरिए जह पुढवीतें तसेसुं च। एमादि परिक्खित्ता वतदाणमिमेण विहिणा सो ॥८॥ दव्वादि पसत्थें वता एक्केक्कं तिगुण णोवरिं हेट्ठा। दुविहा तिविहा य दिसा आयंबिल णिव्विगतिगो वा ॥९॥ पितपुत्ताणं जुयला दोण्णि तु णिक्खंत तत्थ एगस्स। पत्तो पिता ण पुत्तो एगस्स उ पुत्तो ण तु थेरो ॥७१०॥ ताहे तु पण्णविज्जति दंडियणायं तु कातु भण्णइ तु। मा गेण्ह असग्गाहं रातिणिओ होति एसवि ता ॥१॥ एवं सो पण्णवितो जदि इच्छे तो उवट्ठवेती तु। णेच्छंते पंचाहं ठंती दो तिण्णि वा णगा ॥२॥ वत्थुसभावासज्ज व जाऽधीतं ताव तं पडिच्छंति। एवं रायअमच्चे संजतिमज्झे महादेवी ॥३॥ राया रायाणो वा दोण्णिवि सम पत्त दोसु पासेसु। ईसरसेट्ठिअमच्चे णियमघ-डाकुल दुवे खुड्डे ॥४॥ समयं तु अणेगेसुं पत्तेसुं अणभिओगमावलिया। एगतो दुहतो ठविता समराइणिता जहाऽऽसण्णं ॥५॥ ईसिं अणोयइत्ता वामे पासम्मि होति आवलिया। अहिसरणम्मि य वड्ढी ओसरणे सो व अण्णो वा ॥६॥ उवठावियस्स एवं संभुंजणता तहेव संवासो। वितियपदं संबंधी ओमादिसु मा हु बहिभावं ॥७॥ भुंजीसु मए सद्धिं इयाणि णेच्छंति मा तु बहिभावं। अहिखायंति व ओमे पच्छन्ने जेण भुंजंति ॥८॥ एमादिणा तु भावं ताहें अप्पत्तं अहवऽपत्तं वा। उवठावेतुं भुंजति अपरिणते चित्तरक्खट्ठा ॥९॥ उवठा-विय संभुत्ते संवासो एत्थ होति कायव्वो। वितियपएँ संवसेज्जा अणुवट्ठवियंपिमेहिं तु ॥७२०॥ अण्णत्थ णत्थि ठाओ अहवा होज्जाहि सोऽवि एगागी। ण य कप्पति एगस्सा संवासो तेण संवासो ॥१॥ सचित्तदवियकप्पो एमेसो वन्निओ महत्थो तु। अचित्तदवियकप्पं एत्तो वोच्छं समासेणं ॥२॥ आहारे उवहिम्मि य उवस्सए तह य पस्सवणए य। सेज्ज णिसेज्जट्ठाणे दंडे चम्मे चिलिमिणीय (१०)॥.४४॥ल० २२॥३॥ अवलेहणिया दंताण धोवणे कण्हसोहणे चेव। पिप्पलग सूति णक्खाण छेदणे चेव सोलसमे ॥.४५॥ल० २३॥४॥ आहारो खलु दुविहो लोइय लोउत्तरो य णायव्वो। तिविहो य लोइओ खलु तत्थ इमो होइ णायव्वो ॥५॥ भायणे भोयणे चेव, भुंजियव्वे तहेव य। भायणे तु इमं थेरा, गाहासुत्तमुदाहरे ॥६॥ सुवण्णरजते भोजं, मणिसेले विलेवणं। (अविदाही) घतमायास पयं तंबे, पाणसुहं च मिम्मते ॥७॥ सूवोदणं जवण्णं तिन्नि य मंसाणि गोरसो जूसो। भक्खा गुल्लावणिया मूल फलं हरियगं डागो ॥.४६॥८॥ होइ रसालो य तहा पाणं पाणीय पाणगं चेव। सागं चउट्ठारसहा णिरुवहतो लोगपिंडो सो ॥.४७॥९॥ सूवगहणेण गहिता वंजणभेदा उ जत्तिया लोए। ओदणगहणेणं पुण सत्तविहो ओदणो होति ॥७३०॥ जातु जवण्णं भण्णति तिन्नि तु मंसाणि जलयरादीणं। गोरसो खीरादी उ मुग्गपडोलादि जूसो तु ॥१॥ भक्खविहि उल्लसुक्खा गुलकत तह लावणी त वोद्धव्वा। मूलगअल्लगमादी मूलं अंबादिगं फलं तु ॥२॥ हरितग मूलकुढेरग भूयणगादी य होति णायव्वो। डागो य गोरसकओ पजेवणादी बहुविहाणो ॥३॥ दो घतपला महु पलं दहिस्स अद्धाढगं मरिय वीसा। खंड तुलादसभागो एस रसालू णिवतिजोग्गो ॥४॥ खंड तुलादसभागो दस खंडपला हवंति णायव्वा। ते तम्मि पक्खिवित्ता मज्जियणामं रसालोत्ति ॥५॥ पाणं मज्जविही उ पाणीयं धारपाणियादीयं। दक्खादिपाणगाइं सागेणं वंजणा जे तु ॥६॥ एवं अट्ठारसहा णिरुवहतो दड्ढगादिपरिहीणो। ण य उवहम्मति जेणं रसादि छूढेण दव्वेणं ॥७॥ परिसुक्खं दाहिणतो दवाणि सव्वाणि वामतो कुज्जा। णिद्धमहुराणि पुव्वं मज्झे अंबं दवंताणि ॥.४८॥८॥ परिसुक्खं सालणगादि तं गिण्ह सुहं तु दाहिण-करेणं। वामेण पाणगादी तेण तयं वामपासम्मि ॥९॥ अप्पाइज्जति देहं पुव्वं तू णिद्धमहुरदव्वेहिं। पेतादीहिं णियमा केवइयं तं तु भोत्तव्वं ॥७४०॥ अद्धमसणस्स सव्वंजणस्स कुज्जा दवस्स दो भाए। वातपवियारणट्ठा छब्भागं ऊणयं कुज्जा ॥१॥ तं पुण एयपमाणं आदी मज्झे तहेव अवसाणे। केरिसयं भोत्तव्वं? तस्स इमं गाहमाहंसु ॥२॥ असतामिव संजोगं पण्णा भोयणविहिं उवदिसंति। लुक्खं दवावसाणं मज्झ विचित्तं महुरमादी ॥.४९॥३॥ असता असज्जणा दुज्जणा य एगट्ठिताणि एयाणि। तेहिं समं जा मेत्ती संजोगेसो तु णायव्वो ॥ल० १३॥४॥ गुलमहुरा उल्लावा तेसिं पुव्वं करिंति य पियाइ। मज्झे य होंति मज्झा महुरा विगतिं च दाएंति ॥ल० १४॥५॥ कुव्वंति य भासंति य अवसाणे तारिसाणिं जेहिं तु। जिज्झति सव्वं सुकतं एवं किर भोयणं भुंजे ॥ल० १५॥६॥ आदीएँ णिद्धमहुरं मज्झ विचित्तं दवलुक्ख अवसाणे। तेणं विपागमेती दुज्जणसंतीव अवसाणे ॥ल० १६॥७॥ कुसला-

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [०७४८]

दीप अनुक्रम [०७४८]

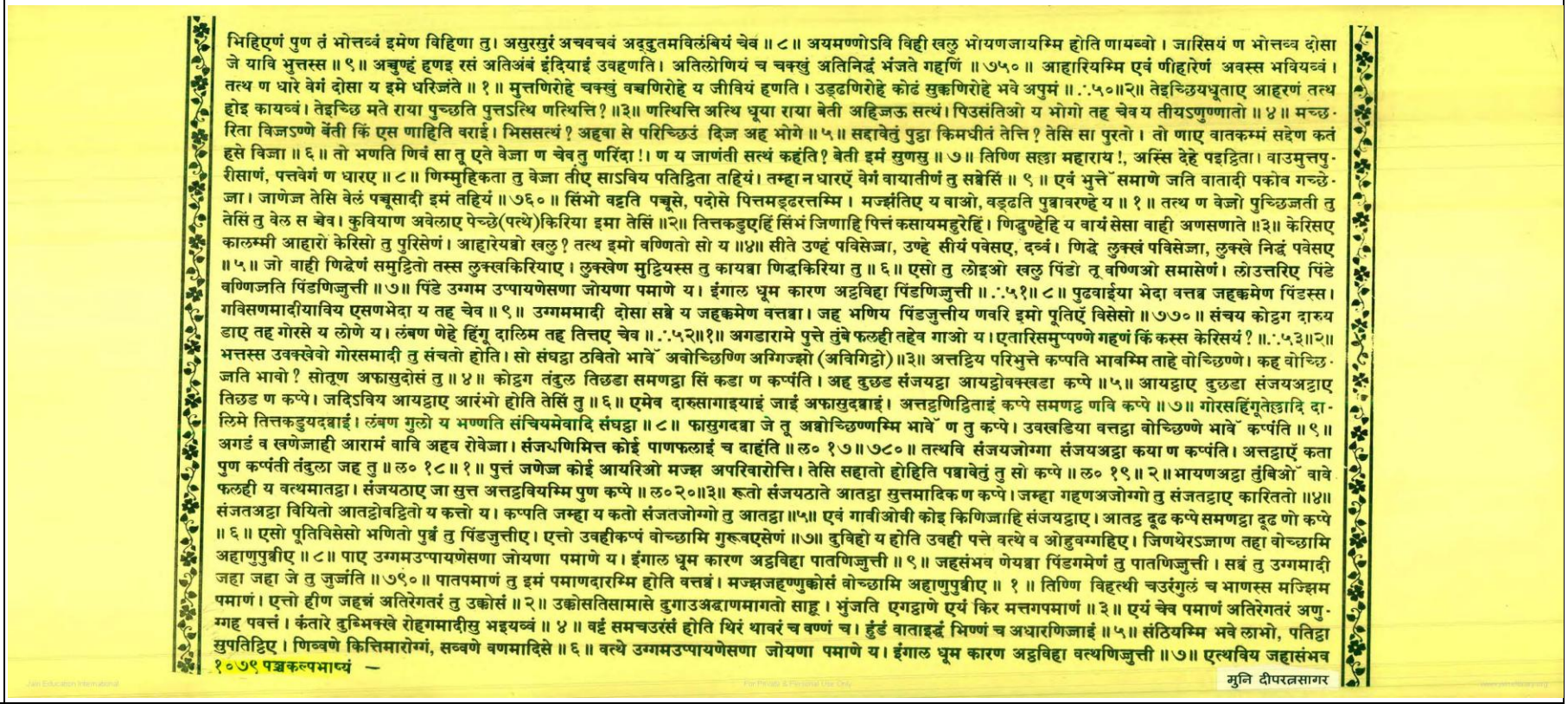

भिहिएणं पुण तं भोत्तव्वं इमेण विहिणा तु। असुरसुरं अचवचवं अद्दुतमविलंबियं चेव ॥८॥ अयमण्णोऽवि विही खलु भोयणजायम्मि होति णायव्वो। जारिसयं ण भोत्तव्व दोसा जे यावि भुत्तस्स ॥९॥ अचुण्हं हणइ रसं अतिअंबं इंदियाइं उवहणति। अतिलोणियं च चक्खुं अतिनिद्धं भंजते गहणिं ॥७५०॥ आहारियम्मि एवं णीहारेणं अवस्स भवियव्वं। तत्थ ण धारे वेगं दोसा य इमे धरिज्जंते ॥१॥ मुत्तणिरोहे चक्खुं वच्चणिरोहे य जीवियं हणति। उड्ढणिरोहे कोढं सुक्कणिरोहे भवे अपुमं ॥.५०॥२॥ तेइच्छियधूताए आहरणं तत्थ होइ कायव्वं। तेइच्छि मते राया पुच्छति पुत्तऽत्थि णत्थित्ति? ॥३॥ णत्थित्ति अत्थि धूया राया बेती अहिज्जऊ सत्थं। पिउसंतिओ य भोगो तह चेव य तीयऽणुण्णातो ॥४॥ मच्छरिता विज्जऽण्णे बेंती किं एस णाहिति वराई। भिससत्थं? अहवा से परिच्छिउं दिज्ज अह भोगे ॥५॥ सद्दावेतुं पुट्ठा किमधीतं तेत्ति? तेसि सा पुरतो। तो णाए वातकम्मं सद्देण कतं हसे विज्जा ॥६॥ तो भणति णिवं सा तू एते वेज्जा ण चेव तु णरिंदा!। ण य जाणंती सत्थं कहंति? बेती इमं सुणसु ॥७॥ तिण्णि सल्ला महाराय!, अस्सि देहे पइट्ठिता। वाउमुत्तपुरीसाणं, पत्तवेगं ण धारए ॥८॥ णिम्मुहिकता तु वेज्जा तीए साऽविय पतिट्ठिता तहियं। तम्हा न धारएँ वेगं वायातीणं तु सव्वेसिं ॥९॥ एवं भुत्तेँ समाणे जति वातादी पकोव गच्छेज्जा। जाणेज्ज तेसि वेलं पच्चूसादी इमं तहियं ॥७६०॥ सिंभो वट्टति पच्चूसे, पदोसे पित्तमड्ढरत्तम्मि। मज्झंतिए य वाओ, वड्ढति पुव्वावरण्हे य ॥१॥ तत्थ ण वेज्जो पुच्छिज्जती तु तेसिं तु वेल स चेव। कुवियाण अवेलाए पेच्छे(पत्थे)किरिया इमा तेसिं ॥२॥ तित्तकडुएहिं सिंभं जिणाहि पित्तं कसायमहुरेहिं। णिद्धुण्हेहि य वायं सेसा वाही अणसणाते ॥३॥ केरिसए कालम्मी आहारो केरिसो तु पुरिसेणं। आहारेयव्वो खलु? तत्थ इमो वण्णितो सो य ॥४॥ सीते उण्हं पविसेज्जा, उण्हे सीयं पवेसए, दव्वं। णिद्धे लुक्खं पविसेज्जा, लुक्खे निद्धं पवेसए ॥५॥ जो वाही णिद्धेणं समुट्ठितो तस्स लुक्खकिरियाए। लुक्खेण मुट्ठियस्स तु कायव्वा णिद्धकिरिया तु ॥६॥ एसो तु लोइओ खलु पिंडो तू वण्णिओ समासेणं। लोउत्तरिए पिंडे वण्णिजति पिंडणिज्जुत्ती ॥७॥ पिंडे उग्गम उप्पायणेसणा जोयणा पमाणे य। इंगाल धूम कारण अट्ठविहा पिंडणिज्जुत्ती ॥.५१॥८॥ पुढवाईया भेदा वत्तव्व जहक्कमेण पिंडस्स। गविसणमादीयाविय एसणभेदा य तह चेव ॥९॥ उग्गममादी दोसा सव्वे य जहक्कमेण वत्तव्वा। जह भणिय पिंडजुत्तीय णवरि इमो पूतिएं विसेसो ॥७७०॥ संचय कोट्ठग दारुय डाए तह गोरसे य लोणे य। लंबण णेहे हिंगू दालिम तह तित्तए चेव ॥.५२॥१॥ अगडारामे पुत्ते तुंबे फलही तहेव गाओ य। एतारिसमुप्पण्णे गहणं किं कस्स केरिसयं? ॥.५३॥२॥ भत्तस्स उक्खेवो गोरसमादी तु संचतो होति। सो संघट्ठा ठवितो भावेँ अवोच्छिण्णि अग्गिज्झो (अविगिट्ठो) ॥३॥ अत्तट्ठिय परिभुत्ते कप्पति भावम्मि ताहे वोच्छिण्णे। कह वोच्छिज्जति भावो? सोतूण अफासुदोसं तु ॥४॥ कोट्ठग तंदुल तिछडा समणट्ठा सिं कडा ण कप्पंति। अह दुछड संजयट्ठा आयट्ठोवक्खडा कप्पे ॥५॥ आयट्ठाए दुछडा संजयअट्ठाए तिछड ण कप्पे। जदिऽविय आयट्ठाए आरंभो होति तेसिं तु ॥६॥ एमेव दारुसागाइयाइं जाइं अफासुदव्वाइं। अत्तट्ठणिट्ठिताइं कप्पे समणट्ठ णवि कप्पे ॥७॥ गोरसहिंगूतेल्लादि दालिमे तित्तकडुयदव्वाई। लंबण गुलो य भण्णति संचियमेवादि संघट्ठा ॥८॥ फासुगदव्वा जे तू अव्वोच्छिण्णम्मि भावेँ ण तु कप्पे। उवखडिया वत्तट्ठा वोच्छिण्णे भावेँ कप्पंति ॥९॥ अगडं व खणेज्जाही आरामं वावि अहव रोवेज्जा। संजयणिमित्त कोई पाणफलाइं च दाहंति ॥ल० १७॥७८०॥ तत्थवि संजयजोग्गा संजयअट्ठा कया ण कप्पंति। अत्तट्ठाएं कता पुण कप्पंती तंदुला जह तु ॥ल० १८॥१॥ पुत्तं जणेज्ज कोई आयरिओ मज्झ अपरिवारोत्ति। तेसि सहातो होहिति पव्वावेतुं तु सो कप्पे ॥ल० १९॥२॥ भायणअट्ठा तुंबिओं वावे फलही य वत्थमातट्ठा। संजयठाए जा सुत्त अत्तट्ठवियम्मि पुण कप्पे ॥ल०२०॥३॥ रूतो संजयठाते आतट्ठा सुत्तमादिक ण कप्पे। जम्हा गहणअजोग्गो तु संजतट्ठाए कारितितो ॥४॥ संजतअट्ठा वियितो आतट्ठोवट्टितो य कत्तो य। कप्पति जम्हा य कतो संजतजोग्गो तु आतट्ठा ॥५॥ एवं गावीओवी कोइ किणिज्जाहि संजयट्ठाए। आतट्ठ दूढ कप्पे समणट्ठा दूढ णो कप्पे ॥६॥ एसो पूतिविसेसो भणितो पुव्वं तु पिंडजुत्तीए। एत्तो उवहीकप्पं वोच्छामि गुरूवएसेणं ॥७॥ दुविहो य होति उवही पत्ते वत्थे व ओहुवग्गहिए। जिणथेरऽज्जाण तहा वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥८॥ पाए उग्गमउप्पायणेसणा जोयणा पमाणे य। इंगाल धूम कारण अट्ठविहा पातणिज्जुत्ती ॥९॥ जहसंभव णेयव्वा पिंडगमेणं तु पातणिज्जुत्ती। सव्वं तु उग्गमादी जहा जहा जे तु जुज्जंति ॥७९०॥ पातपमाणं तु इमं पमाणदारम्मि होति वत्तव्वं। मज्झजहण्णुक्कोसं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥१॥ तिण्णि विहत्थी चउरंगुलं च भाणस्स मज्झिम पमाणं। एत्तो हीण जहन्नं अतिरेगतरं तु उक्कोसं ॥२॥ उक्कोसतिसामासे दुगाउअद्धाणमागतो साहू। भुंजति एगट्ठाणे एयं किर मत्तगपमाणं ॥३॥ एयं चेव पमाणं अतिरेगतरं अणुग्गह पवत्तं। कंतारे दुब्भिक्खे रोहगमादीसु भइयव्वं ॥४॥ वट्टं समचउरंसं होति थिरं थावरं च वण्णं च। हुंडं वाताइद्धं भिण्णं च अधारणिज्जाइं ॥५॥ संठियम्मि भवे लाभो, पतिट्ठा सुपतिट्ठिए। णिव्वणे कित्तिमारोग्गं, सव्वणे वणमादिसे ॥६॥ वत्थे उग्गमउप्पायणेसणा जोयणा पमाणे य। इंगाल धूम कारण अट्ठविहा वत्थणिज्जुत्ती ॥७॥ एत्थविय जहासंभव

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [०७९८] दीप अनुक्रम [०७९८]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

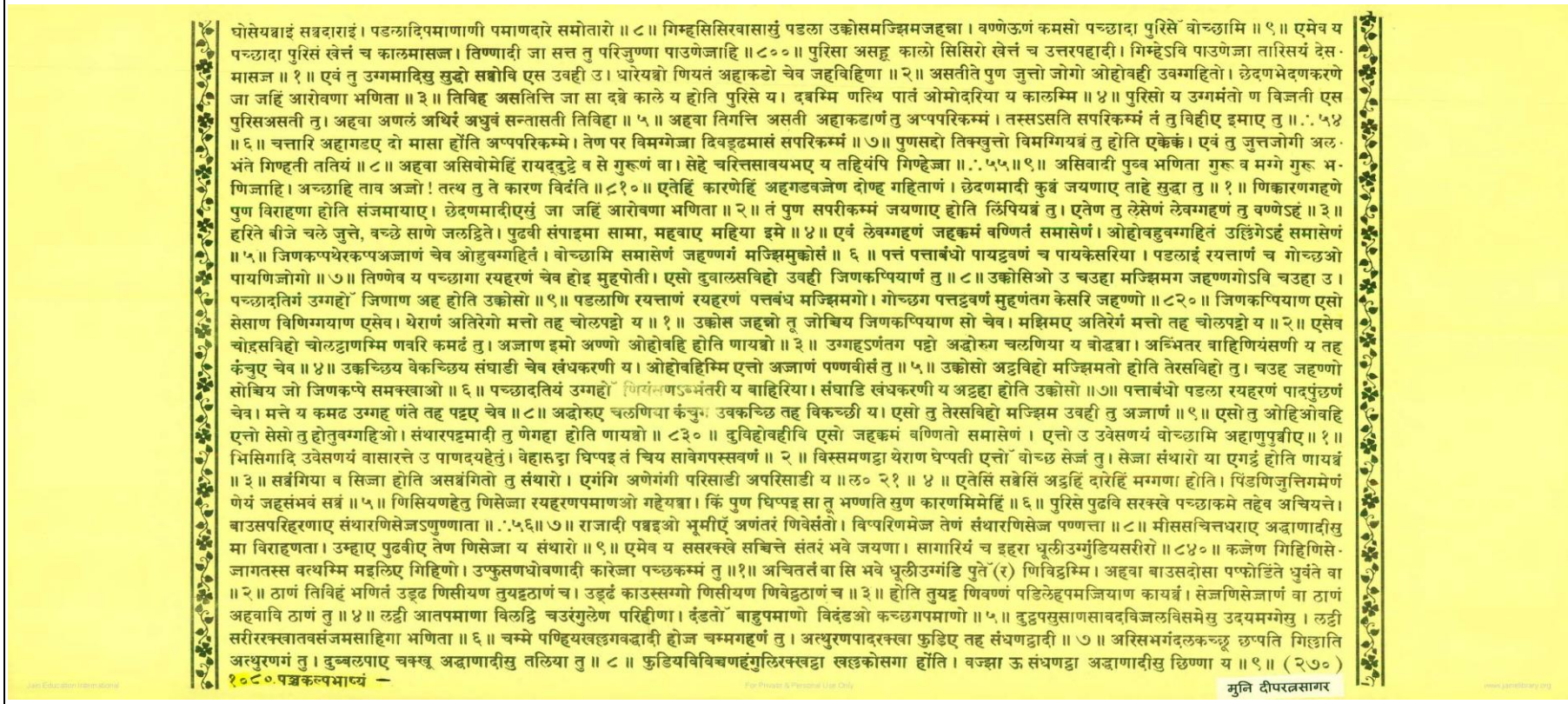

घोसेयव्वाइं सव्वदाराइं। पडलादिपमाणाणी पमाणदारे समोतारो ॥८॥ गिम्हसिसिरवासासुं पडला उक्कोसमज्झिमजहन्ना। वण्णेऊणं कमसो पच्छादा पुरिसे वोच्छामि ॥९॥ एमेव य पच्छादा पुरिसं खेत्तं च कालमासज्ज। तिण्णादी जा सत्त तु परिजुण्णा पाउणेज्जाहि ॥८००॥ पुरिसा असहू कालो सिसिरो खेत्तं च उत्तरपहादी। गिम्हेऽवि पाउणेज्जा तारिसयं देस-मासज्ज ॥१॥ एवं तु उग्गमादिसु सुद्धो सव्वोवि एस उवही उ। धारेयव्वो णियतं अहाकडो चेव जहविहिणा ॥२॥ असतीते पुण जुत्तो जोगो ओहोवही उवग्गहितो। छेदणभेदणकरणे जा जहिं आरोवणा भणिता ॥३॥ तिविहं असतित्ति जा सा दव्वे काले य होति पुरिसे य। दव्वम्मि णत्थि पातं ओमोदरिया य कालम्मि ॥४॥ पुरिसो य उग्गमंतो ण विज्जती एस पुरिसअसती तु। अहवा अणलं अथिरं अधुवं सन्तासती तिविहा ॥५॥ अहवा तिगत्ति असती अहाकडाणं तु अप्पपरिकम्मं। तस्सऽसति सपरिकम्मं तं तु विहीए इमाए तु ॥.'.५४॥६॥ चत्तारि अहागडए दो मासा होंति अप्पपरिकम्मे। तेण पर विमग्गेज्जा दिवड्ढमासं सपरिकम्मं ॥७॥ पुणसद्दो तिक्खुत्तो विमग्गियव्वं तु होति एक्केक्कं। एवं तु जुत्तजोगी अल-भंते गिण्हती ततियं ॥८॥ अहवा असिवोमेहिं रायदुट्ठे व से गुरूणं वा। सेहे चरित्तसावयभए य तहियंपि गिण्हेज्जा ॥.'.५५॥९॥ असिवादी पुव्व भणिता गुरू व मग्गे गुरू भ-णिज्जाहि। अच्छाहि ताव अज्जो! तत्थ तु ते कारण विदंति ॥८१०॥ एतेहिं कारणेहिं अहगडवज्जेण दोण्ह गहिताणं। छेदणमादी कुव्वं जयणाए ताहे सुद्धा तु ॥१॥ णिक्कारणगहणे पुण विराहणा होति संजमायाए। छेदणमादीएसुं जा जहिं आरोवणा भणिता ॥२॥ तं पुण सपरीकम्मं जयणाए होति लिंपियव्वं तु। एतेण तु लेसेणं लेवग्गहणं तु वण्णेऽहं ॥३॥ हरिते बीजे चले जुत्ते, वच्छे साणे जलट्ठिते। पुढवी संपाइमा सामा, महवाए महिया इमे ॥४॥ एवं लेवग्गहणं जहक्कमं वण्णितं समासेणं। ओहोवहुवग्गहितं उद्दिंगेऽहं समासेणं ॥५॥ जिणकप्पथेरकप्पअज्जाणं चेव ओहुवग्गहितं। वोच्छामि समासेणं जहण्णगं मज्झिमुक्कोसं ॥६॥ पत्तं पत्ताबंधो पायट्ठवणं च पायकेसरिया। पडलाइं रयत्ताणं च गोच्छओ पायणिज्जोगो ॥७॥ तिण्णेव य पच्छागा रयहरणं चेव होइ मुहपोती। एसो दुवालसविहो उवही जिणकप्पियाणं तु ॥८॥ उक्कोसिओ उ चउहा मज्झिमग जहण्णगोऽवि चउहा उ। पच्छादतिगं उग्गहो जिणाण अह होति उक्कोसो ॥९॥ पडलाणि रयत्ताणं रयहरणं पत्तबंध मज्झिमगो। गोच्छग पत्तट्ठवणं मुहणंतग केसरि जहण्णो ॥८२०॥ जिणकप्पियाण एसो सेसाण विणिग्गयाण एसेव। थेराणं अतिरेगो मत्तो तह चोलपट्टो य ॥१॥ उक्कोस जहन्नो तू जोचिय जिणकप्पियाण सो चेव। मझिमए अतिरेगं मत्तो तह चोलपट्टो य ॥२॥ एसेव चोद्दसविहो चोलट्टाणम्मि णवरि कमढं तु। अज्जाण इमो अण्णो ओहोवहि होति णायव्वो ॥३॥ उग्गहऽणंतग पट्टो अद्धोरुग चलणिया य बोद्धव्वा। अब्भिंतर बाहिणियंसणी य तह कंचुए चेव ॥४॥ उक्कच्छिय वेकच्छिय संघाडी चेव खंधकरणी य। ओहोवहिम्मि एत्तो अज्जाणं पण्णवीसं तु ॥५॥ उक्कोसो अट्ठविहो मज्झिमतो होति तेरसविहो तु। चउह जहण्णो सोचिय जो जिणकप्पे समक्खाओ ॥६॥ पच्छादतियं उग्गहो णियंसणऽब्भंतरी य बाहिरिया। संघाडि खंधकरणी य अट्ठहा होति उक्कोसो ॥७॥ पत्ताबंधो पडला रयहरणं पादपुंछणं चेव। मत्ते य कमढ उग्गह णंते तह पट्टए चेव ॥८॥ अद्धोरुए चलणिया कंचुग उवकच्छि तह विकच्छी य। एसो तु तेरसविहो मज्झिम उवही तु अज्जाणं ॥९॥ एसो तु ओहिओवहि एत्तो सेसो तु होतुवग्गहिओ। संथारपट्टमादी तु णेगहा होति णायव्वो ॥ ८३० ॥ दुविहोवहीवि एसो जहक्कमं वण्णितो समासेणं। एत्तो उ उवेसणयं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥१॥ भिसिगादि उवेसणयं वासारत्ते उ पाणदयहेतुं। वेहासट्ठा घिप्पइ तं चिय सावेगपस्सवणं ॥२॥ विस्समणट्ठा थेराण घेप्पती एत्तो वोच्छ सेज्जं तु। सेज्जा संथारो या एगट्ठं होति णायव्वं ॥३॥ सव्वेगिया व सिज्जा होति असव्वेगितो तु संथारो। एगंगि अणेगंगी परिसाडी अपरिसाडी य ॥ल० २१ ॥ ४ ॥ एतेसिं सव्वेसिं अट्ठहिं दारेहिं मग्गणा होति। पिंडणिजुत्तिगमेणं णेयं जहसंभवं सव्वं ॥५॥ णिसियणहेतु णिसेज्जा रयहरणपमाणओ गहेयव्वा। किं पुण घिप्पइ सा तू भण्णति सुण कारणमिमेहिं ॥६॥ पुरिसे पुढवि सरक्खे पच्छाकमे तहेव अचियत्ते। बाउसपरिहरणाए संथारणिसेज्जऽणुण्णाता ॥.'.५६॥७॥ राजादी पव्वइओ भूमीएँ अणंतरं णिवेसंतो। विप्परिणमेज्ज तेणं संथारणिसेज्ज पण्णत्ता ॥८॥ मीससचित्तधराए अद्धाणादीसु मा विराहणता। उम्हाए पुढवीए तेण णिसेज्जा य संथारो ॥९॥ एमेव य ससरक्खे सचित्ते संतरं भवे जयणा। सागारियं च इहरा धूलीउग्गुंडियसरीरो ॥८४०॥ कज्जेण गिहिणिसे-ज्जागतस्स वत्थम्मि मइलिए गिहिणो। उप्फुसणधोवणादी कारेज्जा पच्छकम्मं तु ॥१॥ अचितं वा सि भवे धूलीउग्गंडि पुते (र) णिविट्ठम्मि। अहवा बाउसदोसा पप्फोडिंते धुवंते वा ॥२॥ ठाणं तिविहं भणितं उड्ढ णिसीयण तुयट्टठाणं च। उड्ढं काउस्सग्गो णिसीयण णिवेट्ठठाणं च ॥३॥ होति तुयट्ट णिवण्णं पडिलेहपमज्जियाण कायव्वं। सेज्जणिसेज्जाणं वा ठाणं अहवावि ठाणं तु ॥४॥ लट्ठी आतपमाणा विलट्ठि चउरंगुलेण परिहीणा। दंडतो बाहुपमाणो विदंडओ कच्छगपमाणो ॥५॥ दुट्ठपसुसाणसावदविज्जलविसमेसु उदयमग्गेसु। लट्ठी सरीररक्खातवसंजमसाहिगा भणिता ॥६॥ चम्मे पण्हियखल्लगवद्धादी होज्ज चम्मगहणं तु। अत्थुरणपादरक्खा फुडिए तह संघणट्ठादी ॥७॥ अरिसभगंदलकच्छू छप्पति गिह्णाति अत्थुरणगं तु। दुब्बलपाए चक्खू अद्धाणादीसु तलिया तु ॥८॥ फुडियविविच्चणहंगुलिरक्खट्ठा खल्लकोसगा होंति। वज्झा ऊ संघणट्ठा अद्धाणादीसु छिण्णा य ॥९॥ (२७०)

Jain Education International For Private & Personal Use Only मुनि दीपरत्नसागर www.jainelibrary.org

"पंचकल्प" – छेदसूत्र-५/२ (भाष्य)

---------- भाष्यं [०८५०] ----------

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] "पंचकल्प" संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

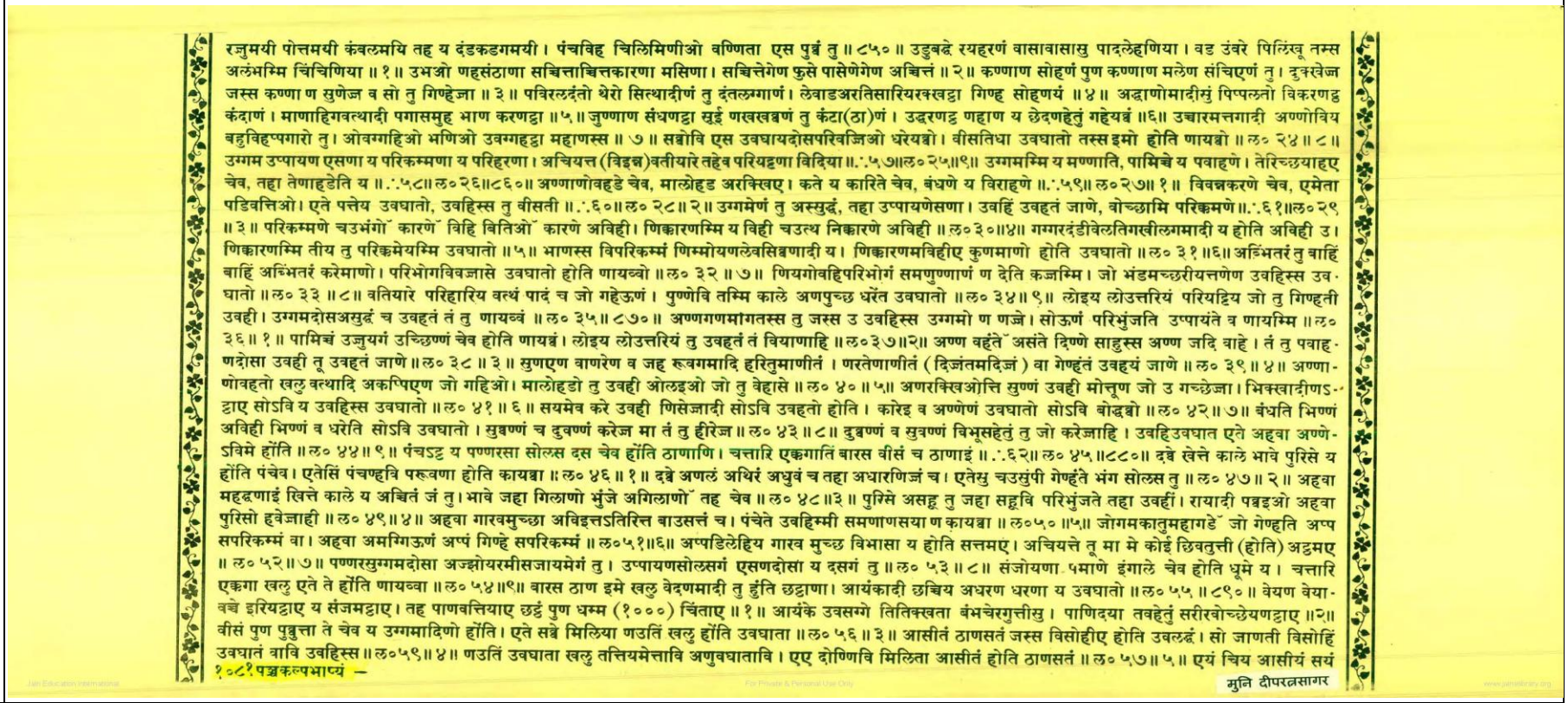

रजुमयी पोत्तमयी कंबलमयि तह य दंडकडगमयी। पंचविह चिलिमिणीओ वण्णिता एस पुव्वं तु ॥ ८५० ॥ उडुबद्धे रयहरणं वासावासासु पादलेहणिया। वड उंबरे पिलिंखू तस्स अलंभम्मि चिंचिणिया ॥ १ ॥ उभओ णहसंठाणा सचित्ताचित्तकारणा मसिणा। सच्चित्तेगेण फुसे पासेणेगेण अचित्तं ॥ २ ॥ कण्णाण सोहणं पुण कण्णाण मलेण संचिएणं तु। दुक्खेज्ज जस्स कण्णा ण सुणेज्ज व सो तु गिण्हेज्जा ॥ ३ ॥ पविरलदंतो थेरो सित्थादीणं तु दंतलग्गाणं। लेवाडअरतिसारियरक्खट्ठा गिण्ह सोहणयं ॥ ४ ॥ अद्धाणोमादीसुं पिप्पलतो विकरणट्ठ कंदाणं। माणाहिगवत्थादी पगासमुह भाण करणट्ठा ॥ ५ ॥ जुण्णाण संधणट्ठा सुई णखखबणं तु कंटा(ठा)णं। उद्धरणट्ठ णहाण य छेदणहेतुं गहेयव्वं ॥ ६ ॥ उच्चारमत्तगादी अण्णोविय बहुविहप्पगारो तु। ओवग्गहिओ भणिओ उवग्गहट्ठा महाणस्स ॥ ७ ॥ सव्वोवि एस उवघायदोसपरिवज्जिओ धरेयव्वो। वीसतिधा उवघातो तस्स इमो होति णायव्वो ॥ ल० २४ ॥ ८ ॥ उग्गम उप्पायण एसणा य परिकम्मणा य परिहरणा। अचियत्त (विइन्न) वतीयारे तहेव परियट्टणा विदिया ॥ ५७॥ल० २५॥९॥ उग्गमम्मि य मण्णाति, पामिच्चे य पवाहणे। तेरिच्छयाहए चेव, तहा तेणाहडेति य ॥ ५८॥ल० २६॥८६०॥ अण्णाणोवहडे चेव, मालोहड अरक्खिए। कते य कारिते चेव, बंधणे य विराहणे ॥ ५९॥ल० २७॥ १ ॥ विवन्नकरणे चेव, एमेता पडिवत्तिओ। एते पत्तेय उवघातो, उवहिस्स तु वीसती ॥ ६०॥ल० २८॥ २ ॥ उग्गमेणं तु अस्सुद्धं, तहा उप्पायणेसणा। उवहिं उवहतं जाणे, वोच्छामि परिकम्मणे ॥ ६१॥ल० २९ ॥ ३ ॥ परिकम्मणे चउभंगो कारणे विहि बितिओ कारणे अविही। णिकारणम्मि य विही चउत्थ निकारणे अविही ॥ ल० ३०॥४॥ गग्गरदंडीवेलतिगखीलगमादी य होति अविही उ। णिकारणम्मि तीय तु परिकमेयम्मि उवघातो ॥ ५ ॥ भाणस्स विपरिकम्मं णिम्मोयणलेवसिव्वणादी य। णिकारणमविहीए कुणमाणो होति उवघातो ॥ ल० ३१ ॥ ६ ॥ अब्भिंतरं तु बाहिं बाहिं अब्भिंतरं करेमाणो। परिभोगविवज्जासे उवघातो होति णायव्वो ॥ ल० ३२ ॥ ७ ॥ णियगोवहिपरिभोगं समणुण्णाणं ण देति कज्जम्मि। जो भंडमच्छरीयत्तणेण उवहिस्स उव घातो ॥ ल० ३३ ॥ ८ ॥ वतियारे परिहारिय वत्थं पादं च जो गहेऊणं। पुण्णेवि तम्मि काले अणपुच्छ धरेंत उवघातो ॥ ल० ३४ ॥ ९ ॥ लोइय लोउत्तरियं परियट्टिय जो तु गिण्हती उवही। उग्गमदोसअसुद्धं च उवहतं तं तु णायव्वं ॥ ल० ३५ ॥ ८७० ॥ अण्णगणमागतस्स तु जस्स उ उवहिस्स उग्गमो ण णज्जे। सोऊणं परिभुंजति उप्पायंते व णायम्मि ॥ ल० ३६ ॥ १ ॥ पामिचं उज्जुयगं उच्छिण्णं चेव होति णायव्वं। लोइय लोउत्तरियं तु उवहतं तं वियाणाहि ॥ ल० ३७ ॥ २ ॥ अण्ण वहंते असंते दिण्णे साहुस्स अण्ण जदि वाहे। तं तु पवाह णदोसा उवही तू उवहतं जाणे ॥ ल० ३८ ॥ ३ ॥ सुणएण वाणरेण व जह रूवगमादि हरितुमाणीतं। णरतेणाणीतं (दिज्जंतमदिज्जं) वा गेण्हंतं उवहयं जाणे ॥ ल० ३९ ॥ ४ ॥ अण्णा णोवहतो खलु वत्थादि अकप्पिएण जो गहिओ। मालोहडो तु उवही ओलइओ जो तु वेहासे ॥ ल० ४० ॥ ५ ॥ अणरक्खिओत्ति सुण्णं उवही मोत्तूण जो उ गच्छेज्जा। भिक्खादीणऽ ट्ठाए सोऽवि य उवहिस्स उवघातो ॥ ल० ४१ ॥ ६ ॥ सयमेव करे उवही णिसेज्जादी सोऽवि उवहतो होति। कोरेइ व अण्णेणं उवघातो सोऽवि बोद्धव्वो ॥ ल० ४२ ॥ ७ ॥ बंधति भिण्णं अविही भिण्णं व धरेति सोऽवि उवघातो। सुवण्णं च दुवण्णं करेज्ज मा तं तु हीरेज्ज ॥ ल० ४३ ॥ ८ ॥ दुवण्णं व सुवण्णं विभूसहेतुं तु जो करेज्जाहि। उवहिउवघात एते अहवा अण्णे ऽविमे होंति ॥ ल० ४४ ॥ ९ ॥ पंचऽट्ठ य पण्णरसा सोलस दस चेव होंति ठाणाणि। चत्तारि एक्कगातिं बारस वीसं च ठाणाइं ॥ ६२॥ल० ४५॥८८०॥ दव्वे खेत्ते काले भावे पुरिसे य होंति पंचेव। एतेसिं पंचण्हवि परूवणा होति कायव्वा ॥ ल० ४६ ॥ १ ॥ दव्वे अणलं अथिरं अधुवं च तहा अधारणिज्जं च। एतेसु चउसुंपी गेण्हंते भंग सोलस तु ॥ ल० ४७ ॥ २ ॥ अहवा महद्धणाइं खित्ते काले य अचितं जं तु। भावे जहा गिलाणो भुंजे अगिलाणो तह चेव ॥ ल० ४८ ॥ ३ ॥ पुरिसे असहू तु जहा सहूवि परिभुंजते तहा उवहीं। रायादी पव्वइओ अहवा पुरिसो हवेज्जाही ॥ ल० ४९ ॥ ४ ॥ अहवा गारवमुच्छा अविइत्तऽतिरित्त वाउसत्तं च। पंचेते उवहिम्मी समणाणसया ण कायव्वा ॥ ल०५० ॥५॥ जोगमकातुमहागडे जो गेण्हति अप्प सपरिकम्मं वा। अहवा अमग्गिऊणं अप्पं गिण्हे सपरिकम्मं ॥ ल०५१॥६॥ अप्पडिलेहिय गारव मुच्छ विभासा य होति सत्तमए। अचियत्ते तू मा मे कोई छिवतुत्ती (होति) अट्ठमए ॥ ल० ५२॥ ७ ॥ पण्णरसुग्गमदोसा अज्झोयरमीसजायमेगं तु। उप्पायणसोलसगं एसणदोसा य दसगं तु ॥ ल० ५३ ॥ ८ ॥ संजोयणा ५माणे इंगाले चेव होति धूमे य। चत्तारि एक्कगा खलु एते ते होंति णायव्वा ॥ ल० ५४॥९॥ बारस ठाण इमे खलु वेदणमादी तु हुंति छट्ठाणा। आयंकादी छच्चिय अधरण धरणा य उवघातो ॥ ल० ५५ ॥ ८९० ॥ वेयण वेया वच्चे इरियट्ठाए य संजमट्ठाए। तह पाणवत्तियाए छट्ठं पुण धम्म (१०००) चिंताए ॥ १ ॥ आयंके उवसग्गे तितिक्खता बंभचेरगुत्तीसु। पाणिदया तवहेतुं सरीरवोच्छेयणट्ठाए ॥ २ ॥ वीसं पुण पुव्वुत्ता ते चेव य उग्गमादिणो होंति। एते सव्वे मिलिया णउतिं खलु होंति उवघाता ॥ ल० ५६ ॥ ३ ॥ आसीतं ठाणसतं जस्स विसोहीए होति उवलद्धं। सो जाणती विसोहिं उवघातं वावि उवहिस्स ॥ ल०५९॥ ४ ॥ णउतिं उवघाता खलु तत्तियमेत्तावि अणुवघातावि। एए दोण्णिवि मिलिता आसीतं होति ठाणसतं ॥ ल० ५७ ॥ ५ ॥ एयं चिय आसीयं सयं

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [०८९६]

दीप अनुक्रम [०८९६]

तु जिणथेरअज्जउवहीहिं। गुणिते होइम संखा जहक्कमेणं तु ठाणाणं ॥ ल० ५८॥ ६॥ दो चेव सहस्साइं सट्ठसयं चेव जस्स उवलद्धं। सो जाणती विसोहिं उवघातं वावि जिणकप्पे ॥ ७॥ दो ठाणसहस्साइं पंचेव सयाइं होंति वीसाइं। सो जाणती विसोहिं उवघातं वावि थेराणं ॥ ८॥ चत्तारि सहस्साइं पंचेव सयाइं होंति पण्णाइं। सो जाणती विसोहिं उवघातं चेव अज्जाणं ॥ ९॥ एसो उ सोलसविहो अजीवकप्पो समासतो भणितो। एत्तो य मीसकप्पं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥ ९०० ॥ एत्तो छिहिं सोलसहि य दोहिवि निप्फज्जती तु जो कप्पो। दुगसंजोगादीओ सव्वो सो मीसओ कप्पो ॥ १॥ पव्वावण मुंडावण सिक्खोवट्ठे य भुंज संवासे। एते छण्णायव्वा आहारुवहादि सोलसयं ॥ २॥ दुगसंजोगादीया सचित्तअचित्तमीसकप्पाणं। पत्तेय मीसगावि य णेयव्वा आणुपुव्वीए ॥ ३॥ पव्वावे मुंडावे पव्वावे चेव तहय सिक्खावे। पव्वावे उवठावे पव्वावे चेव संभुंजे ॥ ४॥ पव्वावे संवासे एवं मुंडावणा दुचरिमेहिं। णेया दुगसंजोगा एवं सेसावि संजोगा ॥ ५॥ तिचउपणछक्कजोगा एते सचित्तदवियकप्पम्मि। पत्तेयं संजोगा एत्तो अचित्त वोच्छामि ॥ ६॥ आहारे उवहिम्मि य आहारे तह उवस्सए चेव। एवं जा णक्खलेदण ता आहारेण चारेज्जा ॥ ७॥ एवं अवसेसासुवि उवधादीएसु उवरिं उवरिं तु। णेया दुगसंजोगा जा पच्छिमो सूयिणहछेदो ॥ ८॥ एमेव सेसगावी तियगाई यावि सव्वसंजोगा। णेया जा सोलसगो एते पत्तेय अचित्ते ॥ ९॥ चित्तेतराण दोण्हवि एत्तो संजोगता मुणेयव्वा। मीसगकप्पे णेया दुगमादी सव्वसंजोगा ॥ ९१०॥ पव्वावे आहारंपि देइ पव्वाविएऽवि उवहिं च। पव्वावे उवस्समणं एवं णखछेयणं जाव ॥ १ ॥ एतेण कमेणेवं दुगतिगमादी तु सव्वसंजोगा। णेयव्वा जा पच्छिमो बावीसमो होइ संजोगो ॥ २ ॥ एतेसिं सव्वेसिं संखाणयणम्मि आणणोवाओ। पत्तेयमीसगाण य इमो तु कमसो मुणेयव्वो ॥ ३ ॥ एगादेगुत्तरिया पदसंखपमाणओ ठवेयव्वा। गुणगारभागहारा तेसिं हेट्ठा उ विवरीया ॥ ४॥ पढमं रूवं गुणए भागं च हरे हवेज्ज जं लद्धं। तम्मिवि पडिरासितगुणितभाइए जं भवे लद्धं ॥ ५॥ एवं ठाणं ठाणं पडिरासियगुणितभजियलद्धाइं। एगादीसंजोगाण होंति संखप्पमाणाइं ॥ ६ ॥ एक्कादीसंजोगाण होति एवं तु लक्खणं दिट्ठं। एते सव्वे मिलिता तेसट्ठिं होंति संजोगा ॥ ७॥ एक्कगसंजोगादिसु उप्पज्जंते उ जत्तिया भंगा। तेसिं संखाणयणे करणं तु इमं मुणेयव्वं ॥ ८॥ एक्कगसंजोगादिसु जत्तियमित्ता हवंति ठाणा उ। तत्तियमेत्ता दुयगा ठावेयव्वा कमेणं तु ॥ ९॥ पडिरासिय पडिरासिय अण्णोण्णेणऽब्भसाहि ते दुयगा। जावं तिण्हं ठाणं गुणि एवं जा भवे संखा ॥ ९२० ॥ एक्कगसंजोगादिसु एक्केक्के भंगसंख तावतिया। सचिय एक्कादीहिं पुणरवि संजोगसंगुणिता ॥ १॥ पत्तेयं पत्तेयं एक्कगमादीण सव्वजोगाणं। सा होति भंगसंखा जहक्कमेणं मुणेयव्वा ॥२॥ कह भंग भवंतेत्थं? भण्णति दिक्खेक्क अहव बहुया उ। मुंडावणादि एवं दुतिचउभंगादिचारणिया ॥ ३ ॥ पच्चयहेतुं तहियं पत्थारो होति पत्थरेयव्वो। इमिणा उ लक्खणेणं तमहं वोच्छं समासेणं ॥ ४॥ भंगपमाणायामो गुरुओ लहुओ य अक्खणिक्खेवो। मत्ता दुगुणा दुगुणो पत्थारे होति णिक्खेवो ॥ ५॥ एवं तू पत्थरिए पिच्छसु एक्कादिए उ संजोगे। जे जत्थ उ णिवडंति पच्चक्खं ते तहिं सव्वे ॥ ६॥ छक्कगसोलसगाणं जीवमजीवाण दोण्ह कप्पाणं। एक्कगसंजोगादीण संखपमाणं इमं होति ॥ ७॥ छ चेवय पण्णरसा वीसा पण्णरस छक्क एक्को य। एक्कगसंजोगादी छविहसचित्तकप्पम्मि ॥ ८॥ सोलस वीसं च सयं पंचेव सयाइं होंति सट्ठाइं। अट्ठारस वीसाइं तेयालं अट्ठसट्ठाइं ॥ ९॥ अट्ठेव सहस्साइं अट्ठहियाइं अजीवछट्ठम्मि। एक्कारस य सहस्सा चत्तारि सया तहा चत्ता ॥ ९३० ॥ बारस चेव सहस्सा अट्ठेव सया उ सत्तरा होंति। अट्ठमसंजोगम्मिवि उक्कमतो एव जावेक्को ॥ १॥ सचित्तदवियकप्पो तेवट्ठी होंति सव्वसंजोगा। पंच सता पणतीसा पण्णट्ठि सहस्स अचित्ते ॥ २॥ सचित्तअचित्ताणं एते भणिया तु सव्वसंजोगा। पत्तेयं पत्तेयं एत्तो मीसाण वोच्छामि ॥ ३॥ अचित्तदव्वकप्पे संजोग पिहप्पिहे ठवेतूणं। जितकप्पेक्कगसंजोग गुणित तेसिं फलमिणं तु ॥ ४ ॥ छण्णउतिं संजोगा दुगसंजोगम्मि मीसए कप्पे। सत्त सता वीसहिगा तियसंजोगाण बोद्धव्वा ॥ ५॥ तित्तीसं चेव सता सट्ठहिगा तू चउक्कसंजोगे। दस चेव सहस्साइं णव वीसहिया य पंचमए ॥ ६॥ छत्ती(बी)स सहस्साई दो चेव सताइं अट्ठअहियाइं। अडयालं च सहस्सा अडताला होंति सत्तमए ॥ ७॥ अट्ठट्ठिसहस्साइं छचेव सताइं होंति चत्तारि। सत्तत्तरिं सहस्सा दो चेव सया भवे वीसा ॥ ८॥ एमेव उक्कमेणवि णवमाउ परेण होंति बोद्धवा। छण्हंती जा सोले छचेव पदा मुणेयव्वा ॥ ९॥ एवं पण्णरस य वीस य वीसएण पण्णरस छक्क एक्केण। पत्तेयं पत्तेयं गुणिएणं रासिणो मुणसु ॥ ९४०॥ दोण्णि सता चत्ताला अट्ठार सया य होंति णायव्वा। अट्ठ सहस्सा चउसय ततिए मीसम्मि संजोगा ॥ १॥ सत्तावीस सहस्सा तिण्णि सता चेव होंति णायव्वा। पण्णट्ठिसहस्साइं पंच सया वीस अहिया य ॥ २॥ एक्कं च सयसहस्सं वीस सहस्सा सयं च वीसहियं। एक्कत्तरिं सहस्सा लक्खेक्को छस्सता चेव ॥ ३॥ एक्कं च सतसहस्सं तेणउइ सहस्स तह य पण्णासा। उक्कमतो सत्तेव य ठाणाइं ततो य पण्णरस ॥ ४॥ तिण्णी सता तु वीसा दोण्णि सहस्साइं चउसयजुयाइं। एक्कारस य सहस्सा दोण्णि सता चेव णायव्वा ॥ ५॥ छत्तीस सहस्साइं चउरो य सता हवंति णायव्वा। सत्तासीति सहस्सा तिण्णि सता चेव सट्ठिहता ॥ ६॥ एक्कं च सतसहस्सं सट्ठि सहस्सा सयं च सट्ठी य। दो लक्खा अडवीसा सहस्स अट्ठेव य सयाइं ॥ ७॥ दो

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [०९४८]

दीप अनुक्रम [०९४८]

चेव सयसहस्सा सत्तावण्णं भवे सहस्साइं। चउरो सय अट्ठमए ठाणा सत्तंतिमे वीसा ॥८॥ जह पढमे तह पंचमे जह बीए तह चउत्थए रासी। एक्कगुणकारे पुण सोलसमादी तु जावेक्को ॥९॥ अचित्तदवियकप्पे संजोगा सव्वपिंडिता कातुं। जितकप्पेकादीहिं गुणिते फलरासिणो मुणसु ॥९५०॥ तिण्णेव सतसहस्सा ठाणसहस्सा हवंति तेणउती। दो य सया य दसहिता एक्कगसंजोगसंगुणिता ॥१॥ णव चेव सयसहस्सा तेसीति सहस्स तह य पणुवीसा। वियसंजोगचउक्केऽवि एत्तिया चेव णायव्वा ॥२॥ सत्त सय दससहस्सा तेरस लक्खा य तियगसंजोगे। पंच य पदमसरिच्छा अचित्तपिंडो उ अंतिमए ॥३॥ जियपिंडेणं पिंडो अजीवकप्पस्स संगुणा नियमा। सो होति दव्वपिंडो तस्स उ संखा इमा होति ॥४॥ ईयाल सतसहस्सा अट्ठावीसं भवे सहस्साइं। सत्त सता पंचहिया ठाणाणं मीसकप्पम्मि ॥५॥ जियअजियमीसगाणं कप्पाणऽण्णेऽवि भंगसंजोगा। पत्तेय मीसगावि य णेयव्वा आणुपुव्वीए ॥६॥ पव्वावेक्को एकं एक्को अणेगा अणेग एकं च। णेगाणेगे य तहा चउभंगो एव एक्केके ॥७॥ एवं एक्कं एकसि एकमणेगेवि एत्थऽवि तहेव। चउभंगो णेयव्वो एक्केक्के छण्ह तु पदाणं ॥८॥ एक्केक्कसि पव्वावे मुंडावेक्कं तु एक्कसिं चेव। एत्थ तु दुगसंजोगो चउभंगो होति णायव्वो ॥९॥ एवं दुततियचतुपंचछक्कजोएहिं जत्तिया जे तु। संजोगा भगा य तु ते सव्वे होंति णायव्वा ॥९६०॥ पव्वावे मुंडेगं पव्वावेगं च मुंड णेगे य। णेगो एक्कं च तहा णेगाऽणेगे य एमेव ॥१॥ एमेव सेसगावी दुगतिगचउपंचछक्कसंजोगा। बुद्धीयऽणुगंतव्वा सव्वेवि जहक्कमेणं तु ॥२॥ अचित्तेऽविय एवं एक्को एक्कस्स देति आहारं। एवं उवहीमादीसु सव्वेसुवि होंति चउभंगा ॥३॥ दुगमादी संजोगा एत्थंपि तहेव हुंति विण्णेया एमेवेक्को एक्कसिं आहारादीणि देज्जाहि ॥४॥ एवं दुगमादीया णेया एत्थंपि सव्वसंजोगा। एवं ता अचित्ते मीसेऽविय बुद्धिए जोए ॥५॥ एक्को पव्वावेक्कं आहारादी य देति एत्थऽवि तहेव। संजोगा णेयव्वा जावतिया संभवे तत्थ ॥६॥ एसो तु दवियकप्पो तिविहोऽवि समासतो समक्खातो। एत्तो समासतोऽहं वोच्छामि उ खेत्तकप्पं तु ॥७॥ जं देवत्तो-गसरिसं खित्तं णिप्पच्चवातियं जं च। एसो तु खेत्तकप्पो देसा खलु अद्धछव्वीसं ॥ल० ६०॥८॥ रायगिह मगह चंपा अंगा तह तामलित्ति वंगा य। कंचणपुरं कलिंगा वाराणसि चेव कासी य ॥९॥ साएय कोसला गतपुरं च कुरु सोरियं कुसट्टा य। कंपिल्लं पंचाला अहिछत्ता जंगला चेव १०॥९७०॥ बारवती य सुरट्ठा मिहिल विदेहा य वच्छ कोसंवी। णंदिपुरं संदिब्भा भद्दिलपुरमेव वलया य ॥१॥ वयराड वच्छ वरणा अच्छा तह मत्तियावति दसण्णा। सोत्तियमती य चेती वीतिभयं सिंधुसोवीरा २०॥२॥ महुरा य सूरसेणा पावा भंगी य मास पुरिवट्टा। सावत्थी य कुणाला कोडीवरिसं च लाढा य ॥३॥ सेयवियाऽविय णगरी केतितिअद्धं च आरियं भणितं। जत्थुप्पत्ति जिणाणं चक्कीणं रामकिण्हाणं ॥४॥ एतेसु विहरियव्वं खेत्तेसुं साहुभाविएसुं तु। जत्थ य गुणा इमे तू खेमाईया मुणेयव्वा ॥५॥ खेमो सिवो सुभिक्खो अप्पप्पाणो उवस्सयमणुण्णो। एसो तु खेत्तकप्पो (पाखंडखेदमुक्को) गामणगरपट्टणाइण्णो ॥.६३॥ल० ६१॥६॥ खेमो डमरविरहितो रोगासिवविरहितो सिवो होति। पउरण्णपाणदेसो होइ सुभिक्खो मुणेयव्वो ॥ल० ६२॥७॥ जलुगासंखणगमुइंगपिसुगमसगादिविरहितो जो तु। सो होति अप्पपाणो अप्प अभावम्मि थेवे य ॥ल० ६३॥८॥ समभूमिरेणुवज्जियरितुक्खमोवस्सया मणुण्णा उ। गामा णगरावि य बहु पाउग्गा मासकप्पस्स ॥ल० ६४॥९॥ सज्ज(व्व)णजणो य भद्दो जहियं च मणुण्णसाहुजोणीओ। तारिसए खेत्तम्मी समणुण्णाओ विहारो तू ॥ल० ६५॥९८०॥ खेमो य सिवो य तहा खेमो सुभिक्खो य एव संजोगा। णेयव्व छसु पदेसु सत्तसु वा आणुपुव्वीए ॥१॥ अहवोदयग्गिसावदतक्करवालभयवज्जिओ रम्मो। णिरवेक्खोऽविय जहियं समणगुणविदू य जत्थ जणो ॥ल० ६६॥२॥ एताणि चेव खेमाइयाणि आरीयखेत्तसहियाणि। पुव्वभणियाणि जाणि तु ताइं खलु सत्त उ हवंति ॥३॥ णाणस्स दंसणस्स य चरणस्स य जत्थ णत्थि उवघातो। एसो तु खेत्तकप्पो जहियं च अणायणा णत्थि ॥ल० ६७॥४॥ उदगभयवुज्झणादी जह कोंकणसिंधुतामलित्तादी। णत्थि जहिं अग्गिभयं निरग्गिसाहम्मियगिहा वा ॥५॥ जहियं च सावयभयं सीहादीणं ण विज्जए देसे। जहियं च णत्थि चोरा देहुवहीपंथमोसादी ॥६॥ बाला उ सप्पगोणसमादी बोहिगभयं च णत्थि जहिं। मणसो समाहिकारो सो रम्मो होति णायव्वो ॥७॥ सूरो अणण्ण-गम्मो जत्थ णरिंदो तहिं सुहविहारं। साहुगुणे य वियाणति कुणति य साहूण जो रक्खं ॥८॥ अहिरण्णसुवण्णेते छज्जीवणिकायसंजमे णिरता। जाणति जणो य एवं जत्थ तु साहूण गुणणिहसं ॥ल० ६८॥९॥ सज्झाओ जहिं सुज्झति कुदिट्ठागिण्णो ण यावि जो होति। एसण इत्थी सोही य जत्थ तहियं णिवासे तु ॥९९०॥ जहितं च अणायतणा ण संति के पुण अणातणा भणिता?। साहम्मि भिण्णचित्ता मूलुत्तरदोसपडिसेवी ॥१॥ एतेहिं जो देसो आइण्णो तह य अन्नतित्थीहिं। मच्छंधबाहुगामा पुलिंददेसा अणायतणा ॥२॥ एतारिसम्मि खेत्ते अप्पडिबद्धेण विहरियव्वं तु। आलंबणाइं केइ तु इमाणि काउं ण विहरंति ॥३॥ वसही संथारो भत्त पाण वत्थे पडिग्गहे सेहा। सड्ढा य पुव्वसंथुय असढहंते य पडिबंधो ॥.६४॥४॥ फासुया एसणिज्जा य, णिवाया य रितुक्खमा। एरिसा साहुपाउग्गा, वसही दुल्लभऽण्णहिं ॥५॥ एमेव य संथारा कंबलदब्भादिवत्थुनिप्फन्ना। सयणासणा य जहियं सुलभा जोग्गा य

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [०९९६]

दीप अनुक्रम [०९९६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

साहूणं ॥ ६ ॥ भत्तं सुलभ मणुण्णं च एरिसं णत्थि अण्णहिं तत्थ । जंगियभंगियमादी नहु सुलभा अन्नहिं वत्था ॥ ७ ॥ पडिगहगाऽविय सुलभा सेहा यऽन्नत्थ नत्थि खेत्तम्मि। अण्णत्थ दुल्लभा तू तेण तु एत्थं बहुगुणं तु ॥ ८ ॥ सड्ढा आहारादी दिंति य जोग्गाणि संथुता चेव । पुरपच्छ दिट्ठभट्ठा य अण्णहिं णत्थि एरिसगा ॥ ९ ॥ उडुबद्धमासकप्पेण विहारो तं ण सद्दहइमेहिं । संजमआतविराहण वच्चंते गामअणुगामं ॥ १००० ॥ णाणादीण य हाणी जोग्गं खेत्तं तु मग्गमाणाणं । खेत्ताओऽविय खेत्तं संकमणे धुवमसज्झाओ ॥ १ ॥ जे णीयत्ते दोसा मासंतो परिवसेण ते चेव । एवं मासविहारे मण्णंतो बहुविहे दोसे ॥२॥ णो सद्दहति विहारं तेण तु ण विहरेति तस्स आणादी । मासोवरिं च लहुओ णीयावासे य जे दोसा ॥ ३ ॥ ते सो पावति सव्वे एतेहालंबणेहिं अच्छंतो । किं एगंतेणेवं ? ण विसेसो भण्णती सुणसु ॥ ४ ॥ णिक्कारणम्मि एवं पडिबंधो कारणम्मि णिद्दोसो । ते चेव अजयणाए पुणोऽवि सो पावती दोसे ॥ ५ ॥ काणि पुण कारणाइं जेहिं चिट्ठेज्ज एगठाणम्मि ?। भण्णति पुव्वुद्दिट्ठा जे खेमसिवादिया दारा ॥ ६ ॥ तेसिं चिय पडिवक्खा अक्खेमे असिव तह य दुब्भिक्खे । बहुपाणुवस्सओ वा अमणुण्णो तु दयमादी ॥ ७ ॥ एतेहिं कारणेहिं एगट्ठाणम्मि अच्छमाणा उ। जदि जयण ण कुबंती ते चिय णीयादिया दोसा ॥ ८ ॥ का पुण जयणा तहियं ? भण्णति तिहि कारणेहिँ उ ठितस्स। अण्णउवस्सयभिक्खादिया तु जयणा मुणेयव्वा ॥ ९ ॥ अक्खेममादिएसुवि अक्खेत्तेसुं तु कारणवसेणं । चिट्ठंताणं तहियं इमा तु जयणा मुणेयव्वा ॥ १०१० ॥ अक्खेमेवि सति पुरं संवट्टं वावि आसयंती उ । अक्खेमं चऽण्णत्था तहिं खेमं तो ण णिग्गच्छे ॥ १ ॥ जदि असिवं तु वहिद्धा तइया अच्छंति ते तहिं चेव। दुब्भिक्खेऽवि ण णिंति य अहवा सव्वत्थ दुब्भिक्खं ॥ २ ॥ दुब्भिक्खेँ ज़यण तहियं अच्छंते वावि जयण तह चेव । बहुपाणे आउत्ता चेंकमंते तु जयणाए ॥ ३ ॥ उवस्सएँ आउत्ता कुडमुहभूतीत वावि लक्खंता । अण्णाए वसहीए ठंति पमज्जंति य अभिक्खं ॥ ४ ॥ जा जत्थ जयण जुज्जति अमणुण्णे उवस्सयम्मि तं कुज्जा । कयवरसोहणमादी दुग्गंधे गंध पकिरंती ॥ ५ ॥ उदगभए थलगामे थले च वसही तहिं तु गिण्हंति । अग्गिभएँ मालबद्धे हम्मिततलगम्मि व वसंति ॥ ६ ॥ रोगबहुले अपुच्छा णिवेज्जए चोरकिण्णेँ ण तु विहरे । सत्थेण वावि गच्छे ठायंति व जत्थ णिरवायं ॥ ७ ॥ जहियं सावयदोसा (चा) तहियं एगाणितो ण गच्छेज्जा । गेण्ह वसहिं च गुत्तं गामस्स तु मज्झयारम्मि ॥ ८ ॥ विज्जामंतादीहिं वाले णीणेंति रातोँ णवि गच्छे। रायं च पण्णविंती साहुगुणमजाणमाणं तु ॥ ९ ॥ जत्थ जणो णवि जाणति साहुगुणे तहिं कहंति साहुगुणे। परिभोग अकालम्मी रत्तिं कुबंति सज्झायं ॥ १०२० ॥ दूरेण कुतित्थीए वज्जेंती एसणं च पण्णवए । कुल(लगु)डाइत्थीचरियाइया य वज्जंति चरणट्ठा ॥ १ ॥ वज्जेज्ज अणायतणा णाणादीणं च जत्थ उवघातो । एवं जहसंभवं तं करेज्ज जयणं णिवसमाणो ॥ २ ॥ एसो तु खेत्तकप्पो उस्सग्गववायसंजुतो भणितो । एत्तो उ कालकप्पं वोच्छामि जहक्कमेणं तु ॥ ३ ॥ मासं पज्जोसवणा वुद्धावास परियायकप्पो य । उस्सग्ग पडिक्कमणे किति-कम्मे चेव पडिलेहा ॥ ∴६५ ॥ ४ ॥ सज्झायझाणभिक्खे भत्तवियारे तहेव सज्झाए। णिक्खमणे य पवेसे एसा खलु कालकप्पविही ॥ ∴६६ ॥ ५ ॥ पुव्वं तु मासकप्पो परूवितो सो णिसीहणामम्मि। णवरिं तु इहारुवणा वण्णिज्जति मासेँ अतिरेगे ॥ ६ ॥ मासातीतं वसतो वसहीए तीएँ चेव मासलहुं। तह भिक्खायरियाए वीयारे तह वियारे य ॥ ७ ॥ परिसाडी संथारे सव्वेसेतेसु होति मासलहुं। चत्तारि य उवघाता संथारे अपरिसाडिम्मि ॥ ८ ॥ पंचेते मासिया खलु चाउम्मासं च मिलिय सव्वेते। णव मास मासऽतीए उडुबद्धे संवसंतस्स ॥ ९ ॥ लहुगा तु वासऽतीते वसहीते सेस होंति ते चेव । भिक्खायरियादीसुं जे भणिता मासऽतीतम्मि ॥ १०३० ॥ आरोवणा उ एसा कालदुवे वण्णिता अणिताणं । एत्तो पज्जोसवणासामायारिं पवक्खामि ॥ १ ॥ पजहेत्तु वासजोग्गं बहिया अच्छंति वासुदिक्खंता । जे अंतरा तु गिण्हे तं सव्वं तेसि खेत्तीणं ॥ २ ॥ अह पुण वच्चंताणं वासाजोग्गं तु अंतरा वासं। आरद्ध डहरगामे ण पहुच्चति एगवसही य ॥ ३ ॥ अण्णोण्णसुट्ठिताणं बहवो सागारिया ण तीरंति । परिहरितु ताहेँ वज्जे गुरुसागरियं णवरि एक्कं ॥ ४ ॥ अवसेस समायारी पज्जोसवणाए वण्णिय णिसीहे । सव्वेव णिरवसेसा इमम्मि दारम्मि णायव्वा ॥ ५ ॥ वुड्ढस्स तु जो वासो वड्ढी व गतो तु कारणेणं तु। एसो तु वुड्ढवासो तस्स तु कालो इमो होति ॥ ६ ॥ अंतोमुहुत्त कालं जहण्णमुक्कोस पुव्वकोडी तु। मोत्तुं गिहिपरियागं जं जस्स व आउगं तित्थे ॥ ७ ॥ मरणे अंतमुहुत्तो देसूणा पुबकोडि कह होजा ?। जो तरुणो चिय समणो असमत्थो विहरितुं जातो ॥ ८ ॥ कदा-विज्जा चरियं लाघवेाए तवस्सी, तत्तो तवो देसितोँ सिद्धिमग्गो। अहाविहं संजम पालइत्ता, दीहाउणो वुड्ढवासस्स कालो ॥ ∴६७ ॥ ९ ॥ विज्जा तु बारसंगं करणं तस्स गहणं मुणेयव्वं ; सुत्तं वार समाओ तत्तियमेत्ता य अत्थेवि ॥ १०४० ॥ धित्तुं सुत्तत्थाइं बार समा देसदंसणं च कतं। चरियं भंतेगट्ठं लाघविएणं तु तिविहेणं ॥ १ ॥ उवकरणसरीरिंदिय एवं तिविहं तु लाघवं होति। उवकरणऽरत्तदुट्ठो धरेति ण य गिण्हए अहियं ॥ल० ६९॥२॥ संघयणधितीजुत्तो अकिसो ण तु थूरदेहसारीरो। वर्स्सिदिओ तवस्सी चउत्थमादी तवो चित्तो(न्नो)॥ ल० ७०॥३॥ कुबंतेणं अछित्तिं णप्पणादी देसिओ तु मोक्खपहो। सुत्तत्थुवदेसेणं संजमियं संजमेणं च ॥४॥ काऊण अवो(तऽवो)च्छित्तिं बारस वासाइं णिच्चमुज्जुत्तो। दीहाउतो तु सूरी पडिवज्जेऽब्भुज्जयविहारं ॥ ५ ॥ अब्भुज्जयमचयंतो अगीयमीसो व गच्छपडिबद्धो । अच्छति जुण्णमहल्लो कारणतो वावि अन्नोवि ॥ ६ ॥ जंघाबले व खीणे गेलण्णे सहायतो व दोबल्ले । (२७१)

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [१०४७] दीप अनुक्रम [१०४७]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

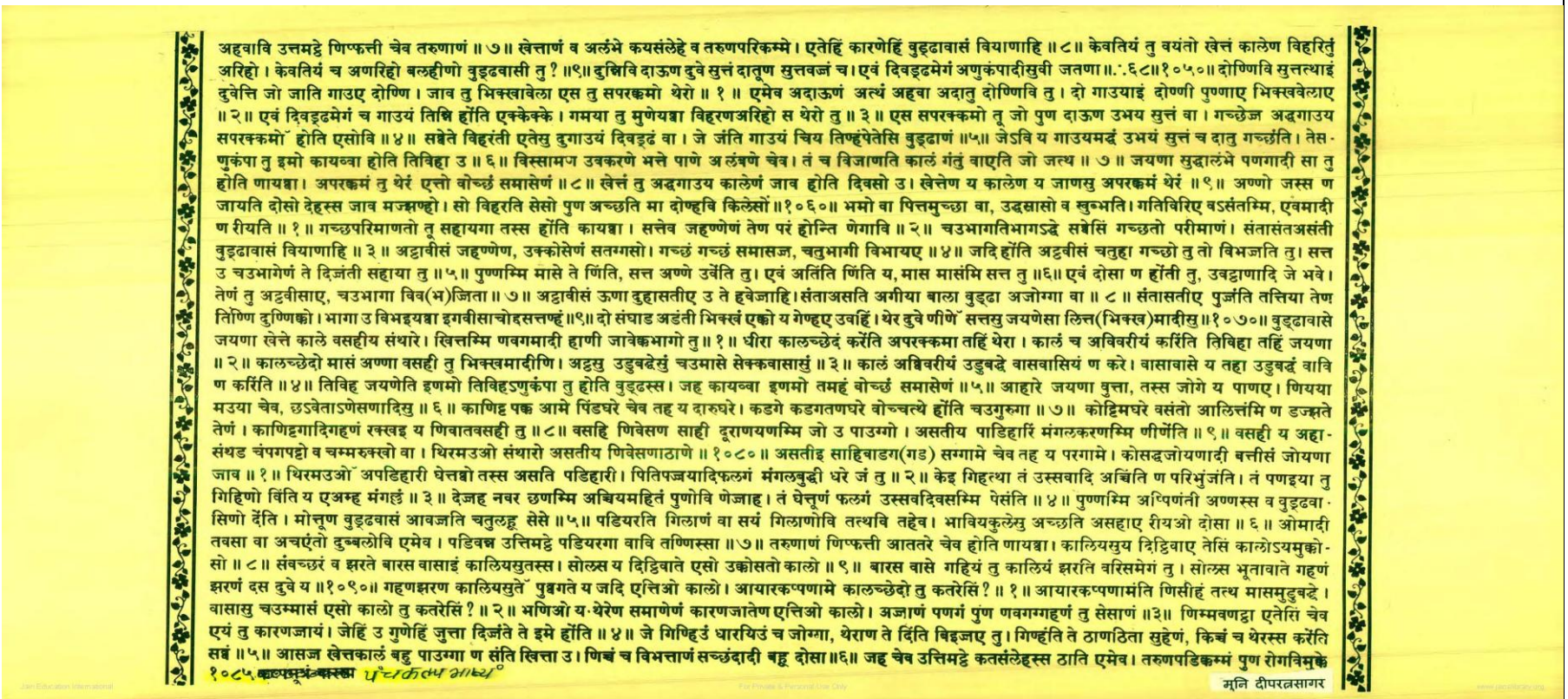

अहवावि उत्तमट्ठे णिप्फत्ती चेव तरुणाणं ॥ ७ ॥ खेत्ताणं व अलंभे कयसंलेहे व तरुणपरिकम्मे। एतेहिं कारणेहिं वुड्ढावासं वियाणाहि ॥ ८ ॥ केवतियं तु वयंतो खेत्तं कालेण विहरितुं अरिहो। केवतियं च अणरिहो बलहीणो वुड्ढवासी तु ? ॥९॥ दुन्निवि दाऊण दुवे सुत्तं दातूण सुत्तवज्जं च। एवं दिवड्ढमेगं अणुकंपादीसुवी जतणा॥.:.६८॥१०५०॥ दोण्णिवि सुत्तत्थाइं दुवेत्ति जो जाति गाउए दोण्णि। जाव तु भिक्खावेला एस तु सपरक्कमो थेरो ॥ १ ॥ एमेव अदाऊणं अत्थं अहवा अदातु दोण्णिवि तु। दो गाउयाइं दोण्णी पुण्णाए भिक्खवेलाए ॥ २ ॥ एवं दिवड्ढमेगं च गाउयं तिन्नि होंति एक्केक्के। गमया तु मुणेयव्वा विहरणअरिहो स थेरो तु ॥ ३ ॥ एस सपरक्कमो तू जो पुण दाऊण उभय सुत्तं वा। गच्छेज्ज अद्धगाउय सपरक्कमो होति एसोवि ॥ ४ ॥ सव्वेते विहरंती एतेसु दुगाउयं दिवड्ढं वा। जे जंति गाउयं चिय तिण्हंपेतेसि वुड्ढाणं ॥५॥ जेऽवि य गाउयमद्धं उभयं सुत्तं च दातु गच्छंति। तेसणुकंपा तु इमो कायव्वा होति तिविहा उ ॥ ६ ॥ विस्सामण उवकरणे भत्ते पाणे अलंबणे चेव। तं च विजाणति कालं गंतुं वाएति जो जत्थ ॥ ७ ॥ जयणा सुद्धालंभे पणगादी सा तु होति णायव्वा। अपरक्कमं तु थेरं एत्तो वोच्छं समासेणं ॥ ८ ॥ खेत्तं तु अद्धगाउय कालेणं जाव होति दिवसो उ। खेत्तेण य कालेण य जाणसु अपरक्कमं थेरं ॥ ९ ॥ अण्णो जस्स ण जायति दोसो देहस्स जाव मज्झण्हो। सो विहरति सेसो पुण अच्छति मा दोण्हवि किलेसो॥१०६०॥ भमो वा पित्तमुच्छा वा, उद्धसासो व खुब्भति। गतिविरिए वऽसंतम्मि, एवमादी ण रीयति ॥ १ ॥ गच्छपरिमाणतो तू सहायगा तस्स होंति कायव्वा। सत्तेव जहण्णेणं तेण परं होन्ति णेगावि ॥ २ ॥ चउभागतिभागऽद्धे सव्वेसिं गच्छतो परीमाणं। संतासंतअसंती वुड्ढावासं वियाणाहि ॥ ३ ॥ अट्ठावीसं जहण्णेण, उक्कोसेणं सतग्गसो। गच्छं गच्छं समासज्ज, चतुभागी विभायए ॥ ४ ॥ जदि होंति अट्ठवीसं चतुहा गच्छो तु तो विभजति तु। सत्त उ चउभागेणं ते दिज्जंती सहाया तु ॥ ५ ॥ पुण्णम्मि मासे ते णिंति, सत्त अण्णे उवेंति तु। एवं अतिंति णिंति य, मास मासंमि सत्त तु ॥६॥ एवं दोसा ण होंती तु, उवट्ठाणादि जे भवे। तेणं तु अट्ठवीसाए, चउभागा विव(भ)जिता ॥ ७ ॥ अट्ठावीसं ऊणा दुहासतीए उ ते हवेज्जाहि। संताअसति अगीया बाला वुड्ढा अजोग्गा वा ॥ ८ ॥ संतासतीए पुज्जंति तत्तिया तेण तिण्णि दुण्णिक्को। भागा उ विभइयव्वा इगवीसाचोद्दसत्तण्हं॥९॥ दो संघाड अडंती भिक्खं एक्को य गेण्हए उवहिं। थेर दुवे णीणें सत्तसु जयणेसा लित्त(भिक्ख)मादीसु॥१०७०॥ वुड्ढावासे जयणा खेत्ते काले वसहीय संथारे। खित्तम्मि णवगमादी हाणी जावेक्कभागो तु ॥ १ ॥ धीरा कालच्छेदं करेंति अपरक्कमा तहिं थेरा। कालं च अविवरीयं करिंति तिविहा तहिं जयणा ॥ २ ॥ कालच्छेदो मासं अण्णा वसही तु भिक्खमादीणि। अट्ठसु उडुबद्धेसुं चउमासे सेक्कवासासुं ॥ ३ ॥ कालं अविवरीयं उडुबद्धे वासवासियं ण करे। वासावासे य तहा उडुबद्धं वावि ण करिंति ॥ ४ ॥ तिविह जयणेति इणमो तिविहऽणुकंपा तु होति वुड्ढस्स। जह कायव्वा इणमो तमहं वोच्छं समासेणं ॥ ५ ॥ आहारे जयणा वुत्ता, तस्स जोगे य पाणए। णियया मउया चेव, छऽवेताऽणेसणादिसु ॥ ६ ॥ काणिट्ठ पक्क आमे पिंडघरे चेव तह य दारुघरे। कडगे कडगतणघरे वोच्चत्थे होंति चउगुरुगा ॥ ७ ॥ कोट्ठिमघरे वसंतो आलित्तंमि ण डज्झते तेणं। काणिट्ठगादिगहणं रक्खइ य णिवातवसही तु ॥ ८ ॥ वसहि णिवेसण साही दूराणयणम्मि जो उ पाउग्गो। असतीय पाडिहारिं मंगलकरणम्मि णीणेंति ॥ ९ ॥ वसही य अहासंथड चंपगपट्टो व चम्मरुक्खो वा। थिरमउओ संथारो असतीय णिवेसणाठाणे ॥ १०८० ॥ असतीइ साहिवाडग(गड) सग्गामे चेव तह य परगामे। कोसद्धजोयणादी वत्तीसं जोयणा जाव ॥ १ ॥ थिरमउओ अपडिहारी घेत्तव्वो तस्स असति पडिहारी। पितिपज्जयादिफलगं मंगलबुद्धी धरे जं तु ॥ २ ॥ केइ गिहत्था तं उस्सवादि अचिंति ण परिभुंजंति। तं पणइया तु गिहिणो विंति य एअम्ह मंगलं ॥ ३ ॥ देज्जह नवर छणम्मि अचियमहितं पुणोवि णेज्जाह। तं घेत्तूणं फलगं उस्सवदिवसम्मि पेसंति ॥ ४ ॥ पुण्णम्मि अप्पिणंती अण्णस्स व वुड्ढवासिणो देंति। मोत्तूण वुड्ढवासं आवज्जति चतुलहू सेसे ॥५॥ पडियरति गिलाणं वा सयं गिलाणोवि तत्थवि तहेव। भावियकुलेसु अच्छति असहाए रीयओ दोसा ॥ ६ ॥ ओमादी तवसा वा अचएंतो दुब्बलोवि एमेव। पडिवन्न उत्तिमट्ठे पडियरगा वावि तण्णिस्सा ॥७॥ तरुणाणं णिप्फत्ती आततरे चेव होति णायव्वा। कालियसुय दिट्ठिवाए तेसिं कालोऽयमुक्कोसो ॥ ८ ॥ संवच्छरं व झरते बारस वासाइं कालियसुतस्स। सोलस य दिट्ठिवाते एसो उक्कोसतो कालो ॥ ९ ॥ बारस वासे गहियं तु कालियं झरति वरिसमेगं तु। सोल्स भूतावाते गहणं झरणं दस दुवे य ॥१०९०॥ गहणझरण कालियसुते पुव्वगते य जदि एत्तिओ कालो। आयारकप्पणामे कालच्छेदो तु कतरेसिं ? ॥ १ ॥ आयारकप्पणामंति णिसीहं तत्थ मासमुद्दिट्ठे। वासासु चउम्मासं एसो कालो तु कतरेसिं ? ॥ २ ॥ भणिओ य थेरेण समाणेणं कारणजातेण एत्तिओ कालो। अज्जाणं पणगं पुण णवगग्गहणं तु सेसाणं ॥३॥ णिम्मवणट्ठा एतेसिं चेव एयं तु कारणजायं। जेहिं उ गुणेहिं जुत्ता दिज्जंते ते इमे होंति ॥ ४ ॥ जे गिण्हिउं धारयिउं च जोग्गा, थेराण ते दिंति विइज्जए तु। गिण्हंति ते ठाणठिता सुहेणं, किच्चं च थेरस्स करेंति सव्वं ॥५॥ आसज्ज खेत्तकालं बहु पाउग्गा ण संति खित्ता उ। णिच्चं च विभत्ताणं सच्छंदादी बहू दोसा॥६॥ जह चेव उत्तिमट्ठे कतसंलेहस्स ठाति एमेव। तरुणपडिकम्मं पुण रोगविमुक्के

१०८५ काप्पसूत्र-वस्त्रा पंचकल्प भाष्य

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [१०९७] दीप अनुक्रम [१०९७]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

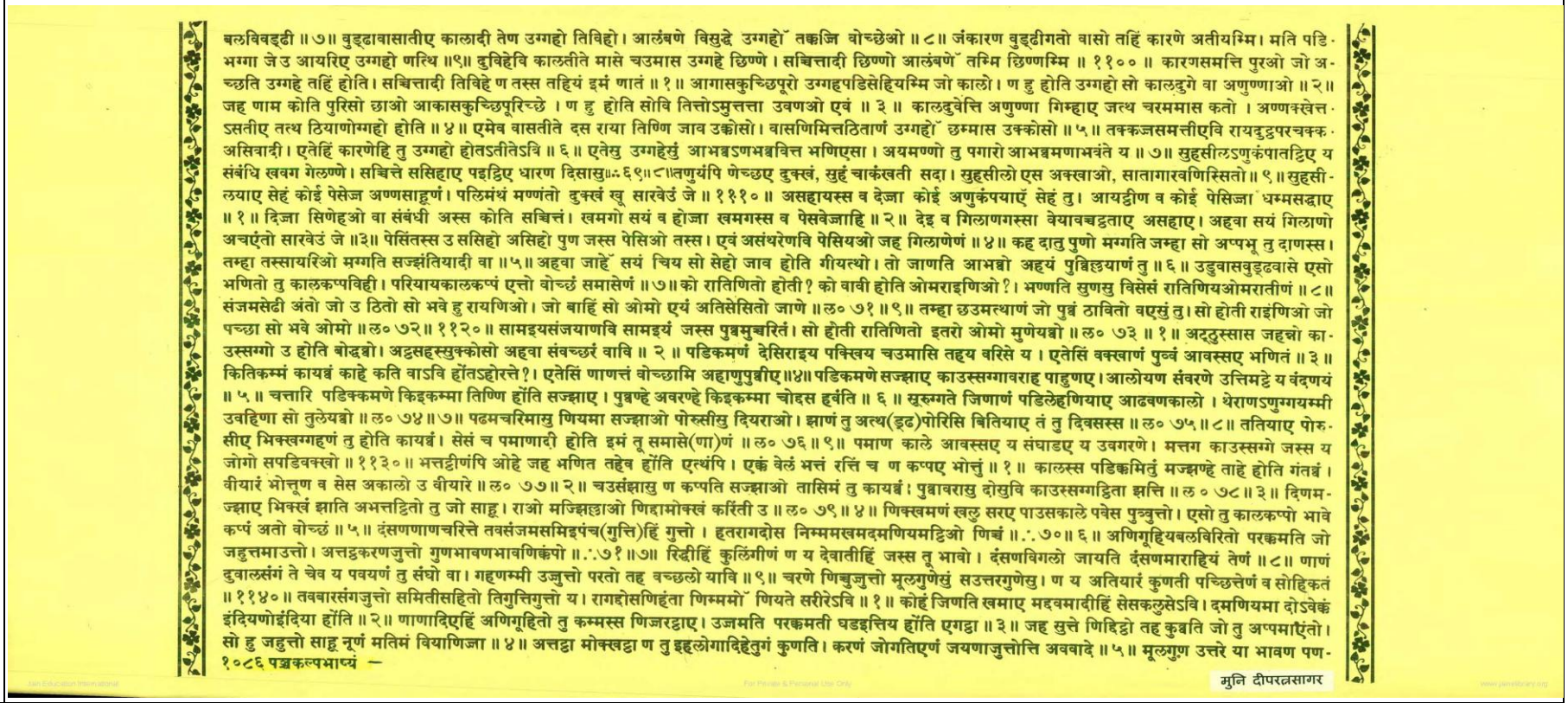

बलविवड्ढी ॥ ७॥ वुड्ढावासातीए कालादी तेण उग्गहो तिविहो। आलंबणे विसुद्धे उग्गहो तक्कज्जि वोच्छेओ ॥ ८॥ जंकारण वुड्ढीगतो वासो तहिं कारणे अतीयम्मि। मति पडि-
भग्गा जेउ आयरिए उग्गहो णत्थि ॥९॥ दुविहेवि कालतीते मासे चउमास उग्गहे छिण्णे। सच्चित्तादी छिण्णो आलंबणे तम्मि छिण्णम्मि ॥ ११०० ॥ कारणसमत्ति पुरओ जो अ-
च्छति उग्गहे तहिं होति। सच्चित्तादी तिविहे ण तस्स तहियं इमं णातं ॥ १॥ आगासकुच्छिपूरो उग्गहपडिसेहियम्मि जो कालो। ण हु होति उग्गहो सो कालदुगे वा अणुण्णाओ ॥ २॥
जह णाम कोति पुरिसो छाओ आकासकुच्छिपूरिच्छे । ण हु होति सोवि तित्तोऽमुत्तत्ता उवणओ एवं ॥ ३ ॥ कालदुवेत्ति अणुण्णा गिम्हाए जत्थ चरममास कतो । अण्णक्खेत्त-
ऽसतीए तत्थ ठियाणोग्गहो होति ॥ ४॥ एमेव वासतीते दस राया तिण्णि जाव उक्कोसो। वासणिमित्तठिताणं उग्गहो छम्मास उक्कोसो ॥ ५॥ तक्कज्जसमत्तीएवि रायदुट्ठपरचक्क-
असिवादी। एतेहिं कारणेहि तु उग्गहो होतऽतीतेऽवि ॥ ६॥ एतेसु उग्गहेसुं आभवऽणभवित्त भणिएसा । अयमण्णो तु पगारो आभवमणाभवंते य ॥ ७॥ सुहसीलऽणुकंपातट्ठिए य
संबंधि खवग गेलण्णे। सच्चित्ते ससिहाए पइट्ठिए धारण दिसासु॥८६९॥८॥तणुयंपि णेच्छए दुक्खं, सुहं चाकंखती सदा। सुहसीलो एस अक्खाओ, सातागारवणिस्सितो ॥ ९॥ सुहसी-
लयाए सेहं कोई पेसेज्ज अण्णसाहूणं। पलिमंथं मण्णंतो दुक्खं खु सारवेउं जे ॥ ११९० ॥ असहायस्स व देज्जा कोई अणुकंपयाएं सेहं तु। आयट्ठीण व कोई पेसिज्जा धम्मसद्धाए
॥ १॥ दिज्जा सिणेहओ वा संबंधी अस्स कोति सच्चित्तं। खमगो सयं व होज्जा खमगस्स व पेसवेज्जाहि ॥ २॥ देइ व गिलाणगस्सा वेयावच्चट्ठताए असहाए। अहवा सयं गिलाणो
अचएंतो सारवेउं जे ॥३॥ पेसितस्स उ ससिहो असिहो पुण जस्स पेसिओ तस्स। एवं असंथरेणवि पेसियओ जह गिलाणेणं ॥ ४॥ कह दातु पुणो मग्गति जम्हा सो अप्पभू तु दाणस्स।
तम्हा तस्सायरिओ मग्गति सज्झंतियादी वा ॥ ५॥ अहवा जाहें सयं चिय सो सेहो जाव होति गीयत्थो। तो जाणति आभवो अहयं पुव्विल्लयाणं तु ॥ ६॥ उडुवासवुड्ढवासे एसो
भणितो तु कालकप्पविही। परियायकालकप्पं एत्तो वोच्छं समासेणं ॥ ७॥ को रातिणितो होती? को वावी होति ओमराइणिओ?। भण्णति सुणसु विसेसं रातिणियओमरातीणं ॥ ८॥
संजमसेढी अंतो जो उ ठितो सो भवे हु रायणिओ। जो बाहिं सो ओमो एयं अतिसेसितो जाणे ॥ ल० ७१ ॥ ९॥ तम्हा छउमत्थाणं जो पुव्वं ठावितो वएसुं तु। सो होती राइणिओ जो
पच्छा सो भवे ओमो ॥ ल० ७२ ॥ ११२० ॥ सामइयसंजयाणवि सामइयं जस्स पुव्वमुच्चरितं। सो होती रातिणितो इतरो ओमो मुणेयव्वो ॥ ल० ७३ ॥ १॥ अट्ठुस्सास जहन्नो का-
उस्सग्गो उ होति बोद्धव्वो। अट्ठसहस्सुक्कोसो अहवा संवच्छरं वावि ॥ २ ॥ पडिकमणं देसिराइय पक्खिय चउमासि तहय वरिसे य । एतेसिं वक्खाणं पुव्वं आवस्सए भणितं ॥ ३ ॥
कितिकम्मं कायव्वं काहे कति वाऽवि होंतऽहोरत्ते?। एतेसिं णाणत्तं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए॥४॥ पडिकमणे सज्झाए काउस्सग्गावराह पाहुणए। आलोयण संवरणे उत्तिमट्ठे य वंदणयं
॥ ५ ॥ चत्तारि पडिक्कमणे किइकम्मा तिण्णि होंति सज्झाए । पुव्वण्हे अवरण्हे किइकम्मा चोद्दस हवंति ॥ ६ ॥ सूरुग्गते जिणाणं पडिलेहणियाए आढवणकालो । थेराणऽणुग्गयम्मी
उवहिणा सो तुलेयव्वो ॥ ल० ७४ ॥ ७॥ पढमचरिमासु णियमा सज्झाओ पोरुसीसु दियराओ। झाणं तु अत्थ(इढ)पोरिसि वितियाए तं तु दिवसस्स ॥ ल० ७५ ॥ ८॥ ततियाए पोरु-
सीए भिक्खग्गहणं तु होति कायव्वं। सेसं च पमाणादी होति इमं तू समासे(णा)णं ॥ ल० ७६ ॥ ९॥ पमाण काले आवस्सए य संघाडए य उवगरणे। मत्तग काउस्सग्गे जस्स य
जोगो सपडिक्खो ॥ ११३० ॥ भत्तट्ठीणंपि ओहे जह भणित तहेव होंति एत्थंपि। एकं वेलं भत्तं रत्तिं च ण कप्पए भोत्तुं ॥ १ ॥ कालस्स पडिक्कमितुं मज्झण्हे ताहे होति गंतव्वं ।
वीयारं भोत्तूण व सेस अकालो उ वीयारे ॥ ल० ७७ ॥ २॥ चउसंझासु ण कप्पति सज्झाओ तासिमं तु कायव्वं। पुव्वावरासु दोसुवि काउस्सग्गट्ठिता झत्ति ॥ ल० ७८ ॥ ३॥ दिणम-
ज्झाए भिक्खं झाति अभत्तट्ठितो तु जो साहू। राओ मज्झिल्लाओ णिहामोक्खं करिंती उ ॥ ल० ७९ ॥ ४॥ णिक्खमणं खलु सरए पाउसकाले पवेस पुव्वुत्तो। एसो तु कालकप्पो भावे
कप्पं अतो वोच्छं ॥ ५॥ दंसणणाणचरित्ते तवसंजमसमिइपंच(गुत्ति)हिं गुत्तो । हतरागदोस निम्ममखमदमणियमट्ठिओ णिचं ॥ ७० ॥ ६॥ अणिगूहियबलविरितो परक्कमति जो
जहुत्तमाउत्तो। अत्तट्ठकरणजुत्तो गुणभावणभावणिकंपो ॥ ७१ ॥ ७॥ रिद्धीहिं कुलिंगीणं ण य देवातीहिं जस्स तू भावो। दंसणविगलो जायति दंसणमाराहियं तेणं ॥ ८॥ णाणं
दुवालसंगं ते चेव य पवयणं तु संघो वा। गहणम्मी उज्जुत्तो परतो तह वच्छलो यावि ॥ ९॥ चरणे णिच्चुजुत्तो मूलगुणेसुं सउत्तरगुणेसु। ण य अतियारं कुणती पच्छित्तेणं व सोहिकतं
॥ ११४० ॥ तवचारसंगजुत्तो समितीसहितो तिगुत्तिगुत्तो य। रागद्दोसणिहंता णिम्ममो णियते सरीरेऽवि ॥ १॥ कोहं जिणति खमाए मद्दवमादीहिं सेसकलुसेऽवि। दमणियमा दोऽवेकं
इंदियणोइंदिया होंति ॥ २॥ णाणादिएहिं अणिगूहितो तु कम्मस्स णिज्जरट्ठाए। उज्जमति परक्कमती घडइत्तिय होंति एगट्ठा ॥ ३॥ जह सुत्ते णिद्दिट्ठो तह कुवति जो तु अप्पमाएंतो।
सो हु जहुत्तो साहू नूणं मतिमं वियाणिज्जा ॥ ४॥ अत्तट्ठा मोक्खट्ठा ण तु इहलोगादिहेतुगं कुणति। करणं जोगतिएणं जयणाजुत्तोत्ति अववादे ॥ ५॥ मूलगुण उत्तरे या भावण पण-

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [११४६]

दीप अनुक्रम [११४६]

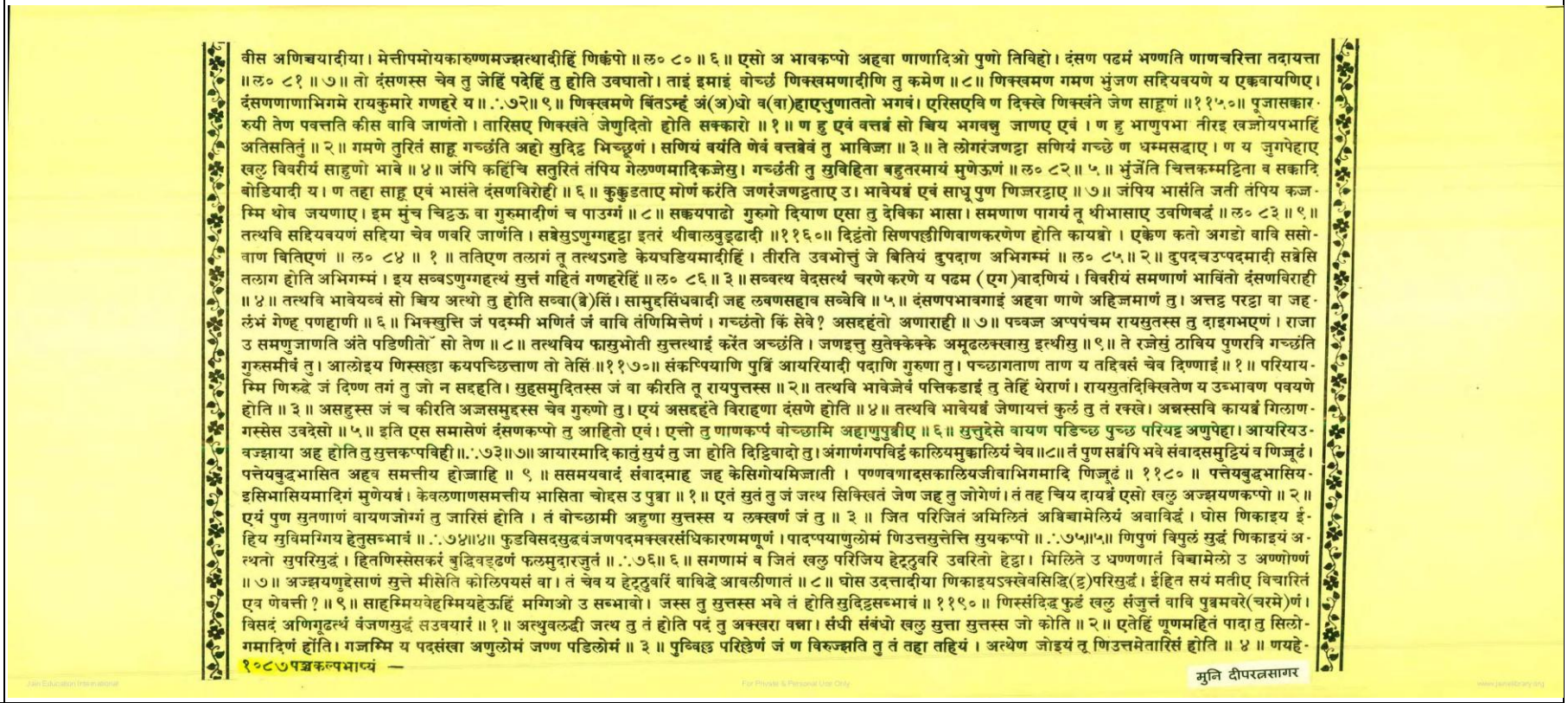

वीस अणिच्चयादीया। मेत्तीपमोयकारुण्णमज्झत्थादीहिं णिकंपो ॥ल० ८०॥ ६॥ एसो अ भावकप्पो अहवा णाणादिओ पुणो तिविहो। दंसण पढमं भण्णति णाणचरित्ता तदायत्ता ॥ल० ८१॥ ७॥ तो दंसणस्स चेव तु जेहिं पदेहिं तु होति उवघातो। ताइं इमाइं वोच्छं णिक्खमणादीणि तु कमेण ॥८॥ णिक्खमण गमण भुंजण सद्दियवयणे य एक्कवायणिए। दंसणणाणाभिगमे रायकुमारे गणहरे य ॥ ॥७२॥९॥ णिक्खमणे चिंतऽम्हं अं(अ)धो व(वा)हाएत्तुणातितो भगवं। एरिसएवि ण दिक्खे णिक्खंते जेण साहूणं ॥११५०॥ पूजासक्कार-रुयी तेण पवत्तति कीस वावि जाणंतो। तारिसए णिक्खंते जेणुदितो होति सक्कारो ॥१॥ ण हु एवं वत्तव्वं सो चिय भगवन्नु जाणए एवं। ण हु भाणुपभा तीरइ खज्जोयपभाहिं अतिसतितुं ॥२॥ गमणे तुरितं साहू गच्छंति अहो सुदिट्ठ भिच्छूणं। सणियं वयंति णेवं वत्तव्वेवं तु भाविज्जा ॥३॥ ते लोगरंजणट्ठा सणियं गच्छे ण धम्मसद्धाए। ण य जुगपेहाए खलु विवरीयं साहुणो भावे ॥४॥ जंपि कहिंचि सतुरितं तंपिय गेलण्णमादिकज्जेसु। गच्छंती तु सुविहिता बहुतरमायं मुणेऊणं ॥ल० ८२॥ ५॥ भुंजेंति चित्तकम्मट्ठिता व सक्कादि बोडियादी य। ण तहा साहू एवं भासंते दंसणविरोही ॥ ६॥ कुक्कुडताए मोणं करंति जणरंजणट्ठताए उ। भावेयव्वं एवं साधू पुण णिज्जरट्ठाए ॥७॥ जंपिय भासंति जती तंपिय कज्ज-म्मि थोव जयणाए। इम मुंच चिट्ठऊ वा गुरुमादीणं च पाउग्गं ॥८॥ सक्कयपाढो गुरुगो दियाण एसा तु देविका भासा। समणाण पागयं तू थीभासाए उवणिबद्धं ॥ल० ८३॥ ९॥ तत्थवि सद्दियवयणं सद्दिया चेव णवरि जाणंति। सव्वेसुऽण्णग्गहट्ठा इतरं थीबालवुड्ढादी ॥११६०॥ दिट्ठंतो सिणपट्ठीणिवाणकरणेण होति कायव्वो। एक्केण कतो अगडो वावि ससो-वाण वितिएणं ॥ ल० ८४॥ १॥ ततिएण तलागं तू तत्थऽगडे केयघडियमादीहिं। तीरति उवभोत्तुं जे बितियं दुपदाण अभिगम्मं ॥ ल० ८५॥ २॥ दुपदचउप्पदमादी सव्वेसि तलाग होति अभिगम्मं। इय सव्वऽणुग्गहत्थं सुत्तं गहितं गणहरेहिं ॥ल० ८६॥ ३॥ सव्वत्थ वेदसत्थं चरणे करणे य पढम (एग)वादणियं। विवरीयं समणाणं भावितो दंसणविराही ॥४॥ तत्थवि भावेयव्वं सो चिय अत्थो तु होति सव्वा(ब्वे)सिं। सामुद्दसिंधवादी जह लवणसहाव सव्वेवि ॥५॥ दंसणपभावगाइं अहवा णाणे अहिज्जमाणं तु। अत्तट्ठ परट्ठा वा जह-लंभं गेण्ह पणहाणी ॥६॥ भिक्खुत्ति जं पदम्मी भणितं जं वावि तंणिमित्तेणं। गच्छंतो किं सेवे? असद्दहंतो अणाराही ॥७॥ पव्वज्ज अप्पपंचम रायसुतस्स तु दाइगभएणं। राजा उ समणुजाणति अंते पडिणीतो सो तेण ॥८॥ तत्थविय फासुभोती सुत्तत्थाइं करेंत अच्छंति। जणइत्तु सुतेक्केक्के अमूढलक्खासु इत्थीसु ॥९॥ ते रज्जेसुं ठाविय पुणरवि गच्छंति गुरुसमीवं तु। आलोइय णिस्सल्ला कयपच्छित्ताण तो तेसिं ॥११७०॥ संकप्पियाणि पुव्विं आयरियादी पदाणि गुरुणा तु। पच्छागताण ताण य तद्दिवसं चेव दिण्णाइं ॥१॥ परियाय-म्मि णिरुद्धे जं दिण्ण तगं तु जो न सद्दहति। सुहसमुदितस्स जं वा कीरति तू रायपुत्तस्स ॥२॥ तत्थवि भावेजेवं पत्तिकडाइं तु तेहिं थेराणं। रायसुतदिक्खितेण य उब्भावण पवयणे होति ॥३॥ असहुस्स जं च कीरति अज्जसमुद्दस्स चेव गुरुणो तु। एयं असद्दहंते विराहणा दंसणे होति ॥४॥ तत्थवि भावेयव्वं जेणायत्तं कुलं तु तं रक्खे। अन्नस्सवि कायव्वं गिलाण-गस्सेस उवदेसो ॥५॥ इति एस समासेणं दंसणकप्पो तु आहितो एवं। एत्तो तु णाणकप्पं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥६॥ सुत्तुद्देसे वायण पडिच्छ पुच्छ परियट्ट अणुपेहा। आयरियउ-वज्झाया अह होति तु सुत्तकप्पविही ॥ ॥७३॥७॥ आयारमादि कातुं सुयं तु जा होति दिट्ठिवादो तु। अंगाणंगपविट्ठं कालियमुक्कालियं चेव ॥८॥ तं पुण सव्वंपि भवे संवादसमुट्ठियं व णिज्जूढं। पत्तेयबुद्धभासित अहव समत्तीय होज्जाहि ॥ ९ ॥ ससमयवादं संवादमाह जह केसिगोयमिज्जाती। पण्णवणादसकालियजीवाभिगमादि णिज्जूढं ॥ ११८० ॥ पत्तेयबुद्धभासिय-इसिभासियमादिगं मुणेयव्वं। केवलणाणसमत्तीय भासिता चोद्दस उ पुव्वा ॥१॥ एतं सुतं तु जं जत्थ सिक्खितं जेण जह तु जोगेणं। तं तह चिय दायव्वं एसो खलु अज्झयणकप्पो ॥२॥ एयं पुण सुतणाणं वायणजोग्गं तु जारिसं होति। तं वोच्छामी अहुणा सुत्तस्स य लक्खणं जं तु ॥ ३ ॥ जित परिजितं अमिलितं अविच्चामेलियं अवाविद्धं। घोस णिकाइय ई-हिय सुविमग्गिय हेतुसब्भावं ॥ ॥७४॥४॥ फुडविसदसुद्धवंजणपदमक्खरसंधिकारणमणूणं। पादप्पयाणुलोमं णिउत्तसुत्तेत्ति सुयकप्पो ॥ ॥७५॥५॥ णिपुणं विपुलं सुद्धं णिकाइयं अ-त्थतो सुपरिसुद्धं। हितणिस्सेसकरं बुद्धिवड्ढणं फलमुदारजुतं ॥ ॥७६॥ ६॥ सगणामं व जितं खलु परिजिय हेट्ठुवरिं उवरितो हेट्ठा। मिलिते उ धण्णणातं विच्चामेलो उ अण्णोण्णं ॥७॥ अज्झयणुद्देसाणं सुत्ते मीसेति कोलिपयसं वा। तं चेव य हेट्ठुवरिं वाविद्धे आवलीणातं ॥८॥ घोस उदत्तादीया णिकाइयऽक्खेवसिद्धि(ट्ठ)परिसुद्धं। ईहित सयं मतीए विचारितं एव णेवत्ती? ॥९॥ साहम्मियवेहम्मियहेऊहिं मग्गिओ उ सब्भावो। जस्स तु सुत्तस्स भवे तं होति सुदिट्ठसब्भावं ॥ ११९० ॥ णिस्संदिद्धं फुडं खलु संजुत्तं वावि पुव्वमवरे(चरमे)णं। विसदं अणिगूढत्थं वंजणसुद्धं सउवयारं ॥१॥ अत्थुवलद्धी जत्थ तु तं होति पदं तु अक्खरा वन्ना। संधी संबंधो खलु सुत्ता सुत्तस्स जो कोति ॥२॥ एतेहिं णूणमहितं पादा तु सिलो-गमादिणं होंति। गजम्मि य पदसंखा अणुलोमं जण्ण पडिलोमं ॥ ३ ॥ पुव्विच्छ परिछेणं जं ण विरुज्झति तु तं तहा तहियं। अत्थेण जोइयं तू णिउत्तमेतारिसं होति ॥ ४ ॥ णयहे-

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [११९५]

दीप अनुक्रम [११९५]

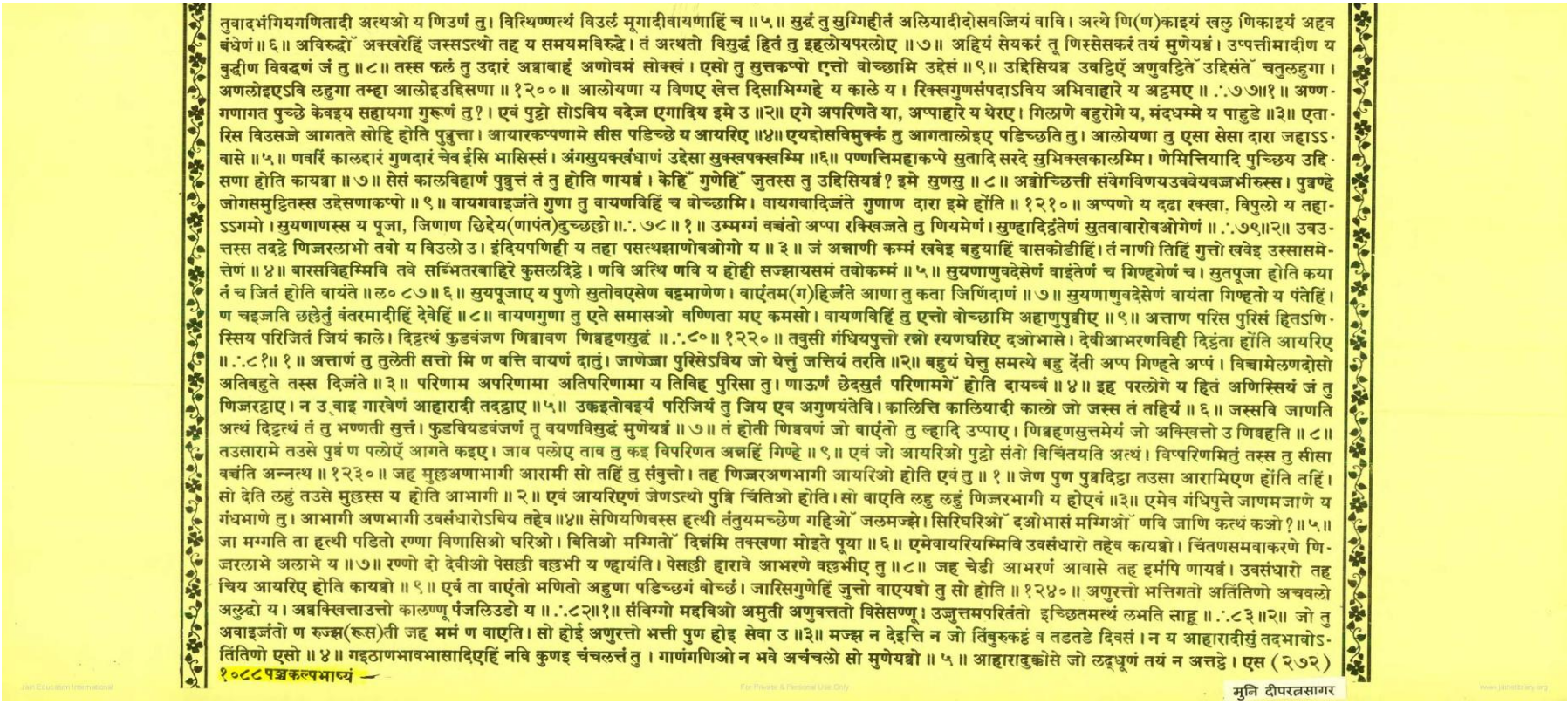

तुवादभंगियगणितादी अत्थओ य णिउणं तु। वित्थिण्णत्थं विउलं मूगादीवायणाहिं च ॥५॥ सुद्धं तु सुग्गिहीतं अलियादीदोसवज्जियं वावि। अत्थे णि(ण)काइयं खलु णिकाइयं अहव बंधेणं ॥६॥ अविरुद्धो अक्खरेहिं जस्सऽत्थो तह य समयमविरुद्धे। तं अत्थतो विसुद्धं हितं तु इहलोयपरलोए ॥७॥ अहियं सेयकरं तू णिस्सेसकरं तयं मुणेयव्वं। उप्पत्तीमादीण य बुद्धीण विवद्धणं जं तु ॥८॥ तस्स फलं तु उदारं अव्वाबाहं अणोवमं सोक्खं। एसो तु सुत्तकप्पो एत्तो वोच्छामि उद्देसं ॥९॥ उद्दिसियव्व उवट्ठिएँ अणुवट्ठितेँ उद्दिसंतेँ चतुलहुगा। अणलोइएऽवि लहुगा तम्हा आलोइउद्दिसणा ॥१२००॥ आलोयणा य विणए खेत्त दिसाभिग्गहे य काले य। रिक्खगुणसंपदाऽविय अभिवाहारे य अट्ठमए ॥ ∴७७॥१॥ अण्ण-गणागत पुच्छे केवइय सहायगा गुरूणं तु?। एवं पुट्ठो सोऽविय वदेज्ज एगादिय इमे उ ॥२॥ एगे अपरिणते या, अप्पाहारे य थेरए। गिलाणे बहुरोगे य, मंदधम्मे य पाहुडे ॥३॥ एता-रिस विउसज्जे आगतते सोहि होति पुव्वुत्ता। आयारकप्पणामे सीस पडिच्छे य आयरिए ॥४॥ एयदोसविमुक्कं तु आगतालोइए पडिच्छति तु। आलोयणा तु एसा सेसा दारा जहाऽऽ-वासे ॥५॥ णवरिं कालदारं गुणदारं चेव ईसि भासिस्सं। अंगसुयक्खंधाणं उद्देसा सुक्खपक्खम्मि ॥६॥ पण्णत्तिमहाकप्पे सुतादि सरदे सुभिक्खकालम्मि। णेमित्तियादि पुच्छिय उद्दि-सणा होति कायव्वा ॥७॥ सेसं कालविहाणं पुव्वुत्तं तं तु होति णायव्वं। केहिँ गुणेहिँ जुतस्स तु उद्दिसियव्वं? इमे सुणसु ॥८॥ अव्वोच्छित्ती संवेगविणयउववेयवज्जभीरुस्स। पव्वण्हे जोगसमुट्ठितस्स उद्देसणाकप्पो ॥९॥ वायगवाइज्जंते गुणा तु वायणविहिं च वोच्छामि। वायगवादिज्जंते गुणाण दारा इमे होंति ॥१२१०॥ अप्पणो य दढा रक्खा, विपुलो य तहा-ऽऽगमो। सुयणाणस्स य पूजा, जिणाण छिदेय(णापंत)दुच्छछो ॥∴७८॥१॥ उम्मग्गं वच्चंतो अप्पा रक्खिज्जते तु णियमेणं। सुण्हादिट्ठंतेणं सुतवावारोवओगेणं ॥∴७९॥२॥ उवउ-त्तस्स तदट्ठे णिज्जरलाभो तवो य विउलो उ। इंदियपणिही य तहा पसत्थझाणोवओगो य ॥३॥ जं अन्नाणी कम्मं खवेइ बहुयाहिं वासकोडीहिं। तं नाणी तिहिं गुत्तो खवेइ उस्सासमे-त्तेणं ॥४॥ बारसविहम्मिवि तवे सब्भितरबाहिरे कुसलदिट्ठे। णवि अत्थि णवि य होही सज्झायसमं तवोकम्मं ॥५॥ सुयणाणुवदेसेणं वाइंतेणं च गिण्हगेणं च। सुतपूजा होति कया तं च जितं होति वायंते ॥ल० ८७॥६॥ सुयपूजाए य पुणो सुतोवएसेण वड्ढमाणेण। वाएंतम(ग)हिज्जंते आणा तु कता जिणिंदाणं ॥७॥ सुयणाणुवदेसेणं वायंता गिण्हतो य पंतेहिं। ण चइज्जति छलेतुं वंतरमादीहिं देवेहिं ॥८॥ वायणगुणा तु एते समासओ वण्णिता मए कमसो। वायणविहिं तु एत्तो वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥९॥ अत्ताण परिस पुरिसं हितऽणि-स्सिय परिजितं जियं काले। दिट्ठत्थं फुडवंजण णिव्वावण णिव्वहणसुद्धं ॥∴८०॥१२२०॥ तवुसी गंधियपुत्तो रन्नो रयणघरिए दओभासे। देवीआभरणविही दिट्ठंता होंति आयरिए ॥∴८१॥१॥ अत्ताणं तु तुलेती सत्तो मि ण वत्ति वायणं दातुं। जाणेज्जा पुरिसेऽविय जो घेत्तुं जत्तियं तरति ॥२॥ बहुयं घेत्तु समत्थे बहु देंती अप्प गिण्हते अप्पं। विच्चामेलणदोसो अतिबहुते तस्स दिज्जंते ॥३॥ परिणाम अपरिणामा अतिपरिणामा य तिविह पुरिसा तु। णाऊणं छेदसुतं परिणामगेँ होति दायव्वं ॥४॥ इह परलोगे य हितं अणिस्सियं जं तु णिज्जरट्ठाए। न उ वाइ गारवेणं आहारादी तदट्ठाए ॥५॥ उक्कइतोवइयं परिजियं तु जिय एव अगुणयंतेवि। कालित्ति कालियादी कालो जो जस्स तं तहियं ॥६॥ जस्सवि जाणति अत्थं दिट्ठत्थं तं तु भण्णती सुत्तं। फुडवियडवंजणं तू वयणविसुद्धं मुणेयव्वं ॥७॥ तं होती णिव्ववणं जो वाएंतो तु ल्हादि उप्पाए। णिव्वहणसुत्तमेयं जो अक्खित्तो उ णिव्वहति ॥८॥ तउसारामे तउसे पुवं ण पलोएँ आगते कइए। जाव पलोए ताव तु कइ विपरिणत अन्नहिं गिण्हे ॥९॥ एवं जो आयरिओ पुट्ठो संतो विचिंतयति अत्थं। विप्परिणमितुं तस्स तु सीसा वच्चंति अन्नत्थ ॥१२३०॥ जह मुहुअणाभागी आरामी सो तहिं तु संवुत्तो। तह णिज्जरअणभागी आयरिओ होति एवं तु ॥१॥ जेण पुण पुव्वदिट्ठा तउसा आरामिएण होंति तहिं। सो देति लहुं तउसे मुहुस्स य होति आभागी ॥२॥ एवं आयरिएणं जेणऽत्थो पुव्वि चिंतिओ होति। सो वाएति लहु लहुं णिज्जरभागी य होएवं ॥३॥ एमेव गंधिपुत्ते जाणमजाणे य गंधभाणे तु। आभागी अणभागी उवसंधारोऽविय तहेव ॥४॥ सेणियणिवस्स हत्थी तंतुयमच्छेण गहिओँ जलमज्झे। सिरिघरिओँ दओभासं मग्गिओँ णवि जाणि कत्थ कओ?॥५॥ जा मग्गति ता हत्थी पडितो रण्णा विणासिओ घरिओ। बितिओ मग्गितोँ दिन्नंमि तक्खणा मोइते पूया ॥६॥ एमेवायरियम्मिवि उवसंधारो तहेव कायव्वो। चिंतणसमवाकरणे णि-ज्जरलाभे अलाभे य ॥७॥ रण्णो दो देवीओ पेसल्ली वल्लभी य ण्हायंति। पेसल्ली हारावे आभरणे वल्लभीए तु ॥८॥ जह चेडी आभरणं आवासे तह इमंपि णायव्वं। उवसंधारो तह चिय आयरिए होति कायव्वो ॥९॥ एवं ता वाएंतो भणितो अहुणा पडिच्छगं वोच्छं। जारिसगुणेहिं जुत्तो वाएयव्वो तु सो होति ॥१२४०॥ अणुरत्तो भत्तिगतो अतिंतिणो अचवलो अलुद्धो य। अव्वक्खित्ताउत्तो कालण्णू पंजलिउडो य ॥∴८२॥१॥ संविग्गो मद्दविओ अमुती अणुवत्ततो विसेसण्णू। उज्जुत्तमपरितंतो इच्छितमत्थं लभति साहू ॥∴८३॥२॥ जो तु अवाइज्जंतो ण रुज्झ(रूस)ती जह ममं ण वाएति। सो होई अणुरत्तो भत्ती पुण होइ सेवा उ ॥३॥ मज्झ न देइत्ति न जो तिंबुरुकट्ठं व तडतडे दिवसं। न य आहारादीसुं तदभावोऽ-तिंतिणो एसो ॥४॥ गइठाणभावभासादिएहिं नवि कुणइ चंचलत्तं तु। गाणंगणिओ न भवे अचंचलो सो मुणेयव्वो ॥५॥ आहारादुक्कोसे जो लद्धूणं तयं न अत्तट्ठे। एस (२७२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only मुनि दीपरत्नसागर www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [१२४६] दीप अनुक्रम [१२४६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

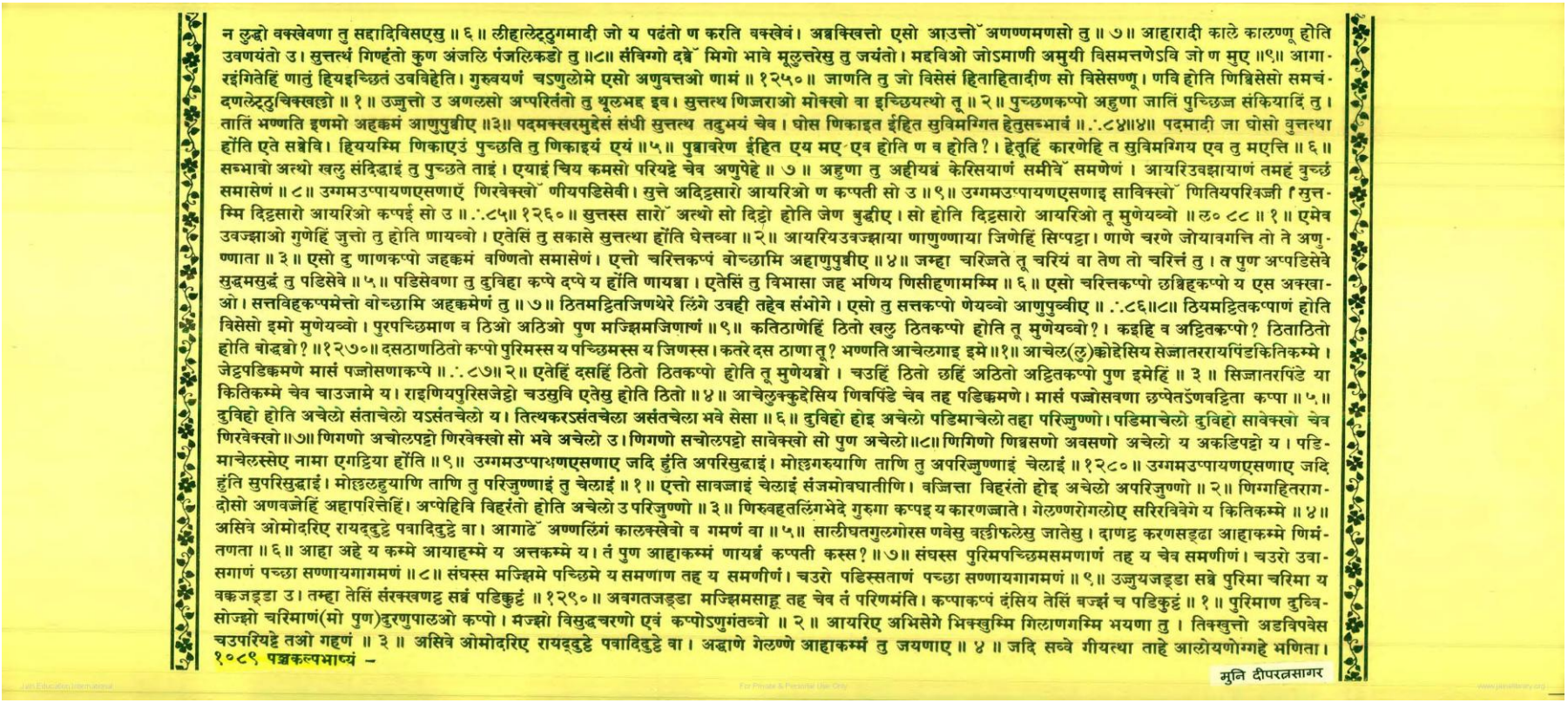

न लुद्धो वक्खेवणा तु सद्दादिविसएसु ॥ ६ ॥ लीहालेट्ठुगमादी जो य पढंतो ण करति वक्खेवं। अव्वक्खित्तो एसो आउत्तो अणण्णमणसो तु ॥ ७ ॥ आहारादी काले कालण्णू होति उवणयंतो उ। सुत्तत्थं गिण्हंतो कुण अंजलि पंजलिकडो तु ॥८॥ संविग्गो दव्वे मिगो भावे मूलुत्तरेसु तु जयंतो। महविओ जोऽमाणी अमुयी विसमत्तणेऽवि जो ण मुए ॥९॥ आगा-रइंगितेहिं णातुं हियइच्छितं उवविहेति। गुरुवयणं चऽणुलोमे एसो अणुवत्तओ णामं ॥ १२५० ॥ जाणति तु जो विसेसं हिताहितादीण सो विसेसण्णू। णवि होति णिव्विसेसो समचं-दणलेट्ठु/चिक्खल्लो ॥ १ ॥ उज्जुत्तो उ अणलसो अप्परितंतो तु थूलभद्द इव। सुत्तत्थ णिज्जराओ मोक्खो वा इच्छियत्थो तू ॥ २ ॥ पुच्छणकप्पो अहुणा जातिं पुच्छिज्ज संकियादिं तु। तातिं भण्णति इणमो अहक्कमं आणुपुव्वीए ॥३॥ पदमक्खरमुद्देसं संधी सुत्तत्थ तदुभयं चेव। घोस णिकाइत ईहित सुविमग्गित हेतुसब्भावं ॥.'.८४॥४॥ पदमादी जा घोसो वुत्तत्था होंति एते सव्वेवि। हिययम्मि णिकाएउं पुच्छति तु णिकाइयं एयं ॥५॥ पुव्वावरेण ईहित एय मए एव होति ण व होति ?। हेतूहिं कारणेहि त सुविमग्गिय एव तु मएत्ति ॥ ६ ॥ सब्भावो अत्थो खलु संदिद्धाइं तु पुच्छते ताइं। एयाइं चिय कमसो परियट्टे चेव अणुपेहे ॥ ७ ॥ अहुणा तु अहीयव्वं केरिसयाणं समीवे समणेणं। आयरिउवज्झायाणं तमहं वुच्छं समासेणं ॥ ८ ॥ उग्गमउप्पायणएसणाएँ णिरवेक्खो णीयपडिसेवी। सुत्ते अदिट्ठसारो आयरिओ ण कप्पती सो उ ॥९॥ उग्गमउप्पायणएसणाइ साविक्खो णितियपरिक्जी [सुत्त-म्मि दिट्ठसारो आयरिओ कप्पई सो उ ॥.'.८५॥ १२६० ॥ सुत्तस्स सारो अत्थो सो दिट्ठो होति जेण बुद्धीए। सो होति दिट्ठसारो आयरिओ तू मुणेयव्वो ॥ ल० ८८ ॥ १ ॥ एमेव उवज्झाओ गुणेहिं जुत्तो तु होति णायव्वो। एतेसिं तु सकासे सुत्तत्था होंति घेत्तव्वा ॥ २ ॥ आयरियउवज्झाया णाणुण्णाया जिणेहिं सिप्पट्ठा। णाणे चरणे जोयावगत्ति तो ते अणु-ण्णाता ॥ ३ ॥ एसो दु णाणकप्पो जहक्कमं वण्णितो समासेणं। एत्तो चरित्तकप्पं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥ ४ ॥ जम्हा चरिज्जते तू चरियं वा तेण तो चरित्तं तु। त पुण अप्पडिसेवे सुद्धमसुद्धं तु पडिसेवे ॥ ५ ॥ पडिसेवणा तु दुविहा कप्पे दप्पे य होंति णायव्वा। एतेसिं तु विभासा जह भणिय णिसीहणामम्मि ॥ ६ ॥ एसो चरित्तकप्पो छव्विहकप्पो य एस अक्खा-ओ। सत्तविहकप्पमेत्तो वोच्छामि अहक्कमेणं तु ॥ ७ ॥ ठितमट्ठितजिणथेरे लिंगे उवही तहेव संभोगे। एसो तु सत्तकप्पो णेयव्वो आणुपुव्वीए ॥ .'.८६॥८॥ ठियमट्ठितकप्पाणं होति विसेसो इमो मुणेयव्वो। पुरपच्छिमाण व ठिओ अठिओ पुण मज्झिमजिणाणं ॥९॥ कतिठाणेहिं ठितो खलु ठितकप्पो होति तू मुणेयव्वो ?। कइहि व अट्ठितकप्पो ? ठिताठितो होति वोद्धव्वो ? ॥१२७०॥ दसठाणठितो कप्पो पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स। कतरे दस ठाणा तू ? भण्णति आचेलगाइ इमे ॥१॥ आचेल(लु)क्कोद्देसिय सेज्जातररायपिंडकितिकम्मे। जेट्ठपडिक्कमणे मासं पज्जोसणाकप्पे ॥ .'.८७॥ २ ॥ एतेहिं दसहिं ठितो ठितकप्पो होति तू मुणेयव्वो। चउहिं ठितो छहिं अठितो अट्ठितकप्पो पुण इमेहिं ॥ ३ ॥ सिज्जातरपिंडे या कितिकम्मे चेव चाउज्जामे य। राइणियपुरिसजेट्ठो चउसुवि एतेसु होति ठितो ॥ ४ ॥ आचेलुक्कुद्देसिय णिवपिंडे चेव तह पडिक्कमणे। मासं पज्जोसवणा छप्पेतऽणवट्ठिता कप्पा ॥ ५ ॥ दुविहो होति अचेलो संताचेलो यऽसंतचेलो य। तित्थकरऽसंतचेला असंतचेला भवे सेसा ॥ ६ ॥ दुविहो होइ अचेलो पडिमाचेलो तहा परिज्जुण्णो। पडिमाचेलो दुविहो सावेक्खो चेव णिरवेक्खो ॥७॥ णिगणो अचोलपट्टो णिरवेक्खो सो भवे अचेलो उ। णिगणो सचोलपट्टो सावेक्खो सो पुण अचेलो ॥८॥ णिगिणो णिव्वसणो अवसणो अचेलो य अकडिपट्टो य। पडि-माचेलस्सेए नामा एगट्ठिया होंति ॥९॥ उग्गमउप्पाऽणएसणाए जदि हुंति अपरिसुद्धाइं। मोहुग्गरुयाणि ताणि तु अपरिज्जुण्णाइं चेलाइं ॥१२८०॥ उग्गमउप्पायणएसणाए जदि हुंति सुपरिसुद्धाइं। मोहुलहुयाणि ताणि तु परिजुण्णाइं तु चेलाइं ॥ १ ॥ एत्तो सावज्जाइं चेलाइं संजमोवघातीणि। वज्जित्ता विहरंतो होइ अचेलो अपरिजुण्णो ॥ २ ॥ णिग्गहितराग-दोसो अणवज्जेहिं अहापरित्तेहिं। अप्पेहिवि विहरंतो होति अचेलो उ परिजुण्णो ॥ ३ ॥ णिरुवहतलिंगभेदे गुरुगा कप्पइ य कारणज्जाते। गेलण्णरोगलोए सरिरविवेगे य कितिकम्मे ॥ ४ ॥ असिवे ओमोदरिए रायद्दुट्ठे पवादिदुट्ठे वा। आगाढे अण्णलिंगं कालक्खेवो व गमणं वा ॥ ५ ॥ सालीघतगुलगोरस णवेसु वल्लीफलेसु जातेसु। दाणट्ठ करणसड्ढा आहाकम्मे णिमं-तणता ॥ ६ ॥ आहा अहे य कम्मे आयाहम्मे य अत्तकम्मे य। तं पुण आहाकम्मं णायव्वं कप्पती कस्स ? ॥ ७ ॥ संघस्स पुरिमपच्छिमसमणाणं तह य चेव समणीणं। चउरो उवा-सगाणं पच्छा सण्णायगागमणं ॥ ८ ॥ संघस्स मज्झिमे पच्छिमे य समणाण तह य समणीणं। चउरो पडिस्सताणं पच्छा सण्णायगागमणं ॥ ९ ॥ उज्जुयजड्डा सव्वे पुरिमा चरिमा य वक्कजड्डा उ। तम्हा तेसिं संरक्खणट्ठ सव्वं पडिकुट्ठं ॥ १२९० ॥ अवगतजड्डा मज्झिमसाहू तह चेव तं परिणमंति। कप्पाकप्पं दंसिय तेसिं वज्जं च पडिकुट्ठं ॥ १ ॥ पुरिमाण दुव्वि-सोज्झो चरिमाणं(मो पुण)दुरणुपालओ कप्पो। मज्झो विसुद्धचरणो एवं कप्पोऽणुगंतव्वो ॥ २ ॥ आयरिए अभिसेगे भिक्खुम्मि गिलाणगम्मि भयणा तु। तिक्खुत्तो अडविपवेस चउपरियट्टे तओ गहणं ॥ ३ ॥ असिवे ओमोदरिए रायद्दुट्ठे पवादिदुट्ठे वा। अद्धाणे गेलण्णे आहाकम्मं तु जयणाए ॥ ४ ॥ जदि सव्वे गीयत्था ताहे आलोयणोग्गहे भणिता।

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [१२९५]

दीप अनुक्रम [१२९५]

अह होति मीसगजणो पायच्छित्तं तवोकम्मं ॥ ५ ॥ चतुरो चउत्थभत्ते आयामेगासणे य पुरिमड्ढे । णिव्विइयं दायव्वं सतं च पुव्वोग्गहं कुज्जा ॥ ६ ॥ संघस्सोहविभागो समणा समणी च कुलगणस्सेव । कडमिह ठिते ण कप्पइ अट्ठितकप्पे जमुद्दिस्स ॥ ७ ॥ आयरिए अभिसेगे भिक्खुम्मि गिलाणगम्मि भयणा तु । अडविपवेसे असती तियपरियट्टे ततो गहणं ॥ ८ ॥ तित्थगरपडिकुट्ठो आणा अन्नायउग्गमोऽविय न सुज्झे । अविमुत्ति अलाघवता दुल्लभसेज्जा विउच्छेदो ॥ ९ ॥ दुविहे गेलण्णम्मी णिमंतणे दव्वदुल्लभे असिवे । अवमोदरिय पदोसे भए य गहणं अणुण्णायं ॥ १३०० ॥ तिक्खुत्तो य सखित्ते चउद्दिसिं जोयणम्मि कडजोगी । दव्वस्स य दुल्लभता सागारियसेवणा दव्वे ॥ १ ॥ मुद्दिते मुद्धभिसित्ते मुदितो जो होति जोणिसिद्धो तु । अभिसित्तो य परेहिं सयं व भरहो जहा राया ॥ २ ॥ ईसरतलवरमाडंबिएहिं सेट्ठीहिं सत्थवाहेहिं । णिंतेहिं अतिंतेहि य वाघातो होति साधुस्स ॥ ३ ॥ लोभे एसणघाते संका तेणे चरित्तभेदे य । इच्छंतमणिच्छंते चाउम्मासा भवे गुरुगा ॥ ४ ॥ अण्णेवि हुंति दोसा आइण्णे गुम्म रयण इत्थीए । तण्णिस्साएँ पवेसो तिरिक्खमणुया भवे दुट्ठा ॥ ५ ॥ दुविहे गेलण्णम्मिवि णिमंतणा दव्व दुल्लभे असिवे । ओमोदरिय पओसे भए य गहणं अणुण्णायं ॥ ६ ॥ पढमं अब्भुट्ठाणं कितिकम्मं अज्जसेवियमुदारं । कायव्वं कस्स व केण वावि काहे व कइखुत्तो ? ॥ ७ ॥ विणओ सासणे मूलं० (आव० १२२८) ॥ ८ ॥ जम्हा विणयति कम्मं० (आव० १२२९) ॥ ९ ॥ पुव्वामेव य विणओ० (?) गाहा ॥ १३१० ॥ आयार विणय कप्प गुणदीवणा अत्तसोही उजुभावो । अज्जव महव लाघव तुट्टी पल्हायकरणं च ॥ १ ॥ लहुओ गुरुओ मासो लहुगा गुरुगा भवे चउम्मासा । खुड्डग भिक्खू वसभे आयरिए अदुव विवरीयं ॥ २ ॥ जदिखुत्तो जदिवेलं णिक्खमए णिक्खमित्तु वा एति । तदिखुत्तो तंवेलं सव्वे गुरुणो समुट्ठंति ॥ ३ ॥ वसहीय भिन्नमासो काइयभूमीय मासियं लहुयं । चत्तारि य सुक्किलया ओगाहंतस्स बहियाए ॥ ४ ॥ भिक्खू वसभायरिया अज्जा ओवासगा य इत्थीओ । वादी राया संघो राया संघो उभयओवि (संथारओ य संघाड विभय लहु) ॥ ५ ॥ लहुओ गुरुओ मासो लहुगा गुरुगा भवे चतुम्मासा । छम्मासा लहुगुरुगा छेदो मूलं तह दुगं च ॥ ६ ॥ वंदण चिति कितिकम्मं पूयाकम्मं च विणयकम्मं च । कायव्वं कस्स व केण वावि काहे व कतिखुत्तो ? ॥ ७ ॥ कतिओणयं० (आव० १११५) ॥ ८ ॥ सेढीसमतीताणं कितिकम्मं जे य होंति सेढिगता । सेढीयबाहिराणं कितिकम्मं होति भइयव्वं ॥ ९ ॥ आयरियउवज्झाए पवित्ति पत्तेयबुद्ध पुत्तधरे । केवलणाणधरम्मि य कायव्वं णिज्जरट्ठाए ॥ १३२० ॥ सेढीठाणे सीमाकज्जे चत्तारि बाहिरा होंति । सेढीट्ठाणे दुगभेद पाय चत्तारिवी भइया ॥ १ ॥ पत्तेयबुद्ध जिणकप्पिया य सुद्धपरिहारिया अहालंदा । एते चतुरो दुग दुग भेया कज्जेसु बाहिरगा ॥ २ ॥ अंतोवि होति भयणा ओमे आवण्ण संजती सेहे । बाहिंपि होति भयणा अतिवा(वा)लग वायए सीसो ॥ ३ ॥ हेट्ठट्ठाणठितोऽवि हु पावयणि गणट्ठिताए अवरम्मि । कडजोगि सणिसेवति आदिणियंठोव सो पुज्जो ॥ ४ ॥ संकिण्णवराहपदे अणाणुतावी य होति अवराहे । उत्तरगुणपडिसेवी आलंबणवज्जिओ वज्जो ॥ ५ ॥ गच्छपरिक्खणट्ठा अणागतं आउवायकुसलस्स । एसा गणाहिपतिणो सुहसीलगवेसणा भणिता ॥ ६ ॥ दुविहे कितिकम्ममी वाउलिया मो णिसट्ठबुद्धीया । आदिपडिसेधियम्मी उवरिं आलोवणा बहुला ॥ ७ ॥ मुक्कधुराए(सं)० (आव० ११३८) ॥ ८ ॥ वायाए णमुक्कारो० (आव० ११३९) ॥ ९ ॥ एतातिं अकुव्वंतो० (आव० ११४०) ॥ १३३० ॥ परियाव महादुक्खे मुच्छामुच्छे य किच्छपाणे य । किच्छस्सासे य तहा समोहते चेव कालगते ॥ १ ॥ चत्तारि छच्च लहु गुरु छेदो मूलं च होति बोद्धव्वं । अणवट्ठप्पे य तहा पावति पारंचियट्ठाणं ॥ २ ॥ परियाग परिस पुरिसं खेत्तं कालागमं च णाऊणं । कारणजाए जाए किइकम्मं होइ कायव्वं ॥ ३ ॥ दंसणनाणचरित्तं तवविणयं जत्थ जित्तियं जाणे । जिणपन्नत्तं भत्तीएँ पूयए तं तहा पायं ॥ ४ ॥ सावज्जजोगविरइत्ति संजमो तेण होइ एगविहो । रागद्दोसनिरोहोत्ति तेण दुविहो मुणेयव्वो ॥ ५ ॥ मणवयणकायजोगाण णिरोहो तेण होति तिविहो तु । कोहमयमायलोभुवरतोत्ति चउहा स णेयव्वो ॥ ६ ॥ पंच वय इंदियाणि य पंचह सराई विरति छक्काया । वतकायअकप्पकप्पादी अट्ठारसहा मुणेयव्वो ॥ ७ ॥ जोगे करणे सण्णा इंदिय भोमादि समणधम्मे य । अट्ठारससीलंगसहस्स संजमो होइ णातव्वो ॥ ल० ८९ ॥ ८ ॥ कितिकम्मंपि य दुविहं अब्भुट्ठाणं तहेव वंदणयं । समणेहि य समणीहि य जहक्कमं होति कायव्वं ॥ ९ ॥ सव्वाहिं संजतीहिं कितिकम्मं संजताण कायव्वं । पुरुसुत्तरिओ धम्मो सव्वजिणाणंपि तित्थम्मि ॥ ल० ९० ॥ १३४० ॥ पंचज्जामो य धम्मो पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स । मज्झिमयाण जिणाणं चातुज्जामो भवे धम्मो ॥ १ ॥ पुरिमाण दुव्विसोज्झो चरिमाणं दुरणुपालओ कप्पो । मज्झिमगाण जिणाणं सुविसोज्झो सुरणुपालो य ॥ २ ॥ पुव्वं तु उवट्ठविओ जस्स व सामाइतं कतं पुव्वं । सो होती जेट्ठो खलु जो पच्छा सो कणिट्ठो तु ॥ ३ ॥ पुव्वोवट्ठो जेट्ठो होइत्ती इत्थ होति पुच्छा उ । उवठावणा तु कतिहिं ठाणेहिं ? इमा भवे दसहा ॥ ल० ९१ ॥ ४ ॥ ततो पारंचिता वुत्ता, अणवट्ठप्पा तु तिण्णि तु । दंसणम्मि य वंतम्मि, चरित्तम्मि य केवले ॥ ल० ९२ ॥ ५ ॥ अदुवा चियत्तकिच्चे, जीवकायं समारभे । सेहे य दसमे वुत्ते, जस्सुवट्ठावणा भणिता ॥ ल० ९३ ॥ ६ ॥ अहवा पारंचेक्को अणवट्ठप्पो य होति एक्को य । दंसणवंतो ततिओ चरिते य चतुत्थओ ॥ ल० ९४ ॥ ७ ॥ पंचमो

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [१३४८]

दीप अनुक्रम [१३४८]

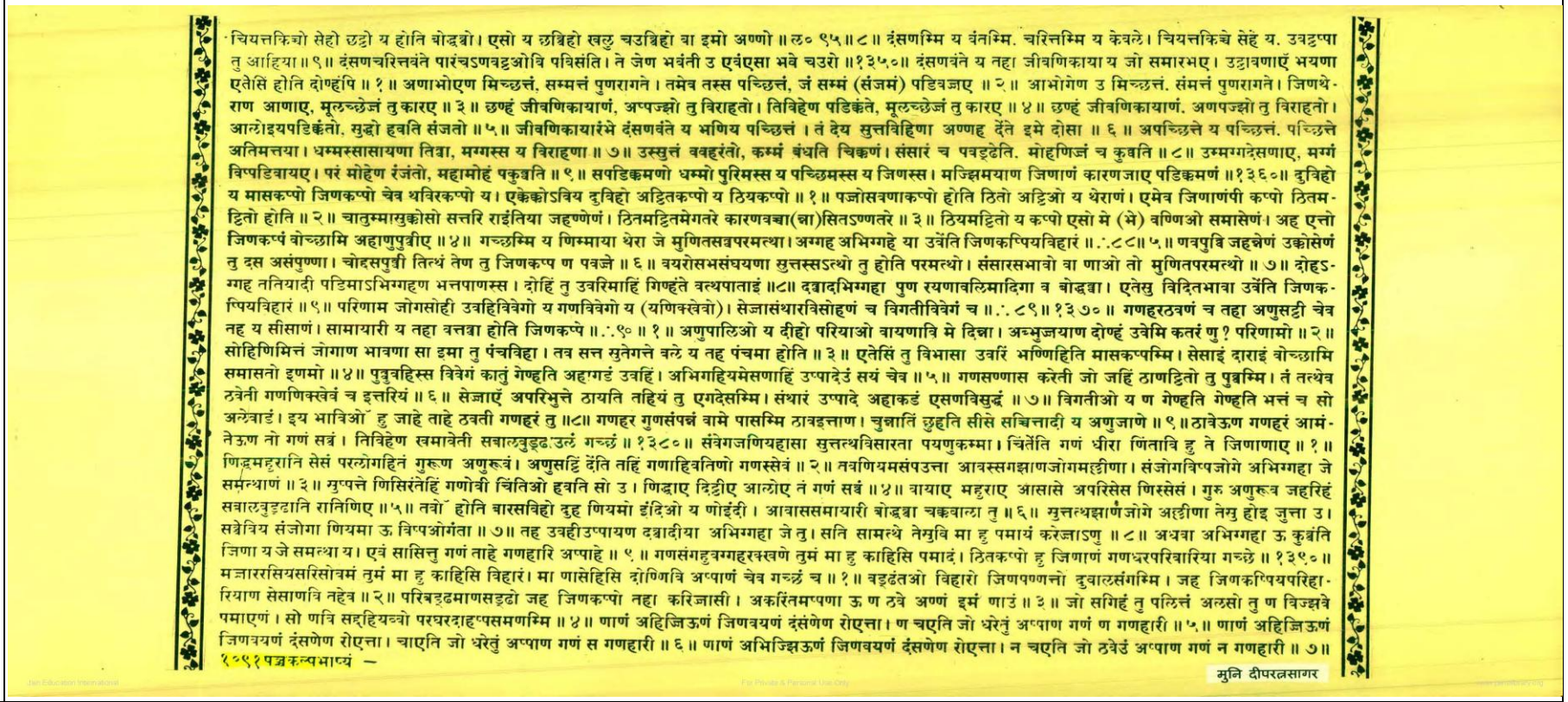

चियत्तकिच्चो सेहो छट्ठो य होति बोद्धव्वो। एसो य छव्विहो खलु चउव्विहो वा इमो अण्णो ॥ल० ९५॥८॥ दंसणम्मि य वंतम्मि. चरित्तम्मि य केवले। चियत्तकिच्चे सेहे य. उवट्ठप्पा तु आहिया॥९॥ दंसणचरित्तवंते पारंचऽणवट्ठओवि पविसंति। ते जेण भवंती उ एवंएसा भवे चउरो ॥१३५०॥ दंसणवंते य तहा जीवणिकाया य जो समारभए। उड्डावणाएँ भयणा एतेसिं होति दोण्हंपि ॥ १ ॥ अणाभोएण मिच्छत्तं, सम्मत्तं पुणरागते। तमेव तस्स पच्छित्तं, जं सम्मं (संजमं) पडिवज्जए ॥ २ ॥ आभोगेण उ मिच्छत्तं. संमत्तं पुणरागते। जिणथेराण आणाए, मूलच्छेजं तु कारए ॥ ३ ॥ छण्हं जीवणिकायाणं, अप्पज्झो तु विराहतो। तिविहेण पडिकंते, मूलच्छेजं तु कारए ॥ ४ ॥ छण्हं जीवणिकायाणं. अणपज्झो तु विराहतो। आलोइयपडिकंतो, सुद्धो हवति संजतो ॥५॥ जीवणिकायारंभे दंसणवंते य भणिय पच्छित्तं । तं देय सुत्तविहिणा अण्णह देंते इमे दोसा ॥ ६ ॥ अपच्छित्ते य पच्छित्तं. पच्छित्ते अतिमत्तया। धम्मस्सासायणा तिव्वा, मग्गस्स य विराहणा ॥ ७॥ उस्सुत्तं ववहरंतो, कम्मं बंधति चिक्कणं। संसारं च पवड्ढेति. मोहणिजं च कुवति ॥८॥ उम्मग्गदेसणाए, मग्गं विप्पडिवायए। परं मोहेण रंजंतो, महामोहं पकुव्वति ॥९॥ सपडिक्कमणो धम्मो पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स। मज्झिमयाण जिणाणं कारणजाए पडिक्कमणं ॥१३६०॥ दुविहो य मासकप्पो जिणकप्पो चेव थविरकप्पो य। एक्केक्कोऽविय दुविहो अट्ठितकप्पो य ठियकप्पो ॥ १ ॥ पज्जोसवणाकप्पो होति ठितो अट्ठिओ य थेराणं। एमेव जिणाणंपी कप्पो ठितमट्ठितो होति ॥ २ ॥ चातुम्मासुक्कोसो सत्तरि राईतिया जहण्णेणं। ठितमट्ठितमेगतरे कारणवच्चा(न्ना)सितऽण्णतरे ॥ ३ ॥ ठियमट्ठितो य कप्पो एसो मे (भे) वण्णिओ समासेणं। अह एत्तो जिणकप्पं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥ ४ ॥ गच्छम्मि य णिम्माया थेरा जे मुणितसव्वपरमत्था। अग्गह अभिग्गहे या उवेंति जिणकप्पियविहारं ॥ ∴ ८८॥ ५ ॥ णवपुव्वि जहन्नेणं उक्कोसेणं तु दस असंपुण्णा। चोद्दसपुव्वी तित्थं तेण तु जिणकप्प ण पवज्जे ॥ ६ ॥ वयरोसभसंघयणा सुत्तस्सऽत्थो तु होति परमत्थो। संसारसभावो वा णाओ तो मुणितपरमत्थो ॥ ७ ॥ दोहऽग्गह तनियादी पडिमाऽभिग्गहण भत्तपाणस्स। दोहिं तु उवरिमाहिं गिण्हंते वत्थपाताइं ॥८॥ दव्वादभिग्गहा पुण रयणावलिमादिगा व बोद्धव्वा। एतेसु विदितभावा उवेंति जिणकप्पियविहारं ॥ ९ ॥ परिणाम जोगसोही उवहिविवेगो य गणविवेगो य (यणिक्खेवो)। सेज्जासंथारविसोहणं च विगतीविवेगं च ॥ ∴ ८९॥ १३७०॥ गणहरठवणं च तहा अणुसट्टी चेव तह य सीसाणं। सामायारी य तहा वत्तव्वा होति जिणकप्पे ॥ ∴ ९० ॥ १ ॥ अणुपालिओ य दीहो परियाओ वायणावि मे दिन्ना। अन्भुज्जयाण दोण्हं उवेमि कतरं णु? परिणामो ॥ २ ॥ सोहिणिमित्तं जोगाण भावणा सा इमा तु पंचविहा। तव सत्त सुतेगत्ते वले य तह पंचमा होति ॥ ३ ॥ एतेसिं तु विभासा उवरिं भण्णिहिति मासकप्पम्मि। सेसाइं दाराइं वोच्छामि समासतो इणमो ॥ ४ ॥ पुव्वबहिस्स विवेगं कातुं गेण्हति अहागडं उवहिं। अभिगहियमेसणाहिं उप्पादेउं सयं चेव ॥ ५ ॥ गणसण्णास करेती जो जहिं ठाणट्ठितो तु पुव्वम्मि। तं तत्थेव ठवेती गणणिक्खेवं च इत्तरियं ॥ ६ ॥ सेज्जाएँ अपरिभुत्ते ठायति तहियं तु एगदेसम्मि। संथारं उप्पादे अहाकडं एसणविसुद्धं ॥ ७ ॥ विगतीओ य ण गेण्हति गेण्हति भत्तं च सो अलेवाडं। इय भाविओ हु जाहे ताहे ठवती गणहरं तु ॥८॥ गणहर गुणसंपन्नं वामे पासम्मि ठावइत्ताण। चुन्नातिं छुहति सीसे सचित्तादी य अणुजाणे ॥ ९ ॥ ठावेऊण गणहरं आमंतेऊण तो गणं सव्वं। निविहेण खमावेती सबालवुड्ढउलं गच्छं ॥ १३८० ॥ संवेगजणियहासा सुत्तत्थविसारता पयणुकम्मा। चिंतेंति गणं धीरा णिंतावि हु ते जिणाणाए ॥ १ ॥ णिद्दमहारति सेसं परलोगहितं गुरूण अणुरूवं। अणुसट्ठिं देंति तहिं गणाहिवतिणो गणस्सेवं ॥ २ ॥ तवणियमसंपउत्ता आवस्सगझाणजोगमहीणा। संजोगविप्पजोगे अभिग्गहा जे समंथाणं ॥ ३ ॥ सुप्पत्ते णिसिरंतेहिं गणोवी चिंतिओ हवति सो उ। णिद्दाए दिट्ठीए आलोए तं गणं सव्वं ॥ ४ ॥ वायाए महुराए आसासे अपरिसेस णिस्सेसं। गुरु अणुरूव जहरिहं सबालवुड्ढाति रातिणिए ॥ ५ ॥ तवो होति वारसविहो दुह णियमो इंदिओ य णोइंदी। आवाससमायारी बोद्धव्वा चक्कवाला तु ॥ ६ ॥ सुत्तत्थझाणजोगे अहीणा तेसु होइ जुत्ता उ। सव्वेविय संजोगा णियमा ऊ विप्पओगंता ॥ ७ ॥ तह उवहीउप्पायण दव्वादीया अभिग्गहा जे तु। सति सामत्थे तेसुवि मा हु पमायं करेज्जाऽणु ॥ ८ ॥ अथवा अभिग्गहा ऊ कुव्वंति जिणा य जे समत्था य। एवं सासित्तु गणं ताहे गणहारि अप्पाहे ॥ ९ ॥ गणसंगहुवग्गहरक्खणे तुमं मा हु काहिसि पमादं। ठितकप्पो हु जिणाणं गणधरपरिवारिया गच्छे ॥ १३९० ॥ मज्जाररसियसरिसोवमं तुमं मा हु काहिसि विहारं। मा णासेहिसि दोण्णिवि अप्पाणं चेव गच्छं च ॥ १ ॥ वड्ढंतओ विहारो जिणपण्णत्तो दुवालसंगम्मि। जह जिणकप्पियपरिहारियाण सेसाणवि तहेव ॥ २ ॥ परिवड्ढमाणसड्ढो जह जिणकप्पो तहा करिजासी। अकरिंतमप्पणा ऊ ण ठवे अण्णं इमं णाउं ॥ ३ ॥ जो सगिहं तु पलित्तं अलसो तु ण विज्झवे पमाएणं। सो णवि सद्दहियव्वो परघरदाहप्पसमणम्मि ॥ ४ ॥ णाणं अहिज्जिऊणं जिणवयणं दंसणेण रोएत्ता। ण चएति जो धरेतुं अप्पाण गणं ण गणहारी ॥ ५ ॥ णाणं अहिज्जिऊणं जिणवयणं दंसणेण रोएत्ता। चाएति जो धरेतुं अप्पाण गणं स गणहारी ॥ ६ ॥ णाणं अभिज्झिऊणं जिणवयणं दंसणेण रोएत्ता। न चएति जो ठवेउं अप्पाण गणं न गणहारी ॥ ७ ॥

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [१३९८]

दीप अनुक्रम [१३९८]

णाणं अभिज्झिऊणं जिणवयणं दंसणेण रोएत्ता। चाएति जो ठवेउं अप्पाण गणं सो गणहारी ॥ ८॥ णाणम्मि दंसणम्मि य तवे चरित्ते य समणसारम्मि। ण चएइ जो ठवेउं अप्पाण गणं न गणहारी ॥ ९॥ णाणम्मि दंसणम्मि य तवे चरित्ते य समणसारम्मि। चाएति जो ठवेउं अप्पाण गणं स गणहारी ॥ १४००॥ एसा गणहरमेरा आयारत्थाण वण्णिता सुत्ते। लोगमुहाणुगताणं अप्पच्छंदा जहिच्छाए ॥ १॥ लाहसुयसद्दनिद्दादि विसय तेसिं तु जे भवे रत्ता। अप्पच्छंदा ते ऊ विहारो ण तु तेसऽणुण्णाओ ॥२॥ उग्गमउप्पायणएसणा उ चरितस्स रक्खणट्ठाए। पिंडं उवहिं सेज्जं सोहिंतो होति सचरित्ती ॥ ३॥ सीतावेति विहारं सुहसीलत्तेण जो अबुद्धीओ। सो नवरि लिंगसारो संजमसारम्मि णिस्सारो ॥ ४॥ तित्थगरो चतुणाणी सुरमहितो सिज्झियव्वयधुवम्मि। अणिगूहियबलविरिओ तवोवहाणम्मि उज्जमति ॥ ५॥ किं पुण अवसेसेहिं दुक्खक्खयकारणा सुविहिएहिं। होति ण उज्जमियव्वं सपच्चवायम्मि माणुस्से ? ॥ ६॥ संखित्तावित्र पवहे जह वड्ढति वित्थरेण पवहंती। उदधिंतेणं च णदी तह सीलगुणेहिं वड्ढाहि ॥ ७॥ कुणमप्पमाय आवस्सएहिं संजमतवोवहाणेहिं। णिस्सारं माणुस्सं दुल्लभलाभं वियाणित्ता ॥ ल० ९६॥ ८॥ तिव्वकसायपरिणता परपरिवादं च मा करेज्जाह। अच्चासायणविरता होह सदा संजमरता य ॥ ल० ९७॥ ९॥ सुस्सूसगा गुरूणं चेइयभत्ता य विणयजुत्ता य। सज्झाए आउत्ता साहूण य वच्छला णिच्चं ॥ ल० ९८॥ १४१०॥ एस अखंडियसीलो बहुस्सुतो य अपरोवतावी य। चरणगुणसुट्ठियत्ति य धण्णो (ण्ण) णयरीते(ति)घोसणगं ॥ १॥ वाढंति भाणिऊणं एयं णे मंगलंति जंपंता। आणंदअंसुपादं मुचंति गुणे सरंता से॥२॥ कतरे गुणा उ तस्सा जे सुमरंता तु तस्स ते सीसा ?। भण्णति इणमो सुणसू ते भण्णंते समासेणं ॥ ३॥ सव्वस्सदायगाणं समसुहदुक्खाण णिप्पकंपाणं। दुक्खं खु विसहिउं जे चिरप्पवासो गुरूणं च ॥ ल० ९९॥ ४॥ सीलड्ढगुणड्ढेहि य बहुस्सुएहि य अपरोवतावीहिं। पवसंतेहिं मएहिं देसा ते खंडिया होंति॥ ल० १००॥५॥ अणुसट्ठिं दाऊणं तहिं पसत्थम्मि तिहिमुहुत्तम्मि। अह सण्णिहितं संघं असति गणं तं समाहूय ॥६॥ जिणवरपादसमीवे पडिवज्जे गणधराण व समीवे। चोद्दसपुव्वी तह चेइए य असतीय वडमादी ॥ ७॥ थामाव(वासावि)हारविजढा काउं गहणं च गाहणं चेव। सुत्तत्थझरियसारा गेण्हंति अभिग्गहे धीरा ॥ ८॥ जिणकप्पियपाउग्गा अभिग्गहा गिण्हती ण अन्ना उ। जिणकप्पो केरिसस्सा कप्पति पडिवज्जिउं? सुणसु ॥ ९॥ कप्पे सुत्तत्थविसारयस्स संघयणविरियजुत्तस्स। एतारिसस्स कप्पति पडिवज्जिउ होति जिणकप्पो ॥१४२०॥ जिणकप्पे संघयणं भणितं पढमं तु होति णियमेण। विरियं तु भण्णति धिती तीएं जुतो वज्जकुड्डसमो ॥ १॥ कोति पुण ण पडिवज्जे सो पुण णियमाउ कारणेहिं तु। काणि पुण कारणाणि य ? इमाइं ताइं णिसामेह ॥ २॥ देहस्स दुब्बलत्तं आयरियाणं च दुल्लभपसादा। रोग पडिबंध न सहति सीउण्हादी य पडिभागी ॥ ९१॥३॥ सुत्तत्थाणिवि घेत्तुं दुब्बलदेहो तु तं ण चाएति। गुरुणं च अणणुकूलत्तणेण णाराहिओ सूरी ॥४॥ आयरिया अपसण्णा सुत्तपसायं तु ते ण कुव्वंति। णाहीतं तेण सुतं जावइएणं तु पज्जत्तो ॥ ५॥ सोलसविहरोगाणं अहवा गाढं अभिद्दुएणं तु। णाधीतं होज्ज सुतं ते य इमे वण्णिता रोगा ॥ ६॥ कासे सासे जरे दाहे, जोणीसूले भगंदले। अरिसा अजीरए दिट्ठी, मुद्धसूले अकारए ॥ ७॥ अच्छिवेयण तह कण्णवेयणा कंडु कोढ दगऊरं(सरए)। एते ते सोलसवी समासतो वण्णिता रोगा ॥ ८॥ अण्णो पडिबंधेणं गुरुकुलवासं ण चेव आवसई। तेणं णाहिज्जति ऊ के पुण पडिबंधिमे सुणसु ॥ ९॥ सो गामो सा वइया तं भत्तं भद्दओ जणो जत्थ। एताइं संभरंतो गुरुकुलवासं ण रोएति॥१४३०॥ सक्कारो संमाणो पूजइ मे भोइओ तहिं गामे। आयरिओ महतरओ एरिसता से(मे)तहिं सड्ढा ॥१॥ सच्छंदुट्ठाणणिवज्जणस्स सच्छंदगहितभिक्खस्स। सच्छंदजंपियस्स य मा मे सत्तूवि एगागी ॥ ल० १०१॥ २॥ एएहि ऊ अभागी सीताईणं ण देति उ उरं तु। तो णाहिज्जति सो ऊ गुरुकुलवासं असेवंतो ॥ ३॥ एतेहिं ण पडिवज्जे अणुसट्ठी दारिधं परिसमत्तं। का पुण सामायारी जिणयप्पे होतिमा सा तु ॥ ४॥ खेत्ते काल चरित्ते तित्थे परियाग आगमे वेदे। कप्पे लिंगे लेस्सा गणणा झाणे यऽभिग्गाहे॥ ५॥ पव्वावण मुंडावण मणसाऽऽवण्णेऽवि से अणुग्घाता। कारण णिप्पडिकम्मे भत्तं पंथो य ततियाए ॥ ६॥ एसो जिणकप्पो खलु समासतो वण्णितो सविभवेणं। एत्तो उ थेरकप्पं समासओ मे णिसामेहि ॥ ७॥ तिविहम्मि संजमम्मि उ वोद्धव्वो होति थेरकप्पो तु। सामइयछेदपरिहारिए य तिविहम्मि एयम्मि ॥८॥ ठिय अट्ठिए व कप्पे सामाइयसंजमो(ओ)मुणेयव्वो। छेदपरिहारिया पुण णियमाओ होंति ठितकप्पे ॥९॥ एतेसु थेरकप्पो जह जिणकप्पीण अग्गहो दोसु। गहणं चऽभिग्गहाणं पंचहिं दोहिं च ण तह इहं ॥ १४४०॥ बाले वुड्ढे सेहे अगीतत्थे णाणदंसणप्पेही। दुब्बलसंघयणम्मि य गच्छं पइ णेसणा भणिता ॥ १॥ जहसंभवं तु सेसा खेत्तादि विभासियव्व दारा उ। उवरिं तु मासकप्पो वित्थरतो विभासते तेसिं ॥ २॥ इति एस थेरकप्पो एत्तो वोच्छामि लिंगकप्पं तु। तहिय तु लिंगकप्पो इणमो जिणकप्पे भवती तु ॥३॥ रूढनहकक्खण(णि)यणो मुंडो दुविहोवही जहण्णो सिं। एसो तु लिंगकप्पो णिब्बाघातेण णायव्वो ॥४॥ रयहरणं मुहपोत्ती संखेवेण तु दुविह उवही उ। बाघातो विकितलिंगे अरिस पमेहे उ कडिपट्टो ॥५॥ दुविहा अतिसेसावि य तेसि इमे वण्णिता समासेणं। बाहिरऽब्भंतरगा तेसिं विसेसं पवक्खामि ॥ ६॥ बाहिरगा सरीरस्सा अतिसेसो तेसिमो उ बोद्धव्वो। अच्छिद्दपाणिपातो वइरोसभसंघयणधारी ॥ ७॥ अब्भंतरमतिसेसो इमो उ तेसिं समासतो भणिओ। उयहीविव अक्खोभो (२७३)

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [१४४८]

दीप अनुक्रम [१४४८]

सूरो इव तेयसा जुत्तो ॥८॥ अब्भावण्णसरीरो वइगंधो ण भवते सरीरस्स। खतमवि ण कुच्छ(कच्छु)तेसिं परिकम्मं णवि य कुव्वंति ॥९॥ पाणिपडिग्गहधारी एरिसया णियमसो मुणेयव्वा। अतिसेसे वुच्छामिं अण्णेऽवि समासतो तेसिं ॥ १४५०॥ दुविह अतिसेस तेसिं णाणातिसयो तहेव सारीरो। णाणातिसतो ओही मणपज्जव तदुभयं चेव ॥ १ ॥ आभिणिबोहियणाणं सुतणाणं चेव णाणमतिसेसो। निवली अभिण्णवच्चा एसो सारीरमइसेसो ॥ २ ॥ रयहरणं मुहपोत्ती जहण्णोवहि पाणिपत्तयस्सेसो। उक्कोस तिन्नि कप्पा रयहर मुहपोत्ति पणगेतं ॥ ३ ॥ णवहा पडिग्गहीणं जहण्णमुक्कोस होति वारसहा। तेसिंऽवेयाणिं चिय अइरेगो पायनिज्जोगो ॥ ४ ॥ उव्वट्टणघंसणमज्जणा य नहनयणदंतसोभा य। एते उवघाया खलु हवंति जिणकप्प-लिंगस्स ॥ ५ ॥ उव्वट्टणाइयाइं उवगरणं चेव थेरकप्पीणं। भइयव्वो लिंगकप्पो गेलन्नाईहिं कज्जेहिं ॥६॥ कज्जम्मि गिलाणाइसु उव्वट्टणमाइया अणुन्नाया। दुगुणो चउग्गुणो वा कारणओ होइ उवही उ ॥ ल० १०२॥७॥ रूढणहकक्खणि(ण)यणो मुंडो दुविहोवही समासेणं। एसो तु लिंगकप्पो कारणवच्चासि तऽण्णयरो ॥८॥ लोय खुर कत्तरीय मुंडं तिविहं तु होइ थेराणं। असिवादिकारणेहिं कुज्ज विवज्जास लिंगस्स ॥ ९ ॥ निरुवहयलिंगभेदे गुरुगा कप्पड्ड य कारणज्जाते। गेलन्नरोगलोए सरीरवेयावडियमादी ॥ १४६० ॥ वासत्ताणेणावि हु भेदो लिंगस्स तं अणुण्णातं। चाउम्मासुक्कोसं सत्तरि राइंदिय जहन्नं ॥ १ ॥ एयं तु दव्वलिंगं भावे समणत्तणं तु णायव्वं। को उ गुणो दव्वलिंगे? भण्णति इणमो सुणसु वोच्छं ॥२॥ सक्कार वंदण णमंस पूजा कहणा य लिंगकप्पम्मि। पत्तेयबुद्धमादी लिंगे छउमत्थ तो गहणं ॥.९२॥३॥ वत्थासण सक्कारो वंदण अब्भुट्ठणं तु णायव्वं। पणिवादो तु णमंसण संतगुणकित्तणा पूया ॥४॥ दट्ठूण दव्वलिंगं कुव्वंतेताणि इंदमादीवि। लिंगंमि अविज्जंते णो णज्जति एस विरतोत्ति ॥ल० १०३॥५॥ सहितो समणलिंगेणं, धम्मन्नू संम(ज)तो भवे। अलिंगं वेनि तं कीस, जाणंतो ण करे तुमं? ॥६॥ पत्तेयबुद्धो जाव उ गिहिलिंगी अहव अण्णलिंगी उ। देवावि ता ण पूयेंति मा पुज्जं होहिति कुलिंगं॥७॥ ण य णं पुच्छति कोती केरिसओ होइ तुब्भ धम्मोत्ति?। ण य सद्दिंगविहूणं छउमत्थो जाणे विरओत्ति ॥ ८ ॥ एसो तु लिंगकप्पो अहुणा वोच्छामि उवहिकप्पं तु। जो जस्स भवे उवही जिणथेराणं जहाकमसो ॥ ९ ॥ ओहे उवग्गहे या दुविहो उवही तु होति णायव्वो। ओहोवही तु तिण्हं ओवग्गहिओ भवे दोण्हं ॥१४७०॥ जिणकप्पे थेरकप्पे कप्पातीते य तिण्हमोघो तु। थेराणमुवग्गहिओ साहूणं संजतीणं च ॥१॥ बारस चोद्दस पणुवीस णव य एक्को य णिरुवही चेव। जिणथेरअज्जपत्तेयबुद्धतित्थकरतित्थकरे ॥ २ ॥ पाणीपडिग्गहीता पडिगहधारी य होंति जिणकप्पे। थेरा पडिग्गहधरा कप्पादीया उ भजियव्वा ॥ ३ ॥ वियतियचउक्कपणए णव दस एक्कारसेव बारसगं। एते अट्ठ विकप्पा उवहिम्मिवि होंति जिणकप्पे ॥ ४ ॥ अहवा दुगं च पणगं उवहिम्स उ होंति दोन्निवि विकप्पा। पाणिपडिग्गहियाणं अपाउयसपाउयाणं च ॥ ५ ॥ रयहरणं मुहपोत्ती एयं दुयगं अपाउयंगाणं। रयहरणं मुहपोत्ती तिन्नि य पच्छाद इतरेसिं ॥ ६ ॥ उग्गहधारीणंपिय दुविहो उवही समासओ होति। णवविह दुवालसविहो अपाउयसपाउयाणं च ॥ ७ ॥ पत्तं पत्ताबंधो पायट्ठवणं च पायकेसरिया। पडलाई रयत्ताणं च गोच्छओ पायणिज्जोगो ॥ ८ ॥ रयहरणं मुहपोत्ती णवहा एसो अपाउयंगाणं। इयरेसिं एसेव य अतिरेगा तिन्नि पच्छागा ॥ ९ ॥ एते चेव दुवालस मत्तउ अतिरेग चोलपट्टो य। एसो य चोद्दसविहो उवही खलु थेरकप्पम्मि ॥ १४८० ॥ अज्जाणं एसेव य चोलत्थाणम्मि णवरि कमढं तु। अतिरेग अंगलग्गा इमे उ अन्ने मुणेयव्वा ॥ १ ॥ उग्गह णंतग पट्टो अड्ढोरुग चलणिया य बोद्धव्वा। अभिंतर बाहिनियंसणी य तह कंचुए चेव ॥ २ ॥ उक्कच्छिय वेकच्छिय संघाडी चेव खंधकरणी य। ओहोवहिम्मि एते अज्जाणं पण्णवीसं तु ॥ ३ ॥ सत्त य पडिग्गहम्मी रयहरणं चेव होति मुहपोत्ती। एसो तु णवविकप्पो उवही पत्तेयबुद्धाणं ॥ ४ ॥ एगो तित्थगराणं णिक्खममाणाण होइ उवही उ। तेण परं णिरुवहि ऊ जावज्जीवाए तित्थगरा ॥ ल० १०४॥५॥ जिणा बारसरूवाइं. थेरा चोद्दसरूविणो। अज्जाणं पण्णवीसं तु. अतो उड्ढं उवग्गहो ॥ ६ ॥ एसो उवहीकप्पो समासओ वन्निओ जहाकमसो। संभोगकप्पमहुणा समासतो मे णिसामेह ॥ ७ ॥ संभोगपरूवणया सिरिघर सिव(न)पाहुडे य संभुत्ते। दंसणनाणचरित्ते तवहेउं उत्तरगुणेसु ॥.९३॥ ८ ॥ ओहअभिग्गहदाणग्गहणे अणुपालणा य उववाए। संवासम्मि य छट्ठो संभोगविही मुणेयव्वो ॥ ९ ॥ उवही सुय भत्तपाणे, अंजलीपग्गहे इय। दावणा य निकाए य, अब्भुट्ठाणेत्तियावरे ॥.९४॥१४९०॥ किइकम्मस्स य करणे, वेयावच्चकरणे इय। समोसरण सण्णिसेज्जा, कहाए य पबंधणा ॥.९५॥ १ ॥ उग्गम उप्पाएसण निवेय परिकम्मणा य परिहरणा। संजोगविहिविभत्ता उवहिम्मिवि होंति छट्ठाणा ॥ २ ॥ वायण पुच्छण पडिपुच्छ चिंत परियट्टणा य कहणा य। संजोगविहिविभत्ता सुयठाणे होति छट्ठाणा ॥ ३ ॥ उग्गमउप्पाएसण लोयण संभुंजणा णिसिरणा य। संजोगविहिविभत्ता य भत्तदाणे य छट्ठाणा ॥ ४ ॥ वंदिय पणमिय अंजलि गुरुआलोवे अभिग्गहि णिसेज्जा। संजोगविहिविभत्ता अंजलिकम्मेवि छट्ठाणा ॥ ५ ॥ सेज्जोवहि आहारे सीसगणाणुप्पयाण सज्झाए। संजोगविहिविभत्ता दावणाएवि छट्ठाणा ॥ ६ ॥ सेज्जोवहि आहारे सीसगणाणुप्पयाण सज्झाए। संजोगविहिविभत्ता निमंतणाएवि छट्ठाणा ॥ ७ ॥ अब्भुट्ठासण अंजलि किंकर अब्भासकरणमविभत्ती। संजोगविहि-

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [०००१] दीप अनुक्रम [०००१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

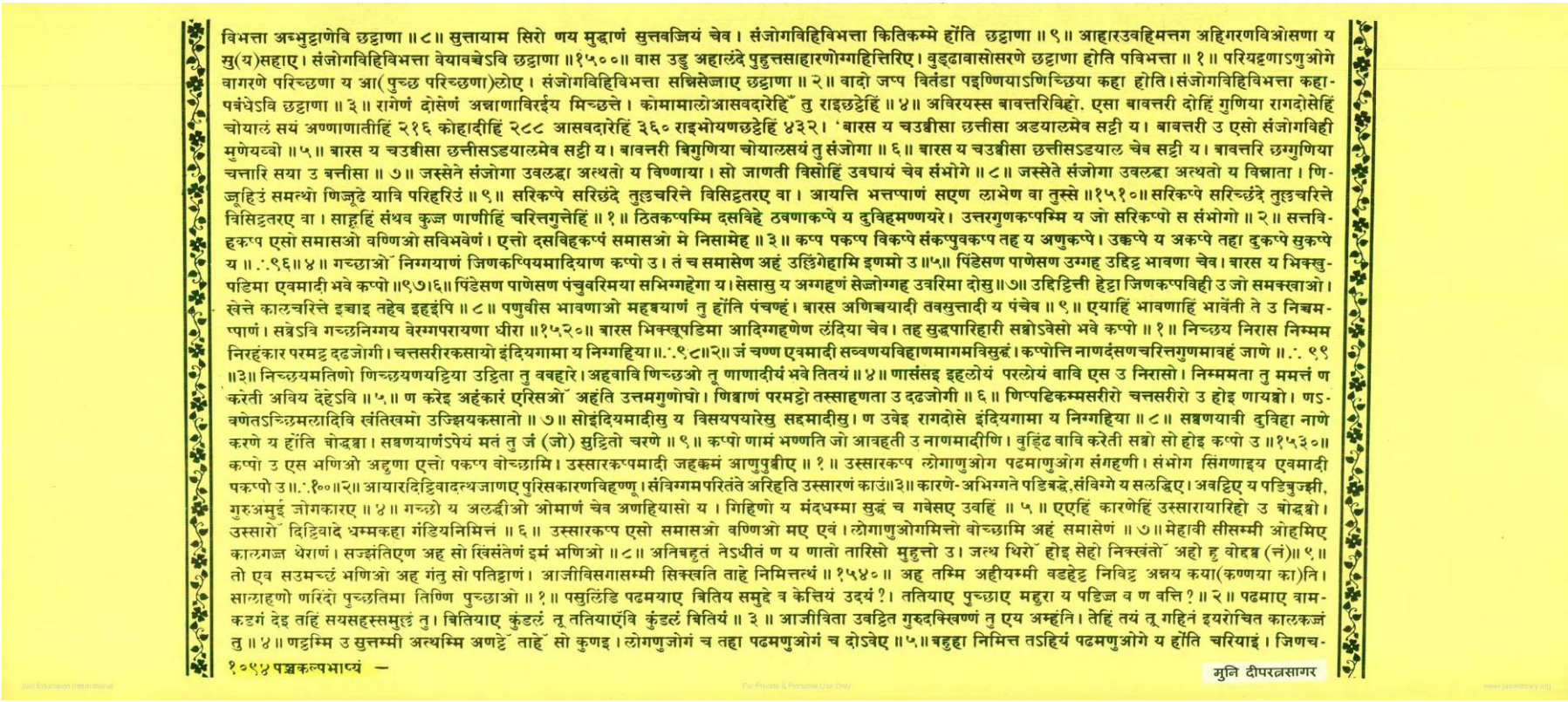

विभत्ता अब्भुट्ठाणेवि छट्ठाणा ॥८॥ सुत्तायाम सिरो णय मुद्धाणं सुत्तवज्जियं चेव। संजोगविहिविभत्ता कितिकम्मे होंति छट्ठाणा ॥९॥ आहारउवहिमत्तग अहिगरणविओसणा य सु(य)सहाए। संजोगविहिविभत्ता वेयावच्चेऽवि छट्ठाणा ॥१५००॥ वास उडु अहालंदे पुहुत्तसाहारणोग्गहित्तिरिए। वुड्ढावासोसरणे छट्ठाणा होति पविभत्ता ॥१॥ परियट्टणाऽणुओगे वागरणे परिच्छणा य आ(पुच्छ परिच्छणा)लोए। संजोगविहिविभत्ता सन्निसेज्जाए छट्ठाणा ॥२॥ वादो जप्प वितंडा पइण्णियाऽणिच्छिया कहा होति। संजोगविहिविभत्ता कहा-पबंधेऽवि छट्ठाणा ॥३॥ रागेणं दोसेणं अन्नाणाविरईय मिच्छत्ते। कोमामालोआसवदारेहिँ तु राइछट्ठेहिं ॥४॥ अविरयस्स बावत्तरिविहो, एसा बावत्तरी दोहिं गुणिया रागदोसेहिं चोयालं सयं अण्णाणातीहिं २१६ कोहादीहिं २८८ आसवदारेहिं ३६० राइभोयणछट्ठेहिं ४३२। ‘बारस य चउब्बीसा छत्तीसा अडयालमेव सट्ठी य। बावत्तरी उ एसो संजोगविही मुणेयव्वो ॥५॥ बारस य चउब्बीसा छत्तीसऽडयालमेव सट्ठी य। बावत्तरी विगुणिया चोयालसयं तु संजोगा ॥६॥ बारस य चउब्बीसा छत्तीसऽडयाल चेव सट्ठी य। बावत्तरि छग्गुणिया चत्तारि सया उ बत्तीसा ॥७॥ जस्सेते संजोगा उवलद्धा अत्थतो य विण्णाया। सो जाणती विसोहिं उवघायं चेव संभोगे ॥८॥ जस्सेते संजोगा उवलद्धा अत्थतो य विन्नाता। णिज्जूहिउं समत्थो णिजूढे यावि परिहरिउं ॥९॥ सरिकप्पे सरिछंदे तुल्लचरित्ते विसिट्ठतरए वा। आयत्ति भत्तप्पाणं सएण लाभेण वा तुस्से ॥१५१०॥ सरिकप्पे सरिच्छंदे तुल्लचरित्ते विसिट्ठतरए वा। साहूहिं संथव कुज्ज णाणीहिं चरित्तगुत्तेहिं ॥१॥ ठितकप्पम्मि दसविहे ठवणाकप्पे य दुविहमण्णयरे। उत्तरगुणकप्पम्मि य जो सरिकप्पो स संभोगो ॥२॥ सत्तविहकप्प एसो समासओ वण्णिओ सविभवेणं। एत्तो दसविहकप्पं समासओ मे निसामेह ॥३॥ कप्प पकप्प विकप्पे संकप्पुवकप्पं तह य अणुकप्पे। उक्कप्पे य अकप्पे तहा दुकप्पे सुकप्पे य ॥.॰.९६॥४॥ गच्छाओ निग्गयाणं जिणकप्पियमादियाण कप्पो उ। तं च समासेण अहं उद्दिंगेहामि इणमो उ ॥५॥ पिंडेसण पाणेसण उग्गह उद्दिट्ठ भावणा चेव। बारस य भिक्खुपडिमा एवमादी भवे कप्पो ॥९७।६॥ पिंडेसण पाणेसण पंचुवरिमया सभिग्गहेगा य। सेसासु य अग्गहणं सेज्जोग्गह उवरिमा दोसु ॥७॥ उद्दिट्ठित्ती हेट्ठा जिणकप्पविही उ जो समक्खाओ। खेत्ते कालचरित्ते इच्चाइ तहेव इहइंपि ॥८॥ पणुवीस भावणाओ महव्वयाणं तु होंति पंचण्हं। बारस अणिच्चयादी तवसुत्तादी य पंचेव ॥९॥ एयाहिं भावणाहिं भावेंती ते उ निच्चमप्पाणं। सव्वेऽवि गच्छनिग्गय वेरग्गपरायणा धीरा ॥१५२०॥ बारस भिक्खूपडिमा आदिग्गहणेण लंदिया चेव। तह सुद्धपारिहारी सव्वोऽवेसो भवे कप्पो ॥१॥ निच्छय निरास निम्मम निरहंकार परमट्ठ दढजोगी। चत्तसरीरकसायो इंदियगामा य निग्गहिया ॥.॰.९८॥२॥ जं चण्ण एवमादी सव्वणयविहाणमागमविसुद्धं। कप्पोत्ति नाणदंसणचरित्तगुणमावहं जाणे ॥.॰. ९९ ॥३॥ निच्छयमतिणो णिच्छयणयट्ठिया उट्ठिता तु ववहारे। अहवावि णिच्छओ तू णाणादीयं भवे तितयं ॥४॥ णासंसइ इहलोयं परलोयं वावि एस उ निरासो। निम्ममता तु ममत्तं ण करेती अविय देहेऽवि ॥५॥ ण करेइ अहंकारं एरिसओ अहंति उत्तमगुणोघो। णिद्धाणं परमट्ठो तस्साहणता उ दढजोगी ॥६॥ णिप्पडिकम्मसरीरो चत्तसरीरो उ होइ णायव्वो। णऽवणेतऽच्छिमलादिवि खंतिखमो उज्झियकसातो ॥७॥ सोइंदियमादीसु य विसयपयारेसु सहमादीसु। ण उवेइ रागदोसे इंदियगामा य निग्गहिया ॥८॥ सव्वणयावी दुविहा नाणे करणे य होंति चोद्दवा। सव्वणयाणंऽपेयं मतं तु जं (जो) सुट्ठितो चरणे ॥९॥ कप्पो णामं भण्णति जो आवहती उ नाणमादीणि। वुड्ढिं वावि करेती सव्वो सो होइ कप्पो उ ॥१५३०॥ कप्पो उ एस भणिओ अहुणा एत्तो पकप्प वोच्छामि। उस्सारकप्पमादी जहक्कमं आणुपुव्वीए ॥१॥ उस्सारकप्प लोगाणुओग पढमाणुओग संगहणी। संभोग सिंगणाइय एवमादी पकप्पो उ ॥.॰.१००॥२॥ आयारदिट्ठिवादत्थजाणए पुरिसकारणविहण्णू। संविग्गमपरितंते अरिहति उस्सारणं काउं ॥३॥ कारणे-अभिग्गते पडिबद्धे,संविग्गे य सलद्धिए। अवट्ठिए य पडिबुज्झी, गुरुअमुई जोगकारए ॥४॥ गच्छो य अलद्धीओ ओमाणं चेव अणहियासो य। गिहिणो य मंदधम्मा सुद्धं च गवेसए उवहिं ॥५॥ एएहिं कारणेहिं उस्सारायारिहो उ बोद्धव्वो। उस्सारो दिट्ठिवादे धम्मकहा गंडियनिमित्तं ॥६॥ उस्सारकप्प एसो समासओ वण्णिओ मए एवं। लोगाणुओगमित्तो वोच्छामि अहं समासेणं ॥७॥ मेहावी सीसम्मी ओहमिए कालगज्ज थेराणं। सज्झंतिएण अह सो खिंसंतेणं इमं भणिओ ॥८॥ अनिवहूतं नेऽधीतं ण य णातो तारिसो मुहुत्तो उ। जत्थ थिरो होइ सेहो निक्खंतो अहो हु वोहव्व (त्तं)॥९॥ तो एव सउमच्छं भणिओ अह गंतु सो पतिट्ठाणं। आजीविसगासम्मी सिक्खति ताहे निमित्तत्थं ॥१५४०॥ अह तम्मि अहीयम्मी वडहेट्ठ निविट्ठ अन्नय कया(कण्णया का)नि। सालाहणो णरिंदो पुच्छतिमा तिण्णि पुच्छाओ ॥१॥ पसुलिंडि पढमयाए बितिय समुद्दे व केत्तियं उदयं?। ततियाए पुच्छाए महुरा य पडिज्ज व ण वत्ति?॥२॥ पढमाए वामकडगं देइ तहिं सयसहस्समुछं तु। बितियाए कुंडलं तू ततियाएँवि कुंडलं बितियं ॥३॥ आजीविता उवट्ठित गुरुदक्खिण्णं तु एय अम्हंति। तेहिं तयं तू गहितं इयरोचित कालकज्जं तु ॥४॥ णट्ठम्मि उ सुत्तम्मी अत्थम्मि अणट्ठे ताहे सो कुणइ। लोगणुजोगं च तहा पढमणुओगं च दोऽवेए ॥५॥ बहुहा निमित्त तऽहियं पढमणुओगे य होंति चरियाइं। जिणच-

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [१५४६]

दीप अनुक्रम [१५४६]

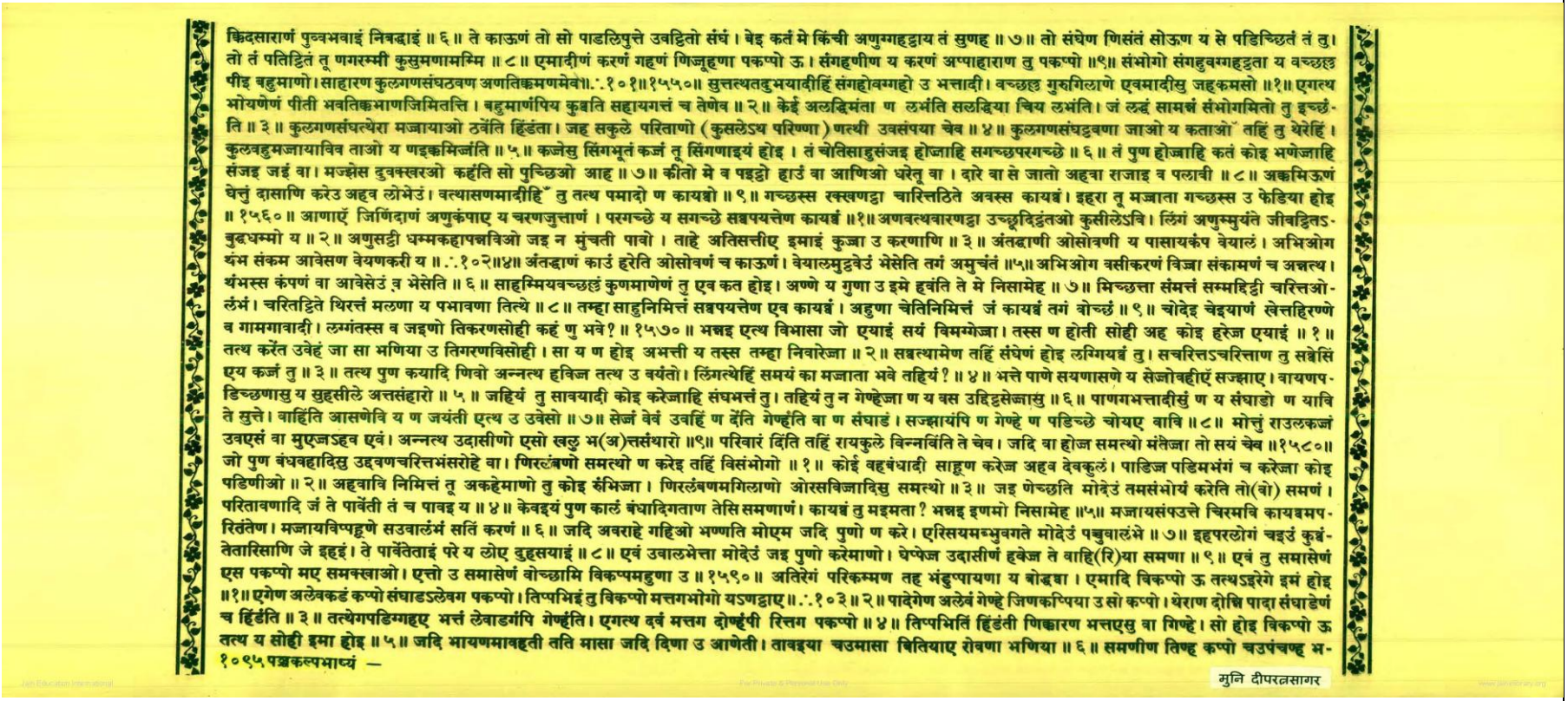

किंदसाराणं पुव्वभवाइं निबद्धाइं ॥ ६ ॥ ते काऊणं तो सो पाडलिपुत्ते उवट्ठितो संघं । वेइ कतं मे किंची अणुग्गहट्ठाय तं सुणह ॥ ७ ॥ तो संघेण णिसंतं सोऊण य से पडिच्छितं तं तु। तो तं पतिट्ठितं तू णगरम्मी कुसुमणामम्मि ॥ ८ ॥ एमादीणं करणं गहणं णिज्जूहणा पकप्पो ऊ । संगहणीण य करणं अप्पाहाराण तु पकप्पो ॥९॥ संभोगो संगहुवग्गहट्ठता य वच्छल्ल पीइ बहुमाणो। साहारण कुलगणसंघठवण अणतिक्कमणमेवा॥.१०१॥१५५०॥ सुत्तत्थतदुभयादीहिं संगहोवग्गहो उ भत्तादी। वच्छल्ल गुरुगिलाणे एवमादीसु जहकमसो ॥१॥ एगत्थ भोयणेणं पीती भवतिक्कमाणजिमितत्ति । बहुमाणंपिय कुबति सहायगत्तं च तेणेव ॥ २ ॥ केई अलद्धिमंता ण लभंति सलद्धिया चिय लभंति। जं लद्धं सामन्नं संभोगमितो तु इच्छंति ॥ ३ ॥ कुलगणसंघत्थेरा मज्जायाओ ठवेंति हिंडंता। जह सकुले परिताणो (कुसलेऽथ परिण्णा) णत्थी उवसंपया चेव ॥ ४ ॥ कुलगणसंघट्ठवणा जाओ य कताओ तहिं तु थेरेहिं। कुलवहुमज्जायाविव ताओ य णइक्कमिज्जंति ॥ ५ ॥ कज्जेसु सिंगभूतं कज्जं तू सिंगणाइयं होइ । तं चोतिसाहुसंजइ होज्जाहि सगच्छपरगच्छे ॥ ६ ॥ तं पुण होज्जाहि कतं कोइ भणेज्जाहि संजइ जइ वा। मज्झेस दुवक्खरओ कहंति सो पुच्छिओ आह ॥ ७ ॥ कीतो मे व पइट्ठो हाउं वा आणिओ धरेतु वा । दारे वा से जातो अहवा राजाइ व पलावी ॥ ८ ॥ अक्कमिऊणं घेत्तुं दासाणि करेउ अहव लोभेउं। वत्थासणमादीहिं तु तत्थ पमादो ण कायव्वो ॥ ९ ॥ गच्छस्स रक्खणट्ठा चारित्तठिते अवस्स कायव्वं। इहरा तू मज्जाता गच्छस्स उ फेडिया होइ ॥ १५६० ॥ आणाएँ जिणिंदाणं अणुकंपाए य चरणजुत्ताणं । परगच्छे य सगच्छे सव्वपयत्तेण कायव्वं ॥१॥ अणवत्थवारणट्ठा उच्छूढदिट्ठंतओ कुसीलेऽवि। लिंगं अणुम्मुयंते जीवट्ठितऽबुद्धधम्मो य ॥ २ ॥ अणुसट्ठी धम्मकहापन्नविओ जइ न मुंचती पावो । ताहे अतिसत्तीए इमाइं कुज्जा उ करणाणि ॥ ३ ॥ अंतद्धाणी ओसोवणी य पासायकंप वेयालं। अभिओग थंभ संकम आवेसण वेयणकरी य ॥ .१०२॥४॥ अंतद्धाणं काउं हरेति ओसोवणं च काऊणं। वेयालमुट्ठवेउं भेसेति तगं अमुचंतं ॥५॥ अभिओग वसीकरणं विज्जा संकामणं च अन्नत्थ। थंभस्स कंपणं वा आवेसेउं व भेसेति ॥ ६ ॥ साहम्मियवच्छल्लं कुणमाणेणं तु एव कत होइ। अण्णे य गुणा उ इमे हवंति ते मे निसामेह ॥ ७ ॥ मिच्छत्ता संमत्तं सम्मद्दिट्ठी चरित्तओ लंभं। चरितट्ठिते थिरत्तं मलणा य पभावणा तित्थे ॥ ८ ॥ तम्हा साहुनिमित्तं सव्वपयत्तेण एव कायव्वं। अहुणा चेतिनिमित्तं जं कायव्वं तगं वोच्छं ॥ ९ ॥ चोदेइ चेइयाणं खेत्तहिरण्णे व गामगावादी। लग्गंतस्स व जइणो तिकरणसोही कहं णु भवे? ॥ १५७० ॥ भन्नइ एत्थ विभासा जो एयाइं सयं विमग्गेज्जा। तस्स ण होती सोही अह कोइ हरेज्ज एयाइं ॥ १ ॥ तत्थ करेंत उवेहं जा सा भणिया उ तिगरणविसोही। सा य ण होइ अभत्ती य तस्स तम्हा निवारेज्जा ॥ २ ॥ सव्वत्थामेण तहिं संघेणं होइ लग्गियव्वं तु। सचरित्तऽचरित्ताण तु सव्वेसिं एय कज्जं तु ॥ ३ ॥ तत्थ पुण कयादि णिवो अन्नत्थ हविज्ज तत्थ उ वयंतो। लिंगत्थेहिं समयं का मज्जाता भवे तहियं? ॥ ४ ॥ भत्ते पाणे सयणासणे य सेज्जोवहीएँ सज्झाए। वायणपडिच्छणासु य सुहसीले अत्तसंहारो ॥ ५ ॥ जहियं तु सावयादी कोइ करेज्जाहि संघभत्तं तु। तहियं तु न गेण्हेज्जा ण य वस उद्दिट्ठसेज्जासु ॥ ६ ॥ पाणगभत्तादीसुं ण य संघाडो ण यावि ते सुत्ते। वाहिंति आसणेवि य ण जयंती एत्थ उ उवेसो ॥ ७ ॥ सेजं वेवं उवहिं ण देंति गेण्हंति वा ण संघाडं। सज्झायंपि ण गेण्हे ण पडिच्छे चोयए वावि ॥ ८ ॥ मोत्तुं राउलकज्जं उवएसं वा मुएज्जऽहव एवं। अन्नत्थ उदासीणो एसो खलु भ(अ)त्तसंथारो ॥९॥ परिवारं दिंति तहिं रायकुले विन्नविंति ते चेव। जदि वा होज्ज समत्थो मंतेज्जा तो सयं चेव ॥१५८०॥ जो पुण बंधवहादिसु उद्दवणचरित्तभंसरोहे वा। णिरलंबणो समत्थो ण करेइ तहिं विसंभोगो ॥ १ ॥ कोई वहबंधादी साहूण करेज्ज अहव देवकुलं। पाडिज्ज पडिमभंगं च करेज्जा कोइ पडिणीओ ॥ २ ॥ अहवावि निमित्तं तू अकहेमाणो तु कोइ रुंभिज्जा। णिरलंबणमगिलाणो ओसविज्जादिसु समत्थो ॥ ३ ॥ जइ णेच्छति मोदेउं तमसंभोयं करेति तो(चो) समणं। परितावणादि जं ते पावेंती तं च पावइ य ॥ ४ ॥ केवइयं पुण कालं बंधादिगताण तेसि समणाणं। कायव्वं तु मइमता? भन्नइ इणमो निसामेह ॥५॥ मज्जायसंपउत्ते चिरमवि कायवमपरितंतेण। मज्जायविप्पहूणे सउवालंभं सतिं करणं ॥ ६ ॥ जदि अवराहे गहिओ भण्णति मोएम जदि पुणो ण करे। एरिसयमब्भुवगते मोदेउं पबुवालंभे ॥ ७ ॥ इहपरलोगं चइउं कुव्वंतेतारिसाणि जे इहइं। ते पावेंतेताइं परे य लोए दुहसयाइं ॥ ८ ॥ एवं उवालभेत्ता मोदेउं जइ पुणो करेमाणो। घेप्पेज्ज उदासीणं हवेज्ज ते वाहि(रि)या समणा ॥ ९ ॥ एवं तु समासेणं एस पकप्पो मए समक्खाओ। एत्तो उ समासेणं वोच्छामि विकप्पमहुणा उ ॥ १५९० ॥ अतिरेगं परिकम्मण तह भंडुप्पायणा य बोद्धवा । एमादि विकप्पो ऊ तत्थऽइरेगे इमं होइ ॥१॥ एगेण अलेवकडं कप्पो संघाडऽलेवग पकप्पो। तिप्पभिइं तु विकप्पो मत्तगभोगो यऽणट्ठाए॥.१०३॥२॥ पादेगेण अलेवं गेण्हे जिणकप्पिया उ सो कप्पो। थेराण दोन्नि पादा संघाडेणं च हिंडंति ॥ ३ ॥ तत्थेगपडिग्गहए भत्तं लेवाडगंपि गेण्हंति। एगत्थ दवं मत्तग दोण्हंपी रित्तग पकप्पो ॥ ४ ॥ तिप्पभितिं हिंडंती णिक्कारण भत्तएसु वा गिण्हे। सो होइ विकप्पो ऊ तत्थ य सोही इमा होइ ॥ ५ ॥ जदि भायणमावहती तति मासा जदि दिणा उ आणेती। तावइया चउमासा चितियाए रोवणा भणिया ॥ ६ ॥ समणीण तिण्ह कप्पो चउपंचण्ह भ-

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [१५९७]

दीप अनुक्रम [१५९७]

णिओ पकप्पो उ। तेण परेण विकप्पो एत्तो उवहिं तु वोच्छामि ॥७॥ तिन्नि उ भणिया कप्पो अतरंता विपइण्णा पकप्पविही। उप्पायगवज्जाणं तिट्ठाणारोवणा भणिया ॥.'.१०४॥८॥ गणनाय पमाणेण य उवहिपमाणं दुहा मुणेयव्वं। गणणाएँ जिणाणं तू एक्को दो तिण्णि वा कप्पा ॥ ल० १०५॥९॥ दो रयणी संडासो सोत्थीओ वावि होति आयामो। रुंदा दिवड्ढहत्थं एय पमाणप्पमाणं तू ॥ ल० १०६ ॥ १६०० ॥ दो खोमिओन्निएक्को थेराणं तिण्णि होंति गणणाए। आयामायपमाणा दुहत्थ अद्धं च विच्छिन्ना ॥ ल० १०७॥ १॥ एसो उ भवे कप्पो पकप्पो उ गिलाणए गुरूणं वा। चउ सत्त वावि पाउण माणऽतिरित्तं च धारेज्जा ॥ ल० १०८॥ २॥ कारणे पकप्पो होती विकप्पो णिक्कारणे मुणेयव्वो। उप्पायगो पवित्ती सावतिरेगं धरेज्जाहि ॥ ३॥ गणणाएं पमाणेण व गच्छट्ठाए उ तं पमोत्तूणं। जो अण्णो अतिरेगं धरेइ सोही उ तस्स इमा ॥४॥ चाउम्मासुक्कोसो मासिय मज्झे य पंच य जहण्णे। तिविहम्मिवि उवहिम्मि अतिरेगारोवणा भणिया ॥ ५॥ अतिरेगउवहिदारं संखेवेणोदितं अह इयाणिं। परिकम्मदार वोच्छं अप्परिकम्मो जिणाणुवधी ॥ ६॥ कारणविही पकप्पो थेराणं अविहीए विकप्पो उ। परिकम्मणा उ एसा भंडुप्पायं अतो वोच्छं ॥७॥ गाहग गहणं गेज्झं च जहासंखेणिमे तु णायव्वा। पुरिसे पडिमा उवही तिन्नि तिगा भावसुद्धाइं ॥.'.१०५॥८॥ गाहगो गीयत्थो खलु पुरिसो णियमेण होइ णायव्वो। उद्दिट्ठमादियाहिं गहणं पडिमाहिं भणितं तु ॥ ९ ॥ घेत्तव्वो उवही खलु तिण्णित्ताऽऽहारउवहिसिज्जत्ति। तिण्णिवि तिविसुद्धाइं उग्गममादीहिं नियमेणं ॥१६१०॥ एगेण चेव गहणं कप्पो दोहिं भवे पकप्पो उ। तिप्पभितिं तु विकप्पो भत्ते पाणे तहा उवही ॥ १ ॥ आदितिएण उ गहणं बितियट्ठाणम्मि अब्भणुण्णातं। हंदि परिक्खणिज्जो सुहारको(हाकरो)सव्वसाहूणं ॥.'.१०६॥२॥ आदित्ति होति कप्पो तिगतिगआहारउवहिसेज्जाओ। गहणं तु होति तिविहं उग्गममादी तिगविसुद्धं ॥३॥ बितियट्ठाण पकप्पो तत्थवि तिगसुद्धमेव घेत्तव्वं। असतीय अणुण्णातं पणहाणीए असुद्धंपि ॥ ल० १०९॥ ४॥ केण पुण कारणेणं गच्छे असुद्धंपि उग्गमादीहिं। घेप्पति? भण्णति सुणसु कारणमिणमो समासेणं ॥ ल० ११०॥ ५॥ रयणाकरोव्व जम्हा उ आगरो होइ सव्वसुक्खाणं। नाणादीण य पभवो तनो य मोक्खो य तो रक्खे ॥ ल० १११ ॥ ६॥ आइन्नता महाणो काल्ो विसमो सपक्खओ दो(दुभिक्खमादी)सो। आदितिगभंगगेणं गहणं भणितं पकप्पम्मि ॥.'.१०७॥ ल० ११२॥ ७॥ नियनि(छ)कंतपमाणे अणुवासो चेव कारणनिमित्तं। परिकम्मण परिहरणे उवही अतिरित्तगपमाणो ॥ ८॥ गच्छो सबालवुड्ढो गिलाणसेहादिएहिं आतिण्णो। एसो व महाणो तू तस्स तु दुलभं निगविसुद्धं ॥९॥ काल्ो विसमो दुब्भिक्खमादि दोसा सपक्खओ उ इमे। पासत्थादी बहवे ओमाणंतो तओ होति ॥ १६२० ॥ अहव असंविग्गावी जह मद्दुराकोट्टइट्ठगा केई। मायाए उग्गमती सड्ढा अविकोवि नवि जाणे ॥ १ ॥ एएहिं कारणेहिं अलभंते आइतिगभंगगहणं तु। आदितिगमुग्गमादी भंगो तू भंसणा होतिं ॥ २॥ कारणतो तिविहंपी माणं तु अतिक्कमेज्ज उ कदादि। किं पुण तिविहं माणं? भन्नति इणमो निसामेह ॥ ३॥ हवति पमाणपमाणं खेत्तपमाणं च कालमाणं च। एतं तिविह पमाणं अतिक्कमो तेसिमो होति ॥ ४॥ अतिरेग पमाणेणं निप्ह परे(य के)णंपि णाम गिण्हेज्जा। खेत्तओ अतिक्कमो तू परतोवि दुगाउया मग्गे ॥ ५॥ कालपमाणातिक्कमे कुज्जा पाउरणगं अकालेऽवि। वसनी कालातीतं असिवादणुवासणं एयं ॥ ६॥ परिकम्मणमविहीए बलियट्ठऽड्ढदुब्बलम्मि कुज्जाहि। दुड्ढभलंभे सीतेण अहिओ उन्नियं पंतो ॥ ७॥ अतिरित्तपमाणं वा धारिज्जइ कारणेहिं एएहिं। सो सव्वो पकप्पो तू निक्कारणओ विकप्पो उ ॥ ८॥ संकप्पो उ इदाणिं सो य पसत्थो य अप्पसत्थो य। एतेसिं दोण्हंपी परूवणा होतिमा कमसो ॥९॥ दंसणनाणचरिन्ने अणुपालण पत्थणा पसत्थो उ। इंदियविसयकसाएसु अप्पसत्थो उ संकप्पो ॥.'.१०८॥ १६३०॥ दंसणपभावगाइं सत्थाइं कहमहं अहिजेज्जा?। जो चिंतेयं(ई)एसो संकप्पो दंसणे होति ॥ १ ॥ नाणइयारं ण करे कहं च नाणं अहं अहिजेज्जा?। इति नाणे चारित्ते सुद्धचरित्तो कहं होज्जा? ॥ २॥ उत्तरउत्तरिएहिं व चारित्तगुणेहिं कह णु विहरेज्जा?। एसो तु चरित्तम्मी संकप्पो सत्थगो भणितो ॥ ३ ॥ सद्दादिइंदियत्थाण पत्थणा तह य रागगमणं तु। कोहादिकसायाण य अज्झप्पं होति अपसत्थं ॥ ४॥ एसो खलु संकप्पो एत्तो वोच्छामऽहं तु उवकप्पं। उवकप्पती करेति उवणेइ व होंति एगट्ठा ॥ ५॥ भत्तेण व पाणेण व उवकरणेण व उवग्गहं कुणति। उवकप्पइ गुणधारी उवकप्पं तं वियाणाहि ॥ ६॥ खुहिओ पिवासिओ वा सीतभिभूतो व ण तरती पढितुं। तस्स करेइ उवग्गह पडंतकुड्डस्स वा थूणा ॥ ७॥ जो उप्पाएं समाहिं चउव्विह नाणदंसणे चरणे। तत्तो य तवसमाहिं तस्स खमे निजरा होति ॥ ८॥ भत्तेण व पाणेणं उवकरणेणं व उग्गहितदेहो। जो कुणइ सि समाहिं तस्सावरणं हणति दाता ॥ ९॥ भत्तस्स व पाणस्स व उवकरणस्स व उवग्गहकरस्स। जो कुणइ अंतरायं तस्सावरणं पवड्ढेति ॥ ल० ११३ ॥ १६४०॥ एसुवकप्पो भणिओ एत्तो वोच्छं अहं तु अणुकप्पं। अणुसट्ठो तू तहियं पच्छाभावे मुणेयव्वो ॥ १॥ नाणचरणड्ढयाणं पुव्वायरियाण अणुकितिं कुणइ। अणुगच्छइ गणधारी अणुकप्पं तं वियाणाहि ॥ २॥ गुणसयसहस्सकलियाण गुणत्तरतरं व अभिलसंताणं। जे खेत्तकालभावा आसज्ज जोगहाणि भवे ॥.'.१०९॥३॥ गुणसयकलिओ जम्मो मोक्खो य गुणुत्तरो मुणेयव्वो। सामायारीहाणी तु जोगहाणी मुणेयव्वा ॥४॥ खेत्ताणऽसती अद्धाण उच्चखित्तम्मि काल दुब्भिक्खे। भावे गेलण्णादिसु सुद्धाभावे तु जदसुद्धं ॥ ५॥ गेण्हेज्जाऽऽहारादी नाणादीसू व उज्जमण कुज्जा। अणसणमादी व तवं (२७४)

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [१६४६] दीप अनुक्रम [१६४६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

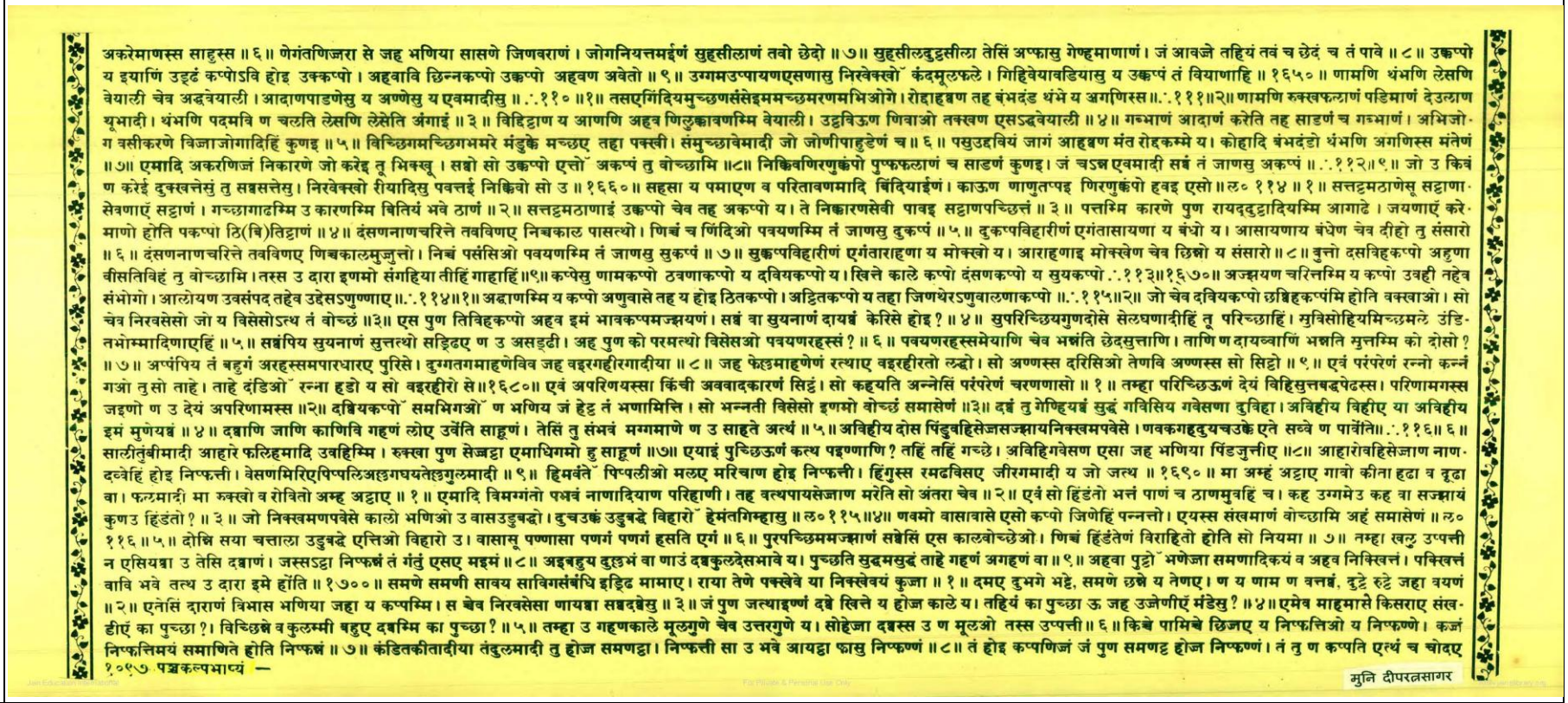

अकरेमाणस्स साहुस्स ॥ ६ ॥ णेगंतणिज्जरा से जह भणिया सासणे जिणवराणं । जोगनियत्तमईणं सुहसीलाणं तवो छेदो ॥ ७ ॥ सुहसीलदुट्ठसीला तेसिं अप्फासु गेण्हमाणाणं । जं आवज्जे तहियं तवं च छेदं च तं पावे ॥ ८ ॥ उक्कप्पो य इयाणिं उट्ठढं कप्पोऽवि होइ उक्कप्पो । अहवावि छिन्नकप्पो उक्कप्पो अहवण अवेतो ॥ ९ ॥ उग्गमउप्पायणएसणासु निरवेक्खो कंदमूलफले । गिहिवेयावडियासु य उक्कप्पं तं वियाणाहि ॥ १६५० ॥ णामणि थंभणि लेसणि वेयाली चेव अद्धवेयाली । आदाणपाडणेसु य अण्णेसु य एवमादीसु ॥ ∴११० ॥१॥ तसएगिंदियमुच्छणसंसेइमसच्छमरणमभिओगे । रोद्दाहव्वण तह बंभदंड थंभे य अगणिस्स ॥∴१११॥२॥ णामणि रुक्खफलाणं पडिमाणं देउलाण यूभादी । थंभणि पदमवि ण चलति लेसणि लेसेति अंगाइं ॥ ३ ॥ विद्दिट्ठाण य आणणि अहव णिलुक्कावणम्मि वेयाली । उट्ठविऊण णिवाओ तक्खण एसऽद्धवेयाली ॥ ४ ॥ गब्भाणं आदाणं करेति तह साडणं च गब्भाणं । अभिजोग वसीकरणे विज्जाजोगादिहिं कुणइ ॥ ५ ॥ विच्छिगमच्छिगभमरे मंडुक्के मच्छए तहा पक्खी । संमुच्छावेमादी जो जोणीपाहुडेणं च ॥ ६ ॥ पसुउद्दवियं जागं आहव्वण मंत रोद्दकम्मे य । कोहादि बंभदंडो थंभणि अगणिस्स मंतेणं ॥ ७ ॥ एमादि अकरणिज्जं निकारणे जो करेइ तू भिक्खू । सव्वो सो उक्कप्पो एत्तो अकप्पं तु वोच्छामि ॥८॥ निक्किवणिरणुकंपो पुप्फफलाणं च साडणं कुणइ । जं चऽन्न एवमादी सव्वं तं जाणसु अकप्पं ॥ ∴११२॥९॥ जो उ कित्रं ण करेइ दुक्खत्तेसुं तु सव्वसत्तेसु । निरवेक्खो रीयादिसु पवत्तई निक्किवो सो उ ॥ १६६० ॥ सहसा य पमाएण व परितावणमादि चिंदियाईणं । काऊण णाणुतप्पइ णिरणुकंपो हवइ एसो ॥ ल० ११४ ॥ १ ॥ सत्तट्ठमठाणेसू सट्ठाणासेवणाएं सट्ठाणं । गच्छागाढम्मि उ कारणम्मि वितियं भवे ठाणं ॥ २ ॥ सत्तट्ठमठाणाइं उक्कप्पो चेव तह अकप्पो य । ते निक्कारणसेवी पावइ सट्ठाणपच्छित्तं ॥ ३ ॥ पत्तम्मि कारणे पुण रायदुट्ठादियम्मि आगाढे । जयणाएं करेमाणो होति पकप्पो ठि(वि)तिट्ठाणं ॥ ४ ॥ दंसणनाणचरित्ते तवविणए निचकाल पासत्थो । णिचं च णिंदिओ पवयणम्मि तं जाणसु दुकप्पं ॥ ५ ॥ दुकप्पविहारीणं एगंतासायणा य बंधो य । आसायणाय बंधेण चेव दीहो तु संसारो ॥ ६ ॥ दंसणनाणचरित्ते तवविणए णिचकालमुज्जुत्तो । निचं पसंसिओ पवयणम्मि तं जाणसु सुकप्पं ॥ ७ ॥ सुक्कप्पविहारीणं एगंताराहणा य मोक्खो य । आराहणाइ मोक्खेण चेव छिन्नो य संसारो ॥ ८ ॥ वुत्तो दसविहकप्पो अहुणा वीसतिविहं तु वोच्छामि । तस्स उ दारा इणमो संगहिया तीहिं गाहाहिं ॥९॥ कप्पेसु णामकप्पो ठवणाकप्पो य दवियकप्पो य । खित्ते काले कप्पो दंसणकप्पो य सुयकप्पो ∴११३॥१६७०॥ अज्झयण चरित्तम्मि य कप्पो उवही तहेव संभोगो । आलोयण उवसंपद तहेव उद्देसऽणुण्णाए ॥∴११४॥१॥ अद्धाणम्मि य कप्पो अणुवासे तह य होइ ठितकप्पो । अट्ठितकप्पो य तहा जिणथेरऽणुवालणाकप्पो ॥∴११५॥२॥ जो चेव दवियकप्पो छव्विहकप्पंमि होति वक्खाओ । सो चेव निरवसेसो जो य विसेसोऽत्थ तं वोच्छं ॥३॥ एस पुण तिविहकप्पो अहव इमं भावकप्पमज्झयणं । सव्वं वा सुयनाणं दायव्वं केरिसे होइ ? ॥ ४ ॥ सुपरिच्छियगुणदोसे सेलघणादीहिं तू परिच्छाहिं । सुविसोहियमिच्छमले उंडितभोम्मादिणाएहिं ॥ ५ ॥ सव्वंपिय सुयनाणं सुत्तत्थो सड्ढिदए ण उ असड्ढी । अह पुण को परमत्थो विसेसओ पवयणरहस्सं ? ॥ ६ ॥ पवयणरहस्समेयाणि चेव भन्नंति सुत्तम्मि को दोसो ? ॥ ७ ॥ अप्पंपिय तं बहुगं अरहस्समपारधारए पुरिसे । दुग्गतगमाहणेविव जह वइरगहीरगादीया ॥ ८ ॥ जह फेलुमाहणेणं रत्थाए वइरहीरतो लद्धो । सो अण्णस्स दरिसिओ तेणवि अण्णस्स सो सिट्ठो ॥ ९ ॥ एवं परंपरेणं रन्नो कन्नं गओ तुसो ताहे । ताहे दंडिओ रन्ना हडो य सो वइरहीरो से ॥१६८०॥ एवं अपरिणयस्सा किंची अववादकारणं सिट्ठं । सो कहयति अन्नेसिं परंपरेणं चरणणासो ॥ १ ॥ तम्हा परिच्छिऊणं देयं विहिसुत्तबद्धपेढस्स । परिणामगस्स जइणो ण उ देयं अपरिणामस्स ॥२॥ दवियकप्पो समभिगओ ण भणिय जं हेट्ठ तं भणामित्ति । सो भन्नती विसेसो इणमो वोच्छं समासेणं ॥३॥ दव्वं तु गेण्हियव्वं सुद्धं गविसिय गवेसणा दुविहा । अविहीय विहीए या अविहीय इमं मुणेयव्वं ॥ ४ ॥ दव्वाणि जाणि काणिवि गहणं लोए उवेंति साहूणं । तेसिं तु संभवं मग्गमाणे ण उ साहते अत्थं ॥ ५ ॥ अविहीय दोस पिंडुवहिसेज्जसज्झायनिक्खमपवेसे । णवकगहदुयचउक्के एते सव्वे ण पावेंति ॥ ∴११६॥ ६ ॥ सालीतुंबीमादी आहारे फलिहमादि उवहिम्मि । रुक्खा पुण सेज्जट्ठा एमाधिगमो हु साहूणं ॥७॥ एयाइं पुच्छिऊणं कत्थ पइण्णाणि ? तहिं तहिं गच्छे । अविहिगवेसण एसा जह भणिया पिंडजुत्तीए ॥८॥ आहारोवहिसेज्जाण नाणदव्वेहिं होइ निप्फत्ती । वेसणमिरिएपिप्पलिअहुगघयतेल्लगुलमादी ॥ ९ ॥ हिमवंते पिप्पलीओ मलए मरिचाण होइ निप्फत्ती । हिंगुस्स रमढविसए जीरगमादी य जो जत्थ ॥ १६९० ॥ मा अम्हं अट्ठाए गावो कीता हढा व दूढा वा । फलमादी मा रुक्खो व रोवितो अम्ह अट्ठाए ॥ १ ॥ एमादि विमग्गंतो पभवं नाणादियाण परिहाणी । तह वत्थपायसेज्जाण मरेति सो अंतरा चेव ॥ २ ॥ एवं सो हिंडंतो भत्तं पाणं च ठाणमुवहिं च । कह उग्गमेउ कह वा सज्झायं कुणउ हिंडंतो ? ॥ ३ ॥ जो निक्खमणपवेसे कालो भणिओ उ वासउडुबद्धो । दुचउक्कं उडुबद्धे विहारो हेमंतगिम्हासु ॥ ल० ११५ ॥४॥ णवमो वासावासे एसो कप्पो जिणेहिं पन्नत्तो । एयस्स संखमाणं वोच्छामि अहं समासेणं ॥ ल० ११६ ॥ ५ ॥ दोन्नि सया चत्ताला उडुबद्धे एत्तिओ विहारो उ । वासासू पण्णासा पणगं पणगं हसति एगं ॥ ६ ॥ पुरपच्छिममज्झाणं सव्वेसिं एस कालबोच्छेओ । णिचं हिंडंतेणं विराहितो होति सो नियमा ॥ ७ ॥ तम्हा खलु उप्पत्ती न एसियव्वा उ तेसि दव्वाणं । जस्सऽट्ठा निप्फन्नं तं गंतुं एसए मइमं ॥ ८ ॥ अइबहुय दुल्लभं वा णाउं दव्वकुलदेसभावे य । पुच्छति सुद्धमसुद्धं ताहे गहणं अगहणं वा ॥ ९ ॥ अहवा पुट्ठो भणेजा समणादिकयं व अहव निक्खित्तं । पक्खित्तं वावि भवे तत्थ उ दारा इमे होंति ॥ १७०० ॥ समणे समणी सावय साविगसंबंधि इड्ढि मामाए । राया तेणे पक्खेवे या निक्खेवयं कुज्जा ॥ १ ॥ दमए दुभगे भट्टे, समणे छन्ने य तेणए । ण य णाम ण वत्तव्वं, दुट्ठे रुट्ठे जहा वयणं ॥ २ ॥ एतेसिं दाराणं विभास भणिया जहा य कप्पम्मि । स चेव निरवसेसा णायव्वा सव्वदव्वेसु ॥ ३ ॥ जं पुण जत्थाइण्णं दव्वे खित्ते य होज्ज काले य । तहियं का पुच्छा ऊ जह उज्जेणीएं मंडेसु ? ॥ ४ ॥ एमेव माहमासे किसराए संवडीएं का पुच्छा ?। विच्छिन्ने व कुलम्मी बहुए दव्वम्मि का पुच्छा ? ॥ ५ ॥ तम्हा उ गहणकाले मूलगुणे चेव उत्तरगुणे य । सोहेज्जा दव्वस्स उ ण मूलओ तस्स उप्पत्ती ॥ ६ ॥ किबे पामिच्चे छिज्जए य निप्फत्तिओ य निप्फण्णे । कज्जं निप्फत्तिमयं समाणिते होति निप्फन्नं ॥ ७ ॥ कंडितकीतादीया तंदुलमादी तु होज्ज समणट्ठा । निप्फत्ती सा उ भवे आयट्ठा फासु निप्फण्णं ॥ ८ ॥ तं होइ कप्पणिज्जं जं पुण समणट्ठ होज्ज निप्फण्णं । तं तु ण कप्पति एत्थं च चोदए

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [१७०९]

दीप अनुक्रम [१७०९]

चोदओ इणमो ॥९॥ निप्फत्तिओ य निप्फण्णओ य गहणं तु होज्ज समणस्स। निप्फत्तिओ असुद्धे कहण्णु निप्फण्णते सोही? ॥१७१०॥ एवं गवेसियव्वे किं एगट्ठाणगं परिचत्तं?। भण्णति अफासुदव्वे ण चेव गहणं तु साहूणं ॥ १॥ तो तेणं साहूणं किं कज्जं होइती विगप्पे(तू गविट्टे)णं। अण्णंपिय एगकुले ण हु आगरो सव्वदव्वाणं ॥ २॥ तिकडुयमादीयाणं सव्वदव्वाण संभवेगकुले। ताणि य गवेसमाणे हाणी सचेव णादी ॥ ३॥ तम्हऽप्पप्पं परिहर अप्पप्प-विवज्जओ विवज्जति हु। अप्पप्पं साहेंतो विवज्जति ण तं च साहेति ॥४॥ निप्फत्ती समणट्ठा समणट्ठा जं च होति निप्फण्णं। गहियं होज्ज जयंतेण तत्थ सोही कहं होइ? ॥५॥ सुयणाणपमाणेण ऊ उवउत्तो उज्जुयं गवेसंतो। सुद्धो जइ वावण्णो खमओ इव सो असढभावो ॥ ६॥ जो पुण मुक्कधुराओ निरुज्जमो जइवि सो उ णावण्णो। तहवियं आवण्णो चिय आहाकम्मं परिणओव ॥ ७॥ एयस्स साहणट्ठं अहवा अन्नंपि भन्नए एत्थ। कारगसुत्तं इणमो तमहं वोच्छं समासेणं ॥८॥ अंगम्मिवि चितिए ततियगम्मि जे अत्थ कुसल! जिणदिट्ठा। एतेसु जुत्तजोगी विहरंतो अहाउयं वु(जु)ज्झे ॥.११७९॥ अंगग्गहणा पढमं आयारो तस्स बितियसुयखंधे। तस्सवि बीयज्झयणे उद्देसे तस्स ततियम्मि ॥ १७२०॥ जत्थेयं सुत्तं खलु से य अवस्सं ण होज्ज सुलभो उ। अहवावि तईएत्ती अज्झयणम्मी तइज्जम्मि ॥ १ ॥ तस्सवि ततिउद्देसे आदीसुत्तम्मि जं समक्खायं। जदि संकमो असुद्धो ताहे जयणाएँ जुत्तो उ ॥ २॥ देसूणंपि हु कोडिं अच्छंतो सो विसुज्झती णियमा। तम्हा विसुद्धभावो सुज्झति नियमा जिणमयम्मि ॥ ३॥ बाहिरकरणे जुत्तो उवओगमहिट्ठिओ सुतधराणं। जं दोस समावण्णोवि णाम जिणवयणओ सुद्धो ॥ ४॥ दव्वेण य भावेण य सुद्धमसुद्धे य होइ चउभंगो। तइओ दोसु विसुद्धो चउत्थओ उभयह असुद्धो ॥५॥ चितिओ भावविसुद्धो दव्वविसुद्धो य पढमओ होइ। अहवावि दोसकरणं दव्वे भावे य दुविहं तु॥६॥ भावविसुद्धाराह(हार)को दव्वओ सुद्धो व होतऽसुद्धो य। जे जिणदिट्ठा दोसा रागादी नेहिं ण उ लिप्पे ॥ ७॥ एतेसामण्णतरं कीयादी अणुवउत्तो जो गिण्हे। तट्ठाणगावराहे संवट्टियमोऽवराहाणं ॥ ८॥ आवण्णे सट्ठाणं दिज्जइ अह पुण बहुं तु आवण्णे। तहियं किं दायव्वं? भण्णइ इणमो सुणह वोच्छं ॥ ९॥ तहियं किं दायव्वं? तवो व छेदो तहेव मूलं वा। कत्थेयं भणियंती? भण्णति तु णिसीहणामम्मि ॥१७३०॥ वीसइमे उद्देसे मास चउम्मास तह य छम्मासे। उग्घातमणुग्घायं भणियं सव्वं जहाकमसो ॥१॥ एसो उ दवियकप्पो जहक्कमं वण्णिओ समासेणं। एत्तो य खेत्तकप्पं वोच्छामि गुरूवएसेणं ॥२॥ आदी छक्कनियत्ती उ वण्णिया जम्मि जम्मि खेत्तम्मि। एतेसिं सन्निकासे सालंबो मुणी वसे खेत्ते ॥.११८॥३॥ छवि-हकप्पो आदी तह जारिसगा णिसेवितिया खेत्ता। अक्खेमअसिवमादी ण कप्पती तारिसे वासो ॥४॥ खेमादि अलब्भंतो पडिकुट्ठेहिंपि वसति जयणाए। दुयगादी संजोगा वक्खाणं सन्निकासस्स ॥ ५॥ अक्खेमे असिवम्मि य असिवं वज्जे वसिज्ज अक्खेमे। तहियं उवहिविणासो असिवे पुण जीवणासो उ ॥ ६॥ एवं ओमादीसुं संजोगा तिगचउक्कादीया। वसियव्वं जेसु जहा तमहं वोच्छं समासेणं ॥ ७॥ कडजोगि सन्निकासे बहुतरगं जत्थुवग्गहं जाणे। थोव-तरियं च हाणिं तत्थऽन्नयरे दुविहकाले ॥ ८॥ एतेसामन्नयरे आलंबणविरहिओ वसे खेत्ते। कालदुयावराहे संवट्टिदुयमोऽवराहाणं ॥ ९॥ संवट्टिदयावराहे तवो व छेदो तहेव मूलं वा। आयारपकप्पे जं पमाण णेमाण चरिमम्मि ॥ १७४०॥ एसो उ खेत्तकप्पो अहुणा वोच्छामि कालकप्पं तु। जावातुतं तु झीणं अणुपाले ताव सामन्नं ॥ १॥ गीयसहाओ विहरे संविग्गेहिं व जयणजुत्तो उ। असतीवि मग्गमाणे खेत्ते काले इमं माणं ॥ २॥ पंच व छ सत्त सत्ते अनिरेगं वावि जोयणाणं तु। गीयत्थपादमूलं परिमग्गिज्जा अपरितंतो ॥ल० ११७॥ ३॥ एकं व दो व तिण्णि व उक्कोसं बारसेव वासाइं। गीयत्थपादमूलं परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥ल० ११८॥ ४॥ पंच व छ सत्त सत्ते अनिरेगं वावि जोयणाणं तु। संविग्गपादमूलं परिमग्गिज्जा अपरितंतो ॥५॥ एकं व दो व तिण्णि व उक्कोसं बारसेव वासाइं। संविग्गपादमूलं परिमग्गिज्जा अपरितंतो ॥६॥ संविग्गो गीयत्थो भंगचउक्के उ पढममुवसंपा। असतीइ ततिय बितिए चउत्थगं णो उ उवसंपे ॥७॥ उक्कमओ खलु लहुगा चतुरो लहुगा चउत्थभंगम्मि। जस्सऽट्ठा उवसंपद तं नत्थि चउत्थभंगम्मि ॥८॥ एतेसिं तु अलंभे एगो थामावहारमकरेंतो। विहरेज्ज गुणसमिद्धो अणिदाणो आगमसहातो ॥ ९॥ कालम्मि संकिलिट्ठे छक्कायदयावरोवि संविग्गो। जयजोगीण अलंभे पणगऽण्णतरेण संवासो ॥१७५०॥ पणगऽण्णतरं पासत्थमादिभंगे चउत्थए जयणा। जत्थ वसंती ते ऊ ठाति तहिं वीसु वसहीए ॥ १॥ तेसि णिवेदेऊणं अह तत्थ ण होज्ज अन्नवसही उ। ण वहेज्ज वा उदंतं वसेज्ज तो एक्कवसहीए ॥ २॥ अपरीभोगोगासे तत्थ ठितो तू पुणोविय जएज्जा। आहारमादिएहिं इमेण विहिणा जहाकमसो ॥ ३॥ आहारे उवहिम्मि य गेलण्णागाढकारणे वावि। थामावहार-विजढो असती जुत्तो ततो गहणं ॥ ४॥ आहारउवहिमादी उप्पादे अप्पणा विसुद्धं तु। असती सतलाभस्सा जो तेसिं साहुपक्खीओ ॥ ५॥ सो उ कुलाइं पुच्छिज्जते उ दाएति वावि सो तेसिं। तहवी अलभंतो तू जयनी पणहाणि जा लहुगा ॥ ६॥ संविग्गपक्खसहितो ताहे उप्पादएज्ज सुद्धं तु। असती पणहाणीए जइत्तु अप्पे पडिग्गहणं ॥ ७॥ तह असती तब्भायणमाणीयं गिण्हती तहिं चेव। नियगेऽवि पडिग्गहगे गेण्हति पासत्थपाया ऊ ॥ ८॥ उवहिं पुराणगहितं अप्परिभुत्तं तु गिण्हती तेसिं। असती तएयरंपिय जदि य गिलाणो भवे तत्थ ॥९॥ तत्थवि जइज्ज एवं असती सव्वंपि से करेज्जितरे। अहवा तेवि गिलाणा हवेज्ज ताहे करे सोऽवि ॥ १७६०॥ एतत्थं अच्छिज्जति गच्छे अण्णोण्णजं तु साहिज्जं। कीरति ण पमाओ खलु तम्हा गेलण्णे कायव्वो ॥ १॥ दीहो व मडहतो वा कम्मोदयओ हवेज्ज आतंको। मडहो अदिग्घरोगो तब्विवरीओ भवे इतरो ॥ २॥ कालचउक्कं वा खलु कायव्वं होइ अप्पमत्तेणं। उडुबद्धे वासासु अ दिय राउ चउक्कमेतं तु ॥ ३॥ जिणवयणभासियम्मी निज्जर गेलण्णकारणे विउला। आतंकपउरताए कतपडिकइया जहन्नेणं ॥४॥ जह भमरमहुयरिगणा णिवयंती कुसुमियम्मि वणसंडे। इय होइ निवइयव्वं गेलण्णे कइ-यवजढेणं ॥ ल० १२९ ॥५॥ सयमेव दिट्ठपाढी करेंति पुच्छंतऽजाणगा वेज्जं। विज्जाण अट्ठगं पुण णायव्वमिणं समासेणं ॥ ६॥ संविग्गमसंविग्गे दिट्ठत्थे लिंगि सावए सण्णी। अस्सण्णि सण्णि इतरे परतित्थिय कुसलतेइच्छं ॥ ७॥ पइदिणमलब्भमाणे वत्थु ठवियव्वगं भवे किंचि। तत्थ उ भणेज्ज कोई सुक्कं तु ठवे दवे दोसा ॥ ८॥ संसत्तंपि य सुक्खं तू, अणिट्ठं च सुसाहगं। सुसारत्थं तगं होइ, इतरे दोसा बहू इमे ॥९॥ निब्बे दवे (निब्बोदए) पणीए अपम-ज्जण पाण तक्कणाऽऽयरणा। एए दोसा जम्हा तम्हा उ दवं न ठाविज्जा ॥ १७७०॥ भण्णइ जेणं कज्जं तं ठावेजा तहिं तु जयणाए। आतंकविवज्जासे चउरो लहुगा य गुरुगा य ॥ १ ॥ जं सेवियं तु किंची गेलन्ने तं तु जो उ

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [१७७२]

दीप अनुक्रम [१७७२]

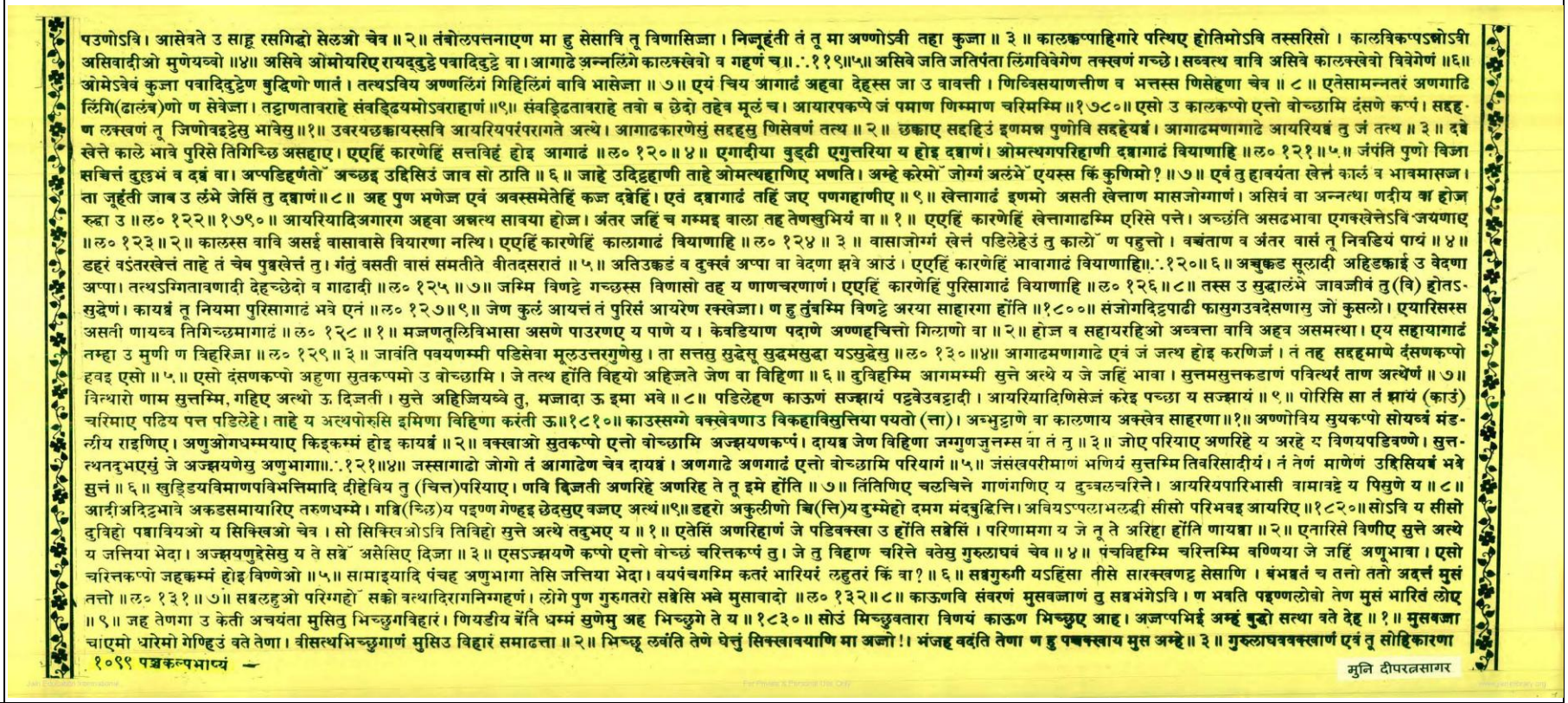

पउणोऽवि। आसेवते उ साहू रसगिद्धो सेलओ चेव ॥२॥ तंबोलपत्तनाएण मा हु सेसावि तू विणासिज्जा। निज्जूहंती तं तू मा अण्णोऽवी तहा कुज्जा ॥ ३ ॥ कालकप्पाहिगारे पत्थिए होतिमोऽवि तस्सरिसो। कालविकप्पऽण्णोऽवी असिवादीओ मुणेयव्वो ॥४॥ असिवे ओमोयरिए रायदुट्ठे पवादिदुट्ठे वा। आगाढे अन्नलिंगे कालक्खेवो व गहणं च॥.:.११९॥५॥ असिवे जति जतिपंता लिंगविवेगेण तक्खणं गच्छे। सव्वत्थ वावि असिवे कालक्खेवो विवेगेणं ॥६॥ ओमेऽवेवं कुज्जा पवादिदुट्ठेण बुद्धिणो णातं। तत्थऽविय अण्णलिंगं गिहिलिंगं वावि भासेज्जा ॥ ७॥ एयं चिय आगाढं अहवा देहस्स जा उ वावत्ती। णिव्विसयाणत्तीण व भत्तस्स णिसेहणा चेव ॥ ८ ॥ एतेसामन्नतरं अणगाढिलिंगि(ढालंब)णो ण सेवेज्जा। तट्ठाणतावराहे संवड्ढिदयमोऽवराहाणं ॥९॥ संवड्ढिदावराहे तवो व छेदो तहेव मूलं च। आयारपकप्पे जं पमाण णिम्माण चरिमम्मि ॥१७८०॥ एसो उ कालकप्पो एत्तो वोच्छामि दंसणे कप्पं। सद्दहण लक्खणं तू जिणोवइट्ठेसु भावेसु ॥१॥ उवरयछक्कायस्सवि आयरियपरंपरागते अत्थे। आगाढकारणेसुं सद्दहसु णिसेवणं तत्थ ॥ २॥ छक्काए सद्दहिउं इणमन्न पुणोवि सद्दहेयव्वं। आगाढमणागाढे आयरियव्वं तु जं तत्थ ॥ ३ ॥ दव्वे खेत्ते काले भावे पुरिसे तिगिच्छि असहाए। एएहिं कारणेहिं सत्तविहं होइ आगाढं ॥ल० १२०॥ ४॥ एगादीया बुड्ढी एगुत्तरिया य होइ दव्वाणं। ओमत्थगपरिहाणी दव्वागाढं वियाणाहि ॥ल० १२१॥५॥ जंपंति पुणो विज्जा सचित्तं दुल्लभं व दव्वं वा। अप्पडिहणंतो अच्छइ उद्दिसिउं जाव सो ठाति ॥ ६॥ जाहे उद्दिट्ठहाणी ताहे ओमत्थहाणिए भणति। अम्हे करेमो जोग्गं अलंभे एयस्स किं कुणिमो? ॥ ७॥ एवं तु हावयंता खेत्तं कालं व भावमासज्ज। ता जूहंती जाव उ लंभे जेसिं तु दव्वाणं ॥ ८॥ अह पुण भणेज्ज एवं अवस्समेतेहिं कज्ज दवेहिं। एवं दव्वागाढं तहिं जए पणगहाणीए ॥ ९॥ खेत्तागाढं इणमो असती खेत्ताण मासजोग्गाणं। असिवं वा अन्नत्था णदीय वा होज रुद्धा उ ॥ल० १२२॥ १७९०॥ आयरियादिअगारग अहवा अन्नत्थ सावया होज्ज। अंतर जहिं च गम्मइ वाला तह तेणखुभियं वा ॥ १॥ एएहिं कारणेहिं खेत्तागाढम्मि एरिसे पत्ते। अच्छंति असढभावा एगक्खेत्तेऽवि जयणाए ॥ल० १२३॥२॥ कालस्स वावि असई वासावासे वियारणा नत्थि। एएहिं कारणेहिं कालागाढं वियाणाहि ॥ल० १२४॥ ३ ॥ वासाजोग्गं खेत्तं पडिलेहेउं तु कालो ण पहुत्तो। वच्चंताण व अंतर वासं तू निवडियं पाथं ॥ ४॥ डहरं वऽत्तरखेत्तं ताहे तं चेव पुव्वखेत्तं तु। गंतुं वसती वासं समतीते वीतदसरातं ॥ ५॥ अतिउक्कडं व दुक्खं अप्पा वा वेदणा झवे आउं। एएहिं कारणेहिं भावागाढं वियाणाहि॥.:.१२०॥ ६॥ अचुक्कड सूलादी अहिडक्काई उ वेदणा अप्पा। तत्थऽग्गितावणादी देहच्छेदो व गाढादी ॥ल० १२५॥ ७॥ जम्मि विणट्ठे गच्छस्स विणासो तह य णाणचरणाणं। एएहिं कारणेहिं पुरिसागाढं वियाणाहि ॥ल० १२६॥८॥ तस्स उ सुद्धालंभे जावज्जीवं तु(वि) होतऽसुद्धेणं। कायव्वं तू नियमा पुरिसागाढं भवे एतं ॥ल० १२७॥९॥ जेण कुलं आयत्तं तं पुरिसं आयरेण रक्खेज्जा। ण हु तुंबम्मि विणट्ठे अरया साहारगा होंति ॥१८००॥ संजोगदिट्ठपाढी फासुगउवदेसणासु जो कुसलो। एयारिसस्स असती णायव्व तिगिच्छमागाढं ॥ल० १२८॥ १॥ मज्जणतूलिविभासा असणे पाउरणए य पाणे य। केवडियाण पदाणे अण्णहचित्तो गिलाणो वा ॥ २॥ होज्ज व सहायरहिओ अव्वत्ता वावि अहव असमत्था। एय सहायागाढं तम्हा उ मुणी ण विहरिज्जा ॥ल० १२९॥ ३॥ जावंति पवयणम्मी पडिसेवा मूलउत्तरगुणेसु। ता सत्तसु सुद्देसू सुद्धमसुद्धा यऽसुद्देसु ॥ल० १३०॥४॥ आगाढमणागाढे एवं जं जत्थ होइ करणिज्जं। तं तह सद्दहमाणे दंसणकप्पो हवइ एसो ॥ ५॥ एसो दंसणकप्पो अहुणा सुतकप्पमो उ वोच्छामि। जे तत्थ होंति विहयो अहिज्जते जेण वा विहिणा ॥ ६॥ दुविहम्मि आगमम्मी सुत्ते अत्थे य जे जहिं भावा। सुत्तमसुत्तकडाणं पवित्थरं ताण अत्थेणं ॥ ७॥ वित्थारो णाम सुत्तम्मि, गहिए अत्थो ऊ दिज्जती। सुत्ते अहिज्जियव्वे तु, मज्जादा ऊ इमा भवे ॥ ८॥ पडिलेहण काऊणं सज्झायं पट्टवेउवट्टादी। आयरियादिणिसेज्जं करेइ पच्छा य सज्झायं ॥ ९॥ पोरिसि सा तं झायं (काउं) चरिमाए पढिय पत्त पडिलेहे। ताहे य अत्थपोरुसि इमिणा विहिणा करंती ऊ॥१८१०॥ काउस्सग्गे वक्खेवणाउ विकहाविसुत्तिया पयतो (त्ता)। अब्भुट्ठाणे वा कालणाय अक्खेव साहरणा॥१॥ अण्णोविय सुयकप्पो सोयव्वं मंडलीय राइणिए। अणुओगधम्मयाए किइकम्मं होइ कायव्वं ॥ २॥ वक्खाओ सुतकप्पो एत्तो वोच्छामि अज्झयणकप्पं। दायव्व जेण विहिणा जग्गुणजुत्तम्स वा तं तु ॥ ३॥ जोए परियाए अणरिहे य अरहे य विणयपडिवण्णे। सुत्तत्थनदुभएसुं जे अज्झयणेसु अणुभागा॥.:.१२१॥४॥ जस्सागाढो जोगो तं आगाढेण चेव दायव्वं। अणगाढे अणगाढं एत्तो वोच्छामि परियागं ॥५॥ जंसंखपरीमाणं भणियं सुत्तम्मि तिवरिसादीयं। तं तेणं माणेणं उद्दिसियव्वं भवे सुत्तं ॥ ६॥ खुड्डियविमाणपविभत्तिमादि दीहेविय तु (चित्त)परियाए। णवि दिज्जती अणरिहे अणरिहे ते तू इमे होंति ॥ ७॥ तिंतिणिए चलचित्ते गाणंगणिए य दुच्चलचरित्ते। आयरियपारिभासी वामावट्टे य पिसुणे य ॥ ८॥ आदीअदिट्ठभावे अकडसमायारिए तरुणधम्मे। गव्वि(च्छि)य पइण्ण गेण्हइ छेदसुए वज्जए अत्थं॥९॥ डहरो अकुलीणो च्चि(त्ति)य दुम्मेहो दमग मंदबुद्धित्ति। अवियऽप्पलाभलद्धी सीसो परिभवइ आयरिए ॥१८२०॥ सोऽवि य सीसो दुविहो पव्वावियओ य सिक्खिवओ चेव। सो सिक्खिवओऽवि तिविहो सुत्ते अत्थे तदुभए य ॥ १॥ एतेसिं अणरिहाणं जे पडिवक्खा उ होंति सव्वेसिं। परिणामगा य जे तू ते अरिहा होंति णायव्वा ॥ २॥ एतारिसे विणीए सुत्ते अत्थे य जत्तिया भेदा। अज्झयणुद्देसेसु य ते सव्वे असेसिए दिज्जा ॥ ३॥ एसऽज्झयणे कप्पो एत्तो वोच्छं चरित्तकप्पं तु। जे तु विहाण चरित्ते वतेसु गुरुलाघवं चेव ॥ ४॥ पंचविहम्मि चरित्तम्मि वण्णिया जे जहिं अणूभावा। एसो चरित्तकप्पो जहक्कम्मं होइ विण्णेओ ॥५॥ सामाइयादि पंचह अणुभागा तेसि जत्तिया भेदा। वयपंचगम्मि कतरं भारियरं लहुतरं किं वा? ॥ ६॥ सव्वगुरुगी यऽहिंसा तीसे सारक्खणट्ठ सेसाणि। बंभव्वतं च तत्तो ततो अदत्तं मुसं तत्तो ॥ल० १३१॥ ७॥ सव्वलहुओ परिग्गहो सक्को वत्थादिरागनिग्गहणं। लोगे पुण गुरुगतरो सव्वेसि भवे मुसावादो ॥ल० १३२॥८॥ काऊणवि संवरणं मुसवज्जाणं तु सव्वभंगेऽवि। ण भवति पइण्णलोवो तेण मुसं भारितं लोए ॥ ९॥ जह तेणगा उ केती अचयंता मुसितु भिच्छुगविहारं। णियडीय बेंति धम्मं सुणेमु अह भिच्छुगे ते य ॥ १८३०॥ सोउं मिच्छुवतारा विणयं काऊण भिच्छुए आह। अज्जप्पभिई अम्हं बुद्धो सत्था वते देह ॥ १॥ मुसवज्जा चाएमो धारेमो गेण्हिउं वते तेणा। वीसत्थभिच्छुगाणं मुसिउ विहारं समाढत्ता ॥ २॥ भिच्छू लवंति तेणे घेत्तुं सिक्खावयाणि मा अज्जो!। भंजह वदंति तेणा ण हु पच्चक्खाय मुस अम्हे॥ ३॥ गुरुलाघवक्खाणं एवं तू सोहिकारणा

मुनि दीपरत्नसागर

"पंचकल्प" – छेदसूत्र-५/२ (भाष्य)

---------- भाष्यं [१८३४] ----------

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] "पंचकल्प" संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

भिहितं। पत्तम्मि कारणम्मि उ लहुयतरं पुब सेविज्जा ॥ल० १३३ ॥४॥ काणि पुण कारणाणिं जेसु उ पत्तेसु जयणपडिसेवा?। भन्नइ ताणि इमाइं कित्तेऽहं भे समासेणं ॥५॥ गच्छाणुकंपयाए आयरिय गिलाण आवतीए य। पडिसेवा खलु भणिया एते खलु कारणा ते उ ॥६॥ वोहियतेणादीसुं गच्छस्सट्ठा णि(द्धाण)सेवणा होइ। आयरियाण व अट्ठा विभास वित्थारओ एत्थं ॥७॥ णाउं तुंबविणासं अरगा साहारगा ण एवं तु। आयरियस्स विणासे गच्छविणासो धुवं एवं ॥८॥ आगाढे गेलण्णे कंदाति विभास आवती चउहा। दवावति खित्तावइ काले तह भावओ चेव ॥९॥ एएहिं कारणेहिं अप्पत्तेहिं तु जो उ सेविज्जा। सुहसीलयाए जो (सो) उ आवज्जति णविय सुज्झति हु ॥१८४०॥ जो पुण पत्ते कारणें जयणा आसेवणं करेज्जाहि। तस्स चरित्तविसुद्धी जह भणति जिणो हि तं इणमो ॥१॥ गच्छाणुकंपयाए आयरियगिलाणआवदि विदिण्णे। जत्थेव य पडिसेहो सचरित्तासेवणा तत्था ॥२॥ पुरिमस्स पच्छिमस्स य मज्झिमगाणं तु जिणवरिंदाणं। आसेवणा य सचरित्तया य अत्थेण अणुगम्मे ॥३॥ वयभंगंपि करेंतो जह सचरित्ती कहं तु अत्थेणं। अणुगंतव्वं एयं? भन्नइ आगाढकारणओ ॥४॥ जे केअवराहपदा किण्हा सुक्का भवे पवयणम्मि। णिघरिसपरिच्छणाए दुगठाणेणं मुणेयव्वा ॥५॥ पडिसेहोऽणुण्णा वा पायच्छित्ते य ओह निच्छइए। ओहेण उ सट्ठाणं अत्थविरेगेण वोगडियं ॥.'.१२२॥६॥ हिंसादवराहपदा किण्हे अणुघाति सुक्किला लहुगा। णिघरिसपरिच्छणा खलु जह कणगं तावणिहसेसु ॥७॥ एवं परिच्छिऊणं आयवयं गच्छमावती जं तु। नित्थारयम्मि पत्ते जयणाएं निसेव सचरित्ती॥८॥ दुट्ठाणा मूलुत्तर दप्पे अजए य होइ पडिसेहो। कप्पे जयणा णु(वु)त्ता जो पुण निक्कारणासेवे ॥९॥ पायच्छित्तं पावति तं दुविहं ओहियं व णेच्छइयं। ओहं तु जमावण्णं तं दिज्जति तम्मि सट्ठाणं ॥१८५०॥ णिच्छइयं अत्थेणं वीमंसित्ता उ दिज्जती जं तु। एयं अत्थविरेगं वोकडियं छव्विहं इणमो ॥१॥ कस्स कहं कहिं तं वा कदिया णु कम्मि केचिरं होइ?। छट्ठाणपदविभत्तं अत्थपदं होइ वोगडियं ॥.'.१२३॥२॥ कस्सति गीतागीतस्स वावि कह जयण अजयणाए वा। कहिं अद्धाण वसंते कतिया णु सुभिक्खदुभिक्खे ॥३॥ अहवा दिन राओ वा कम्हिन्ती कारणे व इतरे वा। कम्हि व पुरिसज्जाते आयरियादीण अण्णतरे ॥४॥ केचिर कतिवारे खलु केवइकालं व सेवियं होज्जा। एवं छट्ठाण एयं सुद्धासुद्धे असुद्धियरे ॥५॥ संघयणधितिजुयाणं सहूण अरहं तु दिज्जए तत्थ। असहूअथिरादीणं दिज्जति चाएति जं वोढुं ॥६॥ सोऊण कप्पियपदं करेति आलंबणं मइविहूणा। रहसं च अणरहस्सं करेइ मइसूयओ पुरिसो ॥७॥ माइट्ठाणविमुक्को अकप्पियं जो उ सेवते भिक्खू। तं तस्स कप्पियपदं मायासहिते चरणभेदो ॥८॥ एसो चरित्तकप्पो एत्तो वोच्छामि उवहिकप्पं तु। सो पुण पुव्वाभिहितो ओहुग्गहवु(जु)त्तओ चेव ॥९॥ जो उ विसेसो एत्थं तं नवरं इह अहं तु वक्खामि। सुद्धुग्गमादिएहिं धारेयव्वो जहाकमसो ॥१८६०॥ फासुयमफासुए यावि, जाणए या अजाणए। ओहोवहुवग्गहिते, धारणा कस्स केचिरं?॥१॥ जइ फासुवही कारणें गहिओ तू जाणएण तो धारे। जो जुण्णोऽजुन्नोवि हू अट्ठ पकुव्वे तु छुब्भति हु ॥२॥ फासुगें अजाणएणं कारणगहिओ धरेजते ताव। जावऽण्णो उप्पण्णो ताहे उ विगिंचए तं तु ॥३॥ अह पुण अफासुओ ऊ जाणगगहिओ उ कारणे होज्जा। जइ गीयत्था सव्वे तो धारेंती उ जा जिण्णो ॥४॥ अग्गीतविमिस्सेहिं अण्णुप्पन्नम्मि तं विगिंचंति। अह पुण अफासुओ ऊ कारणें गहिओ अगीतेणं ॥५॥ उप्पण्णे उप्पण्णे अण्णम्मि विगिंचती ऊ सो ताहे। एवं चउभंगेणं धारणता वा परिट्ठवणा ॥६॥ सो पुण दुविहो उवही वत्थं पातं च होइ बोद्धव्वं। वत्थं तु बहुविहाणं पाता पुण दो अणुण्णाता ॥७॥ चोदेती पंचण्हं किण्णवि एगो पडिग्गहो होइ। ता दो एक्केक्कस्स ऊ? भण्णइ ण पहुच्चए एवं॥८॥ तो चउ तिण्ह दुवण्हं अहवा एक्केकतस्स एक्केकं?। भण्णइ पाहुणगादिसु ताहे किं काहितेकेणं?॥९॥ अप्पा परो पवयणं जीवनिकाया य चत्त होंतेवं। वारत्तगदिट्ठंतो तम्हा दो दो उ घेत्तव्वा ॥१८७०॥ भणति जदेवं तेणं जिणकप्पी एगपातओ कम्हा?। भण्णइ कारणमिणमो सुणसू जेणेगपादो उ ॥१॥ संगहियकुच्छि जस पगहिय अप्पाहारे चियत्तदेहे य। णासण्णेऽणावाते णातिणिरुद्धे ठविय भाणं ॥.'.१२४॥२॥ तिवली अभिन्नवच्चो कंकग्गहणी य संगहियकुच्छी। जोयणमवि गच्छिज्जा सन्नाडो थंडिलस्सऽसती ॥३॥ जसकारि पवयणस्सा जेणाजसो होइ तं तु ण करेति। पग्गहियएसणाहि य ण यावि सुलभो सें आहारो ॥४॥ जदिविय हु कुच्छिपूरं लभति कदाती बहुस्स कालस्स। तंपिय से विद्धंसइ तत्तकडिल्ले व जह बिंदुं ॥५॥ तेणऽप्पं वच्चं से तो गच्छति जाव सारियं नत्थि। न य बाहा उप्पज्जति चत्तं च सरीरगं तेणं ॥६॥ णासन्नं जाइ थंडिल्लं, णावातं नियमेण उ। विच्छिन्नं दूरमोगाढं, सव्वदोसविवज्जियं ॥७॥ निक्खिप्पि पडिग्गहगं वोसिरिउं णेयसो उ णिल्लेवे। एएण कारणेणं जिणकप्पिउ एगपातो उ ॥८॥ पातदुगस्स उ गहणे कारणमेतं समासओऽभिहितं। अहुणा तु चोदयंती किं घेप्पइ वत्थमतिरेगं?॥९॥ किं तिहिँ ण पहुप्पेजा एक्केणाच्छादणा पकप्पम्मि?। गच्छे सकारणेत्तिय वोच्छेदकरो पसंगस्स॥.'.१२५॥ १८८० ॥ चोदेती किं तिण्हं गहणं? ऊणेहिं जं ण संथरति। भण्णति एक्केणावि हु संथरति? पुणाह तो सूरी ॥१॥ छादणतो णासणओ ऊणेण कता भवे पकप्पस्स। मा हु पसंगविवड्ढी ऊणऽहितं तेण धारेंति ॥२॥ गच्छो सकारणोत्ती गिलाणवुड्ढे य बालमसहादी। तेसऽट्ठा अतिरेगं घेप्पइ मा होज्ज दुलभंति ॥३॥ सीतादिभावियाणं मा हु णाणादियाण परिहाणी। होज्जाहि तेण गेण्हति संथरती जावतीएगं ॥४॥ जदि एयविप्पहूणा तवनियमगुणा भवे निरवसेसा। आहारमादियाणं को णाम परिग्गहं कुज्जा?॥५॥ पंचमवओवघातो चोदेती वत्थमादिगहणम्मि। एगव्वओवघाए घातो पंचण्हवि वयाणं ॥ल० १३४॥६॥ एवं तु चोदितम्मी बेंति गुरू ण उ परिग्गहो सो उ। संजमगुणोवकारा उवघाति परिग्गहो होइ॥७॥ जम्मि परिग्गहियम्मी तसथावरघातणा पवत्तंति। गहणे गहिए धरणे सो नाम परिग्गहो होइ ॥ल० १३५॥८॥ गहणे पुरकम्मादी गहिए पुण होंति पच्छकम्मादी। धरणे अप्पडिलेहा कीरति मुच्छा त जा तत्थ॥९॥ जम्मि परिग्गहियम्मी तसथावरसंजमा पवत्तंति। गहणे गहिते धरणे सो तू(गुणकारओ)ण परिग्गहो होइ॥१८९०॥ रागादिविरहिओ ऊ आहारादीण जं कुणइ भोगं। ण हु सो परिग्गहो ऊनो किं गुरुमादिणं पूया ॥ल० १३६॥१॥ कीरति आहारादिहिं? भन्नति भणिता उ नियमसो सा उ। तित्थंकरेहिं चेव उ तेण उ सा कीरए तेसिं ॥२॥ तो किं पूयाहेउं पवत्तयंतीह तित्थगर तित्थं?। अह कम्मक्खयहेउं? पुट्ठो एवं इमं आह ॥३॥ आहारउवहिपूजादिकारणा ण उ परूवितं तित्थं। णाणचरणाण अट्ठा तित्थं देसिंति तित्थकरा ॥४॥ तित्थं चउहा संघो तस्स य देसंति नाणमादीणि। तित्थगरणामगोत्तस्स खयट्ठा अविय साभवा ॥५॥ नाणे चरणे गुणकारगाणि आहारउवहिमादीणि। एतेण अणुण्णाता तहिं ठिताणं तु तो पूजा ॥ल० १३७॥६॥ एसो उवहीकप्पो वन्नियओ वित्थरं पमोत्तूणं। संभोगकप्पमेत्तो वोच्छामि अहं समासेणं ॥७॥ पुव्वभणिओ विभागो (२७५)

For Private & Personal Use Only

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [१८९८]

दीप अनुक्रम [१८९८]

संभोगविही य दोहिं ठाणेहिं। दोसुवि पसंगदोसा सेसे अतिरेग पन्नवए ॥८॥ दसविहसत्तविहेहिं पुवुत्तेतेहिं दोहिं ठाणेहिं। दोसुवि पसंगदोसा ण भुंजए अन्नसंभोई ॥९॥ जम्हा उ ण णज्जंती उग्गममादी उ जे भवे दोसा। एएण अपरिभोगो अमणुण्णे होइ बोद्धवो ॥१९००॥ जं तत्थ ण पत्तं तू तमहं वोच्छामि एतमतिरेगं। जे उ गुणा संभोगे ते वण्णेऽहं समासेणं ॥ १ ॥ अणुकंपा संगहे चेव. लाभालाभेऽविदाघता। दावद्दवे य गेलण्णे. कंतारे अंचिए गुरू ॥ ∴ १२६ ॥ २ ॥ बालादणुकंपणट्ठा असहू अतरंतसंगहट्ठाए। केइ सलद्धी अलद्धी तेसिं साहिल्लयट्ठाए ॥३॥ उप्पण्णे अहिगरणे काहिंति विओसणं तु अविदाही। ण य गच्छे बहिभावं उप्परओऽहंति परिभूते ॥४॥ मज्झं अणेक्कभा-णोत्तिकाउ मा एस पे(ग)च्छती पुव्विं। जत्थ उ कुले महल्ले लब्भति भिक्खा महल्ली ऊ ॥५॥ तम्हा उ दवदवस्सा पुव्विं गच्छामहं तु तं गेहं। एते ऊ परिहरिया दोसा उ भवंति संभोगे ॥६॥ गेलण्णेण व एतस्स हिंडियं आणियं तु अण्णेहिं। भोक्खत्ति यऽसहुवग्गो कंतारे आणित सहूहिं ॥७॥ एमेव अंचिएऽवी गुरूवि गिण्हेउ अन्नमन्नस्स। एक्को पुण परितम्मति बाहिरभावं व गच्छेज्जा ॥८॥ एते उ एवमादी संभोगम्मि उ गुणा भवंती उ। तम्हा खलु कायव्वो संभोगो गुणन्निएण समं ॥९॥ एयाइं ठाणाइं जो तु सहू होंतओ पमादेति। अण्णे आणेंतेत्ती घेत्तूणं जं वतं केई ॥१९१०॥ सेसाण पालणट्ठा तो तं उम्मंडलिं करेंती उ। जइ आउट्टति जुज्जति ताहे मेलिज्जइ पुणोऽवि ॥ १ ॥ अह पुण चोइज्जंतो बहुसो णाउट्टए उ तं दोसं। सति लाभलद्धिजुत्तो निज्जूहंती उ तं ताहे ॥२॥ अह मंदलाभलद्धी ण य जोगं जुज्जती अहत्थामं। सो हि खरंटेऊणं मेलिज्जइ मंडलीए उ ॥३॥ किं कारण णिज्जूहणा? जं साहूणं गुणुत्त-रधराणं। ण करेई वच्छल्लं तेण उ णिज्जूहणा तस्स ॥४॥ एवं आयरिएण उ जोगो सव्वस्स चेव गच्छस्स। वोढव्वो दिट्ठंतो गएण इत्थं इमो होइ ॥५॥ जह गयकुलसंभूओ गिरिकंदरविसमकडगदुग्गेसु। परिवहति अपरितंतो णियग-सरीरुग्गते दंते ॥ल० १३८ ॥६॥ तह पवयणभत्तिगओ साहम्मियवच्छलो असढभावो। परिवहति अपरितंतो खित्तविसमकालदुग्गेसु ॥ल० १३९ ॥७॥ जइ एकभाणजिमिता गिहिणोऽविय दीहमेत्तिया होंति। जिणवयणबहि-ब्भूता धम्मं पुन्नं अयाणंता ॥ल० १४० ॥८॥ किं पुण जगजीवसुहावहेण संभुंजिऊण समणेणं। सक्को हु(न)एक्कमेक्को नियओविव रक्खिउं देहो? ॥ल० १४१॥९॥ केरिसयं संभुंजे केरिसयं वावि ऊ ण संभुंजे? । भण्णइ उग्गमसुद्धं भुंजे असुद्धं ण भुंजेज्जा ॥ १९२० ॥ चोदेआहारादी उग्गममादी असुद्ध मा भुंजे। जं पुण अपेहणादीकालादीहिं उवहयं तु ॥१॥ तं पुण सुद्धोवहिणा मा समयं एकहिं तु वंधेज्जा। संघासेणं तस्स उ उवघाओ मा हु सुद्धस्स?॥ २॥ भच्चति सुद्धस्स जती संघासेणं तु होइ उवघातो। सुद्धेण असुद्धेण(द्धस्सा)ऽवि पावइ सुद्धी तव मएणं ॥ ३ ॥ अह उवघातोत्ति मतं संफासेण उ मता विसोही ते। णणु ते इच्छामेत्तं न य इच्छामित्तओ सिद्धी ॥ ४ ॥ उवघातो विसोही वा णत्थि य जीवस्सभावओ एसो। उवघातो विसोही वा परिणामवसेण जीवस्स ॥५॥ तस्सेव पसत्थस्स उ परिणामस्स अह रक्खणट्ठाए। कीरइ संभोगविही गच्छपसत्तीइ मा गच्छे ॥६॥ संभोगकप्पदारं एवं खलु वण्णियं मए एवं। आलोयणकप्पविहिं एत्तो वोच्छं समासेणं ॥ ७ ॥ दुविहपडिसेवणाए दोट्ठाण दुयागताण ठाणाणं। जस्सेव उ अभिमुहओ आलोएज्जा नदट्ठाए ∴ १२७॥८॥ दप्पिया कप्पिया चेव. दुविहा पडिसेवणा। दप्पियाए उ दोट्ठाणा, मूले तह उत्तरे चेव ॥ ९ ॥ कप्पियाएवि एमेव, दो ठाणा उ वियाहिया। जयणा अजयणा चेव, एक्केका य वियाहिया ॥१९३०॥ जस्सेव अभिमुहोत्ती जं चेव य काउ विहरते पुरतो। आयरियउवज्झाया तस्सेव उ तं तु आलोए ॥ १ ॥ अहवा जं जह सेवित मूलगुणे चेव उत्तरगुणे य। पाणतिवातादीसु य वएसु तं तं तहाऽऽलोए ॥ २ ॥ अहवा मोक्खाभिमुहो मोक्खट्ठाए उ अट्ठकम्माणं। अणलोइए ण मुंचति कम्हा? इणमो निसामेहि ॥ ३ ॥ जइविय तव-गुणजुत्तो होइ मणुस्सो अणुद्धरियसल्लो। ण करेति दुक्खमोक्खं सल्लुद्धरणे पतितियव्वं ॥ ४ ॥ तं पुण केरिसगस्स उ वियडेयव्वं तु? जाणतो जो तु। अविजाणते ण कप्पति अजाणतो जो अगीयत्थो ॥ ५ ॥ पायच्छित्तमयाणंतो, ठाणे ठाणे अहाविहिं। आलोयणाए उवसंपयाए ण हु होति पाउग्गो ॥ ६ ॥ किं कारणं? ण याणति सोहिं साहुस्स सोहिकामस्स। ठाणे ठाणे पुढवादिएसु मूलुत्तरे वावि ॥ ७॥ पाणतिवातादीसु य कारण णिक्कारणे य जयणाए। आलो-यणगुणदोसदरिसणेणं हु पाउग्गो ॥ ८ ॥ गुण अणिगूहियमादी दोसा पुण गूहणादिया होंति। एतें याणे अगीतो तम्हा उ इमस्स णालोए ॥ ९ ॥ पायच्छित्तं वियाणंतो, ठाणे ठाणे अहाविहिं। आलोयणाए उवसंपयाए सो होइ पाउग्गो ॥ १९४० ॥ पडिसेवणऽतियारे दुविहे काले पवंधवोच्छेदे। एक्केक छक्कएणं आलोयण मा पडिच्छाहि ॥ ∴ १२८॥१॥ पडिसेवणाऽतियारा दुविहा मूलगुण उत्तरगुणे य। पडिसेवणकालोऽवियि दुविहो उउबद्ध वासे य ॥ २ ॥ अद्धोच्छिन्न पवंधं तविवरीयं तु होइ वोच्छिन्नं। वयछक्कायछक्काकप्पादी छक्कमेक्केक्कं ॥ ३ ॥ अकप्पादिछक्कमिणं अकप्प गिहिभायणं च पलियंको। तत्तो य गिहिणिसिज्जा होइ सिणाणं च सोभा य ॥ ४ ॥ एतेसि छक्कगाणं एक्के-क्कं जं तु होइ आवण्णो। तं तं आलोएँ तहा पच्छित्ते यावि आयरिओ ॥ ५ ॥ आलोयणववहारो संवासिपवासिया ऊ अवराहा। संवासिया उ गच्छे पवासिता कारणगतस्स ॥६॥ अहवा जा अणवट्ठो ता संवासी तु होंति अवराहा। पारंची य पवासी पवसति गच्छाओ जेणं तु ॥ ७॥ पंचविहो सज्झाओ दाणग्गहणम्मि भइओ संवासे। पावासिए ण दिज्जति ण य गहणं होइ कायव्वं ॥८॥ आवन्नगपरिहरिए अणवट्टे चेव दोण्हऽवेतेसिं। णवि दिज्जति णवि घेप्पति सेसाणं दाण गहणं च ॥ ९ ॥ आलोयणाएँ कप्पो एसो भणिओ मए समासेणं। उवसंपयाएँ कप्पं एत्तो उ समासओ वोच्छं ॥१९५०॥ दुविहम्मि आगमम्मि उ परूवणा चेव आयरणया य। पण्णवणगहणअणुपालणाएँ उवसंपया होइ ॥ १ ॥ आगमहेउं उवसंपदा उ स य आगमो भवे दुविहो। सुत्तं अत्थो य तहा पारगए तत्थ उवसंपा ॥ २ ॥ दो आयरिया पारग कत्थ उ उवसंपदा तहिं कुज्जा?। जो णिउणतरं भासति अह निउणं दोवि भासंति ॥ ३ ॥ सामा-यारी पडिलेहणादि जो तत्थ आयरावेति। दोसुवि समुज्जतेसू जो तहियं धम्मकहिओ उ ॥ ४ ॥ तावि य हु सिक्खियवा सज्झायस्सेव जेण तं अंगं। दोसुवि धम्मकहीसु जो तहियं गाहगो होइ ॥५॥ गाहणसत्तिजुतेसुं दोसु अवी कत्थ होति उवसंपा?। अतरंतअसहुवग्गं विसेसओ जो उ पालेति ॥ ६ ॥ एतेसु विसिट्ठतरो अण्णाहिंतोऽरिहाइ उवसंपे। इतरो होइ अजोग्गो जइविय सो होइ गीयत्थो ॥ ७ ॥ जो उ असंविग्गं पुण पण्णवणाकोविदोत्तिकाऊणं। उवसंपज्जइ बालो तस्स इमे होंति दोसा उ ॥ ८ ॥ सीहमुहं वग्घमुहं उयहिं व पलित्तगं व जो पविसे। असिवं अवमोयरियं धुवं सि अप्पा परिबत्तो ॥९॥ तह चरणकरणहीणे पासत्थे जो उ पविसते भिक्खु। जयमाणे उ पजहिउं सो

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [१९६०] दीप अनुक्रम [१९६०]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

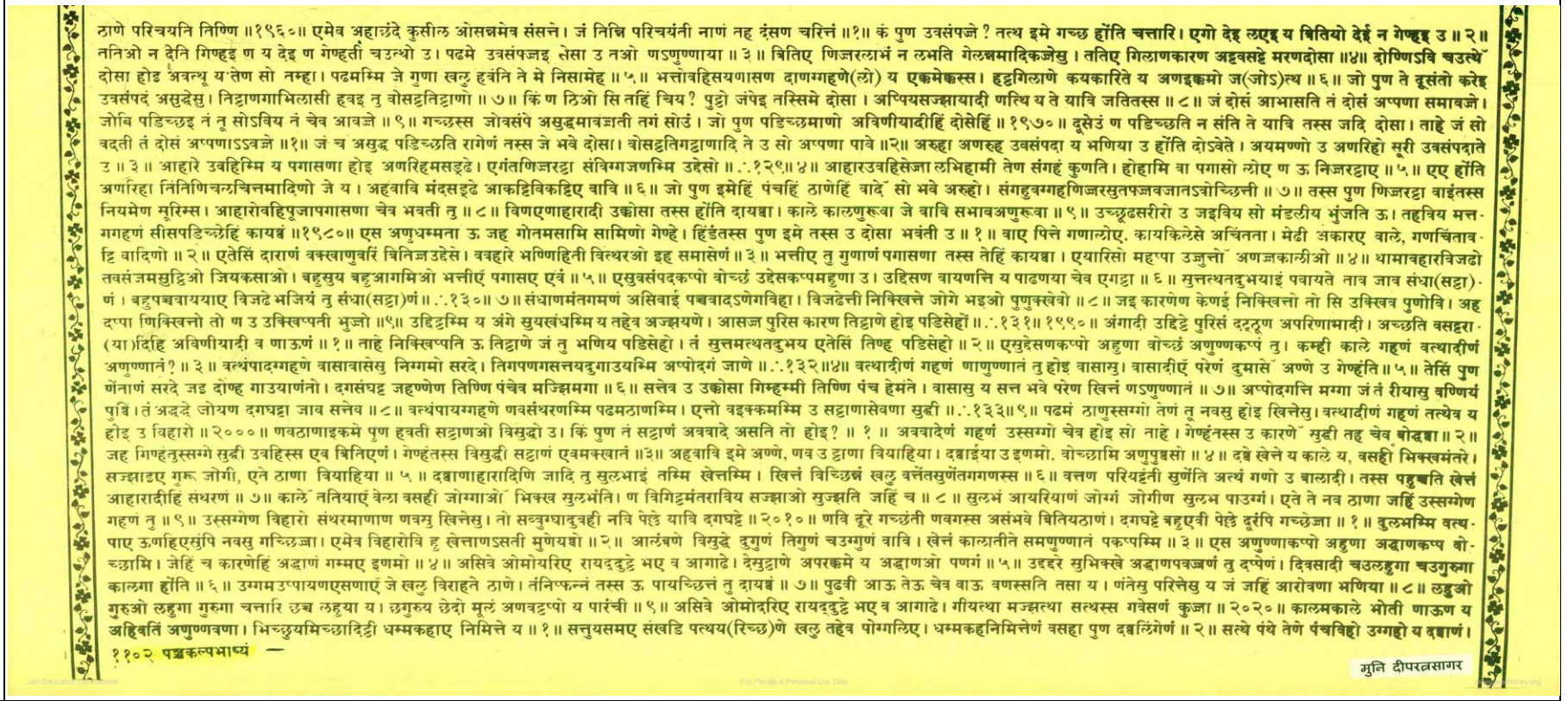

ठाणे परिचयति तिण्णि ॥१९६०॥ एमेव अहाछंदे कुसील ओसन्नमेव संसत्ते। जं तिन्नि परिचयंती नाणं तह दंसण चरित्तं ॥१॥ कं पुण उवसंपज्जे? तत्थ इमे गच्छ होंति चत्तारि। एगो देइ लएइ य वितियो देई न गेण्हइ उ ॥२॥ ततिओ न देति गिण्हइ ण य देइ ण गेण्हती चउत्थो उ। पढमे उवसंपज्जइ सेसा उ तओ णऽणुण्णाया ॥३॥ वितिए णिज्जरलाभं न लभति गेलन्नमादिकज्जेसु। ततिए गिलाणकारण अट्टवसट्टे मरणदोसा ॥४॥ दोण्णिऽवि चउत्थे दोसा होइ अवत्थू य तेण सो तम्हा। पढमम्मि जे गुणा खलु हवंति ते मे निसामेह ॥५॥ भत्तोवहिसयणासण दाणग्गहणे(लो) य एक्कमेक्कस्स। हट्ठगिलाणे कयकारिते य अणइक्कमो ज(जोऽ)त्थ ॥६॥ जो पुण ते दूसंतो करेइ उवसंपदं असुद्धेसु। निट्ठाणगाभिलासी हवइ तु वोसट्ठनिट्ठाणो ॥७॥ किं ण ठिओ सि तहिं चिय? पुट्ठो जंपेइ तस्सिमे दोसा। अप्पियसज्झायादी णत्थि य ते यावि जतितस्स ॥८॥ जं दोसं आभासति तं दोसं अप्पणा समावज्जे। जोवि पडिच्छइ तं तू सोऽवियं तं चेव आवज्जे ॥९॥ गच्छस्स जोवसंपे असुद्धमावज्जती तगं सोउं। जो पुण पडिच्छमाणो अविणीयादीहिं दोसेहिं ॥१९७०॥ दूसेउं ण पडिच्छति न संति ते यावि तस्स जदि दोसा। ताहे जं सो वदती तं दोसं अप्पणाऽऽवज्जे ॥१॥ जं च असुद्ध पडिच्छति रागेणं तस्स जे भवे दोसा। वोसट्ठतिगट्ठाणादि ते उ सो अप्पणा पावे ॥२॥ अरुहा अणरुह उवसंपदा य भणिया उ होंति दोऽवेते। अयमण्णो उ अणरिहो सूरी उवसंपदाते उ ॥३॥ आहारे उवहिम्मि य पगासणा होइ अणरिहमसट्ठे। एगंतणिज्जरट्ठा संविग्गजणम्मि उद्देसो ॥.१२९॥४॥ आहारउवहिसेज्जा लभिहामी तेण संगहं कुणति। होहामि वा पगासो लोए ण ऊ निज्जरट्ठाए ॥५॥ एए होंति अणरिहा तिंतिणिचलचित्तमादिणो जे य। अहवावि मंदसट्ठे आकट्टिविकट्टिए वावि ॥६॥ जो पुण इमेहिं पंचहिं ठाणेहिं वादें सो भवे अरुहो। संगहुवग्गहणिज्जरसुतपज्जवजातऽवोच्छित्ती ॥७॥ तस्स पुण णिज्जरट्ठा वाइंतस्स नियमेण सूरिम्स। आहारोवहिपूजापगासणा चेव भवती तु ॥८॥ विणएणाहारादी उक्कोसा तस्स होंति दायव्वा। काले कालणुरूवा जे वावि सभावअणुरूवा ॥९॥ उच्छूढसरीरो उ जइविय सो मंडलीय भुंजति ऊ। तहविय मत्त-गगहणं सीसपडिच्छेहिं कायव्वं ॥१९८०॥ एस अणुधम्मता ऊ जह गोतमसामि सामिणो गेण्हे। हिंडंतस्स पुण इमे तस्स उ दोसा भवंती उ ॥१॥ वाए पित्ते गणाल्लोए, कायकिलेसे अचिंतना। मेढी अकारए बाले, गणचिंताव-ट्टि वादिणो ॥२॥ एतेसिं दाराणं वक्खाणुवरिं वितिज्ज उद्देसे। ववहारे भण्णिहिती वित्थरओ इह समासेणं ॥३॥ भत्तीए तु गुणाणं पगासणा तस्स तेहिं कायव्वा। एयारिसो महप्पा उज्जुत्तो अणज्जकालीओ ॥४॥ थामावहारविजढो तवसंजमसुट्ठिओ जियकसाओ। बहुसुय बहुआगमिओ भत्तीएं पगासए एवं ॥५॥ एसुवसंपदकप्पो वोच्छं उद्देसकप्पमहूणा उ। उद्दिसण वायणत्ति य पाढणया चेव एगट्ठा ॥६॥ सुत्तत्थतदुभयाइं पवायते ताव जाव संघा(सट्टा)-णं। बहुपच्चवायएाए विजढे भजियं तु संघा(सट्टा)णं॥.१३०॥७॥ संघाणमंतगमणं असिवाई पच्चवादऽणेगविहा। विजढेत्ती निक्खित्ते जोगे भइओ पुणुक्खेवो ॥८॥ जइ कारणेण केणई निक्खित्तो तो सि उक्खिव पुणोवि। अह दप्पा णिक्खित्तो तो ण उ उक्खिप्पती भुज्जो ॥९॥ उद्दिट्ठम्मि य अंगे सुयखंधम्मि य तहेव अज्झयणे। आसज्ज पुरिस कारण तिट्ठाणे होइ पडिसेहो॥.१३१॥ १९९०॥ अंगादी उद्दिट्ठे पुरिसं दट्ठूण अपरिणामादी। अच्छति वसट्टरा-(या)दिहि अविणीयादी व णाऊणं ॥१॥ ताहे निक्खिप्पति ऊ तिट्ठाणे जं तु भणिय पडिसेहो। तं सुत्तमत्थतदुभय एतेसिं तिण्ह पडिसेहो ॥२॥ एसुद्देसणकप्पो अहुणा वोच्छं अणुण्णकप्पं तु। कम्ही काले गहणं वत्थादीणं अणुण्णातं? ॥३॥ वत्थंपादग्गहणे वासावासेसु निग्गमो सरदे। तिगपणगसत्तयदुगाउयम्मि अप्पोदगं जाणे ॥.१३२॥४॥ वत्थादीणं गहणं णाणुण्णातं तु होइ वासासु। वासादीएं परेणं दुमासें अण्णे उ गेण्हंति ॥५॥ तेसिं पुण णेंताणं सरदे जइ दोण्ह गाउयाणंतो। दगसंघट्ट जहण्णेण तिण्णि पंचेव मज्झिमगा ॥६॥ सत्तेव उ उक्कोसा गिम्हम्मी तिण्णि पंच हेमंते। वासासु य सत्त भवे परेण खित्तं णऽणुण्णातं ॥७॥ अप्पोदगत्ति मग्गा जं तं रीयासु वण्णियं पुव्वि। तं अद्धद्धे जोयण दगघट्टा जाव सत्तेव ॥८॥ वत्थंपायग्गहणे णवसंथरणम्मि पढमठाणम्मि। एत्तो वइक्कमम्मि उ सट्ठाणासेवणा सुद्धी ॥.१३३॥९॥ पढमं ठाणुस्सग्गो तेणं तु नवसु होइ खित्तेसु। वत्थादीणं गहणं तत्थेव य होइ उ विहारो ॥२०००॥ णवठाणाइक्कमे पुण हवती सट्ठाणओ विसुद्धो उ। किं पुण तं सट्ठाणं अववादे असति तो होइ? ॥१॥ अववादेणं गहणं उस्सग्गो चेव होइ सो ताहे। गेण्हंतस्स उ कारणें सुद्धी तह चेव बोद्धव्वा ॥२॥ जह गिण्हंतुस्सग्गे सुद्धी उवहिस्स एव विनिएएणं। गेण्हंतस्स विसुद्धी सट्ठाणं एवमक्खातं ॥३॥ अहवावि इमे अण्णे, णव उ ट्ठाणा वियाहिया। दव्वाईया उ इणमो, वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥४॥ दव्वे खेत्ते य काले य, वसहीं भिक्खमंतरे। सज्झाइए गुरू जोगी, एते ठाणा वियाहिया ॥५॥ दव्वाणाहारादिणि जादि तु सुलभाइं तम्मि खेत्तम्मि। खित्तं विच्छिन्नं खलु वत्तेंतसुणेंतगगणस्स ॥६॥ वत्तण परियट्टनी सुणेंति अत्थं गणो उ बालादी। तस्स पहुच्चति खेत्तं आहारादीहिं संथरणं ॥७॥ काले ततियाएं वेला वसहीं जोग्गाओं भिक्ख सुलभंति। ण विगिट्ठमंतरावि य सज्झाओ सुज्झति जहिं च ॥८॥ सुलभं आयरियाणं जोग्गं जोगीण सुलभ पाउग्गं। एते ते नव ठाणा जहिं उस्सग्गेण गहणं तु ॥९॥ उस्सग्गेण विहारो संथरमाणाण णवसु खित्तेसु। तो सव्वुग्घादुवही नवि पेल्हे यावि दगघट्टे ॥२०१०॥ णवि दूरे गच्छंती णवगस्स असंभवे वितियठाणं। दगघट्टे बहुएवी पेल्हे दूरंपि गच्छेज्जा ॥१॥ दुलभम्मि वत्थ-पाए ऊणहिएसुंपि नवसु गच्छिज्जा। एमेव विहारोवि हु खेत्ताणऽसती मुणेयव्वो ॥२॥ आलंबणे विसुद्धे दुगुणं तिगुणं चउग्गुणं वावि। खेत्तं कालातीते समणुण्णातं पकप्पम्मि ॥३॥ एस अणुण्णाकप्पो अहुणा अद्धाणकप्प वो-च्छामि। जेहिं च कारणेहिं अद्धाणं गम्मए इणमो ॥४॥ असिवे ओमोयरिए रायदुट्ठे भए व आगाढे। देसुट्ठाणे अपरक्कमे य अद्धाणओ पणगं ॥५॥ उद्दद्दरे सुभिक्खे अद्धाणपवज्जणं तु दप्पेणं। दिवसादी चउलहुगा चउगुरुगा कालगा होंति ॥६॥ उग्गमउप्पायणएसणाएं जे खलु विराहते ठाणे। तंनिप्फन्नं तस्स ऊ पायच्छित्तं तु दायव्वं ॥७॥ पुढवी आऊ तेऊ चेव वाऊ वणस्सति तसा य। णंतेसु परित्तेसु य जं जहिं आरोवणा भणिया ॥८॥ लहुओ गुरुओ लहुगा गुरुगा चत्तारि छच्च लहुया य। छगुरुय छेदो मूलं अणवट्ठप्पो य पारंची ॥९॥ असिवे ओमोदरिए रायदुट्ठे भए व आगाढे। गीयत्था मज्झत्था सत्थस्स गवेसणं कुज्जा ॥२०२०॥ कालमकाले भोती णाऊण य अहिवतिं अणुण्णवणा। भिच्छुयमिच्छादिट्ठी धम्मकहाए निमित्ते य ॥१॥ सत्तुयसमए संखडि पत्थय(रिच्छ)णे खलु तहेव पोग्गलिए। धम्मकहनिमित्तेणं वसहा पुण दव्वलिंगेणं ॥२॥ सत्थे पंथे तेणे पंचविहो उग्गहो य दव्वाणं।

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [२०२३]

दीप अनुक्रम [२०२३]

सुत्तग्गामे दव्वग्गहणं जयणाए गीयत्था ॥ ३ ॥ तुवरे फले य पत्ते गोमहिसे सूयरा य हत्थी य । आतवमणायवे चिय जयणाए जाणगे गहणं ॥ ४ ॥ पिप्पलगसूतियारिगणक्खच्चणतलियपुडगवज्झे य । कत्तियकत्तरिसिक्कग संवट्टग लाउए चेव ॥ ५ ॥ वाइयपेत्तियसिंभियगुलिगाणं अगदसत्थकोसे य । जं चऽण्णवगहकरगं गिण्हह अद्धाणकप्पम्मि ॥ ६ ॥ सीहाणुगा य पुरतो वसभाणू मग्गतो समण्णिति । पंथे तंपिय जंता धरेंति जा अद्धपज्जत्ती ॥ ७ ॥ दंडियमिच्छदिट्ठी समुदाणनिवारणं च निब्विसए । सारूविसन्निभद्दग वसभा पुण दव्वलिंगेणं ॥ ८ ॥ उवकरणचरित्ताणं विलोवणा सरीरलोयऽणागाढे । धम्मकहनिमित्तेणं पुलागकज्जेण आगाढे ॥ ९ ॥ असिवादिकारणेहिं अद्धाणपवज्जणं अणुण्णातं । उवकरणपुव्वपडिलेहिएण सत्थेण गंतव्वं ॥२०२०॥ वच्चंताणं असहू कोई ण तरिज्ज गंतु पादेहिं । अपरक्कमो हु ताहे तवियं तु इमे विमग्गेज्जा ॥१॥ एगक्खुरे य दुखुरे दुपए अणुबंधे तह य अणुरंगा । अह भद्दएऽभिजायति असती अणुसट्ठिमादीहिं ॥.१३४॥२॥ एगखुरा आसाती दुखुरा उट्टादि दुपय जड्डादी । अणुबंधी सकडादी अणुरंग पिसी उ(सिविय) बोद्धव्वा ॥ ३ ॥ एतेसिं पुव्ववट्ट खुरादि जाइत्तु सिद्धपुत्तादी । असतीय खुड्डतो वा लिंगविवेगेण कड्ढति तु ॥ ४ ॥ आवासियम्मि सत्थे तस्सेव तगंपि अप्पिणंति पुणो । अह भणइ गता संता अप्पेज्जाहत्ति मम एयं ॥ ५ ॥ ताहे पच्छकडादी चारेती तेसि असइ उ खुड्डो । लिंगविवेगं काउं चारेंति जा गतट्ठाणं ॥ ६ ॥ एवं दुखुरादीसुवि जयणा जा जत्थ सा उ कायव्वा । सुत्तत्थजाणएणं अप्पाबहुयं तु णायव्वं ॥ ७ ॥ एतेसामन्नतरं अणगाढालंबणे णिसेविज्जा । तट्ठाणगावराहे संवट्टियमोऽवराहाणं ॥ ८ ॥ संवट्टियावराहे तवो व छेदो तहेव मूलं वा । आयारपकप्पे जं पमाण णिम्माण चरिमम्मि ॥ ९ ॥ अद्धाणकप्पो एसो अहुणा अणुवासणाए कप्पं तु । वोच्छामि गुरुवएसा अणुग्गहट्ठा सुविहियाणं ॥२०४०॥ अणुवासम्मि उ कप्पे पण्णवग पडुच्च बहुविहा अत्था । अणुवासियाएं पगयं सुद्धा य तहा असुद्धा य ॥ १ ॥ अणुवासत्थो बहुहा उडुवासे वसण अहव असिवादी । वुड्ढादीवासो वा अहवा अणुवसणमणुवासो ॥ २ ॥ वसिउं पुणोवि वसती अणुवासिग वसहि सामइगी सन्ना । तीयहिगारो एत्थं सा हुज्जा सुद्धऽसुद्धा वा ॥ ३ ॥ पट्टीवंसादीहिं वंसगकडणादिएहिं तह चेव । होइ असुद्धा वसही मूलगुणे उत्तरगुणे य ॥ ४ ॥ कालदुयातिरित्तं अविसुद्धासुं च तासु वसमाणो । पावति पायच्छित्तं मोत्तूणं कारणमिमेहिं ॥ ५ ॥ असिवे ओमोयरिए रायदुट्ठे भए व आगाढे । गेलन्ने उत्तिमट्ठे चरित्त सज्जातिते असती ॥ ६ ॥ बाहिं सव्वत्थऽसिवं तत्थ सिवं तेण कालदुयगम्मि । पुण्णेवि ण णिग्गच्छे अणु पच्छाभाव अणुवासी ॥ ७ ॥ आलंबणे विसुद्धे सुत्तदुयं परिहरे पयत्तेणं । आसज्ज उ परिभोगं भयणा पडिसेवसंकमणे ॥.१३५॥८॥ असिवादीहिं वसंते सुद्धाए वसहीएं वसे साहू । सुद्धासतीए जतती विसोहिकोडीएं पुव्वं तु ॥९॥ भयणत्तिय जं भणितं पुव्वऽप्पतराऽत्थ जे उ जे दोसा । ते ते पुव्वं सेवे संकमणेऽवी इमा भयणा ॥ २०५० ॥ अप्पाबहुं तुलेतुं जत्थ गुणा तू भविज्ज बहुतरगा । गच्छे गच्छंताण व तं चेव तहिं करेज्जा उ ॥ १ ॥ असिवादिणिट्ठिए पुण अव(पुव्वऽ)क्खेवेण संकमे तत्तो । सत्थं तु पडिच्छंतो जइ अच्छे तत्थ सुद्धो उ ॥ २ ॥ एतन्नतरविहूणं अणुवासिय जे उ अणुवसे कप्पं । कालदुयावराहे संवट्टयमोवराहाणं ॥ ३ ॥ संवट्टियावराहे तवो व छेदो तहेव मूलं वा । आयारपकप्पे जं पमाण णिम्माण चरिमम्मि ॥ ४ ॥ अणुवासियाए कप्पो एमेसो वण्णिओ समासेणं । ठिइकप्पमो उ तत्तो वोच्छामि गुरूवएसेणं ॥ ५ ॥ गच्छाणुकंपयाए सुत्तत्थविसारए य आयरिए । आगाढे पढमसंजत ओवग्गहिए पकप्पदुए ॥ ६ ॥ गच्छो जदि हीरेज्जा आयरियं वावि वायते कोई । एरिसए आगाढे जस्स उ जा होइ लद्धी उ ॥ ७ ॥ सो तं न पमाएई पढमनियंठो पुलागलद्धीओ । गच्छोवग्गहहेउं कारण पकप्पट्ठिअऽणुण्णा ॥ ८ ॥ दुपएत्ति साहुसाहुणि तदट्ठहेतुं तु एव मूलगुणे । भणिया सेवा एसा सीसो पुच्छइ उ अह इणमो ॥ ९ ॥ जह कारणम्मि भणिया मूलगुणेसुं तु एव पडिसेवा । तह होज्ज कारणम्मी पडिसेवा उतरगुणेवि ? ॥२०६०॥ गुरुयतरएसु एवं मूलगुणेसुं तु जइ भवेऽणुण्णा । उत्तरगुणेसु तत्तो लहुयतरेसुं ततोऽणुण्णा ॥ १ ॥ ठितकप्पेसो भणिओ अहुणा वोच्छामि अट्ठितं कप्पं । संखेवपिंडितत्थं जह भणियमणंतनाणीहिं ॥ २ ॥ वत्थे पादग्गहणे उक्कोसजहण्णगम्मि अठिओ उ । ठितमट्ठिते विसेसो परूवितो संपकप्पम्मि ॥ ३ ॥ वत्थाणि य पायाणि य मज्झिमतित्थंकराण कप्पम्मि । बहुमोल्लाणिवि गिण्हइ अट्ठियकप्पो समक्खाओ ॥ ४ ॥ मोल्लगरुयंपि वत्थं अट्ठारसपणितरूवग जहण्णं । एत्तो य सयसहस्सं उक्कसमोल्लं तु णायव्वं ॥ ५ ॥ ऊणगअट्ठारसगं वत्थं पुण साहुणो अणुण्णातं । एत्तो वट्टरित्तं पुण णाणुण्णातं भवे वत्थं ॥.१४२॥ ६ ॥ जिणथेराणं कप्पं अहुणा वोच्छामि आणुपुव्वीए । जं जत्थ जहा निवयति समासतो तं तहा सुणसु ॥ ७ ॥ जिणथेराणं कप्पो जम्हा उ ठितम्मि अट्ठिए चेव । ठितअट्ठितकप्पाणं जम्हा अंतग्गता एते ॥८॥ जो उ विसेसो एत्थं तं तु समासेण णवरि वक्खामि । जिणथेराणं कप्पे जिणकप्पे ता इमं वोच्छं ॥९॥ दुयसत्तए तियचउक्कगस्स अद्धद्धएगछेदेणं । अवि होज्ज कालकरणं पुणरावत्ती णविय तेसिं ॥.१३६। २०७०॥ पिंडेसणा उ सत्त उ हवंति पाणेसणा दुसत्तेए । चउ सेज्जवत्थपाए तिण्णेते चउक्का होंति ॥ १ ॥ दोण्णादिमा उ सत्तसु अवणेउं सेस उवरिमा पंच । अद्धद्ध होंति छेदे दो दो अवणे चउक्केसु ॥ २ ॥ गेण्हंति उवरिमासु तत्थ अवि घेत्तु अण्णतरियाए । हेट्ठिल्लासु ण गेण्हति जइवि करे कालकिरियं तु ॥ ३ ॥ अणभिग्गहेण णवि ता गेण्हेति विही उ एस जिणकप्पे । अहुणा उ थेरकप्पे वोच्छामि विहिं समासेणं ॥ ४ ॥ गहणे चउव्विहम्मि वितिए गहणं तु परमजत्तेणं । जं पाणबीयरहितं हविज्ज तरमाणए सोही ॥.१३७॥ ५ ॥ गहणं चउव्विहंती वत्थं पायं च सेज्ज आहारो । एतेसिं असतीए गहणं पढमं तु बीयस्स ॥ ६ ॥ वितियं पातं भन्नति किं कारण तस्स गहण पढमं तु ? । तेण विण बोडिपडिमा गिहिभायणभोगो हाणी य ॥ ७ ॥ अहवा चउव्विहं तू असणादी तत्थ होज्ज गहणं तु । तत्थ उ वितियं पाणं तस्स उ गहणं पढमताए ॥ ल० १४३ ॥ ८ ॥ असतीय फासुयस्सा तससहिए कंदबीयसहिए वा । किं कारण ? तेण विणा आसुं पाणक्खओ होज्जा ॥ ल० १४४ ॥ ९ ॥ तरमाणो गेण्हती सुद्धं, अतरो पेल्ले तह संथरे । संथरंतो उ गेण्हंतो, पावति सट्ठाणपच्छित्तं ॥ २०८० ॥ सत्तदुए दसए वा अणेगठाणेण वा भवे गहणं । एत्तो तिगातिरित्तं गच्छे गहणं तु भइयव्वं ॥ १ ॥ पिंडेसण पाणेसण सत्तदुगे तं तु होइ णायव्वं । दसगं एसणदोसा णेगट्ठा(हा)णुग्गमे दोसा ॥ २ ॥ एत्तो तिगातिरित्तं उग्गमउप्पायणेसणाऽसुद्धं । भजियंति कप्पतित्ती तस्सऽसतीए असुद्धंपि ॥ ३ ॥ एसो उ थेरकप्पो वोच्छं अणुपालणाए कप्पं तु । अणुपालेंति सुविहिया गच्छं विहिणा उ जेणं तु ॥ ४ ॥ परियट्टी परियट्टंतओ य दुविहो पुणोवि एक्केक्को । उवसग्गखेत्तकालावसेण अज्जाण परिवट्टी ॥.१३८॥५॥ परियट्टियव्वयं खलु परियट्टी चेव

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [२०८६] दीप अनुक्रम [२०८६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

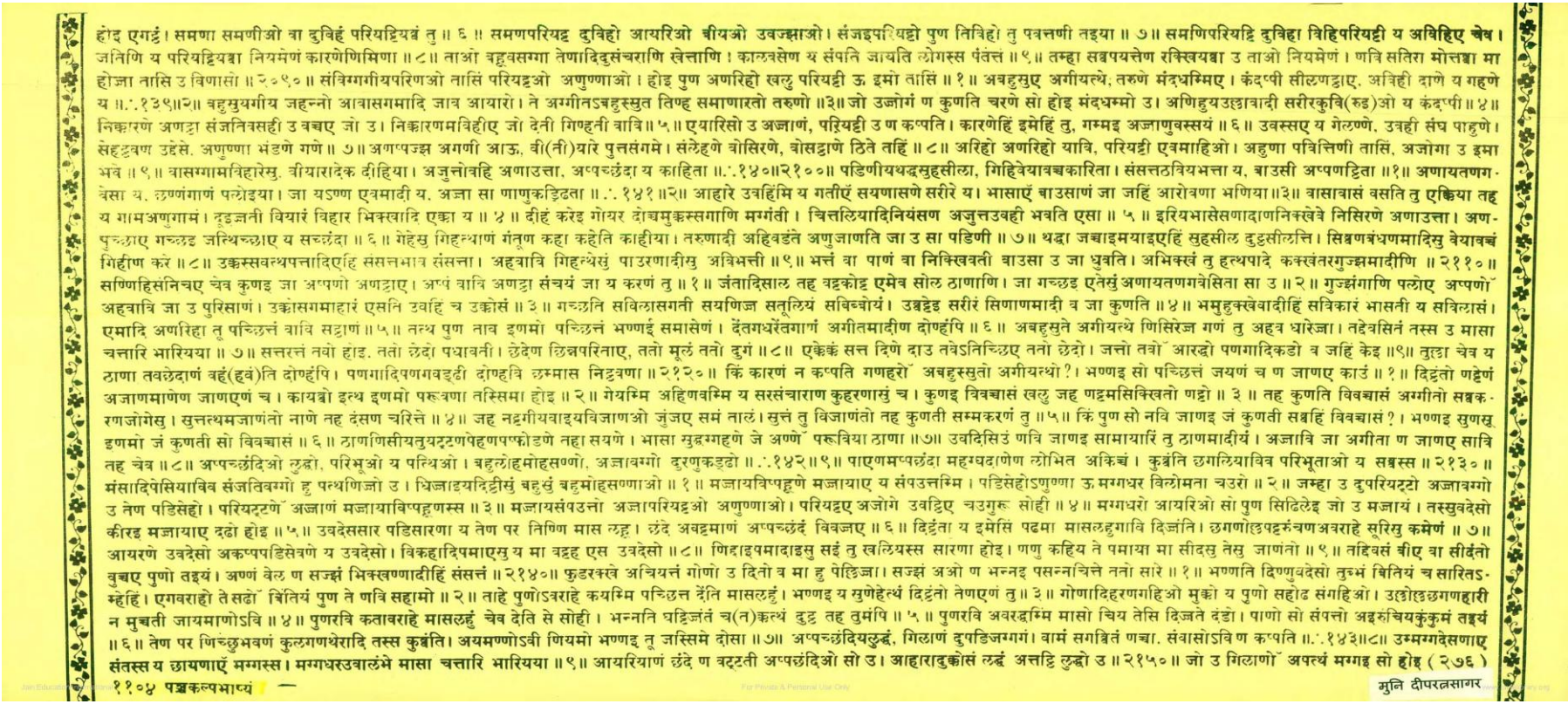

होंद एगट्ठं। समणा समणीओ वा दुविहं परियट्टियवं तु ॥ ६ ॥ समणपरियट्ट दुविहो आयरिओ वीयओ उवज्झाओ। संजइपरियट्टो पुण तिविहो तु पवत्तणी तइया ॥ ७॥ समणिपरियट्टि दुविहा विहिपरियट्टी य अविहिए चेव। जतिणि य परियट्टियवा नियमेणं कारणेणिमिणा ॥८॥ ताओ बहुवसग्गा तेणादिदुसंचराणि खेत्ताणि। कालवसेण य संपति जायति लोगस्स पंतत्तं ॥९॥ तम्हा सव्वपयत्तेण रक्खियवा उ ताओ नियमेणं। णवि सतिरा मोत्तवा मा होज्जा तासि उ विणासो ॥ २०९० ॥ संविग्गगीयपरिणओ तासिं परियट्टओ अणुण्णाओ। होइ पुण अणरिहो खलु परियट्टी ऊ इमो तासिं ॥ १ ॥ अबहुसुए अगीयत्थे, तरुणे मंदधम्मिए। कंदप्पी सीलणट्ठाए, अविही दाणे य गहणे य ॥.'.१३९॥२॥ बहुसुयगीय जहन्नो आवासगमादि जाव आयारो। ते अग्गीतऽबहुस्सुत तिण्ह समाणारतो तरुणो ॥३॥ जो उज्जोगं ण कुणति चरणे सो होइ मंदधम्मो उ। अणिहुयउल्लावादी सरीरकुवि(रुड)ओ य कंदप्पी ॥ ४ ॥ निक्कारणे अणट्ठा संजतिवसही उ वचए जो उ। निक्कारणमविहीए जो देती गिण्हती वावि ॥ ५ ॥ एयारिसो उ अज्जाणं, परियट्टी उ ण कप्पति। कारणेहिं इमेहिं तु, गम्मइ अज्जाणुवस्सयं ॥ ६ ॥ उवस्सए य गेलण्णे, उवही संघ पाहुणे। सेहट्ठवण उद्देसे, अणुण्णा भंडणे गणे ॥ ७ ॥ अणप्पज्झ अगणी आऊ, वी(नी)यारे पुत्तसंगमे। संलेहणे वोसिरणे, वोसट्ठाणे ठिते तहिं ॥ ८ ॥ अरिहो अणरिहो यावि, परियट्टी एवमाहिओ। अहुणा पवित्तिणी तासिं, अजोगा उ इमा भवे ॥ ९ ॥ वासग्गामविहारेसु, वीयारादेक दीहिया। अजुत्तोवहि अणाउत्ता, अप्पच्छंदा य काहिता ॥.'.१४०॥२१००॥ पडिणीयथद्धसुहसीला, गिहिवेयावच्चकारिता। संसत्तठवियभत्ता य, वाउसी अप्पणट्ठिता ॥१॥ अणायतणग-वेसा य, छण्णंगाणं पल्लोइया। जा यऽण्ण एवमादी य, अज्जा सा णाणुकड्ढिता ॥.'.१४१॥२॥ आहारे उवहिंमि य गतीएँ सयणासणे सरीरे य। भासाएँ वाउसाणं जा जहिं आरोवणा भणिया ॥३॥ वासावासं वसति तु एक्किया तह य गामअणुगामं। दूइज्जती वियारं विहार भिक्खादि एक्का य ॥ ४ ॥ दीहं करेइ गोयर दोच्चमुक्कस्सगाणि मग्गंती। चित्तलियादिनियंसण अजुत्तउवही भवति एसा ॥ ५ ॥ इरियभासेसणादाणनिक्खेवे निसिरणे अणाउत्ता। अण-पुच्छाए गच्छइ जत्थिच्छाए य सच्छंदा ॥ ६ ॥ गेहेसु गिहत्थाणं गंतूण कहा कहेति काहीया। तरुणादी अहिवडंते अणुजाणति जा उ सा पडिणी ॥ ७ ॥ थद्धा जच्चाइमयाइएहिं सुहसील दुट्ठसीलत्ति। सिढणवंधणमादिसु वेयावच्चं गिहीण करे ॥ ८ ॥ उक्कस्सवत्थपत्तादिएहिं संसत्तभाव संसत्ता। अहवावि गिहत्थेसुं पाउरणादीसु अविभत्ती ॥ ९ ॥ भत्तं वा पाणं वा निक्खिवती वाउसा उ जा धुवति। अभिक्खं तु हत्थपादे कक्खंतरगुज्झमादीणि ॥ २११० ॥ सण्णिहिसंनिचए चेव कुणइ जा अप्पणो अणट्ठाए। अप्पं वावि अणट्ठा संचयं जा य करणं तु ॥ १ ॥ जंतादिसाल तह वट्टकोट्ट एमेव सोल ठाणाणि। जा गच्छइ एतेसुं अणायतणगवेसिता सा उ ॥ २ ॥ गुज्झंगाणि पल्लोए अप्पणो अहवावि जा उ पुरिसाणं। उक्कोसगमाहारं एसति उवहिं च उक्कोसं ॥ ३ ॥ गच्छति सविलासगती सयणिज्ज सतूलियं सविब्बोयं। उब्बट्टेइ सरीरं सिणाणमादी व जा कुणति ॥ ४ ॥ भमुहुक्खेवादीहिं सविकारं भासती य सविलासं। एमादि अणरिहा तू पच्छित्तं वावि सट्ठाणं ॥ ५ ॥ तत्थ पुण ताव इणमो पच्छित्तं भण्णई समासेणं। देंतगधरेंतगाणं अगीतमादीण दोण्हंपि ॥ ६ ॥ अबहुसुते अगीयत्थे णिसिरेज्ज गणं तु अहव धारेज्जा। तद्देवसिनं तस्स उ मासा चत्तारि भारियया ॥ ७ ॥ सत्तरत्तं तवो होइ, ततो छेदो पधावती। छेदेण छिन्नपरिनाए, ततो मूलं ततो दुगं ॥ ८ ॥ एक्केकं सत्त दिणे दाउ तवेऽतिच्छिए ततो छेदो। जत्तो तवो आरद्धो पणगादिकडो व जहिं केइ ॥ ९ ॥ तुल्ला चेव य ठाणा तवछेदाणं वह(हवं)ति दोण्हंपि। पणगादिपणगवड्ढी दोण्हवि छम्मास निट्ठवणा ॥ २१२० ॥ किं कारणं न कप्पति गणहरो अबहुस्सुतो अगीयत्थो?। भण्णइ सो पच्छित्तं जयणं च ण जाणए काउं ॥ १ ॥ दिट्ठंतो णट्ठेणं अजाणमाणेण जाणएणं च। कायव्वो इत्थ इणमो परूवणा तस्सिमा होइ ॥ २ ॥ गेयम्मि अहिणवम्मि य सरसंचाराण कुहरणासुं च। कुणइ विवच्चासं खलु जह णट्ठमसिक्खितो णट्ठो ॥ ३ ॥ तह कुणति विवच्चासं अग्गीतो सव्वक-रणजोगेसु। सुत्तत्थमजाणंतो नाणे तह दंसण चरित्ते ॥ ४ ॥ जह नट्ठगीयवाइयविजाणओ जुंजए समं तालं। सुत्तं तु विजाणंतो तह कुणती सम्मकरणं तु ॥ ५ ॥ किं पुण सो नवि जाणइ जं कुणती सव्वहिं विवच्चासं?। भण्णइ सुणसु इणमो जं कुणती सो विवच्चासं ॥ ६ ॥ ठाणणिसीयनुयट्टणपेहणपप्फोडणे तहा सयणे। भासा सुद्धग्गहणे जे अण्णे परूविया ठाणा ॥ ७ ॥ उवदिसिउं णवि जाणइ सामायारिं तु ठाणमादीयं। अजावि जा अगीता ण जाणए सावि तह चेव ॥ ८ ॥ अप्पच्छंदिओ लुद्धो, परिभूओ य पत्थिओ। बहुल्लोहमोहसण्णो, अज्जावग्गो दुरणुकड्ढो ॥.'.१४२॥९॥ पाएणमप्पछंदा महग्घदाणेण लोभित अकिच्चं। कुव्वंति छगलियाविव परिभूताओ य सव्वस्स ॥ २१३० ॥ मंसादिपेसियाविव संजतिवग्गो हु पत्थणिज्जो उ। धिज्जाइयदिट्ठीसुं बहुसुं बहुमोहसण्णाओ ॥ १ ॥ मज्जायविप्पहूणे मज्जायाए य संपउत्तम्मि। पडिसेहोऽणुण्णा ऊ मग्गधर विलोमता चउरो ॥ २ ॥ जम्हा उ दुपरियट्टो अज्जावग्गो उ तेण पडिसेहो। परियट्टणे अज्जाणं मज्जायाविप्पहूणस्स ॥ ३ ॥ मज्जायसंपउत्तो अज्जापरियट्टओ अणुण्णाओ। परियट्टए अजोगे उवट्टिए चउगुरू सोही ॥ ४ ॥ मग्गधरो आयरिओ सो पुण सिढिलेइ जो उ मज्जायं। तस्सुवदेसो कीरइ मज्जायाए दढो होइ ॥ ५ ॥ उवदेससार पडिसारणा य तेण पर तिण्णि मास लहू। छंदे अवट्टमाणं अप्पच्छंदं विवज्जए ॥ ६ ॥ दिट्ठंता य इमेसिं पढमा मासलहुगावि दिज्जंति। छगणोल्लपट्टरुंचणअवराहे सूरिसु कमेणं ॥ ७ ॥ आयरणे उवदेसो अकप्पडिसेवणे य उवदेसो। विकहादिपमाएसु य मा वट्टह एस उवदेसो ॥ ८ ॥ णिद्दाइपमादाइसु सई तु खलियस्स सारणा होइ। णणु कहिय ते पमाया मा सीदसु तेसु जाणंतो ॥ ९ ॥ तद्दिवसं वीए वा सीदंतो वुच्चए पुणो तइयं। अण्णं वेलं ण सज्झं भिक्खण्णादीहिं संसत्तं ॥ २१४० ॥ फुडरक्खे अचियत्तं गोणो उ दितो व मा हु पेल्लिज्जा। सज्झं अओ ण भन्नइ पसन्नचित्ते ततो सारे ॥ १ ॥ भण्णति दिण्णुवदेसो तुब्भं विनियं च सारितऽ-म्हेहिं। एगवराहो ते सढो चिंतियं पुण ते णवि सहामो ॥ २ ॥ ताहे पुणोऽवराहे कयम्मि पच्छित्त देंति मासलहुं। भण्णइ य सुणेहेत्थं दिट्ठंतो तेणएणं तु ॥ ३ ॥ गोणादिहरणगहिओ मुक्को य पुणो सहोढ संगहिओ। उल्लोल्लछगणहारी न मुचती जायमाणोऽवि ॥ ४ ॥ पुणरवि कतावराहे मासलहुं चेव देति से सोही। भन्नति घट्टिज्जंतं च(त)कत्थं दुट्ठ तह तुमंपि ॥ ५ ॥ पुणरवि अवरद्धम्मि मासो चिय तेसि दिज्जते दंडो। पाणो सो संपत्तो अइरुचियकुंकुमं तइयं ॥ ६ ॥ तेण पर णिच्छुभवणं कुलगणथेरादि तस्स कुव्वंति। अयमण्णोऽवी णियमो भण्णइ तू जस्सिमे दोसा ॥ ७ ॥ अप्पच्छंदियलुद्धं, गिलाणं दुपडिजग्गगं। वामं सगविरं णच्चा, संवासोऽवि ण कप्पति ॥.'.१४३॥८॥ उम्मग्गदेसणाए संतस्स य छायणाएँ मग्गस्स। मग्गधरउवालंभे मासा चत्तारि भारियया ॥ ९ ॥ आयरियाणं छंदे ण वट्टती अप्पछंदिओ सो उ। आहारादुक्कोसं लद्धं अत्तट्ठि लुद्धो उ ॥ २१५० ॥ जो उ गिलाणो अपत्थं मग्गइ सो होइ (२७६)

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [२१५१] दीप अनुक्रम [२१५१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

दुपडिजग्गो उ। ठाइसु भणिओ वच्चइ वच्चत्ति य ठाइ वामो सो ॥१॥ जच्चादिमादिएहिं करेति गर्व तु परिभवति अन्नं। नाणादीया मग्गो परूवणा अन्नहा तेसिं ॥२॥ नाणादिसु सीदंतो न सुदमग्गं तु जो परूवेति। एसो मग्गच्छादो वड्ढयती दीहसंसारं ॥३॥ एतेसिं तु विवेगो मग्गधरा खलु कुलादिया थेरा। तेहिं उवल्द्धाणं उवट्टियाणं गुरू चउरो (मासा) ॥४॥ बालाणं बुड्ढाणं भिक्खुमाईण चेव सद्धिसिं। संखेवेण महत्थो उवएसो कीरई इणमो ॥५॥ कप्पे सुत्तत्थविसारएण थामावहारविजढेण। भत्तादिलंभऽलंभे सक्कारजढेण होयव्वं ॥.'. १४४॥६॥ कप्पेंति थेरकप्पे सुत्तत्थविसारएण साहूण। सव्वत्थेसु सवलं ण गूहियव्वं समत्थेण ॥७॥ आहारमादिएहिं दट्ठुं धीयारमादि पुज्जंते। साहू अपुज्जमाणे ण एव मणसा विचिंतेज्जा ॥८॥ पूइज्जंती अजया वयं तु सव्वण्णुमग्गमोइण्णा। हा कह णु न पुज्जामो ? न करे मणदुक्कडं एवं ॥९॥ सक्कारपुरक्कारे परीसहे उ अहियासऊ एवं। जूरंते णऽहियासिओ तम्हा सुमणेण होयव्वं ॥२१६०॥ वीसइविहकप्पो ऊ एसो खलु वण्णिओ समासेणं। बायालकप्पमहुणा गुरूवएसेण वोच्छामि ॥१॥ दव्वे भावे तदुभय करणे वेरमणमेव साहारो। निव्वेस अंतर णयंतरे य ठिय अट्ठिए १० चेव॥.'. १४५॥२॥ ठाण जिण थेर पज्जुसणमेव सुत्ते चरित्तमज्झयणे। उद्देस वायण पडिच्छणा य २० परियट्टऽणुप्पेहा ॥.'. १४६॥३॥ जायमजाए चिण्णमचिण्णे संधा(ठा)णमेव चयणे य। उववाय णिसीहे या ३० ववहारे खेत्तकाले य ॥.'. १४७॥४॥ उवही संभोगे लिंगकप्प पडिसेवणा य अणुवासे। अणुपालणा अणुण्णा ४० ठवणा कप्पे ४२ य बोद्धव्वे ॥.'. १४८॥५॥ एतेसिं तु पयाणं पत्तेय परूवणं पवक्खामि। तहियं तु दव्वकप्पो इणमो उ समासओ होति ॥६॥ पंचण्हं असणादीण पणुवीसति हि भवे विसोहीओ। अहवावि उ चउदसया एन्तो तिगवड्ढिया सोही ॥७॥ असणं पाणं वत्थं पायं सिज्जा य पंच एतेसिं। सुद्धी पणुवीसइया उग्गम तह एसणाए य ॥८॥ सुयणाण-पमाणेण उ गहिय असुद्धेऽवि होइ सुद्धो उ। अहवावि उ छद्दसया सोल्स उप्पायणादोसा ॥९॥ एएसिं सव्वेसिं हणपयणकिणादिणवहिं कोडीहिं। कयकारियाणुमोदित एसा तिगव-ड्ढिया सोही ॥२१७०॥ दंसणनाणचरिन्ने तवपवयणसव्व(च्च)समिति तिहिं गुत्तो। हतरागदोसनिम्ममखमदमनियमट्ठिओ निच्चं ॥१॥ तदुभयकप्पो अहुणा एते चिय दव्वभावकप्पा उ। दोण्णिवि मिलिया एते तदुभयकप्पो इमो सो य ॥२॥ आहारे अट्ठविहे सेज्जोवहि पंच पंचग विसोही। दंसणचरित्तगुत्तो तवसमितिगुणेहिं सोहे(हो)ति ॥३॥ असणादीओ चउहा उवकारि चउव्विहो य तस्सेव। एसऽट्ठविहाहारो परूवणा तस्सिमा होइ ॥ल० १४५॥४॥ असणं तु ओदणादी तदुवकारी उ खीरकुसणादी। पाणं तु पाणमेव उ कप्पूरादी उ उवकारी ॥ल० १४६॥५॥ खाइम फलाइयं तू सुत्ता(ण्ठा)दी होति तदुवकारी उ। साइम तंबोलादी चुण्णादी तदुवकारी उ ॥ल० १४७॥६॥ एवं आहारादी उग्गमउप्पायणेसणासुद्धे। उप्पाए दंसणादीहिं जुत्तो अहवा तदट्ठाए ॥७॥ विरती य अविरती या विरयाविरती य तिविह करणं तु। एक्केक्कं होइ दुहा ओहे य अभिग्गहे चेव ॥.'.१४९॥८॥ विरतीकरणं ओहे पंचेव महव्वया भवंती उ। होति अभिग्गहकरणं पिंडविसुद्धादि णेगविहं ॥९॥ अहवा ओहे संजमो विभागओ होइ सत्तरसभेदो। अविरति असंजमोहे अट्ठारस अभिग्गहे इणमो ॥२१८०॥ पाणइवाए मोसे अदत्त मेहुण परिग्गहे चेव। कोहमाण(मय)मायलोभे पेज्जे दोसे तहा कलहे ॥१॥ अब्भक्खाणे पेसुन्न अरति रई चेव मायमोसे य। मिच्छादंसणसल्ले अट्ठारस अभि ग्गहे एस ॥२॥ विरताविरतीए पुण ओहेण अणुव्वया भवे पंच। उत्तरगुणा अभिग्गह हवंति सिक्खावता सत्त ॥३॥ एत्थं पुण अहियारो विरतीकरणेण होइ दुविहेणं। जह तेसु अती-यारो न होति तह ऊ पयतियव्वं ॥४॥ उज्जामरक्खियाणं महव्वयाणं कओ हवति पीला ?। भन्नति आहारादिहिं तिहिं पीडा होतऽसुद्धेहिं ।.'.१५०॥ल० १४८॥५॥ उज्जम उज्जोओ खलु एतेणं रक्खियाण उ वयाणं। पीला उवघाओ खलु भवति कहं पुच्छती सीसो ॥६॥ भण्णति आहारोवहिसेज्जा एतेहिं तिहिं असुद्धेहिं। उग्गमदोसादीहि उ पीला संजायनि वयाणं ॥७॥ तम्हा उ उग्गमादीहिं विसुद्धाऽऽहारमादिया कज्जा। वेरमणकप्प एसो एत्तो साहारणं वोच्छं ॥८॥ सेज्जुवहिज्झाय आहारमेव साहार तह य अणुकंपा। आदिपणगं तु तुल्लं भइयं अणुसासणाए उ ॥.'. १५१॥९॥ सेज्जुवहिझायआहार पसिद्धा एते होंति चत्तारि। साहारणकप्पो पुण मूलगुणा उत्तरगुणा य ॥२१९०॥ साहारणत्ति किं पुण सेज्जादुप्पाद-गाण सव्वेसिं। सामण्णगुणा ते ऊ तम्हा साहारणं जाण ॥१॥ आदिपणगं तु तुल्लंति जाण सेज्जाति जाव साहारं। ठियमट्ठियाण दोण्हवि एए खलु होंति तुल्ला उ ॥२॥ अहवा तिपणग मूलगुण पंचेते होंति दोण्ह तुल्ला उ। समणाण व समणीण व तम्हा साहारणं जाणे ॥३॥ भइयमणुसासणंती अणुकंपऽणुसासणन्ति एगट्ठा। कोइ कदाइ अणिउणो ण तरति अणुसा-सणं काउं ॥४॥ सुहुभारियत्तणेणं होति विसुद्धो य अंतरप्पा से। तस्सवि होंति वताइं पंचवि साहारणाइं तु ॥५॥ आणा तित्थगराणं सामण्णा संजयाण सव्वेसिं। सुहुमेवि तप्पमाए अणुसासणयं कुणइ जो उ ॥६॥ तेण अणुकंपिया णिच्छएण जम्हाणुस(उ उ)ट्ठिता होंति। तेणऽणुकंपऽणुसट्ठी (सऽणुसट्ठऽणुकंपा) एगट्ठा होंति नायव्वा ॥७॥ साहारकप्प एसो अहुणा वोच्छामि णिव्विसणकप्पं। जह निव्विसंति समणा सम्मं तु गुरूवएसेणं ॥८॥ नाणं च दंसणं वा तहा चरित्तं च समितिगुत्तीओ। एक्कासीतिपदेहिं निव्विस निव्वेसणाकप्पो

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [२२००]

दीप अनुक्रम [२२००]

॥ ९॥ छविहकप्पादीया बायालंता उ पंचवी एते। मेलीणा उ भवंती एक्कासीयं भवे भेदा ॥२२००॥ नवरं छविहकप्पे वीसतिकप्पे य णामठवणाओ। मोत्तुं सेसा सव्वे एक्कासीइं तु मेलीणा ॥ १॥ एए सव्वे सम्मं निव्विसमाणस्स निव्विसणकप्पो। एतेसिं पुण कतरो महिड्ढिओ होइ सव्वेसिं? ॥ २॥ सव्वेऽवि हु चरणविसोहिकारगा तहवि अत्थि हु विसेसो। सहहणा-चरणाए भइतं पुण पालणाए उ॥ ३॥ सहहणाकप्पो या आचरणा चेव दो पहाणतरा। अहवा सहहण चिय सहहिउं जो ण आयरति ॥ ४॥ भइयमणुपालणत्ति य सहहिऊणंपि ण तरई कोई। अणुपालेउं अज्जा तम्हा खलु सो ण पव्वावे ॥५॥ णिव्विसणकप्पो एसो एत्तो वोच्छामि अंतराकप्पं। संखेवपिंडियत्थं गुरूवएसं जहाकमसो ॥ ६॥ पंचट्ठाणमसंखा बारसगं चेव तिण्णिवि तियाणं। अज्झत्थनाणकरणट्ठयाएँ सो अंतराकप्पो॥.॰.१५२॥ ७॥ सामादिसंजतादी पंचह चरणं तु तेसि एक्केक्कं। संजमठाणमसंखा एक्केक्के तत्थ ठाणम्मि ॥८॥ होंति अणंता चारित्तपज्जवा ताणऽसंखगुणियाणि। एकं संजमकंडग कंडगसंखा य छट्ठाणा ॥ ९॥ छट्ठाणाऽसंखेज्जा संजमसेढी उ होइ बोद्धव्वा। सामादिछेदसंजमठाणा गंतुं असंखेज्जा ॥ २२१०॥ परिहरिसंजमठाणा ताहे लग्गंति तेऽवि उ असंखा। गंतूण होंति छिन्ना ताहे तत्तो पुणो परओ ॥ १॥ वड्ढंति जा असंखा सामाइयछेदसंजमट्ठाणा। सामादिछेदठाणा ताहे छिन्ना भवंती उ॥ २॥ तो सुहुमरागठाणा तेऽवि असंखेज्ज गंतु वोच्छिन्ना। तस्स अपच्छिमठाणं अणंतगुणवड्ढियं नियमा ॥ ३॥ एकं परमविसुद्धं होइ अहक्खायसंजमट्ठाणं। पंचमसंखत्ति गतं बारसगं बार पडिमाओ ॥ ४॥ सुद्धपरिहार चउरो अणुपरिहारीवि णवम कप्पठितो। एते तिन्नि तिया खलु एतेसिं एक्कमेक्कस्स ॥५॥ अंतरसंजमठाणा होंति असंखा उ तेसि सव्वेसिं। होइ दुविहा उ सोही करणे अज्झत्थओ चेव ॥ ६॥ ता दोवि य कायव्वा नाणट्ठाए सुतोवउत्तेण। एसो अंतरकप्पो णयकप्पमियाणि वोच्छामि ॥ ७॥ सव्वेसिंपि णयाणं आदेसणयं-तरंपि सट्ठाणे। एस नयंतरकप्पो पुव्वगतविसालमादीसु ॥.॰.१५३॥ ८॥ सव्वेवि णेगमादी आदिस्सति जो णयो उ साऽऽदेसो। णयतो अन्नोवि णओ णयंतरं होइ नायव्वं ॥ ९॥ सट्ठाणे सट्ठाणे सव्वे बलिया हवंति सव्विसते। एसो णयकप्पो ऊ पुव्वगतम्मी समक्खाओ ॥ २२२०॥ उप्पदपुव्व विसालं तं आदिं काउ सव्वपुव्वेसु। भणिओ य णयविभागो एत्थं चोदेति अह सीसो ॥ १॥ कम्हा कालियसुत्ते न नायावि समोयरंति उ? कहं वा। णयविगल होति साहण मोक्खस्स उ? भण्णति सुणाहि ॥ २॥ णयवज्जिओवि हु अलं दुक्खक्खयकारओ जइ-जणस्स। चरणकरणाणुओगो तेण उ पढमं कयं दारं ॥३॥ आयारपकप्पधरो कप्पव्ववहारधारओ अज्जो!। णयसुत्तवज्जिओऽवि हु गणपरियट्टी अणुण्णाओ ॥.॰.१५४॥४॥ पच्छित्तक-रण अणुपालणा य भणिया उ कप्पववहारे। एएण अत्थधारी गणधारी जो चरणधारी ॥ ५॥ अज्जोत्ती आमंतण निद्देसे वा णयस्स सुत्ताइं। जाइं तु दिट्ठिवाते पच्छित्तं दिज्जए तह उ॥ ६॥ तेहिं विणावि जाणइ आयारपकप्पधारओ जम्हा। तम्हा उ अणुन्नाओ गणपरियट्टी उ सो नियमा ॥ ७॥ करणाणुपालगाणं तु पज्जवकसिणं समासओ णाणं। करणाणुपा-लणदुतं पज्जवकसिणं भवे तिविहं॥.॰.१५५॥८॥ दुतिपणछक्कणयंतरेसु सोलस हवंति ठाणाइं। करणट्ठाण पसत्था करणट्ठाणा उ अपसत्था॥.॰.१५६॥ ९॥ एयाइं ठाणाइं दोहिंवि गाहाहिं जाइं भणियाइं। तेसिं परूवणमिणमो समासओ होइ बोद्धव्वं॥२२३०॥ करणं तु किया होई पडिलेहणमादि सामयारी उ। तं पालिज्जइ नाणेण तं च दुविहं मुणेयव्वं॥१॥ पज्जवकसिणसमासो पज्जवकसिणं तु चोद्दस उ पुव्वा। सामाइयं पकप्पो होइ समासो मुणेयव्वो ॥ २॥ पज्जवकसिणं तिविहं सुत्ते अत्थे व तदुभए चेव। एमेव समासोऽवि हु तेहिं उ पालिज्जए चरणं ॥ ३॥ तस्स णएहिं मग्गण ते उ समासेण होंति दुविहा उ। दव्वट्ठिपज्जवट्ठित णया तु अविसेसितविसिट्ठा ॥ ४॥ वण्णादिसमुदियं तू दव्वट्ठी दव्वमिच्छए णियमा। तं चेव पज्जवणओ दव्वाइवि-सेसियं इच्छे ॥ ५॥ अहवावि तिन्निवि णया दव्वट्ठित पज्जवट्ठित गुणट्ठी। पज्जायविसेसचिय सुहुमतरागा गुणा होंति ॥ ६॥ एगगुणकालगादिसु परिसंख गुणट्ठिओ उ णायव्वो। दव्वाओ गुणाऽण्णे गुणा विसेसत्ति एगट्ठा ॥ ७॥ आदिल्ला तिण्णि णया एक्को बितिओ य होइ उज्जुसुओ। सद्दादि तिण्णि वेक्को तिण्णि णया होंति एवं वा ॥ ८॥ अहवावि णिगमसंगहववहा-रुज्जुसुएँ होंति चउरेते। सद्दणय तिण्णि एक्को पंच णया होंति एवं तु ॥ ९॥ अहवावि होज्ज छक्कं णिगमो संगाहिओ असंगाही। संगाहितो संगहं तू ववहार पविट्ठऽसंगाही ॥ २२४०॥ तम्हा उ संगहणओ ववहारो चेव होइ उज्जुसुओ। सद्दो य समभिरूढो एवंभूओ य छक्क णया ॥ १॥ एते पुण सव्वेऽवी दुग तिग पण छक्क मेलिया संता। सोलस णयंतराइं समासओ होंति एयाइं ॥ २॥ जइ कुणइ दवियकप्पं एतेहिं णयंतरेहिं तु विसुद्धं। करणट्ठाण पसत्था ते खलु होंती मुणेयव्वा ॥ ३॥ अकरेंते अपसत्था कप्पे सणयंतरे समक्खाओ। कप्पे ठितमठिते पुण वोच्छामऽहुणा समासेणं ॥ ४॥ संघयणवज्जिओवि हु दुक्खक्खयकारओ पणग जाओ। संघयणसमग्गस्सवि अजाय चउरो अमोक्खाए ॥ ५॥ पंच उ महव्वयाइं पणगं तेसिं तु जो करे पयत्तं। जाओ जो निप्फन्नो अजाओ णियमा अनिप्फण्णो ॥ ६॥ ठितमट्ठिते व कप्पे संघयणेणावि जो विहीणो उ। सो कुणइ दुक्खमोक्खं जो पुण ण करे पयत्तं तु ॥ ७॥ पंचसु महव्वएसुं संघयणेणं तु जइवि संपन्नो। सो चउगइसंसारे भमई ण व पावई मोक्खं ॥ ८॥ अहुणा उठाणकप्पो उद्धट्ठाणाइओ मुणेयव्वो। ठियकप्पसंजयस्सविऽणुण्णाओ अट्ठितस्सावि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [२२५०]

दीप अनुक्रम [२२५०]

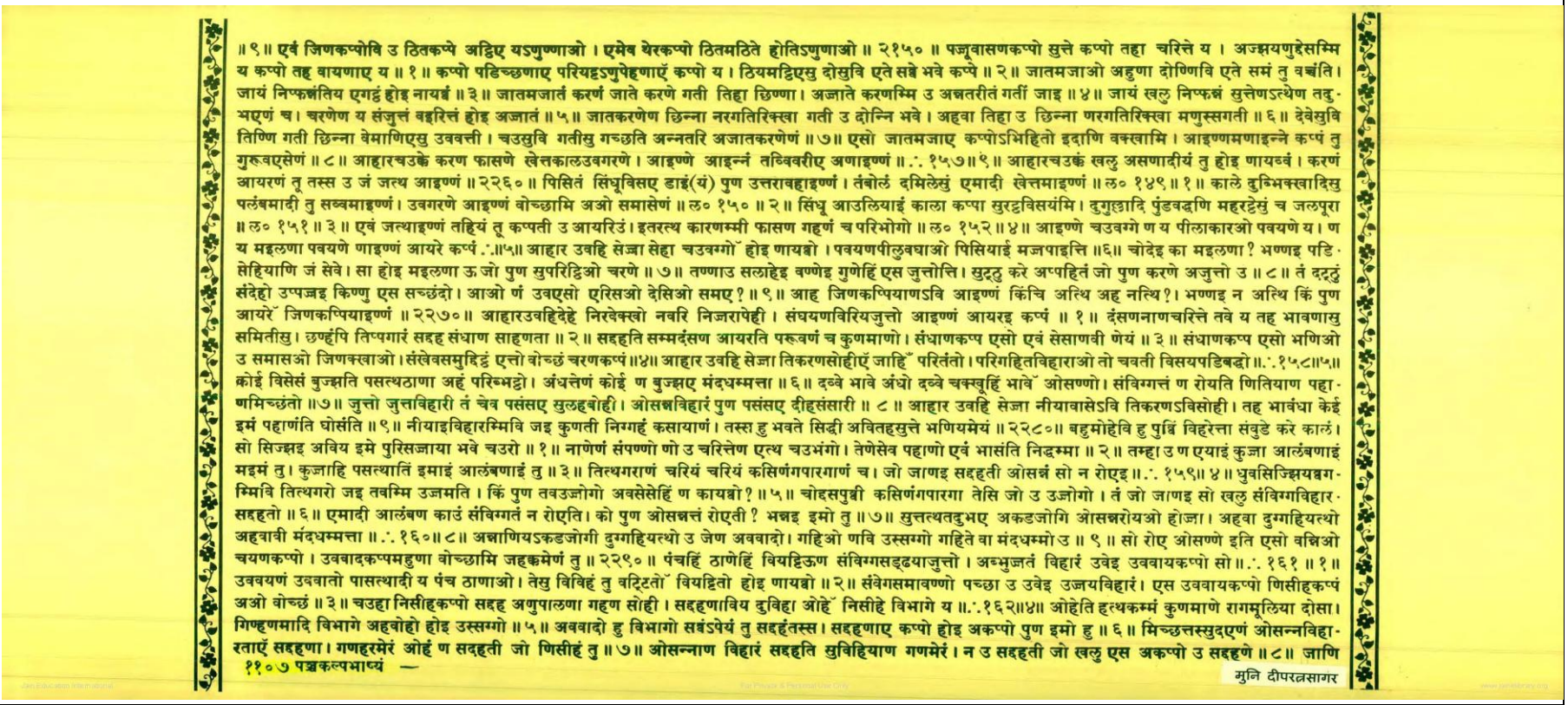

॥९॥ एवं जिणकप्पोवि उ ठितकप्पे अट्ठिए यऽणुण्णाओ । एमेव थेरकप्पो ठितमठिते होतिऽणुणाओ ॥ २१५० ॥ पज्जोसवणकप्पो सुत्ते कप्पो तहा चरित्ते य । अज्झयणुद्देसम्मि य कप्पो तह वायणाए य ॥ १ ॥ कप्पो पडिच्छणाए परियट्टऽणुपेहणाएँ कप्पो य । ठियमट्ठिएसु दोसुवि एते सव्वे भवे कप्पे ॥ २ ॥ जातमजाओ अहुणा दोण्णिवि एते समं तु वच्चंति। जायं निप्फन्नंतिय एगट्ठं होइ नायव्वं ॥ ३ ॥ जातमजातं करणं जाते करणे गती तिहा छिण्णा। अजाते करणम्मि उ अन्नतरीतं गतीं जाइ ॥ ४ ॥ जायं खलु निप्फन्नं सुत्तेणऽत्थेण तदुभएणं च। चरणेण य संजुत्तं वइरित्तं होइ अजातं ॥ ५ ॥ जातकरणेण छिन्ना नरगतिरिक्खा गती उ दोन्नि भवे । अहवा तिहा उ छिन्ना णरगतिरिक्खा मणुस्सगती ॥ ६ ॥ देवेसुवि तिण्णि गती छिन्ना वेमाणिएसु उववत्ती । चउसुवि गतीसु गच्छति अन्नतरि अजातकरणेणं ॥ ७॥ एसो जातमजाए कप्पोऽभिहितो इदाणि वक्खामि । आइण्णमणाइन्ने कप्पं तु गुरूवएसेणं ॥ ८ ॥ आहारचउक्के करण फासणे खेत्तकालउवगरणे । आइण्णे आइन्नं तव्विवरीए अणाइण्णं ॥ ∴ १५७॥९॥ आहारचउक्कं खलु असणादीयं तु होइ णायव्वं । करणं आयरणं तू तस्स उ जं जत्थ आइण्णं ॥ २२६० ॥ पिसितं सिंघूविसए डाइं(यं) पुण उत्तरावहाइण्णं । तंबोलं दमिलेसुं एमादी खेत्तमाइण्णं ॥ ल० १४९ ॥ १ ॥ काले दुब्भिक्खादिसु पलंबमादी तु सव्वमाइण्णं । उवगरणे आइण्णं वोच्छामि अओ समासेणं ॥ ल० १५० ॥ २ ॥ सिंधू आउलियाइं काला कप्पा सुरट्ठविसयंमि । दुगुल्लादि पुंडवद्धणि महरट्ठेसुं च जलपूरा ॥ ल० १५१ ॥ ३ ॥ एवं जत्थाइण्णं तहियं तू कप्पती उ आयरिउं । इतरत्थ कारणम्मी फासण गहणं च परिभोगो ॥ ल० १५२ ॥ ४ ॥ आइण्णे चउवग्गे ण य पीलाकारओ पवयणे य । ण य मइलणा पवयणे णाइण्णं आयरे कप्पं ∴॥५॥ आहार उवहि सेज्जा सेहा चउवग्गो होइ णायव्वो । पवयणपीलुवघाओ पिसियाई मज्जपाइत्ति ॥६॥ चोदेइ का मइलणा? भण्णइ पडिसेहियाणि जं सेवे। सा होइ मइलणा ऊ जो पुण सुपरिट्ठिओ चरणे ॥ ७ ॥ तण्णाउ सलाहेइ वण्णेइ गुणेहिं एस जुत्तोत्ति। सुट्ठु करे अप्पहितं जो पुण करणे अजुत्तो उ ॥ ८ ॥ तं दट्ठुं संदेहो उप्पज्जइ किण्णु एस सच्छंदो। आओ णं उवएसो एरिसओ देसिओ समए? ॥ ९ ॥ आह जिणकप्पियाणऽवि आइण्णं किंचि अत्थि अह नत्थि?। भण्णइ न अत्थि किं पुण आयरेँ जिणकप्पियाइण्णं ॥ २२७० ॥ आहारउवहिदेहे निरवेक्खो नवरि निज्जरापेही । संघयणविरियजुत्तो आइण्णं आयरइ कप्पं ॥ १ ॥ दंसणनाणचरित्ते तवे य तह भावणासु समितीसु। छण्हंपि तिप्पगारं सद्दह संधाण साहणता ॥ २ ॥ सद्दहति सम्मदंसण आयरति परूवणं च कुणमाणो। संधाणकप्प एसो एवं सेसाणवी णेयं ॥ ३ ॥ संधाणकप्प एसो भणिओ उ समासओ जिणक्खाओ। संखेवसमुद्दिट्ठं एत्तो वोच्छं चरणकप्पं॥४॥ आहार उवहि सेज्जा तिकरणसोहीएँ जाहिँ परितंतो। परिगहितविहाराओ तो चवती विसयपडिबद्धो॥∴१५८॥५॥ कोई विसेसं बुज्झति पसत्थठाणा अहं परिब्भट्ठो। अंधत्तेणं कोई ण बुज्झए मंदधम्मत्ता ॥ ६ ॥ दव्वे भावे अंधो दव्वे चक्खूहिं भावेँ ओसण्णो। संविग्गत्तं ण रोयति णितियाण पहाणमिच्छंतो ॥७॥ जुत्तो जुत्तविहारी तं चेव पसंसए सुलहबोही। ओसन्नविहारं पुण पसंसए दीहसंसारी ॥ ८ ॥ आहार उवहि सेज्जा नीयावासेऽवि तिकरणऽविसोही। तह भावंधा केई इमं पहाणंति घोसंति ॥ ९ ॥ नीयाइविहारम्मिवि जइ कुणती निग्गहं कसायाणं। तस्स हु भवते सिद्धी अवितहसुत्ते भणियमेयं ॥ २२८०॥ बहुमोहेवि हु पुव्विं विहरेत्ता संवुडे करे कालं। सो सिज्झइ अविय इमे पुरिसज्जाया भवे चउरो ॥ १ ॥ नाणेणं संपण्णो णो उ चरित्तेण एत्थ चउभंगो। तेणेसेव पहाणो एवं भासंति निद्धम्मा ॥ २ ॥ तम्हा उ ण एयाइं कुज्जा आलंबणाइं मइमं तु। कुज्जाहि पसत्थातिं इमाइं आलंबणाइं तु ॥ ३ ॥ तित्थगराणं चरियं चरियं कसिणंगपारगाणं च। जो जाणइ सद्दहती ओसन्नं सो न रोएइ ॥∴ १५९॥ ४ ॥ धुवसिज्झियवग्गम्मिवि तित्थगरो जइ तवम्मि उज्जमति। किं पुण तवउज्जोगो अवसेसेहिं ण कायव्वो? ॥ ५ ॥ चोद्दसपुव्वी कसिणंगपारगा तेसि जो उ उज्जोगो। तं जो जाणइ सो खलु संविग्गविहारसद्दहतो ॥ ६ ॥ एमादी आलंबण काउं संविग्गतं न रोएति। को पुण ओसन्नत्तं रोएती? भन्नइ इमो तु ॥ ७ ॥ सुत्तत्थतदुभए अकडजोगि ओसन्नरोयओ होज्जा। अहवा दुग्गहियत्थो अहवावी मंदधम्मत्ता ॥∴ १६०॥ ८ ॥ अन्नाणियऽकडजोगी दुग्गहियत्थो उ जेण अववादो। गहिओ णवि उस्सग्गो गहिते वा मंदधम्मो उ ॥ ९ ॥ सो रोए ओसण्णे इति एसो वन्निओ चयणकप्पो । उववादकप्पमहुणा वोच्छामि जहक्कमेणं तु ॥ २२९० ॥ पंचहिं ठाणेहिं वियट्टिऊण संविग्गसड्ढयाजुत्तो । अब्भुज्जतं विहारं उवेइ उववायकप्पो सो ॥∴ १६१ ॥ १ ॥ उववयणं उववातो पासत्थादी य पंच ठाणाओ। तेसु विविहं तु वट्टितोँ वियट्टितो होइ णायव्वो ॥ २ ॥ संवेगसमावण्णो पच्छा उ उवेइ उज्जयविहारं। एस उववायकप्पो णिसीहकप्पं अओ वोच्छं ॥ ३ ॥ चउहा निसीहकप्पो सद्दह अणुपालणा गहण सोही । सद्दहणावि य दुविहा ओहेँ निसीहे विभागे य ॥∴१६२॥४॥ ओहेति हत्थकम्मं कुणमाणे रागमूलिया दोसा। गिण्हणमादि विभागे अहवोहो होइ उस्सग्गो ॥ ५ ॥ अववादो हु विभागो सवंऽपेयं तु सद्दहंतस्स। सद्दहणाए कप्पो होइ अकप्पो पुण इमो हु ॥ ६ ॥ मिच्छत्तस्सुदएणं ओसन्नविहारताएँ सद्दहणा। गणहरमेरं ओहं ण सदहती जो णिसीहं तु ॥ ७ ॥ ओसन्नाण विहारं सद्दहति सुविहियाण गणमेरं। न उ सद्दहती जो खलु एस अकप्पो उ सद्दहणे ॥ ८ ॥ जाणि

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [२२९९]

दीप अनुक्रम [२२९९]

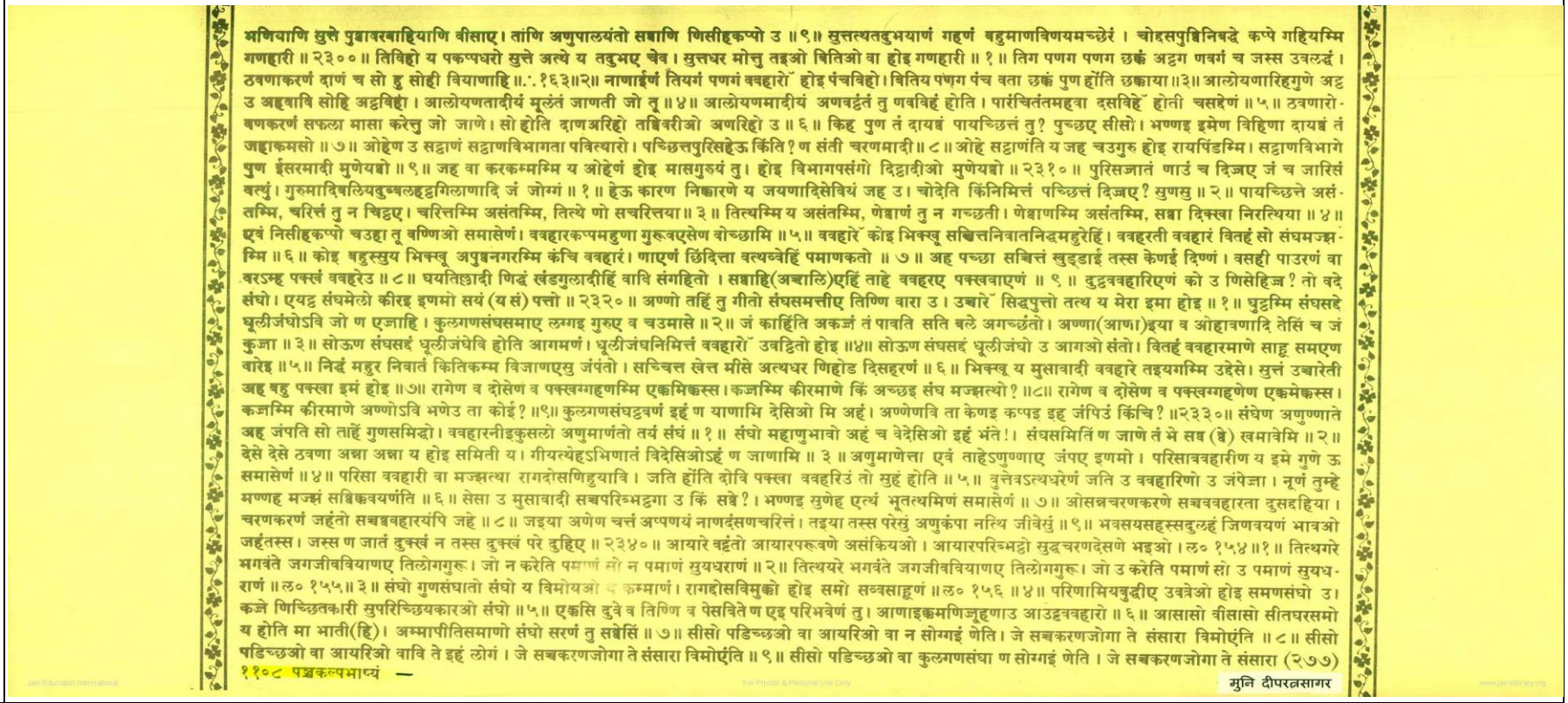

भणियाणि सुत्ते पुव्वावरबाहियाणि वीसाए। ताणि अणुपालयंतो सव्वाणि णिसीहकप्पो उ ॥९॥ सुत्तत्थतदुभयाणं गहणं बहुमाणविणयमच्छेरं । चोद्दसपुव्विनिबद्धे कप्पे गहियम्मि गणहारी ॥ २३००॥ तिविहो य पकप्पधरो सुत्ते अत्थे य तदुभए चेव। सुत्तधर मोत्तु तइओ चितिओ वा होइ गणहारी ॥ १ ॥ तिग पणग पणग छक्कं अट्ठग णवगं च जस्स उवलद्धं । ठवणाकरणं दाणं च सो हु सोही वियाणाहि ॥.'.१६३॥२॥ नाणाईणं तियगं पणगं ववहारो॑ होइ पंचविहो। बितिय पणग पंच वता छक्कं पुण होंति छक्काया॥३॥ आलोयणारिहगुणे अट्ठ उ अहवावि सोहि अट्ठविहो । आलोयणतादीयं मूलंतं जाणती जो तु ॥४॥ आलोयणमादीयं अणवट्ठंतं तु णवविहं होति । पारंचितंतमहवा दसविहे॑ होती चसद्देणं ॥५॥ ठवणारोवणकरणं सफला मासा करेत्तु जो जाणे। सो होति दाणअरिहो तव्विवरीओ अणरिहो उ ॥६॥ किह पुण तं दायव्वं पायच्छित्तं तु? पुच्छए सीसो। भण्णइ इमेण विहिणा दायव्वं तं जहाकमसो ॥७॥ ओहेण उ सट्ठाणं सट्ठाणविभागता पवित्थारो। पच्छित्तपुरिसहेऊ किंति? ण संती चरणमादी॥८॥ओहे सट्ठाणंति य जह चउगुरु होइ रायपिंडम्मि। सट्ठाणविभागे पुण ईसरमादी मुणेयव्वो ॥९॥ जह वा करकम्मम्मि य ओहेणं होइ मासगुरुयं तु। होइ विभागपसंगो दिट्ठादीओ मुणेयव्वो ॥ २३१०॥ पुरिसज्जातं णाउं च दिज्जए जं च जारिसं वत्थुं। गुरुमादिबलियदुब्बलहट्ठगिलाणादि जं जोग्गं ॥ १ ॥ हेऊ कारण निक्कारणे य जयणादिसेवियं जह उ। चोदेति किंनिमित्तं पच्छित्तं दिज्जए? सुणसु ॥ २॥ पायच्छित्ते असंतम्मि, चरित्तं तु न चिट्ठए। चरित्तम्मि असंतम्मि, तित्थे णो सचरित्तया॥ ३ ॥ तित्थम्मि य असंतम्मि, णेव्वाणं तु न गच्छती। णेव्वाणम्मि असंतम्मि, सव्वा दिक्खा निरत्थिया ॥ ४॥ एवं निसीहकप्पो चउहा तू वण्णिओ समासेणं। ववहारकप्पमहुणा गुरूवएसेण वोच्छामि ॥५॥ ववहारे॑ कोइ भिक्खू सचित्तनिवातनिद्धमहुरेहिं। ववहरती ववहारं वितहं सो संघमज्झम्मि ॥६॥ कोइ बहुस्सुय भिक्खू अपुव्वनगरम्मि कंचि ववहारं। णाएणं छिंदित्ता वत्थव्वेहिं पमाणकतो ॥ ७॥ अह पच्छा सचित्तं खुड्डाई तस्स केणई दिण्णं । वसही पाउरणं वा वरऽम्ह पक्खं ववहरेउ ॥ ८॥ घयतिल्लादी णिद्धं खंडगुलादीहिं वावि संगहितो । सव्वाहि(अव्वालि)एहिं ताहे ववहरए पक्खवाएणं ॥ ९ ॥ दुट्ठववहारिएणं को उ णिसेहिज्ज? तो वदे संघो। एयट्ठ संघमेलो कीरइ इणमो सयं (य सं) पत्तो ॥ २३२०॥ अण्णो तहिं तु गीतो संघसमत्तीए तिण्णि वारा उ। उच्चारे॑ सिद्धपुत्तो तत्थ य मेरा इमा होइ ॥ १॥ घुट्टम्मि संघसद्दे घूलीजंघोऽवि जो ण एज्जाहि । कुलगणसंघसमाए लग्गइ गुरुए व चउमासे ॥ २॥ जं काहिंति अकज्जं तं पावति सति बले अगच्छंतो। अण्णा(आणा)इया व ओहावणादि तेसिं च जं कुज्जा ॥ ३॥ सोऊण संघसद्दं घूलीजंघेवि होति आगमणं। घूलीजंघनिमित्तं ववहारो॑ उवट्ठितो होइ ॥४॥ सोऊण संघसद्दं घूलीजंघो उ आगओ संतो। वितहं ववहारमाणे साहू समएण वारेइ ॥५॥ निद्धं महुर निवातं कितिकम्म विजाणएसु जंपंतो। सच्चित्त खेत्त मीसे अत्थधर णिहोड दिसहरणं ॥ ६ ॥ भिक्खू य मुसावादी ववहारे तइयगम्मि उद्देसे। सुत्तं उच्चारेती अह बहु पक्खा इमं होइ ॥७॥ रागेण व दोसेण व पक्खग्गहणम्मि एक्कमिक्कस्स। कज्जम्मि कीरमाणे अच्छइ संघ मज्झत्थो? ॥८॥ रागेण व दोसेण व पक्खग्गहणेण एक्कमेक्कस्स। कज्जम्मि कीरमाणे अण्णोऽवि भणेउ ता कोई? ॥९॥ कुलगणसंघट्ठवणं इहं ण याणामि देसिओ मि अहं। अण्णेणवि ता केणइ कप्पइ इह जंपिउं किंचि? ॥२३३०॥ संघेण अणुण्णाते अह जंपति सो ताहें गुणसमिद्धो। ववहारनीइकुसलो अणुमाणंतो तयं संघं ॥ १ ॥ संघो महाणुभावो अहं च वेदेसिओ इहं भंते!। संघसमितिं ण जाणे तं भे सव्व (व्वे) खमावेमि ॥ २॥ देसे देसे ठवणा अन्ना अन्ना य होइ समिती य। गीयत्थेहऽभिणातं विदेसिओऽहं ण जाणामि ॥ ३ ॥ अणुमाणेत्ता एवं ताहेऽणुण्णाए जंपए इणमो। परिसाववहारीण य इमे गुणे ऊसमासेणं ॥ ४॥ परिसा ववहारी वा मज्झत्था रागदोसणिहुयावि। जति होंति दोवि पक्खा ववहरिउं तो सुहं होति ॥ ५॥ वुत्तेवऽत्थधरेणं जति उ ववहारिणो उ जंपेज्जा। नूणं तुम्हे मण्णह मज्झं सद्धिक्कवयणंति ॥ ६॥ सेसा उ मुसावादी सव्वपरिब्भट्ठगा उ किं सव्वे? । भण्णइ सुणेह एत्थं भूतत्थमिणं समासेणं ॥ ७॥ ओसन्नचरणकरणे सव्ववहारता दुसद्दहिया। चरणकरणं जहंतो सव्वववहारयंपि जहे ॥ ८॥ जइया अणेण चत्तं अप्पणयं नाणदंसणचरित्तं। तइया तस्स परेसुं अणुकंपा नत्थि जीवेसुं ॥ ९॥ भवसयसहस्सदुल्लहं जिणवयणं भावओ जहंतस्स। जस्स ण जातं दुक्खं न तस्स दुक्खं परे दुहिए ॥ २३४०॥ आयारे वट्टंतो आयारपरूवणे असंकियओ। आयारपरिब्भट्ठो सुद्धचरणदेसणे भइओ। ल० १५४॥१॥ तित्थगरे भगवंते जगजीववियाणए तिलोगगुरू। जो न करेति पमाणं सो न पमाणं सुयधराणं ॥ २॥ तित्थयरे भगवंते जगजीववियाणए तिलोगगुरू। जो उ करेति पमाणं सो उ पमाणं सुयधराणं ॥ ल० १५५॥ ३॥ संघो गुणसंघातो संघो य विमोयओ क॰म्माणं। रागद्दोसविमुक्को होइ समो सव्वसाहूणं ॥ल० १५६ ॥४॥ परिणामियबुद्धीए उववेओ होइ समणसंघो उ। कज्जे णिच्छितकारी सुपरिच्छियकारओ संघो ॥५॥ एक्कसि दुवे व तिण्णि व पेसविते ण एइ परिभवेणं तु। आणाइक्कमणिज्जूहणाउ आउट्टववहारो ॥ ६॥ आसासो वीसासो सीतघरसमो य होति मा भाती(हि)। अम्मापीतिसमाणो संघो सरणं तु सव्वेसिं ॥ ७॥ सीसो पडिच्छओ वा आयरिओ वा न सोग्गइं णेति। जे सच्चकरणजोगा ते संसारा विमोएंति ॥ ८॥ सीसो पडिच्छओ वा आयरिओ वावि ते इहं लोगं। जे सच्चकरणजोगा ते संसारा विमोएंति ॥ ९॥ सीसो पडिच्छओ वा कुलगणसंघा ण सोग्गइं णेति। जे सच्चकरणजोगा ते संसारा (२७७)

Jain Education International For Private & Personal Use Only मुनि दीपरत्नसागर www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [२३५०]

दीप अनुक्रम [२३५०]

विमोएंति ॥ २३५०॥ सीसो पडिच्छओ वा कुलगणसंघो व एति इहलोए। जे सचकरणजोगा ते संसारा विमोएंति ॥ल० १५७॥ १॥ **सीसे कुलिचएँ गणिचए व संघिचए** य समद-रिसी। ववहारसंथवेसु य सो सीतघरोवमो संघो ॥ २॥ गिहिसंघातं जहिउं संजमसंघातनं समुवगम्म। नाणचरणसंघातं **संघाएन्तो हवइ संघो ॥ ३॥ णाणचरणसंघातं** रागद्दोसेहिं जो विसंघाते। सो संघाए अनुहो गिहिसंघातम्मि अप्पाणं ॥ ४॥ नाणचरणसंघातं रागद्दोसेहिं जो विसंघाए। सो भमिही संसारं चउरंतं तं अणवयग्गं ॥ ५॥ दुक्खेण लभति चोहिं बुद्धोवि य न लभने चरित्तं तु। उम्मग्गदेसणाए तित्थगरासायणाए य ॥ ६॥ उम्मग्गदेसणाए संतस्स य छादणाए मग्गस्स। बंधइ कम्मरयमलं जरमरणमणंतगं घोरं ॥ल० १५८॥ ७॥ पंच-विहं ववसंपद नाऊणं खेत्तकालपवज्जं। तो संघमज्झयारे ववहरियव्वं अणिस्साणं ॥ ८॥ निदरिसणं तत्थ इमे तगराणगरीय सोलसायरिया। **अण्णायणायकारी** तत्थऽववहारि अट्ठ इमे ॥ ९॥ मा कित्ते कंकडुयं कुणिमं पक्कुत्तरं च चवा(वच्चा)इं। वहिरं च गुंठसमणं अंबिलसमणं च निद्दम्मं ॥२३६०॥ कंकडुओविव मासो सिद्धिं ण उवेति तस्स ववहारो। कुणिमणिहो व ण सुज्झइ दुच्छिज्जो एव बितियस्स ॥ १॥ पक्कुल्लाव भयाओ कज्जंपि ण सेसतं उदीरेति। पादेणं आउत्तिय उत्तरसोवाहणेणंति ॥ २॥ रोमंथयते कज्जं चवा(वच्चा)दी नीससंविवड सणेत्ति। कहिए कजे संते वहिरो व भणाति ण सुतं मे ॥ ३॥ मरहट्ठलाडपुच्छा केरिसया लाड? गुंठ! साहिस्सं। पावारभंडिछुभणं दसियागणणं पुणो दाणं ॥ ४॥ गुंठादि एवमादीहिं हरति मोहित्तु तं तु ववहारं। अंबफरुसेहिं अप्पो ण णेति सिद्धिं च ववहारो ॥५॥ एते अकज्जकारी तगराए आसि तम्मि उ जुगम्मि। जेहि कता ववहारा खोडिज्जंतऽण्णरज्जेसु ॥ ६॥ इहलोगम्मि अकित्ती परलोए दुग्गई धुवा तेसिं। अणणाएं जिणिंदाणं जे ववहारं ववहरंति ॥ल० १५९॥ ७॥ वत्तीसं तु सहस्सा गच्छो उक्कोसओ य उसभंमि। बहुगच्छुवग्गहकरा इत्तियमित्ताण जत्थ संथरणं ॥ल० १६०॥ कित्तेऽहं पूसमित्तं धीरं सिवकोट्ठुतिं च अज्जा(ज्झा)सं। अहरण्णग धम्मण्णग खंदिल गोविंददत्तं च ॥८॥ एते उ कज्जकारी नगराए आसि तम्मि उ जुगम्मि। जेहिं कता ववहारा अक्खोभा अचरजेसु ॥ ९॥ इहलोगम्मिवि कित्ती परलोगे सुग्गई धुवा तेसिं। आणाएं जिणिंदाणं जे ववहारं ववहरंति ॥ २३७०॥ तहियं पुण केरिसएण जंपियव्वं तु होइ समणेण?। भण्णइ सुणसू इणमो जारिसएणं तु वोत्तव्वं ॥ १॥ पारायणे समत्ते थिरपरिवाडी पुणोवि संविग्गो। जो निग्गओ विदिण्णे गुरूहिं सो होति ववहारी ॥ ∴ १६४ ॥ २॥ मूल पारायणं पढमं, बितियं च दु(बहु)मेतिमं। ततियं च निरवसेसं, जइ सुज्झेति गाहगो ॥ ३॥ सुत्तत्थो खलु पढमो बितिओ निज्जुत्तिमीसओ भणिओ। ततिओ य निरवसेसो एस विही होइ अणुओगे ॥ ४॥ पडिणीय मंदधम्मो जो निग्गओ अप्पणो सकम्मेहिं। ण हु होइ सो पमाणं असमत्तो देसनिग्गमणे ॥ ५॥ आयरियादेसाऽवा-रिएण सत्थेण गुणितझ(स)रिएण। तो संघमज्झयारे ववहरियव्वं अणिस्साए ॥ ६॥ आयरियअणादेसा वारिएण सच्छंदबुद्धिरतिएणं। सचित्तखित्तमीसे जो ववहरती ण सो धण्णो ॥ ७॥ सो अभिमुहेइ लुद्धो संसारकडिल्लगम्मि अप्पाणं। उम्मग्गदेसणाए तित्थगरासायणाए य ॥ ८॥ उम्मग्गदेसणाए संतस्स य छायणाएं मग्गस्स। उम्मग्गदेसगस्सा मासा चत्तारि भारियया ॥ ९॥ परिवार वुड्ढ धम्मकह वादि खमए तहेव नेमित्ती। विज्जा राइणिया इड्ढिगारवो अट्ठहा होइ ॥ २३८०॥ एमादिगारवेहिं अकोविया जे उ तत्थ भासिज्जा। ते वत्तवा इणमो न तुज्झ भागो इहं वोत्तुं ॥१॥ बहुपरिवारो भन्नति जय परिवारेण होज कजं तु। तह (य)परिवारं दिजसु वुड्ढो पुण भण्णई इणमो ॥२॥ लोगेण जत्थ समयं ववहारगयं तु तत्थ हुज्जाहि। तत्थ तुमं जंपिजसु धम्मकही भण्णइ इमं तु ॥ ३॥ जहियं धम्मकहाए कजं तहियं तुमं भणिज्जासि। वादी जत्थ उ वादिप्पओयणं तत्थ भासिज्जा ॥ ४॥ खमगो भन्नइ इणमो देवयकजं जहिं भविज्जाहि। असिवादिकारणेहिं तत्थ तुमं तं करिज्जासि ॥ ५॥ विज्जासिद्धो भण्णइ विज्जाए जत्थ संघकजम्मि। कजं होज करेजसु रायणिओ भण्णइ इमं तु ॥ ६॥ केत्ते किंनिकम्मस्स उ अणुवट्टंताण वंदणं अम्हं। कु(लि)ज्जाहि तुमं गंतुं इह पुण गीयस्स विसओ उ ॥७॥ ण हु गारवेण सक्का ववहरिउं संघमज्झयारम्मि। णासेई अगीयत्थो अप्पाणं चेव गच्छं च ॥ ८॥ णासेई अगीयत्थो चउरंगं सबलोगसारंगं। णट्ठम्मि य चउरंगे ण हु सुलभं होइ चउरंगं ॥ ९॥ थिरपरिवाडीहिं बहुमुएहिं संविग्गणिस्सियकरेहिं। कजम्मि भासियव्वं अणुओगे गंधहत्थीहिं ॥ २३९०॥ मादी य मुसावादी बितियं ततियं वयं च लोवेति। मायी य पावजीवी असुतीलिप्ते कणगदंडे ॥ १॥ आभवते पच्छिन्ते ववहारो समासतो भवे दुविहो। दोसु य पणगं पणगं आभवंते अहीकारो ॥ २॥ सचित्तो अचित्तो य मीसओ खेत्तकालनिप्फण्णो। पंचविहो ववहारो आभवंतो उ णायव्वो ॥ ∴ १६५ ॥ ३॥ सेहम्मि उ सचित्तो अचित्तो हवति वत्थमादीओ। मीसो सभंडगाणं खेत्तम्मि उ गाममादीहिं ॥ ४॥ नगरादसखित्ते पुण वसहीए तत्थ मग्गणा होइ। काले उदु वासासु य आभवणा होइ णायव्वा ॥ ५॥ अहवाऽऽभवंतमण्णो उवसंपयखेत्तकालपव्वजा। नाऊण संघमज्झे ववहरियव्वं अणिस्साणं ॥ ६॥ सुत सुहदुक्खे खिन्ने मग्गे विणए य पंचहा होइ। सबावि य एयाओ सुयणाणमणुप्पवत्तीओ ॥७॥ जत्थ उ सुओवसंपद तत्थ उ सद्धा हवंति (वि होन्ति) एयाओ। अहवा सुओवदिट्ठा ण तु सेच्छाए हवंतेया ॥८॥ गुरुसीसपडिच्छाणं निण्हवि को कस्स

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [२३९९]

दीप अनुक्रम [२३९९]

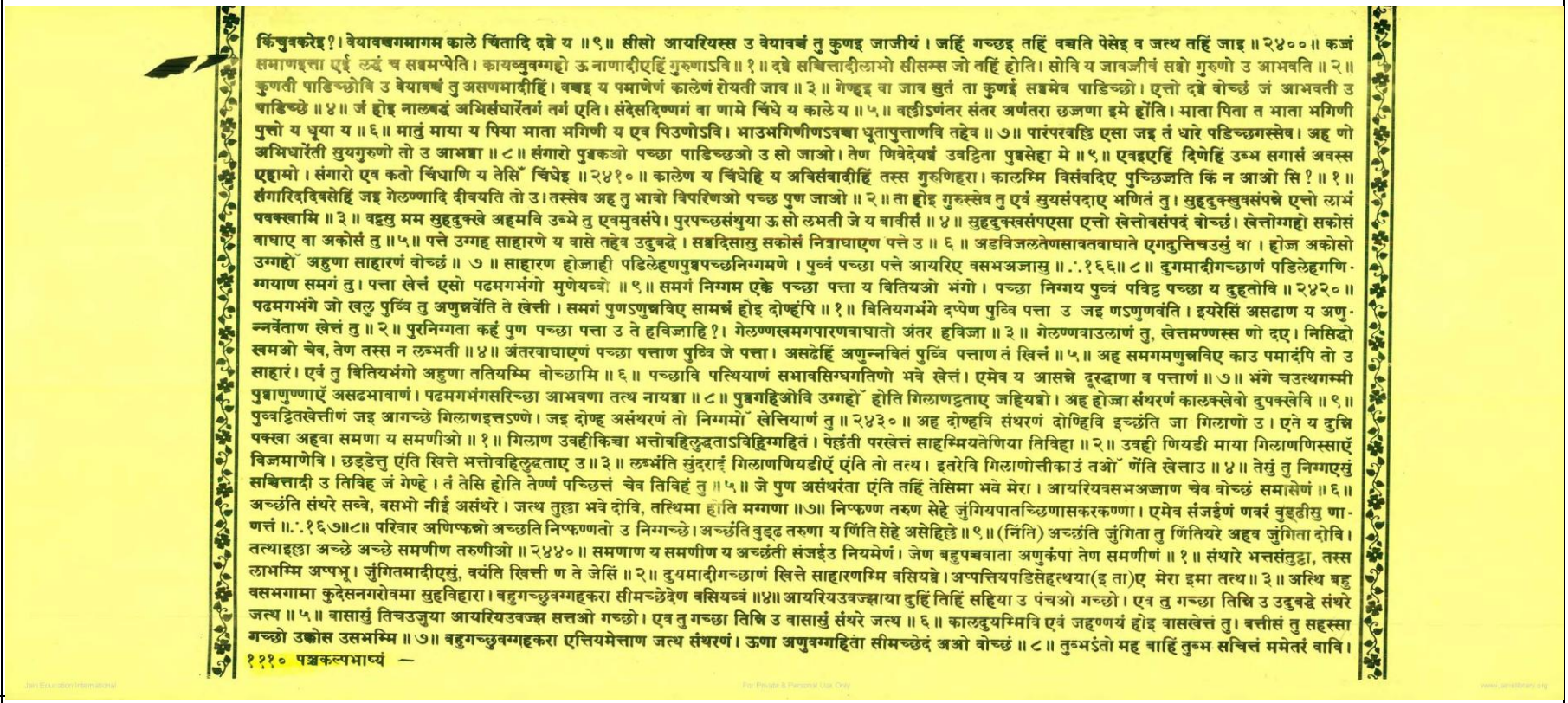

किंचुवकरेइ?। वेयावच्चगमागम काले चिंतादि दद्वे य ॥९॥ सीसो आयरियस्स उ वेयावच्चं तु कुणइ जाजीयं। जहिं गच्छइ तहिं वच्चति पेसेइ व जत्थ तहिं जाइ ॥२४००॥ कज्जं समाणइत्ता एई लद्धं च सव्वमप्पेति। कायव्वुवग्गहो ऊ नाणादीएहिं गुरुणाऽवि ॥१॥ दद्वे सचित्तादीलाभो सीसस्स जो तहिं होति। सोवि य जावज्जीवं सव्वो गुरुणो उ आभवति ॥२॥ कुणती पाडिच्छोवि उ वेयावच्चं तु असणमादीहिं। वच्चइ य पमाणेणं कालेणं रोयती जाव ॥३॥ गेण्हइ वा जाव सुतं ता कुणई सव्वमेव पाडिच्छो। एत्तो दद्वे वोच्छं जं आभवती उ पाडिच्छे ॥४॥ जं होइ नालबद्धं अभिसंधारेंतगं तगं एति। संदेसदिण्णगं वा णामे चिंधे य काले य ॥५॥ वड्ढीऽणंतर संतर अणंतरा छज्जणा इमे होंति। माता पिता त भाता भगिणी पुत्तो य धूया य ॥६॥ मातुं माया य पिया भाता भगिणी य एव पिउणोऽवि। भाउभगिणीणऽवच्चा धूतापुत्ताणवि तहेव ॥७॥ पारंपरवज्झि एसा जइ तं धारे पडिच्छगस्सेव। अह णो अभिधारेंती सुयगुरुणो तो उ आभवा ॥८॥ संगारो पुव्वकओ पच्छा पाडिच्छओ उ सो जाओ। तेण णिवेदेयव्वं उवट्ठिता पुव्वसेहा मे ॥९॥ एवइएहिं दिणेहिं उब्भ सगासं अवस्स एहामो। संगारो एव कतो चिंधाणि य तेसिँ चिंधेइ ॥२४१०॥ कालेण य चिंधेहि य अविसंवादीहिं तस्स गुरुणिहरा। कालम्मि विसंवदिए पुच्छिज्जति किं न आओ सि?॥१॥ संगारिदिवसेहिं जइ गेलण्णादि दीवयति तो उ। तस्सेव अह तु भावो विपरिणओ पच्छ पुण जाओ ॥२॥ ता होइ गुरुस्सेव तु एवं सुयसंपदाए भणितं तु। सुहदुक्खुवसंपन्ने एत्तो लाभं पवक्खामि ॥३॥ वट्टसु मम सुहदुक्खे अहमवि उब्भे तु एवमुवसंपे। पुरपच्छसंथुया ऊ सो लभती जे य वावीसं ॥४॥ सुहदुक्खसंपएसा एत्तो खेत्तोवसंपदं वोच्छं। खेत्तोग्गहो सकोसं वाघाए वा अकोसं तु ॥५॥ पत्ते उग्गह साहारणे य वासे तहेव उदुबद्धे। सव्वदिसासु सकोसं निव्वाघाएण पत्ते उ ॥६॥ अडविजलतेणसावतवाघाते एगदुत्तिचउसुं वा। होज्ज अकोसो उग्गहो॑ अहुणा साहारणं वोच्छं ॥७॥ साहारण होज्जाही पडिलेहणपुव्वपच्छनिग्गमणे। पुव्वं पच्छा पत्ते आयरिए वसभअज्जासु ॥.॰.१६६॥८॥ दुगमादीगच्छाणं पडिलेहगणि-ग्गयाण समगं तु। पत्ता खेत्तं एसो पढमगभंगो मुणेयव्वो ॥९॥ समगं निग्गम एक्के पच्छा पत्ता य बितियओ भंगो। पच्छा निग्गय पुव्वं पविट्ठ पच्छा य दुहतोवि ॥२४२०॥ पढमगभंगे जो खलु पुव्विं तु अणुन्नवेंति ते खेत्ती। समगं पुणऽणुन्नविए सामन्नं होइ दोण्हंपि ॥१॥ बितियगभंगे दप्पेण पुव्वि पत्ता उ जइ णऽणुणवंति। इयरेसिं असढाण य अणु-न्नवेंताण खेत्तं तु ॥२॥ पुरनिग्गता कहं पुण पच्छा पत्ता उ ते हविज्जाहि?। गेलण्णखमगपारणवाघातो अंतर हविज्जा ॥३॥ गेलण्णवाउलाणं तु, खेत्तमण्णस्स णो दए। निसिद्धो खमओ चेव, तेण तस्स न लब्भती ॥४॥ अंतरवाघाएणं पच्छा पत्ताण पुव्वि जे पत्ता। असढेहिं अणुन्नवितं पुव्विं पत्ताण तं खित्तं ॥५॥ अह समगमणुन्नविए काउ पमादंपि तो उ साहारं। एवं तु बितियभंगो अहुणा ततियम्मि वोच्छामि ॥६॥ पच्छावि पत्थियाणं सभावसिग्घगतिणो भवे खेत्तं। एमेव य आसन्ने दूरद्धाणा व पत्ताणं ॥७॥ भंगे चउत्थगम्मी पुव्वाणुण्णाएँ असढभावाणं। पढमगभंगसरिच्छा आभवणा तत्थ नायव्वा ॥८॥ पुव्वगहिओवि उग्गहो॑ होति गिलाणट्ठताए जहियव्वो। अह होज्जा संथरणं कालक्खेवो दुपक्खेवि ॥९॥ पुव्वट्ठितखेत्तीणं जइ आगच्छे गिलाणइत्तऽण्णे। जइ दोण्ह असंथरणं तो निग्गमो॑ खेत्तियाणं तु ॥२४३०॥ अह दोण्हवि संथरणं दोण्हिवि इच्छंति जा गिलाणो उ। एते य दुन्नि पक्खा अहवा समणा य समणीओ ॥१॥ गिलाण उवहीकिच्चा भत्तोवहिलुद्धताऽविहिग्गहितं। पेल्लंती परखेत्तं साहम्मियतेणिया तिविहा ॥२॥ उवही णियडी माया गिलाणणिस्साएँ विज्जमाणेवि। छड्डेत्तु एंति खित्ते भत्तोवहिलुद्धताए उ ॥३॥ लब्भंति सुंदराइं गिलाणणियडीएँ एंति तो तत्थ। इतरेवि गिलाणोत्तीकाउं तओ॑ णेंति खेत्ताउ ॥४॥ तेसुं तु निग्गएसुं सचित्तादी उ तिविह जं गेण्हे। तं तेसि होति तेण्णं पच्छित्तं चेव तिविहं तु ॥५॥ जे पुण असंथरंता एंति तहिं तेसिमा भवे मेरा। आयरियवसभअज्जाण चेव वोच्छं समासेणं ॥६॥ अच्छंति संथरे सव्वे, वसभो नीई असंथरे। जत्थ तुल्ला भवे दोवि, तत्थिमा होंति मग्गणा ॥७॥ निप्फण्ण तरुण सेहे जुंगियपातच्छिणासकरकण्णा। एमेव संजईणं णवरं वुड्ढीसु णा-णत्तं ॥.॰.१६७॥८॥ परिवार अणिप्फन्नो अच्छति निप्फण्णतो उ निग्गच्छे। अच्छंति वुड्ढ तरुणा य णिंति सेहे असेहिट्ठे ॥९॥ (निंति) अच्छंति जुंगिता तु णिंतियरे अहव जुंगिता दोवि। तत्थाइल्ला अच्छे अच्छे समणीण तरुणीओ ॥२४४०॥ समणाण य समणीण य अच्छंती संजईउ नियमेणं। जेण बहुपच्चवाता अणुकंपा तेण समणीणं ॥१॥ संथारे भत्तसंतुट्ठा, तस्स लाभम्मि अप्पभू। जुंगितमादीएसुं, वयंति खित्ती ण ते जेसिं ॥२॥ दुयमादीगच्छाणं खित्ते साहारणम्मि वसियव्वे। अप्पत्तियपडिसेहत्थया(इ ता)ए मेरा इमा तत्थ ॥३॥ अत्थि बहु वसभगामा कुदेसनगरोवमा सुहविहारा। बहुगच्छुवग्गहकरा सीमच्छेदेण वसियव्वं ॥४॥ आयरियउवज्झाया दुहिं तिहिं सहिया उ पंचओ गच्छो। एव तु गच्छा तिन्नि उ उदुबद्धे संथरे जत्थ ॥५॥ वासासुं तिचउजुया आयरियउवज्झ सत्तओ गच्छो। एव तु गच्छा तिन्नि उ वासासुं संथरे जत्थ ॥६॥ कालदुयम्मिवि एवं जहण्णयं होइ वाससेत्तं तु। बत्तीसं तु सहस्सा गच्छो उक्कोस उसभम्मि ॥७॥ बहुगच्छुवग्गहकरा एत्तियमेत्ताण जत्थ संथरणं। ऊणा अणुवग्गहिता सीमच्छेदं अओ वोच्छं ॥८॥ तुब्भऽतो मह बाहिं तुब्भ सचित्तं ममेतरं वावि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [२४४९]

दीप अनुक्रम [२४४९]

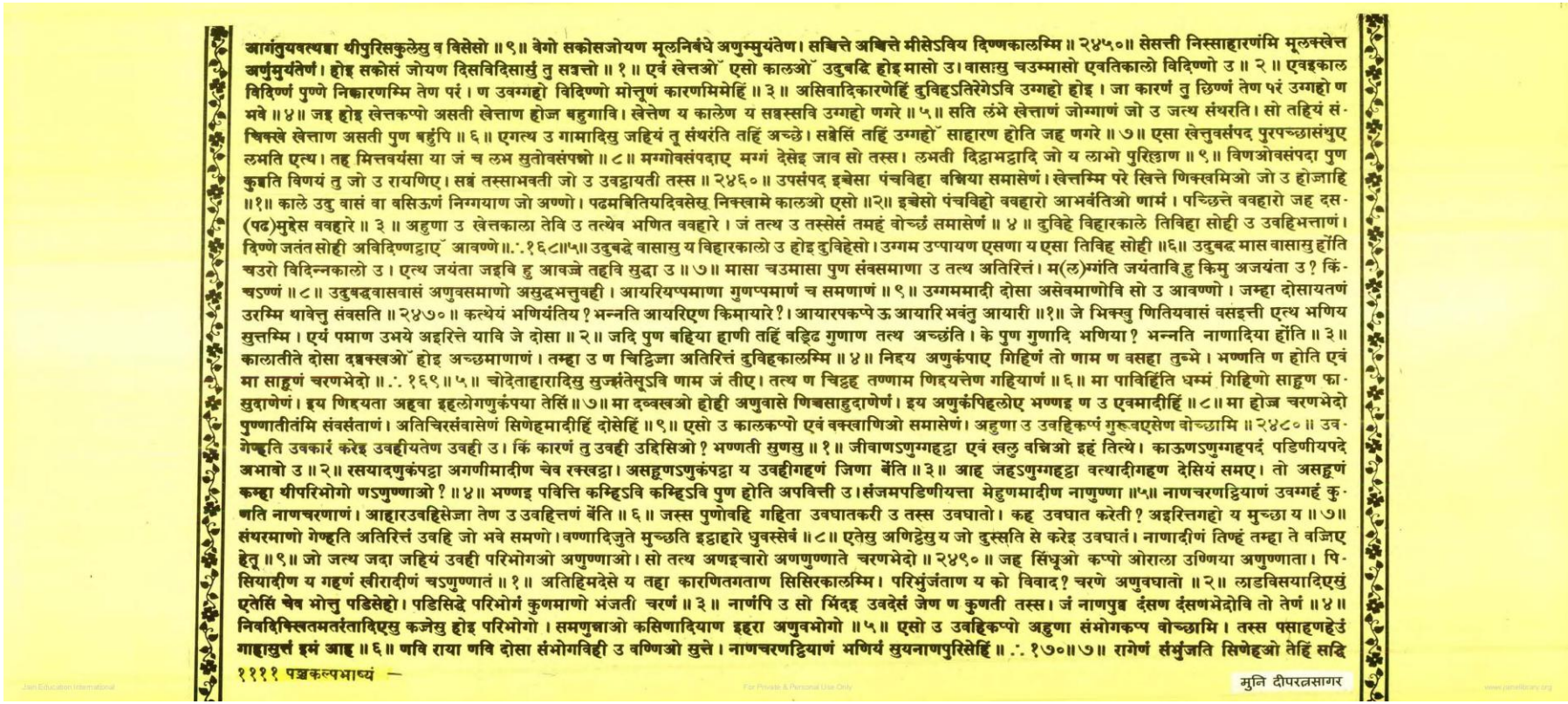

आगंतुयवत्थद्वा थीपुरिसकुलेसु व विसेसो ॥९॥ वेगो सकोसजोयण मूलनिबंधे अणुम्मुयंतेण। सचित्ते अचित्ते मीसेऽविय दिण्णकालम्मि ॥ २४५०॥ सेसत्ती निस्साहारणंमि मूलक्खेत्त अणुमुयंतेणं। होइ सकोसं जोयण दिसविदिसासुं तु सव्वत्तो ॥ १ ॥ एवं खेत्तओ एसो कालओ उदुबद्धि होइ मासो उ। वासासु चउम्मासो एवतिकालो विदिण्णो उ ॥ २ ॥ एवइकाल विदिण्णं पुण्णे निक्कारणम्मि तेण परं। ण उवग्गहो विदिण्णो मोत्तूणं कारणमिमेहिं ॥ ३ ॥ असिवादिकारणेहिं दुविहऽतिरेगेऽवि उग्गहो होइ। जा कारणं तु छिण्णं तेण परं उग्गहो ण भवे ॥ ४॥ जइ होइ खेत्तकप्पो असती खेत्ताण होज्ज बहुगावि। खेत्तेण य कालेण य सव्वस्सवि उग्गहो णगरे ॥ ५॥ सति लंभे खेत्ताणं जोग्गाणं जो उ जत्थ संथरति। सो तहियं संचिक्खे खेत्ताण असती पुण बहुंपि ॥ ६॥ एगत्थ उ गामादिसु जहियं तू संथरंति तहिं अच्छे। सव्वेसिं तहिं उग्गहो साहारण होति जह णगरे ॥ ७॥ एसा खेत्तुवसंपद पुरपच्छासंथुए लभति एत्थ। तह मित्तवयंसा या जं च लभ सुतोवसंपन्नो ॥ ८॥ मग्गोवसंपदाए मग्गं देसेइ जाव सो तस्स। लभती दिट्ठाभद्दादि जो य लाभो पुरिछाण ॥ ९॥ विणओवसंपदा पुण कुद्धति विणयं तु जो उ रायणिए। सव्वं तस्साभवती जो उ उवट्ठायती तस्स ॥ २४६०॥ उपसंपद इच्चेसा पंचविहा वन्निया समासेणं। खेत्तम्मि परे खित्ते णिक्खमिओ जो उ होज्जाहि ॥१॥ काले उदु वासं वा वसिऊणं निग्गयाण जो अण्णो। पढमबितियदिवसेसु निक्खामे कालओ एसो ॥२॥ इच्चेसो पंचविहो ववहारो आभवंतिओ णामं। पच्छित्ते ववहारो जह दस-(पढ)मुद्देस ववहारे ॥ ३ ॥ अहुणा उ खेत्तकाला तेवि उ तत्थेव भणित ववहारे। जं तत्थ उ तस्सेसं तमहं वोच्छं समासेणं ॥ ४ ॥ दुविहे विहारकाले तिविहा सोही उ उवहिभत्ताणं। दिण्णे जतंत सोही अविदिण्णट्ठाए आवण्णे॥.'.१६८॥५॥ उदुबद्धे वासासु य विहारकालो उ होइ दुविहेसो। उग्गम उप्पायण एसणा य एसा तिविह सोही ॥६॥ उदुबद्ध मास वासासु होंति चउरो विदिन्नकालो उ। एत्थ जयंता जइवि हु आवज्जे तहवि सुद्धा उ ॥ ७॥ मासा चउमासा पुण संवसमाणा उ तत्थ अतिरित्तं। म(ल)ग्गंति जयंताविहु किमु अजयंता उ? किंचऽण्णं ॥ ८॥ उदुबद्धवासासं अणुवसमाणो असुद्धभत्तुवही। आयरियप्पमाणा गुणप्पमाणं च समणाणं ॥ ९॥ उग्गममादी दोसा असेवमाणोवि सो उ आवण्णो। जम्हा दोसायतणं उरम्मि थावेत्तु संवसति ॥ २४७०॥ कत्थेयं भणियंतिय? भन्नति आयरिएण किमायारे?। आयारपकप्पे ऊ आयारि भवंतु आयारी ॥१॥ जे भिक्खु णितियवासं वसइत्ती एत्थ भणिय सुत्तम्मि। एयं पमाण उभये अइरित्ते यावि जे दोसा ॥ २॥ जदि पुण बहिया हाणी तहिं वड्ढि गुणाण तत्थ अच्छंति। के पुण गुणादि भणिया? भन्नति नाणादिया होंति ॥ ३॥ कालातीते दोसा दव्वक्खओ होइ अच्छमाणाणं। तम्हा उ ण चिट्ठिज्जा अतिरित्तं दुविहकालम्मि ॥ ४॥ निहय अणुकंपाए गिहिणं तो णाम ण वसहा तुब्भे। भण्णति ण होति एवं मा साहूणं चरणभेदो ॥.'. १६९॥५॥ चोदेताहारादिसु सुज्झंतेसुऽवि णाम जं तीए। तत्थ ण चिट्ठह तण्णाम णिहयत्तेण गहियाणं ॥६॥ मा पाविहिंति धम्मं गिहिणो साहूण फासुदाणेणं। इय णिहयता अहवा इहलोगणुकंपया तेसिं॥७॥ मा दव्वक्खओ होही अणुवासे णिच्चसाहुदाणेणं। इय अणुकंपिहलोए भण्णइ ण उ एवमादीहिं ॥८॥ मा होज्ज चरणभेदो पुण्णातीतंमि संवसंताणं। अतिचिरसंवासेणं सिणेहमादीहिं दोसेहिं ॥९॥ एसो उ कालकप्पो एवं वक्खाणिओ समासेणं। अहुणा उ उवहिकप्पं गुरूवएसेण वोच्छामि ॥ २४८०॥ उवगेण्हति उवकारं करेइ उवहीयतेण उवही उ। किं कारणं तु उवही उद्दिसिओ? भण्णती सुणसु ॥ १॥ जीवाणऽणुग्गहट्ठा एवं खलु वन्निओ इहं तित्थे। काऊणऽणुग्गहपदं पडिणीयपदे अभावो उ ॥ २॥ रसयादणुकंपट्ठा अगणीमादीण चेव रक्खट्ठा। असहूणऽणुकंपट्ठा य उवहीगहणं जिणा बेंति ॥ ३॥ आह जहऽणुग्गहट्ठा वत्थादीगहण देसियं समए। तो असहूणं कम्हा थीपरिभोगो णऽणुण्णाओ? ॥ ४॥ भण्णइ पवित्ति कम्हिऽवि कम्हिऽवि पुण होति अपवित्ती उ। संजमपडिणीयत्ता मेहुणमादीण नाणुण्णा ॥५॥ नाणचरणट्ठियाणं उवग्गहं कुणति नाणचरणाणं। आहारउवहिसेज्जा तेण उ उवहित्तणं बेंति ॥ ६॥ जस्स पुणोवहि गहिता उवघातकरी उ तस्स उवघातो। कह उवघात करेती? अइरित्तगहो य मुच्छा य ॥ ७॥ संथरमाणो गेण्हति अतिरित्तं उवहि जो भवे समणो। वण्णादिजुते मुच्छति इट्ठाहारे धुवस्सेवं ॥ ८॥ एतेसु अणिट्ठेसु य जो दुस्सति से करेइ उवघातं। नाणादीणं तिण्हं तम्हा ते वज्जिए हेतू ॥९॥ जो जत्थ जदा जहियं उवही परिभोगओ अणुण्णाओ। सो तत्थ अणइचारो अणणुण्णाते चरणभेदो ॥ २४९०॥ जह सिंधूओ कप्पो ओराला उण्णिया अणुण्णाता। पिसियादीण य गहणं खीरादीणं चऽणुण्णातं ॥ १॥ अतिहिमदेसे य तहा कारणितगताण सिसिरकालम्मि। परिभुंजंताण य को विवाद? चरणे अणुवघातो ॥ २॥ लाडविसयादिएसुं एतेसिं चेव भोत्तु पडिसेहो। पडिसिद्धे परिभोगं कुणमाणो भंजती चरणं ॥ ३॥ नाणंपि उ सो भिंदइ उवदेसं जेण ण कुणती तस्स। जं नाणपुव्व दंसण दंसणभेदोवि तो तेणं ॥ ४॥ निवदिक्खितमतरंतादिएसु कज्जेसु होइ परिभोगो। समणुन्नाओ कसिणादियाण इहरा अणुवभोगो ॥ ५॥ एसो उ उवहिकप्पो अहुणा संभोगकप्प वोच्छामि। तस्स पसाहणहेउं गाहासुत्तं इमं आह ॥ ६॥ णवि राया णवि दोसा संभोगविही उ वण्णिओ सुत्ते। नाणचरणट्ठियाणं भणियं सुयनाणपुरिसेहिं ॥ .'. १७०॥७॥ रागेणं संभुंजति सिणेहओ तेहिं सद्धि

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक २४९९]

दीप अनुक्रम [२४९९]

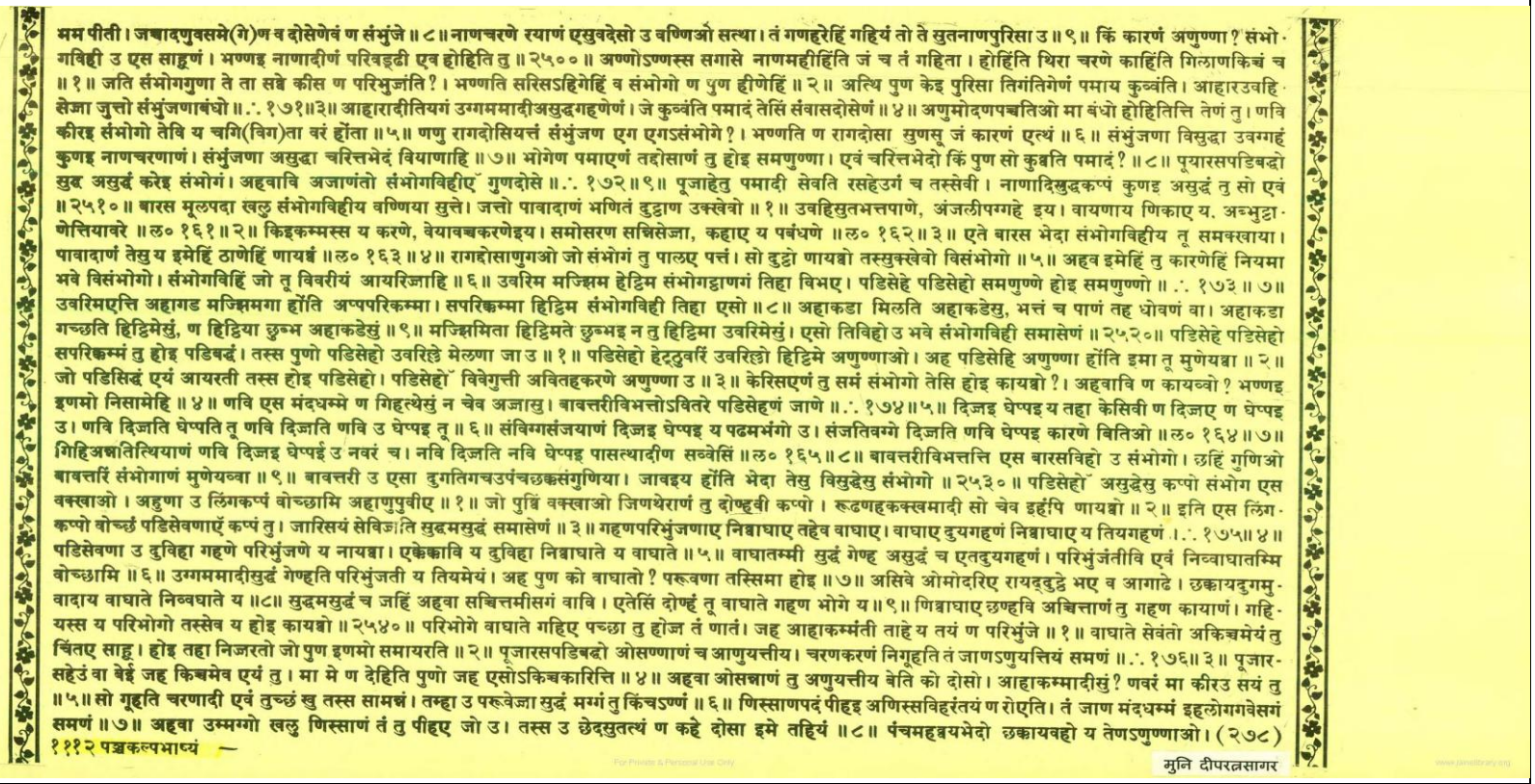

भम पीती। जचादणुवसमे(गे)ण व दोसेणेवं ण संभुंजे ॥ ८॥ नाणचरणे रयाणं एसुवदेसो उ वण्णिओ सत्था। तं गणहरेहिं गहियं तो ते सुतनाणपुरिसा उ ॥ ९॥ किं कारणं अणुण्णा? संभोगविही उ एस साहूणं। भण्णइ नाणादीणं परिवड्ढी एव होहिति तु ॥ २५०० ॥ अण्णोऽण्णस्स सगासे नाणमहीहिंति जं च तं गहिता। होहिंति थिरा चरणे काहिंति गिलाणकिचं च ॥ १॥ जति संभोगगुणा ते ता सबे कीस ण परिभुजंति?। भण्णति सरिसऽहिगेहिं व संभोगो ण पुण हीणेहिं ॥ २॥ अत्थि पुण केइ पुरिसा तिगंतिगेणं पमाय कुव्वंति। आहारउवहिसेज्जा जुत्तो संभुंजणाबंधो ॥ ∴ १७१॥३॥ आहारादीतियगं उग्गममादीअसुद्धगहणेणं। जे कुव्वंति पमादं तेसिं संवासदोसेणं ॥ ४॥ अणुमोदणपच्चतिओ मा बंधो होहितित्ति तेणं तु। णवि कीरइ संभोगो तेवि य चगि(विग)ता वरं होंता ॥ ५॥ णणु रागदोसियत्तं संभुंजण एग एगऽसंभोगे?। भण्णति ण रागदोसा सुणसू जं कारणं एत्थं ॥ ६॥ संभुंजणा विसुद्धा उवग्गहं कुणइ नाणचरणाणं। संभुंजणा असुद्धा चरित्तभेदं वियाणाहि ॥ ७॥ भोगेण पमाएणं तदोसाणं तु होइ समणुण्णा। एवं चरित्तभेदो किं पुण सो कुबति पमादं? ॥ ८॥ पूयारसपडिबद्धो सुद्ध असुद्धं करेइ संभोगं। अहवावि अजाणंतो संभोगविहीए गुणदोसे ॥ ∴ १७२॥९॥ पूजाहेतु पमादी सेवति रसहेउगं च तस्सेवी। नाणादिसुद्धकप्पं कुणइ असुद्धं तु सो एवं ॥ २५१०॥ बारस मूलपदा खलु संभोगविहीय वण्णिया सुत्ते। जत्तो पावादाणं भणितं दुट्ठाण उक्खेवो ॥ १॥ उवहिसुतभत्तपाणे, अंजलीपग्गहे इय। वायणाय णिकाए य. अब्भुट्ठाणेत्तियावरे ॥ ल० १६१॥२॥ किइकम्मस्स य करणे, वेयावच्चकरणेइय। समोसरण सन्निसेज्जा, कहाए य पबंधणे ॥ ल० १६२॥३॥ एते बारस भेदा संभोगविहीय तू समक्खाया। पावादाणं तेसु य इमेहिं ठाणेहिं णायबं ॥ ल० १६३॥४॥ रागदोसाणुगओ जो संभोगं तु पालए पत्तं। सो दुट्ठो णायबो तस्सुक्खेवो विसंभोगो ॥ ५॥ अहव इमेहिं तु कारणेहिं नियमा भवे विसंभोगो। संभोगविहिं जो तू विवरीयं आयरिज्जाहि ॥ ६॥ उवरिम मज्झिम हेट्ठिम संभोगट्ठाणगं तिहा विभए। पडिसेहे पडिसेहो समणुण्णे होइ समणुण्णो ॥ ∴ १७३॥ ७॥ उवरिमएत्ति अहागड मज्झिमगा होंति अप्पपरिकम्मा। सपरिकम्मा हिट्ठिम संभोगविही तिहा एसो ॥ ८॥ अहाकडा मिलति अहाकडेसु, भत्तं च पाणं तह धोवणं वा। अहाकडा गच्छति हिट्ठिमेसुं, ण हिट्ठिया छुब्भ अहाकडेसुं ॥ ९॥ मज्झिमिता हिट्ठिमते छुब्भइ न तु हिट्ठिमा उवरिमेसुं। एसो तिविहो उ भवे संभोगविही समासेणं ॥ २५२०॥ पडिसेहे पडिसेहो सपरिकम्मं तु होइ पडिबद्धं। तस्स पुणो पडिसेहो उवरिल्ले मेलणा जा उ ॥ १॥ पडिसेहो हेट्ठुवरिं उवरिल्लो हिट्ठिमे अणुण्णाओ। अह पडिसेहि अणुण्णा होंति इमा तू मुणेयबा ॥ २॥ जो पडिसिद्धं एयं आयरती तस्स होइ पडिसेहो। पडिसेहो विवेगुत्ती अवितहकरणे अणुण्णा उ ॥ ३॥ केरिसएणं तु समं संभोगो तेसि होइ कायबो?। अहवावि ण कायव्वो? भण्णइ इणमो निसामेहि ॥ ४॥ णवि एस मंदधम्मे ण गिहत्थेसुं न चेव अजासु। बावत्तरीविभत्तोऽवितरे पडिसेहणं जाणे ॥ ∴ १७४॥५॥ दिज्जइ घेप्पइ य तहा केसिवी ण दिज्जए ण घेप्पइ उ। णवि दिज्जति घेप्पति तू णवि दिज्जति णवि उ घेप्पइ तू ॥ ६॥ संविग्गसंजयाणं दिज्जइ घेप्पइ य पढमभंगो उ। संजतिवग्गे दिज्जति णवि घेप्पइ कारणे वितिओ ॥ ल० १६४॥७॥ गिहिअन्नातित्थियाणं णवि दिज्जइ घेप्पई उ नवरं च। नवि दिज्जति नवि घेप्पइ पासत्थादीण सब्वेसिं ॥ ल० १६५॥८॥ बावत्तरीविभत्तत्ति एस बारसविहो उ संभोगो। छहिं गुणिओ बावत्तरिं संभोगाणं मुणेयब्वा ॥ ९॥ बावत्तरी उ एसा दुगतिगचउपंचछक्कसंगुणिया। जावइय होंति भेदा तेसु विसुद्धेसु संभोगो ॥ २५३०॥ पडिसेहो असुद्धेसु कप्पो संभोग एस वक्खाओ। अहुणा उ लिंगकप्पं वोच्छामि अहाणुपुवीए ॥ १॥ जो पुबिं वक्खाओ जिणथेराणं तु दोण्हवी कप्पो। रूढणहकक्खमादी सो चेव इहंपि णायबो ॥ २॥ इति एस लिंगकप्पो वोच्छं पडिसेवणाएँ कप्पं तु। जारिसयं सेविज्जति सुद्धमसुद्धं समासेणं ॥ ३॥ गहणपरिभुंजणाए निबाघाए तहेव वाघाए। वाघाए दुयगहणं निबाघाए य तियगहणं ∴ १७५॥४॥ पडिसेवणा उ दुविहा गहणे परिभुंजणे य नायबा। एक्केकावि य दुविहा निबाघाते य वाघाते ॥ ५॥ वाघातम्मी सुद्धं गेण्ह असुद्धं च एतदुयगहणं। परिभुंजंतीवि एवं निव्वाघातम्मि वोच्छामि ॥ ६॥ उग्गममादीसुद्धं गेण्हति परिभुंजती य तियमेयं। अह पुण को वाघातो? परूवणा तस्सिमा होइ ॥ ७॥ असिवे ओमोदरिए रायदुट्ठे भए व आगाढे। छक्कायदुगमुवादाय वाघाते निव्वघाते य ॥ ८॥ सुद्धमसुद्धं च जहिं अहवा सचित्तमीसगं वावि। एतेसिं दोण्हं तू वाघाते गहण भोगे य ॥ ९॥ णिबाघाए छण्हवि अचित्ताणं तु गहण कायाणं। गहियस्स य परिभोगो तस्सेव य होइ कायबो ॥ २५४०॥ परिभोगे वाघाते गहिए पच्छा तु होज्ज तं णातं। जह आहाकम्मंती ताहे य तयं ण परिभुंजे ॥ १॥ वाघाते सेवंतो अकिच्चमेयं तु चिंतए साहू। होइ तहा निजरतो जो पुण इणमो समायरति ॥ २॥ पूजारसपडिबद्धो ओसण्णाणं च आणुयत्तीय। चरणकरणं निगूहति तं जाणऽणुयत्तियं समणं ॥ ∴ १७६॥३॥ पूजारसहेउं वा बेई जह किच्चमेव एयं तु। मा मे ण देहिति पुणो जह एसोऽकिच्चकारित्ति ॥ ४॥ अहवा ओसन्नाणं तु अणुयत्तीय बेति को दोसो। आहाकम्मादीसुं? णवरं मा कीरउ सयं तु ॥ ५॥ सो गूहति चरणादी एवं तुच्छं खु तस्स सामन्नं। तम्हा उ परूवेज्जा सुद्धं मग्गं तु किंचऽण्णं ॥ ६॥ णिस्साणपदं पीहइ अणिस्सविहरंतयं ण रोएति। तं जाण मंदधम्मं इहलोगगवेसगं समणं ॥ ७॥ अहवा उम्मग्गो खलु णिस्साणं तं तु पीहए जो उ। तस्स उ छेदसुतत्थं ण कहे दोसा इमे तहियं ॥ ८॥ पंचमहबयभेदो छक्कायवहो य तेणऽणुण्णाओ। (२७८)

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [२६११]

दीप अनुक्रम [२६११]

सुहसीलचि(डवि)यत्ताणं कहेइ जो पवयणरहस्सं ॥९॥ पडिसेवकप्प एसो अहुणा वोच्छमणुवासणाकप्पं। अणुवास मासकप्पो वासावासो इमेसिं तु ॥ २५५०॥ जिण थेर अहालंदे परिहरिते अज्ज मासकप्पो उ। खेत्ते कालमुवस्सय-पिंडग्गहणे य णाणत्तं ॥ १॥ एएसिं पंचण्हवि अण्णोण्णस्स उ चउपदेहिं तु। खेत्तादीहिं विसेसो जह तह वोच्छं समासेणं ॥ २॥ णत्थि उ खित्तं जिणकप्पियाण उदुबद्ध मासकालो उ। वासासुं चउमासा वसही अममत्तअपरिकम्मा ॥ ३॥ पिंडो तु अलेवकडो गहणं तू एसणाहुवरिमाहिं। तत्थवि काउमभिग्गह पंचण्हं अण्णतरियाए ॥ ४॥ थेराण अत्थि खेत्तं तु उग्गहो जाव जोयण सकोसं। णगरे पुण वसहीए विकाले उदुबद्धि मासो उ ॥ ५॥ उस्सग्गेणं भ-णिओ अववाएणं तु होज्ज अहिओवि। एमेव य वासासुवि चउमासो होज्ज अहिओवि ॥ ६॥ अममत्तअपरिकम्मो उवस्सओ एत्थ भंग चउरो उ। उस्सग्गेणं पढमो तिण्णि उ सेसाऽववादेणं ॥ ७॥ भत्तं लेवकडं वाऽलेवकडं वावि ते उ गेण्हंति। सत्तहिवि एसणाहिं साविक्खो गच्छवासोत्ति ॥ ८॥ अहलंदियाण गच्छे अप्पडिबद्धाण जह जिणाणं तु। णवरं कालविसेसो उदुवासे पणगचउमासो ॥ ९॥ गच्छे पडिबद्धाणं अहलंदीणं तु अह पुण विसेसो। उग्गहो जो तेसिं तू सो आयरियाण् आमवति ॥ २५६०॥ एगवसहीएँ पणगं छवीहीओ व गाम कुबंति। दिवसे दिवसे अण्णं अडंति वीहीइ नियमेणं ॥ १॥ परिहारविसुद्धीणं जहेव जिणकप्पियाण णवरं तु। आयंबिलं तु भत्तं गिण्हंती वासकप्पं च ॥ २॥ अजाण परिग्गहियाण उग्गहो जो उ सो तु आयरिए। काले दो दो मासा उदुबद्धे तासि कप्पो उ ॥ ल० १६६॥ ३॥ सेसं जह थेराणं पिंडो व उवस्सओ य तह तासिं। सो सव्वोवि य दुविहो जिणकप्पो थेरकप्पो य ॥ ४॥ जिणकप्पियऽहालंदियपरिहारविसुद्धियाण जिणकप्पो। थेराणं अजाण य वोद्धव्वो थेरकप्पो उ ॥ ५॥ दुविहो य मासकप्पो जिणकप्पो चेव थेरकप्पो य। निरणुग्गहो जिणाणं थेराण अणुग्गहपवत्तो ॥ ६॥ उदुवासकालतीते जिणकप्पीणं तु गुरुग गुरुगा य। होंति दिणम्मि दिणम्मी थेराणं ते चिय लहुओ (थिराण ते चिय लहुगलहुगा) ॥ ७॥ तीसं पदावराहे पुट्ठो अणुवासियं अणुवसंतो। जे जत्थ पदे दोसा ते तत्थयगो समावण्णे ॥ ८॥ पण्णरसुग्गमदोसा दस एसणदोस एते पणुवीसं। संजोयणादि पंच य एते तीसं तु अवराहा ॥ ९॥ एएहिं दोसेहिं जइ असंपत्ति लग्गती तहवि। दिवसे दिवसे सो खलु कालातीते वसंतो उ ॥ २५७०॥ वासावासपमाणं आयारे उप्पमाणितं कप्पं। एयं अणुम्मुयंतो जाणसु अणुवासकप्पं तु ॥ १॥ आयारपकप्पम्मी जह भणितं तीति संवसतोवि। होइ अणुवासकप्पो तह संवसमाणऽदोसा उ ॥ २॥ दुविहे विहारकाले वासावासे तहेव उदुबद्धे। मासातीते अणुवहि वासातीते भवे उवही ॥ ३॥ उदु-बद्दिएसु अट्ठसु तीतेसुं तत्थ वास ण उ कप्पे। घेत्तूणं उवही खलु वासातीतेसु कप्पति तु॥४॥ वासउदुअहालंदे इत्तरि साहारणे पुहुत्ते य। उग्गहसंकमणं वा अण्णोण्णसकासऽहिज्जंते ॥.'.१७७॥५॥ वासासु चउम्मासो उदुबद्धे मासो लंद पंच दिणा। इत्तरिउ रुक्खमूले वीसमणट्ठा ठिताणं तु ॥६॥ साहारणा उ एते समट्ठि(मगठि)याणं बहुण गच्छाणं। एक्केणं परिगहिया सव्वे वोहित्तिया होंति ॥७॥ संकमणमण्णमण्णस्स सकासे जइ उ ते अधीयंते। सुत्तत्थतदुभयाइं सव्वे अहवावि पडिपुच्छे ॥ ८॥ ते पुण मंडलियाए आवलियाए व तं तु गिण्हेज्जा। मंडलियमहिज्जंते सचित्तादी उ जो लाभो ॥ ९॥ सो उ परंपरएणं संकामति ताव जाव सट्ठाणं। जहियं पुण आवलिया तहियं पुण अंतरे ठाति ॥ २५८०॥ ते पुण ठित एक्काए वसहीए अहव पुप्फकिण्णा उ। अहवावि उ संकमणे दव्वस्सिणमो विही अण्णो ॥ १॥ सुत्तत्थतदुभयविसारयाण थोवे अ संतईभेदे। संकमणदवमंडलिआवलियाकप्पअणुवासा ॥ २॥ पुव्वट्ठिताण खित्ते जदि आग-च्छेज्ज अण्ण आयरिओ। बहुसुय बहुआगमिओ तस्स सगासम्मि जइ खेत्ती ॥ ३॥ किंचि अहिज्जेज्जाही थोवं खेत्तं च तं जदि हविज्जा। ताहे असंथरंता दोण्णिऽवि साहू विसज्जेंति ॥ ४॥ अण्णोण्णस्स सगासे तेसिंपिय तत्थ विज्ज-माणाणं। आभवणा तह चेव य जह भणियमणंतरे सुत्ते ॥ ५॥ एवं निव्वाघाते मास चउम्मासिओ उ थेराणं। कप्पो कारणओ पुण अणुवासो कारणं जाव ॥ ६॥ एसऽणुवासणकप्पो अहुणा अणुपालणाएँ कप्पं तु। संखेवसमुद्दिट्ठं वोच्छामि अहं समासेणं ॥ ७॥ मोहतिगिच्छाएँ गते णट्ठे खेत्तादि अहव कालगते। आयरिए तम्मि गणे पीलादिरक्खणट्ठाए ॥.'.१७८॥ल० १६७॥८॥ को उ गणी ठवणिज्जो? भण्णइ जइ तस्स कोति सीसो उ। सुत्तत्थतदुभएहिं णिम्माओ सो ठवेयव्वो ॥ ल० १६८ ॥ ९॥ असतीय तस्स ताहे ठावेयव्वा कमेणिमेणं तु। पव्वज कुले नाणे खेत्ते सुहदुक्खि सुत सीसे ॥ ल० १६९॥ २५९०॥ गुरुगुरु गुरुणं तू वा गुरुसज्झिलओ व तस्स सीसो वा। पव्वज्जएगपक्खी एमादी होइ णायव्वो ॥ १॥ असतीएँ कुलिवो वा तस्सऽसतीए सुएगपक्खीओ। खेत्ते उवसंपण्णे तस्सऽसतीए ठवेयव्वो ॥ २॥ सुहदुक्खियस्स असती तस्सऽसतीए सुओवसंपण्णो। एवं तु वियाण तहिं सीसम्मि उ मग्गणा नत्थि ॥ ३॥ पाडिच्छगणधरे पुण ठविए तहियं तु मग्गणा इणमो। सुत्तत्थमहिज्जंते अणहिज्जंते इमे विभागा ॥ ४॥ साहारणं तु पढमे चितिए खेत्तम्मि ततिएँ सुहदुक्खे। अणहिज्जंते सीसे सेसे एक्कारस विभागा ॥ ५॥ पुव्वट्ठिट्ठगणस्स उ पच्छुद्दिट्ठं पवाययंतस्स। संवच्छरम्मि पढमे पडिच्छए जं तु सचित्तं ॥ ६॥ पुव्वंपच्छुद्दिट्ठे पडिच्छए जं तु होइ सचित्तं। संवच्छरम्मि चितिए तं सव्व पवाययंतस्स ॥ ७॥ पुव्वंपच्छुद्दिट्ठे सीसम्मि उ जं तु होइ सचित्तं। संवच्छरम्मि पढमे तं सव्व गणस्स आभवति ॥ ८॥ पुव्वट्ठिट्ठगणस्सवि पच्छुद्दिट्ठं पवाययंतस्स। संवच्छरम्मि चितिए सीसम्मि तु जं तु सचित्तं ॥ ९॥ पुव्वंपच्छुद्दिट्ठे सीसम्मि तु जं तु होति सचित्तं। संवच्छरम्मि ततिए तं सव्व पवाययंतस्स ॥ २६००॥ पुव्वट्ठिट्ठे गच्छे पच्छुद्दिट्ठं पवाययंतस्स। संवच्छरम्मि पढमे सिस्सिणीए जं तु सचित्तं ॥ १॥ पुव्वंपच्छुद्दिट्ठे सिस्सिणीए जं तु होइ सचित्तं। संवच्छरम्मि चितिए तं सव्व पवाययंतस्स ॥ २॥ पुव्वंपच्छुद्दिट्ठे पडिच्छियाए उ जं तु सचित्तं। संवच्छरम्मि पढमे तं सव्व पवाययंतस्स ॥ ३॥ खेत्तुवसंपायरिओ सुहदुक्खी चेव जति तु संठविओ। कुलगणसंघिवो वा तस्स इमो होति उ विवेगो ॥ ४॥ संवच्छराणि ति(दु)न्नि उ सीसम्मि पडिच्छयम्मि तद्दिवसं। एव कुलिवगणिवे संवच्छर संघ छम्मासा ॥ ५॥ तत्थेव य णिम्माए अनिग्गए निग्गए इमा मेरा। सकुले तिन्नि तियाइं गणदुग संवच्छरं संघे ॥ ६॥ ओमादिकारणेहिं दुम्मेहत्तेण वा ण णिम्माए। काऊण कुलसमायं कुलथेरे वा उव-ट्ठेंति ॥ ७॥ णव हायणाइं ताहे कुलं तु सिक्खावए पयत्तेणं। ग्र य किंचि तेसि गिण्हइ गणो दुगं एगं संघो उ ॥ ८॥ एवं तु दुवालसहिं समाहिं जति तत्थ कोइ निम्माओ। ता णेंति अणिम्माए पुणो कुलादीउवट्ठाणा ॥ ९॥ तेणेव कमेणं तू पुणो समाओ हवंति वारस उ। निम्माए विहरंती इहर कुलादी पुणोवट्ठा ॥ २६१०॥ तहविय वार समाओ निम्माओ सो सि गणहरो होइ। तेण परमनिम्माए इमा विही होइ तेसिं तु ॥ १॥ छत्तीसाइक्कंते पंचविहुवसंपदाएं

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३८/२], छेदसूत्र - [५/२] “पंचकल्प” संघदासगणिक्षमाश्रमण रचितं भाष्यं

प्रत सूत्रांक [२६१२] दीप अनुक्रम [२६१२]

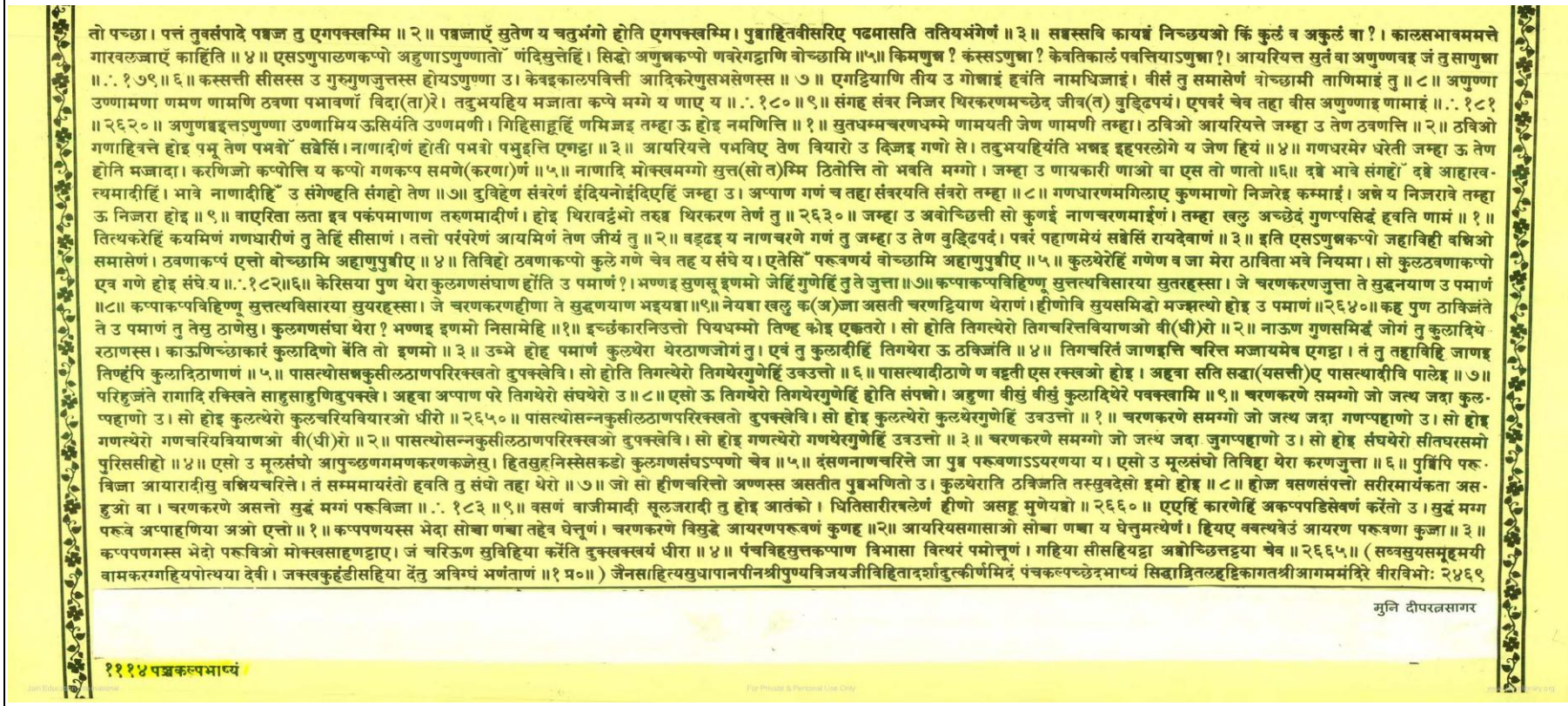

तो पच्छा। पत्तं तुवसंपादे पव्वज्ज तु एगपक्खम्मि ॥२॥ पव्वज्जाएँ सुतेण य चतुभंगो होति एगपक्खम्मि। पुव्वाहितवीसरिए पढमासति ततियभंगेणं ॥३॥ सव्वस्सवि कायव्वं निच्छयओ किं कुलं व अकुलं वा?। कालसभावममत्ते गारवलज्जाएँ काहिंति ॥४॥ एसऽणुपालणकप्पो अहुणाऽणुण्णातो॑ णंदिसुत्तेहिं। सिद्धो अणुन्नकप्पो णवरेगट्ठाणि वोच्छामि ॥५॥ किमणुन्न? कंस्सऽणुन्ना? केवतिकालं पवत्तियाऽणुन्ना?। आयरियत्त सुतं वा अणुण्णवइ जं तु साणुन्ना ॥.'. १७९॥६॥ कस्सत्ती सीसस्स उ गुरुगुणजुत्तस्स होयऽणुण्णा उ। केवइकालपवित्ती आदिकरेणुसभसेणस्स ॥७॥ एगट्ठियाणि तीय उ गोन्नाइं हवंति नामधिज्जाइं। वीसं तु समासेणं वोच्छामी ताणिमाइं तु ॥८॥ अणुण्णा उण्णामणा णमण णामणि ठवणा पभावणॉ विदा(ता)रे। तदुभयहिय मज्जाता कप्पे मग्गे य णाए य ॥.'. १८०॥९॥ संगह संवर निज्जर थिरकरणमच्छेद जीव(त) वुड्ढिपयं। एपवरं चेव तहा वीस अणुण्णाइ णामाइं ॥.'. १८१ ॥२६२०॥ अणुण्णइत्तऽणुण्णा उण्णामिय ऊसियंति उण्णमणी। गिहिसाहूहिं णमिज्जइ तम्हा ऊ होइ नमणित्ति ॥१॥ सुतधम्मचरणधम्मे णामयती जेण णामणी तम्हा। ठविओ आयरियत्ते जम्हा उ तेण ठवणत्ति ॥२॥ ठविओ गणाहिवत्ते होइ पभू तेण पभवो॑ सव्वेसिं। नाणादीणं होती पभवो पभुइत्ति एगट्ठा ॥३॥ आयरियत्ते पभविए तेण वियारो उ दिज्जइ गणो से। तदुभयहियंति भन्नइ इहपरलोगे य जेण हियं ॥४॥ गणधरमेर धरेती जम्हा ऊ तेण होति मज्जादा। करणिज्जो कप्पोत्ति य कप्पो गणकप्प समणे(करणा)णं ॥५॥ नाणादि मोक्खमग्गो सुत्त(सो त)म्मि ठितोत्ति तो भवति मग्गो। जम्हा उ णायकारी णाओ वा एस तो णातो ॥६॥ दव्वे भावे संगहो॑ दव्वे आहारव- त्थमादीहिं। भावे नाणादीहि॑ उ संगेण्हति संगहो तेण ॥७॥ दुविहेण संवरेणं इंदियनोइंदिएहिं जम्हा उ। अप्पाण गणं च तहा संवरयति संवरो तम्हा ॥८॥ गणधारणमगिलाए कुणमाणो निज्जरेइ कम्माइं। अन्ने य निज्जरावे तम्हा ऊ निज्जरा होइ ॥९॥ वाएरिता लता इव पकंपमाणाण तरुणमादीणं। होइ थिरावट्टंभो तरुव्व थिरकरण तेणं तु ॥ २६३०॥ जम्हा उ अवोच्छित्ती सो कुणई नाणचरणमाईणं। तम्हा खलु अच्छेदं गुणप्पसिद्धं हवति णामं ॥१॥ तित्थकरेहिं कयमिणं गणधारीणं तु तेहिं सीसाणं। तत्तो परंपरेणं आयमिणं तेण जीयं तु ॥२॥ वड्ढइ य नाणचरणे गणं तु जम्हा उ तेण वुड्ढिपदं। पवरं पहाणमेयं सव्वेसिं रायदेवाणं ॥३॥ इति एसऽणुन्नकप्पो जहाविही वन्निओ समासेणं। ठवणाकप्पं एत्तो वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥४॥ तिविहो ठवणाकप्पो कुले गणे चेव तह य संघे य। एतेसिं॑ परूवणयं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥५॥ कुलथेरेहिं गणेण व जा मेरा ठाविता भवे नियमा। सो कुलठवणाकप्पो एव गणे होइ संघे य ॥.'.१८२॥६॥ केरिसया पुण थेरा कुलगणसंघाण होंति उ पमाणं?। भण्ण सुणसू इणमो जेहिं गुणेहिं तु ते जुत्ता ॥७॥ कप्पाकप्पविहिण्णू सुत्तत्थविसारया सुतरहस्सा। जे चरणकरणजुत्ता ते सुद्धनयाण उ पमाणं ॥८॥ कप्पाकप्पविहिण्णू सुत्तत्थविसारया सुयरहस्सा। जे चरणकरणहीणा ते सुद्धणयाण भइयव्वा ॥९॥ नेयव्वा खलु क(अ)ज्जा असती चरणट्ठियाण थेराणं। हीणोवि सुयसमिद्धो मज्झत्थो होइ उ पमाणं ॥२६४०॥ कह पुण ठाविज्जंते ते उ पमाणं तु तेसु ठाणेसु। कुलगणसंघा थेरा? भण्णइ इणमो निसामेहि ॥१॥ इच्छंकारनिउत्तो पियधम्मो तिण्ह कोइ एक्कतरो। सो होति तिगत्थेरो तिगचरित्तवियाणओ वी(धी)रो ॥२॥ नाऊण गुणसमिद्धं जोगं तु कुलादिथे रठाणस्स। काऊणिच्छाकारं कुलादिणो वेंति तो इणमो ॥३॥ उब्भे होह पमाणं कुलथेरा थेरठाणजोगं तु। एवं तु कुलादीहिं तिगथेरा ऊ ठविज्जंति ॥४॥ तिगचरितं जाणइत्ति चरित्त मज्जायमेव एगट्ठा। तं तु तहाविहि जाणइ तिण्हंपि कुलादिठाणाणं ॥५॥ पासत्थोसन्नकुसीलठाणपरिरक्खतो दुपक्खेवि। सो होति तिगत्थेरो तिगथेरगुणेहिं उवउत्तो ॥६॥ पासत्थादीठाणे ण वट्टती एस रक्खओ होइ। अहवा सति सद्धा(यसत्ती)ए पासत्थादीवि पालेइ ॥७॥ परिहुज्जंते रागादि रक्खिते साहुसाहुणिदुपक्खे। अहवा अप्पाण परे तिगथेरो संघथेरो उ ॥८॥ एसो ऊ तिगथेरो तिगथेरगुणेहिं होति संपन्नो। अहुणा वीसुं वीसुं कुलादिथेरे पवक्खामि ॥९॥ चरणकरणे समग्गो जो जत्थ जदा कुल- प्पहाणो उ। सो होइ कुलत्थेरो कुलचरियवियारओ धीरो ॥२६५०॥ पासत्थोसन्नकुसीलठाणपरिरक्खतो दुपक्खेवि। सो होइ कुलत्थेरो कुलथेरगुणेहिं उवउत्तो ॥१॥ चरणकरणे समग्गो जो जत्थ जदा गणप्पहाणो उ। सो होइ गणत्थेरो गणचरियवियाणओ वी(धी)रो ॥२॥ पासत्थोसन्नकुसीलठाणपरिरक्खओ दुपक्खेवि। सो होइ गणत्थेरो गणथेरगुणेहिं उवउत्तो ॥३॥ चरणकरणे समग्गो जो जत्थ जदा जुगप्पहाणो उ। सो होइ संघथेरो सीतघरसमो पुरिससीहो ॥४॥ एसो उ मूलसंघो आपुच्छणगमणकरणकज्जेसु। हितसुहनिस्सेसकडो कुलगणसंघऽप्पणो चेव ॥५॥ दंसणनाणचरित्ते जा पुव्व परूवणाऽऽयरणया य। एसो उ मूलसंघो तिविहा थेरा करणजुत्ता ॥६॥ पुव्विंपि परू- विज्जा आयारादीसु वन्नियचरित्ते। तं सम्ममायरंतो हवति तु संघो तहा थेरो ॥७॥ जो सो हीणचरित्तो अण्णस्स असतीत पुव्वभणितो उ। कुलथेरातिं ठविज्जति तस्सुवदेसो इमो होइ ॥८॥ होज्ज वसणसंपत्तो सरीरमायंकता अस- हुओ वा। चरणकरणे असत्तो सुद्धं मग्गं परूविज्जा ॥.'. १८३॥९॥ वसणं वाजीमादी सूलजरादी तु होइ आतंको। धितिसारीरबलेणं हीणो असहू मुणेयव्वो ॥२६६०॥ एएहिं कारणेहिं अकप्पपडिसेवणं करेंतो उ। सुद्धं मग्ग परूवे अप्पाहणिया अओ एत्तो ॥१॥ कप्पपणयस्स भेदा सोच्चा णच्चा तहेव घेत्तूणं। चरणकरणे विसुद्धे आयरणपरूवणं कुणह ॥२॥ आयरियसगासाओ सोच्चा णच्चा य घेत्तुमत्थेणं। हियए ववत्थवेउं आयरण परूवणा कुज्जा ॥३॥ कप्पपणगस्स भेदो परूविओ मोक्खसाहणट्ठाए। जं चरिऊण सुविहिया करेंति दुक्खक्खयं धीरा ॥४॥ पंचविहसुत्तकप्पाण विभासा वित्थरं पमोत्तूणं। गहिया सीसहियट्ठा अव्वोच्छित्तट्ठया चेव ॥२६६५॥ (सव्वसुयसमूहमयी वामकरग्गहियपोत्थया देवी। जक्खकुहंडीसहिया देंतु अविग्घं भणंताणं ॥१ प्र०॥) जैनसाहित्यसुधापानपीनश्रीपुण्यविजयजीविहितादर्शादुत्कीर्णमिदं पंचकल्पच्छेदभाष्यं सिद्धान्तितलहट्टिकागतश्रीआगममंदिरे वीरविभोः २४६९

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भाग 27	पंचकल्प-छेदसूत्र [५/२] ‘मूलं’ परिसमाप्त: मूल संशोधकः सम्पादकश्च पूज्य आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब किंचित् वैशिष्ट्य समर्पितेन सह पुनः संकलनकर्ता मुनि दीपरत्नसागरजी [M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

i

[३९] श्री महानिशीथ (छेदसूत्रम्-६)

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

“महानिशीथ” मूलं

[मूलं एव]

[आद्य संपादकश्री]

पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म॰ सा॰

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D.,श्रुतमहर्षि)

28/07/2017, शुक्रवार, २०७३ श्रावण शुक्ल ५ ‘सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि’ श्रेणि भाग-२७

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [१] + गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [१]

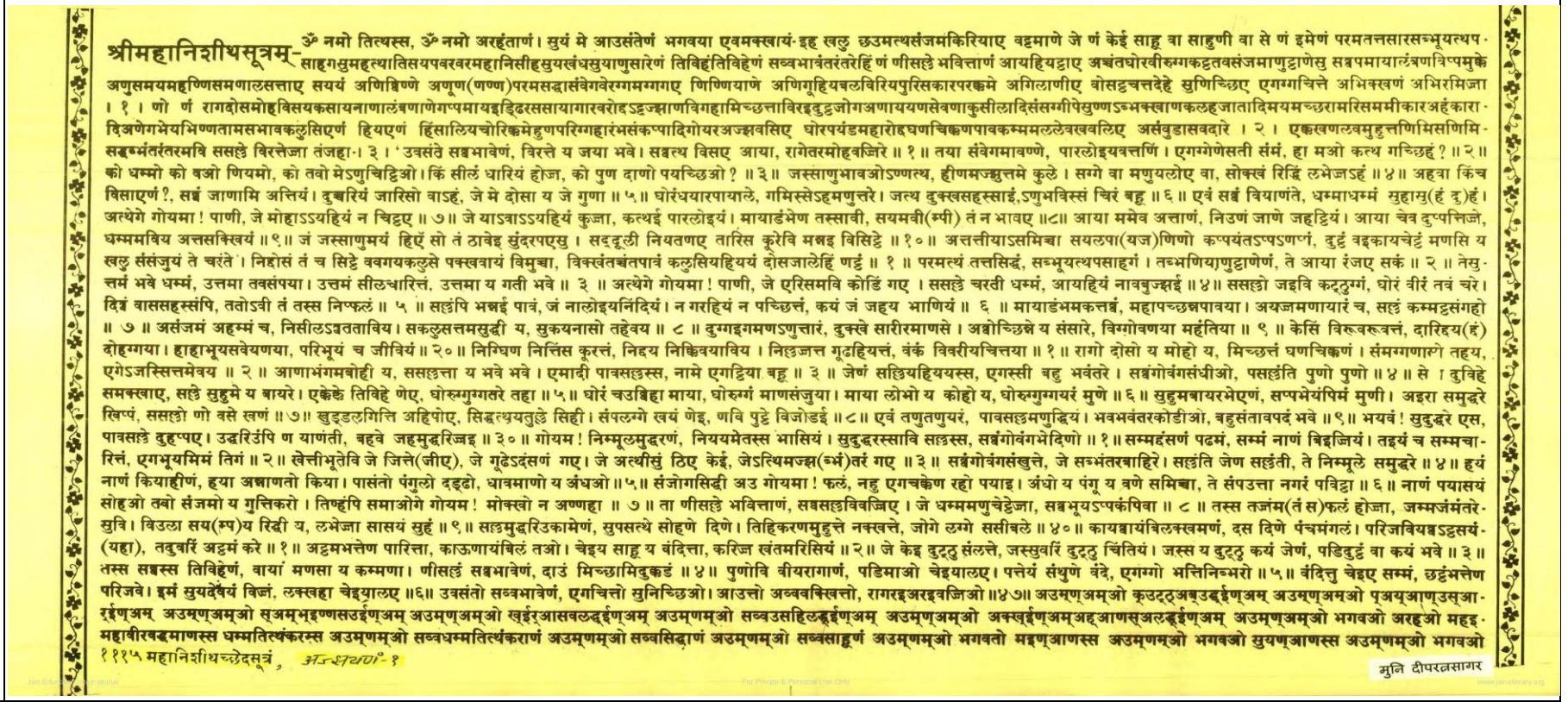

श्रीमहानिशीथसूत्रम्- ॐ नमो तित्थस्स, ॐ नमो अरहंताणं। सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु छउमत्थसंजमकिरियाए वट्टमाणे जे णं केई साहू वा साहुणी वा से णं इमेणं परमतत्तसारसब्भूयत्थप-साहगसुमहत्थातिसयपवरवरमहानिसीहसुयखंधसुयाणुसारेणं तिविहंतिविहेणं सव्वभावंतरंतरेहिं णं णीसल्ले भवित्ताणं आयहियट्ठाए अच्चंतघोरवीरुग्गकट्ठतवसंजमाणुट्ठाणेसु सव्वपमायालंबणविप्पमुक्के अणुसमयमहण्णिसमणालसत्ताए सययं अणिव्विण्णे अणूण(णण्ण)परमसद्धासंवेगवेरग्गमग्गगए णिण्णियाणे अणिगूहियबलविरियपुरिसकारपरक्कमे अगिलाणीए वोसट्ठचत्तदेहे सुणिच्छिए एगग्गचित्ते अभिक्खणं अभिरमिज्जा । १ । णो णं रागदोसमोहविसयकसायनाणालंबणाणेगप्पमायइड्ढिरससायागारवरोहदट्ठज्झाणविगहाभिच्छत्ताविरइदुट्ठजोगअणाययणसेवणाकुसीलादिसंसग्गीपेसुण्णऽब्भक्खाणकलहजातादिमयमच्छरामरिसमभीकारअहंकारा-दिअणेगभेयभिण्णतामसभावकलुसिएणं हियएणं हिंसालियचोरिक्कमेहुणपरिग्गहारंभसंकप्पादिगोयरअज्झवसिए घोरपयंडमहारोद्दघणचिक्कणपावकम्ममललेवखवलिए असंवुडासवदारे । २ । एक्कखणल्लवमुहुत्तणिमिसणिमि-सद्धब्भंतरंतरमवि ससल्ले विरत्तेज्जा तंजहा-। ३ । ‘उवसंते सव्वभावेणं, विरत्ते य जया भवे। सव्वत्थ विसए आया, रागेतरमोहवज्जिरे ॥ १ ॥ तया संवेगमावण्णे, पारलोइयवत्तणिं । एगग्गेणेसती संमं, हा मओ कत्थ गच्छिहं? ॥ २ ॥ को धम्मो को वओ णियमो, को तवो मेऽणुचिट्ठिओ। किं सीलं धारियं होज्ज, को पुण दाणो पयच्छिओ? ॥ ३ ॥ जस्साणुभावओऽण्णत्थ, हीणमज्झुत्तमे कुले । सग्गे वा मणुयलोए वा, सोक्खं रिद्धिं लभेज्जऽहं ॥ ४ ॥ अहवा किंच विसाएणं?, सव्वं जाणामि अत्तियं। दुच्चरियं जारिसो वाऽहं, जे मे दोसा य जे गुणा ॥ ५ ॥ घोरंधयारपापाले, गमिस्सेऽहमणुत्तरे। जत्थ दुक्खसहस्साइं,ऽणुभविस्सं चिरं बहू ॥ ६ ॥ एवं सव्वं वियाणंते, धम्माधम्मं सुहासु(हं दु)हं। अत्थेगे गोयमा! पाणी, जे मोहाऽऽयहियं न चिट्ठए ॥ ७ ॥ जे याऽवाऽऽयहियं कुज्जा, कत्थई पारलोइयं। मायाडंभेण तस्सावी, सयमवी(म्पी) तं न भावए ॥८॥ आया ममेव अत्ताणं, निउणं जाणे जहट्ठियं। आया चेव दुप्पन्निज्जे, धम्ममविय अत्तसक्खियं ॥९॥ जं जस्साणुमयं हिएँ सो तं ठावेइ सुंदरपएसु। सद्दूली नियतणए तारिस कूरेवि मन्नइ विसिट्ठे ॥ १० ॥ अत्तत्तीयाऽसमिक्खा सयलपा(यज)णिणो कप्पयंतऽप्पऽणण्णं, दुट्ठं वइकायचेट्ठं मणसि य खलु संसंजुयं ते चरंते। निहोसं तं च सिट्ठे ववगयकलुसे पक्खवायं विमुच्चा, विक्खंतचंतपावं कलुसियहियय दोसजालेहिं णट्ठं ॥ १ ॥ परमत्थं तत्तसिद्धं, सब्भूयत्थपसाहगं। तब्भणिय(णु)ट्ठाणेणं, ते आया रंजए सकं ॥ २ ॥ तेसु-त्तमं भवे धम्मं, उत्तमा तवसंपया। उत्तमं सीलधारित्तं, उत्तमा य गती भवे ॥ ३ ॥ अत्थेगे गोयमा! पाणी, जे एरिसमवि कोडिं गए । ससल्ले चरती धम्मं, आयहियं नावबुज्झई ॥ ४ ॥ ससल्लो जइवि कट्ठुग्गं, घोरं वीरं तवं चरे। दिवं वाससहस्संपि, ततोऽवी तं तस्स निप्फलं ॥ ५ ॥ सल्लंपि भन्नई पावं, जं नालोइयनिंदियं। न गरहियं न पच्छित्तं, कयं जं जहय भाणियं ॥ ६ ॥ मायाडंभमकत्तव्वं, महापच्छन्नपावया। अयज्जमणायारं च, सल्लं कम्मट्ठसंगहो ॥ ७ ॥ असंजमं अहम्मं च, निसीलऽव्वततावियं। सकलुसत्तमसुद्धी य, सुकयनासो तहेवय ॥ ८ ॥ दुग्गइगमणऽणुत्तारं, दुक्खे सारीरमाणसे। अबोच्छिन्ने य संसारे, विग्गोवणया महंतिया ॥ ९ ॥ केसिं विरूवरूवत्तं, दारिद्दय(द्दं) दोहग्गया। हाहाभूयसवेयणया, परिभूयं च जीवियं ॥ २० ॥ निग्घिण नित्तिंस कूरत्तं, निद्दय निक्किवयाविय । निल्लज्जत्त गूढहियत्तं, वंकं विवरीयचित्तया ॥ १ ॥ रागो दोसो य मोहो य, मिच्छत्तं घणचिक्कणं । संमग्गणाम्मो तहय, एगेऽजस्सित्तमेवय ॥ २ ॥ आणाभंगमबोही य, ससल्लत्ता य भवे भवे । एमादी पावसल्लस्स, नामे एगट्ठिया बहू ॥ ३ ॥ जेणं सल्लियहिययस्स, एगस्सी बहु भवंतरे । सव्वंगोवंगसंधीओ, पसल्लंति पुणो पुणो ॥ ४ ॥ से ा दुविहे समक्खाए, सल्ले सुहुमे य बायरे। एक्केक्के तिविहे णेए, घोरुग्गुग्गतरे तहा ॥ ५ ॥ घोरं चउव्विहा माया, घोरुग्गं माणसंजुया। माया लोभो य कोहो य, घोरुग्गुग्गयरं मुणे ॥ ६ ॥ सुहुमबायरभेएणं, सप्पभेयंपिमं मुणी। अइरा समुद्धरे खिप्पं, ससल्लो णो वसे खणं ॥ ७ ॥ खुड्डलगित्ति अहिपोए, सिद्धत्थयतुल्ले सिही। संपलग्गे खयं णेइ, णवि पुट्ठे विजोडई ॥ ८ ॥ एवं तणुतणुयरं, पावसल्लमणुद्धियं। भवभवंतरकोडीओ, बहुसंतावपदं भवे ॥ ९ ॥ भयवं! सुदुद्धरे एस, पावसल्ले दुहप्पए। उद्धरिउंपि ण याणंती, बहवे जहमुद्धरिज्जइ ॥ ३० ॥ गोयम! निम्मूलमुद्धरणं, निययमेतस्स भासियं। सुदुद्धरस्सावि सल्लस्स, सव्वंगोवंगभेदिणो ॥ १ ॥ सम्मद्दंसणं पढमं, सम्मं नाणं बिइज्जियं। तइयं च सम्मचा-रित्तं, एगभूयमिमं तिगं ॥ २ ॥ खेत्तीभूतेवि जे जित्ते(जीए), जे गूढेऽदंसणं गए। जे अत्थीसुं ठिए केई, जेऽत्थिमज्झ(ब्भं)तरं गए ॥ ३ ॥ सव्वंगोवंगसंखुत्ते, जे सब्भंतरबाहिरे। सल्लंति जेण सल्लंती, ते निम्मूले समुद्धरे ॥ ४ ॥ हयं नाणं कियाहीणं, हया अन्नाणतो किया। पासंतो पंगुलो दड्ढो, धावमाणो य अंधओ ॥ ५ ॥ संजोगसिद्धी अउ गोयमा! फलं, नहु एगचक्केण रहो पयाइ। अंधो य पंगू य वणे समिच्चा, ते संपउत्ता नगरं पविट्ठा ॥ ६ ॥ नाणं पयासयं सोहओ तवो संजमो य गुत्तिकरो। तिण्हंपि समाओगे गोयम! मोक्खो न अण्णहा ॥ ७ ॥ ता णीसल्ले भवित्ताणं, सव्वसल्लविवज्जिए। जे धम्ममणुचेट्ठेज्जा, सव्वभूयऽप्पकंपिवा ॥ ८ ॥ तस्स तज्जंम(तं स)फलं होज्जा, जम्मजंमंतरे-सुवि। विउला सय(स्प)य रिद्धी य, लभेज्जा सासयं सुहं ॥ ९ ॥ सल्लमुद्धरिउकामेणं, सुपसत्थे सोहणे दिणे। तिहिकरणमुहुत्ते नक्खत्ते, जोगे लग्गे ससीबले ॥ ४० ॥ कायव्वायंचिलक्खमणं, दस दिणे पंचमंगलं। परिजवियव्वऽट्ठसयं-(यहा), तदुवरिं अट्ठमं करे ॥ १ ॥ अट्ठमभत्तेण पारित्ता, काऊणायंबिलं तओ। चेइय साहू य वंदित्ता, करिज्ज खंतमरिसियं ॥ २ ॥ जे केइ दुट्ठु संलत्ते, जस्सुवरिं दुट्ठु चिंतियं। जस्स य दुट्ठु कयं जेणं, पडिदुट्ठं वा कयं भवे ॥ ३ ॥ तस्स सव्वस्स तिविहेणं, वायां मणसा य कम्मणा। णीसल्लं सव्वभावेणं, दाउं मिच्छामिदुक्कडं ॥ ४ ॥ पुणोवि वीयरागाणं, पडिमाओ चेइयालए। पत्तेयं संथुणे वंदे, एगग्गो भत्तिनिब्भरो ॥ ५ ॥ वंदित्तु चेइए सम्मं, छट्ठंभत्तेण परिजवे। इमं सुयदेवेयं विज्जं, लक्खहा चेइयालए ॥६॥ उवसंतो सव्वभावेणं, एगचित्तो सुनिच्छिओ। आउत्तो अव्ववक्खित्तो, रागरद्दअरइवज्जिओ ॥४७॥ अउमण्अमओ कुउट्ठअबुउद्दईण्अम् अउमण्अमओ पुअयुआण्उस्आ-रुईण्अम् अउमण्अमओ सुअमभइण्णसउईण्अम् अउमण्अमओ खईरआसवलद्धईण्अम् अउमणमओ सव्वउसहिलद्धईण्अम् अउमण्अमओ अक्खईण्अम्अहआणस्अलद्धईण्अम् अउमण्अमओ भगवओ अरहओ महइ-महावीरवद्धमाणस्स धम्मतित्थंकरस्स अउमणमओ सव्वधम्मतित्थंकराणं अउमणमओ सव्वसिद्धाणं अउमणमओ सव्वसाहूणं अउमणमओ भगवतो महुआणस्स अउमणमओ भगवओ सुयण्आणस्स अउमणमओ भगवओ

मुनि दीपरत्नसागर

अत्र प्रथमं अध्ययनं- “शल्यउद्धरणं” आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [४] + गाथा ॥४८॥ दीप अनुक्रम [५१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

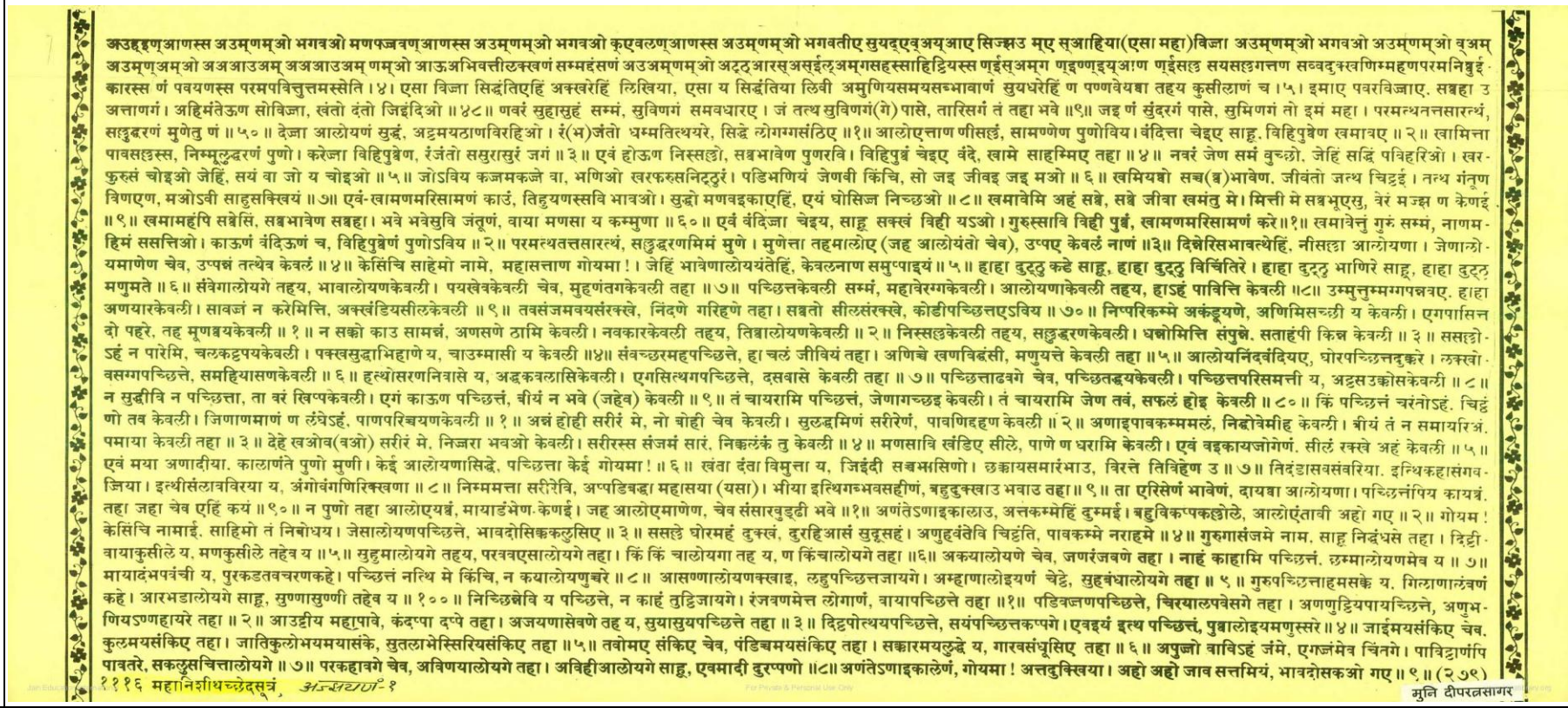

अउहट्टण्आणस्स अउम्णम्ओ भगवओ मणपज्जवण्आणस्स अउम्णम्ओ भगवओ कूएवलण्आणस्स अउम्णम्ओ भगवतीए सुयद्एव्अय्आए सिज्झउ म्ए स्आहिया(एसा महा)विज्ा अउम्णम्ओ भगवओ अउम्णम्ओ व्अम्
अउम्ण्अम्ओ अअआउअम् अअआउअम् णम्ओ आऊअभिवत्तीलक्खणं सम्महंसणं अउअम्णम्ओ अट्ठ्आरस्असुईल्अम्गसहस्साहिट्ठियस्स णुईस्अम्ग ण्इण्ण्इय्आण णुईसह्ड सयसह्डगत्तण सव्वदुक्खणिम्महणपरमनिबुई-
कारस्स णं पवयणस्स परमपवित्तुत्तमस्सेति ।४। एसा विज्ा सिद्धंतिएहिं अक्खरेहिं लिखिया, एसा य सिद्धंतिया लिवी अमुणियसमयसब्भावाणं सुयधरेहिं ण पण्णवेयव्वा तहय कुसीलाणं च ।५। इमाए पवरविज्ाए. सव्वहा उ
अत्ताणगं। अहिमंतेऊण सोविज्ा, खंतो दंतो जिइंदिओ ॥४८॥ णवरं सुहासुहं सम्मं, सुविणगं समवधारए । जं तत्थ सुविणगं(गे) पासे, तारिसगं तं तहा भवे ॥९॥ जइ णं सुंदरगं पासे, सुमिणगं तो इमं महा । परमन्थनत्तसारत्थं,
सह्डरणं मुणेतु णं ॥ ५० ॥ देज्ा आलोयणं सुद्धं, अट्ठमयठाणविरहिओ । रं(भ)जंतो धम्मतित्थयरे, सिद्धे लोगग्गसंठिए ॥१॥ आलोएत्ताण णीसल्लं, सामण्णेण पुणोविय। वंदित्ता चेइए साहू. विहिपुव्वेण खमावए ॥ २ ॥ खामित्ता
पावसल्लस्स, निम्मूलुद्धरणं पुणो। करेज्ा विहिपुव्वेण, रंजंतो ससुरासुरं जगं ॥ ३ ॥ एवं होऊण निस्सल्लो, सव्वभावेण पुणरवि। विहिपुव्वं चेइए वंदे, खामे साहम्मिए तहा ॥ ४ ॥ नवरं जेण समं वुच्छो, जेहिं सद्धिं पविहरिओ। खर-
फुरुसं चोइओ जेहिं, सयं वा जो य चोइओ ॥ ५ ॥ जोऽविय कज्जमकज्जे वा, भणिओ खरफरुसनिट्ठुरं। पडिभणियं जेणवी किंचि, सो जइ जीवइ जइ मओ ॥ ६ ॥ खमियव्वो सच्च(व्व)भावेण. जीवंतो जत्थ चिट्ठई । तत्थ गंतूण
विणएण, मओऽवी साहुसक्खियं ॥ ७॥ एवं-खामणमरिसामणं काउं, तिहुयणस्सवि भावओ। सुद्धो मणवइकाएहिं, एयं घोसिज्ज निच्छओ ॥ ८ ॥ खमावेमि अहं सव्वे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ ण केणई
॥ ९ ॥ खमामहंपि सव्वेसिं, सव्वभावेण सव्वहा। भवे भवेसुवि जंतूणं, वाया मणसा य कम्मुणा ॥ ६० ॥ एवं वंदिज्ा चेइय, साहू सक्खं विही यऽओ । गुरुस्सावि विही पुव्वं, खामणमरिसामणं करे॥१॥ खमावेत्तुं गुरुं सम्मं, नाणम-
हिमं ससत्तिओ। काऊणं वंदिऊणं च, विहिपुव्वेणं पुणोऽविय ॥ २ ॥ परमत्थतत्तसारत्थं, सह्डरणमिमं मुणे । मुणेत्ता तहमालोए (जह आलोयंतो चेव), उप्पए केवलं नाणं ॥३॥ दिन्नेरिसभावत्थेहिं, नीसल्ला आलोयणा । जेणालो-
यमाणेण चेव, उप्पन्नं तत्थेव केवलं ॥ ४ ॥ केसिंचि साहेमो नामे, महासत्ताण गोयमा ! । जेहिं भावेणालोययंतेहिं, केवलनाण समुप्पाइयं ॥ ५ ॥ हाहा दुट्ठु कडे साहू, हाहा दुट्ठु विचिंतिरे । हाहा दुट्ठु भाणिरे साहू, हाहा दुट्ठ
मणुमते ॥ ६ ॥ संवेगालोयगे तहय, भावालोयणकेवली । पयखेवकेवली चेव, मुहणंतगकेवली तहा ॥ ७ ॥ पच्छित्तकेवली सम्मं, महावेरग्गकेवली । आलोयणाकेवली तहय, हाऽहं पावित्ति केवली ॥८॥ उम्मुत्तुम्मग्गपन्नवए. हाहा
अणयारकेवली। सावज्जं न करेमित्ति, अक्खंडियसीलकेवली ॥ ९ ॥ तवसंजमवयसंरक्खे, निंदणे गरिहणे तहा। सव्वतो सीलसंरक्खे, कोडीपच्छित्तएऽविय ॥ ७० ॥ निप्परिकम्मे अकंडूयणे, अणिमिसच्छी य केवली। एगपासित्त
दो पहरे, तह मूणव्वयकेवली ॥ १ ॥ न सक्को काउ सामन्नं, अणसणे ठामि केवली। नवकारकेवली तहय, तिव्वालोयणकेवली ॥ २ ॥ निस्सल्लकेवली तहय, सल्लुद्धरणकेवली। धन्नोमित्ति संपुन्ने. सताहंपी किन्न केवली ॥ ३ ॥ ससल्लो-
ऽहं न पारेमि, चलकट्ठपयकेवली । पक्खसुद्धाभिहाणे य, चाउम्मासी य केवली ॥४॥ संवच्छरमहपच्छित्ते, हा चलं जीवियं तहा। अणिच्चे खणविद्धंसी, मणुयत्ते केवली तहा ॥५॥ आलोयनिंदवंदियए, घोरपच्छित्तदुक्करे । लक्खो-
वसग्गपच्छित्ते, समहियासणकेवली ॥ ६ ॥ हत्थोसरणनिवासे य, अद्धकवलासिकेवली। एगसित्थगपच्छित्ते, दसवासे केवली तहा ॥ ७ ॥ पच्छित्ताढवगे चेव, पच्छितद्धयकेवली। पच्छित्तपरिसमत्ती य, अट्ठसउक्कोसकेवली ॥ ८ ॥
न सुद्धीवि न पच्छित्ता, ता वरं खिप्पकेवली। एगं काऊण पच्छित्तं, बीयं न भवे (जहेव) केवली ॥ ९ ॥ तं चायरामि पच्छित्तं, जेणागच्छइ केवली। तं चायरामि जेण तवं, सफलं होइ केवली ॥ ८० ॥ किं पच्छित्तं चरंतोऽहं. चिट्ठं
णो तव केवली। जिणाणमाणं ण लंघेऽहं, पाणपरिच्चयणकेवली ॥ १ ॥ अन्नं होही सरीरं मे, नो बोही चेव केवली। सुलद्धमिणं सरीरेणं, पावणिहहण केवली ॥ २ ॥ अणाइपावकम्ममलं, निद्धोवेमीह केवली। बीयं तं न समायरिअं.
पमाया केवली तहा ॥ ३ ॥ देहे खओव(वओ) सरीरं मे, निज्जरा भवओ केवली। सरीरस्स संजमं सारं, निक्कलंकं तु केवली ॥ ४ ॥ मणसावि खंडिए सीले, पाणे णं धरामि केवली। एवं वइकायजोगेणं. सीलं रक्खे अहं केवली ॥ ५ ॥
एवं मया अणादीया. कालाणंते पुणो मुणी। केई आलोयणासिद्धे, पच्छित्ता केई गोयमा ! ॥ ६ ॥ खंता दंता विमुत्ता य, जिइंदी सव्वभासिणो। छक्कायसमारंभाउ, विरत्ते तिविहेण उ ॥ ७ ॥ तिदंडासवसंवरिया. इत्थिकहासंगव-
ज्जिया। इत्थीसंलावविरया य, अंगोवंगणिरिक्खणा ॥ ८ ॥ निम्ममत्ता सरीरेवि, अप्पडिबद्धा महासया (यसा)। भीया इत्थिगब्भवसहीणं, बहुदुक्खाउ भवाउ तहा ॥ ९ ॥ ता एरिसेणं भावेणं, दायव्वा आलोयणा। पच्छित्तंपिय कायव्वं.
तहा जहा चेव एहिं कयं ॥ ९० ॥ न पुणो तहा आलोएयव्वं, मायाडंभेण.केणई। जह आलोएमाणेण, चेव संसारवुड्ढी भवे ॥१॥ अणंतेऽणाइकालाउ, अत्तकम्मेहिं दुम्मई। बहुविकप्पकल्लोले, आलोएंतावी अहो गए ॥ २ ॥ गोयम !
केसिंचि नामाई. साहिमो तं निबोधय। जेसालोयणपच्छित्ते, भावदोसिक्कलुसिए ॥ ३ ॥ ससल्ले घोरमहं दुक्खं, दुरहिआसं सुदूसहं। अणुहवंतेवि चिट्ठंति, पावकम्मे नराहमे ॥ ४ ॥ गुरुगासंजमे नाम. साहू निद्धंधसे तहा। दिट्ठी-
वायाकुसीले य, मणकुसीले तहेव य ॥ ५ ॥ सुहुमालोयगे तहय, परवत्थएसालोयगे तहा। किं किं चालोयगा तह य, ण किंचालोयगे तहा ॥६॥ अकयालोयणे चेव, जणरंजवणे तहा । नाहं काहामि पच्छित्तं. छम्मालोयणमेव य ॥ ७ ॥
मायादंभपवंची य, पुरकडतवचरणकहे। पच्छित्तं नत्थि मे किंचि, न कयालोयणुचरे ॥ ८ ॥ आसण्णालोयणक्खाइ, लहुपच्छित्तजायगे। अम्हाणालोइयणं चेट्टे, सुहबंधालोयगे तहा ॥ ९ ॥ गुरुपच्छित्ताहमसके य. गिलाणालंवणं
कहे। आरभडालोयगे साहू, सुण्णासुण्णी तहेव य ॥ १०० ॥ निच्छिन्नेवि य पच्छित्ते, न काहं तुट्ठिजायगे। रंजवणमेत्त लोगाणं, वायापच्छित्ते तहा ॥१॥ पडिवज्जणपच्छित्ते, चिरयालपवेसगे तहा । अणणुट्ठियपायच्छित्ते, अणुभ-
णियऽण्णहायरे तहा ॥ २ ॥ आउट्टीय महापावे, कंदप्पा दप्पे तहा। अजयणासेवणे तह य, सुयासुयपच्छित्ते तहा ॥ ३ ॥ दिट्ठपोत्थयपच्छित्ते, सयंपच्छित्तकप्पगे।एवइयं इत्थ पच्छित्तं, पुव्वालोइयमणुस्सरे ॥ ४ ॥ जाईमयसंकिए चेव.
कुलमयसंकिए तहा। जातिकुलोभयमयासंके, सुतलाभेस्सिरियसंकिए तहा ॥५॥ तवोमए संकिए चेव, पंडिच्चमयसंकिए तहा । सक्कारमयलुद्धे य, गारवसंधूसिए तहा ॥ ६ ॥ अपुज्जो वाविऽहं जंमे, एगज्जंमेव चिंतगे। पाविट्ठाणंपि
पावतरे, सकलुसचित्तालोयगे ॥ ७॥ परकहावगे चेव, अविणयालोयगे तहा। अविहीआलोयगे साहू, एवमादी दुरप्पणो ॥८॥ अणंतेऽणाइकालेणं, गोयमा ! अत्तदुक्खिया। अहो अहो जाव सत्तमियं, भावदोसकओ गए ॥ ९ ॥ (२७९)

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [६] + गाथा ||११०|| दीप अनुक्रम [११५]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

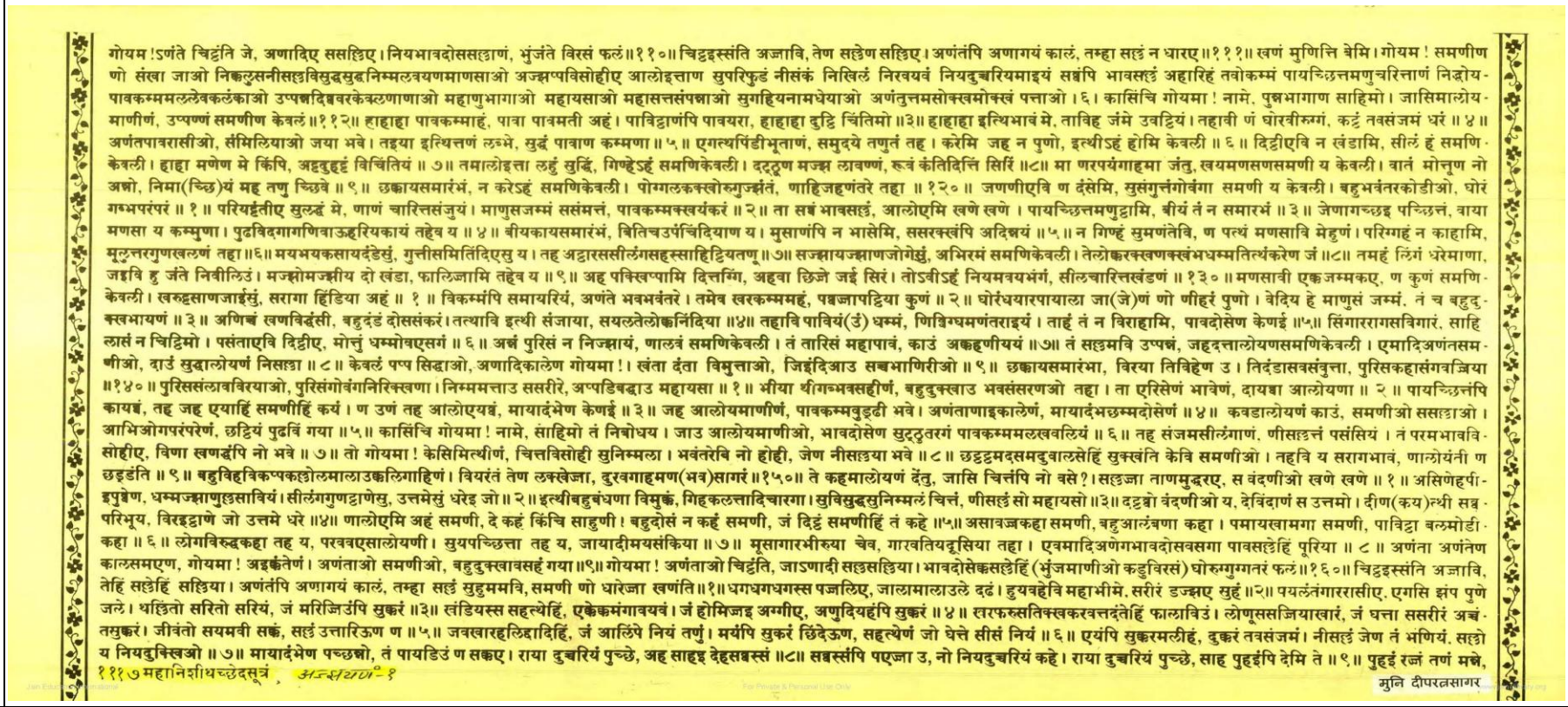

गोयम !ऽणंते चिट्ठंति जे, अणादिए ससल्लिए। नियभावदोससल्लाणं, भुंजंते विरसं फलं॥११०॥ चिट्ठइस्संति अज्जावि, तेण सल्लेण सल्लिए। अणंतंपि अणागयं कालं, तम्हा सल्लं न धारए॥१११॥ खणं मुणित्ति बेमि। गोयम ! समणीण णो संखा जाओ निक्कलुसनीससल्लविसुद्धसुद्धनिम्मलवयणमाणसाओ अज्झप्पविसोहीए आलोइत्ताण सुपरिफुडं नीसंकं निखिलं निरवयवं नियदुच्चरियमाइयं सव्वंपि भावसल्लं अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तमणुचरित्ताणं निद्धोय-पावकम्ममलले वकलंकाओ उप्पन्नदिव्ववरकेवलणाणाओ महाणुभागाओ महायसाओ महासत्तसंपन्नाओ सुगहियनामधेयाओ अणंतुत्तमसोक्खमोक्खं पत्ताओ। ६। कासिंचि गोयमा ! नामे, पुन्नभागाण साहिमो। जासिमालोय-माणीणं, उप्पण्णं समणीण केवलं॥११२॥ हाहाहा पावकम्माहं, पावा पावमती अहं। पाविट्ठाणंपि पावयरा, हाहाहा दुट्ठि चिंतिमो॥३॥ हाहाहा इत्थिभावं मे, ताविह जंमे उवट्ठियं। तहावी णं घोरवीरुग्गं, कट्टं तवसंजमं धरं॥४॥ अणंतपावरासीओ, संमिलियाओ जया भवे। तइया इत्थित्तणं लब्भे, सुद्धं पावाण कम्मणा॥५॥ एगत्थपिंडीभूताणं, समुदये तणुतं तह। करेमि जह न पुणो, इत्थीऽहं होमि केवली॥६॥ दिट्ठीएवि न खंडामि, सीलं हं समणि-केवली। हाहा मणेण मे किंपि, अट्टदुहट्टं विचिंतियं॥७॥ तमालोइत्ता लहुं सुद्धिं, गिण्हेऽहं समणिकेवली। दट्ठूण मज्झ लावण्णं, रूवं कंतिदित्तिं सिरिं॥८॥ मा णरपयंगाहमा जंतु, खयमणसणसमणी य केवली। वातं मोत्तूण नो अन्नो, निमा(च्छि)यं मह तणु च्छिवे॥९॥ छक्कायसमारंभं, न करेऽहं समणिकेवली। पोग्गलकक्खोरुगुज्झंतं, णाहिजहणंतरे तहा॥१२०॥ जणणीएवि ण दंसेमि, सुसंगुत्तंगोवंगा समणी य केवली। बहुभवंतरकोडीओ, घोरं गब्भपरंपरं॥१॥ परियट्टंतीए सुल्लद्धं मे, णाणं चारित्तसंजुयं। माणुसजम्मं ससंमत्तं, पावकम्मक्खयंकरं॥२॥ ता सव्वं भावसल्लं, आलोएमि खणे खणे। पायच्छित्तमणुट्ठामि, बीयं तं न समारभं॥३॥ जेणागच्छइ पच्छित्तं, वाया मणसा य कम्मुणा। पुढविदगागणिवाऊहरियकायं तहेव य॥४॥ बीयकायसमारंभं, वितिचउपंचिंदियाण य। मुसाणंपि न भासेमि, ससरक्खंपि अदिन्नयं॥५॥ न गिण्हं सुमणंतेवि, ण पत्थं मणसावि मेहुणं। परिग्गहं न काहामि, मूलुत्तरगुणखलणं तहा॥६॥ मयभयकसायदंडेसुं, गुत्तीसमितिंदिएसु य। तह अट्ठारससीलंगसहस्साहिट्ठियतणू॥७॥ सज्झायज्झाणजोगेसुं, अभिरमं समणिकेवली। तेलोक्करक्खणक्खंभधम्मतित्थंकरेण जं॥८॥ तमहं लिंगं धरेमाणा, जइवि हु जंते निवीलिउं। मज्झोमज्झीय दो खंडा, फालिज्जामि तहेव य॥९॥ अह पक्खिप्पामि दित्तग्गिं, अहवा छिज्जे जई सिरं। तोऽवीऽहं नियमवयभंगं, सीलचारित्तखंडणं॥१३०॥ मणसावी एकजम्मकए, ण कुणं समणि-केवली। खरुट्टसाणजाईसुं, सरागा हिंडिया अहं॥१॥ विकम्मंपि समायरियं, अणंते भवभवंतरे। तमेव खरकम्ममहं, पव्वज्जापट्टिया कुणं॥२॥ घोरंधयारपायाला जा(जे)णं णो णीहरं पुणो। वेदिय हे माणुसं जम्मं, तं च बहुदु-क्खभायणं॥३॥ अणिच्चं खणविद्धंसी, बहुदंडं दोससंकरं। तत्थावि इत्थी संजाया, सयलतेलोक्कनिंदिया॥४॥ तहावि पावियं(उं) धम्मं, णिविग्घमणंतराइयं। ताहं तं न विराहामि, पावदोसेण केणई॥५॥ सिंगाररागसविगारं, साहि लासं न चिट्ठिमो। पसंताएवि दिट्ठीए, मोत्तुं धम्मोवएसगं॥६॥ अन्नं पुरिसं न निज्झायं, णालवं समणिकेवली। तं तारिसं महापावं, काउं अकहणीययं॥७॥ तं सल्लमवि उप्पन्नं, जहुदत्तालोयणसमणिकेवली। एमादिअणंतसम-णीओ, दाउं सुद्धालोयणं निसल्ला॥८॥ केवलं पप्प सिद्धाओ, अणादिकालेण गोयमा !। खंता दंता विमुत्ताओ, जिइंदिआउ सव्वभाणिरीओ॥९॥ छक्कायसमारंभा, विरया तिविहेण उ। तिदंडासवसंवुत्ता, पुरिसकहासंगवज्जिया॥१४०॥ पुरिससंलावविरयाओ, पुरिसंगोवंगनिरिक्खणा। निम्ममत्ताउ ससरीरे, अप्पडिबद्धाउ महायसा॥१॥ भीया थीगब्भवसहीणं, बहुदुक्खाउ भवसंसरणओ तहा। ता एरिसेणं भावेणं, दायव्वा आलोयणा॥२॥ पायच्छित्तंपि कायव्वं, तह जह एयाहिं समणीहिं कयं। ण उणं तह आलोएयव्वं, मायादंभेण केणई॥३॥ जह आलोयमाणीणं, पावकम्मवुड्ढी भवे। अणंताणाइकालेणं, मायादंभछम्मदोसेणं॥४॥ कवडालोयणं काउं, समणीओ ससल्लाओ। आभिओगपरंपरेणं, छट्टियं पुढविं गया॥५॥ कासिंचि गोयमा ! नामे, साहिमो तं निबोधय। जाउ आलोयमाणीओ, भावदोसेण सुट्ठुतरगं पावकम्ममलखवलियं॥६॥ तह संजमसीलंगाणं, णीसल्लत्तं पसंसियं। तं परमभाववि-सोहीए, विणा खणद्धंपि नो भवे॥७॥ तो गोयमा ! केसिमित्थीणं, चित्तविसोही सुनिम्मला। भवंतरेवि नो होही, जेण नीसल्लया भवे॥८॥ छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं सुक्खंति केवि समणीओ। तहवि य सरागभावं, णालोयंती ण छड्डंति॥९॥ बहुविहविकप्पकल्लोलमालाउक्कलिगाहिणं। वियरंतं तेण लक्खेज्जा, दुरवगाहमण(भव)सागरं॥१५०॥ ते कहमालोयणं देंतु, जासि चित्तंपि नो वसे?। सल्लज्जा ताणमुद्धरए, स वंदणीओ खणे खणे॥१॥ असिणेहपी-इपुव्वेण, धम्मज्झाणुल्लसावियं। सीलंगगुणट्ठाणेसु, उत्तमेसुं धरेइ जो॥२॥ इत्थीबहुबंधणा विमुक्कं, गिहकलत्तादिचारगा। सुविसुद्धसुनिम्मलं चित्तं, णीसल्लं सो महायसो॥३॥ दट्ठव्वो वंदणीओ य, देविंदाणं स उत्तमो। दीण(कय)त्थी सव्व-परिभूय, विरइट्ठाणे जो उत्तमे धरे॥४॥ णालोएमि अहं समणी, दे कहं किंचि साहुणी ! बहुदोसं न कहं समणी, जं दिट्ठं समणीहिं तं कहे॥५॥ असावज्जकहा समणी, बहुआलंबणा कहा। पमायखामगा समणी, पाविट्ठा बलमोडी-कहा॥६॥ लोगविरुद्धकहा तह य, परववएसालोयणी। सुयपच्छित्ता तह य, जायादीमयसंकिया॥७॥ मूसागारभीरुया चेव, गारवतियदूसिया तहा। एवमादिअणेगभावदोसवसगा पावसल्लेहिं पूरिया॥८॥ अणंता अणंतेण कालसमएण, गोयमा ! अट्ठकंतेणं। अणंताओ समणीओ, बहुदुक्खावसहं गया॥९॥ गोयमा ! अणंताओ चिट्ठंति, जाऽणादी सल्लसल्लिया। भावदोसेक्कसल्लेहिं (भुंजमाणीओ कडुविरसं) घोरुग्गुग्गतरं फलं॥१६०॥ चिट्ठइस्संति अज्जावि, तेहिं सल्लेहिं सल्लिया। अणंतंपि अणागयं कालं, तम्हा सल्लं सुहुममवि, समणी णो धारेज्जा खणंति॥१॥ धगधगधगस्स पज्जलिए, जालामालाउले दढं। हुयवहेवि महाभीमे, सरीरं डज्झए सुहं॥२॥ पयलंतंगाररासीए, एगसि झंप पुणे जले। थक्किंतो सरितो सरियं, जं मरिज्जिउंपि सुकरं॥३॥ खंडियस्स सहत्थेहिं, एक्केकमंगावयवं। जं होमिजइ अग्गीए, अणुदियहंपि सुकरं॥४॥ खरफरुसतिक्खकरवत्तदंतेहिं फाल्लाविउं। लोणूससज्जियाखारं, जं घत्ता ससरीरं अचं-तसुकरं। जीवंतो सयमवी सक्कं, सल्लं उत्तारिऊण ण॥५॥ जवखारहलिद्दादिहिं, जं आलिंपे नियं तणुं। मयंपि सुकरं छिंदेऊण, सहत्थेणं जो घेत्ते सीसं नियं॥६॥ एयंपि सुकरमल्लीहं, दुक्करं तवसंजमं। नीसल्लं जेण तं भणियं, सल्लो य नियदुक्खिओ॥७॥ मायादंभेण पच्छन्नो, तं पायडिउं ण सकए। राया दुच्चरियं पुच्छे, अह साहइ देहसव्वस्सं॥८॥ सव्वस्संपि पएज्जा उ, नो नियदुच्चरियं कहे। राया दुच्चरियं पुच्छे, साह पुहइंपि देमि ते॥९॥ पुहइं रज्जं तणं मन्ने,

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [७] + गाथा ||१७०|| दीप अनुक्रम [१७७]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

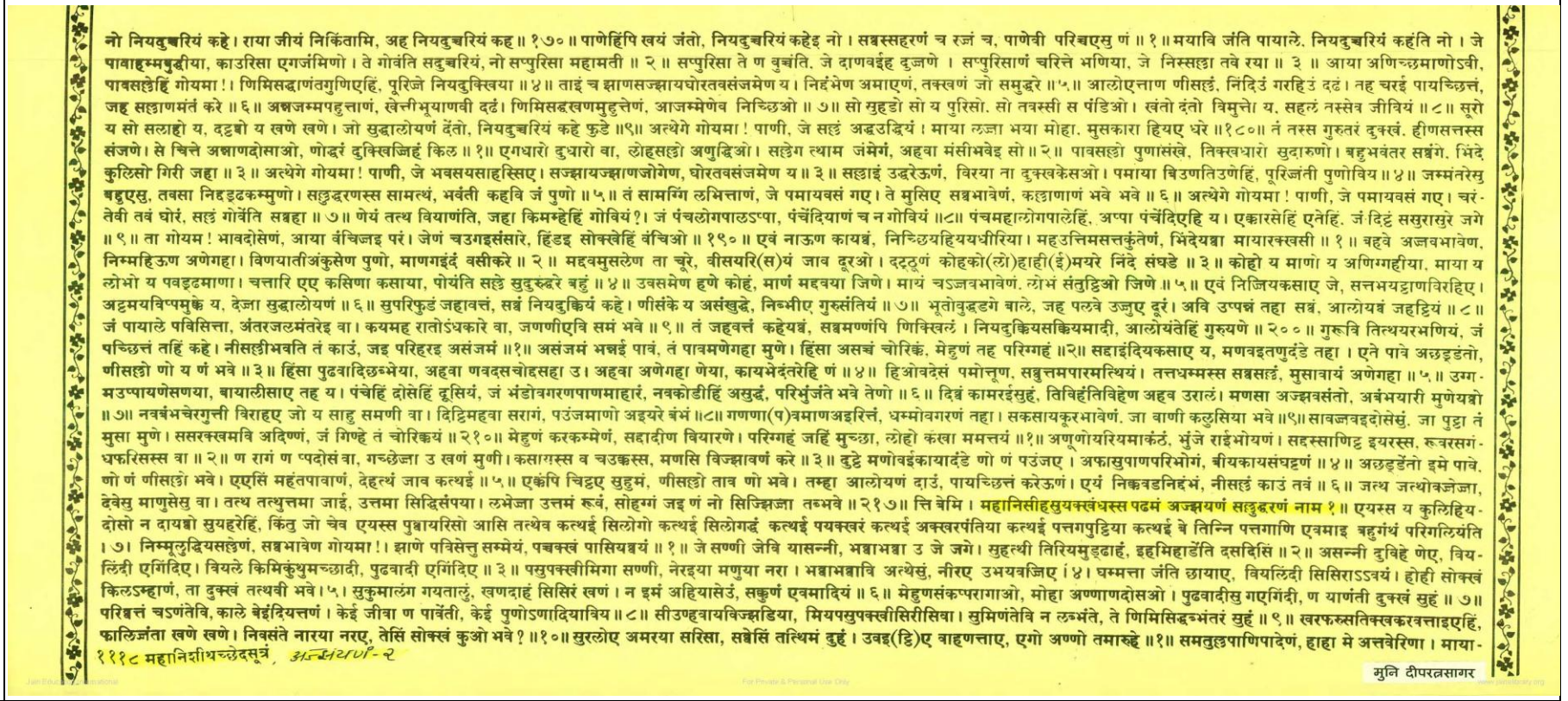

नो नियदुच्चरियं कहे। राया जीयं निकिंतामि, अह नियदुच्चरियं कह ॥ १७० ॥ पाणेहिंपि खयं जंतो, नियदुच्चरियं कहेइ नो । सव्वस्सहरणं च रज्जं च, पाणेवी परिच्चएसु णं ॥ १ ॥ मयावि जंति पायाले, नियदुच्चरियं कहंति नो । जे पावाहम्मबुद्धीया, काउरिसा एगजंमिणो । ते गोवंति सदुच्चरियं, नो सप्पुरिसा महामती ॥ २ ॥ सप्पुरिसा ते ण वुचंति, जे दाणवईह दुज्जणे । सप्पुरिसाणं चरित्ते भणिया, जे निस्सल्ला तवे रया ॥ ३ ॥ आया अणिच्छमाणोऽवी, पावसल्लेहिं गोयमा ! । णिमिसद्धाणंतगुणिएहिं, पूरिज्जे नियदुक्खिया ॥ ४ ॥ ताइं च झाणसज्झायघोरतवसंजमेण य । निहंभेण अमाएणं, तक्खणं जो समुद्धरे ॥ ५ ॥ आलोएत्ताण णीसल्लं, निंदिउं गरहिउं दढं । तह चरई पायच्छित्तं, जह सल्लाणमंतं करे ॥ ६ ॥ अन्नजम्मपहुत्ताणं, खेत्तीभूयाणवी दढं । णिमिसद्धखणमुहुत्तेणं, आजम्मेणेव निच्छिओ ॥ ७ ॥ सो सुहडो सो य पुरिसो, सो तवस्सी स पंडिओ । खंतो दंतो विमुत्तो य, सहलं तस्सेव जीवियं ॥ ८ ॥ सूरो य सो सलाहो य, दट्ठवो य खणे खणे । जो सुद्धालोयणं देंतो, नियदुच्चरियं कहे फुडे ॥ ९ ॥ अत्थेगे गोयमा ! पाणी, जे सल्लं अद्धउद्धियं । माया लज्जा भया मोहा, मुसकारा हियए धरे ॥ १८० ॥ तं तस्स गुरुतरं दुक्खं, हीणसत्तस्स संजमे । से चित्ते अन्नाणदोसाओ, णोद्धरं दुक्खिजिहं किल ॥ १ ॥ एगधारो दुधारो वा, लोहसल्लो अणुद्धिओ । सल्लेग त्थाम जंमेगं, अहवा मंसीभवेइ सो ॥ २ ॥ पावसल्लो पुणासंखे, तिक्खधारो सुदारुणो । बहुभवंतर सव्वंगे, भिंदे कुलिसो गिरी जहा ॥ ३ ॥ अत्थेगे गोयमा ! पाणी, जे भवसयसाहस्सिए । सज्झायज्झाणजोगेण, घोरतवसंजमेण य ॥ ३ ॥ सल्लाइं उद्धरेऊणं, विरया ता दुक्खकेसओ । पमाया बिउणतिउणेहिं, पूरिज्जंती पुणोविय ॥ ४ ॥ जम्मंतरेसु बहुएसु, तवसा निद्दड्ढकम्मुणो । सल्लुद्धरणस्स सामत्थं, भवंती कहवि जं पुणो ॥ ५ ॥ तं सामग्गिं लभित्ताणं, जे पमायवसं गए । ते मुसिए सव्वभावेणं, कल्लाणाणं भवे भवे ॥ ६ ॥ अत्थेगे गोयमा ! पाणी, जे पमायवसं गए । चरंतेवी तवं घोरं, सल्लं गोवेंति सव्वहा ॥ ७ ॥ णेयं तत्थ वियाणंति, जहा किमम्हेहिं गोवियं ?। जं पंचलोगपालऽप्पा, पंचेंदियाणं च न गोवियं ॥ ८ ॥ पंचमहालोगपालेहिं, अप्पा पंचेंदिएहि य । एक्कारसेहिं एतेहिं, जं दिट्ठं ससुरासुरे जगे ॥ ९ ॥ ता गोयम ! भावदोसेणं, आया वंचिज्जइ परं । जेणं चउगइसंसारे, हिंडइ सोक्खेहिं वंचिओ ॥ १९० ॥ एवं नाऊण कायव्वं, निच्छियहिययधीरिया । महउत्तिमसत्तकुंतेणं, भिंदेयव्वा मायारक्खसी ॥ १ ॥ बहवे अज्जवभावेण, निम्महिऊण अणेगहा । विणयातीअंकुसेण पुणो, माणगइंदं वसीकरे ॥ २ ॥ महवमुसलेण ता चूरे, वीसयरि(स)यं जाव दूरओ । दट्ठुणं कोहको(लो)हाही(ई)मयरे निंदे संघडे ॥ ३ ॥ कोहो य माणो य अणिग्गहीया, माया य लोभो य पवड्ढमाणा । चत्तारि एए कसिणा कसाया, पोयंति सल्ले सुदुरुद्धरे बहुं ॥ ४ ॥ उवसमेण हणे कोहं, माणं महवया जिणे । मायं चऽज्जवभावेणं, लोभं संतुट्ठिओ जिणे ॥ ५ ॥ एवं निज्जियकसाए जे, सत्तभयट्ठाणविरहिए । अट्ठमयविप्पमुक्के य, देज्जा सुद्धालोयणं ॥ ६ ॥ सुपरिफुडं जहावत्तं, सव्वं नियदुक्कियं कहे । णीसंके य असंखुद्धे, निब्भीए गुरुसंतियं ॥ ७ ॥ भूतोवुद्धडगे बाले, जह पलवे उज्जुए दूरं । अवि उप्पन्नं तहा सव्वं, आलोयव्वं जहट्ठियं ॥ ८ ॥ जं पायाले पविसित्ता, अंतरजलमंतरेइ वा । कयमह रातोऽंधकारे वा, जणणीएवि समं भवे ॥ ९ ॥ तं जहवत्तं कहेयव्वं, सव्वमण्णंपि णिक्खलं । नियदुक्कियसक्कियमादी, आलोयंतेहिं गुरुयणे ॥ २०० ॥ गुरूवि तित्थयरभणियं, जं पच्छित्तं तहिं कहे । नीसल्लीभवति तं काउं, जइ परिहरइ असंजमं ॥ १ ॥ असंजमं भन्नई पावं, तं पावमणेगहा मुणे । हिंसा असचं चोरिक्कं, मेहुणं तह परिग्गहं ॥ २ ॥ सद्दाइंदियकसाए य, मणवइतणुदंडे तहा । एते पावे अछड्डंतो, णीसल्लो णो य णं भवे ॥ ३ ॥ हिंसा पुढवादिछब्भेया, अहवा णवदसचोद्दसहा उ। अहवा अणेगहा णेया, कायभेदंतरेहि णं ॥ ४ ॥ हिओवदेसं पमोत्तूण, सव्वुत्तमपारमत्थियं । तत्तधम्मस्स सव्वसल्लं, मुसावायं अणेगहा ॥ ५ ॥ उग्गमउप्पायणेसणया, बायालीसाए तह य । पंचेहिं दोसेहिं दूसियं, जं भंडोवगरणपाणमाहारं, नवकोडीहिं असुद्धं, परिभुंजंते भवे तेणो ॥ ६ ॥ दिव्वं कामरइंसुहं, तिविहंतिविहेण अहव उरालं । मणसा अज्झवसंतो, अबंभयारी मुणेयव्वो ॥ ७ ॥ नवबंभचेरगुत्ती विराहए जो य साहु समणी वा । दिट्ठिमहवा सरागं, पउंजमाणो अइयरे बंभं ॥ ८ ॥ गणणा(प)वमाणअइरित्तं, धम्मोवगरणं तहा । सकसायकूरभावेणं, जा वाणी कलुसिया भवे ॥ ९ ॥ सावज्जवइदोसेसुं, जा पुट्ठा तं मुसा मुणे । ससरक्खमवि अदिण्णं, जं गिण्हे तं चोरिक्कयं ॥ २१० ॥ मेहुणं करकम्मेणं, सद्दादीण वियारणे । परिग्गहं जहिं मुच्छा, लोहो कंखा ममत्तयं ॥ १ ॥ अणूणोयरियमाकंठं, भुंजे राईभोयणं । सहस्साणिट्ठ इयरस्स, रूवरसगंधफरिसस्स वा ॥ २ ॥ ण रागं ण प्पदोसं वा, गच्छेज्जा उ खणं मुणी । कसायस्स व चउक्कस्स, मणसि विज्झावणं करे ॥ ३ ॥ दुट्ठे मणोवईकायादंडे णो णं पउंजए । अफासुपाणपरिभोगं, बीयकायसंघट्टणं ॥ ४ ॥ अछड्डेंतो इमे पावे, णो णं णीसल्लो भवे । एएसिं महंतपावाणं, देहत्थं जाव कत्थई ॥ ५ ॥ एक्कंपि चिट्ठए सुहुमं, णीसल्लो ताव णो भवे । तम्हा आलोयणं दाउं, पायच्छित्तं करेऊणं । एयं निक्कवडनिद्दंभं, नीसल्लं काउं तवं ॥ ६ ॥ जत्थ जत्थोवज्जेज्जा, देवेसु माणुसेसु वा । तत्थ तत्थुत्तमा जाई, उत्तमा सिद्धिसंपया । लभेज्जा उत्तमं रूवं, सोहग्गं जइ णं नो सिज्झिज्जा तब्भवे ॥ २१७ ॥ त्ति बेमि । **महानिसीहसुयक्खंधस्स पढमं अज्झयणं सल्लुद्धरणं नाम १** ॥ एयस्स य कुलिहियदोसो न दायव्वो सुयहरेहिं, किंतु जो चेव एयस्स पुव्वायरिसो आसि तत्थेव कत्थई सिलोगो कत्थई सिलोगद्धं कत्थई पयक्खरं कत्थई अक्खरपंतिया कत्थई पत्तगपुट्ठिया कत्थई बे तिन्नि पत्तगाणि एवमाइ बहुगंथं परिगलियंति ।७। निम्मूलुद्धियसल्लेणं, सव्वभावेण गोयमा ! । झाणे पविसेत्तु सम्मेयं, पच्चक्खं पासियव्वयं ॥ १ ॥ जे सण्णी जेवि यासन्नी, भव्वाभव्वा उ जे जगे । सुहत्थी तिरियमुड्ढाहं, इहमिहाडेंति दसदिसिं ॥ २ ॥ असन्नी दुविहे णेए, वियलिंदी एगिंदिए । वियले किमिकुंथुमच्छादी, पुढवादी एगिंदिए ॥ ३ ॥ पसुपक्खीमिगा सण्णी, नेरइया मणुया नरा । भव्वाभव्वावि अत्थेसुं, नीरए उभयवज्जिए ॥ ४ ॥ धम्मत्ता जंति छायाए, वियलिंदी सिसिराऽऽवयं । होही सोक्खं किलऽम्हाणं, ता दुक्खं तत्थवी भवे ॥ ५ ॥ सुकुमालंग गयतालुं, खणदाहं सिसिरं खणं । न इमं अहियासेउं, सकुणं एवमादियं ॥ ६ ॥ मेहुणसंकप्परागाओ, मोहा अण्णाणदोसओ । पुढवादीसु गएगिंदी, ण यांणती दुक्खं सुहं ॥ ७ ॥ परिवत्तं चऽणंतेवि, काले वेइंदियत्तणं । केई जीवा ण पावेंती, केई पुणोऽणादियाविय ॥ ८ ॥ सीउण्हवायविज्झडिया, मियपसुपक्खीसिरीसिवा । सुमिणंतेवि न लब्भंते, ते णिमिसिद्धभंतरं सुहं ॥ ९ ॥ खरफरुसतिक्खकरवत्ताइएहिं, फालिज्जंता खणे खणे । निवसंते नारया नरए, तेसिं सोक्खं कुओ भवे ? ॥ १० ॥ सुरलोए अमरया सरिसा, सव्वेसिं तत्थिमं दुहं । उवइ(ट्टि)ए वाहणत्ताए, एगो अण्णो तमारुहे ॥ १ ॥ समतुल्लपाणिपादेणं, हाहा मे अत्तवेरिणा । माया-

मुनि दीपरत्नसागर

	अत्र प्रथमं अध्ययनं समाप्तं अत्र द्वितियं अध्ययनं- “कर्मविपाक-व्याकरणं” आरब्धः

प्रत सूत्रांक [१] + गाथा ॥१२॥ दीप अनुक्रम [२३७]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

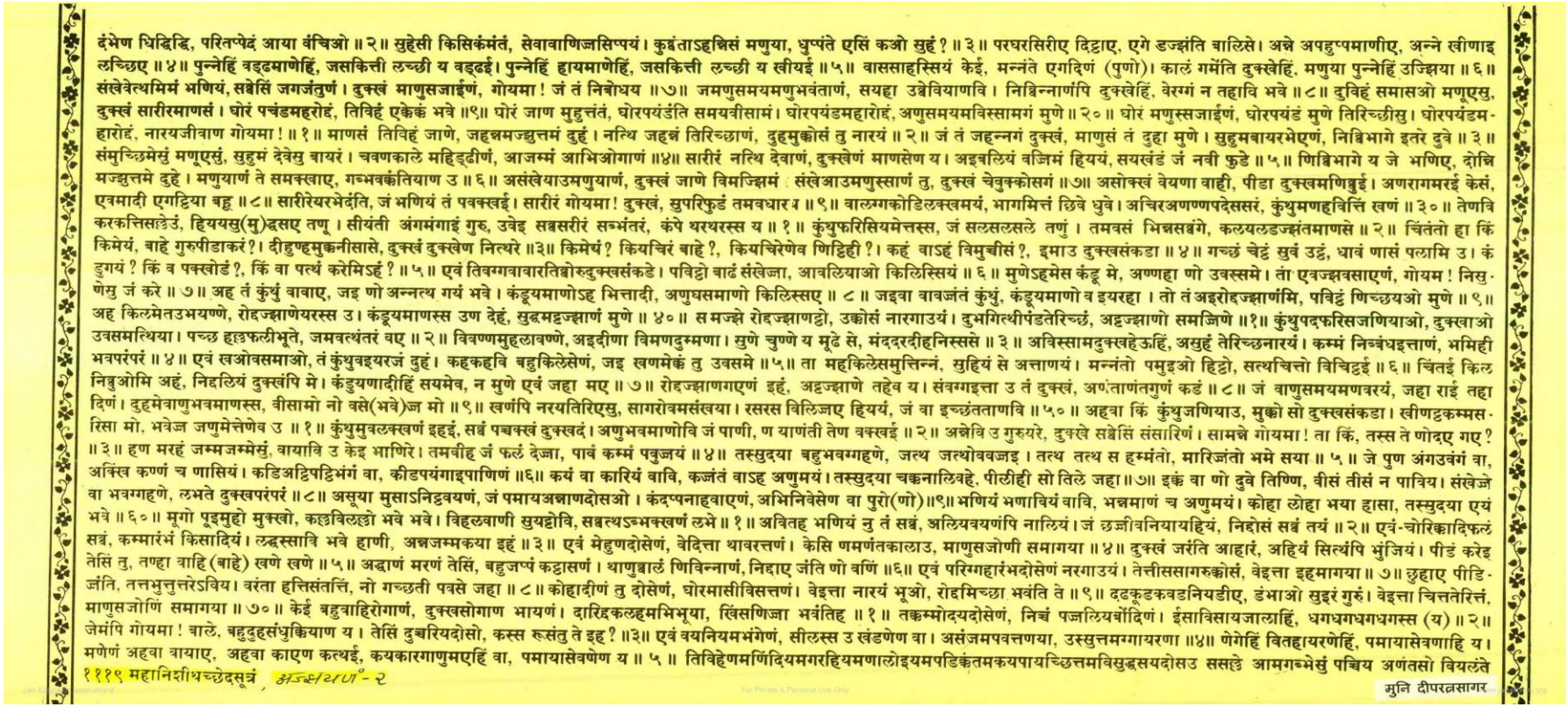

दंभेण धिद्धिद्धि, परितप्पेदं आया वंचिओ ॥२॥ सुहेसी किसिकंमंतं, सेवावाणिजसिप्पयं। कुबंताऽहन्निसं मणुया, धुप्पंते एसिं कओ सुहं? ॥३॥ परघरसिरीए दिट्ठाए, एगे डज्झंति वालिसे। अन्ने अपहुप्पमाणीए, अन्ने खीणाइ लच्छिए ॥४॥ पुन्नेहिं वड्ढमाणेहिं, जसकित्ती लच्छी य वड्ढई। पुन्नेहिं हायमाणेहिं, जसकित्ती लच्छी य खीयई ॥५॥ वाससाहस्सियं केई, मन्नंते एगदिणं (पुणो)। कालं गमेंति दुक्खेहिं, मणुया पुन्नेहिं उज्झिया ॥६॥ संखेवेत्थमिमं भणियं, सव्वेसिं जगजंतुणं। दुक्खं माणुसजाईणं, गोयमा! जं तं निबोधय ॥७॥ जमणुसमयमणुभवंताणं, सयहा उव्वेवियाणवि। निव्विन्नाणंपि दुक्खेहिं, वेरग्गं न तहावि भवे ॥८॥ दुविहं समासओ मणूएसु, दुक्खं सारीरमाणसं। घोरं पचंडमहरोद्दं, तिविहं एक्केकं भवे ॥९॥ घोरं जाण मुहुत्तंतं, घोरपयंडंति समयवीसामं। घोरपयंडमहारोद्दं, अणुसमयमविस्सामगं मुणे ॥२०॥ घोरं मणुस्सजाईणं, घोरपयंडं मुणे तिरिच्छीसु। घोरपयंडमहारोद्दं, नारयजीवाण गोयमा! ॥१॥ माणसं तिविहं जाणे, जहन्नमज्झुत्तमं दुहं। नत्थि जहन्नं तिरिच्छाणं, दुहमुक्कोसं तु नारयं ॥२॥ जं तं जहन्नगं दुक्खं, माणुसं तं दुहा मुणे। सुहुमबायरभेएणं, निव्विभागे इतरे दुवे ॥३॥ संमुच्छिमेसुं मणूएसुं, सुहुमं देवेसु बायरं। चवणकाले महिड्ढीणं, आजम्मं आभिओगाणं ॥४॥ सारीरं नत्थि देवाणं, दुक्खेणं माणसेण य। अइबलियं वज्जिमं हिययं, सयखंडं जं नवी फुडे ॥५॥ णिव्विभागे य जे भणिए, दोन्नि मज्झुत्तमे दुहे। मणुयाणं ते समक्खाए, गब्भवक्कंतियाण उ ॥६॥ असंखेयाउमणुयाणं, दुक्खं जाणे विमज्झिमं संखेआउमणुस्साणं तु, दुक्खं चेवुक्कोसगं ॥७॥ असोक्खं वेयणा वाही, पीडा दुक्खमणिव्वुई। अणरागमरई केसं, एवमादी एगट्ठिया बहू ॥८॥ सारीरेयरभेदंति, जं भणियं तं पवक्खई। सारीरं गोयमा! दुक्खं, सुपरिफुडं तमवधारय ॥९॥ वालग्गकोडिलक्खमयं, भागमित्तं छिवे धुवे। अचिरअणण्णपदेससरं, कुंथुमणहविंत्तिं खणं ॥३०॥ तेणवि करकत्तिसलेउं, हियय्सु(मु)दसए तणू। सीयंती अंगमंगाइं गुरु, उवेइ सव्वसरीरं सब्भंतरं, कंपे थरथरस्स य ॥१॥ कुंथुफरिसियमेत्तस्स, जं सलसलसले तणुं। तमवसं भिन्नसब्वंगे, कलयलडज्झंतमाणसे ॥२॥ चिंतंतो हा किं किमेयं, वाहे गुरुपीडाकरं?। दीहुण्हमुक्कनीसासे, दुक्खं दुक्खेण नित्थरे ॥३॥ किमेयं? कियचिरं वाहे?, कियचिरेणेव णिट्ठिही?। कहं वाऽहं विमुचीसं?, इमाउ दुक्खसंकडा ॥४॥ गच्छं चेट्ठं सुवं उट्ठं, धावं णासं पलामि उ। कं डुगयं? किं व पक्खोडं?, किं वा पत्थं करेमिऽहं? ॥५॥ एवं तिवग्गवावारतिब्बोरुदुक्खसंकडे। पविट्ठो बाढं संखेज्जा, आवलियाओ किलिस्सियं ॥६॥ मुणेऽहमेस कंडू मे, अण्णहा णो उवस्समे। तो एवज्झवसाएणं, गोयम! निसुणेसु जं करे ॥७॥ अह तं कुंथुं वावाए, जइ णो अन्नत्थ गयं भवे। कंडूयमाणोऽह भित्तादी, अणुघसमाणो किलिस्सए ॥८॥ जइवा वावज्जंतं कुंथुं, कंडूयमाणो व इयरहा। तो तं अइरोद्दज्झाणंमि, पविट्ठं णिच्छयओ मुणे ॥९॥ अह किलमेतउभयण्णे, रोद्दज्झाणेयरस्स उ। कंडूयमाणस्स उण देहं, सुद्धमट्टज्झाणं मुणे ॥४०॥ समज्झे रोद्दज्झाणट्ठो, उक्कोसं नारगाउयं। दुभगित्थीपंडतेरिच्छं, अट्टज्झाणो समज्जिणे ॥१॥ कुंथुपदफरिसजणियाओ, दुक्खाओ उवसमत्थिया। पच्छ हलफलीभूते, जमवत्थंतरं वए ॥२॥ विवण्णमुहलावण्णे, अइदीणा विमणदुम्मणा। सुणे चुण्णे य मूढे से, मंददरदीहनिस्ससे ॥३॥ अविस्सामदुक्खहेऊहिं, असुहं तेरिच्छनारयं। कम्मं निब्बंधइत्ताणं, भमिही भवपरंपरं ॥४॥ एवं खओवसमाओ, तं कुंथुवइयरजं दुहं। कहकहवि बहुकिलेसेणं, जइ खणमेकं तु उवसमे ॥५॥ ता महकिलेसमुत्तिन्नं, सुहियं से अत्ताणयं। मन्नंतो पमुइओ हिट्ठो, सत्थचित्तो विचिट्ठई ॥६॥ चिंतई किल निव्वुओमि अहं, निहलियं दुक्खंपि मे। कंडुयणादीहिं सयमेव, न मुणे एवं जहा मए ॥७॥ रोद्दज्झाणगएणं इहं, अट्टज्झाणे तहेव य। संवग्गइत्ता उ तं दुक्खं, अणंताणंतगुणं कडं ॥८॥ जं वाणुसमयमणवरयं, जहा राई तहा दिणं। दुहमेवाणुभवमाणस्स, वीसामो नो वसे(भवे)ज्ज मो ॥९॥ खणंपि नरयतिरिएसु, सागरोवमसंखया। रसरस विलिज्जए हिययं, जं वा इच्छंतताणवि ॥५०॥ अहवा किं कुंथुजणियाउ, मुक्को सो दुक्खसंकडा। खीणट्ठकम्मसरिसा मो, भवेज्ज जणुमेत्तेणेव उ ॥१॥ कुंथुमुवलक्खणं इहई, सव्वं पच्चक्खं दुक्खदं। अणुभवमाणोवि जं पाणी, ण यांणती तेण वक्खई ॥२॥ अन्नेवि उ गुरुयरे, दुक्खे सव्वेसिं संसारिणं। सामन्ने गोयमा! ता किं, तस्स ते णोदए गए? ॥३॥ हण मरहं जम्मजम्मेसुं, वायावि उ केइ भाणिरे। तमवीह जं फलं देज्जा, पावं कम्मं पवुज्जयं ॥४॥ तस्सुदया बहुभवग्गहणे, जत्थ जत्थोववज्जइ। तत्थ तत्थ स हम्मंतो, मारिज्जंतो भमे सया ॥५॥ जे पुण अंगउवंगं वा, अक्खि कण्णं च णासियं। कडिअट्ठिपट्ठिभंगं वा, कीडपयंगाइपाणिणं ॥६॥ कयं वा कारियं वावि, कज्जंतं वाऽह अणुमयं। तस्सुदया चक्कनालिवहे, पीलीहीं सो तिले जहा ॥७॥ इक्कं वा णो दुवे तिण्णि, वीसं तीसं न पाविय। संखेज्जे वा भवग्गहणे, लभते दुक्खपरंपरं ॥८॥ असूया मुसाऽनिट्ठवयणं, जं पमायअन्नाणदोसओ। कंदप्पनाहवाएणं, अभिनिवेसेण वा पुरो(णो) ॥९॥ भणियं भणाविय वावि, भन्नमाणं च अणुमयं। कोहा लोहा भया हासा, तस्सुदया एयं भवे ॥६०॥ मूगो पूइमुहो मुक्खो, कल्लविल्लो भवे भवे। विहलवाणी सुयट्ठोवि, सव्वत्थऽभक्खणं लभे ॥१॥ अवितह भणियं नु तं सव्वं, अलियवयणंपि नालियं। जं छज्जीवनियायहियं, निद्दोसं सव्वं तयं ॥२॥ एवं-चोरिक्कादिफलं सव्वं, कम्मारंभं किसादियं। लद्धस्सावि भवे हाणी, अन्नजम्मकया इहं ॥३॥ एवं मेहुणदोसेणं, वेदित्ता थावरत्तणं। केसि णमणंतकालाउ, माणुसजोणी समागया ॥४॥ दुक्खं जरंति आहारं, अहियं सित्थंपि भुंजियं। पीडं करेइ तेसिं तु, तण्हा वाहि(बाहे) खणे खणे ॥५॥ अद्धाणं मरणं तेसिं, बहुजप्पं कट्टासणं। थाणुब्बालं णिविन्नाणं, निहाए जंति णो वणिं ॥६॥ एवं परिग्गहारंभदोसेणं नरगाउयं। तेत्तीससागरुक्कोसं, वेइत्ता इहमागया ॥७॥ छुहाए पीडिज्जंति, तत्तभुत्तुत्तरेऽविय। वरंता हत्तिसंतत्तिं, नो गच्छती पवसे जहा ॥८॥ कोहादीणं तु दोसेणं, घोरमासीविसत्तणं। वेइत्ता नारयं भूओ, रोद्दमिच्छा भवंति ते ॥९॥ दढकूडकवडनियडीए, डंभाओ सुइरं गुरुं। वेइत्ता चित्ततेरित्तं, माणुसजोणिं समागया ॥७०॥ केई बहुवाहिरोगाणं, दुक्खसोगाण भायणं। दारिद्दकलहमभिभूया, खिंसणिज्जा भवंतिह ॥१॥ तक्कम्मोदयदोसेणं, निच्चं पज्जलियबोंदिणं। ईसाविसायजालाहिं, धगधगधगधगस्स (य) ॥२॥ जेमंपि गोयमा! चाले, बहुदुहसंधुक्कियाण य। तेसिं दुचरियदोसो, कस्स रूसंतु ते इह? ॥३॥ एवं वयनियमभंगेणं, सीलस्स उ खंडणेण वा। असंजमपवत्तणया, उस्सुत्तमग्गायरणा ॥४॥ णेगेहिं वितहायरणेहिं, पमायासेवणाहि य। मणेणं अहवा वायाए, अहवा काएण कत्थई, कयकारगाणुमएहिं वा, पमायासेवणेण य ॥५॥ तिविहेणमणिंदियमगरहियमणालोइयमपडिकंतमकयपायच्छित्तमविसुद्धसयदोसउ ससल्ले आमगब्भेसुं पचिय अणंतसो वियलंते

For Private & Personal Use Only
मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [१] + गाथा ॥७६॥

दीप अनुक्रम [३०१]

दुतियचउपंचछण्हं मासाणं असंबद्धट्ठी करसिरचरणछवी । १। लद्धेवि माणुसे जम्मे, कुट्ठादीवाहिसंजुए । जीवंते चेव किमिएहिं, खज्जंती मच्छियाहि य. अणुदियहं खंडखंडेहिं, सडं हडस्स सडे तणु ॥६॥ एवमादीदुक्खाभिभूयए, पलज्जणिज्जे खिसणिज्जे, निंदणिज्जे गरहणिज्जे, उव्वेयणिज्जे अपरिभोगे, नियसुहिसयणबंधवाणंपि भवतीति दुरप्पणो ॥७॥ अज्झवसायविसेसं तं, पडुच्चा केइ तारिसं । अकामनिज्जराए उ, भूयपिसायत्तणं लभते ॥ ८॥ पुव्वसत्त-स्स दोसेणं, बहुभवंतरच्छाइणो । अज्झवसायविसेसं तं, पडुच्चा केई तारिसं ॥९॥ दससुवि दिसासु उद्धुद्धो, निच्चदुरप्पिए दढं। णिरुत्थल्लनिरुस्सासो, निराहारेण पाणए॥८०॥संपिंडियंगमंगो य, मोहमदिराए घुम्मरिए। अदिट्ठुग्गमणं-अत्थमणे, भवे पुढवीए गोलया किमी ॥ १॥ भवकायट्ठितीए वेएत्ता, तं तहिं किमियत्तणं। जइ कहवि लहंति मणुयत्तं, तो उ तो हुंति णपुंसगे ॥ २॥ अज्झवसायविसेसं तं, पवहंते अइकूरघोररुद्दं । तारिसेवं महसंधुक्किया, मरितुं जम्म जंति वणस्सई ॥ ३॥ वणस्सइं गए जीवे, उद्दपाए अहोमुहे। विचिट्ठंति अणंतयं कालं, नो लभे वेइंदियत्तणं ॥ ४॥ भवकायट्ठितीए वेएत्ता, तमेगविंतिचउरिंदियत्तणं। तं पुव्वसत्तदोसेणं, तेरिच्छेसूववज्जिउं ॥ ५॥ जइ णं भवे महामच्छे, पक्खीवसहसीहादओ। अज्झवसायविसेसं तं, पडुच्च अच्चंतकूरयरं ॥६॥ कुणिममाहारत्ताए, पंचेंदियवहेण य। अहो अहो पविस्संति, जाव पुढवी उ सत्तमा ॥ ७॥ तं तारिसं महाघोरं, दुक्खमणुभविउं चिरं। पुणोवि कूर-तिरिएसु, उववज्जिय नरयं वए ॥८॥ एवं नरयतिरिच्छेसुं, परियट्टंतो विचिट्ठई । वासकोडीएवि नो सक्का कहिउं, जं तं दुक्खं अणुभवमाणगे ॥९॥ अह खरुट्ठभइल्लेसुं, भवेज्जा तब्भवंतरे। सगडाइट्ठा(यट्ठ)णभरुव्वहणखुत्तुण्हसीयायवं ॥९०॥ वहबंधणकंणणासाभेदणिल्लंछणं तहा। जमलाराईहिं कुचाहिं कुचिजंताण य, जहा राई तहा दियहं, सव्वद्धा उ सुदारुणं ॥१॥एवमादीदुक्खसंघट्टं, अणुहवंति चिरेण उ। पाणे य एहिंति कहकहवि, अट्टज्झाणदुहट्टिए ॥ २॥ अज्झवसायविसेसं तं, पडुच्चा केइ कहवि लब्भंते माणुसत्तणं। तप्पुव्वसत्तदोसेणं, माणुसत्तेवि आगया ॥ ३॥ भवंति जम्मदारिद्दा, वाहीखसपामपरिगया। एवं अदिट्ठकल्लाणे, सव्वजणस्स सिरिं हाइउं ॥ ४॥ संतप्पंते दढं मणसा, अकयभवे णिहणं वए। अज्झवसायविसेसं तं, पडुच्चा केइ तारिसं ॥ ५॥ पुणोवि पुढविमाईसुं, भमंती ते दुतिचउरोपंचेंदिएसु वा। तं तारिसं लहादुक्खं, सुरुद्दं घोरदारुणं ॥ ६॥ चउगइसंसारकंतारे, अणुभवमाणे सुदूसहं। भवकाय-ट्ठितीए हिंडंते, सव्वजोणीसु गोयमा ! ॥ ७॥ चिट्ठंति संसरेमाणा जम्ममरणवहुवाहिवेयणारोगसोगदालिद्दकलहब्भक्खाणसंभवि(वावि)गब्भवसादिदुक्खसंघुक्किए तप्पुव्वसत्तदोसेणं निव्वाणाणंदमहूसवथामजोग्गअट्ठारससीलंगसहस्सा-हिट्ठियस्स सव्वासुहपावकम्मट्ठरासिनिद्दहणअहिंसालक्खणसमणधम्मस्स बोहिं णो पावेंतित्ति । २। 'अज्झवसायविसेसं तं, पडु(मु)च्चा केई तारिसं । पोग्गलपरियट्टल्लक्खेसुं, बोहिं कहकहवि पावए ॥ ८॥ एवं सुदुल्लहं बोहिं, सव्वदु-क्खखयंकरं। लद्धूणं जे पमाएज्जा, तहुत्तं सो पुणो वए ॥९॥ तासुं तासुं च जोणीसुं, पुव्वुत्तेण कमेण उ। पंथेणं तेणई चेव, दुक्खे ते चेव अणुभवे ॥१००॥ एवं भवकायट्ठितीए, सव्वभावेहिं पोग्गले। सव्वे सपज्जए लोए, सव्ववन्नंतरेहि य ॥ १॥ गंधत्ताए रसत्ताए, फासत्ताए संठाणत्ताए । परिणामेत्ता सरीरेणं, बोहिं पाविज्ज वा ण वा ॥ २॥ एवं वयनियमभंगं, जे कज्जमाणमुवेक्खए । अह सील्लं खंडिज्जंतं, अहवा संजमविराहणं ॥ ३॥ उम्मग्गपवत्तणं वावि, उस्सुत्तायरणंपि वा। सोऽविय अणंतरुत्तेण, कमेणं चउगई भवे(मे)॥४॥ रूसउ तुसओ परो मा वा, विसं वा परियत्तओ। भासियव्वा हिया भासा, सपक्खगुणकारिया ॥५॥ एवं लद्धामवि बोहिं, जइ णं तो भवइ निम्मला। ता संवु-डासवदारे (पगइठिइपएसाणुभावियबंधो) नेहो सो नो य निज्जरे ॥ ६॥ एमादीघोरकम्मट्ठजालेणं कसियाण भो !। सव्वेसिमवि सत्ताणं, कुओ दुक्खविमोयणं ? ॥ ७॥ पुव्विं दुक्कयदुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं नियययकम्माणं ण अवे-इयाणं मोक्खो घोरतवेण अज्झोसियाण वा ।३। अणुसमयं वज्झ(बन्ध)ए कम्मं, णत्थि अबंधो उ पाणिणो। मोत्तुं सिद्धा यऽजोगी य, सेलेसीसंठिए तहा ॥८॥ सुहं सुहज्झवसाएणं, असुहं दुट्ठज्झवसायओ। तिव्वयरेणं तु तिव्वयरं, मंदं मंदेण संचिणे ॥ ९॥ सव्वेसिं पावयम्माणं एगीभूयाण जेत्तियं रासिं भवे तमसंखगुणं वयतवसंजमचारित्तखंडणविराहणेणं उस्सुत्तमग्गपन्नवणपवत्तणआयरणोवेक्खणेण य समज्जिणे । ४। 'अपरिमाणगुरुतुंगा, महंती घणनिरंतरा । पावरासी खयं गच्छे, जहा तं सव्वो वाहि(वा हिय)मायरे॥११०॥आसवदारे निरुंभित्ता, अप्पमादी भवे जया। बंधिमप्पं बहुं वेदे, जइ सम्मत्तं सुनिम्मलं॥१॥ आसवदारे निरुंभेत्ता, आणं नो खंडए जया। दंसणनाणचरित्तेसुं, उज्जुत्तो जो दढं भवे ॥ २॥ तया वेए खणं बंधि, पोराणं सव्वं खवे । अणुइण्णमवि उईरित्ता, निज्जियघोरपरिसहो ॥ ३॥ आसवदारे निरुंभित्ता, सव्वासायणविरहिओ। सज्झायज्झाणजोगेसुं, धीरवीर तवे रओ ॥ ४॥ पालिज्जा संजमं कसिणं, वाया मणसा उ कम्मुणा । जया तया ण बंधिज्जा, उक्कोसमणंतं च निज्जरे ॥ ५॥ सव्वावस्सगमुज्जुत्तो, सव्वालंबणविरहिओ। विमुक्को सव्वसंगेहिं, सवज्झब्भंतरेहि य ॥ ६॥ गयरागदोसमोहे य, निन्नियाणो भवे जया। नियत्तो विस-यत्तीए, भीए गब्भपरंपरा ॥ ७॥ आसवदारे निरुंभित्ता, खंतादी यमेवि संठिए। सुक्कज्झाणं समारुहिय, सेलेसिं पडिवज्जए ॥ ८॥ तया न बंधए किंचि, चिरबद्धं असेसंपि निद्दहिय झाणजोगअग्गीए भसमीकरे दढं लहुपंचक्खरु-च्चिरणमित्तेण कालेण भवोवग्गाहियं ।५। एवं 'जीववीरियसामत्था, पारंपरएण गोयमा !। पविमुक्ककम्ममलकवया, समएणं जंति पाणिणो ॥ ९॥ सासयसोक्खमणाबाहं, रोगजरमरणविरहियं। अदिट्ठदुक्खदारिद्दं, निच्चाणंदं सिवालयं ॥ १२०॥ अत्थेगे गोयमा ! पाणी, जे एयमणुपवेसिय । आसवदारनिरोहादी, इयराहयसोक्खं चरे ॥ १॥ ता जाव कसिणट्ठकम्माणि, घोरतवसंजमेण उ । णो णिद्दड्ढे सुहं ताव, नत्थि सिविणेऽवि पाणिणं ॥ २॥ दुक्खमेवम-विस्सामं, सव्वेसिं जगजंतूणं । एक्कसमयं न समभावे, जं सम्मं अहियासियंतरं ॥ ३॥ थेवमवि थेवतरं, थेवयरस्साबि थेवयं । जेणं गोयमा ! ता पेच्छ, कुंथु तस्सेव य णं तणू ॥ ४॥ पायतलेसु न तस्सावि, तेसिमेगदेसमणु । फरिसंतो कुंथु जेणं, चरई कस्सइ सरीरगे ॥ ५॥ कुंथुणं सयसहस्सेणं, तोलियं णो पलं भवे। एगस्स कित्तिय गत्तं ?, किं वा तुलं भवेज्ज से ? ॥ ६॥ तस्स य पाययलदेसेणं, तस्स फरिसिउ तमवत्थंतरं। पुव्वुत्तं गोयमा ! गच्छे, पाणी ता णं इमं मुणे ॥ ७॥ भमंतसंचरंतो य, हिंडिणो मइले तणू। न करे कुंथूखयं ताणं, णियवासी य चिरं वसे ॥ ८॥ अह चिट्ठे खणमेगं तु, बीयं नो परिवसे खणं। अह बीयंपि विरत्तेज्जा, ता जुज्जउऽयं तु गोयमा ! ॥ ९॥ रागेणं नो पओसेणं, मच्छरेणं न केणई। न यावि पुव्ववेरेणं, खेड्डातो कामकारओ ॥१३०॥कुंथू कस्सइ देहिस्स, आरुहेइ खणं तणुं। वियलिंदी भूण पाणे वा, जलंतग्गिं वावी विसे॥१॥ न चिंते तं जहा मेस, पुव्ववेरीऽहवा सुही। ता किंची मम (ह) पावं वा, संजणेमि एयस्सऽहं ॥ २॥ पुव्वकडपावकम्मस्स, विरामे पुंजतो फले। तिरिउड्ढाहदिसाणुदिसं, कुंथू हिंडे वराय से ॥ ३॥ चरंते व महावाए, सारीरं दुक्खमाणसं। कुंथूवि दूसहं जत्ते, रोद्दट्टज्झाणवड्ढणं ॥ ४॥ (२८०)

११२० महानिशीथच्छेदसूत्रं, अध्ययनं २

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [५] + गाथा ||१३५||

दीप अनुक्रम [३६५]

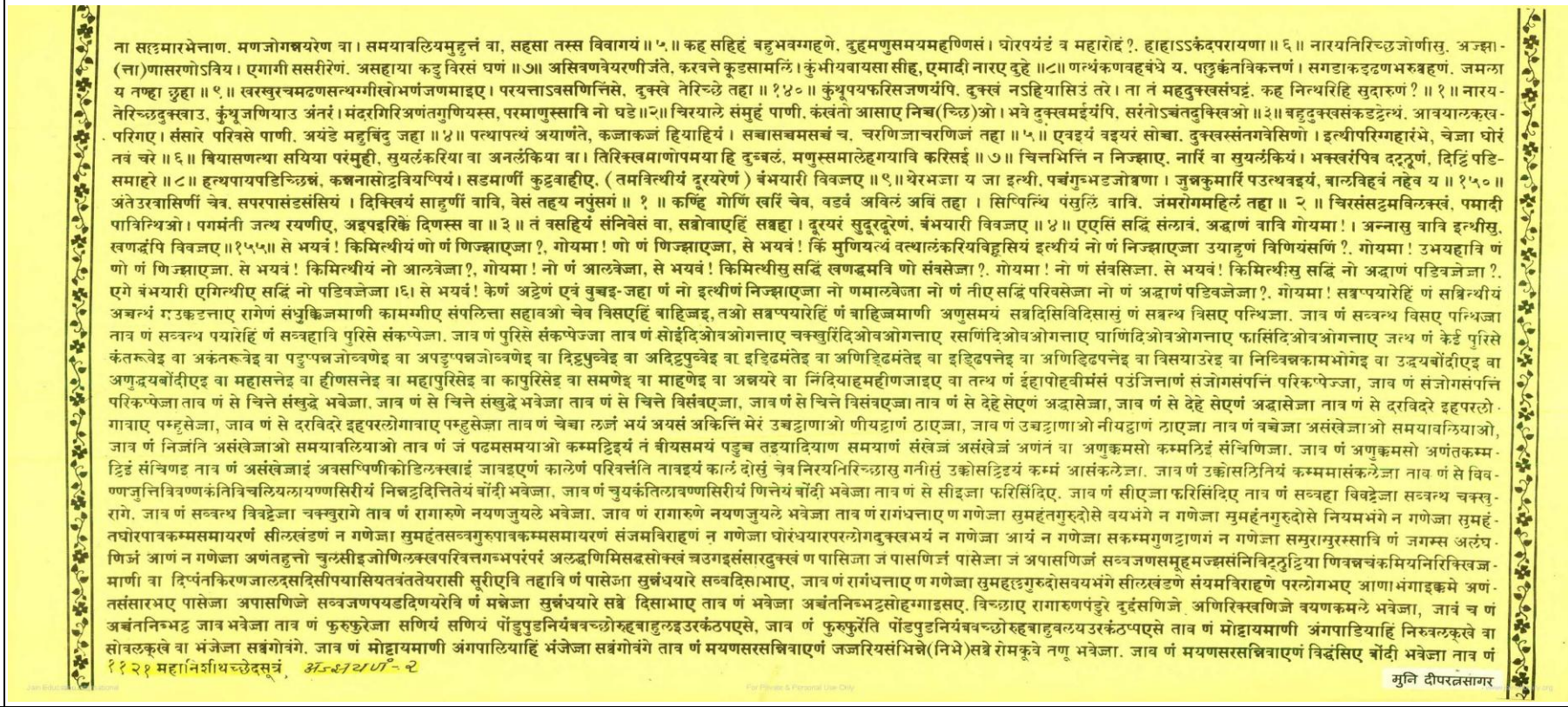

ना सहसारभेत्ताण. मणजोगन्नयरेण वा। समयावलियमुहुत्तं वा, सहसा तस्स विवागयं॥५॥ कह सहिहं बहुभवग्गहणे. दुहमणुसमयमहण्णिसं। घोरपयंडं व महारोहं?. हाहाऽऽकंदपरायणा॥६॥ नारयतिरिच्छजोणीसु. अज्झा-(त्ता)णासरणोऽविय। एगागी ससरीरेणं. असहाया कडु विरसं घणं॥७॥ असिवणवेयरणीजंते, करवत्ते कूडसामलिं। कुंभीयवायसा सीह, एमादी नारए दुहे॥८॥ णत्थंकणवहबंधे य. पडुकंतविकत्तणं। सगडाकड्ढणभरुव्वहणं. जमलाय तण्हा छुहा॥९॥ खरखुरचमढणसत्थग्गीखोभणंजणमाइए। परयत्ताऽवसणित्तिसे. दुक्खे तेरिच्छे तहा॥१४०॥ कुंथूपयफरिसजणयंपि. दुक्खं नऽहियासिउं तरे। ता तं महदुक्खसंघट्टं. कह नित्थरिहिं सुदारुणं?॥१॥ नारय-तेरिच्छदुक्खाउ, कुंथूजणियाउ अंतरं। मंदरगिरिअणंतगुणियस्स, परमाणुस्सावि नो घडे॥२॥ चिरयाले संमुहं पाणी. कंखंतो आसाए निच्च(च्छि)ओ। भवे दुक्खमईयंपि. सरंतोऽचंतदुक्खिओ॥३॥ बहुदुक्खसंकडट्टेत्थं. आवयाल्कख-परिगए। संसारे परिवसे पाणी. अयंडे महचिंदु जहा॥४॥ पत्थापत्थं अयाणंते, कज्जाकज्जं हियाहियं। सच्चासच्चमसच्चं च. चरणिज्जाचरणिज्जं तहा॥५॥ एवइयं वइयरं सोच्चा. दुक्खस्संतगवेसिणो। इत्थीपरिग्गहारंभे, चेज्जा घोरं तवं चरे॥६॥ वियासणत्था सयिया परंमुही, सुयलंकरिया वा अनलंकिया वा। तिरिक्खमाणोपमया हि दुब्बलं, मणुस्समालेहगयावि करिसई॥७॥ चित्तभित्तिं न निज्झाए. नारिं वा सुयलंकियं। भक्खरंपिव दट्ठूणं, दिट्ठिं पडि-समाहरे॥८॥ हत्थपायपडिच्छिन्नं, कन्ननासोट्ठवियप्पियं। सडमाणीं कुट्ठवाहीए, (तमवित्थीयं दूरयरेणं) बंभयारी विवज्जए॥९॥थेरभज्जा य जा इत्थी, पच्चंगुब्भडजोव्वणा। जुन्नकुमारिं पउत्थवइयं, बालविहवं नहेव य॥१५०॥ अंतेउरवासिणीं चेव. सपरपासंडसंसियं। दिक्खियं साहुणीं वावि, वेसं तहय नपुंसगं॥१॥ कण्हिं गोणिं खरिं चेव, वडवं अविलं अविं तहा। सिप्पिन्थिं पंसुलिं वावि. जंमरोगमहिलं तहा॥२॥ चिरसंसट्ठमविलक्खं, पमादी पावित्थिओ। पगमंती जत्थ रयणीए, अइपइरिक्के दिणस्स वा॥३॥ तं वसहियं संनिवेसं वा, सव्वोवाएहिं सव्वहा। दूरयरं सुदूरदूरेणं, बंभयारी विवज्जए॥४॥ एएसिं सद्धिं संलावं. अद्धाणं वावि गोयमा!। अन्नासु वावि इत्थीसु. खणद्धंपि विवज्जए॥१५५॥ से भयवं! किमित्थीयं णो णं णिज्झाएज्जा?, गोयमा! णो णं णिज्झाएज्जा, से भयवं! किं मुणियत्थं वत्थालंकरियविहूसियं इत्थीयं नो णं निज्झाएज्जा उयाहुणं विणियंसणिं?. गोयमा! उभयहावि णं णो णं णिज्झाएज्जा. से भयवं! किमित्थीयं नो आलवेज्जा?, गोयमा! नो णं आलवेज्जा, से भयवं! किमित्थीसु सद्धिं खणद्धमवि णो संवसेज्जा?. गोयमा! नो णं संवसिज्जा. से भयवं! किमित्थीसु सद्धिं नो अद्धाणं पडिवज्जेज्जा?. एगे बंभयारी एगित्थीए सद्धिं नो पडिवज्जेज्जा।६। से भयवं! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ-जहा णं नो इत्थीणं निज्झाएज्जा नो णमालवेज्जा नो णं नीए सद्धिं परिवसेज्जा नो णं अद्धाणं पडिवज्जेज्जा?. गोयमा! सव्वप्पयारेहिं णं सव्विन्थीयं अचत्थं गउक्कडत्ताए रागेणं संधुक्किजमाणी कामग्गीए संपलित्ता सहावओ चेव विसएहिं वाहिज्जइ, तओ सव्वप्पयारेहिं णं वाहिज्जमाणी अणुसमयं सव्वदिसिविदिसासुं णं सव्वत्थ विसए पत्थिज्जा. जाव णं सव्वत्थ विसए पत्थिज्जा ताव णं सव्वत्थ पयारेहिं णं सव्वहावि पुरिसे संकप्पेज्जा. जाव णं पुरिसे संकप्पेज्जा ताव णं सोइंदिओवओगत्ताए चक्खुरिंदिओवओगत्ताए रसणिंदिओवओगत्ताए घाणिंदिओवओगत्ताए फासिंदिओवओगत्ताए जत्थ णं केई पुरिसे कंतरूवेइ वा अकंतरूवेइ वा पडुप्पन्नजोव्वणेइ वा अपडुप्पन्नजोव्वणेइ वा दिट्ठपुव्वेइ वा अदिट्ठपुव्वेइ वा इट्ठिढमंतेइ वा अणिट्ठिढमंतेइ वा इट्ठिढपन्नेइ वा अणिट्ठिढपन्नेइ वा विसयाउरेइ वा निव्विन्नकामभोगेइ वा उदयबोंदीएइ वा अणुदयबोंदीएइ वा महासत्तेइ वा हीणसत्तेइ वा महापुरिसेइ वा कापुरिसेइ वा समणेइ वा माहणेइ वा अन्नयरे वा निंदियाहमहीणजाइए वा तत्थ णं ईहापोहवीमंसं पउंजित्ताणं संजोगसंपत्तिं परिकप्पेज्जा, जाव णं संजोगसंपत्तिं परिकप्पेज्जा ताव णं से चित्ते संखुद्धे भवेज्जा. जाव णं से चित्ते संखुद्धे भवेज्जा ताव णं से चित्ते विसंवएज्जा. जाव णं से चित्ते विसंवएज्जा ताव णं से देहे सेएणं अद्धासेज्जा, जाव णं से देहे सेएणं अद्धासेज्जा ताव णं से दरविदरे इहपरलोगावाए पम्हुसेज्जा, जाव णं से दरविदरे इहपरलोगावाए पम्हुसेज्जा ताव णं चेचा लज्जं भयं अयसं अकित्तिं मेरं उच्चट्ठाणाओ णीयट्ठाणं ठाएज्जा, जाव णं उच्चट्ठाणाओ नीयट्ठाणं ठाएज्जा ताव णं वच्चेज्जा असंखेज्जाओ समयावलियाओ, जाव णं निज्जंति असंखेज्जाओ समयावलियाओ ताव णं जं पढमसमयाओ कम्मट्ठिइयं नं बीयसमयं पडुच्च तइयादियाण समयाणं संखेज्जं असंखेज्जं अणंतं वा अणुक्कमसो कम्मठिइं संचिणिज्जा. जाव णं अणुक्कमसो अणंतकम्म-ट्ठिइं संचिणइ ताव णं असंखेज्जाइं अवसप्पिणीकोडिलक्खाइं जावइएणं कालेणं परिवत्तंति तावइयं कालं दोसुं चेव निरयनिरिच्छासु गतीसुं उक्कोसट्ठिइयं कम्मं आसंकलेज्जा. जाव णं उक्कोसठिइयं कम्ममासंकलेज्जा ताव णं से विव-ण्णजुत्तिविवण्णकंतिविचलियलायण्णसिरीयं निन्नट्ठदित्तितेयं चोंदी भवेज्जा, जाव णं चुयकंतिलावण्णसिरीयं णित्तेयं चोंदी भवेज्जा ताव णं से सीइज्जा फरिसिंदिए. जाव णं सीएज्जा फरिसिंदिए ताव णं सव्वहा विवट्टेज्जा सव्वत्थ चक्खु-रागे. जाव णं सव्वत्थ विवट्टेज्जा चक्खुरागे ताव णं रागारुणे नयणजुयले भवेज्जा. जाव णं रागारुणे नयणजुयले भवेज्जा ताव णं रागंधत्ताए ण गणेज्जा सुमहंतगुरुदोसे वयभंगे न गणेज्जा सुमहंतगुरुदोसे नियमभंगे न गणेज्जा सुमहं-तघोरपावकम्मसमायरणं सीलखंडणं न गणेज्जा सुमहंतसव्वगुरुपावकम्मसमायरणं संजमविराहणं न गणेज्जा घोरंधयारपरलोगदुक्खभयं न गणेज्जा आयं न गणेज्जा सकम्मगुणट्ठाणगं न गणेज्जा समुरासुरस्सावि णं जगस्स अलंघ-णिज्जं आणं न गणेज्जा अणंतहुत्तो चुल्लसीइजोणिलक्खपरिवत्तगब्भपरंपरं अलद्धणिमिसद्धसोक्खं चउगइसंसारदुक्खं ण पासिज्जा जं पासणिज्जं पासेज्जा जं अपासणिज्जं सव्वजणसमूहमज्झसंनिविट्ठट्ठिया णिवन्नचक्कमियनिरिक्खिज्ज-माणी वा दिप्पंतकिरणजालदसदिसीपयासियतवंततेयरासी सूरीएवि तहावि णं पासेज्जा सुन्नंधयारे सव्वदिसाभाए, जाव णं रागंधत्ताए ण गणेज्जा सुमहंतगुरुदोसवयभंगे सीलखंडणे संयमविराहणे परलोगभए आणाभंगाइक्कमे अणं-तसंसारभए पासेज्जा अपासणिज्जे सव्वजणपयडदिणयरेवि णं मन्नेज्जा सुन्नंधयारे सव्वे दिसाभाए ताव णं भवेज्जा अचंतनिब्भट्ठसोहग्गाडसए. विच्छाए रागारुणपंडुरे दुद्दंसणिज्जे अणिरिक्खणिज्जे वयणकमले भवेज्जा, जावं च णं अचंतनिब्भट्ठ जाव भवेज्जा ताव णं फुरुफुरेज्जा सणियं सणियं पोंडुपुडनियंबवच्छोरुहबाहुलइउरकंठपएसे, जाव णं फुरुफुरेंति पोंडपुडनियंबवच्छोरुहबाहुबलयउरकंठप्पएसे ताव णं मोट्टायमाणी अंगपाडियाहिं निरुवलक्खे वा सोवलक्खे वा भंजेज्जा सव्वंगोवंगे. जाव णं मोट्टायमाणी अंगपालियाहिं भंजेज्जा सव्वंगोवंगे ताव णं मयणसरसन्निवाएणं जज्जरियसंभिन्ने(निभे)सव्वे रोमकूवे तणू भवेज्जा. जाव णं मयणसरसन्निवाएणं विद्धंसिए चोंदी भवेज्जा ताव णं

११२१ महानिशीथच्छेदसूत्रं, अ-६-१२५(५)-२

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [७] + गाथा ||१५५||

दीप अनुक्रम [३८७]

तहा परिणमेज्जा तणू जहा णं मणगं पयलंति धातूओ, जाव णं मणगं पयलंति धातूओ ताव णं अचत्थं बाहिज्जंति पोग्गलनिर्यबोरुबाहुलइयाओ, जाव णं अचत्थं बाहिज्जइ निर्यब ताव णं दुक्खेणं धरेज्जा गत्तयट्ठिं. जाव णं दुक्खेणं धरेज्जा गत्तयट्ठिं ताव णं से णोबलक्खेज्जा अत्तीयं सरीरावत्थं, जाव णं णोबलक्खेज्जा अत्तीयं सरीरावत्थं ताव णं दुवालसेहिं समएहिं दरनिचिट्ठं भवे बोंदी, जाव णं दुवालसहिं दरनिचिट्ठे बोंदि भवेज्जा ताव णं पडिखलेज्जा से ऊसासनीसासे, जाव णं पडिखलेज्जा उस्सासनीसासे ताव णं मंदं मंदं ऊससेज्जा मंदं मंदं नीससेज्जा. जाव णं एयाइं इत्तियाइं भावंतरअवत्थंतराइं विहारेज्जा ताव णं जहा गहग्घत्थे केइ पुरिसेइ वा इत्थिएइ वा विसंठुलाए पिसायाए भारनीए असंबद्धं संलवियं विसंठुलं तं अचंतं उल्लविज्जा एवं सिया णं इत्थीयं. विसमावत्तमोहणमम्मणालावेणं पुरिसे दिट्ठपुव्वेइ वा अदिट्ठपुव्वेइ वा कंतरूवेइ वा अकंतरूवेइ वा गयजोव्वणेइ वा पडुप्पन्नजोव्वणेइ वा महासत्तेइ वा हीणसत्तेइ वा सप्पुरिसेइ वा जाव णं अन्नयरे वा केई निंदियाहमहीणजाइए वा अज्झत्थेणं ससज्झसेणं आमंतेमाणी उल्लावेज्जा, जाव णं संखेज्जभेदभिन्नेणं सरागेणं सरेणं दिट्ठीए वा पुरिसे उल्लावेज्जा निज्झाएज्जा ताव णं जं तं असंखेज्जाइं अवसप्पिणी उस्सप्पिणीकोडिलक्खाइं दोसुं नरयतिरिच्छासु गतीसुं उक्कोसट्ठितीयं कम्मं आसंकलियं आसि तं निबंधिज्जा, नो णं बद्धपुट्ठं करेज्जा, सेऽवि णं जंसमयं पुरिसस्स णं सरीरावयवफरिसणाभिमुहे भवेज्जा णो णं फरिसेज्जा तंसमयं चेव तं कम्मट्ठिइं बद्धपुट्ठं करेज्जा. नो णं बद्धपुट्ठनिकायंति।७। एयावसरम्मि उ गोयमा ! संजोगेणं संजुज्जेज्जा, सेऽवि णं संजोए पुरिसायत्ते, पुरिसेऽवि णं जे णं ण संजुज्जे से धन्ने जे णं संजुज्जे से अधण्णे।८। से भयवं ! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा पुरिसेवि णं जे णं न संजुज्जे से धन्ने जे णं संजुज्जे से णं अधन्ने ?. गोयमा ! जे णं से तीए इत्थीए पावाए बद्धपुट्ठकम्मट्ठिई चिट्ठइ से णं पुरिससंगेणं निकाइज्जइ, तेणं तु बद्धपुट्ठनिकाइएणं कम्मेणं सा वराई तं तारिसं अज्झवसायं पडुच्चा एगिंदियत्ताए पुढवादीसुं गया समाणी अणंतकालपरियट्टेणवि णं णो पावेज्जा बेइंदियत्तणं, एवं कहकहवि बहुकेसेण अणंतकालाओ एगिंदियत्तणं खविय बेइंदियत्तं तेइंदियत्तं चउरिंदियत्तमवि केसेणं वेयइत्ता पंचेंदियत्तणं आगया समाणी दुब्भगित्थियं पंडतेरिच्छं वेयमाणी हाहाभूयकट्ठसरणा सिविणेवि अदिट्ठसोक्खा निच्चं संतावुव्वेविया सुहिसयणबंधवविवज्जिया आजम्मं कुच्छणिज्जं गरहणिज्जं निंदणिज्जं खिसणिज्जं बहुकम्मंतेहिं अणेगचाडुसएहिं लद्धोदरभरणा सव्वलोगपरिभूया चउगईए संसरेज्जा, अन्नं च णं गोयमा ! जावइयं तीए पावइत्थीए बद्धपुट्ठनिकाइयं कम्मट्ठिइयं समज्जियं तावइयं इत्थियं अभिलसिउकामे पुरिसे उक्किट्ठुक्किट्ठयरं अणंतं कम्मट्ठिइं बद्धपुट्ठनिकाइयं समज्जिणिज्जा. एतेणं अट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहा णं पुरिसेऽवि णं जे णं नो संजुज्जे से णं धन्ने जे णं संजुज्जे से णं अधन्ने।९। भयवं ! (केस णं) पुरिसेस णं पुच्छा जाव णं वयासी ?. गोयमा ! छव्विहे पुरिसे नेये, तंजहा- अहमाहमे अहमे विमज्झिमे उत्तमे उत्तमुत्तमे सव्वुत्तमे।१०। तत्थ णं जे सव्वुत्तमे पुरिसे से णं पच्चंगुब्भडजोव्वणसव्वुत्तमरूवलावण्णकंतिकलियाएवि इत्थीए नियंबारूढो वाससयंपि चेट्ठिज्जा णो णं मणसावि तं इत्थियं अभिलसेज्जा।११। जे णं तु से उत्तमुत्तमे से णं जइकहवि नुडितिहाएणं मणसा समयमेकं अभिलसे तहावि बीयसमए मणं संनिरुंभिय अत्ताणं निंदेज्जा गरहेज्जा. न पुणो बीएणं तज्जमे इत्थीयं मणसावि उ अभिलसेज्जा. जे णं से उत्तमे पुरिसे से णं जइकहवि खणं मुहुत्तं वा इत्थियं कामिज्जमाणिं पेक्खिज्जा तओ मणसा अभिलसेज्जा जाव णं जामं वा अद्धजामं वा णो णं इत्थीए समं विकम्मं समायरेज्जा।१२। जइ णं बंभयारी कयपच्चक्खाणाभिग्गहे, अहा णं नो बंभयारी नो कयपच्चक्खाणाभिग्गहे नो णं नियकलत्ते भयणा. ण उणं निव्वेसु कामेसुं अभिलासी भविज्जा, तस्स एयस्स णं गोयमा ! अत्थि बंधे, किं तु अणंतसंसारियत्तणं नो निबंधिज्जा।१३। जे णं से विमज्झिमे से णं नियकलत्तेण सद्धिं चिय इमं समायरेज्जा, णो णं परकलत्तेणं, एसे य णं जइ पच्छा उग्गबंभयारी नो भवेज्जा तो णं अज्झवसायविसेसं तं तारिसमंगीकाऊणं अणंतसंसारियत्तणे भयणा, जओ णं केई अभिगयजीवाइपयत्थे भवसत्ते आगमाणुसारेणं सुसाहूणं धम्मोवट्टंभदाणाई दाणसीलतवभावणामइए चउव्विहे धम्मखंधे समणुट्ठेज्जा से णं जइकहवि नियमवयभंगं न करेज्जा तओ णं सायपरंपरएणं सुमाणुसत्तसुदेवत्ताए जाव णं अपरिवडियसम्मत्ते निसग्गेण वा अभिगमेण वा जाव अट्ठारससीलंगसहस्सधारी भवित्ताणं निरुद्धासवदारे विहुयरयमले पावयं कम्मं खवेत्ताणं सिज्झिज्जा।१४। जे य णं से अहमे से णं सपरदारासत्तमाणसे अणुसमयं कूरज्झवसायज्झवसियचित्तेहिं सारंभपरिग्गहाइसु अभिरए भवेज्जा, तहा णं जे य से अहमाहमे से णं महापावकम्मे सव्वाओ इत्थीओ वाया मणसा य कंमुणा तिविहंतिविहेणं अणुसमयमभिलसेज्जा तहा अचंतकूरज्झवसायअज्झवसिएहिं चित्तेहिं सारंभपरिग्गहासत्ते कालं गमेज्जा. एएसिं दोण्हंपि णं गोयमा ! अणंतसंसारियत्तणं णेयं।१५। भयवं ! जे णं से अहमे जेऽवि णं से अहमाहमे पुरिसे तेसिं च दोण्हंपि अणंतसंसारियत्तणं समक्खायं नो णं एगे अहमे एगे अहमाहमे एतेसिं दोण्हंपि पुरिसावत्थाणं के पइविसेसे ?. गोयमा ! जे णं से अहमपुरिसे से णं जइवि उ सपरदारासत्तमाणसे कूरज्झवसायज्झवसिएहिं चित्तेहिं सारंभपरिग्गहासत्तचित्ते तहावि णं दिक्खियाहिं साहुणीहिं अन्नयरासुं(हिं)च सीलसंरक्खणपोसहोववासनिरयाहिं दुक्खियाहिं गारत्थीहिं वा सद्धिं आवडियपिट्ठियामंतिएवि समाणे णो य चियमंसमायरेज्जा. जे य णं से अहमाहमे पुरिसे से णं नियजणणिपभिई जाव णं दिक्खियाहिं साहुणीहिंपि सम चियमंसं समायरिज्जा. तेणं चेव से महापावकम्मे सव्वाहमाहमे समक्खाए. से णं गोयमा ! पइविसेसे. तहा य जे णं से अहमपुरिसे से णं अणंतेणं कालेणं बोहिं पावेज्जा, जे य उण से अहमाहमे महापावकारी दिक्खियाहिंपि साहुणीहिंपि सम चियमंसं समायरिज्जा से णं अणंतहुत्तोवि अणंतसंसारमाहिंडिऊणंपि बोहिं नो पावेज्जा, एस णं गोयमा ! विसेसे पइविसेसे।१६। तत्थ णं जे से सबुत्तमे से णं छउमत्थवीयरागे णेये, जे णं तु से उत्तमुत्तमे से णं अणिट्ठिवपत्तपभिनीए जाव णं उवसमगे वा खवए वा ताव णं निओयणीए. जे णं चसे उत्तमे से णं अप्पमत्तसंजए णेए, एवमेएसिं निरूवणा कुज्जा।१७। जे उण मिच्छदिट्ठी भविऊणं उग्गबंभयारी भवेज्जा हिंसारंभपरिग्गहाईणं विरए से णं मिच्छदिट्ठी चेव. णो णं सम्मदिट्ठी, तेसिं च णं अवेइयजीवाइपयत्थसब्भावाणं गोयमा ! नो णं उत्तमत्ते अभिनंदणिज्जे पसंसणिज्जे वा भवइ, जओ णं अणंतरभविए दिव्वोरालिए विसए पत्थेज्जा, अन्नं च कयादी तिदिविंत्थियादओ संचिक्खिया तओ णं बंभव्वयाओ परिभंसिज्जा, णियाणकडे वा हवेज्जा।१८। जे य णं से विमज्झिमे से णं तारिसमज्झवसायमंगीकिच्चाणं विरयाविरए दट्ठव्वे।१९। तहा णं जे से अहमे तहा जे णं से अहमाहमे तेसिं तु एगंतेणं जहा इत्थीसुं तहा णं

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [२०] + गाथा ||१५६||

दीप अनुक्रम [३८७]

नेए जाव णं कम्मट्ठिइयं समज्जेज्जा, णवरं पुरिसस्स णं संचिक्खणगेसुं वच्छरुहोवरितलपक्खएसुं लिंगे य अहिययरं रागमुप्पज्जे, एवं एते चेव छ पुरिसविभागे। २०। कासिं च इत्थीणं गोयमा! भद्दत्तं सम्मत्तदढत्तं च अंगीकाऊणं जाव णं सव्वुत्तमे पुरिसविभागे ताव णं चिंतणिज्जे, नो णं सव्वेसिमित्थीणं। २१। एवं तु गोयमा! जीए इत्थीए तिकालं पुरिससंजोगसंपत्ती ण संजाया अहा णं पुरिससंजोगसंपत्तीएवि साहीणाए जाव णं तेरसमे चोद्दसमे पन्नरसमे णं च समए णं पुरिसेणं सद्धिं ण संजुत्ता णो चियमंसमायरियं से णं जहा घणकट्ठतणदारुसमिद्धे केइ गामेइ वा नगरेइ वा रन्नेइ वा संपलित्ते चंडानिलसंधुक्खिए पयलित्ताण २ णिडज्झिय २ चिरेणं उवसमेज्जा एवं तु णं गोयमा! से इत्थीकामग्गी संपलित्ता समाणी णिडज्झिय २ समयचउक्केणं उवसमेज्जा, एवं इगवीसइमे बावीसइमे जाव णं सत्ततीसइमे समए, जहा णं पदीवसिहा वावन्ना पुणरवि सयं वा तहाविहेणं चुन्नजोगेण वा पयलेज्जा एवं सा इत्थी पुरिसदंसणेण वा पुरिसालावगकरिसणेण वा मदेणं कंदप्पेणं कामग्गीए पुणरवि उप्पयलेज्जा। २२। एत्थं च गोयमा! जमित्थीयं भएण वा लज्जाए वा कुलंकुसेण वा जाव णं धम्मसद्धाए वा तं वेयणं अहियासेज्जा नो णं चियमंसं समायरिज्जा से णं धन्ना से णं पुन्ना से य णं वंदा से णं पुज्जा से णं दट्ठवा से णं सव्वलक्खणा से णं सव्वकल्लाणकारया से णं सव्वुत्तममंगलनिही से णं सुयदेवया से णं सरस्सती से णं अवहुंडी से णं अच्चुया से णं इंदाणी से णं परमपवित्तुत्तमा सिद्धी मुत्ती सासया सिवगइत्ति। २३। जमित्थियं तं वेयणं नो अहियासेज्जा चियमंसं समायरेज्जा से णं अधन्ना से णं अपुण्णा से णं अवंदा से णं अपुज्जा से णं अदट्ठवा से णं अलक्खणा से णं अमंगलक्खणा से णं सव्वअमंगलअकल्लाणभायणा से णं भट्टसीला से णं भट्टायारा से णं परिभट्ठचारित्ता से णं निंदणीया से णं खिंसणिज्जा से णं कुच्छणिज्जा से णं पावा से णं पावपावा से णं महापावपावा से णं अपवित्तत्ति, एवं तु गोयमा! चडुलत्ताए भीरुत्ताए कायरत्ताए लोलत्ताए उम्मायओ वा कंदप्पओ वा दप्पओ वा अणप्पवसओ वा आउट्टियाए वा जमित्थियं संजमाओ परिभस्सियं दूरद्धाणे वा गामे वा नगरे वा रायहाणीए वा वेसग्गहणं अच्छिड्डिय पुरिसेण सद्धिं चियमंसमायरेज्जा भुज्जो २ पुरिसं कामेज्ज वा रमेज्ज वा अहा णं तमेव दोयद्धियं कज्जमिइ पक्खिवेत्ताणं तमाइंचेज्जा, तं चेव आईचमाणीं पस्सिया णं उम्मायओ वा दप्पओ वा कंदप्पओ वा अणप्पवसओ वा आउट्टियाए वा केइ आयरिएइ वा सामन्नसंजएइ वा रायसंसिएइ वा वायलद्धिजुत्तेइ वा विन्नाणलद्धिजुत्तेइ वा जुगप्पहाणेइ वा पवयणप्पभावगेइ वा तमित्थियं अन्नं वा रमेज्ज वा कामेज्ज वा अभिलसेज्ज वा भुंजेज्ज वा परिभुंजेज्ज वा जाव णं चियमंसमायरेज्जा से णं दुरंतपंतलक्खणे अहन्ने अवंदे अदट्ठवे अपत्थिए अपत्थे अपसत्थे अकल्लाणे अमंगल्ले निंदणिज्जे गरहणिज्जे खिंसणिज्जे कुच्छणिज्जे से णं पावे से णं पावपावे से णं महापावे से णं महापावपावे से णं भट्टसीले से णं भट्टायारे से णं निब्भट्ठचारित्ते महापावकम्मकारी, जया णं पायच्छित्तमब्भुट्ठिज्जा तओ णं मंदतुरंगेणं वइरेणं उत्तमेणं संघयणेणं उत्तमेणं पोरुसेणं उत्तमेणं सत्तेणं उत्तमेणं तत्तपरिन्नत्तणेणं उत्तमेणं वीरियसामत्थेणं उत्तमेणं संवेगेणं उत्तमाए धम्मसद्धाए उत्तमेणं आउक्खएणं तं पायच्छित्तमणुचरेज्जा, ते णं तु गोयमा! साहूणं महाणुभागाणं अट्ठारसपरिहारट्ठाणाइं णव बंभचेरगुत्तीओ वागरिज्जंति। २४। से भयवं! किं पच्छित्तेणं सुज्झेज्जा?, गोयमा! अत्थेगे जे णं सुज्झेज्जा, अत्थेगे जे णं नो सुज्झेज्जा, भयवं! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ-जहा णं गोयमा! अत्थेगे जे णं सुज्झेज्जा अत्थेगे जे णं नो सुज्झिज्जा?, गोयमा! अत्थेगे नियडीपहाणे सढसीले वंकसमायारे से णं ससल्ले आलोइत्ताणं ससल्ले चेव पायच्छित्तमणुचरेज्जा, से णं अविसुद्धसकलुसासए णो सुज्झेज्जा, अत्थेगे जे णं उज्जुपरद्धसरलसहावे जहावत्तं णीसल्लं नीसंकं सुपरिफुडं आलोइत्ताणं जहोवइट्ठं चेव पायच्छित्तमणुचेट्ठिज्जा से णं निम्मलनिकलुसविसुद्धासए विसुज्झेज्जा, एतेणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा णं गोयमा! अत्थेगे जे णं नो सुज्झेज्जा अत्थेगे जे णं सुज्झेज्जा। २५। तहा णं गोयमा! इत्थी य णाम पुरिसाणमहम्भाणं सव्वपावकम्माणं वसुहारा तमरयपंकखाणी सोग्गइमग्गस्स णं अग्गला नरयावयारस्स णं समोयरणवत्ती अभुमयं विसकंदलिं अणग्गियं चडुलिं अभोयणं विसुइयं अणामियं वाहिं अचेयणं मुच्छं अणोवसग्गिं मारिं अणियलिं गुत्तिं अरज्जुए पासे अहेउए मच्चू, तहा य णं गोयमा! इत्थिसंभोगे पुरिसाणं मणसावि णं अचिंतिणिज्जे अणज्झवसणिज्जे अपत्थणिज्जे अणीहणिज्जे अवियप्पणिज्जे असंकप्पणिज्जे अणभिलसणिज्जे असंभरणिज्जे तिविहंतिविहेणंति, जओ णं इत्थीणं नाम पुरिसस्स णं गोयमा! सव्वप्पगारेहिंपि दुस्साहियं विज्जंपिव दोसुप्पायणं संरंभसंजणगंपिव अपुट्ठधम्मं खलियचारित्तंपिव अणालोइयं अणिंदियं अगरहियं अकयपायच्छित्तज्झवसायं पडुच्च अणंतसंसारपरियट्टणं दुक्खसंदोहं कयपायच्छित्तविसोहियंपिव पुणो असंजमायरणं महंतपावकम्मसंचयं हिंसंपिव सयलतेलोक्कनिंदियं अदिट्ठपरलोगपच्चवायं घोरंधयारणरयवासो इव णिरंतराणेगदुक्खनिहित्ति, ‘अंगपच्चंगसंठाणं, चारुल्लवियपेहियं। इत्थीणं तं न निज्झाए, कामरागविवड्ढणं ॥ १५६॥ तहा य इत्थीओ नाम गोयमा! पलयकालरयणीमिव सव्वकालं तमोवलित्ताउ भवंति विज्जु इव खणदिट्ठनट्ठपेम्माओ भवंति सरणागयघायगो इव एक्कजंमियाओ तक्खणपसूयजीवंतसुद्धनियसिसुभक्खीओ इव महापावकम्माओ भवंति खरपवणुच्चालियलवणोदहीवेलाइव बहुविहविकप्पकल्लोलमालाहिं खणंपि एगत्थ असंठियमाणसाओ भवंति सयंभुरमणोदहीमिव दुरवगाहकइतवाओ भवंति पवणो इव चडुलसहावाओ भवंति अग्गी इव सव्वभक्खीओ वाऊ इव सव्वफरिसाओ तक्करो इव परत्थलोलाओ साणो इव दाणमेत्तमित्तीओ मच्छो इव हव्वपरिचत्तनेहाओ एवमाइअणेगदोसलक्खपडिपुण्णसव्वंगोवंगसब्भंतरबाहिराणं महापावकम्माणं अविणयविसमंजरीणं तत्थुप्पन्नअणत्थगच्छपसूईणं इत्थीणं अणवरयनिज्झरंतदुग्गंधासुइविलीणकुच्छणिज्जनिंदणिज्जखिंसणिज्जसव्वंगोवंगाणं सब्भंतरबाहिराणं परमत्थओ महासत्ताणं निविन्नकामभोगाणं गोयमा! सव्वुत्तमुत्तमपुरिसाणं के नाम सयन्ने सुविन्नायधम्माहम्मे खणमवि अभिलासं गच्छिज्जा?। २६। जासिं च णं अभिलसिउकामे पुरिसे तज्जोणिसंमुच्छिमपंचेंदियाणं एक्कपसंगेण चेव णवण्हं सयसहस्साणं णियमा उवहवगे भवेज्जा, ते य अच्चंतसुहुमत्ताउ मंसचक्खुणो ण पासिया। २७। एएणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा णं गोयमा! णो इत्थीयं आलवेज्जा नो संलवेज्जा नो उल्लवेज्जा नो इत्थीणं अंगोवंगाइं संणिरिक्खेज्जा जाव णं नो इत्थीए सद्धिं एगे बंभयारी अद्धाणं पडिवज्जेज्जा। २८। से भयवं! किमित्थीए संलावुल्लावंगोवंगनिरिक्खणं वज्जेज्जा उयाहु मेहुणं?, गोयमा! उभयमवि, से भयवं! किमित्थिसंजोगसमायरणे मेहुणे परिवज्जिया उयाहुणं बहुविहेसुं सचित्ताचित्तवत्थुविसएसु

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [२९] + गाथा ||१५७||

दीप अनुक्रम [४११]

मेहुणपरिणामे तिविहंतिविहेणं मणोवइकायजोगेणं सव्वहा सव्वकालं जावज्जीवाएत्ति ?, गोयमा ! सव्वं सव्वहा विवज्जिजा ।२९। से भयवं ! जे णं केई साहू वा साहुणी वा मेहुणमासेविज्जा से णं वंदेज्जा ?, गोयमा ! जे णं केई साहू वा साहुणी वा मेहुणं सयमेव अप्पणा सेवेज्ज वा परेहिं उवइसेत्तुं सेवाविज्जा वा सेविज्जमाणं समणुजाणिज्ज वा दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्खजोणियं वा जाव णं करकम्माइं सचित्ताचित्तवत्थुविसयं वा विविहज्झवसाणं कारिमाकारिमोवगरणेणं मणसा वा वयसा वा काएण वा से णं समणे वा समणी वा दुरंतपंतलक्खणे अदट्ठव्वे अमग्गसमायारे महापावकम्मे णो णं वंदिज्जा णो णं वंदाविज्जा नो णं वंदिज्जमाणं वा समणुजाणेज्जा तिविहंतिविहेणं जाव णं विसोहिकालंति, से भयवं ! जे वंदेज्जा से किं लभेज्जा ?, गोयमा ! जे तं वंदेज्जा से अट्ठारसण्हं सीलंगसहस्साधारीणं महाणुभागाणं तित्थयरादीणं महतीं आसायणं कुज्जा, जे णं तित्थयरादीणं आसायणं कुज्जा से णं अज्झवसायं पडुच्चा जाव णं अणंतसंसारियत्तणं लभेज्जा ।३०। ‘विप्पहिचित्थियं सम्मं, सव्वहा मेहुणंपिय । अत्थेगे गोयमा ! पाणी, जे णो चयइ परिग्गहं ॥७॥ जावइयं गोयमा ! तस्स, सचित्ताचित्तोभयत्तगं । पभूयं वाऽणु जीवस्स, भवेज्जा उ परिग्गहं ॥८॥ तावइएणं तु सो पाणी, ससंगो मोक्खसाहणं । णाणाइतिगं ण आराहे, तम्हा वज्जे परिग्गहं ॥९॥ अत्थेगे गोयमा ! पाणी, जे पयहित्ता परिग्गहं । आरंभं नो विवज्जेज्जा, तंपीयं भवपरंपरा ॥१६०॥ आरंभे पत्थियस्सेगवियलजीवस्स वइयरे । संघट्टणाइयं कम्मं, जं बद्धं गोयमा ! मुणे ॥ १६१ ॥ एगे वेइंदिए जीवे एगं समयं अणिच्छमाणे बलाभिओगेणं हत्थेण वा पाएण वा अन्नयरेण वा सलागाइउवगरणजाएणं जे केई पाणी अगाढं संघट्टेज्ज वा संघट्टावेज्ज वा संघट्टिज्जमाणं अगाढं परेहिं समणुजाणेज्जा से णं गोयमा ! जया तं कम्मं उदयं गच्छेज्जा तया णं महया केसेणं छम्मासेणं वेदिज्जा, गाढं दुवालसहिं संवच्छरेहिं, तमेव अगाढं परियावेज्जा वाससहस्सेणं गाढं दसहिं वाससहस्सेहिं, तमेव अगाढं किलामेज्जा वाससयसहस्सेणं गाढं दसहिं वासलक्खेहिं, अहा णं उद्दवेज्जा तओ वासकोडी, एवं तिचउपंचिंदिएसु दट्ठव्वं ।३१। ‘सुहुमस्स पुढविजीवस्स, जत्थेगस्स विराहणं । अप्पारंभं तयं बेंति, गोयमा ! सव्वकेवली ॥२॥ सुहुमस्स पुढविजीवस्स, वावत्ती जत्थ संभवे । महारंभं तयं बेंति, गोयमा ! सव्वकेवली ॥३॥ एवं तु संमिलंतेहिं, कम्मुक्करडेहिं गोयमा !। से सोट्ठभे अणंतेहिं, जे आरंभे पवत्तए ॥४॥ आरंभे वट्टमाणस्स, बद्धपुट्ठनिकाइयं । कम्मं बद्धं भवे तम्हा, तम्हाऽऽरंभं विवज्जए ॥५॥ पुढवाइअजीवकायंता, सव्वभावेहिं सव्वहा । आरंभा जे नियट्टेज्जा, से अइरा(जम्मजरामरणसव्वदारिद्ददुक्खाण) विमुच्चइ ॥६॥ त्ति, अत्थेगे गोयमा ! पाणी !, जे एयं परिभुज्जिउं । एगंतसुहतल्लिच्छे, ण लभे सम्मग्गवत्तणिं ॥७॥ जीवे संमग्गमोइण्णे, घोरवीरतवं चरे । अचयंतो इमे पंच, कुज्जा सव्वं निरत्थयं ॥८॥ कुसीलोसन्नपासत्थे, सच्छंदे सबले तहा । दिट्ठीएवि इमे पंच, गोयमा ! न निरिक्खए ॥९॥ सव्वसुदेसियं मग्गं, सव्वदुक्खप्पणासगं । सायागारवगुंफाते, अन्नहा भणियमुज्झए ॥ १७० ॥ पयमक्खरंपि जो एगं, सव्वन्नूहिं पवेदियं । न रोएज्जऽन्नहा भासे, मिच्छदिट्ठी स निच्छियं ॥ १॥ एवं नाऊण संसग्गिं, दरिसणालावसंथवं । संवासं च हियाकंखी, सव्वोवाएहिं वज्जए ॥ २॥ भयवं ! निब्भट्ठसीलाणं, दरिसणं तंपि निच्छसि । पच्छित्तं वागरेसीय, इति उभयं न जुज्जए ?॥ ३॥ गोयमा ! भट्ठसीलाणं, दुत्तरे संसारसागरे । धुवं तमणुकंपित्ता, पायच्छित्ते पदरिसिए ॥ ४॥ भयवं ! किं पायच्छित्तेणं, छिंदिज्जा नारगाउयं ?। अणुचरिऊण पच्छित्तं, बहवे दुग्गइं गए ॥५॥ गोयमा ! जे समज्जेज्जा, अणंतसंसारियत्तणं । पच्छित्तेणं धुवं तंपि, छिंदे किं पुणो नरयाउयं ?॥ ६ ॥ पायच्छित्तस्स भुवणेऽत्थ, नासज्झं किंचि विज्जए । बोहिलाभं पमोत्तूणं, हारियं तं न लब्भए ॥ ७॥ तं चाउकायपरिभोगे, तेउकायस्स निच्छियं । अबोहिलाभियं कम्मं, वज्जए मेहुणेण य ॥ ८ ॥ मेहुणं आउकायं च, तेउकायं तहेव य । तम्हा तओवि जत्तेणं, वज्जेज्जा संजइंदिए ॥९॥ से भयवं ! गारत्थीणं, सव्वमेवं पवत्तइ । (तो जइ अबोही भवेज्ज)एसु तओ सिक्खागुणाणुबयधरणं तु निप्फलं ॥१८०॥ गोयमा ! दुविहे पहे अक्खाए, सुसमणे अ सुसावए । महव्वयधरे पढमे, बीएऽणुव्वयधारए ॥ १ ॥ तिविहंतिविहेण समणेहिं, सव्वसावज्जमुज्झियं । जावज्जीवं वयं घोरं, पडिवज्जियं मोक्खसाहणं ॥ २ ॥ दुविहेगविहं व तिविहं वा, थूलं सावज्जमुज्झियं । उद्दिट्ठकालियं तु वयं (देसेण) संवसे गारत्थी हि ॥ ३ ॥ तहेव तिविहंतिविहेणं, इच्छारंभपरिग्गहं । वोसिरंति अणगारे, जिणलिंगं धरेंति य ॥ ४ ॥ इयरे (य) अणुज्झित्ता, इच्छारंभपरिग्गहं । सदाराभिरए स गिही, जिणलिंगं तु पूयए (ण धारयंति) ॥ ५ ॥ ता गोयमेगदेसस्स, पडिकंते गारत्थे भवे । तं वयमणुपालयंताणं, नो सि आसायणं भवे ॥ ६ ॥ जे पुण सव्वस्स पडिकंते, धारे पंच महव्वए । जिणलिंगं तु समुव्वहइ, तं तिगं नो विवज्जए ॥ ७ ॥ तो महयासायणं तेसिं, इत्थिऽग्गीआउसेवणे । अणंतनाणी जिणे जम्हा, एयं मणसावि णऽभिलसे ॥ ८ ॥ ता गोयमा ! साहियं एयं, एवं वीमंसिउं दढं । विभावय जइ बंधिज्जा, गिहिणो न अबोहिलाभियं ॥ ९ ॥ संजए पुण निबंधिज्जा, एयाहिं हेऊहि य । आणाइक्कम वयभंगा, तह उम्मग्गपवत्तणा ॥ १९० ॥ मेहुणं चाउकायं च, तेउकायं तहेव य । हवइ तम्हा तितयंति, (जत्तेणं) वज्जेज्जा सव्वहा मुणी ॥ १ ॥ जे चरंते व पच्छित्तं, मणेणं संकिलिस्सए । जह भणियं वाऽह णाणुट्ठे, निरयं सो तेण वच्चई ॥ २ ॥ भयवं ! मंदसद्धेहिं, पायच्छित्तं न कीरई । अह काहंति किलिट्ठमणे, ताऽणुकंपं विरुज्झए ? ॥ ३ ॥ नो रायादीहिं संगामे, गोयमा ! सल्लिए नरे । सल्लुद्धरणे भवे दुक्खं, नाणुकंपा विरुज्झए ॥ ४ ॥ एवं संसारसंगामे, अंगोवंगंतबाहिरं । भावसल्लुद्धरिंताणं, अणुकंपा अणोवमा ॥ ५ ॥ भयवं ! सल्लेमि देहत्थे, दुक्खिए होंति पाणिणो । जंसमयं निप्फिडे सल्लं, तक्खणा सो सुही भवे ॥ ६ ॥ एवं तित्थयरे सिद्धे, साहू धम्मं विवंचिउं । जं अकज्जं कयं तेणं, निसिरिएणं सुही भवे ॥ ७ ॥ पायच्छित्तेण को तत्थ, कारिएणं गुणो भवे ?। जेणं कीवस्सवी देसि, दुक्करं दुरणुचरं ॥ ८ ॥ उद्धरिउं गोयमा ! सल्लं, वणभंगे जाव णो कये । वणपिंडीपट्टबंधं च, ताव णं किं परुज्झए ? ॥ ९ ॥ भावसल्लस्स वणपिंडपट्टभूओ इमो भवे । पच्छित्तो दुक्खरोहंपि, पाववणं खिप्पं परोहए ॥ २०० ॥ भयवं ! किमणुविजंते, सुव्वंते जाणिए इ वा ?। सोहेइ सव्वपावाइं, पच्छित्ते सव्वसुदेसिए ? ॥ १॥ सुसाऊ सीयले उदगे, गोयमा ! जाव णो पिए । णरे गिम्हे वियाणंते, ताव तण्हा ण उवसमे ॥ २ ॥ एवं जाणित्तु पच्छित्तं, असढभावेण जा चरे । ताउ तस्स तयं पावं, वड्ढए उ ण हायए ॥ ३ ॥ भयवं ! किं तं वड्ढेज्जा, जं पमादेण कत्थई । आगयं ? पुणो आउत्तस्स, तेत्तियं किं न ठायए ? ॥ ४ ॥ गोयमा ! जह पमाएणं, निच्छंतो अहिडंकिए । आउत्तस्स जहा पच्छा विसं, वड्ढे तह चेव पावगं ॥ ५ ॥ भयवं ! जे विदियपरमत्थे, सव्वपच्छित्तजाणगे । ते किं परेसिं साहंति, नियमकज्जं जहट्ठियं ? ॥ ६ ॥ गोयमा ! मंतंतेहिं, दियहे जो कोडिमुट्ठवे । सेवि दट्ठे विणिचिट्ठे, धारियल्लेहिं भल्लिए ॥ ७ ॥ एवं सीलुज्जले साहू, पच्छित्तं न दढव्वए । अन्नेसिं निउणं (लद्धट्ठं) साहे, ससीसं व ण्हावओ जहत्ति॥२०८॥ महानिसीयसुयक्खंधस्स (२८१)

For Private & Personal Use Only

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [१] + गाथा ||१|| दीप अनुक्रम [४६७]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

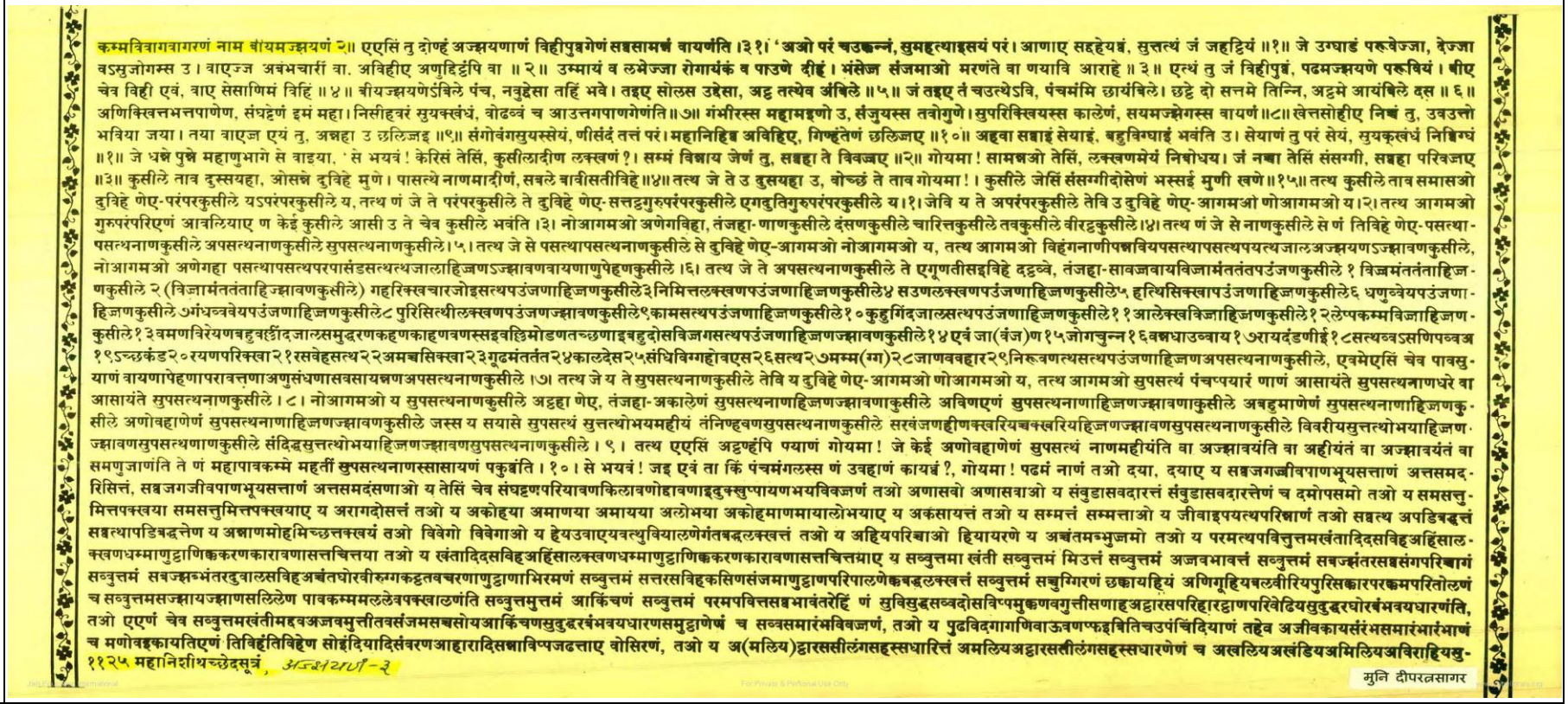

कम्मविवागवागरणं नाम बीयमज्झयणं २॥ एएसिं तु दोण्हं अज्झयणाणं विहीपुव्वगेणं सव्वसामन्नं वायणंति ।३१। ‘अओ परं चउक्कन्नं, सुमहत्थाइसयं परं। आणाए सद्दहेयव्वं, सुत्तत्थं जं जहट्ठियं ॥१॥ जे उग्घाडं परूवेज्जा, देज्जा वऽसुजोगस्स उ। वाएज्ज अबंभचारी वा. अविहीए अणुद्दिट्ठंपि वा ॥ २॥ उम्मायं व लभेज्जा रोगायंकं व पाउणे दीहं। भंसेज्ज संजमाओ मरणंते वा णयावि आराहे ॥ ३॥ एत्थं तु जं विहीपुव्वं, पढमज्झयणे परूवियं। बीए चेव विही एवं, वाए सेसाणिमं विहिं ॥ ४॥ बीयज्झयणेऽबिले पंच, नवुद्देसा तहिं भवे। तइए सोलस उद्देसा, अट्ठ तत्थेव अंबिले ॥५॥ जं तइए तं चउत्थेऽवि, पंचमंमि छायंबिले। छट्ठे दो सत्तमे तिन्नि, अट्ठमे आयंबिले दस ॥ ६॥ अणिक्खित्तभत्तपाणेण, संघट्टणं इमं महा। निसीहवरं सुयक्खंधं, वोढव्वं च आउत्तगपाणगेणंति ॥७॥ गंभीरस्स महामइणो उ, संजुयस्स तवोगुणे। सुपरिक्खियस्स कालेणं, सयमज्झेगस्स वायणं ॥८॥ खेत्तसोहीए निच्चं तु, उवउत्तो भविया जया। तया वाएज्ज एयं तु, अन्नहा उ छलिज्जइ ॥९॥ संगोवंगसुयस्सेयं, णीसंदं तत्तं परं। महानिहिंव अविहिए, गिण्हंतेणं छलिज्जए ॥१०॥ अहवा सव्वाइं सेयाइं, बहुविग्घाइं भवंति उ। सेयाणं तु परं सेयं, सुयक्खंधं निबिग्घं ॥११॥ जे धन्ने पुन्ने महाणुभागे से वाइया, ‘से भयवं! केरिसं तेसिं, कुसीलादीण लक्खणं?। सम्मं विन्नाय जेणं तु, सव्वहा ते विवज्जए ॥२॥ गोयमा! सामन्नओ तेसिं, लक्खणमेयं निसोधय। जं नच्चा तेसिं संसग्गी, सव्वहा परिवज्जए ॥३॥ कुसीले ताव दुस्सयहा, ओसन्ने दुविहे मुणे। पासत्थे नाणमादीणं, सव्वले बावीसतीविहे ॥४॥ तत्थ जे ते उ दुसयहा उ, वोच्छं ते ताव गोयमा!। कुसीले जेसिं संसग्गीदोसेणं भस्सई मुणी खणे ॥१५॥ तत्थ कुसीले ताव समासओ दुविहे णेए-परंपरकुसीले यऽपरंपरकुसीले य, तत्थ णं जे ते परंपरकुसीले ते दुविहे णेए-सत्तट्ठगुरुपरंपरकुसीले एगदुतिगुरुपरंपरकुसीले य।१। जेवि य ते अपरंपरकुसीले तेवि उ दुविहे णेए-आगमओ णोआगमओ य।२। तत्थ आगमओ गुरुपरंपरिएणं आवलियाए ण केई कुसीले आसी उ ते चेव कुसीले भवंति ।३। नोआगमओ अणेगविहा, तंजहा-णाणकुसीले दंसणकुसीले चारित्तकुसीले तवकुसीले वीरट्ठकुसीले।४। तत्थ णं जे से नाणकुसीले से णं तिविहे णेए-पसत्था-पसत्थनाणकुसीले अपसत्थनाणकुसीले सुपसत्थनाणकुसीले।५। तत्थ जे से पसत्थापसत्थनाणकुसीले से दुविहे णेए-आगमओ नोआगमओ य, तत्थ आगमओ विहंगनाणीपन्नवियपसत्थापसत्थपयत्थजालअज्झयणऽज्झावणकुसीले, नोआगमओ अणेगहा पसत्थापसत्थपरपासंडसत्थत्थजालाहिज्जणऽज्झावणवायणाणुपेहणकुसीले ।६। तत्थ जे ते अपसत्थनाणकुसीले ते एगूणतीसइविहे दट्ठव्वे, तंजहा-सावज्जवायविज्जामंततंतपउंजणकुसीले १ विज्जमंततंताहिज्ज-णकुसीले २ (विज्जामंततंताहिज्झावणकुसीले) गहरिक्खचारजोइसत्थपउंजणाहिज्जणकुसीले३ निमित्तलक्खणपउंजणाहिज्जणकुसीले४ सउणलक्खणपउंजणाहिज्जणकुसीले५ हत्थिसिक्खापउंजणाहिज्जणकुसीले६ धणुव्वेयपउंजणा-हिज्जणकुसीले ७ गंधव्ववेयपउंजणाहिज्जणकुसीले८ पुरिसित्थीलक्खणपउंजणज्झावणकुसीले९ कामसत्थपउंजणाहिज्जणकुसीले १० कुहुगिंदजालसत्थपउंजणाहिज्जणकुसीले ११ आलेक्खविज्जाहिज्जणकुसीले १२ लेप्पकम्मविज्जाहिज्जण-कुसीले १३ वमणविरेयणबहुबद्धीदजालसमुद्दरणकहणकाहणवणस्सइवल्लिमोडणतच्छणाइबहुदोसविजगसत्थपउंजणाहिज्जणज्झावणकुसीले १४ एवं जा(वंज)ण १५ जोगचुन्न १६ वन्नधाउव्वाय १७ रायदंडणीई १८ सत्थव्वऽसणिपव्वअ १९ऽच्छकंड २० ऱयणपरिक्खा २१ रसवेहसत्थ २२ अमचसिक्खा २३ गूढमंततंत २४ कालदेस २५ संधिविग्गहोवएस २६ सत्थ २७ मम्म(ग्ग) २८ जाणववहार २९ निरूवणत्थसत्थपउंजणाहिज्जणअपसत्थनाणकुसीले, एवमेएसिं चेव पावसु-याणं वायणपेहणापरावत्तणाअणुसंधणासवसायन्नणअपसत्थनाणकुसीले ।७। तत्थ जे य ते सुपसत्थनाणकुसीले तेवि य दुविहे णेए-आगमओ णोआगमओ य, तत्थ आगमओ सुपसत्थं पंचप्पयारं णाणं आसायंते सुपसत्थनाणधरे वा आसायंते सुपसत्थनाणकुसीले। ८। नोआगमओ य सुपसत्थनाणकुसीले अट्ठहा णेए, तंजहा-अकालेणं सुपसत्थनाणाहिज्जणज्झावणाकुसीले अविणएणं सुपसत्थनाणाहिज्जणज्झावणाकुसीले अबहुमाणेणं सुपसत्थनाणाहिज्जणकु-सीले अणोवहाणेणं सुपसत्थनाणाहिज्जणज्झावणकुसीले जस्स य सयासे सुपसत्थं सुत्तत्थोभयमहीयं तंनिण्हवणसुपसत्थनाणकुसीले सरवंजणहीणक्खरियचक्खरियहिज्जणज्झावणसुपसत्थनाणकुसीले विवरीयसुत्तत्थोभयाहिज्जण-ज्झावणसुपसत्थणाणकुसीले संदिद्धसुत्तत्थोभयाहिज्जणज्झावणसुपसत्थनाणकुसीले। ९। तत्थ एएसिं अट्ठण्हंपि पयाणं गोयमा! जे केई अणोवहाणेणं सुपसत्थं नाणमहीयंति वा अज्झावयंति वा अहीयंतं वा अज्झावयंतं वा समणुजाणंति ते णं महापावकम्मे महतीं सुपसत्थनाणस्सासायणं पकुव्वंति। १०। से भयवं! जइ एवं ता किं पंचमंगलस्स णं उवहाणं कायव्वं?, गोयमा! पढमं नाणं तओ दया, दयाए य सव्वजगज्जीवपाणभूयसत्ताणं अत्तसमद-रिसित्तं, सव्वजगजीवपाणभूयसत्ताणं अत्तसमदंसणाओ य तेसिं चेव संघट्टणपरियावणकिलावणोद्दावणाइदुक्खुप्पायणभयविवज्जणं तओ अणासवो अणासवाओ य संवुडासवदारत्तं संवुडासवदारत्तेणं च दमोपसमो तओ य समसत्तु-मित्तपक्खया समसत्तुमित्तपक्खयाए य अरागदोसत्तं तओ य अकोहया अमाणया अमायया अलोभया अकोहमाणमायालोभयाए य अकसायत्तं तओ य सम्मत्तं सम्मत्ताओ य जीवाइपयत्थपरिन्नाणं तओ सव्वत्थ अपडिबद्धत्तं सव्वत्थापडिबद्धत्तेण य अन्नाणमोहमिच्छत्तक्खयं तओ विवेगो विवेगाओ य हेयउवाएयवत्थुवियालणेगंतबद्धलक्खत्तं तओ य अहियपरिहावओ हियायरणे य अचंतमब्भुजमो तओ य परमत्थपविज्जुत्तमखंतादिदसविहअहिंसाल-क्खणधम्माणुट्ठाणिक्कारणकारावणासत्तचित्तया तओ य खंतादिदसविहअहिंसालक्खणधम्माणुट्ठाणिक्कारणकारावणासत्तचित्तयाए य सव्वुत्तमा खंती सव्वुत्तमं मिउत्तं सव्वुत्तमं अजवभावत्तं सव्वुत्तमं सवज्झंतरसव्वसंगपरिच्चागं सव्वुत्तमं सवज्झब्भंतरदुवालसविहअचंतघोरवीरुग्गकट्ठतवचरणाणुट्ठाणाभिरमणं सव्वुत्तमं सत्तरसविहकसिणसंजमाणुट्ठाणपरिपालणेक्कबद्धलक्खत्तं सव्वुत्तमं सचुग्गिरणं छक्कायहियं अणिगूहियबलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमपरितोलणं च सव्वुत्तमसज्झायज्झाणसलिलेण पावकम्ममललेवपक्खालणंति सव्वुत्तमुत्तमं आकिंचणं सव्वुत्तमं परमपवित्तसव्वभावंतरेहिं णं सुविसुद्धसव्वदोसविप्पमुक्कणवगुत्तीसणाहअट्ठारसपरिहारट्ठाणपरिवेढियसुदुद्धरघोरबंभवयधारणंति, तओ एएणं चेव सव्वुत्तमखंतीमद्दवअजवमुत्तीतवसंजमसच्चसोयआकिंचणसुदुद्धरबंभवयधारणसमुट्ठाणेणं च सव्वसमारंभविवज्जणं, तओ य पुढविदगागणिवाऊवणप्फइबितिचउपंचिंदियाणं तहेव अजीवकायसंरंभसमारंभारंभाणं च मणोवइकायतिएणं तिविहंतिविहेण सोइंदियादिसंवरणआहारादिसन्नाविप्पजढत्ताए वोसिरणं, तओ य अ(मलिय)ट्ठारससीलंगसहस्सधारित्तं अमलियअट्ठारससीलंगसहस्सधारणेणं च अखलियअखंडियअमिलियअविराहियसु-

११२५ महानिशीथच्छेदसूत्रं, अज्झयणं-३

मुनि दीपरत्नसागर

	अत्र द्वितियं अध्ययनं समाप्तं अत्र तृतीयं अध्ययनं- “कुशील-लक्षणं” आरब्धः

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [११] + गाथा ||१५||

दीप अनुक्रम [४९२]

दट्ठुमुग्गुग्गयरविचित्ताभिग्गहनिब्बाहणं, तओ य सुरमणुयतिरिच्छोईरियघोरपरीसहोवसग्गाहियासणं संमकरणेणं, तओ य अहोरायाइपडिमासुं महापयत्तं तओ निप्पडिकम्मसरीरया निप्पडिकम्मसरीरत्ताए य सुक्कज्झाणे निप्पकंपत्तं, तओ य अणाइभवपरंपरसंचियअसेसकम्मट्ठरासिखयं अणंतनाणदंसणधारित्तं च चउगइभवचारगाओ निप्फेडं सव्वदुक्खविमोक्खं मोक्खगमणं च, तत्थ अदिट्ठजम्मजरामरणाणिट्ठसंपओगिट्ठविओयसंतावुव्वेगअयसऽब्भक्खाणमहवाहिवेयणारोगसोगदारिद्ददुक्खभयवेमणस्सत्तं, तओ अ एगंतियं अच्चंतियं सिवमयलमक्खयधुवं परमसासयं निरंतरं सव्वुत्तमसोक्खंति, ता सव्वमेवेयं नाणाओ पवत्तेज्जा, ता गोयमा ! एगंतियअच्चंतियपरमसासतधुवनिरंतरसव्वुत्तमसोक्खकंखुणा पढमयरमेव तावायरेणं सामाइयमाइयलोगबिंदुसारपज्जवसाणं दुवालसंगं सुयनाणं कालंबिलादिजहुत्तविहिणोवहाणेणं हिंसादियं च निविहंतिविहेण पडिक्कंतेण य सरवंजणमत्ताबिंदुपयक्खराणूणगं पयच्छेदघोसबद्धयाणुपुव्विं पुव्वाणुपुव्विअणाणुपुव्वीए सुविसुद्धं अचोरिक्कायएण एगत्तेण सुविन्नेयं, तं च गोयमा ! अणिहणऽणोरपारसुविच्छिन्नचरमोयहिंपिव य सुदुरवगाहं संयलसोक्खपरमहेउभूयं च, तस्स य सयलसोक्खहेउभूयाओ न इट्ठदेवयानमोक्कारविरहिए केई पारं गच्छेज्जा, इट्ठदेवयाणं च नमोक्कारं पंचमंगलमेव गोयमा !, णो णमन्नंति, ता णियमओ पंचमंगलस्सेव पढमं ताव विणओवहाणं कायव्वंति।११। से भयवं ! कयराए विहीए पंचमंगलस्स णं विणओवहाणं कायव्वं ?, गोयमा ! इमाए विहीए पंचमंगलस्स णं विणओवहाणं कायव्वं तंजहा-सुपसत्थे चेव सोहणे तिहिकरणमुहुत्तनक्खत्तजोगलग्गससीबले विप्पमुक्कजायाइमयासंकेण संजायसद्धासंवेगसुतिव्वतरमहंतुल्लसंतसुहज्झवसायाणुगयभत्तीबहुमाणपुव्वं णिण्णियाणं दुवालसभत्तट्ठिएणं चेइयालए जंतुविरहिओगासे भत्तिभरनिब्भरुद्धुसियससीसरोमावलीपप्फुल्लण(व)यणसयवत्तपसत्तसोमथिरदिट्ठीणवणवसंवेगसमुच्छलंतसंजायबहलघणनिरंतरअचिंतपरमसुहपरिणामविसेसमुल्लासियजीववीरियाणुसमयविवड्ढंतपमोयसुद्धसुनिम्मलथिरदढयरंतकरणेणं खितिणिहियजाणुणिसिउत्तमंगकरकमलमउलसोहंजलिपुडेणं सिरिउसभाइपवरवरधम्मतित्थयरपडिमाबिंबविणिवेसियणयणमाणसेगग्गतग्गयज्झवसाएणं समयण्णुदढचरित्तादिगुणसंपओवेयगुरुसद्दत्थाणुट्ठाणकरणेक्कबद्धलक्खत्तऽवाहियगुरुवयणविणिग्गयं विणयादिबहुमाणपरिओसाणुकंपोवलद्धं अणेगसोगसंतावुव्वेगमहावाहिवियणाघोरदुक्खदारिद्दकिलेसरोगजम्मजरामरणगब्भवासाइदुट्ठसावगावगाहभीमभवोदहितरंडगभूयं इणमो सयलागममज्झवत्तगस्स मिच्छत्तदोसोवहयविसिट्ठबुद्धीपरिकप्पियकुभणियअघडमाणअसेसहेउदिट्ठंतजुत्तीविद्धंसणिक्कपबलपोट्टस्स पंचमंगलमहासुयक्खंधस्स पंचज्झयणेगचूलापरिक्खित्तस्स पवरपवयणदेवयाहिट्ठियस्स तिपदपरिच्छिन्नेगालावगसत्तक्खरपरिमाणं अणंतगमपज्जवत्थपसाहगं सव्वमहामंतपवरविज्जाणं परमबीयभूयं नमो अरहंताणंति पढमज्झयणं अहिज्जेयव्वं, तद्दियहे य आयंबिलेणं पारेयव्वं, तहेव बीयदिणे अणेगाइसयगुणसंपओवेयं अणंतरभणियत्थपसाहगं अणंतरुत्तेणेव कमेणं दुपयपरिच्छिन्तेगालावगपंचक्खरपरिमाणं नमो सिद्धाणंति बीयज्झयणं अहिज्जेयव्वं, तद्दियहे य आयंबिलेणं पारेयव्वं, एवं अणंतरभणिएणेव कमेणं अणंतरुत्तत्थपसाहगं तिपदपरिच्छिन्नेगालावगं सत्तक्खरपरिमाणं नमो आयरियाणंति तइयमज्झयणं आयंबिलेणं अहिज्जियव्वं, तहा अणंतरुत्तत्थपसाहगं तिपयपरिच्छिन्नेगालावगं सत्तक्खरपरिमाणं नमो उवज्झायाणंति चउत्थमज्झयणं अहिज्जेयव्वं, तद्दियहे य आयंबिलेण पारेयव्वं, एवं णमो लोए सव्वसाहूणंति पंचममज्झयणं पंचमदिणे आयंबिलेण, तहेव तयत्थाणुगामियं एक्कारसपयपरिच्छिन्नतियालावगतित्तीसक्खरपरिमाणं ‘एसो पंचनमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलमितिचूलंति छट्ठसत्तमट्ठमदिणे तेणेव कमविभागेणं आयंबिलेहिं अहिज्जेयव्वं, एवमेयं पंचमंगलमहासुयक्खंधं सरवन्नपयसहियं पयक्खरबिंदुमत्ताविसुद्धं गुरुगुणोववेयगुरूवइट्ठं कसिणमहिज्जित्ताणं तहा कायव्वं जहा पुव्वाणुपुव्वीए पच्छाणुपुव्वीए अणाणुपुव्वीए जीहग्गे तरेज्जा, तओ तेणेवाणंतरभणियतिहिकरणमुहुत्तनक्खत्तजोगलग्गससीबलजंतुविरहिओगासचेइयालगाइकमेणं अट्ठमभत्तेणं समणुजाणाविऊणं गोयमा ! महया पबंधेण सुपरिफुडं णिउणं असंदिद्धं सुत्तत्थं अणेगहा सोऊणावधारेयव्वं, एयाए विहीए पंचमंगलस्स णं गोयमा ! विणओवहाणो कायव्वो ।१२। से भयवं ! किमेयस्स अचिंतचिंतामणिकप्पभूयस्स णं पंचमंगलमहासुयक्खंधस्स सुत्तत्थं पन्नत्तं ?, गोयमा ! एमाइयं एयस्स अचिंतचिंतामणिकप्पभूयस्स णं पंचमंगलमहासुयक्खंधस्स णं सुत्तत्थं पण्णत्तं, तंजहा-जे णं एस पंचमंगलमहासुयक्खंधे से णं सयलागमंतरोववत्ती तिलतेलकमलमयरंदव्व सव्वलोए पंचत्थिकायमिव जहत्थकिरियाणुराया(गए) सब्भूयगुणकित्तणे जहिच्छियफलपसाहगे चेव परमथुइवाए, सा य परमथुई केसिं कायव्वा ?, सव्वजगुत्तमाणं, सव्वजगुत्तमुत्तमे य जे केई भविस्संति ते सव्वे चेव, अरहंतादओ ते चेव, णो णमन्नेत्ति, ते य पंचहा-अरहंते सिद्धे आयरिए उवज्झाए साहवो य, तत्थ एएसिं चेव गब्भत्थसब्भावो इमो तंजहा-सनरामरासुरस्स णं सव्वस्सेव जगस्स अट्ठमहापाडिहेराइपूयाइसओवलक्खियं अणण्णसरिसमचिंतमाहप्पं केवलाहिट्ठियं पवरुत्तमं अरहंतित्ति अरहंता, असेसकम्मक्खएणं निहड्ढदभवंकुरत्ताउ न पुणेह भवंति जंमंति उववज्जंति वा अरुहंता वा, णिम्महियनिहयनिद्दलियविलीयनिट्ठवियअभिभूयसुदुज्जयासेसअट्ठपयारकम्मरिउत्ताओ वा अरिहंतेति वा, एवमेते अणेगहा पन्नविज्जंति परूविज्जंति आघविज्जंति पट्ठविज्जंति दंसिज्जंति उवदंसिज्जंति, तहा सिद्धाणि परमाणंदमहूसवमहाकल्लाणनिरुवमसोक्खाणि णिप्पकंपसुकज्झाणाइअचिंतसत्तिसामत्थओ सजीववीरिएणं जोगनिरोहाइणा महापयत्तेणिति सिद्धा, अट्ठप्पयारकम्मक्खएण वा सिद्धं सज्झमेतेसिंति सिद्धा, सियं झायमेसिमिति वा सिद्धा, सिद्धे निट्ठिए पहीणे सयलपओयणवायकयंबमेतेसिमिति सिद्धा, एवमेते इत्थीपुरुसनपुंससलिंगऽण्णलिंगगिहिलिंगपत्तेयबुद्धबोहिय जाव णं कम्मक्खयसिद्धाइभेएहि णं अणेगहा पन्नविज्जंति, तहा अट्ठारससीलंगसहस्साहिट्ठियतणू छत्तीसइविहमायारं जहट्ठियमगिलाए अहन्निसाणुसमयं आयरंतित्ति पवत्तयंतित्ति आयरिया, परमप्पणो अ हियमायरंतित्ति आयरिया, सव्वसत्तस्स सीसगणाणं वा हियमायरंति आयरिया, पाणपरिच्चाएऽवि उ पुढवादीणं समारंभं नायरंति णारभंति नाणुजाणंति वा आयरिया, सुट्ठुमवरद्धेऽवि ण कस्सई मणसावि पावमायरंतित्ति वा आयरिया, एवमेते णामठवणादीहिं अणेगहा पन्नविज्जंति, तहा सुसंवुडासवदारे मणोवयकायजोगत्तउवउत्ते विहिणा सरवंजणमत्ताबिंदुपयक्खरविसुद्धदुवालसंगसुयनाणज्झयणज्झावणेणं परमप्पणो अ मोकखोवायं झायंतित्ति उवज्झाए, थिरपरिचियमणंतगमपज्जवत्थेहिं वा दुवालसंगं सुयनाणं चिंतंति अणुसरंति एगग्गमा-

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [१३] + गाथा ||१६||

दीप अनुक्रम [४९४]

णसा झायंतित्ति वा उवज्झाए, एवमेतेहिं (भेएहिं) अणेगहा पन्नविजंति, तहा अचंतकट्ठउग्गुग्गयरघोरतवचरणाइं अणेगवयनियमोववासनाणाभिग्गहविसेससंजमपरिवालणसम्मंपरीसहोवसग्गाहियासणेणं सव्वदुक्खविमोक्खं मोक्खं साहयंतित्ति साहवो, अयमेव इमाए चूलाए भाविजइ-एतेसिं नमोक्कारो एसो पंचनमोक्कारो, किं करेजा ?, सव्वं पावं-नाणावरणीयादिकम्मविसेसं तं पयरि(अपरिसे)सेणं दिसोदिसं णासयइ सव्वपावप्पणासणो, एस चूलाए पढमो उद्देसओ, एसो पंचनमोक्कारो सव्वपावप्पणासणो किंविहो उ ?, मंगो-निव्वाणसुहसाहणेक्कखमो सम्महंसणाइआराहओ अहिंसालक्खणो धम्मो तं मे लाएज्जत्ति मंगलं, ममं भवाउ-संसाराओ गलेज्जा-तारेज्जा वा मंगलं, बद्धपुट्ठ-निकाइयट्ठप्पगारकम्मरासिं मे गालिज्जा-विलिज्जवेज्जत्ति वा मंगलं, एएसिं मंगलाणं अन्नेसिं च मंगलाणं सव्वेसिं किं ?, पढमं-आदीए अरहंताणं थुई चेव हवइ मंगलं, इति एस समासत्थो, वित्थरत्थं तु इमं तंजहा-तेणं कालेणं तेणं समएणं गोयमा ! जे केई पुव्ववावन्नियसद्दत्थे अरहंते भगवंते धम्मतित्थगरे भवेज्जा से णं परमपुज्जाणंपि पुज्जयरे भवेज्जा, जओ णं ते सव्वेऽवि एयलक्खणसमन्निए भवेज्जा, तंजहा-अचिंतअप्पमेयनिरुवमाणण्णसरिसपवरवरुत्तम-गुणोहाहिट्ठियत्तेणं तिण्हंपि लोगाणं संजणियगुरुयमहंतमाणसाणंदे, तहा य जंमंतरसंचियगुरुयपुण्णपब्भारसंविढत्ततित्थयरनामकम्मोदएणं दीहरगिम्हायवसंतावकिलंतसिहिउलाणं च पढमपाउसधाराभरवरिसंतघणसंघायमिव परम-हिओवएसपयाणाइणा घणरागदोसमोहमिच्छत्ताविरइपमायदुट्ठकिलिट्ठज्झवसायाइसमज्जियासुहघोरपावकम्मायवसंतावस्स णिण्णासगे भव्वसत्ताणं सव्वन्नू अणेगजम्मंतरसंविढत्तगुरुयपुन्नपब्भाराइसयबलेणं समज्जियाउलबलवी-रिएसरियसत्तपरक्कमाहिट्ठियतणू सुकंतदित्तचारुपायंगुट्ठग्गरूवाइसएणं सयलगहनक्खत्तचंदपंतीणं सूरिए इव पयंडप्पयावदसदिसिपयासविप्फुरंतकिरणपब्भारेणं णियतेयसा विच्छायगे सयलाणवि विज्जाहरणरामरीणं सदेवदाणविंदाणं सुरलोगाणं सोहग्गकंतिदित्तिलावन्नरूवसमुदयसिरीए साहावियकम्मक्खयजणियदिव्वकयपवरनिरुवमाणन्नसरिसविसेसाइसयाइसयलक्खणकल्लाकलावविच्छड्डपरिदंसणेणं भवणवइवाणमंतरजोइसवेमाणियाहमिंदसइंदच्छराकिन्नर-णरविज्जाहरस्स ससुरासुरस्सावि णं जगस्स अहो ३ अज्ज अदिट्ठपुव्वं दिट्ठमम्हेहिं इणमो सविसेसाउलमहंताचिंतपरमच्छेरयसंदोहं समग्गलमेवेगट्ठसमुइयं दिट्ठंति तक्खणउप्पन्नघणनिरंतरबहलप्पमोया चिंतयंतो सहरिसपीयाणुरायवसपवि-यंभंताणुसमयअहिणवाहिणवपरिणामविसेसत्तेणमहमहंतिजंपिरपरोप्परापं विसायमुवगयहहहधीधिरत्थुअधन्नाऽपुन्नावयमिइणिंदिरअत्ताणगमणंतरसंखुहियहियय्यमुच्छिरसुलद्धचेयणसुपुण्णसिढिलियसगत्तआउंचणं पसण्णो उ मे सनिमेसाइसारीरियवावारमुक्कंकेवलअणोवलक्खक्खलंतमंदमंददीहहुंहुंकारविमिस्समुक्कदीहउण्हबहलनीसासगत्तेणं अइअभिनिविट्ठबुद्धीसुणिच्छियमणस्स णं जगस्स, किं पुण तं तवमणुचिट्ठेमो जेणेरिसं पवरारिद्धिं लभिजत्ति, तग्ग-यमणस्स णं दंसणं चेव णियणियवच्छत्थलनिहिजंतंतकरयलुप्पाइयमहंतमाणसचमक्कारे, ता गोयमा ! णं एवमाइअणंतगुणगणाहिट्ठियसरीराणं तेसिं सुगहियनामधेज्जाणं अरहंताणं भगवंताणं धम्मतित्थगराणं संतिए गुणगणो-हरयणसंघाए अहन्निसाणुसमयं जीहासहस्सेणंपि वागरंतो सुरवइंवि अन्नयरे वा केई चउनाणी महाइसई य छउमत्थे सयंभुरमणोयहिस्स इव वासकोडीहिंपि णो पारं गच्छेज्जा, जओ णं अपरिमियगुणरयणे गोयमा ! अरहंते भगवंते धम्मत्थिगरे भवंति, ता किमित्थ भन्नउ ?, जत्थ य णं तिलोगनाहाणं जगगुरूणं भुवणेक्कबंधूणं तेलोक्कतग्गुणखंभपवरधम्मतित्थंकराणं केई सुरिंदाइपायंगुट्ठग्गएगदेसाउ अणेगगुणगणाल्लंकरियाउ भत्तिभरनिब्भरिक्करसियाणं सव्वेसिंपि वा सुरीसाणं अणेगभवंतरसंचियअणिट्ठदुट्ठट्ठकम्मरासिजणियदोग्गच्चदोमणस्सादिसयलदुक्खदारिद्दकिलेसजम्मजरामरणरोगसोगसंतावुव्वेयवाहिवेयणाईण खयट्ठाए एगगुणस्साणंतभागमेगं भणमाणाणं जमगसमगमेव दिणयरकरे इव अणेगगुणगणोहे जीहग्गे विफुरंति ताइं च न सक्का सिंदावि देवगणा समकालं भणिऊणं, किं पुण अकेवली मंसचक्खुणो ?, ता गोयमा ! णं एस इत्थं परमत्थे वियाणेयव्वो, जहा णं जइ तित्थगराणं संतिए गुणग-णोहे तित्थयरे चेव वायरंति, ण उण अन्ने, जओ णं सातिसया तेसिं भारती, अहवा गोयमा ! किमित्थ पभूयवागरणेणं ?, सारत्थं भन्नए।१३। तंजहा-नामंपि सयलकम्मट्ठमलकलंकेहिं विप्पमुक्काणं। तियसिंदच्चियचलणाण जिणवरिंदाण जो सरइ ॥१६॥ तिविहकरणोवउत्तो खणे खणे सीलसंजमजुत्तो। अविराहियवयनियमो सोऽवि हु अइरेण सिज्झेज्जा ॥१७॥ जो पुण दुहउव्विग्गो सुहतण्हालू अलिब्ब कमलवणे। थयथुइमंगलजयसद्दवावडो झणझणे किंचि ॥१८॥ भत्तिभरनि-ब्भरो जिणवरिंदपायारविंदजुगपुरओ। भूमिनिट्ठवियसिरो कयंजलीवावडो चरित्तट्ठो ॥१९॥ एक्कंपि गुणं हियए धरेज्ज संकाइसुद्धसम्मत्तो। अक्खंडियवयनियमो तित्थयरत्ताए सो सिज्झे ॥२०॥ जेसिं च णं सुगहियनामग्गहणाणं तित्थय-राणं गोयमा ! एस जगपायडमहच्छेरयभूए भुवणस्स वियडपायडमहंताइसयपवियंभो, तंजहा-खीणट्ठपायकम्मा मुक्का बहुदुक्खगब्भवसहीणं। पुणरविअ पत्तेकेवलमणपज्जवणाणचरितनणू ॥२१॥ महजोइणो विविहदुक्खमयरभवसा-गरस्स उव्विग्गा। दट्ठूणऽहाइसए भवहुत्तमणा खणं जंति ॥२२॥ अहवा चिट्ठउ ताव सेसवागरणं गोयमा ! एवं चेव धम्मतित्थगरेति नाम सन्निहियं पवरक्खरुब्बहणं तेसिमेव सुगहियनामधिज्जाणं भुवणबंधूणं अरहंताणं भगवंताणं जिणव-रिंदाणं धम्मतित्थंकराणं छज्जे, ण अन्नेसिं, जओ य णेगजंमंतरपुट्ठमोहोवसमसंवेगनिवेयणुकंपाअत्थित्ताभिवत्तीसलक्खणपवरसम्मद्दंसणुल्लसंतविरियाणिगूहियउग्गकट्ठघोरदुक्करतवनिरंतरज्जियउत्तुंगपुन्नखंधसमुदयमहपब्भारसंविढ-त्तउत्तमपवरपवित्तविस्सकसिणबंधुणाहसामिसालअणंतकालवत्तभवभावणच्छिन्नपावबंधणेक्कअविइज्जतित्थयरनामकम्मगोयणिसियसुकंतदित्तचारुरूवदसदिसिपयासनिरुवमट्ठलक्खणसहस्समंडियजगुत्तमुत्तमसिरीनिवासवासवा-वी इव देवमणुयदिट्ठमेत्तक्खणंतकरणलाइयचमक्कनयणमाणसाउलमहंतविम्हयपमोयकारया असेसकसिणपावकम्ममलकलंकविप्पमुक्कसमचउरंसपवरपढमवज्जरिसहनारायसंघयणाहिट्ठियपरमपवित्तुत्तममुत्तिधरे, ते चेव भगवंते महायसे महासत्ते महाणुभागे परमिट्ठी सद्धम्मतित्थंकरे भवंति।१४। अन्नंच सयलनरामरतियसिंदसुंदरीरूवकंतिलावन्नं। सव्वंपि होज्ज जइ एगरासिण संपिण्डियं कहवि ॥२३॥ तं च जिणचलणंगुट्ठग्गकोडिदेसेगलक्खभागस्स। संनिज्झं-मि न सोहइ जह छारउडं क्रंचणगिरिस्स ॥२४॥ त्ति, ‘अहवा नाऊण गुणंतराइं अन्नेसिं ऊण सव्वत्थ। तित्थयरगुणाणमणंतभागमलब्भंतमन्नत्थ ॥२५॥ जं तिहुयणंपि सयलं एगीहोऊणमुब्भमेगदिसिं। भागे गुणाहिओऽम्हं तित्थयरे पर-मपुजे ॥२६॥ त्ति, तेब्बिय अबे वंदे पूए अरिहे गहमइसमन्ने। जम्हा तम्हा ते चेव भावओ णमह धम्मतित्थयरे ॥२७॥ लोगेवि गामपुरनगरविसयजणवयसमग्गभरहस्स। जो जित्तियस्स सामी तस्साणत्तिं ते करेंति ॥२८॥ नवरं गामाहिवई

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [१५] + गाथा ||२९||

दीप अनुक्रम [५१०]

सुदट्ठु सुतुट्ठे एक्कगाममज्झाओ। किं देज्ज ? जस्स नियगे तेलोए एत्तियं पुव्वं ॥२९॥ चक्कहरो लीलाए सुदट्ठु सुथेवंपि दंडं न हु मन्ने। तेण य कमागयगुरुदरिद्दनामं समासेइ ॥३०॥ (सयलबंधुवग्गस्सत्ति) सो मंता चक्कहरं चक्कहरो सुरवइत्तणं कंखे। इंदो तित्थयरे उण जगस्स जहिच्छियसुहफलए ॥३१॥ तम्हा जं ईदेहीवि कंखिजई एगवद्धलक्खेहिं। अइसाणुरागहियएहिं उत्तमं तं न संदेहो ॥३२॥ तो सयलदेवदाणवगहरिक्खसुरिंदचंदमादीणं। तित्थयरे पुज्जयरे ते चिय पार्श्वपणासंति ॥३॥ तेसि य तिलोगमहियाण धम्मतित्थंकराण जगगुरूणं। भावच्चणदव्वच्चणभेदेण दुहच्चणं भणियं ॥४॥ भावच्चण चारित्ताणुट्ठाणकट्ठुग्गघोरतवचरणं। दव्वच्चण विरयाविरयसीलपूयासक्कारदादादी ॥५॥ ता गोयमा ! णं एसेऽत्थ परमत्थे तंजहा-'भावच्चणमुग्गविहारया य दव्वच्चणं तु जिणपूया। पढमा जईण दोण्हंवि गिहीण पढमच्चिय पसत्था ॥६॥ एत्थं च गोयमा ! केई अमुणियसमयसब्भावे ओसन्नविहारी णियवासिणो अदिट्ठपरलोगपच्चवाए सयंमतीइड्ढिरससायगारवाइमुच्छिए रागदोसमोहाहंकारममीकाराइसुपडिबद्धो कसिणसंजमसद्धम्मपरंमुहे निहयनित्तिंसनिग्घिणअकलुणनिक्किवे पावायरणेक्कअभिनिविट्ठबुद्धी एगंतेणं अइचंडरोद्दकूराभिग्गहिए मिच्छद्दिट्ठिणो कयसव्वसावज्जजोगपच्चक्खाणे विप्पमुक्कासेससंगारंभपरिग्गहे तिविहंतिविहेणं पडिवन्नसामाइए य दव्वत्ताए, न भावत्ताए, नाममेव मुंडे अणगारे महव्वयधारी समणेऽवि भवित्ताणं एवं मन्नमाणे सव्वहा उम्मग्गं पवत्तंति, जहा किल अम्हे अरहंताणं भगवंताणं गंधमल्लपदीवसंमज्जणोवलेवणविचित्तवत्थबलिधूवाइएहिं पूयासक्कारेहिं अणुदियहमब्भच्चणं पकुव्वाणा तित्थुच्छप्पणं करेमो, तं च णो णं तहत्ति, गोयमा ! तं वायाएवि णो णं तहत्ति समणुजाणेज्जा, से भयवं ! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ-जहा णं तं च णो णं तहत्ति समणुजाणेज्जा ?, गोयमा ! तयत्थाणुसारेणं असंजमबाहुल्लेणं च मूलकम्मासवाओ य अज्झवसायं पडुच्च थूलेयरसुहासुहकम्मपयडीबंधो सव्वसावज्जविरयाणां च वयभंगो वयभंगेणं च आणाइक्कमे आणाइक्कमेणं तु उम्मग्गगामित्तं उम्मग्गगामित्तेणं च सम्मग्गविप्पलोवणं उम्मग्गपवत्तणसम्मग्गविप्पलोवणेणं च जईणं महती आसायणा, तओ अ अणंतसंसारहिंडणं, एएणं अट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहा णं गोयमा ! णो णं तं तहत्ति समणुजाणेज्जा ।१५। 'दव्वत्थवाओ भावत्थवं तु दव्वत्थवो बहुगुणो भवउ तम्हा। अबुहबहुजाणबुद्धीयं छक्कायहियं तु गोयमाऽणुट्ठे ॥७॥ अकसिणपवत्तगाणं विरयाविरयाण एस खलु जुत्तो। जे कसिणसंजमविऊ पुप्फादीयं न कप्पए तेसिं तु ॥८॥ किं मन्ने गोयमा ! एस, वत्तीसिंदाणुचिट्ठिए। जम्हा तम्हा उभयंपि, अणुट्ठेज्जेत्थं तु बुज्झसी ॥९॥ विणिओगमेवेतं तेसिं, भावत्थवासंभवो तहा। भावच्चणा य उत्तमयं (दसन्नभद्देण) उयाहरणं तहेव य ॥४०॥ चक्कहरभाणुससिदत्तदमगादीहिं विणिद्दिसे। पुच्छंते गोयमा ! ताव, जं सुरिंदेहिं भत्तीओ ॥१॥ सव्विड्ढिए अणण्णसमे, पूयासक्कारे य कए। ता किं तं सव्वसावज्जं?, तिविहं विरएहिंऽणुट्ठितं ॥२॥ उयाहु सव्वथामेसुं, सव्वहा अविरएसु उ?। णणु भयवं! सुरवरिंदेहिं, सव्वथामेसु सव्वहा ॥३॥ अविरएहिं सुभत्तीए, पूयासक्कारे कए। ता जइ एवं तओ बुज्झ, गोयमेमं नीससयं, देसविरय अविरयाणं तु, विणिओगमुभयत्थवि ॥४॥ सयमेव सव्वतित्थंकरेहिं जं गोयमा ! समायरियं। कसिणट्ठकम्मक्खयकारयं तु भावत्थयमणुट्ठे ॥५॥ भवती उ गमागम नंतुफरिसणाईपमद्दणं जत्थ। सपरऽहिओवरयाणं ण मणंपि पवत्तए तत्थ ॥६॥ ता सपरऽहिओवरएहिं उवरएहिं सव्वहा णेसियव्व सुविसेसं। जं परमसारभूयं विसेसवंतं च अणुट्ठेयं ॥७॥ ता परमसारभूयं विसेसवंतं च अणण्णवग्गस्स। एगंतहियं पत्थं सुहावहं पयडपरमत्थं ॥८॥ तंजहा-मेरुत्तुंगे मणिगणमंडिएक्ककंचणमए परमरंमे। नयणमणाणंदयरे पभूयविन्नाणसाइसए ॥९॥ सुसिलिट्ठविसिट्ठसुलट्ठछंदसुविभत्तसुट्ठुसुणिवेसे। बहुसिंघयत्तघंटाधयाउले पवरतोरणसणाहे ॥५०॥ सुविसाल सुविच्छिन्ने पए पए पत्थिय(व्वय)सिरीए। मघमघमघेंतडज्झंतअगरुकप्पूरचंदणामोए ॥१॥ बहुविहविचित्तबहुपुप्फमाइपूयारुहे सुपूए य। णच्चपणचिरणाडयसयाउले महुरमुरवसद्दाले ॥२॥ कुट्ठंतरासयजणसयसमाउले जिणकहाखित्तचित्ते। पकट्ठंतकहगणच्चंतच्छत्त(च्छरा)गंधवतूरनिग्घोसे ॥३॥ एमादिगुणोवेए पए पए सव्वमेइणीवट्टे। नियभुयविढत्तपुन्नज्जिएण नायागएण अत्थेण ॥४॥ कंचणमणिसोमाणे थंभसहस्सूसिए सुवण्णतले। जो कारवेज्ज जिणहरे तओवि तवसंजमो अणंतगुणो ॥५॥ त्ति, तवसंजमेण बहुभवसमज्जियं पावकम्ममललेवं। निद्धोविऊण अइरा अणंतसोक्खं वए सोक्खं ॥६॥ काउंपि जिणाययणेहिं मंडियं सव्वमेइणीवट्टं। दाणाइचउक्केणं सुट्ठुवि गच्छेज्ज अचुयगं ॥७॥ ण परओ गोयम ! गिहित्ति। जइ ता लवसत्तमसुरविमाणवासीवि परिवडंति सुरा। सेसं चिंतिज्जंतं संसारे सासयं कयरं ?॥८॥ कह तं भन्नइ सुक्खं सुचिरेणवि जत्थ दुक्खमल्लियइ। जं च मरणावसाणेसु थेवकालीय तुच्छं तु? ॥९॥ सव्वेणं चिरकालेण जं सयलनरामराण हवइ सुहं। तं न घडइ सुयमणुभूय मोक्खसुखस्स अणंतभागेवि ॥६०॥ संसारियसोक्खाणं सुमहंताणंपि गोयमा ! णेगे। मज्झे दुक्खसहस्से घोरपयंडेण पुज्जंति ॥१॥ ताइं च सायवेओयएण ण याणंति मंदबुद्धीए। मणिकणगसेल्लमयल्लोढगंगली जह व वणिधूया ॥२॥ मोक्खसुहस्स उ धम्मं सदेवमणुयासुरे जगे इत्थं। तो भाणिउं ण सक्का नगरगुणे जहेवय पुलिंदो ॥३॥ कह तं भन्नइ पुन्नं सुचिरेणवि जस्स दीसए अंतं। जं च विरसावसाणं जं संसाराणुबंधिं च? ॥४॥ तं सुरविमाणविहवं चिंतियचवणं च देवलोगाओ। अइसिक्कयचिय हियय जं नवि सयसिक्करं जाइ ॥५॥ नरएसु जाइं अइदुस्सहाइं दुक्खाइं परमतिक्खाइं। को वन्नेई ताइं जीवंतो वासकोडिंपि ॥६॥ ता गोयम ! दसविहधम्मघोरतवसंजमाणुट्ठाणस्स। भावत्थवमिति नामं तेणेव लभेज्ज अक्खयं सोक्खं ॥७॥ ति, नारगभवतिरियभवे अमरभवे सुरवइत्तणे वावि। नो तं लब्भइ गोयम ! जत्थ व तत्थ व मणुयजम्मे ॥८॥ सुमहच्चंतपहीणेसु संजमावरणनामधेज्जेसु। ताहे गोयम ! पाणी भावत्थयजोग्गयमुवेइ ॥९॥ जम्मंतरसंचियगुरुयपुन्नपब्भारसंविढत्तेणं। माणुसजंमेण विणा णो लब्भइ उत्तमं धम्मं ॥७०॥ जस्साणुभावओ सुचरियस्स निस्सल्लदंभरहियस्स। लब्भइ अउलमणंतं अक्खयसोक्खं तिलोयग्गे ॥१॥ तं बहुभवसंचियतुंगपावकम्मट्ठरासिडहणट्ठं। लद्धं माणुसजम्मं विवेगमाईहिं संजुत्तं ॥२॥ जो न कुणइ अत्तहियं सुयाणुसारेण आसवनिरोहं। छत्तिंगसीलंगसहस्सधारणेणं तु अपमत्ते ॥३॥ सो दीहरअणोच्छिन्नघोरदुक्खग्गिदावपज्जलिओ। उच्चोवेयसंसत्तो अणंतहुत्तो सुबहुकालं ॥४॥ दुग्गंधामेज्झविलीणखारपित्तोज्झसिंभपडिहत्थे। वसजल्लसपूयदुद्दिणचिक्खिल्लि रुहिरचिक्खल्ले ॥५॥ कढकढकढंतचलचलचलस्सढलढलढलस्सरजंतो। संपिंडियंगमंगो जोणी जोणी वसे गब्भे। एक्केकगब्भवासेसु, जंतियं पुणरवि भमेज्ज ॥६॥ ता संतावुव्वेयगजम्मजरामरणगब्भवासाइं। संसारियदुक्खाणं विचित्तरूवाण भीएणं ॥७॥ भावत्थवाणुभावं असेसभवभयखयंकरं नाउं। तत्थेव महता उज्जमेण दढमच्चंतं पयइयव्वं ॥८॥ इय विज्जाहरकिन्नरनरेण ससुरासुरेणवि जगेण। संथुव्वंते दुविहत्थवेहिं ते तिहुयणक्कोसे ॥९॥ गोयमा ! धम्मतित्थंकरे जिणे अरिहंतेत्ति, अह तारिसेवि (२८२)

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [१७] + गाथा ॥८०॥

दीप अनुक्रम [५६२]

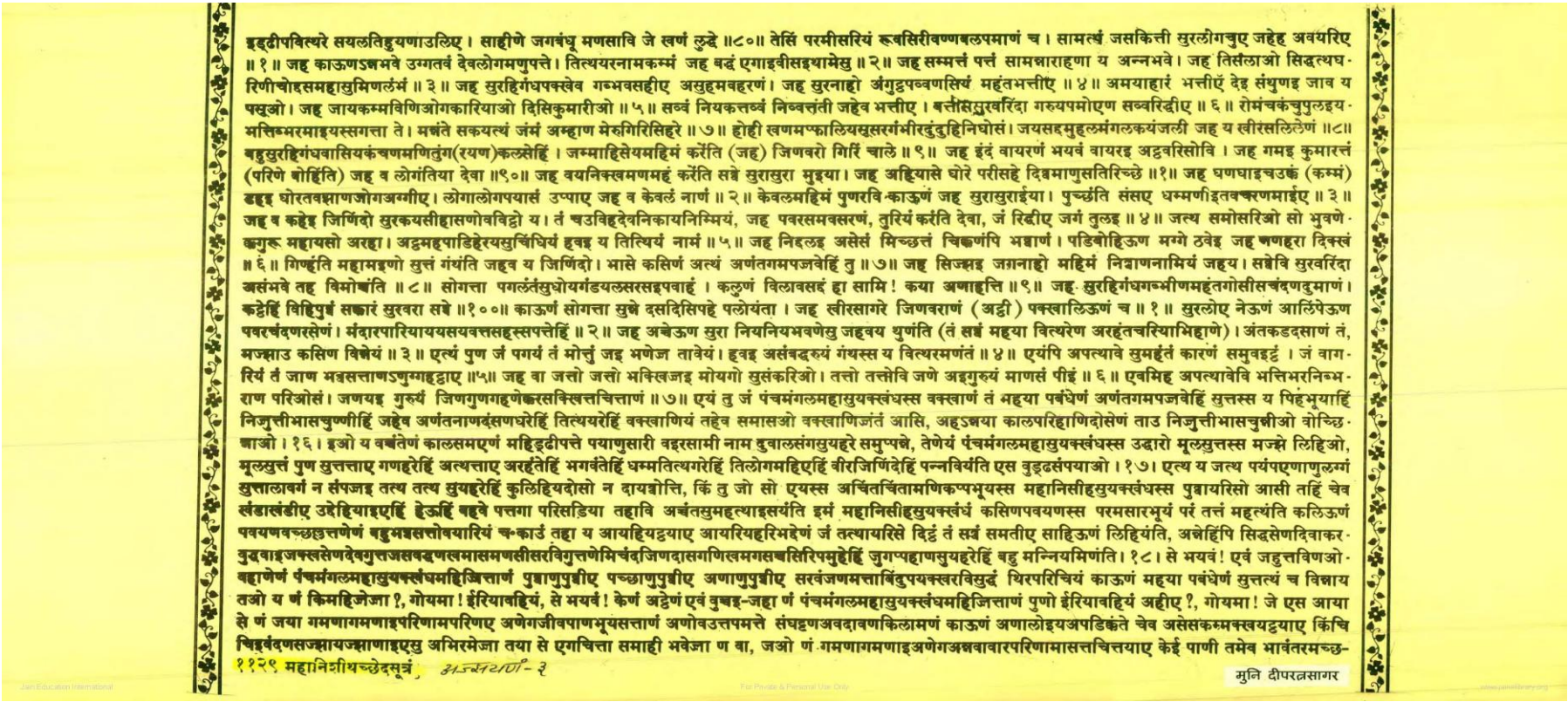

इड्ढीपवित्थरे सयलतिहुयणाउलिए। साहीणे जगबंधू मणसावि जे खणं लुद्धे ॥८०॥ तेसिं परमीसरियं रूवसिरीवण्णबलपमाणं च। सामत्थं जसकित्ती सुरलोगचुए जहेह अवयरिए ॥१॥ जह काऊणऽन्नभवे उग्गतवं देवलोगमणुपत्ते। तित्थयरनामकम्मं जह बद्धं एगाइवीसइथामेसु ॥२॥ जह सम्मत्तं पत्तं सामन्नाराहणा य अन्नभवे। जह तिसलाओ सिद्धत्थघरिणीचोद्दसमहासुमिणलंभं ॥३॥ जह सुरहिगंधपक्खेव गब्भवसहीए असुहमवहरणं। जह सुरनाहो अंगुट्ठपव्वणसियं महंतभत्तीए ॥४॥ अमयाहारं भत्तीएँ देइ संथुणइ जाव य पज्जुओ। जह जायकम्मविणिओगकारियाओ दिसिकुमारीओ ॥५॥ सव्वं नियकत्तव्वं निव्वत्तंती जहेव भत्तीए। वत्तीससुरवरिंदा गरुयपमोएण सव्वरिद्धीए ॥६॥ रोमंचकंचुपुलइयभत्तिब्भरमाइयस्सगत्ता ते। मन्नंते सकयत्थं जंमं अम्हाण मेरुगिरिसिहरे ॥७॥ होही खणमप्फालियसूसरगंभीरदुंदुहिनिघोसं। जयसद्दमुहलमंगलकयंजली जह य खीरसलिलेणं ॥८॥ बहुसुरहिगंधवासियकंचणमणितुंग(रयण)कलसेहिं। जम्माहिसेयमहिमं करेंति (जह) जिणवरो गिरिं चाले ॥९॥ जह इंदं वायरणं भयवं वायरइ अट्ठवरिसोवि। जह गमइ कुमारत्तं (परिणे वोहिंति) जह व लोगंतिया देवा ॥९०॥ जह वयनिक्खमणमहं करेंति सव्वे सुरासुरा मुइया। जह अहियासे घोरे परीसहे दिव्वमाणुसतिरिच्छे ॥१॥ जह घणघाइचउक्कं (कम्मं) डहइ घोरतवझाणजोगअग्गीए। लोगालोगपयासं उप्पाए जह व केवलं नाणं ॥२॥ केवलमहिमं पुणरवि काऊणं जह सुरासुराईया। पुच्छंति संसए धम्मणीइतवचरणमाईए ॥३॥ जह व कहेइ जिणिंदो सुरकयसीहासणोवविट्ठो य। तं चउविहदेवनिकायनिम्मियं, जह पवरसमवसरणं, तुरियं करंति देवा, जं रिद्धीए जगं तुलइ ॥४॥ जत्थ समोसरिओ सो भुवणगुरू महायसो अरहा। अट्ठमहपाडिहेरयसुचिंधियं हवइ य तित्थियं नामं ॥५॥ जह निद्दलइ असेसं मिच्छत्तं चिक्कणंपि भट्टारं। पडिबोहिऊण मग्गे ठवेइ जह जणहरा दिक्खं ॥६॥ गिण्हंति महामइणो सुत्तं गंथंति जहव य जिणिंदो। भासे कसिणं अत्थं अणंतगमपज्जवेहिं तु ॥७॥ जह सिज्झइ जगनाहो महिमं निव्वाणनामियं जहय। सव्वेवि सुरवरिंदा असंभवे तह विमोचंति ॥८॥ सोगत्ता पगलंतसुधोयगंडयलसरसइपवाहं। कलुणं विलावसद्दं हा सामि! कया अणाहत्ति ॥९॥ जह सुरहिगंधगब्भीणमहंतगोसीसचंदणदुमाणं। कट्ठेहिं विहिपुव्वं सक्कारं सुरवरा सव्वे ॥१००॥ काऊणं सोगत्ता सुन्ने दसदिसिपहे पलोयंता। जह खीरसागरे जिणवराणं (अट्ठी) पक्खालिऊणं च ॥१॥ सुरलोए नेऊणं आलिंपेऊण पवरचंदणरसेणं। मंदारपारियाययसयवत्तसहस्सपत्तेहिं ॥२॥ जह अचेऊण सुरा नियनियभवणेसु जहवय थुणंति (तं सव्वं महया वित्थरेण अरहंतचरियाभिहाणे)। अंतकडदसाणं तं, मज्झाउ कसिण विन्नेयं ॥३॥ एत्थं पुण जं पगयं तं मोत्तुं जइ भणेज्ज तावेयं। हवइ असंबद्धरुयं गंथस्स य वित्थरमणंतं ॥४॥ एयंपि अपत्थावे सुमहंतं कारणं समुवइट्ठं। जं वागरियं तं जाण भव्वसत्ताणऽणुग्गहट्ठाए ॥५॥ जह वा जत्तो जत्तो भक्खिज्जइ मोयगो सुसंकरिओ। तत्तो तत्तोवि जणे अइगुरुयं माणसं पीइं ॥६॥ एवमिह अपत्थावेवि भत्तिभरनिब्भराण परिओसं। जणयइ गुरुयं जिणगुणगहणेक्करसक्खित्तचित्ताणं ॥७॥ एयं तु जं पंचमंगलमहासुयक्खंधस्स वक्खाणं तं महया पबंधेणं अणंतगमपज्जवेहिं सुत्तस्स य पिहभूयाहिं निज्जुत्तीभासचुण्णीहिं जहेव अणंतनाणदंसणधरेहिं तित्थयरेहिं वक्खाणियं तहेव समासओ वक्खाणिज्जंतं आसि, अहऽन्नया कालपरिहाणिदोसेणं ताउ निज्जुत्तीभासचुन्नीओ वोच्छिन्नाओ। १६। इओ य वच्चंतेणं कालसमएणं महिड्ढीपत्ते पयाणुसारी वइरसामी नाम दुवालसंगसुयहरे समुप्पन्ने, तेणेयं पंचमंगलमहासुयक्खंधस्स उद्धारो मूलसुत्तस्स मज्झे लिहिओ, मूलसुत्तं पुण सुत्तत्ताए गणहरेहिं अत्थत्ताए अरहंतेहिं भगवंतेहिं धम्मतित्थगरेहिं तिलोगमहिएहिं वीरजिणिंदेहिं पन्नवियंति एस वुड्ढसंपयाओ। १७। एत्थ य जत्थ पयंपएणाणुलग्गं सुत्तालावगं न संपजइ तत्थ तत्थ सुयहरेहिं कुलिहियदोसो न दायव्वोत्ति, किं तु जो सो एयस्स अचिंतचिंतामणिकप्पभूयस्स महानिसीहसुयक्खंधस्स पुव्वायरिसो आसी तहिं चेव खंडाखंडीए उद्देहियाइएहिं हेऊहिं बहवे पत्तगा परिसडिया तहावि अचंतसुमहत्थाइसयंति इमं महानिसीहसुयक्खंधं कसिणपवयणस्स परमसारभूयं परं तत्तं महत्थंति कलिऊणं पवयणवच्छल्लत्तणेणं बहुमइसत्तोवयारियं च काउं तहा य आयहियट्ठयाए आयरियहरिभद्देणं जं तत्थायरिसे दिट्ठं तं सव्वं समतीए साहिऊणं लिहियंति, अन्नेहिंपि सिद्धसेणदिवाकरवुद्धवाइजक्खसेणदेवगुत्तजसवद्धणखमासमणसीसरविगुत्तणेमिचंदजिणदासगणिखमगसच्चसिरिपमुहेहिं जुगप्पहाणसुयहरेहिं बहु मन्नियमिणंति। १८। से भयवं! एवं जहुत्तविणओवहाणेणं पंचमंगलमहासुयक्खंधमहिजित्ताणं पुद्धाणुपुद्धीए पच्छाणुपुव्वीए अणाणुपुव्वीए सरवंजणमत्ताबिंदुपयक्खरविसुद्धं थिरपरिचियं काऊणं महया पबंधेणं सुत्तत्थं च विन्नाय तओ य णं किमहिजेजा?, गोयमा! ईरियावहियं, से भयवं! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ-जहा णं पंचमंगलमहासुयक्खंधमहिजित्ताणं पुणो ईरियावहियं अहीए?, गोयमा! जे एस आया से णं जया गमणागमणाइपरिणामपरिणए अणेगजीवपाणभूयसत्ताणं अणोवउत्तपमत्ते संघट्टणअवदावणकिलामणं काऊणं अणालोइयअपडिक्कंते चेव असेसकम्मक्खयट्ठयाए किंचि चिइवंदणसज्झायज्झाणाइएसु अभिरमेजा तया से एगचित्ता समाही भवेजा ण वा, जओ णं गमणागमणाइअणेगअन्नवावारपरिणामासत्तचित्तयाए केई पाणी तमेव भावंतरमच्छ-

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [१९] + गाथा ||१०६|| दीप अनुक्रम [५६२]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

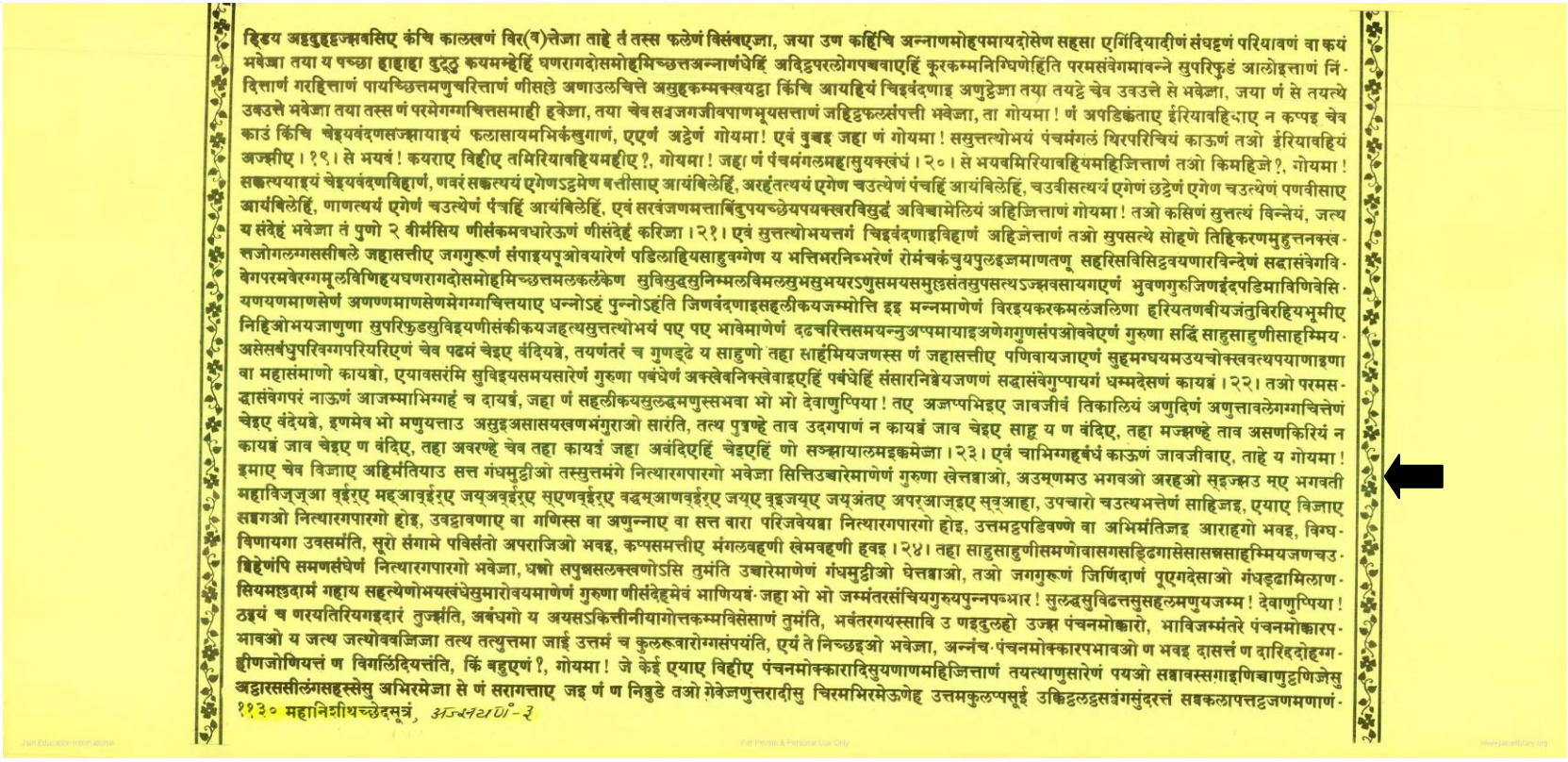

दिइय अइदुहट्टज्झवसिए कंचि कालखणं विर(व)त्तेजा ताहे तं तस्स फलेणं विसंवएज्जा, जया उण कहिंचि अन्नाणमोहपमायदोसेण सहसा एगिंदियादीणं संघट्टणं परियावणं वा कयं भवेज्जा तया य पच्छा हाहाहा दुट्ठु कयमम्हेहिं घणरागदोसमोहमिच्छत्तअन्नाणंघेहिं अदिट्ठपरलोगपच्चवाएहिं कूरकम्मनिग्घिणेहिंति परमसंवेगमावन्ने सुपरिफुडं आलोइत्ताणं निंदित्ताणं गरहित्ताणं पायच्छित्तमणुचरित्ताणं णीसल्ले अणाउलचित्ते असुहकम्मक्खयट्ठा किंचि आयहियं चिइवंदणाइ अणुट्ठेज्जा तया तयट्ठे चेव उवउत्ते से भवेज्जा, जया णं से तयत्थे उवउत्ते भवेज्जा तया तस्स णं परमेगग्गचित्तसमाही हवेज्जा, तया चेव सव्वजगजीवपाणभूयसत्ताणं जहिट्ठफलसंपत्ती भवेज्जा, ता गोयमा ! णं अपडिक्कंताए ईरियावहियाए न कप्पइ चेव काउं किंचि चेइयवंदणसज्झायाइयं फलासायमभिकंखुगाणं, एएणं अट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जहा णं गोयमा ! समुत्तत्थोभयं पंचमंगलं थिरपरिचियं काऊणं तओ ईरियावहियं अज्झीए। १९। से भयवं ! कयराए विहीए तमिरियावहियमहीए ?, गोयमा ! जहा णं पंचमंगलमहासुयक्खंधं। २०। से भयवमिरियावहियमहिजित्ताणं तओ किमहिजे ?, गोयमा ! सक्कत्थयाइयं चेइयवंदणविहाणं, णवरं सक्कत्थयं एगेणऽट्ठमेणं बत्तीसाए आयंबिलेहिं, अरहंतत्थयं एगेण चउत्थेणं पंचहिं आयंबिलेहिं, चउवीसत्थयं एगेणं छट्ठेणं एगेण चउत्थेणं पणवीसाए आयंबिलेहिं, णाणत्थयं एगेणं चउत्थेणं पंचहिं आयंबिलेहिं, एवं सरवंजणमत्ताबिंदुपयच्छेयपयक्खरविसुद्धं अविच्चामेलियं अहिजित्ताणं गोयमा ! तओ कसिणं सुत्तत्थं विन्नेयं, जत्थ य संदेहं भवेज्जा तं पुणो २ वीमंसिय णीसंकमवधारेऊणं णीसंदेहं करिजा। २१। एवं सुत्तत्थोभयत्तगं चिइवंदणाइविहाणं अहिजेत्ताणं तओ सुपसत्थे सोहणे तिहिकरणमुहुत्तनक्खत्तजोगलग्गससीबले जहासत्तीए जगगुरूणं संपाइयपूओवयारेणं पडिलाहियसाहुवग्गेण य भत्तिभरनिब्भरेणं रोमंचकंचुयपुलइज्जमाणतणू सहरिसविसिट्ठवयणारविन्देणं सद्धासंवेगविवेगपरमवेरग्गमूलविणिहयघणरागदोसमोहमिच्छत्तमलकलंकेण सुविसुद्धसुनिम्मलविमलसुभसुभयरऽणुसमयसमुल्लसंतसुपसत्थऽज्झवसायगएणं भुवणगुरुजिणइंदपडिमाविणिवेसियणयणमाणसेणं अणण्णमाणसेणमेगग्गचित्तयाए धन्नोऽहं पुन्नोऽहंति जिणवंदणाइसहलीकयजम्मोत्ति इइ मन्नमाणेणं विरइयकरकमलंजलिणा हरियतणबीयजंतुविरहियभूमीए निहिओभयजाणुणा सुपरिफुडसुविइयणीसंकीकयजहत्थसुत्तत्थोभयं पए पए भावेमाणेणं दढचरित्तसमयन्नुअप्पमायाइअणेगगुणसंपओवेएणं गुरुणा सद्धिं साहुसाहुणीसाहम्मियअसेसबंधुपरिवग्गपरियरिएणं चेव पढमं चेइए वंदियव्वे, तयणंतरं च गुणड्ढे य साहुणो तहा साहम्मियजणस्स णं जहासत्तीए पणिवायजाएणं सुहमग्घयमउयचोक्खवत्थपयाणाइणा वा महासंमाणो कायव्वो, एयावसरंमि सुविइयसमयसारेणं गुरुणा पबंधेणं अक्खेवनिक्खेवाइएहिं पबंधेहिं संसारनिव्वेयजणणं सद्धासंवेगुप्पायगं धम्मदेसणं कायव्वं। २२। तओ परमसद्धासंवेगपरं नाऊणं आजम्माभिग्गहं च दायव्वं, जहा णं सहलीकयसुलद्धमणुस्सभवा भो भो देवाणुप्पिया ! तए अज्जप्पभिइए जावजीवं तिकालियं अणुदिणं अणुत्तावलेगग्गचित्तेणं चेइए वंदेयव्वे, इणमेव भो मणुयत्ताउ असुइअसासयखणभंगुराओ सारंति, तत्थ पुव्वण्हे ताव उदगपाणं न कायव्वं जाव चेइए साहू य ण वंदिए, तहा मज्झण्हे ताव असणकिरियं न कायव्वं जाव चेइए ण वंदिए, तहा अवरण्हे चेव तहा कायव्वं जहा अवंदिएहिं चेइएहिं णो सज्झायालमइक्कमेज्जा। २३। एवं चाभिग्गहबंधं काऊणं जावजीवाए, ताहे य गोयमा ! इमाए चेव विज्जाए अहिमंतियाउ सत्त गंधमुट्ठीओ तस्सुत्तमंगे नित्थारगपारगो भवेज्जा सित्तिउव्वारेमाणेणं गुरुणा खेत्तव्वाओ, अउमणमउ भगवओ अरहओ सुइज्झउ मए भगवती महाविज्जुज्जा वुईए महआवुईए जयअवुईए सुएणवुईए वद्धमआणवुईए जयए वुइजयए जयअंतए अपराजिताए सुआहा, उपचारो चउत्थभत्तेणं साहिज्जइ, एयाए विज्जाए सइगओ नित्थारगपारगो होइ, उवट्टावणाए वा गणिस्स वा अणुन्नाए वा सत्त वारा परिजवेयव्वा नित्थारगपारगो होइ, उत्तमट्ठपडिवण्णे वा अभिमंतिजइ आराहगो भवइ, विग्घविणायगा उवसमंति, सूरो संगामे पविसंतो अपराजिओ भवइ, कप्पसमत्तीए मंगलवहणी खेमवहणी हवइ। २४। तहा साहुसाहुणीसमणोवासगसड्ढिगासेसासन्नसाहम्मियजणचउव्विहेणंपि समणसंघेणं नित्थारगपारगो भवेज्जा, धन्नो सपुन्नसलक्खणोऽसि तुमंति उच्चारेमाणेणं गंधमुट्ठीओ घेत्तव्वाओ, तओ जगगुरूणं जिणिंदाणं पूयगदेसाओ गंधड्ढमिलाणसियमल्लदामं गहाय सहत्थेणोभयखंधेसुमारोवयमाणेणं गुरुणा णीसंदेहमेवं भाणियव्वं· जहा भो भो जम्मंतरसंचियगुरुयपुन्नपब्भार ! सुलद्धसुविढत्तसुसहलमणुयजम्म ! देवाणुप्पिया ! ठइयं च णरयतिरियगइदारं तुज्झंति, अबंधगो य अयसऽकित्तीनीयागोत्तकम्मविसेसाणं तुमंति, भवंतरगयस्सावि उ णइदुलहो उज्झ पंचनमोक्कारो, भाविजम्मंतरे पंचनमोक्कारपभावओ य जत्थ जत्थेववज्जिजा तत्थ तत्थुत्तमा जाई उत्तमं च कुलरूवारोग्गसंपयंति, एयं ते निच्छइओ भवेज्जा, अन्नंच·पंचनमोक्कारपभावओ ण भवइ दासत्तं ण दारिद्ददोहग्गहीणजोणियत्तं ण विगलिंदियत्तंति, किं बहुएणं ?, गोयमा ! जे केई एयाए विहीए पंचनमोक्कारादिसुयणाणमहिजित्ताणं तयत्थाणुसारेणं पयओ सद्धावस्सगाइणिच्चाणुट्ठणिज्जेसु अट्ठारससीलंगसहस्सेसु अभिरमेज्जा से णं सरागत्ताए जइ णं ण निव्वुडे तओ गेवेज्जणुत्तरादीसु चिरमभिरमेऊणेह उत्तमकुलप्पसूई उक्किट्ठलट्ठसव्वंगसुंदरत्तं सव्वकलापत्तट्ठजणमणाणं·

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

➡ अत्र “वर्धमानविद्या“ एवं तत् आराधना-विधि प्रस्तुता

प्रत सूत्रांक [२५] + गाथा ||१०६|| दीप अनुक्रम [५९८]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

दयारियत्तणं च पाविऊणं सुरिंदोवमाए रिद्धीए एगंतेणं च दयाणुकंपापरे निव्विन्नकामभोगे सद्धम्ममणुट्ठेऊणं विहुयरयमले सिज्झेज्जा।२५। से भयवं! किं जहा पंचमंगलं तहा सामाइयाइयमसेसंपि सुयनाणमहिज्जिणेयव्वं?, गोयमा! तहा चेव विणओवहाणेणमहीएयव्वं, णवरं अहिज्जिणिउकामेहिं अट्ठविहं चेव नाणायारं सव्वपयत्तेणं कालादी रक्खिज्जा, अन्नहा महयाऽऽसायणत्ति, अन्नंच-दुवालसंगस्स सुयनाणस्स पढमचरिमजामअहन्निसमज्झयणज्झावणं पंचमंगलस्स सोलसद्धजामियं च अन्नंच-पंचमंगलं कयसामाइए वा अकयसामाइए वा अहीए सामाइयमाइयं तु सुयं चत्तारंभपरिग्गहे जावज्जीवकयसामाइए अहिज्जिणइ, ण उण सारंभपरिग्गहे अकयसामाइए. तहा पंचमंगलस्स आलावगे २ आयंबिलं तहा सक्कत्थवाइसुवि, दुवालसंगस्स पुण सुयनाणस्स उद्देसगज्झयणेसु।२६। से भयवं! सुदुक्करं पंचमंगलमहासुयक्खंधस्स विणओवहाणं पन्नत्तं, महती य एसा णियंतणा कहं बालेहिं कज्जइ?, गोयमा! जे णं केई ण इच्छेज्जा एयं नियंतणं अविणओवहाणेणं चेव पंचमंगलाइसुयनाणं अहिज्जिणे अज्झावेइ वा अज्झावयमाणस्स वा अणुन्नं वा पयाइ से णं ण भविजा पियधम्मे ण हवेज्जा दढधम्मे ण भवेजा भत्तीजुए हीलिज्जा सुत्तं हीलेज्जा अत्थं हीलिज्जा सुत्तत्थउभये हीलिज्जा गुरुं, जे णं हीलिज्जा सुत्तत्थोभए जाव णं गुरुं से णं आसाएज्जा अतीताणागयवट्टमाणे तित्थयरे आसाइज्जा आयरियउवज्झायसाहुणो, जे णं आसाइज्जा सुयणाणमरिहंतसिद्धसाहू से तस्स णं सुदीहयाल्मणंतसंसारसागरमाहिंडेमाणस्स तासु तासु संवुडवियडासु चुल्लसीइलक्खपरिसंखाणासु सीओसिणमिस्सजोणीसु तिमिसंधयारदुग्गंधडमिज्झविलीणखारमुत्तोज्झसिंभपडिहत्थवसाजलुल(स)पूयदुद्दिणचिलिचिलरुहिरचिहुदुहंसणजंबालपंकबीभच्छघोरगब्भवासेसु कढकढकढेंतचलचलचलस्सटल्टल्टलस्सरजंतर(जंत)संपिंडियंगमंगस्स सुइरं नियंतणा, जे उण एयं विहिं फासेज्जा नो णं मणयंपि अइयरेज्जा जहुत्तविहाणेणं चेव पंचमंगलपभिइसुयनाणस्स विणओवहाणं करेज्जा से णं गोयमा! नो हीलिज्जा सुत्तं णो हीलिज्जा अत्थं णो हीलिज्जा सुत्तत्थोभए से णं नो आसाइज्जा तिकालभावी तित्थकरे णो आसाइज्जा तिलोगसिहरवासी विहुयरयमले सिद्धे णो आसाइज्जा आयरियउवज्झायसाहुणो सुट्ठुयरं चेव भवेज्जा पियधम्मे दढधम्मे भत्तीजुत्ते एगंतेणं भवेज्जा सुत्तत्थाणुरंजियमाणसे सद्धासंवेगमावन्नो, से एस णं ण लभेज्जा पुणो २ भवचारगे गब्भवासाइयं अणेगहा जंतणंति।२७। णवरं गोयमा! जे णं बाले जाव अविन्नायपुन्नपावाणं विसेसो ताव णं से पंचमंगलस्स णं गोयमा! एगंतेणं अओगे, ण तस्स पंचमंगलमहासुयक्खंधस्स एगमवि आलावगं दायव्वं, जओ अणाइभवंतरसमज्जियासुहकम्मरासिदहणट्ठमिणं लभेत्ताणं न बाले सम्ममाराहेज्जा लहुत्तं च आणेइ, ता तस्स केवलं धम्मकहाए गोयमा! भत्ती समुप्पाइज्जइ, तओ नाऊणं पियधम्मं दढधम्मं भत्तिजुत्तं ताहे जावइयं पच्चक्खाणं निव्वाहेउं समत्थो भवइ तावइयं कारवेजइ, राइभोयणं च दुविहतिविहचउव्विहेण वा जहासत्तीए पच्चक्खाविजइ।२८। ता भोयणं! णं पणयालाए नमोक्कारसहियाणं चउत्थं चउवीसाए पोरुसीहिं बारसहिं पुरिमड्ढेहिं दसहिं अवड्ढेहिं तिहिं निव्वीइएहिं चउहिं एगट्ठाणगेहिं दोहिं आयंबिलेहिं एगेणं सुद्धच्छायंबिलेणं, अन्नावारत्ताए रोद्दट्टज्झाणविगहाविरहियस्स सज्झायगग्गचित्तस्स गोयमा! एगमेवायंबिलं मासखमणं विसेसेज्जा, तओ य जावइयं तवोवहाणगं वीसमंतो करेजा तावइयं अणुगणेऊणं जाहे जाणेज्जा जहा णं एत्तियमित्तेणं तवोवहाणेणं पंचमंगलस्स जोगीभूओ ताहे आउत्तो पाढेजा, ण अन्नहत्ति।२९। से भयवं! पभूयं कालाइक्कमं एयं, जइ कयाइ अवंतराले पंचत्तमुवगच्छे तओ नमोक्कारविरहिए कहमुत्तिमट्ठं साहेज्जा?, गोयमा! जंसमयं चेव सुत्तोवयारनिमित्तेणं असढभावत्ताए जहासत्तीए किंचि तवमारभेजा तंसमयमेव तदहीयसुत्तत्थोभयं दट्ठव्वं, जओ णं सो तं पंचनमोक्कारं सुत्तत्थोभयं ण अविहीए गिण्हे, किंतु तह गेण्हे जहा भवंतरेसुंपि ण विप्पणस्से, एयज्झवसायत्ताए आराहगो भवेज्जा।३०। से भयवं! जेण पुण अन्नेसिमहीयमाणाणं सुयावरणक्खओवसमेण कण्णहाडित्तणेणं पंचमंगलमहीयं भवेज्जा सेऽविय किं तवोवहाणं करेज्जा?, गोयमा! करेज्जा, से भयवं! केणं अट्ठेणं?, गोयमा! सुलभबोहिलाभनिमित्तेणं, एवं चेयाइं अकुव्वमाणे णाणकुसीले णेए।३१। तहा गोयमा! णं पव्वज्जादिवसप्पभिईए जहुत्तविणओवहाणेणं जे केई साहू वा साहुणी वा अपुव्वनाणगहणं न कुज्जा तस्सासयिं विराहियं सुत्तत्थोभयं, सरमाणे एगग्गचित्ते पढमचरमपोरिसीसु दिया राओ य णाणुगुणेज्जा से णं गोयमा! णाणकुसीले णेए, से भयवं! जस्स अइगरुयनाणावरणोदएणं अनिसं पहोसेमाणस्स ण संवच्छरेणावि सिलोगद्धमवि थिरपरिचियं(ण)भवेज्जा(से किं कुज्जा?,)तेणावि जावज्जीवाभिग्गहेणं सज्झायसीलाणं वेयावच्चं तहा अणुदिणं अड्ढाइज्जे सहस्से पंचमंगलाणं सुत्तत्थोभए सरमाणेगग्गमाणसे पहोसिज्जा, से भयवं! केणं अट्ठेणं?, गोयमा! जे भिक्खू जावज्जीवाभिग्गहेणं चाउक्कालियं वायणाइ जहासत्तीए सज्झायं न करेजा से णं णाणकुसीले णेए।३२। अन्नंच-जे केई जावज्जीवाभिग्गहेण अपुव्वं नाणाहिगमं करेजा तस्सासत्तीए पुव्वाहियं गुणेजा, तस्सावि यासत्तीए पंचमंगलाणं अड्ढाइज्जे सहस्से परावत्ते सेवि आराहगे, तं च नाणावरणं खवेत्ताणं तित्थयरेइ वा गणहरेइ वा भवेत्ताणं सिज्झेज्जा।३३। से भयवं! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा णं चाउक्कालियं सज्झायं कायव्वं?, गोयमा! ‘मणवयणकायगुत्तो नाणावरणं खवेइ अणुसमयं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [३४/१] + गाथा ||१०८||

दीप अनुक्रम [६०८]

सज्झाए वइंतो खणे खणे जाइ वेरग्गं ॥८॥ उड्ढमहे तिरियंमि य जोइसवेमाणिया य सिद्धी य। सव्वो लोगालोगो सज्झायविउस्स पच्चक्खं ॥ ९ ॥ दुवालसविहंमिवि तवे सब्भितरबाहिरे कुसलदिट्ठे। णवि अत्थि णवि य होही सज्झायसमं तवोकम्मं ॥११०॥ एगदुतिमासक्खमणं संवच्छरमवि य अणसिओ होज्जा। सज्झायझाणरहिओ एगोवासफलंपि ण लभेज्जा ॥१॥ उग्गमउपायणएसणाहिं सुद्धं तु निच्च भुंजंतो। जइ तिविहेणाउत्तो अणुसमय भवेज्ज सज्झाए ॥२॥ ता तं गोयम! एगग्गमाणसत्तं ण उवमिउं सक्का। संवच्छरखवणेणवि जेण तहिं णिज्जराऽणंता ॥३॥ पंचसमिओ तिगुत्तो खंतो दंतो य निज्जरापेही। एगग्गमाणसो जो करेज्ज सज्झाय मुणीभत्ते (सुणिब्भंतो) ॥ ४॥ जो वागरे पसत्थं सुयनाणं जो सुणेइ सुहभावो। ठइयासवदारत्तं तक्कालं गोयमा! दोण्हं ॥५॥ एगंपि जो दुहत्तं सत्तं पडिबोहिउं ठवइ मग्गे। ससुरासुरंमिवि जगे तेणेह घोसिओ अमाघाओ ॥ ६॥ धाउपहाणो कचणभावं न य गच्छई कियाहीणो। एवं सव्वोवि जिणोवएसहीणो न बुज्झेज्जा ॥ ७॥ गयरागदोसमोहा धम्मकहं जे करेंति समयन्नू। अणुदियहमवीसंता सव्वप्पावाण मुच्चंति ॥ ८॥ निसुणंति अ भयणिज्जं एगंतं निज्जरं कहंताणं। जइ अन्नहा ण सुत्तं अत्थं वा किंचि वाएज्जा ॥११९॥ एएणं अट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जहा णं जावज्जीवं अभिग्गहेणं चाउक्कालियं सज्झायं कायव्वंति, तहा अ गोअमा! जे भिक्खू विहीए सुपसत्थनाणमहिज्जेऊण नाणमयं करेज्जा सेवि नाणकुसीले, एवमाइनाणकुसीले अणेगहा पन्नविज्जंति। ३४। से भयवं! कतरे ते दंसणकुसीले?, गोयमा! ते दंसणकुसीले दुविहे नेए आगमओ णोआगमओ अ, तत्थ आगमओ सम्मद्दंसणं संकंते कंखंते विदुगुच्छंते दिट्ठीमोहं गच्छंते अणोववूहए परिवडियधम्मसद्धो सामन्नमुज्झिउकामाणं अथिरीकरणेणं साहम्मियाणं अवच्छल्लत्तणेणं अप्पभावणाए, एतेहिं अट्ठहिं थाणंतरेहिं कुसीले णेए ।३५। णोआगमओ य दंसणकुसीले अणेगहा, तंजहा-चक्खुकुसीले घाणकुसीले सवणकुसीले जिब्भाकुसीले सरीरकुसीले, तत्थ चक्खुकुसीले तिविहे णेए, तंजहा-पसत्थचक्खुकुसीले पसत्थापसत्थचक्खुकुसीले अपसत्थचक्खुकुसीले, तत्थ जे केइ पसत्थं उसभादितित्थयरबिंबं पुरओ चक्खुगोयरट्ठिअं तमेव पासेमाणे अण्णं कंपि मणसा पसत्थमज्झवसे से णं पसत्थचक्खुकुसीले, तहा पसत्थापसत्थचक्खुकुसीले तित्थयरबिंबं हियएणं अच्छीहिं च (पासेमाणे) अन्नं किंपि पीहिज्जा से णं पसत्थापसत्थचक्खुकुसीले, तहा पसत्थापसत्थाइं दव्वाइं कागचगढंकतित्तिरमयूराइं सुकंतदित्तित्थियं वा ददठूणं तयहुत्तं चक्खुं विसज्जे सेवि पसत्थापसत्थचक्खुकुसीले, तहा अपसत्थचक्खुकुसीले तिसट्ठेहिं पयारेहिं अपसत्था सरागा चक्खूत्ति, से भयवं! कयरे ते अपसत्थे तिसट्ठी चक्खुभेए?, गोयमा! इमे तंजहा-सद्दु कक्खडहरवा(कृखा) तारा मंदा मदलसा वंका विवंका कुसीला अट्ठिक्खिया काणिक्खिया १० भामिया उब्भामिया चलिया वलिया चलवलिया अडुंमिछा मिलिमिला माणुसा पसवा पक्खा २० सरीसवा असंता अपसंता अथिरा बहुविगारा साणुरागा रोगोईरणी रोगजन्नाऽऽमयुप्पायणी मयणी ३० मोहणी भउईरणी भयजन्ना भयंकरी हिययभेइणी संसयावहरणी चित्तचमकुप्पायणी णिबद्धा अतिबद्धा ४० गया आगया गयागयप्पचागया निद्धाडणी अहिलसणी अरइकरा रइकरा दीणा दयावणा सूराधीराहणणी ५० मारणी तावणी संतावणी कुद्धा पकुद्धा घोरा महाघोरा चंडा रुद्दा सुद्दा हाहाभूयसरणा ६० रुक्खा सणिद्धा रुक्खसणिद्धत्ति, महिलाणं चलणंगुट्ठकोडिणऽट्ठकरसुविलिहियं दिन्नालत्तं गायं च णहं मणिकिरणनिबद्धसक्कचावं कुम्मुन्नयं चलणं संमग्गनिमग्गवट्टगूढं जाणुं जंघा पिहुलकडियडभोगा जहणणियंबणाहीथणगुज्झंतरकट्ठाभुयलट्ठीओ अहरोट्ठदसणपंतीकन्ननासनयणजुयलभमुहानिलाडसिरुहसीमंतयामोडयपेढतिलगकुंडलकवोलकज्जलतमालकलावहारकडिसुत्तगणेउरबाहुरक्खगमणिरयणकडगकंकणमुद्दियाइसुकंतदित्ताभरणदुगुल्लवसणनेवत्था कामग्गिसंधुक्खणी निरयतिरियगइसुं अणंतदुक्खदायगा एस साहिलाससरागदिट्ठत्ति एस चक्खुकुसीले ।३६। तहा घाणकुसीले जे केइ सुरहिगंधेसु संगं गच्छइ दुरहिगंधे दुगुंछे से णं घाणकुसीले, तहा सवणकुसीले दुविहे णेए पसत्थे अपसत्थे य, तत्थ जे भिक्खू अप्पसत्थाइं कामरागसंधुक्खणुद्दीवणुज्जालणसंदीवणाइं गंधव्वनट्टधणुव्वेयहत्थिसिक्खाकामरतीसत्थाइं सुणेऊणं णालोएज्जा जाव णं णो पायच्छित्तमणुचरेज्जा से णं अपसत्थसवणकुसीले णेए, तहा जे भिक्खू पसत्थाइं सिद्धंताचरियपुराणधम्मकहाओ य अन्नाइं च धम्मसत्थाइं सुणेत्ताणं न किंचि आयहियं अणुट्ठे णाणमयं च करेइ से णं पसत्थसवणकुसीले णेए, तहा जिब्भाकुसीले से णं अणेगहा तंजहा-तित्तकडुयकसायमहुरंबिलल्हणाइं रसाइं आसायंते अदिट्ठासुयाइं इहपरलोगोभयविरुद्धाइं सदोसाइं मयारजयारुचारणाइं अयसऽब्भक्खाणसंताभिओगाइं वा भणंते असमयन्नुधम्मदेसणापवत्तणेण य जिब्भाकुसीले णेए, से भयवं! किं भासाएवि भासियाए कुसीलत्तं भवति?, गोयमा! भवइ, से भयवं! जइ एवं ताव धम्मदेसणं न कायव्वं?, गोयमा! 'सावज्जऽणवज्जाणं वयणाणं जो न जाणइ विसेसं। वुत्तुंपि तस्स न खमं किमंग पुण देसणं काउं? ॥१२०॥। ३७। तहा सरीरकुसीले दुविहे णेए-चेट्ठाकुसीले विभूसाकुसीले य, तत्थ जे भिक्खू एयं किमिकुलनिलयं सउणसाणाइभत्तं सडणपडणविद्धंसणधम्मं असुइं असासयं असारं सरीरगं आहारादीहिं णिच्चं चेट्ठेज्जा णो णं इणमो भवसयसुलद्धनाणदंसणाइसमन्निएणं सरीरेणं अच्चंतघोरवीरुग्गकट्ठघोरतवसंजममणुट्ठेज्जा से णं चेट्ठाकुसीले, तहा जे णं विभूसाकुसीले सेऽवि अणेगहा, तंजहा-तेल्लाब्भंगणविमद्दणसंवाहणसिणाणुव्वट्टणपरिहसणतंबोलधूवणवासणदसणुग्घसणसमा- (२८३)

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [३८] + गाथा ||१२१||

दीप अनुक्रम [६२७]

लहणपुप्फोमाल्लणकेससमारणसोवाहणदुवियड्ढगइभणिरहसिरउवविट्ठट्ठियसन्निवन्नक्खियविभूसावत्तिसविगारणीयंसणुत्तरीयपाउरणदंडगगहणमाई सरीरविभूसाकुसीले णेए. एते य पवयणउड्डाहपरे दुरंतपंतलक्खणे अदट्ठवे महापावकम्मकारी विभूसाकुसीले भवंति. गए दंसणकुसीले। ३८। तहा चारित्तकुसीले अणेगहा मूलगुणउत्तरगुणेसु. तत्थ मूलगुणा पंच महव्वयाणि राइभोयणच्छट्ठाणि. तेसुं जे पमत्ते भवेज्जा. तत्थ पाणाइवायं पुढवीदगागणिमारुयवणस्सइबितिचउपंचिंदियाईणं संघट्टणपरियावणकिलामणोद्दवणे. मुसावायं सुहुमं बायरं च. तत्थ सुहुमे 'पयलाउड्ढा मरुए' एवमादी बादरो कन्नालीगादि, अदिन्नादाणं सुहुमं बादरं च. तत्थ सुहुमं तणडगलुच्छारमल्लगादीणं गहणे. बायरं हिरण्णसुवण्णादीण. मेहुणं दिव्वोरालियं मणोवयकायकरणकारावणाणुमइभेदेण अट्ठारसहा. तहा करकम्मादी सचित्ताचित्तभेदेणं, णवगुत्तीविराहणेण वा. विभूसावत्तिएण वा. परिग्गहं सुहुमं बायरं च. तत्थ सुहुमं कप्पट्टगरक्खणममत्तो बादरं हिरण्णमादीण गहणे धारणे वा, राईभोयणं दियागहियं दियाभुत्तं एवमादि, उत्तरगुणा 'पिंडस्स जा विसोही समितीओ भावणा तवो दुविहो। पडिमा अभिग्गहावि य उत्तरगुणमो वियाणाहि ॥ १२१ ॥ तत्थ पिंडविसोही-सोलस उग्गमदोसा सोलस उप्पायणाय दोसा उ। दस एसणाय दोसा संजोयणमाइ पंचेव ॥ २ ॥ तत्थ उग्गमदोसा-आहाकम्मुद्देसिय पूईकम्मे य मीसजाये य। ठवणा पाहुडियाए पाओयर कीय पामिचे ॥ ३ ॥ परियट्टिए अभिहडे उब्भिन्ने मालोहडे इय। अच्छिजे अणिसट्टे अज्झोयरए य सोलसमे ॥ ४ ॥ इमे उप्पायणादोसा-धाई दुई निमित्ते आजीव वणीमगे तिगिच्छाए। कोहे माणे माया लोभे य हवंति दस एए ॥ ५ ॥ पुव्विंपच्छासंथव विज्जा मंते य चुण्णजोगे य उप्पायणाय दोसा सोलसमे मूलकम्मे य ॥ ६ ॥ एसणादोसा-संकियमक्खियनिक्खित्तपिहियसाहरियदायगुम्मीसे। अपरिणयलित्तछड्डिय एसणदोसा दस हवंति ॥ ७ ॥ तत्थुग्गमदोसे गिहत्थसमुत्थे उप्पायणादोसे साहुसमुत्थे एसणादोसे उभयसमुत्थे, संजोयणा पमाणे इंगाल धूम कारणे पंच मंडलीय दोसे भवंति, तत्थ संजोयणा उवगरणभत्तपाणसब्भंतरबहिभेएणं. पमाणं 'बत्तीसं किर कवले आहारो कुच्छिपूरओ भणिओ। रागेण सइंगालं दोसेण सधूमगंति नायव्वं ॥ ८ ॥ कारणं 'वेयण वेयावच्चे इरियट्ठाए य संजमट्ठाए। तह पाणवत्तियाए छट्ठं पुण धम्मचिंताए ॥ ९ ॥ नत्थि छुहाइ सरिसिया वियणा भुंजिज्ज तप्पसमणट्ठा। छाओ वेयावच्चं ण तरइ काउं अओ भुंजे ॥ १३० ॥ इरियंपि न सोहिम्सं पेहाईयं च संजमं काउं। थामो वा परिहायइ गुणणऽणुप्पेहासु य असत्तो ॥ १ ॥ पिंडविसोही गया, इयाणिं समितीओ पंच तंजहा-ईरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आदाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिई उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिई, तहा गुत्तीउ तिन्नि-मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती, तहा भावणाओ दुवालस तंजहा-अणिच्चभावणा असरणभावणा एगत्तभावणा अन्नत्तभावणा असुइभावणा विचित्तसंसारभावणा कम्मासवभावणा संवरभावणा विनिज्जरभावणा लोगविन्थरभावणा धम्मं सुयक्खायं सुपन्नत्तं तित्थयरेहिंति तत्तचिंताभावणा बोही सुदुल्लभा जम्मंतरकोडीहिवित्ति भावणा, एवमादियाणंतरेसुं जे पमायं कुज्जा से णं चारित्तकुसीले णेए। ३९। तहा नवकुसीले दुविहे णेए बज्झनवकुसीले अब्भिंतरनवकुसीले य. तत्थ जे केई विचित्तअणसणऊणोदरियावित्तीसंखेवणरसपरिच्चायकायकिलेससंलीणयत्ति छट्ठाणेसुं न उज्जमेज्जा से णं बज्झनवकुसीले, तहा जे केई विचित्तपच्छित्तविणयवेयावच्चसज्झायझाणउस्सग्गंमि चेएसुं छट्ठाणेसुं न उज्जमेज्जा से णं अब्भिंतरनवकुसीले। ४०। तहा पडिमाओ बारस तंजहा-'मासादी सत्तंता एगदुगतिगसत्तराइदिण निन्नि। अहरानी एगराती भिक्खूपडिमाण बारसगं ॥ २ ॥ तहा अभिग्गहा-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ, तत्थ दव्वे कुम्मासाइयं दव्वं गहेयव्वं, खेत्तओ गामे वहिं वा गामस्स कालओ पढमपोरिसीमाईसु भावओ कोहमाइसंपन्नो जं देहिइ तं गहिस्सामि, एवं उत्तरगुणा संखेवओ समत्ता, समत्तो य संखेवेणं चरित्तायारो, नवायारोऽवि संखेवेणेहंतरगओ. तहा वीरियायारो एएसु चेव जा अहाणी, एएसुं पंचसु आयाराइयारेसुं जं आउट्टियाए दप्पओ पमाया कप्पेण वा अजयणाए वा जयणाए वा पडिसेवियं तं तहेवालोइत्ताणं जं मग्गविऊ गुरू उवइसंति तं तहा पायच्छित्तं नाणुचरेइ. एवं अट्ठारसण्हं सीलंगसहस्साणं जं जत्थ पए पमत्ते भवेज्जा से णं तेणं तेणं पमायदोसेणं कुसीले णेए। ४१। तहा ओसन्नेसु जाणे. णित्थ लिहिज्जइ. पासत्थे णाणमादीणं सच्छंदे उस्सुत्तमग्गगामी सबले णेत्थं लिहिज्जति. गंथवित्थरभयाओ, भगवया उण एत्थं पत्थावे कुसीलादी महापबंधेणं पन्नविए. एत्थं च जा जा कत्थई अण्णण्णवायणा सा सुमुणियसमयसारेहिंतो पउंसे(जे)यव्वा, जओ मूलादरिसे चेव बहुगंथं विप्पणट्ठं तहिं च जत्थ २ संबंधाणुलग्गं संबज्झइ तत्थ तत्थ बहुएहिं सुयहरेहिं संमिलिऊणं संगोवंगदुवालसंगाओ सुयसमुद्दाओ अन्नमन्नअंगउवंगसुयक्खंधअज्झयणुद्देसगाणं समुचिणिऊण किंचि किंचि संबज्झमाणं एत्थं लिहियंति, ण उण सकबं कयंति। ४२। पंचए सुमहापावे, जे ण वज्जेज्ज गोयमा!। संलावादीहिं कुसीलादी, भमिही सो सुमती जहा ॥ १३३ ॥ भवकायठितिए संसारे, घोरदुक्खसमोत्थओ। अलहंतो दसविहे धम्मे, बोहिमहिंसाइलक्खणे ॥ ४ ॥ एवं तु किर दिट्ठतं. संसग्गीगुणदोसओ। रिसिभिड्डासमवासेणं. णिप्फण्णं गोयमा! सुणे ॥ ५ ॥ तम्हा कुसीलसंसग्गी, सव्वोवाएहिं गोयमा!। वज्जियाऽऽयहियाकंखी, अंडजदिट्ठंतजाणगे ॥ १३६ ॥

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [१] + गाथा ||१|| दीप अनुक्रम [६५४]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

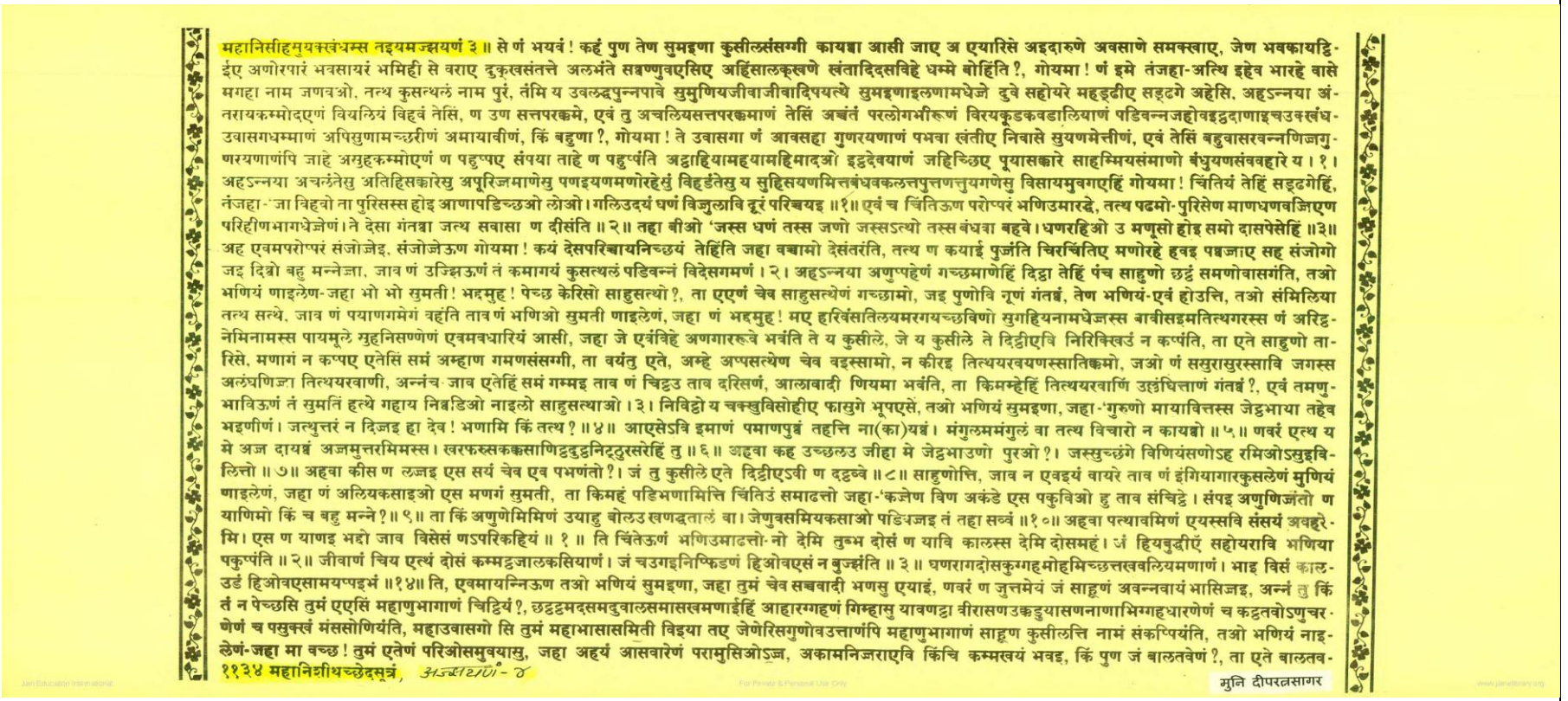

महानिसीहसुयक्खंधस्स तइयमज्झयणं ३ ॥ से णं भयवं ! कहं पुण तेण सुमइणा कुसीलसंसग्गी कायव्वा आसी जाए अ एयारिसे अइदारुणे अवसाणे समक्खाए, जेण भवकायट्ठिईए अणोरपारं भवसायरं भमिही से वराए दुक्खसंतत्ते अलभंते सव्वण्णुवएसिए अहिंसालक्खणे खंतादिदसविहे धम्मे बोहिंति ?, गोयमा ! णं इमे तंजहा-अत्थि इहेव भारहे वासे मगहा नाम जणवओ, तत्थ कुसत्थलं नाम पुरं, तंमि य उवलद्धपुन्नपावे सुमुणियजीवाजीवादिपयत्थे सुमइणाइलणामधेज्जे दुवे सहोयरे महड्ढीए सड्ढगे अहेसि, अहऽन्नया अंतरायकम्मोदएणं वियलियं विहवं तेसिं, ण उण सत्तपरक्कमे, एवं तु अचलियसत्तपरक्कमाणं तेसिं अचंतं परलोगभीरूणं विरयकूडकवडालियाणं पडिवन्नजहोवइट्ठदाणाइचउक्खंधउवासगधम्माणं अपिसुणामच्छरीणं अमायावीणं, किं बहुणा ?, गोयमा ! ते उवासगा णं आवसहा गुणरयणाणं पभवा खंतीए निवासे सुयणमेत्तीणं, एवं तेसिं बहुवासरवन्नणिज्जगुणरयणाणंपि जाहे अमुहकम्मोएणं ण पहुप्पए संपया ताहे ण पहुप्पंति अट्ठाहियामहयामहिमादओ इट्ठदेवयाणं जहिच्छिए पूयासक्कारे साहम्मियसंमाणो बंधुयणसंववहारे य ।१। अहऽन्नया अचलंतेसु अतिहिसक्कारेसु अपूरिज्जमाणेसु पणइयणमणोरहेसुं विहडंतेसु य सुहिसयणमित्तबंधवकलत्तपुत्तणत्तुयगणेसु विसायमुवगएहिं गोयमा ! चिंतियं तेहिं सड्ढगेहिं, तंजहा-'जा विहवो ता पुरिसस्स होइ आणापडिच्छओ लोओ। गलिउदयं घणं विज्जुलावि दूरं परिच्चयइ ॥१॥ एवं च चिंतिऊण परोप्परं भणिउमारद्धे, तत्थ पढमो-पुरिसेण माणधणवज्जिएण परिहीणभागधेज्जेणं। ते देसा गंतव्वा जत्थ सवासा ण दीसंति ॥२॥ तहा बीओ 'जस्स धणं तस्स जणो जस्सऽत्थो तस्स बंधवा बहवे। धणरहिओ उ मणूसो होइ समो दासपेसेहिं ॥३॥ अह एवमपरोप्परं संजोजेइ, संजोजेऊण गोयमा ! कयं देसपरिच्चायनिच्छयं तेहिंति जहा वच्चामो देसंतरंति, तत्थ ण कयाइ पुज्जंति चिरचिंतिए मणोरहे हवइ पव्वज्जाए सह संजोगो जइ दिव्वो बहु मन्नेज्जा, जाव णं उज्झिऊणं तं कमागयं कुसत्थलं पडिवन्नं विदेसगमणं । २। अहऽन्नया अणुप्पहेणं गच्छमाणेहिं दिट्ठा तेहिं पंच साहुणो छट्ठं समणोवासगंति, तओ भणियं णाइलेण-जहा भो भो सुमती ! भद्दमुह ! पेच्छ केरिसो साहुसत्थो ?, ता एएणं चेव साहुसत्थेणं गच्छामो, जइ पुणोवि नूणं गंतव्वं, तेण भणियं-एवं होउत्ति, तओ संमिलिया तत्थ सत्थे, जाव णं पयाणगमेगं वहंति ताव णं भणिओ सुमती णाइलेणं, जहा णं भद्दमुह ! मए हरिवंसतिलयमरगयच्छविणो सुगहियनामधेज्जस्स बावीसइमतित्थगरस्स णं अरिट्ठनेमिनामस्स पायमूले मुहनिसण्णेणं एवमवधारियं आसी, जहा जे एवंविहे अणगारूवे भवंति ते य कुसीले, जे य कुसीले ते दिट्ठीएवि निरिक्खिउं न कप्पंति, ता एते साहुणो तारिसे, मणागं न कप्पए एतेसिं समं अम्हाण गमणसंसग्गी, ता वयंतु एते, अम्हे अप्पसत्थेण चेव वइस्सामो, न कीरइ तित्थयरवयणस्सातिक्कमो, जओ णं ससुरासुरस्सावि जगस्स अलंघणिज्जा तित्थयरवाणी, अन्नंच जाव एतेहिं समं गम्मइ ताव णं चिट्ठउ ताव दरिसणं, आलावादी णियमा भवंति, ता किमम्हेहिं तित्थयरवाणिं उल्लंघित्ताणं गंतव्वं ?, एवं तमणुभाविऊणं तं सुमतिं हत्थे गहाय निब्भडिओ नाइलो साहुसत्थाओ । ३। निविट्ठो य चक्खुविसोहीए फासुगे भूपएसे, तओ भणियं सुमइणा, जहा-'गुरुणो मायावित्तस्स जेट्ठभाया तहेव भइणीणं। जत्थुत्तरं न दिज्जइ हा देव ! भणामि किं तत्थ ? ॥४॥ आएसेऽवि इमाणं पमाणपुव्वं तहत्ति ना(का)यव्वं। मंगुलममंगुलं वा तत्थ विचारो न कायव्वो ॥५॥ णवरं एत्थ य मे अज्ज दायव्वं अज्जमुत्तरमिमस्स। खरफरुसकक्कसाणिट्ठदुट्ठनिट्ठुरसरेहिं तु ॥६॥ अहवा कह उच्छलउ जीहा मे जेट्ठभाउणो पुरओ ?। जस्सुच्छंगे विणियंसणोऽह रमिओऽसुइविलित्तो ॥७॥ अहवा कीस ण लज्जइ एस सयं चेव एव पभणंतो ?। जं तु कुसीले एते दिट्ठीएऽवी ण दट्ठव्वे ॥८॥ साहुणोत्ति, जाव न एवइयं वायरे ताव णं इंगियागारकुसलेणं मुणियं णाइलेणं, जहा णं अलियकसाइओ एस मणगं सुमती, ता किमहं पडिभणामित्ति चिंतिउं समाढत्तो जहा-'कज्जेण विण अकंडे एस पकुविओ हु ताव संचिट्ठे । संपइ अणुणिज्जंतो ण याणिमो किं च बहु मन्ने ?॥९॥ ता किं अणुणेमिमिणं उयाहु बोलउ खणद्धतालं वा। जेणुवसमियकसाओ पडिवज्जइ तं तहा सव्वं ॥१०॥ अहवा पत्थावमिणं एयस्सवि संसयं अवहरेमि। एस ण याणइ भद्दो जाव विसेसं णऽपरिकहियं ॥ १ ॥ ति चिंतेऊणं भणिउमाढत्तो-नो देमि तुब्भ दोसं ण यावि कालस्स देमि दोसमहं। जं हियबुद्धीएँ सहोयरावि भणिया पकुप्पंति ॥२॥ जीवाणं चिय एत्थं दोसं कम्मट्ठजालकसियाणं। जं चउगइनिप्फिडणं हिओवएसं न बुज्झंति ॥३॥ घणरागदोसकुग्गहमोहमिच्छत्तखवलियमणाणं। भाइ विसं कालउडं हिओवएसामयप्पइभं ॥१४॥ ति, एवमायन्निऊण तओ भणियं सुमइणा, जहा तुमं चेव सच्चवादी भणसु एयाइं, णवरं ण जुत्तमेयं जं साहूणं अवन्नवायं भासिज्जइ, अन्नं तु किं तं न पेच्छसि तुमं एएसिं महाणुभागाणं चिट्ठियं ?, छट्ठट्ठमदसमदुवालसमासखमणाईहिं आहारग्गहणं गिम्हासु यावण्हा वीरासणउक्कडुयासणनाणाभिग्गहधारणेणं च कट्ठतवोऽणुचरणेणं च पसुक्खं मंससोणियंति, महाउवासगो सि तुमं महाभासासमिती विइया तए जेणेरिसगुणोवउत्ताणंपि महाणुभागाणं साहूण कुसीलत्ति नामं संकप्पियंति, तओ भणियं नाइलेणं-जहा मा वच्छ ! तुमं एतेणं परिओसमुवयासु, जहा अहयं आसवारेणं परामुसिओऽज्ज, अकामनिज्जराएवि किंचि कम्मखयं भवइ, किं पुण जं बालतवेणं ?, ता एते बालतव-

मुनि दीपरत्नसागर

	अत्र तृतियं अध्ययनं समाप्तं अत्र चतुर्थं अध्ययनं- “कुशील-संसर्गी” आरब्धः

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [४] + गाथा ||१४||

दीप अनुक्रम [६७७]

स्सिणो दट्ठव्वे, जओ णं किं किंचि उस्सुत्तमग्गयामित्तमेएसिं न पईसे?, अन्नंच-वच्छ सुमइ! णत्थि ममं इमाणोवरिं कोवि सुहुमोवि मणसावि उ पओसो जेणाहमेएसिं दोसगहणं करेमि, किंतु मए भगवओ तित्थयरस्स सगासे एरिसमवधारियं जहा कुसीले अदट्ठव्वे, ताहे भणियं सुमइणा, जहा जारिसो तुमं निब्बुद्धीओ तारिसो सोवि तित्थयरो जेण तुज्झमेयं वायरियंति, तओ एवं भणमाणस्स सहत्थेणं झंपियं मुहकुहरं सुमइस्स णाइलेणं, भणिओ य जहा भद्दमुह! मा जगेक्कगुरुणो तित्थयरस्सासायणं कुणसु, मए पुण भणसु जहिच्छियं, नाहं ते किंचि पडिभणामि, तओ भणियं सुमइणा, जहा जइ एतेवि साहुणो कुसीला ता एत्थ जगे ण कोई सुसीलो अत्थि, तओ भणियं णाइलेणं, जहा भद्दमुह! सुमइ इत्थं जयालंघणिज्जवक्कस्स भगवओ वयणमायरेयव्वं जं चउत्थिक्कयाए न विसंवएज्जा, णो णं बालतवस्सीण चेट्ठियं, जओ णं जिणइंदवयणेण नियमओ ताव कुसीले इमे दीसंति, पव्वज्जाए पुण गंधंपि णो दीसए एसिं, जेणं पिच्छ २ तावेयस्स साहुणो बिइज्जयं मुहूर्णतगं दीसइ ता एस ताव अहिगपरिग्गहदोसेणं कुसीलो, ण एयं साहूण भगवयाऽऽइट्ठं जमहिंयपरिग्गहविधरणं करे, ता वच्छ! हीणसत्तेहिं नो एसेवं मणसाऽज्झवसे जहा जइ ममेयं मुहूर्णतगं विप्पणस्सिहिइ ता बीयं कत्थ कहं पावेज्जा?, नो एवं चिंतेइ मूढो जहा अहिगाणुवओगोवहीधारणेणं मज्झं परिग्गहवयस्स भंगं होही, अहवा किं संजमेऽभिरओ एस मुहूर्णतगाइसंजमोवओगधम्मोवगरणेणवी सीएज्जा?, नियमओ ण विसाए, णवरमत्ताणयं हीणसत्तोऽहमिइ पायडे उम्मग्गायरणं च पर्यसेइ पवयणं च मइलेइत्ति, एसा उ ण पेच्छसि सामन्नवत्ता, एएणं कलं तीए विणियंसणाइ इत्थीए अंगयट्ठिं निज्झाइऊण जं नाओइयपडिकंतं तं किं तए ण विन्नायं?, एस उ ण पिच्छेसि परूढविप्फोडगविब्भियाणणो?, एतेणं संपयं चेव लोयट्ठाए सहत्थेणमदिन्नछारगहणं कयं, तएवि दिट्ठमेयंति, एसो उ ण पेच्छसि संघाडिए कल्ले एएणं अणुग्गए सूरिए उट्ठेह वच्चामो उग्गयं सूरियंति तहा विहसियमिणं, एसो उ पेच्छसीमेसिं जिट्ठसेहो एसो अज्ज रयणीए अणोवउत्तो पसुत्तो विज्जुक्काए फुसिओ, ण एतेणं कप्पगहणं कयं, तहा पभाए हरियतणं वासाकप्पंचलेणं संघट्टियं, तहा बाहिरोदगस्स णं परिभोगं कयं, बीयकायस्सोप्परेणं परिसक्किओ, अविहीए एस खारथंडिलाओ महुरं थंडिलं संकमिओ, तहा पहपडिवन्नेणं साहुणा कमसयाइक्कमे ईरियं पडिक्कमियव्वं, तहा चरेयव्वं तहा चिट्ठियव्वं तहा भासेयव्वं तहा सएयव्वं जहा छक्कायमइगयाणं जीवाणं सुहुमबायरपज्जत्तापज्जत्तगमागमसव्वजीवपाणभूयसत्ताणं संघट्टणपरियावणकिलामणोद्दवणं ण भवेज्जा, ता एतेसिं एवइयाणं एयस्स एक्कमवि ण एत्थं दीसए, जे पुण मुहूर्णतगं पडिलेहमाणो अज्ज मए एस चोइओ जहा एरिसं पडिलेहणं करेसि जेण वाउक्काय फट्टफडस्स संघट्टेज्जा सरियं च पडिलेहणाए संतियं कारणंति, जस्सेरिसं जयणं एरिसं सोवओगं बहुं काहिसि संजमं ण संदेहं जस्सेरिसमाउत्तत्तणं तुज्झंति, एत्थं च तएऽहं विणिवारिओ जहा णं मूगो ठाहि, ण अम्हाणं साहूहिं समं किंचि भणेयव्वं कप्पे, ता किमेयं तं विसुमरियं?, ता भद्दमुह! एएणं समं संजमत्थाणंतराणं एगमवि णो पररिक्खियं, ता किमेस साहू भन्नेज्जा जस्सेरिसं पमत्तत्तणं?, ण एस साहू जस्सेरिसं णिद्दम्मं संपल(व)त्तं, भद्दमुह! पेच्छ २ सुणो इव णित्तिसो छक्कायनिमद्दणो कहाभिरमे एसो?, अहवा वरं सूणो जस्स सुसुहुममवि नियमवयभंगं णो भवेज्जा, एसो उ नियमभंगं करेमाणो केणं उवमेज्जा?, ता वच्छ सुमइ भद्दमुह! ण एरिसकत्तव्वायरणाओ भवंति साहू, एतेहिं च कत्तव्वेहिं तित्थयरवयणं सरेमाणो को एतेसिं वंदणगमवि करेज्जा?, अन्नंच-एएसिं संसग्गेणं कयाई अम्हाणंपि चरणकरणेसु सिढिलत्तं भवेज्जा, जे णं पुणो २ आहिंडेमो घोरं भवपरंपरं, तओ भणियं सुमइणा, जहा जइ एए कुसीले जइ वा सुसीले तहावि मए एएहिं समं पव्वज्जा कायव्वा, जं पुण तुमं करे(हे)सि तमेव धम्मं, णवरं को अज्ज तं समायरिउं सक्को?, ता मुयसु करं, मए एतेहिं समं गंतव्वं जाव णं णो दूरं वयंति ते साहुणोत्ति, तओ भणियं णाइलेणं-भद्दमुह! सुमइ णो कट्ठाणं एतेहिं समं गच्छमाणस्स तुब्भंति, अहयं च तुब्भं हियवयणं भणामि, एवं ठिए जं चेव बहुगुणं तमेवाणुसेवय, णाहं तए दुक्खेण धरेमि, अह अन्नया अणेगोवाएहिंपि निवारिज्जंतो ण ठिओ गओ सो मंदभग्गो सुमती गोयमा! पव्वइओ य, अह अन्नया वच्चंतेणं मासपंचगेणं आगओ महारोरवो दुवालससंवच्छरिओ दुब्भिक्खो, तओ ते साहुणो तक्कालदोसेणं अणालोइयपडिक्कंता मरिऊणोववन्ना भूयजक्खरक्खसपिसायादीणं वाणमंतरदेवाणं वाहणत्ताए, तओ चविऊणं मिच्छजातीए कुणिमाहारकूरज्झवसायदोसओ सत्तमाए, तओ उव्वट्टिऊणं तइयाए चउवीसिगाए सम्मत्तं पावेहिंति, तओ य सम्मत्तलंभवाओ तइयभवे चउरो सिज्झिहिंति, एगो ण सिज्झिहिइ जो सो पंचमगो सव्वजेट्ठो, जओ णं सो एगंतमिच्छद्दिट्ठी अभव्वो य, से भयवं! जे णं से सुमती से भव्वे उयाहु अभव्वे?, गोयमा! भव्वे, से भयवं! जइ णं भव्वे ता णं मए समाणे कहिं समुप्पन्ने?, गोयमा! परमाहम्मियासुरेसुं।४।से भयवं! किं भंते परमाहम्मियासुरेसु समुप्पज्जइ?, गोयमा! जे केई घणरागदोसमोहमिच्छत्तोदएणं सुववसि(कहि)यंपि परमहिओवएसं अवमन्नेत्ताणं दुवालसंगं च सुयनाणमप्पमाणीकरि य अयाणित्ताण य समयसब्भावं अणायारं पसंसियाणं तमेव उच्छप्पेजा जहा सुमइणा उच्छप्पियं ‘न भवंति एए कुसीले साहुणो, अहा णं एएऽवि कुसीले तो एत्थं जगे न कोई सुसीलो. अत्थि निच्छियं मए एतेहिं

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [५] + गाथा ||१४||

दीप अनुक्रम [६७८]

समं पव्वज्जा कायव्वा, तहा जारिसो तं निबुद्धीओ तारिसो सोऽवि तित्थयरो'त्ति एवं उच्चारेमाणेणं, से णं गोयमा! महंतंपि तवमणुट्ठेमाणे परमाहम्मियासुरेसुं उववज्जेज्जा, से भयवं! परमाहम्मियासुरदेवा णं उव्वट्टे समाणे कहिं उववज्जे?, भगवं! परमाहम्मियसुरदेवाणं उव्वट्टे समाणे से सुमती कहिं उववज्जेज्जा?, गोयमा! तेणं मंदभागेणं अणायारपसंसुच्छप्पणं करेमाणेणं सम्मग्गपणासणं अभिणंदियं, तक्कम्मदोसेणं अणंतसंसारियत्तणमज्जियं, तो केत्तिए उववाए तस्स साहेज्जा? जस्स णं अणेगपोग्गलपरियट्टेसुवि णत्थि चउगइसंसाराओ अवसाणंति तहावि संखेवओ सुणसु, गोयमा! इणमेव जंबूदीवदीवं परिक्खिविऊणं ठिए जे एस लवणजलही एयस्स णं जंठामं सिंधूमहानदी पविट्ठा तप्पएसाओ दाहिणेणं दिसाभाएणं पणपन्नाए जोयणेसुं वेइयाए मज्झंतरं अत्थि पडिसंतावदायगं नाम अद्धतेरसजोयणपमाणं हत्थिकुंभायारं थलं, तस्स य लवणजलोदएणं अद्धट्ठजोयणाणि उस्सेहो, तहिं च णं अच्चंतघोरतिमिसंधयाराउ घडियालगसंठाणाउ सीयालीसं गुहाओ, तासुं च णं जुगं जुगं अंतरंतरे जलयारिणो मणुया परिवसंति, ते य वज्जरिसहनारायणसंघयणे महाबलपरक्कमे अद्धतेरसरयणीपमाणेणं संवेज्जवासाऊ महुमज्जमंसप्पिए सहावओ इत्थीलोले परमदुवन्नसुउमालअणिट्ठखररुसि(क्खि)यतणू मायंगवइकयमुहे सीहघोरदिट्ठी कयंतभीसणे अदावियपट्ठी असणिव्व निट्ठुरपहारी दप्पुद्धरे य भवंति, तेसिंति जाओ अंतरंडगगोलियाओ ताओ गहाय चमरीणं संतिएहिं सेयपुच्छवालेहिं गुंथिऊणं जे केई उभयकन्नेसु निबंधिऊण महग्घुत्तमजच्चरयणत्थी सागरमणुपविसेज्जा से णं जलहत्थिमहिसगाहगमयरमहामच्छतंतुसुंसुमारपभितीहिं दुट्ठसावतेहिं अभेसिए चेव सव्वंपि सागरजलं आहिंडिऊण जहिच्छाए जच्चरयणसंगहं करिय अहयसरीरे आगच्छे, ताणं च अंतरंडगोलियाण संबंधेण ते वराए गोयमा! अणोवमं सुघोरं दारुणं दुक्खं पुव्वज्जियरोद्दकम्मवसगा अणुभवंति, से भयवं! केणं अट्ठेणं!?, गोयमा! तेसिं जीवमाणाणं को समज्जे तओ गोलियाओ गहेउं जे?, जया उण ते घेप्पंति तया बहुविहाइं नियंतणाइं महया साहसेणं सन्नद्धबद्धकरवालकुंतचक्काइपहरणाडोवेहिं बहुसूरधीरपुरिसेहिं बुद्धिपुव्वगेणं सज्जीवियडोलाए घेप्पंति, तेसिं च घिप्पमाणाणं जाइं सारीरमाणसाइं दुक्खाइं भवंति ताइं सव्वेसु नारयदुक्खेसु जइ परं उवमेज्जा, से भयवं! को उण ताओ अंतरंडगोलियाउ गेण्हिज्जा?, गोयमा! तत्थेव लवणसमुद्दे अत्थि रयणदीवं नाम अंतरदीवं, तस्सेव पडिसंतावदायगाओ थलाओ एगतीसाए जोयणसएहिं तंनिवासिणो मणुया, भयवं! कयरेणं पओगेणं?, खेत्तसभावसिद्धेण पुव्वपुरिससिद्धेणं च विहाणेणं, से भयवं! कयरे उण से पुव्वपुरिससिद्धे विही तेसिंति?, गोयमा! तहियं रयणदीवे अत्थि वीसएगूणवीसअट्ठारसदसट्ठसत्तधणूपमाणाइं घरट्ठसंठाणाइं वरिट्ठवइरसिलासंपुडाइं, ताइं च विघाडेऊणं ते रयणदीवनिवासिणो मणुया पुव्वसिद्धखेत्तसहावसिद्धेणं चेव जोगेणं पभूय मच्छिया महूओ अज्झंतरेउं अच्चंतलेवाडाइं काऊणं तओ तेसिं पक्कमंसखंडाणि बहूणि जच्चमहुमज्जभंडगाणि पक्खिवंति, तओ एयाइं करिय सुरुंददीहमहद्दुमकट्ठेहिं आरुभेत्ताणं सुसाउपोराणमज्जमजिगामच्छियामहुयपडिपुन्ने बहुए लाउगे गहाय पडिसंतावदायगथलमागच्छंति, जाव णं तत्थागए समाणे ते गुहावासिणो मणुया पेच्छंति ताव णं तेसिं रणयदीवगणिवासिमणुयाणं वहाय पडिधावंति, तओ ते तेसिं महुपडिपुन्नं लाउगं पयच्छिऊणं अब्भत्थपओगेणं तं कट्ठजाणं जइणयरवेगं दुवं खेविऊणं रयणदीवाभिमुहे वच्चंति, इयरे य णं तं महुमांसादीयं, पुणो सुदुदुयरं तेसिं पिट्ठीए (विक्खिरमाणा) धावंति, ताहे गोयमा! जाव ण अच्चासन्ने भवंति ताव णं सुसाउमहुगंधदव्वसक्कारिय पोराणमज्जलाउगमेगं पमुत्तूण पुणोवि जइणयरवेगेणं रयणदीवहुत्तो वच्चंति, इयरे य तं सुसाउमहुगंधदव्वसक्करियं पोराणमज्जमांसाइयं, पुणो सुदक्खयरे तेसिं पट्ठीए धावंति, पुणोवि तेसिं महुपडिपुन्नलाउगमेगं मुंचंति, एवं ते गोयमा! महुमज्जलोलिए संपलग्गे तावाणयंति जाव णं ते घरट्ठसंठाणे वइरसिलासंपुडे, ता जाव णं तावइयं भूभागं संपरायंति ताव णं जमेवासन्नं वइरसिलासंपुडं जंभायमाणपुरिसमुहागारं विहाडियं चिट्ठइ तत्थेव जाइं महुमज्जपडिपुन्नाइं समुद्धरियाइं सेसलाउगाइं ताइं तेसिं पिच्छमाणाणं ते तत्थ मोत्तूणं नियनियनिलएसु वच्चंति, इयरे य महुमज्जलोलिए जाव णं तत्थ पविसंति ताव णं गोयमा! जे ते पुव्वमुक्के पक्कमंसखंडे जे य ते महुमज्जपडिपुन्ने भंडगे जं च महूए चेवालित्तं सव्वं तं सिलासंपुडं पेक्खंति ताव णं तेसिं महंतं परिओसं महई तुट्ठी महंतं पमोदं भवइ, एवं तेसिं महुमज्जपक्कमंसं परिभुंजेमाणाणं जाव णं गच्छंति सत्तट्ठ दसपंचेव वा दिणाणि ताव णं ते रयणदीवनिवासी मणुया एगे सन्नद्धसाउहकरग्गा तं वइरसिलं वेढिऊणं सत्तट्ठपंतीहिं णं ठंति, अन्ने तं घरट्ठसिलासंपुडमायलित्ताणं एगट्ठं मेलंति, तंमि अ मेलिज्जमाणे गोयमा! जइ णं कहिंचि तुडितिभागओ तेसिं एक्कस्स दोण्हंपि वा णिप्फेडं भवेज्जा तओ तेसिं रयणदीवनिवासिमणुयाणं सविडविपासायमंदिरस्स उप्पायणं, तक्खणा चेव तेसिं हत्था तंघारकालं भवेज्जा, एवं तु गोयमा! तेसिं तेणं वज्जसिलाघरट्ठसंपुडेणं गिलियाणंपि तहियं चेव जाव णं सव्वट्ठिए दलिऊणं ण संपीसिए सुकुमालिया य (ण) ताव णं तेसिं णो पाणाइक्कमं भवेज्जा, ते य अट्ठी वइरमिव दुद्धले, तेसिं तु तत्थ य वइरसिलासंपुडं कण्हगगोणगेहिं आउत्तमादरेणं अरहट्टघरट्टखरसण्हिगचक्कमिव परिमंडलं भमालियं ताव णं खंडंति जाव णं संवच्छरं, ताहे तं तारिसं अच्चंतघोरदारुणं सारीरमाणसं महादुक्खसन्निवायं समणुभवमाणाणं पाणाइक्कमं भवइ तहावि ते तेसिं अट्ठीउ णो फुडंति, नो दोफले भवंति, णो संदलिज्जंति, णो पघरिसंति, नवरं जाइं काइवि संधिसंधाणबंधणाइं ताइं सव्वाइं (२८४)

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विच्छुडेत्ताणवि जज्जरीभवंति, तओ णं इयरुवलघरट्टस्सेव परिसवियं चुण्णमिव किंचि अंगुलाइयं अट्ठिखंडं दट्ठूणं ते रयणदीवगे परिओसमुव्वहंतो सिलासंपुडाइं उच्चियाडिऊणं ताओ अंतरंडगोलियाओ गहाय जे तत्थ तुच्छहुणे ते अणेगरित्थसंघाएणं विक्किणंति, एतेणं विहाणेणं गोयमा! ते रयणदीवनिवासिणो मणुया ताओ अंतरंडगोलियाओ गेण्हंति, से भयवं! कहं ते वराए तं तारिसं अचंतघोरदारुणसुदुस्सहं दुक्खनियरं विसहमाणे निराहारपाणगे संवच्छरं जाव पाणे विधारयंति?, गोयमा! सकयकम्माणुभावाओ, सेसं तु पण्हवागरणवुद्धविवरणादवसेयं।५। से भयवं! तओऽवी स मए समाणे से सुमती जीवे कहिं उववायं लभेज्जा?, गोयमा! तत्थेव पडिसंतावदायगथले, तेणेव कमेणं सत्त भवंतरे, तओवि दुट्ठसाणे तओवि कण्हे तओवि वाणमंतरे, तओवि लिंबत्ताए वणस्सईए, तओवि मणुएसुं इत्थित्ताए, तओवि छट्ठीए, तओवि मणुयत्ताए कुट्ठी, तओवि वाणमंतरे, तओवि महाकाए जूहाहिवती गए, तओवि मरिऊणं मेहुणासत्ते अणंतवणप्फतीए, तओवि अणंतकालाओ मणुएसु संजाए, तओवि मणुए महानेमित्ती, तओवि सत्तमाए, तओवि महामच्छे चरिमोयहिंमि, तओ सत्तमाए, तओवि गोणे, तओवि मणुए, तओवि विडवकोइलियं, तओवि जलोयं, तओवि महामच्छे, तओवि तंदुलमच्छे, तओवि सत्तमाए, तओवि रासहे, तओवि साणे, तओवि किमी, तओवि दद्दुरे, तओवि तेउकाए, तओवि कुंथू, तओवि महुयरे, तओवि चडए, तओवि उद्देहियं, तओवि वणप्फईए, तओवि अणंतकालाओ मणुएसु इत्थीरयणं, तओ छट्ठीए, तओ कणेरू, तओ वेसामंडियं नाम पट्टणं तत्थोवज्झायगेहासन्ने लिंब(पत्त)त्तेण वणस्सईं, तओवि मणुएसुं खुज्जित्थी, तओवि मणुयत्ताए पंडगे, तओवि मणुयत्तेणं दुग्गए, तओवि दमए, तओवि पुढवादीसुं भवकायट्ठिईए पत्तेयं, तओ मणुए, तओ बालतवस्सी, तओ वाणमंतरे, तओवि पुरोहिए, तओवि सत्तमीए, तओ मच्छे, तओ सत्तमाए, तओवि गोणे, तओवि मणुए महासम्मद्दिट्ठी अविरए चक्कहरे, तओ पढमाए, तओवि इब्भे, तओवि समणे अणगारे, तओवि अणुत्तरसुरे, तओवि चक्कहरे महासंघयणे भवित्ताणं निव्विन्नकामभोगे जहोवइट्ठं संपुन्नं संजमं काऊण गोयमा! से णं सुमइजीवे पडिनिवुडेज्जा।६। तहा य जे भिक्खू वा भिक्खुणी वा परपासंडीणं पसंसं करेज्जा जे यावि णं णिण्हगाणं पसंसं करेज्जा जे णं निण्हगाणं अणुकूलं भासेज्जा जे णं निण्हगाणं आययणं पवेसेज्जा जे णं निण्हगाणं गंथसत्थपयक्खरं वा परूवेज्जा जे णं निण्हगाणं संतिए कायकिलेसाइए तवेइ वा संजमेइ वा नाणेइ वा विन्नाणेइ वा सुएइ वा पंडिच्चेइ वा अभिमुहमुद्धपरिसामज्झगए सलाहेज्जा सेऽवियं णं परमाहम्मिएसु उववज्जेज्जा जहा सुमती।७। से भयवं! तेणं सुमइजीवेणं तक्कालं समणत्तणं अणुपालियं तहावि एवंविहेहिं नारयतिरियनरामरविचित्तोवाएहिं एवइयं संसाराहिंडणं?, गोयमा! णं जं आगमबाहाए लिंगग्गहणं कीरइ तं डंभमेव केवलं सुदीहसंसारहेउभूयं, णो णं तं परियायं लिक्खइ, तेणेव संजमं दुक्करं मन्ने, अन्नंच-समणत्ताए से य पढमे संजमपए जं कुसीलसंसग्गीणिरिहरणं, अहा णं णो णिरिहरे ता संजममेव ण ठाएज्जा, ता तेणं सुमइणा तमेवायरियं तमेव पसंसियं तमेव उस्सप्पियं तमेव सलाहियं तमेवाणुट्ठियंति, एयं च सुत्तमइक्कमित्ताणं एत्थं पए जहा सुमती तहा अन्नेसिमवि सुंदरविउरदंसणसेट्ठरणीलमहसभोमेयखग्गधारितेणगसमणदुद्दंतदेवरक्खियमुणिणामादीणं को संखाणं करेज्जा?, ता एयमट्ठं विइत्ताणं कुसीलसंभोगे सव्वहा वज्जणीए।८। से भयवं! किं ते साहुणो तस्स णं णाइलसड्ढगस्स छंदेणं कुसीले उयाहु आगमजुत्तीए?, गोयमा! कहं सड्ढगस्स वरायस्सेरिसो सामत्थो? जेणं तु सच्छंदत्ताए महाणुभावाण सुसाहूणं अवन्नवायं भासे, तेणं सड्ढगेणं हरिवंसतिलयमरगयच्छविणो बावीसइमधम्मतित्थयरअरिट्ठनेमिनामस्स सयासे वंदणवत्तियाए गएणं आयारंगं अणंतगमपज्जवेहिं पन्नविज्जमाणं समवधारियं, तत्थ य छत्तीसं आयारे पन्नविज्जंति, तेसिं च णं जे केइ साहू वा साहुणी वा अन्नयरमायारमइक्कमेज्जा से णं गारत्थीहिं उवमेयं, अहऽन्नहा समणुट्ठे वाऽऽयरेज्जा वा पण्णविज्जा वा तओ णं अणंतसंसारी भवेज्जा, ता गोयमा! जे णं तु मुहुणंतगं अहिगं परिग्गहियं तस्स ताव पंचमहव्वयस्स भंगो, जे णं तु इत्थीए अंगोवंगाइं णिज्झाइऊण णालोइयं तेणं तु बंभचेरगुत्ती विराहिया, तविराहणेणं जहा एगदेसदड्ढो पडो दड्ढो भन्नइ तथा चउत्थमहव्वयं भग्गं, जेण य सहत्थेणुप्पाइऊणादिन्ना भूई पडिसाहिया तेणं तु तइयमहव्वयं भग्गं, जेण य अणुग्गओ सूरिओ उग्गओ भणिओ तस्स य बीयवयं भग्गं, जेण उण अफासुगोदगेण अच्छीणि पहोयाणि तहा अविहीए पहयंडिहाणं संकमणं कयं बीयकायं च अक्कंतं वासाकप्पस्स अंचलगेणं हरियं संघट्टियं विज्जूए फुसिओ मुहुणंतगेणं अजयणाए फडफडस्स वाउकायमुदीरियं तेणं तु पढमवयं भग्गं, तब्भंगे पंचण्हंपि महव्वयाणं भंगो कओ, ता गोयमा! आगमजुत्तीए एते कुसीला साहुणो, जओ णं उत्तरगुणाणंपि भंगं ण इट्ठं, किं पुण जं मूलगुणाणं, से भयवं! ता एयणाएणं वियारिऊणं महव्वए घेत्तव्वे?, गोयमा! इमे अट्ठे समट्ठे, से भयवं! केणं अट्ठेणं?, गोयमा! सुसमणाइ वा सुसावएइ वा, ण तइयं भेयंतरं, अहवा जहोवइट्ठं सुसमणत्तमणुपालिया अहा णं जहोवइट्ठं सुसावगत्तमणुपालिया, णो समणो समणत्तमइयरेज्जा नो सावए सावयत्तमइयरेज्जा, निरइयारं वयं पसंसे, तमेव य समणुट्ठे, णवरं जे समणधम्मे से णं अचंतघोरदुच्चरे तेणं असेसकम्मक्खयं, जहन्नेणंपि अट्ठभवब्भंतरे मोक्खो, इयरेणं तु सुद्धेणं देवगइं सुमाणुसत्तं वा सायपरंपरेणं मोक्खो, नवरं पुणोवि तं संजमाओ, ता जे से समणधम्मे से अवियारे सुवियारे पण(पुण्ण)वियारे तहत्तिमणुपालिया, उवासगाणं पुण सहस्साणि विधाणे जो जं परिवाले तस्साइयारं व ण भवे तमेव गिण्हे।९। से भयवं! सो उण णाइलसड्ढगो कहिं समुप्पन्नो?, गोयमा! सिद्धीए, से भयवं कहं?, गोयमा! तेणं महाणुभागेणं तेसिं कुसीलाणं णिउट्टेऊणं नीए चेव बहुसावयतरुसंडसंकुलाए घोरकंतारडईए सव्वपावकलिमलकलंकविप्पमुक्कं तित्थयरवयणं परमहियं सुदुल्लहं भवसएसुंपित्ति कलिऊणं अचंतविसुद्धासएणं फासुयदेसंमि निप्पडिकम्मं निरइयारं पडिवन्नं पायवोवगमणमणसणंति, अह अन्नया तेणेव पएसेणं विहरमाणो समागओ तित्थयरो अरिट्ठनेमी तस्स अ अणुग्गहट्ठा एतेंतेणेव अचलियसत्तो भव्वसत्तोत्तिकाऊणं, उत्तिमट्ठपसाहणी कया साइसया देसणा, तमायन्नमाणो सजलजलहरनिनायदेवदुंदुहीनिग्घोसं तित्थयरभारइं सुहज्झवसायपरो आरूढो खवगसेढीए अउव्वकरणेणं, अंतगडकेवली जाओ, एतेणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा णं गोयमा! सिद्धीए, ता गोयम! कुसीलसंसग्गीए विप्पहियाए एवइयं अंतरं भवइत्ति।१०। महानिसीहस्स चउत्थमज्झयणं ४॥ अत्र चतुर्थाध्ययने बहवः सेद्धांतिकाः केचिदालापकान्न सम्यक् श्रद्दधत्येव, तैरश्रद्दधानैरस्माकमपि न सम्यक् श्रद्दधानं इत्याह हरिभद्रसूरिः, न पुनः सर्वमेवेदं चतुर्थाध्ययनं, अन्यानि

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [१] + गाथा ||१|| दीप अनुक्रम [६८४]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

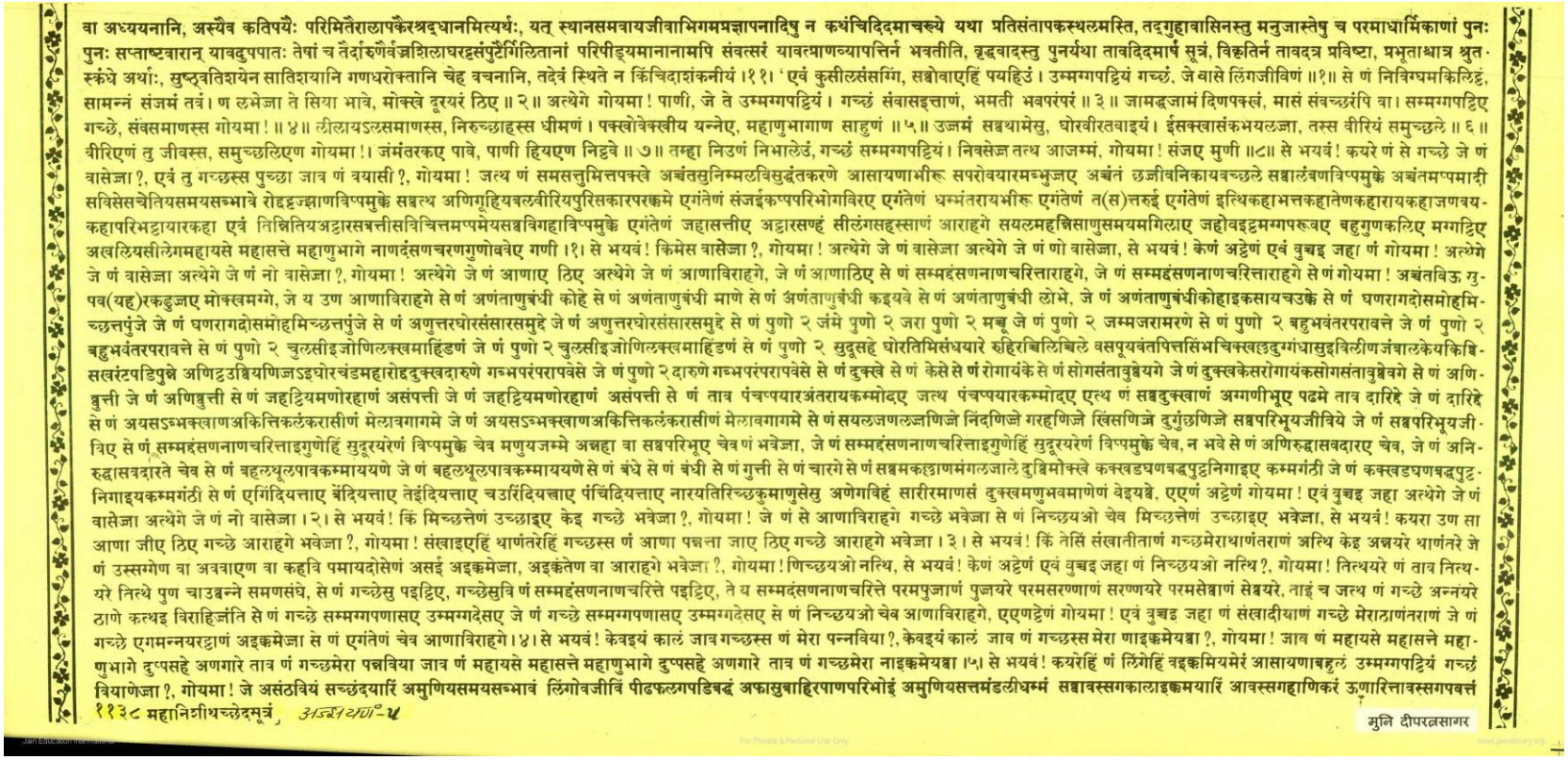

वा अध्ययनानि, अस्यैव कतिपयैः परिमितैरालापकैरश्रद्धानमित्यर्थः, यत् स्थानसमवायजीवाभिगमप्रज्ञापनादिषु न कथंचिदिदमाचरूये यथा प्रतिसंतापकस्थलमस्ति, तद्गुहावासिनस्तु मनुजास्तेषु च परमाधार्मिकाणां पुनः पुनः सप्ताष्टवारान् यावदुपपातः तेषां च तैर्दारुणैर्वज्रशिलाघरट्टसंपुटैर्गिलितानां परिपीड्यमानानामपि संवत्सरं यावत्प्राणव्यापत्तिर्न भवतीति, वृद्धवादस्तु पुनर्यथा तावदिदमार्ष सूत्रं, विकृतिर्न तावदत्र प्रविष्टा, प्रभूताश्चात्र श्रुतस्कंधे अर्थाः, सुष्ठ्वतिशयेन सातिशयानि गणधरोक्तानि चेह वचनानि, तदेवं स्थिते न किंचिदाशंकनीयं ।११। ‘एवं कुसीलसंसग्गि, सव्वोवाएहिं पयहिउं। उम्मग्गपट्ठियं गच्छं, जे वासे लिंगजीविणं ॥१॥ से णं निविग्घमकिलिट्ठं, सामन्नं संजमं तवं। ण लभेज्जा ते सिया भावे, मोक्खे दूरयरं ठिए ॥ २॥ अत्थेगे गोयमा! पाणी, जे ते उम्मग्गपट्ठियं। गच्छं संवासइत्ताणं, भमती भवपरंपरं ॥ ३॥ जामद्धजामं दिणपक्खं, मासं संवच्छरंपि वा। सम्मग्गपट्ठिए गच्छे, संवसमाणस्स गोयमा! ॥ ४॥ लीलायऽल्लसमाणस्स, निरुच्छाहस्स धीमणं। पक्खोवेक्खीय यन्नेए, महाणुभागाण साहुणं ॥५॥ उज्जमं सव्वथामेसु, घोरवीरतवाइयं। ईसक्खासंकभयलज्जा, तस्स वीरियं समुच्छले ॥ ६॥ वीरिएणं तु जीवस्स, समुच्छलिएण गोयमा!। जंमंतरकए पावे, पाणी हियएण निट्ठवे ॥ ७॥ तम्हा निउणं निभालेउं, गच्छं सम्मग्गपट्ठियं। निवसेज्ज तत्थ आजम्मं, गोयमा! संजए मुणी ॥८॥ से भयवं! कयरे णं से गच्छे जे णं वासेज्जा?, एवं तु गच्छस्स पुच्छा जाव णं वयासी?, गोयमा! जत्थ णं समसत्तुमित्तपक्खे अचंतसुनिम्मलविसुद्धंतकरणे आसायणाभीरू सपरोवयारमब्भुज्जए अचंतं छज्जीवनिकायवच्छले सव्वालंवणविप्पमुक्के अचंतमप्पमादी सविसेसचेतियसमयसब्भावे रोद्दट्टज्झाणविप्पमुक्के सव्वत्थ अणिगूहियबलवीरियपुरिसकारपरक्कमे एगंतेणं संजईकप्पपरिभोगविरए एगंतेणं धम्मंतरायभीरू एगंतेणं त(स)त्तरुई एगंतेणं इत्थिकहाभत्तकहातेणकहारायकहाजणवयकहापरिभट्ठायारकहा एवं निन्नितियअट्ठारसवत्तीसविचित्तमप्पमेयसव्वविगहाविप्पमुक्के एगंतेणं जहासत्तीए अट्ठारसण्हं सीलंगसहस्साणं आराहगे सयलमहन्निसाणुसमयमगिलाए जहोवइट्ठमग्गपरूवए बहुगुणकलिए मग्गट्ठिए अखलियसीलेगमहायसे महासत्ते महाणुभागे नाणदंसणचरणगुणोववेए गणी ।१। से भयवं! किमेस वासेज्जा?, गोयमा! अत्थेगे जे णं वासेज्जा अत्थेगे जे णं णो वासेज्जा, से भयवं! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा णं गोयमा! अत्थेगे जे णं वासेज्जा अत्थेगे जे णं नो वासेज्जा?, गोयमा! अत्थेगे जे णं आणाए ठिए अत्थेगे जे णं आणाविराहगे, जे णं आणाठिए से णं सम्मदंसणनाणचरित्ताराहगे, जे णं सम्मदंसणनाणचरित्ताराहगे से णं गोयमा! अचंतविऊ सुपव(यह)रकडुज्जए मोक्खमग्गे, जे य उण आणाविराहगे से णं अणंताणुबंधी कोहे से णं अणंताणुबंधी माणे से णं अणंताणुबंधी कइयवे से णं अणंताणुबंधी लोभे, जे णं अणंताणुबंधीकोहाइकसायचउक्के से णं घणरागदोसमोहमिच्छत्तपुंजे जे णं घणरागदोसमोहमिच्छत्तपुंजे से णं अणुत्तरघोरसंसारसमुद्दे जे णं अणुत्तरघोरसंसारसमुद्दे से णं पुणो २ जंमे पुणो २ जरा पुणो २ मच्चू जे णं पुणो २ जम्मजरामरणे से णं पुणो २ बहुभवंतरपरावत्ते जे णं पुणो २ बहुभवंतरपरावत्ते से णं पुणो २ चुल्लसीइजोणिलक्खमाहिंडणं जे णं पुणो २ चुल्लसीइजोणिलक्खमाहिंडणं से णं पुणो २ सुदुसहे घोरतिमिसंधयारे रुहिरचिलिचिले वसपूयवंतपित्तसिंभचिक्खल्लदुग्गंधासुइविलीणजंबालकेयकिविसखरंटपडिपुण्णे अणिट्ठउव्वियणिज्जइघोरचंडमहारोद्ददुक्खदारुणे गब्भपरंपरापवेसे जे णं पुणो २ दारुणे गब्भपरंपरापवेसे से णं दुक्खे से णं केसे से णं रोगायंके से णं सोगसंतावुव्वेयगे जे णं दुक्खकेसरोगायंकसोगसंतावुव्वेवगे से णं अणिबुत्ती जे णं अणिबुत्ती से णं जहट्ठियमणोरहाणं असंपत्ती जे णं जहट्ठियमणोरहाणं असंपत्ती से णं ताव पंचप्पयारअंतरायकम्मोदए जत्थ णं पंचप्पयारकम्मोदए एत्थ णं सव्वदुक्खाणं अग्गणीभूए पढमे ताव दारिद्दे जे णं दारिद्दे से णं अयसऽब्भक्खाणअकित्तिकलंकरासीणं मेलावगागमे जे णं अयसऽब्भक्खाणअकित्तिकलंकरासीणं मेलावगागमे से णं सयलजणलज्जणिज्जे निंदणिज्जे गरहणिज्जे खिंसणिज्जे दुगुंछणिज्जे सव्वपरिभूयजीविये जे णं सव्वपरिभूयजीविए से णं सम्मदंसणनाणचरित्ताइगुणेहिं सुदूरयरेणं विप्पमुक्के चेव मणुयजम्मे अन्नहा वा सव्वपरिभूए चेव णं भवेज्जा, जे णं सम्मदंसणनाणचरित्ताइगुणेहिं सुदूरयरेणं विप्पमुक्के चेव, न भवे से णं अणिरुद्धासवदारए चेव, जे णं अनिरुद्धासवदारते चेव से णं बहलथूलपावकम्मायायणे जे णं बहलथूलपावकम्मायायणे से णं बंधे से णं बंधी से णं गुत्ती से णं चारगे से णं सव्वमकल्लाणमंगलजाले दुब्भिमोक्खे कक्खडघणबद्धपुट्ठनिगाइए कम्मगंठी जे णं कक्खडघणबद्धपुट्ठनिगाइयकम्मगंठी से णं एगिंदियत्ताए बेंदियत्ताए तेइंदियत्ताए चउरिंदियत्ताए पंचिंदियत्ताए नारयतिरिच्छकुमाणुसेसु अणेगविहं सारीरमाणसं दुक्खमणुभवमाणेणं वेइयवे, एएणं अट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जहा अत्थेगे जे णं वासेज्जा अत्थेगे जे णं नो वासेज्जा ।२। से भयवं! किं मिच्छत्तेणं उच्छाइए केइ गच्छे भवेज्जा?, गोयमा! जे णं से आणाविराहगे गच्छे भवेज्जा से णं निच्छयओ चेव मिच्छत्तेणं उच्छाइए भवेज्जा, से भयवं! कयरा उण सा आणा जीए ठिए गच्छे आराहगे भवेज्जा?, गोयमा! संखाइएहिं थाणंतरेहिं गच्छस्स णं आणा पन्नत्ता जाए ठिए गच्छे आराहगे भवेज्जा ।३। से भयवं! किं तेसिं संखातीताणं गच्छमेराथाणंतराणं अत्थि केइ अन्नयरे थाणंतरे जे णं उस्सग्गेण वा अववाएण वा कहवि पमायदोसेणं असई अइक्कमेज्जा, अइक्कंतेण वा आराहगे भवेज्जा?, गोयमा! णिच्छयओ नत्थि, से भयवं! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा णं निच्छयओ नत्थि?, गोयमा! तित्थयरे णं ताव तित्थयरे तित्थे पुण चाउव्वन्ने समणसंघे, से णं गच्छेसु पइट्ठिए, गच्छेसुवि णं सम्मदंसणनाणचरित्ते पइट्ठिए, ते य सम्मदंसणनाणचरित्ते परमपुज्जाणं पुज्जयरे परमसरण्णाणं सरण्णयरे परमसेव्वाणं सेव्वयरे, ताइं च जत्थ णं गच्छे अन्नयरे ठाणे कत्थइ विराहिज्जंति से णं गच्छे सम्मग्गपणासए उम्मग्गदेसए जे णं गच्छे सम्मग्गपणासए उम्मग्गदेसए से णं निच्छयओ चेव आणाविराहगे, एएणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जहा णं संखादीयाणं गच्छे मेराठाणंतराणं जे णं गच्छे एगमन्नयरट्ठाणं अइक्कमेज्जा से णं एगंतेणं चेव आणाविराहगे ।४। से भयवं! केवइयं कालं जाव गच्छस्स णं मेरा पन्नविया?, केवइयं कालं जाव णं गच्छस्स मेरा णाइक्कमेयव्वा?, गोयमा! जाव णं महायसे महासत्ते महाणुभागे दुप्पसहे अणगारे ताव णं गच्छमेरा पन्नविया जाव णं महायसे महासत्ते महाणुभागे दुप्पसहे अणगारे ताव णं गच्छमेरा नाइक्कमेयव्वा ।५। से भयवं! कयरेहिं णं लिंगेहिं वइक्कमियमेरं आसायणाबहुलं उम्मग्गपट्ठियं गच्छं वियाणेज्जा?, गोयमा! जे असंठवियं सच्छंदयारिं अमुणियसमयसब्भावं लिंगोवजीविं पीढफलगपडिबद्धं अफासुवाहिरपाणपरिभोइं अमुणियसत्तमंडलीधम्मं सव्वावस्सगकालाइक्कमयारिं आवस्सगहाणिकरं ऊणारित्तावस्सगपवत्तं

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्र चतुर्थं अध्ययनं समाप्तं

अत्र पंचमं अध्ययनं- “नवनीत-सारं” आरब्धः

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [७] + गाथा ||९||

दीप अनुक्रम [६९८]

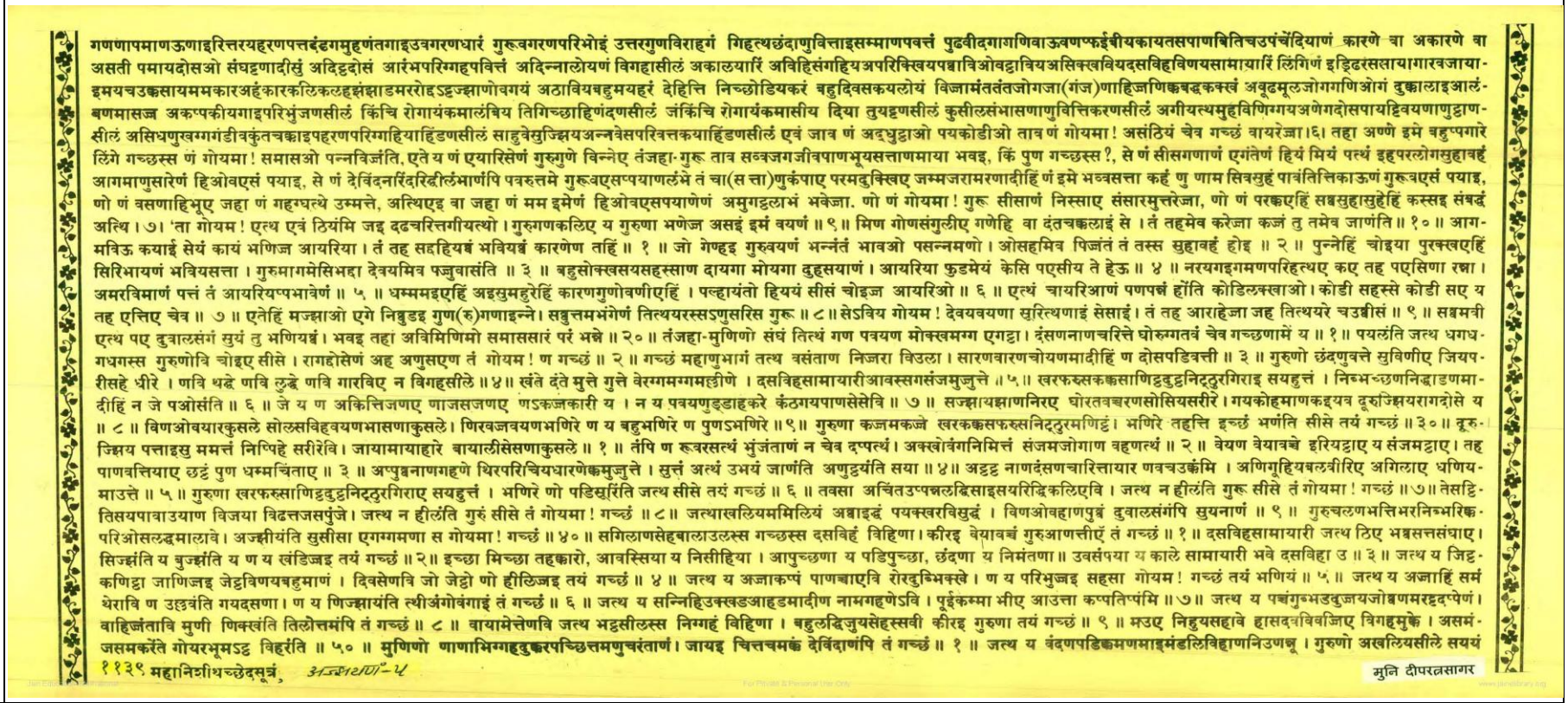

गणणापमाणऊणाइरित्तरयहरणपत्तदंडगमुहणंतगाइउवगरणधारं गुरूवगरणपरिभोइं उत्तरगुणविराहगं गिहत्थछंदाणुवित्ताइसम्माणपवत्तं पुढवीदगागणिवाऊवणप्फईबीयकायतसपाणबितिचउपंचेंदियाणं कारणे वा अकारणे वा असती पमायदोसओ संघट्टणादीसुं अदिट्ठदोसं आरंभपरिग्गहपवित्तं अदिन्नालोयणं विगहासीलं अकालयारिं अविहिसंगहियअपरिक्खियपव्वाविओवट्ठावियअसिक्खवियदसविहविणयसामायारिं लिंगिणं इड्ढिरससायागारवजाया-इमयचउक्कसाययममकारअहंकारकलिकलहझंझाडमररोद्दट्टज्झाणोवगयं अठावियबहुमयहरं देहित्ति निच्छोडियकरं बहुदिवसकयलोयं विज्जामंततंतजोगजा(गंज)णाहिज्जणिक्कद्दकक्खं अवूढमूलजोगगणिओगं दुक्कालाइआल-बणमासज्ज अकप्पकीयगाइपरिभुंजणसीलं किंचि रोगायंकमालंबिय तिगिच्छाहिणंदणसीलं जंकिंचि रोगायंकमासीय दिया तुयट्टणसीलं कुसीलसंभासणाणुवित्तिकरणसीलं अगीयत्थमुहविणिग्गयअणेगदोसपायट्टिवयणाणुट्ठाण-सीलं असिधणुखग्गगंडीवकुंतचक्काइपहरणपरिग्गहियाहिंडणसीलं साहुवेसुज्झियअन्नवेसपरिवत्तकयाहिंडणसीलं एवं जाव णं अद्धुट्ठाओ पयकोडीओ ताव णं गोयमा! असंठियं चेव गच्छं वायरेज्जा।६। तहा अण्णे इमे बहुप्पगारे लिंगे गच्छस्स णं गोयमा! समासओ पन्नविज्जंति, एते य णं एयारिसेणं गुरुगुणे विन्नेए तंजहा-गुरू ताव सव्वजगजीवपाणभूयसत्ताणमाया भवइ, किं पुण गच्छस्स?, से णं सीसगणाणं एगंतेणं हियं मियं पत्थं इहपरलोगसुहावहं आगमाणुसारेणं हिओवएसं पयाइ, से णं देविंदनरिंदरिद्धीलंभाणंपि पवरुत्तमे गुरूवएसप्पयाणलंभे तं चा(स त्ता)णुकंपाए परमदुक्खिए जम्मजरामरणादीहिं णं इमे भव्वसत्ता कहं णु णाम सिवसुहं पावंतित्तिकाऊणं गुरूवएसं पयाइ, णो णं वसणाहिभूए जहा णं गहग्घत्थे उम्मत्ते, अत्थिएइ वा जहा णं मम इमेणं हिओवएसपयाणेणं अमुगट्ठलाभं भवेज्जा. णो णं गोयमा! गुरू सीसाणं निस्साए संसारमुत्तरेज्जा, णो णं परक्कएहिं सव्वसुहासुहेहिं कस्सइ संबद्धं अत्थि।७। ‘ता गोयम! एत्थ एवं ठियंमि जइ दढचरित्तगीयत्थो। गुरुगणकलिए य गुरुणा भणेज्ज असइं इमं वयणं ॥९॥ मिण गोणसंगुलीए गणेहि वा दंतचक्कलाइं से। तं तहमेव करेज्जा कज्जं तु तमेव जाणंति॥१०॥ आग-मविऊ कयाई सेयं कायं भणिज्ज आयरिया। तं तह सद्दहियव्वं भवियव्वं कारणेण तहिं॥ १॥ जो गेण्हइ गुरुवयणं भन्नंतं भावओ पसन्नमणो। ओसहमिव पिज्जंतं तं तस्स सुहावहं होइ॥ २॥ पुन्नेहिं चोइया पुरक्खएहिं सिरिभायणं भवियसत्ता। गुरुमागमेसिभद्दा देवयमिव पज्जुवासंति॥ ३॥ बहुसोक्खसयसहस्साण दायगा मोयगा दुहसयाणं। आयरिया फुडमेयं केसि पएसीय ते हेऊ॥ ४॥ नरयगइगमणपरिहत्थए कए तह पएसिणा रन्ना। अमरविमाणं पत्तं तं आयरियप्पभावेणं॥ ५॥ धम्ममइएहिं अइसुमहुरेहिं कारणगुणोवणीएहिं। पल्हायंतो हिययं सीसं चोइज्ज आयरिओ॥ ६॥ एत्थं चायरिआणं पणपन्नं होंति कोडिलक्खाओ। कोडी सहस्से कोडी सए य तह एत्तिए चेव॥ ७॥ एतेहिं मज्झाओ एगे निव्वुडइ गुण(रु)गणाइन्ने। सव्वुत्तमभंगेणं तित्थयरस्सऽणुसरिस गुरू॥८॥सेऽविय गोयम! देवयवयणा सुरित्थणाइं सेसाइं। तं तह आराहेज्जा जह तित्थयरे चउव्वीसं॥ ९॥ सव्वमवी एत्थ पए दुवालसंगं सुयं तु भणियव्वं। भवइ तहा अविमिणिमो समाससारं परं भन्ने॥२०॥ तंजहा-मुणिणो संघं तित्थं गण पवयण मोक्खमग्ग एगट्ठा। दंसणनाणचरित्ते घोरुग्गतवं चेव गच्छणामें य॥ १॥ पयलंति जत्थ धगध-गधगस्स गुरुणोवि चोइए सीसे। रागद्दोसेणं अह अणुसएण तं गोयम! ण गच्छं॥ २॥ गच्छं महाणुभागं तत्थ वसंताण निज्जरा विउला। सारणवारणचोयणमादीहिं ण दोसपडिवत्ती॥ ३॥ गुरुणो छंदणुवत्ते सुविणीए जियप-रीसहे धीरे। णवि थद्धे णवि लुद्धे णवि गारविए न विगहसीले॥४॥ खंते दंते मुत्ते गुत्ते वेरग्गमग्गमल्लीणे। दसविहसामायारीआवस्सगसंजमुज्जुत्ते॥५॥ खरफरुसकक्कसाणिट्ठदुट्ठनिट्ठुरगिराइ सयहुत्तं। निब्भच्छणनिद्धाडणमा-दीहिं न जे पओसंति॥ ६॥ जे य ण अकित्तिजणए णाजसजणए णऽकज्जकारी य। न य पवयणुड्डाहकरे कंठगयपाणसेसेवि॥ ७॥ सज्झायझाणनिरए घोरतवचरणसोसियसरीरे। गयकोहमाणकद्दयव दूरुज्झियरागदोसे य॥ ८॥ विणओवयारकुसले सोलसविहवयणभासणाकुसले। णिरवज्जवयणभणिरे ण य बहुभणिरे ण पुणऽभणिरे॥९॥ गुरुणा कज्जमकज्जे खरककसफरुसनिट्ठुरमणिट्ठं। भणिरे तहत्ति इच्छं भणंति सीसे तयं गच्छं॥३०॥ दूरु-ज्झिय पत्ताइसु ममत्तं निप्पिहे सरीरेवि। जायामायाहारे बायालीसेसणाकुसले॥ १॥ तंपि ण रूवरसत्थं भुंजंताणं न चेव दप्पत्थं। अक्खोवंगनिमित्तं संजमजोगाण वहणत्थं॥ २॥ वेयण वेयावच्चे इरियट्ठाए य संजमट्ठाए। तह पाणवत्तियाए छट्ठं पुण धम्मचिंताए॥ ३॥ अप्पुव्वनाणगहणे थिरपरिचियधारणेकमुज्जुत्ते। सुत्तं अत्थं उभयं जाणंति अणुट्ठयंति सया॥४॥ अट्ठट्ठ नाणदंसणचरित्तायार णवचउक्कमि। अणिगूहियबलवीरिए अगिलाए धणिय-माउत्ते॥५॥ गुरुणा खरफरुसाणिट्ठदुट्ठनिट्ठुरगिराए सयहुत्तं। भणिरे णो पडिसुरिंति जत्थ सीसे तयं गच्छं॥ ६॥ तवसा अचिंतउप्पन्नलद्धिसाइसयरिद्धिकलिएवि। जत्थ न हीलंति गुरू सीसे तं गोयमा! गच्छं॥७॥तेसट्ठि-तिसयपावाउयाण विजया विद्धत्तजसपुंजे। जत्थ न हीलंति गुरुं सीसे तं गोयमा! गच्छं॥८॥ जत्थाखलियममिलियं अव्वाइद्धं पयक्खरविसुद्धं। विणओवहाणपुव्वं दुवालसंगंपि सुयनाणं॥९॥ गुरुचलणभत्तिभरनिब्भरिक्क-परिओसलद्धमालावे। अज्झीयंति सुसीसा एगग्गमणा स गोयमा! गच्छं॥४०॥ सगिलाणसेहबालाउलस्स गच्छस्स दसविहं विहिणा। कीरइ वेयावच्चं गुरुआणत्तीए तं गच्छं॥ १॥ दसविहसामायारी जत्थ ठिए भव्वसत्तसंघाए। सिज्झंति य बुज्झंति य ण य खंडिज्जइ तयं गच्छं॥२॥ इच्छा मिच्छा तहक्कारो, आवस्सिया य निसीहिया। आपुच्छणा य पडिपुच्छा, छंदणा य निमंतणा॥ उवसंपया य काले सामायारी भवे दसविहा उ॥ ३॥ जत्थ य जिट्ठ-कणिट्ठा जाणिज्जइ जेट्ठविणयबहुमाणं। दिवसेणवि जो जेट्ठो णो हीलिज्जइ तयं गच्छं॥ ४॥ जत्थ य अज्जाकप्पं पाणच्चाएवि रोरदुब्भिक्खे। ण य परिभुज्जइ सहसा गोयम! गच्छं तयं भणियं॥ ५॥ जत्थ य अज्जाहिं समं थेरावि ण उल्लवंति गयदसणा। ण य णिज्झायंति त्थीअंगोवंगाइं तं गच्छं॥ ६॥ जत्थ य सन्निहिउक्खडआहडमादीण नामगहणेऽवि। पूईकम्मा भीए आउत्ता कप्पतिप्पंमि॥७॥ जत्थ य पच्चंगुब्भडदुज्जयजोव्वणमरद्दप्पेणं। वाहिज्जंतावि मुणी णिक्खंति तिलोत्तमंपि तं गच्छं॥ ८॥ वायामेत्तेणवि जत्थ भट्ठसीलस्स निग्गहं विहिणा। बहुलद्धिजुयसेहस्सवी कीरइ गुरुणा तयं गच्छं॥ ९॥ मउए निहुयसहावे हासदवविवज्जिए विगहमुक्के। असमं-जसमकरंते गोयरभूमऽट्ठ विहरंति॥५०॥ मुणिणो णाणाभिग्गहदुक्करपच्छित्तमणुचरंताणं। जायइ चित्तचमक्कं देविंदाणंपि तं गच्छं॥ १॥ जत्थ य वंदणपडिक्कमणमाइमंडलिविहाणनिउणजू। गुरुणो अखलियसीले सययं

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [७] + गाथा ||५२||

दीप अनुक्रम [७४२]

कट्ठुग्गतवनिरए ॥ २ ॥ जत्थ य उ.भादीणं तित्थयराणं सुरिंदमहियाणं । कम्मट्ठविप्पमुक्काण आणं न खलिज्जइ स गच्छो ॥ ३ ॥ तित्थयरे तित्थयरे तित्थं पुण जाण गोयमा! संघं । संघे य ठिए गच्छे गच्छठिए नाणदंसणचरित्ते ॥ ४ ॥ णादंसणस्स नाणं दंसणनाणे भवंति सव्वत्थ । भयणा चारित्तस्स तु दंसणनाणे धुवं अत्थि ॥ ५ ॥ नाणी दंसणरहिओ चरित्तरहिओ य भमइ संसारे । जो पुण चरित्तजुत्तो सो सिज्झइ नत्थि संदेहो ॥ ६ ॥ नाणं पगासयं सोहओ तवो संजमो य गुत्तिकरो । तिण्हंपि समाओगे मोक्खो णेक्कस्सवि अभावे ॥ ७ ॥ तस्सवि य सकंगाई नाणादितिगस्स खंतिमादीणि । तेसिं चेक्केकपयं जत्थाणुट्ठेज्जइ स यच्छो ॥ ८ ॥ पुढविदगागणिवाऊवणप्फई तह तसाण विविहाणं । मरणंतेऽवि ण मणसा कीरइ पीडं तयं गच्छं ॥ ९ ॥ जत्थ य बाहिरपाणस्स बिंदुमेत्तंपि गेम्हमादीसुं । तण्हासोसियपाणे मरणेवि मुणी ण इच्छंति ॥ ६० ॥ जत्थ य सूलविसूइय अन्नयरे वा विचित्तमायंके । उप्पन्ने जलणुज्जालणाइं ण करेंति मुणी तयं गच्छं ॥ १ ॥ जत्थ य तेरसहत्थे अजाओ परिहरंति णाणहरे । मणसा सुयदेवयमिव सव्वमवित्थी परिहरंति ॥ २ ॥ इ(र)तिहासखेड्डकंदप्पणाहवादं ण कीरए जत्थ। धावणडेवणलंघण ण मयारजयारउच्चरणं ॥ ३ ॥ जत्थित्थीकरफरिसं अंतरियं कारणेवि उप्पन्ने । दिट्ठीविसदित्तग्गीविसंव वज्जिजइ स गच्छो ॥ ४ ॥ जत्थित्थीकरफरिसं लिंगी अरहावि सयमवि करेजा । तं निच्छयओ गोयम! जाणिजा मूलगुणबाहा ॥ ५ ॥ मूलगुणेहि उ खलियं बहुगुणकलियंपि लद्धिसंपन्नं । उत्तमकुलेवि जायं निद्धाडिज्जइ जहिं तयं गच्छं ॥ ६ ॥ जत्थ हिरण्णसुवण्णे धणधन्ने कंसदूसफलिहाणं । सयणाण आसणाण य न य परिभोगो से तयं गच्छं ॥ ७ ॥ जत्थ हिरण्णसुवण्णं हत्थेण परागयंपि नो छिप्पे । कारणसमप्पियंपि हु खणनिमिसद्धंपि तं गच्छं ॥ ८ ॥ दुद्धरबंभव्वयपालणट्ठ अज्जाण चवलचित्ताणं । सत्तसहस्सापरिहारठाणवी जत्थत्थि तं गच्छं ॥ ९ ॥ जत्थुत्तरवडपडिउत्तरेहिं अज्जा उ साहुणा सद्धिं । पलवंति सुकुद्धावी गोयम! किं तेण गच्छेण? ॥ ७० ॥ जत्थ य गोयम! बहुविहविकप्पकल्लोलचंचलमणाणं । अज्जाणमणुट्ठिज्जइ भणियं तं केरिसं गच्छं? ॥ १ ॥ जत्थेक्कंगसरीरा साहू सह साहुणीहिं हत्थसया । उड्ढं गच्छेज्ज वहिं गोयम! गच्छंमि का मेरा? ॥ २ ॥ जत्थ अ अज्जाहिं समं संलावुल्लावमाइववहारं । मोत्तुं धम्मुवएसं गोयम! तं केरिसं गच्छं? ॥ ३ ॥ भयवमणियतविहारं णियइविहारं ण ताव साहूणं । कारणनीयावासं जो सेवे तस्स का वत्ता? ॥ ४ ॥ निम्ममनिरहंकारं उजुत्ते नाणदंसणचरित्ते । सयलारंभविमुक्के अप्पडिबद्धे सदेहेवि ॥ ५ ॥ आयारमायरंते एगक्खेत्तेवि गोयमा! मुणिणो । वाससयंपि वसंते गीयत्थे राहगे भणिए ॥ ६ ॥ जत्थ समुद्देसकाले साहूणं मंडलीएं अज्जाओ । गोयम! ठवंति पादे इत्थीरज्जं न तं गच्छं ॥ ७ ॥ जत्थ य हत्थसएवि य रयणीचारं चउण्हमूणाओ । उड्ढं दसण्हमसइ से (ण) करेंति अज्जा तयं गच्छं ॥ ८ ॥ अववाएणवि कारणवसेण अज्जा चउण्हमूणाउ। गाऊयमवि परिसक्कंति जत्थ तं केरिसं गच्छं? ॥ ९ ॥ जत्थ य गोयम! साहू अज्जाहिं समं पहंमि अट्ठूणा । अववाएणवि गच्छेज्ज तत्थ गच्छंमि का मेरा? ॥ ८० ॥ जत्थ य तिसट्ठिभेयं चक्खूरागग्गिदीरणिं साहू । अज्जाउ निरिक्खेज्जा तं गोयम! केरिसं गच्छं? ॥ १ ॥ जत्थ य अज्जालद्धं पडिग्गहदंडादिविविहमुवगरणं । परिभुजइ साहूहिं तं गोयम! केरिसं गच्छं? ॥ २ ॥ अइदुल्लहं भेसज्जं बलबुद्धिविवद्धणंपि पुट्ठिकरं । अज्जालद्धं भुंजइ का मेरा तत्थ गच्छंमि? ॥ ३ ॥ सोऊण गइं सुकुमालियाए तह ससगभसगभइणीए । ताव न वीससियव्वं सेयट्ठी धम्मिओ जाव ॥ ४ ॥ दढचारित्तं मोत्तुं आयरियं मयहरं च गुणरासिं । अज्जा वट्टावेइ तं अणगारं न तं गच्छं ॥ ५ ॥ घणगणि(च्छि)यहयकुहुकुहुयवेज्जदुग्गेज्झमूढहिययाउ । होज्जा वावारियाओ इत्थीरज्जं न तं गच्छं ॥ ६ ॥ पक्खा सुयदेवी तवलद्धीए सुराहिवणुयावि। जत्थ रिएऽज्जा कज्जाई इत्थीरज्जं न तं गच्छं ॥ ७ ॥ गोयम! पंचमहव्वय गुत्तीणं तिण्ह पंचसमिईणं। दसविहधम्मस्सिकं कहवि खलिज्जइ न तं गच्छं ॥ ८ ॥ दिणदिक्खियस्स दमगस्स अभिमुहा अजचंदणा अज्जा। निच्छइ आसणगहणं सो विणओ सव्वअज्जाणं ॥ ९ ॥ वाससयदिक्खियाए अज्जाए अज्जदिक्खिओ साहू। भत्तिभरनिब्भराए वंदणविणएण सो पुज्जो ॥ ९० ॥ अजियलाभे गिद्धा सएण लाभेण जे असंतुट्ठा। भिक्खायरियाभग्गा अन्नियउत्तं गिराऽऽहेंति ॥ १ ॥ गयसीसगणं ओमे भिक्खायरियाअपच्चलं थेरं । गणिहिंति ण ते पावे अजियलाभं गवेसंता ॥ २ ॥ ओमे सीसपवासं अप्पडिबद्धं अजंगमत्तं च । ण गणेज्ज एगरेत्तेऽ गणेज्ज वासं णियवासी ॥ ३ ॥ आलंबणाण भरिओ लोओ जीवस्स अजउकामस्स। जं जं पिच्छइ लोए तं तं आलंबणं कुणइ ॥ ४ ॥ जत्थ मुणीण कसाए चमढिज्जंतेवि परकसाएहिं । णेच्छेज्ज समुट्ठेउं सुणिविट्ठो पंगुलव तयं (गच्छं) ॥ ५ ॥ धम्मंतरायभीए भीए संसारगब्भवसहीणं । णोदीरिज्ज कसाए मुणी मुणीणं तयं गच्छं ॥ ६ ॥ सीलतवदाणभावणचउविहधम्मंतरायभवभीए। जत्थ बहू गीयत्थे गोयम! गच्छं तयं वासे ॥ ७ ॥ जत्थ य कम्मविवागस्स चिट्ठियं चउगईएं जीवाणं । णाऊणमवरद्धेऽवी नो पकुप्पंति तं गच्छं ॥ ८ ॥ जत्थ य गोयम! पंचण्ह कहवि सूणाण एक्कमवि होजा । तं गच्छं तिविहेणं वोसिरिय वइज्ज अन्नत्थ ॥ ९ ॥ सूणारंभपवित्तं गच्छं वेसुजलं व ण वसेज्जा । जं चारित्तगुणेहिं तु उज्जलं तं निवासेज्जा ॥ १०० ॥ तित्थयरसमो सूरी दुज्जयकम्मट्ठमहप्पडिमट्ठे । आणं अइक्कमंते ते कापुरिसे न सप्पुरिसे ॥ १ ॥ भट्टायारो सूरी भट्टायाराणुविक्खओ सूरी । उम्मग्गठिओ सूरी तिण्णिवि मग्गं पणासंति ॥ २ ॥ उम्मग्गठिए सूरिंमि निच्छयं भव्वसत्तसंघाए । जम्हा तं मग्गमणुसरंति तम्हा ण तं जुत्तं ॥ ३ ॥ एकंपि जो दुहत्तं सत्तं परिवोहिउं ठवे मग्गे । ससुरासुरंमिवि जगे तेणेहं घोसियं अमाघायं ॥ ४ ॥ भूए अत्थि भविस्संति केई जगवंदणीयकमजुयले । जेसिं परहियकरणेक्कबद्धलक्खाण वोलिही कालं ॥ ५ ॥ भूए अणाइकालेण केई होहेंति गोयमा! सूरी । नामग्गहणेणवि जेसिं होज नियमेण पच्छित्तं ॥ ६ ॥ एयं गच्छववत्थं दुप्पसहाणं(वं)तरं तु जो खंडे । तं गोयम! जाण गणिं निच्छयओऽणंतसंसारी ॥ ७ ॥ जं सयलजीवजगमंगलेक्ककल्लाणपरमकल्लाणे । सिद्धिपए वोच्छिण्णे पच्छित्तं होइ तं गणिणो ॥ ८ ॥ तम्हा गणिणो समसत्तुमित्तपक्खेण परहियरएणं । कल्लाणकंखुणा अप्पणो य आणा ण लंघेया ॥ ९ ॥ एवं मेरा ण लंघेयव्वत्ति, एयं गच्छववत्थं लंघेत्तु तिगारवेहिं पडिबद्धे । संखाईए गणिणो अजाति वोहिं न पावंति ॥ ११० ॥ ण लभेहिंति य अन्ने अणंतहुत्तोवि पीरिभमं तित्थं । चउगइभवसंसारे चिट्ठिज्ज चिरं सुदुक्खत्ते ॥ १ ॥ चोद्दसरज्जूलोगे गोयम! बालग्गकोडिमेत्तंपि । तं नत्थि पएसं जत्थ अणंतमरणे न संपत्ते ॥ २ ॥ चुल्लसीइजोणिलक्खे सा जोणी नत्थि गोयमा! इहइं । जत्थ ण अणंतहुत्तो सव्वे जीवा समुप्पन्ना ॥ ३ ॥ सूईहिं अग्गिवन्नाहिं, संभिन्नस्स निरंतरं । जावइयं गोयमा! दुक्खं, गब्भे अट्ठगुणं तयं ॥ ४ ॥ गब्भाओ निप्फिडंतस्स, जोणीजंतनिपीलणे । कोडीगुणं तयं दुक्खं, कोडाकोडिगुणंपि वा ॥ ५ ॥ जायमाणाण जं दुक्खं, मरमाणाण जंतुणं । तेण दुक्खविवागे(निदाणे)णं, जाइं न सरंति (२८५)

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [८] + गाथा ॥११७॥

दीप अनुक्रम [८०७]

अत्तणिं ॥ ६ ॥ नाणाविहासु जोणीसु, परिभमंतेहिं गोयमा !। तेण दुक्खविवागेण, संभरिएण णवि जिवए ॥ ७ ॥ जम्मजरामरणदोगच्चवाहीओ चिट्ठंतु ता । लज्जेज्जा गब्भवासेणं, को ण बुद्धो महामई ? ॥ ८ ॥ बहुरुहिरपूइजंघाले, असुईकलिमलपूरिए । अणिट्ठे य दुब्भिगंधे, गब्भे(ता) को धिइं लभे ? ॥९॥ ता जत्थ दुक्खविक्खिरणं, एगंतसुहपावणं । से आणा नो खंडेज्जा, आणाभंगे कुओ सुहं ? ॥१२०॥ से भयवं! अट्ठण्हं साहूणमसइं उस्सग्गेण वा अववाएण वा चउहिं अणगारेहिं समं गमणमागमणं निसेहियं तहा दसण्हं संजईणं हेट्ठा उस्सग्गेणं चउण्हं तु अभावे अववाएणं हत्थसयाउ उद्धं गमणं णाणुण्णायं आणं वा अइक्कमंते साहू वा साहुणीओ वा अणंतसंसारिए समक्खाए ता णं से दुप्पसहे अणगारे असहाए भवेज्जा साविय विण्हुसिरी असहाया चेव भवेज्जा एवं तु ते कहं आराहगे भवेज्जा ?, गोयमा ! णं दुस्समाए परियंते ते चउरो जुगप्पहाणे खाइगसम्मत्तनाणदंसणचरित्तसमन्निए भवेज्जा, तत्थ णं जे से महायसे महाणुभागे दुप्पसहे अणगारे से णं अचंतविसुद्धसम्मद्दंसणनाणचरित्तगुणेहिं उववेए सुदिट्ठसुगइमग्गे आसायणाभीरू अचंतपरमसद्धासंवेगवेरग्गसम्मग्गट्ठिए णिरब्भगयणामलसरयकोमुईसुनिम्माइंदुकरविमलपरपरमजसे वंदाणं परमवंदे पुज्जाणं परमपुज्जे भवेज्जा, तहा साविय सम्मत्तनाणचरित्तपडागा महायसा महासत्ता महाणुभागा एरिसगुणजुत्ता चेव सुगहियनामधेज्जा विण्हुसिरी अणगारी भवेज्जा, तंपि णं जिणदत्तफग्गुसिरीनामं सावगमिहुणं बहुवासरवन्नणिज्जगुणं चेव भवेज्जा, तहा तेसिं सोलस संवच्छराइं परमं आउं अट्ठ य परियाओ आलोइयनीसल्लाणं च पंचनमोक्कारपराणं चउत्थभत्तेणं सोहम्मे कप्पे उववाओ, तयणंतरं च हिट्ठिमगमणं, तहावि ते एयं गच्छववत्थं णो विलंघिंसु ।८। से भयवं ! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा णं तहावि एयं गच्छववत्थं णो विलंघिंसु ?, गोयमा ! इओ आसन्नकालेणं चेव महायसे महासत्ते महाणुभागे सेज्जंभवे णामं अणगारे महातवस्सी महामई दुवालसंगसुयधारी भवेज्जा, से णं अपक्खवाएणं अप्पाउक्खे भवसत्तेसु य अतिसएणं विन्नाय एक्कारसण्हं अंगाणं चउदसण्हं पुव्वाणं परमसारणवणीयभूयं सुपउणं सुपद्धरुज्ज(यधरोज्जो)यं सिद्धिमग्गं दसवेयालियं णाम सुयक्खंधं णिऊहेज्जा, से भयवं ! किं पडुच्च ?, गोयमा ! मणगं पडुच्च, जहा कहं नाम एयस्स णं मणगस्स पारंपरिएणं थेवकालेणेव महंतघोरदुक्खागराओ चउगइसंसारसागराओ निप्फेडो भवतु ?, सेऽवि ण विणा सव्वन्नुवएसेणं, से य सव्वन्नुवएसे अणोरपारे दुरवगाढे अणंतगमपज्जवेहिं नो सक्का अप्पेणं कालेणं अवगाहिउं, तहा णं गोयमा ! अइसएणं एवं चिंतेज्जा, एवं से णं सेज्जंभवे जहा ‘अणंतपारं बहु जाणियव्वं, अप्पो अ कालो बहुले अ विग्घे । जं सारभूतं तं गिण्हियव्वं, हंसो जहा खीरमिवंबुमीसं ॥१२१॥ तेणं इमस्स भवसत्तस्स मणगस्स तत्तपरिन्नाणं भवउत्तिकाउणं जाव णं दसवेयालियं सुयक्खंधं णिरु(ज्जू)हेज्जा, तं च वोच्छिन्नेणं तकालदुवालसंगेणं गणिपिडगेणं जाव णं दूसमाए परियंते दुप्पसहे ताव णं सुत्तत्थेणं वाएज्जा, से अ सयलागमनिस्संदं दसवेयालियसुयक्खंधं सुत्तओ अज्झीहीय गोयमा ! से णं दुप्पसहे अणगारे, तओ तस्स णं दसवेयालियसुत्तस्साणुगयत्थाणुसारेणं तहा चेव पवत्तिज्जा, णो णं सच्छंदयारी भवेज्जा, तत्थ अ दसवेयालियसुक्खंधे तक्कालमिणमो दुवालसंगे सुयक्खंधे पइट्ठिए भवेज्जा, एएणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा तहावि णं गोयमा ! ते एवं गच्छववत्थं नो विलंघिंसु ।९। से भयवं ! जइ णं गणिणोवि अचंतविसुद्धपरिणामस्सवि केइ दुस्सीले सच्छंदत्ताएइ वा गारवत्ताएइ वा जायाइमयत्ताएइ वा आणं अइक्कमेज्जा से णं किमाराहगे भवेज्जा ?, गोयमा ! जे णं गुरू समसत्तुमित्तपक्खो गुरुगुणेसुं ठिए सययं सुत्ताणुसारेणं चेव विसुद्धासए विहरेज्जा तस्साणमइक्कंतेहिं णवणउएहिं चउहिं सएहिं साहूणं जहा तहा चेव अणाराहगे भवेज्जा ।१०। से भयवं ! कयरे णं ते पंचसए एक्कविवज्जिए साहूणं जेहिं च णं तारिसगुणोववेयस्स महाणुभागस्स गुरुणो आणं अइक्कमिउं णाराहियं ?, गोयमा ! णं इमाए चेव उसभचउवीसिगाए अतीताए तेवीसइमाए चउवीसिगाए जाव णं परिनिव्वुडे चउवीसइमे अरहा ताव णं अइक्कंतेणं केवइएणं कालेणं गुणनिप्फन्ने कम्मसेलमुसुमूरणे महायसे महासत्ते महाणुभागे सुगहियनामधेज्जे वइरे णाम गच्छाहिवई भूए, तस्स णं पंचसयं गच्छं निग्गंथीहिं विणा, निग्गंथीहिं समं दो सहस्से य अहेसि, ता गोयमा ! ताओ निग्गंथीओ अचंतपरलोगभीरुयाउ सुविसुद्धनिम्मलंतकरणाओ खंताओ दंताओ मुत्ताओ जिइंदियाओ अचंतभणिरीओ नियसरीरस्सावि य छक्कायवच्छलाओ जहोवइट्ठअचंतघोरवीरतवचरणसोसियसरीराओ जहा णं तित्थयरेणं पन्नवियं तहा चेव अदीणमणसाओ मायामयहंकारममकारइ(र)तिहासखेड्डकंदप्पणाहवायविप्पमुक्काओ तस्सायरियस्स सयासे सामन्नमणुचरंति, ते य साहुणो सव्वेवि गोयमा ! न तारिसे मणागा, अहऽन्नया गोयमा ! ते साहुणो तं आयरियं भणंति जहा जइ णं भयवं ! तुमं आणवेहि ता णं अम्हेहिं तित्थयत्तं करिय चंदप्पहसामियं वंदिय धम्मचक्कं गंतूणमागच्छामो, ताहे गोयमा ! अदीणमणसा अणुत्तावलगंभीरमहुराए भारतीए भणियं तेणायरिएणं जहा इच्छायारेणं न कप्पइ तित्थयत्तं गंतुं सुविहियाणं, ता जाव णं वोलेइ जत्तं ताव णं अहं तुम्हे चंदप्पहं वंदावेहामि, अन्नंच-जत्ताए गएहिं असंजमे पडिजइ, एएणं कारणेणं तित्थयत्ता पडिसेहिज्जइ, तओ तेहिं भणियं-जहा भयवं ! केरिसो उण तित्थयत्ताए गच्छमाणाणं असंजमो भवइ ?, सो पुण इच्छायारेणं, विइज्जवारं एरिसं उच्चावेज्जा बहुजणेणं वाउलग्गो भन्निहिसि, ताहे गोयमा ! चिंतियं तेणं आयरिएणं जहा णं ममं वइक्कमिय निच्छयओ एए गच्छिहिंति तेणं तु मए समयं चडु(वट्टु)त्तरेहिं वयंति, अह अन्नया सुबहुं मणसा संधारेऊणं चेव भणियं तेण आयरिएणं-जहा णं तुब्भे किंचिवि सुत्तत्थं वियाणह विय तो जारिसं तित्थयत्ताए गच्छमाणाणं असंजमं भवइ तारिसं सयमेव वियाणेह, किं एत्थ बहुपलविएणं ?, अन्नंच-विदियं तुम्हेहिंपि संसारसहावं जीवाइपयत्थतत्तं च, अहऽन्नया बहुउवाएहिं णं विणिवारिंतस्सवि तस्सायरियस्स गए चेव ते साहुणो कुद्धेणं कयंतेणं परियरिए तित्थयत्ताए, तेसिं च गच्छमाणाणं कत्थइ अणेसणं कत्थइ हरियकायसंघट्टणं कत्थइ बीयक्कमणं कत्थइ पिवीलियादीणं तसाणं संघट्टणपरितावणोद्दवणाइसंभवं कत्थइ वइट्ठपडिक्कमणं कत्थइ ण कीरए चेव चाउक्कालियं सज्झायं कत्थइ ण संपाडेज्जा मत्तभंडोवयरगस्स विहीए उभयकालं पेहपमज्जणपडिलेहणपक्खोडणं, किं बहुणा ?, गोयमा ! कित्तियं भन्निहिइ ? अट्ठारसण्हं सीलंगसहस्साणं सत्तरसविहस्स णं संजमस्स दुवालसविहस्स णं सब्भंतरबाहिरस्स तवस्स जाव णं खंताइअहिंसालक्खणस्सेव य दसविहस्साणगारधम्मस्स जत्थेक्कपयं चेव सुबहुएणंपि कालेणं थिरपरिचिएण दुवालसंगमहासुयक्खंधेणं बहुभंगसयसंघत्तणाए दुक्खं निरइयारं परिवालिऊण जे, एयं च सव्वं जहाभणियं निरइयारमणुट्ठेयंति, एवं संभरिऊण चिंतियं तेण गच्छाहिवइणा-जहा णं मे विप्परुक्खेण ते

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [११] + गाथा ॥१२२॥

दीप अनुक्रम [८१७]

दुट्ठसीसे मज्झं अणाभोगपच्चएणं सुबहुं असंजमं काहेंति तं च सव्वं ममऽच्छंतियं होही जओ णं हं तेसिं गुरू ताहं तेसिं पट्टीए गंतूणं पडिजागरामि जेणाहमित्थ पए पायच्छित्तेणं णो संबज्झेजेति वियप्पिऊणं गओ सो आयरिओ तेसिं पट्टीए जाव णं दिट्ठे तेणं असमंजसेण गच्छमाणे, ताहे गोयमा ! सुमहुरमंजुलालावेणं भणियं तेणं गच्छाहिवइणा-जहा भो भो उत्तमकुलनिम्मलवंसविभूसणा अमुगअमुगाइमहासत्ता साहू पहपडिवन्नाणं पंचमहव्वयाहिट्ठियतणूणं महाभागाणं साहुसाहुणीणं सत्तावीसं सहस्साइं थंडिलाणं सव्वदंसीहिं पन्नत्ताइं, ते य सुउवउत्तेहिं विसोहिज्जंति, ण उणं अन्नोवउत्तेहिं, ता किमेयं सुन्नासुन्नीए अणोवउत्तेहिं गम्मइ, इच्छायारेणं उवओगं देह, अन्नंच-इणमो सुत्तत्थं किं तुम्हाणं विसुमरियं भवेज्जा जं सारं सव्वरमतत्ताणं जहा ‘एगे वेइंदिए पाणी एगं सयमेव हत्थेण वा पाएण वा अन्नयरेण वा सलागाइअहिगरणभूओवगरणजाएणं जे णं केई संघट्टेज्जा वा संघट्टावेज्जा वा एवं संघट्टियं वा परेहिं समणुजाणेज्जा से णं तं कम्मं जया उदिन्नं भवेज्जा तया जहा उच्छुखंडाइं जंते तहा निप्पीलिज्जमाणा छम्मासेणं खवेज्जा, एवं गाढे दुवालसेहिं संवच्छरेहिं तं कम्मं वेदेज्जा, एवं अगाढपरियावणे वाससहस्सं, गाढपरियावणे दसवाससहस्से, एवं अगाढकिलामणे वासलक्खं, गाढकिलामणे दसवासलक्खाइं, उद्दवणे वासकोडी, एवं तेइंदियाइसुंपि णेयं, ता एवं च वियाणमाणा मा तुम्हे मुज्झहत्ति, एवं च गोयमा ! सुत्ताणुसारेणं सारयंतस्सावि तस्सायरियस्स ते महापावकम्मे गमगमहल्लफलेणं हल्लोहलीभूएणं तं आयरियाणं वयणं असेसपावकम्मट्ठदुक्खविमोयगं णो बहु मन्नेंति, ताहे गोयमा ! मुणियं तेणायरिएणं जहा निच्छयओ उम्मग्गपट्ठिए सव्वपगारेहिं चेव मे पावमई दुट्ठसीसे, ता किमट्ठमहमिमेसिं पट्टीए लल्लीवागरणं करेमाणोऽणुगच्छमाणो य सुक्खाए गयजलाए णदीए उवुज्झं, एए गच्छंतु दसदुवारेहिं, अहयं तु तावायहियमेवाणुचिट्ठेमी, किं मज्झं परकएणं सुमहंतएणावि पुन्नपब्भारेणं थेवमवि किंची परित्ताणं भवेज्जा ?, सपरक्कमेणं चेव मे आगमुत्ततवसंजमाणुट्ठाणेणं भवोयही तरेयव्वो, एस उण तित्थयराएसो जहा-‘अप्पहियं कायव्वं जइ सक्का परहियं च पयरेज्जा। अत्तहियपरहियाणं अत्तहियं चेव कायव्वं ॥१२२॥ अन्नंच-जइ एते तवसंजमकिरियं अणुपालिहिंति तओ एएसिं चेव सेयं होहिइ, जइ ण करेहिंति तओ एएसिं चेव दुग्गइगमणमणुत्तरं हवेज्जा, नवरं तहावि मम गच्छो समप्पिओ गच्छाहिवई अहयं भणामि, अन्नंच-जे तित्थयरेहिं भगवंतेहिं छत्तीस आयरियगुणे समाइट्ठे तेसिं तु अहयं एक्कमवि णाइक्कमामि जइवि पाणोवरमं भवेज्जा, जं चागमे इहपरलोगविरुद्धं तं णायरामि ण कारयामि ण कज्जमाणं समणुजाणामि, ता मेरिसगुणजुत्तस्सावि जइ भणियं ण करेंति ताऽहमिमेसिं वेसग्गहणं उद्दालेमि, एवं च समए पन्नत्ती जहा-जे केई साहू वा साहुणी वा वायामित्तेणावि असंजममणुचेट्ठेज्जा से णं सारेज्जा चोएज्जा पडिचोएज्जा, से णं सारेज्जंते वा चोइज्जंते वा पडिचोइज्जंते वा जे णं तं वयणमवमन्निय अलसायमाणे वा अभिनिविट्ठेइ वा ण तहत्ति पडिवज्जिय इच्छं पउंजित्ताणं तत्थ णो पडिक्कमेज्जा से णं तस्स वेसग्गहणं उद्दालेज्जा, एवं तु आगमुत्तणाएणं गोयमा ! जाव तेणायरिएणं एगस्स सेहस्स वेसग्गहणं उद्दालियं ताव णं अन्नेसे दिसोदिसं पणट्ठे, ताहे गोयमा ! सो य आयरिओ सणियं तेसिं पट्टीए जाउमारद्धो णो णं तुरियं २, से भयवं ! किमट्ठं तुरियं २ णो पयाइ ?, गोयमा ! खाराए भूमीए जो महुरं संकमेज्जा महुराए खारं किण्हाए पीयं पीयाओ किण्हं जलाओ थलं थलाओ जलं संकमेज्जा तेणं विहीए पाए पमज्जिय २ संकमेयव्वं, णो पमज्जेज्जा तओ दुवालससंवच्छरियं पच्छित्तं भवेज्जा, एएणमट्ठेण गोयमा ! सो आयरिओ ण तुरियं २ गच्छे, अहऽन्नया सुयाउत्तविहीए थंडिलसंकमणं करेमाणस्स णं गोयमा ! तस्सायरियस्स आगओ बहुवासरखुहापरिगयसरीरो वियडदाढाकरालकयंतभासुरो पलयकालमिव घोररूवो केसरी, मुणियं च तेण महाणुभागेणं गच्छाहिवइणा जहा-जइ दुयं गच्छेजइ ता चुक्किज्जइ इमस्स, णवरं दुयं गच्छमाणाणं असंजमं ता वरं सरीरवोच्छेयं ण असंजमपवत्तणंति चिंतिऊण विहीए उवट्टियस्स सेहस्स जमुद्दालियं वेसग्गहणं तं दाऊण ठिओ निप्पडिक्कम्मपायवोवगमणाणसणेणं, सेऽवि सेहो तहेव, अहऽन्नया अचंतविसुद्धंतकरणे पंचमंगलपरे सुहज्झवसायत्ताए दुण्णिवि गोयमा ! वावाइए तेण सीहेणं अंतगडे केवली जाए अट्ठप्पयारमलकलंकमुक्के सिद्धे य, ते पुण गोयमा ! एकूणपंचसए साहूणं तक्कम्मदोसेणं जं दुक्खमणुभवमाणे चिट्ठंति जं चाणुभूयं जं चाणुभविहिंति अणंतसंसारसागरं परिभमंते तं को अणंतेणंपि कालेणं भणिउं समत्थो ?, एए ते गोयमा ! एगूणे पंचसए साहूणं जेहिं च णं तारिसगुणोववेतस्स णं महाणुभागस्स गुरुणो आणं अइक्कमियं णो आराहियं अणंतसंसारिए जाए।११। से भयवं ! किं तित्थयरसंतियं आणं णाइक्कमेज्जा उयाहु आयरियसंतियं ?, गोयमा ! चउविहा आयरिया भवंति, तंजहा-नामायरिया ठवणायरिया दव्वायरिया भावायरिया, तत्थ णं जे ते भावायरिया ते तित्थयरसमा चेव दट्ठव्वा, तेसिं संतियाणं(ऽऽणा) णइक्कमेज्जा।१२। से भयवं ! कयरेणं ते भावायरिया भन्नंति ?, गोयमा ! जे अज्जपव्वइएवि आगमविहीए पयं पएणाणुसंचरंति ते भावायरिए, जे उण वाससयदिक्खिएवि हुत्ताणं वायामेत्तेणंपि आगमओ बाहिं करेंति ते णामठवणाहिं णिओइयव्वे, से भयवं ! आयरियाणं केवइयं पायच्छित्तं भवेज्जा ?, जमेगस्स साहुणो तं आयरियमयहरपवत्तिणीए सत्तरसगुणं, अहा णं सीलखलिए भवंति तओ तिलक्खगुणं, जं अइदुक्करं जं न सुकरं, तम्हा सव्वहा सव्वप्पयारेहि णं आयरियमहयरपवत्तिणीए अ अत्ताणं पायच्छित्तस्स संरक्खेयव्वं, अक्खलियसीलेहिं च भवेयव्वं।१३। से भयवं ! जे णं गुरू सहसाकारेणं अन्नयरट्ठाणे चुक्केज्ज वा खलेज्ज वा से णं आराहगे ण वा ?, गोयमा ! गुरूणं गुरुगुणेसु वट्टमाणो अक्खलियसीले अपमादी अणालस्सी सव्वालंबणविप्पमुक्के समसत्तुमेत्तपक्खे सम्मग्गपक्खवाए जाव णं कहाभणिरे सद्धम्मजुत्ते भवेज्जा णो णं उम्मग्गदेसए अहिमाणरए भवेज्जा, सव्वहा सव्वपयारेहिं णं गुरुणा ताव अप्पमत्तेणं भवियव्वं, णो णं पमत्तेणं, जे उण पमादी भवेज्जा से णं दुरंतपंतलक्खणे अदट्ठव्वे महापावे, जइ णं सवीए हवेज्जा ता णं नियदुच्चरियं जहावत्तं सपरसीसगणाणं पक्खाविय जहा दुरंतपंतलक्खणे अदट्ठव्वे महापावकम्मकारी सम्मग्गपणासओ अहयंति एवं निंदित्ताणं गरहित्ताणं आलोइत्ताणं च जहाभणियं पायच्छित्तमणुचरेज्जा से णं किंचुद्देसेणं आराहगे भवेज्जा, जइ णं नीसल्ले नियडीविप्पमुक्के, न पुणो सम्मग्गाओ परिभंसेज्जा, अहा णं परिभस्से तओ णाराहेइ।१४। से भयवं ! केरिसगुणजुत्तस्स णं गुरुणो गच्छनिक्खेवं कायव्वं ?, गोयमा ! जे णं सुव्वए जे णं सुसीले जे णं दढव्वए जे णं दढचारित्ते जे णं अणिंदियंगे जे णं अरहे जे णं गयरागे जे णं गयदोसे जे णं निट्ठियमोहमिच्छत्तमलकलंके जे णं उवसंते जे णं सुविन्नायजगट्ठितीए जे णं सुमहावेरग्गमग्गमल्लीणे जे णं इत्थी-

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहापडिणीए जे णं भत्तकहापडिणीए जे णं तेणगकहापडिणीए जे णं रायकहापडिणीए जे णं जणवयकहापडिणीए जे णं अचंतमणुकंपसीले जे णं परलोगपच्चवायभीरू जे णं कुसीलपडिणीए जे णं विन्नायसमयसब्भावे जे णं गहियसमयपेयाले जे णं अहन्निसाणुसमयं ठिए खंतादिअहिंसालक्खणदसविहे समणधम्मे जे णं उज्जुत्ते अहन्निसाणुसमयं दुवालसविहे तवोकम्मे जे णं सुउवउत्ते सययं पंचसमिईसु जे णं सुगुत्ते सययं तीसु गुत्तीसुं जे णं आराहगे ससत्तीए अट्ठारसण्हं सीलंगसहस्साणं जे णं अविराहगे एगंतेणं ससत्तीए सत्तरसविहस्स णं संजमस्स जे णं उस्सग्गरुई जे णं तत्तरुई जे णं समसत्तुमेत्तपक्खे जे णं सत्तभयट्ठाणविप्पमुक्के जे णं अट्ठमयट्ठाणविप्पजढे जे णं नवण्हं बंभचेरगुत्तीणं विराहणाभीरू जे णं बहुसुए जे णं आयरियकुलुप्पन्ने जे णं अदीणे जे णं अकिंविणे जे णं अणालसिए जे णं संजईवग्गस्स पडिवक्खे जे णं सययं धम्मोवएसदायगे जे णं सययं ओहसामायारीए परूवगे जे णं मेरावट्टिए जे णं असामायारीभीरू जे णं आलोयणारिहपायच्छित्तदाणपयच्छणक्खमे जे णं वंदणमंडलिविराहणाजाणगे जे णं पडिक्कमणमंडलिविराहणजाणगे जे णं सज्झायमंडलिविराहणजाणगे जे णं वक्खाणमंडलिविराहणजाणगे जे णं आलोयणामंडलिविराहणजाणगे जे णं उद्देसमंडलिविराहणजाणगे जे णं समुद्देसमंडलिविराहणजाणगे जे णं पव्वज्जाविराहणजाणगे जे णं उवट्ठावणाविराहणाजाणगे जे णं उद्देससमुद्देसाणुन्नाविराहणजाणगे जे णं कालक्खेत्तदव्वभावभावंतरंतरवियाणगे जे णं कालक्खेत्तदव्वभावालंबणविप्पमुक्के जे णं सव्वालंबुद्दढगिलाणसेहसिक्खगसाहम्मिगअज्जावद्दावणकुसले जे णं परूवगे नाणदंसणचारित्ततवोगुणाणं जे णं वरए धरए पभावगे नाणदंसणचरित्ततवोगुणाणं जे णं दढसम्मत्ते जे णं सययं अपरिसाई जे णं धीइमं जे णं गंभीरे जे णं सुसोमलेसे जे णं दिणयरमिव अणभिभवणीए तवतेएणं जे णं ससरीरोवरमेऽवि छक्कायसमारंभविवज्जी जे णं तवसीलदाणभावणामयचउव्विहधम्मंतरायभीरू जे णं सव्वासायणाभीरू जे णं इट्ठिढरससायागारवरोद्दट्टज्झाणविप्पमुक्के जे णं सव्वावस्सगमुज्जुत्ते जे णं सविसेसलद्धिजुत्ते जे णं आवडियापिहियामंतिओवि णायरेज्जा अयजं जे णं नो बहुनिद्दो जे णं नो बहुभोई जे णं सव्वावस्सगसज्झायज्झाणपडिमाभिग्गहघोरपरीसहोवसग्गेसु जियपरीसमे जे णं सुपत्तसंगहसीले जे णं अपत्तपरिट्ठावणविहिन्नू जे णं अणट्ठ(णुद्द)यबोंदी जे णं परसमयससमयसम्मंवियाणगे जे णं कोहमाणमायालोभममकारादितिहासखेड्डकंदप्पणाहवायविप्पमुक्के धम्मकही संसारवासविसयाभिलासादीणं वेरग्गुप्पायगे पडिबोहगे भव्वसत्ताणं से णं गच्छनिक्खेवणजोग्गे से णं गणी से णं गणहरे से णं तित्थे से णं तित्थयरे से णं अरहा से णं केवली से णं जिणे से णं तित्थुच्भासगे से णं वंदे से णं पुजे से णं नमंसणिजे से णं दट्ठव्वे से णं परमपवित्ते से णं परमकल्लाणे से णं परममंगले से णं सिद्धी से णं मुत्ती से णं सिवे से णं मोक्खे से णं तायी से णं संमग्गे से णं गती से णं सरन्ने से णं सिद्धे मुत्ते पारगए देवे देवदेवे, एयस्स णं गोयमा! गणनिक्खेवं कुज्जा एयस्स णं गणनिक्खेवकरणं समणुजाणेज्जा, अन्नहा णं गोयमा! आणाभंगे।१५। से भयवं! केवइयं कालं जाव एस आणा पवेइया?, गोयमा! जाव णं महायसे महासत्ते महाणुभागे सिरिप्पभे अणगारे, से भगवं! केवइएणं कालेणं सिरिप्पभे अणगारे भवेज्जा?, गोयमा! होही दुरंतपंतलक्खणे अदट्ठव्वे रोद्दे चंडे पयंडे उग्गपयंडदंडे निम्मेरे निक्किवे निग्घिणे निन्तिसे कूरयरपावमई अणारिए मिच्छद्दिट्ठी कक्की नाम रायाणे, से णं पावे पाहुडियं ममाडिउकामे सिरिसमणसंघं कयत्थेजा, जाव णं कयत्थेइ ताव णं गोयमा! जे केई तत्थ सीलड्ढे महाणुभागे अचलियसत्ते तवोहणे अणगारे तेसिं च पाडिहेरियं कुज्जा सोहम्मे कुसिलपाणी एरावणगामी सुरवरिंदे, एवं च गोयमा! देविंदवंदिए दिट्ठपच्चए ण सिरिसमणसंघे णिट्ठिज्जा ण चुणए पासंडधम्मे, जाव णं गोयमा! एगे अविइज्जे अहिंसालक्खणखंतादिदसविहे धम्मे एगे अरहा देवाहिदेवे एगे जिणालए एगे वंदे पूए दक्खे सक्कारे सम्माणे महायसे महासत्ते महाणुभागे दढसीलव्वयनियमधारए तवोहणे साहू, तत्थ णं चंदमिव सोमलेसे सूरिए इव तवतेयरासी पुढवी इव परीसहोवसग्गसहे मेरुमंदरधीरे इव निप्पकंपे ठिए अहिंसालक्खणखंतादिदसविहे धम्मे, से णं सुसमणगणपरिवुडे निरब्भगयणामलकोमुईजोगजुत्ते इव गहरिक्खपरियरिए गहवई चंदे अहिययरं विराइज्जा, गोयमा! से णं सिरिप्पभे अणगारे, तो गोयमा! एवतियं कालं जाव एसा आणा पवेइया।१६। से भयवं! उड्ढं पुच्छा, गोयमा! तओ परेण उड्ढं हायमाणे कालसमए, तत्थ णं जे केई छक्कायसमारंभविवज्जी से णं धन्ने पुन्ने वंदे पूए नमंसणिजे सुजीवियं जीवियं तेसिं।१७। से भयवं! सामन्ने पुच्छा जाव णं वयासी?, गोयमा! अत्थेगे जे णं जोगे अत्थेगे जे णं नो जोगे, से भयवं! केण अट्ठेण एवं वुच्चइ जहा णं अत्थेगे जाव जे णं नो जोगे?, गोयमा! अत्थेगे जेसिं णं सामन्ने पडिकुट्ठे अत्थेगे जेसिं च णं सामन्ने नो पडिकुट्ठे, एएणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा णं अत्थेगे जे णं जोगे अत्थेगे जे णं नो जोगे, से भयवं! कयरे ते जेसिं णं सामन्ने पडिकुट्ठे?, कयरे वा ते जेसिं च णं सामन्ने नो पडिकुट्ठे?, एएणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा णं अत्थेगे जे णं विरुद्धे अत्थेगे जे णं नो विरुद्धे, जे णं से विरुद्धे से णं पडिसेहिए, जे णं से णो विरुद्धे से णं नो पडिसेहिए, से भयवं! केणं से विरुद्धे के वा णं अविरुद्धे?, गोयमा! जे जेसुं देसेसुं दुगुंछणिज्जे जे जेसुं देसेसुं दुगुंछिए जे जेसुं देसेसुं पडिकुट्ठे से णं तेसु देसेसुं विरुद्धे, जे य णं जेसुं देसेसुं णो दुगुंछणिज्जे जे य णं जेसुं देसेसु नो दुगुंछिए जे य णं जेसुं देसेसु णो पडिकुट्ठे से णं तेसुं देसेसु नो विरुद्धे, तत्थ गोयमा! जे णं जेसुं २ देसेसुं विरुद्धे से णं नो पव्वावए जे णं जेसुं २ देसेसुं णो विरुद्धे से णं पव्वावए, से भयवं! से कत्थ देसे के विरुद्धे के वा णो विरुद्धे?, गोयमा! जे णं केई पुरिसेइ वा इत्थिएइ वा रागेण वा दोसेण वा अणुसएण वा कोहेण वा लोभेण वा अवरोहेण वा समणं वा माहणं वा मायरं वा पियरं वा भायरं वा भइणिं वा भाइणेयं वा सुयं वा सुयसुयं वा धूयं वा णत्तुयं वा सुण्हं वा जामाउयं वा दाइयं वा गोत्तियं वा सजाइयं वा विजाइयं वा सयणं वा असयणं वा संबंधियं वा असंबंधियं वा सणाहं वा असणाहं वा इट्ठिढमंतं वा अणिट्ठिढमंतं वा सएसियं वा विएसियं वा आरियं वा अणारियं वा हणेज्ज वा हणावेज्ज वा उद्दविज्ज वा उद्दवाविज्ज वा से णं परियाए अओग्गे, से णं पावे से णं निंदिए से णं गरहिए से णं दुगुंछिए से णं पडिकुट्ठे से णं पडिसेहिए से णं आवई से णं विग्घे से णं अयसे से णं अकित्ती से णं उम्मग्गे से णं अणायारे, एवं रायदुट्ठे, एवं तेणे, एवं परजुवइपसत्ते, एवं अन्नयरे वा केई वसणाभिभूए, एवं अइसंकिलिट्ठे एवं छुहाणडिए एवं रिणोवद्दुए अविन्नायजाइकुलसीलसहावे एवं बहुवाहिवेयणापरिगयसरीरे एवं रसलोलुए एवं बहुनिद्दे एवं इतिहासखेड्डकंदप्पणाहवायकज्जरिसीले एवं बहुकोऊहले एवं बहुपेसवग्गे जाव णं मिच्छादिट्ठिपडि-

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [१८] + गाथा ||१२३||

दीप अनुक्रम [८२४]

जीयकुलुप्पन्नेइ वा से णं गोयमा ! जे केई आयरिएइ वा मयहरएइ वा गीयत्थेइ वा अगीयत्थेइ वा आयरियगुणकलिएइ वा मयहरगुणकलिएइ वा भविस्सायरिएइ वा भविस्समयहरएइ वा लोभेण वा गारवेण वा दोण्हं गाउयसयाणं अब्भंतरं पडावेज्जा से णं गोयमा ! वइक्कमियमेरे से णं पवयणवोच्छित्तिकारए से णं तित्थवोच्छित्तिकारए से णं संघवोच्छित्तिकारए से णं वसणाभिभूए से णं अदिट्ठपरलोगपच्चवाए से णं अणायारपवित्ती से णं अकज्जयारी से णं पावे से णं पावपावे से णं महापावपावे से णं गोयमा ! अभिग्गहियचंडरुद्दकूरमिच्छादिट्ठी । १८। से भयवं! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ ?, गोयम ! आयारे मोक्खमग्गे, णो णं अणायारे मोक्खमग्गे, एएणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ, से भयवं! कयरे से णं आयारे कयरे वा से णं अणायारे ?, गोयमा ! आयारे आणा, अणायारे णं तप्पडिवक्खे, तत्थ जे णं आणापडिवक्खे से णं एगंतेणं सव्वपयारेहिं सव्वहा वज्जणिज्जे, जे णं णो आणापडिवक्खे से णं एगंतेणं सव्वपयारेहिं णं सव्वहा आयरणिज्जो, तहा णं गोयमा ! जं जाणिज्जा जहा णं एस णं सामन्नं विराहेज्जा से णं सव्वहा विवज्जेज्जा ।१९। से भयवं! कह परिक्खा ?, गोयमा ! णं जे केइ पुरिसेइ वा इत्थियाओ वा सामन्नं पडिवज्जिउकामे कंपेज्जा वा थरहरेज्ज वा निसीएज्ज वा छड्डिंड वा पकरेज्ज सगणे वा परगणे वा आसाएइ वा साएइ वा तदहुत्तं गच्छेज्जा वा अवलोइज्ज वा पलोइज्ज वा वेसगहणे ढोइज्जमाणे कोई उप्पाएइ वा असुहे दोन्निमित्तेइ वा भवेज्जा से णं गीयत्थे गणी अन्नयरेइ वा मयहरादी महया नेउन्नेणं निरूवेज्जा, जस्स णं एयाइं परं तक्केज्जा से णं णो पडावेज्जा, से णं गुरुपडिणीए भविज्जा से णं निद्धम्मसबले भवेज्जा सव्वहा से णं सव्वपयारेसु णं केवलं एगंतेणं अयज्जकरणुज्जए भवेज्जा, से णं जेणं वा तेणं वा सुएण वा विन्नाणेण वा गारविए भवेज्जा, से णं संजईवग्गस्स चउत्थवयखंडणसीले भवेज्जा, से णं बहुरूवे भवेज्जा ।२०। से भयवं! कयरे णं से बहुरूवे वुच्चइ ?, जे णं ओसन्नविहारीणं ओसन्ने उज्जुयविहारीणं उज्जुयविहारी निद्धम्मसबलाणं निद्धम्मसबले बहुरूवी रंगगए चारणे इव णडे 'खणेण रामे य खणेण लक्खणे, खणेण दसगीवरावणे खणेणं। टप्पयरकन्नदंतुरजराजुत्तगत्तपंडुरकखे सवहुपवंचभरिए विदूसगे ॥१२३॥ खणेणं निरियं च जाती, वाणरहणुमंतकेसरी। जहा णं एस गोयमा !, तहा णं से बहुरूवे ॥ १२४॥ एवं गोयमा ! जे णं असई कयाई केइ चुक्कखलिएणं पडावेज्जा से णं दूरद्धाणववहिए करेज्जा, से णं सन्निहिए णो धरेज्जा, से णं आयरेणं णो आलवेज्जा से णं भंडमत्तोवगरणे नो पडिलेहाविज्जा, से णं तस्स गंथसत्थं नो उद्दिसेज्जा, से णं तस्स गंथसत्थं नो अणुजाणेज्जा, से णं तस्स सद्धिं गुज्झं रहस्सं वा णो मंतिज्जा, एवं गोयमा ! जे केई एयदोसविप्पमुक्के से णं पडावेज्जा, तहा णं गोयमा ! मिच्छदेसुप्पन्ने अणारियं णो पडावेज्जा, एवं वेसासुयं नो पडावेज्जा, एवं गणियं नो पडावेज्जा, एवं चक्खुविगलं, एवं विकप्पियकरचरणं, एवं छिन्नकन्ननासोट्ठं, एवं कुट्ठवाहीए गलमाणसडहडंतं एवं पंगुं अयंगमं मूयबहिरं एवं अचुक्कडकसायं एवं बहुपासंडसंसट्ठं एवं घणरागदोसमोहमिच्छत्तमलखवलियं एवं उज्झियउत्तयं एवं पोराणनिक्खुडं एवं जिणालगाइबहुदेवबलीकरणभोइयं चक्कयरं एवं णडणट्टछत्त(मल्ल)चारणं एवं सुयजड्डं चरणकरणजड्डं जड्डकायं णो पडावेज्जा, एवं तु जाव णं नामहीणं थामहीणं जाइहीणं कुलहीणं बुद्धिहीणं पन्नाहीणं गामउडमयहरं वा गामउडमयहरसुयं वा अन्नयरं वा निंदियाहमहीणजाइयं वा अविन्नायकुलसहावं गोयमा ! सव्वहा णो दिक्खे णो पडाविज्जा, एएसिं तु पयाणं अन्नयरपए खलेज्जा जो सहसा देसूणपुव्वकोडीतवेण गोयम ! सुज्झेज्ज वा ण वावि।२१। 'एवं गच्छववत्थं तहत्ति पालेत्तु तं तहेव (जं) जहा (भणियं)। रयमल्लकिलेसमुक्को गोयम ! मुक्खं गएऽणंतं ॥ १२५ ॥ गच्छंति गमिस्संति य ससुरासुरजगणमंसिए वीरे। भुवणेक्कपायडजसे जहभणियगुणट्ठिए गणिणो ॥ १२६ ॥ से भयवं! जे णं केई अमुणियसमयसब्भावे होत्था विहीएइ वा अविहीएइ वा कस्सई गच्छायारस्स वा मंडलिधम्मस्स वा छत्तीसइविहस्स णं सप्पभेयनाणदंसणचरित्ततववीरियायारस्स वा मणसा वा वायाए वा काएण वा कहिंचि अन्नयरे ठाणे केइ गच्छाहिवई आयरिएइ वा अंतोविसुद्धपरिणामेवि होत्ताणं असई चोकेज्ज वा खलेज्ज वा परूवेमाणे वा अणुट्ठेमाणे वा से णं आराहगे उयाहु अणाराहगे ?, गोयमा ! अणाराहगे, से भयवं! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा णं गोयमा ! अणाराहगे ?, गोयमा ! णं इमे दुवालसंगे सुयनाणे अणप्पवसिए अणाइनिहणे सब्भूयत्थपसाहणे अणाइसंसिद्धे से णं देविंदवंदाणं असुरबलवीरिएसरियसत्तपरक्कममहापुरिसायारकंतिदित्तिलावन्नरूवसोहग्गाइसयकलाकलावविच्छड्डमंडियाणं अणंतनाणीणं सयंसंबुद्धाणं जिणवराणं अणाइसिद्धाणं अणंताणं वट्टमाणसमयसिज्झमाणाणं अन्नेसिं च आसन्नपुरकडाणं अणंताणं सुगहियनामधेज्जाणं महायसाणं महासत्ताणं महाणुभागाणं तिहुयणिक्कतिलयाणं तेलोक्कनाहाणं जगपवराणं जगेक्कबंधूणं जगगुरूणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं पवरवरधम्मतित्थंकराणं अरहंताणं भगवंताणं भूयभविस्साईयणागयवट्टमाणनिखिलासेसकसिणसगुणसपज्जयसव्ववत्थुविदियसब्भावाणं असहाए पवरे एकमेक्कमग्गे, से णं सुत्तत्ताए अत्थत्ताए गंथत्ताए, तेसिंपि णं जहट्ठिए चेव पन्नवणिज्जे जहट्ठिए चेवाणुट्ठणिज्जे जहट्ठिए चेव भासणिज्जे जहट्ठिए चेव वायणिज्जे जहट्ठिए चेव परूवणिज्जे जहट्ठिए चेव वायरणिज्जे जहट्ठिए चेव कहणिज्जे से णं इमे दुवालसंगे गणिपिडगे, तेसिंपि णं देविंदवंदवंदाणं णिखिलजगविदियसदब्बसपज्जवगइआगइ(इति)हासबुद्धिजीवाइतत्ते जाणए वत्थुसहावाणं अलंघणिज्जे अणइक्कमणिज्जे अणासायणिज्जे तहा चेव इमे दुवालसंगे सुयनाणे सव्वजगज्जीवपाणभूयसत्ताणं एगंतेणं हिए सुहे खमे नीसेसिए आणुगामिए पारगामिए पसत्थे महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए संसारुत्तारणयाएत्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरिंसु, किमुतमन्नेसिंति, ता गोयमा ! जे णं केइ अमुणियसमयसब्भावेइ वा विइयसमयसारेइ वा अविहीएइ वा गच्छाहिवई वा आयरिएइ वा अंतोविसुद्धपरिणामेवि होत्था, गच्छायारमंडलिधम्मा छत्तीसइविही आयारादि जाव णं अन्नयरस्स वा आवस्सगाइकरणिज्जस्स णं पवयणसारस्स असती चुक्केज्ज वा खलेज्ज वा ते णं इमे दुवालसंगे सुयनाणे अन्नहा पयरेज्जा, जे णं इमे दुवालसंगसुयणाणनिबद्धंतरोवगयं एक्कं पयअक्खरमवि अन्नहा पयरे से णं उम्मग्गे पयंसेज्जा, जे णं उम्मग्गे पयंसे से णं अणाराहगे भवेज्जा, ता एएणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा णं गोयमा ! एगंतेणं अणाराहगे । २२। से भयवं! अत्थि केई जणमिणमो परमगुरूणंपी अलंघणिज्जं परमसरण्णं फुडं पयडं पयडपयडं परमकल्लाणं कसिणकम्मट्ठदुक्खनिट्ठवणं पवयणं अइक्कमेज्ज वा पइक्कमेज्ज वा लंघेज्ज वा खंडेज्ज वा विराहेज्ज वा आसाइज्ज वा से मणसा वा वयसा वा कायसा वा जाव णं वयासी ?, गोयमा ! णं अणंतेणं कालेणं परिवट्टमाणेणं संपयं दस अच्छेरगे भविंसु, तत्थ णं असंखेज्जे अभवे असंखेज्जे मिच्छादिट्ठी असंखेज्जे सासायणे दव्वलिंगमासीय सच्छंदत्ताए डंभेणं सक्कारिज्जंते एच्छेए धम्मिगत्तिकाऊणं बहवे अदिट्ठकल्लाणे जइणं पवयणमब्भुवगम्मंति (२८६)

For Private & Personal Use Only
मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [२३] + गाथा ||१२६||

दीप अनुक्रम [८३४]

तमब्भुवगमिय रसलोलत्ताए विसयलोलत्ताए दुइंतिंदियदोसेणं अणुदियहं जहट्ठियं मग्गं निट्ठवंति उम्मग्गं च उस्सप्पयंति, ते य सव्वे तेणं कालेणं इमं परमगुरूणंपि अलंघणिज्जं पवयणं जाव णं आसायंति ।२३। से भयवं! कयरेऽणंतेणं कालेणं दस अच्छेरगे भविंसु?, गोयमा! णं इमे तेणं कालेणं ते अ णं दस अच्छेरगे भवंति, तंजहा-तित्थयराणं उवसग्गे गब्भसंकामणे वामातित्थयरे तित्थयरस्स णं देसणाए अभव्वसमुदाएणं परिसाबंधे सविमाणाण चंदाइच्चाणं तित्थयरसमवसरणे आगमणे वासुदेवाणं संखझुणीए अन्नयरेण वा रायक-उद्देणं परोप्परमेलावगे इहइं तु भारहे खेत्ते हरिवंसकुलुप्पत्तीए चमरुप्पाए एगसमएणं अट्ठसयसिद्धिगमणं असंजयाणं पूयाकारगेत्ति ।२४। से भयवं! जे णं केई कहिंचि कयाई पमायदोसओ पवयणमासाएज्जा से णं किं आयरियपयं पावेज्जा?, गोयमा! जे णं केई कहिंचि कयाई पमायदोसओ असई कोहेण वा माणेण वा मायाए वा लोभेण वा रागेण वा दोसेण वा भएण वा हासेण वा मोहेण वा अन्नाणदोसेण वा पवयणस्स णं अन्नयरट्ठाणे वइमित्तेणंपि अणायारं असमायारिं परूवेमाणे वा अणुमन्नेमाणे वा पवयणमासाएज्जा से णं बोहिंपि णो पावे, किमंग आयरियपयलंभं?, से भयवं! किं अभव्वे मिच्छादिट्ठी आयरिए भवेज्जा?, गोयमा! भवेज्जा, एत्थं च णं इंगालमद्दगाई नाए, से भयवं! किं मिच्छादिट्ठी निक्खमेज्जा?, गोयमा! निक्खमेज्जा, से भयवं! कयरेणं लिंगेणं से णं वियाणेज्जा जहा णं धुवमेस मिच्छादिट्ठी?, गोयमा! जे णं कयसामाइए सव्वसंगविमुत्ते भवित्ताणं अफासुपाणं परिभुंजेज्जा जे णं अणगारधम्मं पडिवज्जित्ताणमसई सोईरियं वा तेउकायं सेवेज्ज वा सेवाविज्ज वा सेविज्जमाणे अन्ने समणुजाणेज्ज वा तहा नवण्हं बंभचेरगुत्तीणं जे केई साहू वा साहुणी वा एक्कामवि खंडिज्ज वा विराहेज्ज वा खंडिज्जमाणं वा विराहिज्जमाणं वा बंभचेरगुत्तीं परेसिं समणुजाणेज्जा वा मणेण वा वायाए वा काएण वा से णं मिच्छादिट्ठी, न केवलं मिच्छा-दिट्ठी अभिगहियमिच्छादिट्ठी वियाणेज्जा ।२५। से भयवं! जे णं केई आयरिएइ वा मयहरएइ वा असई कहिंचि कयाई तहाविहं संविहाणगमासज्ज इणमो निग्गंथं पवयणमन्नहा पन्नवेज्जा से णं किं पावेज्जा?, गोयमा! जं सावज्जायरिएणं पावियं, से भयवं! कयरे णं से सावज्जायरिए? किं वा तेणं पावियंति?, गोयमा! णं इओ य उसभादितित्थकरचउवीसिगाए अणंतेणं कालेणं जा अतीता अन्ना चउवीसिगा तीए जारिसो अहयं तारिसो चेव सत्तरयणी पमाणेणं जगच्छेरयभूओ देविंदविंदवंदिओ पवरवरधम्मसिरिनाम चरमधम्मतित्थंकरो अहेसि, तत्थ य तित्थे सत्त अच्छेरगे भूए, अहऽन्नया परिनिव्वुडस्स णं तित्थंकरस्स कालक्कमेणं असंजयाणं सक्कारकारवणे णामऽच्छेरगे वहिउमारद्धे, तत्थ णं लोगाणुवत्तीए मि-च्छत्तोवहयं असंजयपूयाणुरयं बहुजणसमूहंतिवियाणिऊण तेणं कालेणं तेणं समएणं अमुणियसमयसब्भावेहिं तिगारवमइरामोहिएहिं णाममेत्तआयरियमयहरेहिं सढ्ढाईणं सया-साओ दविणजायं पडिग्गहिय२थंभसहस्सूसिए सकसके ममत्तिए चेइयालगे काराविऊणं ते चेव दुरंतपंतलक्खणाहमाहमेहिं आसईएहिं ते चेव चेइयालगे नीसीय गोविऊणं च बल-वीरियपुरिक्कारपरक्कमे संते बले संते वीरिए संते पुरिसक्कारपरक्कमे चइऊणं उग्गाभिग्गहे अणिययविहारं णीयावासमासइत्ताणं सिढिलीहोऊणं संजमाइसु ठिए, पच्छा परिचिच्चाणं इहलोगपरलोगावायं अंगीकाऊण य सुदीहं संसारं तेसुं चेव मढदेवउलेसुं अच्चत्थं गथिरे मुच्छिरे ममीकारहंकारेहिं णं अभिभूए सयमेव विचित्तमल्लदामाईहिं णं देवच्चणं काउमब्भुज्जए, जं पुण समयसारं परं इमं सव्वभुवयणं तं दूरसुदूरयरेणं उज्झियंति तंजहा-सव्वे जीवा सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे सत्ता ण हंतव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परियावेयव्वा ण परिघेत्तव्वा ण विराहेयव्वा ण किलामेयव्वा ण उद्दवेयव्वा, जे केई सुहुमा जे केई बायरा जे केई तसा जे केई थावरा जे केई पज्जत्ता जे केई अपज्जत्ता जे केई एगिंदिया जे केई बेंदिया जे केई तेंदिया जे केई चउ-रिंदिया जे केई पंचिंदिया तिविहंतिविहेणं मणेणं वायाए काएणं जं पुण गोयमा! मेहुणं तं एगंतेणं ३ णिच्छयओ ३ बाढंइ तहा आउतेउसमारंभं च सव्वहा सव्वपयारेहिं सयं विवज्जेज्जा मुणीति एस धम्मे धुवे सासए णिइए समिच्च लोगं खेयन्नूहिं पवेइएत्ति ।२६। से भयवं! जे णं केई साहू वा साहुणी वा निग्गंथे अणगारे दव्वत्थयं कुज्जा से णं किमालवेज्जा?, गोयमा! जे णं केई साहू वा साहुणी वा निग्गंथे अणगारे दव्वत्थयं कुज्जा से णं अजयएइ वा असंजएइ वा देवभोइएइ वा देवच्चगेइ वा जाव णं उम्मग्गपट्ठिएइ वा दूरुज्झियसीलेइ वा कुसीलेइ वा सच्छंदयारिएइ वा आलवेज्जा ।२७। एवं गोयमा! तेसिं अणायारपवित्ताणं बहूणं आयरियमयहरादीणं एगे मरगयच्छवी कुवलयप्पहाभिहाणे णाम अणगारे महातवस्सी अहेसि, तस्स णं महामहंते जीवाइपयत्थे सुत्तत्थपरिन्नाणे सुमहंतं चेव संसारसागरे तासुं तासुं जोणीसुं संसरणभयं सव्वहा सव्वपयारेहिं णं अचंतं आसायणाभीरुयत्तणं, तक्कालं तारिसेऽवी अ-संजमे अणायारे बहुसाहम्मियपवत्तिए तहावी सो तित्थयराणमाणं णाइक्कमेइ, अहऽन्नया सो अणिगूहियबलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमे सुसीलगणपरियरिओ सव्वन्नुप्पणीयागमसुत्त त्थोभयाणुसारेणं ववगयरागदोसमोहमिच्छत्तममकाराहंकारो सव्वत्थ अपडिबद्धो, किं बहुणा?, सव्वगुणगणाहिट्ठियसरीरो अणेगगामागरनगरखेडकब्बडमडंबदोणमुहाइसन्निवेसवि-सेसेसुं अणेगेसुं भव्वसत्ताणं संसारचारगविमोक्खणिं सद्धम्मकहं परिकहेंतो विहरिंसु, एवं च वच्चंति दियहा, अन्नया णं सो महाणुभागो विहरमाणो आगओ गोयमा! तेसिं णीयविहारी-

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [२८] + गाथा ॥१२७॥

दीप अनुक्रम [८३९]

णमावासगे, तेहिं च महातवस्सी काऊण सम्माणिओ किइकम्मासणपयाणाइणा समुचिएणं, एवं च सुहनिसन्नो, चिट्ठित्ताणं धम्मकहाइणाविणोएणं पुणो गंतुं पयत्तो, ताहे भणिओ सो महाणुभागो गोयमा! तेहिं दुरंतपंतलक्खणेहिं लिंगोवजीवीहिं भट्टायारुम्मग्गपवत्तगऽभिग्गहीयमिच्छादिट्ठीहिं, जहा णं भयवं! जइ तुमंमिहइं एकं वासारत्तियं चाउम्मासियं पउंजियं तो णमेत्थं एत्तिगे चेइयालंगे भवंति णूणं तुज्झाणत्तीए, ता कीरओ अणुग्गहत्थमम्हाणं इहेव चाउम्मासियं, ताहे भणियं तेण महाणुभागेणं गोयमा! जहा भो भो पियंवए! जइवि जिणालए तहावि सावज्जमिणं णाहं वायामित्तेणंऽपेयं आयरिज्जा, एवं च समयसारपरंतत्तं जहट्ठियं अविवरीयं णीसंकं भणमाणेणं तेसिं मिच्छादिट्ठीलिंगीणं साहुवेसधारीणं मज्झे गोयमा! आसकलियं तित्थयरणामकम्मगोयं तेणं कुवलयप्पभेणं, एगभवावसेसीकओ भवोयही, तत्थ य दिट्ठो अणुल्लविज्जनामसंघमेल्लवगो अहेसि, तेसिं च बहूहिं पावमईहिं लिंगिणियाहिं परोप्परमेगमयं काऊणं गोयमा! तालं दाऊणं विप्पलोइयं चेव तं तस्स महाणुभागसुमहतवस्सिणो कुवलयप्पहाभिहाणं कयं च से सावज्जायरियाभिहाणं, सहकरणं, गयं च पसिद्धीए, एवं सहिज्जमाणोऽवि सो तेणापसत्थसहकरणेणं तहावि गोयमा! ईसिंपि ण कुप्पे । २८। अहऽन्नया तेसिं दुरायाराणं सद्धम्मपरंमुहाणं अगारधम्माणगारधम्मोभयभट्ठाणं लिंगमेत्तनामपव्वइयाणं कालक्कमेणं संजाओ परोप्परं आगमवियारो जहा णं सड्ढगाणमसई संजया चेव मढदेउले पडिजागरेंति खंडपडिए य समारावयंति, अन्नं च जाव करणेज्जं तं पइ समारंभे कज्जमाणे जइस्सावि णं णत्थि दोससंभवं, एवं च केई भणंति-संजमं मोक्खनेयारं, अन्ने भणंति-जहा णं पासायवडिंसए पूयासक्कारवलिविहाणाईसु णं नित्थुच्छप्पणा चेव मोक्खगमणं, एवमेसिमविइयपरमत्थाणं पावकम्माणं जं जेण सिट्ठं सो तं चेवुद्दामुस्सिखलेणं मुहेणं पलवति, ताहे समुट्ठियं वादसंघट्टं, नत्थि य कोई तत्थ आगमकुसलो तेसिं मज्झे जो तत्थ जुत्ताजुत्तं वियारेइ जो य पमाणपुव्वमुवइसइ, तहा एगे भणंति जहा अमुगो अमुग त्थामि चिट्ठे, अन्ने भणंति-अमुगो, अन्ने भणंति-किमित्थ बहुणा पलविएणं?, सव्वेसिमम्हाणं सावज्जायरिओ एत्थ पमाणंति, तेहिं भणियं जहा एवं होउत्ति हक्कारावेह लहुं, तओ हक्काराविओ गोयमा! सो तेहिं सावज्जायरिओ, आगओ दूरदेसाओ अप्पडिबद्धत्ताए विहरमाणो सत्तहिं मासेहिं, जाव णं दिट्ठो एगाए अज्जाए, सा य तं कट्ठुग्गतवचरणसोसियसरीरं चम्मट्ठिसेसतणुं अचंतं तवसिरीए दिप्पंतं सावज्जायरियं पेच्छिय सुविम्हियं तक्कर(क्ख)णा वियक्किउं पयत्ता-अहो किं एस महाणुभागे णं सो अरहा किं वा णं धम्मो चेव मुत्तिमंतो?, किं बहुणा?, तियसिंदवंदाणंपि वंदणिज्जपायजुओ एसत्ति चिंतिऊणं भत्तिभरनिब्भरा आयाहिणपयाहिणं काऊणं उत्तिमंगेणं संघट्टमाणी झडित्ति णिवडिया चलणेसुं गोयमा! तस्स णं सावज्जायरियस्स, दिट्ठो य सो तेहिं दुरायारेहिं पणमिज्जमाणो, अन्नया णं सो तेसिं तत्थ जहा जगगुरूहिं उवइट्ठं तहा चेव गुरूवएसाणुसारेणं आणुपुव्वीए जहट्ठियं सुत्तत्थं वागरेइ तेऽवि तहा चेव सद्दहंति, अन्नया ताव वागरियं गोयमा! जाव णं एक्कारसण्हमंगाणं चोद्दसण्हं पुव्वाणं दुवालसंगस्स णं सुयनाणस्स णवणीयसारभूयं सयलपावपरिहारट्ठकम्मनिम्महणं आगयं इणमेव गच्छमेरापन्नवणं महानिसीहसुयक्खंधस्स पंचममज्झयणं, एत्थेव गोयमा! ताव णं वक्खाणियं जाव णं आगया इमा गाहा ‘जत्थित्थीकरफरिसं अंतरियं कारणेवि उप्पन्ने । अरहाऽवि करेज्ज सयं तं गच्छं मूलगुणमुक्कं ॥ १२७॥ तओ गोयमा! अप्पसंकिएणं चेव चिंतियं तेणं सावज्जायरिएणं-जइ इह एयं जहट्ठियं पन्नवेमि तओ जं मम वंदणगं दाउमाणीए तीए अज्जाए उत्तिमंगेण चलणग्गे पुट्ठे तं सव्वेहिंपि दिट्ठमेएहिंति ता जहा मम सावज्जायरियाभिहाणं कयं तहा अन्नमवि किंचि एत्थसुट्ठंकं काहिंति जेणं तु सव्वलोए अपुज्जो भविस्सं, ता अहमन्नहा सुत्तत्थं पन्नवेमि?, ता णं महती आसायणा, तो किं करियव्वमेत्थंति?, किं एयं गाहं परूवयामि? किं वा ण? अन्नहा वा पन्नवेमि?, अहवा हाहा ण जुत्तमिणं उभयहावि अचंतगरहियं आयहियट्ठीणमेयं, जओ णमेस समयाभिप्पाओ जहा णं-जे भिक्खू दुवालसंगस्स णं सुयनाणस्स असई चुक्कखलियपमाया संकादीसभयत्तेणं पयक्खरमत्ताबिंदुमवि एकं परूविज्जा अन्नहा वा पन्नवेज्जा संदिद्धं वा सुत्तत्थं वक्खाणेज्जा अविहीए अओगस्स वा वक्खाणेज्जा से भिक्खू अणंतसंसारी भवेज्जा, ता किं एत्थं?, जं होही तं च भवउ, जहट्ठियं चेव गुरूवएसाणुसारेणं सुत्तत्थं पवक्खामित्ति चिंतिऊणं गोयमा! पवक्खाया णिखिलावयवविसुद्धा सा तेण गाहा, एयावसरंमि चोइओ गोयमा! सो तेहिं दुरंतपंतलक्खणेहिं जहा जइ एवं ता तुमंपि ताव मूलगुणहीणो जाव णं संभरतु तं जं तहिवसं तीए अज्जाए तुज्झं वंदणगं दाउकामाए पाए उत्तमंगेणं पुट्ठे, ताहे इहलोगायसभीरू खरसत्थ(मच्छ)रीहूओ गोयमा! सो सावज्जायरिओ विचिंतिओ जहा जं मम सावज्जायरियाभिहाणं कयं इमेहिं तहा तं किंपि संपयं काहिंति जे णं तु सव्वलोए अपुज्जो भविस्सं, ता किमित्थं परिहारगं दाहामित्ति चिंतमाणेणं संभरियं तित्थयरवयणं, जहा णं जे केई आयरिएइ वा मयहरएइ वा गच्छाहिवई सुयहरे भवेज्जा से णं जंकिंचि सव्वन्नुणंतनाणीहिं पावाववायट्ठाणं पडिसेहियं तं सव्वसुयाणुसारेणं विन्नाय सव्वहा सव्वपयारेहिं णं णो समायरेज्जा णो णं समायरिज्जमाणं समणुजाणेज्जा, से कोहेण वा माणेण वा मायाए वा लोभेण वा भएण वा हासेण वा गारवेण वा दप्पेण वा पमाएण वा असती चुक्कखलिएण वा

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [२९] + गाथा ॥१२८॥

दीप अनुक्रम [८४३]

दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा तिविहंतिविहेणं मणेणं वायाए काएणं एतेसिमेव पयाणं जे केई विराहगे भवेज्जा से णं भिक्खू भुज्जो २ निंदणिज्जे गरहणिज्जे खिंसणिज्जे दुगुंछणिज्जे सव्वलोगपरिभूए बहुवाहिवेयणापरिगयसरीरे उक्कोसठिईए अणंतसंसारसागरं परिभमेज्जा, तत्थ णं परिभममाणे खणमेक्कंपि न कहिंचि कदाइ निव्वुइं संपावेज्जा, तो पमायगोयरगयस्स णं मे पावाहमाहमहीणसत्तकाउरिसस्स इहइं चेव समुट्ठिया एमहंती आवई जेण ण सक्को अहमेत्थं जुत्तीखमं किंचि पडिउत्तरं पयाउं जे, तहा परलोगे य अणंतभवपरंपरं भममाणो घोरदारुणाणंतसो य दुक्खस्स भागीभविहामिऽहं मंदभग्गोत्ति चिंतयंतोऽवलक्खिओ सो सावज्जायरिओ गोयमा! तेहिं दुरायारपावकम्मदुट्ठसोयारेहिं जहा णं अलियखरमच्छरीभूओ एस, तओ संखुद्धमणं खरमच्छरीभूयं कलिऊणं च भणियं तेहिं दुट्ठसोयारेहिं जहा जाव णं नो छिन्नमिणमो संसयं ताव णं उट्ठं वक्खाणं अत्थि, ता एत्थं तं परिहारगं वायरेज्जा जं पोढजुत्तीखमं कुग्गहणिम्महणपच्चलंति, तओ तेण चिंतियं जहा नाहं अदिन्नेणं परिहारगेण चुक्किमो मेसिं, ता किमित्थ परिहारगं दाहामित्ति चिंतयंतो पुणोवि गोयमा! भणिओ सो तेहिं दुरायारेहिं जहा किमट्ठं चिंतासागरे णिमज्जिऊणं ठिओ?, सिग्घमेत्थं किंचि परिहारगं वयाहि, णवरं तं परिहारगं भणिज्जा जं जहुत्तत्थीकि(त्थिक)याए अवभिचारी, ताहे सुइरं परितप्पिऊणं हियएणं भणियं सावज्जायरिएणं जहा एएणं अन्थेणं जगगुरूहिं वागरियं जं अओगस्स सुत्तत्थं न दायव्वं, जओ 'आमे घडे निहत्तं जहा जलं तं घडं विणासेइ। इय सिद्धंतरहस्सं अप्पाहारं विणासेइ ॥ १२८॥ ताहे पुणोवि तेहिं भणियं जहा किमेयाइं अरडबरडाइं असंबद्धाइं दुब्भासियाइं पलवह?, जइ परिहारगं ण दाउं सक्के ता उप्फिड मुयसु आसणं ऊसर सिग्घं इमाओ ठाणाओ, किं देवस्स रूसेज्जा जत्थ तुमंपि पमाणीकाऊणं सव्वसंघेणं समयसब्भावं वायरेउं जे समाइट्ठो?, तओ पुणोवि सुइरं परितप्पिऊणं गोयमा! अन्नं परिहारगमलभमाणेणं अंगीकाऊणं दीहसंसारं भणियं च सावज्जायरिएणं जहा णं उस्सग्गाववायेहिं आगमो ठिओ, तुब्भे ण याणहेयं, एगंतो मिच्छत्तं, जिणाणमाणामणेगंतो, एयं च वयणं गोयमा! गिम्हायवसंताविएहिं सिहिउलेहिं व अहिणवपाउससजलघणोरहिमिव सबहुमाणं समाइच्छियं तेहिं दुट्ठसोयारेहिं, तओ एगवयणदोसेणं गोयमा! निबंधिऊणाणंतं संसारियत्तणं अपडिकमिऊणं च तस्स पावसमुदायमहाखंधमेलावगस्स मरिऊण उववन्नो वाणमंतरेसु सो सावज्जायरिओ, तओ चुओ समाणो उववन्नो पवसियभत्ताराए पडिवासुदेवपुरोहियधूयाए कुच्छिंसि, अहऽन्नया वियाणिउं तीए जणणीए पुरोहियभज्जाए जहा णं हा हा हा दिन्नं मसिकुच्चयं सव्वनियकुलस्स इमीए दुरायाराए मज्झ धूयाए साहियं च पुरोहियस्स, तओ संतप्पिऊण सुइरं बहुं च हियएण साहारेउं निब्विसया कया सा तेणं पुरोहिएणं, एमहंता असज्झदुन्निवारअयसभीरुणा, अहऽन्नया थेवकालंतरेणं कहिंचि थाममलभमाणी सीउण्हवायविज्झडिया खुरका(हछा)मकंठा दुब्भिक्खदोसेणं पविट्ठा दासत्ताए रसवाणियगस्स गेहे, तत्थ य बहूणं मज्जपाणगाणं संचियं साहरेइ अणुसमयमुच्चिट्ठगंति, अन्नया अणुदिणं साहरमाणीए तमुच्चिट्ठगं दट्ठूणं च बहुमज्जपाणगे मज्जमावियमाणे पोग्गलं च समुद्दिसंते तहेव तीए मज्जमंससोवरिं दोहलगं समुप्पन्नं जाव णं तं बहुमज्जपाणं नडनट्टछत्तचारणभडोड्डचेडतक्करासरिसजातीसु सुज्झियं खुरसीसपुंछकन्नट्ठिमयगयं उच्चिट्ठं वच्छू(उछ्)रखंडं तं समुद्दिसिउं समारद्धा, ताहे तेसु चेव उच्चिट्ठकोडियगेसु जंकिंचि णाहीए मज्झं विवक्कं तमेवासाइउमारद्धा, एवं च कइवयदिणाइक्कमेणं मज्जमंससस्सोवरि दढं गेही संजाया, ताहे तस्सेव रसवाणिजगस्स गेहाउ परिमुसिऊणं किंचि कंसदूसदविणजायं अन्नत्थ विक्किणिऊणं मज्जं समंसं परिभुंजइ, तावं णं विन्नायं तेण रसवाणिज्जगेण, साहियं च नरवइणो, तेणावि वज्झा समाइट्ठा, तत्थ य राउले एसो गोयमा! कुलधम्मो जहा णं जा काइ आवन्नसत्ता नारी अवराहदोसेणं सा जाव णं नो पसूया ताव णं नो वावाएयव्वा, तेहिं विणिउत्तगणिगंतगेहिं सगेहे नेऊण पसूइसमयं जाव णियंतिया रक्खेयव्वा, अहऽन्नया णीया तेहिं हरिएसजाईहिंसगेहिं, कालकमेण पसूया य दारगं तं सावज्जायरियजीवं, तओ पसूयमेत्ता चेव तं बालयं उज्झिऊण पणट्ठा मरणभयाहितत्था सा गोयमा! दिसिमेक्कं गंतूणं, वियाणियं च तेहिं पावेहिं जहा पणट्ठा सा पावकम्मा, साहियं च नरवइणो सूणाहिवईहिं जहा णं देव! पणट्ठा सा दुरायारा कयलिगब्भोवमं दारगमुज्झिऊणं, रन्नावि पडिभणियं-जहा णं जइ नाम सा गया ता गच्छउ तं बालगं पडिवालेज्जासु, सव्वहा तहा कायव्वं जहा तं बालगं ण वावज्जे, गिण्हेसु इमे पंचसहस्सा दविणजायस्स, तओ नरवइणो संदेसेणं सुयमिव परिवालिओ सो पंसुलीतणओ, अन्नया कालकमेणं मओ सो पावकम्मो सूणाहिवई, तओ रन्ना समणुजाणिओ तस्सेव बालगस्स घरसारं, कओ पंचण्ह सयाणं अहिवई, तत्थ य सूणाहिवइपए ठिओ समाणो ताइं तारिसाइं अकरणिज्जाइं समणुट्ठिताणं गओ सो गोयमा! सत्तमाए पुढवीए अपइट्ठाणनामे निरयावासे सावज्जायरियजीवो, एवं तं तत्थ तारिसं घोरपचंडरोइं सुदारुणं दोक्खं तित्तीसं सागरोवमं जाव कहकहवि किलेसेणं समणुभविऊणं इहागओ समाणो उववन्नो अंतरदीवे एगोरुयजाई, तओवि मरिऊणं उववन्नो तिरियजोणीए महिसत्ताए, तत्थ य जाइं काइंपि णारगदुक्खाइं तेसिं तु सरिसनामाइं अणुभविऊणं छव्वीसं संवच्छराणि तओ गोयमा!

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [२९] + गाथा ||१२८||

दीप अनुक्रम [८४३]

मओ समाणो उववन्नो मणुएसु, तओ गओ वासुदेवत्ताए सो सावज्जायरियजीवो, तत्थवि अहाऊयं परिवालिऊणं अणेगसंगामारंभपरिग्गहदोसेण मरिऊण गओ सत्तमाए, तओवि उव्वट्टिऊण सुइरकालं उववन्नो गयकन्नो नाम मणुयजाई, तओवि कुणिमाहारदोसेणं कूरज्झवसायमई गओ मरिऊणं पुणोवि सत्तमाए तहिं चेव अपइट्ठाणे निरयावासे, तओ उव्वट्टिऊणं पुणोवि उववन्नो तिरिएसु महिसत्ताए, तत्थवि णं नरगोवमं दुक्खमणुभवित्ताणं मओ समाणो उववन्नो बालविहवाए पंसुलीमाहणधूयाए कुच्छिंसि, अहऽन्नया निउत्तपच्छन्नगब्भसाडणपाडणखारजुण्णजोगदोसेणं अणेगवाहिवेयणापरिगयसरीरो सिडिहिडंतो कुट्टवाहीए परिगलमाणो सलसलंतकिमिजालेणं खज्जंतो नीहरिओ नरओवमघोरदुक्खनिवासाओ गब्भवासाओ गोयमा! सो सावज्जायरियजीवो, तओ सव्वलोगेहिं निंदिज्जमाणो गरहिज्जमाणो दुगुंछिज्जमाणो खिंसिज्जमाणो सव्वलोगपरिभूओ पाणखाणभोगोवभोगपरिवज्जिओ गब्भवासपभितीए चेव विचित्तसारीरमाणसिगघोरदुक्खसंतत्तो सत्त संवच्छरसयाइं दो मासे य चउरो दिणे य जाव जीविऊणं मओ समाणो उववन्नो वाणमंतरेसुं, तओ चुओ उववन्नो मणुएसुं पुणोवि सूणाहिवत्ताए तओवि तक्कम्मदोसेणं सत्तमाए तओवि उव्वट्टेऊणं उववन्नो तिरिएसुं चक्कियघरंसि गोणत्ताए, तत्थ य चक्कसगडलंगलायट्ठणेणं अहन्निसं जुयारोवणेणं पचिऊण कुहियउव्विग्गं खंधं संमुच्छिए य किमी ताहे अक्खमीहूयं खंधं जुयधरणस्स विण्णाय पट्टीए वाहिउमारद्धो तेणं चक्किएणं, अहऽन्नया कालक्कमेणं जहा खंधं तहा पचिऊण कुहिया पट्ठी, तत्थावि संमुच्छिए किमी, सडिऊण विगयं च पट्ठिचम्मं, ता अकिंचियरं निप्पओयणंति णाऊण मोक्कलिओ गोयमा! तेणं चक्किएणं तं सलसलिंतकिमिजालेहिं णं खज्जमाणं बइछं सावज्जायरियजीवं, तओ मोक्कलिओ समाणो परिसडियपट्ठिचम्मो बहुकायसाणकिमिकुलेहिं सव्वज्झब्भंतरे विलुप्पमाणो एकूणतीसं संवच्छराइं जाव आउयं परिवालेऊणं मओ समाणो उववण्णो अणेगवाहिवेयणापरिगयसरीरो मणुएसुं महाधण्णस्स णं इब्भस्स गेहे, तत्थ य वमणविरेयणखारकडुत्तिक्तकसायतिहलागुग्गलकाढगे आवीयमाणस्स निच्चविसोसणाहिं च असज्झाणुवसम्मघोरदारुणदुक्खेहिं पज्जालियस्सेव गोयमा! गओ निप्फलो तस्स मणुयजम्मो, एवं च गोयमा सावज्जायरियजीवो चोद्दसरज्जुयलोगं जम्ममरणेहिं णं निरंतरं पडियरि(डि)ऊणं सुदीहाणंतकालाओ समुप्पन्नो मणुयत्ताए अवरविदेहे, तत्थ य भागवसेणं लोगाणुवत्तीए गओ तित्थयरस्स वंदणवत्तियाए पडिबुद्धो य पव्वइओ, सिद्धो अ इह तेवीसमतित्थयरपासणामस्स काले, एयं तं गोयमा! सावज्जायरिएण पावियं, से भयवं! किंपच्चइयं तेणाणुभूयं एरिसं दूसहं घोरदारुणं महादुक्खसंनिवायसंघट्टमित्तियकालंति?, गोयमा! जं भणियं तक्कालसमयं जहा णं ‘उस्सग्गावाएहिं आगमो ठिओ, एगंतो मिच्छत्तं, जिणाणमाणा अणेगंतोत्ति’ एयवयणपच्चइयं, से भयवं! किं उस्सग्गावाएहिं णं नो ठियं आगमं?, एगंतं च पन्नविज्जइ?, गोयमा! उस्सग्गावाएहिं चेव पवयणं ठियं, अणेगंतं च पन्नविज्जइ, णो णं एगंतं, णवरं आउक्कायपरिभोगं तेउकायसमारंभं मेहुणासेवणं च एते तओ थाणंतरे एगंतेणं ३ निच्छयओ ३ बाढं ३ सव्वहा सव्वपयारेहिं णं आयहियट्ठीणं निसिद्धंति, एत्थं च सुत्ताइक्कमे सम्मग्गविप्पणासणं उम्मग्गपयरिसणं तओ य आणाभंगं आणाभंगाओ अणंतसंसारी, से भयवं! किं तेण सावज्जायरिएणं मेहुणमासेवियं?, गोयमा! सेवियासेवियं, णो सेवियं णो असेवियं, से भयवं! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ?, गोयमा! जं तीए अज्जाए तक्कालं उत्तिमंगेणं पाए फरिसिए, फरिसिज्जमाणे य णो तेण आउंटिय संवरिए, एएणं अट्ठेणं एवं गोयमा! वुच्चइ, से भयवं! एद्दहमेत्तस्सावि णं एरिसे घोरदुविमोक्खे बद्धपुट्ठनिकाइए कम्मबंधे?, गोयमा! एवमेयं, ण अन्नहत्ति, से भयवं! तेण तित्थयरणामकम्मगोयं आसकलियं एगभवावसेसीकओ आसी भवोयही ता किमेयमणंतसंसारहिंडणंति?, गोयमा! निययपमायदोसेणं, तम्हा एयं वियाणित्ता भवविरहमिच्छमाणेणं गोयमा! सुदिट्ठसमयसारेणं गच्छाहिवइणा सव्वहा सव्वपयारेहिं णं सव्वत्थामेसु अचंतं अप्पमत्तेणं भवियव्वंति बेमि। २९॥ महानिसीहसुयक्खंधस्स दुवालसंगसुयनाणस्स णवणीयसारनामं पंचमं अज्झयणं ५॥ भयवं! जो रत्तिदियहं सिद्धंतं पढइ सुणेइ वक्खाणेइ चिंतए सततं सो किं अणायारमायरे?, ‘सिद्धंतगयमेगंपि, अक्खरं जो वियाणई। सो गोयम! मरणंतेविऽणाचारं नो समायरे। १। से भयवं! ता कीस दसपुव्वी णंदिसेणे महायसे पव्वजं चिच्चा गणिकाइ गेहं पविट्ठो य वुच्चई?, गोयमा! ‘तस्स पसिद्धं मे भोगहलं खलियकारणं। भवभयभीओ तहावि दुयं, सो पव्वज्जमुवागओ॥१॥ पायालं अवि उड्ढमुहं, सग्गं होज्जा अहोमुहं। ण उणो केवलिपन्नत्तं, वयणं अन्नहा भवे ॥२॥ अन्नं सो बहुवाए वा, सुयनिबद्धे वियारिउं। गुरुणो पामूलें मोत्तूणं, लिंगं निव्विसओ गओ॥३॥ तमेव वयणं सरमाणो, दंतभग्गो (दत्तभंगो) सकम्मुणा। भोगहलं कम्मं वेदेइ, बद्धपुट्ठनिकाइयं ॥ ४॥ भयवं! ते केरिसोवाए, सुयनिबद्धे वियारिए। जेणुज्झियसु सामन्नं, अज्जवि पाणे धरेइ सो? ॥५॥ एते ते गोयमोवाए, केवलीहिं पवेइए। जहा विसयपराभूओ, संरेज्जा सुत्तमिमं मुणी ॥ ६॥ तंजहा-तवमुद्ध(मट्ठ)गुणं घोरं, आढवेज्जा सुदुक्करं। जया विसए उदिज्जंति, पडणासण विसं पिबे॥७॥ उब्बंधिऊणं मरियव्वं, नो चरित्तं विराहए। अहएयाइं न सक्केज्जा, ता गुरुणं लिंगं समप्पिया ॥ ८॥ विदेसे जत्थ नागच्छे, पउत्ती तत्थ गंतूणं। अणुन्नयं पालेज्जा, णो णं भविया णिद्धंधसे ॥९॥ ता गोयम! णंदिसेणेणं, गिरिपडणं जाव पत्थुयं। तावायासे इमा वाणी, पडिओवि णो मरिज्ज तं ॥ १०॥ दिसामुहाइं जा जोए, ता पेच्छे चारणं मुणिं। अकाले नत्थि ते मच्चू, विसमविसमादितुं गओ ॥ १॥ (२८७)

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्र पंचमं अध्ययनं समाप्तं

अत्र षष्ठं अध्ययनं- “गीतार्थविहार” आरब्धः

ताहेवि अणहियासेहिं, विसएहिं जाव पीडिओ। ताव चिंता समुप्पन्ना, जहा किं जीविएण मे? ॥ २ ॥ कुंदेन्दुनिम्मलयरागं, तित्थं पावमती अहं। उड्डाहिंतोऽह सुज्झिस्सं, कत्थ गंतुमणारिओ? ॥ ३ ॥ अहवा सलंछणो चंदो, कुंदस्स उण कापहा। कलिकलुसमलकलंकेहिं, वज्जियं जिणसासणं ॥ ४ ॥ ता एयं सयलदारिद्ददुहकिलेसक्खयंकरं। पवयणं खिंसाविंतो, कत्थ गंतूण सुज्झिहं? ॥ ५ ॥ दुग्गटंकं गिरिं रोहुं, अत्ताणं चुन्निमो धुवं। जाव विसयवसो णाहं, किंचिऽत्थुड्डाहं करं ॥ ६ ॥ एवं पुणोवि आरोहुं, टंकुच्छिन्नं गिरीयडं। संवरे किल निरागारं, गयणे पुणरवि भाणियं ॥ ७ ॥ अयाले नत्थि ते मच्चू, चरिमं तुब्भं इमं तणुं। ता बद्धपुट्ठं भोगहलं, वेइत्ता संजमं कुरु ॥ ८ ॥ एवं तु जाव बे वारा, चारणसमणेहिं सेहिओ। ताहे गंतूण सो लिंगं, गुरुपामूले निवेदिउं ॥ ९ ॥ तं सुत्तत्थं सरेमाणो, दूरं देसंतरं गओ। तत्थाहारनिमित्तेणं, वेसाए घरमागओ ॥ २० ॥ धम्मलाभं जा भणई, अत्थलाभं विमग्गिओ। तेणावि सिद्धिजुत्तेणं, एवं भवउत्ति भाणियं ॥ १ ॥ अद्धतेरसकोडीओ, दविणजायस्स जा तहिं। हिरण्णविट्ठिं दावेउं, मंदिरा पडिगच्छइ ॥२॥ उत्तुंगथोरथणवट्टा, गणिगा आलिंगिउं दढं। भन्ने किं जासिमं दविणं, अविहीए दाउ? चुल्लगा! ॥ ३ ॥ तेणवि भवियव्वयं एयं, कलिऊणेयं पभाणियं। जहा जा ते विही इट्ठा, तीए दव्वं प(आ)यच्छसु ॥४॥ गहिऊणाभिग्गहं ताहे, पविट्ठो तीइ मंदिरं। एवं जहा न ताव अहयं, भोयणपाणविहिं करे ॥ ५ ॥ दस दस ण बोहिए जाव, दियहे २ अणूणिगे। पइन्ना जा न पुन्नेसा, काइयमोक्खं न ता करे ॥ ६ ॥ अन्नं च न मे दायव्वा, पव्वज्जोवट्ठियस्सवि। जारिसगं तु गुरुलिंगं, भवे सीसंपि तारिसं ॥ ७ ॥ अखीणत्थं निहीकाउं, लुंचिओ खोसिओवि सो। तहाऽऽराहिओ गणिगाय, बद्धो जह पेमपासेहिं ॥ ८ ॥ आलावाओ पणओ पणयाउ रती रतीइ वीसंभो। वीसंभाओ णेहो पंचविहं वड्ढए पेम्मं ॥ ९ ॥ एवं सो पेम्मपासेहिं, बद्धोऽवि सावगत्तणं। जहोवइट्ठं करेमाणो, दस अहिए वा दिणे दिणे ॥३०॥ पडिबोहिऊण संविग्गगुरुपामूले पवेसई। संपयं बोहिओ सोवि(णी), दुम्मुहेण (ह भणे) जहा तुमं ॥१॥ धम्मं लोगस्स साहेसि, अत्तकज्जंमि मुज्झसि। णूणं विक्केणयं धम्मं, जं सयं णाणुचिट्ठसि ॥ २ ॥ एयं सो वयणं सोच्चा, दुम्मुहस्स सुभासियं। थरथरथरस्स कंपंतो, निंदिउं गरहिउं चिरं ॥ ३ ॥ हा हा हा हा अकज्जं मे, भट्ठसीलेण किं कयं?। जेणं तु सुत्तो-ऽप्पसरे, गुंडिओऽसुइ किमी जहा ॥ ४ ॥ धी धी धी धी अहन्नेणं, पेच्छ जं मेऽणुचिट्ठियं। जच्चकंचणसमऽत्ताणं, असुइसरिसं मए कयं ॥ ५ ॥ खणभंगुरस्स देहस्स, जा विवत्ती ण मे भवे। ता तित्थयरस्स पामूलं, पायच्छित्तं चरामिऽहं ॥ ६ ॥ एसमागच्छती एत्थं, चिट्ठंताणेव गोयमा!। घोरं चरिऊण पायच्छित्तं, संवेगाऽम्हेहिं भासियं ॥ ७ ॥ घोरवीरतवं काउं, असु-हकम्मं खवेत्तु य। सुक्कज्झाणं समारुहिउं, केवलं पप्प सिज्झिही ॥ ८ ॥ ता गोयमेयणाएणं, बहू उवाए वियारिया। लिंगं गुरुस्स अप्पेउं, नंदिसेणेण जह कयं ॥ ९ ॥ उस्सग्गं ता तुमं बुज्झ, सिद्धंतेयं जहट्ठियं। तवंतराउदयं तस्स, महंतं आसि गोयमा! ॥ ४० ॥ तहावि जो विसउइन्ने, तवे घोरमहातवं। अट्ठगुणं तेणमणुचिन्नं, तावि विसए ण णिज्जए ॥ १ ॥ ताहे विसभक्खणं पडणं, अणसणं तेण इच्छियं। एयंपि चारणसमणेहिं, बे वारा जाव सेहिओ ॥२॥ ताव य गुरुस्स रयहरणं, अप्पिय तं देसंतरं गओ। एते ते गोयमोवाए, सुयनिब्बंधे वियाणए ॥ ३ ॥ जहा-जाव गुरुणो न रयहरणं, पव्वज्जा य न अल्लिया। तावाकज्जं न कायव्वं, लिंगमवि जिणदेसियं ॥ ४ ॥ अन्नत्थ ण उज्झियव्वं, गुरुणो मोत्तूण अंजलिं। जइ सो उवसामिउं सक्को, गुरू ता उवसामई ॥ ५ ॥ अह अन्नो उवसमिउं सक्को, तोऽवी तस्स कहिज्जई। गुरुणावि तयं णऽन्नस्स, गिरा वेयव्वं कयाइऽवी ॥ ६ ॥ जो भवियो वीयपरमट्ठो, जगट्ठिइवि-याणगो। एयाइं तु पयाइं जो, गोयमा! णं विडंबए ॥ ७ ॥ मायापवंचडंभेणं, सो भमिही आसडो जहा। भयवं! न याणिमो कोऽवि, माया़सीलो हु आसडो? ॥८॥ किं वा निमित्तमु-वचरिओ, सो भमे बहुदुहट्टिओ। चरिमस्सऽन्नस्स तित्थंमि, गोयमा! कंचणच्छवी ॥ ९ ॥ आयरिओ आसि भूइक्खो, तस्स सीसो स आसडो। महव्वयाइं घेत्तूणं, अह सुत्तत्थं अहि-जिया ॥ ५० ॥ ताव कोऊहलं जायं, णो णं विसएहिं पीडिओ। चिंतेइ य जह सिद्धंते, एरिसो दंसिओ विही ॥ १ ॥ तो तस्स पमाणेणं, गुरुयणं रंजिउं दढं। तवं चउट्ठगुणं काउं, पडणाणसणं विसं ॥ २ ॥ करेहामि जहाऽहंपि, देवयाए निवारिओ। दीहाऊ णत्थि ते मच्चू, भोगे भुंज जहिच्छिए ॥३॥ लिंगं गुरुस्स अप्पेउं, अन्नं देसंतरं वय। भोगहलं वेइया पच्छा, घोरवीरतवं चर ॥ ४ ॥ अहवा हा हा अहं मूढो, आयसल्लेण सल्लिओ। समणाणं णेरिसं जुत्तं, सयमवी मणसि धारिउं ॥ ५ ॥ पच्छा उ मे पच्छित्तं, आलोएत्ता लहुं धरे। अहवणं णं आलोउं, मायावी भन्निमो पुणो ॥ ६ ॥ ता दसवासे आयामं, मासक्खमणस्स पारणे। वीसायंबिलमादीहिं, दो दो मासाण पारणा ॥ ७ ॥ पणुवीसं वासे तत्थ, चंदायणतवेण य। छट्ठ-ट्ठमदसमाइं, अट्ठ वासे यऽणूणगे ॥८॥ महघोरेरिसपच्छित्तं, सयमेवेत्थाणुचरं। गुरुपामूलेऽवि एत्थेयं, पायच्छित्तं मे ण अग्गलं ॥ ९ ॥ अहवा तित्थयरेणेस, किमट्ठं वाइओ विही?। जेणेयमहीयमाणोऽहं, पायच्छित्तस्स मेलिओ? ॥६०॥ अहवा-सोच्चिय जाणेज्ज सव्वन्नू, पच्छित्तं अणुचराम्यहं। जमित्थं दुट्ठचिंतिययं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥ एवं तं कट्ठं घोरं, पायच्छित्तं सयंमती। काऊणंपि ससल्लो सो, वाणमंतरियं गओ ॥ २ ॥ हिट्ठिमोवरिमगेवेयविमाणे तेण गोयमा!। वयंतो आलोइत्ता, जइ तं पच्छित्तं कुव्विया ॥ ३ ॥ वाणमंतर-

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [१] + गाथा ||६४||

दीप अनुक्रम [१०००]

***

देवत्ता, चइऊणं गोयमा!ऽऽसडो । रासहत्ताएँ तिरिच्छेसुं, नरिंदघरमागओ ॥ ४॥ निचं तत्थ वडवाणं, संघट्टणदोसा तहिं । वसणे वाही समुप्पण्णा, किमी एत्थ संमुच्छिए ॥ ५॥ तओ किमिएहिं खज्जंतो, वसणदेसंमि गोयमा ! । मुक्काहारो खिइं लेढे, वियणत्तो ताव साहुणो ॥ ६॥ अदूरेण पवोलेंते, दट्ठूणं जाई सरेत्तु य । निंदिउं गरहिउं आया, अणसणं पडिवज्जिया ॥ ७॥ कागसाणेहिं खज्जंतो, सुद्धभावेणं गोयमा ! । अरहंताणंति सरमाणो, संमं उज्झिय सं तणूं ॥ ८॥ कालं काऊण देविंदमहाघोससमाणिओ । जाओ तं दिव्वं इड्ढिं, समणुभोत्तुं तओ चुओ ॥ ९॥ उववन्नो वेसत्ताए, जा(न)सा नियडी ण पयडिया । तओवि मरिऊणं बहू, अंतपंते कुलेऽडिओ ॥ ७०॥ कालक्कमेणं महुराए, सिवइंदस्स दियायणो । सुओ होऊणं पडिबुद्धो, सामन्नं काउं निबुडो ॥ १॥ एयं तं गोयमा ! सिट्ठं, नियडीपुंजं तु आसडं । जे य सव्वन्नुमुहभणिए, वयणं मणसा विडंवए ॥ २॥ कोऊहलेणं विसयाणं, ण उणं विसएहिं पीडिए । सच्छंदपायच्छित्तेण, भमिओ भवपरंपरं ॥ ३॥ एयं नाऊणमिक्कंपि, सिद्धंतिगमालावगं । जाणमाणो हु उम्मग्गं, कुज्जा जे सेविया ण हि ॥ ४॥ जो पुण सव्वसुयन्नाणं, अट्ठं वा वयणंपि वा । णच्चा वएज्ज मग्गेणं, तस्स अहो ण बज्झई, एयं नाऊण मणसावि, उम्मग्गं नो पव्वत्तए ॥ ५॥ त्ति बेमि, ‘भयवं! अकिच्चं काऊणं, पच्छित्तं जो करेज्ज वा । तस्स लट्ठयरं पुरओ, जं अकिच्चं न कुव्वई? ॥ ६॥ ताऽजुत्तं गोयमा ! मिणमो, वयणं मणसावि धारिउं । जहा काउमकत्तव्वं, पच्छित्तेणं तु सुज्झिहं ॥ ७॥ जो एयं वयणं सोच्चा, सद्दहे अणुचरेइ वा । भट्ठसीलाणं सव्वेसिं, सत्थवाहो स गोयमा ! ॥ ८॥ एसो काउंपि पच्छित्तं, पाणसंदेहकारणं । आणाअवराह दीवसिहं, पविसे सलभो जहा ॥ ९॥ भयवं ! जो बलं विरियं, पुरिसयारपरक्कमं । णिगूहंतो तवं चरइ, पच्छित्तं तस्स किं भवे? ॥ ८०॥ तस्सेयं होइ पच्छित्तं, असढभावस्स गोयमा ! । जो तं थामं वियाणेत्ता, वेरी सन्तिमवेक्खिया ॥ १॥ जो बलं वीरियं सत्तं, पुरिसयारं निगूहए । सो सपच्छित्तपच्छित्तो, सढसीलो नराहमो ॥ २॥ नीयागोयं दुहं घोरनरए सुक्कोसियट्ठितिं । वेदेंतो तिरिजोणीए, हिंडेज्जा चउगईएं सो ॥ ३॥ से भयवं! पावयं कम्मं, परं वेइय समुद्दरे । अणणुभूएण णो मोक्खं, पायच्छित्तेण किं तहिं? ॥४॥ गोयमा ! वासकोडीहिं, जं अणेगाहिं संचियं । तं पच्छित्तरवीपुट्ठं, पावं तुहिणं व विलीयइ ॥ ५॥ घणघोरंधयारतमतिमिस्सा, जह सूरस्स गोयमा ! । पायच्छित्तरविस्सेयं, पावं कम्मं पणस्सए ॥ ६॥ णवरं जइ तं पच्छित्तं, जह भणियं तह समुद्दरे । (बलवीरिय) असढभावो अणिगूहियपुरिसयारपरक्कमे ॥७॥ अन्नं च काउ पच्छित्तं, सव्वथेवं णमणुचरे जो । दरुद्धियसल्लो यऽप्पेसो, दीहं चाउग्गइयं अडे ॥ ८॥ भयवं! कस्सालोएज्जा?, पच्छित्तं को व देज्ज वा?। कस्स व पच्छित्तं देज्जा?, आलोयावेज्ज वा कहं? ॥ ९॥ गोयमालोयणं ताव, केवलीणं बहूसुवि। जोयणसएहिं गंतूण, सुद्धभावेहिं दिज्जए ॥९०॥ चउनाणीणं तयाभावे, एवं ओहि मईसुए । जस्स विमलयरे तस्स, तारतम्मेण दिज्जई ॥ १ ॥ उस्सग्गं पन्नविंतस्स, उस्सग्गे पट्ठियस्स य । उस्सग्गरुहणो चेव, सव्वभावंतरेहिं णं ॥ २॥ उवसंतस्स दंतस्स, संजयस्स तवस्सिणो । समितीगुत्तिपहाणस्स, दढचारित्तस्सासढभाविणो ॥ ३॥ आलोएज्जा पडिच्छेज्जा, दिज्जा दाविज्ज वा परं । अहन्निसं तदुद्दिट्ठं, पायच्छित्तं अणुचरे ॥ ४॥ से भयवं ! कित्तियं तस्स, पच्छित्तं हवइ निच्छियं?। पायच्छित्तस्स ठाणाइं, केवइयाइं? कहेहि मे ॥५॥ गोयमा ! जं सुसीलाणं, समणाणं दसण्ह उ। खलियागयपच्छित्तं, संजई तं नव-गुणं ॥ ६॥ एक्का पावइ पच्छित्तं, जइ सुसीला दढव्वया । अह सीलं विराहेज्जा, ता तं हवइ सयगुणं ॥७॥ तीए पंचेंदिया जीवा, जोणीमज्झे निवासिणो । सामन्नं नव लक्खाइं, सव्वे पासंति केवली ॥ ८॥ केवलनाणस्स ते गम्मा, णोऽकेवली ताइं पासती । ओहिनाणी वियाणेए, णो पासे मणपज्जवी ॥ ९॥ ता पुरिसं संघट्टंती, कोण्हगंमि तिले जहा। सव्वेसु सुसूरावेइ, रेंतुं मत्ता महन्नि(न्ति)या ॥१००॥ चंकम्मंतीइ गाढाइं, काइयं वोसिरंतिया । वावाइज्जा य दो तिन्नि, सेसाइं परियावई ॥१॥ पायच्छित्तस्स ठाणाइं, संखाईयाइं गोयमा !। अणालोइ यंतो हु एक्कंपि, ससल्लमरणं मरे ॥ २॥ सयसहस्सनारीणं, पोट्टं फालित्तु निग्घिणो । सत्तट्ठमासिए गब्भे, चडप्फडंते णिगिंतई ॥३॥ जं तस्स जत्तियं पावं, तित्तियं तं नवं गुणं । एक्कसि त्थी-पसंगेणं, साहू बंधेज्ज मेहुणे ॥ ४॥ साहुणीए सहस्सगुणं, मेहुणेक्कसिं सेविए । कोडीगुणं तु बिज्जेणं, तइए बोही पणस्सई ॥ ५॥ जो साहू इत्थियं दट्ठुं, विसयट्ठो रामेहिई । बोहिल्लाभा परिब्भट्ठो, कहं वराओ स होहीइ? ॥ ६॥ अबोहिलाभियं कम्मं, संजओ अह संजई । मेहुणे सेविए आऊतेउक्काए पबंधई ॥ ७॥ जम्हा तीसुवि एएसु, अवरज्झंतो हु गोयमा !। उम्मग्गमेव ववहारे, मग्गं निट्ठवइ सव्वहा ॥ ८॥ भगवं ! ता एएण नाएणं, जे गारत्थी मउकडे । रत्तिंदिया ण छड्डंति, इत्थीयं तस्स का गई? ॥ ९॥ ते सरीरं सहत्थेणं, छिंदिऊणं तिलंतिलं । अग्गीए जइवि होमंति, तोऽवि सुद्धी ण दीसई ॥ ११०॥ तारिसोवि णिविट्ठिं सो, परदारस्स जई करे। सावगधम्मं च पालेइ, गई पावेइ मज्झिमं ॥१॥ भयवं! सदारसंतोसे, जइ भवे मज्झमं गई । ता सरीरेऽवि होमंतो, कीस सुद्धिं ण पावई? ॥ २॥ सदारं परदारं वा, इत्थी पुरिसो व गोयमा ! । रमंतो बंधए पावं, णो णं भवइ अबंधगो ॥ ३॥ सावगधम्मं जहुत्तं जो, पाले परदारगं चए । जावज्जीवं तिविहेणं, तमणुभावेण सा गई ॥ ४॥ णवरं नियमविहूणस्स, परदारगमण(ग)स्स य । अणियत्तस्स भवे बंधं, णिवित्तीए महाफलं ॥ ५॥

११५०/महानिशीथच्छेदसूत्रं, अध्ययनं-६

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*** अत्र सूत्र-क्रमांक ९०९ एव वर्तते, परन्तु मया स्खलनत्वात् १००० लिखितं | ***(मैने मेरे मूल संपादनमे भूलसे ९०९ के स्थानमे १००० लिख दिया था, आगे भी सूत्र-क्रमांक १००१, १००२, १००३....इसी तरह छपे थे, इसिलिए सभी प्रकाशनोमे यहीं गलति जारी रक्खी है|)

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [१] + गाथा ||११६||

दीप अनुक्रम [१०५२]

सुयेवाणंपि निवित्तिं, जो मणसावि विराहए। सो मओ दुग्गइं गच्छे, मेघमाला जहऽज्जिया ॥ ६ ॥ मेघमालज्जियं नाहं, जाणिमो भुवणबंधव!। मणसावि अणुनिव्वत्तिं, जा खंडिय दुग्गइं गया ॥ ७ ॥ वासुपुज्जस्स तित्थंमि, भोला कालगच्छवी। मेघमालऽज्जिया आसि, गोयमा! मणदुब्बला ॥ ८ ॥ सा-नियमोगासे पक्खं दाउं, काउं भिक्खा य निग्गया। अन्नओ एत्थिणी सारमंदिरोवरि संठिया ॥ ९ ॥ आसन्नमंदिरं अन्नं, लंघित्ता गंतुमिच्छगा। मणसाऽभिनंदेवं जा(व), ताव पज्जलिया दुवे ॥१२०॥ नियमभंगं तयं सुहुमं, तीए तत्थ ण णिंदियं। तंनियमभंगदोसेणं, डज्झित्ता पढमियं गया ॥ १ ॥ एवं नाउं सुहुमंपि, नियमं मा विराहिह। जेच्छिया अक्खयं सोक्खं, अणंतं च अणोवमं ॥ २ ॥ तक्संजमे वएसुं च, नियमो दंडनायगो। तमेव खंडमाणस्स, ण वए णो व संजमे ॥ ३ ॥ आजम्मेणं तु जं पावं, बंधेज्जा मच्छबंधगो। वयभंगं काउमणस्स, तं चेवऽट्ठगुणं भुणे ॥ ४ ॥ सयसहस्सं सलद्धीए, जो-वसामित्तु निक्खमे। वयं नियमखंडंतो, जं सो तं पुन्नमज्जिणे ॥५॥ पवित्ता य निवित्ता य, गारत्थी संजमे तवे। जमणुट्ठिया तयं लाभं, जाव दिक्खा न गिण्हिया ॥ ६ ॥ साहुसाहुणी-वग्गेणं, विन्नायव्वमिह गोयमा!। जेसिं मोत्तूण ऊसासं, नीसासं नाणुजाणियं ॥ ७ ॥ तमवि जयणाए अणुन्नायं, विजयणाए ण सव्वहा। अजयणाइ ऊससंतस्स, कओ धम्मो? कओ तवो? ॥ ८ ॥ भयवं! जावइयं दिट्ठं, तावइयं कहऽणुपालिया। जे भवे अवीयपरमत्थे, किच्चाकिच्चमयाणगे? ॥ ९ ॥ एगंतेणं हियं वयणं, गोयम! दिस्संति केवली। णो बलमोडीइ कारेंति, हत्थे घेत्तूण जंतुणो ॥ १३० ॥ तित्थयरभासिए वयणे, जे तहत्ति अणुपालिया। सिंदा देवगणा तस्स, पाए पणमंति हरिसिया ॥१॥ जे अविइयपरमत्थे, किच्चाकिच्चमजाणगे। अंधोअं-धीए तेसिं समं, जलथलं गड्डठिकरं ॥ २ ॥ गीयत्थो य विहारो, बीओ गीयत्थमीसओ। समणुन्नाओ सुसाहूणं, नत्थि तइयं वियप्पणं ॥ ३ ॥ गीयत्थे जे सुसंविग्गे, अणालस्सी दढ-व्वए। अखलियचारित्ते सययं, रागद्दोसविवज्जए ॥ ४ ॥ निट्ठवियट्ठमयट्ठाणे, समियकसाये जिइंदिए। विहरेज्जा तेसिं सद्धिं तु, ते छउमत्थेवि केवली ॥ ५ ॥ सुहुमस्स पुढवीजीवस्स, जत्थे-गस्स किलामणा। अप्पारंभं तयं बेंति, गोयमा! सव्वकेवली ॥ ६ ॥ सुहुमस्स पुढवीजीवस्स, वावत्ती जत्थ संभव। महारंभं तयं बिंति, गोयमा! सव्वकेवली ॥ ७ ॥ पुढवीकाइयं एकं, दरमलेंतस्स गोयमा!। अस्सायकम्मबंधो हु, दुव्विमोक्खे ससट्ठिए ॥ ८ ॥ एवं च आऊतेऊवाऊ तह वणस्सती। तसकाय मेहुणे तह, चिक्कणं चिणइ पावगं ॥ ९ ॥ तम्हा मेहुणसंकप्पं, पुढवादीण विराहणं। जावज्जीवं दुरंतफलं, तिविहंतिविहेण वज्जए ॥१४०॥ ता जेऽविदियपरमत्थे, गोयमा! णो य जे मुणे। तम्हा ते विवज्जेज्जा, दोग्गईपंथदायगा ॥१॥ गीयत्थस्स उ वयणेणं, विसं हलाहलं पिबे। निव्विकप्पो पभक्खेज्जा, तक्खणा जं समुद्दवे ॥२॥ परमत्थओ विसं तोसं(नो तं), अमयरसायणं खु तं। णिव्विकप्पं णं संसारे, मओवि सो अमयस्समो ॥३॥ अगीयत्थस्स वयणेणं, अमयंपि ण घोट्टए। जेण अयरामरे हविया, जह कीला णो मरिज्जिया ॥ ४ ॥ परमत्थओ ण तं अमयं, संविसं तं हलाहलं। ण तेण अयरामरो होज्जा, भक्खणा निहणं वए ॥'५॥ अगीयत्थकुसीलेहिं, संगं तिविहेण वज्जए। मोक्खमग्गस्सिमे विग्घे, पहंमी तेणगे जहा ॥ ६ ॥ पज्जलियं हुयवहं दट्ठुं, णीसंको तत्थ पविसिउं। अत्ताणंपि डहिज्जासि, नो कुसीले समट्ठिए ॥ ७ ॥ वासलक्खंपि सूलीए, संभिन्नो अच्छिया सुहं। अगीयत्थेण समं एक्कं, खणद्धंपि न संवसे ॥ ८ ॥ विणावि तंतमंतेहिं, घोरदिट्ठीविसं अहिं। डसंतंपि समट्ठीय, णागीयत्थं कुसीलाहमं ॥ ९ ॥ विसं खाएज्ज हलाहलं, तं किर मारेइ तक्खणं। ण करेऽगीयत्थसंसग्गिं, विढवे लक्खंपि जं तहिं ॥१५०॥ सीहं वग्घं पिसायं वा, घोररूवभयंकरं। ओगि-लमाणंपि लीएज्जा, ण कुसीलमगीयत्थं तहा ॥ १ ॥ सत्तजम्मंतरं सत्तुं, अवि मन्निज्जा सहोयरं। वयनियमं जो विराहेज्जा, जणयं पिक्खे तयं रिउं ॥ २ ॥ वरं पविट्ठो जलियं हुयासणं, न यावि नियमं सुहुमं विराहियं। वरं हि मच्चू सुविसुद्धकम्मुणो, न यावि नियमं भंतूण जीवियं ॥ ३ ॥ अगीयत्थत्तदोसेण, गोयमा! ईसरेण उ। जं पत्तं तं निसामेत्ता, लहु गीयत्थो मुणी भवे ॥ ४ ॥ से भयवं! णो वियाणेऽहं, ईसरो कोवि मुणिवरो। किं वा अगीयत्थदोसेणं, पत्तं तेण? कहेहि णो ॥ ५ ॥ चउवीसिगाए अन्नाए, एत्थ भरहंमि गोयमा!। पढमे तित्थकरे जइया, विहीपुव्वेण निवुडे ॥ ६ ॥ तइया निव्वाणमहिमाए, कंतरूवे सुरासुरे। निवयंते उप्पयंते व, दट्ठुं पचंतवासिउ ॥ ७ ॥ अहो अच्छेरयं अज्ज, मच्चलोयंमी पेच्छिमो। ण इंदजाल सुमिणं वावि दिट्ठं कत्थई पुणो ॥ ८ ॥ एवं वीहापोहाए, पुव्विं जाइं सरित्तु सो। मोहं गंतूण खणमेक्कं, मारुयाऽऽसासिओ पुणो ॥ ९ ॥ थरथरयरस्स कंपंतो, निंदिउं गरहिउं चिरं। अत्ताणं गोयमा! धणियं, सामन्नं गहिउमुज्जओ ॥ १६० ॥ अह पंचमुट्ठियं लोयं, जावाढवइ महायसो। सविणयं देवया तस्स, रयहरणं ताव ढोयई ॥ १ ॥ उग्गं कट्ठं तवच्चरणं, तस्स दट्ठूण ईसरो। लोओ पूयं करेमाणो, जाव उ गंतूण पुच्छई ॥ २ ॥ केण तं दिक्खिओ? कत्थ?, उप्पन्नो को कुलो तव?। सुत्तत्थं कस्स पामूले, साइसयं हो समज्जियं? ॥ ३ ॥ सो पच्चएगबुद्धो जा, सव्वं तस्स वियागरे। जाइं कुलं दिक्खा सुत्तं, अत्थं जह य समज्जियं ॥ ४ ॥ तं सोऊण अहन्नो सो, इमं चिंतेइ गोयमा!। अलिया अणारिओ एस, लोगं डंभेण परिमुसे ॥ ५ ॥ ता जारिसमेसं भासेइ, तारिसं सोऽवि जिणवरो। ण किंचित्थ वियारेणं, तुण्हिक्केई चिरंठिए ॥ ६ ॥ अहवा णहि णहि सो भगवं!, देवदाणवपणमिओ। मणोगयंपि जं मज्झ, तंपि चिछ-

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [२] + गाथा ||१६८||

दीप अनुक्रम [११०४]

न्निज संसयं ॥७॥ तावेस जो होउ सो होउ, किं वियारेण एत्थ मे?। अभिणंदामीह पव्वज्जं, सव्वदोक्ख(स)विमोक्खणिं॥८॥ ता पडिगओ जिणिंदस्स, सयासे जा तं णेक्खई। भुवणेसं जिणवरं ताव, गणहरसामी पयट्टिओ ॥९॥परिनिव्वुयंमि भगवंते, धम्मतित्थंकरे जिणे। जिणाभिहियसुत्तत्थं, गणहरो जा परूवई ॥१७०॥ तावमालावगं एयं, वक्खाणंमि समागयं। पुढवीकाइगमेगं जो, वावाए सो असंजओ ॥ १ ॥ ता ईसरो विचिंतेई, सुहुमे पुढविकाइए। सव्वत्थ उद्दक्जिंति, को ताइं रक्खिउं तरे? ॥ २ ॥ हलुईकरेइ अत्ताणं, एत्थं एस महायसो। असद्धेयं जणे सहलं(यले), किमत्थेयं पवक्खई? ॥३॥ अचंतकडयडं एयं, वक्खाणं तस्सवी फुडं। कण्ठसोसो परं लाभे, एरिसं कोऽणुचिट्ठए? ॥ ४ ॥ ता एयं विप्पमोत्तूणं, सामन्नं किंचि मज्झिमं। जं वा तं वा कहे धम्मं, ता लोउऽम्हा ण उट्टई ॥५॥ अहवा हा हा अहं मूढो, पावकम्मी णराहमो। णवरं जइ णाणुचिट्ठामि, अन्नोऽणुचेट्ठती जणो ॥ ६ ॥ जेणेयमणंतनाणीहिं, सव्वजूहिं पवेदियं। जो एहिं अन्नहा वाए, तस्स अट्ठो ण वज्झ(विज्ज)ई ॥७॥ ताहमेयस्स पच्छित्तं, घोरं मइदुक्करं वरं। लहु सिग्घं सुसिग्घयरं, जाव मच्चू ण मे भवे ॥८॥ आसायणाकयं पावं, आसंजेण विकुव्व(किंत)ती। दिव्वं वाससयं पुन्नं, अह सो पच्छित्तमाचरे ॥ ९ ॥ तं तारिसं महाघोरं,पायच्छित्तं सयंमई। काउं पत्तेयबुद्धस्स, सयासे पुणोवि गओ ॥१८०॥तत्थावि जा सुणे वक्खा, तावऽहिगारमिमागयं। पुढवादीण समारंभं, साहू तिविहेण वज्जए॥१॥ दढमूढो हुत्थ जोई ता, ईसरो मुक्खमब्भुओ। चितेतेवं जहित्थ जए, को ण ताइं समारभे?॥२॥ पुढवीए ताव एसेव, समासीणोवि चिट्ठई। अग्गीए रद्धयं खायइ, (सव्वं बीयसमुब्भवं)॥३॥ अन्नंच विणा पाणेणं, खणमेकं जीवए कहं?। ता किंपि तं पचक्खेस, जं पच्चुयमत्थंतियं ॥४॥ इमस्सेव समागच्छे, ण उणेयं कोइ सद्दहे। ता चिट्ठउ ताव एसेत्थं, वरं सो चेव गणहरो ॥५॥ अहवा एसो न सो मज्झं, एक्कोवि भणियं करे। अलिया एवंविहं धम्मं, किंचुद्देसेणं तंपिय॥६॥साहिज्जई जो सुवे किंचि, ण तुणमचंतकडयडं। अहवा चिट्ठंतु तावेए, अहयं सयमेव वागरं॥७॥ सुहंसुहेणं जं धम्मं, सव्वोवि अणुट्ठए जणो। न कालं कडयडस्सऽज्ज, धम्मस्सिति जाव चिंतइ ॥८॥ धडहडिंतोऽसणी ताव, णिवडिओ तस्सोवरिं। गोयम! निहणं गओ ताहे, उववन्नो सत्तमाएँ सो ॥९॥ सासण(मण्ण)सुयनाणसंसग्गपडिणीयत्ताए ईसरो। तत्थ तं दारुणं दुक्खं, नरए अणुभविउं चिरं ॥ १९० ॥ इहागओ समुद्दंमि, महामच्छो भवेउणं। पुणोवि सत्तमाए य, तित्तीसं सागरोवमे ॥ १ ॥ दुब्बिसहं दारुणं दुक्खं, अणुहविऊणिहागओ। तिरियपक्खीसु उववन्नो, कागत्ताए स ईसरो ॥२॥ तओवि पढमियं गंतुं, उव्वट्टित्ता इहागओ। दुट्ठसाणो भवेत्ताणं, पुणरवि पढमियं गओ ॥ ३ ॥ उव्वट्टित्ता तओ इहई, खरो होउं पुणो मओ। उववन्नो रासहत्ताए, छब्भवगहणे निरंतरं ॥ ४ ॥ ताहे मणुस्सजाईए, समुप्पन्नो पुणो मओ।उववन्नो वणयरत्ताए, माणुसत्तं समागओ ॥५॥ तओऽवि मरिउं समुप्पन्नो, मज्जारत्ते स ईसरो। पुणोवि निरए गंतुं, (इह) सीहत्तेणं पुणो मओ ॥ ६ ॥ उववज्जिउं चउत्थीए, सीहत्तेण पुणोऽविह्। मरिऊणं चउत्थीए, गंतुं इह समागओ ॥७॥ तओवि नरयं गंतुं, चक्कियत्तेण ईसरो। तओवि कुट्ठी होऊणं, बहुदुक्खद्दिओ मओ ॥ ८ ॥ किमिएहिं खज्जमाणस्स, पन्नासं संवच्छरे। जाऽकामनिज्जरा जाया, तीए देवेसुववज्जिउं ॥ ९ ॥ तओ इह नरीसत्तं, लद्धूणं सत्तमिं गओ। एवं नरगतिरिच्छेसुं, कुच्छियमणुएसु ईसरो॥२००॥ गोयम! सुइरं परिब्भमिउं, घोरदुक्खसुदुक्खिओ। संपइ गोसालओ जाओ, एस सव्वेवी सरज्जिओ ॥ १ ॥ तम्हा एयं वियाणेत्ता, अचिरा गीयत्थे मुणी । भवेज्जा विदियपरमत्थे, सारासारपरिन्नुए ॥ २ ॥ सारासारमयाणेत्ता, अगीयत्थत्तदोसओ। वयमेत्तेणावि रज्जाए, पावगं जं समज्जियं ॥३॥ तेणं तीए अहन्नाए, जा जा होही नियंतणा। नारयतिरियकुमाणुस्से, तं सोच्चा को धिइं लभे?॥४॥ से भयवं! का उण सा रज्जिया किं वा तीए अगीयदोसेणं वयमेत्तेणंपि पावकम्मं समज्जियं जस्स णं विवागयं सोऊणं णो धिइं लभेज्जा?, गोयमा! णं इहेव भारहे वासे भद्दो नाम आयरिओ अहेसि, तस्स य पंचसए साहूणं महाणुभागाणं दुवालससए निग्गंथीणं, तत्थ य गच्छे चउत्थरसियं ओसावणं तिदंडोब्वित्तं च कढिउदगं विप्पमोत्तूणं चउत्थं न परिभुजइ, अन्नया रज्जानामाए अज्जियाए पुव्वकयअसुहपावकम्मोदएणं सरीरगं कुट्ठवाहीए परिसडिऊणं किमिएहिं समुद्दिसिउमारद्धं, अहऽन्नया परिगलंतपूइरुहिरतणू तं रज्जियं पासिया ताओ चसंजईओ भणंति-जहा हला हला दुक्करकारगे! किमेयंति?, ताहे गोयमा! पडिभणियं तीए महापावकम्माए भग्गलक्खणजम्माए रज्जियाए, जहा एएणं फासुगपाणगेण आविज्जमाणेणं विणट्ठं मे सरीरगंति, जावेयं पलवे तावणं संखुहियं हिययं गोयमा सव्वसंजईसमूहस्स, जहा णं विवज्जामो फासुगपाणगंति, तओ एगाए तत्थ चिंतियं संजईए-जहा णं जइ संपयं चेव ममेयं सरीरगं एगनिमिसब्भंतरेणेव पडिसडिऊणं खंडखंडेहिं परिसडेज्जा तहावि अफासुगोदगं इत्थ जंमे ण परिभुंजामि, फासुगोदगं न परिहरामि, अन्नंच-किं सव्वमेयं फासुगोदगेणं इमीए सरीरगं विणट्ठं?, सव्वहा ण सव्वमेयं, जओ णं पुव्वकयअसुहपावकम्मोदएणं सव्वमेवंविहं हवइत्ति सुट्ठुयरं चिंतिउं पयत्ता, जहा णं भो पेच्छ २ अन्नाणदोसोवहयाए दढमूढहिययाए विगतलज्जाए इमीए महापावकम्माए संसारघोरदुक्खदायगं केरिसं दुट्ठवयणं गिराइयं?, जं मम कन्नविवरेसुंपि णो पविसेज्जत्ति, जओ भवंतरकएणं असुहपावकम्मोदएणं जंकिंचि दारिद्ददुक्खदोहग्गअयसब्भक्खाणकुट्ठाइवाहिकिलेससन्निवायं देहंमि संभवइ, न अन्नहत्ति, जेणं तु एरिसमागमे पढिज्जइ, तंजहा-को देइ कस्स देज्जइ विहियं को हरइ हीरए कस्स?। सयमप्पणो (२८८)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [२] + गाथा ||२०५||

दीप अनुक्रम [११४२]

विढत्तं अछियइ दुहंपि सुक्खंपि॥२०५॥ चिंतमाणीए चेव उप्पन्नं केवलनाणं, कया य देवेहिं केवलिमहिमा, केवलिणावि णरसुरासुराणं पणासियं संसयतमपडलं अजियाणं च, तओ भत्तिभरनिब्भराए पणामपुव्वं पुट्ठो केवली रज्जाए, जहा भयवं! किमट्ठमहं एमहंताणं महावाहिवेयणाणं भायणं संवुत्ता?, ताहे गोयमा! सजलजलहरसुदुंदुहिनिग्घोसमणोहारिगंभीररसरेणं भणियं केवलिणा-जहा सुणसु दुक्करकारिए! जं तुज्झ सरीरविहडणकारणंति, तए रत्तपित्तदूसिए अब्भंतरओ सरीरगे सिणिद्धाहारमाकंठमए कोलियगमीसं परिभुत्तं, अन्नंच एत्थ गच्छे एत्तिए सए साहुसाहुणीणं तहावि जावइएणं अच्छीणि पक्खालिज्जंति तावइयंपि बाहिरपाणगं सागारियट्ठाइनिमित्तेणावि णो णं कयाइ परिभुज्जइ, तए पुण गोमुत्तपडिग्गहणगयाए तस्स मच्छियाहिं भिणिहिणिंतसिंघाणगलालोलियवयणस्स णं सद्दगसुयस्स बाहिरपाणगं संघट्टिऊण मुहं पक्खालियं, तेण य बाहिरपाणयसंघट्टणविराहणेणं ससुरासुरजगवंदाणंपि अलंघणिज्जा गच्छमेरा अइक्कमिया, तं च ण खमियं तुज्झ पवयणदेवयाए, जहा साहूणं साहुणीणं च पाणोवरमेवि ण छि(क)प्पे हत्थेणावि जं कूवतलायपुक्खरिणिसरियाइमतिगयं उदगंति, केवलं तु जमेव विराहियं ववगयसयलदोसं फासुगं तस्स,परिभोगं पन्नत्तं वीयरागेहिं, ता सिक्खवेमि एसा हू दुरायारा जेणऽन्नावि कावि ण एरिसमायारं पवत्तेइत्ति चिंतिऊणं अमुगं २ चुण्णजोगं समुद्दिसमाणाए पक्खित्तं असणमज्झंमि ते देवयाए, तं च ते णोवलक्खिउं सक्कियंति देवयाए चस्थि, एएण कारणेणं ते सरीरं विहडियंति, ण उण फासुदगपरिभोगेणंति, ताहे गोयमा! रज्जाए विभाविय जहा एवमेयं ण अन्नहत्ति, चिंतिऊण विन्नविओ केवली-जहा भयवं! जइ अहं जहुत्तं पायच्छित्तं चरामि ता किं पन्नप्पइ मज्झं एयं तणुं?, तओ केवलिणा भणियं-जहा जइ कोइ पायच्छित्तं पयच्छइ ता पन्नप्पइ, रज्जाए भणियं-जहा भयवं! जहा तुमं चिय पायच्छित्तं पयच्छसि, अन्नो को एरिसमहप्पा?, तओ केवलिणा भणियं-जहा दुक्करकारिए! पयच्छामि अहं ते पच्छित्तं नवरं पच्छित्तमेव णत्थि जेणं ते सुद्धी भवेज्जा, रज्जाए भणियं-भयवं! किं कारणंति?, केवलिणा भणियं-जहा जं ते संजइवंदपुरओ गिराइयं जहा मम फासुयपाणगपरिभोगेण सरीरगं विहडियंति, एयं च दुट्ठपावमहासमुदाएकपिंडं तुह वयणं सोच्चा सखुद्धाओ सव्वाओ चेव इमाओ संजईओ, चिंतियं च एयाहिं-जहा निच्छयओ विमुच्चामो फासुगोदगं, तयज्झवसायस्सालोइयं निंदियं गरहियं चेयाहिं, दिन्नं च मए एयाण पायच्छित्तं, एत्थचएण तव्वयणदोसेणं जं ते समज्जियं अचंतकट्ठविरसदारुणं बद्धपुट्ठनिकाइयं तुंगं पावरासिं तं च तए कुट्ठभगंदरजलोदरवाउगुम्मसासनिरोहहरिसागंडमालाहिं अणेगवाहिवेयणापरिगयसरीराए दारिद्ददुक्खदोहग्गअयसऽब्भक्खाणसंतावुव्वेगसंदीवियपज्जालियाए अणंतेहिं भवग्गहणेहिं सुदीहकालेणं तु अहन्निसाणुभवेयव्वं, एएणं कारणेणं एसेमा गोयम! सा रज्जाजिया जाए अगीयत्थत्तदोसेण वायामेत्तेणेव एमहंतं दुक्खदायगपावकम्मं समज्जियंति।२। ‘अगीयत्थत्तदोसेणं, भावसुद्धिं ण पावए। विणा भावविसुद्धीए, सकलुसमणसो मुणी भवे॥२०६॥ अणुत्थेवक्कलुसहियत्तं, अगीयत्थत्तदोसओ। काऊण लक्खणज्जाए, पत्ता दुक्खपरंपरा॥७॥ तम्हा तं णाउ बुद्धेहिं, सव्वभावेण सव्वहा। गीयत्थेण भवित्ताणं, कायव्वं निक्कलुसं मणं॥८॥ भयवं! नाहं वियाणामि, लक्खणदेवी हु अज्जिया। जा अकलुसमगीयत्थत्ता, काउ पत्ता दुक्खपरंपरा॥९॥ गोयमा! पंचसु भरहेसु एरवएसु उस्सप्पिणीओसप्पिणीए एगेगा सव्वकालं चउवीसिया सासयमवोच्छित्तीए ‘भूया तह य भविस्सई अणाइनिहणाए सुधुवं एत्थ। जगठिइ एवं गोयम! एयाए चउवीसिगाए जा गया॥२१०॥ अतीयकाले असीइमा, तहियं जारिसगे अहयं। सत्तरयणी पमाणेणं, देवदाणवपणमिओ॥१॥ तारिसओ चरिमो तित्थयरो, जया तया जंबुदाडिमो। राया भारिया तस्स, सरिया नाम बहुस्सुया॥२॥ अन्नया सह दइएणं, धूयत्थं बहुउवाइए करे। देवाणं कुलदेवीए, चंदाइच्चगहाण य॥३॥ कालक्कमेण अह जाया, धूया कुवलयलोयणा। तीए तेहिं कयं नामं, लक्खणदेवी अहऽन्नया॥४॥ जाव सा जोव्वणं पत्ता, ताव मुक्का सयंवरा। वरियं तीये वरं पवरं, णयणाणंदकलालयं॥५॥ परिणियमेत्तो मओ सोवि भत्ता, ‘सा मोहं गया पयलं तं, सुयणेणं परियणेण य। तालियंटवाएणं, दुक्खेणं आसासिया॥६॥ ताहे हा हाऽऽकंदं करेऊणं, हियये सीसं च पिट्टिउं। अत्ताणं चोट्टफेट्टाहिं, घट्टियुं दसदिसासु सा॥७॥ तुण्हिक्का बंधुवग्गस्स, वयणेहि तु ससज्झसं। ठियाऽह कइवयदिणेसुं, अन्नया तित्थंकरो॥८॥ बोहिंतो भव्वकमलवणे, केवलनाणदिवायरो। विहरंतो आगओ तत्थ, उज्जाणंमि समोसढो॥९॥ तस्स वंदणभत्तीए, संतेउरबलवाहणो। सव्विड्ढीए गओ राया, धम्मं सोऊण पव्वइओ॥२२०॥ तहिं संतेउरसुयधूओ, सुहपरिणामो अमुच्छिओ। उग्गं कट्ठं तवं घोरं, दुक्करं अणुचिट्ठई॥१॥ अन्नया गणिजोगेहिं, सव्वेऽवी ते पवेसिया। असज्झाइयं काउं, लक्खणदेवी ण पेसिया॥२॥ सा एगंतेवि चिट्ठंती, कीडंते पक्खिरूवए। दट्ठूणेयं विचिंतेइ, सहलमेयाण जीवियं॥३॥ जेणं पेच्छ चिडयस्स, संघट्टंती चिडुहिया। समं पिययमंगेसुं, निव्वुइं परमं जणे॥४॥ अहो तित्थंकरेणऽम्हं, किमट्ठं चक्खुदरिसणं?। पुरिसेत्थीरमंताणं, सव्वहा विणिवारियं॥५॥ ता णिदुक्खो सो अन्नेसिं, सुहदुक्खं ण याणई। अग्गी दहणसहाओवि, दिट्ठीदिट्ठो ण णिड्डहे॥६॥ अहवा न हि न हि भगवं! तं, आणावितं न अन्नहा। जेण मे दट्ठूण कीडंते, पक्खी पक्खुभियं मणं॥७॥ जाया पुरिसाहिलासा मे,

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [२] + गाथा ||२२८||

दीप अनुक्रम [११६७]

जा णं सेवामि मेहुणं । जं सुविणेवि न कायव्वं, तं मे अज्ज विचिंतियं ॥८॥ तहा य एत्थ जम्मंमि, पुरिसो ताव मणेणवि । णिच्छिओ एत्तियं कालं, सुविणंतेवि कहिंचिवि ॥९॥ ता हा हा हा दुरायारा, पावसीला अहन्निया । अट्टमट्टाइं चिंतंती, तित्थयरमासाइमो ॥ २३० ॥ तित्थयरेणावि अचंतं, कट्ठं कडयडं वयं । अइदुद्धरं समादिट्ठं, उग्गं घोरं सुदुद्धरं ॥ १ ॥ ता तिविहेण को सक्को, एयं अणुपालेऊणं ?। वायाकम्मसमायरणेवि, रक्खं णो तइयं मणं ॥ २ ॥ अहवा चिंतिज्जइ दुक्खं, क्मीरइ पुण सुहेण य । ता जो मणसावि कुसीलो, स कुसीलो सव्वकज्जेसु ॥ ३ ॥ ता जं एत्थ इमं खलियं, सहसा तुडिवसेण मे । आगयं तस्स पच्छित्तं, आलोइत्ता लहुं चरं ॥ ४ ॥ सईणं सीलवंतीणं, मज्झे पढमा महाऽऽरिया । घुरंमि दीयए रेहा, एयं सग्गेवि घूसई ॥ ५ ॥ तहा य पायधूली मे, सव्वोवी वंदए जणो । जहा किल सुज्झिज्जएमिमीए, इति पसिद्धा अहं जगे ॥ ६ ॥ ता जइ आलोयणं देमि, ता एयं पयडीभवे । मम भायरो पिया माया, जाणित्ता हुंति दुक्खिए ॥ ७ ॥ अहवा कहवि पमाएणं, जं मे मणसा विचिंतियं । तमालोइयं नच्चा, मज्झ वग्गस्स को वुहे ? ॥ ८ ॥ जावेयं चिंतिउं गच्छे, तावुट्ठंतीएँ कंटगं । फुडियं ढसत्ति पाययले, ता णिसत्ता पडुल्लिया ॥ ९ ॥ चिंतें अहो एत्थ जम्मंमि, मज्झ पायंमि कंटगं । ण कयाइ खुत्तं ता किं, संपयं एत्थ होहिई ?॥२४०॥ अहवा मुणियं तु परमत्थं, जाणगे (मए) अणुमती कया । संघट्टंतीए चिडुल्लीए, सीलं तेण विराहियं ॥१॥ मूयंधकारबहिरंपि, कुट्ठं सिडिविडियं विडं । जाव सीलं न खंडेइ, ता देवेहिं थुवई ॥२॥ कंटगं चेव पाए मे, खुत्तमागासगामियं । एएणं जं महं चुक्का, तं मे लाभं महंतियं ॥ ३ ॥ सत्तवि साहाउ पायाले, इत्थी जा मणसावि य । सीलं खंडेई सा णेइ, कहं जणणीए मे इमं ? ॥ ४ ॥ ता जं ण णिवडई वज्जं, पंसुविट्ठी ममोवरिं । सयसक्कारं ण फुट्टइ वा, हियय तं महच्छेरगं ॥५॥ णवरं जइ मेयमालोयं, ता लोगा एत्थ चिंतिही । जहाऽमुगस्स धूयाए, एयं मणसा अज्झवसियं ॥ ६ ॥ तं नं तहवि पओगेणं, परववएसेणालोइमो । जहा जइ कोइ एयमज्झवसे, पच्छित्तं तस्स होइ किं ? ॥ ७ ॥ तं चिय सोऊण काहामि, तवेणं तत्थ कारणं । जं पुण भयवयाऽऽइट्ठं, घोरमचंतनिट्ठुरं ॥ ८ ॥ तं सव्वं सीलचारित्तं, तारिसं जाव नो कयं । तिविहंतिविहेण णीसल्लं, ताव पावे ण खीयए ॥ ९ ॥ अह सा परववएसेणं, आलोएत्ता तवं चरे । पायच्छित्तनिमित्तेण, पन्नासं संवच्छरे ॥२५०॥ छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं, लयाहिं णेइ दस वरिसे । अकयमकारियसंकप्पिएहिं, परिभूय(भुज्ज)भिक्खलद्धेहिं ॥१॥ चणगेहिं दुन्निवि भुंजिएहिं सोलस मासखमणेहिं । वीसं आयामायंबिलेहिं, आवस्सगं अछड्डेंती ॥२॥ चरई य अदीणमणसा, अह सा पच्छित्तनिमित्तं । ताहे य गोयमा ! चिंते, जं पच्छित्ते कयं तवं ॥ ३ ॥ ता किं तमेव ण क(ग)यं मे, जं मणसा अज्झवसियं तया ?। इयरहेवि उ पच्छित्तं, इयरहेव उ मे कयं ॥४॥ ता किं तत्र समायरियं, चिंतेंती निहणं गया । उग्गं कट्ठं तवं घोरं, दुक्करंपि चरित्तु सा ॥ ५ ॥ सच्छंदपायच्छित्तेणं, सकलुसपरिणामदोसओ । कुत्थियकम्मा समुप्पन्ना, वेसाए परिचेडिया ॥ ६ ॥ खंडोट्टा णाम चडुगारी, मज्झखडहडगवाहिया । विणीया सव्वेसाणं, थेरीए य चउग्गुणं ॥ ७ ॥ लावन्नकंतिकलियावि, थोडा जाया तहावि सा । अन्नया थेरी चिंतेइ, मज्झं थोडाए जारिसं ॥ ८ ॥ लावन्नं कंती रूवं, नत्थि भुवणेवि तारिसं । ता विरंगामि एईए, कन्ने णक्कं सहोट्ठयं ॥ ९ ॥ एसा उ ण जाव विउप्प(जु)जे, मम धूयं कोवि णेच्छिही । अहवा हा हा ण जुत्तमिणं, धूया तुल्लेसावि मे णवरं ॥२६०॥ सुविणीया एसावि, उप्पऽन्नत्थ गच्छिही । ता तह करेमि जह एसा, देसंतरं गयावि य ॥ १ ॥ ण लभेजा कत्थई थामं, आगच्छइ पडिल्लिया । देदेमि से वसीकरणं, गुज्झदेसं तु सीडिमो ॥ २ ॥ निगडाइं च से देमि, भमडउ तेहिं निर्यतिया । एवं सा जुन्नवेसा जा, मणसा परितप्पिउं सुवे ॥३॥ ता खंडोट्टावि सिमिणंमि, गुज्झं सीडिज्जंतगं । पिच्छइ नियडे य दिज्जंते, कन्ने नासं च वट्टियं ॥ ४ ॥ सा सिमिणट्ठं वियारेउं, णट्ठा जह कोइ ण याणइ । कहकहवि परिभमंती सा, गामपुरनगरपट्टणे ॥ ५ ॥ छम्मासेणं तु संपत्ता, सखंडं णाम खेडगं । तत्थ वेसमणसरिसविहवरं डापुत्तस्स सा जुया ॥ ६ ॥ परिणीया महिला ताहे, मच्छरेण पजच्छे(ले) दढं । रोसेण फुरफुरंती सा, जा दियहे केइ चिट्ठइ ॥ ७ ॥ निसाए निब्भरं सइयं, खंडोट्टीं ताव पिच्छई । तं दट्ठुं धाइया चुल्लिं, दित्तं घेत्तुं समागया ॥८॥ तं पक्खिविऊणं गुज्झंते, फालिया जाव हिययं । जाव दुक्खसरक्कंता, चलचुलेवींह केरइ सा ॥९॥ ता सा पुणो विचिंतेइ, जावजीवं ण उड्डइए । ताव देमी से दाहाइं, जेण मे भवसएसुऽवि ॥ २७० ॥ न तरई पिययमं काउं, इणमो पडिसंभरंति या । ताहे गोयम ! आणेउं, चक्कियसालाउ अयमयं ॥ १ ॥ तावितु फुलिंगमेल्लंतं, जोणीए पक्खित्तं फुसं । एवं दुक्खभरक्कंता, तत्थ मरिऊण गोयमा ! ॥ २ ॥ उववन्ना चक्कवट्टिस्स, महिलारयणत्तेण सा । इओ य रंडपुत्तस्स, महिला तं कलेवरं ॥ ३ ॥ जीवुज्झियंपि रोसेण, छेत्तुं सुसुहुमयं सा । साणकागमादीणं, जाव घत्ते दिसोदिसिं ॥४॥ ताव रंडापुत्तोवि, बाहिरभूमीउ आगओ । सो य दोसगुणे णाउं, बहुं मणसा वियप्पिउं । गंतूण सा हुपामूलं, पव्वज्जा काउ निव्वुडो ॥ ५ ॥ अह सो लक्खणदेवीए, जीवो खंडोट्टीयत्तणा । इत्थीरयणं भवित्ताणं, गोयमा ! छट्ठियं गओ ॥ ६ ॥ तत्तेरइयं महादुक्खं, अइघोरं दारुणं तहिं । तिकोणे निरयावासे, सुचिरं दुक्खेण वेइउं ॥ ७ ॥ इहागओ समुप्पन्नो, तिरियजोणीए गोयमा ! । साणत्तेणाह मयकाले, विलग्गो मेहुणे तहिं ॥ ८ ॥ माहिसिएणं कओ घाओ, विच्चे

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [२] + गाथा ||२७९||

दीप अनुक्रम [१२१८]

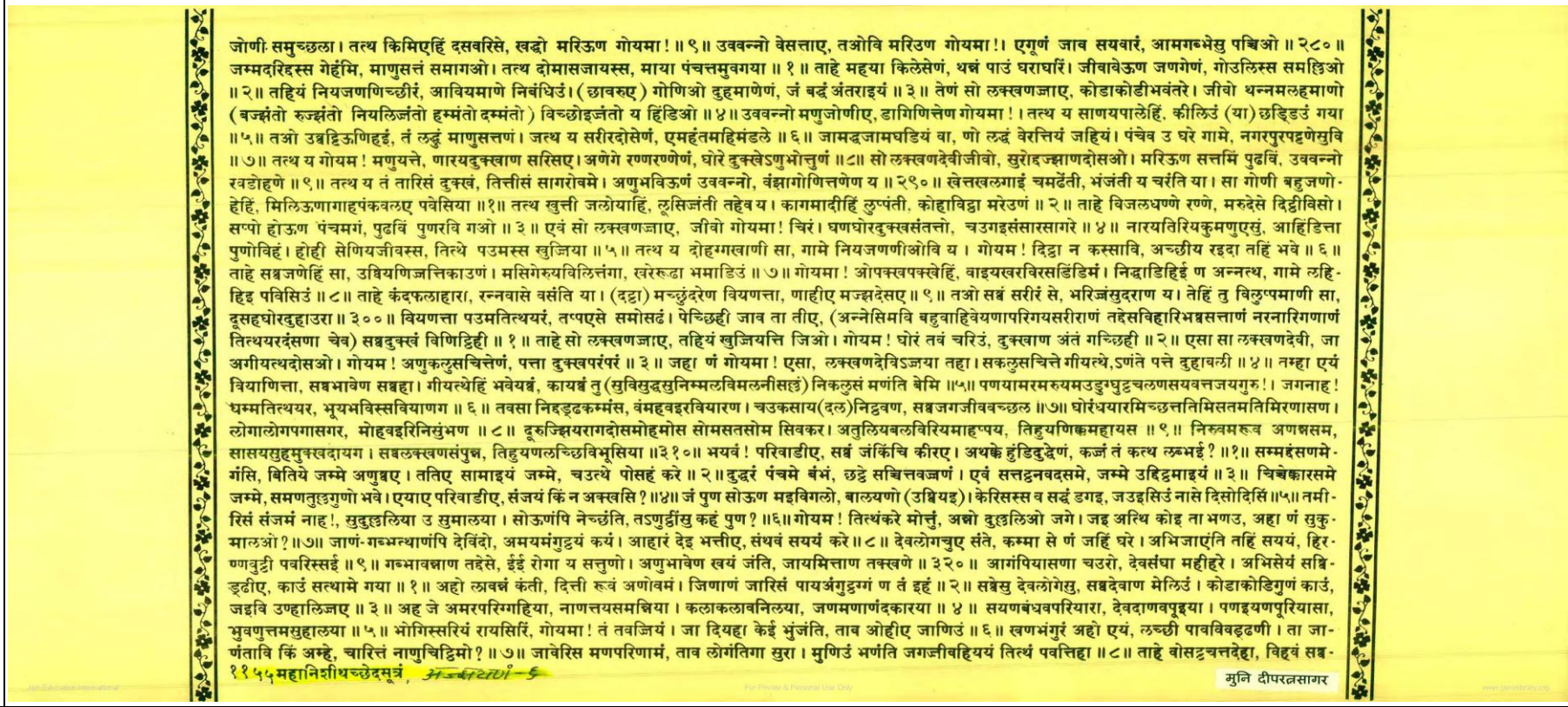

जोणी समुच्छला। तत्थ किमिएहिं दसवरिसे, खद्धो मरिऊण गोयमा!॥९॥ उववन्नो वेसत्ताए, तओवि मरिउण गोयमा!। एगूणं जाव सयवारं, आमगब्भेसु पच्चिओ॥२८०॥ जम्मदरिद्दस्स गेहंमि, माणुसत्तं समागओ। तत्थ दोमासजायस्स, माया पंचत्तमुवगया॥१॥ ताहे महया किलेसेणं, थन्नं पाउं घराघरिं। जीवावेऊण जणगेणं, गोउलिस्स समप्पिओ॥२॥ तहियं नियजणणिच्छीरं, आवियमाणे निबंधिउं। (छावरुए) गोणिओ दुहमाणेणं, जं बद्धं अंतराइयं॥३॥ तेणं सो लक्खणज्जाए, कोडाकोडीभवंतरे। जीवो थन्नमलहमाणो (बज्झंतो रुज्झंतो नियलिज्जंतो हम्मंतो दम्मंतो) विच्छोइज्जंतो य हिंडिओ॥४॥ उववन्नो मणुजोणीए, डागिणित्तेण गोयमा!। तत्थ य साणयपालेहिं, कीलिउं (या) छड्डिउं गया॥५॥ तओ उव्वट्टिऊणिहई, तं लद्धं माणुसत्तणं। जत्थ य सरीरदोसेणं, एमहंतमहिमंडले॥६॥ जामद्धजामघडियं वा, णो लद्धं वेरत्तियं जहियं। पंचेव उ घरे गामे, नगरपुरपट्टणेसुवि॥७॥ तत्थ य गोयम! मणुयत्ते, णारयदुक्खाण सरिसए। अणेगे रण्णरण्णेणं, घोरे दुक्खेऽणुभोत्तुणं॥८॥ सो लक्खणदेवीजीवो, सुरोद्दज्झाणदोसओ। मरिऊण सत्तमिं पुढविं, उववन्नो रवडोहणे॥९॥ तत्थ य तं तारिसं दुक्खं, तित्तीसं सागरोवमे। अणुभविऊणं उववन्नो, वंझागोणित्तणेण य॥२९०॥ खेत्तखलगाइं चमढेंती, भंजंती य चरंति या। सा गोणी बहुजणोहेहिं, मिलिऊणागाहपंकवलए पवेसिया॥१॥ तत्थ खुत्ती जलोयाहिं, लूसिज्जंती तहेव य। कागमादीहिं लुप्पंती, कोहाविट्ठा मरेउणं॥२॥ ताहे विजलधण्णे रण्णे, मरुदेसे दिट्ठीविसो। सप्पो होऊण पंचमगं, पुढविं पुणरवि गओ॥३॥ एवं सो लक्खणज्जाए, जीवो गोयमा! चिरं। घणघोरदुक्खसंतत्तो, चउगइसंसारसागरे॥४॥ नारयतिरियकुमणुएसुं, आहिंडित्ता पुणोविहं। होही सेणियजीवस्स, तित्थे पउमस्स खुज्जिया॥५॥ तत्थ य दोहग्गखाणी सा, गामे नियजणणीओवि य। गोयम! दिट्ठा न कस्सावि, अच्छीय रइदा तहिं भवे॥६॥ ताहे सव्वजणेहिं सा, उव्वियणिज्जत्तिकाउणं। मसिगेरुयविलित्तंगा, खरेरूढा भमाडिउं॥७॥ गोयमा! ओपक्खपक्खेहिं, वाइयखरविरसडिंडिमं। निद्धाडिहिई ण अन्नत्थ, गामे लहिहिइ पविसिउं॥८॥ ताहे कंदफलाहारा, रन्नवासे वसंति या। (दट्ठा) मच्छुंदरेण वियणत्ता, णाहीए मज्झदेसए॥९॥ तओ सव्वं सरीरं से, भरिज्जंसुदराण य। तेहिं तु विलुप्पमाणी सा, दूसहघोरदुहाउरा॥३००॥ वियणत्ता पउमतित्थयरं, तप्पएसे समोसढं। पेच्छिहीं जाव ता तीए, (अन्नेसिमवि बहुवाहिवेयणापरिगयसरीराणं तहेसविहारिभव्वसत्ताणं नरनारिगणाणं तित्थयरदंसणा चेव) सव्वदुक्खं विणिट्ठिही॥१॥ ताहे सो लक्खणज्जाए, तहियं खुज्जियत्ति जिओ। गोयम! घोरं तवं चरिउं, दुक्खाण अंतं गच्छिहीं॥२॥ एसा सा लक्खणदेवी, जा अगीयत्थदोसओ। गोयम! अणुकलुसचित्तेणं, पत्ता दुक्खपरंपरं॥३॥ जहा णं गोयमा! एसा, लक्खणदेविऽज्जया तहा। सकलुसचित्ते गीयत्थे,ऽणंते पत्ते दुहावली॥४॥ तम्हा एयं वियाणित्ता, सव्वभावेण सव्वहा। गीयत्थेहिं भवेयव्वं, कायव्वं तु (सुविसुद्धसुनिम्मलविमलनीसल्लं) निकलुसं मणंति बेमि॥५॥ पणयामरमरुयमउडुग्घुट्ठचलणसयवत्तजयगुरु!। जगनाह! धम्मतित्थयर, भूयभविस्सवियाणग॥६॥ तवसा निद्दड्ढकम्मंस, वंमहवइरवियारण। चउकसाय(दल)निट्ठवण, सव्वजगजीववच्छल॥७॥ घोरंधयारमिच्छत्ततिमिसतमतिमिरणासण। लोगालोगपगासगर, मोहवइरिनिसुंभण॥८॥ दूरुज्झियरागदोसमोहमोस सोमसतसोम सिवकर। अतुलियबलविरियमाहप्पय, तिहुयणिक्कमहायस॥९॥ निरुवमरूव अणन्नसम, सासयसुहमुक्खदायग। सव्वलक्खणसंपुन्न, तिहुयणलच्छिविभूसिया॥३१०॥ भयवं! परिवाडीए, सव्वं जंकिंचि कीरए। अथके हुंडिदुद्देणं, कज्जं तं कत्थ लब्भई?॥१॥ सम्मद्दंसणमेगंसि, बितिये जम्मे अणुव्वए। ततिए सामाइयं जम्मे, चउत्थे पोसहं करे॥२॥ दुद्धरं पंचमे बंभं, छट्ठे सच्चित्तवज्जणं। एवं सत्तट्ठनवदसमे, जम्मे उद्दिट्ठमाइयं॥३॥ चिच्चेक्कारसमे जम्मे, समणतुल्लगुणो भवे। एयाए परिवाडीए, संजयं किं न अक्खसि?॥४॥ जं पुण सोऊण मइविगलो, बालयणो (उव्वियइ)। केरिसस्स व सद्धं डगइ, जउइसिउं नासे दिसोदिसिं॥५॥ तमीरिसं संजमं नाह!, सुदुल्लहिया उ सुमालया। सोऊणंपि नेच्छंति, तऽणुट्ठींसु कहं पुण?॥६॥ गोयम! तित्थंकरे मोत्तुं, अन्नो दुल्लहिओ जगे। जइ अत्थि कोइ ता भणउ, अहा णं सुकुमालओ?॥७॥ जाणं-गब्भन्थाणंपि देविंदो, अमयमंगुट्ठयं कयं। आहारं देइ भत्तीए, संथवं सययं करे॥८॥ देवलोगचुए संते, कम्मा से णं जहिं घरे। अभिजाएंति तहिं सययं, हिरण्णवुट्ठी पवरिस्सई॥९॥ गब्भावत्ताण तहेसे, ईई रोगा य सत्तुणो। अणुभावेण खयं जंति, जायमित्ताण तक्खणे॥३२०॥ आगंपियासणा चउरो, देवसंघा महीहरे। अभिसेयं सव्विड्ढीए, काउं सत्थामे गया॥१॥ अहो लावन्नं कंती, दित्ती रूवं अणोवमं। जिणाणं जारिसं पायअंगुट्ठग्गं ण तं इहं॥२॥ सव्वेसु देवलोगेसु, सव्वदेवाण मेलिउं। कोडाकोडिगुणं काउं, जइवि उण्हालिज्जए॥३॥ अह जे अमरपरिग्गहिया, नाणत्तयसमन्निया। कलाकलावनिलया, जणमणाणंदकारया॥४॥ सयणबंधवपरियारा, देवदाणवपूइया। पणइयणपूरियासा, भुवणुत्तमसुहालया॥५॥ भोगिस्सरियं रायसिरिं, गोयमा! तं तवजियं। जा दियहा केई भुंजंति, ताव ओहीए जाणिउं॥६॥ खणभंगुरं अहो एयं, लच्छी पावविवड्ढणी। ता जाणंतावि किं अम्हे, चारित्तं नाणुचिट्ठिमो?॥७॥ जावेरिस मणपरिणामं, ताव लोगंतिगा सुरा। मुणिउं भणंति जगज्जीवहियय तित्थं पवत्तिहा॥८॥ ताहे वोसट्ठचत्तदेहा, विहवं सव्व-

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [२] + गाथा ||३२९||

दीप अनुक्रम [१२६८]

जगुत्तमं। गोयमा! तणमिव परिचिच्चा, जं इंदाणवि दुल्लहं ॥९॥ नीसंगा उग्गं कट्ठं, घोरं अइदुक्करं तवं। भुयणस्सवि उक्कट्ठं, समुप्पायं चरंति ते ॥३३०॥ जे पुण खरहरफुट्टसिरे, एग-जम्मसुहेसिणो। तेसिं दुल्लियाणंपि, सुदुठुवि नो हियइच्छियं ॥१॥ गोयम! महुबिंदुस्सेव, जावइयं तावइयं सुहं। मरणंतेवी न संपज्जे, कयरं दुल्लियत्तणं? ॥२॥ अहवा गोयम! पच्चक्खं, पेच्छय जारिसयं नरा। दुल्लियं सुहमणुहुंति, जं निसुणिज्जा न कोइवी ॥ ३ ॥ केई कारेंति मासल्लिं, हालियगोवालत्तणं। दासत्तं तह पेसत्तं, गोडत्तं सिप्पे बहु ॥४॥ ओलग्गं किसि-वाणिज्जं, पाणचायकिलेसियं। दालिद्दडविहवत्तणं केई, कम्मं काउण घराघरिं ॥५॥ अत्ताणं विगोवेउं, ढिणिढिणिते अ हिंडिउं। नग्गुग्घाडकिलेसेणं, जो समज्जंति परिह(हिर)णं ॥६॥ जर-जुन्नफुट्टसयछिद्दं, लद्धं कहकहवि ओढणं। जा अज्जा कल्लिं करिमो, फट्टं ता तमवि परिह(पहि)रणं ॥७॥ तहावि गोयमा! बुज्झ, फुडवियडपरिफुडं। एतेसिं चेव मज्झाउ, अणंतरं भणि-याण कस्सई ॥८॥ लोयं लोयाचारं च, चिच्चा सयणकियं तहा। भोगोवभोगं दाणं च, भोत्तूणं कदसणासणं ॥९॥ धाविउं गुप्पिउं सुइरं, खिज्जिऊण अहन्निसं। कागणिं कागणीकाओ, अद्धं पाय विसोवगं ॥ ३४० ॥ कत्थइ कहिंचि कालेणं, लक्खं कोडिं च मेलिउं। जा एगिच्छा मई पुन्ना, बीया णो संपज्जए ॥ १ ॥ एरिसयं दुल्लियत्तं, सुकुमालत्तं च गोयमा!। धम्मारंभंमि संपडइ, कम्मारंभे न संपडे ॥२॥ जेणं जस्स मुहे कवलं, गंडी अन्नेहिं धज्जए। भूमीए न ह(ठ)वए पायं, इत्थीलक्खेसु कीडए ॥३॥ तस्साविणं भवे इच्छा, अन्नं सोऊण सारियं। समुद्दहामि तं देसं, अह सो आणं पडिच्छउ ॥ ४ ॥ सामभेओवपयाणाइं, अह सो सहसा पउंजिउं। तस्स साहसतुलणट्ठा, गूढचरिएण वच्चइ ॥५॥ एगागी कप्पडाबीओ, दुग्गा-रन्नं गिरी सरी। लंघित्ता बहुकालेणं, दुक्खदुक्खं पत्तो तहिं ॥ ६ ॥ दुक्खं खुक्खामकंठो सो, जा भमडे घराघरिं। जायंतो च्छिद्दमम्माइं, तत्थ जइ कहवि ण णज्जए ॥७॥ ता जीवंतो ण चुक्केज्जा, अह पुन्नेहिं समुद्धरे। तओ णं परिवत्तिय देहं, तारिसो स गिहे विसे ॥ ८ ॥ को तं सि परियणो सन्ने?, ताहे सो असणाइसु। नियचरियं पायडेऊण, जुज्झसज्जो भवेउण ॥९॥ सव्वबल(जाण)थामेणं, खंडाखंडेण जुज्झिउं। अह तं नरिंदं निज्जिणिइ, अहवा तेण पराजिए ॥३५०॥ बहुपहारगलंतरुहिरंगो, गयतुरयाउद्ध(ह) अहोमुहो। णिवडइ रणभूमीए, गोयमा! सो जया तया ॥१॥ तं तस्स दुल्लियत्तं, सुकुमालत्तं कहिं वए?। जो केवलं सहत्थेणं, अहोभागं च धोविउं ॥२॥ निच्छंतो पायं ठविउं, भूमीए न कयाइवि। एरिसोऽवी स दुल्लिओ, एयावत्थमुवागओ ॥ ३ ॥ जइ भन्ने धम्मचिट्ठे ता, पडिभणइ न सक्किमो। तो गोयमा! अहन्नाणं, पावकम्माण पाणिणं ॥४॥ धम्मट्ठाणंमि मई, न कयावि भविस्सए। एएसिं इमो धम्मो, इक्कजंमीण भासए ॥५॥ जहा खंतपियंताणं, सव्वं अम्हाण होहिइ। ता जो जमिच्छे तं तस्स, जइ अणुकूलं पवेयए ॥६॥ ता वयनियमविहूणावि, मोक्खं इच्छंति पाणिणो। एए एते ण रूसंति, एरिसं चिय कहेयव्वं ॥७॥ णवरं ण मोक्खो एयाणं, मुसावायं व आवई। अन्नंच रागं दोसं च मोहं च, भयच्छंदाणुवत्तिणं ॥ ८ ॥ तित्थंकराणं णो भूयं, णो भवेज्जा उ गोयमा!। मुसावायं ण भासंते, गोयमा! तित्थंकरे ॥९॥ जेण तु केवलनाणेण, तेसिं पच्चक्खगं जगं। भूयं भव्वं भविस्सं च, पुन्नं पावं तहेव य ॥३६०॥ जंकिंचि तिसुवि लोएसु, तं सव्वं तेसि पायडं। पायालं अवि उड्ढमुहं, सग्गं एज्जा अहोमुहं ॥१॥ णूणं तित्थयरमुहभणियं, वयणं होज्ज न अन्नहा। नाणं दंसणचारित्तं, तवं घोरं सुदुक्करं ॥२॥ सोग्गइ-मग्गो फुडो एस, परूवंती जहट्ठिअं। अन्नहा न तित्थयरा, वाया मणसा व कम्मुणा ॥३॥ भणंति जइवि भुवणस्स, पलयं हवइ तक्खणे। जं हियं सव्वजगजीवपाणभूयाण केवलं, तं अणुकंपाए तित्थयरा, धम्मं भासंति अवितहं ॥४॥ जेणं तु समणुचिन्नेणं, दोहग्गदुक्खदारिद्दरोगसोगकुगइभयं। ण भविज्जा उ बिइएणं, संतावुव्वेवगे तहा ॥५॥ भयवं! णो एरिसं भणिमो, जह छंदं अणुवत्तय। णवरमेयं तु पुच्छामो, जो जं सक्के स तं करे? ॥ ६ ॥ गोयमा! णेरिसं जुत्तं, खणं मणसा विचिंतिउं। अह जइ एवं भवे णायं, तावं धारे हअं बलं ॥ ७ ॥ घयऊरे खंडरब्बाए, एक्को सकेइ खाइयं। अन्नो समंसमज्जाई, अन्नो रमिऊण एत्थियं ॥ ८ ॥ अन्नो एयंपि नो सक्के, अन्नो जोएइ पक्खयं। अन्नो चडवडमुहे एसु (अन्नो एयंपि) भणिऊण ण सक्कुणोई ॥९॥ चोरियं जारियं अन्नो, अन्नो किंचि ण सक्कुणोई। भोत्तुं मोत्तुं सत्थरिए, सक्के चिट्ठेत्तु मंचगे ॥३७०॥ मिच्छामि दुक्कडमियं हंत, एरिसं नो भणाम-ऽहं। गोयमा! अन्नंपि जं भणसि, तंपि तुज्झ कहेमऽहं ॥१॥ एत्थ जम्मे नरो कोई, कसिणुग्गं संजमं तवं। जइ णो सकइ काउं जे, तहवि सोगइपिवासिओ ॥२॥ नियमं पक्खिवी-रस्स, एगं वालउप्पाडणं। रयहरणस्सेगियं दसियं, एत्तियंतु प(रि)धारियं ॥३॥ (सकुणोइ) एयंपि न जावजीवं, पालेउं ता इमस्सवी। गोयमा! तुब्भ बुद्धीए, सिद्धिं खेत्तस्सऽओ परं ॥४॥ मंडवियाए भवेयव्वं, दुक्करकारि भवेत्तु य। णवरं एयारिसं भवियं, किमट्ठं गोयमा! पयं? ॥५॥ पुणो तं एयं पुच्छंमी, ‘तित्थकरे चउन्नाणी, ससुरासुरजगपूइए। निच्छियंसिज्झि-यव्वेऽवि, तंमि जम्मे न अन्नए, जम्मे ॥६॥ (तहावि) अणिगूहित्ता बलं विरियं, पुरिसयारपरक्कमं। उग्गं कट्ठं तवं घोरं, दुक्करं अणुचरंति ते ॥७॥ ता अन्नेसुवि सत्तेसुं, चउगइसंसार दुक्खभीएसु। (जं जहेव तित्थयरा भणंति) तहेव समणुट्ठेयव्वं, गोयम! सव्वं जहट्ठियं ॥८॥ जं पुण गोयम! ते भणियं, परिवाडीए कीरइ। अथके हुंडिदुद्देणं, कज्जं तं कत्थ लब्भए? ॥९॥ तत्थवि गोयम! दिट्ठंतं, महासमुद्दंमि कच्छभो। अन्नेसि मगरमादीणं, संघट्टा भीउवट्टओ ॥३८०॥ बुडनिब्बुड करेमाणो (सबलीसहोब्भली) पेल्लापेल्लीए कत्थई। (२८९)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [२] + गाथा ||३८१||

दीप अनुक्रम [१३२०]

(उल्लीरिजंतो) तट्ठो णासंतो धावंतो, पलायंतो दिसोदिसिं ॥ १ ॥ उच्छलं पच्छलं, हीलणं बहुविहं तहिं। सहंतो थाममलहंतो, खणनिमिसंपि कत्थई ॥ २ ॥ कहकहवि दुक्खसंतत्तो, सुबहुकालेहिं तं जलं। अवगाहंतो गओ उवरिं, पउमिणीसंडसंघणं ॥ ३ ॥ छिद्दं महया किलेसेणं, लद्धुं ता तत्थ पेच्छई। गहनक्खत्तपरियरियं, कोमुइचंदं खहेऽमले ॥ ४ ॥ दिप्पंतकु-वलयकल्हारं, कुमुयसयवत्तवणप्फइं। कुरुलियंते हंसकारंडे, चक्कवाए सुणेइ य ॥ ५ ॥ जमदिट्ठं सत्तसुवि साहासु (अब्भुअं चंदमंडलं)। तं ददठुं विम्हिओ खणं, चिंतइ एयं जहा होही ॥ ६ ॥ एयं तं सग्गं ताऽहं, (बंधवाणं पमोययं) बंधवाणं पयंसिमो। बहुकालेणं गवेसेउं, ते घेत्तूण समागओ ॥ ७ ॥ घणघोरंधयाररयणीए, भद्दवकिण्हचउद्दसीहिं तु। ण पेच्छे जाव तं रिद्धिं, बहुकाल निहालिउं ॥ ८ ॥ पुण कच्छभो नु जह उ, तहावि तं रिद्धिं न पेच्छइ। एवं चउगईभवगहणे, दुल्लभे माणुसत्तणे ॥ ९ ॥ अहिंसालक्खणं धम्मं, लहिऊणं जो पमायई। सो पुण बहुभ-वलक्खेसु, दुक्खेहिं माणुसत्तणं, लद्धुंपि न लब्भई धम्मं, तं रिद्धिं कच्छभो जहा ॥ ३९० ॥ दियहाइं दो व तिन्नि व, अद्धाणं होइ जं तु लग्गेण। सव्वायरेण तस्सवि, संबलयं लेइ पवि-संतो ॥ १ ॥ जो पुण दीहपवासो चुल्लसीईजोणिलक्खनियमेणं। तस्स तवसीलमइयं संबलयं किं न चिंतेह? ॥ २ ॥ जह २ पहरे दियहे मासे संवच्छरे य वोलंति। तह२ गोयम! जाणसु दुक्खे आसन्नयं मरणं ॥ ३ ॥ जस्स न नज्जइ कालं न य वेला नेय दियहपरिमाणं। नाएवि नत्थि कोइवि जगंमि अजरामरो एत्थं ॥ ४ ॥ पावो पमायवसओ जीवो संसारकज्जमुज्जुत्तो। दुक्खेहिं न निविन्नो सुक्खेहिं न गोयमा! तिप्पे ॥ ५ ॥ जीवेण जाणि उ विसज्जियाणि जाईसएसु देहाणि। थेवेहिं तओ सयलंपि तिहुयणं होज्ज पडिहत्थं ॥ ६ ॥ नहदंतमुद्धभमुह-क्खिकेस जीवेण विप्पमुक्केसुवि। तेसुवि हविज्ज कुलसेलमेरुगिरिसन्निभे कूडे ॥ ७ ॥ हिमवंतमलयमंदरदीवोदहिधरणिसरिसरासीओ। अहिययरो आहारो जीवेणाहारिओ अणंत-हुत्तो ॥ ८ ॥ गुरुदुक्खभरुक्कंतस्स अंसुनिवाएण जं जलं गलियं। तं अगडतलायनईसमुद्दमाईसु णवि होज्जा ॥ ९ ॥ आवीयं थणछीरं सागरसलिलाउ बहुयरं होज्जा। संसारंमि अणंते अबलाजोणीएं एक्काए ॥ ४०० ॥ सत्ताहविवन्नसुकुहियसाणजोणीए मज्झदेसंमि। किमियत्तण केवलएण जाणि मुक्काणि देहाणि ॥ १ ॥ तेसिं सत्तमपुढवीए सिद्धिखेत्तं च याव उक्कुरुडं। चोद्दसरज्जुं लोगं व अणंतभागेणवि भरेज्जा ॥ २ ॥ पत्ते य कामभोगे कालमणंतं इहं सउवभोगे। अप्पुव्वं चिय मन्नइ जीवो तहवि य विसयसोक्खं ॥ ३ ॥ जह कच्छुल्लो कच्छुं कंडुयमाणो दुहं मुणइ सोक्खं। मोहाउरा मणुस्सा तह कामदुहं सुहं विंति ॥ ४ ॥ जाणंति अणुभवंति य जम्मजरामरणसंभवे दुक्खे। न य विसएसु विरज्जति (गोयमा!) दुग्गइगमणपत्थिए जीवे ॥ ५ ॥ सव्वगहाणं पभवो महागहो सव्वदोसपायट्टी। कामग्गहो दुरप्पा जेणऽभिभूयं जगं सव्वं (तस्स वसं जे गया पाणी) ॥ ६ ॥ जाणंति जडा भोगिड्ढिसंपया सव्वमेव धम्मफलं। तहवि दढमूढहियए पावं काऊण दोग्गइं जंति ॥ ७ ॥ वच्चइ खणेण जीवो पित्तानलधाउसिंभखोभेहिं। उज्जमह मा विसीयह तरतमजोगो इमो दुलहो ॥ ८ ॥ पंचिंदियत्तणं माणुसत्तणं आय-रिए जणे सुकुलं। साहुसमागमसुणणासद्दहणाऽरोगपव्वज्जा ॥ ९ ॥ सुलअहिविसविसूइयपाणियसत्थग्गिसंभमेहिं च। देहंतरसंकमणं करेइ जीवो मुहुत्तेण ॥ ४१० ॥ जावाउ सावसेसं जाव थेवोवि अत्थि ववसाओ। ताव करेज्ज अप्पहियं मा तप्पिहहा पुणो पच्छा ॥ १ ॥ सुरधणुविज्जुखणदिट्ठनट्ठसंझाणुरागसिमिणसमं। देहं इति तु वियलइ मम्मयभंडं व जलभरियं ॥ २ ॥ इय जाव ण चुक्कसि एरिसस्स खणभंगुरस्स देहस्स। उग्गं कट्ठं घोरं चरसु तवं नत्थि परिवाडी ॥ ३ ॥ गोयमोत्ति! 'वाससहस्संपि जई काऊणं संजमं सुविउलंपि। अंते किलिट्ठभावो नवि सुज्झइ कंडरीउव्व ॥ ४ ॥ अप्पेणवि कालेणं केइ जहागहियसीलसामन्ना। साहंति नियय कज्जं पोंडरियमहारिसिव्व जहा ॥ ५ ॥ ण अ संसारंमि सुहं जाइजरामरणदुक्खगहियस्स। जीवस्स अत्थि जम्हा तम्हा मोक्खो उवाएओ ॥ ४१६ ॥ सव्वपयारेहिं सव्वहा सव्वभावभावंतरेहिं णं गोयमोत्ति बेमि ॥ महानिसीहसुयक्खंधस्स छट्ठमज्झयणं गीयत्थववहारं नाम समत्तं ६ ॥ 'भयवं! ता एयनाएणं, जं भणियं आसि मे तुमं (जहा)। परिवाडीए (तच्चं) किं न अक्कवसि, पायच्छित्तं तत्थ मज्झवी ॥ १ ॥ हवइ गोयम! पच्छित्तं, जइ तुमं तमालंबसि। नवरं धम्मवियारो ते, कओ सुवियारिओ फुडो ॥ २ ॥ ण होइ तस्स पच्छित्तं, पुणरवि पुच्छेज्ज गोयमा!। संदेहं जाव देहत्थं, मिच्छत्तं ताव निच्छयं ॥ ३ ॥ मिच्छत्तेणवि अभिभूए, तित्थयरस्स विभासियं। वयणं लंघित्तु विवरीयं, वाएत्ताणं पविसंति ॥ ४ ॥ (घोरतमतिमिरबहलंधयारं पायालं) णवरं सुवियारिउं काउं, तित्थयरा सयमेव य। भणंति तं जहा चेव, गोयमा! समणुट्ठए ॥ ५ ॥ अत्थेगे गोयमा! पाणी, जे पव्वज्जिय जहा तहा। अविहीए तह चरे धम्मं, जह संसारा ण मुच्चए ॥ ६ ॥ से भयवं! कयरे णं से विहीसीलोगो?, गोयमा! इमे णं से विहीसिलोगो, तंजहा-चिइवंदणं पडिकमणं, जीवाइतत्तसब्भावं। समिइंदियदमगुत्ती, कसायनिग्गहणमुवओगं ॥ ७ ॥ नाऊण सो वीसत्थो सामायारिं कियाकलावं च। आलोइय नी-सल्लो आगब्भा परमसंविग्गो ॥ ८ ॥ जम्मजरमरणभीओ चउगइसंसारकम्मदहणट्ठा। पइदियहं हियएणं एय अणवरय झायंतो ॥ ९ ॥ जरमरणमयणपउरे रोगकिलेसाइबहुविहनरंगे। कम्मट्ठकसायागाहगहिरभवजलहिमज्झंमि ॥ १० ॥ भमिहामि भट्ठसम्मत्तनाणचारित्तलद्धवरपोओ। कालं अणोरपारं अंतं दुक्खाणमलभंतो ॥ १ ॥ ता कइया सो दियहो जत्थाहं सत्तु-

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्र षष्ठं अध्ययनं समाप्तं

अत्र सप्तमं अध्ययनं/(चूलिका-१)- “एकांतनिर्जरा” आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [१] + गाथा ॥१२॥ दीप अनुक्रम [१३६८]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

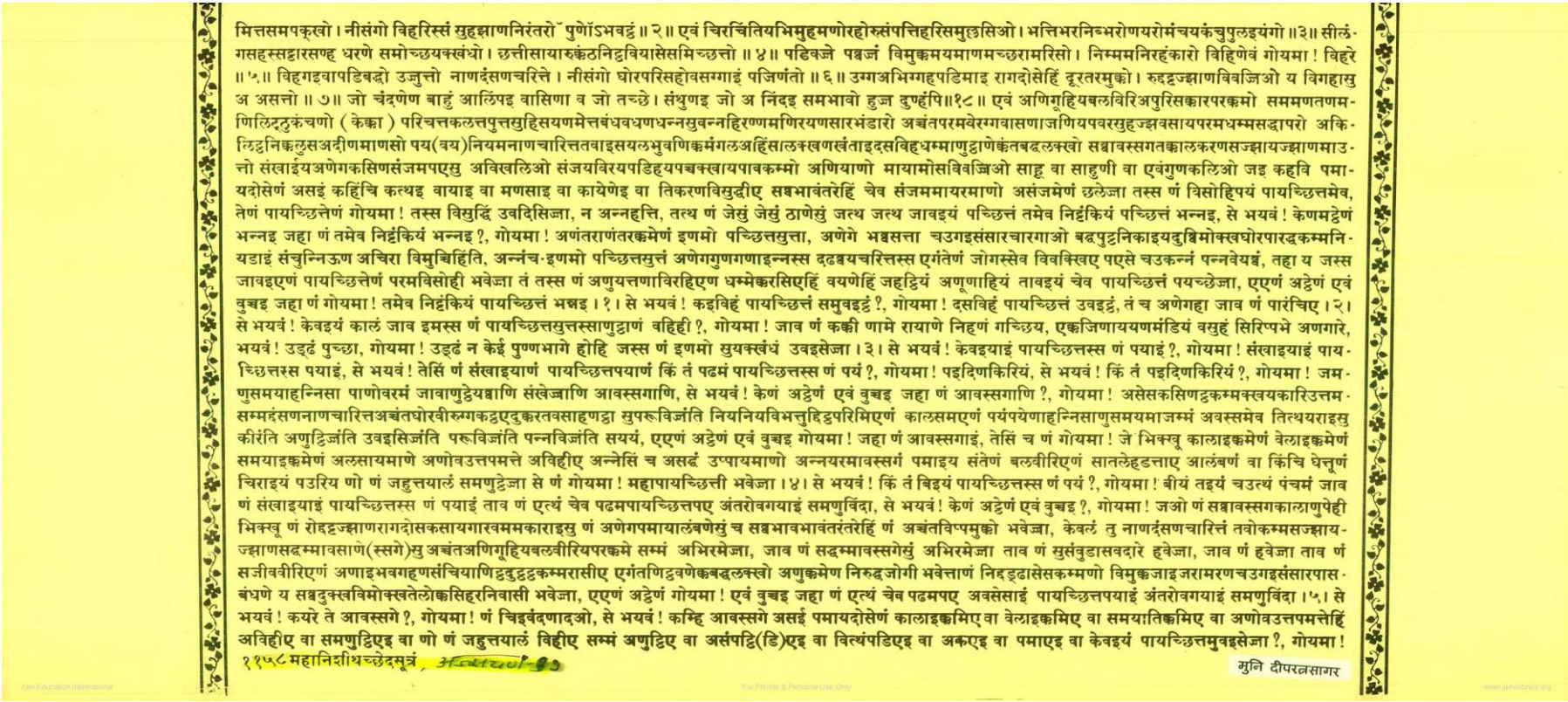

मित्तसमपक्खो। नीसंगो विहरिस्सं सुहझाणनिरंतरो पुणोऽभवट्ठं॥२॥ एवं चिरचिंतियभिमुहमणोरहोरुसंपत्तिहरिसमुल्लसिओ। भत्तिभरनिब्भरोणयरोमंचयकंचुपुलइयंगो॥३॥ सीलंगसहस्सट्ठारसण्ह धरणे समोच्छयक्खंधो। छत्तीसायारुकंठनिट्ठवियासेसमिच्छत्तो॥४॥ पडिवज्जे पव्वज्जं विमुक्कमयमाणमच्छरामरिसो। निम्ममनिरहंकारो विहिणेवं गोयमा! विहरे॥५॥ विहगइवापडिबद्धो उज्जुत्तो नाणदंसणचरित्ते। नीसंगो घोरपरिसहोवसग्गाइं पजिणंतो॥६॥ उग्गअभिग्गहपडिमाइ रागदोसेहिं दूरतरमुक्को। रुद्दट्टज्झाणविवज्जिओ य विगहासु अ असत्तो॥७॥ जो चंदणेण बाहुं आलिंपइ वासिणा व जो तच्छे। संथुणइ जो अ निंदइ समभावो हुज्ज दुण्हंपि॥१८॥ एवं अणिगूहियबलविरिअपुरिसक्कारपरक्कमो सममणतणमणिलिट्ठकंचणो (केका) परिचत्तकलत्तपुत्तसुहिसयणमेत्तबंधवधणधन्नसुवन्नहिरण्णमणिरयणसारभंडारो अचंतपरमवेरग्गवासणाजणियपवरसुहज्झवसायपरमधम्मसद्धापरो अकिलिट्ठनिक्कलुसअदीणमाणसो पय(वय)नियमनाणचारित्ततवाइसयलभुवणिक्कमंगलअहिंसालक्खणखंताइदसविहधम्माणुट्ठाणेक्कंतबद्धलक्खो सव्वावस्सगतक्कालकरणसज्झायज्झाणमाउत्तो संखाईयअणेगकसिणसंजमपएसु अविखलिओ संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मो अणियाणो मायामोसविवज्जिओ साहू वा साहुणी वा एवंगुणकलिओ जइ कहवि पमायदोसेणं असइं कहिंचि कत्थइ वायाइ वा मणसाइ वा कायेणेइ वा तिकरणविसुद्धीए सव्वभावंतरेहिं चेव संजममायरमाणो असंजमेणं छलेज्जा तस्स णं विसोहिपयं पायच्छित्तमेव, तेणं पायच्छित्तेणं गोयमा! तस्स विसुद्धिं उवदिसिज्जा, न अन्नहत्ति, तत्थ णं जेसुं जेसुं ठाणेसुं जत्थ जत्थ जावइयं पच्छित्तं तमेव निट्ठंकियं पच्छित्तं भन्नइ, से भयवं! केणमट्ठेणं भन्नइ जहा णं तमेव निट्ठंकियं भन्नइ?, गोयमा! अणंतराणंतरक्कमेणं इणमो पच्छित्तसुत्ता, अणेगे भवसत्ता चउगइसंसारचारगाओ बद्धपुट्ठनिकाइयदुब्बिमोक्खघोरपारद्धकम्मनियडाइं संचुन्निऊण अचिरा विमुचिहिंति, अन्नंच·इणमो पच्छित्तसुत्तं अणेगगुणगणाइन्नस्स दढव्वयचरित्तस्स एगंतेणं जोगस्सेव विवक्खिए पएसे चउकन्नं पन्नवेयव्वं, तहा य जस्स जावइएणं पायच्छित्तेणं परमविसोही भवेज्जा तं तस्स णं अणुयत्तणाविरहिएण धम्मेक्करसिएहिं वयणेहिं जहट्ठियं अणूणाहियं तावइयं चेव पायच्छित्तं पयच्छेज्जा, एएणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा णं गोयमा! तमेव निट्ठंकियं पायच्छित्तं भन्नइ।१। से भयवं! कइविहं पायच्छित्तं समुवइट्ठं?, गोयमा! दसविहं पायच्छित्तं उवइट्ठं, तं च अणेगहा जाव णं पारंचिए।२। से भयवं! केवइयं कालं जाव इमस्स णं पायच्छित्तसुत्तस्साणुट्ठाणं वहिही?, गोयमा! जाव णं कक्की णामे रायाणे निहणं गच्छिय, एक्कजिणाययणमंडियं वसुहं सिरिप्पभे अणगारे, भयवं! उड्ढं पुच्छा, गोयमा! उड्ढं न केई पुण्णभागे होहि जस्स णं इणमो सुयक्खंधं उवइसेज्जा।३। से भयवं! केवइयाइं पायच्छित्तस्स णं पयाइं?, गोयमा! संखाइयाइं पायच्छित्तस्स पयाइं, से भयवं! तेसिं णं संखाइयाणं पायच्छित्तपयाणं किं तं पढमं पायच्छित्तस्स णं पयं?, गोयमा! पइदिणकिरियं, से भयवं! किं तं पइदिणकिरियं?, गोयमा! जमणुसमयाहन्निसा पाणोवरमं जावाणुट्ठेयव्वाणि संखेज्जाणि आवस्सगाणि, से भयवं! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा णं आवस्सगाणि?, गोयमा! असेसकसिणट्ठकम्मक्खयकारिउत्तमसम्मदंसणनाणचारित्तअचंतघोरवीरुग्गकट्ठएट्ठकरतवसाहणट्ठा सुपरूविज्जंति नियनियविभत्तुद्दिट्ठपरिमिएणं कालसमएणं पर्यपयेणाहन्निसाणुसमयमाजम्मं अवस्समेव तित्थयराइसु कीरंति अणुट्ठिज्जंति उवइसिज्जंति परूविज्जंति पन्नविज्जंति सयय, एएणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ गोयमा! जहा णं आवस्सगाइं, तेसिं च णं गोयमा! जे भिक्खू कालाइक्कमेणं वेलाइक्कमेणं समयाइक्कमेणं अलसायमाणे अणोवउत्तपमत्ते अविहीए अन्नेसिं च असद्धं उप्पायमाणो अन्नयरमावस्सगं पमाइय संतेणं बलवीरिएणं सातलेहडत्ताए आलंबणं वा किंचि घेत्तूणं चिराइयं पउरिय णो णं जहुत्तयालं समणुट्ठेज्जा से णं गोयमा! महापायच्छित्ती भवेजा।४। से भयवं! किं तं विइयं पायच्छित्तस्स णं पयं?, गोयमा! बीयं तइयं चउत्थं पंचमं जाव णं संखाइयाइं पायच्छित्तस्स णं पयाइं ताव णं एत्थं चेव पढमपायच्छित्तपए अंतरोवगयाइं समणुविंदा, से भयवं! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ?, गोयमा! जओ णं सव्वावस्सगकालाणुपेही भिक्खू णं रोद्दट्टज्झाणरागदोसकसायगारवममकाराइसु णं अणेगपमायालंबणेसुं च सव्वभावभावंतरंतरेहिं णं अचंतविप्पमुक्को भवेज्जा, केवलं तु नाणदंसणचारित्तं तवोकम्मसज्झायज्झाणसद्धम्मावसाणे(स्सगे)सु अचंतअणिगूहियबलवीरियपरक्कमे सम्मं अभिरमेज्जा, जाव णं सद्धम्मावस्सगेसुं अभिरमेज्जा ताव णं सुसंवुडासवदारे हवेज्जा, जाव णं हवेज्जा ताव णं सजीववीरिएणं अणाइभवगहणसंचियाणिट्ठदुट्ठकम्मरासीए एगंतणिट्ठवणेक्कबद्धलक्खो अणुक्कमेण निरुद्धजोगी भवेत्ताणं निहट्ठढासेसकम्मणो विमुक्कजाइजरामरणचउगइसंसारपासबंधणे य सव्वदुक्खविमोक्खतेलोक्कसिहरनिवासी भवेज्जा, एएणं अट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जहा णं एत्थं चेव पढमपए अवसेसाइं पायच्छित्तपयाइं अंतरोवगयाइं समणुविंदा।५। से भयवं! कयरे ते आवस्सगे?, गोयमा! णं चिइवंदणादओ, से भयवं! कम्हि आवस्सगे असई पमायदोसेणं कालाइक्कमिए वा वेलाइक्कमिए वा समयातिक्कमिए वा अणोवउत्तपमत्तेहिं अविहीए वा समणुट्ठिएइ वा णो णं जहुत्तयालं विहीए सम्मं अणुट्ठिए वा असंपट्ठि(डि)एइ वा वित्थंपडिएइ वा अकएइ वा पमाएइ वा केवइयं पायच्छित्तमुवइसेज्जा?, गोयमा!

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [६] + गाथा ||१८|| दीप अनुक्रम [१३८०]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

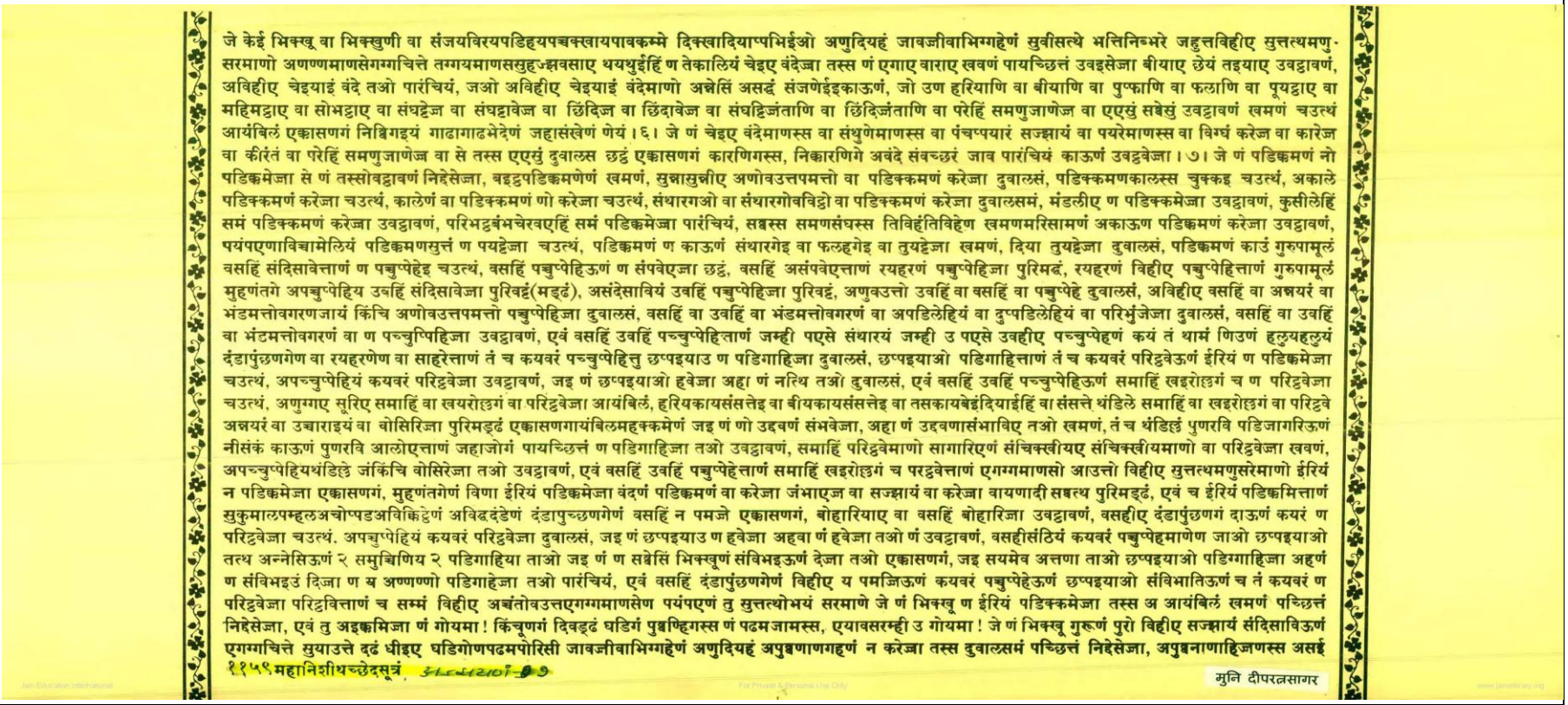

जे केई भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिक्खादियाप्पभिईओ अणुदियहं जावज्जीवाभिग्गहेणं सुवीसत्थे भत्तिनिब्भरे जहुत्तविहीए सुत्तत्थमणुसरमाणो अणण्णमाणसेगग्गचित्ते तग्गयमाणससुहज्झवसाए थयथुईहिं ण तेकालियं चेइए वंदेज्जा तस्स णं एगाए वाराए खवणं पायच्छित्तं उवइसेज्जा बीयाए छेयं तइयाए उवट्ठावणं, अविहीए चेइयाइं वंदे तओ पारंचियं, जओ अविहीए चेइयाइं वंदेमाणो अन्नेसिं असद्दं संजणेईइकाऊणं, जो उण हरियाणि वा बीयाणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा पूयट्ठाए वा महिमट्ठाए वा सोभट्ठाए वा संघट्टेज्ज वा संघट्टावेज्ज वा छिंदिज्ज वा छिंदावेज्ज वा संघट्टिज्जंताणि वा छिंदिज्जंताणि वा परेहिं समणुजाणेज्ज वा एएसुं सबेसुं उवट्टावणं खमणं चउत्थं आयंबिलं एक्कासणगं निव्विगइयं गाढागाढभेदेणं जहासंखेणं णेयं।६। जे णं चेइए वंदेमाणस्स वा संथुणेमाणस्स वा पंचप्पयारं सज्झायं वा पयरेमाणस्स वा विग्घं करेज्ज वा कारेज्ज वा कीरंतं वा परेहिं समणुजाणेज्ज वा से तस्स एएसुं दुवालस छट्ठं एक्कासणगं कारणिगस्स, निकारणिगे अबंदे संवच्छरं जाव पारंचियं काऊणं उवट्टवेज्जा।७। जे णं पडिक्कमणं नो पडिक्कमेज्जा से णं तस्सोवट्ठावणं निद्देसेज्जा, बइट्ठपडिक्कमणेणं खमणं, सुन्नासुन्नीए अणोवउत्तपमत्तो वा पडिक्कमणं करेज्जा दुवालसं, पडिक्कमणकालस्स चुक्कइ चउत्थं, अकाले पडिक्कमणं करेज्जा चउत्थं, कालेणं वा पडिक्कमणं णो करेज्जा चउत्थं, संथारगओ वा संथारगोवविट्ठो वा पडिक्कमणं करेज्जा दुवालसमं, मंडलीए ण पडिक्कमेज्जा उवट्ठावणं, कुसीलेहिं समं पडिक्कमणं करेज्जा उवट्ठावणं, परिभट्ठबंभचेरवएहिं समं पडिक्कमेज्जा पारंचियं, सव्वस्स समणसंघस्स तिविहंतिविहेण खमणमरिसामणं अकाऊण पडिक्कमणं करेज्जा उवट्ठावणं, पयंपएणाविचामेलियं पडिक्कमणसुत्तं ण पयट्टेज्जा चउत्थं, पडिक्कमणं ण काऊणं संथारगेइ वा फलहगेइ वा तुयट्टेज्जा खमणं, दिया तुयट्टेज्जा दुवालसं, पडिक्कमणं काउं गुरुपामूलं वसहिं संदिसावेत्ताणं ण पच्चुप्पेहेइ चउत्थं, वसहिं पच्चुप्पेहिऊणं ण संपवेएज्जा छट्ठं, वसहिं असंपवेएत्ताणं रयहरणं पच्चुप्पेहिज्जा पुरिमड्ढं, रयहरणं विहीए पच्चुप्पेहित्ताणं गुरुपामूलं मुहणंतगे अपच्चुप्पेहिय उवहिं संदिसावेज्जा पुरिवड्ढं(मड्ढं), असंदेसाविय उवहिं पच्चुप्पेहिज्जा पुरिवड्ढं, अणुक्उत्तो उवहिं वा वसहिं वा पच्चुप्पेहे दुवालसं, अविहीए वसहिं वा अन्नयरं वा भंडमत्तोवगरणजायं किंचि अणोवउत्तपमत्तो पच्चुप्पेहिज्जा दुवालसं, वसहिं वा उवहिं वा भंडमत्तोवगरणं वा अपडिलेहियं वा दुप्पडिलेहियं वा परिभुंजेज्जा दुवालसं, वसहिं वा उवहिं वा भंडमत्तोवगरणं वा ण पच्चुप्पिहिज्जा उवट्ठावणं, एवं वसहिं उवहिं पच्चुप्पेहित्ताणं जम्ही पएसे संथारयं जम्ही उ पएसे उवहीए पच्चुप्पेहणं कयं तं थामं णिउणं हलुयहलुयं दंडापुंछणगेण वा रयहरणेण वा साहरेत्ताणं तं च कयवरं पच्चुप्पेहित्तु छप्पइयाउ ण पडिगाहिज्जा दुवालसं, छप्पइयाओ पडिगाहित्ताणं तं च कयवरं परिट्ठवेऊणं ईरियं ण पडिक्कमेज्जा चउत्थं, अपच्चुप्पेहियं कयवरं परिट्ठवेज्जा उवट्ठावणं, जइ णं छप्पइयाओ हवेज्जा अहा णं नत्थि तओ दुवालसं, एवं वसहिं उवहिं पच्चुप्पेहिऊणं समाहिं खइरोल्लगं च ण परिट्ठवेज्जा चउत्थं, अणुग्गए सूरिए समाहिं वा खयरोल्लगं वा परिट्ठवेज्जा आयंबिलं, हरियकायसंसत्तेइ वा बीयकायसंसत्तेइ वा तसकायबेइंदियाईहिं वा संसत्ते थंडिले समाहिं वा खइरोल्लगं वा परिट्ठवे अन्नयरं वा उच्चाराइयं वा वोसिरिज्जा पुरिमड्ढं एक्कासणगायंबिलमहक्कमेणं जइ णं णो उद्दवणं संभवेज्जा, अहा णं उद्दवणासंभाविए तओ खमणं, तं च थंडिलं पुणरवि पडिजागरिऊणं नीसंकं काऊणं पुणरवि आलोएत्ताणं जहाजोगं पायच्छित्तं ण पडिगाहिज्जा तओ उवट्ठावणं, समाहिं परिट्ठवेमाणो सागारिएणं संचिक्खीयए संचिक्खीयमाणो वा परिट्ठवेज्जा खवणं, अपच्चुप्पेहियथंडिले जंकिंचि वोसिरेज्जा तओ उवट्ठावणं, एवं वसहिं उवहिं पच्चुप्पेहेत्ताणं समाहिं खइरोल्लगं च परट्ठवेत्ताणं एगग्गमाणसो आउत्तो विहीए सुत्तत्थमणुसरेमाणो ईरियं न पडिक्कमेज्जा एक्कासणगं, मुहणंतगेणं विणा ईरियं पडिक्कमेज्जा वंदणं पडिक्कमणं वा करेज्जा जंभाएज्ज वा सज्झायं वा करेज्जा वायणादी सव्वत्थ पुरिमड्ढं, एवं च ईरियं पडिक्कमित्ताणं सुकुमालपम्हलअचोप्पडअविक्किट्ठेणं अविद्धदंडेणं दंडापुच्छणगेणं वसहिं न पमज्जे एक्कासणगं, बोहारियाए वा वसहिं बोहारिज्जा उवट्टावणं, वसहीए दंडापुंछणगं दाऊणं कयरं ण परिट्ठवेज्जा चउत्थं. अपचुप्पेहियं कयवरं परिट्ठवेज्जा दुवालसं, जइ णं छप्पइयाउ ण हवेज्जा अहवा णं हवेज्जा तओ णं उवट्ठावणं, वसहीसंठियं कयवरं पच्चुप्पेहमाणेण जाओ छप्पइयाओ तत्थ अन्नेसिऊणं २ समुच्चिणिय २ पडिगाहिया ताओ जइ णं ण सबेसिं भिक्खूणं संविभइऊणं देज्जा तओ एक्कासणगं, जइ सयमेव अत्तणा ताओ छप्पइयाओ पडिग्गाहिज्जा अहणं ण संविभइउं दिज्जा ण य अण्णण्णो पडिगाहेज्जा तओ पारंचियं, एवं वसहिं दंडापुंछणगेणं विहीए य पमज्जिऊणं कयवरं पच्चुप्पेहेऊणं छप्पइयाओ संविभातिऊणं च तं कयवरं ण परिट्ठवेज्जा परिट्ठवित्ताणं च सम्मं विहीए अचंतोवउत्तएगग्गमाणसेण पयंपएणं तु सुत्तत्थोभयं सरमाणे जे णं भिक्खू ण ईरियं पडिक्कमेज्जा तस्स अ आयंबिलं खमणं पच्छित्तं निद्देसेज्जा, एवं तु अइक्कमिज्जा णं गोयमा! किंचूणगं दिवड्ढं घडिगं पुव्वण्हिगस्स णं पढमजामस्स, एयावसरम्ही उ गोयमा! जे णं भिक्खू गुरूणं पुरो विहीए सज्झायं संदिसाविऊणं एगग्गचित्ते सुयाउत्ते दढं धीइए घडिगोणपढमपोरिसी जावज्जीवाभिग्गहेणं अणुदियहं अपुव्वणाणगहणं न करेज्जा तस्स दुवालसमं पच्छित्तं निद्देसेज्जा, अपुव्वनाणाहिज्जणस्स असई

११५९ महानिशीथच्छेदसूत्रं ३८५५१२०१-७७

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [८] + गाथा ॥१८॥

दीप अनुक्रम [१३८२]

जमेव पुव्वाहिज्जियं तं सुत्तत्थोभयमणुसरमाणो एगग्गमाणसे न परावत्तेज्जा भत्तित्थीरायतक्करजणवयाइविचित्तविगहासु अ णं अभिरमेज्जा अवंदणिज्जे, जेसिं च णं पुव्वाहीयं सुत्तं णत्थेव अउव्वन्नाणगहणस्स णं असंभवो वा तेसिमवि घडिगूणपढमपोरिसी पंचमंगलं पुणो २ परावत्तणीयं, अहा णं णो परावत्तिया विगहं कुव्वीया वा निसामिया वा से णं अवंदे, एवं घडिगूणगाए पढमपोरिसीए जे णं भिक्खू एगग्गचित्तो सज्झायं काऊणं तओ पत्तगमत्तगकमढाइं भंडोवगरणस्स णं अवक्खित्ताउत्तो विहीए पच्चुप्पेहणं ण करेज्जा तस्स णं चउत्थं पच्छित्तं निद्दिसेज्जा, भिक्खुसद्दो पच्छित्तसद्दो अ इमे सव्वत्थ पइपयं जोजणीए, जइ णं तं भंडोवगरणं ण भुंजीया अहा णं परिभुंजे दुवालसं, एवं अइक्कंता पढमपोरिसी, बीयपोरसीए अत्थगहणं न करेज्जा पुरिमड्ढं, जइ णं वक्खाणस्स णं अभावो, अहा णं वक्खाणं अत्थेव तं ण सुणेज्जा अवंदे, वक्खाणस्सासंभवे कालवेलं जाव वायणाइसज्झायं न करेज्जा दुवालसं, एवं पत्ताए कालवेलाए जंकिंचि अइयराइयदेवसियाइयारे निंदिए गरहिए आलोइए पडिक्कंते जंकिंचि काइगं वा वाइगं वा माणसिगं वा उस्सुत्तायरणेण वा उम्मग्गायरणेण वा अकप्पासेवणेण वा अकरणिज्जसमायरणेण वा दुज्झाइएण वा दुविचिंतिएण वा अणायारसमायरणेण वा अणिच्छियव्वसमायरणेण वा असमणपाउग्गसमायरणेण वा नाणे दंसणे चरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तियादीणं चउण्हं कसायादीणं पंचण्हं महव्वयादीणं छण्हं जीवनिकायादीणं सत्तण्हं पिंडेसणमाईणं अट्ठण्हं पवयणमाइयाईणं नवण्हं बंभचेरगुत्ती(त्ताई)णं दसविहस्स णं समणधम्मस्स एवं तु जाव णं एमाइअणेगालावगमाईणं खंडणे विराहणे वा आगमकुसलेहिं णं गुरूहिं पायच्छित्तमुवइट्ठं तंनिमित्तेणं जहासत्तीए अणिगूहियबलवीरियपुरिसयारपरक्कमे असढत्ताए अदीणमाणसे अणसणाइ सबज्झंतरं दुवालसविहं तवोकम्मं गुरूणमंतिए पुणरवि णिट्टंकिऊणं सुपरिफुडं काऊणं तहत्ति अभिनंदित्ताणं खंडाखंडीविभत्तं वा एगपिंडट्ठियं वा ण सम्ममणुचिट्ठेज्जा से णं अवंदे, से भयवं! केणं अट्ठेणं खंडाखंडीए काऊणमणुचिट्ठेज्जा?, गोयमा! जे णं भिक्खू संवच्छरद्धं चाउम्मासं मासखमणं वा एक्कोलगं काऊणं न सक्कुणेइ ते णं छट्ठट्ठमदसमदुवालसद्धमासक्खमणेहिं णं तं पायच्छित्तं अणुपवेसेइ, अन्नमवि जंकिंचि पायच्छित्ताणुगयं, एतेणं अट्ठेणं खंडाखंडीए समणुचिट्ठे, एवं तु समोगाढं किंचूणं पुरिमड्ढं, एयावसरंमि उ जे णं पडिक्कमंतेइ वा वंदंतेइ वा सज्झायं करेंतेइ वा परिभमंतेइ वा संचरंतेइ वा गएइ वा ठिएइ वा बइट्ठलगेइ वा उट्ठियलगेइ वा तेउकाएण वा फुसिद्धियछगे भवेज्जा से णं आयंचिऊणं ण संवरेज्जा तओ चउत्थं, अन्नेसिं तु जहाजोगं जहेव पायच्छित्ताणि पविसंति, तहा ससत्तीए तवोकम्मं णाणुट्ठेइ तओ चउग्गुणं पायच्छित्तं तमेव बीयदियहे उवइसेज्जा, जेसिं च णं वंदंताण वा पडिक्कमंताण वा दीहं वा मज्जारं वा छिंदिऊणं गयं हवेज्जा तेसिं च णं लोयकरणं अन्नत्थ गमणं तेमाणं उग्गतवाभिरमणं, एयाइं ण कुव्वंति तओ गच्छबज्झे, जे णं तु तं महोवसग्गसाहगं उप्पायगं दुन्निमित्तममंगलावहं हविया, जे णं पढमपोरिसीए वा बीयपोरिसीए वा चंकमणियाए वा परिसक्कएज्जा अगालसन्निहीए वा छड्डी करेइ वा से णं जइ चउब्बिहेणं ण संवरेज्जा तओ छट्ठं, दिया थंडिले पडिलेहिए राओ सन्नं वोसिरेज्जा समाहीए वा एगासणं गिलाणस्स, अन्नेसिं तु छट्ठमेव, जइ णं दिया ण थंडिलं पच्चुप्पेहियं णो णं समाही संजमिया अपच्चुप्पेहिए थंडिले अपेहियाए चेव समाहीए रयणीए सन्नं वा काइयं वा वोसिरिज्जा एगासणगं गिलाणस्स, सेसाणं दुवालसं, अहा णं गिलाणस्स मिच्छुक्कडं वा, एवं पढमपोरिसीए बीयपोरिसीए वा सुत्तत्थाहिज्जणं मोत्तूणं जे णं इत्थीकहं वा भत्तकहं वा देसकहं वा रायकहं वा तेणकहं वा गारत्थियकहं वा अन्नं वा असंबद्धं रोद्दट्टज्झाणोदीरणाकहं पत्थावेज्ज वा उदीरेज्ज वा कहेज्ज वा कहावेज्ज वा से णं संवच्छरं जाव अवंदे, अहा णं पढमबीयपोरिसीए जइ णं कयाइं महया कारणवसेणं (घडिगं वा) अद्धघडिगं वा सज्झायं न कयं तत्थ भिच्छुक्कडं गिलाणस्स, अन्नेसिं निब्बिगइयं, दढनिट्ठुरतेण वा गिलाणेण वा जइ णं कहिंचि केणइ कारणेणं जाएणं असई गीयत्थगुरुणा अणणुन्नाएणं सहसा कयादी बइट्ठपडिक्कमणं कयं हवेज्जा तओ मासं जाव अवंदे, चउमासे जाव मूणव्वयं च, जे णं पढमपोरिसीए अणइक्कंताए तइयाए पोरिसीए अइक्कंताए भत्तं वा पाणं वा पडिगाहेज्ज वा परिभुंजेज्ज वा तस्स णं पुरिमड्ढं, चेइएहिं अवंदिएहिं उवओगं करेज्जा पुरिमड्ढं, गुरुणो अंतिए णोवओगं करेज्जा चउत्थं, अकएणं उवओगेणं जंकिंचि पडिगाहेज्जा चउत्थं, अविहीए उवओगं करेज्जा खवणं, भत्तट्ठाए वा पाणट्ठाए वा सकज्जेण वा गुरुकज्जेण वा बाहिरभूमीए निग्गच्छंते गुरुणो पाए उत्तिमंगेणं संघट्टेत्ताणं आवस्सियं ण करेज्जा पविसंते घंघसालाईसु णं वसहीदुवारे णिसीहियं ण करेज्जा पुरिमड्ढं, सत्तण्हं कारणजायाणमसई वसहीए बहिं निग्गच्छे गच्छबज्झे, रागा गच्छे छेओवट्टावणं, अगीयत्थस्स गीयत्थस्स वा संकणिज्जस्स भत्तं वा पाणं वा भेसज्जं वा वत्थं वा पत्तं वा दंडगं वा अविहीए पडिगाहेज्जा गुरूणं च णाल्होइज्जा नइयवयस्स छेदं मासं जाव अवंदे मूणव्वयं च, भत्तट्ठाए वा पाणट्ठाए वा भेसज्जट्ठाए वा सकज्जेण वा गुरुकज्जेण वा रायहाणीए वा निगचउक्कचच्चरपरिसागिहेट्ठ वा तत्थ कहं वा विकहं वा पत्थावेज्जा उवट्टावणं, सोवाहणो परिसक्केज्जा उवट्टावणं, उवाहणाउ पडिगाहिज्जा खवणं, तारिसे णं संविहाणगे उवाहणाउ ण परिभुंजेज्जा खवणं, गओ वा ठिओ वा केणइ पुट्ठो निउणं महुरं थोवं कज्जावडियं अगव्वियमतुच्छं निद्दोसं सयलजणमणाणंदकारयं इहपरलोगसुहावहं वयणं ण भासेज्जा अवंदे, जइ णं नाभिग्गहिओ, (२९०)

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

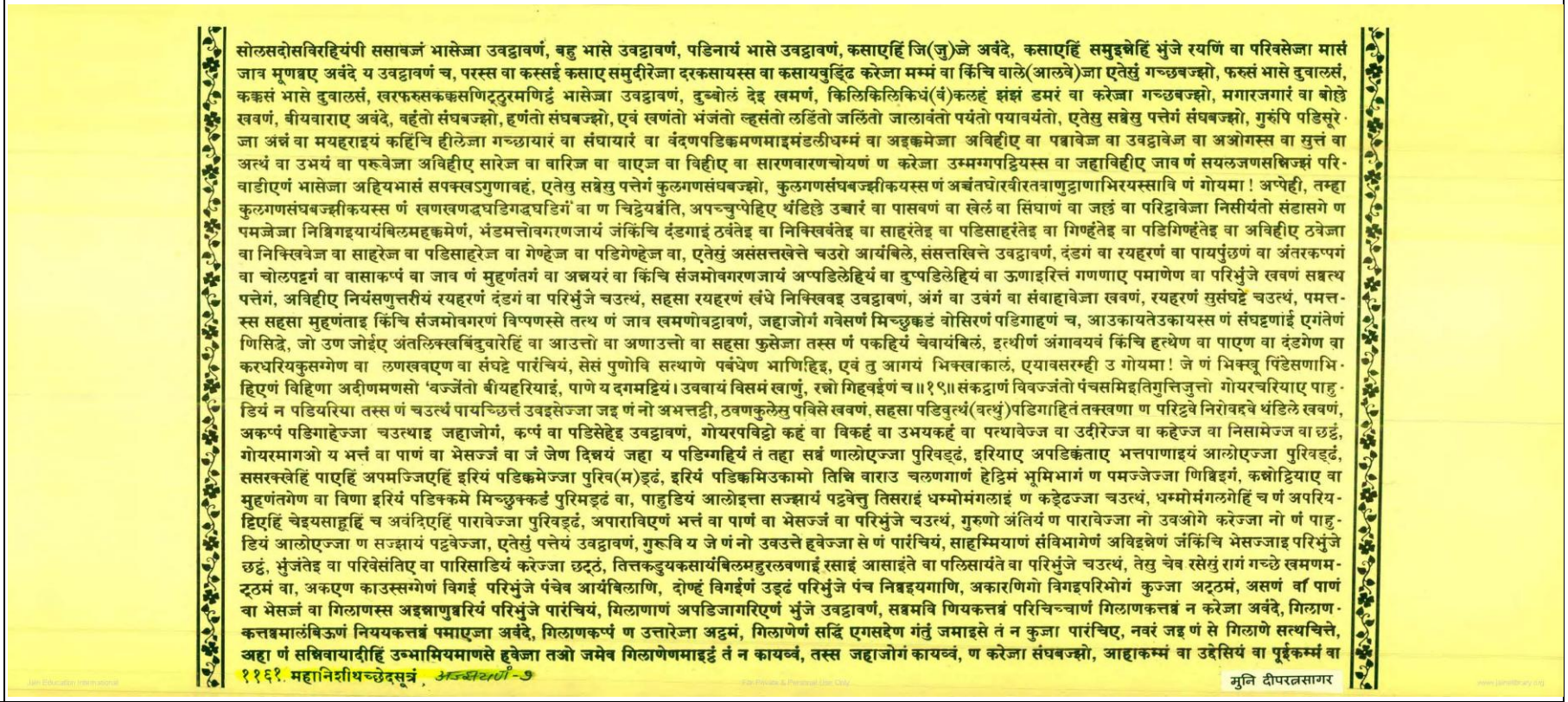

सोलसदोसविरहियंपी ससावज्जं भासेज्जा उवट्ठावणं, बहु भासे उवट्ठावणं, पडिनायं भासे उवट्ठावणं, कसाएहिं जि(जु)ज्जे अवंदे, कसाएहिं समुइन्नेहिं भुंजे रयणिं वा परिवसेज्जा मासं जाव मूणव्वए अवंदे य उवट्ठावणं च, परस्स वा कस्सई कसाए समुदीरेज्जा दरकसायस्स वा कसायवुड्ढिं करेज्जा मम्मं वा किंचि वाले(आलवे)ज्जा एतेसुं गच्छबज्झो, फरुसं भासे दुवालसं, कक्कसं भासे दुवालसं, खरफरुसकक्कसणिट्ठुरमणिट्ठं भासेज्जा उवट्ठावणं, दुब्बोलं देइ खमणं, किलिकिलिकिधं(वं)कलहं झंझं डमरं वा करेज्जा गच्छबज्झो, मगारजगारं वा बोल्हे खवणं, बीयवाराए अवंदे, वहंतो संघबज्झो, हणंतो संघबज्झो, एवं खणंतो भंजंतो ल्हसंतो लडिंतो जलिंतो जालावंतो पयंतो पयावयंतो, एतेसु सव्वेसु पत्तेगं संघबज्झो, गुरुंपि पडिसूरेजा अंबं वा मयहराइयं कहिंचि हीलेज्जा गच्छायारं वा संघायारं वा वंदणपडिक्कमणमाइमंडलीधम्मं वा अइक्कमेज्जा अविहीए वा पडावेज्ज वा उवट्ठावेज्ज वा अओगस्स वा सुत्तं वा अत्थं वा उभयं वा परूवेज्जा अविहीए सारेज्ज वा वारिज्ज वा वाएज्ज वा विहीए वा सारणवारणचोयणं ण करेज्जा उम्मग्गपट्ठियस्स वा जहाविहीए जाव णं सयलजणसन्निज्झं परिवाडीएणं भासेज्जा अहियभासं सपक्खडगुणावहं, एतेसु सव्वेसु पत्तेगं कुलगणसंघबज्झो, कुलगणसंघबज्झीकयस्स णं अच्चंतघोरवीरतवाणुट्ठाणाभिरयस्सावि णं गोयमा! अप्पेही, तम्हा कुलगणसंघबज्झीकयस्स णं खणखणद्घघडिगद्घघडिगं वा ण चिट्ठेयव्वंति, अपच्चुप्पेहिए थंडिल्ले उच्चारं वा पासवणं वा खेलं वा सिंघाणं वा जल्लं वा परिट्ठावेज्जा निसीयंतो संडासगे ण पमज्जेज्जा निव्विगइयायंबिलमहक्कमेणं, भंडमत्तोवगरणजायं जंकिंचि दंडगाइं ठवंतेइ वा निक्खिवंतेइ वा साहरंतेइ वा पडिसाहरंतेइ वा गिण्हंतेइ वा पडिगिण्हंतेइ वा अविहीए ठवेज्जा वा निक्खिवेज्ज वा साहरेज्ज वा पडिसाहरेज्ज वा गेण्हेज्ज वा पडिगेण्हेज्ज वा, एतेसुं असंसत्तखेत्ते चउरो आयंबिले, संसत्तखित्ते उवट्ठावणं, दंडगं वा रयहरणं वा पायपुंछणं वा अंतरकप्पगं वा चोलपट्टगं वा वासाकप्पं वा जाव णं मुहणंतगं वा अन्नयरं वा किंचि संजमोवगरणजायं अप्पडिलेहियं वा दुप्पडिलेहियं वा ऊणाइरित्तं गणणाए पमाणेण वा परिभुंजे खवणं सव्वत्थ पत्तेगं, अविहीए नियंसणुत्तरीयं रयहरणं दंडगं वा परिभुंजे चउत्थं, सहसा रयहरणं खंधे निक्खिवइ उवट्ठावणं, अंगं वा उवंगं वा संवाहावेज्जा खवणं, रयहरणं सुसंघट्टे चउत्थं, पमत्तस्स सहसा मुहणंताइ किंचि संजमोवगरणं विप्पणस्से तत्थ णं जाव खमणोवट्ठावणं, जहाजोगं गवेसणं मिच्छुक्कडं वोसिरणं पडिगाहणं च, आउकायतेउकायस्स णं संघट्टणाई एगंतेणं णिसिद्धे, जो उण जोईए अंतलिक्खबिंदुवारेहिं वा आउत्तो वा अणाउत्तो वा सहसा फुसेज्जा तस्स णं पकहियं चेवायंबिलं, इत्थीणं अंगावयवं किंचि हत्थेण वा पाएण वा दंडगेण वा करधरियकुसग्गेण वा लणखवएण वा संघट्टे पारंचियं, सेसं पुणोवि सत्थाणे पव्वेण भाणिहिइ, एवं तु आगयं भिक्खाकालं, एयावसरम्ही उ गोयमा! जे णं भिक्खू पिंडेसणाभिहिएणं विहिणा अदीणमणसो ‘वज्जेंतो बीयहरियाइं, पाणे य दगमट्टियं। उववायं विसमं खाणुं, रन्नो गिहवईणं च॥१९॥ संकट्ठाणं विवज्जंतो पंचसमिइतिगुत्तिजुत्तो गोयरचरियाए पाहुडियं न पडियरिया तस्स णं चउत्थं पायच्छित्तं उवइसेज्जा जइ णं नो अभत्तट्ठी, ठवणकुलेसु पविसे खवणं, सहसा पडिवुत्थं(वत्थुं)पडिगाहितं तक्खणा ण परिट्ठवे निरोवहवे थंडिले खवणं, अकप्पं पडिगाहेज्जा चउत्थाइ जहाजोगं, कप्पं वा पडिसेहेइ उवट्ठावणं, गोयरपविट्ठो कहं वा विकहं वा उभयकहं वा पत्थावेज्ज वा उदीरेज्ज वा कहेज्ज वा निसामेज्ज वा छट्ठं, गोयरमागओ य भत्तं वा पाणं वा भेसज्जं वा जं जेण दिन्नयं जहा य पडिग्गहियं तं तहा सव्वं णालोएज्जा पुरिवड्ढं, इरियाए अपडिक्कंताए भत्तपाणाइयं आलोएज्जा पुरिवड्ढं, ससरक्खेहिं पाएहिं अपमज्जिएहिं इरियं पडिक्कमेज्जा पुरिव(म)ड्ढं, इरियं पडिक्कमिउकामो तिन्नि वाराउ चलणगाणं हेट्ठिमं भूमिभागं ण पमज्जेज्जा णिव्विइगं, कन्नोट्ठियाए वा मुहणंतगेण वा विणा इरियं पडिक्कमे मिच्छुक्कडं पुरिमड्ढं वा, पाहुडियं आलोइत्ता सज्झायं पट्ठवेत्तु तिसराइं धम्मोमंगलाइं ण कड्ढेज्जा चउत्थं, धम्मोमंगलगेहिं च णं अपरियट्टिएहिं चेइयसाहूहिं च अवंदिएहिं पारावेज्जा पुरिवड्ढं, अपाराविएणं भत्तं वा पाणं वा भेसज्जं वा परिभुंजे चउत्थं, गुरुणो अंतियं ण पारावेज्जा नो उवओगे करेज्जा नो णं पाहुडियं आलोएज्जा ण सज्झायं पट्ठवेज्जा, एतेसुं पत्तेयं उवट्ठावणं, गुरूवि य जे णं नो उवउत्ते हवेज्जा से णं पारंचियं, साहम्मियाणं संविभागेणं अविइन्नेणं जंकिंचि भेसज्जाइ परिभुंजे छट्ठं, भुंजंतेइ वा परिवेसंतिए वा पारिसाडियं करेज्जा छट्ठं, तित्तकडुयकसायंबिलमहुरलवणाइं रसाइं आसाइंते वा पलिसायंते वा परिभुंजे चउत्थं, तेसु चेव रसेसुं रागं गच्छे खमणमट्ठमं वा, अकएण काउस्सग्गेणं विगई परिभुंजे पंचेव आयंबिलाणि, दोण्हं विगईणं उड्ढं परिभुंजे पंच निव्वइयगाणि, अकारणिगो विगइपरिभोगं कुज्जा अट्ठमं, असणं वा पाणं वा भेसज्जं वा गिलाणस्स अइन्नाणुव्वरियं परिभुंजे पारंचियं, गिलाणाणं अपडिजागरिएणं भुंजे उवट्ठावणं, सव्वमवि णियकत्तव्वं परिचिच्चाणं गिलाणकत्तव्वं न करेज्जा अवंदे, गिलाणकत्तव्वमालंबिऊणं नियकत्तव्वं पमाएज्जा अवंदे, गिलाणकप्पं ण उत्तारेज्जा अट्ठमं, गिलाणेणं सद्धिं एगसद्देण गंतुं जमाइसे तं न कुज्जा पारंचिए, नवरं जइ णं से गिलाणे सत्थचित्ते, अहा णं सन्निवायादीहिं उब्भामियमाणसे हवेज्जा तओ जमेव गिलाणेणमाइट्ठं तं न कायव्वं, तस्स जहाजोगं कायव्वं, ण करेज्जा संघबज्झो, आहाकम्मं वा उद्देसियं वा पूईकम्मं वा

मुनि दीपरत्नसागर

प्रत सूत्रांक [८] + गाथा ||१९|| दीप अनुक्रम [१३८४]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

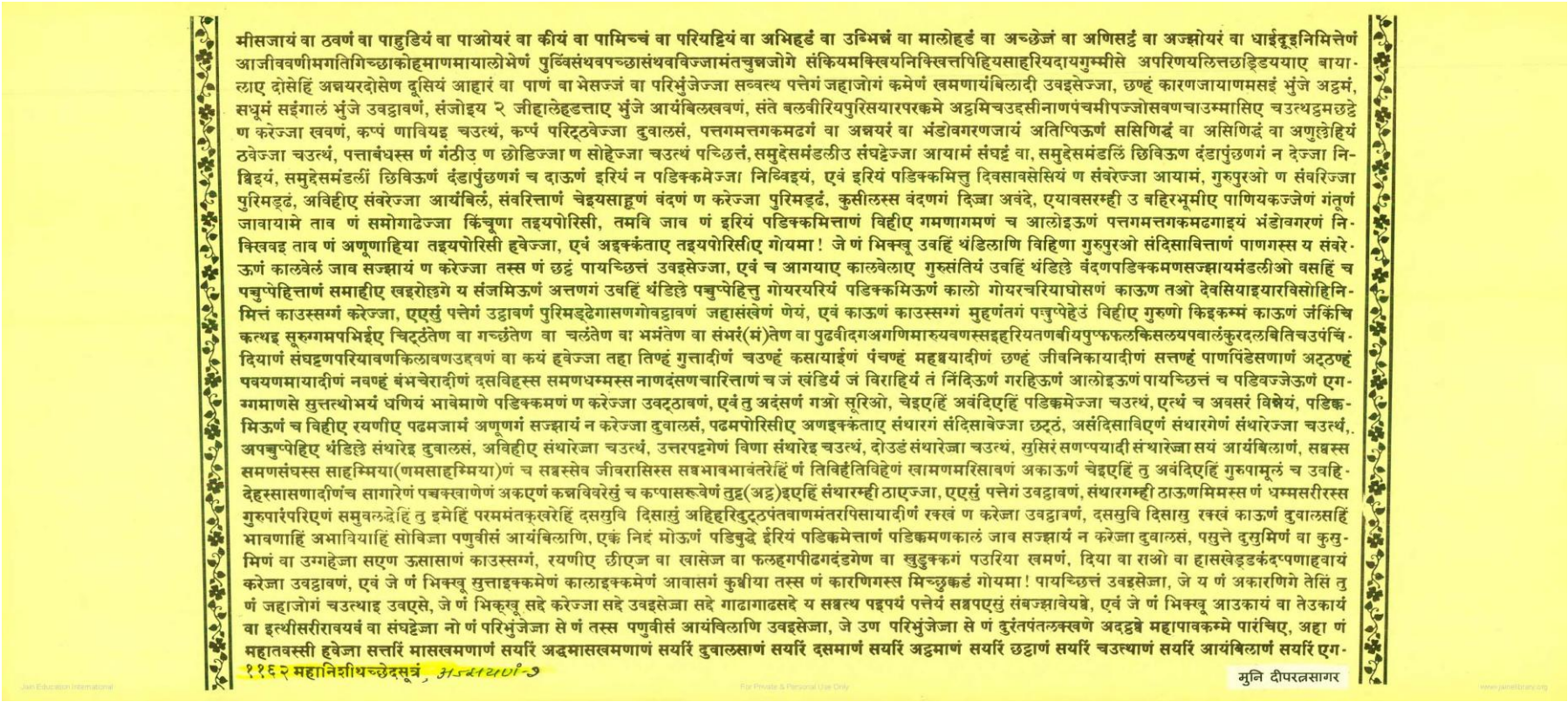

मीसजायं वा ठवणं वा पाहुडियं वा पाओयरं वा कीयं वा पामिच्चं वा परियट्टियं वा अभिहडं वा उब्भिन्नं वा मालोहडं वा अच्छेज्जं वा अणिसट्ठं वा अज्झोयरं वा धाईदूइनिमित्तेणं आजीववणीमगतिगिच्छाकोहमाणमायालोभेणं पुव्विंसंथवपच्छासंथवविज्जामंतचुन्नजोगे संकियमक्खियनिक्खित्तपिहियसाहरियदायगुम्मीसे अपरिणयलित्तछड्डियणाए बाया-लाए दोसेहिं अन्नयरदोसेण दूसियं आहारं वा पाणं वा भेसज्जं वा परिभुंजेज्जा सव्वत्थ पत्तेगं जहाजोगं कमेणं खमणायंबिलादी उवइसेज्जा, छण्हं कारणजायाणमसइं भुंजे अट्ठमं, सधूमं सइंगालं भुंजे उवट्ठावणं, संजोइय २ जीहालेहुत्ताए भुंजे आयंबिलखवणं, संते बलवीरियपुरिसयारपरक्कमे अट्ठमिचउद्दसीनाणपंचमीपज्जोसवणचाउम्मासिए चउत्थट्ठमछट्ठे ण करेज्जा खवणं, कप्पं णावियइ चउत्थं, कप्पं परिट्ठवेज्जा दुवालसं, पत्तगमत्तगकमढगं वा अन्नयरं वा भंडोवगरणजायं अतिप्पिऊणं ससिणिद्धं वा असिणिद्धं वा अणुल्लेहियं ठवेज्जा चउत्थं, पत्ताबंधस्स णं गंठीउ ण छोडिज्जा ण सोहेज्जा चउत्थं पच्छित्तं, समुद्देसमंडलीउ संघट्टेज्जा आयामं संघट्टं वा, समुद्देसमंडलिं छिविऊण दंडापुंछणगं न देज्जा नि-ब्विइयं, समुद्देसमंडलीं छिविऊणं दंडापुंछणगं च दाऊणं इरियं न पडिक्कमेज्जा निव्विइयं, एवं इरियं पडिक्कमित्तु दिवसावसेसियं ण संवरेज्जा आयामं, गुरुपुरओ ण संवरिज्जा पुरिमड्ढं, अविहीए संवरेज्जा आयंबिलं, संवरित्ताणं चेइयसाहूणं वंदणं ण करेज्जा पुरिमड्ढं, कुसीलस्स वंदणगं दिज्जा अवंदे, एयावसरम्ही उ बहिरभूमीए पाणियकज्जेणं गंतूणं जावायामे ताव णं समोगाढेज्जा किंचूणा तइयपोरिसी, तमवि जाव णं इरियं पडिक्कमित्ताणं विहीए गमणागमणं च आलोइऊणं पत्तगमत्तगकमढगाइयं भंडोवगरणं नि-क्खिवइ ताव णं अणूणाहिया तइयपोरिसी हवेज्जा, एवं अइक्कंताए तइयपोरिसीए गोयमा! जे णं भिक्खू उवहिं थंडिलाणि विहिणा गुरुपुरओ संदिसावित्ताणं पाणगस्स य संवरे-ऊणं कालवेलं जाव सज्झायं ण करेज्जा तस्स णं छट्ठं पायच्छित्तं उवइसेज्जा, एवं च आगयाए कालवेलाए गुरुसंतियं उवहिं थंडिले वंदणपडिक्कमणसज्झायमंडलीओ वसहिं च पच्चुप्पेहित्ताणं समाहीए खइरोल्लगे य संजमिऊणं अत्तणगं उवहिं थंडिले पच्चुप्पेहित्तु गोयरयरियं पडिक्कमिऊणं कालो गोयरचरियाघोसणं काऊण तओ देवसियाइयारविसोहिनि-मित्तं काउस्सग्गं करेज्जा, एएसुं पत्तेगं उट्ठावणं पुरिमड्ढेगासणगोवट्ठावणं जहासंखेणं णेयं, एवं काऊणं काउस्सग्गं मुहणंतगं पच्चुप्पेहेउं विहीए गुरुणो किइकम्मं काऊणं जंकिंचि कत्थइ सूरुग्गमपभिईए चिट्ठंतेण वा गच्छंतेण वा चलंतेण वा भमंतेण वा संभरं(मं)तेण वा पुढवीदगअगणिमारुयवणस्सइहरियतणबीयपुप्फफलकिसलयपवालंकुरदलबितिचउपंचिं-दियाणं संघट्टणपरियावणकिलावणउद्दवणं वा कयं हवेज्जा तहा तिण्हं गुत्तादीणं चउण्हं कसायाईणं पंचण्हं महव्वयादीणं छण्हं जीवनिकायादीणं सत्तण्हं पाणपिंडेसणाणं अट्ठण्हं पवयणमायादीणं नवण्हं बंभचेरादीणं दसविहस्स समणधम्मस्स नाणदंसणचारित्ताणं च जं खंडियं जं विराहियं तं निंदिऊणं गरहिऊणं आलोइऊणं पायच्छित्तं च पडिवज्जेऊणं एग-ग्गमाणसे सुत्तत्थोभयं धणियं भावेमाणे पडिक्कमणं ण करेज्जा उवट्ठावणं, एवं तु अदंसणं गओ सूरिओ, चेइएहिं अवंदिएहिं पडिक्कमेज्जा चउत्थं, एत्थं च अवसरं विन्नेयं, पडिक्क-मिऊणं च विहीए रयणीए पढमजामं अणूणगं सज्झायं न करेज्जा दुवालसं, पढमपोरिसीए अणइक्कंताए संथारगं संदिसावेज्जा छट्ठं, असंदिसाविएणं संथारगेणं संथारेज्जा चउत्थं, अपच्चुप्पेहिए थंडिले संथारेइ दुवालसं, अविहीए संथारेज्जा चउत्थं, उत्तरपट्टगेणं विणा संथारेइ चउत्थं, दोउडं संथारेज्जा चउत्थं, सुसिरं सणप्पयादी संथारेज्जा सयं आयंबिलाणं, सव्वस्स समणसंघस्स साहम्मिया(णमसाहम्मिया)णं च सव्वस्सेव जीवरासिस्स सव्वभावभावंतरेहिं णं तिविहंतिविहेणं खामणमरिसावणं अकाऊणं चेइएहिं तु अवंदिएहिं गुरुपामूलं च उवहि-देहस्सासणादीणंच सागारेणं पच्चक्खाणेणं अकएणं कन्नविवरेसुं च कप्पासरूवेणं तुट्ट(अट्ठ)इएहिं संथारम्ही ठाएज्जा, एएसुं पत्तेगं उवट्ठावणं, संथारगम्ही ठाऊणमिमस्स णं धम्मसरीरस्स गुरुपारंपरिएणं समुवल्लद्धेहिं तु इमेहिं परमंतक्खरेहिं दससुवि दिसासुं अहिहरिदुट्ठपंतवाणमंतरपिसायादीणं रक्खं ण करेज्जा उवट्ठावणं, दससुवि दिसासु रक्खं काऊणं दुवालसहिं भावणाहिं अभावियाहिं सोविज्जा पणुवीसं आयंबिलाणि, एक्कं निहं मोऊणं पडिबुद्धे ईरियं पडिक्कमेत्ताणं पडिक्कमणकालं जाव सज्झायं न करेज्जा दुवालसं, पसुत्ते दुसुमिणं वा कुसु-मिणं वा उग्गहेज्जा सएण ऊसासाणं काउस्सग्गं, रयणीए छीएज वा खासेज वा फलहगपीढगदंडगेण वा खुड्डक्कगं पउरिया खमणं, दिया वा राओ वा हासखेड्डकंदप्पणाहवायं करेज्जा उवट्ठावणं, एवं जे णं भिक्खू सुत्ताइक्कमेणं कालाइक्कमेणं आवासगं कुव्वीया तस्स णं कारणिगस्स मिच्छुक्कडं गोयमा! पायच्छित्तं उवइसेज्जा, जे य णं अकारणिगे तेसिं तु णं जहाजोगं चउत्थाइ उवएसे, जे णं भिक्खू सद्दे करेज्जा सद्दे उवइसेज्जा सद्दे गाढागाढसद्दे य सव्वत्थ पइपयं पत्तेयं सव्वपएसुं संबज्झावेयव्वे, एवं जे णं भिक्खू आउकायं वा तेउकायं वा इत्थीसरीरावयवं वा संघट्टेज्जा नो णं परिभुंजेज्जा से णं तस्स पणुवीसं आयंबिलाणि उवइसेज्जा, जे उण परिभुंजेज्जा से णं दुरंतपंतलक्खणे अदट्ठव्वे महापावकम्मे पारंचिए, अहा णं महातवस्सी हवेज्जा सत्तरिं मासखमणाणं सयरिं अद्धमासखमणाणं सयरिं दुवालसाणं सयरिं दसमाणं सयरिं अट्ठमाणं सयरिं छट्ठाणं सयरिं चउत्थाणं सयरिं आयंबिलाणं सयरिं एग-

११६२ महानिशीथच्छेदसूत्रं, मूलसूत्रं-३

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [८] + गाथा ||१९|| दीप अनुक्रम [१३८४]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

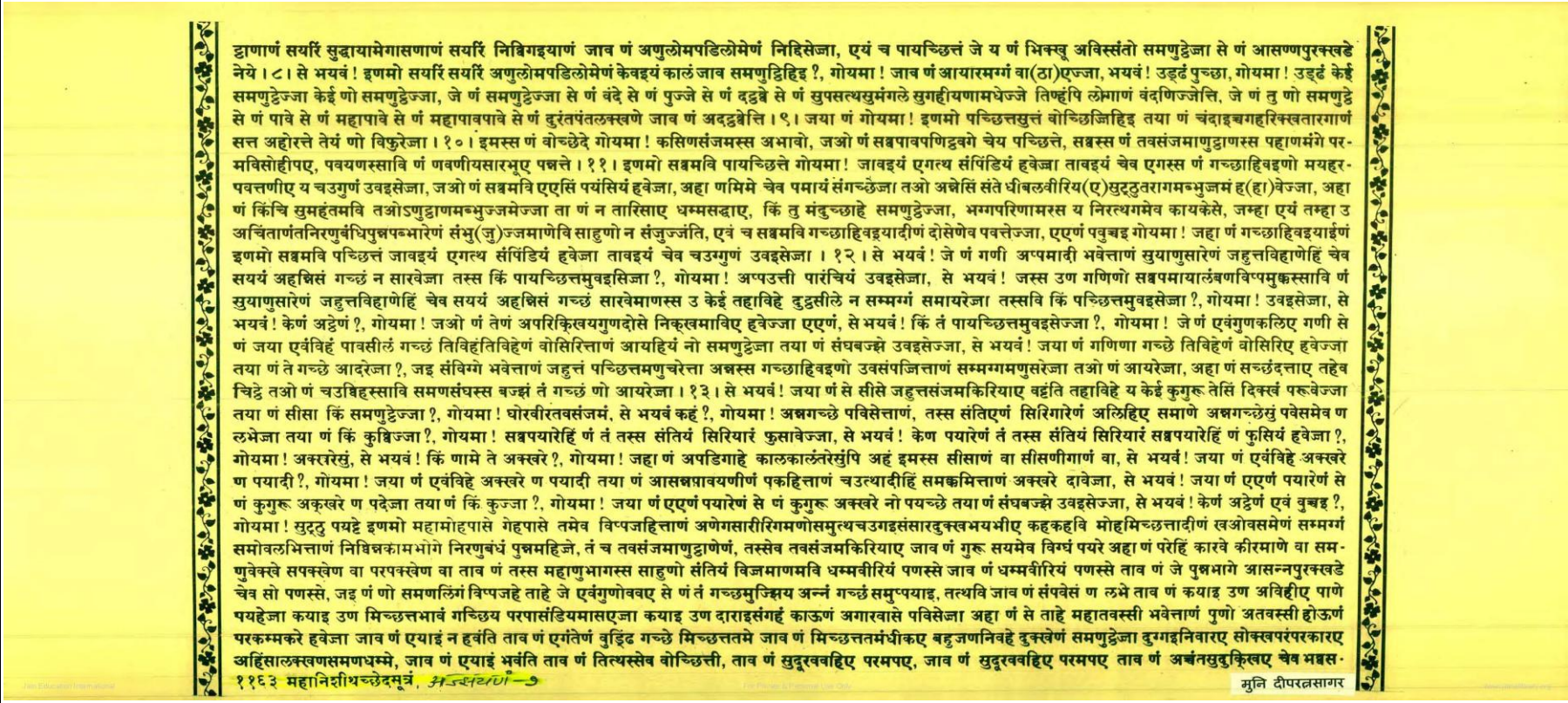

ट्ठाणाणं सयरिं सुद्धायामेगासणाणं सयरिं निव्विगइयाणं जाव णं अणुलोमपडिलोमेणं निद्दिसेज्जा, एयं च पायच्छित्तं जे य णं भिक्खू अविस्संतो समणुट्ठेज्जा से णं आसण्णपुरक्खडे नेये । ८। से भयवं ! इणमो सयरिं सयरिं अणुलोमपडिलोमेणं केवइयं कालं जाव समणुट्ठिहिइ ?, गोयमा ! जाव णं आयारमग्गं वा(ठा)एज्जा, भयवं ! उड्ढं पुच्छा, गोयमा ! उड्ढं केई समणुट्ठेज्जा केई णो समणुट्ठेज्जा, जे णं समणुट्ठेज्जा से णं वंदे से णं पुज्जे से णं दट्ठवे से णं सुपसत्थसुमंगले सुगहीयणामधेज्जे तिण्हंपि लोगाणं वंदणिज्जेत्ति, जे णं तु णो समणुट्ठे से णं पावे से णं महापावे से णं महापावपावे से णं दुरंतपंतलक्खणे जाव णं अदट्ठवेत्ति । ९। जया णं गोयमा ! इणमो पच्छित्तसुत्तं वोच्छिज्जिहिइ तया णं चंदाइच्चगहरिक्खतारगाणं सत्त अहोरत्ते तेयं णो विफुरेज्जा । १०। इमस्स णं वोच्छेदे गोयमा ! कसिणसंजमस्स अभावो, जओ णं सव्वपावपणिट्ठवगे चेय पच्छित्ते, सव्वस्स णं तवसंजमाणुट्ठाणस्स पहाणमंगे पर-मविसोहीपए, पवयणस्सावि णं णवणीयसारभूए पन्नत्ते । ११। इणमो सव्वमवि पायच्छित्ते गोयमा ! जावइयं एगत्थ संपिंडियं हवेज्जा तावइयं चेव एगस्स णं गच्छाहिवइणो मयहर-पवत्तणीए य चउगुणं उवइसेज्जा, जओ णं सव्वमवि एएसिं पयंसियं हवेज्जा, अहा णमिमे चेव पमायं संगच्छेज्जा तओ अन्नेसिं संते धीबलवीरिय(ए)सुट्ठुतरागमब्भुज्जमं ह(हा)वेज्जा, अहा णं किंचि सुमहंतमवि तओऽणुट्ठाणमब्भुज्जमेज्जा ता णं न तारिसाए धम्मसद्धाए, किं तु मंदुच्छाहे समणुट्ठेज्जा, भग्गपरिणामरस य निरत्थगमेव कायकेसे, जम्हा एयं तम्हा उ अचिंताणंतनिरणुबंधिपुन्नपब्भारेणं संभु(जु)ज्जमाणेवि साहुणो न संजुज्जंति, एवं च सव्वमवि गच्छाहिवइयादीणं दोसेणेव पवत्तेज्जा, एएणं पवुच्चइ गोयमा ! जहा णं गच्छाहिवइयाईणं इणमो सव्वमवि पच्छित्तं जावइयं एगत्थ संपिंडियं हवेज्जा तावइयं चेव चउग्गुणं उवइसेज्जा । १२। से भयवं ! जे णं गणी अप्पमादी भवेत्ताणं सुयाणुसारेणं जहुत्तविहाणेहिं चेव सययं अहन्निसं गच्छं न सारवेज्जा तस्स किं पायच्छित्तमुवइसिज्जा ?, गोयमा ! अप्पउत्ती पारंचियं उवइसेज्जा, से भयवं ! जस्स उण गणिणो सव्वपमायालंबणविप्पमुक्कस्सावि णं सुयाणुसारेणं जहुत्तविहाणेहिं चेव सययं अहन्निसं गच्छं सारवेमाणस्स उ केई तहाविहे दुट्ठसीले न सम्मग्गं समायरेज्जा तस्सवि किं पच्छित्तमुवइसेज्जा ?, गोयमा ! उवइसेज्जा, से भयवं ! केणं अट्ठेणं ?, गोयमा ! जओ णं तेणं अपरिकिलेययगुणदोसे निक्खमाविए हवेज्जा एएणं, से भयवं ! किं तं पायच्छित्तमुवइसेज्जा ?, गोयमा ! जे णं एवंगुणकलिए गणी से णं जया एवंविहं पावसीलं गच्छं तिविहंतिविहेणं वोसिरित्ताणं आयहियं नो समणुट्ठेज्जा तया णं संघबज्झे उवइसेज्जा, से भयवं ! जया णं गणिणा गच्छे तिविहेणं वोसिरिए हवेज्जा तया णं ते गच्छे आदरेज्जा ?, जइ संविग्गे भवेत्ताणं जहुत्तं पच्छित्तमणुचरेत्ता अन्नस्स गच्छाहिवइणो उवसंपज्जित्ताणं सम्मग्गमणुसरेज्जा तओ णं आयरेज्जा, अहा णं सच्छंदत्ताए तहेव चिट्ठे तओ णं चउव्विहस्सावि समणसंघस्स बज्झं तं गच्छं णो आयरेज्जा । १३। से भयवं ! जया णं से सीसे जहुत्तसंजमकिरियाए वट्टंति तहाविहे य केई कुगुरू तेसिं दिक्खं परूवेज्जा तया णं सीसा किं समणुट्ठेज्जा ?, गोयमा ! घोरवीरतवसंजमं, से भयवं कहं ?, गोयमा ! अन्नगच्छे पविसेत्ताणं, तस्स संतिएणं सिरिगारेणं अलिहिए समाणे अन्नगच्छेसुं पवेसमेव ण लभेज्जा तया णं किं कुव्विज्जा ?, गोयमा ! सव्वपयारेहिं णं तं तस्स संतियं सिरियारं फुसावेज्जा, से भयवं ! केण पयारेणं तं तस्स संतियं सिरियारं सव्वपयारेहिं णं फुसियं हवेज्जा ?, गोयमा ! अक्खरेसुं, से भयवं ! किं णामे ते अक्खरे ?, गोयमा ! जहा णं अपडिगाहे कालकालंतरेसुंपि अहं इमस्स सीसाणं वा सीसणीगाणं वा, से भयवं ! जया णं एवंविहे अक्खरे ण पयादी ?, गोयमा ! जया णं एवंविहे अक्खरे ण पयादी तया णं आसन्नप्पावयणीणं पकहित्ताणं चउत्थादीहिं समक्कमित्ताणं अक्खरे दावेज्जा, से भयवं ! जया णं एएणं पयारेणं से णं कुगुरू अक्खरे ण पदेज्जा तया णं किं कुज्जा ?, गोयमा ! जया णं एएणं पयारेणं से णं कुगुरू अक्खरे नो पयच्छे तया णं संघबज्झे उवइसेज्जा, से भयवं ! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ ?, गोयमा ! सुट्ठु पयट्टे इणमो महामोहपासे गेहपासे तमेव विप्पजहित्ताणं अणेगसारीरिगमणोसमुत्थचउगइसंसारदुक्खभयभीए कहकहवि मोहमिच्छत्तादीणं खओवसमेणं सम्मग्गं समोवलभित्ताणं निव्विन्नकामभोगे निरणुबंधं पुन्नमहिजे, तं च तवसंजमाणुट्ठाणेणं, तस्सेव तवसंजमकिरियाए जाव णं गुरू सयमेव विग्घं पयरे अहा णं परेहिं कारवे कीरमाणे वा सम-णुवेक्खे सपक्खेण वा परपक्खेण वा ताव णं तस्स महाणुभागस्स साहुणो संतियं विज्जमाणमवि धम्मवीरियं पणस्से जाव णं धम्मवीरियं पणस्से ताव णं जे पुन्नभागे आसन्नपुरक्खडे चेव सो पणस्से, जइ णं णो समणलिंगं विप्पजहे ताहे जे एवंगुणोववए से णं तं गच्छमुज्झिय अन्नं गच्छं समुप्पयाइ, तत्थवि जाव णं संपवेसं ण लभे ताव णं कयाइ उण अविहीए पाणे पयहेज्जा कयाइ उण मिच्छत्तभावं गच्छिय परपासंडियमासएज्जा कयाइ उण दाराइसंगहं काऊणं अगारवासे पविसेज्जा अहा णं से ताहे महातवस्सी भवेत्ताणं पुणो अतवस्सी होऊणं परकम्मकरे हवेज्जा जाव णं एयाइं न हवंति ताव णं एगंतेणं वुड्ढिं गच्छे मिच्छत्ततमे जाव णं मिच्छत्ततमंधीकए बहुजणनिवहे दुक्खेणं समणुट्ठेज्जा दुग्गइनिवारए सोक्खपरंपरकारए अहिंसालक्खणसमणधम्मे, जाव णं एयाइं भवंति ताव णं तित्थस्सेव वोच्छित्ती, ताव णं सुदूरवविहिए परमपए, जाव णं सुदूरवविहिए परमपए ताव णं अचंतसुदुक्किए चेव भव्वस-

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [१४] + गाथा ||२०||

दीप अनुक्रम [१३९०]

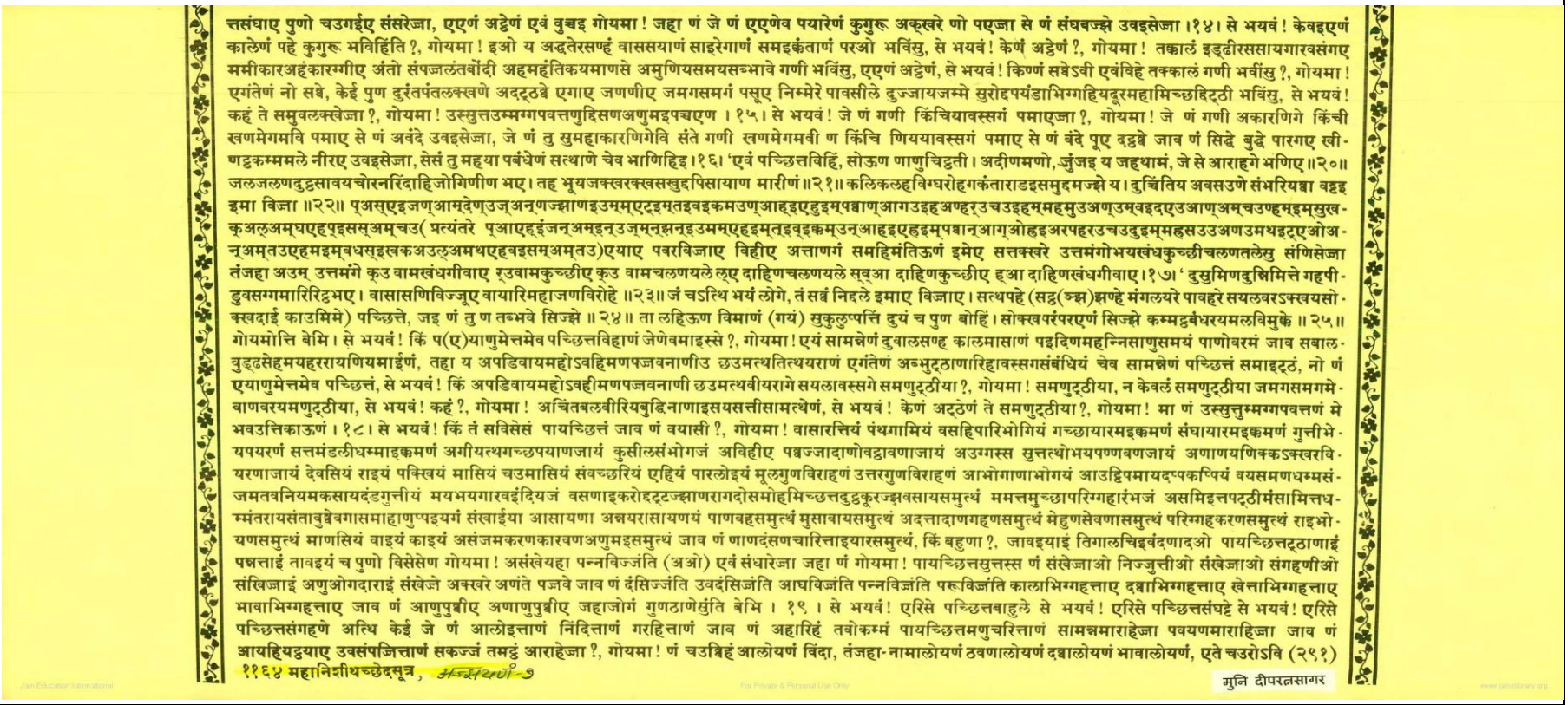

त्तसंघाए पुणो चउगईए संसरेज्जा, एएणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ गोयमा! जहा णं जे णं एएणेव पयारेणं कुगुरू अक्खरे णो पएज्जा से णं संघबज्झे उवइसेज्जा।१४। से भयवं! केवइएणं कालेणं पहे कुगुरू भविहिंति?, गोयमा! इओ य अद्धतेरसण्हं वाससयाणं साइरेगाणं समइक्कंताणं परओ भविंसु, से भयवं! केणं अट्ठेणं?, गोयमा! तक्कालं इड्ढीरससायगारवसंगए ममीकारअहंकारग्गीए अंतो संपज्जलंतबोंदी अहमहंतिकयमाणसे अमुणियसमयसब्भावे गणी भविंसु, एएणं अट्ठेणं, से भयवं! किण्णं सव्वेऽवी एवंविहे तक्कालं गणी भवींसु?, गोयमा! एगंतेणं नो सबे, केई पुण दुरंतपंतलक्खणे अदट्ठबे एगाए जणणीए जमगसमगं पसूए निम्मेरे पावसीले दुज्जायजम्मे सुरोद्दपयंडाभिग्गहियदूरमहामिच्छद्दिट्ठी भविंसु, से भयवं! कहं ते समुवलक्खेज्जा?, गोयमा! उस्सुत्तउम्मग्गपवत्तणुद्दिसणअणुमइपच्चएण ।१५। से भयवं! जे णं गणी किंचियावस्सगं पमाएज्जा?, गोयमा! जे णं गणी अकारणिगे किंची खणमेगमवि पमाए से णं अवंदे उवइसेज्जा, जे णं तु सुमहाकारणिगेवि संते गणी खणमेगमवी ण किंचि णिययावस्सगं पमाए से णं वंदे पूए दट्ठबे जाव णं सिद्धे बुद्धे पारगए खीणट्ठकम्ममले नीरए उवइसेज्जा, सेसं तु महया पबंधेणं सत्थाणे चेव भाणिहिइ।१६। ‘एवं पच्छित्तविहिं, सोऊण णाणुचिट्ठती। अदीणमणो, जुंजइ य जहत्थामं, जे से आराहगे भणिए॥२०॥ जलजलणदुट्ठसावयचोरनरिंदाहिजोगिणीण भए। तह भूयजक्खरक्खसखुद्दपिसायाण मारीणं॥२१॥ कलिकलहविग्घरोहगकंताराडइसमुद्दमज्झे य। दुचिंतिय अवसउणे संभरियव्वा वट्टइ इमा विज्जा ॥२२॥ पूअस्एइजण्आम्देण्उज्अन्णज्झाणइउम्मएट्ठमतइवइकमउण्आहइएहुइमपवाण्आगउइहअण्हरुचउइहमहमुउअण्उमवइदएउआण्अम्चउण्हमइम्सुखकुअल्अम्घएहपइसस्अम्चउ(प्रत्यंतरे पूआएहइंजन्अमइन्उज्मन्झन्इउमम्एहइम्तइव्इकम्उन्आहइएहइम्पवान्आग्ओहइअरपहरउचउदुइम्महसउउअणउमथइट्एओअन्अम्तउएहमइम्वधस्इखकअउल्अमथएहवइसम्अम्तउ)एयाए पवरविज्जाए विहीए अत्ताणगं समहिमंतिऊणं इमेए सत्तक्खरे उत्तमंगोभयखंधकुच्छीचलणतलेसु संणिसेज्जा तंजहा अउम् उत्तमंगे कुउ वामखंधगीवाए रुउवामकुच्छीए कुउ वामचलणयले ल्एदाहिणचलणयले स्वआ दाहिणकुच्छीए हआ दाहिणखंधगीवाए।१७। ‘ दुसुमिणदुन्निमित्ते गहपीडुवसग्गमारिरिट्ठभए। वासासणिविज्जूए वायारिमहाजणविरोहे ॥२३॥ जं चडत्थि भयं लोगे, तं सव्वं निद्दले इमाए विज्जाए। सत्थपहे (सट्ठ(ज्झ)झण्हे मंगलयरे पावहरे सयलवरऽक्खयसोक्खदाई काउमिमे) पच्छित्ते, जइ णं तु ण तब्भवे सिज्झे ॥२४॥ ता लहिऊण विमाणं (गयं) सुकुलुप्पत्तिं दुयं च पुण बोहिं। सोक्खपरंपरएणं सिज्झे कम्मट्ठबैधरयमलविमुक्के ॥२५॥ गोयमोत्ति बेमि। से भयवं! किं प(ए)याणुमेत्तमेव पच्छित्तविहाणं जेणेवमाइस्से?, गोयमा! एयं सामन्नेणं दुवालसण्ह कालमासाणं पइदिणमहन्निसाणुसमयं पाणोवरमं जाव सबालवुड्ढसेहमयहरायणियमाईणं, तहा य अपडिवायमहोऽवहीमणपज्जवनाणीउ छउमत्थतित्थयराणं एगंतेणं अब्भुट्ठाणारिहावस्सगसंबंधियं चेव सामन्नेणं पच्छित्तं समाइट्ठं, नो णं एयाणुमेत्तमेव पच्छित्तं, से भयवं! किं अपडिवायमहोऽवहीमणपज्जवनाणी छउमत्थवीयरागे सयलावस्सगे समणुट्ठीया?, गोयमा! समणुट्ठीया, न केवलं समणुट्ठीया जमगसमगमेवाणवरयमणुट्ठीया, से भयवं! कहं?, गोयमा! अचिंतबलवीरियबुद्धिनाणाइसयसत्तीसामत्थेणं, से भयवं! केणं अट्ठेणं ते समणुट्ठीया?, गोयमा! मा णं उस्सुत्तुम्मग्गपवत्तणं मे भवउत्तिकाऊणं।१८। से भयवं! किं तं सविसेसं पायच्छित्तं जाव णं वयासी?, गोयमा! वासारत्तियं पंथगामियं वसहिपारिभोगियं गच्छायारमइक्कमणं संघायारमइक्कमणं गुत्तीभेयपयरणं सत्तमंडलीधम्माइक्कमणं अगीयत्थगच्छपयाणजायं कुसीलसंभोगजं अविहीए पव्वज्जादाणोवट्ठावणाजायं अउग्गस्स सुत्तत्थोभयपण्णवणजायं अणाणयणिक्कऽक्खरविरणाजायं देवसियं राइयं पक्खियं मासियं चउमासियं संवच्छरियं एहियं पारलोइयं मूलगुणविराहणं उत्तरगुणविराहणं आभोगाणाभोगयं आउट्टिपमायदप्पकप्पियं वयसमणधम्मसंजमतवनियमकसायदंडगुत्तीयं मयभयगारवइंदियजं वसणाइकरोद्दट्टज्झाणरागदोसमोहमिच्छत्तदुट्ठकूरज्झवसायसमुत्थं ममत्तमुच्छापरिग्गहारंभजं असमिइत्तपट्ठीमंसामित्तधम्मंतरायसंतावुव्वेवगासमाहाणुप्पइयगं संखाईया आसायणा अन्नयरासायणयं पाणवहसमुत्थं मुसावायसमुत्थं अदत्तादाणगहणसमुत्थं मेहुणसेवणासमुत्थं परिग्गहकरणसमुत्थं राइभोयणसमुत्थं माणसियं वाइयं काइयं असंजमकरणकारवणअणुमइसमुत्थं जाव णं णाणदंसणचारित्ताइयारसमुत्थं, किं बहुणा?, जावइयाइं तिगालचिइवंदणादओ पायच्छित्तट्ठाणाइं पन्नत्ताइं तावइयं च पुणो विसेसेण गोयमा! असंवेयहा पन्नविज्जंति (अओ) एवं संधारेज्जा जहा णं गोयमा! पायच्छित्तसुत्तस्स णं संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जाओ संगहणीओ संखिज्जाइं अणुओगदाराइं संखेज्जे अक्खरे अणंते पज्जवे जाव णं दंसिज्जंति उवदंसिज्जंति आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति कालाभिग्गहत्ताए दव्वाभिग्गहत्ताए खेत्ताभिग्गहत्ताए भावाभिग्गहत्ताए जाव णं आणुपुव्वीए अणाणुपुव्वीए जहाजोगं गुणठाणेसुंति बेमि । १९ । से भयवं! एरिसे पच्छित्तबाहुल्ले से भयवं! एरिसे पच्छित्तसंघट्टे से भयवं! एरिसे पच्छित्तसंगहणे अत्थि केई जे णं आलोइत्ताणं निंदित्ताणं गरहित्ताणं जाव णं अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तमणुचरित्ताणं सामन्नमाराहेज्जा पवयणमाराहिज्जा जाव णं आयहियट्ठयाए उवसंपज्जित्ताणं सकज्जं तमट्ठं आराहेज्जा?, गोयमा! णं चउव्विहं आलोयणं विंदा, तंजहा-नामालोयणं ठवणालोयणं दव्वालोयणं भावालोयणं, एते चउरोऽवि (२९१)

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [२०] + गाथा ||२६||

दीप अनुक्रम [१४०२]

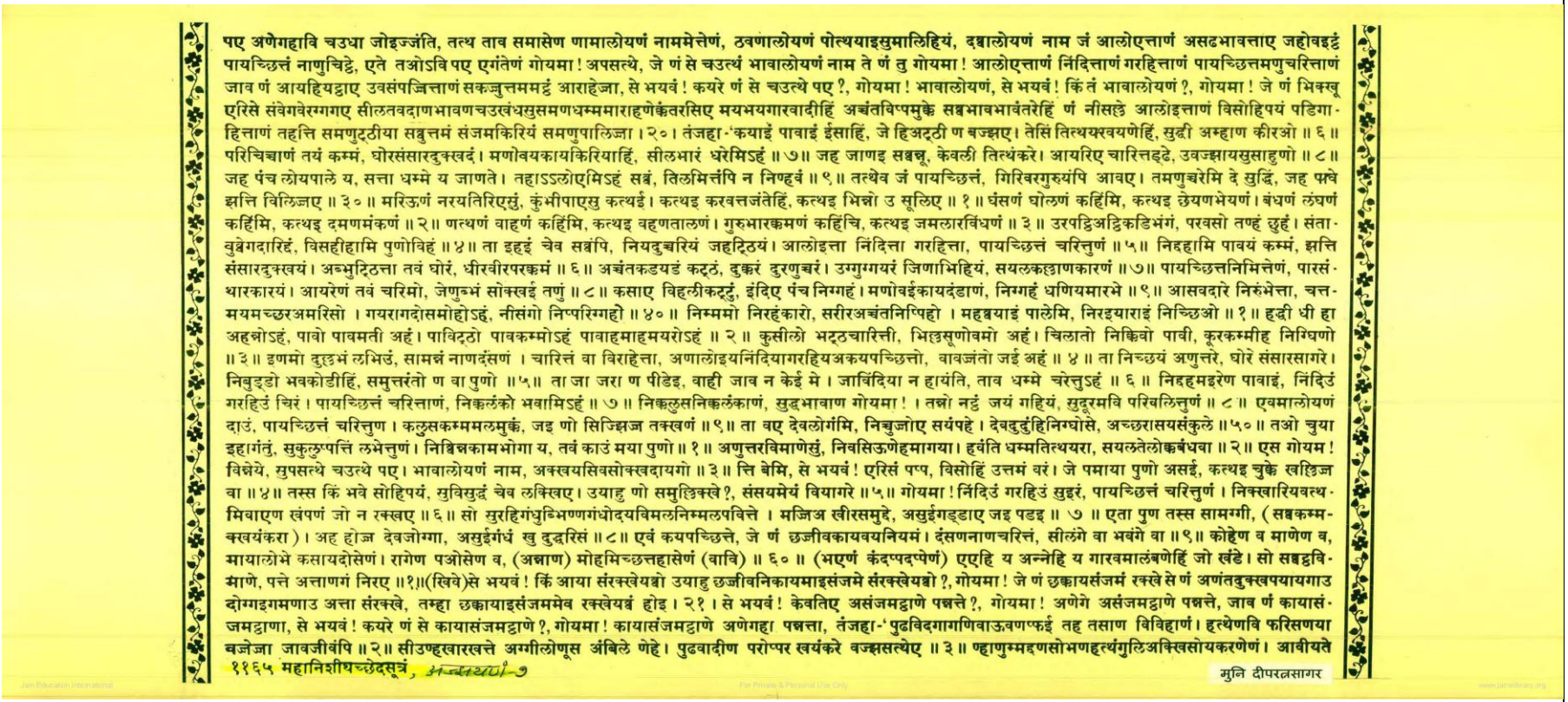

पए अणेगहावि चउधा जोइज्जंति, तत्थ ताव समासेण णामालोयणं नाममेत्तेणं, ठवणालोयणं पोत्थयाइसुमालिहियं, दव्वालोयणं नाम जं आलोएत्ताणं असढभावत्ताए जहोवइट्ठं पायच्छित्तं नाणुचिट्ठे, एते तओऽवि पए एगंतेणं गोयमा! अपसत्थे, जे णं से चउत्थं भावालोयणं नाम ते णं तु गोयमा! आलोएत्ताणं निंदित्ताणं गरहित्ताणं पायच्छित्तमणुचरित्ताणं जाव णं आयहियट्ठाए उवसंपज्जित्ताणं सकज्जुत्तममट्ठं आराहेज्जा, से भयवं! कयरे णं से चउत्थे पए?, गोयमा! भावालोयणं, से भयवं! किं तं भावालोयणं?, गोयमा! जे णं भिक्खू एरिसे संवेगवेरग्गगए सीलतवदाणभावणचउरक्खंधसुसमणधम्ममाराहणेक्कंतरसिए मयभयगारवादीहिं अच्चंतविप्पमुक्के सव्वभावभावंतरेहिं णं नीसल्ले आलोइत्ताणं विसोहिपयं पडिगाहित्ताणं तहत्ति समणुट्ठीया सव्वुत्तमं संजमकिरियं समणुपालिज्जा।२०। तंजहा-‘कयाइं पावाइं ईसाहिं, जे हिअट्ठी ण बज्झए। तेसिं तित्थयरवयणेहिं, सुद्धी अम्हाण कीरओ ॥ ६ ॥ परिचिचाणं तयं कम्मं, घोरसंसारदुक्खदं। मणोवयकायकिरियाहिं, सीलभारं धरेमिऽहं ॥७॥ जह जाणइ सव्वन्नू, केवली तित्थंकरे। आयरिए चारित्तड्ढे, उवज्झायसुसाहुणो ॥ ८ ॥ जह पंच लोयपाले य, सत्ता धम्मे य जाणते। तहाऽऽलोएमिऽहं सव्वं, तिलमित्तंपि न निण्हवं ॥ ९ ॥ तत्थेव जं पायच्छित्तं, गिरिवरगुरुयंपि आवए। तमणुचरेमि दे सुद्धिं, जह पत्ते झत्ति विलिज्जए ॥ ३० ॥ मरिऊणं नरयतिरिएसुं, कुंभीपाएसु कत्थई। कत्थइ करवत्तजंतेहिं, कत्थइ भिन्नो उ सूलिए ॥ १ ॥ घंसणं घोलणं कहिंमि, कत्थइ छेयणभेयणं। बंधणं लंघणं कहिंमि, कत्थइ दमणमंकणं ॥ २ ॥ णत्थणं वाहणं कहिंमि, कत्थइ वहणतालणं। गुरुभारक्कमणं कहिंचि, कत्थइ जमलारविंधणं ॥ ३ ॥ उरपट्ठिअट्ठिकडिभंगं, परवसो तण्हं छुहं। संतावुब्बेगदारिदं, विसहीहामि पुणोविहं ॥ ४ ॥ ता इहई चेव सव्वंपि, नियदुच्चरियं जहट्ठियं। आलोइत्ता निंदित्ता गरहित्ता, पायच्छित्तं चरित्तुणं ॥ ५ ॥ निहहामि पावयं कम्मं, झत्ति संसारदुक्खयं। अब्भुट्ठित्ता तवं घोरं, धीरवीरपरक्कमं ॥ ६ ॥ अच्चंतकडयडं कट्ठं, दुक्करं दुरणुचरं। उग्गुग्गयरं जिणाभिहियं, सयलकल्लाणकारणं ॥७॥ पायच्छित्तनिमित्तेणं, पारसंथारकारयं। आयरेणं तवं चरिमो, जेणुब्भं सोक्खई तणुं ॥ ८ ॥ कसाए विहलीकट्टुं, इंदिए पंच निग्गहं। मणोवईकायदंडाणं, निग्गहं घणियमारभे ॥ ९ ॥ आसवदारे निरुंभेत्ता, चत्तमयमच्छरअमरिसो। गयरागदोसमोहोऽहं, नीसंगो निप्परिग्गहो ॥ ४० ॥ निम्ममो निरहंकारो, सरीरअच्चंतनिप्पिहो। महव्वयाइं पालेमि, निरइयाराइं निच्छिओ ॥ १ ॥ हद्धी धी हा अहन्नोऽहं, पावो पावमती अहं। पाविट्ठो पावकम्मोऽहं पावाहमाहमयरोऽहं ॥ २ ॥ कुसीलो भट्ठचारित्ती, भिन्नसुणोवमो अहं। चिलातो निक्किवो पावी, कूरकम्मीह निग्घिणो ॥ ३ ॥ इणमो दुल्लभं लभिउं, सामन्नं नाणदंसणं। चारित्तं वा विराहेत्ता, अणालोइयनिंदियागरहियअकयपच्छित्तो, वावज्जंतो जई अहं ॥ ४ ॥ ता निच्छयं अणुत्तरे, घोरे संसारसागरे। निबुड्डो भवकोडीहिं, समुत्तरंतो ण वा पुणो ॥ ५ ॥ ता जा जरा ण पीडेइ, वाही जाव न केई मे। जाविंदिया न हायंति, ताव धम्मे चरेत्तुऽहं ॥ ६ ॥ निहहमइरेण पावाइं, निंदिउं गरहिउं चिरं। पायच्छित्तं चरित्ताणं, निक्कलंको भवामिऽहं ॥ ७ ॥ निक्कलुसनिक्कलंकाणं, सुद्धभावाण गोयमा! । तन्नो नट्ठं जयं गहियं, सुदूरमवि परिवलित्तुणं ॥ ८ ॥ एवमालोयणं दाउं, पायच्छित्तं चरित्तुण। कलुसकम्ममलमुक्कं, जइ णो सिज्झिज्ज तक्खणं ॥ ९ ॥ ता वए देवलोगंमि, निचुज्जोए सयंपहे। देवदुंदुहिनिग्घोसे, अच्छरासयसंकुले ॥ ५० ॥ तओ चुया इहागंतुं, सुकुलुप्पत्तिं लभेत्तुणं। निव्विन्नकामभोगा य, तवं काउं मया पुणो ॥ १ ॥ अणुत्तरविमाणेसुं, निवसिऊणेहमागया। हवंति धम्मतित्थयरा, सयलतेलोक्कबंधवा ॥ २ ॥ एस गोयम! विन्नेये, सुपसत्थे चउत्थे पए। भावालोयणं नाम, अक्खयसिवसोक्खदायगो ॥ ३ ॥ त्ति बेमि, से भयवं! एरिसं पप्प, विसोहिं उत्तमं वरं। जे पमाया पुणो असई, कत्थइ चुक्के खलिज्ज वा ॥ ४ ॥ तस्स किं भवे सोहिपयं, सुविसुद्धं चेव लक्खिए। उयाहु णो समुल्लिक्खे?, संसयमेयं वियागरे ॥ ५ ॥ गोयमा! निंदिउं गरहिउं सुइरं, पायच्छित्तं चरित्तुणं। निक्खारियवत्थमिवाएण खंपणं जो न रक्खए ॥ ६ ॥ सो सुरहिगंधुब्भिण्णगंधोदयविमलनिम्मलपवित्ते । मज्जिअ खीरसमुद्दे, असुईगड्डाए जइ पडइ ॥ ७ ॥ एता पुण तस्स सामग्गी, (सव्वकम्मक्खयंकरा)। अह होज्ज देवजोग्गा, असुईगंधं खु दुद्धरिसं ॥ ८ ॥ एवं कयपच्छित्ते, जे णं छज्जीवकायवयनियमं। दंसणनाणचरित्तं, सीलंगे वा भवंगे वा ॥ ९ ॥ कोहेण व माणेण व, मायालोभे कसायदोसेणं। रागेण पओसेण व, (अन्नाण) मोहमिच्छत्तहासेणं (वावि) ॥ ६० ॥ (भएणं कंदप्पदप्पेणं) एएहि य अन्नेहि य गारवमालंबणेहिं जो खंडे। सो सव्वट्ठविमाणे, पत्ते अत्ताणगं निरए ॥१॥(खिवे)से भयवं! किं आया संरक्खेयव्वो उयाहु छज्जीवनिकायमाइसंजमे संरक्खेयव्वो?, गोयमा! जे णं छक्कायसंजमं रक्खे से णं अणंतदुक्खपरंपरायगाउ दोग्गइगमणाउ अत्ता संरक्खे, तम्हा छक्कायाइसंजममेव रक्खेयव्वं होइ। २१। से भयवं! केवतिए असंजमट्ठाणे पन्नत्ते?, गोयमा! अणेगे असंजमट्ठाणे पन्नत्ते, जाव णं कायासंजमट्ठाणा, से भयवं! कयरे णं से कायासंजमट्ठाणे?, गोयमा! कायासंजमट्ठाणे अणेगहा पन्नत्ता, तंजहा-‘पुढविदगागणिवाऊवणप्फई तह तसाण विविहाणं। हत्थेणवि फरिसणया वज्जेजा जावजीवंपि ॥२॥ सीउण्हखारखत्ते अग्गीलोणूस अंबिले णेहे। पुढवादीण परोप्पर खयंकरे वज्झसत्थेए ॥ ३ ॥ ण्हाणुम्मद्दणसोभणहत्थंगुलिअक्खिसोयकरणेणं। आवीयते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [२२] + गाथा ||६४|| दीप अनुक्रम [१४४३]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

अणंते आऊजीवे खयं जंति ॥४॥ संघुक्कणजलणुज्जालणेण उज्जोयकरणमादीहिं। वीयणफूमणउब्भावणेहिं सिहिजीवसंघायं ॥५॥ जाइ खयं अन्नेऽविय छज्जीवनिकायमइगए जीवे। जलणो सुद्धइओवि हु संभक्खइ दसदिसाणं च ॥६॥ वीयणगतालियंटयचामरउक्खेवहत्थतालेहिं। धावणडेवणलंघणऊसासाईहिं वाऊणं ॥७॥ अंकूरकुहरकिसलयपवालपुप्फफलकंदलाईणं। हत्थफरिसेण बहवे जंति खयं वणप्फई जीवे ॥८॥ गमणागमणनिसीयणसुयणुट्ठाणअणुवउत्तयपमत्तो। वियलिंति बितिचउपंचेंदियाण गोयम! खयं नियमा ॥९॥ पाणाइवायविरई सिवफलया गिण्हिऊण ता धीमं। मरणावयंमि पत्ते मरेज्ज विरइं न खंडेज्जा ॥७०॥ अलियवयणस्स विरइं सावज्जं सच्चमवि न भासिज्जा। परदव्वहरणविरइं करेज्ज दिन्नेवि मा लोभं ॥१॥ धरणं दुद्धरबंभव्वयस्स काउं परिग्गहच्चायं। राईभोयणविरइं पंचिंदियनिग्गहं विहिणा ॥२॥ अन्ने य कोहमाणा रागद्दोसे य (आ) लोयणं दाउं। ममकारअहंकारे पयहियव्वे पयत्तेणं ॥३॥ जह तवसंजमसज्झायझाणमाईसु सुद्धभावेहिं। उज्जमियव्वं गोयम! विज्जुलयाचंचले जीवे ॥४॥ किं बहुणा? गोयमा! एत्थं, दाऊणं आलोयणं। पुढविकायं विराहेज्जा, कत्थ गंतुं स सुज्झिही?॥५॥ किं बहुणा गोयमा! एत्थं, दारुणं आलोयणं। बाहिरपाणं तहिं जम्मे, जे पिए कत्थ सुज्झिही?॥६॥ किं०। उण्हवइ जालाइं जाओ, फुसिओ वा कत्थ सुज्झिही?॥७॥ किं०। वाउकायं उदीरेज्जा, कत्थ गंतूण सुज्झिही?॥८॥ किं०। जो हरियतणं पुप्फं वा, फरिसे कत्थ स सुज्झिही?॥९॥ किं०। अक्कमई बीयकायं जो, कत्थ गंतुं स सुज्झिही?॥८०॥ किं०। वियलेंदी (बितिचउ) पंचिंदिय परियावे, जो कत्थ स सुज्झिहि?॥१॥ किं०। छक्काए जो न रक्खेज्जा, सुहुमे कत्थ स सुज्झिही?॥२॥ किं बहुणा गोयमा! एत्थं, दाऊणं आलोयणं। तसथावर जो न रक्खे, कत्थ गंतुं स सुज्झिही?॥३॥ आलोइयनिंदियगरहिओवि कयपायच्छित्तणीसल्लो। उत्तमठाणंमि ठिओ पुढवारंभं परिहरिजा॥४॥ आलोइ०। उत्तमठाणंमि ठिओ, जोईए मा फुसावेज्जा॥५॥ आलोइ० संविग्गो। उत्तमठाणंमि ठिओ, मा वियावेज्ज अत्ताणं॥६॥ आलोइ० संविग्गो। छिन्नंपि तणं हरियं, असई मणगं मा फरिसे॥७॥ आलोइय० संविग्गो। उत्तमठाणंमि ठिओ, जावज्जीवंपि एतेसिं॥८॥ बेंदियतेंदियचउरोपंचिंदियाण जीवाणं। संघट्टणपरियावणकिलावणोद्दवण मा कासी॥९॥ आलोइ० संविग्गो। उत्तमठाणंमि ठिओ, सावज्जं मा भणिज्जासु॥९०॥ आलोइय० संविग्गो। लोयत्थे णवि भूई गहिया गिहिउक्खिविउ दिन्ना॥१॥ आलोइ० नीसल्लो। जे इत्थी संलविज्जा, गोयम! कत्थ स सुज्झिही?॥२॥ आलोइय० संविग्गो। चोद्दसधम्मुवगरणे, उड्ढं मा परिगहं कुज्जा॥३॥ तेसिंपि निम्ममत्तो अमुच्छिओ अगड्ढिओ दढं हविया। अह कुज्जा उ ममत्तं ता सुद्धी गोयमा! नत्थि॥४॥ किं बहुणा? गोयमा! एत्थं, दाऊणं आलोयणं। रयणीए आविए पाणं, कत्थ गंतुं स सुज्झिही?॥५॥ आलोइय-निंदियगरहिओवि कयपायच्छित्तनीसल्लो। छाइक्कमे ण रक्खे जो, कत्थ सुद्धिं लभेज्ज सो?॥६॥ अपसत्थे य जे भावे, परिणामे य दारुणे। पाणाइवायस्स वेरमणे, एस पढमे अइक्कमे॥७॥ तिव्वरागा य जा भासा, निट्ठुरखरफरुसकक्कसा। मुसावायस्स वेरमणे, एस बीए अइक्कमे॥८॥ उवग्गहं अजाइत्ता, अचियत्तंमि उवग्गहे। अदत्तादाणस्स वेरमणे, एस तइए अइक्कमे॥९॥ सद्दा रूवा रसा गंधा, फासाणं पवियारणे। मेहुणस्स वेरमणे, एस चउत्थे अइक्कमे॥१००॥ इच्छा मुच्छा य गेही य, कंखा लोभे य दारुणे। परिग्गहस्स वेरमणे, पंचमगेसाइक्कमे॥१॥ अइमत्ताहार होइत्ता, सूरक्खित्तंमि संकिरे। राईभोयणस्स वेरमणे, एस छट्ठे अइक्कमे॥२॥ आलोइयनिंदियगरहिओवि कयपायच्छित्तणीसल्लो। जयणं अयाणमाणो, भवसंसारं भमे जहा सुसढो॥१०३॥ भयवं! को उण सो सुसढो? कयरा वा सा जयणा? जमजाणमाणस्स णं तस्स आलोइयनिंदियगरहिओ(यस्सा)वि कयपायच्छित्तस्सावि संसारं णो विणिट्ठियंति?, गोयमा! जयणा णाम अट्ठारसण्हं सीलंगसहस्साणं सत्तरसविहस्स णं संजमस्स चोद्दसण्हं भूयगामाणं तेरसण्हं किरियाठाणाणं सवज्झब्भंतरस्स णं दुवालसविहस्स तवोऽणुट्ठाणस्स दुवालसण्हं भिक्खुपडिमाणं दसविहस्स णं समणधम्मस्स णवण्हं चेव बंभगुत्तीणं अट्ठण्हं तु पवयणमाईणं सत्तण्हं चेव पाणपिंडेसणाणं छण्हं तु जीवनिकायाणं पंचण्हं तु महव्वयाणं तिण्हं तु चेव गुत्तीणं जाव णं तिण्हमेव सम्मद्दंसणनाणचरित्ताणं भिक्खू कंतारदुब्भिक्खावायंकाईसु णं सुमहासमुप्पन्नेसु अंतोमुहुत्तावसेसकंठगयपाणेसुंपि णं मणसावि उ खंडणं विराहणं ण करेज्जा ण कारवेज्जा ण समणुजाणेज्जा जाव णं नारभेज्जा न समारंभेज्जा जावज्जीवाएत्ति, से णं जयणाए भत्ते से णं जयणाए धुवे से णं जयणाए व दक्खे से णं जयणाए वियाणएत्ति, गोयमा! सुसढस्स उण महती संकहा परमविम्हयजणणी य।२२॥ चूलिया पढमा एगंतनिज्जरा, चू०१ अ०७॥ से भयवं! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ?, तेणं कालेणं तेणं समएणं सुसढनामधेज्जे अणगारेह भूयवं, तेणं च एगेगस्स णं पक्खस्संतो पभूयट्ठाणियाओ आलोयणाओ विदिन्नाओ सुमहंताइं च अचंतघोरसुदुक्कराइं पायच्छित्ताइं समणुचिन्नाइं तहावि तेणं वरएणं विसोहिपयं न समुवलब्भंति, एतेणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ, से भयवं! केरिसा उणं तस्स सुसढस्स वत्तव्वया?, गोयमा! अत्थि इह चेव भारहे वासे अवंती णाम जणवओ, तत्थ य संवुके नामं खेडगे, तम्मि य जम्मदरिद्दे निम्मेरे निक्किवे किविणे णिराणुकंपे अइक्कूरे निक्करुणे निल्लिसे रोद्दे चंडरोद्दपयंडदंडे पावे अभिग्गहियमिच्छादिट्ठी अणुव्वरियनामधेज्जे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अत्र सप्तमं अध्ययनं/(चूलिका-१) समाप्तं अत्र अष्टमं अध्ययनं/(चूलिका-२)- “सुषढ-अनगार कथा” आरब्धः

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [१] + गाथा ||-||

दीप अनुक्रम [१४८४]

सुज्जसिवे नाम धिज्जाइ अहेसि, तस्स य धूया सुज्जसिरी, सा य परितुलियसयलतिहुयणनरनारीगणा लावन्नकंतिदित्तिरूवसोहग्गाइसएणं अणोवमा अत्तग्गा, तीए अन्नभवंतरंमि इणमो हियएण दुचिंतियं अहेसि, जहा णं-सोहणं हवेज्जा जइ णं इमस्स बालगस्स माया वावज्जे तओ मज्झ असवक्कं भवे, एसो य बालगो दुज्जीविओ भवइ ताहे मज्झ सुयस्स राय-लच्छी परिणमेज्जति, तक्कम्मदोसेणं तु जायमेत्ताए चेव पंचत्तमुवगया जणणी, तओ गोयमा ! तेणं सुज्जसिवेणं महया किलेसेणं छंदमाराहमाणेणं बहूणं अहिणवपसूयजुवतीणं घरा-घरिं थन्नं पाऊणं जीवाविया सा बालिया, अहन्नया जाव णं बालभावमुत्तिन्ना सा सुज्जसिरी ताव णं आगयं अमायापुत्तं महारोरवं दुवालससंवच्छरियं दुब्भिक्खंति, जाव णं फेट्टाफेट्टीए जाउमारद्धे सयलेवि णं जणसमूहे, अहऽन्नया बहुदिवसखुहत्तेणं विसायमुवगएणं तेण चिंतियं जहा किमेयं वावाइऊणं समुद्दिसामि किं वा णं इमीए पोग्गलं विक्किणिऊणं चेव अन्नं किंचिवि वणिमगाउ पडिगाहित्ताणं पाणवित्तिं करेमि, णो णमन्ने केई जीवसंधारणोवाए संपयं मे हविज्जत्ति, अहवा हद्धी हा हा ण जुत्तमिणंति, किंतु जीवमाणिं चेव विक्किणामित्ति चिंतिऊणं विक्किया सुज्जसिरी महारिद्धीजुयस्स चोद्दसविज्जाठाणपारगस्स णं माहणगोविंदस्स गेहे, तओ बहुजणेहिं धिद्धीसद्दोवहओ तं देसं परिचिच्चाणं गओ अन्नदेसंतरं सुज्जसिवो, तत्थावि णं पयट्टो सो गोयमा ! इत्थेव विन्नाणे जाव णं अन्नेसिं कन्नगाओ अवहरित्ताणं अवहरित्ताणं अन्नत्थ विक्किणिऊण मेलियं सुज्जसिवेण बहुं दविणजायं, एयावसरंमि उ समइक्कंते साइरेगे अट्ठसंवच्छरे दुब्भिक्खस्स जाव णं वियलियमसेसविहवं तस्सावि णं गोविंदमाहणस्स, तं च वियाणिऊण विसायमुवगएणं चिंतियं गोयमा ! तेणं गोविंदमाहणेणं, जहा णं होही संघारकालं मज्झ कुडुंबस्स, नाहं विसीयमाणे बंधवे खणद्धमवि दट्ठूणं सक्कुणोमि, ता किं कायव्वं संपयं अम्हेहिंति चिंतयमाणस्सेव आगया गोउलाहिवइणो भज्जा खइयगविक्कणणत्थं तस्स गेहे जाव णं गोविंदस्स भज्जाए तंदुलमल्लगेणं पडिगाहियाउ चउरो घणविगईमीसखइयगकगोलियाओ, तं च पडिगाहियमेत्तमेव परिभुत्तं डिंभेहिं, भणियं च महीयरीए-जहा णं भट्टिदारिगे ! पयच्छाहि णं तं अम्हाणं तंदुलमल्लगं चिरं वट्टे जेणऽम्हे गोउलं वयामो, तओ समाणत्ता गोयमा ! तीए माहणीए सा सुज्जसिरी जहा णं हला ! तं जम्हा णरवइणा णिसावयं पहियं पेहियं तत्थ जं तं तंदुलमल्लगं तं मग्गाहि लहुं जेणाहमिमीए पयच्छामि, जाव ढंढवसिऊणं नीहरिया मंदिरं सा सुज्जसिरी नोवलद्धं तं तंदुलमल्लगं, साहियं च माहणीए, पुणोवि भणियं माहणीए-जहा हला ! अमुगं थाममणुद्दुया अन्नेसिऊणमाणेह, पुणोवि पयट्टा अलिंदगे जाव णं ण पिच्छे ताहे समुट्ठिया सयमेव सा माहणी जाव णं तीएवि ण दिट्ठं तं पुण, सुविम्हियमाणसा णिउणमन्नेसिउं पयत्ता, जाव णं पिच्छे गणिगासहायं पढमसुयं पयरिकं ओयणं समुद्दिसमाणं, तेणावि पडिदट्ठुं जणणीं आगच्छ-माणीं चिंतियं अहन्नेणं-जहा चलिया अम्हाणं ओयणं अवहरिउकामा पायमेसा, ता जइ इहासन्नमागच्छिही तओऽहमेयं वावाइस्सामित्ति चिंतयंतेणं भणिया दूरासन्ना चेव महा-सद्देणं सा माहणी-जहा णं भट्टिदारिगा ! जंइ तुमं इहयं समागच्छिहिसि तओ मा एवं तं बोहिया जहा णं णो परिकहियं, निच्छयं अहयं ते वावाएस्सामि, एवं च अणिट्ठवयणं सोच्चाणं वज्जासणिहया इव धसत्ति मुच्छिऊणं निवडिया धरणिवट्टे गोयमा ! माहणित्ति, तओ णं तीए महीयरीए परिवालिऊणं किंचि कालक्खणं वुत्ता सा सुज्जसिरी जहा णं हला ! कन्नगे ! अम्हा णं चिरं वट्टे ता भणसु सिग्घं नियजणणिं जहा णं एह लहुं पयच्छ तुममम्हाणं तंदुलमल्लगं अहा णं तंदुलमल्लगं विप्पणट्ठं तओ णं मुग्गमल्लगमेव पयच्छसु, ताहे पविट्ठा सा सुज्जसिरी अलिंदगे जाव णं दट्ठूणं तमवत्थंतरगयं माहणीं महया हाहारवेणं धाहाविउं पयत्ता सा सुज्जसिरी, तं चायन्निऊणं सह परिवग्गेणं धाइओ सो माहणो महीयरी अ, तओ पवणजलेण आसासिऊणं पुट्ठा सा तेहिं जहा भट्टिदारिगे ! किमेयं किमेयंति ?, तीए भणियं-जहा णं मा मा अत्ताणगं दरमएणं दीहेणं खावेह, मा मा विगयजलाए सरियाए उब्भेह, मा मा अरजुएहिं पासेहिं नियंतिए मज्झ(ज्ज)मोहेणाऽऽणप्पेह, जहा णं किल एस पुत्ते एसा धूया एस णत्तुगे एसा सुण्हा एस जामाउगे एसा णं माया एस णं जणगे एसो भत्ता एस णं इट्ठे मिट्ठे पिए कंते सुहीयसयणमित्तबंधुपरिवग्गे इहइं पचक्खमेवेयं विदिट्ठं अलियमलिया चेव सा बंधवासा, सकज्जत्थी चेव संभयए लोओ, परमत्थओ न केइ सुही, जाव णं सकज्जं ताव णं माया ताव णं जणगे ताव णं धूया ताव णं जामाउगे ताव णं णत्तुगे ताव णं पुत्ते ताव णं सुण्हा ताव णं कंता ताव णं इट्ठे मिट्ठे पिए कंते सुहीसयणजणमित्तबं-धुपरिवग्गे, सकज्जसिद्धीविरहेणं तु ण कस्सई काइ माया न कस्सई केइ जणगे ण कस्सई काइ धूया ण कस्सई केइ जामाउगे ण कस्सई केइ पुत्ते ण कस्सई काइ सुण्हा न कस्सई केइ भत्ता ण कस्सई केइ कंता ण कस्सई केइ इट्ठे मिट्ठे पिए कंते सुहीसयणमित्तबंधुपरिवग्गे, जे णं तु पेच्छ पेच्छ मए अणेगोवाइयसउवलद्धे साइरेगणवमासकुच्छीएवि धारिऊणं च अणेगमिट्ठमहुरउसिणतिक्खसुलुसुलियसणिद्धआहारपयाणसिणाणुवट्टणधूयकरणसंवाहण(घण)धन्नपयाणाईहिं णं एमहंतमणुस्सीकए जहा किल अहं पुत्तरजंमि पुन्नपुन्नमणोरहा सुहंसुहेणं पणइयणपूरियासा कालं गमीहामि, ता एरिसं एयं वइयरंति, एयं च णाऊण मा धवाईसुं करेह खणद्धमवि अणुंपि पडिबंधं, जहा णं इमे मज्झ सुए संवुत्ते तहा णं गेहे गेहे जे

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [१] + गाथा ||१||

दीप अनुक्रम [१४८५]

केइ भूए जे केइ वट्टंति जे केइ भविंसु एए तहा णं एरिसे, सेऽवि बंधुवग्गे केवलं तु सकज्जलुद्धे चेव घडियामुहुत्तपरिमाणमेव कंचि कालं भएज्जा वा, ता भो भो जणा ! ण किंचि कज्जं एतेणं कारिमबंधुसंताणेणं अणंतसंसारघोरदुक्खपदायगेणंति, एगो चेव वाहन्निसाणुसमयं सयय सुविसुद्धासए भयह धम्मं, धम्मं धणं मिट्ठे पिए कंते परमत्थसुही सयणजणमित्तबंधुपरिवग्गे, धम्मे य णं दिट्ठिकरे धम्मे य णं पुट्ठिकरे धम्मे य णं बलकरे धम्मे य णं उच्छाहकरे धम्मे य णं निम्मलजसकित्तीपसाहगे धम्मे य णं माहप्पजणगे धम्मे य णं सुट्ठुसोक्खपरंपरदायगे से णं सेवे से णं आराहणिज्जे से य णं पोसणिज्जे से य णं पालणिज्जे से य णं करणिज्जे से य णं चरणिज्जे से य णं अणुट्ठिज्जे से य णं उवइस्सणिज्जे से य णं कहणिज्जे से य णं भणणिज्जे से य पन्नवणिज्जे से य णं कारवणिज्जे से य णं धुवे सासये अक्खए अव्वए सयलसोक्खनिही धम्मे से य णं अलज्जणिज्जे से य णं अउलबलवीरिएसरियसत्तपरक्कमसंजुए पवरे वरे इट्ठे पिए कंते दइए सयलऽसोक्खदारिद्दसंतावुव्वेगअयसऽब्भक्खाणलंभजरामरणाइअसेसभयनिन्नासगे अणण्णसरिसे सहाए तेलोक्कसामिसाले, ता अलं सुहीसयणजणमित्तबंधुगणधणधन्नसुवण्णहिरण्णरयणोहनिहीकोससंचयाइ सक्कचावविज्जुलयाडोवचंचलाए सुमिणिंदजालसरिसाए खणदिट्ठनट्ठभंगुराए अधुवाए असासयाए संसारवुड्ढिकारिगाए णिरयावयारहेउभूयाए सोग्गइमग्गविग्घदायगाए अणंतदुक्खपयायगाए रिद्धीए, सुदुल्लहाउ वेलाउ भो धम्मस्स साहणी सम्मदंसणनाणचरित्ताराहणी नीरुत्ताइसामग्गी अणवरयमहन्निसाणुसमएहिं णं खंडाखंडेहिं तु परिसडइ अदढघोरनिट्ठुरासब्भचंडाजरासणिसण्णिवायसंचुण्णिए सयजज्जरभंडएइव अकिंचिकरे भवइ उ दियहाणुदियहेणं इमे तणू, किसलयदलग्गपरिसंठियजलबिंदुमिवाकंडे निमिसद्धब्भंतरेणेव लहुं टलइ जीविए, अविदत्तस्स परलोगपत्थयणाणं तु निप्फले चेव मणुयजम्मे, ता भो ण खमे तणुयतरेवि ईसिंपि पमाए, जओ णं एत्थं खलु सव्वकालमेव समसत्तुमित्तभावेहिं भवेयव्वं, अप्पमत्तेहिं च पंचमहव्वए धारेयव्वे, तंजहा-कसिणपाणाइवायविरती अणलियभासित्तं दंतसोहणमित्तस्सवि अदिन्नस्स वज्जणं मणोवयकायजोगेहिं तु अखंडियअविराहियणवगुत्तीपरिवेढियस्स णं परमपवित्तस्स सव्वकालमेव दुद्धस्वंभचेरस्स धारणं वत्थपत्तसंजमोवगरणेसुंपि णिम्ममत्तया असणपाणाईणं तु चउव्विहेणेव राईभोयणचाओ उग्गमउप्पायणेसणाईसु णं सुविसुद्धपिंडग्गहणं संजोयणाइपंचदोसविरिहिएणं परिमिएणं काले तिन्हे पंचसमितिविसोहणं तिगुत्तीगुत्तया ईरियासमिईमाईउ भावणाओ अणसणाइतवोवहाणाणुट्ठाणं मासाइभिक्खुपडिमाउ विचित्ते दव्वाईअभिग्गहे अहो(हा)णं भूमीसयणे केसलोए निप्पडिकम्मसरीरया सव्वकालमेव गुरुनिओगकरणं खुहापिवासाइपरीसहाहियासणं दिवाइउवसग्गविजओ लद्धावलद्धवित्तिया, किं बहुणा?, अचंतदुवहे भो वहियव्वे अवीसामंतेहिं चेव सिरिमहापुरिसवूढे अट्ठारससीलंगसहस्सभारे तरियव्वे अ भो बाहाहिं महासमुद्दे अविसाईहिं च णं भो भक्खियव्वे णिरासाए वालुयाकवले परिसक्कियव्वं च भो णिसियसुतिक्खदारुणकरवालधाराए पायव्वा य णं भो सुहुयहुयवहजालावली भरियव्वे णं भो सुहुमपवणकोत्थलगे गमियव्वं च णं भो गंगापवाहपडिसोएणं तोलेयव्वं भो साहसतुलाए मंदरगिरिं जेयव्वे य णं भो एगागिएहिं चेव धीरत्ताए सुदुज्जए चाउरंगे बले विधेयव्वा णं भो परोप्परविवरीयभमंतअट्टचक्कोवरिवामच्छिम्मि उंवी(उ धी)उड़िया गहेयव्वा णं भो सयलतिहुयणविजया णिम्मलजसकित्ती जयपडागा, ता भो भो जणा एयाओ धम्माणुट्ठाणाओ सुदुक्करं णत्थि किंचिमन्नंति, ‘वुज्झंति नाम भारा ते चिय वुज्झंति वीसमंतेहिं। सीलभरो अइगुरुओ जावज्जीवं अविस्सामो ॥१॥ ता उज्झिऊण पेम्मं घरसारं पुत्तदविणमाईयं। णीसंगा अविसाई पयरह सवुत्तमं धम्मं ॥२॥ णो धम्मस्स भडक्का उक्कंचण वंचणा य ववहारो। णिच्छम्मो तो धम्मो मायादीसल्लरहिओ उ ॥३॥ भूएसु जंगमत्तं तेसुवि पंचेंदियत्तमुक्कोसं। तेसुवि अ माणुसत्तं मणुयत्ते आरिओ देसो ॥४॥ देसे कुलं पहाणं कुले पहाणे य जाइमुक्कोसा। तीए रूवसमिद्धी रूवे य बलं पहाणयरं ॥५॥ होइ बले चिय जीयं जीए य पहाणयं तु विन्नाणं। विन्नाणे सम्मत्तं सम्मत्ते सीलसंपत्ती ॥६॥ सीले खाइयभावो खाइयभावे य केवलं नाणं। केवलिए पडिपुन्ने पत्ते अयरामरो मोक्खो ॥७॥ ण य संसारंमि सुहं जाइजरामरणदुक्खगहियस्स। जीवस्स अत्थि जम्हा तम्हा मोक्खो उवाएओ ॥८॥ आहिंडिऊण सुइरं अणंतहुत्तो हु जोणिलक्खेसुं। तस्साहणसामग्गी पत्ता भो भो बहु इण्हिं ॥९॥ तो एत्थ जन्न पत्तं तदत्थ भो उज्जमं कुणह तुरियं। विवुहजणणिंदियमिणं उज्झह संसारअणुबंधं ॥१०॥ लहिउं भो धम्मसुइं अणेगभवकोडिलक्खसुविदुल्लहं। जइ णाणुट्ठह सम्मं ता पुणरवि दुल्लहं होही ॥११॥ लद्धेलियं च बोहिं जो णाणुट्ठे अणागयं पत्थे। सो भो अन्नं बोहिं लहिही कयरेण मोल्लेणं?॥१२॥ जाव णं पुव्वजाईसरणपच्चएणं सा माहणी एत्तियं वागरेइ ताव णं गोयमा ! पडिबुद्धमसेसंपि बंधुजणे बहुणागरजणो य, एयावसरंमि उ गोयमा ! भणियं सुविदियसोग्गइपहेणं तेणं गोविंदमाहणेणं-जहा णं धिद्धिद्धि वंचिया एयावन्तं कालं, जतो वयं मूढे अहो णं कट्ठमन्नाणं दुविन्नेयमभागधिज्जेहिं खुद्दसत्तेहिं अदिट्ठघोरुग्गपरलोगपच्चवाएहिं अतत्ताभिणिविट्ठदिट्ठीहिं पक्खवायमोहसंधुक्कियमाणसेहिं रागदोसोवहयबुद्धीहिं परं तत्तधम्मं, अहो सज्जीवेणेव परिमुसिए एवइयं कालसमयं, अहो किमेस णं परमप्पा भारियाछलेणासिउ मज्झ गेहे उदाहु णं जो सो णिच्छिओ मीमंसएहिं सव्वन्नू सोच्चिएस सूरिए इव संसयतिमिरावहारित्तेण लोगावभासे मोक्खमग्गसंदरिसणत्थं सयमेव पायडीहूए, अहो महाइसयत्थपसाहगाउ मज्झ दइयाए वायाओ, भो भो जण्णयत्तविण्हुयत्त- (२९२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [१] + गाथा ||१२||

दीप अनुक्रम [१४९७]

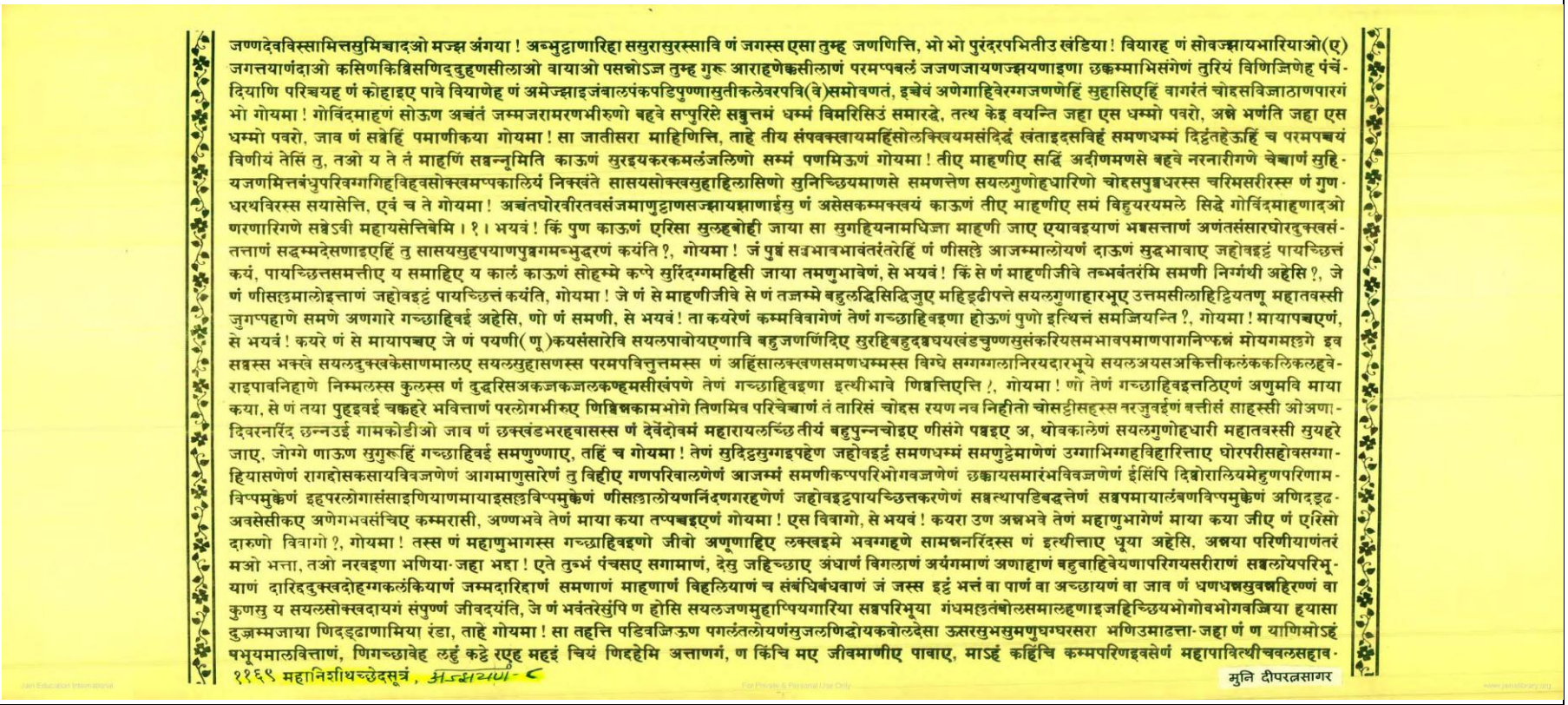

जण्णदेवविस्सामित्तसुमिच्चादओ मज्झ अंगया ! अब्भुट्ठाणारिहा ससुरासुरस्सावि णं जगस्स एसा तुम्ह जणणित्ति, भो भो पुरंदरपभितीउ खंडिया ! वियारह णं सोवज्झायभारियाओ(ए) जगत्तयाणंदाओ कसिणकिब्बिसणिद्दुहणसीलाओ वायाओ पसन्नोऽज्ज तुम्ह गुरू आराहणेक्कसीलाणं परमप्पबलं जजणजायणज्झयणाइणा छक्कम्माभिसंगेणं तुरियं विणिज्जिणेह पंचेंदियाणि परिच्चयह णं कोहाइए पावे वियाणेह णं अमेज्झाइजंबालपंकपडिपुण्णासुतीकलेवरपवि(वे)समोवणतं, इच्चेवं अणेगाहिवेरग्गजणणेहिं सुहासिएहिं वागरंतं चोद्दसविज्जाठाणपारगं भो गोयमा ! गोविंदमाहणं सोऊण अचंतं जम्मजरामरणभीरुणो बहवे सप्पुरिसे सव्वुत्तमं धम्मं विमरिसिउं समारद्धे, तत्थ केइ वयन्ति जहा एस धम्मो पवरो, अन्ने भणंति जहा एस धम्मो पवरो, जाव णं सव्वेहिं पमाणीकया गोयमा ! सा जातीसरा माहिणित्ति, ताहे तीय संपवक्खायमहिंसोलक्खियमसंदिद्धं खंताइदसविहं समणधम्मं दिट्ठंतहेऊहिं च परमपच्चयं विणीयं तेसिं तु, तओ य ते तं माहणिं सव्वन्नूमिति काऊणं सुरइयकरकमलंजलिणो सम्मं पणमिऊणं गोयमा ! तीए माहणीए सद्धिं अदीणमणसे बहवे नरनारीगणे चेच्चाणं सुहि-यजणमित्तबंधुपरिवग्गगिहविहवसोक्खमप्पकालियं निक्खंते सासयसोक्खसुहाहिलासिणो सुनिच्छियमाणसे समणत्तेण सयलगुणोहधारिणो चोद्दसपुव्वधरस्स चरिमसरीरस्स णं गुण-धरथविरस्स सयासेत्ति, एवं च ते गोयमा ! अचंतघोरवीरतवसंजमाणुट्ठाणसज्झायझाणाईसु णं असेसकम्मक्खयं काऊणं तीए माहणीए समं विहुयरयमले सिद्धे गोविंदमाहणादओ णरणारिगणे सव्वेऽवी महायसेत्तिबेमि । १ । भयवं ! किं पुण काऊणं एरिसा सुलहबोही जाया सा सुगहियनामधिज्जा माहणी जाए एयावइयाणं भवसत्ताणं अणंतसंसारघोरदुक्खसं-तत्ताणं सद्धम्मदेसणाइएहिं तु सासयसुहपयाणपुव्वगमनभुदरणं कयंति ?, गोयमा ! जं पुव्वं सव्वभावभावंतरंतरेहिं णं णीसल्ले आजम्मालोयणं दाऊणं सुद्धभावाए जहोवइट्ठं पायच्छित्तं कयं, पायच्छित्तसमत्तीए य समाहिए य कालं काऊणं सोहम्मे कप्पे सुरिंदग्गमहिसी जाया तमणुभावेणं, से भयवं ! किं से णं माहणीजीवे तब्भवंतरंमि समणी निग्गंथी अहेसि ?, जे णं णीसल्लमालोइत्ताणं जहोवइट्ठं पायच्छित्तं कयंति, गोयमा ! जे णं से माहणीजीवे से णं तज्जम्मे बहुलद्धिसिद्धिजुए महिड्ढीपत्ते सयलगुणाहारभूए उत्तमसीलाहिट्ठियतणू महातवस्सी जुगप्पहाणे समणे अणगारे गच्छाहिवई अहेसि, णो णं समणी, से भयवं ! ता कयरेणं कम्मविवागेणं तेणं गच्छाहिवइणा होऊणं पुणो इत्थित्तं समज्जियन्ति ?, गोयमा ! मायापच्चएणं, से भयवं ! कयरे णं से मायापच्चए जे णं पयणी(णू)कयसंसारेवि सयलपावोयएणावि बहुजणणिंदिए सुरहिबहुदव्वघयखंडचुण्णसुसंकरियसमभावपमाणपागनिप्फन्नं मोयगमल्लगे इव सव्वस्स भक्खे सयलदुक्खकेसाणमालए सयलसुहासणस्स परमपवित्तुत्तमस्स णं अहिंसालक्खणसमणधम्मस्स विग्घे सग्गग्गलानिरयदारभूये सयलअयसअकित्तीकलंककलिकलहवे-राइपावनिहाणे निम्मलस्स कुलस्स णं दुद्धरिसअकज्जकज्जलकण्हमसीखंपणे तेणं गच्छाहिवइणा इत्थीभावे णिव्वत्तिएत्ति ?, गोयमा ! णो तेणं गच्छाहिवइत्तठिएणं अणुमवि माया कया, से णं तया पुहइवई चक्कहरे भवित्ताणं परलोगभीरुए णिव्विन्नकामभोगे तिणमिव परिचेच्चाणं तं तारिसं चोद्दस रयण नव निहीतो चोसट्ठीसहस्स नरजुवईणं बत्तीसं साहस्सी ओअणा-दिवरनरिंद छन्नउई गामकोडीओ जाव णं छक्खंडभरहवासस्स णं देवेंदोवमं महारायलच्छिं तीयं बहुपुन्नचोइए णीसंगे पव्वइए अ, थोवकालेणं सयलगुणोहधारी महातवस्सी सुयहरे जाए, जोग्गे णाऊण सुगुरूहिं गच्छाहिवई समणुण्णाए, तहिं च गोयमा ! तेणं सुदिट्ठसुग्गइपहेण जहोवइट्ठं समणधम्मं समणुट्ठेमाणेणं उग्गाभिग्गहविहारित्ताए घोरपरीसहोवसग्गा-हियासणेणं रागद्दोसकसायविवज्जणेणं आगमाणुसारेणं तु विहीए गणपरिवालणेणं आजम्मं समणीकप्पपरिभोगवज्जणेणं छक्कायसमारंभविवज्जणेणं ईसिंपि दिव्वोरालियमेहुणपरिणाम-विप्पमुक्केणं इहपरलोगासंसाइणियाणमायाइसल्लविप्पमुक्केणं णीसल्लालोयणनिंदणगरहणेणं जहोवइट्ठपायच्छित्तकरणेणं सव्वत्थापडिबद्धत्तेणं सव्वपमायालंबणविप्पमुक्केणं अणिदड्ढ-अवसेसीकए अणेगभवसंचिए कम्मरासी, अण्णभवे तेणं माया कया तप्पच्चइएणं गोयमा ! एस विवागो, से भयवं ! कयरा उण अन्नभवे तेणं महाणुभागेणं माया कया जीए णं एरिसो दारुणो विवागो ?, गोयमा ! तस्स णं महाणुभागस्स गच्छाहिवइणो जीवो अणूणाहिए लक्खइमे भवग्गहणे सामन्नरिंदस्स णं इत्थीत्ताए धूया अहेसि, अन्नया परिणीयाणंतरं मओ भत्ता, तओ नरवइणा भणिया-जहा भद्दा ! एते तुम्भं पंचसए सगामाणं, देसु जहिच्छाए अंधाणं विगलाणं अयंगमाणं अणाहाणं बहुवाहिवेयणापरिगयसरीराणं सव्वलोयपरिभू-याणं दारिद्ददुक्खदोहग्गकलंकियाणं जम्मदारिद्दाणं समणाणं माहणाणं विहलियाणं च संबंधिबंधवाणं जं जस्स इट्ठं भत्तं वा पाणं वा अच्छायणं वा जाव णं धणधन्नसुवन्नहिरण्णं वा कुणसु य सयलसोक्खदायगं संपुण्णं जीवदयंति, जे णं भवंतरेसुंपि ण होसि सयलजणमुहाप्पियगारिया सव्वपरिभूया गंधमल्लतंबोलसमालहणाइजहिच्छियभोगोवभोगवज्जिया हयासा दुज्जम्मजाया णिदड्ढाणामिया रंडा, ताहे गोयमा ! सा तहत्ति पडिवज्जिऊण पगलंतलोयणंसुजलणिद्धोयकवोलदेसा ऊसरसुभसुमणुघग्घरसरा भणिउमाढत्ता-जहा णं ण याणिमोऽहं पभूयमालवित्ताणं, णिगच्छावेह लहुं कट्ठे रएह महइं चियं णिद्दहेमि अत्ताणगं, ण किंचि मए जीवमाणीए पावाए, माऽहं कहिंचि कम्मपरिणइवसेणं महापावित्थीचवलसहाव-

११६९ महानिशीथच्छेदसूत्रं, अध्ययनं - ८

मुनि दीपरत्नसागर

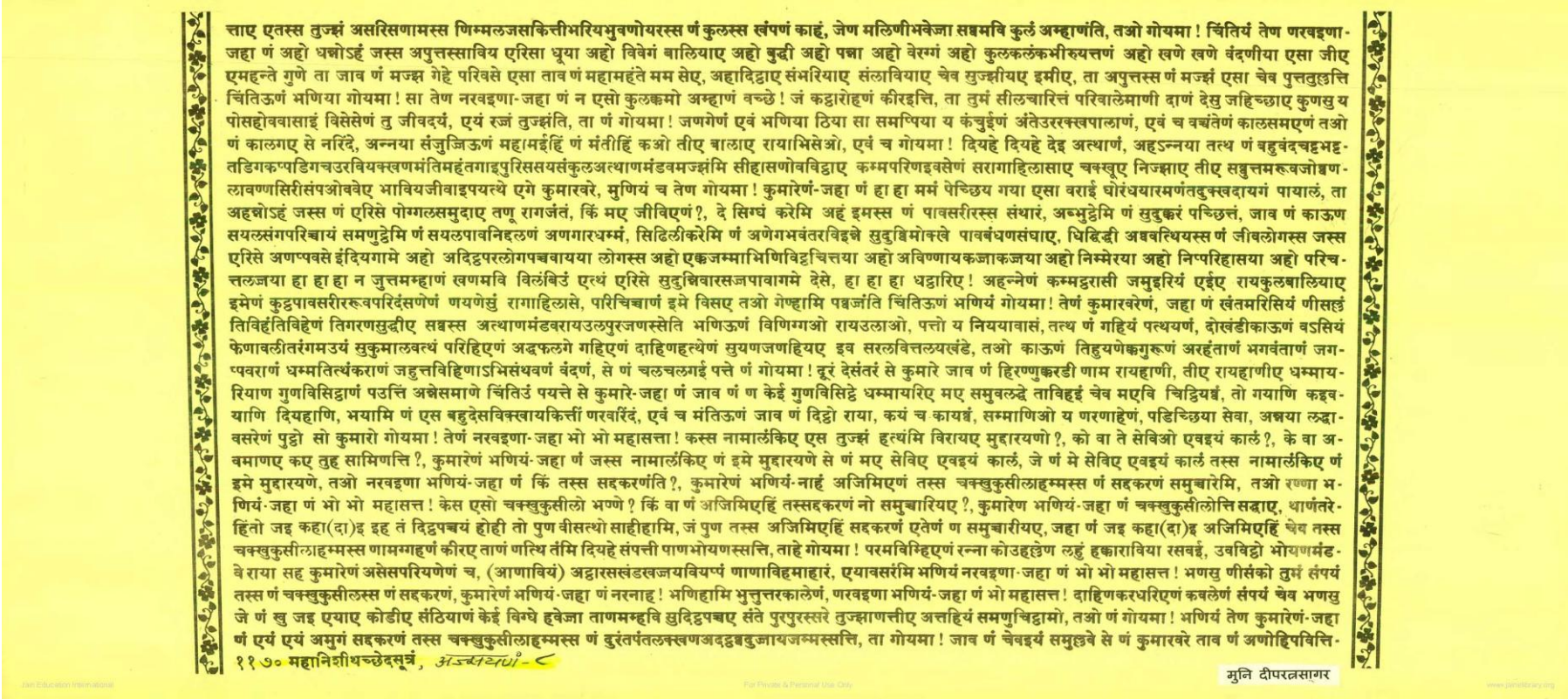

त्ताए एतस्स तुज्झं असरिसणामस्स णिम्मलजसकित्तीभरियभुवणोयरस्स णं कुलस्स खंपणं काहं, जेण मलिणीभवेज्जा सव्वमवि कुलं अम्हाणंति, तओ गोयमा ! चिंतियं तेण णरवइणा-जहा णं अहो धन्नोऽहं जस्स अपुत्तस्साविय एरिसा धूया अहो विवेगं बालियाए अहो बुद्धी अहो पन्ना अहो वेरग्गं अहो कुलकलंकभीरुयत्तणं अहो खणे खणे वंदणीया एसा जीए एमहन्ते गुणे ता जाव णं मज्झ गेहे परिवसे एसा तावणं महामहंते मम सेए, अहादिट्ठाए संभरियाए संलावियाए चेव सुज्झीयए इमीए, ता अपुत्तस्स णं मज्झं एसा चेव पुत्तवुत्ति चिंतिऊणं भणिया गोयमा ! सा तेण नरवइणा-जहा णं न एसो कुलक्कमो अम्हाणं वच्छे ! जं कट्ठारोहणं कीरइत्ति, ता तुमं सीलचारित्तं परिवालेमाणी दाणं देसु जहिच्छाए कुणसु य पोसहोववासाइं विसेसेणं तु जीवदयं, एयं रज्जं तुज्झंति, ता णं गोयमा ! जणगेणं एवं भणिया ठिया सा समप्पिया य कंचुइणं अंतेउरक्खपालाणं, एवं च वचंतेणं कालसमएणं तओ णं कालगए से नरिंदे, अन्नया संजुज्जिऊणं महामईहिं णं मंतीहिं कओ तीए बालाए रायाभिसेओ, एवं च गोयमा ! दियहे दियहे देइ अत्थाणं, अहऽन्नया तत्थ णं बहुवंदचट्टभट्ट-तडिगकप्पडिगचउरवियक्खणमंतिमहंतगाइपुरिससयसंकुलअत्थाणमंडवमज्झंमि सीहासणोवविट्ठाए कम्मपरिणइवसेणं सरागाहिलासाए चक्खूए निज्झाए तीए सव्वुत्तमरूवजोव्वण-लावण्णसिरीसंपओवेए भावियजीवाइपयत्थे एगे कुमारवरे, मुणियं च तेण गोयमा ! कुमारेणं-जहा णं हा हा ममं पेच्छिय गया एसा वराई घोरंधयारमणंतदुक्खदायगं पायालं, ता अहन्नोऽहं जस्स णं एरिसे पोग्गलसमुदाए तणू रागजंतं, किं मए जीविएणं?, दे सिग्घं करेमि अहं इमस्स णं पावसरीरस्स संथारं, अब्भुट्ठेमि णं सुदुक्करं पच्छित्तं, जाव णं काऊण सयलसंगपरिचायं समणुट्ठेमि णं सयलपावनिहलणं अणगारधम्मं, सिढिलीकरेमि णं अणेगभवंतरविइन्ने सुदुव्विमोक्खे पावबंधणसंघाए, धिद्धिद्धी अवत्थियस्स णं जीवलोगस्स जस्स एरिसे अणप्पवसे इंदियगामे अहो अदिट्ठपरलोगपच्चवायया लोगस्स अहो एकजम्माभिणिविट्ठचित्तया अहो अविण्णायकज्जाकज्जया अहो निम्मेरया अहो निप्परिहासया अहो परिच-त्तलज्जया हा हा हा न जुत्तमम्हाणं खणमवि विलंबिउं एत्थं एरिसे सुदुव्विवारसज्जपावागमे देसे, हा हा हा धट्ठारिए ! अहन्नेणं कम्मट्ठरासी जमुइरियं एईए रायकुलबालियाए इमेणं कुट्ठपावसरीररूवपरिदंसणेणं णयणेसुं रागाहिलासे, परिचिचाणं इमे विसए तओ गेण्हामि पव्वज्जंति चिंतिऊणं भणियं गोयमा ! तेणं कुमारवरेणं, जहा णं खंतमरिसियं णीसल्लं तिविहंतिविहेणं तिगरणसुद्धीए सव्वस्स अत्थाणमंडवरायउल्लपुरजणस्सेति भणिऊणं विणिग्गओ रायउलाओ, पत्तो य नियवासं, तत्थ णं गहियं पत्थयणं, दोखंडीकाऊणं वडसियं केणावलीतरंगमउयं सुकुमालवत्थं परिहिएणं अद्धफलगे गहिएणं दाहिणहत्थेणं सुयणजणहियए इव सरलवित्तलयखंडे, तओ काऊणं तिहुयणेक्कगुरूणं अरहंताणं भगवंताणं जग-प्पवराणं धम्मतित्थंकराणं जहुत्तविहिणाऽभिसंथवणं वंदणं, से णं चलचलगई पत्ते णं गोयमा ! दूरं देसंतरं से कुमारे जाव णं हिरण्णुक्करडी णाम रायहाणी, तीए रायहाणीए धम्माय-रियाण गुणविसिट्ठाणं पउत्तिं अन्नेसमाणे चिंतिउं पयत्ते से कुमारे-जहा णं जाव णं ण केई गुणविसिट्ठे धम्मायरिए मए समुवलद्धे ताविहइं चेव मएवि चिट्ठियव्वं, तो गयाणि कइव-याणि दियहाणि, भयामि णं एस बहुदेसविक्खायकित्तीं णरवरिंदं, एवं च मंतिऊणं जाव णं दिट्ठो राया, कयं च कायव्वं, सम्माणिओ य णरणाहेणं, पडिच्छिया सेवा, अन्नया लद्धा-वसरेणं पुट्ठो सो कुमारो गोयमा ! तेणं नरवइणा-जहा भो भो महासत्ता ! कस्स नामालंकिए एस तुज्झं हत्थंमि विरायए मुद्दारयणो?, को वा ते सेविओ एवइयं कालं?, के वा अ-वमाणए कए तुह सामिणत्ति?, कुमारेणं भणियं-जहा णं जस्स नामालंकिए णं इमे मुद्दारयणे से णं मए सेविए एवइयं कालं, जे णं मे सेविए एवइयं काले तस्स नामालंकिए णं इमे मुद्दारयणे, तओ नरवइणा भणियं-जहा णं किं तस्स सहकरणंति?, कुमारेणं भणियं-नाहं अजिमिएणं तस्स चक्खुकुसीलाहम्मस्स णं सहकरणं समुच्चारेमि, तओ रण्णा भ-णियं-जहा णं भो भो महासत्त ! केस एसो चक्खुकुसीलो भण्णे? किं वा णं अजिमिएहिं तस्सहकरणं नो समुच्चारियए?, कुमारेण भणियं-जहा णं चक्खुकुसीलोत्ति सद्धाए, थाणंतरे-हिंतो जइ कहा(दा)इ इह तं दिट्ठपच्चयं होही तो पुण वीसत्थो साहीहामि, जं पुण तस्स अजिमिएहिं सहकरणं एतेणं ण समुच्चारीयए, जहा णं जइ कहा(दा)इ अजिमिएहिं चेव तस्स चक्खुकुसीलाहम्मस्स णामग्गहणं कीरए ताणं णत्थि तंमि दियहे संपत्ती पाणभोयणस्सत्ति, ताहे गोयमा ! परमविम्हिएणं रन्ना कोउहल्लेण लहुं हक्काराविया रसवई, उवविट्ठो भोयणमंड-वे राया सह कुमारेणं असेसपरियणेणं च, (आणावियं) अट्ठारससंडसज्जयवियप्पं णाणाविहमाहारं, एयावसरंमि भणियं नरवइणा-जहा णं भो भो महासत्त ! भणसु णीसंको तुमं संपयं तस्स णं चक्खुकुसीलस्स णं सहकरणं, कुमारेणं भणियं-जहा णं नरनाह ! भणिहामि भुत्तुत्तरकालेणं, णरवइणा भणियं-जहा णं भो महासत्त ! दाहिणकरपरिएणं कवलेणं संपयं चेव भणसु जे णं खु जइ एयाए कोडीए संठियाणं केई विग्घे हवेज्जा ताणमम्हवि सुदिट्ठपच्चए संते पुरपुरस्सरे तुज्झाणत्तीए अत्तहियं समणुचिट्ठामो, तओ णं गोयमा ! भणियं तेण कुमारेणं-जहा णं एयं एयं अमुगं सहकरणं तस्स चक्खुकुसीलाहम्मस्स णं दुरंतपंतलक्खणअदट्ठबहुजायजम्मस्सत्ति, ता गोयमा ! जाव णं चेवइयं समुच्चवे से णं कुमारवरे ताव णं अणोहिपविचि-

मुनि दीपरत्नसागर

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [२] + गाथा ||१४||

दीप अनुक्रम [१५००]

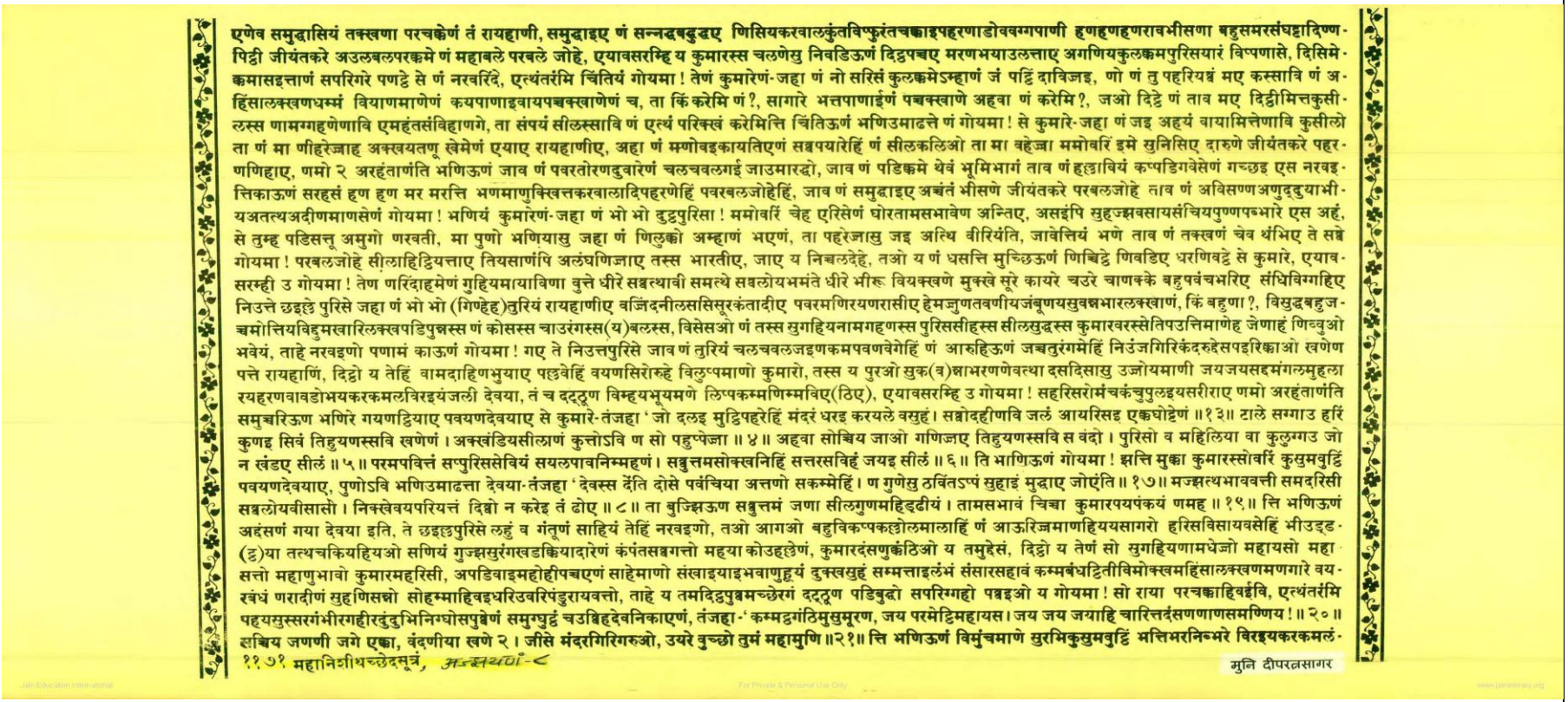

एणेव समुद्दासियं तक्खणा परचक्केणं तं रायहाणी, समुद्दाइए णं सन्नद्धबद्धउए णिसियकरवालकुंतविप्फुरंतचक्काइपहरणाडोवबग्गपाणी हणहणहणरावभीसणा बहुसमरसंघट्टादिण्ण-
पिट्ठी जीयंतकरे अउलबलपरक्कमे णं महाबले परबले जोहे, एयावसरम्हि य कुमारस्स चलणेसु निवडिऊणं दिट्ठपच्चए मरणभयाउलत्ताए अगणियकुलक्कमपुरिसयारं विप्पणासे, दिसिमे-
क्कमासइत्ताणं सपरिगरे पणट्ठे से णं नरवरिंदे, एत्थंतरंमि चिंतियं गोयमा ! तेणं कुमारेणं-जहा णं नो सरिसं कुलक्कमेऽम्हाणं जं पट्ठिं दाविज्जइ, णो णं तु पहरियव्वं मए कस्सावि णं अ-
हिंसालक्खणधम्मं वियाणमाणेणं कयपाणाइवायपच्चक्खाणेणं च, ता किं करेमि णं ?, सागारे भत्तपाणाईणं पच्चक्खाणे अहवा णं करेमि ?, जओ दिट्ठे णं ताव मए दिट्ठीमित्तकुसी-
लस्स णामग्गहणेणावि एमहंतसंविहाणगे, ता संपयं सीलस्सावि णं एत्थं परिक्खं करेमित्ति चिंतिऊणं भणिउमाढत्ते णं गोयमा ! से कुमारे-जहा णं जइ अहयं वायामित्तेणावि कुसीलो
ता णं मा णीहरेज्जाह अक्खयतणू खेमेणं एयाए रायहाणीए, अहा णं मणोवइकायतिएणं सव्वपयारेहिं णं सीलकलिओ ता मा वहेज्जा ममोवरिं इमे सुनिसिए दारुणे जीयंतकरे पहर-
णणिहाए, णमो २ अरहंताणंति भणिऊणं जाव णं पवरतोरणदुवारेणं चलचवलगई जाउमारद्धो, जाव णं पडिक्कमे थेवं भूमिभागं ताव णं हल्लावियं कप्पडिगवेसेणं गच्छइ एस नरवइ-
त्तिकाऊणं सरहसं हण हण मर मरत्ति भणमाणुक्खित्तकरवालादिपहरणेहिं पवरबलजोहेहिं, जाव णं समुद्दाइए अचंतं भीसणे जीयंतकरे परबलजोहे ताव णं अविसण्णअणुद्दुयाभी-
यअतत्थअदीणमाणसेणं गोयमा ! भणियं कुमारेणं-जहा णं भो भो दुट्ठपुरिसा ! ममोवरिं चेह एरिसेणं घोरतामसभावेण अन्तिए, असइंपि सुहज्झवसायसंचियपुण्णपब्भारे एस अहं,
से तुम्ह पडिसत्तू अमुगो णरवती, मा पुणो भणियासु जहा णं णिलुक्को अम्हाणं भएणं, ता पहरेज्जासु जइ अत्थि वीरियंति, जावेत्तियं भणे ताव णं तक्खणं चेव थंभिए ते सव्वे
गोयमा ! परबलजोहे सीलाहिट्ठियत्ताए तियसाणंपि अलंघणिज्जाए तस्स भारतीए, जाए य निच्चलदेहे, तओ य णं धसत्ति मुच्छिऊणं णिच्चिट्ठे णिवडिए धरणिवट्टे से कुमारे, एयाव-
सरम्ही उ गोयमा ! तेण णरिंदाहमेणं गुहियमायाविणा वुत्ते धीरे सव्वत्थावी समत्थे सवलोयभमंते धीरे भीरू वियक्खणे मुक्खे सूरे कायरे चउरे चाणक्के बहुपवंचभरिए संधिविग्गहिए
निउत्ते छइल्ले पुरिसे जहा णं भो भो (गिण्हेह)तुरियं रायहाणीए वज्जिंदनीलससिसूरकंतादीए पवरमणिरयणरासीए हेमजुणतवणीयजंबूणयसुवन्नभारलक्खाणं, किं बहुणा ?, विसुद्धबहुज-
च्चमोत्तियविद्दुमखारिलक्खपडिपुन्नस्स णं कोसस्स चाउरंगस्स(य)बलस्स, विसेसओ णं तस्स सुगहियनामगहणस्स पुरिससीहस्स सीलसुद्धस्स कुमारवरस्सेतिपउत्तिमाणेह जेणाहं णिच्चुओ
भवेयं, ताहे नरवइणो पणामं काऊणं गोयमा ! गए ते निउत्तपुरिसे जाव णं तुरियं चलचवलजइणकमपवणवेगेहिं णं आरुहिऊणं जच्चतुरंगमेहिं निउंजगिरिकंदरुद्देसपइरिक्काओ खणेण
पत्ते रायहाणिं, दिट्ठो य तेहिं वामदाहिणभुयाए पल्हवेहिं वयणसिरोरुहे विलुप्पमाणो कुमारो, तस्स य पुरओ सुक(व)न्नाभरणणेवत्था दसदिसासु उज्जोयमाणी जयजयसद्दमंगल्लमुहला
रयहरणवावडोभयकरकमलविरइयंजली देवया, तं च दट्ठूण विम्हयभूयमणे लिप्पकम्मणिम्मविए(ठिए), एयावसरम्हि उ गोयमा ! सहरिसरोमंचकंचुपुलइयसरीराए णमो अरहंताणंति
समुच्चरिऊण भणिरे गयणट्ठियाए पवयणदेवयाए से कुमारे-तंजहा ‘जो दलइ मुट्ठिपहरेहिं मंदरं धरइ करयले वसुहं। सव्वोदहीणवि जलं आयरिसइ एक्कघोट्टेणं ॥१३॥ टाले सग्गाउ हरिं
कुणइ सिवं तिहुयणस्सवि खणेणं। अक्खंडियसीलाणं कुत्तोऽवि ण सो पहुप्पेज्जा ॥ ४ ॥ अहवा सोच्चिय जाओ गणिज्जए तिहुयणस्सवि स वंदो। पुरिसो व महिलिया वा कुलुग्गउ जो
न खंडए सीलं ॥ ५ ॥ परमपवित्तं सप्पुरिससेवियं सयलपावनिम्महणं। सव्वुत्तमसोक्खनिहिं सत्तरसविहं जयइ सीलं ॥ ६ ॥ ति भाणिऊणं गोयमा ! झत्ति मुक्का कुमारस्सोवरिं कुसुमवुट्ठि
पवयणदेवयाए, पुणोऽवि भणिउमाढत्ता देवया-तंजहा ‘देवस्स देंति दोसे पवंचिया अत्तणो सकम्मेहिं। ण गुणेसु ठविंतऽप्पं सुहाइं मुद्धाए जोएंति ॥ १७ ॥ मज्झत्थभावावत्ती समदरिसी
सव्वलोयवीसासो। निक्खेवयपरियत्तं दिवो न करेइ तं ढोए ॥ ८ ॥ ता बुज्झिऊण सव्वुत्तमं जणा सीलगुणमहिट्ठीयं। तामसभावं चिच्चा कुमारपयपंकयं णमह ॥ १९ ॥ त्ति भणिऊणं
अहंसणं गया देवया इति, ते छइल्लपुरिसे लहुं व गंतूणं साहियं तेहिं नरवइणो, तओ आगओ बहुविकप्पकल्लोलमालाहिं णं आऊरिज्जमाणहिययसागरो हरिसविसायवसेहिं भीउद्दड-
(ट्ठ)या तत्थचकियहियओ सणियं गुज्झसुरंगखडक्कियादारेणं कंपंतसव्वगत्तो महया कोउहल्लेणं, कुमारदंसणुक्कंठिओ य तमुद्देसं, दिट्ठो य तेणं सो सुगहियणामधेज्जो महायसो महा-
सत्तो महाणुभावो कुमारमहरिसी, अपडिवाइमहोहीपच्चएणं साहेमाणो संवाइयाइभवाणुहूयं दुक्खसुहं सम्मत्ताइलंभं संसारसहावं कम्मबंधट्ठितीविमोक्खमहिंसालक्खणमणगारे वय-
रखंधे णरादीणं सुहणिसन्नो सोहम्माहिवइधरिउवरिपंडुरायवत्तो, ताहे य तमदिट्ठपुव्वमच्छेरगं दट्ठूण पडिबुद्धो सपरिग्गहो पव्वइओ य गोयमा ! सो राया परचक्काहिवई वि, एत्थंतरंमि
पहयसुस्सरगंभीरगहीरदुंदुभिनिग्घोसपुव्वेणं समुग्घुट्ठं चउव्विहदेवनिकाएणं, तंजहा-‘ कम्मट्ठगंठिमुसुमूरण, जय परमेट्ठिमहायस। जय जय जयाहि चारित्तदंसणणाणसमण्णिय ! ॥ २० ॥
लच्चिय जणणी जगे एक्का, वंदणीया खणे २। जीसे मंदरगिरिगरुओ, उयरे वुच्छो तुमं महामुणि ॥२१॥ त्ति भणिऊणं विमुंचमाणे सुरभिकुसुमवुट्ठिं भत्तिभरनिब्भरे विरइयकरकमलं-

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

प्रत सूत्रांक [२] + गाथा ||२१||

दीप अनुक्रम [१५०९]

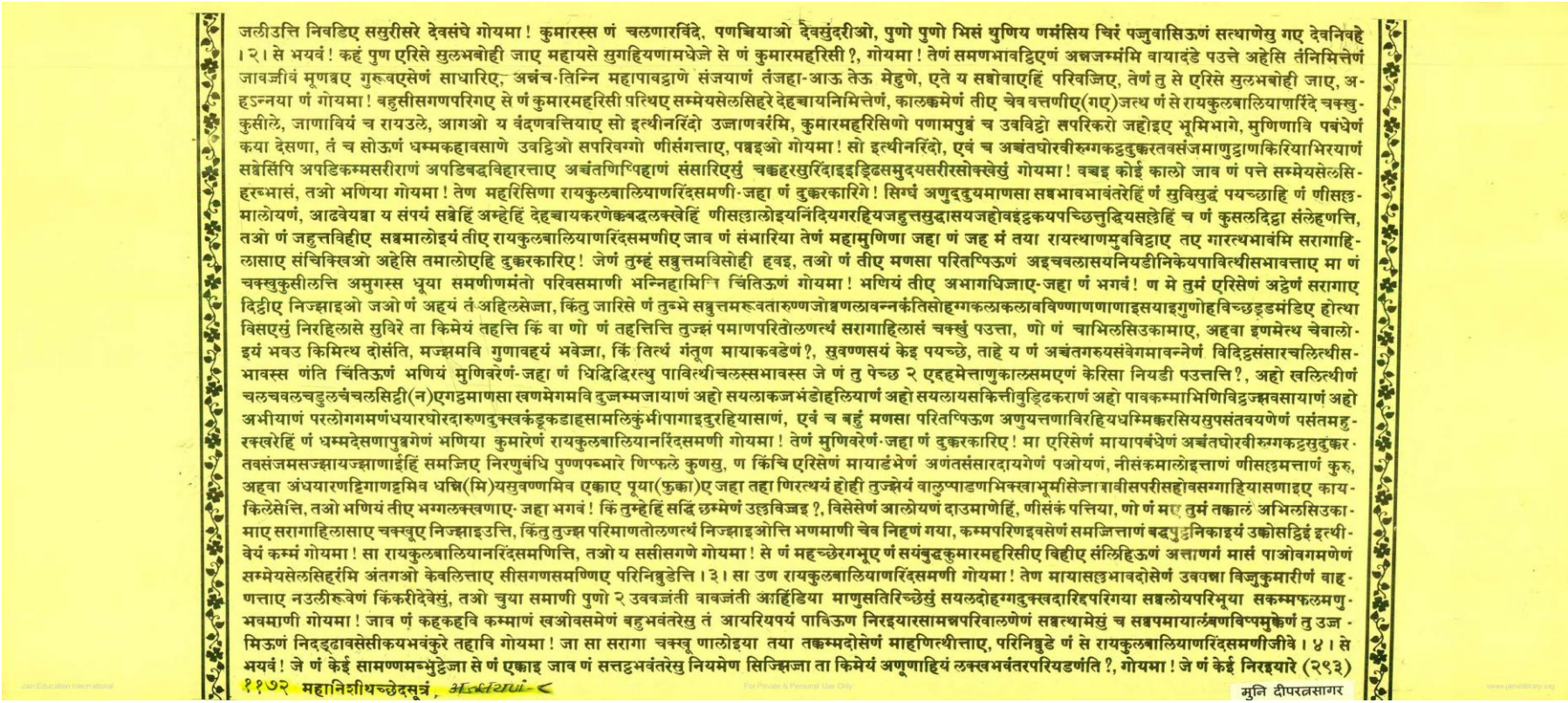

जलीउत्ति निवडिए ससुरीसरे देवसंघे गोयमा! कुमारस्स णं चलणारविंदे, पणचियाओ देवसुंदरीओ, पुणो पुणो भिसं थुणिय णमंसिय चिरं पज्जुवासिऊणं सत्थाणेसु गए देवनिवहे ।२। से भयवं! कहं पुण एरिसे सुलभबोही जाए महायसे सुगहियणामधेज्जे से णं कुमारमहरिसी?, गोयमा! तेणं समणभावट्ठिएणं अन्नजम्मंमि वायादंडे पउत्ते अहेसि तंनिमित्तेणं जावज्जीवं मूणव्वए गुरूवएसेणं साधारिए, अन्नंच-तिन्नि महापावट्ठाणे संजयाणं तंजहा-आऊ तेऊ मेहुणे, एते य सव्वोवाएहिं परिवज्जिए, तेणं तु से एरिसे सुलभबोही जाए, अहऽन्नया णं गोयमा! बहुसीसगणपरिगए से णं कुमारमहरिसी पत्थिए सम्मेयसेलसिहरे देहच्चायनिमित्तेणं, कालक्कमेणं तीए चेव वत्तणीए(गए)जत्थ णं से रायकुलबालियाणरिंदे चक्खुकुसीले, जाणावियं च रायउले, आगओ य वंदणवत्तियाए सो इत्थीनरिंदो उज्जाणवरंमि, कुमारमहरिसिणो पणामपुव्वं च उवविट्ठो सपरिकरो जहोइए भूमिभागे, मुणिणावि पबंधेणं कया देसणा, तं च सोऊणं धम्मकहावसाणे उवट्ठिओ सपरिवग्गो णीसंगत्ताए, पव्वइओ गोयमा! सो इत्थीनरिंदो, एवं च अच्चंतघोरवीरुग्गकट्ठदुक्करतवसंजमाणुट्ठाणकिरियाभिरयाणं सव्वेसिंपि अपडिकम्मसरीराणं अपडिबद्धविहारत्ताए अचंतणिप्पिहाणं संसारिएसुं चक्कहरसुरिंदाइइड्ढिसमुदयसरीरसोक्खेसुं गोयमा! वच्चइ कोई कालो जाव णं पत्ते सम्मेयसेलसिहरब्भासं, तओ भणिया गोयमा! तेण महरिसिणा रायकुलबालियाणरिंदसमणी-जहा णं दुक्करकारिगे! सिग्घं अणुद्दुयमाणसा सव्वभावभावंतरेहिं णं सुविसुद्धं पयच्छाहि णं णीसल्लमालोयणं, आढवेयव्वा य संपयं सव्वेहिं अम्हेहिं देहच्चायकरणेक्कबद्धलक्खेहिं णीसल्लालोइयनिंदियगरहियजहुत्तसुद्धासयजहोवइट्ठकयपच्छित्तुद्धियसल्लेहिं च णं कुसलदिट्ठा संलेहणत्ति, तओ णं जहुत्तविहीए सव्वमालोइयं तीए रायकुलबालियाणरिंदसमणीए जाव णं संभारिया तेणं महामुणिणा जहा णं जह मं तया रायत्थाणमुवविट्ठाए तए गारत्थभावंमि सरागाहिलासाए संचिक्खिओ अहेसि तमालोएहि दुक्करकारिए! जेणं तुम्हं सबुत्तमविसोही हवइ, तओ णं तीए मणसा परितप्पिऊणं अइचवलासयनियडीनिकेयपावित्थीसभावत्ताए मा णं चक्खुकुसीलत्ति अमुगस्स धूया समणीणमंतो परिवसमाणी भन्निहामित्ति चिंतिऊणं गोयमा! भणियं तीए अभागधिज्जाए-जहा णं भगवं! ण मे तुमं एरिसेणं अट्ठेणं सरागाए दिट्ठीए निज्झाइओ जओ णं अहयं तं अहिलसेज्जा, किंतु जारिसे णं तुब्भे सबुत्तमरूवतारुण्णजोव्वणलावन्नकंतिसोहग्गकलाकलावविण्णाणणाइसयाइगुणोहविच्छड्डमंडिए होत्था विसएसुं निरहिलासे सुविरे ता किमेयं तहत्ति किं वा णो णं तहत्तित्ति तुज्झं पमाणपरितोलणत्थं सरागाहिलासं चक्खुं पउत्ता, णो णं चाभिलसिउकामाए, अहवा इणमेत्थ चेवालोइयं भवउ किमित्थ दोसंति, मज्झमवि गुणावहयं भवेज्जा, किं तित्थं गंतूण मायाकवडेणं?, सुवण्णसयं केइ पयच्छे, ताहे य णं अच्चंतगरुयसंवेगमावन्नेणं विदिट्ठसंसारचलित्थीसभावस्स णंति चिंतिऊणं भणियं मुणिवरेणं-जहा णं धिद्धिद्धिरत्थु पावित्थीचलस्सभावस्स जे णं तु पेच्छ २ एद्दहमेत्ताणुकालसमएणं केरिसा नियडी पउत्तत्ति?, अहो खलित्थीणं चलचवलचडुलचंचलसिट्ठी(न)एगट्ठमाणसा खणमेगमवि दुज्जम्मजायाणं अहो सयलाकजभंडोहलियाणं अहो सयलायसकित्तीवुड्ढिकराणं अहो पावकम्माभिणिविट्ठज्झवसायाणं अहो अभीयाणं परलोगगमणंधयारघोरदारुणदुक्खकंडूकडाहसामलिकुंभीपागाइदुरहियासाणं, एवं च बहुं मणसा परितप्पिऊण अणुयत्तणाविरहियधम्मिक्करसियसुपसंतवयणेणं पसंतमहुरक्खरेहिं णं धम्मदेसणापुव्वगेणं भणिया कुमारेणं रायकुलबालियानरिंदसमणी गोयमा! तेणं मुणिवरेणं-जहा णं दुक्करकारिए! मा एरिसेणं मायापबंधेणं अच्चंतघोरवीरुग्गकट्ठसुदुक्करतवसंजमसज्झायज्झाणाईहिं समज्जिए निरणुबंधि पुण्णपब्भारे णिप्फले कुणसु, ण किंचि एरिसेणं मायाडंभेणं अणंतसंसारदायगेणं पओयणं, नीसंकमालोइत्ताणं णीसल्लमत्ताणं कुरु, अहवा अंधयारणट्ठिगाणट्ठमिव धन्नि(मि)यसुवण्णमिव एक्काए पूया(फुक्का)ए जहा तहा णिरत्थयं होही तुज्झेयं वालुप्पाडणभिक्खाभूमीसेज्जावावीसपरीसहोवसग्गाहियासणाइए कायकिलेसेत्ति, तओ भणियं तीए भग्गलक्खणाए- जहा भगवं! किं तुम्हेहिं सद्धिं छम्मेणं उल्लविज्जइ?, विसेसेणं आलोयणं दाउमाणेहिं, णीसंकं पत्तिया, णो णं मए तुमं तक्काले अभिलसिउकामाए सरागाहिलासाए चक्खूए निज्झाइउत्ति, किंतु तुज्झ परिमाणतोलणत्थं निज्झाइओत्ति भणमाणी चेव निहूणं गया, कम्मपरिणइवसेणं समज्जित्ताणं बद्धपुट्ठनिकाइयं उक्कोसट्ठिइं इत्थीवेयं कम्मं गोयमा! सा रायकुलबालियानरिंदसमणित्ति, तओ य ससीसगणे गोयमा! से णं महच्छेरगभूए णं सयंबुद्धकुमारमहरिसीए विहीए संलिहिऊणं अत्ताणगं मासं पाओवगमणेणं सम्मेयसेलसिहरंमि अंतगओ केवलित्ताए सीसगणसमण्णिए परिनिव्वुडेत्ति ।३। सा उण रायकुलबालियाणरिंदसमणी गोयमा! तेण मायासल्लभावदोसेणं उववन्ना विज्जुकुमारीणं वाहणत्ताए नउलीरूवेणं किंकरीदेवेसुं, तओ चुया समाणी पुणो २ उववज्जंती वावज्जंती आहिंडिया माणुसतिरिच्छेसुं सयलदोहग्गदुक्खदारिद्दपरिगया सव्वलोयपरिभूया सकम्मफलमणुभवमाणी गोयमा! जाव णं कहकहवि कम्माणं खओवसमेणं बहुभवंतरेसु तं आयरियपयं पाविऊण निरइयारसामन्नपरिवालणेणं सव्वत्थामेसुं च सव्वपमायालंबणविप्पमुक्केणं तु उज्जमिऊणं निद्दड्ढावसेसीकयभवंकुरे तहावि गोयमा! जा सा सरागा चक्खू णालोइया तया तक्कम्मदोसेणं माहणित्थीत्ताए, परिनिव्वुडे णं से रायकुलबालियाणरिंदसमणीजीवे । ४ । से भयवं! जे णं केई सामण्णमब्भुट्ठेजा से णं एकाइ जाव णं सत्तट्ठभवंतरेसु नियमेण सिज्झिस्सजा ता किमेयं अणूणाहियं लक्खभवंतरपरियडणंति?, गोयमा! जे णं केई निरइयारे (२९३)

११७२ महानिशीथच्छेदसूत्रं, अध्ययनं-८

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [५] + गाथा ||२२|| दीप अनुक्रम [१५१६]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३९], छेदसूत्र - [६] “महानिशीथ” मूलं

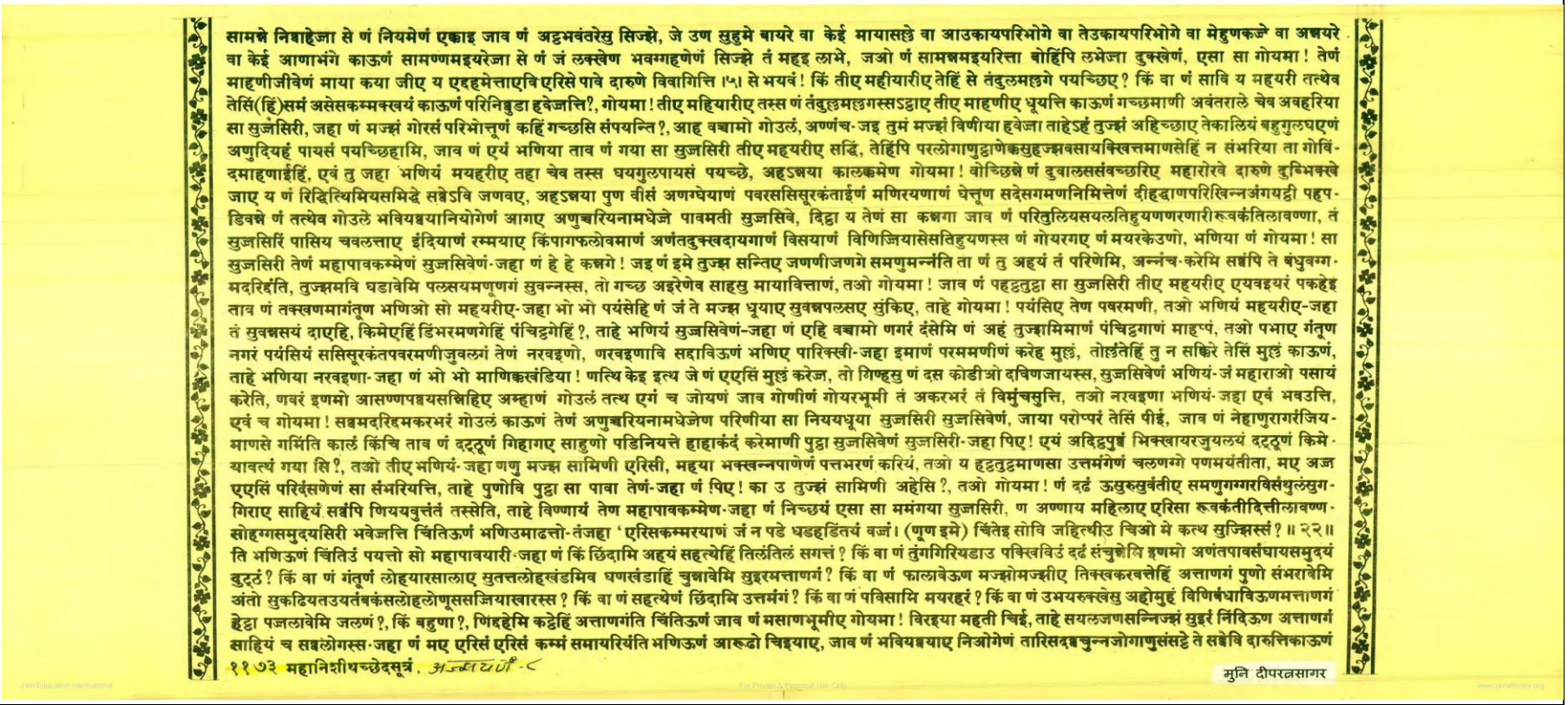

सामन्ने निवाहेज्जा से णं नियमेणं एक्काइ जाव णं अट्ठभवंतरेसु सिज्झे, जे उण सुहुमे वायरे वा केई मायासल्ले वा आउकायपरिभोगे वा तेउकायपरिभोगे वा मेहुणकज्जे वा अन्नयरे वा केई आणाभंगे काऊणं सामण्णमइयरेज्जा से णं जं लक्खेण भवग्गहणेणं सिज्झे तं महइ लाभे, जओ णं सामन्नमइयरित्ता बोहिंपि लभेज्जा दुक्खेणं, एसा सा गोयमा! तेणं माहणीजीवेणं माया कया जीए य एद्दहमेत्ताएवि एरिसे पावे दारुणे विवागित्ति ।५। से भयवं! किं तीए महीयारीए तेहिं से तंदुलमल्लगे पयच्छिए? किं वा णं सावि य महयरी तत्थेव तेसिं(हिं)समं असेसकम्मक्खयं काऊणं परिनिबुडा हवेज्जत्ति?, गोयमा! तीए महियारीए तस्स णं तंदुलमल्लगस्सऽट्ठाए तीए माहणीए धूयत्ति काऊणं गच्छमाणी अवंतराले चेव अवहरिया सा सुज्जसिरी, जहा णं मज्झं गोरसं परिभोत्तूणं कहिं गच्छसि संपयन्ति?, आह वच्चामो गोउलं, अण्णंच-जइ तुमं मज्झं विणीया हवेज्जा ताहेऽहं तुज्झं अहिच्छाए तेकालियं बहुगुल्लघएणं अणुदियहं पायसं पयच्छिहामि, जाव णं एयं भणिया ताव णं गया सा सुज्जसिरी तीए महयरीए सद्धिं, तेहिंपि परलोगाणुट्ठाणेक्कसुहज्झवसायक्खित्तमाणसेहिं न संभरिया ता गोविंदमाहणाईहिं, एवं तु जहा भणियं मयहरीए तहा चेव तस्स घयगुलपायसं पयच्छे, अहऽन्नया कालक्कमेण गोयमा! वोच्छिन्ने णं दुवालससंवच्छरिए महारोरवे दारुणे दुब्भिक्खे जाए य णं रिद्धित्थिमियसमिद्धे सवेऽवि जणवए, अहऽन्नया पुण वीसं अणग्घेयाणं पवरससिसूरकंताईणं मणिरयणाणं घेत्तूण सदेसगमणनिमित्तेणं दीहद्धाणपरिखिन्नअंगयट्ठी पहप-डिवन्ने णं तत्थेव गोउले भवियव्वयानियोगेणं आगए अणुच्चरियनामधेज्जे पावमती सुज्जसिवे, दिट्ठा य तेणं सा कन्नगा जाव णं परितुलियसयलतिहुयणणरणारीरूवकंतिलावण्णा, तं सुज्जसिरिं पासिय चवलत्ताए इंदियाणं रम्मयाए किंपागफलोवमाणं अणंतदुक्खदायगाणं विसयाणं विणिज्जियासेसतिहुयणस्स णं गोयरगए णं मयरकेउणो, भणिया णं गोयमा! सा सुज्जसिरी तेणं महापावकम्मेणं सुज्जसिवेणं-जहा णं हे हे कन्नगे! जइ णं इमे तुज्झ सन्तिए जणणीजणगे समणुमन्नंति ता णं तु अहयं तं परिणेमि, अन्नंच-करेमि सव्वंपि ते बंधुवग्ग-मदरिद्दंति, तुज्झमवि घडावेमि पलसयमणुणगं सुवन्नस्स, तो गच्छ अइरेणेव साहसु मायावित्ताणं, तओ गोयमा! जाव णं पहट्ठतुट्ठा सा सुज्जसिरी तीए महयरीए एयवइयरं पकहेइ ताव णं तक्खणमागंतूण भणिओ सो महयरीए-जहा भो भो पर्यसेहि णं जं ते मज्झ धूयाए सुवन्नपल्लए सुंकिए, ताहे गोयमा! पर्यसिए तेण पवरमणी, तओ भणियं महयरीए-जहा तं सुवन्नसयं दाएहि, किमेएहिं डिंभरमणगेहिं पंचिट्ठगेहिं?, ताहे भणियं सुज्जसिवेणं-जहा णं एहि वच्चामो णगरं दंसेमि णं अहं तुज्झमिमाणं पंचिट्ठगाणं माहप्पं, तओ पभाए गंतूण नगरं पर्यसियं ससिसूरकंतपवरमणीजुवलगं तेणं नरवइणो, नरवइणावि सद्दाविऊणं भणिए पारिक्खी-जहा इमाणं परममणीणं करेह मुल्लं, तोल्लंतेहिं तु न सक्किरे तेसिं मुल्लं काऊणं, ताहे भणिया नरवइणा-जहा णं भो भो माणिक्कखंडिया! णत्थि केइ इत्थ जे णं एएसिं मुल्लं करेज्ज, तो गिण्हसु णं दस कोडीओ दविणजायस्स, सुज्जसिवेणं भणियं-जं महाराओ पसायं करेति, णवरं इणमो आसण्णपव्वयसन्निहिए अम्हाणं गोउलं तत्थ एगं च जोयणं जाव गोणीणं गोयरभूमी तं अकरभरं तं विमुंचसुत्ति, तओ नरवइणा भणियं-जहा एवं भवउत्ति, एवं च गोयमा! सव्वमदरिद्दमकरभरं गोउलं काऊणं तेणं अणुच्चरियनामधेज्जेण परिणीया सा नियय्धूया सुज्जसिरी सुज्जसिवेणं, जाया परोप्परं तेसिं पीई, जाव णं नेहाणुरागरंजिय-माणसे गमिंति कालं किंचि ताव णं दट्ठूणं गिहागए साहुणो पडिनियत्ते हाहाकंदं करेमाणी पुट्ठा सुज्जसिवेणं सुज्जसिरी-जहा पिए! एयं अदिट्ठपुव्वं भिक्खायरजुयलयं दट्ठूणं किमे-यावत्थं गया सि?, तओ तीए भणियं-जहा णणु मज्झ सामिणी एरिसी, महया भक्खन्नपाणेणं पत्तभरणं करियं, तओ य हट्ठतुट्ठमाणसा उत्तमंगेणं चलणग्गे पणमयंतीता, मए अज्ज एएसिं परिदंसणेणं सा संभरियत्ति, ताहे पुणोवि पुट्ठा सा पावा तेणं-जहा णं पिए! का उ तुज्झं सामिणी अहेसि?, तओ गोयमा! णं दढं ऊसुरुसुवंतीए समणुगग्गरविसंथुलंसुग-गिराए साहियं सव्वंपि णियय्वुत्तंतं तस्सेति, ताहे विण्णायं तेण महापावकम्मेण-जहा णं निच्छयं एसा सा ममंगया सुज्जसिरी, ण अण्णाय महिलाए एरिसा रूवकंतीदित्तीलावण्ण-सोहग्गसमुदयसिरी भवेज्जत्ति चिंतिऊणं भणिउमाढत्तो-तंजहा ‘एरिसकम्मरयाणं जं न पडे धडहडिंतयं वज्जं। (गूण इमे) चिंतेइ सोवि जहित्थीउ चिओ मे कत्थ सुज्झिस्सं?॥ २२॥ ति भणिऊणं चिंतिउं पयत्तो सो महापावयारी-जहा णं किं छिंदामि अहयं सहत्थेहिं तिलंतिलं सगत्तं? किं वा णं तुंगगिरियडाउ पक्खिविउं दढं संचुन्नेमि इणमो अणंतपावसंघायसमुदयं दुट्ठं? किं वा णं गंतूणं लोहयारसालाए सुतत्तलोहखंडमिव घणखंडाहिं चुन्नावेमि सुइरमत्ताणगं? किं वा णं फालावेऊण मज्झोमज्झीए तिक्खकरवत्तेहिं अत्ताणगं पुणो संभरावेमि अंतो सुकढियतउयतंबकंसलोहलोणूससज्जियाखारस्स? किं वा णं सहत्थेणं छिंदामि उत्तमंगं? किं वा णं पविसामि मयरहरं? किं वा णं उभयरुक्खेसु अहोमुहं विणिबंधाविऊणमत्ताणगं हेट्ठा पज्जलावेमि जलणं?, किं बहुणा?, णिहहेमि कट्ठेहिं अत्ताणगंति चिंतिऊणं जाव णं मसाणभूमीए गोयमा! विरइया महती चिई, ताहे सयलजणसन्निज्झं सुइरं निंदिऊण अत्ताणगं साहियं च सव्वलोगस्स-जहा णं मए एरिसं एरिसं कम्मं समायरियंति भणिऊणं आरूढो चिइयाए, जाव णं भवियव्वयाए निओगेणं तारिसदव्वचुन्नजोगाणुसंसट्ठे ते सव्वेवि दारुत्तिकाऊणं

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

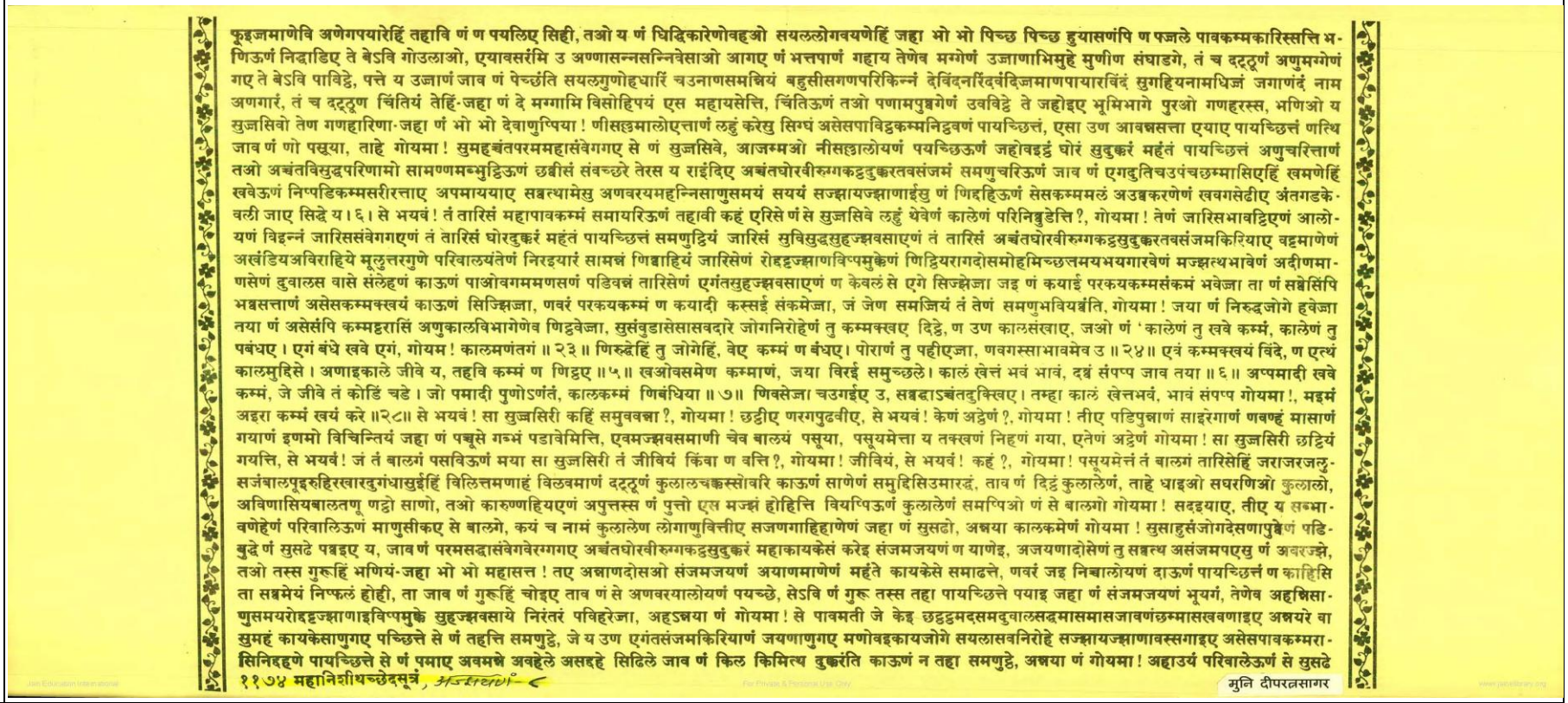

फुइज्जमाणेवि अणेगपयारेहिं तहावि णं ण पयलिए सिही, तओ य णं धिद्धिकारेणोवहओ सयललोगवयणेहिं जहा भो भो पिच्छ पिच्छ हुयासणंपि ण पज्जले पावकम्मकारिस्सत्ति भणिऊणं निद्धाडिए ते बेऽवि गोउलाओ, एयावसरंमि उ अण्णासन्नसन्निवेसाओ आगए णं भत्तपाणं गहाय तेणेव मग्गेणं उज्जाणाभिमुहे सुणीण संघाडगे, तं च दट्ठूणं अणुमग्गेणं गए ते बेऽवि पाविट्ठे, पत्ते य उज्जाणं जाव णं पेच्छंति सयलगुणोहधारिं चउनाणसमन्वियं बहुसीसगणपरिकिन्नं देविंदनरिंदवंदिज्जमाणपायारविंदं सुगहियनामधिज्जं जगाणंदं नाम अणगारं, तं च दट्ठूण चिंतियं तेहिं-जहा णं दे मग्गामि विसोहिपयं एस महायसेत्ति, चिंतिऊणं तओ पणामपुव्वगेणं उवविट्ठे ते जहोइए भूमिभागे पुरओ गणहरस्स, भणिओ य सुज्जसिवो तेण गणहारिणा-जहा णं भो भो देवाणुप्पिया ! णीसल्लमालोएत्ताणं लहुं करेसु सिग्घं असेसपाविट्ठकम्मनिट्ठवणं पायच्छित्तं, एसा उण आवन्नसत्ता एयाए पायच्छित्तं णत्थि जाव णं णो पसूया, ताहे गोयमा ! सुमहच्चंतपरममहासंवेगगए से णं सुज्जसिवे, आजम्मओ नीसल्लालोयणं पयच्छिऊणं जहोवइट्ठं घोरं सुदुक्करं महंतं पायच्छित्तं अणुचरित्ताणं तओ अच्चंतविसुद्धपरिणामो सामण्णमब्भुट्ठिऊणं छद्वीसं संवच्छरे तेरस य राईदिए अच्चंतघोरवीरुग्गकट्ठदुक्करतवसंजमं समणुचरिऊणं जाव णं एगदुतिचउपंचछम्मासिएहिं खमणेहिं खवेऊणं निप्पडिकम्मसरीरत्ताए अपमाययाए सव्वत्थामेसु अणवरयमहन्निसाणुसमयं सययं सज्झायज्झाणाईसु णं णिद्दहिऊणं सेसकम्ममलं अउव्वकरणेणं खवगसेढीए अंतगडकेवली जाए सिद्धे य।६। से भयवं! तं तारिसं महापावकम्मं समायरिऊणं तहावी कहं एरिसे णं से सुज्जसिवे लहुं थेवेणं कालेणं परिनिव्वुडेत्ति?, गोयमा! तेणं जारिसभावट्ठिएणं आलोयणं विइन्नं जारिससंवेगगएणं तं तारिसं घोरदुक्करं महंतं पायच्छित्तं समणुट्ठियं जारिसं सुविसुद्धसुहज्झवसाएणं तं तारिसं अच्चंतघोरवीरुग्गकट्ठसुदुक्करतवसंजमकिरियाए वट्टमाणेणं अखंडियअविराहिये मूलुत्तरगुणे परिवालयंतेणं निरइयारं सामन्नं णिव्वाहियं जारिसेणं रोद्दट्टज्झाणविप्पमुक्केणं णिट्ठियरागदोसमोहमिच्छत्तमयभयगारवेणं मज्झत्थभावेणं अदीणमाणसेणं दुवालस वासे संलेहणं काऊणं पाओवगममणसणं पडिवन्नं तारिसेणं एगंतसुहज्झवसाएणं ण केवलं से एगे सिज्झेज्जा जइ णं कयाइं परकयकम्मसंकमं भवेज्जा ता णं सव्वेसिंपि भव्वसत्ताणं असेसकम्मक्खयं काऊणं सिज्झिज्जा, णवरं परकयकम्मं ण कयादी कस्सई संकमेज्जा, जं जेण समज्जियं तं तेणं समणुभवियव्वंति, गोयमा! जया णं निरुद्धजोगे हवेज्जा तया णं असेसंपि कम्मट्ठरासिं अणुकालविभागेणेव णिट्ठवेज्जा, सुसंवुडासेसासवदारे जोगनिरोहेणं तु कम्मक्खए दिट्ठे, ण उण कालसंखाए, जओ णं 'कालेणं तु खवे कम्मं, कालेणं तु पबंधए। एगं बंधे खवे एगं, गोयम! कालमणंतगं॥२३॥ णिरुद्धेहिं तु जोगेहिं, वेए कम्मं ण बंधए। पोराणं तु पहीएज्जा, णवगस्साभावमेव उ॥२४॥ एवं कम्मक्खयं विंदे, ण एत्थं कालमुद्दिसे। अणाइकाले जीवे य, तहवि कम्मं ण णिट्ठए॥५॥ खओवसमेण कम्माणं, जया विरई समुच्छले। कालं खेत्तं भवं भावं, दव्वं संपप्प जाव तया॥६॥ अप्पमादी खवे कम्मं, जे जीवे तं कोडिं चडे। जो पमादी पुणोऽणंतं, कालकम्मं णिबंधिया॥७॥ णिवसेज्जा चउगईए उ, सव्वद्धाऽचंतदुक्खिए। तम्हा कालं खेत्तभवं, भावं संपप्प गोयमा!, मइमं अइरा कम्मं खयं करे॥२८॥ से भयवं! सा सुज्जसिरी कहिं समुववन्ना?, गोयमा! छट्ठीए णरगपुढवीए, से भयवं! केणं अट्ठेणं?, गोयमा! तीए पडिपुन्नाणं साइरेगाणं णवण्हं मासाणं गयाणं इणमो विचिन्तियं जहा णं पच्चूसे गब्भं पडावेमित्ति, एवमज्झवसमाणी चेव बालयं पसूया, पसूयमेत्ता य तक्खणं निहणं गया, एतेणं अट्ठेणं गोयमा! सा सुज्जसिरी छट्ठियं गयत्ति, से भयवं! जं तं बालगं पसविऊणं मया सा सुज्जसिरी तं जीवियं किंवा ण वत्ति?, गोयमा! जीवियं, से भयवं! कहं?, गोयमा! पसूयमेत्तं तं बालगं तारिसेहिं जराजरजलुसजंबालपूइरुहिरखारदुगंधासुईहिं विलित्तमणाहं विलवमाणं दट्ठूणं कुलालचक्कस्सोवरि काऊणं साणेणं समुद्दिसिउमारद्धं, ताव णं दिट्ठं कुलालेणं, ताहे धाइओ सघरणिओ कुलालो, अविणासियबालतणू णट्ठो साणो, तओ कारुण्णहियएणं अपुत्तस्स णं पुत्तो एस मज्झं होहित्ति वियप्पिऊणं कुलालेणं समप्पिओ णं से बालगो गोयमा! सदइयाए, तीए य सब्भावणेहेणं परिवालिऊणं माणुसीकए से बालगे, कयं च नामं कुलालेण लोगाणुवित्तीए सजणगाहिहाणेणं जहा णं सुसढो, अन्नया कालकमेणं गोयमा! सुसाहुसंजोगदेसणापुव्वेणं पडिबुद्धे णं सुसढे पव्वइए य, जावणं परमसद्धासंवेगवेरग्गगए अच्चंतघोरवीरुग्गकट्ठसुदुक्करं महाकायकेसं करेइ संजमजयणं ण याणेइ, अजयणादोसेणं तु सव्वत्थ असंजमपएसु णं अवरज्झे, तओ तस्स गुरूहिं भणियं-जहा भो भो महासत्त! तए अन्नाणदोसओ संजमजयणं अयाणमाणेणं महंते कायकेसे समाढत्ते, णवरं जइ निच्चालोयणं दाऊणं पायच्छित्तं ण काहिसि ता सव्वमेयं निप्फलं होही, ता जाव णं गुरूहिं चोइए ताव णं से अणवरयालोयणं पयच्छे, सेऽवि णं गुरू तस्स तहा पायच्छित्ते पयाइ जहा णं संजमजयणं भूयगं, तेणेव अहन्निसाणुसमयरोद्दट्टज्झाणाइविप्पमुक्के सुहज्झवसाये निरंतरं पविहरेज्जा, अहऽन्नया णं गोयमा! से पावमती जे केइ छट्ठट्ठमदसमदुवालसद्धमासमासजावणंछम्मासखवणाइए अन्नयरे वा सुमहं कायकेसाणुगए पच्छित्ते से णं तहत्ति समणुट्ठे, जे य उण एगंतसंजमकिरियाणं जयणाणुगए मणोवइकायजोगे सयलासवनिरोहे सज्झायज्झाणावस्सगाइए असेसपावकम्मरासिनिद्दहणे पायच्छित्ते से णं पमाए अवमन्ने अवहेले असद्दहे सिढिले जाव णं किल किमित्थ दुक्करंति काऊणं न तहा समणुट्ठे, अन्नया णं गोयमा! अहाउयं परिवालेऊणं से सुसढे

मुनि दीपरत्नसागर

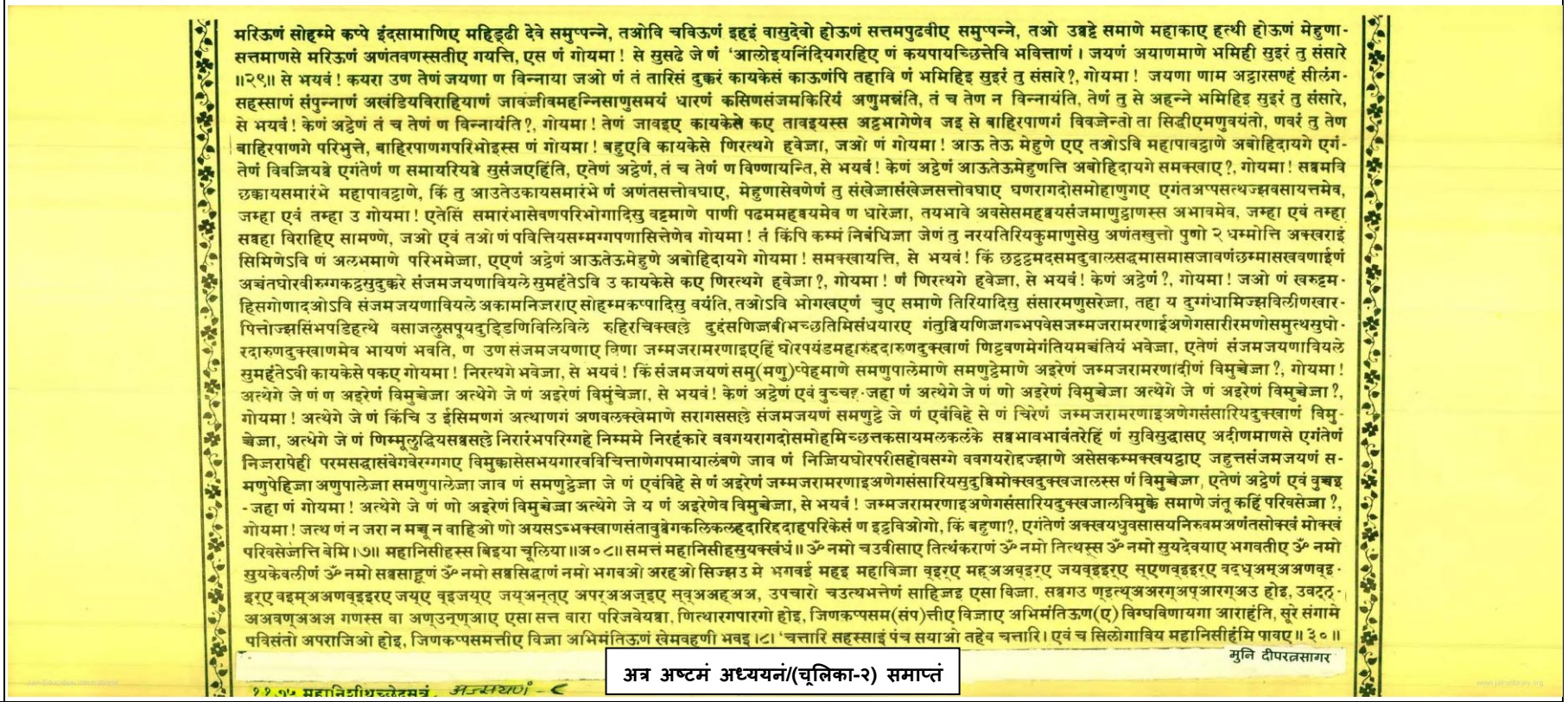

मरिऊणं सोहम्मे कप्पे इंदसामाणिए महिड्ढी देवे समुप्पन्ने, तओवि चविऊणं इहइं वासुदेवो होऊणं सत्तमपुढवीए समुप्पन्ने, तओ उव्वट्टे समाणे महाकाए हत्थी होऊणं मेहुणा-
सत्तमाणसे मरिऊणं अणंतवणस्सतीए गयत्ति, एस णं गोयमा ! से सुसढे जे णं ‘आलोइयनिंदियगरहिए णं कयपायच्छित्तेवि भवित्ताणं। जयणं अयाणमाणे भमिही सुइरं तु संसारे
॥२९॥ से भयवं ! कयरा उण तेणं जयणा ण विन्नाया जओ णं तं तारिसं दुक्करं कायकेसं काऊणंपि तहावि णं भमिहिइ सुइरं तु संसारे?, गोयमा ! जयणा णाम अट्ठारसण्हं सीलंग-
सहस्साणं संपुन्नाणं अखंडियविराहियाणं जावज्जीवमहन्निसाणुसमयं धारणं कसिणसंजमकिरियं अणुमन्नंति, तं च तेण न विन्नायंति, तेणं तु से अहन्ने भमिहिइ सुइरं तु संसारे,
से भयवं ! केणं अट्ठेणं तं च तेणं ण विन्नायंति?, गोयमा ! तेणं जावइए कायकेसे कए तावइयस्स अट्ठभागेणेव जइ से बाहिरपाणगं विवज्जेन्तो ता सिद्धीएमणुवयंतो, णवरं तु तेण
बाहिरपाणगे परिभुत्ते, बाहिरपाणगपरिभोइस्स णं गोयमा ! बहुएवि कायकेसे णिरत्थगे हवेज्जा, जओ णं गोयमा ! आऊ तेऊ मेहुणे एए तओऽवि महापावट्ठाणे अबोहिदायगे एगं-
तेणं विवज्जियव्वे एगंतेणं ण समायरियव्वे सुसंजएहिंति, एतेणं अट्ठेणं, तं च तेणं ण विण्णायन्ति, से भयवं ! केणं अट्ठेणं आऊतेऊमेहुणत्ति अबोहिदायगे समक्खाए?, गोयमा ! सव्वमवि
छक्कायसमारंभे महापावट्ठाणे, किं तु आउतेउकायसमारंभे णं अणंतसत्तोवघाए, मेहुणासेवणेणं तु संखेज्जासंखेज्जसत्तोवघाए घणरागदोसमोहाणुगए एगंतअप्पसत्थज्झवसायत्तमेव,
जम्हा एवं तम्हा उ गोयमा ! एतेसिं समारंभासेवणपरिभोगादिसु वट्टमाणे पाणी पढममहव्वयमेव ण धारेज्जा, तयभावे अवसेसमहव्वयसंजमाणुट्ठाणस्स अभावमेव, जम्हा एवं तम्हा
सव्वहा विराहिए सामण्णे, जओ एवं तओ णं पवित्तियसम्मग्गपणासित्तेणेव गोयमा ! तं किंपि कम्मं निबंधिज्जा जेणं तु नरयतिरियकुमाणुसेसु अणंतखुत्तो पुणो २ धम्मोत्ति अक्खराइं
सिमिणेऽवि णं अलभमाणे परिभमेज्जा, एएणं अट्ठेणं आऊतेऊमेहुणे अबोहिदायगे गोयमा ! समक्खायत्ति, से भयवं ! किं छट्ठट्ठमदसमदुवालसद्धमासमासजावणंछम्मासखवणाईणं
अच्चंतघोरवीरुग्गकट्ठसुदुक्करे संजमजयणावियले सुमहंतेऽवि उ कायकेसे कए णिरत्थगे हवेज्जा ?, गोयमा ! णं णिरत्थगे हवेज्जा, से भयवं ! केणं अट्ठेणं ?, गोयमा ! जओ णं खरुट्ठम-
हिसगोणादओऽवि संजमजयणावियले अकामनिज्जराए सोहम्मकप्पादिसु वर्यंति, तओऽवि भोगखएणं चुए समाणे तिरियादिसु संसारमणुसरेज्जा, तहा य दुग्गंधामिज्झविलीणखार-
पित्तोज्झसिंभपडिहत्थे वसाजलुसपूयदुद्दिणिविलिविले रुहिरचिक्खल्ले दुइंसणिज्जबीभच्छतिमिसंधयारए गंतुद्वियणिज्जगब्भपवेसजम्मजरामरणाईअणेगसारीरमणोसमुत्थसुघो-
रदारुणदुक्खाणमेव भायणं भवति, ण उण संजमजयणाए विणा जम्मजरामरणाइएहिं घोरपयंडमहारुद्ददारुणदुक्खाणं णिट्ठवणमेगंतियमच्चंतियं भवेज्जा, एतेणं संजमजयणावियले
सुमहंतेऽवी कायकेसे पकए गोयमा ! निरत्थगे भवेज्जा, से भयवं ! किं संजमजयणं समु(मणु)प्पेहमाणे समणुपालेमाणे समणुट्ठेमाणे अइरेणं जम्मजरामरणादीणं विमुच्चेज्जा ?, गोयमा !
अत्थेगे जे णं ण अइरेणं विमुच्चेज्जा अत्थेगे जे णं अइरेणं विमुंचेज्जा, से भयवं ! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ-जहा णं अत्थेगे जे णं णो अइरेणं विमुच्चेज्जा अत्थेगे जे णं अइरेणं विमुच्चेज्जा ?,
गोयमा ! अत्थेगे जे णं किंचि उ ईसिमणगं अत्थाणगं अणवलक्खेमाणे सरागसंसले संजमजयणं समणुट्ठे जे णं एवंविहे से णं चिरेणं जम्मजरामरणाइअणेगसंसारियदुक्खाणं विमु-
च्चेज्जा, अत्थेगे जे णं णिम्मूलुद्धियसव्वसल्ले निरारंभपरिग्गहे निम्ममे निरहंकारे ववगयरागदोसमोहमिच्छत्तकसायमलकलंके सव्वभावभावंतरेहिं णं सुविसुद्धासए अदीणमाणसे एगंतेणं
निज्जरापेही परमसद्धासंवेगवेरग्गगए विमुक्कासेसभयगारवविचित्ताणेगपमायालंबणे जाव णं निज्जियघोरपरीसहोवसग्गे ववगयरोद्दज्झाणे असेसकम्मक्खयट्ठाए जहुत्तसंजमजयणं स-
मणुपेहिज्जा अणुपालेज्जा समणुपालेज्जा जाव णं समणुट्ठेज्जा जे णं एवंविहे से णं अइरेणं जम्मजरामरणाइअणेगसंसारियसुदुविमोक्खदुक्खजालस्स णं विमुच्चेज्जा, एतेणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ
-जहा णं गोयमा ! अत्थेगे जे णं णो अइरेणं विमुच्चेज्जा अत्थेगे जे य णं अइरेणेव विमुच्चेज्जा, से भयवं ! जम्मजरामरणाइअणेगसंसारियदुक्खजालविमुक्के समाणे जंतू कहिं परिवसेज्जा ?,
गोयमा ! जत्थ णं न जरा न मच्चू न वाहिओ णो अयसऽब्भक्खाणसंतावुव्वेगकलिकलहदारिद्ददाहपरिकेसं ण इट्ठविओगो, किं बहुणा?, एगंतेणं अक्खयधुवसासयनिरुवमअणंतसोक्खं मोक्खं
परिवसेज्जत्ति बेमि।७॥ महानिसीहस्स बिइया चूलिया ॥अ०८॥ समत्तं महानिसीहसुयक्खंधं॥ ॐ नमो चउवीसाए तित्थंकराणं ॐ नमो तित्थस्स ॐ नमो सुयदेवयाए भगवतीए ॐ नमो
सुयकेवलीणं ॐ नमो सव्वसाहूणं ॐ नमो सव्वसिद्धाणं नमो भगवओ अरहओ सिज्झउ मे भगवई महइ महाविज्जा वइरए महअअवइरए जयवइइरए सएणवइइरए वद्धअमअअणवइ-
इरए वइमअअणवइइरए जयए वइजयए जयअनंतए अपरअअजइए सवअअहअअ, उपचारो चउत्थभत्तेणं साहिज्जइ एसा विज्जा, सव्वगउ णइत्थअअरगअपुआरगअउ होइ, उवट्ठ-
अवणअअअ गणस्स वा अणउन्नअाए एसा सत्त वारा परिजवेयव्वा, णित्थारगपारगो होइ, जिणकप्पसम(संप)त्तीए विज्जाए अभिमंतिऊण(ए) विग्घविणायगा आराहंति, सूरे संगामे
पविसंतो अपराजिओ होइ, जिणकप्पसमत्तीए विज्जा अभिमंतिऊणं खेमवहणी भवइ।८। ‘चत्तारि सहस्साइं पंच सयाओ तहेव चत्तारि। एवं च सिलोगाविय महानिसीहंमि पावए॥ ३०॥

मुनि दीपरत्नसागर

अत्र अष्टमं अध्ययनं/(चूलिका-२) समाप्तं

	सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि भाग १ से ४० में कहां क्या मिलेगा?		
भाग	इस भागमे समाविष्ट आगम के नाम और आगम-क्रम		कुलपृष्ठ
01	आगम ०१ आचार मूलं एवं वृत्ति भाग-१ श्रुतस्कन्ध-१, अध्ययन- १,२		३१४
02	आगम ०१ आचार मूलं एवं वृत्ति, भाग-२ श्रुतस्कन्ध-१, अध्ययन- ३ से ९, श्रुतस्कन्ध- २		५८६
03	आगम ०२ सूत्रकृत मूलं एवं वृत्ति, भाग-१ श्रुतस्कन्ध-१, अध्ययन- १ से १३		४९८
04	आगम ०२ सूत्रकृत मूलं एवं वृत्ति, भाग-२ श्रुतस्कन्ध-१, अध्ययन १४ से १६, श्रुतस्कन्ध-२		३९२
05	आगम ०३ स्थान मूलं एवं वृत्ति, भाग-१ स्थान- १ से ४		५९४
06	आगम ०३ स्थान मूलं एवं वृत्ति, भाग-२ स्थान- ५ से १० संपूर्ण		४९४
07	आगम ०४ समवाय मूलं एवं वृत्ति.		३३८
08	आगम ०५ भगवती मूलं एवं वृत्ति, भाग-१ शतक- १ से ६		५९२
09	आगम ०५ भगवती मूलं एवं वृत्ति, भाग-२ शतक- ७ से ११		५५२
10	आगम ०५ भगवती मूलं एवं वृत्ति, भाग-३ शतक- १२ से २०		५१४
11	आगम ०५ भगवती मूलं एवं वृत्ति, भाग-४ शतक- २१ से ४१ संपूर्ण		३८४
12	आगम ०६ ज्ञाताधर्मकथा मूलं एवं वृत्ति.		५२२
13	आगम-७,८,९,१०उपासकदशा, अंतकृतदशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्नव्याकरण मूलं एवं वृत्ति.		५३८
14	आगम-११,१२, विपाक, उववाई मूलं एवं वृत्ति.		३८४
15	आगम १३ राजप्रश्नीय मूलं एवं वृत्ति.		३१४
16	आगम१४ जीवाजीवाभिगम भाग-१ मूलं एवं वृत्ति. [प्रतिपत्ति-३-अतर्गत] सूत्र- १ से १३८		४८०
17	आगम१४ जीवाजीवाभिगम भाग-२ मूलं एवं वृत्ति. [प्रतिपत्ति-३-अतर्गत] सूत्र- १३९ से प्रतिपत्ती-१० संपूर्ण		४८८
18	आगम १५ प्रज्ञापना भाग-१ मूलं एवं वृत्ति. पद- १ से ५		४२६
19	आगम १५ प्रज्ञापना भाग-२ मूलं एवं वृत्ति. पद- ६ से २२		५१४
20	आगम १५ प्रज्ञापना भाग-३ मूलं एवं वृत्ति. पद- २३ से ३६ संपूर्ण		३३६
21	आगम १६ सूर्यप्रज्ञप्ति मूलं एवं वृत्ति.		६१०

	सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि भाग १ से ४० में कहां क्या मिलेगा?		
भाग	इस भागमे समाविष्ट आगम के नाम और आगम-क्रम		कुलपृष्ठ
22	आगम १७ चन्द्रप्रज्ञप्ति मूलं एवं वृत्ति.		६१४
23	आगम१८ जंबूद्विपप्रज्ञप्ति भाग-१ मूलं एवं वृत्ति. वक्षस्कार- १ एवं २.		३७६
24	आगम१८ जंबूद्विपप्रज्ञप्ति भाग-२ मूलं एवं वृत्ति. वक्षस्कार- ३ एवं ४.		४२६
25	आगम१८ जंबूद्विपप्रज्ञप्ति भाग-३ मूलं एवं वृत्ति. वक्षस्कार- ५ से ७.		३४४
26	आगम १९-३२ निरयावलिका, कल्पवतंसिका, पुष्पिका, पुष्पचूलिका, वृष्णिदशा, चतु:शरण, आतुरपरत्याख्यान, महाप्रत्याख्यान, भक्तपरिज्ञा, तंदुलवैचारिक, संस्तारक, गच्छाचार, गणिविध्या, देवेन्द्रस्तव मूलं एवं छाया		३१२
27	आगम ३३ थी ३९ मरणसमाधि मूलं एवं छाया, निशीथ, ब्रुहत्कल्प, व्यवहार, दशाश्रुतस्कंध, जीतकल्प/पंचकल्प, महानिशीथ मूलं एव		३३०
28	आगम ४० आवश्यक मूलं एवं वृत्ति, भाग-१, निर्युक्ति- १ से ५२१		४६६
29	आगम ४० आवश्यक मूलं एवं वृत्ति, भाग-२, निर्युक्ति- ५२२ से ९५१		४४२
30	आगम ४० आवश्यक मूलं एवं वृत्ति, भाग-३ निर्युक्ति- ९५२ से १२७३ अपूर्ण, [अध्ययन- १ से ४ अपूर्ण]		४६४
31	आगम ४० आवश्यक मूलं एवं वृत्ति, भाग-४ निर्युक्ति- १२७३ अपूर्ण से १६२३, [अध्ययन- ४ अपूर्ण से ६ संपूर्ण]		४२६
32	आगम ४१/१ ओघनिर्युक्ति मूलं एवं वृत्ति.		४७२
33	आगम ४१/२ पिंडनिर्युक्ति मूलं एवं वृत्ति.		३७६
34	आगम ४२ दशवैकालिक मूलं एवं वृत्ति.		५९०
35	आगम ४३ उत्तराध्यन मूलं एवं वृत्ति, भाग-१, अध्ययन- १ से ५		५२२
36	आगम ४३ उत्तराध्यन मूलं एवं वृत्ति, भाग-२, अध्ययन- ६ से २१		४८२
37	आगम ४३ उत्तराध्यन मूलं एवं वृत्ति, भाग-३, अध्ययन- २२ से ३६		४६६
38	आगम ४४ नन्दिसूत्र मूलं एवं वृत्ति.		५२८
39	आगम ४५ अनुयोगद्वार् मूलं एवं वृत्ति.		५६०
40	कल्प[बारसा]सूत्र... चतु:शरण, तन्दुलवैचारिक, गच्छाचार मूलं एवं वृत्ति.		३९४

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

आगम.[33-39]

पूज्य आगमोध्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधिता: संपादिताश्च

३३.मरणसमाधि (मूलं+छाया), ...३४.निशीथ, ३५.बृहत्कल्प, ३६.व्यवहार,
३७.दशाश्रुतस्कंध, ३८/१.जीतकल्प, ३८/२.पंचकल्प-भाष्य, ३९.महानिशीथ.(मूलम्)

(किंचित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलिता:

[१] प्रकीर्णकसूत्र-१० (मूलं एवं छाया) नामेण (तथा)

[१-६] छेदसूत्राणि (मूलं) नामेण परिसमाप्तानि

"सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि" श्रेणि, भाग-27

आगम
वाचना शताब्दी वर्ष

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि

मूल संशोधक

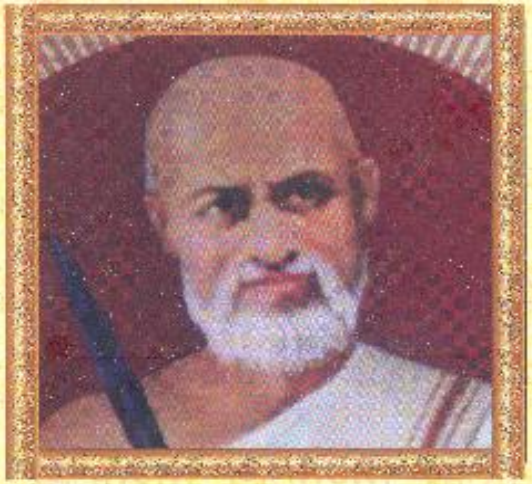

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य
श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज

अभिनव-संकलनकर्ता

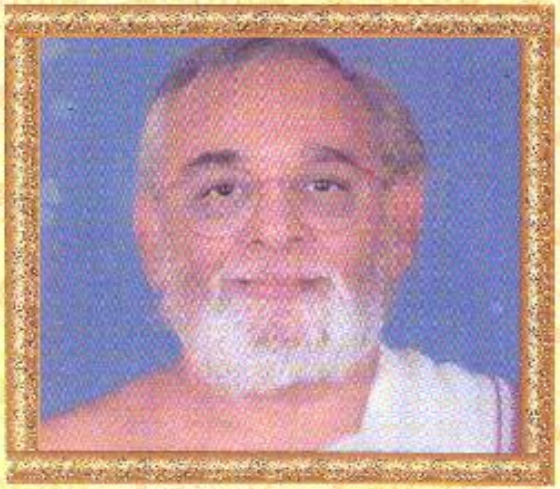

आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी
[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

प्रत-प्राप्ति और पेज-सेटिंग कर्ता : www.jainelibrary.org के चेरमन श्री प्रवीणभाई शाह, अमेरिका
मुद्रक : नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस अमदाबाद Mo 9825598855 / 9825306275

ईस प्रोजेक्ट के संपूर्ण-अनुदान-दाता

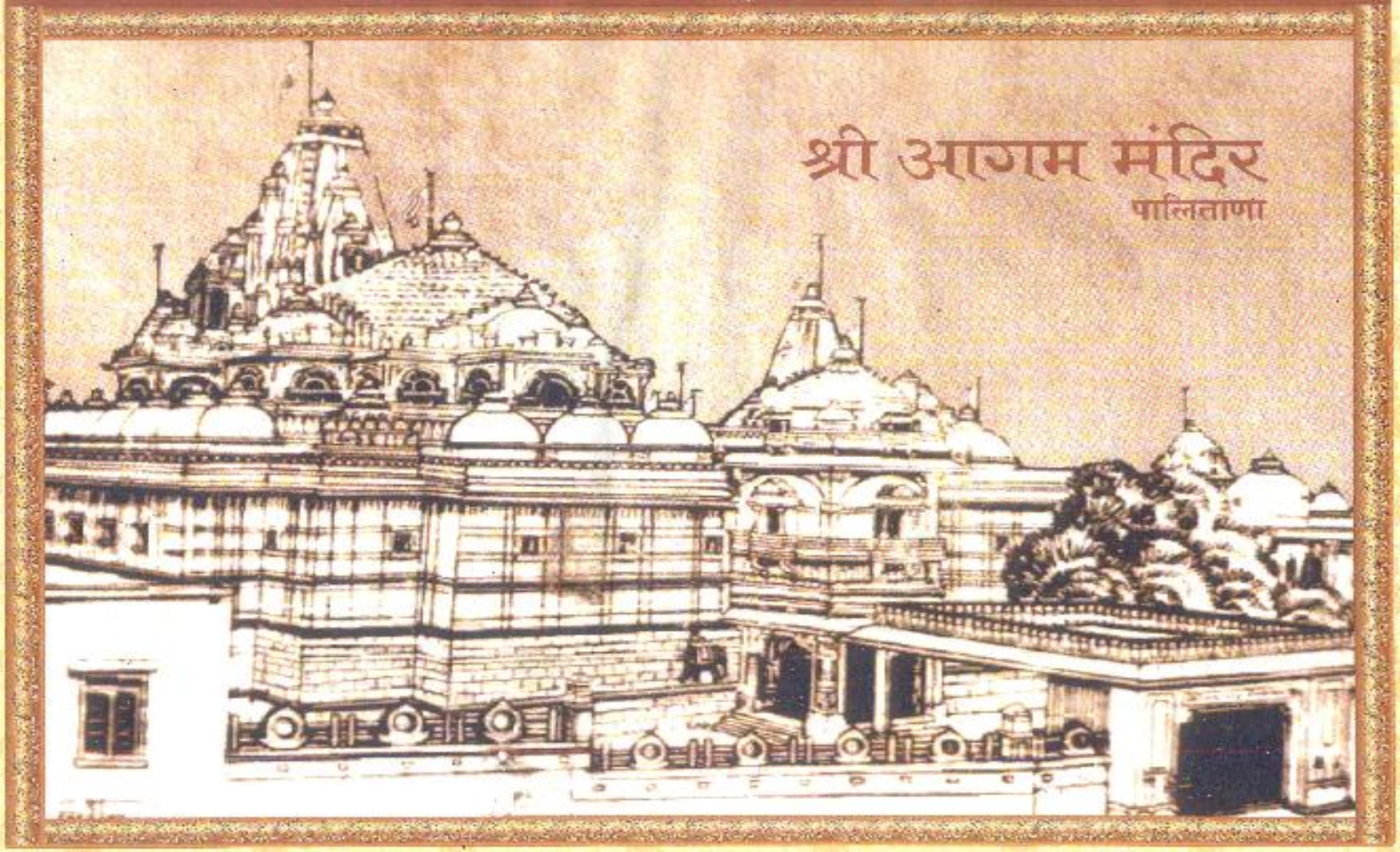

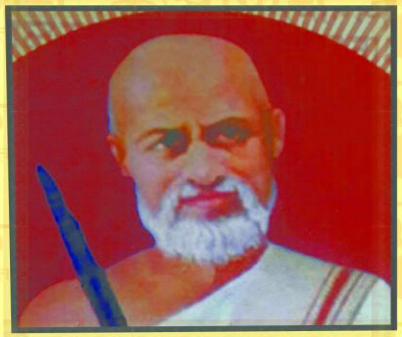

मूल संशोधक

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य

श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब

आगम ३३-३९

३३. मरणसमाधि-प्रकीर्णक [मूलं एवं संस्कृत-छाया]

३४.निशीथ,३५.बृहत्कल्प,३६.व्यवहार,३७.दशाश्रुतस्कंध,३९.महानिशिथ [५-छेदसूत्राणि मूलं],

३८/१,जीतकल्प-मूलं+भाष्यं, ३८/२.पंचकल्प-भाष्यं.

अभिनव-संकलनकर्ता

आगम दिवाकर **मुनिश्री दीपरत्नसागरजी**

[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]